श्री गुरु ग्रंथ साहिब

(मूल पाठ एवं हिन्दी अनुवाद)

दूसरी सैंची

डॉ॰ जोध सिंह

श्री गुरु ग्रंथ साहिब

(मूल पाठ एवं हिन्दी अनुवाद)

दूसरी सैंची

डॉ. जोध सिंह

प्रोफैसर, सिक्ख धर्म एवं दर्शन
मैंबर, इंडियन कौंसिल ऑफ फिलासोफीकल रिसर्च (ICPR)
मुख्य सम्पादक, सिक्ख धर्म विश्वकोष
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला (पंजाब)

द सिक्ख हैरीटेज पब्लीकेशन्स,
पटियाला – 147 002

प्रकाशकः

द सिक्ख हैरीटेज पब्लीकेशन्स

12 बसन्त विहार (पीछे हेम कुंट पम्प), सरहिन्द रोड, पटियाला-147 002

टैलीफोनः 0175-2353102, 98159-14691

प्रथम संस्करण : 2003

द्वितीय संस्करण : 2006

तृतीय संस्करण : 2011

चार जिल्दों का पूरा सैट : 2100 रुपये

मुद्रक

दी डॉन प्रैस,

कटड़ा शेर सिंह, अमृतसर ।

टैलीफोनः 2541312, 2554735

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि

राग—सूची

सैंची पहली

	पन्ना		पन्ना
जपु	1	सोहिला महला १	12
सोदरु महला १	8	सिरी रागु	14
सुणि वडा महला १	9	रागु माझ	94
सो पुरखु महला ४	10	रागु गउड़ी	151

सैंची दूसरी

रागु आसा	347	रागु धनासरी	660
रागु गूजरी	489	रागु जैतसरी	696
रागु देव गंधारी	527	रागु टोडी	711
रागु बिहागड़ा	537	रागु बैराड़ी	719
रागु वडहंसु	557	रागु तिलंग	721
रागु सोरठि	595		

सैंची तीसरी

रागु सूही	728	रागु नट नाराइन	975
रागु बिलावलु	795	रागु माली गउड़ा	984
रागु गौड	859	रागु मारू	989
रागु रामकली	876		

सैंची चौथी

रागु तुखारी	1107	सलोक सहसक्रिती मः ५	1353
रागु केदारा	1118	गाथा महला ५	1360
रागु भैरउ	1125	फुनहे महला ५	1361
रागु बसंतु	1168	चउबोले महला ५	1363
रागु सारंग	1197	सलोक भगत कबीर	1364
रागु मलार	1245	सलोक शेख फरीद के	1377
रागु कानड़ा	1294	सवये श्रीमुख वाक्य	1385
रागु कलिआन	1319	सलोक वारां ते वधीक	1410
रागु प्रभाती	1327	सलोक महला ९	1426
रागु जैजावंती	1352	मुंदावणी महला ५	1429
सलोक सहसक्रिती मः १	1353	रागमाला	1429–30

विशेष आभार

परम पिता परमात्मा के प्रति मैं आभारी हूँ जिसने यह अनुवाद कार्य मुझसे कराया । मैं विशेष आभारी हूँ

सरदार राजिन्दर सिंह चाहल
सरदारनी जोगिन्दर कौर चाहल — M/s J.K. Diesels Dhanbad
एवं सम्पूर्ण चाहल परिवार का

जिन्होंने इस अनुवाद कार्य को पाठकों तक पहुँचाने के लिए सभी साधन जुटाए और मेरी मेहनत को सार्थक बनाने में पूर्ण योगदान दिया ।

समर्पण

अठारहवीं सदी के उन लाखों
शहीद योद्धाओं को
जिन्होंने तत्कालीन शासकों द्वारा
सिक्खों के सिरों की कीमत
निर्धारित कर दिए जाने के बावजूद
सिक्ख स्वरूप का त्याग नहीं किया,
भारत की अस्मिता, सिक्ख नैतिक मूल्यों तथा
गुरु ग्रंथ साहिब के सर्वधर्म समभाव
की प्रखरता की रक्षा के लिए
पूर्ण कर्त्तव्य निष्ठा के साथ
प्राणों की आहुति दी।

सिक्ख पारिभाषिक शब्दावली

1.	अनंद	:	आनन्द, परम प्रसन्नता ।
2.	अमर (अम्र)	:	हुकुम
3.	अमृतवेला	:	रात्रि का चौथा प्रहर अर्थात् भोर ।
4.	अरदास	:	विनती, प्रार्थना ।
5.	आदेसु	:	प्रणाम ।
6.	करम	:	कर्म, कृपा ।
7.	कुदरति	:	दिव्य शक्ति, प्रकृति, माया ।
8.	गुरमति	:	गुरु प्रदत्त विवेक बुद्धि ।
9.	गुरमुख	:	गुरु की आज्ञा के अनुरूप कार्यशील बना रहने वाला ।
10.	गुरु/गुरू	:	आध्यात्मिक रूप से जीवित बनाए रखने वाला ।
11.	घालि	:	परिश्रम, मेहनत ।
12.	धरमसाल	:	कर्त्तव्य कर्म का स्थान ।
13.	धरमु	:	कर्त्तव्य निष्टा, उत्तरदायित्व ।
14.	नदरि	:	कृपादृष्टि ।
15.	नाम	:	सम्पूर्ण अस्तित्व रूप में सर्वत्र व्याप्त दिव्यता ।
16.	पंच	:	आध्यात्मिक गुणों के कारण सर्वप्रतिष्ठित व्यक्ति ।
17.	मनमुख	:	भ्रष्ट करने वाली मन की वासनाओं के पीछे लगने वाला ।
18.	माई	:	माया / माँ ।
19.	रहाउ	:	रुको और पूर्व पद का गहन चिन्तन करो ।
20.	राम	:	सर्वत्र रमण करने वाला प्रभु ।
21.	वारना (वारिआ)	:	बलिहारी जाना, कुर्बान होना ।
22.	विगसणा	:	खिलना, विकासशील बने रहना।
23.	सचिआर	:	सत्याचरण करने वाला ।
24.	सतसंगति (संगत) साधसंगत	:	सद्संगत, जहां ऊंच नीच, छुआछूत भेद मिटाकर सभी मिल बैठकर आध्यात्मिक प्रवचन सुनते हैं और सत्याचरण की ओर अग्रसर होते हैं ।
25.	सती	:	त्यागी, दानी ।
26.	सबद	:	नाम का क्रियाशील रूप ।
27.	साकत	:	एक प्रभु से टूटा हुआ, शाक्त मतावलंवी ।
28.	सिख (सिक्ख)	:	सदा सीखने की जिज्ञासा वनाए रखने वाला ।
29.	हउमै	:	अहम्, अहंकार ।
30.	हदूरि	:	सामने, प्रत्यक्ष, समक्ष ।
31.	हुकमु, हुकुम	:	आज्ञा, अंतर्निहित विधान ।

विशेष सूचना

- मूल पाठ के लिप्यन्त्रण का आधारः शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा प्रकाशित श्री गुरु ग्रंथ साहिब ।

- मूल पाठ के शब्दों के अंतिम व्यंजन के साथ लगी ह्रस्व 'इ' (ि) और ह्रस्व 'उ' (ु) मात्रा का उच्चारण नहीं किया जाता है ।

पृष्ठ 347 से 727 तक का
मूलपाट एवं अनुवाद

੧ਓ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु आसा महला १ घरु १ सो दरु ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब सम्हाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावन्हि तुधनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरम दुआरे ॥ गावन्हि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावन्हि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावन्हि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावन्हि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावन्हि तुधनो साध बीचारे ॥ गावन्हि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पंडित पड़े रखीसुर जुगु जुगु बेदा नाले ॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ गावन्हि तुधनो रतन उपाए तेरे जेते अठसठि तीरथ नाले ॥ गावन्हि तुधनो जोध महाबल सूरा गावन्हि तुधनो खाणी चारे ॥ गावन्हि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावन्हि जो तुधु भावन्हि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै कीता अपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

रागु आसा महला १ घरु १ सो दरु।।

हे प्रभु तेरा वह घर का द्वार कैसा है जहाँ बैठकर तू सभी जीवों का भरण पोषण कर रहा है। तेरी इस सृष्टि में अनेकों ही वाद्‌य यन्त्र एवं राग हैं। अनन्तः जीव उनको बजाने वाले हैं। अनेक रागिनियों समेत रागों के नाम कहे जाते हैं। अनेकों ही जीव तेरे गुणानुवाद करने वाले हैं। हे प्रभु, पवन, जल, अग्नि आदि तेरे ही गुण गा रहे हैं। धर्मराज तेरे द्वार पर खड़ा होकर तेरा ही गुणानुवाद कर रहा है। चित्रगुप्त भी जो लेखनी में दक्ष हैं और जिनके लिखे हुए लेखों पर धर्मराज विचार करता है, वे सब भी तेरी प्रशंसा के गीत गा रहे हैं। हे प्रभु, अनेकों देवियां, शिव और ब्रह्मा जो तेरे ही बनाए हुए हैं और तेरे ही द्वार पर शोभायमान हैं, तेरे गुण गा रहे हैं। अनेकों इन्द्र अपने सिंहासनों पर बैठे हुए देवताओं समेत तेरे द्वार पर तेरा गुणानुवाद कर रहे हैं। अनेकों सिद्ध अपनी समाधियों में तेरे गुण गा रहे हैं। साधुजन भी तेरे गुणों को अनुभव करते हुए तेरी प्रशंसा कर रहे हैं। अनेकों यति, दानी पुरुष और संतोषी व्यक्ति भी तेरे ही गुण गा रहे हैं। अनेकों महाबली तेरे ही बड़प्पन का गुण गा रहे हैं। हे प्रभु, पंडित और ऋषिवर तेरे ही यश का गायन कर रहे हैं। व्यक्ति के मन को लुभा लेने वाली सुंदर स्त्रियां भी तेरे ही गुण गा रही हैं अर्थात् तेरे ही सौन्दर्य को प्रस्तुत कर रही हैं। स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक एवं पाताललोक के सभी जीव जन्तु तेरे ही बड़प्पन का गुणानुवाद कर रहे हैं। तेरे पैदा किए हुए रत्न, अड़सठ तीर्थ आदि तुझे ही गा रहे हैं। बड़े बलशाली शूरवीर अपने बल के माध्यम से तेरी ही प्रशंसा कर रहे हैं। जीवों के चारों प्रकार के स्रोत तुझे ही गा रहे हैं। तेरे द्वारा उत्पन्न सारी सृष्टि के खण्ड एवं मण्डल तेरा ही गुणानुवाद कर रहे हैं। वास्तव में उन्हीं लोगों का किया हुआ गुणानुवाद प्रशंसनीय है जो तेरे प्रेम में रंगे हुए हैं और ऐसे जीव ही तुझे भाते हैं। अनेकों अन्य जीव तेरे बड़प्पन का गायन कर रहे हैं और ऐसे जीवों की गणना असम्भव है। फिर भला नानक इन सब के बारे में क्या विचार प्रस्तुत कर सकता है। जिस परम सत्ता प्रभु ने यह सृष्टि उत्पन्न की है वह वर्तमान में भी मौजूद है एवं सदैव बना रहने वाला है। वह अनन्त शक्तिमान प्रभु सदा बना ही रहने वाला है और उसका बड़प्पन भी सदैव स्थिर रहने वाला है। अनेक प्रकार की यह सृष्टि एवं माया की उत्पत्ति जिस प्रभु ने की है वह प्रभु इस सम्पूर्ण जगत को पैदा करके अपनी सृष्टि की संभाल भी स्वयं ही कर रहा है। जो उस प्रभु को भाता है वही करता है एवं

हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पति साहिबु नानक रहणु रजाई ॥ १ ॥ १॥ आसा महला ४ ॥ सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥ १ ॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन्ह कुरबाणा ॥ २ ॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन्ह हरि धिआइआ जीउ तिन टूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ जिन्ह हरि निरभउ धिआइआ जीउ तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन्ह सेविआ जिन्ह सेविआ मेरा हरि जीउ ते हरि हरि रूपि समासी ॥ से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जीउ जनु नानकु तिन बलि जासी ॥ ३ ॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बेअंत बेअंता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिंम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥ ४ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥ ५ ॥ २ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला १ चउपदे घरु २ ॥

सुणि वडा आखै सभ कोई ॥ केवडु वडा डीठा

कोई भी जीव उस प्रभु को आदेश नहीं दे सकता। वह प्रभु सारे संसार का सम्राट है एवं दरअसल सम्राटों का भी सम्राट है। अतः हे नानक, उसकी रज़ा में रहना ही उपयुक्त है।। १ ।। १ ।। आसा महला ४ ।। वह परमात्मा सारे जीवों में व्याप्त है परन्तु फिर भी माया के प्रभाव से ऊपर (निरंजन) है। वह अगम्य एवं अनन्त है। हे नित्य एवं सबके कर्ता प्रभु, सभी जीव सदैव तेरा ही स्मरण एवं ध्यान करते हैं। हे प्रभु, सारे जीवों को तुमने ही उत्पन्न किया है एवं सब जीवों का दाता भी तू ही है। हे संतो, उस परमात्मा का ध्यान किया जाना चाहिए क्योंकि वह ही सारे दुखों को हर लेने वाला है। वही सबका स्वामी है और वही स्वयं ही सेवक भी है। हे नानक, उसके बिना ये जीव बेचारे क्या हैं। (अर्थात कुछ भी नही हैं) ।। १ ।। हे प्रभु, तू घट घट में एक रस होकर मौजूद है; तू स्वयं ही सब में समाया हुआ है फिर भी कई जीव दाता हैं और कई भिखारी - ये सब तेरे ही कौतुक हैं। तू स्वयं दाता एवं स्वयं ही दान लेने वाला है। तेरे सिवाय मैं अन्य किसी को नहीं जानता मानता। हे परब्रह्म प्रभु, तू अनन्त है; तेरे गुणों का कथन मैं कैसे करूँ।। जो तुझे स्मरण करते हैं यह दास नानक उन पर बलिहारी जाता है।। २ ।। हे प्रभु, जो तेरा स्मरण करते हैं वे सदैव सुखी जीवन व्यतीत करते हैं; जिन्होनें हरि नाम का स्मरण किया है वे सदा के लिए माया के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं एवं यम का फन्दा उनके लिए टूट जाता है। उस निर्भय प्रभु का स्मरण करने वालों के सभी प्रकार के डर दूर हो जाते हैं। जो प्यारे प्रभु का स्मरण करते हैं वे प्रभु के रूप में ही लीन हो जाते हैं। भाग्यशाली एवं धन्य हैं वे लोग जिन्होंने प्रभु-नाम का स्मरण किया है। दास नानक उन पर बलिहारी जाता है।। ३ ।। हे प्रभु, तेरी भक्ति के भण्डार भरे पड़े हैं। अनेकों तेरे भक्त तेरा गुणानुवाद कर रहे हैं। अनन्त जीव तेरी पूजा कर रहे हैं एवं अनेकों प्रकार की साधनाओं में लीन हैं। तेरे अनेकों ही सेवक स्मृतियों एवं शास्त्रों का पठन-पाठन करते हुए षटकर्म कर रहे हैं। हे नानक, वही भक्त भले हैं जो उस प्यारे प्रभु को अच्छे लगते हैं।। ४ ।। हे प्रभु, तू सारे संसार का आदि कर्ता पुरुष एवं सर्वत्र व्यापक है। तेरे बराबर अन्य कोई नहीं। हर युग में एक तू ही है, तू ही एक सदा बना रहने वाला है और तू ही अटल रूप में सबका कर्ता है। जो तुझे अच्छा लगता है वही होता है और दरअसल जो तू करता है वही व्यवहार बन जाता है। तूने ही इस सृष्टि को उत्पन्न किया है और तू ही इसको लय करने वाला है। दास नानक उस कर्ता प्रभु का ही गुणानुवाद करता है जो सबके दिलों की जानता है।। ५।। २ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि   रागु आसा महला १ चौपदे घरु २।।

सुने-सुनाए के आधार पर सभी उस परमात्मा को बहुत बड़ा कह देते हैं परन्तु हे प्रभु, तू कितना बड़ा है यह तेरे साक्षात्कार

होई ॥ कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥ १ ॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥ कोई न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ वडिआईआं ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥ आखण वाला किआ बेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु तूं देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥ आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ तितु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥ १ ॥ सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥ २ ॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देंदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ ना को होआ ना को होइ ॥ ३ ॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ जे दरि मांगतु कूक करे महली खसमु सुणे ॥ भावै धीरक भावै धके एक वडाई देइ ॥ १ ॥ जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि कराए आपि करेइ ॥ आपि उलाम्हे चिति धरेइ ॥ जा तूं करणहारु करतारु ॥ किआ मुहताजी किआ संसारु ॥ २ ॥ आपि उपाए आपे देइ ॥ आपे दुरमति मनहि करेइ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ दुखु अन्हेरा विचहु जाइ ॥ ३ ॥ साचु पिआरा आपि करेइ ॥ अवरी कउ साचु न देइ ॥ जे किसै देइ वखाणै नानकु आगै पूछ न लेइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा महला १ ॥ ताल मदीरे घट के घाट ॥ दोलक दुनीआ वाजहि वाज ॥ नारदु नाचै कलि का भाउ ॥ जती सती कह राखहि पाउ ॥ १ ॥ नानक नाम विटहु कुरबाणु ॥ अंधी दुनीआ साहिबु जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरू पासहु फिरि चेला खाइ ॥ तामि परीति वसै घरि

के बाद ही कहा जा सकता है। तेरी बराबरी का अन्य कोई नहीं बताया जा सकता एवं तेरे स्वरूप का वर्णन नही किया जा सकता। तेरे बड़प्पन को बताने वाले अन्ततः तुझमें ही समा जाते है। हे मेरे अनन्त प्रभु, तुम एक गहन समुद्र हो और विशालतम ह्रदय के होने वाले के साथ-साथ अनन्त गुणों के स्वामी भी हो। तेरे विस्तार के बारे में कोई नहीं जानता।। १ ।। रहाउ ।। समाज में लीन बने रहने वाले अनेकों महान योगियों ने पूरी तरह से ध्यान लगाकर तेरी विशालता को जानने का प्रयत्न किया, अनेकों ज्ञानवान, दयावान एवं विचारवान लोगों ने तुझे पाने और समझने का यत्न किया परन्तु वे तेरे बड़प्पन के अंशमात्र को नही जान सके और न ही बता सके। सब प्रकार के सत्य, तप, सच्चाईयां, सिद्ध पुरुषों के बड़प्पन एवं उनकी सिद्धियाँ तेरी कृपा के बिना कभी भी सम्भव नहीं हो सकीं। जब तेरी कृपा से उपर्युक्त सब प्राप्त होता है तब रास्ते पर कोई रुकावट नहीं आती।। ३।। तेरे गुणों के भण्डार पूर्ण रूप से भरे रहते हैं परन्तु इन गुणों को जानना और बताना किसी की भी सामर्थ्य में. नहीं है। हे प्रभु, जिसे तू गुणानुवाद का गुण देता है उसके रास्ते में रुकावट डालने के लिए किसी का भी ज़ोर नहीं चलता। हे नानक, वह नित्य प्रभु सब लोगों के क्रिया-क्लापों को सँवारने वाला स्वयं ही है।। ४ ।। १ ।। आसा महला १ ।। जैसे जैसे मैं उस परमात्मा का स्मरण करता हूँ, मैं आध्यात्मिक तौर पर जीवित हो उठता हूँ परन्तु ज्यों ही वह परमात्मा मुझे विस्मृत हो जाता है मैं मर जाता हूँ। उस नित्य प्रभु के नाम का वर्णन अत्यन्त कठिन कार्य है। जिस व्यक्ति के मन में प्रभु-नाम की भूख जग जाती है उस भूख के फलस्वरूप उसके सारे दुख दूर हो जाते हैं।। १ ।। हे मेरी मां, वह प्रभु मुझे कभी भी न भूले क्योंकि वह प्रभु ही सच्चा साहिब है और उसका नाम ही सत्य-स्वरूप है।। १ ।। रहाउ ।। उस नित्य प्रभु के नाम की तिल मात्र भी बड़ाई का बखान करते हुए जीव थक तो जाते है परन्तु उस परमात्मा की महानता के बारे में नहीं जान पाते। यदि सब मिलकर भी उस प्रभु के बड़प्पन का बखान करें फिर भी वह न तो और बड़ा हो जाता है और न ही उसमें कोई कमी आती है। वह न तो मरता है और न ही शोकाकुल होता है। वह सदैव जीवों को देता ही जाता है परन्तु उसके भण्डार कभी भी चुकते नहीं। उसका यही एक अद्वितीय गुण है कि उसके जैसा न तो कोई हुआ है और न ही होगा।। ३ ।। हे प्रभु, तू जैसा बड़ा स्वयं है वैसा ही बड़ा तेरा दान है। दिन बनाकर रात बनाने वाले उस स्वामी को जो भुला देते हैं उनका जीवन निम्न स्तर का हो जाता है और वास्तव में प्रभु के नाम से विहीन लोगों को ही हे नानक, नीच कहा जाता है।। ४ ।। २ ।। आसा महला १ ।। यदि भिखारी द्वार पर खड़ा होकर पुकार-पुकार कर भिक्षा माँगता है तो घर का स्वामी अन्दर उसे सुन ही लेता है। हे प्रभु, एक सम्मान तो मुझे दे ही दे; चाहे तू मुझे धैर्य प्रदान कर और चाहे मुझे धक्के मार दे।। १ ।। व्यक्ति के अन्दर की ज्योति को पहचानो उसकी जाति मत पूछो क्योंकि परलोक में कोई भी जाति नहीं होती।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता करवाता है और स्वयं ही भक्तों के उपालम्भों की ओर भी ध्यान देता है। हे प्रभु, जब तू ही कर्ता और संसार का सृजनहार है तब मैं भला इस संसार का मोहताज क्यों बना रहूँ।। २ ।। तू स्वयं ही पैदा करता है और स्वयं ही सब कुछ देता है; तू स्वयं ही दुर्मति को रोकता है। गुरु की कृपा से ही तू व्यक्ति के चित्त में आन टिकता है और व्यक्ति के अन्तर्मन का दुख और अन्धकार दूर हो जाता है।। ३ ।। वह स्वयं ही सत्य के लिए प्रेम का संचार करता है और अन्य कई लोगों को वह सत्य का दान नहीं देता। यदि वह किसी को सत्य का दान दे देता है तो हे नानक, फिर उस लोक में उसका भी लेखा-जोखा नहीं होता।। ४ ।। ३ ।। आसा महला १।। खड़ताल और घुँघरू मन के ही संकल्प-विकल्प हैं और इनके साथ दुनियाँ के व्यवहार ढोल की तरह हमेशा बजते ही रहते हैं। मन रूपी नारद कलियुग के प्रभाव में नाचता रहता है। अब भला यति और सत्यवान व्यक्ति अपना पाँव कहाँ टिकाए।। १ ।। नानक तो उस प्रभु के नाम पर बलिहारी जाता है। संसार अन्धा बना हुआ है और प्रभु तो सब कुछ जानने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। चेले गुरु के पास से खाते हैं और रोटी के लालच में उसके घर में पड़े रहते हैं।

आइ ॥ जे सउ वर्हिआ जीवण खाणु ॥ खसम पछाणै सो दिनु परवाणु ॥ २ ॥
दरसनि देखिऐ दइआ न होइ ॥ लए दिते विणु रहै न कोइ ॥ राजा निआउ करे हथि
होइ ॥ कहै खुदाइ न मानै कोइ ॥ ३ ॥ माणस मूरति नानकु नामु ॥ करणी कुता
दरि फुरमानु ॥ गुर परसादि जाणै मिहमानु ॥ ता किछु दरगह पावै मानु ॥ ४ ॥ ४ ॥
आसा महला १ ॥ जेता सबदु सुरति धुनि तेती जेता रूपु काइआ तेरी ॥ तूं
आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ माई ॥ १ ॥ साहिबु मेरा एको है ॥
एको है भाई एको है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे लेवै देइ ॥
आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ ॥ २ ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ
अवरु न करणा जाई ॥ जैसा वरतै तैसो कहीऐ सभ तेरी वडिआई ॥ ३ ॥ कलि
कलवाली माइआ मदु मीठा मनु मतवाला पीवतु रहै ॥ आपे रूप करे बहु
भांतीं नानकु बपुड़ा एव कहै ॥ ४ ॥ ५ ॥ आसा महला १ ॥ वाजा मति
पखावजु भाउ ॥ होइ अनंदु सदा मनि चाउ ॥ एहा भगति एहो तप ताउ ॥
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ १ ॥ पूरे ताल जाणै सालाह ॥ होरु नचणा
खुसीआ मन माह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु संतोखु वजहि दुइ ताल ॥ पैरी वाजा
सदा निहाल ॥ रागु नादु नही दूजा भाउ ॥ इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ २ ॥
भउ फेरी होवै मन चीति ॥ बहदिआ उठदिआ नीता नीति ॥ लेटणि लेटि जाणै
तनु सुआहु ॥ इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ ३ ॥ सिख सभा दीखिआ
का भाउ ॥ गुरमुखि सुणणा साचा नाउ ॥ नानक आखणु वेरा वेर ॥ इतु रंगि
नाचहु रखि रखि पैर ॥ ४ ॥ ६ ॥ आसा महला १ ॥ पउणु उपाइ धरी सभ
धरती जल अगनी का बंधु कीआ ॥ अंधुलै दहसिरि मूंडु कटाइआ रावणु
मारि किआ वडा भइआ ॥ १ ॥ किआ उपमा तेरी आखी जाइ ॥ तूं सरबे
पूरि रहिआ लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ उपाइ जुगति हथि कीनी काली
नथि किआ वडा भइआ ॥ किसु तूं पुरखु जोरू कउण कहीऐ सरब निरंतरि
रवि रहिआ ॥ २ ॥ नालि कुटंबु साथि वरदाता ब्रहमा भालण स्रिसटि गइआ ॥
आगै अंतु न पाइओ ता का कंसु छेदि किआ वडा भइआ ॥ ३ ॥ रतन उपाइ

बेशक व्यक्ति सैंकड़ों वर्ष तक खाता और जीवित बना रहे परन्तु उसका वही दिन स्वीकृत होगा जिस दिन वह परमात्मा को पहचान लेगा।। २ ।। केवल देखने मात्र से ही दया उत्पन्न नही हो जाती क्योंकि ऐसा कोई भी नहीं है जो देखने के बावजूद भी रिश्वत न लेता और न देता हो। राजा भी तभी न्याय करता है जब उसके हाथ में कुछ थमा दिया जाता है। परमात्मा का वास्ता देने पर भी उसका मन पसीजता नहीं।। ३ ।। हे नानक, मनुष्य तो केवल नाम और आकार से ही मनुष्य रह गया है। यह प्रभु की ओर से ही फुरमान है कि अब मनुष्य आचरण के दृष्टिकोण से तो कुत्ता ही बन कर रह गया है। गुरु की कृपा से यदि वह अपने आप को इस संसार में एक मेहमान की तरह जान ले तब उसको प्रभु दरबार में कुछ सम्मान प्राप्त हो सकता है।। ४ ।। ४ ।। आसा महला १।। हे प्रभु, जितने शब्द हैं उनकी ध्वनि को सुनने वाली सुरति भी उतनी ही हैं। हे प्रभु, सृष्टि के जितने आकार हैं ये सब तेरा ही शरीर हैं। तू स्वयं ही जीभ है, स्वयं ही नाक है और हे मेरी माँ, मैं अन्य किसी के बारे में कुछ नहीं कहता।। १।। हे भाई, मेरा प्रभु एक ही है और केवल एक ही है।। १ ।। रहाउ ।। वह स्वयं ही मारता है, स्वयं ही छोड़ता है, स्वयं ही ले लेता है और स्वयं ही सभी पदार्थ दे देता है।। २ ।। वह स्वयं ही देखता है और स्वयं ही प्रसन्न होता है तथा स्वयं ही कृपा दृष्टि करता है।। २ ।। जो उसने करना है वह कर रहा है; अन्य कोई भी कुछ नहीं कर सकता। वह जैसा करता है उसे वैसा ही कहा जाता है; हे प्रभु, यह सब बड़प्पन तेरा ही है।। ३ ।। कलियुग मानो शराब बेचने वाली स्त्री है और सांसारिक प्रपंच मीठी शराब है जिसे मतवाला मन पीता चला जा रहा है। प्रभु स्वयं ही अनेक भाँति के रूप धारण करता है और बपुरा नानक उसे इसी प्रकार वर्णन कर रहा है।। ४ ।। ५ ।। आसा महला १ ।। बुद्धि और प्रेम के रंग में रंगकर पाँव रख रख कर नृत्य करो अर्थात संसार में रहते हुए सुर और ताल में काम करते रहो।। १ ।। प्रभु के गुणानुवाद को अपना ताल बनाओ क्योंकि अन्य प्रकार का नाचना मन में (केवल) खुशी पैदा करता है (आनन्द पैदा नहीं करता)।। १।। रहाउ ।। सत्य और संतोष को खड़ताल की तरह प्रयुक्त करो और प्रभु दर्शन की प्रसन्नता को अपने पाँव के घुंघरू बनाओ। द्वैत-भाव को न रखना ही रंग और नाद है और इस प्रकार समझ बूझ कर पैर रख रख कर इसी रंग में नृत्य करते रहो।। २ ।। उठते बैठते सदैव प्रभु का भय मन में रखना तेरा नृत्य में घूमना होना चाहिए। शरीर को भस्म मानना ही मिट्टी में मिलना है अर्थात अत्यन्त विनम्र होना है। हे जीव, ऐसे रंग में लीन होकर, पाँव रख रखकर तू इसी तरह नाचता रह।। ३ ।। तेरे शिष्यों का समूह ऐसा हो जो उपदेश के मर्म को समझने वाला हो और हे जीव, गुरमुख बनकर तू प्रभु के सच्चे नाम को सुनता रह। नानक बार-बार यही कहता है कि हे जीव, तू इस प्रकार के रंग में रंगकर समझपूर्वक पैर टिका-टिका कर इस दुनियां में नृत्य करता रह।। ४ ।। ६।। आसा महला १ ।। प्रभु ने पवन को पैदा करके धरती की स्थापना की और जल और अग्नि को नियमों में बाँध दिया है। अब दस सिरों वाले रावण के सिर काट देने से भला वह प्रभु और कितना बड़ा हो गया होगा।। १।। हे प्रभु, तेरे किन किन गुणों का कथन किया जाए। तू सबका ध्यान रखता हुआ सर्वत्र व्याप्त है।। १ ।। रहाउ ।। जब सभी जीवों को उत्पन्न करके प्रभु ने सभी युक्तियों को अपने ही हाथ में ले रखा है तो भला कालिया नाग को नथकर उसने कौन सी बड़ी पदवी प्राप्त कर ली है। हे प्रभु, तू किसका पति है और कौन तेरी पत्नी है कुछ नही कहा जा सकता क्योंकि सबमें निरन्तर तू ही बस रहा है।। २ ।। वरदाता ब्रह्मा भी पूरे परिवार सहित संसार का ओर-छोर जानने के लिए कमल नाल में प्रविष्ट हो गया परन्तु वह भी जब उस प्रभु का अन्त नहीं पा सका तो भला वह प्रभु कंस को मारकर कितना बड़ा हो गया होगा।। ३ ।। क्षीर-सागर का मन्थन किया गया और उसमें से रत्न बाहर निकाले गए।

धरे खीरु मथिआ होरि भखलाए जि असी कीआ ॥ कहै नानकु छपै किउ छपिआ एकी एकी वंडि दीआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ आसा महला १ ॥ करम करतूति बेलि बिसथारी राम नामु फलु हूआ ॥ तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ ॥ १ ॥ करे वखिआणु जाणै जे कोई ॥ अंम्रितु पीवै सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह पीआ से मसत भए है तूटे बंधन फाहे ॥ जोती जोति समाणी भीतरि ता छोडे माइआ के लाहे ॥ २ ॥ सरब जोति रूपु तेरा देखिआ सगल भवन तेरी माइआ ॥ रारै रूपि निरालमु बैठा नदरि करे विचि छाइआ ॥ ३ ॥ बीणा सबदु वजावै जोगी दरसनि रूपि अपारा ॥ सबदि अनाहदि सो सहु राता नानकु कहै विचारा ॥ ४ ॥ ८ ॥ आसा महला १ ॥ मै गुण गला के सिरि भार ॥ गली गला सिरजणहार ॥ खाणा पीणा हसणा बादि ॥ जब लगु रिदै न आवहि यादि ॥ १ ॥ तउ परवाह केही किआ कीजै ॥ जनमि जनमि किछु लीजी लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की मति मतागलु मता ॥ जो किछु बोलीऐ सभु खतो खता ॥ किआ मुहु लै कीचै अरदासि ॥ पापु पुंनु दुइ साखी पासि ॥ २ ॥ जैसा तूं करहि तैसा को होइ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ जेही तूं मति देहि तेही को पावै ॥ तुधु आपे भावै तिवै चलावै ॥ ३ ॥ राग रतन परीआ परवार ॥ तिसु विचि उपजै अंम्रितु सार ॥ नानक करते का इहु धनु मालु ॥ जे को बूझै एहु बीचारु ॥ ४ ॥ ९ ॥ आसा महला १ ॥ करि किरपा अपनै घरि आइआ ता मिलि सखीआ काजु रचाइआ ॥ खेलु देखि मनि अनदु भइआ सहु वीआहण आइआ ॥ १ ॥ गावहु गावहु कामणी बिबेक बीचारु ॥ हमरै घरि आइआ जगजीवनु भतारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरू दुआरै हमरा वीआहु जि होआ जां सहु मिलिआ तां जानिआ ॥ तिहु लोका महि सबदु रविआ है आपु गइआ मनु मानिआ ॥ २ ॥ अपणा कारजु आपि सवारे होरनि कारजु न होई ॥ जितु कारजि सतु संतोखु दइआ धरमु है गुरमुखि बूझै कोई ॥ ३ ॥ भनति नानकु सभना का पिरु एको सोइ ॥ जिस नो नदरि करे सा सोहागणि होइ ॥ ४ ॥ १० ॥ आसा महला १ ॥ ग्रिहु बनु समसरि सहजि सुभाइ ॥ दुरमति गतु भई कीरति ठाइ ॥ सच पउड़ी साचउ

देव और दैत्य क्रोधित हो बौखला उठे और दोनों पक्ष इन रत्नों को अपनी कमाई कहकर झगड़ने लगे। नानक कहता है कि प्रभु छिपाने से छिपता नहीं उसने दुनियां के सारे पदार्थ सभी जीवों में बाँटे हुए हैं।। ४।। ७ ।। आसा महला १ ।। अच्छे कर्मों और अच्छे आचरण की बेल फैली हुई है जिस पर प्रभु-नाम रूपी फल लगा हुआ है। उस नाम रूपी फल की कोई रूप-रेखा नहीं है। यह प्रभु-नाम अनहद् रूप में गूँजता रहता है और यह अलिप्त प्रभु ही प्रकट करता है।। १ ।। यदि कोई इस नाम-शब्द को समझता हो तभी वह इसकी व्याख्या कर सकता है और वास्तव में वही अमृत-रस का पान करता है।। १ ।। रहाउ ।। जो इसको पी लेते हैं वे आनन्दित हो उठते हैं और उनकी धन-सम्पदा आदि की मायावी लालसा समाप्त हो जाती है।। २ ।। हे प्रभु, सब ज्योतियों में मैं तेरा ही रूप देखता हूँ और सारे विश्व के लोकों में तेरी ही माया व्याप्त है। वह प्रभु अनेकों रूपों और विवादों में भी अलिप्त बना रहता है और जो लोग अज्ञान रूपी माया की छाया में पड़े रहते हैं उन पर भी कृपा-दृष्टि करता है।। ३ ।। जो योगी नाम-शब्द की वीणा बजाता है वही प्रभु के अपरंपर रूप का दर्शन कर लेता है। नानक का कथन है कि वह प्रभु उस अनहत् शब्द में ही लीन बना हुआ है।। ४ ।। ८ ।। आसा महला १ ।। मेरा गुण यही है कि मैनें व्यर्थ की बातों के बोझ को सिर पर उठा रखा है। कर्ता-प्रभु की बातें ही सब बातों का सार-तत्व है। व्यक्ति का खाना, पीना, हँसना तब तक व्यर्थ है जब तक उसे हृदय में प्रभु याद नहीं आता।। १।। यदि व्यक्ति ने जीवन में पाने योग्य प्रभु-नाम को पा लिया है तो फिर उसे किसी अन्य की परवाह करने की क्या आवश्यकता है।। १ ।। रहाउ ।। मन की मार्ग-दर्शक बुद्धि मद्मस्त हाथी के समान है और उसके अन्तर्गत जो कुछ भी बोला जाता है वह गलत ही गलत होता है। किस मुँह से उस प्रभु के समक्ष अरदास (प्रार्थना) की जाए क्योंकि मेरे पाप (जो कि अधिक हैं) और पुण्य (जो कि कम है) मेरे पास ही गवाह के तौर पर खड़े हैं।। २ ।। तू जैसा किसी को बना देता है वह वैसा ही बन जाता है क्योंकि तेरे बिना अन्य कोई भी (सक्षम) नहीं है। जैसी बुद्धि तू प्रदान करता है हे प्रभु, वैसी ही जीव हासिल करता है और जैसे तुझे भाता है तू वैसे ही जीव को चलाता है।। ३ ।। राग और रागनियों का परिवार एक उत्तम रत्न है और इसी परिवार के संगम में से उत्पन्न प्रभु-स्तुति रूपी अमृत का सार तत्व उत्पन्न होता है। हे नानक, यदि कोई इस विचार को बूझ ले तो यही कर्ता प्रभु की धन सम्पदा है।। ४ ।। ९ ।। आसा महला १ ।। जब मेरा प्रभु मेरे हृदय में आन बसा तो मेरी इन्द्रिय रूपी सहेलियों ने प्रभु-पति के साथ मिलाप के गीत गाना शुरु कर दिया। मेरा प्रभु मुझसे विवाह करने के लिए अर्थात मुझे अपने में लीन करने के लिए आया है और प्रभु से मिलने का यह सारा उपक्रम देखकर मेरा मन आनन्दित हो उठा है।। १ ।। हे मेरी सहेली स्त्रियो (इन्द्रियो), विवेक बुद्धि उत्पन्न करने वाले गीत बार-बार गाओ क्योंकि अब मेरे हृदय में सारे संसार के जीवन का आधार स्वामी प्रभु आन बसा है।। १ ।। रहाउ ।। गुरु की शरण में आने से ही यह विवाह सम्भव हुआ और प्रभु को मिलकर मैनें उसे पहचान लिया कि यही प्रभु शब्द रूप में तीनों लोकों में व्याप्त बना हुआ है और अहंकार को दूर करके ही मन इस शब्द रूपी प्रभु-पति के सुमिरन में लीन बना रहता है।। २ ।। प्रभु अपना कार्य आप ही ठीक कर लेता है और अन्य किसी से वह कार्य सम्पन्न नहीं हो पाता। जिस कार्य के फलस्परूप सत्य, संतोष, दया और धर्म उत्पन्न होते हैं, कोई बिरला गुरमुख ही उसे समझ पाता है।। ३ ।। नानक कहता है कि सबका प्रिय वही एक परमात्मा ही है। जिस पर वह प्रभु-पति कृपा-दृष्टि करता है वही जीव-स्त्री सच्ची सुहागिन होती है।। ४ ।। १०।। आसा महला १ ।। सहज-स्वाभाविक जीवन व्यतीत करने वाले के लिए घर और वन एक समान ही होते हैं। ऐसे समदर्शी की दुर्मति दूर हो जाती है और उसका स्थान प्रभु गुणानुवाद ले लेता है। सत्य और सत्य का कथन ही

मुखि नांउ ॥ सतिगुरु सेवि पाए निज थाउ ॥ १ ॥ मन चूरे खटु दरसन जाणु ॥ सरब जोति पूरन भगवानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अधिक तिआस भेख बहु करै ॥ दुखु बिखिआ सुखु तनि परहरै ॥ कामु क्रोधु अंतरि धनु हिरै ॥ दुबिधा छोडि नामि निसतरै ॥ २ ॥ सिफति सलाहणु सहज अनंद ॥ सखा सैनु प्रेमु गोबिंद ॥ आपे करे आपे बखसिंदु ॥ तनु मनु हरि पहि आगै जिंदु ॥ ३ ॥ झूठ विकार महा दुखु देह ॥ भेख वरन दीसहि सभि खेह ॥ जो उपजै सो आवै जाइ ॥ नानक असथिरु नामु रजाइ ॥ ४ ॥ ११ ॥ आसा महला १ ॥ एको सरवरु कमल अनूप ॥ सदा बिगासै परमल रूप ॥ ऊजल मोती चूगहि हंस ॥ सरब कला जगदीसै अंस ॥ १ ॥ जो दीसै सो उपजै बिनसै ॥ बिनु जल सरवरि कमलु न दीसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिरला बूझै पावै भेदु ॥ साखा तीनि कहै नित बेदु ॥ नाद बिंद की सुरति समाइ ॥ सतिगुरु सेवि परम पदु पाइ ॥ २ ॥ मुकतो रातउ रंगि रवांतउ ॥ राजन राजि सदा बिगसांतउ ॥ जिसु तूं राखहि किरपा धारि ॥ बूडत पाहन तारहि तारि ॥ ३ ॥ त्रिभवण महि जोति त्रिभवण महि जाणिआ ॥ उलट भई घरु घर महि आणिआ ॥ अहिनिसि भगति करे लिव लाइ ॥ नानकु तिन कै लागै पाइ ॥ ४ ॥ १२ ॥ आसा महला १ ॥ गुरमति साची हुजति दूरि ॥ बहुतु सिआणप लागै धूरि ॥ लागी मैलु मिटै सच नाइ ॥ गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ है हजूरि हाजरु अरदासि ॥ दुखु सुखु साचु करते प्रभ पासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूड़ु कमावै आवै जावै ॥ कहणि कथनि वारा नही आवै ॥ किआ देखा सूझ बूझ न पावै ॥ बिनु नावै मनि त्रिपति न आवै ॥ २ ॥ जो जनमे से रोगि विआपे ॥ हउमै माइआ दूखि संतापे ॥ से जन बाचे जो प्रभि राखे ॥ सतिगुरु सेवि अंम्रित रसु चाखे ॥ ३ ॥ चलतउ मनु राखै अंम्रितु चाखै ॥ सतिगुर सेवि अंम्रित सबदु भाखै ॥ साचै सबदि मुकति गति पाए ॥ नानक विचहु आपु गवाए ॥ ४ ॥ १३ ॥ आसा महला १ ॥ जो तिनि कीआ सो सचु थीआ ॥ अंम्रित नामु सतिगुरि दीआ ॥ हिरदै नामु नाही मनि भंगु ॥ अनदिनु नालि पिआरे संगु ॥ १ ॥ हरि जीउ राखहु अपनी सरणाई ॥

प्रभु तक पहुँचने की सच्ची सीढ़ी है। सच्चे गुरु की सेवा करने वाला व्यक्ति अपना वास्तविक स्थान प्राप्त कर लेता है।। १ ।। मन को जीतना ही छः दर्शनों को जानने के समान है। मन को जीतने पर ही व्यक्ति यह जान पाता है कि सबमें पूर्ण प्रभु की ज्योति व्याप्त हो रही है।। १ ।। रहाउ।। अधिक तृष्णाएं व्यक्ति से अनेकों प्रकार के वेश धारण करवाती हैं और इस प्रकार वह दुख रूपी पीड़ा को झेलता है और सुख उसके तन से दूर हो जाता है। काम और क्रोध उसके अन्तर्मन के आध्यात्मिक धन को चुरा लेते हैं। दुविधा छोड़ने पर ही व्यक्ति प्रभु-नाम के आसरे पार उतरता है।। २ ।। प्रभु के गुणानुवाद में ही सहज आनन्द प्राप्त होता है। प्रभु का प्रेम ही व्यक्ति का मित्र और सम्बन्धी है। प्रभु स्वयं ही कर्ता है और स्वयं ही क्षमाशील भी है। मेरा तन-मन और मेरे प्राण उस प्रभु के सामने अर्पण हैं।। ३ ।। झूठ और विकार बहुत दुख देने वाले हैं। इसी प्रकार वेश और वर्ण तथा जातियाँ सभी राख के समान दिखाई पड़ती हैं। जो पैदा होता है वह तो आवागमन में पड़ा ही रहेगा परन्तु हे नानक, एक प्रभु का हुकुम ही सदैव स्थिर बना रहता है।। ४ ।। ११ ।। आसा महला १ ।। एक ही सरोवर में अनुपम कमल खिले हुए हैं जो सदैव खिलते रहते हैं और उनका रूप अत्यन्त पवित्र है। उसी सरोवर में उज्जवल हंस मोती चुगते हैं। यह सारा दृष्य तो उस प्रभु का एक अंश मात्र है।। १ ।। जो दिखाई देता है वह सब उपजता और विनष्ट होता रहता है परन्तु प्रभु-नाम के जल बिना जल के सरोवर में गुरमुख रूपी कमल दिखाई नहीं पड़ते।। १ ।। रहाउ ।। कोई बिरला ही इसके रहस्य को समझता है क्योंकि वेद तो परम सत्ता की तीन शाखाओं का ही कथन करते हैं; कभी त्रिमूर्ति, कभी त्रिगुण और कभी त्रिमात्रा आदि की बातें उसमें से उभरती दिखाई देती हैं। नाद और बिन्दु अर्थात सृष्टि से पूर्व शब्द रूप में प्रभु और उसके सृजनकर्ता के रूप को एक ही मानने की बुद्धि यदि व्यक्ति को प्राप्त हो जाए तभी वह त्रिगुणात्मक अवस्था से ऊपर उठकर अपनी सुरति को उस परम सत्ता में लीन कर सकता है। सच्चे गुरु की सेवा करने से ही इस प्रकार का परम पद प्राप्त होता है।। २ ।। जो प्रभु के रंग में रंगा रहता है वही प्रभु-नाम का सुमिरन करता है और मुक्त हो जाता है। वह सम्राटों का भी सम्राट है और सदैव खिला रहता है। हे प्रभु, जिस पर तू कृपा करता है वह बेशक डूबता हुआ पत्थर ही क्यों न हो तू उसे पार कर देता है।। ३ ।। तेरी ज्योति तीनों लोकों में है और तुझे मैंने तीनों लोकों में अनुभव किया है। ऐसी समझ के फलस्वरूप मैं संसार के प्रति उलट कर अपने निज स्वरूप (घर) में स्थित हो गया हूं। नानक उसके चरण स्पर्श करता है जो दिन-रात लीन होकर प्रभु का सुमिरन करता रहता है।। ४ ।। १२ ।। आसा महला १।। गुरु की सच्ची शिक्षा के फलस्वरूप हुज्जत अर्थात वितण्डावाद दूर हो जाता है। बहुत अधिक चतुराई के फलस्वरूप व्यक्ति को दुष्कर्मों की धूल लगती ही रहती है। इस प्रकार की लगी हुई मैल को प्रभु के सच्चे नाम से ही धोया जाता है और फिर गुरु की कृपा से व्यक्ति प्रभु में ही अपनी लौ लगाए रहता है।। १ ।। प्रभु सदैव उपस्थित है; तू उसी के समक्ष अरदास कर। तेरा सारा दुख और सुख उस सत्य, कर्ता-प्रभु के हाथ में ही है।। १ ।। रहाउ ।। जो झूठ की कमाई करता है वह आता-जाता भटकता रहता है। केवल कहने और कथन करने मात्र से ही उस प्रभु का पारावार समझ नहीं आता। उसने क्या देखा है उसकी उसे कुछ भी सूझ बूझ नहीं प्राप्त होती क्योंकि प्रभु-नाम के बिना मन में तृप्ति का निवास नहीं होता।। २ ।। जो पैदा हुए हैं वे सभी रोग से ग्रस्त हैं और माया के अन्तर्गत अहंकार के दुख से पीड़ित हैं। जिन्हें प्रभु बचाता है केवल वे व्यक्ति ही बच पाते हैं क्योंकि उन्होंने सच्चे गुरु की सेवा करके अमृत-रस को चखा होता है।। ३ ।। चंचल मन को स्थिर करने वाला ही अमृत-रस का पान करता है और सच्चे गुरु की सेवा के माध्यम से अमृत वचनों का उच्चारण करता है। सच्चे शब्द के माध्यम से ही जीवन में मुक्ति और गति प्राप्त होती है और हे नानक, व्यक्ति के अन्तर्मन का अभिमान खो जाता है।। ४ ।। १३ ।। आसा महला १।। जो उस प्रभु ने किया है वह सत्य रूप में प्रकट होता है। अमृत रूपी नाम सच्चा गुरु ही प्रदान करता है। हृदय में प्रभु-नाम धारण करने वाला कभी मन से उस प्रभु के साथ अपना सम्बन्ध भंग नहीं होने देता और रात-दिन उस प्रभु की संगति में ही बना रहता है।। १ ।। हे प्रभु, मुझे अपनी ही

गुर परसादी हरि रसु पाइआ नामु पदारथु नउ निधि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम धरम सचु साचा नाउ ॥ ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ जो हरि राते से जन परवाणु ॥ तिन की संगति परम निधानु ॥ २ ॥ हरि वरु जिनि पाइआ धन नारी ॥ हरि सिउ राती सबदु वीचारी ॥ आपि तरै संगति कुल तारै ॥ सतिगुरु सेवि ततु वीचारै ॥ ३ ॥ हमरी जाति पति सचु नाउ ॥ करम धरम संजमु सत भाउ ॥ नानक बखसे पूछ न होइ ॥ दूजा मेटे एको सोइ ॥ ४ ॥ १४ ॥ आसा महला १ ॥ इकि आवहि इकि जावहि आई ॥ इकि हरि राते रहहि समाई ॥ इकि धरनि गगन महि ठउर न पावहि ॥ से करमहीण हरि नामु न धिआवहि ॥ १ ॥ गुर पूरे ते गति मिति पाई ॥ इहु संसारु बिखु वत अति भउजलु गुर सबदी हरि पारि लंघाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह कउ आपि लए प्रभु मेलि ॥ तिन कउ कालु न साकै पेलि ॥ गुरमुखि निरमल रहहि पिआरे ॥ जिउ जल अंभ ऊपरि कमल निरारे ॥ २ ॥ बुरा भला कहु किस नो कहीऐ ॥ दीसै ब्रहमु गुरमुखि सचु लहीऐ ॥ अकथु कथउ गुरमति वीचारु ॥ मिलि गुर संगति पावउ पारु ॥ ३ ॥ सासत बेद सिंम्रिति बहु भेद ॥ अठसठि मजनु हरि रसु रेद ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लागै ॥ नानक हिरदै नामु वडे धुरि भागै ॥ ४ ॥ १५ ॥ आसा महला १ ॥ निवि निवि पाइ लगउ गुर अपुने आतम रामु निहारिआ ॥ करत बीचारु हिरदै हरि रविआ हिरदै देखि बीचारिआ ॥ १ ॥ बोलहु रामु करे निसतारा ॥ गुर परसादि रतनु हरि लाभै मिटै अगिआनु होइ उजीआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रवनी रवै बंधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै ता को लेखै पाई ॥ २ ॥ हरि हरि नामु भगति प्रिअ प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ॥ भगति वछलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥ ३ ॥ मन सिउ जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाए ॥ नानक क्रिपा करे जगजीवनु सहज भाइ लिव लाए ॥ ४ ॥ १६ ॥ आसा महला १ ॥ किस कउ कहहि सुणावहि किस कउ किसु समझावहि समझि रहे ॥ किसै पड़ावहि पड़ि गुणि बूझे सतिगुर

शरण में बनाए रख। गुरु की कृपा से मैने प्रभु के मर्म को पा लिया है और नाम रूपी पदार्थ को पा लेने के बाद मुझे नवनिधियां प्राप्त हो गई हैं।। १ ।। रहाउ ।। जिनका कर्म और धर्म सत्य प्रभु का सच्चा नाम ही है मैं उन पर सदैव बलिहारी जाता हूँ। जो प्रभु के रंग में रंगे गए हैं वे सेवक स्वीकृत होते हैं और उनकी संगति में सबसे उत्तम खज़ाना प्राप्त होता है।। २ ।। वह स्त्री धन्य है जिसने प्रभु-रूपी वर को प्राप्त कर लिया है। वह शब्द का चिन्तन करती हुई प्रभु में लीन बनी रहती है। वह स्वयं तो पार उतर ही जाती है, साथ ही साथ समस्त सत्संगियों को भी पार उतार देती है। वह सच्चे गुरु की सेवा करते हुए तत्व चिन्तन करती रहती हैं।। ३ ।।मेरी जाति और मेरा सम्मान केवल सच्चा नाम ही है। सत्य में प्रेम ही वास्तविक धर्म-कर्म और संयम है। जिसे प्रभु क्षमा कर देता है, हे नानक, उसकी कोई जाँच-पड़ताल नहीं होती और केवल एक प्रभु ही जीव में से द्वैत-भाव मिटाता है।। ४ ।। १४ ।। आसा महला १।। कई जन्म लेते हैं और कई संसार में आकर यहाँ से चले जाते हैं। कई प्रभु के रंग में लीन होकर उसी के प्रेम में रंगे रहते हैं। कईयों को धरती आकाश में कहीं भी स्थान नहीं मिलता। ऐसे कृपा-विहीन जीव प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करते। पूर्ण-गुरु से ही मुक्ति का मार्ग प्राप्त होता है। यह संसार बहुत भयानक विष-सागर है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही प्रभु व्यक्ति को इससे पार कराता है।। १ ।। रहाउ।। जिन्हें प्रभु स्वयं अपने से मिला लेता है मौत उन्हें कुचल नहीं सकती। गुरमुख व्यक्ति उसी प्रकार निर्मल बने रहते हैं जैसे जल के ऊपर कमल अलिप्त बना रहता है।। २ ।। अब किसे बुरा और किसे भला कहा जाए क्योंकि गुरमुख बनकर सत्य को पहचाना जाता है और तब केवल परमात्मा ही दिखाई देता है। ऐसा व्यक्ति गुरु के उपदेश पर विचार करता है और उस अकथनीय प्रभु का कथन करता है। गुरु की संगति से मिलकर वह इस संसार-सागर से पार उतर जाता है।। ३ ।। प्रभु-रस को हृदय में धारण करना शास्त्रों, वेदों, स्मृतियों के अनेकों भेदों को जानना और अड़सठ तीर्थों पर स्नान करना है। निर्मल गुरमुख व्यक्ति को विषय-विकारों की कोई मैल नहीं लगती। हे नानक, अच्छे भाग्य लिखे होने से हृदय में प्रभु का नाम बसता है।। ४ ।। १५ ।। आसा महला १।। मैं झुक-झुक कर अपने गुरु के चरणों में गिरता हूँ क्योंकि उसी के माध्यम से मैने प्रभु को अपनी आत्मा में ही देख लिया है। उसका चिन्तन करने से वह हृदय में आ बसा है और मैंने उसे अपने हृदय में ही देखकर उसका सुमिरन किया है। राम का सुमिरन करो जो पार उतारा करने वाला है। गुरु की कृपा से प्रभु रूपी रत्न मिल जाता है और अज्ञान मिटकर ज्ञान का उजाला हो जाता है।। १ ।। रहाउ ।। केवल जीभ से बोलते रहने पर ही बन्धन नहीं टूटते और अन्तर्मन का अहंकार और भ्रम नहीं जाता। सच्चा गुरु मिलने पर ही अहंकार टूटता है और तब ही व्यक्ति का परिश्रम सफल होता है।। २ ।। प्रभु का नाम भक्ति करने वालों को प्रिय लगता है क्योंकि प्रियतम को हृदय में धारण करना सुख के सागर में रहने के समान है। भक्तवत्सल प्रभु जगजीवन दाता है और उसकी शिक्षा गुरमति के रूप में मिलती है जिससे प्राणी का उद्धार हो जाता है।। ३ ।। जो मन से जूझता हुआ विषय-विकारों की ओर से मृत हो जाता है उसकी सभी आशाएं मन में ही लीन होकर समाप्त हो जाती हैं और वह प्रभु को पा लेता है। हे नानक, यदि जग का जीवन प्रभु कृपा करे तो व्यक्ति सहज-भाव में ही उसमें सुरति जोड़े रखता है।। ४।। १६ ।। आसा महला १ ।।जब प्रभु घट-घट में व्याप्त है तो कह-कह कर किसको सुनाने या समझाने की आवश्यकता है। किसको पढ़ाते हो;

सबदि संतोखि रहे ॥ १ ॥ ऐसा गुरमति रमतु सरीरा ॥ हरि भजु मेरे मन गहिर गंभीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनत तरंग भगति हरि रंगा ॥ अनदिनु सूचे हरि गुण संगा ॥ मिथिआ जनमु साकत संसारा ॥ राम भगति जनु रहै निरारा ॥ २ ॥ सूची काइआ हरि गुण गाइआ ॥ आतमु चीनि रहै लिव लाइआ ॥ आदि अपारु अपरंपरु हीरा ॥ लालि रता मेरा मनु धीरा ॥ ३ ॥ कथनी कहहि कहहि से मूए ॥ सो प्रभु दूरि नाही प्रभु तूं है ॥ सभु जगु देखिआ माइआ छाइआ ॥ नानक गुरमति नामु धिआइआ ॥ ४ ॥ १७ ॥ आसा महला १ तितुका ॥ कोई भीखकु भीखिआ खाइ ॥ कोई राजा रहिआ समाइ ॥ किस ही मानु किसै अपमानु ॥ ढाहि उसारे धरे धिआनु ॥ तुझ ते वडा नाही कोइ ॥ किसु वेखाली चंगा होइ ॥ १ ॥ मै तां नामु तेरा आधारु ॥ तूं दाता करणहारु करतारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वाट न पावउ वीगा जाउ ॥ दरगह बैसण नाही थाउ ॥ मन का अंधुला माइआ का बंधु ॥ खीन खराबु होवै नित कंधु ॥ खाण जीवण की बहुती आस ॥ लेखै तेरै सास गिरास ॥ २ ॥ अहिनिसि अंधुले दीपकु देइ ॥ भउजल डूबत चिंत करेइ ॥ कहहि सुणहि जो मानहि नाउ ॥ हउ बलिहारै ता कै जाउ ॥ नानकु एक कहै अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥ ३ ॥ जां तूं देहि जपी तेरा नाउ ॥ दरगह बैसण होवै थाउ ॥ जां तुधु भावै ता दुरमति जाइ ॥ गिआन रतनु मनि वसै आइ ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मिलै ॥ प्रणवति नानकु भवजलु तरै ॥ ४ ॥ १८ ॥ आसा महला १ पंचपदे ॥ दुध बिनु धेनु पंख बिनु पंखी जल बिनु उतभुज कामि नाही ॥ किआ सुलतानु सलाम विहूणा अंधी कोठी तेरा नामु नाही ॥ १ ॥ की विसरहि दुखु बहुता लागै ॥ दुखु लागै तूं विसरु नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अखी अंधु जीभ रसु नाही कंनी पवणु न वाजै ॥ चरणी चलै पजूता आगै विणु सेवा फल लागे ॥ २ ॥ अखर बिरख बाग भुइ चोखी सिंचित भाउ करेही ॥ सभना फलु लागै नामु एको बिनु करमा कैसे लेही ॥ ३ ॥ जेते जीअ तेते सभि तेरे विणु सेवा फलु किसै नाही ॥ दुखु सुखु भाणा तेरा होवै विणु नावै जीउ रहै नाही ॥ ४ ॥ मति विचि मरणु जीवणु

जिन्होंने सच्चे गुरु के शब्द के माध्यम से संतुष्टि प्राप्त कर ली है उन्हें भला क्या पढ़ाते हो क्योंकि उन्होंने पढ़कर उसके मर्म को बूझ लिया है।। १ ।। हे मेरे मन, तू ऐसे गहन और गम्भीर प्रभु का सुमिरन कर जो सारे शरीरों में गुरु की मति के अनुसार चलने पर रमण करता हुआ अनुभव होता है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु की भक्ति और रंग में अनेकों ही खुशी की तरंगों का अनुभव होता है। जिसे प्रभु के गुणानुवाद की संगति प्राप्त है वे सदैव पवित्र बने रहते हैं। प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति का जीवन इस संसार में व्यर्थ है। प्रभु की भक्ति में लीन सेवक सदैव निराला ही बना रहता है।। २ ।। जिस शरीर ने प्रभु-गुणानुवाद किया है वह पवित्र है। वही व्यक्ति आत्मा में प्रभु को पहचान कर उसमें लौ लगाए रहता है। प्रभु सबका आदि है, अपार है और अपरंपर तथा बहुमूल्य रत्न है। उस प्रियतम के साथ मेरा मन रंगा गया है और संतुष्ट हो गया है।। ३ ।। जो केवल बातें ही करते हैं वे वास्तव में मरे हुए लोग हैं। हे प्रभु, तुम दूर नहीं हो और बिल्कुल पास ही हो। मैंने सारे संसार को माया की छाया में विचरण करते हुए देखा है। हे नानक, गुरु के उपदेश में चलकर मैंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है।। ४ ।। १७ ।। आसा महला१।। तीन पंक्तियों वाला।। कोई भिखारी है जो केवल माँगा हुआ ही खाता है और कोई राजा है जो अपने आप में ही मस्त है। किसी का सम्मान है और किसी का अपमान होता है। परमात्मा ही मिटाता, बनाता और सबका ध्यान रखता है। हे प्रभु, तुझसे बड़ा अन्य कोई नही। है। मैं किसे प्रस्तुत करूँ जो तुझसे भी अच्छा हो अर्थात ऐसा कोई भी नहीं है। मेरा आसरा तो केवल तेरा नाम ही है। हे कर्ता-प्रभु, तू ही दाता है और सब कुछ करने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। मैं सीधे रास्ते पर नहीं चलता और टेढ़े रास्ते पर जाता हूँ। इसीलिए परमात्मा के समक्ष मुझे बैठने का कोई स्थान नहीं मिलता। मैं मानसिक तौर पर अन्धा हो गया हूँ और मैंने अपने आपको सांसारिक बन्धनों में बांधा हुआ है। मेरा शरीर सदैव क्षीण होकर विनाश की ओर जा रहा है। हे जीव, खाने और जीने की बहुत सी आशाएं तूने लगा रखी हैं। परन्तु तू यह नहीं जानता कि तेरे श्वास और ग्रास गिनती के हैं।। २ ।। हे प्रभु, अन्धे अज्ञानी को सदैव ज्ञान का प्रकाश दे और उसकी चिन्ता कर जो भयानक संसार सागर में डूब रहा है। जो कहते सुनते और प्रभु के नाम को मानते हैं मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। नानक एक ही अरदास करता है कि हे प्रभु, मेरा शरीर और प्राण सब तुझे ही अर्पण हैं।। ३ ।। यदि तुझे भा जाए तो दुमर्ति दूर हो जाती है और ज्ञान रूपी रत्न मन में आन बसता है। प्रभु कृपा-दृष्टि करे तो सच्चा गुरु मिलता है और इस प्रकार नानक प्रार्थना करता है कि व्यक्ति संसार सागर से पार उतर जाता है।। ४ ।। १८ ।। आसा महला १।। पंचपदे ।। दूध के बिना गाय, पंखों के बिना पक्षी और जल के बिना वनस्पति किसी काम के नहीं रहते। जिस हाकिम को कोई सलाम करने वाला भी नहीं है वह भला कैसा सुल्तान है। इसी प्रकार प्रभु-नाम से विहीन यह शरीर अन्धकार से भरा हुआ घर है।। १ ।। परमात्मा को कैसे भुलाया जाए क्योंकि उसके भूल जाने से बहुत दुख लगने लगता है। हे प्रभु, तू मुझे विस्मृत न हो क्योंकि ऐसा होने से मैं घोर दुख में जा पड़ता हूँ।। १।। रहाउ ।। व्यक्ति आँखों से अन्धा हो जाता है, जीभ रस विहीन हो जाती है और कानों से आवाज़ नहीं सुनाई पड़ती। व्यक्ति को पकड़कर सहारा दिया जाए तभी वह आगे बढ़ पाता है। ये सब फल उसे सेवा वाला जीवन न अपनाने के बदले बुढ़ापे के दुख के रूप में मिलते हैं।। २ ।। गुरु की वाणी के अक्षर अर्थात गुरु का उपदेश बाग के पौधे हैं और शुद्ध हृदय स्वच्छ धरती है जिस पर यह पौधे लगाए जाने हैं। सबसे प्यार करना मानों इन पौधों को पानी देना है। इस प्रकार इन सारे पौधों को एक जैसा ही नाम रूपी फल लगेगा परन्तु यह फल भला सेवा के बिना कैसे प्राप्त होगा।। ३ ।। हे प्रभु, जितने भी जीव हैं वे सब तेरे ही हैं और बिना सेवा के किसी को भी कोई फल नहीं मिलता। दुख-सुख तो तेरी रज़ा हैं परन्तु प्रभु-नाम के बिना जीवन चलता नहीं है।। ४ ।। गुरु की मति के माध्यम से जो अहम् भाव के प्रति मरते हैं वास्तविक जीवन उन्हीं का है।

होरु कैसा जा जीवा तां जुगति नाही ॥ कहै नानकु जीवाले जीआ जह भावै तह राखु तुही ॥ ५ ॥ १९ ॥ आसा महला १ ॥ काइआ ब्रहमा मनु है धोती ॥ गिआनु जनेऊ धिआनु कुसपाती ॥ हरि नामा जसु जाचउ नाउ ॥ गुर परसादी ब्रहमि समाउ ॥ १ ॥ पांडे ऐसा ब्रहम बीचारु ॥ नामे सुचि नामो पड़उ नामे चजु आचारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाहरि जनेऊ जिचरु जोति है नालि ॥ धोती टिका नामु समालि ॥ ऐथै ओथै निबही नालि ॥ विणु नावै होरि करम न भालि ॥ २ ॥ पूजा प्रेम माइआ परजालि ॥ एको वेखहु अवरु न भालि ॥ चीन्है ततु गगन दस दुआर ॥ हरि मुखि पाठ पड़ै बीचार ॥ ३ ॥ भोजनु भाउ भरमु भउ भागै ॥ पाहरूअरा छबि चोरु न लागै ॥ तिलकु लिलाटि जाणै प्रभु एकु ॥ बूझै ब्रहमु अंतरि बिबेकु ॥ ४ ॥ आचारी नही जीतिआ जाइ ॥ पाठ पड़ै नही कीमति पाइ ॥ असट ॥ दसी चहु भेदु न पाइआ ॥ नानक सतिगुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ ५ ॥ २० ॥ आसा महला १ ॥ सेवकु दासु भगतु जनु सोई ॥ ठाकुर का दासु गुरमुखि होई ॥ जिनि सिरि साजी तिनि फुनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ १ ॥ साचु नामु गुर सबदि वीचारि ॥ गुरमुखि साचे साचै दरबारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचा अरजु सची अरदासि ॥ महली खसमु सुणे साबासि ॥ सचै तखति बुलावै सोइ ॥ दे वडिआई करे सु होइ ॥ २ ॥ तेरा ताणु तूहै दीबाणु ॥ गुर का सबदु सचु नीसाणु ॥ मंने हुकमु सु परगटु जाइ ॥ सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥ ३ ॥ पंडित पड़हि वखाणहि वेदु ॥ अंतरि वसतु न जाणहि भेदु ॥ गुर बिनु सोझी बूझ न होइ ॥ साचा रवि रहिआ प्रभु सोइ ॥ ४ ॥ किआ हउ आखा आखि वखाणी ॥ तूं आपे जाणहि सरब विडाणी ॥ नानक एको दरु दीबाणु ॥ गुरमुखि साचु तहा गुदराणु ॥ ५ ॥ २१ ॥ आसा महला १ ॥ काची गागरि देह दुहेली उपजै बिनसै दुखु पाई ॥ इहु जगु सागरु दुतरु किउ तरीऐ बिनु हरि गुर पारि न पाई ॥ १ ॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे पिआरे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे ॥ सरबी रंगी रूपी तूंहै तिसु बखसे जिसु नदरि करे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी ॥ सखी साजनी के

इसके अतिरिक्त और जीवन भला कैसे हो सकता है। यदि किसी अन्य विधि से मैं जीता रहूँ तो वह युक्ति वास्तविक जीवन जीने की नहीं है। नानक कहता है कि जीवों को वह अपनी इच्छा के अनुसार ही जीवित रखता है। हे प्रभु, तुझे जैसा भाता है तू वैसा ही रख।। ५ ।। १६ ।। आसा महला १ ।। हे कर्मकाण्डी व्यक्ति, यह शरीर ही ब्राह्मण है, मन धोती है, ज्ञान जनेऊ है और ध्यान कुशाग्रास है। तीर्थ-स्थान के बदले मैं प्रभु-नाम का यश गायन माँगता हूँ। गुरु की कृपा से ही परमात्मा में लीन हुआ जाता है।। १ ।। हे पण्डित, इस प्रकार प्रभु का सुमिरन कर कि उसका नाम तेरी पवित्रता, पढ़ाई, तेरा जीवन-ढंग और जीवन का आचरण बन जाए।। १ ।। रहाउ ।। यह बाहर का जनेऊ भी तभी तक है जब तक प्रभु की ज्योति तेरे अन्दर बिराजमान है अर्थात ज्योति के निकल जाने से यह शरीर और जनेऊ बना नही रहता। तू प्रभु के सुमिरन को अपनी धोती और माथे का टीका बना; यही यहाँ और वहाँ तेरे साथ निभेगा। प्रभु-नाम के बिना तू अन्य कर्मकाण्डों की खोज-बीन मत कर।। २ ।। प्रेमपूर्वक प्रभु की उपासना कर और मायावी इच्छाओं को जला दे। केवल एक प्रभु को ही देख और दूसरों को ढूँढने के लिए मत दौड़। अपने अन्दरूनी आकाश के दसवें द्वार में तू वास्तविकता की पहचान कर। मुख से प्रभु का सुमिरन कर और पढ़े हुए पर चिन्तन कर।। ३ ।। प्रेम रूपी भोजन करने से भ्रम और भय भाग जाते हैं और यदि पहरा देने वाला दमदार हो तो चोर चोरी नहीं कर पाते। एक प्रभु को ही जानना मानों माथे पर तिलक लगाना है। तेरी विवेक-बुद्धि इसी में है कि तू केवल एक परमात्मा को ही जाने।। ४ ।। विभिन्न प्रकार के कर्मकाण्डी आचरणों से प्रभु को जीता नहीं जा सकता और केवल पाठ करते रहने से उस प्रभु की कीमत को नहीं आंका जा सकता। अठारहों पुराण और चारों वेद भी उसके रहस्य को नहीं जान पाए। हे नानक, सच्चे गुरु ने मुझे वह परमात्मा दिखा दिया है।। ५ ।। २० ।। आसा महला १ ।। प्रभु का दास और सेवक उसका भक्त ही होता है और गुरमुख सेवक ही उस प्रभु का दास होता है। जिसने सृष्टि की रचना की है वही अन्ततः उसे लय कर देगा। उस प्रभु के बिना दूसरा कोई भी नहीं है जो ऐसा कर सकता हो।। १ ।। शब्द-गुरु के विचार से सच्चा नाम प्राप्त होता है और गुरमुख व्यक्ति सत्य के दरबार में सत्य रूप में स्थित रहता है।। १ ।। रहाउ ।। सच्ची प्रार्थना और सच्ची अरदास को वह धन्य प्रभु अपने स्थान पर बैठा हुआ ही सुन लेता है। सच्ची अरदास करने वाले को वह अपने सत्य के सिंहासन पर बुलाता है और उसे ही सम्मान देता है। वह प्रभु ही जो करता है वह होता है।। २ ।। हे प्रभु, तेरा ही आसरा है और तेरी ही शक्ति मुझमें है। शब्द-गुरु ही मेरे लिए सत्य की पहचान का चिन्ह है। जो प्रभु के हुकुम को मानता है वह प्रकट रूप में सम्मान सहित जाता है और सत्य का चिन्ह पास होने से उसे कोई रुकावट नहीं आती।। ३ ।। पण्डित वेदों को पढ़ता और उनकी व्याख्या करता है परन्तु अपने अन्तर्मन की वास्तविक वस्तु का रहस्य नहीं समझ पाता। गुरु के बिना यह विवेक-बुद्धि नहीं प्राप्त होती कि वह सच्चा प्रभु ही सब जगह व्याप्त है ।। ४ ।। मैं क्या कहूँ और क्या व्याख्यान करूँ। हे आश्चर्य रूप प्रभु, तू खुद ही सारा कुछ जानता है। नानक का तो उस प्रभु का द्वार ही एक आसरा है और गुरमुखों की तो उसी सत्य रूपी द्वार पर ही गुज़र बसर होती है।। ५ ।। २१ ।। यह शरीर कच्ची गागर के समान है जो जन्म लेने और विनष्ट होने में ही दुख पाती रहती है। इस भयानक ना तैरे जा सकने वाले संसार-सागर को कैसे पार किया जाए? बिना परमात्मा रूपी गुरु के इसे पार नहीं किया जा सकता।। १ ।। हे मेरे प्यारे प्रभु, मैं बार-बार कहता हूँ कि तेरे बिना मेरा अन्य कोई नहीं है। सभी रंगों में तू ही विद्यमान है और तू उसी को क्षमा करता है जिस पर तेरी कृपा-दृष्टि होती है।। १ ।। रहाउ ।। माया रूपी मेरी सास बहुत ही बुरी है जो न तो मुझे अन्तर्मन रूपी घर में टिकने देती है और न ही मुझे प्रियतम से मिलने देती है। सखी-सहेलियों

हउ चरन सरेवउ हरि गुर किरपा ते नदरि धरी ॥ २ ॥ आपु बीचारि मारि मनु देखिआ तुम सा मीतु न अवरु कोई ॥ जिउ तूं राखहि तिव ही रहणा दुखु सुखु देवहि करहि सोई ॥ ३ ॥ आसा मनसा दोऊ बिनासत त्रिहु गुण आस निरास भई ॥ तुरीआवसथा गुरमुखि पाईऐ संत सभा की ओट लही ॥ ४ ॥ गिआन धिआन सगले सभि जप तप जिसु हरि हिरदै अलख अभेवा ॥ नानक राम नामि मनु राता गुरमति पाए सहज सेवा ॥ ५ ॥ २२ ॥ आसा महला १ पंचपदे ॥ मोहु कुटंबु मोहु सभ कार ॥ मोहु तुम तजहु सगल वेकार ॥ १ ॥ मोहु अरु भरमु तजहु तुम्ह बीर ॥ साचु नामु रिदे रवै सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु नामु जा नव निधि पाई ॥ रोवै पूतु न कलपै माई ॥ २ ॥ एतु मोहि डूबा संसारु ॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ ३ ॥ एतु मोहि फिरि जूनी पाहि ॥ मोहे लागा जम पुरि जाहि ॥ ४ ॥ गुर दीखिआ ले जपु तपु कमाहि ॥ ना मोहु तूटै ना थाइ पाहि ॥ ५ ॥ नदरि करे ता एहु मोहु जाइ ॥ नानक हरि सिउ रहै समाइ ॥ ६ ॥ २३ ॥ आसा महला १ ॥ आपि करे सचु अलख अपारु ॥ हउ पापी तूं बखसणहारु ॥ १ ॥ तेरा भाणा सभु किछु होवै ॥ मनहठि कीचै अंति विगोवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख की मति कूड़ि विआपी ॥ बिनु हरि सिमरण पापि संतापी ॥ २ ॥ दुरमति तिआगि लाहा किछु लेवहु ॥ जो उपजै सो अलख अभेवहु ॥ ३ ॥ ऐसा हमरा सखा सहाई ॥ गुर हरि मिलिआ भगति द्रिड़ाई ॥ ४ ॥ सगंली सउंदी तोटा आवै ॥ नानक राम नामु मनि भावै ॥ ५ ॥ २४ ॥ आसा महला १ चउपदे ॥ विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥ जां पंच रासी तां तीरथ वासी ॥ १ ॥ घुंघरू वाजै जे मनु लागै ॥ तउ जमु कहा करे मो सिउ आगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस निरासी तउ संनिआसी ॥ जां जतु जोगी तां काइआ भोगी ॥ २ ॥ दइआ दिगंबरु देह बीचारी ॥ आपि मरै अवरा नह मारी ॥ ३ ॥ एकु तू होरि वेस बहुतेरे ॥ नानकु जाणै चोज न तेरे ॥ ४ ॥ २५ ॥ आसा महला १ ॥ एक न भरीआ गुण करि धोवा ॥ मेरा सहु जागै हउ निसि भरि सोवा ॥ १ ॥ इउ किउ कंत पिआरी होवा ॥ सहु जागै हउ निस भरि सोवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥

के चरणों की मैं सेवा करती हूँ क्योंकि उनकी सत्संगति में प्रभु रूपी गुरु ने कृपापूर्वक मेरी ओर देखा है।। २ ।। मैने स्वयं विचार करके और अपने मन को नियन्त्रण में रखकर यह अच्छी तरह से देख लिया है कि तुम्हारे जैसा मित्र अन्य कोई नहीं है। तुम जैसे रखोगे मुझे वैसे ही रहना है। दुख-सुख देने वाला और सब कुछ करने वाला तू ही है।। ३ ।। मैने आशाओं और इच्छाओं को मार लिया है और त्रिगुणात्मक माया के प्रति भी मैं उदासीन हो गया हूँ। सत्संगत का आसरा लेकर और गुरमुख बनकर ही तुरीय अवस्था प्राप्त होती है।। ४ ।। जिसके हृदय में अदृष्ट और रहस्यातीत प्रभु बसता है उसके पास जप, तप, ज्ञान-ध्यान आदि सब कुछ होता है। हे नानक, जिसका मन राम-नाम में रंग गया है वह गुरमति के माध्यम से स्वाभाविक ही प्रभु सेवा प्राप्त कर लेता है।। ५ ।। २२ ।। आसा महला १ ।। पंचपदे ।। कुटुम्ब के प्रपंच और मोह उत्पन्न करने वाले सभी कामों को बेकार समझते हुए उन्हें तज दे ।। १ ।। हे भाई, मोह और भ्रम का त्याग कर दो तभी तुम्हारे शरीर में प्रभु का सच्चा नाम बसा रहेगा।। १ ।। रहाउ ।। जिसने सत्य-नाम रूपी नवनिधियाँ प्राप्त कर ली हैं वह माँ के लिए पुत्र के रोने के समान और पुत्र के लिए माँ के रोने के समान रोता नहीं है अर्थात सभी सुखी रहते हैं।। २ ।। इस मोह में ही सारा संसार डूबा हुआ है और गुरमुख बनकर ही कोई इससे पार उतर सकता है।। ३ ।। इसी मोह के कारण ही जीव योनियों में आता है और मोह में लिप्त बना हुआ ही यमपुरी को चला जाता है।। ४ ।। परम्परागत तरीके से कर्मकाण्डी दीक्षा लेकर जो जप तप करते हैं उनका न तो मोह भंग होता है और न ही उनकी की हुई मेहनत सफल होती है।। ५ ।। प्रभु कृपा करे तो यह मोह छूट जाता है और हे नानक, यह जीव प्रभु में लीन बना रहता है।। ६ ।। २३ ।। आसा महला १ ।। वह अदृष्ट एवं अपरंपर प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता है। हे प्रभु, मैं तो पापी हूँ परन्तु तू क्षमा करने वाला है।। १ ।। तेरी रज़ा में ही सब कुछ होता है और मन के हठ के पीछे लगकर किए कार्य अन्ततः खराब ही होते हैं।। १ ।। रहाउ ।। मनमुख व्यक्ति की बुद्धि में सदैव झूठ भरा रहता है और प्रभु के सुमिरन के बिना वह पापों से संतप्त बना रहता है।। २ ।। हे प्राणी, दुर्मति को त्याग कर कुछ लाभ प्राप्त कर लो। जो कुछ भी इस संसार में उत्पन्न हो रहा है उस अदृष्ट और सब रहस्यों से परे रहने वाले उस प्रभु के कारण ही है।। ३ ।। मेरा मित्र प्रभु ऐसा सहायक है कि वह गुरु रूप में मुझे मिला और उसने भक्ति भाव को मेरे मन में पक्का कर दिया है।। ४ ।। सभी सांसारिक सौदों में घाटा ही पड़ता है। नानक के मन को तो प्रभु-नाम ही अच्छा लगता है।। ५ ।। २४ ।। आसा महला १ ।। चौपदे ।। विद्या का यदि विचार पूर्वक मनन किया जाए तभी वह परोपकार का कारण बनती है। यदि व्यक्ति पाँचों विकारों को लगाम दे ले तो समझ लो वह तीर्थ पर स्नान करने वाला है।। १ ।। योगी की कमर में बँधे घुँघरू की ध्वनि तभी सार्थक है यदि उसका मन प्रभु में लगा रहे। प्रभु में लीन होने पर फिर भला यम भी मुझे आगे क्या कर सकेगा।। १ ।। रहाउ ।। आशाओं के प्रति उदासीन बने रहना ही वास्तव में संन्यास है। यदि योगी वास्तव में शरीर को नियन्त्रित कर लेता है तभी वह काया के प्रभु मिलन के सुख को भोगता है।। २ ।। दयावान और देह के सदुपयोग के बारे में विचार करने वाला ही दिगम्बर साधु है जो बेशक स्वयं तो मर जाए परन्तु दूसरे को नहीं मारता।। ३ ।। हे प्रभु, तू एक ही है बेशक तेरे वेष अनेकों हैं। नानक तेरे कौतुकों को नहीं जान सकता।। ४ ।। २५ ।। मैं एक-आधे पाप से ही नहीं भरी हूँ जो एक-आधे गुण से ही स्वच्छ हो जाऊँगी अर्थात मेरे में अनेकों अवगुण हैं। मेरा प्रियतम तो जगता है और मैं इस जीवन रूपी रात्रि में पूरे तौर से सोयी पड़ी रहती हूँ।। १ ।। इस प्रकार भला मैं अपने प्रियतम की प्यारी कैसे हो सकती हूँ कि मेरा मालिक तो जाग रहा हो और मैं गाढ़ी निद्रा में सोती रहूँ।। १ ।। रहाउ ।।

आस पिआसी सेजै आवा ॥ आगै सह भावा कि न भावा ॥ २ ॥ किआ
जाना किआ होइगा री माई ॥ हरि दरसन बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी ॥ गइआ सु जोबनु धन पछुतानी ॥ ३ ॥
अजै सु जागउ आस पिआसी ॥ भईले उदासी रहउ निरासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
हउमै खोइ करे सीगारु ॥ तउ कामणि सेजै रवै भतारु ॥ ४ ॥ तउ
नानक कंतै मनि भावै ॥ छोडि वडाई अपणे खसम समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ २६ ॥
आसा महला १ ॥ पेवकड़ै धन खरी इआणी ॥ तिसु सह की मै सार न
जाणी ॥ १ ॥ सहु मेरा एकु दूजा नही कोई ॥ नदरि करे मेलावा होई ॥ १ ॥
रहाउ ॥ साहुरड़ै धन साचु पछाणिआ ॥ सहजि सुभाइ अपणा पिरु
जाणिआ ॥ २ ॥ गुर परसादी ऐसी मति आवै ॥ तां कामणि कंतै मनि
भावै ॥ ३ ॥ कहतु नानकु भै भाव का करे सीगारु ॥ सद ही सेजै रवै
भतारु ॥ ४ ॥ २७ ॥ आसा महला १ ॥ न किस का पूतु न किस की
माई ॥ झूठै मोहि भरमि भुलाई ॥ १ ॥ मेरे साहिब हउ कीता तेरा ॥
जां तूं देहि जपी नाउ तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुते अउगण कूकै कोई ॥
जा तिसु भावै बखसे सोई ॥ २ ॥ गुर परसादी दुरमति खोई ॥ जह देखा तह
एको सोई ॥ ३ ॥ कहत नानक ऐसी मति आवै ॥ तां को सचे सचि
समावै ॥ ४ ॥ २८ ॥ आसा महला १ दुपदे ॥ तितु सरवरड़ै भईले निवासा
पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह
डूबीअले ॥ १ ॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण
गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु
भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन्ह की सरणा जिन्ह तूं नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ २९ ॥
आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुर गुरु एको वेस
अनेक ॥ १ ॥ जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई
तोहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु
भइआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥ २ ॥ ३० ॥

बहुत आशाओं को मन में लेकर यदि मैं सेज पर आती भी हूँ तो मुझे पता नहीं है कि मैं प्रियतम को अच्छी लगूँगी भी या नहीं।। २ ।। हे माँ, मैं नही जानती कि क्या होगा परन्तु प्रभु के दर्शन के बिना मुझसे रहा नहीं जाता।। १ ।। रहाउ ।। मैंने प्रेम को नहीं चखा इसलिए मेरी प्यास नही बुझी और जवानी के बीत जाने पर अब यह जीव-स्त्री पछताती है।। ३ ।। अभी भी यदि मैं उससे मिलन की आशा को लेकर जग जाऊँ तो मैं सांसारिक मोह से उदासीन होकर आशाओं से विहीन बनी रहूँगी।। १ ।। रहाउ ।। जब अहंकार को त्याग कर गुणों का सिंगार किया जाए तभी जीव-स्त्री की सेज पर प्रभु-पति रमण करता है।। ४ ।। हे नानक, यदि अपने बड़प्पन को त्याग कर स्वामी में ही लीन बनी रहे तभी यह स्त्री प्रभु-पति के मन को अच्छी लग सकती है।। १ ।। रहाउ ।। २६ ।। आसा महला १ ।। इस संसार रूपी घर में तो मैं जीव स्त्री बहुत ज्यादा नासमझ ही बनी रही और मैंने उस स्वामी के स्वभाव को बिल्कुल ही नहीं जाना ।। १ ।। मेरा स्वामी तो एक ही है दूसरा कोई नहीं है और उस की कृपा-दृष्टि होने से उससे मिलाप होता है।। १ ।। रहाउ ।। ससुराल में प्रभु-पति के साथ लीन होकर जीव-स्त्री ने सत्य को पहचाना और सहज-भाव से ही अपने प्रियतम को जान लिया है।। २ ।। गुरु की कृपा से ही विवेक बुद्धि जब प्राप्त होती है तो यह जीव-स्त्री प्रभु के मन को अच्छी लगने लगती है।। ३ ।। नानक कहता है कि जो भय और प्रेम का सिंगार करती है वह प्रभु-पति सदैव उसी की सेज पर रमण करता है।। ४ ।। २७ ।। आसा महला १।। न तो कोई किसी का पुत्र है और न ही कोई किसी की माँ है। यह सब झूठे मोह और भ्रम में भूले रहने के समान है।। १ ।। हे मेरे साहिब, मैं तेरा ही बनाया हुआ हूँ, यदि तू ही मुझ पर कृपा करे तो मैं तेरे नाम का सुमिरन करता रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। यदि बहुत अवगुणों वाला व्यक्ति भी प्रभु के समक्ष गुहार लगाए तो प्रभु चाहे तो उसे भी क्षमा कर देता है।। २ ।। गुरु की कृपा से दुर्मति दूर हो जाती है और फिर जिधर भी देखा जाता है उधर ही वह एक ही दिखाई देता है।। ३ ।। नानक कहता है कि जिसे इस प्रकार की बुद्धि प्राप्त हो जाती है वही सत्य प्रभु के सत्य में लीन बना रहता है।। ४ ।। २८ ।। आसा महला १ ।। दुपदे ।। इस जीव का ऐसे भयानक सरोवर में निवास है जिसमें उस प्रभु ने पानी को स्थान पर (तृष्णा रूपी) अग्नि पैदा कर रखी है। मोह रूपी कीचड़ उसमें भरा हुआ है जिससे पाँव आगे की ओर नहीं चलते और हमारे देखते ही देखते अनेकों व्यक्ति इस (संसार रूपी) सरोवर में डूबते चले जा रहे हैं।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, न तो मैं यति हूँ न ही सत्यवादी दानी हूँ, न ही मैं पढ़ा-लिखा हूँ; मेरा जीवन तो मूर्ख एवं मुग्ध व्यक्तियों जैसा बना हुआ है। हे प्रभु, मुझे उन लोगों की शरण में बनाए रख जिन्होनें तुझे नही भुलाया है।। २ ।। २९ ।। आसा महला १।। छः शास्त्र हैं और छः ही उसके प्रणेता आचार्य हैं। इनके सिद्धान्त भी छः हैं परन्तु इन सभी (आचार्यों) का गुरु भी एक (ज्ञान) ही है। हे जीव, जिस धर्म पुस्तक (शास्त्र) में भी कर्ता-प्रभु का गुणानुवाद होता है तू उसे ही अपने व्यवहार का आधार बना ले; इसी में तेरा बड़प्पन है अर्थात जीवन को उत्तम बनाने के लिए ज्ञान कहीं से भी मिले उसका तिरस्कार मत करो।। १ ।। रहाउ।। जैसे निमेष, चसा, घड़ी, प्रहर, तिथियाँ, वार, महीने, ऋतुएं आदि तो कई हैं परन्तु इन सब का (सिरमौर नियन्ता) सूर्य तो एक ही है। वैसे ही हे नानक, कर्ता के ये सारे सिद्धान्त (जो विभिन्न शास्त्रों में दिए हैं) विभिन्न स्वरूपों में उसी का प्रकटीकरण है।। २ ।। ३० ।।

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ३ महला १ ॥

लख लसकर लख वाजे नेजे लख उठि करहि सलामु ॥ लखा उपरि फुरमाइसि तेरी लख उठि राखहि मानु ॥ जां पति लेखै ना पवै तां सभि निराफल काम ॥ १ ॥ हरि के नाम बिना जगु धंधा ॥ जे बहुता समझाईऐ भोला भी सो अंधो अंधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख खटीअहि लख संजीअहि खाजहि लख आवहि लख जाहि ॥ जां पति लेखै ना पवै तां जीअ किथै फिरि पाहि ॥ २ ॥ लख सासत समझावणी लख पंडित पड़हि पुराण ॥ जां पति लेखै ना पवै तां सभे कुपरवाण ॥ ३ ॥ सच नामि पति ऊपजै करमि नामु करतारु ॥ अहिनिसि हिरदै जे वसै नानक नदरी पारु ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥ आसा महला १ ॥ दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥ उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥ १ ॥ लोका मत को फकड़ि पाइ ॥ लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥ ऐथै ओथै आगै पाछै एहु मेरा आधारु ॥ २ ॥ गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥ सचा नावणु तां थीऐ जां अहिनिसि लागै भाउ ॥ ३ ॥ इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ ॥ नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखूटसि नाहि ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥

आसा घरु ४ महला १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

देवतिआ दरसन कै ताई दूख भूख तीरथ कीए ॥ जोगी जती जुगति महि रहते करि करि भगवे भेख भए ॥ १ ॥ तउ कारणि साहिबा रंगि रते ॥ तेरे नाम अनेका रूप अनंता कहणु न जाही तेरे गुण केते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दर घर महला हसती घोड़े छोडि विलाइति देस गए ॥ पीर पेकांबर सालिक सादिक छोडी दुनीआ थाइ पए ॥ २ ॥ साद सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोडे चमड़ लीए ॥ दुखीए दरदवंद दरि तेरै नामि रते दरवेस भए ॥ ३ ॥ खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूतु धोती कीन्ही ॥ तूं साहिबु हउ सांगी तेरा प्रणवै नानकु जाति कैसी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३३ ॥

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि   आसा घरु ३ महला १ ।।

यदि लाखों की फौज, लाखों वाद्य और भाले तथा लाखों ही उठकर सलाम करने वाले हों; लाखों पर ही हुकुम चलता हो और लाखों ही सम्मान करने वाले हों परन्तु यदि यह सम्मान प्रभु की दृष्टि में स्वीकृत नहीं तो यह सारा प्रपंच किसी काम का नहीं है।। १ ।। प्रभु के नाम के बिना यह सारा संसार एक झूठा धन्धा ही है। मूर्ख व्यक्ति को बेशक कितना ही अधिक समझाया जाए वह फिर भी अन्धा ही बना रहता है। लाखों कमाया जाए, लाखों इकट्ठा किया जाए, खाया जाए, लाखों आ जाए और लाखों चला जाए परन्तु यदि प्रभु की दृष्टि में यह स्वीकृत नहीं तो यह जीव जहाँ मर्जी भटकता फिरे (कोई लाभ नहीं होता)।।२।। लाखों शास्त्रों के माध्यम से समझाया जाए और लाखों पण्डित पुराण आदि को पढ़ते रहें परन्तु यदि यह सब मान-सम्मान प्रभु को स्वीकृत नहीं तो यह सब कुछ कहीं भी स्वीकार नहीं होता।। ३ ।। सत्य प्रभु के नाम से ही सम्मान पैदा होता है और प्रभु की कृपादृष्टि से संसार से पार हुआ जाता है।। ४ ।। १ ।। ३१ ।। आसा महला १ ।। एक प्रभु का नाम ही मेरा दीपक है जिसमें मैंने दुख रूपी तेल डाला हुआ है। जैसे-जैसे नाम रूपी दीपक का प्रकाश होता है तो मेरा दुख रूपी तेल सूखता (समाप्त होता) चला जाता है। फलस्वरूप यम से मेरा मेल समाप्त हो जाता है।। १ ।। हे लोगो, मेरे विश्वास को झूठा न समझो। जैसे लाखों मन इकट्ठी लकड़ी को एक रत्ती भर चिंगारी भस्म कर सकती है (वैसे ही प्रभु-नाम सारे पापों को नष्ट कर सकता है)।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ही मेरे लिए पिण्ड और पत्तल तथा उस प्रभु का सच्चा नाम ही वास्तविक क्रिया है। यहाँ, वहाँ, आगे-पीछे यह प्रभु-नाम ही मेरा आसरा है। तुम्हारा गुणानुवाद ही मेरे लिए बनारस की गंगा है जिसमें मेरी आत्मा स्नान करती है। सच्चा स्नान तो तभी होता है जब दिन-रात जीव प्रभु के प्यार में लीन बना रहे।। ३ ।। लोग एक पिण्ड देवताओं के निमित्त एवं अन्य पिण्ड पित्रों के निमित्त अर्पण करते हैं और इस प्रकार ब्राह्मण पिण्ड बनाकर और खाकर बेशक चला जाता है परन्तु हे नानक, उस प्रभु की कृपा का पिण्ड कभी भी समाप्त नहीं होता।। ४ ।। २ ।। ३२ ।।

आसा घरु ४ महला १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

देवताओं ने प्रभु के दर्शन के लिए दुख, भूख को सहन किया और तीर्थों को बनाया। योगी, यति आदि भी अपनी-अपनी मर्यादा में रहते हुए भगवे वेष धारण करके घूमते रहते हैं।। १ ।। ये सभी, हे प्रभु, तेरे लिए ही तेरे रंग में रंगे हुए घूमते रहते हैं। तेरे नाम और रूप अनन्त हैं और हे प्रभु, कहा नहीं जा सकता कि तेरे गुण कितने हैं।। १ ।। रहाउ।। ऐसे भी लोग हैं जो अपना घर-बार, हाथी घोड़े छोड़कर और अपना देश त्याग कर तेरी खोज में दूसरे देशों में चले गए। पीरों-पैगम्बरों, मार्ग-दर्शकों और धैर्य में बने रहने वाले लोगों ने दुनियां के प्रपंचों का त्याग किया और स्वीकृत हो गए।। २ ।। लोगों ने स्वाद, सहज-भाव, सुख, सभी रस, वस्त्र आदि त्याग दिए और केवल चमड़े को ही धारण किए रखा। अनेकों ही दुखी और ग़मों के मारे हुए तेरे नाम में लीन होकर तेरे दरवाज़े पर खड़े रहने वाले दरवेश बन गए।। ३ ।। चमड़ा पहनने वाले, खप्पर में भिक्षा लेने वाले, दण्डधारी संन्यासी, मृगछाला पहनने वाले; चोटी जनेऊ और धोती पहनने वाले अनेकों हैं जो प्रभु को ढूँढने के लिए मेरी तरह स्वांग भरने वाले हैं। परन्तु नानक कहता है कि जाति व्यवस्था केवल प्रभु को खोजने वालों के अलग-अलग रास्ते तो हो सकते हैं परन्तु यह ऊँचे और नीचे के भाव को सिद्ध नहीं करती।। ४ ।। १ ।। ३३ ।।

आसा घरु ५ महला १ १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भीतरि पंच गुपत मनि वासे ॥ थिरु न रहहि जैसे भवहि उदासे ॥ १ ॥ मनु मेरा दइआल सेती थिरु न रहै ॥ लोभी कपटी पापी पाखंडी माइआ अधिक लगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फूल माला गलि पहिरउगी हारो ॥ मिलैगा प्रीतमु तब करउगी सीगारो ॥ २ ॥ पंच सखी हम एकु भतारो ॥ पेडि लगी है जीअड़ा चालणहारो ॥ ३ ॥ पंच सखी मिलि रुदनु करेहा ॥ साहु पजूता प्रणवति नानाक लेखा देहा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ६ महला १ ॥

मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी ॥ खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥ १ ॥ लाल बहु गुणि कामणि मोही ॥ तेरे गुण होहि न अवरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हारु कंठि ले पहिरै दामोदरु दंतु लेई ॥ कर करि करता कंगन पहिरै इन बिधि चितु धरेई ॥ २ ॥ मधुसूदनु कर मुंदरी पहिरै परमेसरु पटु लेई ॥ धीरजु धड़ी बंधावै कामणि स्रीरंगु सुरमा देई ॥ ३ ॥ मन मंदरि जे दीपकु जाले काइआ सेज करेई ॥ गिआन राउ जब सेजै आवै त नानक भोगु करेई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३५ ॥ आसा महला १ ॥ कीता होवै करे कराइआ तिसु किआ कहीऐ भाई ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ कीते किआ चतुराई ॥ १ ॥ तेरा हुकमु भला तुधु भावै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई साचे नामि समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरतु पइआ परवाणा लिखिआ बाहुड़ि हुकमु न होई ॥ जैसा लिखिआ तैसा पड़िआ मेटि न सकै कोई ॥ २ ॥ जे को दरगह बहुता बोलै नाउ पवै बाजारी ॥ सतरंज बाजी पकै नाही कची आवै सारी ॥ ३ ॥ ना को पड़िआ पंडितु बीना ना को मूरखु मंदा ॥ बंदी अंदरि सिफति कराए ता कउ कहीऐ बंदा ॥ ४ ॥ २ ॥ ३६ ॥ आसा महला १ ॥ गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ ॥ जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि पावउ

आसा घरु ५ महला १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मन के अन्दर पाँच विकार गुप्त रूप से बसे रहते हैं। ये पाँचों शान्त नहीं रहते और जैसे कोई दुनियां से उदासीन होकर भटकता है वैसे ही ये भी इधर उधर भटकते रहते हैं।। १ ।। मेरा मन दयालु प्रभु के साथ स्थिर नहीं बना रहता और लोभी, कपटी, पाखण्डी बनकर पूरी तरह से माया में लीन बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। जब प्रीतम मिलेगा तो मैं सिंगार करूँगी और गले में फूल मालाओं का हार पहनूँगी।। २ ।। विकार रूपी हमारी सखियां हैं और हमारा पति एक जीवात्मा है। शुरु से ही यह बात चली आ रही है कि जीव इस संसार से चलाएमान है।। ३ ।। नानक विनती करता है कि जब जीवात्मा रूपी पति अपना लेखा देने के लिए पकड़ा जाता है तो सखी बनी हुई पाँचों इन्द्रियां अब मिलकर विलाप करने लगती हैं।। ४ ।। १ ।। ३४ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।। आसा घरु ६ महला १ ।।

मन रूपी मोती यदि गहना हो और श्वास् की डोर के साथ मन रूपी मोती को पिरोकर धारण किया जाए अर्थात सदैव प्रभु का सुमिरन किया जाए; क्षमा का स्त्री सिंगार करे तभी वह प्रियतम की प्यारी बनकर उसके साथ रमण करती है।। १ ।। हे प्रियतम, तेरे अनेक गुणों पर यह जीव-स्त्री मोहित हो गई है। तेरे जैसे गुण अन्य किसी में नहीं हैं।। १ ।। रहाउ ।। यदि जीव-स्त्री प्रभु-नाम की माला को कण्ठ में धारण कर ले और प्रभु-नाम को दाँतों का मंजन बना ले, यदि कर्ता-प्रभु को वह हाथों का कंगन बना कर पहने तो इस विधि से वह अपने दौड़ते हुए मन को रोक लेगी।। २ ।। प्रभु को अपने हाथों में अंगूठी बनाकर पहन ले और परमेश्वर को वस्त्रों के तौर पर धारण करे। यदि कामिनी धैर्य को अपने केश-विन्यास की तरह धारण करे और प्रभु के प्रेम को सुरमें के रूप में अपनी आँखों में डाल ले।। ३ ।। अपने मन रूपी घर में यदि वह ज्ञान का दीपक जला ले और अपने शरीर को सेज बना ले तब सर्व ज्ञानों का सम्राट सेज पर आएगा और हे नानक, वह तभी आनन्दित होकर रमण करेगा।। ४ ।। १ ।। ३५ ।। आसा महला १।। हे भाई, रचित जीव वही करता कराता है जो उससे कराया जाता है। अब उसे भला क्या कहा जा सकता है। जो प्रभु ने करना है वह कर रहा है और रचे हुए जीव की चतुराई भला क्या कर सकती है।। १ ।। हे प्रभु, जो तुझे अच्छा लगता है तेरा वही हुकुम मेरे लिए भला है। हे नानक, जो सच्चे-नाम में लीन रहता है केवल उसी को ही सम्मान और बड़प्पन प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ ।। जैसा प्रभु द्वारा स्वीकृत हो चुका है हम वैसा ही आचरण करते हैं। उसके लिखे हुए हुकुम पर और कोई हुकम नहीं चला सकता। जैसा लिखा हुआ होता है वैसा ही पढ़ा जाता है अर्थात कार्य रूप में परिणित होता है और उसे कोई मिटा नहीं सकता।। २ ।। उसके दरबार में यदि कोई बहुत बोलता है तो उसका नाम बाजारू मसखरे के तौर पर जाना जाता है। उसकी जीवन रूपी शतरंज की बाज़ी जीती नहीं जाती और उसकी सारी गोटियां असफल हो जाती हैं।। ३ ।। न तो कोई पढ़ा-लिखा विद्वान और सूझवान है और न ही कोई मूर्ख है और न ही कोई अकल से मन्द है। जब वह दास बनकर प्रभु का गुणानुवाद करता है तभी उसे वास्तविक बन्दा कहा जा सकता है।। ४ ।। २ ।। ३६ ।। आसा महला १ ।। शब्द-गुरु को मन के कुण्डल बनाए जाएं और क्षमा को गुदड़ी बनाया जाए। वह प्रभु जो कुछ भी करे उसे भला माना जाए तो सहज योग का भण्डार

॥ १ ॥ बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तंत महि जोगं ॥ अंम्रितु नामु निरंजन पाइआ गिआन काइआ रस भोगं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप तिआगी बादं ॥ सिंङी सबदु सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं ॥ २ ॥ पतु वीचारु गिआन मति डंडा वरतमान बिभूतं ॥ हरि कीरति रहरासि हमारी गुरमुखि पंथु अतीतं ॥ ३ ॥ सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरन अनेकं ॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी पारब्रहम लिव एकं ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३७ ॥ आसा महला १ ॥ गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ ॥ भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ ॥ १ ॥ बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ ॥ अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे ॥ अंम्रित का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥ २ ॥ गुर की साखी अंम्रित बाणी पीवत ही परवाणु भइआ ॥ दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै किआ ॥ ३ ॥ सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै ॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अंम्रित धारै ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ आसा महला १ ॥ खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥ आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥ १ ॥ करता तूं सभना का सोई ॥ जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥ रतन विगाड़ि विगोए कुतीं मुइआ सार न काई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ॥ २ ॥ जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे ॥ खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे ॥ ३ ॥ ५ ॥ ३९ ॥

रागु आसा घरु २ महला ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि दरसनु पावै वडभागि ॥ गुर कै सबदि सचै बैरागि ॥ खटु दरसनु वरतै

प्राप्त हो जाता है।। १ ।। हे बाबा, जो जीव प्रभु के साथ जुड़ा हुआ है वह सदा से ही योगी है क्योंकि वह परम तत्व प्रभु से मिला हुआ होता है। जिसने अमृत-नाम रूपी निरंजन प्रभु को पा लिया है ज्ञान उसे इस रस के आनन्द को अनुभव करा देता है।। १ ।। रहाउ ।। कल्याणकारी आत्मा नगरी में मैं वाद-विवादों और कल्पनाओं को त्याग कर बैठा हूँ। शब्द की ध्वनि वह सिंगी का नाद है जो दिन-रात बजती रहती है।। २ ।। प्रभु का चिन्तन ही उसका पात्र है और ज्ञान - गोष्ठी उसका डण्डा है। प्रभु के समक्ष उपस्थित बने रहना ही उसकी भभूत है। प्रभु का गुणानुवाद ही मेरा जीवन आचरण है और गुरमुख बनने का मार्ग ही मेरा पवित्र मार्ग है।। ३ ।। अनेकों प्रकारों और अनेकों वर्षों में उस प्रभु की ज्योति को देखना ही हमारी बाँहों को आसरा देने वाली टिकटिकी (बैरागणि) है। नानक कहता है कि हे भरथरी योगी, तू इस बात को सुन ले कि मैं केवल एक परब्रह्म प्रभु में ही लौ लगाए रहता हूँ।। ४ ।। ३ ।। ३७ ।। आसा महला १ ।। तू ज्ञान को गुड़ बना और ध्यान को महुए के फूल बना। अच्छे आचरण रूपी छाल को तू उसमें मिला। (प्रभु में) विश्वास को भट्ठी और प्रेम को लेप बना। इस प्रकार अमृत को चुआकर एकत्र किया जाता है।। १ ।। हे बाबा, ऐसे नाम अमृत का पान करने से मन मतवाला हो उठता है और प्रभु-प्रीति में सहज-भाव से ही लीन हो जाता है। ऐसे प्रेम की लगन जब लग जाती है तो दिन-रात सफल हो जाते हैं और अनहद् शब्द पकड़ में आ जाता है।। १ ।। रहाउ ।। यह सत्य का प्याला प्रभु सहज-भाव से उसको ही पिलाता है जिस पर वह कृपा-दृष्टि करता है। जो अमृत का व्यापारी है वह घटिया शराब को भला कैसे प्यार कर सकता है।। २ ।। गुरु की कथा और अमृत रूपी वाणी ऐसी है जिसका पान करते ही व्यक्ति स्वीकृत हो जाता है। जो प्रभु के द्वार और दर्शन का आकांक्षी है वह भला मुक्ति और बैकुण्ठ को क्या करेगा।। ३ ।। प्रभु के गुणानुवाद में लीन व्यक्ति सदा ही बैरागी रूप में है और अपना यह जीवन जुए में नहीं हारता। नानक कहता है कि हे भरथरी योगी, तू इस तथ्य को भली-भांति सुन ले कि मैं तो अमृत की धारा का पान करके आनन्दित हो चुका हूँ।। ४ ।। ४ ।। ३८ ।। आसा महला १ ।। हे प्रभु, तूने खुरासान के निवासी (बाबर) का तो उसके स्वामी की तरह पक्ष लिया और सारे हिन्दुस्तान (भारत) को भयभीत कर दिया। कर्ता-प्रभु ने दोष अपने सिर पर तो नहीं लिया परन्तु मुगल (बाबर) को यम के रूप में यहाँ भेज दिया है। हे प्रभु, लोगों के साथ इतनी मार-काट हुई कि वे चीत्कार कर उठे परन्तु क्या तुझे तनिक भी पीड़ा नहीं हुई।। १ ।। हे कर्ता-प्रभु, तू तो सबके लिए एक जैसा ही है। यदि एक शक्तिशाली दूसरे शक्तिशाली को मारे तो मन में क्रोध नहीं आता (परन्तु हुआ इसके विपरीत है)।। १ ।। रहाउ।। यदि शक्तिशाली शेर पशुओं के झुण्ड पर टूट पड़े तो उस झुण्ड के मालिक से पूछा तो अवश्य ही जाता है कि वह क्या कर रहा था। कुत्तों जैसे इन पठानों ने रत्न जैसे इस देश को बर्बाद कर दिया है और इनके मरने पर इन्हें कोई याद भी नहीं करेगा। हे प्रभु, तू स्वयं ही मिलाता है और दूर करता है। तू अपने इस बड़प्पन को खुद ही देख।। २ ।। यदि कोई अपना नाम बड़ा रखवा दे और अपने चित्त को अच्छे लगते स्वादों का आनन्द भोगे तो प्रभु की दृष्टि में केवल दाने चुगने वाला अर्थात रस-रंग में मस्त रहने वाला वह व्यक्ति एक कीड़े के समान ही दिखाई देता है। हे नानक, जब व्यक्ति भय में और लालसाओं के सन्दर्भ में मर जाता है तभी वह जीवित बना रहता है और हे नानक, प्रभु-नाम के सुमिरन से ही उसे कुछ प्राप्त हो पाता है।। ३ ।। ५ ।। ३९ ।।

रागु आसा घरु २ महला ३ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु का दर्शन बड़े भाग्य से शब्द-गुरु और सच्चे वैराग्य के माध्यम से पाया जाता है। संसार में छः दर्शनों का

वरतारा ॥ गुर का दरसनु अगम अपारा ॥ १ ॥ गुर के दरसनि मुकति गति होइ ॥ साचा आपि वसै मनि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर दरसनि उधरै संसारा ॥ जे को लाए भाउ पिआरा ॥ भाउ पिआरा लाए विरला कोइ ॥ गुर कै दरसनि सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ गुर कै दरसनि मोख दुआरु ॥ सतिगुरु सेवै परवार साधारु ॥ निगुरे कउ गति काई नाही ॥ अवगणि मुठे चोटा खाही ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि सुखु सांति सरीर ॥ गुरमुखि ता कउ लगै न पीर ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै ॥ नानक गुरमुखि साचि समावै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४० ॥ आसा महला ३ ॥ सबदि मुआ विचहु आपु गवाइ ॥ सतिगुरु सेवे तिलु न तमाइ ॥ निरभउ दाता सदा मनि होइ ॥ सची बाणी पाए भागि कोइ ॥ १ ॥ गुण संग्रहु विचहु अउगुण जाहि ॥ पूरे गुर कै सबदि समाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुणा का गाहकु होवै सो गुण जाणै ॥ अंम्रित सबदि नामु वखाणै ॥ साची बाणी सूचा होइ ॥ गुण ते नामु परापति होइ ॥ २ ॥ गुण अमोलक पाए न जाहि ॥ मनि निरमल साचै सबदि समाहि ॥ से वडभागी जिन्ह नामु धिआइआ ॥ सदा गुणदाता मंनि वसाइआ ॥ ३ ॥ जो गुण संग्रहै तिन्ह बलिहारै जाउ ॥ दरि साचै साचे गुण गाउ ॥ आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ नानक कीमति कहणु न जाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर विचि वडी वडिआई ॥ चिरी विछुंने मेलि मिलाई ॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ आपणी कीमति आपे पाए ॥ १ ॥ हरि की कीमति किन बिधि होइ ॥ हरि अपरंपरु अगम अगोचरु गुर कै सबदि मिलै जनु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि कीमति जाणै कोइ ॥ विरले करमि परापति होइ ॥ ऊची बाणी ऊचा होइ ॥ गुरमुखि सबदि वखाणै कोइ ॥ २ ॥ विणु नावै दुखु दरदु सरीरि ॥ सतिगुरु भेटे ता उतरै पीर ॥ बिनु गुर भेटे दुखु कमाइ ॥ मनमुखि बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ हरि का नामु मीठा अति रसु होइ ॥ पीवत रहै पीआए सोइ ॥ गुर किरपा ते हरि रसु पाए ॥ नानक नामि रते गति पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४२ ॥ आसा महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा गहिर गंभीर ॥ सेवत ही सुखु सांति सरीर ॥ सबदि तरे जन सहजि सुभाइ ॥ तिन कै

व्यवहार चल रहा है परन्तु गुरु का दर्शन अगम्य एवं अपार है।। १ ।। गुरु के दर्शन को समझने से मुक्ति और गति प्राप्त होती है और सच्चा प्रभु मन में आन बसता है।। १ ।। रहाउ ।। गुरु के माध्यम से यदि कोई अपने में प्रेम उत्पन्न करता है तो वह सारे संसार का उद्धार कर देता है। कोई विरला ही प्रेम पैदा करता है। गुरु के दर्शन से सदा सुख प्राप्त होता है।। २ ।। गुरु के दर्शन के माध्यम से मोक्ष का द्वार प्राप्त होता है और सच्चे गुरु की सेवा परिवार का आधार बन जाती है। गुरु-विहीन व्यक्ति की कोई गति नहीं है। ऐसे व्यक्ति अवगुणों के द्वारा लूटे जाते हैं और चोटें खाते रहते हैं।। ३ ।। गुरु के शब्द के माध्यम से शरीर में सुख और शान्ति प्राप्त होती है और गुरमुख व्यक्ति को कभी भी कोई पीड़ा नहीं सताती। मौत रूपी यम उसके पास नहीं आता और हे नानक, गुरमुख सत्य में लीन हो जाता है।। ४ ।। १ ।। ४० ।। आसा महला ३ ।। जो अपना अहंकार गंवा देता है वह शब्द में एकाकार होकर विषय वासनाओं की ओर से मृत हो जाता है। वह सच्चे गुरु की सेवा करता है और उसे तिल-मात्र भी लालच नहीं होता। उसके मन में सदैव निर्भय दाता प्रभु बसता है परन्तु सच्ची वाणी (शब्द) के साथ कोई भाग्यशाली ही प्रेम करता है।। १ ।। जब गुणों का संग्रह किया जाता है तो अन्तर्मन से अवगुण चले जाते हैं और पूर्ण शब्द-गुरु में व्यक्ति लीन हो जाता है।। १ ।। रहाउ ।। जो गुणों का ग्राहक होता है वही गुणों को जानता है और अमृत शब्द रूपी नाम का सुमिरन करता है। सच्ची वाणी के माध्यम से ही व्यक्ति पवित्र होता है और आचरण में गुण उत्पन्न करने से ही प्रभु-नाम प्राप्त होता है।। २ ।। अमूल्य गुणों को प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। जब मन निर्मल होता है तभी सच्चे शब्द में लीन हुआ जाता है। जिन्होनें नाम का सुमिरन किया और सदा गुणदाता प्रभु को मन में बसाया वे भाग्यशाली हैं।। ३ ।। जो गुणों को संग्रह करता है मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ और उसके सच्चे द्वार पर खड़े होकर उसके गुणों का गान करता हूँ। वह प्रभु स्वाभाविक ही सब कुछ दे देता है और हे नानक, उसके मूल्य को आंका नहीं जा सकता।। ४ ।। २ ।। ४१ । आसा महला ३।। सच्चे गुरु का बड़प्पन बड़ा है क्योंकि बहुत देर से बिछुड़े हुए मुझ को उसने प्रभु से मिला दिया है। वह स्वयं ही अपने में मिला लेता है और अपनी कीमत और सीमा को स्वयं ही जानता है।। १ ।। प्रभु की कीमत को अर्थात मूल्य को कैसे आंका जाए। वह प्रभु अपरंपर, अगम्य, अगोचर है जिसे शब्द-गुरु के माध्यम से कोई बिरला सेवक ही मिल पाता है।। १ ।। रहाउ ।। कोई बिरला गुरमुख ही उसकी कीमत को जानता है और किसी बिरले को ही उसकी कृपा प्राप्त होती है। उसकी वाणी भी ऊँची है और वह स्वयं भी ऊँचा है। कोई बिरला गुरमुख ही उसके शब्द की व्याख्या कर सकता है।। २ ।। प्रभु-नाम के बिना शरीर में दुख-दर्द बना रहता है परन्तु जब सच्चे गुरु से मिलाप हो जाता है तो पीड़ा नष्ट हो जाती है। गुरु से मिले बिना जीव दुख ही उठाता है और मनमुख व्यक्ति को घोर दण्ड मिलता है।। ३ ।। प्रभु का नाम अन्यन्त मीठा और रसदायक होता है जिसे वही जीव पीता है जिसे वह प्रभु पिलाता है। गुरु की कृपा से ही प्रभु-नाम का रस प्राप्त होता है और हे नानक, नाम में लीन होकर ही व्यक्ति मुक्ति प्राप्त करता है।। ४ ।। ३ ।। ४२ ।। आसा महला ३ ।। मेरा सच्चा प्रभु गहरा और गम्भीर है और उसका सुमिरन करते ही शरीर में सुख और शान्ति आ जाती है। प्रभु का सेवक शब्द के माध्यम से सहज रूप में ही पार उतर जाता है। ऐसे सेवक के

हम सद लागह पाइ ॥ १ ॥ जो मनि राते हरि रंगु लाइ ॥ तिन का जनम मरण दुखु लाथा ते हरि दरगह मिले सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदु चाखै साचा सादु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ हरि प्रभु सदा रहिआ भरपूरि ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ २ ॥ आखणि आखै बकै सभु कोइ ॥ आपे बखसि मिलाए सोइ ॥ कहणै कथनि न पाइआ जाइ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ गुरमुखि विचहु आपु गवाइ ॥ हरि रंगि राते मोहु चुकाइ ॥ अति निरमलु गुर सबद वीचार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ आसा महला ३ ॥ दूजै भाइ लगे दुखु पाइआ ॥ बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ सतिगुरु सेवै सोझी होइ ॥ दूजै भाइ न लागै कोइ ॥ १ ॥ मूलि लागे से जन परवाणु ॥ अनदिनु राम नामु जपि हिरदै गुर सबदी हरि एको जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ डाली लागै निहफलु जाइ ॥ अंधी कंमी अंध सजाइ ॥ मनमुखु अंधा ठउर न पाइ ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइ ॥ २ ॥ गुर की सेवा सदा सुखु पाए ॥ संतसंगति मिलि हरि गुण गाए ॥ नामे नामि करे वीचारु ॥ आपि तरै कुल उधरणहारु ॥ ३ ॥ गुर की बाणी नामि वजाए ॥ नानक महलु सबदि घरु पाए ॥ गुरमति सत सरि हरि जलि नाइआ ॥ दुरमति मैलु सभु दुरतु गवाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४४ ॥ आसा महला ३ ॥ मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि ॥ दूजै भाइ आतम संघारहि ॥ मेरा मेरा करि करि विगूता ॥ आतमु न चीन्है भरमै विचि सूता ॥ १ ॥ मरु मुइआ सबदे मरि जाइ ॥ उसतति निंदा गुरि सम जाणाई इसु जुग महि लाहा हरि जपि लै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम विहूण गरभ गलि जाइ ॥ बिरथा जनमु दूजै लोभाइ ॥ नाम बिहूणी दुखि जलै सबाई ॥ सतिगुरि पूरै बूझ बुझाई ॥ २ ॥ मनु चंचलु बहु चोटा खाइ ॥ एथहु छुड़किआ ठउर न पाइ ॥ गरभ जोनि विसटा का वासु ॥ तितु घरि मनमुखु करे निवासु ॥ ३ ॥ अपुने सतिगुर कउ सदा बलि जाई ॥ गुरमुखि जोती जोति मिलाई ॥ निरमल बाणी निज घरि वासा ॥ नानक हउमै मारे सदा उदासा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥ आसा महला ३ ॥ लालै आपणी

मैं सदैव चरण स्पर्श करता हूँ।। १ ।। जो मन से लीन होकर हरि के रंग में रंग जाते हैं उनका जन्म-मरण का दुख समाप्त हो जाता है और वे स्वाभाविक रूप से ही प्रभु दरबार में पहुँच जाते है।। १ ।। रहाउ ।। शब्द को चखने अर्थात उस पर गहन चिन्तन से सत्य का स्वाद प्राप्त होता है और प्रभु-नाम मन में बस जाता है। ऐसे व्यक्ति को हरि-प्रभु सदैव सब ओर व्याप्त दिखाई देता है। वह प्रभु स्वयं ही पास है और स्वयं ही दूर भी है।। २ ।। बातें तो सभी बनाते हैं परन्तु बातों से वह प्राप्त नहीं होता अपितु वह जीव को स्वयं ही क्षमा करता है और अपने साथ मिला लेता है। कहने और बखान करने से वह नही पाया जाता; गुरु की कृपा से ही वह मन में आन बसता है।। ३ ।। गुरमुख अपने मन से अहंकार गँवा देता है और मोह को दूर कर प्रभु के रंग में लीन बना रहता है। शब्द-गुरु का चिन्तन अत्यन्त ही निर्मल होता है और हे नानक, प्रभु का नाम ही सबको सँवारने वाला है।। ४ ।। ४ ।। ४३ ।। आसा महला ३।। द्वैतभाव में बने रहने से दुख प्राप्त होता है और शब्द-विहीन बनकर व्यक्ति अपना जन्म व्यर्थ में ही गँवा लेता है।।१।। प्रभु रूपी सब के मूल से जो प्रेम लगा लेते हैं वे सेवक स्वीकृत हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रतिदिन प्रभु-नाम का हृदय में सुमिरन करते हैं और शब्द-गुरु के माध्यम से वे केवल एक ही प्रभु को मानते हैं।। १ ।। रहाउ।। संसार रूपी वृक्ष की डालियों से मोह करके वे केवल एक ही प्रभु को मानते हैं।। १ ।। रहाउ ।। संसार रूपी वृक्ष की डालियों से मोह करके व्यक्ति का जीवन निष्फल चला जाता है और अन्धे अज्ञानियों की तरह काम करते रहने से उसे अन्धों वाली सज़ा भी मिलती है। मनमुख वह अन्धा अज्ञानी है जिसे कोई ठिकाना नहीं मिलता। वह विष्ठा का कीड़ा है और विष्ठा में ही मर जाता है।। २ ।। गुरु की सेवा के फलस्वरूप व्यक्ति को सदा सुख मिलता है और वह शान्त पुरुषों की संगति में मिल बैठ कर प्रभु का गुणानुवाद करता है। वह केवल प्रभु-नाम पर ही विचार-चर्चा करता है और स्वयं तो तैरकर पार कर ही जाता है साथ ही साथ अपने वंश को भी पार कर देता है।। ३ ।। गुरु की वाणी प्रभु-नाम को प्रकट करती है और हे नानक, व्यक्ति प्रभु का ठिकाना शब्द के माध्यम से प्राप्त कर लेता है। व्यक्ति गुरमति के माध्यम से सत्य के सरोवर हरि-जल में स्नान करता है और दुर्मति की मैल एवं सभी पापों का नाश कर देता है।। ४ ।। ५ ।। ४४ ।। आसा महला ३।। मनमुख बुरी मौत मरते हैं और मर कर अपना मरना भी खराब कर लेते हैं। मेरा-मेरा करते हुए ही वे ख्वार होते रहते हैं और आत्म-तत्व को न पहचानते हुए भ्रमों में ही बेखबर पड़े रहते हैं।। १ ।। जो शब्द में लीन होकर अपने अहम्-भाव के प्रति मर जाता है वही वास्तविक मौत मरता है। ऐसे व्यक्ति को गुरु ने प्रशंसा और निन्दा समान भाव में समझने की शिक्षा दी है और वह प्रभु-सुमिरन करता हुआ इस संसार से लाभ कमाकर जाता है।। १ ।। रहाउ ।। नाम-विहीन व्यक्ति तो माँ के गर्भ में ही सड़ गल जाता है और यदि वह जन्म लेता भी है तो द्वैतभाव और लोभ में पड़ा रहकर वह जीवन को व्यर्थ गँवा देता है। नाम से विहीन होकर सारी सृष्टि जलती तपती रहती है। केवल पूर्ण एवं सच्चा गुरु ही इस सारे रहस्य को समझता है।। २ ।। चंचल बन कर अनेकों चोटें खाता है और इस जन्म के भटके हुए को उसे कहीं ठौर-ठिकाना नहीं मिलता। गर्भ और योनि में आना तो विष्ठा में वास के समान है और ऐसे आवास में मनमुख व्यक्ति बार-बार निवास करता है।। ३ ।। अपने सच्चे गुरु पर मैं सदैव बलिहारी जाता हूँ जिसने व्यक्ति को गुरमुख बनाकर उसकी ज्योति को परम-ज्योति में मिला दिया है। निर्मल वाणी के माध्यम से अपने वास्तविक घर (स्वरूप) में निवास किया जाता है। हे नानक, जो अहंकार को नष्ट कर देता है वह सदा वास्तविक त्यागी बना रहता है।। ४ ।। ६ ।। ४५ ।। आसा महला ३।। प्रभु के सेवक ने

जाति गवाई ॥ तनु मनु अरपे सतिगुर सरणाई ॥ हिरदै नामु वडी वडिआई ॥ सदा प्रीतमु प्रभु होइ सखाई ॥ १ ॥ सो लाला जीवतु मरै ॥ सोगु हरखु दुइ सम करि जाणै गुर परसादी सबदि उधरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करणी कार धुरहु फुरमाई ॥ बिनु सबदै को थाइ न पाई ॥ करणी कीरति नामु वसाई ॥ आपे देवै ढिल न पाई ॥ २ ॥ मनमुखि भरमि भुलै संसारु ॥ बिनु रासी कूड़ा करे वापारु ॥ विणु रासी वखरु पलै न पाइ ॥ मनमुखि भुला जनमु गवाइ ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे सु लाला होइ ॥ ऊतम जाती ऊतमु सोइ ॥ गुर पउड़ी सभ दू ऊचा होइ ॥ नानक नामि वडाई होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥ आसा महला ३ ॥ मनमुखि झूठो झूठु कमावै ॥ खसमै का महलु कदे न पावै ॥ दूजै लगी भरमि भुलावै ॥ ममता बाधा आवै जावै ॥ १ ॥ दोहागणी का मन देखु सीगारु ॥ पुत्र कलति धनि माइआ चितु लाए झूठु मोहु पाखंड विकारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सोहागणि जो प्रभ भावै ॥ गुर सबदी सीगारु बणावै ॥ सेज सुखाली अनदिनु हरि रावै ॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै ॥ २ ॥ सा सोहागणि साची जिसु साचि पिआरु ॥ अपणा पिरु राखै सदा उर धारि ॥ नेड़ै वेखै सदा हदूरि ॥ मेरा प्रभु सरब रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥ आगै जाति रूपु न जाइ ॥ तेहा होवै जेहे करम कमाइ ॥ सबदे ऊचो ऊचा होइ ॥ नानक साचि समावै सोइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥ आसा महला ३ ॥ भगति रता जनु सहजि सुभाइ ॥ गुर कै भै साचै साचि समाइ ॥ बिनु गुर पूरे भगति न होइ ॥ मनमुख रुंने अपनी पति खोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि जपि सदा धिआइ ॥ सदा अनंदु होवै दिनु राती जो इछै सोई फलु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूरे ते पूरा पाए ॥ हिरदै सबदु सचु नामु वसाए ॥ अंतरु निरमलु अंम्रित सरि नाए ॥ सदा सूचे साचि समाए ॥ २ ॥ हरि प्रभु वेखै सदा हजूरि ॥ गुर परसादि रहिआ भरपूरि ॥ जहा जाउ तह वेखा सोइ ॥ गुर बिनु दाता अवरु न कोइ ॥ ३ ॥ गुरु सागरु पूरा भंडार ॥ ऊतम रतन जवाहर अपार ॥ गुर परसादी देवणहारु ॥ नानक बखसे बखसणहारु ॥ ४ ॥ ९ ॥ ४८ ॥ आसा महला ३ ॥ गुरु साइरु सतिगुरु सचु सोइ ॥ पूरै भागि गुर

अपने अस्तित्व को मिटा दिया है और सच्चे गुरु की शरण में आकर उसने अपना तन मन उसे अर्पण कर दिया है। उसके हृदय में प्रभु-नाम है और उसका बड़प्पन महान है। प्रियतम प्रभु सदैव उसका साथी बना रहता है।। १ ।। ऐसा सेवक जीवित रहते हुए भी तृष्णाओं की ओर से मर जाता है। वह शोक एवं हर्ष दोनों को समान भाव से जानता है और गुरु की कृपा से शब्द के माध्यम से उसका उद्धार हो जाता है।। १।। रहाउ ।। वह सेवक वही कार्य करता है जो प्रभु का प्रारम्भ से ही हुकम होता है। शब्द में लीन हुए बिना कोई प्रभु की थाह नहीं जान सकता। प्रभु की कीर्ति गायन के कर्म से प्रभु का नाम अन्दर बस जाता है। वह प्रभु स्वयं ही देता है और देने में कोई देरी नहीं लगाता।। २ ।। मनमुख व्यक्ति भ्रमों में पड़े हुए संसार में भूलते-भटकते रहते हैं और बिना नाम की पूँजी के वे झूठा व्यापार करते रहते हैं। बिना पूँजी के सौदा उनके हाथ नहीं आता और इस प्रकार भटकता हुआ मनमुख जीवन को व्यर्थ में ही गँवा देता है।। ३ ।। सच्चे गुरु की सेवा करने वाला ही सेवक होता है और उसकी जाति तथा महिमा उत्तम होती है। जीव गुरु रूपी सीढ़ी पर चढ़कर सबसे ऊँचा हो जाता है और हे नानक, नाम के माध्यम से उसे बड़प्पन प्राप्त होता है।। ४ ।। ७ ।। ४६ ।। आसा महला ३।। झूठा मनमुख झूठ में ही आचरण करता है और मेरी-मेरी के भाव में बँधा रहकर आवागमन में पड़ा रहता है।। १ ।। हे मन, कुलटा स्त्री का सिंगार तू देख ले (वह भला किस काम का है)। पुत्र, स्त्री, धन-सम्पदा आदि में चित्त लगाने वाला जीव झूठ, मोह, पाखण्ड और विकारों में ही लीन बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। सदा सुहागिन तो वही है जो प्रभु को अच्छी लगती है और ऐसी जीव-स्त्री शब्द गुरु का सिंगार धारण करती है। वह सेज पर दिन-रात प्रभु के रमण का सुख प्राप्त करती है और अपने प्रियतम से मिलकर सदा सुख पाती है।। २ ।। वही सुहागिन सच्ची है जिसे सत्य के साथ प्रेम बना रहता है और जो अपने प्रियतम को सदा हृदय में धारण किए रहती है। वह प्रभु को सदैव अपने आस-पास ही देखती है क्योंकि मेरा प्रभु सब में समाहित बना हुआ है।। ३ ।। परलोक में जाति और रूप नही जाता और वहाँ व्यक्ति को वैसा ही जाना जाता है जैसे वह कर्म कमाता है। शब्द के माध्यम से ही वह उत्तरोतर ऊँचा होता जाता है और हे नानक, अन्त में वह सत्य में लीन हो जाता है।। ४ ।। ८ ।। ४७ ।। आसा महला ३ ।। प्रभु का सेवक सहज-स्वभाव में ही भक्ति में लीन बना रहता है। गुरु के भय में रहता हुआ वह सत्य में ही लीन हो जाता है। पूर्ण गुरु के बिना भक्ति नहीं होती और मनमुख व्यक्ति सदैव अपना सम्मान गँवा कर रोते रहते हैं।। १ ।। हे मेरे मन, तू सदैव प्रभु का जाप और आराधना कर जिससे दिन-रात तू आनन्दित बना रहेगा और मनोवांछित फल प्राप्त करेगा।। १ ।। रहाउ ।। पूर्ण गुरु से ही सम्पूर्ण परमात्मा प्राप्त होता है और हृदय में शब्द तथा सच्चा नाम आन बसता है। सत्संग रूपी अमृत के सरोवर में स्नान करने से अन्तर्मन निर्मल हो जाता है और व्यक्ति सदैव पवित्र सत्य में लीन हो जाता है।। २ ।। प्रभु सदैव उपस्थित बना रहता है और गुरु की कृपा से व्यक्ति जान जाता है कि वह सर्वत्र व्याप्त है। मैं जहाँ भी जाता हूँ उसी को देखता हूँ। गुरु के बिना मेरे लिए अन्य कोई भी दाता नहीं है।। ३ ।। गुरु भण्डारों का पूरा सागर है जिसमें उत्तम रत्न एवं अपार रूप से मोती-माणिक हैं। गुरु की कृपा से देने वाले प्रभु के प्रति चेतनता आ जाती है और हे नानक, वह क्षमाशील प्रभु क्षमा कर देता है।। ४ ।। ९ ।। ४८ ।। आसा महला ३।। गुरु ही सरोवर है और सच्चे गुरु की महिमा भी सच्ची है। पूर्ण भाग्य होने से ही गुरु

सेवा होइ ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ गुर परसादी सेव कराए ॥ १ ॥ गिआन रतनि सभ सोझी होइ ॥ गुर परसादि अगिआनु बिनासै अनदिनु जागै वेखै सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहु गुमानु गुर सबदि जलाए ॥ पूरे गुर ते सोझी पाए ॥ अंतरि महलु गुर सबदि पछाणै ॥ आवण जाणु रहै थिरु नामि समाणे ॥ २ ॥ जंमणु मरणा है संसारु ॥ मनमुखु अचेतु माइआ मोहु गुबारु ॥ पर निंदा बहु कूड़ु कमावै ॥ विसटा का कीड़ा विसटा माहि समावै ॥ ३ ॥ सतसंगति मिलि सभ सोझी पाए ॥ गुर का सबदु हरि भगति द्रिड़ाए ॥ भाणा मंने सदा सुखु होइ ॥ नानक सचि समावै सोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४९ ॥ आसा महला ३ पंचपदे ॥ सबदि मरै तिसु सदा अनंद ॥ सतिगुर भेटे गुर गोबिंद ॥ ना फिरि मरै न आवै जाइ ॥ पूरे गुर ते साचि समाइ ॥ १ ॥ जिन्ह कउ नामु लिखिआ धुरि लेखु ॥ ते अनदिनु नामु सदा धिआवहि गुर पूरे ते भगति विसेखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह कउ हरि प्रभु लए मिलाइ ॥ तिन्ह की गहण गति कही न जाइ ॥ पूरै सतिगुर दिती वडिआई ॥ ऊतम पदवी हरि नामि समाई ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपे आपि ॥ एक घड़ी महि थापि उथापि ॥ कहि कहि कहणा आखि सुणाए ॥ जे सउ घाले थाइ न पाए ॥ ३ ॥ जिन्ह कै पोतै पुंनु तिन्हा गुरू मिलाए ॥ सचु बाणी गुरु सबदु सुणाए ॥ जहां सबदु वसै तहां दुखु जाए ॥ गिआनि रतनि साचै सहजि समाए ॥ ४ ॥ नावै जेवडु होरु धनु नाही कोइ ॥ जिस नो बखसे साचा सोइ ॥ पूरै सबदि मंनि वसाए ॥ नानक नामि रते सुखु पाए ॥ ५ ॥ ११ ॥ ५० ॥ आसा महला ३ ॥ निरति करे बहु वाजे वजाए ॥ इहु मनु अंधा बोला है किसु आखि सुणाए ॥ अंतरि लोभु भरमु अनल वाउ ॥ दीवा बलै न सोझी पाइ ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति घटि चानणु होइ ॥ आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि निरति हरि लागै भाउ ॥ पूरे ताल विचहु आपु गवाइ ॥ मेरा प्रभु साचा आपे जाणु ॥ गुर कै सबदि अंतरि ब्रहमु पछाणु ॥ २ ॥ गुरमुखि भगति अंतरि प्रीति पिआरु ॥ गुर का सबदु सहजि वीचारु ॥ गुरमुखि भगति जुगति सचु सोइ ॥ पाखंडि भगति निरति दुखु होइ

की सेवा हो पाती है। जिसे प्रभु स्वयं समझाता है वह ही उसके रहस्य को बूझता है और गुरु की कृपा द्वारा वह प्रभु ही सुमिरन कराता है।। १ ।। ज्ञान रूपी रत्न प्राप्त होने से सब कुछ सुझाई देने लगता है। गुरु की कृपा से अज्ञान विनष्ट हो जाता है तथा जीव सदैव चेतन बनकर सत्य का साक्षात्कार करता है।। १ ।। रहाउ।। शब्द-गुरु के माध्यम से ही मोह और अभिमान जल जाता है और पूर्ण गुरु से समझ प्राप्त हो जाती है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही अन्तर्मन के ठिकाने की पहचान आ जाती है और स्थिर प्रभु के नाम में लीन होकर आवागमन छूट जाता है।। २ ।। जीना-मरना ही संसार है परन्तु मनमुख मूढ़ व्यक्ति माया-मोह के अन्धकार में पड़ा रहता है। वह परायी निन्दा करता हुआ अनेकों प्रकार से झूठा आचरण करता है और इस प्रकार विष्ठा का कीड़ा बनते हुए विष्ठा में ही मर-खप जाता है।। ३ ।। सत्संगत में मिल बैठकर सब समझ में आता है और गुरु का उपदेश प्रभु-भक्ति को मन में पक्का करता है। प्रभु का हुकम मानने से व्यक्ति सदा सुखी बना रहता है और हे नानक, वह सत्य में समाहित हो जाता है।। ४ ।। १०।। ४६ ।। आसा महला ३ ।। पंचपदे ।। जो शब्द में पूर्ण रूप से लीन हो जाता है वह सदा आनन्दित बना रहता है और सच्चे गुरु से मिलकर वह प्रभु रूपी गुरु को जा मिलता है। वह फिर न तो मरता है और न कहीं आता-जाता है और पूर्ण गुरु के माध्यम से वह सत्य में लीन हो जाता है।। १ ।। प्रभु की ओर से ही जिनके भाग्य लेखों में प्रभु-नाम लिखा है वे सदैव नाम का सुमिरन करते हैं और पूर्ण गुरु से विशिष्ट भक्ति प्राप्त करते हैं।। १ ।। रहाउ ।। जिन्हें प्रभु स्वयं अपने में मिला लेता है उनकी गहन एवं उत्तम अवस्था के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। पूर्ण सच्चे गुरु ने ऐसा बड़प्पन प्रदान किया है कि प्रभु-नाम में लीन बने रहने की उत्तम पदवी प्राप्त हो गई है।। २ ।। वह जो करता है स्वयं ही करता है और एक घड़ी भर में बना कर नष्ट भी कर देता है। केवल बातें करते रहने और सुनाते रहने से सैंकड़ों प्रकार से की हुई मेहनत भी स्वीकृत नहीं होती।। ३ ।। जिनके पहले के खज़ाने में पुण्य संग्रहीत हैं उन्हें गुरु मिल जाता है और वे सच्ची वाणी और शब्द-गुरु को सुनते हैं। जहाँ शब्द का निवास है वहाँ से दुख भाग जाता है और ज्ञान-रत्न के फलस्वरूप व्यक्ति सहजभाव से ही सत्य में लीन हो जाते हैं।। ४ ।। जिसे सच्चा प्रभु दे देता है उसे पता लग जाता है कि प्रभु-नाम जैसा अन्य धन कोई भी नहीं है। ऐसा व्यक्ति पूर्ण शब्द को मन में बसाता है और हे नानक, नाम में बने रहकर वह सुख प्राप्त करता है।। ५ ।। ११ ।। ५० ।। आसा महला ३ ।। अनेकों प्रकार के नृत्य और वाद्य बजाने का क्या लाभ क्योंकि यह मन तो अन्धा और बहरा है; इसलिए किसे कहकर सुना रहे हो। ऐसे व्यक्ति के अन्दर लोभ रूपी आग और भ्रम रूपी हवा भरी हुई है। इसलिए न तो ज्ञान का दीपक जलता है और न ही व्यक्ति को सूझ प्राप्त होती है।। १ ।। अन्तर्मन में प्रकाश उत्पन्न करना ही गुरमुख के लिए भक्ति है। इस प्रकाश में ही वह अपने को पहचान कर प्रभु से मिल जाता है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु से प्रेम लगना ही गुरमुख के लिए नृत्य है और अन्तर्मन से अभिमान को गँवा देना ही सुरताल को पूरी तरह बनाए रखने के समान है। मेरा सच्चा प्रभु स्वयं ही सब कुछ जानने वाला है इसलिए हे जीव, शब्द-गुरु के माध्यम से अपने अन्तर्मन में ही परमात्मा को पहचान ले।। २ ।। अन्तर्मन में प्रभु के लिए प्रीति और प्रेम ही गुरमुख के लिए भक्ति हैं। वह गुरु के वचनों का शान्त-चित्त होकर विचार करता है। गुरमुख व्यक्ति की भक्ति ही वास्तविक जीवन की युक्ति है और यही सच्चा ढंग है क्योंकि पाखण्डपूर्ण भक्ति और सांसारिकता की कूद-फाँद में दुख प्राप्त होता है

॥ ३ ॥ एहा भगति जनु जीवत मरै ॥ गुर परसादी भवजलु तरै ॥ गुर के बचनि भगति थाइ पाइ ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ ४ ॥ हरि क्रिपा करे सतिगुरू मिलाए ॥ निहचल भगति हरि सिउ चितु लाए ॥ भगति रते तिन्ह सची सोइ ॥ नानक नामि रते सुखु होइ ॥ ५ ॥ १२ ॥ ५१ ॥

आसा घरु ८ काफी महला ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि कै भाणै सतिगुरु मिलै सचु सोझी होई ॥ गुर परसादी मनि वसै हरि बूझै सोई ॥ १ ॥ मै सहु दाता एकु है अवरु नाही कोई ॥ गुर किरपा ते मनि वसै ता सदा सुखु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि निरभउ हरि नामु है पाईऐ गुर वीचारि ॥ बिनु नावै जम कै वसि है मनमुखि अंध गवारि ॥ २ ॥ हरि कै भाणै जनु सेवा करै बूझै सचु सोई ॥ हरि कै भाणै सालाहीऐ भाणै मंनिऐ सुखु होई ॥ ३ ॥ हरि कै भाणै जनमु पदारथु पाइआ मति ऊतम होई ॥ नानक नामु सलाहि तूं गुरमुखि गति होई ॥ ४ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ ५२ ॥

आसा महला ४ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥ २ ॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५३ ॥

।। ३ ।। वास्तविक भक्ति यह है कि प्रभु का सेवक जीने के अहम्-भाव के प्रति मर जाए। ऐसा सेवक गुरु की कृपा से संसार सागर से पार हो जाता है। गुरु के उपदेश के अनुरूप की हुई भक्ति ही सफल होती है और प्रभु स्वयं मन में आन बसता है।। ४ ।। प्रभु ही कृपा करता है तो सच्चे गुरु से मेल हो जाता है और व्यक्ति प्रभु में चित्त लगाकर अटल भक्ति में लीन हो जाता है। जो भक्ति में लीन होते हैं उनकी महिमा सच्ची होती है। हे नानक, प्रभु-नाम में लीन बने रहने से ही सुख प्राप्त होता है।। ५ ।। १२ ।। ५१ ।।

आसा घरु ८ काफी महला ३   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु की रज़ा में ही सच्चा गुरु मिलता है और सत्य की समझ आती है। गुरु की कृपा से जिसके मन में सत्य बस जाता है वही प्रभु को जान लेता है।। १ ।। मेरा मालिक और दाता एक प्रभु ही है, अन्य कोई नहीं है, गुरु की कृपा से यदि प्रभु मन में आ बसे तो सदा सुख प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ ।। इस युग में निर्भय बनाने वाला केवल प्रभु-नाम ही है जिसे गुरु के चिन्तन और विचार के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। नाम-विहीन व्यक्ति यम के वश में पड़ा रहता है और ऐसे मनमुख व्यक्ति को अन्धा और गँवार माना जाता है।। २ ।। जो सेवक प्रभु की रज़ा में सेवा करता है वही प्रभु को बूझता है। प्रभु की रज़ा में ही उसका गुणानुवाद किया जाता है और प्रभु के हुकम को मानने से ही सुख प्राप्त होता है। प्रभु की रज़ा में ही जन्म रूपी उत्तम पदार्थ प्राप्त हुआ है और मेरी मति भी उत्तम बन गई है। हे नानक, तू प्रभु-नाम के गीत गा क्योंकि गुरमुख बनकर ही मुक्ति प्राप्त होगी।। ४ ।। ३६ ।। १३ ।। ५२।।

आसा महला ४ घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि

तू सबको पैदा करने वाला है; तू सदा बना रहने वाला मेरा स्वामी है। जो तुझे भाता है वही होता है और जो तू देता है वही मैं प्राप्त करता हूँ।। १। । रहाउ।। सारी सृष्टि तेरी है और सभी तेरा ही स्मरण करते हैं। जिस पर तेरी कृपा होती है वही तेरे नाम रूपी रत्न को प्राप्त करता है। गुरमुख तो इस रत्न को ढूंढ लेता है परन्तु मन के पीछे चलने वाला मनमुख प्राप्त करके भी उसे गंवा देता है। हे प्रभु, तू स्वयं ही जीवों को अपने से दूर कर देता है और स्वयं ही उन्हें अपने में लीन कर देता है।। १ ।। तू जीवन का विशालतम समुद्र है और सब तुझमें ही लहरों की तरह विद्यमान हैं। तेरे बिना अन्य दूसरा कोई भी नहीं है। जीव-जन्तु सब तेरा ही खेल हैं। वियुक्त जीव तुझसे बिछुड़ कर फिर तुझमें ही संयुक्त होकर लीन हो जाते हैं।। २ ।। हे प्रभु, जिसे तू सुमति प्रदान करता है वह ही इस सारे कौतुक को समझ पाता है और सदैव तेरा ही गुणानुवाद करता रहता है। जिसने भी परमात्मा का स्मरण किया है वास्तव में उसी ने ही आनन्द प्राप्त किया है और वही जीव सहज भाव से हरि-नाम में लीन बना रहता है।। ३ ।। हे प्रभु, केवल तू ही कर्ता है और तेरा किया हुआ ही सब कुछ होता है। तेरे बिना अन्य दूसरा कोई भी नहीं है। तू ही जीवों को पैदा कर उनकी देख-भाल करता है। हे नानक, जो व्यक्ति गुरमुख अर्थात गुरु की ओर उन्मुख हो जाता है उसके अन्दर परमात्मा प्रकट हो जाता है।। ४ ।। १ ।। ५३ ।।

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु २ महला ४ ॥

किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥ किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥ किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई ॥ हमारा धड़ा हरि रहिआ समाई ॥ १ ॥ हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥ मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह सिउ धड़े करहि से जाहि ॥ झूठु धड़े करि पछोताहि ॥ थिरु न रहहि मनि खोटु कमाहि ॥ हम हरि सिउ धड़ा कीआ जिस का कोई समरथु नाहि ॥ २ ॥ एह सभि धड़े माइआ मोह पसारी ॥ माइआ कउ लूझहि गावारी ॥ जनमि मरहि जूऐ बाजी हारी ॥ हमरै हरि धड़ा जि हलतु पलतु सभु सवारी ॥ ३ ॥ कलिजुग महि धड़े पंच चोर झगड़ाए ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु वधाए ॥ जिस नो क्रिपा करे तिसु सतसंगि मिलाए ॥ हमरा हरि धड़ा जिनि एह धड़े सभि गवाए ॥ ४ ॥ मिथिआ दूजा भाउ धड़े बहि पावै ॥ पराइआ छिद्रु अटकलै आपणा अहंकारु वधावै ॥ जैसा बीजै तैसा खावै ॥ जन नानक का हरि धड़ा धरमु सभ स्रिसटि जिणि आवै ॥ ५ ॥ २ ॥ ५४ ॥ आसा महला ४ ॥ हिरदै सुणि सुणि मनि अंम्रितु भाइआ ॥ गुरबाणी हरि अलखु लखाइआ ॥ १ ॥ गुरमुखि नामु सुनहु मेरी भैना ॥ एको रवि रहिआ घट अंतरि मुखि बोलहु गुर अंम्रित बैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै मनि तनि प्रेमु महा बैरागु ॥ सतिगुरु पुरखु पाइआ वडभागु ॥ २ ॥ दूजै भाइ भवहि बिखु माइआ ॥ भागहीन नही सतिगुरु पाइआ ॥ ३ ॥ अंम्रितु हरि रसु हरि आपि पीआइआ ॥ गुरि पूरै नानक हरि पाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५५ ॥ आसा महला ४ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु नामु आधारु ॥ नामु जपी नामो सुख सारु ॥ १ ॥ नामु जपहु मेरे साजन सैना ॥ नाम बिना मै अवरु न कोई वडै भागि गुरमुखि हरि लैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना नही जीविआ जाइ ॥ वडै भागि गुरमुखि हरि पाइ ॥ २ ॥ नामहीन कालख मुखि माइआ ॥ नाम बिना

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।। रागु आसा घरु २ महला ४।।

किसी ने तो अपने मित्र और पुत्र के साथ मिलकर गुटबन्दी की हुई है; किसी की गुटबन्दी समधी और दामाद के साथ है; किसी ने अपने स्वार्थ के लिए सरकारी अहलकार और चौधरियों के साथ गुट बनाया हुआ है परन्तु हमारा गुट तो प्रभु के साथ बना हुआ है जो सर्वत्र व्याप्त है।। १ ।। प्रभु के साथ ही हमारी गुटबन्दी है और परमात्मा ही मेरा आसरा है। प्रभु के बिना मेरा अन्य कोई भी गुट अथवा पक्ष नहीं है और मैं तो प्रभु के ही अगणित गुणों का गान करता रहता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। जिनके साथ भी गुटबन्दियाँ करके लोग अन्ततः पछताते हैं वे खोटे आचरण वाले व्यक्ति कभी स्थिर नहीं बने रहते। इसीलिए मैंने प्रभु के साथ ही गुटबन्दी की है जिसके समान कोई भी शक्तिशाली नहीं है।। २ ।। यह सभी गुटबन्दियां प्रपंचों एवं मोह का ही विस्तार हैं और मूर्ख लोग धन-सम्पदा के लिए ही लड़ते झगड़ते रहते हैं। वे जन्मते हैं और मर जाते हैं तथा जुए में ही जीवन की बाज़ी हार जाते हैं। प्रभु हमारे गुट में है जो इस लोक और परलोक को सँवार देता है।। ३ ।। कलियुग में जितने भी गुट है ये पाँचों विकारों अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि के द्वारा ही पैदा किए जाते हैं। इसी कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह और अभिमान और अधिक बढ़ता जा रहा है। जिस पर प्रभु कृपा करता है उसे सत्संगत के साथ जोड़ देता है। हमारा गुट तो प्रभु ही है जिसने अन्य सब गुटों को पीछे फेंक दिया है।। ४ ।। द्वैत के झूठे भाव के कारण ही लोग गुटबन्दियां करते है, अन्य लोगों की दुर्बलताओं के छिद्रों को ढूँढते हैं और अपने अहंकार को और बढ़ाते हैं। वे जैसा बोते हैं वैसा ही फल खाते हैं। दास नानक ने तो प्रभु और धर्म के साथ गुट बनाया है जो सारी सृष्टि को जीत लेता है।। ५ ।। २ ।। ५४ ।। आसा महला ४ ।। हृदय से प्रभु-नाम सुनने से यह नाम-अमृत मन को अच्छा लगने लगता है। गुरुवाणी के माध्यम से अलख प्रभु का साक्षात्कार हो जाता है।। १ ।। हे मेरी बहनों, गुरमुख बनकर प्रभु के नाम को सुनो। एक प्रभु ही सभी हृदयों में रमण कर रहा है इसलिए मुख से तुम सब गुरु के अमृत-वचनों (गुरबाणी) का उच्चारण करते रहो।। १ ।। रहाउ।। मेरे मन, तन में प्रभु का प्रेम और पूर्ण वैराग्य है। बड़े भाग्य से मुझे सच्चे गुरु के रूप में परमात्मा प्राप्त हो गया है।। २ ।। व्यक्ति द्वैतभाव में पड़ा रहकर विष रूपी माया के पीछे भटकता रहता है। भाग्यहीन व्यक्ति सच्चे गुरु को मिल नहीं पाता।। ३ ।। प्रभु स्वयं व्यक्ति को अमृत रूपी हरि-रस का पान कराता है। पूर्ण गुरु के माध्यम से नानक ने प्रभु को प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। ३ ।। ५५ ।। आसा महला ४ ।। मेरे मन और तन में प्रभु-नाम का ही प्रेम और आसरा है। मैं नाम का ही जाप करता हूँ और प्रभु का नाम ही सभी सुखों का सार-तत्व है।। १ ।। हे मेरे साथियो और मित्रो, प्रभु नाम का ही उच्चारण करते रहो। नाम के बिना मेरे पास अन्य कुछ भी नहीं है और भाग्यशाली गुरमुख बनकर ही मैने प्रभु-नाम को प्राप्त किया है।। १ ।। रहाउ ।। नाम के बिना जीना संभव नहीं। बड़े भाग्यशाली जीव गुरमुख बनकर ही प्रभु को प्राप्त करते हैं।। २ ।। नाम-विहीन व्यक्तियों के मुख पर माया की कालिमा पुती रहती है।। प्रभु-नाम के बिना

ध्रिगु ध्रिगु जीवाइआ ॥ ३ ॥ वडा वडा हरि भाग करि पाइआ ॥ नानक गुरमुखि नामु दिवाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५६ ॥ आसा महला ४ ॥ गुण गावा गुण बोली बाणी ॥ गुरमुखि हरि गुण आखि वखाणी ॥ १ ॥ जपि जपि नामु मनि भइआ अनंदा ॥ सति सति सतिगुरि नामु दिड़ाइआ रसि गाए गुण परमानंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावै हरि जन लोगा ॥ वडै भागि पाए हरि निरजोगा ॥ २ ॥ गुण विहूण माइआ मलु धारी ॥ विणु गुण जनमि मुए अहंकारी ॥ ३ ॥ सरीरि सरोवरि गुण परगटि कीए ॥ नानक गुरमुखि मथि ततु कढीए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५७ ॥ आसा महला ४ ॥ नामु सुणी नामो मनि भावै ॥ वडै भागि गुरमुखि हरि पावै ॥ १ ॥ नामु जपहु गुरमुखि परगासा ॥ नाम बिना मै धर नही काई नामु रविआ सभ सास गिरासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामै सुरति सुनी मनि भाई ॥ जो नामु सुनावै सो मेरा मीतु सखाई ॥ २ ॥ नामहीण गए मूड़ नंगा ॥ पचि पचि मुए बिखु देखि पतंगा ॥ ३ ॥ आपे थापे थापि उथापे ॥ नानक नामु देवै हरि आपे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५८ ॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि हरि हरि वेलि वधाई ॥ फल लागे हरि रसक रसाई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपि अनत तरंगा ॥ जपि जपि नामु गुरमति सालाही मारिआ कालु जमकंकर भुइअंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि गुर महि भगति रखाई ॥ गुरु तुठा सिख देवै मेरे भाई ॥ २ ॥ हउमै करम किछु बिधि नही जाणै ॥ जिउ कुंचरु नाइ खाकु सिरि छाणै ॥ ३ ॥ जे वड भाग होवहि वड ऊचे ॥ नानक नामु जपहि सचि सूचे ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५९ ॥ आसा महला ४ ॥ हरि हरि नाम की मनि भूख लगाई ॥ नामि सुनिऐ मनु त्रिपतै मेरे भाई ॥ १ ॥ नामु जपहु मेरे गुरसिख मीता ॥ नामु जपहु नामे सुखु पावहु नामु रखहु गुरमति मनि चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामो नामु सुणी मनु सरसा ॥ नामु लाहा लै गुरमति बिगसा ॥ २ ॥ नाम बिना कुसटी मोह अंधा ॥ सभ निहफल करम कीए दुखु धंधा ॥ ३ ॥ हरि हरि हरि जसु जपै वडभागी ॥ नानक गुरमति नामि लिव लागी ॥ ४ ॥ ८ ॥ ६० ॥

जीवन धिक्कार-योग्य है।। ३ ।। सब बड़ों से बड़ा परमात्मा भाग्य से पाया जाता है। हे नानक, गुरमुख बनकर ही प्रभु का नाम प्राप्त किया जाता है।। ४ ।। ४ ।। ५६ ।। आसा महला ४ ।। मैं प्रभु के गुण गाता हूँ और गुरबाणी के माध्यम से प्रभु के गुणों का ही उच्चारण करता हूँ। गुरमुख बनकर ही मै प्रभु के गुणों का बखान करता हूँ।। १ ।। प्रभु के नाम का सुमिरन करते-करते मेरा मन आनन्दित हो उठा है। सच्चे प्रभु का सच्चा नाम सच्चे गुरु ने मन में दृढ़ किया है और मैं परम आनन्द रूपी गुणवान प्रभु का पूर्ण लीनता के साथ गुणानुवाद करता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के सेवक लोग प्रभु का गुण गाते हैं। बड़े भाग्य से ही अलिप्त प्रभु को प्राप्त किया जाता है।।२।। गुणों से विहीन लोगों ने मन रूपी माया को धारण कर रखा है। नेकी से विहीन व्यक्ति अहंकारी होते हैं और जन्मते-मरते रहते हैं।।३।। शरीर रूपी सरोवर में से गुणों के रत्न प्रकट होते रहते हैं। हे नानक, गुरमुख बनकर ही सरोवर का मन्थन करके इन तत्वों को प्राप्त किया जाता है।। ४ ।। ५ ।। ५७ ।। आसा महला ४ ।। मैं प्रभु-नाम ही सुनता हूँ और प्रभु-नाम ही मेरे मन को भाता है। बड़े भाग्य से ही गुरमुख बनकर व्यक्ति प्रभु को पा लेता है।। १।। हे जीव, प्रभु के नाम का सुमिरन करो जो गुरमुख बनने पर ही अन्तर्मन में प्रकाशित होता है। नाम के बिना मुझे अन्य कोई आसरा नहीं है और नाम ही मेरे श्वास और ग्रास में बसा हुआ है।।१।। रहाउ।। मेरी सुरति नाम में ही लगी रहती है और यही मेरे मन को अच्छा लगता है। जो मुझे प्रभु-नाम सुनाता है वही मेरा मित्र है और सखा है।। २ ।। नाम-विहीन होकर मूर्ख व्यक्ति नंगे व्यक्तियों की तरह ही भटकते रहते हैं और माया रूपी विष को देखकर वे पतंगे की तरह जल कर मर खप जाते हैं।। ३ ।। प्रभु स्वयं ही पैदा करता है और पैदा करके मार भी देता है। हे नानक, प्रभु स्वयं ही अपना नाम प्रदान करता है।। ४ ।। ६ ।। ५८ ।। आसा महला ४ ।। गुरमुख व्यक्ति ही प्रभु रूपी बेल को दूसरों के सुख के लिए और अधिक प्रफुल्लित करते हैं। इसी बेल को प्रभु का नाम रूपी फल लगता है और इसके रसिकजन इसके रस का आनन्द लेते हैं। हे जीव, तू अनेकों लहरों वाले प्रभु-नाम का जाप करते हुए गुरमत की प्रशंसा कर और इस प्रकार तू काल और यम रूपी सर्प को मार लेगा।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने गुरु के अन्दर भक्ति की स्थापना की है। जब गुरु प्रसन्न होता है तो हे मेरे भाई, वह यह भक्ति अपने सिक्ख को प्रदान करता है।। २ ।। जो अहंकार के वश में होकर कर्म करता है वह वास्तव में जीवन की विधि को नहीं जानता। वह उसी प्रकार का व्यक्ति है जैसा हाथी होता है; हाथी नहा कर फिर अपने सिर पर मिट्टी डाल लेता है।। ३ ।। यदि ऊँचा और बड़ा भाग्य हो तो हे नानक, व्यक्ति सच्चे और पवित्र प्रभु-नाम का सुमिरन करता है।। ४ ।। ६।। ५६ ।। आसा महला ४।। मेरे मन में प्रभु-नाम की भूख लगी हुई है। हे मेरे भाई, प्रभु-नाम सुनकर ही मन पूर्ण रूप से तृप्त हो जाता है।। १ ।। हे मेरे मित्र, गुरु के सिक्ख, तुम प्रभु-नाम की आराधना करो। नाम का ही जाप करो, नाम में ही सुख प्राप्त करो और गुरमत को धारण करते हुए नाम को ही चित्त में बसाकर रखो।। १ ।। रहाउ ।। बार-बार नाम सुनने से ही मेरा मन सरस बन गया है और गुरु के उपदेश के माध्यम से ही नाम का लाभ प्राप्त करके मेरा मन खिल उठा है।। २ ।। नाम के बिना व्यक्ति कोढ़ी और मोह में लीन अन्धा व्यक्ति हो जाता है। उसके सभी कार्य निष्फल होते हैं और दुख का ही कार्य-व्यापार बन जाते हैं।। ३ ।। भाग्यशाली व्यक्ति ही प्रभु के यश का जाप करते हैं और हे नानक, गुरमत के माध्यम से ही प्रभु-नाम में लौ लगती है।। ४ ।। ८ ।। ६० ।।

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ महला ४ रागु आसा घरु ६ के ३ ॥

हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन ॥ गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रंगि भेन ॥ १ ॥ जोगी हरि देहु मती उपदेसु ॥ जुगु जुगु हरि हरि एको वरतै तिसु आगै हम आदेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावहि राग भाति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल ॥ जोवहि कूप सिंचन कउ बसुधा उठि बैल गए चरि बेल ॥ २ ॥ काइआ नगर महि करम हरि बोवहु हरि जामै हरिआ खेतु ॥ मनूआ असथिरु बैलु मनु जोवहु हरि सिंचहु गुरमति जेतु ॥ ३ ॥ जोगी जंगम स्रिसटि सभ तुमरी जो देहु मती तितु चेल ॥ जन नानक के प्रभ अंतरजामी हरि लावहु मनूआ पेल ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६१ ॥ आसा महला ४ ॥ कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाबु ॥ आवत जात बार खिनु लागै हउ तब लगु समारउ नामु ॥ १ ॥ मेरै मनि ऐसी भगति बनि आई ॥ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे जल बिनु मीनु मरि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग धुनि उठावै ॥ मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै तब लगु मेरा मनु राम गुन गावै ॥ २ ॥ कब को नाचै पाव पसारै कब को हाथ पसारै ॥ हाथ पाव पसारत बिलमु तिलु लागै तब लगु मेरा मनु राम सम्हारै ॥ ३ ॥ कब कोऊ लोगन कउ पतीआवै लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु ता जै जै करे सभु कोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ६२ ॥ आसा महला ४ ॥ सतसंगति मिलीऐ हरि साधू मिलि संगति हरि गुण गाइ ॥ गिआन रतनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ १ ॥ हरि जन नाचहु हरि हरि धिआइ ॥ ऐसे संत मिलहि मेरे भाई हम जन के धोवह पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे अनदिनु हरि लिव लाइ ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि भूख न लागै आइ ॥ २ ॥ आपे हरि अपरंपरु करता हरि आपे बोलि बुलाइ ॥ सेई संत भले तुधु भावहि जिन्ह की पति पावहि थाइ ॥ ३ ॥ नानकु आखि न राजै हरि गुण जिउ आखै तिउ सुखु पाइ ॥ भगति भंडार दीए हरि अपुने गुण गाहकु वणजि लै जाइ ॥ ४ ॥ ११ ॥ ६३ ॥

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।। महला ४ रागु आसा घरु ६ के ३।।

हे योगी, तू तार को हाथ से बजा रहा है परन्तु तेरी वीणा बेकार बज रही है। हे योगी, तू गुरमत के माध्यम से प्रभु का गुणानुवाद कर तब ही तेरा मन प्रभु रंग में भीग सकेगा।। १ ।। हे योगी, अपनी मति को प्रभु का उपदेश सुना। सभी युगों में जो एक ही प्रभु परमेश्वर व्याप्त है मैं उसके आगे प्रणाम करता हूँ।।१।। रहाउ ।। तुम अनेकों रागों के माध्यम से गाते बोलते हो परन्तु यह तेरे मन का ही खेल है। तू तो धरती को सींचने के लिए उन बैलों को जोड़ रहा है जो तेरी धरती पर उगी हुई बेलों को खुद चर जाते हैं।। २ ।। प्रभु की कृपा से शरीर रूपी नगर की धरती में प्रभु नाम का बीज बो। वह प्रभु-नाम ही अंकुरित हो जाएगा और तेरा शरीर रूपी खेत हरा-भरा हो जाएगा। चंचल मन रूपी बैल को तू हल में जोड़ और प्रभु के नाम रूपी जल की गुरमत के माध्यम से सिंचाई कर जिससे तेरा खेत रूपी शरीर भली-भाँति सींचा जाए।। ३ ।। योगी और जंगम हे प्रभु, सब तुम्हारी ही रचना हैं और जिसे तू जैसी मति प्रदान करता है वह उसी ओर चल पड़ता है। दास नानक के हे अन्तर्यामी प्रभु, मेरे मन को धकेल कर अपने साथ लगा लो।। ४ ।। ६ ।। ६१ ।। आसा महला ४ ।। मैं घुँघरू और ताल आदि को कहाँ ढूँढता फिरूँ और कहाँ रबाब को बजाता रहूँ। आने-जाने में तो थोड़ी देर लग ही जाएगी तब तक क्यों न मैं प्रभु-नाम का सुमिरन करूँ।। १ ।। मेरे मन में भक्ति की अब ऐसी लालसा जाग उठी है कि अब एक क्षण भर के लिए भी प्रभु के बिना वैसे ही नहीं रह सकता जैसे जल बिना मछली मर जाती है।। १ ।। रहाउ।। पाँच तारों और सात सुरों को भला कहाँ तक मिलाया जाए ओर कब तक राग की धुन को उठाया जाए। इन सब को चुनने और मिलाने में क्षण-पल आदि कुछ समय तो लगेगा ही; तब तक क्यों न मेरा मन प्रभु का गुणानुवाद करे।।२।। कब तक कोई पाँवों और हाथों को फैला-फैला कर नाचेगा। हाथ-पाँव पसारने में तो समय लगता ही है तब तक मेरा मन क्यों न प्रभु-नाम का सुमिरन करे।। ३ ।। कब तक लोगों को प्रसन्न किया जाए; मात्र लोगों को प्रसन्न करने से सम्मान नहीं मिलता। दास नानक का कथन है कि सदैव हृदय में प्रभु-नाम का सुमिरन करो जिससे सभी तुम्हारी जय-जयकार करेंगें।। ४ ।। १० ।। ६२ ।। आसा महला ४ ।। साधु पुरुषों की प्रभु जैसी सत्संगत को प्राप्त किया जाए और ऐसी संगति में प्रभु के गुणों का गायन किया जाए। सत्संगत में ही ज्ञान रूपी रत्न हृदय में प्रकाशित होता है और उसके प्रकाश में अज्ञान का अंधेरा विनष्ट हो जाता है।। १ ।। हे प्रभु के सेवक जनों, प्रभु का सुमिरन करते हुए नाचते रहो। जब ऐसे शान्त पुरुष मिल जाएं तो हे मेरे भाई, हम ऐसे सेवकों के चरण धोएंगे।। १ ।। रहाउ।। हे मेरे मन, प्रतिदिन प्रभु में सुरति लीन करके प्रभु के नाम का जाप करो। ऐसा करने से मनोवांछित फल प्राप्त होगा और फिर कभी भूख नहीं लगेगी।। २ ।। अपरंपर प्रभु स्वयं ही रचना करने वाला कर्ता है और वह स्वयं ही सुमिरन करवाता है। ऐसे ही शान्त पुरुष भले हैं जो तुझे अच्छे लगते हैं और जिनका सम्मान तुझे स्वीकृत होता है।। ३ ।। नानक प्रभु के गुणों को कहते हुए कभी भी तृप्त नहीं होता। हे प्रभु, जैसे-जैसे मैं गुणानुवाद करता हूँ मुझे सुख प्राप्त होता है। प्रभु ने भक्ति के भण्डार दे रखे हैं और कोई गुणों का ग्राहक ही इस भण्डार में से पदार्थ लेकर जाता है।। ४ ।। ११ ।। ६३ ।।

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ८ के काफ़ी महला ४ ॥

आइआ मरणु धुराहु हउमै रोईऐ ॥ गुरमुखि नामु धिआइ असथिरु होईऐ ॥ १ ॥ गुर पूरे साबासि चलणु जाणिआ ॥ लाहा नामु सु सारु सबदि समाणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखे डेह सि आए माइआ ॥ चलणु अजु कि कल्हि धुरहु फुरमाइआ ॥ २ ॥ बिरथा जनमु तिना जिन्ही नामु विसारिआ ॥ जूऐ खेलणु जगि कि इहु मनु हारिआ ॥ ३ ॥ जीवणि मरणि सुखु होइ जिन्हा गुरु पाइआ ॥ नानक सचे सचि सचि समाइआ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६४ ॥ आसा महला ४ ॥ जनमु पदारथु पाइ नामु धिआइआ ॥ गुर परसादी बुझि सचि समाइआ ॥ १ ॥ जिन्ह धुरि लिखिआ लेखु तिन्ही नामु कमाइआ ॥ दरि सचै सचिआर महलि बुलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि नामु निधानु गुरमुखि पाईऐ ॥ अनदिनु नामु धिआइ हरि गुण गाईऐ ॥ २ ॥ अंतरि वसतु अनेक मनमुखि नही पाईऐ ॥ हउमै गरबै गरबु आपि खुआईऐ ॥ ३ ॥ नानक आपे आपि आपि खुआईऐ ॥ गुरमति मनि परगासु सचा पाईऐ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६५ ॥

रागु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हउ अनदिनु हरि नामु कीरतनु करउ ॥ सतिगुरि मोकउ हरि नामु बताइआ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ इकु खिनु ॥ जैसे हंसु सरवर बिनु रहि न सकै तैसे हरि जनु किउ रहै हरि सेवा बिनु ॥ १ ॥ किनहूं प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि किनहूं प्रीति लाई मोह अपमान ॥ हरि जन प्रीति लाई हरि निरबाण पद नानक सिमरत हरि हरि भगवान ॥ २ ॥ १४ ॥ ६६ ॥ आसावरी महला ४ ॥ माई मोरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई ॥ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे करहलु बेलि रीझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरा मनु बैराग बिरकतु भइओ हरि दरसन मीत कै ताई ॥ जैसे

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि रागु आसा घरु ८ के काफ़ी महला ४ ।।

मरना तो प्रारम्भ से ही लिखा हुआ है। व्यक्ति तो अहंकारी होने से रोता है अर्थात यदि अहंकार को त्याग कर यह समझ ले कि प्रभु की ओर से ही मरना लिखाकर पैदा हुए थे तो फिर मरने पर किसी को शोक नहीं रहता। गुरमुख बनकर प्रभु-नाम के सुमिरन से ही स्थिर जीवन प्राप्त किया जाता है अर्थात मौत का विचार डराता नहीं है।।१।। पूर्ण गुरु को शाबाश है जिसके माध्यम से यह ज्ञान लिया है कि सब ने यहाँ से चले ही जाना है। जो शब्द में लीन बने हुए हैं उन्होंने प्रभु-नाम के सार-तत्व का लाभ उठा लिया है।। १ ।। रहाउ ।। हे माँ, हम आए भी शुरु से पूर्व में लिखे हुए आदेश या हुकम के अनुसार थे कि कितने दिन जीना है और जाना भी उसी हुकम के अनुसार है जो प्रारम्भ से ही आदेश रूप में प्राप्त हुआ है।। २ ।। जिन्होंने प्रभु-नाम को भुला दिया है उनका जन्म व्यर्थ है। वे संसार में आकर ऐसा जुआ खेलने में ही लीन हैं जिसमें उन्होनें अपना मन हार दिया है अर्थात अब उनका अपने मन पर कोई नियन्त्रण नहीं रह गया है।। ३ ।। जिन्होंने गुरु को पा लिया है उनको जीने और मरने अर्थात दोनों में ही सुख है। हे नानक, सत्य के कारण वे सच्चे हैं और सत्य में ही लीन बने हुए हैं।। ४ ।। १२ ।। ६४ ।। आसा महला ४ ।। सच्चे व्यक्ति जन्म रूपी अनमोल पदार्थ को पाकर प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं और गुरु की कृपा के रहस्य को बूझ कर सत्य में लीन हो जाते हैं।। १ ।। प्रारम्भ से ही जिनके भाग्य में लिखा हुआ है वे ही प्रभु-नाम की साधना करते हैं। वे सच्चे प्रभु के द्वार पर सत्याचरण वाले बने रहते हैं और उन्हें ही प्रभु के महल में बुलाया जाता है।। १ ।। रहाउ।। हृदय के अन्दर ही प्रभु-नाम का खजाना है इसे गुरमुख बनकर ही प्राप्त किया जा सकता है। इसे पा लेने पर व्यक्ति प्रतिदिन नाम-सुमिरन में लगा रहता है और प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है।। २ ।। अन्तरात्मा में ही अनेकों पदार्थ हैं पर मनमुख बनकर उन्हें नहीं पाया जा सकता। अहंकार में ग्रस्त व्यक्ति अपने अभिमान के कारण ही अपने आप को ख्वार करता रहता है और भूला रहता है।। ३ ।। हे नानक, व्यक्ति स्वयं ही अपने आप को प्रभु से दूर कर लेता है। गुरमति के माध्यम से ही मन में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न होता है और सच्चा-प्रभु प्राप्त होता है।। ४ ।। १३ ।। ६५।।

रागु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मैं सदैव प्रभु-नाम की कीर्ति का गायन करता हूँ। सच्चे गुरु ने मुझे प्रभु-नाम का रहस्य बताया है और अब मैं प्रभु के बिना क्षण-भर भी नहीं रह सकता।। १ ।। रहाउ ।। हमारे पास सुनने और सुमिरन करने के लिए प्रभु की कीर्ति ही है; प्रभु के बिना तो अब मैं एक क्षण के लिए भी नहीं रह सकता। जैसे सरोवर के बिना हंस नहीं रह सकता वैसे ही प्रभु का सेवक प्रभु सेवा के बिना भला कैसे रहेगा।। १ ।। किसी ने तो द्वैत-भाव में प्यार लगा रखा है और किसी ने मोह और अभिमान में अपने हृदय की प्रीति लगा रखी है। प्रभु के सेवक ने तो माया से मुक्त होकर प्रभु के साथ ही प्रीति लगाई हुई है और नानक बार-बार प्रभु का सुमिरन कर रहा है।। २ ।। १४ ।। ६६।। आसावरी महला ४ ।। हे माँ, मुझे मेरे प्रियतम प्रभु के बारे में कुछ बताओ। मैं प्रभु के बिना क्षण-भर के लिए भी उसी प्रकार नहीं रह सकती जैसे ऊँठ बेलों को देखकर उन पर रीझ उठता है और सदैव उन्हीं के साथ प्रसन्न बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु रूपी मित्र के दर्शन के लिए मेरा मन वैराग्यवान और त्यागी हो गया है।

अलि कमला बिनु रहि न सकै तैसे मोहि हरि बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ राखु सरणि जगदीसुर पिआरे मोहि सरधा पूरि हरि गुसाई ॥ जन नानक कै मनि अनदु होत है हरि दरसनु निमख दिखाई ॥ २ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ १५ ॥ ६७ ॥

रागु आसा घरु २ महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ ॥ जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ ॥ भाई मीत कुटंब देखि बिबादे ॥ हम आई वसगति गुर परसादे ॥ १ ॥ ऐसा देखि बिमोहित होए ॥ साधिक सिध सुरदेव मनुखा बिनु साधू सभि ध्रोहनि ध्रोहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि फिरहि उदासी तिन्ह कामि विआपै ॥ इकि संचहि गिरही तिन्ह होइ न आपै ॥ इकि सती कहावहि तिन्ह बहुतु कलपावै ॥ हम हरि राखे लगि सतिगुर पावै ॥ २ ॥ तपु करते तपसी भूलाए ॥ पंडित मोहे लोभि सबाए ॥ त्रै गुण मोहे मोहिआ आकासु ॥ हम सतिगुर राखे दे करि हाथु ॥ ३ ॥ गिआनी की होइ वरती दासि ॥ कर जोड़े सेवा करे अरदासि ॥ जो तूं कहहि सु कार कमावा ॥ जन नानक गुरमुख नेड़ि न आवा ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा महला ५ ॥ ससू ते पिरि कीनी वाखि ॥ देर जिठाणी मुई दूखि संतापि ॥ घर के जिठेरे की चूकी काणि ॥ पिरि रखिआ कीनी सुघड़ सुजाणि ॥ १ ॥ सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ॥ दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मोकउ हरि नामु दिवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥ दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥ त्रै गुण तिआगि दुरजन मीत समाने ॥ तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥ २ ॥ सहज गुफा महि आसणु बाधिआ ॥ जोति सरूप अनाहदु वाजिआ ॥ महा अनंदु गुर सबदु वीचारि ॥ प्रिअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥ ३ ॥ जन नानकु बोले ब्रहम बीचारु ॥ जो सुणे कमावै सु उतरै पारि ॥ जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ हरि सेती ओहु रहै समाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा महला ५ ॥ निज भगती सीलवंती नारि ॥ रूपि अनूप पूरी आचारि ॥ जितु ग्रिहि वसै सो ग्रिहु सोभावंता ॥ गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता ॥ १ ॥ सुकरणी कामणि

जैसे भँवरा कमल के फूल के बिना नहीं रह सकता वैसे ही प्रभु के बिना मुझसे नहीं रहा जाता।। १ ।। हे जगत् के स्वामी प्रियतम मेरी रक्षा करो और हे प्रभु मेरी इच्छा पूरी करो। हे प्रभु, एक क्षण-भर के लिए यदि दर्शन दिखा दो तो दास नानक का मन आनन्दित हो उठेगा।। २ ।। ३६ ।। १३ ।। १५ ।। ६७ ।।

रागु आसा घरु २ महला ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जिसने माया के साथ प्रेम लगा लिया है वह उसे ही खा जाती है। जिसने इसे बहुत आदर दिया यह उसे बहुत भयभीत करती है। भाईयों, मित्रों और परिवार के लोगों में इसे देखकर विवाद और झगड़े खड़े हो जाते हैं। गुरु की कृपा से यह हमारे वश में हो गई है।। १ ।। इसे देखकर सभी मोहित हो जाते हैं। केवल साधु के बिना कठिन साधना करने वाले सिद्ध, देवता, मनुष्य आदि सभी को इस ठगिनी ने ठगा हुआ है।। १ ।। रहाउ ।। जो उदासीन होकर घूमते हैं उनमें यह काम के रूप में व्याप्त बनी रहती है। गृहस्थी व्यक्ति इसे (माया को) इकट्ठा करने की चेष्टा करते हैं परन्तु यह उनकी नहीं बनती। जो दानी कहलाते हैं यह उन्हें भी बहुत दुख देती है। मैं सच्चे-गुरु के चरणों में पड़ा रहता हूँ इसलिए प्रभु ने मुझे इससे बचा लिया है।। २ ।। तपस्या करते हुए तपस्वी भी इसके कारण भटक जाते हैं और पण्डित अर्थात विद्वान सभी इसके लोभ में ग्रस्त हैं। तीनों गुणों वाले जीव भी इसी में मोहित हैं और आकाश के निवासी भी इसी में डूबे हुए हैं। सच्चे गुरु ने अपना हाथ देकर हमारी रक्षा की है।। ३ ।। ज्ञानवान व्यक्तियों के सामने तो यह दासी का व्यवहार करती है। हाथ जोड़कर उनकी सेवा करती है और उनके सामने अरदास करती है कि जैसा तुम कहोगे मैं वैसा ही कार्य करूँगी। हे नानक, प्रभु के सेवक गुरमुख के पास भी नही आऊँगी।। ४।। १ ।। आसा महला ५ ।। प्रभु-पति ने मुझे माया रूपी सास से अलग कर दिया है। आशा और तृष्णा रूपी देवरानी और जेठानी दुखी होकर मर गई हैं। घर के बड़े-बूढ़े अर्थात धर्मराज की भी अब मैं मोहताज नहीं रह गई हूँ। सुजान और सुन्दर प्रियतम रूपी प्रभु ने मेरी रक्षा की है।। १ ।। हे लोगो, मुझे प्रेम-रस प्राप्त हो गया है। बुरे भाव वाले दुर्जन और शत्रु मार डाले गए हैं क्योंकि अब सच्चे गुरु ने प्रभु-नाम दिला दिया है।। १ ।। रहाउ ।। पहले तो मैने अहंकार के साथ साथ मोह का त्याग किया है। दूसरी मैने सांसारिक प्रपंचों वाली लोक-रीति को छोड़ दिया है। तीनों गुणों को त्यागने से अब दुर्जन और मित्र एक समान लगने लगे हैं। चौथे मैंने साधु रूपी गुरु को पहचान कर गुणों से अपना मेल बना लिया है और तुरीय अवस्था प्राप्त कर ली है।। २ ।। अब मैं सहजभाव में टिक कर बैठ गया हूँ और ज्योति स्वरूप अनहद् नाद बज उठा है। शब्द-गुरु के विचार से मेरा मन महा आनदित हो उठा है। जो स्त्री अपने प्रियतम में लीन हो गई है वही सुहागिन धन्य है।। ३ ।। दास नानक तो ब्रह्म विचार का कथन कर रहा है; जो इसे सुनेगा और इस पर आचरण करेगा वह संसार-सागर से पार उतर जाएगा। जन्म लेना और मरना तथा उसका आना और जाना नहीं रहेगा और वह प्रभु में ही लीन बना रहेगा।। ४ ।। २ ।। आसा महला ५ ।। केवल प्रभु की ही भक्ति वह शीलवान नारी है जिसका रूप अनुपम है और जिसका आचरण पूर्ण है। भक्ति रूपी यह स्त्री जिस घर में आन बसती है वह घर शोभा से युक्त हो जाता है।

गुर मिलि हम पाई ॥ जजि काजि परथाइ सुहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिचरु वसी पिता कै साथि ॥ तिचरु कंतु बहु फिरै उदासि ॥ करि सेवा सत पुरखु मनाइआ ॥ गुरि आणी घर महि ता सरब सुख पाइआ ॥ २ ॥ बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥ आगिआकारी सुघड़ सरूप ॥ इछ पूरे मन कंत सुआमी ॥ सगल संतोखी देर जेठानी ॥ ३ ॥ सभ परवारै माहि सरेसट ॥ मती देवी देवर जेसट ॥ धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ ॥ जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा महला ५ ॥ मता करउ सो पकनि न देई ॥ सील संजम कै निकटि खलोई ॥ वेस करे बहु रूप दिखावै ॥ ग्रिहि बसनि न देई वखि वखि भरमावै ॥ १ ॥ घर की नाइकि घर वासु न देवै ॥ जतन करउ उरझाइ परेवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुर की भेजी आई आमरि ॥ नउ खंड जीते सभि थान थनंतर ॥ तटि तीरथि न छोडै जोग संनिआस ॥ पड़ि थाके सिंम्रिति बेद अभिआस ॥ २ ॥ जह बैसउ तह नाले बैसै ॥ सगल भवन महि सबल प्रवेसै ॥ होछी सरणि पइआ रहणु न पाई ॥ कहु मीता हउ कै पहि जाई ॥ ३ ॥ सुणि उपदेसु सतिगुर पहि आइआ ॥ गुरि हरि हरि नामु मोहि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ निज घरि वसिआ गुण गाइ अनंता ॥ प्रभु मिलिओ नानक भए अचिंता ॥ ४ ॥ घरु मेरा इह नाइकि हमारी ॥ इह आमरि हम गुरि कीए दरबारी ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे मता जि पत्री चलावउ ॥ दुतीए मता दुइ मानुख पहुचावउ ॥ त्रितीए मता किछु करउ उपाइआ ॥ मै सभु किछु छोडि प्रभ तुही धिआइआ ॥ १ ॥ महा अनंद अचिंत सहजाइआ ॥ दुसमन दूत मुए सुखु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि मो कउ दीआ उपदेसु ॥ जीउ पिंडु सभु हरि का देसु ॥ जो किछु करी सु तेरा ताणु ॥ तूं मेरी ओट तूंहै दीबाणु ॥ २ ॥ तुधनो छोडि जाईऐ प्रभ कैं धरि ॥ आन न बीआ तेरी समसरि ॥ तेरे सेवक कउ किस की काणि ॥ साकतु भूला फिरै बेबाणि ॥ ३ ॥ तेरी वडिआई कही न जाइ ॥ जह कह राखि लैहि गलि लाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाई ॥ प्रभि राखी पैज वजी वाधाई ॥ ४ ॥ ५ ॥

ऐसी नारी गुरमुख बने हुए किसी बिरले व्यक्ति को ही प्राप्त होती है।। १ ।। गुरु से मिलाप के बाद मैंने शुभ कर्म करने वाली स्त्री प्राप्त की है जो कि शुभ कार्यो में अर्थात सब स्थानों में सुन्दर लगती है।। १ ।। रहाउ ।। जब तक वह पिता रूपी गुरु के पास रहती है तब तक जीव रूपी पति उदास होकर भटकता रहता है परन्तु जब जीव ने गुरु के माध्यम से सेवा करके सत्य-पुरुष परमात्मा को प्रसन्न कर लिया है तब गुरु ने जीव के हृदय रूपी घर में इसे ला बैठाया और इसने सारे सुख और आनन्द प्राप्त कर लिए हैं।। २ ।। यह भक्ति रूपी स्त्री बत्तीस लक्षणों वाली सुन्दर स्त्री है; सत्य परमात्मा का नाम इसकी संतान है। यह आज्ञा में चलने वाली सुन्दर और स्वरूपवान है। जीव रूपी पति की यह हर इच्छा पूर्ण करती है और देवरानी, जेठानी अर्थात आशा और तृष्णा को यह हर प्रकार से संतुष्ट अर्थात शान्त कर देती है।। ३ ।। सारे आध्यात्मिक परिवार में यह (भक्ति) सर्वश्रेष्ठ है और देवर, जेठ रूपी इन्द्रियों को सही परामर्श देने वाली है। हे दास नानक, वह हृदय रूपी घर भाग्यशाली है जिस घर में यह भक्ति रूपी स्त्री आकर प्रकट होती है। जिस व्यक्ति के हृदय में यह प्रकट होती है उसकी आयु सुखों और आनन्द में ही व्यतीत होती है।। ४ ।। ३ ।। आसा महला ५।। आध्यात्मिक स्थिरता के लिए मैं जो भी सोचता हूँ उसे यह माया पूरा नही होने देती। शील और संयम के पास यह खड़ी रहती है और इसीलिए यह दोनों गुण मैं प्राप्त नहीं कर पाता। यह अनेकों वेष धारण करती हुई अनेकों रूप दिखाती है और हृदय रूपी घर में मुझे टिकने न देकर कई तरीकों से भटकाती रहती है।। १ ।। यह माया तो मेरे हृदय रूपी घर की मालिक बन बैठी है और मुझे तो घर में टिकने ही नहीं देती। जब भी मैं आध्यात्मिक टिकाव के लिए प्रयत्नशील होता हूँ तो यह और अधिक उलझनें खड़ी कर देती हैं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु की ओर से यह सेविका बना कर भेजी हुई इस संसार में आयी है परन्तु यहाँ आकर इसने नवखण्ड धरती एवं स्थानान्तरों को जीत लिया है। नदियों के तटों और तीर्थों में बसने वाले संन्यासियों और योगियों को भी इसने नहीं छोड़ा। स्मृतियों का पाठ करके और वेदों के अनुरूप साधना करके विद्वान लोग ठगे जाकर इसके सामने हार गए हैं।। २ ।। मैं जहाँ भी बैठता हूँ यह माया मेरे साथ ही आ बैठती है; यह बड़ी बलशाली है क्योंकि यह सारे लोकों में जा पहुँचती है। किसी ओछे व्यक्ति की शरण में जाने पर मैं इससे बच नहीं पाता अतः हे मित्र, मुझे बताओ कि इससे पीछा छुड़ाने के लिए मैं किसके पास जाऊँ।। ३ ।। मित्र का उपदेश सुनकर मैं सच्चे गुरु के पास आया। गुरु ने परमात्मा का नाम रूपी मन्त्र मेरे हृदय में स्थापित कर दिया है। उस नाम के माध्यम से प्रभु का गुणानुवाद करता हुआ मैं अब हृदय रूपी घर में स्थिर हो गया हूँ। हे नानक, मुझे अब परमात्मा मिल गया है और मैं माया की ओर से निश्चिन्त हो गया हूँ।। ४ ।। अब मेरा हृदय रूपी घर वास्तव में मेरा अपना घर बन गया है और यह माया भी मेरी दासी बन गई है। गुरु ने इसे मेरी सेवक बना दिया है और मुझे प्रभु के दरबार में स्थिर बना रहने वाला दरबारी बना दिया है।। १ ।। रहाउ दूसरा ।। ४।। ४ ।। आसा महला ५ ।। (सिक्ख परम्परा के अनुसार यह पद दुष्ट सुलही खान के गुरु जी पर आक्रमण के टल जाने पर गुरु जी ने उच्चारण किया था) पहले मुझे परामर्श दिया गया कि आ रहे शत्रु को एक पत्र लिखा जाए; फिर सलाह की गई कि उसके पास दो व्यक्ति भेजे जाएं, तीसरा परामर्श यह दिया गया कि कोई न कोई उपाय अवश्य किया जाए परन्तु हे प्रभु मैंने सब कुछ छोड़कर तेरे नाम का ही सुमिरन किया।। १ ।। प्रभु का आसरा लेने से आध्यात्मिक आनन्द मिलता है, व्यक्ति चिन्ता-मुक्त हो जाता है और सहज-भाव प्राप्त हो जाता है।। सभी शत्रु समाप्त हो जाते हैं और अन्तरात्मा में सुख प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु ने मुझे यही उपदेश दिया है कि यह प्राण और शरीर परमात्मा के निवास का स्थान है। इसलिए हे प्रभु, मै, जो कुछ भी करता हूँ वह तेरे ही बल पर करता हूँ। तू ही मेरा आसरा है तू ही मुझे बचाने वाला है।। २ ।। हे प्रभु, तुझे छोड़कर भला और किस ओर जाया जा सकता है। तेरे बराबर दूसरा कोई नहीं है। तेरे सेवक को अन्य किसी का मोहताज नहीं होना पड़ता। परन्तु हे प्रभु, तुझसे टूटा हुआ व्यक्ति कुमार्ग पर चलकर इस संसार रूपी जंगल में भटकता फिरता है।। ३ ।। हे प्रभु, तेरे बड़प्पन का बखान नहीं किया जा सकता। तू सभी स्थानों पर मुझे अपने गले से लगाकर मेरी रक्षा कर लेता है। दास नानक तेरी शरण में है इसलिए हे भाई, प्रभु ने मेरी इज्ज़त बचा ली और मेरे अन्तर्मन में प्रसन्नता के वाद्य बज उठे हैं।। ४ ।। ५।।

आसा महला ५ ॥ परदेसु झागि सउदे कउ आइआ ॥ वसतु अनूप सुणी लाभाइआ ॥ गुण रासि बन्हि पलै आनी ॥ देखि रतनु इहु मनु लपटानी ॥ १ ॥ साह वापारी दुआरै आए ॥ वखरु काढहु सउदा कराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहि पठाइआ साहै पासि ॥ अमोल रतन अमोला रासि ॥ विसटु सुभाई पाइआ मीत ॥ सउदा मिलिआ निहचल चीत ॥ २ ॥ भउ नही तसकर पउण न पानी ॥ सहजि विहाझी सहजि लै जानी ॥ सत कै खटिऐ दुखु नही पाइआ ॥ सही सलामति घरि लै आइआ ॥ ३ ॥ मिलिआ लाहा भए अनंद ॥ धंनु साह पूरे बखसिंद ॥ इहु सउदा गुरमुखि किनै विरलै पाइआ ॥ सहली खेप नानकु लै आइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ आसा महला ५ ॥ गुनु अवगनु मेरो कछु न बीचारो ॥ नह देखिओ रूप रंग सीगारो ॥ चज अचार किछु बिधि नही जानी ॥ बाह पकरि प्रिअ सेजै आनी ॥ १ ॥ सुनिबो सखी कंति हमारो कीअलो खसमाना ॥ करु मसतकि धारि राखिओ करि अपुना किआ जानै इहु लोकु अजाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुहागु हमारो अब हुणि सोहिओ ॥ कंतु मिलिओ मेरो सभु दुखु जोहिओ ॥ आंगनि मेरै सोभा चंद ॥ निसि बासुर प्रिअ संगि अनंद ॥ २ ॥ बसत्र हमारे रंगि चलूल ॥ सगल आभरण सोभा कंठि फूल ॥ प्रिअ पेखी द्रिसटि पाए सगल निधान ॥ दुसट दूत की चूकी कानि ॥ ३ ॥ सद खुसीआ सदा रंद माणे ॥ नउ निधि नामु ग्रिह महि त्रिपताने ॥ कहु नानक जउ पिरहि सीगारी ॥ थिरु सोहागनि संगि भतारी ॥ ४ ॥ ७ ॥ आसा महला ५ ॥ दानु देइ करि पूजा करना ॥ लैत देत उन्ह मूकरि परना ॥ जितु दरि तुम्ह है ब्राहमण जाणा ॥ तितु दरि तूंही है पछुताणा ॥ १ ॥ ऐसे ब्राहमण डूबे भाई ॥ निरापराध चितवहि बुरिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि लोभु फिरहि हलकाए ॥ निंदा करहि सिरि भारु उठाए ॥ माइआ मूठा चेतै नाही ॥ भरमे भूला बहुती राही ॥ २ ॥ बाहरि भेख करहि घनेरे ॥ अंतरि बिखिआ उतरी घेरे ॥ अवर उपदेसै आपि न बूझै ॥ ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ॥ ३ ॥ मूरख बामण प्रभू समालि ॥ देखत सुनत तेरै है नालि ॥ कहु नानक जे होवी भागु ॥ मानु छोडि गुर चरणी लागु ॥ ४ ॥ ८ ॥ आसा महला ५ ॥

आसा महला ५ ।। अनेकों देशों में भटकता हुआ मैं बड़ी कठिनाई से तेरे द्वार पर नाम का सौदा लेने के लिए आया हूँ। मैने सुना है कि नाम बड़ी ही सुन्दर और लाभ देने वाली वस्तु है। हे प्रभु, मैं गुणों की पूँजी साथ लेकर आया हूँ और इस नाम रूपी रत्न को देखकर मेरा मन इसी में लिपटकर रह गया है।। १।। साहूकर और व्यापारी हे प्रभु, तेरे द्वार पर आए हैं। तू नाम रूपी पदार्थ प्रकट कर दे और इन सब का सौदा करा दे।। १ ।। रहाउ ।। परमात्मा रूपी साहूकार ने मुझे गुरु रूपी साहूकार के पास भेज दिया है जहाँ से अमूल्य नाम रूपी रास पूँजी मुझे मिल गई है। प्यार से भरे हुए हृदय वाला बिचौलिया मित्र मुझे मिल गया जिसके माध्यम से परमात्मा के नाम का सौदा मैंने पा लिया है और मेरा मन दुनियां के अन्य पदार्थों से हट कर स्थिर हो गया है।। २ ।। इस पूँजी को हवा, पानी चोर आदि से कोई भय नहीं। यह मैंने सहजभाव में ही प्राप्त की है और इसे सहजभाव से ही मैं अपने साथ ले जाऊँगा। सत्य के माध्यम से प्राप्त करने पर मुझे कुछ भी दुख नहीं झेलना पड़ा और इस नाम रूपी सौदे को मैने सही रूप से संभाल कर अपने हृदय रूपी घर में टिका लिया है।। ३ ।। हे महान साहूकार, तू पूर्ण कृपालु है इसीलिए तेरी कृपा से मुझे तेरे नाम का लाभ मिला है और मेरा अन्तर्मन आनन्दित हो उठा है। हे भाई, यह सौदा किसी बिरले भाग्यशाली को गुरमुख बनकर प्राप्त हआ है। नानक भी गुरु की कृपा से नाम की खेप को सहज-भाव से ही ले आकर अपने घर में स्थिर हो गया है।। ४ ।। ६ ।। आसा महला ५।। हे प्रभु, तुमने मेरे गुण-अवगुण को तनिक भी नहीं विचारा; न ही मेरा कोई रूप, रंग और सिंगार देखा। मैंने कोई श्रेष्ठ आचरण अथवा युक्ति भी नहीं सीखी; मुझे तो प्रभु ने बाँह पकड़कर अपने साथ सेज पर डाल लिया है।। १।। हे सखी, मेरे पति ने मेरे साथ मालिक जैसा व्यवहार किया। उसने अपना हाथ मेरे माथे पर रखकर मुझे अपना बना लिया; इस तथ्य को ये अनजान लोग भला क्या जानेंगे।। १ ।। रहाउ ।। मेरा सुहाग अब सुन्दर रूप से शोभायमान हो उठा है अब मेरे पति-प्रभु ने मुझसे मिलकर मेरे सभी दुखों को दूर करने के लिए मुझे ध्यान से देखा है। मेरे हृदय रूपी आँगन में प्रभु रूपी चन्द्रमा शोभायमान हो उठा है; और अब मैं दिन-रात अपने प्रियतम के साथ आनन्दित बनी रहती हूँ।। २।। मेरे वस्त्र भी अब लाल रंग वाले प्रेम के वस्त्र हो गए हैं और सभी आभूषण मेरे गले में शोभायमान हो गए हैं। जब प्रियतम ने मुझे देखा तो मानों मुझे सभी खज़ाने मिल गए। अब दुष्ट यमदूतों की मोहताजी समाप्त हो गई है।। ३ ।। अब आनन्द अनुभव करने का और सदैव खुश रहने का अवसर आ गया है और नवनिधि रूपी प्रभु-नाम प्राप्त होने से मैं घर बैठे ही तृप्त हो गई हूँ। नानक का कथन है कि यदि प्रियतम के लिए वास्तविक सिंगार किया हो तो प्रभु पति के साथ मिलाप करके सुहागिन जीव-स्त्री सदैव स्थिर बनी रहती है।। ४ ।। ७ ।। आसा महला ५ ।। कर्मकाण्डी एवं पाखण्डी ब्राह्मणों को दान देकर लोग उनकी पूजा करते हैं परन्तु वे ले देकर मुकर जाते हैं अर्थात दान लेना वे अपना हक समझते हैं और कोई एहसान नहीं मानते। हे ब्राह्मण, जिस परमात्मा के द्वार पर तुम्हें भी पहुँचना है वहाँ पहुँचकर अपने पाखण्डों के कारण तुझे ही पछताना पड़ेगा।। १ ।। हे भाई, ऐसे ब्राह्मण तो डूबे हुए ही हैं जो लोगों से ज़रा ज़रा सी बात पर नाराज होकर निरपराध व्यक्तियों का बुरा सोचते रहते हैं।। १ ।। रहाउ ।। अन्तर्मन में लोभ के साथ वह पागलों की तरह भटकते हैं और निन्दा करने का बोझ सिर पर उठाए घूमते हैं। माया के द्वारा ठगा हुआ ऐसा व्यक्ति प्रभु का सुमिरन नहीं करता और अनेकों प्रकार से भ्रमों में भूला रहता है।। २ ।। बाहर से तो वह अनेकों वेष धारण करता है परन्तु उसके मन में उतरकर विष रूपी माया उसे घेरे रहती है। जो अन्यों को उपदेश देता है और स्वंय नहीं बूझता, ऐसा ब्राह्मण कभी भी मुक्त नहीं होता।। ३ ।। हे मूर्ख ब्राह्मण, तू प्रभु का सुमिरन कर जो देखते सुनते हुए सदैव तेरे साथ ही है। नानक कहता है कि यदि तू भाग्यशाली है तो अपने अभिमान को छोड़कर तू गुरु-चरणों में लीन बना रह।। ४ ।। ८ ।। आसा महला ५।।

दूख रोग भए गतु तन ते मनु निरमलु हरि हरि गुण गाइ ॥ भए अनंद मिलि साधू संगि अब मेरा मनु कत ही न जाइ ॥ १ ॥ तपति बुझी गुर सबदी माइ ॥ बिनसि गइओ ताप सभ सहसा गुरु सीतलु मिलिओ सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धावत रहे एकु इकु बूझिआ आइ बसे अब निहचलु थाइ ॥ जगतु उधारन संत तुमारे दरसनु पेखत रहे अघाइ ॥ २ ॥ जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचलु साधू पाइ ॥ सहज धुनि गावै मंगल मनूआ अब ता कउ फुनि कालु न खाइ ॥ ३ ॥ करन कारन समरथ हमारे सुखदाई मेरे हरि हरि राइ ॥ नामु तेरा जपि जीवै नानकु ओति पोति मेरै संगि सहाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ आसा महला ५ ॥ अरड़ावै बिललावै निंदकु ॥ पारब्रहमु परमेसरु बिसरिआ अपणा कीता पावै निंदकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे कोई उस का संगी होवै नाले लए सिधावै ॥ अणहोदा अजगरु भारु उठाए निंदकु अगनी माहि जलावै ॥ १ ॥ परमेसर कै दुआरै जि होइ बितीतै सु नानकु आखि सुणावै ॥ भगत जना कउ सदा अनंदु है हरि कीरतनु गाइ बिगसावै ॥ २ ॥ १० ॥ आसा महला ५ ॥ जउ मै कीओ सगल सीगारा ॥ तउ भी मेरा मनु न पतीआरा ॥ अनिक सुगंधत तन महि लावउ ॥ ओहु सुखु तिलु समानि नही पावउ ॥ मन महि चितवउ ऐसी आसाई ॥ प्रिअ देखत जीवउ मेरी माई ॥ १ ॥ माई कहा करउ इहु मनु न धीरै ॥ प्रिअ प्रीतम बैरागु हिरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसत्र बिभूखन सुख बहुत बिसेखै ॥ ओइ भी जानउ कितै न लेखै ॥ पति सोभा अरु मानु महतु ॥ आगिआकारी सगल जगतु ॥ ग्रिहु ऐसा है सुंदर लाल ॥ प्रभ भावा ता सदा निहाल ॥ २ ॥ बिंजन भोजन अनिक परकार ॥ रंग तमासे बहुतु बिसथार ॥ राज मिलख अरु बहुतु फुरमाइसि ॥ मनु नही ध्रापै त्रिसना न जाइसि ॥ बिनु मिलबे इहु दिनु न बिहावै ॥ मिलै प्रभू ता सभ सुख पावै ॥ ३ ॥ खोजत खोजत सुनी इह सोइ ॥ साधसंगति बिनु तरिओ न कोइ ॥ जिसु मसतकि भागु तिनि सतिगुरु पाइआ ॥ पूरी आसा मनु त्रिपताइआ ॥ प्रभ मिलिआ ता चूकी डंझा ॥ नानक लधा मन तन मंझा ॥ ४ ॥ ११ ॥ आसा महला ५

प्रभु के बार-बार गुण गाते रहने से मेरा मन निर्मल हो गया है और मेरे दुख रोग दूर हो गए हैं। साधु-पुरुषों की संगति में मुझे आनन्द प्राप्त हो गया है और अब मेरा मन कहीं भी भागता नहीं है।। १ ।। हे माँ, गुरु-शब्द के माध्यम से मेरी प्यास बुझ गई है और मेरी दुविधा और संताप विनष्ट हो गए हैं। अब मुझे शीतल गुरु सहज स्वाभाविक रूप से ही मिल गया है।। १ ।। रहाउ।। एक प्रभु की समझ आ जाने से भाग-दौड़ समाप्त हो गई है और अब मैं एक अटल प्रभु के स्थान पर टिक गया हूँ। हे जगत् का उद्धार करने वाले प्रभु, तुम्हारे शान्त पुरुषों के दर्शन करते ही मैं तृप्त हो गया हूँ।। २ ।। जीवन के सभी दोष अब मेरे छूट गए हैं और मैंने उस अटल साधु रूपी परमात्मा के चरण पकड़ लिए हैं। मेरा सुखदायक प्रभु ही सब कुछ करने कराने में समर्थ है। नानक तो हे प्रभु, केवल तेरा नाम जपकर ही आध्यात्मिक रूप से जीवित बना हुआ है और हे प्रभु, तू ही सब की सहायता करता हुआ सब में ओत-प्रोत है।। ४ ।। ६ ।। आसा महला ५।। निन्दक व्यक्ति चीखता चिल्लाता तड़पता रहता है। उस निन्दक ने परब्रह्म परमेश्वर को भुला दिया है इसलिए वह अपने किए हुए का फल पा रहा है। यदि उसका कोई साथी हो भी तो वह उसे भी डूबने के लिए अपने साथ ले चलता है। वह साबुत बकरे को खा जाने वाले विशाल अजगर के भार के समान असह्य भार उठाए रहता है और सदैव अग्नि में जलता रहता है।। १ ।। जो प्रभु के द्वार पर होता है नानक तो केवल उसी की बात सुना रहा है। भक्तजन तो सदा आनन्द में लीन बने रहते है और प्रभु की कीर्ति का गान करके उन्हे प्रसन्नता होती है।। २ ।। १० ।। आसा महला ५ ।। मैंने बेशक पूरी तरह से सिंगार किया है परन्तु फिर भी मेरा मन स्थिर होकर प्रसन्न नहीं होता। शरीर पर बेशक अनेकों प्रकार की सुगन्धियां लगाई जाएं परन्तु प्रभु से मिलाप जैसे सुख का तिल मात्र भी प्राप्त नहीं होता है। मन में ऐसी आशाएं बनी ही रहती हैं कि हे मेरी माँ, मैं केवल अपने प्रियतम को ही देखकर जीवित बनी रहूं ।। १ ।। हे मां, मैं क्या करूँ, मेरा यह मन धैर्यवान नहीं बनता और मुझे प्रियतम का प्रेम भाव हमेशा अपनी ओर आकर्षित किए जा रहा है।। १ ।। रहाउ ।। अनेकों प्रकार के वस्त्र आभूषण और सुख आदि हैं परन्तु वे भी किसी गिनती में नहीं है। सम्मान शोभा और बड़प्पन प्राप्त हो; सारा संसार आज्ञा में चलने वाला हो; घर भी सुन्दर और मूल्यवान हो परन्तु मै तभी सदैव आनन्दित बना रह सकता हूँ यदि मैं केवल प्रभु को भा जाऊँ।। २।। अनेकों प्रकार के व्यंजनों वाले भोजन, रंग, और विस्तृत तमाशे, राज्य सम्पदा और अनेकों प्रकार का शासन पा लेने पर भी मन तृप्त नहीं होता और तृष्णा समाप्त नहीं होती। प्रभु से मिलाप के बिना यह दिन नहीं बीतता और जब प्रभु मिल जाता है तो सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं।। ३ ।। खोजते खोजते मैंने एक यह ख़बर सुनी है कि साधसंगत के बिना कोई भी पार नहीं उता सका है। जिसके माथे पर भाग्य लेख लिखे हुए हैं उसी को ही सच्चा गुरु प्राप्त होता है और उसकी आशाएं पूरी होकर उसका मन तृप्त हो जाता है। प्रभु से मिलते ही सारी आन्तरिक जलन और प्यास समाप्त हो जाती है। हे नानक, उस प्रभु को मैंने इसी मन और तन में ढूँढ लिया है।। ४ ।। ११ ।। आसा महला ५।।

पंचपदे ॥ प्रभमे तेरी नीकी जाति ॥ दुतीआ तेरी मनीऐ पांति ॥ त्रितीआ तेरा सुंदर थानु ॥ बिगड़ रूपु मन महि अभिमानु ॥ १ ॥ सोहनी सरूपि सुजाणि बिचखनि ॥ अति गरबै मोहि फाकी तूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अति सूची तेरी पाकसाल ॥ करि इसनानु पूजा तिलकु लाल ॥ गली गरबहि मुखि गोवहि गिआन ॥ सभ बिधि खोई लोभि सुआन ॥ २ ॥ कापर पहिरहि भोगहि भोग ॥ आचार करहि सोभा महि लोग ॥ चोआ चंदन सुगंध बिसथार ॥ संगी खोटा क्रोधु चंडाल ॥ ३ ॥ अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥ इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ सुइना रूपा तुझ पहि दाम ॥ सीलु बिगारिओ तेरा काम ॥ ४ ॥ जा तउ द्रिसटि मइआ हरि राइ ॥ सा बंदी ते लई छडाइ ॥ साधसंगि मिलि हरि रसु पाइआ ॥ कहु नानक सफल ओह काइआ ॥ ५ ॥ सभि रूप सभि सुख बने सुहागनि ॥ अति सुंदरि बिचखनि तूं ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १२ ॥ आसा महला ५ इकतुके २ ॥ जीवत दीसै तिसु सरपर मरणा ॥ मुआ होवै तिसु निहचलु रहणा ॥ १ ॥ जीवत मुए मुए से जीवे ॥ हरि हरि नामु अवखधु मुखि पाइआ गुर सबदी रसु अंम्रितु पीवे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काची मटुकी बिनसि बिनासा ॥ जिसु छूटै त्रिकुटी तिसु निज घरि वासा ॥ २ ॥ ऊचा चड़ै सु पवै पइआला ॥ धरनि पड़ै तिसु लगै न काला ॥ ३ ॥ भ्रमत फिरे तिन किछू न पाइआ ॥ से असथिर जिन गुर सबदु कमाइआ ॥ ४ ॥ जीउ पिंडु सभु हरि का मालु ॥ नानक गुर मिलि भए निहाल ॥ ५ ॥ १३ ॥ आसा महला ५ ॥ पुतरी तेरी बिधि करि थाटी ॥ जानु सति करि होइगी माटी ॥ १ ॥ मूलु समालहु अचेत गवारा ॥ इतने कउ तुम्ह किआ गरबे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीनि सेर का दिहाड़ी मिहमानु ॥ अवर वसतु तुझ पाहि अमान ॥ २ ॥ बिसटा असत रकतु परेटे चाम ॥ इसु ऊपरि ले राखिओ गुमान ॥ ३ ॥ एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक ॥ बिनु बूझे तूं सदा नापाक ॥ ४ ॥ कहु नानक गुर कउ कुरबानु ॥ जिस ते पाईऐ हरि पुरखु सुजानु ॥ ५ ॥ १४ ॥ आसा महला ५ इकतुके चउपदे ॥ इक घड़ी दिनसु मोकउ बहुतु दिहारे ॥ मनु न रहै कैसे मिलउ पिआरे ॥ १ ॥ इकु पलु दिनसु मोकउ कबहु न बिहावै ॥

पंचपद्रे।। पहली बात तो यह है कि बेशक तेरी जाति तथाकथित रूप से बहुत अच्छी हो, दूसरी, तेरे वंश को भी माना जाता हो, तीसरी तेरा स्थान भी बहुत सुन्दर हो परन्तु यदि तेरे मन में अभिमान है तो तू भयानक रूप से कुरूप है।। १ ।। हे सुन्दर स्वरूप वाली चतुर और सुजान जीव रूपी स्त्री, तू अत्यन्त अभिमान और मोह में फँसी हुई है।। १ ।। रहाउ ।। तेरी रसोई बेशक अत्यन्त पवित्र हो और तूने स्नान पूजा आदि करके तिलक भी लगाया हुआ हो, परन्तु बातों से तू अभिमानी दिखाई देती है और मुख से ज्ञान का उच्चारण करती है। वास्तव में लोभ रूपी कुत्ते ने तुझे सब प्रकार से ख्वार कर रखा है।। २ ।। हे जीव स्त्री, तू कपड़े पहनती है, भोग विलास करती है और लोगों में शोभा बढ़ाने के लिए तू कार्यशील बनी रहती है। तूने अनेकों प्रकार के इत्र और चन्दन आदि की विशाल सुगन्धि को धारण कर रखा है परन्तु चाण्डाल क्रोध रूपी दुष्ट संगी तेरे साथ बना हुआ है। हे जीव, अन्य सभी योनियां तेरा पानी भरने वाली सेवक हैं और इस धरती पर तेरी ही सरदारी चलती है। तेरे पास सोना-चाँदी और धन आदि सब कुछ है परन्तु काम ने तेरे शीलवान आचरण को नष्ट-भ्रष्ट कर रखा है ।। ४ ।। जिस पर प्रभु मालिक की कृपा-दृष्टि बनी हुई है वही जीव-स्त्री बन्धनों से छुड़ा ली जाती है। नानक का कथन है कि वही शरीर सफल है जिसने साधु पुरुषों की संगत में मिल कर हरि-रस को प्राप्त कर लिया है।। ५ ।। इस प्रकार तेरे सभी सुख सुन्दरताएं बनी रहकर तू सुहागिन कहलाती है और हे जीव स्त्री, तुझे अत्यन्त सुन्दर और सयाना समझा जाता है।। १ ।। रहाउ दूसरा ।। १२ ।। आसा महला ५ ।। एक पंक्ति वाले २ ।। जो अहंकारी बनकर जीवित दिखाई देता है वह समझ लो निश्चित रूप से मरा ही हुआ है और जो अहम् भाव के प्रति मृत हो चुका है दरअसल उसने सदैव अटल बने ही रहना है।। १ ।। जो अहंकार में जिन्दा हैं वे वास्तव में मरे हुए हैं और जो अपने अहम् के प्रति मृत हो चुके हैं वे वास्तव में जीवित हैं। प्रभु ने अपना औषधि रूपी नाम उनके मुख में डाल दिया है और वे शब्द रूप के माध्यम से अमृत रस का पान करते हैं। शरीर रूपी कच्ची मटकी का टूटना तो निश्चित ही है परन्तु जिसकी रजो, तमो सतो गुण की त्रिकुटी रूपी कैद से मुक्ति हो गई है वह अपने वास्तविक घर में अर्थात आत्मा में ही निवास बना लेता है।। २ ।। जो बहुत ऊँचा चढ़ा रहता है वह अहंकारी अन्ततः पाताल में ही आ गिरता है। धरती पर गिरे हुए अर्थात अत्यन्त विनम्र बने रहने वाले को काल नहीं छू पाता।। ३ ।। जो भटकते फिरते हैं वे कुछ भी नहीं प्राप्त कर पाते और जिन्होंने शब्द-गुरु के अनुसार आचरण बना लिया है वे भटकना छोड़कर स्थिर बने रहते हैं।। ४ ।। यह मन और तन सब प्रभु का ही माल है। हे नानक, व्यक्ति गुरु से मिलकर आनन्दित बना रहता है।। ५ ।। १३ ।। आसा महला ५ ।। हे शरीर रूपी पुतली, तेरी रचना बड़ी युक्तिपूर्वक की गई है परन्तु इसको तू सच जानकर मान ले कि एक दिन तू मिट्टी हो जाएगी।। १ ।। हे गँवार, तू अपने मूल उत्पत्ति स्थान का सुमिरन कर और पैदा हो जाने का तुझे अभिमान क्यों है।। १ ।। रहाउ ।। तू रोज़ तीन सेर वज़न का अन्न खाने वाला मेहमान मात्र है और अन्य सभी वस्तुएँ तो तेरे पास अमानत रूप में रखी हुई हैं।। २ ।। तेरी विष्ठा ने हड्डियों को और रक्त को चमड़ी ने लपेटा हुआ है और तू इन्हीं सब पर बहुत बड़ा अहंकार बनाए हुए है।। ३ ।। यदि एक बात को तू समझ ले तो तू पवित्र हो सकता है और बिना उसको बूझे हुए तू सदा अपवित्र ही बना रहता है अर्थात प्रभु को जानने से ही तू पवित्र हो सकेगा।। ४ ।। नानक का कथन है कि उस गुरु पर बलिहारी जाना चाहिए जिसके माध्यम से सुजान प्रभु को प्राप्त किया जाता है।। ५ ।। १४ ।। आसा महला ५ ।। एक पंक्ति वाले चौपदे ।। दिन में वियोग की एक घड़ी भी मुझे बहुत दिनों के बराबर लगती है। मेरा मन धैर्य धारण नहीं करता और मुझे पता नहीं चल पाता कि मैं कैसे अपने प्रियतम से मिलूँ।। १ ।। दिन का एक पल भी प्रभु से वियोग में रहकर व्यतीत नहीं होता।

दरसन की मनि आस घनेरी कोई ऐसा संतु मोकउ पिरहि मिलावै ॥ १ ॥
रहाउ ॥ चारि पहर चहु जुगह समाने ॥ रैणि भई तब अंतु न जाने ॥ २ ॥
पंच दूत मिलि पिरहु विछोड़ी ॥ भ्रमि भ्रमि रोवै हाथ पछोड़ी ॥ ३ ॥ जन नानक
कउ हरि दरसु दिखाइआ ॥ आतमु चीन्हि परम सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥
आसा महला ५ ॥ हरि सेवा महि परम निधानु ॥ हरि सेवा मुखि अंम्रित नामु ॥ १ ॥
हरि मेरा साथी संगि सखाई ॥ दुखि सुखि सिमरी तह मउजूदु जमु बपुरा मो
कउ कहा डराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मेरी ओट मै हरि का ताणु ॥ हरि मेरा
सखा मन माहि दीबाणु ॥ २ ॥ हरि मेरी पूंजी मेरा हरि वेसाहु ॥ गुरमुखि धनु
खटी हरि मेरा साहु ॥ ३ ॥ गुर किरपा ते इह मति आवै ॥ जन नानकु हरि
कै अंकि समावै ॥ ४ ॥ १६ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रभु होइ क्रिपालु त इहु
मनु लाई ॥ सतिगुरु सेवि सभै फल पाई ॥ १ ॥ मन किउ बैरागु करहिगा
सतिगुरु मेरा पूरा ॥ मनसा का दाता सभ सुख निधानु अंम्रित सरि सद ही
भरपूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल रिद अंतरि धारे ॥ प्रगटी जोति मिले
राम पिआरे ॥ २ ॥ पंच सखी मिलि मंगलु गाइआ ॥ अनहद बाणी नादु
वजाइआ ॥ ३ ॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ हरि राइ ॥ सुखि रैणि विहाणी
सहजि सुभाइ ॥ ४ ॥ १७ ॥ आसा महला ५ ॥ करि किरपा हरि परगटी आइआ ॥
मिलि सतिगुर धनु पूरा पाइआ ॥ १ ॥ ऐसा हरि धनु संचीऐ भाई ॥ भाहि न
जालै जलि नही डूबै संगु छोडि करि कतहु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तोटि न
आवै निखुटि न जाइ ॥ खाइ खरचि मनु रहिआ अघाइ ॥ २ ॥ सो सचु साहु जिसु
घरि हरि धनु संचाणा ॥ इसु धन ते सभु जगु वरसाणा ॥ ३ ॥ तिनि हरि
धनु पाइआ जिसु पुरब लिखे का लहणा ॥ जन नानक अंति वार नामु
गहणा ॥ ४ ॥ १८ ॥ आसा महला ५ ॥ जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥
काची पाकी बाढि परानी ॥ १ ॥ जो जनमै सो जानहु मूआ ॥ गोविंद भगतु
असथिरु है थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिन ते सरपर पउसी राति ॥ रैणि गई फिरि
होइ परभाति ॥ २ ॥ माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ गुर प्रसादि को विरला

मेरे मन में प्रभु दर्शन की तीव्र अभिलाषा बनी हुई है और मैं ढूँढती फिर रही हूँ कि कोई ऐसा शान्त पुरुष हो जो मुझे प्रभु-पति से मिला दे।। १ ।। रहाउ ।। चार प्रहर चार युग के समान हो गए हैं और जब रात हो जाती है तब वह समाप्त होने पर ही नहीं आती।। २ ।। विकार रूपी पाँचों दूतों ने मिलकर मुझे प्रियतम से दूर कर दिया है और अब मै हाथ पटकती हुई टक्करें मार मार कर रोती हूँ।। ३ ।। दास नानक को प्रभु ने अपना दर्शन दे दिया है और अब आत्मा में ही उसे पहचान कर मैंने परम सुख प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। १५ ।। आसा महला ५ ।। बड़े से बड़ा खजाना प्रभु सेवा में ही निहित है। प्रभु की सेवा ही मुख में अमृत रूपी नाम का स्थित होना है।। १ ।। प्रभु ही मेरा साथी और सदैव साथ बना रहने वाला सखा है। दुख-सुख में जब भी उसका सुमिरन करता हूँ तो वह प्रभु मेरे अंग-संग ही बना रहता है और अब बेचारा यम मुझे कहाँ डरा सकता है।। १ ।। रहाउ ।। मेरा आसरा प्रभु है और प्रभु ही मेरा बल है। प्रभु ही मेरा सखा है और मेरे मन में उसी का ही आसरा है।। २ ।। प्रभु ही मेरी पूँजी है और प्रभु ही मेरा विश्वास है। गुरमुख बनकर ही मैने नाम रूपी धन कमाया है और प्रभु ही मेरा साहूकार है।। ३ ।। गुरु की कृपा से ही यह सूझ बुद्धि आती है और दास नानक प्रभु की गोदी में समाहित हो जाता है।। ४ ।। १६ ।। आसा महला ५ ।। प्रभु कृपा करे तभी मेरा यह मन उसमें लगता है और सच्चे गुरु की सेवा करके मुझे सभी फल प्राप्त होते हैं।। १ ।। हे मन, तू क्यों उदास होता है; मेरा सच्चा गुरु पूर्ण है। मन की इच्छाओं के अनुरूप दान देने वाला वह प्रभु सुख का भण्डार है और सदैव ही पूर्ण रूप से भरा रहने वाला अमृत का सरोवर है।। १ ।। रहाउ ।। जब उसके चरण कमलों को हृदय में धारण कर लिया गया तो उसकी ज्योति प्रकट हो उठी और उस प्रभु प्रियतम से मेरा मिलाप हो गया।। २ ।। अब पाँचों सखियां (ज्ञानेन्द्रियां) मिल कर खुशी के गीत गाने लग गई हैं और अनहद् वाणी की गूँज मेरे हृदय में बज उठी है।। ३ ।। हे नानक, जिस पर गुरु प्रसन्न हो गया उसको प्रभु रूपी सम्राट मिल गया है और उसकी जीवन रूपी रात्रि सुख में और सहजभाव में व्यतीत हो जाती है।। ४ ।। १७ ।। आसा महला ५।। कृपा करके प्रभु प्रकट हो गया है और सच्चे गुरु से मिलने के फलस्वरूप हरि रूपी नाम-धन प्राप्त हो गया है।। १ ।। हे भाई, ऐसे प्रभु रूपी धन का संचय करो जिसे अग्नि नही जलाती, जल नहीं डुबाता और जो साथ छोड़कर कहीं भी नहीं जाता।। १ ।। रहाउ ।। उसमें न तो कमी आती है और न ही वह समाप्त होता है। व्यक्ति उसे खाते खर्चते हुए मन से तृप्त बना रहता है।। २ ।। वही सच्चा साहूकार है जिसके घर में प्रभु रूपी धन संचित रूप में पड़ा है। इसी धन से ही सारे संसार को लाभ प्राप्त होता है।। ३ ।। वही इस हरि-धन को प्राप्त करते हैं जिनके भाग्य में पहले से ही लिखा हुआ होता है। हे नानक, अन्त समय में प्रभु-नाम ही सेवक का आभूषण बनता है।। ४ ।। १८ ।। आसा महला ५ ।। जिस प्रकार किसान खेती बोता है और कच्ची पक्की खेती को जब चाहे काट लेता है उसी प्रकार जिसका जन्म हुआ है उसे यह समझ लेना चाहिए कि एक न एक दिन देर-सबेर मरना ही है। केवल प्रभु का भक्त ही सदैव स्थिर बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। दिन के बाद निश्चित रूप से रात पड़ेगी और रात के बीतने के बाद सुबह भी होगी।। २ ।। भाग्यहीन व्यक्ति दिन-रात सुबह माया के मोह में ही सोये रहते हैं और गुरु की कृपा से कोई बिरला ही मायावी निद्रा से

जागे ॥ ३ ॥ कहु नानक गुण गाईअहि नीत ॥ मुख ऊजल होइ निरमल चीत ॥ ४ ॥ १९ ॥ आसा महला ५ ॥ नउ निधि तेरै सगल निधान ॥ इछा पूरकु रखै निदान ॥ १ ॥ तूं मेरो पिआरो ता कैसी भूखा ॥ तूं मनि वसिआ लगै न दूखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तूं करहि सोई परवाणु ॥ साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥ २ ॥ जा तुधु भावै ता हरि गुण गाउ ॥ तेरै घरि सदा सदा है निआउ ॥ ३ ॥ साचे साहिब अलख अभेव ॥ नानक लाइआ लागा सेव ॥ ४ ॥ २० ॥ आसा महला ५ ॥ निकटि जीअ कै सद ही संगा ॥ कुदरति वरतै रूप अरु रंगा ॥ १ ॥ करै न झुरै ना मनु रोवनहारा ॥ अविनासी अविगतु अगोचरु सदा सलामति खसमु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे दासरे कउ किस की काणि ॥ जिस की मीरा राखै आणि ॥ २ ॥ जो लउडा प्रभि कीआ अजाति ॥ तिसु लउडे कउ किस की ताति ॥ ३ ॥ वेमुहताजा वेपरवाहु ॥ नानक दास कहहु गुर वाहु ॥ ४ ॥ २१ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि रसु छोडि होछै रसि माता ॥ घर महि वसतु बाहरि उठि जाता ॥ १ ॥ सुनी न जाई सचु अंम्रित काथा ॥ रारि करत झूठी लगि गाथा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वजहु साहिब का सेव बिरानी ॥ ऐसे गुनह अछादिओ प्रानी ॥ २ ॥ तिसु सिउ लूक जो सद ही संगी ॥ कामि न आवै सो फिरि फिरि मंगी ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभ दीन दइआला ॥ जिउ भावै तिउ करि प्रतिपाला ॥ ४ ॥ २२ ॥ आसा महला ५ ॥ जीअ प्रान धनु हरि को नामु ॥ ईहा ऊहां उन संगि कामु ॥ १ ॥ बिनु हरि नाम अवरु सभु थोरा ॥ त्रिपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति भंडार गुरबाणी लाल ॥ गावत सुनत कमावत निहाल ॥ २ ॥ चरण कमल सिउ लागो मानु ॥ सतिगुरि तूठै कीनो दानु ॥ ३ ॥ नानक कउ गुरि दीखिआ दीन्ह ॥ प्रभ अबिनासी घटि घटि चीन्ह ॥ ४ ॥ २३ ॥ आसा महला ५ ॥ अनद बिनोद भरेपुरि धारिआ ॥ अपुना कारजु आपि सवारिआ ॥ १ ॥ पूर समग्री पूरे ठाकुर की ॥ भरिपुरि धारि रही सोभ जा की ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु निधानु जा की निरमल सोइ ॥ आपे करता अवरु न कोइ ॥ २ ॥ जीअ जंत सभि ता कै हाथि ॥ रवि रहिआ प्रभु सभ कै साथि ॥ ३ ॥

जग उठता है।। ३ ।। नानक का कथन है कि सदैव उस प्रभु के गुण गाते रहना चाहिए जिससे मुख उज्जवल और चित्त निर्मल बना रहता है।। ४ ।। १९ ।। आसा महला ५ ।। हे प्रभु, तेरे पास नवनिधियां और सभी खजाने हैं; तू सबकी इच्छाओं को पूरा करने वाला है और अन्त में सबकी रक्षा करने वाला भी है। जब तू मेरा प्रियतम है तो फिर भला मुझे कैसी भूख रहेगी। जब तू मन में आन बसा है तो फिर अब कोई दुख प्रभावित नहीं करता।। १।। रहाउ ।। हे सच्चे स्वामी, तेरा आदेश भी सच्चा है और जो तू करता है वही स्वीकार करना होता है।। २ ।। यदि तुझे भा जाए तो जीव हरि गुण गाता है और तेरे घर में सदा ही न्याय बना रहता है।। ३ ।। हे सच्चे साहिब, तू अलख एवं रहस्यातीत है। नानक को तूने सेवा में लगाया है और वह लगा हुआ है।। ४ ।। २० ।। आसा महला ५ ।। प्रभु जीव के बहुत पास और सदैव ही संग बना रहने वाला है। उसकी शक्ति सभी रूपों और रंगों में कार्यशील है।। १ ।। अब न तो मन खिन्न होता है, न पछताता है और न ही रोता है क्योंकि अब इसने उसे अपना मालिक मान लिया है जो अविनाशी, अवयक्त, अगोचर और सदैव बना रहने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तेरे उस सेवक को किसका मोहताज होना पड़ेगा जिसके सम्मान की रक्षा स्वयं मालिक के रूप में तू कर रहा है।। २ ।। जिस सेवक को तूने जात-पात के बन्धनों से रहित कर दिया है उस सेवक को भला अब किसी की ईर्ष्या क्या कर सकती है।। ३ ।। हे नानक, तू उस प्रभु की वाह वाही कर जो बेमोहताज और बेपरवाह है।। ४ ।। २१ ।। आसा महला ५।। व्यक्ति हरि-रस को छोड़कर ओछे रसों में लीन हो गया है। सब कुछ इसके हृदय रूपी घर में ही है परन्तु यह फिर भी उठकर बाहर भटकता रहता है।। १ ।। ऐसे व्यक्ति से सत्य की अमृत-कथा सुनी नहीं जाती और वह झूठी कहानियों के पीछे लगकर विवाद खड़े करता है।। १ ।। रहाउ ।। जीव ऐसा है कि कहने को तो वह मालिक प्रभु का है परन्तु सेवा वह अन्य लोगों की करता है। प्राणी ऐसे ही पापों से आच्छादित बना हुआ है।। २ ।। यह उस से ही सब कुछ छिपाता फिरता है जो सदैव ही इसके साथ बना रहता है। यह प्रभु के तो किसी काम नहीं आता परन्तु बार-बार उससे माँगता रहता है।। ३ ।। नानक का कथन है कि हे दीन दयालु प्रभु, तुम जैसे भी हो हमारा पालन पोषण और रक्षा करो।। ४ ।। २२ ।। आसा महला ५ ।। प्रभु का नाम ही जीव का प्राण और धन है और इस लोक तथा परलोक में यही उसके काम आता है।। १ ।। प्रभु के नाम के बिना अन्य सब कुछ कम ही है क्योंकि मेरा मन तो केवल प्रभु के दर्शन करके ही पूर्ण रूप से तृप्त होता है।। १ ।। रहाउ ।। गुरवाणी भक्ति का रत्नों की तरह से अमूल्य भण्डार है जिसे गाते सुनते और उसके अनुरूप आचरण करते हुए व्यक्ति आनन्दित बना रहता है।। २ ।। सच्चे गुरु ने प्रसन्न होकर मुझे यह दान दिया है कि मेरा मन अब प्रभु के चरण कमल के साथ लीन बना रहता है।। ३ ।। गुरु ने नानक को यह शिक्षा दी है कि अविनाशी प्रभु को अब मैं प्रत्येक हृदय में देखता पहचानता हूँ।। ४ ।। २३ ।। आसा महला ५ ।। आनन्द देने वाले अनेकों कौतुक प्रभु ने अपने में ही धारण किए हुए हैं। प्रभु अपने कार्य को स्वयं ही पूरा करता है।। १ ।। पूर्ण प्रभु की यह संसार रचना रूपी सामग्री भी पूर्ण है। उसी की शोभा सब ओर पूर्ण रूप से फैली हुई है।। १ ।। रहाउ ।। नाम रूपी भण्डार की शोभा भी निर्मल है। वह प्रभु स्वयं ही करता है दूसरा अन्य कोई भी नही है।। २ ।। सभी जीव-जन्तु उसी के हाथ में हैं और प्रभु सब में समान भाव से रमण कर रहा है।। ३ ।।

पूरा गुरु पूरी बणत बणाई ॥ नानक भगत मिली वडिआई ॥ ४ ॥ २४ ॥ आसा महला ५ ॥ गुर कै सबदि बनावहु इहु मनु ॥ गुर का दरसनु संचहु हरि धनु ॥ १ ॥ ऊतम मति मेरै रिदै तूं आउ ॥ धिआवउ गावउ गुण गोविंदा अति प्रीतम मोहि लागै नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिपति अघावनु साचै नाइ ॥ अठसठि मजनु संत धूराइ ॥ २ ॥ सभ महि जानउ करता एक ॥ साधसंगति मिलि बुधि बिबेक ॥ ३ ॥ दासु सगल का छोडि अभिमानु ॥ नानक कउ गुरि दीनो दानु ॥ ४ ॥ २५ ॥ आसा महला ५ ॥ बुधि प्रगास भई मति पूरी ॥ ता ते बिनसी दुरमति दूरी ॥ १ ॥ ऐसी गुरमति पाईअले ॥ बूडत घोर अंध कूप महि निकसिओ मेरे भाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा अगाह अगनि का सागरु ॥ गुरु बोहिथु तारे रतनागरु ॥ २ ॥ दुतर अंध बिखम इह माइआ ॥ गुरि पूरै परगटु मारगु दिखाइआ ॥ ३ ॥ जाप ताप कछु उकति न मोरी ॥ गुर नानक सरणागति तोरी ॥ ४ ॥ २६ ॥ आसा महला ५ तिपदे २ ॥ हरि रसु पीवत सद ही राता ॥ आन रसा खिन महि लहि जाता ॥ हरि रस के माते मनि सदा अनंद ॥ आन रसा महि विआपै चिंद ॥ १ ॥ हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ॥ आन रसा सभि होछे रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रस की कीमति कही न जाइ ॥ हरि रसु साधू हाटि समाइ ॥ लाख करोरी मिलै न केह ॥ जिसहि परापति तिस ही देहि ॥ २ ॥ नानक चाखि भए बिसमादु ॥ नानक गुर ते आइआ सादु ॥ ईत ऊत कत छोडि न जाइ ॥ नानक गीधा हरि रस माहि ॥ ३ ॥ २७ ॥ आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु मिटावै छुटकै दुरमति अपुनी धारी ॥ होइ निमाणी सेव कमावहि ता प्रीतम होवहि मनि पिआरी ॥ १ ॥ सुणि सुंदरि साधू बचन उधारी ॥ दूख भूख मिटै तेरो सहसा सुख पावहि तूं सुखमनि नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण पखारि करउ गुर सेवा आतम सुधु बिखु तिआस निवारी ॥ दासन की होइ दासि दासरी ता पावहि सोभा हरि दुआरी ॥ २ ॥ इही अचार इही बिउहारा आगिआ मानि भगति होइ तुम्हारी ॥ जो इहु मंत्रु कमावै नानक सो भउजलु पारि उतारी ॥ ३ ॥ २८ ॥

पूर्ण गुरु अर्थात प्रभु ने जो कुछ भी बनाया है वह पूर्ण है और हे नानक, उसके भक्तों को ही सम्मान प्राप्त होता है।। ४ ।। २४ ।। आसा महला ५ ।। हे भाई, शब्द-गुरु के अनुरूप ही मन को बनाओ। गुरु का दर्शन ही हरि रूपी धन है; इसका संचय करो।। १ ।। हे उत्तम बुद्धि, तुम मेरे हृदय में निवास करो जिससे मैं प्रभु के गुणों का सुमिरन और गान करूँ और प्रभु का नाम मुझे अत्यन्त प्रिय लगे।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे-नाम के द्वारा ही पूर्ण तृप्ति होती है और संतों की चरण-धूलि ही अड़सठ तीर्थों के स्नान के बराबर है।। २ ।। सब में एक परमात्मा को ही देखो और साध-संगत में मिल बैठकर विवेक-बुद्धि को अपनाओ।। ३ ।। मैं अभिमान छोड़कर अब सबका दास हो गया हूँ क्योंकि नानक को गुरु ने बुद्धि का दान दे दिया है।। ४ ।। २५ ।। आसा महला ५ ।। गुरु की दी हुई बुद्धि के प्रकाश से मेरी मति भी प्रकाश वाली हो गई है और उससे मेरे चित्त का द्वैतभाव और दुर्मति दूर हो गई है।। १ ।। गुरु की ऐसी मति मिली है कि हे भाई, मैं संसार रूपी अन्धे कुँए में डूब रहा था परन्तु बाहर निकल आया हूँ।। १ ।। रहाउ ।। संसार अगाध अग्नियों का सागर है परन्तु रत्नों का भण्डार गुरु जहाज बनकर पार लगा देता है।। २ ।। माया का यह सागर भयानक, विषम एवं ना तैरा जा सकने वाला है परन्तु पूर्ण गुरु ने ऐसे कठिन रास्ते में से भी निकल जाने के लिए स्पष्ट मार्ग बता दिया है।। ३ ।। मेरे पास न तो कोई जाप है, न कोई तपस्या है और न ही कोई तर्कपूर्ण कथन है। हे गुरु नानक, मैं तो तेरी ही शरण में आ पहुँचा हूँ।। ४ ।। २६।। आसा महला ५ ।। तीन पदों वाले २ ।। हरि-रस को पीकर व्यक्ति सदा ही मस्त बना रहता है क्योंकि अन्य रस तो क्षण भर में उतर जाते हैं। जो हरि-रस में मस्त हैं उनका मन सदैव आनन्दित बना रहता है परन्तु अन्य रसों में लीन व्यक्ति सदैव चिन्ताओं में पड़े रहते हैं। हरि-रस पीने वाला व्यक्ति पूरी तरह मस्त और मतवाला बना रहता है। हे भाई, अन्य सभी रस ओछे रस हैं।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के नाम के रस की कीमत आंकी नहीं जा सकती। हरि-रस का पान करने वाला साधु व्यक्ति सत्संगत में लीन बना रहता है। लाखों-करोड़ों खर्चने पर भी किसी को यह रस प्राप्त नहीं होता। जिसके भाग्य में इसे प्राप्त करना लिखा होता है प्रभु यह उसे ही देता है।। २ ।। नानक तो उसे चखकर विस्मयपूर्ण हो गया है और हे नानक, गुरु के माध्यम से ही उसके स्वाद का पता चला है। अब इधर-उधर कहीं पर भी इसे छोड़कर नहीं जाया जाता और नानक अब हरि-रस के पान का ही आदी हो गया है।। ३ ।। २७ ।। आसा महला ५।। व्यक्ति यदि काम, क्रोध, लोभ, मोह को मिटा दे और अपनी दुर्मति का त्याग कर दे तथा विनम्र होकर सेवा करे तब उस प्रभु प्रियतम के मन को भाने वाली स्त्री जैसा जीव बन सकता है।। १ ।। हे सुन्दरी, तू यह सुन कि साधु पुरुषों के वचन उद्धार करने वाले होते हैं। उनके वचनों के माध्यम से तेरे दुख, भूख, चिन्ताएं मिट जाएंगी और तू उस स्त्री के समान हो जाएगी जो हमेशा सुख को धारण किए रहती है।। १ ।। रहाउ ।। चरणों को धोकर, गुरु की सेवा करके, आत्मा को शुद्ध करके, विषयों की प्यास को दूर करते हुए यदि तू प्रभु के दासों का दास हो जाए तो तेरी प्रभु के द्वार पर महिमा बन जाएगी।। २ ।। यही तेरे पुण्य के कर्म हों और यही तेरी दिन-चर्या हो और यदि तू प्रभु की आज्ञा को मानकर चले तो यही तुम्हारी भक्ति होगी। हे नानक, जो इस मन्त्र को जीवन में उतारता है वह संसार सागर से पार उतर जाता है।। ३ ।। २८ ।।

आसा महला ५ दुपदे ॥ भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ १ ॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥ २ ॥ २९ ॥ आसा महला ५ ॥ तुझ बिनु अवरु नाही मै दूजा तूं मेरे मन माही ॥ तूं साजनु संगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराही ॥ १ ॥ तुमरी ओट तुमारी आसा ॥ बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाही तूं सास गिरासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखु राखु सरणि प्रभ अपनी अगनि सागर विकराला ॥ नानक के सुखदाते सतिगुर हम तुमरे बाल गुपाला ॥ २ ॥ ३० ॥ आसा महला ५ ॥ हरि जन लीने प्रभू छडाइ ॥ प्रीतम सिउ मेरो मनु मानिआ तापु मुआ बिखु खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाला ताऊ कछू न बिआपै राम नाम गुन गाइ ॥ डाकी को चिति कछू न लागै चरन कमल सरनाइ ॥ १ ॥ संत प्रसादि भए किरपाला होए आपि सहाइ ॥ गुन निधान निति गावै नानकु सहसा दुखु मिटाइ ॥ २ ॥ ३१ ॥ आसा महला ५ ॥ अउखधु खाइओ हरि को नाउ ॥ सुख पाए दुख बिनसिआ थाउ ॥ १ ॥ तापु गइआ बचनि गुर पूरे ॥ अनदु भइआ सभि मिटे विसूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सगल सुखु पाइआ ॥ पारब्रहमु नानक मनि धिआइआ ॥ २ ॥ ३२ ॥ आसा महला ५ ॥ बांछत नाही सु बेला आई ॥ बिनु हुकमै किउ बुझै बुझाई ॥ १ ॥ ठंढी ताती मिटी खाई ॥ ओहु न बाला बूढा भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक दास साध सरणाई ॥ गुर प्रसादि भउ पारि पराई ॥ २ ॥ ३३ ॥ आसा महला ५ ॥ सदा सदा आतम परगासु ॥ साधसंगति हरि चरण निवासु ॥ १ ॥ राम नाम निति जपि मन मेरे ॥ सीतल सांति सदा सुख पावहि किलविख जाहि सभे मन तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरन करम ॥ सतिगुर भेटे पूरन पारब्रहम ॥ २ ॥ ३४ ॥ दूजे घर के चउतीस ॥ आसा महला ५ ॥ जा का हरि सुआमी प्रभु

आसा महला ५ दो पदों वाले।। हे जीव, तुझे मनुष्य का सुन्दर शरीर प्राप्त हुआ है और परमात्मा में लीन होने का यही एक सुअवसर है। अन्य सभी कार्य जिनमें तू लीन है कुछ भी तेरे काम आने वाले नहीं है। तू सद्संगति में मिल कर बैठ और केवल परमात्मा के नाम का ही स्मरण किया कर।। १ ।। हे जीव, संसार-समुद्र से पार जाने के उपक्रम में तू जुट जा। माया के बन्धनों में पड़े रहकर तेरा मानव जन्म व्यर्थ ही जा रहा है। तू प्रभु का स्मरण नहीं करता, न तू उद्यमशील बनता है और न ही तू मन को विकारों की तरफ से रोकने का अर्थात संयम धारण करने का कार्य करता है। न ही तू धर्म की कमाई करता है और न ही सद्पुरुषों की सेवा करके उस परमात्मा रूपी राज को जानने के लिए प्रयत्नशील बनता है। दास नानक यह कहता है कि हम सभी जीव नीच कर्म करने वाले बने हुए हैं। हे प्रभु, हम तेरी शरण में हैं तू हम शरणागतों की लाज रख।। २ ।। २६ ।। आसा महला ५ ।। हे प्रभु, तेरे बिना अन्य दूसरा मेरे लिए कोई भी नहीं है। और तू ही मेरे मन में बसा हुआ है। हे मन, तू क्यों डरता है क्योंकि प्रभु ही तेरा साजन और सदा साथ बने रहने वाला साथी है।। १ ।। मुझे तुम्हारा ही आसरा है और तुझसे ही मैं आशा करता हूँ। हे प्रभु, उठते-बैठते, सोते-जागते और हर श्वास-ग्रास के साथ तू मुझे कभी भी विस्मृत न हो।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, मुझे अपनी शरण में बनाए रख क्योंकि सामने संसार रूपी सागर विकराल अग्नि वाला है। नानक के हे सुखदायक सच्चे गुरु, हम सब तो तेरे ही बाल-गोपाल है।। २ ।। ३० ।। आसा महला ५ ।। प्रभु ने अपने सेवकों को मुक्त कर दिया है। प्रियतम प्रभु में मेरा मन लीन हो गया है और मेरा संताप तो अब मानों विष खाकर मर गया है।। १ ।। रहाउ ।। जो राम-नाम के गुणों का गायन करता है उसे ठण्डक (जड़ता) ताप (आध्यात्मिक रोग) आदि कुछ भी प्रभावित नहीं करने। प्रभु के चरण-कमलों की शरण में आ जाने से अब डाकिनी माया का प्रभाव चित्त पर कुछ नहीं पड़ता।। १ ।। शान्त पुरुषों की कृपा के फलस्वरूप प्रभु कृपालु होकर स्वयं सहायक बन जाता है। नानक तो सभी दुखों और चिन्ताओं को मिटाकर गुण-निधान प्रभु के ही सदैव गुण गाता रहता है।। २ ।। ३१ ।। आसा महला ५ ।। प्रभु के नाम की औषधि को मैंने खा लिया है जिससे मेरा दुख तो उसी स्थान पर विनष्ट हो गया है और मैंने सुख पा लिया है।। १ ।। पूर्ण-गुरु के उपदेश के माध्यम से मेरा संताप मिट गया है और मेरी सभी चिन्ताएं मिट जाने के कारण मैं आनन्दित हो उठा हूँ।। १ ।। रहाउ ।। हे नानक, मन में परब्रह्म प्रभु का सुमिरन करने से सभी जीव सुख प्राप्त करते हैं।। २ ।। ३२ ।। आसा महला ५ ।। मौत का वह समय जिसे कोई भी नहीं चाहता आन पहुँचा है। प्रभु के हुकम को बूझे बिना इस तथ्य की समझ नहीं पड़ती।। १ ।। इस शरीर को ठण्डे जल में प्रवाहित किया जाता है, जलाया जाता है, मिट्टी में दबाया जाता है परन्तु व्यक्ति की आत्मा न तो जवान होती है, न वृद्ध होती है और न ही मरती है।। १ ।। रहाउ।। दास नानक साधु पुरुषों की शरण में आन पड़ा है और गुरु की कृपा से मौत के भय को पार कर गया है।। २ ।। ३३ ।।आसा महला ५।। साधु संगति में प्रभु के चरणों का निवास होने से आत्मा को सदैव प्रकाश मिलता है।। १ ।। हे मन, तू प्रभु-नाम का सदैव जाप कर जिससे तू शीतल और शान्त होकर सदैव सुख प्राप्त करेगा और तेरे सभी पाप नष्ट हो जाएंगे।। १ ।। रहाउ ।। नानक का कथन है कि जिसका पूर्ण भाग्य है वही सच्चे गुरु और पूर्ण परब्रह्म को मिलता है।। २ ।। ३४ ।। दूसरे घर के चौंतीस ।। आसा महला ५।। हरि रूपी स्वामी प्रभु जिसका

बेली ॥ पीड़ गई फिरि नही दुहेली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा चरन संगि मेली ॥ सूख सहज आनंद सुहेली ॥ १ ॥ साधसंगि गुण गाइ अतोली ॥ हरि सिमरत नानक भई अमोली ॥ २ ॥ ३५ ॥ आसा महला ५ ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर ए खेलत सभि जूऐ हारे ॥ सतु संतोखु दइआ धरमु सचु इह अपुनै ग्रिह भीतरि वारे ॥ १ ॥ जनम मरन चूके सभि भारे ॥ मिलत संगि भइओ मनु निरमलु गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले दीसहि मीत पिआरे ॥ सभ मधे रविआ मेरा ठाकुरु दानु देत सभि जीअ सम्हारे ॥ २ ॥ एको एकु आपि इकु एकै एकै है सगला पासारे ॥ जपि जपि होए सगल साध जन एकु नामु धिआइ बहुतु उधारे ॥ ३ ॥ गहिर गंभीर बिअंत गुसाई अंतु नही किछु पारावारे ॥ तुम्हरी क्रिपा ते गुन गावै नानक धिआइ धिआइ प्रभ कउ नमसकारे ॥ ४ ॥ ३६ ॥ आसा महला ५ ॥ तू बिअंतु अविगतु अगोचरु इहु सभु तेरा आकारु ॥ किआ हम जंत करह चतुराई जां सभु किछु तुझै मझारि ॥ १ ॥ मेरे सतिगुर अपने बालिक राखहु लीला धारि ॥ देहु सुमति सदा गुण गावा मेरे ठाकुर अगम अपार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे जननि जठर महि प्रानी ओहु रहता नाम अधारि ॥ अनदु करै सासि सासि सम्हारै ना पोहै अगनारि ॥ २ ॥ पर धन पर दारा पर निंदा इन सिउ प्रीति निवारि ॥ चरन कमल सेवी रिद अंतरि गुर पूरे कै आधारि ॥ ३ ॥ ग्रिहु मंदर महला जो दीसहि ना कोई संगारि ॥ जब लगु जीवहि कली काल महि जन नानक नामु सम्हारि ॥ ४ ॥ ३७ ॥

आसा घरु ३ महला ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

राज मिलक जोबन ग्रिह सोभा रूपवंतु जुोआनी ॥ बहुतु दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख बै आनी ॥ आगै दरगहि कामि न आवै छोडि चलै अभिमानी ॥ १ ॥ काहे एक बिना चितु लाईऐ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बचित्र सुंदर आखाड़े रण महि जिते

मित्र है उसकी पीड़ा चली जाती है और वह फिर दुखी नहीं होता।। १ ।। रहाउ।। प्रभु ने कृपा करके अपने चरणों के साथ मिला लिया है और सहज आनन्द के सुख को अनुभव करती हुई अब मैं सुखी हो गई हूँ।। १ ।। साधसंगत में प्रभु के गुण गाकर मैं भी अतुलनीय हो गई हूँ और प्रभु का सुमिरन करते हुए ही हे नानक, मैं अमूल्य बन गई हूँ।। २ ।। ३५।। आसा महला ५ ।। इस जीवन के खेल को खेलते हुए मैंने काम, क्रोध, माया, अभिमान, ईर्ष्या आदि जुए में हारने की तरह हार कर सत्य, संतोष, दया, धर्म आदि अपने हृदय रूपी घर में प्रविष्ट करा लिए हैं।। १ ।। अब जन्म-मरण के सभी बोझ चुक गए हैं।। सत्संगत में मिलकर मेरा मन निर्मल हो गया है और पूर्ण गुरु ने मुझे क्षण भर में ही पार करा दिया है।। १ ।। रहाउ ।। अब मन सबकी चरण-धूलि बन गया है और इसके कारण सभी मुझे अपने मित्र और प्यारे साथी दिखाई देने लगे हैं। मेरा प्रभु सबमें रमा हुआ है और वही सब को दान देता है और सभी जीवों को संभालता है।। २ ।। वह एक है और स्वयं एक ही बना रहता है और यह सारा सृष्टि का प्रसार उस केवल एक का ही है। सभी उसी का सुमिरन करते हुए साधु पुरुष बन गए हैं और उसके एक नाम की आराधना करने से अनेकों का उद्धार हो गया है।। ३ ।। वह सृष्टि का स्वामी गहरा, गम्भीर और अनन्त है तथा उसका कुछ भी पारावार नही पाया जा सकता । हे प्रभु, तुम्हारी कृपा से ही नानक गुण गाता है और प्रभु का सुमिरन करते हुए उसको प्रणाम करता है।। ४ ।। ३६ ।। आसा महला ५ ।। हे प्रभु, तू अनन्त, अव्यक्त एवं अगोचर है तथा यह सारी सृष्टि तेरा ही आकार है। जब सब कुछ तुझमें ही है तो हम जीव भला क्या चतुराई दिखा सकते हैं।। १ ।। हे मेरे सच्चे गुरु, अपने बच्चों की अपनी लीला के अन्तर्गत रक्षा करो। हे मेरे अगम्य अपरंपर ठाकुर, मुझे ऐसी सुमति दो कि मैं सदा तुम्हारे गुण गाता रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। जैसे माँ के पेट में प्राणी रहता तो है परन्तु वह प्रभु नाम को आधार बना कर जीवित बना रहता है। वह श्वास श्वास सुमिरन करता हुआ आनन्दित बना रहता है और उसे जठराग्नि जरा सा भी प्रभावित नहीं करती।। २ ।। हे जीव, तू पराये धन, परायी स्त्री और परायी निन्दा में लगाई हुई प्रीति को छोड़ दे। पूर्ण गुरु का आसरा लेकर प्रभु के चरण कमलों का सुमिरन कर।। ३ ।। घर, महल, मुहल्ला आदि जो कुछ भी दिखाई देता है इनमें से कोई भी संगी-साथी नहीं बनता। दास नानक का कथन है कि जब तक इस अन्धकार के कलियुग मे तू जीवित है प्रभु-नाम का सुमिरन करता रह।। ४ ।। ३७ ।।

आसा घरु ३ महला ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

राज्य, सम्पत्ति, यौवन, घर, महिमा, रूपवान जवानी, अनेकों प्रकार के द्रव्य, हाथी-घोड़े और लाखों के मूल्य वाले रत्न लाल आदि आगे प्रभु के दरबार में काम नहीं आते और अभिमानी व्यक्ति इसे यहीं छोड़कर चला जाता है।। १ ।। भला एक प्रभु के बिना अन्य किसी में ध्यान क्यों लगाया जाए? उठते, बैठते, सोते, जागते सदैव उस प्रभु का ही सुमिरन किया जाना चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। आश्चर्यजनक सुन्दर अखाड़े इस संसार में बने हुए हैं और व्यक्ति यही मानता है कि मैंने

पवाड़े ॥ हउ मारउ हउ बंधउ छोडउ मुख ते एव बबाड़े ॥ आइआ हुकमु पारब्रहम का छोडि चलिआ एक दिहाड़े ॥ २ ॥ करम धरम जुगति बहु करता करणैहारु न जानै ॥ उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ॥ नांगा आइआ नांगो जासी जिउ हसती खाकु छानै ॥ ३ ॥ संत सजन सुनहु सभि मीता झूठा एहु पसारा ॥ मेरी मेरी करि करि डूबे खपि खपि मुए गवारा ॥ गुर मिलि नानक नामु धिआइआ साचि नामि निसतारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३८ ॥

रागु आसा घरु ५ महला ५   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भ्रम महि सोई सगल जगत धंध अंध ॥ कोऊ जागै हरि जनु ॥ १ ॥ महा मोहनी मगन प्रिअ प्रीति प्रान ॥ कोऊ तिआगै विरला ॥ २ ॥ चरन कमल आनूप हरि संत मंत ॥ कोऊ लागै साधू ॥ ३ ॥ नानक साधू संगि जागे गिआन रंगि ॥ वडभागे किरपा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३९ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥   रागु आसा घरु ६ महला ५ ॥

जो तुधु भावै सो परवाना सूखु सहजु मनि सोई ॥ करण कारण समरथ अपारा अवरु नाही रे कोई ॥ १ ॥ तेरे जन रसकि रसकि गुण गावहि ॥ मसलति मता सिआणप जन की जो तूं करहि करावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रितु नामु तुमारा पिआरे साधसंगि रसु पाइआ ॥ त्रिपति अघाइ सेई जन पूरे सुख निधानु हरि गाइआ ॥ २ ॥ जा कउ टेक तुम्हारी सुआमी ता कउ नाही चिंता ॥ जा कउ दइआ तुमारी होई से साह भले भगवंता ॥ ३ ॥ भरम मोह ध्रोह सभि निकसे जब का दरसनु पाइआ ॥ वरतणि नामु नानक सचु कीना हरि नामे रंगि समाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४० ॥

आसा महला ५ ॥ जनम जनम की मलु धोवै पराई आपणा कीता पावै ॥ ईहा सुखु नही दरगह ढोई जम पुरि जाइ पचावै ॥ १ ॥ निंदकि अहिला जनमु गवाइआ ॥ पहुचि न साकै काहू बातै आगै ठउर न पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरतु पइआ निंदक बपुरे का किआ ओहु करै बिचारा ॥ तहा बिगूता

सभी झगड़े जीतकर समाप्त कर दिए हैं। व्यक्ति मुँह से बकता रहता है कि मैं ही मारता हूँ, लोगो को बाँधता हूँ और जब चाहे छोड़ देता हूँ परन्तु जब परमात्मा का हुकम चलने के लिए आन पहुँचा तो एक दिन सब कुछ यहीं छोड़कर जीव यहाँ से चल पड़ता है।। २ ।। जीव ने अनेकों प्रकार के कर्म-धर्म और आचार व्यवहार की युक्तियां बना रखी हैं परन्तु वह कर्ता प्रभु को नहीं जानता-मानता है। व्यक्ति उपदेश तो देता है परन्तु स्वयं उस पर आचरण नहीं करता और शब्द (परमात्मा) के सार-तत्व को नहीं पहचानता। वह नंगा आता है और उसी तरह नंगा यहाँ से चला जाता है जैसे हाथी पर पहले भी मिट्टी पड़ी रहती है और नहाने के बाद भी वह मिट्टी अपने ऊपर डाल लेता है।। ३ ।। हे मेरे मित्रो, संतो एवं सज्जनों, इस तथ्य को भली-भाँति समझ लो कि यह दृष्टमान संसार का प्रसार क्षण-भंगुर है। यहाँ अनेकों गँवार लोग मेरी मेरी करते हुए इसी संसार-सागर में डूब कर मर-खप गए हैं। गुरु से मिलकर नानक ने प्रभु-नाम की आराधना की है और प्रभु-नाम के सच्चे माध्यम से ही उसका उद्धार हो गया है।। ४ ।। १ ।। ३८ ।।

रागु आसा घरु ५ महला ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जगत के धन्धों में अन्धी हो चुकी भ्रम में पड़ी हुई यह सारी सृष्टि सो रही है। कोई प्रभु का सेवक ही जग रहा है अर्थात भ्रम और अज्ञान के प्रति सचेत है।। १ ।। मोहिनी माया में जीव-मग्न है और उसे ही प्राणों से भी अधिक प्रिय माने हुए है। कोई बिरला ही इस माया को त्यागता है।। २ ।। प्रभु के सुन्दर चरण-कमलों में और शान्त पुरुषों के उपदेश में कोई बिरला साधु वृत्ति वाला जीव ही लगता है।। ३ ।। हे नानक, साधु-पुरुष के साथ ही व्यक्ति प्रभु के ज्ञान में रंगा रहकर जगता है। किसी भाग्यशाली पर ही ऐसी कृपा होती है।। ४ ।। १ ।। ३६ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि रागु आसा घरु ६ महला ५।।

हे प्रभु, जो तुझे भाता है वही स्वीकृत है और वही मन में सहज सुख को प्रकट करने वाला है। हे भाई, वह प्रभु ही करण-कारण समर्थ एवं अपार है, अन्य कोई भी ऐसा नहीं है।। १ ।। हे प्रभु, तेरे सेवक रस-पूर्वक रस का पान करते हुए तेरे गुण गाते हैं। हे प्रभु, जो तू करता और करवाता है वही सब तेरे सेवक के लिए अच्छे से अच्छा परामर्श एवं सयानापन है।। १ ।। रहाउ ।। हे प्यारे प्रभु, तुम्हारा नाम अमृत के समान है और साधसंगत में मैंने इस अमृत रस को प्राप्त किया है। जिन्होंने उस सुखों के भण्डार प्रभु का गुणानुवाद किया है वही सेवक पूर्ण है, तृप्त है और पूर्ण रूप से अघाए हुए है।। २ ।। हे प्रभु, जिन्हें तुम्हारा आसरा है उन्हें कोई भी चिन्ता नहीं है। जिन पर तुम्हारी कृपा हो गई वे ही बड़े साहूकार एवं भाग्यवान हैं।। ३ ।। हे प्रभु, जब तेरा दर्शन पा लिया तो भ्रम, मोह, धोखाधड़ी आदि सब विकार मेरे अन्दर से निकल गए हैं। नानक ने नाम और सत्य को ही अपना व्यवहार बनाया है और अन्ततः प्रभु नाम में ही प्रेमपूर्वक लीन हो गया है।। ४।। १ ।। ४०।। आसा महला ५ ।। व्यक्ति जन्म-जन्मान्तरों की परायी मैल को धोता रहता है और अपने किए हुए कर्मों का फल पाता है। निन्दा, चुगली, दूसरे का बुरा चाहने वाले को न तो यहाँ सुख मिलता है और न ही प्रभु के समक्ष आसरा मिलता है; वह यमपुरी में ही जाता, ख्वार होता और सड़ता रहता है।। १ ।। निन्दक व्यक्ति ने तो सारा जीवन ही निष्फल गँवा दिया है। वह किसी भी प्रकार ऊँची आध्यात्मिक अवस्था को नहीं पहुँच पाता और आगे भी उसको कहीं स्थान प्राप्त नहीं होता।। १ ।। रहाउ।। बेचारे निन्दक को अपने किए हुए का फल मिलता है और अब वह कुछ भी नहीं कर पाता। वह ऐसे मोड़ पर खराब होता है

जह कोइ न राखै ओहु किसु पहि करे पुकारा ॥ २ ॥ निंदक की गति कतहूं नाही खसमै एवै भाणा ॥ जो जो निंद करे संतन की तिउ संतन सुखु माना ॥ ३ ॥ संता टेक तुमारी सुआमी तूं संतन का सहाई ॥ कहु नानक संत हरि राखे निंदक दीए रुड़ाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥ आसा महला ५ ॥ बाहरु धोइ अंतरु मनु मैला दुइ ठउर अपुने खोए ॥ ईहा कामि क्रोधि मोहि विआपिआ आगै मुसि मुसि रोए ॥ १ ॥ गोविंद भजन की मति है होरा ॥ वरमी मारी सापु न मरई नामु न सुनई डोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ की किरति छोडि गवाई भगती सार न जानै ॥ बेद सासत्र कउ तरकनि लागा ततु जोगु न पछानै ॥ २ ॥ उघरि गइआ जैसा खोटा ढबूआ नदरि सराफा आइआ ॥ अंतरजामी सभु किछु जानै उस ते कहा छपाइआ ॥ ३ ॥ कूड़ि कपटि बंचि निंमुनीआदा बिनसि गइआ ततकाले ॥ सति सति सति नानकि कहिआ अपनै हिरदै देखु समाले ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४२ ॥ आसा महला ५ ॥ उदमु करत होवै मनु निरमलु नाचै आपु निवारे ॥ पंच जना ले वसगति राखै मन महि एकंकारे ॥ १ ॥ तेरा जनु निरति करे गुन गावै ॥ रबाबु पखावज ताल घुंघरू अनहद सबदु वजावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै ॥ राम नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ॥ २ ॥ कर संगि साधू चरन पखारै संत धूरि तनि लावै ॥ मनु तनु अरपि धरे गुर आगै सति पदारथु पावै ॥ ३ ॥ जो जो सुनै पेखै लाइ सरधा ता का जनम मरन दुखु भागै ॥ ऐसी निरति नरक निवारै नानक गुरमुखि जागै ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ आसा महला ५ ॥ अधम चंडाली भई ब्रहमणी सूदी ते स्रेसटाई रे ॥ पाताली आकासी सखनी लहबर बूझी खाई रे ॥ १ ॥ घर की बिलाई अवर सिखाई मूसा देखि डराई रे ॥ अज कै वसि गुरि कीनो केहरि कूकर तिनहि लगाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाझु थूनीआ छपरा थाम्हिआ नीघरिआ घरु पाइआ रे ॥ बिनु जड़ीए लै जड़िओ जड़ावा थेवा अचरजु लाइआ रे ॥ २ ॥ दादी दादि न पहुचनहारा चूपी निरनउ पाइआ रे ॥ मालि दुलीचै बैठी ले मिरतकु नैन दिखालनु

जहाँ कोई भी उसकी रक्षा नहीं कर पाता और उसे यह नहीं समझ आती कि वह किसके आगे पुकार लगाए।। २ ।। प्रभु की यही मर्जी है कि निन्दक की गति कहीं भी नहीं होती। शान्त पुरुषों की जैसे-जैसे निन्दा होती है वे वैसे-वैसे ही मन में सुख का अनुभव करते है।। ३ ।। हे प्रभु, शान्त पुरुषों को केवल तुम्हारा ही आसरा है और तुम ही उनकी सहायता करते हो। नानक का कथन है कि प्रभु ने शान्त पुरुषों को तो हमेशा बचाया है और निन्दकों को सदैव डुबा-बहा दिया है।। ४ ।। २ ।। ४१ ।। आसा महला ५।। जो बाहर से तो शरीर को धो लेता है परन्तु जिसका अन्तर्मन मैला है उसने इस लोक और उस लोक के दोनों ठिकानों को खो दिया है। यहाँ तो वह काम, क्रोध और मोह में ग्रस्त रहा है; अब आगे वह सिसकियां ले लेकर रोता रहता है।। १ ।। प्रभु-भक्ति का ढंग तो कुछ और ही होता है। बाहर की पवित्रता और संयम के साथ अन्दर के पाप नहीं धुलते जैसे सर्प की बाँबी को मारने से साँप नहीं मर जाता; बहरा आदमी जोर-जोर से चिल्लाने पर भी प्रभु-नाम को नहीं सुनता।। १ ।। रहाउ।। उसने सांसारिक लोगों का आचार-व्यवहार भी गँवा लिया है और उसे भक्ति के सार-तत्व का भी पता नहीं लग सका। वह वेद-शास्त्रों से सम्बन्धित तर्क तो करने लग पड़ा परन्तु प्रभु से मिलने का तत्व मार्ग उसने नहीं पहचाना।। २ ।। वह चाँदी के खोटे सिक्के की तरह सुनार की दृष्टि में आ गया है और उसे अलग फेंक दिया जाएगा। अन्तर्यामी प्रभु तो सब कुछ जानता है उससे भला क्या छिपाया जा सकता है।। ३ ।। झूठ-कपट और धोखे में लीन बिना बुनियाद का ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। नानक ने तो सच और केवल सच कहा है; इस बात को तू अपने हृदय में याद करके रख।। ४ ।। ३ ।। ४२ ।। आसा महला ५ ।। मेहनत करने से मन निर्मल हो जाता है और तब व्यक्ति अपने अभिमान को त्याग कर प्रभु की आज्ञा में चलने का नृत्य करता रहता है। ऐसा व्यक्ति पाँचों विकारों को वश में रखता है और उसके मन में सदैव एक प्रभु ही बसा रहता है। तेरा सेवक नृत्य करता है और तेरे ही गुण गाता है। वह तेरे ही नाम की रबाब, पखावज, घुँघरू, खड़ताल आदि के माध्यम से अनहद् शब्द बजाता है।। १ ।। रहाउ ।। पहले तो वह अपने मन को समझाता है और बाद में वह अन्यों को समझा कर प्रसन्न करता है। प्रभु के नाम के जाप को वह हृदय से जपता है और अपने मुख से सब को सुनाता भी है।। २ ।। साधु पुरुषों की संगति करके वह उनके चरणों को धोता है और उनकी चरण-धूलि को तन पर लगाता है। सत्य-रूपी महान वस्तु को प्राप्त करने के लिए वह मन और तन को गुरु के सामने अर्पण कर देता है।। ३ ।। जो-जो भी उसे सुनता है, उसका दर्शन करता है और उस पर श्रद्धा रखता है उसका जन्म-मरण का दुख नष्ट हो जाता है। हे नानक, व्यक्ति का ऐसा नृत्य उसके नर्क का निवारण कर देता है तथा वह गुरमुख बनकर चेतनापूर्ण हो जाता है।। ४ ।। ४ ।। ४३ ।। आसा महला ५ ।। हे भाई, अमृत-नाम की कृपा से अत्यन्त नीच चाण्डाल वृत्ति मानों ब्राह्मणी बन गई है और तथाकथित शूद्र कुल से ऊँची कुल वाली हो गई है। मन की जो वृत्ति पहले पाताल से लेकर आकाश तक सारे संसार के पदार्थ लेकर भी भूखी ही बनी रहती थी उसकी तृष्णा की लपट अब बुझ गई है।। १ ।। व्यक्ति की संतोष-विहीन वृत्ति बिल्ली अब अन्य प्रकार की शिक्षा धारण कर लेती है तथा चूहे रूपी दुनियां के पदार्थों को देखकर वह उनसे डरकर संकोचशील हो गई है। गुरु ने उसके अहंकार रूपी शेर को विनम्रता रूपी बकरी के अधीन कर दिया है और उसकी तमोगुणी इन्द्रियों रूपी कुत्तों को सतोगुण की ओर लगा दिया है।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, जिस व्यक्ति को गुरु ने नाम-अमृत पिला दिया है उसके मन का छप्पर सांसारिक पदार्थों की आशाओं की टेक के बिना ही थम गया है और उसके भटकते हुए मन का रत्न-जड़ित गहना तैयार हो गया है और उस मन रूपी गहने में परमात्मा के नाम का आश्चर्यजनक नग जड़ दिया गया है।। २ ।। हे भाई, केवल शिकवे-शिकायत करने वाला कभी भी मनोवांछित वस्तु (न्याय) प्राप्त नहीं कर सकता परन्तु शान्त हो चुके हृदय को यह निश्चित हो जाता है कि प्रभु जो भी न्याय करता है ठीक करता है। नाम की कृपा से व्यक्ति को सांसारिक ऐश्वर्य अब ऐसा दिखाई देने लगता है मानो यह ऐश्वर्य सुन्दर गलीचों पर बैठा हुआ मुर्दा है जो अब किसी को भी आँखें नहीं

धाइआ रे ॥ ३ ॥ सोई अजाणु कहै मै जाना जानणहारु न छाना रे ॥ कहु नानक गुरि अमिउ पीआइआ रसकि रसकि बिगसाना रे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४४ ॥ आसा महला ५ ॥ बंधन काटि बिसारे अउगन अपना बिरदु सम्हारिआ ॥ होइ क्रिपाल मात पित निआई बारिक जिउ प्रतिपारिआ ॥ १ ॥ गुरसिख राखे गुर गोपालि ॥ काढि लीए महा भवजल ते अपनी नदरि निहालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरणि जम ते छुटीऐ हलति पलति सुखु पाईऐ ॥ सासि गिरासि जपहु जपु रसना नीत नीत गुण गाईऐ ॥ २ ॥ भगति प्रेम परम पदु पाइआ साधसंगि दुख नाठे ॥ छिजै न जाइ किछु भउ न बिआपे हरि धनु निरमलु गाठे ॥ ३ ॥ अंति काल प्रभ भए सहाई इत उत राखनहारे ॥ प्रान मीत हीत धनु मेरै नानक सद बलिहारे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥ आसा महला ५ ॥ जा तूं साहिबु ता भउ केहा हउ तुधु बिनु किसु सालाही ॥ एकु तूं ता सभु किछु है मै तुधु बिनु दूजा नाही ॥ १ ॥ बाबा बिखु देखिआ संसारु ॥ रखिआ करहु गुसाई मेरे मै नामु तेरा आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाणहि बिरथा सभा मन की होरु किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ विणु नावै सभु जगु बउराइआ नामु मिलै सुखु पाईऐ ॥ २ ॥ किआ कहीऐ किसु आखि सुणाईऐ जि कहणा सु प्रभ जी पासि ॥ सभु किछु कीता तेरा वरतै सदा सदा तेरी आस ॥ ३ ॥ जे देहि वडिआई ता तेरी वडिआई इत उत तुझहि धिआउ ॥ नानक के प्रभ सदा सुखदाते मै ताणु तेरा इकु नाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥ आसा महला ५ ॥ अंम्रितु नामु तुम्हारा ठाकुर एहु महा रसु जनहि पीओ ॥ जनम जनम चूके भै भारे दुरतु बिनासिओ भरमु बीओ ॥ १ ॥ दरसनु पेखत मै जीओ ॥ सुनि करि बचन तुम्हारे सतिगुर मनु तनु मेरा ठारु थीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते भइओ साधसंगु एहु काजु तुम्ह आपि कीओ ॥ दिड़ु करि चरण गहे प्रभ तुम्हरे सहजे बिखिआ भई खीओ ॥ २ ॥ सुख निधान नामु प्रभ तुमरा एहु अबिनासी मंत्रु लीओ ॥ करि किरपा मोहि सतिगुरि दीना तापु संतापु मेरा बैरु गीओ ॥ ३ ॥ धंनु सु माणस देही पाई जितु प्रभि अपनै मेलि लीओ ॥ धंनु सु कलिजुगु साधसंगि कीरतनु गाईऐ

दिखा सकता।। ३ ।। जो यह कहता है कि मैं जानता हूँ वही अनजान है और जिसने वास्तविक रूप में प्रभु के नाम के रस को समझ लिया है वह कभी भी छिपा नहीं रहता। हे नानक, जिसे गुरु ने आध्यात्मिक जीवन देने वाला नाम रूपी जल पिला दिया है वह इसका स्वाद ले लेकर सदैव खिला रहता है।। ४ ।। ५।। ४४ ।। आसा महला ५ ।। हे प्रभु, तूने मेरे बन्धनों को काटकर और मेरे अवगुणों को भुलाकर अपने बिरद को ही संभाला है अर्थात अपने धर्म को निभाया है। तुम माता पिता की तरह से मुझ पर कृपालु हुए हो और अपने बालक की तरह तुमने मेरा भरण-पोषण किया है।। १ ।। परमात्मा रूपी गुरु ने अपने गुरसिक्खों की रक्षा की है और अपनी कृपा-दृष्टि से उन्हें प्रसन्न करके विषम भव-सागर से बाहर निकाल लिया है।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, उस प्रभु को श्वास और ग्रास के साथ सदैव जपते रहो और नित्य उसके गुण गाते रहो जिसके सुमिरन से व्यक्ति यम से छूट जाता है और इस लोक तथा परलोक में सुख पाता है।। २ ।। उसकी भक्ति और प्रेम से परम पद प्राप्त होता है तथा साधु-पुरुषों की संगति से दुख भाग खड़े होते हैं। हरि रूपी धन जब निर्मल गाँठ में बँधा होता है तो यह धन न तो कभी नष्ट होता है और न ही इसे रखने पर कोई भय लगता है।। ३ ।। यहाँ और वहाँ रक्षा करने वाला प्रभु ही अन्तकाल में सहायक बनता है। हे नानक, वही मेरे प्राणों का मित्र, मेरा हित चाहने वाला और मेरा धन है जिस पर मैं सदैव बलिहारी जाता हूँ।। ४ ।। ६ ।। ४५।। आसा महला ५ ।। जब तू मेरा मालिक है तो भला मुझे कैसा भय हो सकता है। तेरे बिना मैं अन्य किसका गुणानुवाद करूँ। यदि एक तू मेरे साथ है तो सब कुछ मेरे पास है; हे प्रभु, मेरे लिए अन्य दूसरा कोई भी नहीं है।। १ ।। हे बाबा, मैंने इस संसार को विष रूप में भी देखा है। हे प्रभु, मेरी रक्षा करो क्योंकि मुझे तो केवल तेरे नाम का ही आसरा है।। १ ।। रहाउ ।। तुम ही मेरे मन की पीड़ा को जानते हो; मैं अन्य किसको कह कर सुनाऊँ। नाम के बिना सारा संसार बावला हो गया है; प्रभु-नाम मिलने से ही सुख प्राप्त होता है।। २ ।। जब सब कुछ परमात्मा से ही कहना है तो किसी अन्य को क्या कहा और सुनाया जाए। हे प्रभु, सब कुछ तेरा किया हुआ ही होता है और हम सबको सदैव तुझसे ही आशा बनी रहती है।। ३ ।। यदि तू बड़प्पन दे तो यह तेरा ही बड़प्पन है। मैं यहाँ वहाँ सदैव तेरी ही आराधना करता रहूँ। हे नानक के सदैव सुखदाता प्रभु, मेरा बल तो केवल तेरा ही एक नाम है।। ४ ।। ७ ।। ४६ ।। आसा महला ५।। हे प्रभु, तुम्हारा नाम अमृत के समान है और इस महारस को तेरा सेवक ही पीता है। पीने वाले के जन्म-जन्म के बोझ चुक जाते हैं और उसकी दुर्मति और द्वैत-भाव तथा भ्रम नष्ट हो जाते हैं।। १ ।। तेरे दर्शन को देख देख कर और तुम्हारे वचनों को सुन-सुन कर, हे सच्चे गुरु, मेरा मन तन शीतल हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तुम्हारी कृपा से ही मुझे साधसंगत मिली है और यह कार्य भी तुमने स्वयं ही किया है। हे प्रभु, मैंनें तुम्हारे चरणों को दृढ़ता से पकड़ लिया है और इस प्रकार सहज रूप से ही माया का विष क्षीण हो गया है।। २ ।। हे प्रभु, मैंने यह अविनाशी मन्त्र मन में बसा लिया है कि तुम्हारा नाम ही सभी सुखों का भण्डार है। सच्चे गुरु ने कृपा करके मुझे यह नाम दिया है जिससे मेरा शत्रुता-भाव और अन्य ताप-संताप चुक गए हैं।। ३ ।। उस व्यक्ति का जन्म लेना धन्य है जिसे प्रभु ने अपने से मिला लिया है। कलियुग में साधसंगत में प्रभु की कीर्ति का गायन करना भी धन्य है।

नानक नामु अधारु हीओ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥ आसा महला ५ ॥ आगै ही ते सभु किछु हूआ अवरु कि जाणै गिआना ॥ भूल चूक अपना बारिकु बखसिआ पारब्रहम भगवाना ॥ १ ॥ सतिगुरु मेरा सदा दइआला मोहि दीन कउ राखि लीआ ॥ काटिआ रोगु महा सुखु पाइआ हरि अंम्रितु मुखि नामु दीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक पाप मेरे परहरिआ बंधन काटे मुकत भए ॥ अंध कूप महा घोर ते बाह पकरि गुरि काढि लीए ॥ २ ॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ राखे राखनहारे ॥ ऐसी दाति तेरी प्रभ मेरे कारज सगल सवारे ॥ ३ ॥ गुण निधान साहिब मनि मेला ॥ सरणि पइआ नानक सोहेला ॥ ४ ॥ ९ ॥ ४८ ॥ आसा महला ५ ॥ तूं विसरहि तां सभु को लागू चीति आवहि तां सेवा ॥ अवरु न कोऊ दूजा सूझै साचे अलख अभेवा ॥ १ ॥ चीति आवै तां सदा दइआला लोगन किआ वेचारे ॥ बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुम्हारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी टेक तेरा आधारा हाथ देइ तूं राखहि ॥ जिसु जन ऊपरि तेरी किरपा तिस कउ बिपु न कोऊ भाखै ॥ २ ॥ ओहो सुखु ओहा वडिआई जो प्रभ जी मनि भाणी ॥ तूं दाना तूं सद मिहरवाना नामु मिलै रंगु माणी ॥ ३ ॥ तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥ कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥ ४ ॥ १० ॥ ४९ ॥ आसा महला ५ ॥ करि किरपा प्रभ अंतरजामी साधसंगि हरि पाईऐ ॥ खोलि किवार दिखाले दरसनु पुनरपि जनमि न आईऐ ॥ १ ॥ मिलउ परीतम सुआमी अपुने सगले दूख हरउ रे ॥ पारब्रहमु जिन्हि रिदै अराधिआ ता कै संगि तरउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा उदिआन पावक सागर भए हरख सोग महि बसना ॥ सतिगुरु भेटि भइआ मनु निरमलु जपि अंम्रितु हरि रसना ॥ २ ॥ तनु धनु थापि कीओ सभु अपना कोमल बंधन बांधिआ ॥ गुर परसादि भए जन मुकते हरि हरि नामु अराधिआ ॥ ३ ॥ राखि लीए प्रभि राखनहारै जो प्रभ अपुने भाणे ॥ जीउ पिंडु सभु तुम्हरा दाते नानक सद कुरबाणे ॥ ४ ॥ ११ ॥ ५० ॥ आसा महला ५ ॥ मोह मलन नीद ते छुटकी कउनु अनुग्रहु भइओ री ॥ महा मोहनी तुधु न

हे नानक, नाम ही हृदय का आधार है।। ४ ।। ८ ।। ४७ ।। आसा महला ५ ।। सब कुछ पहले से ही बन चुका और हो चुका है अब सूचना, परख, ज्ञान के माध्यम से और भला क्या जाना जा सकता है। परब्रह्म परमात्मा ने अपने बालक की अर्थात अपने सेवक की भूल-चूक को क्षमा कर दिया है।। १ ।। सदैव दयालु बने रहने वाले सच्चे गुरु ने मुझ गरीब की रक्षा कर ली है। उसने रोगों को काट दिया है जिससे मैंने महान सुख अर्थात परम सुख प्राप्त कर लिया है। प्रभु ने ही मेरे मुख में अमृत रूपी नाम डाल दिया है।। १ ।। रहाउ ।। मेरे अनेकों पापों को दूर कर दिया गया है और मेरे बन्धन काट दिए गए हैं जिससे मैं मुक्त हो गया हूँ। संसार रूपी भयानक अन्धे कुएँ में से गुरु ने मुझे बाहँ पकड़ कर बाहर निकाल लिया है।। २ ।। रक्षक प्रभु ने मेरी रक्षा की है जिससे मेरे सभी भय मिट गए हैं और मैं निर्भय हो गया हूँ। हे प्रभु, तूने मुझे ऐसा दान दिया है कि मेरे सभी कार्य सँवर गए हैं।। ३ ।। गुणों के भण्डार प्रभु का मन में मिलाप हो गया है और उसकी शरण में आकर हे नानक, मैं सुखी हो गया हूँ।। ४ ।। ९ ।। ४८ ।। आसा महला ५ ।। हे प्रभु, जब तू विस्मृत हो जाता है तो सभी भारी दुश्मन बन जाते हैं और जब तू चित्त में याद आता है तो यही शत्रु सेवा करने लग जाते हैं। हे सच्चे अलख एवं रहस्यातीत प्रभु, तेरे बिना मुझे अन्य दूसरा कोई भी सुझाई नहीं पड़ता।। १ ।। तू जब भी याद किया जाता है तो सदैव दयालु रूप में ही दिखाई देता है। तब भला यह बेचारे लोग क्या हैं अर्थात इनसे कैसा डर? सभी जीव तो तुम्हारे ही हैं इसलिए अब बताओ बुरा भला किसे कहा जाए।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, मुझे तेरी ही टेक और तेरा ही आसरा है और तू ही हाथ देकर मेरी रक्षा करता है। जिस सेवक पर तेरी कृपा होती है उसे कोई भी विपरीत शब्द अर्थात बुरा वचन नहीं कहता।। २ ।। वही सुख और वही बड़प्पन वास्तविक है जो प्रभु के मन को भाता हो। हे प्रभु, तू ही सयाना और सदैव मेहरबान बना रहने वाला है। मुझे यदि तेरा नाम प्राप्त हो जाए तभी मैं खुश बना रह सकता हूँ।। ३ ।। हे प्रभु, तेरे आगे ही मेरी अरदास है क्योंकि यह तन और मन सब तेरा ही है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, सारा बड़प्पन तेरा ही है मेरा तो कोई नाम भी नहीं जानता।। ४ ।। १० ।। ४९ ।। आसा महला ५।। हे अन्तर्यामी प्रभु, कृपा करो जिससे मै साधसंगत में प्रभु को पा सकूँ। यदि प्रभु अज्ञान के किवाड़ खोलकर दर्शन दिखा दे तो दुबारा जन्म लेने की आवश्यकता नहीं रहती।। १ ।। अपने प्रियतम प्रभु से मिलकर मैं अपने सारे दुखों को दूर कर लूँ और जिन्होंने परब्रह्म प्रभु की हृदय में आराधना की है उनके संग संसार-सागर को पार कर जाऊं।। १ ।। रहाउ ।। यह संसार एक बहुत बड़े जंगल की तरह अथवा आग के समुद्र की तरह है जिसमें रहते हुए हर्ष और शोक में बना रहना पड़ता है। सच्चे गुरु से मिलकर मेरा मन निर्मल हो गया है और जीभ से मैं प्रभु रूपी अमृत नाम का जाप करता हूँ।। २ ।। मनुष्य ने शरीर और धन को अपना बना कर रखा हुआ है और वह इनके मोह रूपी सूक्ष्म बन्धन में बँधा हुआ है। गुरु की कृपा से ही ये सेवक मुक्त हो गए हैं और अब ये प्रभु के नाम की ही आराधना करते हैं।। ३ ।। रक्षक प्रभु ने उन लोगों की रक्षा कर ली है जिन्हें वह अपना बना चुका मानता है। हे प्रभु, यह शरीर और मन सब तुम्हारा ही है और हे नानक, मैं सदा प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ।। ४ ।। ११ ।। ५० ।। आसा महला ५ ।। हे सहेली, तुझ पर कौन सी कृपा हुई है कि तू मन को मैला करने वाली मोह की नींद से बच गई है। मोहित कर देने वाली माया का भी तुझ पर

विआपै तेरा आलसु कहा गइओ री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु गाखरो संजमि कउन छुटिओ री ॥ सुरि नर देव असुर त्रैगुनीआ सगलो भवनु लुटिओ री ॥ १ ॥ दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री ॥ ऐसो समरथु वरनि न साकउ ता की उपमा जात न कहिओ री ॥ २ ॥ काजर कोठ महि भई न कारी निरमल बरनु बनिओ री ॥ महा मंत्रु गुर हिरदै बसिओ अचरज नामु सुनिओ री ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ नदरि अवलोकन अपुनै चरणि लगाई ॥ प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ॥ ४ ॥ १२ ॥ ५१ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ७ महला ५ ॥

लालु चोलना तै तनि सोहिआ ॥ सुरिजन भानी तां मनु मोहिआ ॥ १ ॥ कवन बनी री तेरी लाली ॥ कवन रंगि तूं भई गुलाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही सुंदरि तुमहि सुहागु ॥ तुम घरि लालनु तुम घरि भागु ॥ २ ॥ तूं सतवंती तूं परधानि ॥ तूं प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि ॥ ३ ॥ प्रीतम भानी तां रंगि गुलाल ॥ कहु नानक सुभ द्रिसटि निहाल ॥ ४ ॥ सुनि री सखी इह हमरी घाल ॥ प्रभ आपि सीगारि सवारनहार ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ५२ ॥ आसा महला ५ ॥ दूखु घनो जब होते दूरि ॥ अब मसलति मोहि मिली हदूरि ॥ १ ॥ चुका निहोरा सखी सहेरी ॥ भरमु गइआ गुरि पिर संगि मेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निकटि आनि प्रिअ सेज धरी ॥ काणि कढन ते छूटि परी ॥ २ ॥ मंदरि मेरै सबदि उजारा ॥ अनद बिनोदी खसमु हमारा ॥ ३ ॥ मसतकि भागु मै पिरु घरि आइआ ॥ थिरु सोहागु नानक जन पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५३ ॥ आसा महला ५ ॥ साचि नामि मेरा मनु लागा ॥ लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ॥ १ ॥ बाहरि सूतु सगल सिउ मउला ॥ अलिपतु रहउ जैसे जल महि कउला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुख की बात सगल सिउ करता ॥ जीअ संगि प्रभु अपुना धरता ॥ २ ॥ दीसि आवत है बहुतु भीहाला ॥ सगल चरन की इहु मनु राला ॥ ३ ॥ नानक जनि गुरु पूरा पाइआ ॥

प्रभाव नहीं पड़ता और तेरा आलस्य भी कहाँ भाग गया है।। १ ।। रहाउ ।। हे सखी, काम, क्रोध, अहंकार तो बहुत ही कठिनाई उत्पन्न करने वाला है; किस संयम से अर्थात किस युक्ति से यह सब समाप्त हो गए हैं। इन्होंने तो सुर, नर,देवता, असुर और तीनों गुणों में बँधे रहने वाले जीव तथा पूरे संसार को लूट रखा है।। १ ।। जंगल की आग ने तो सभी घास-फूस जला डाला है परन्तु कोई बिरला ही हरा पौधा बच रहा है अर्थात विकारों की अग्नि ने बहुतों का जीवन बर्बाद कर दिया है कोई बिरला गुरमुख ही बचा रहा है।। २ ।। ऐसे बलशाली व्यक्ति का वर्णन नहीं किया जा सकता और न ही उसकी प्रशंसा की जा सकती है। महामन्त्र की युक्ति मेरे हृदय में बस गई है और मैंने आश्चर्यजनक प्रभु-नाम को सुना है।। ३ ।। प्रभु ने कृपा दृष्टि से मुझे देखा और अपने चरणों में लगा लिया है। हे नानक, प्रेमाभक्ति के माध्यम से और साधसंगत में लीन बने रहने से ही मैंने सुख प्राप्त किया है।। ४ ।। १२ ।। ५१ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि राग़ु आसा घरु ७ महला ५।।

तेरे शरीर पर प्रेम का लाल वस्त्र शोभायमान है। तू उस अच्छे प्रभु को अच्छी लगी तभी तू मन को मोहित कर पाई।। १ ।। तेरे मुख पर यह लाली कैसे बनी हुई है और किसके रंग में रंगकर तू भी गुलाल के रंग जैसी लाल हो गई है।। १।। रहाउ ।। तुम ही सुन्दर हो, तुम ही सुहागिन हो और क्योंकि तुम्हारे घर में ही प्यारा प्रभु है इसलिए तुम्हारा घर रूपी शरीर ही भाग्यशाली है।। २ ।। तू ही सत्यवती है और तू ही प्रमुख है। प्रियतम को तू ही अच्छी लगी है और तेरे पास ही श्रेष्ठ ज्ञान है।। ३ ।। प्रियतम को अच्छी लगने के कारण ही तेरा रंग लाल हो गया है। नानक का कथन है कि उस प्रभु की शुभ दृष्टि के कारण ही तू निहाल हो गई है।। ४ ।। हे सखी सुनो, यही हमारी मेहनत है। प्रभु स्वयं ही हमें सिंगार कर सँवार लेने वाला है।। १ ।। रहाउ दूसरा।। १ ।। ५२ ।। आसा महला ५ ।। प्रभु से दूर होते ही मैं अत्यन्त दुख में घिर जाती हूँ। प्रभु के समक्ष ही अब मुझे परामर्श प्राप्त होता है अर्थात अब मैं उसके पास पहुँच गई हूँ।। १ ।। सखी-सहेलियों के सभी ताने चुक गए हैं और गुरु ने मुझे प्रियतम के संग मिला दिया है तथा मेरा सारा भ्रम समाप्त हो गया।। १ ।। रहाउ ।। मेरे पास आकर प्रिय प्रभु ने मुझे अपनी सेज पर बिठा लिया है और अब मैं अन्य सबकी मोहताजी से छूट गई हूँ।। २ ।। मेरे हृदय रूपी घर में शब्द के माध्यम से प्रकाश बना रहता है क्योंकि आनन्द और कौतुक करने वाला प्रभु हमारा स्वामी है।। ३ ।। मेरे माथे के भाग्य के कारण मेरा प्रियतम मेरे हृदय रूपी घर में आ गया है। हे प्रभु, सेवक नानक ने अब सदैव बना रहने वाला स्वभाव प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। २ ।। ५३ ।। आसा महला ५ ।। सच्चे नाम में मेरा मन लीन हो गया है और सांसारिक लोगों से तो मेरा मात्र लोकाचार ही है।। १ ।। बाहर से ठीक-ठाक रहकर मैंने सबसे दुआ-सलाम और बोलचाल रखी हुई है परन्तु मैं इन सब से सदैव कमल की तरह अलिप्त बना रहता हूँ।। १ ।। रहाउ।। मुँह से बात तो मैं सबसे करता हूँ परन्तु अपने प्राणों में मैं केवल अपने प्रभु को ही बसाए रहता हूँ।। २ ।। ऊपर से तो मैं बड़ा भयानक दिखाई देता हूँ परन्तु अन्तर्मन से तो मैं सब के चरणों की धूलि हूँ।। ३ ।। हे नानक, तेरे सेवक ने पूरा गुरु पा लिया है और उस गुरु ने

अंतरि बाहरि एकु दिखाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५४ ॥ आसा महला ५ ॥ पावतु रलीआ जोबनि बलीआ ॥ नाम बिना माटी संगि रलीआ ॥ १ ॥ कान कुंडलीआ बसत्र ओढलीआ ॥ सेज सुखलीआ मनि गरबलीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तलै कुंचरीआ सिरि कनिक छतरीआ ॥ हरि भगति बिना ले धरनि गडलीआ ॥ २ ॥ रूप सुंदरीआ अनिक इसतरीआ ॥ हरि रस बिनु सभि सुआद फिकरीआ ॥ ३ ॥ माइआ छलीआ बिकार बिखलीआ ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख दइअलीआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५५ ॥ आसा महला ५ ॥ एकु बगीचा पेड घन करिआ ॥ अंम्रित नामु तहा महि फलिआ ॥ १ ॥ ऐसा करहु बीचारु गिआनी ॥ जा ते पाईऐ पदु निरबानी ॥ आसि पासि बिखूआ के कुंटा बीचि अंम्रितु है भाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंचनहारे एकै माली ॥ खबरि करतु है पात पत डाली ॥ २ ॥ सगल बनसपति आणि जड़ाई ॥ सगली फूली निफल न काई ॥ ३ ॥ अंम्रित फलु नामु जिनि गुर ते पाइआ ॥ नानक दास तरी तिनि माइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५६ ॥ आसा महला ५ ॥ राज लीला तेरै नामि बनाई ॥ जोगु बनिआ तेरा कीरतनु गाई ॥ १ ॥ सरब सुखा बने तेरै ओल्है ॥ भ्रम के परदे सतिगुर खोल्हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हुकमु बूझि रंग रस माणे ॥ सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥ २ ॥ जिनि तूं जाता सो गिरसत उदासी परवाणु ॥ नामि रता सोई निरबाणु ॥ ३ ॥ जा कउ मिलिओ नामु निधाना ॥ भनति नानक ता का पूर खजाना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५७ ॥ आसा महला ५ ॥ तीरथि जाउ त हउ हउ करते ॥ पंडित पूछउ त माइआ राते ॥ १ ॥ सो असथानु बतावहु मीता ॥ जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पाप पुंन वीचार ॥ नरकि सुरगि फिरि फिरि अउतार ॥ २ ॥ गिरसत महि चिंत उदास अहंकार ॥ करम करत जीअ कउ जंजार ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते मनु वसि आइआ ॥ नानक गुरमुखि तरी तिनि माइआ ॥ ४ ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ इहु असथानु गुरू ते पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७ ॥ ५८ ॥ आसा महला ५ ॥ घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा ॥ हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥ १ ॥ सगल सूख जां तूं चिति आवैं ॥

अन्दर-बाहर मुझे एक ही प्रभु दिखा दिया है।। ४ ।। ३ ।। ५४ ।। आसा महला ५ ।। जब तक यौवन और बल है तब तक व्यक्ति सब प्रकार की खुशियां प्राप्त करता है परन्तु प्रभु-नाम से विहीन होकर अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा।। १ ।। व्यक्ति कानों में कुण्डल और शरीर पर वस्त्र पहनता है; इसके पास सुखदायक सेज है जिसे देखकर यह मन में अभिमान करता है।। १ ।। रहाउ ।। इसकी सवारी के लिए हाथी है और सिर पर सोने का छत्र है परन्तु प्रभु-भक्ति के बिना इसे धरती में ही गाड़ दिया जाएगा।। २ ।। रूप सौन्दर्य वाली इसके पास अनेकों स्त्रियां हैं परन्तु हरि रस के बिना सभी सुख और स्वाद फीके ही बने रहते हैं।। ३ ।। विकारों के रूप में विष रूप माया इसे सदैव धोखा देती रहती है।। उससे बचने के लिए प्रभु की ही शरण है जो दयालु एवं सर्वत्र रमण करने वाला है।। ४ ।। ४ ।। ५५ ।। आसा महला ५ ।। साधसंगत रूपी एक बाग है जिसमें अनेकों पेड़ लगे हुए हैं। उस बाग में अमृत-नाम के फल लगते हैं।। १ ।। हे ज्ञानी पुरुषों, कुछ ऐसा विचार करो जिससे मोक्ष पदवी प्राप्त हो जाए। इस बगीचे के आस-पास विष के कुण्ड हैं और इनके बीचों-बीच यह अमृत के समान है।। १ । रहाउ।। गुरु रूप एक ही माली इसे सींचने वाला है और वह इसके पात-पात और डाल-डाल की ख़बर लेता रहता है।। २ ।। यह माली सारे पौधों को लाकर अपने बाग में लगाता है अर्थात वह सारी सृष्टि के सभी प्राणियों के लिए अपनी बात कहता है। इसीलिए उसकी सारी वाटिका फली-फूली रहती है और उसका किया हुआ कुछ भी निष्फल नहीं होता।। ३ ।। जिसने गुरु के माध्यम से अमृत-फल नाम प्राप्त कर लिया है, हे दास नानक, उसने इन मायावी प्रपंचों को पार कर लिया है।। ४ ।। ५ ।। ५६ ।। आसा महला ५ ।। तेरे नाम ने ही हे प्रभु, मेरे लिए सभी राज-सुख प्रस्तुत किए हुए हैं। मेरे लिए यही सुअवसर हैं कि मैं तेरा गुणानुवाद करूँ।। १ ।। तेरे आश्रय में रहने से सभी सुख मिल जाते हैं और सच्चा गुरु भ्रम के सभी पर्दों को खोल देता है।। १ ।। रहाउ ।। व्यक्ति प्रभु के हुकम को बूझकर सब प्रकार के रसों का आनन्द लेता है और सच्चे गुरु की सेवा से महा अलिप्तता की स्थिति प्राप्त करता है।। २ ।। जिन्होंने तुझे जान लिया है वे गृहस्थ आश्रम में हों अथवा संसार के त्यागी हों तेरे द्वारा स्वीकृत कर लिए जाते हैं। जो प्रभु-नाम में लीन हैं वे ही वास्तव में त्यागी हैं।। ३ ।। जिसे नाम का भण्डार मिल गया है, नानक का कथन है कि उसके सभी खज़ाने भर जाते हैं।। ४ ।। ६ ।। ५७ ।। आसा महला ५ ।। तीर्थों पर जाओ तो वहाँ भी मैं-मैं करने वाले बहुत मिलते हैं। किसी विद्वान पंडित से कुछ पूछो तो वह भी माया में लीन बना हुआ दिखाई देता है।। १ ।। हे मित्र, मुझे ऐसा स्थान बताओ जहाँ नित्य प्रभु का गुणनुवाद होता हो।। १ ।। रहाउ ।। शास्त्र और वेद पाप पुण्य का विचार करते हैं जिससे व्यक्ति को बार-बार नर्क और स्वर्ग में आना-जाना पड़ता है।। २ ।। घरबारी व्यक्ति के जीवन में चिन्ता ही चिन्ता है और जो विरक्त हो गया है उसमें अहंकार ही अहंकार भरा हुआ है। कर्मकाण्डों के संस्कार करना तो आत्मा के लिए एक जंजाल ही बन जाता है।। ३ ।। हे नानक, प्रभु की कृपा से जिसका मन उसके वश में आ गया है उसने गुरमुख बनकर माया के सागर को पार कर लिया है।। ४ ।। साधु-संगत में प्रभु का गुणानुवाद किया जाना चाहिए और यह पदवी गुरु से ही प्राप्त होती है।। १ ।। रहाउ दूसरा ।। ७ ।। ५८ ।। आसा महला ५ ।। मेरे घर में भी सुख है और बाहर भी मुझे सुख ही सुख है। प्रभु का सुमिरन करने से मेरे सभी दुख विनष्ट हो गए हैं।। १ ।। जब तुम मन में याद रहते हो तो मुझे सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं।

सो नामु जपै जो जनु तुधु भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु सीतलु जपि नामु तेरा ॥ हरि हरि जपत ढहै दुख डेरा ॥ २ ॥ हुकमु बूझै सोई परवानु ॥ साचु सबदु जा का नीसानु ॥ ३ ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ भनति नानकु मेरै मनि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५९ ॥ आसा महला ५ ॥ जहा पठावहु तह तह जाईं ॥ जो तुम देहु सोई सुखु पाईं ॥ १ ॥ सदा चेरे गोविंद गोसाई ॥ तुम्हरी क्रिपा ते त्रिपति अघाईं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरा दीआ पैन्हउ खाईं ॥ तउ प्रसादि प्रभ सुखी वलाईं ॥ २ ॥ मन तन अंतरि तुझै धिआईं ॥ तुम्हरै लवै न कोऊ लाईं ॥ ३ ॥ कहु नानक नित इवै धिआईं ॥ गति होवै संतह लगि पाईं ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६० ॥ आसा महला ५ ॥ ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥ मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥ १ ॥ स्रवन सुनीजै अंम्रित कथा ॥ जासु सुनी मनि होइ अनंदा दूख रोग मन सगले लथा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कारजि कामि बाट घाट जपीजै ॥ गुर प्रसादि हरि अंम्रितु पीजै ॥ २ ॥ दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥ ३ ॥ आठ पहर जिसु विसरहि नाही ॥ गति होवै नानक तिसु लगि पाई ॥ ४ ॥ १० ॥ ६१ ॥ आसा महला ५ ॥ जा कै सिमरनि सूख निवासु ॥ भई कलिआण दुख होवत नासु ॥ १ ॥ अनदु करहु प्रभ के गुन गावहु ॥ सतिगुरु अपना सद सदा मनावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर का सचु सबदु कमावहु ॥ थिरु घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥ २ ॥ पर का बुरा न राखहु चीत ॥ तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ ३ ॥ हरि हरि तंतु मंतु गुरि दीन्हा ॥ इहु सुखु नानक अनदिनु चीन्हा ॥ ४ ॥ ११ ॥ ६२ ॥ आसा महला ५ ॥ जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥ नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥ १ ॥ दरसनु मागउ देहि पिआरे ॥ तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै निकटि न आवै कोई ॥ सगल स्रिसटि उआ के चरन मलि धोई ॥ २ ॥ जो प्रानी काहू न आवत काम ॥ संत प्रसादि ता को जपीऐ नाम ॥ ३ ॥ साधसंगि मन सोवत जागे ॥ तब प्रभ नानक मीठे लागे ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६३ ॥ आसा महला ५ ॥ एको एकी नैन निहारउ ॥ सदा सदा हरि नामु

जो व्यक्ति तुझे भाता है वही तेरे नाम का जाप करता है।। १ ।। रहाउ।। तेरे नाम का जाप करके हमारा तन, मन सभी सुखी हो जाते हैं। प्रभु के नाम-सुमिरन से दुखों का जमघट नष्ट हो जाता है।। २ ।। जो प्रभु के हुकम को जान लेता है वही स्वीकृत माना जाता है और उसी पर सच्चे शब्द का चिन्ह अंकित होता है।। ३ ।। पूर्ण गुरु ने प्रभु-नाम का सुमिरन करवाया है और नानक का कथन है कि इस सुमिरन के कारण मेरे मन ने सुख प्राप्त कर लिया।। ४ ।। ८ ।। ५६ ।। आसा महला ५।। हे प्रभु, तुम जहाँ भी मुझे भेजते हो वहाँ ही मै जाता हूँ। तुम जो भी मुझे देते हो मैं उसी में सुख मानता हूँ।। १ ।। हम लोग तो सदैव धरतियों को धारण करने वाले परमात्मा के चेले हैं और तुम्हारी कृपा से ही खा पीकर तृप्त बने रहते हैं।। १ ।। रहाउ।। तुम्हारा दिया हुआ ही खाते और पहनते हैं और हे प्रभु, तेरी कृपा से ही हम अपनी सम्पूर्ण आयु सुखपूर्वक व्यतीत करते हैं।। २ ।। तन, मन से हम तेरी आराधना करते हैं और तुम्हारे बराबर किसी को भी नहीं समझते।। ३ ।। हे नानक, उस प्रभु की इसी प्रकार आराधना की जानी चाहिए। व्यक्ति को परमगति शान्त पुरुषों के चरण स्पर्श से ही प्राप्त होती है।। ४ ।। ९ ।। ६० ।। आसा महला ५।। उठते-बैठते एवं सोते हुए उस प्रभु की ही आराधना की जानी चाहिए। कानों से उसकी अमृत कथा को सुना जाए क्योंकि उसको सुनने से ही मन आनन्दित होता है और मन के सभी दुख और रोग नष्ट हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। काम करते हुए, राह चलते हुए हर घाट पर अर्थात हर स्थान पर प्रभु नाम का ही जाप किया जाना चाहिए और इस प्रकार गुरु की कृपा से प्रभु-नाम रूपी अमृत का पान किया जाना चाहिए।। २ ।। जो सेवक दिन-रात प्रभु की कीर्ति का गायन करते हैं (और उसे ही आचरण में भी उतारते हैं) वे यम के मार्ग अर्थात नष्ट हो जाने वाले मार्ग पर नहीं चलते।। ३ ।। जिस व्यक्ति को आठों प्रहर वह परमात्मा विस्मृत नहीं होता, हे नानक, ऐसे व्यक्ति का चरण-स्पर्श करने से परम गति प्राप्त हो जाती है।। ४ ।। १० ।। ६१ ।। आसा महला ५ ।। जिसके सुमिरन से मन में सुखों का निवास हो जाता है उस प्रभु के गुण गाओ और सदैव आनन्दित बने रहो तथा सदैव सच्चे गुरु परमात्मा की वन्दना करते रहो।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु के सच्चे उपदेश को यदि आचरण बनाया जाए तो अपने अन्तर्मन रूपी घर में ही स्थिरता पूर्वक बैठे हुए ही अपने प्रभु को पा लिया जाता है।। २ ।। दूसरे का बुरा करने का विचार मन में न रखो और हे मेरे भाई मित्र, तुम्हें कोई भी दुख नहीं सताएगा। गुरु ने तन्त्र-मन्त्र के तौर पर केवल प्रभु-नाम ही दिया है और केवल इस प्रभु-नाम के माध्यम से ही नानक ने सदा बने रहने वाले स्थायी सुख की पहचान कर ली है।। ४ ।। ११ ।। ६२ ।। आसा महला ५।। जिस तथाकथित नीच को कोई भी नहीं जानता वही केवल नाम के सुमिरन से चारों दिशाओं में जाना और माना जाने लगता है।। १ ।। हे प्यारे प्रभु, मैं तेरा दर्शन चाहता हूँ, मुझे दर्शन दे क्योंकि तुम्हारे सुमिरन से भला कौन-कौन संसार सागर से पार नहीं उतर सका है।। १ ।। रहाउ ।। जिसके पास कोई आना भी नहीं चाहता है, केवल नाम के सुमिरन के कारण उसी व्यक्ति के चरणों को सारी सृष्टि मल-मल कर धोती है अर्थात उसके सामने विनम्र बनी रहती है।। २ ।। जो प्राणी किसी काम का भी नहीं होता, शान्त पुरुषों की कृपा से लोग उसी व्यक्ति के नाम का जाप करने लग जाते हैं अर्थात लोग उसके उच्च्व आचरण के अनुरूप अपने जीवन को ढालने के लिए तत्पर बने रहते हैं।। ३ ।। साधुपुरुषों की संगति में सोया हुआ मन जग जाता है और उच्च्व आचरण की ओर प्रयत्नशील बन जाता है। हे नानक, व्यक्ति को तब प्रभु भी मीठा लगने लगता है।। ४ ।। १२ ।। ६३ ।। आसा महला ५ ।। मैं केवल एक प्रभु को ही अपनी आँखों से निहारता हूँ और सदैव प्रभु-नाम का

सम्हारउ ॥ १ ॥ राम रामा रामा गुन गावउ ॥ संत प्रतापि साध कै संगे हरि हरि नामु धिआवउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल समग्री जा कै सूति परोई ॥ घट घट अंतरि रविआ सोई ॥ २ ॥ ओपति परलउ खिन महि करता ॥ आपि अलेपा निरगुनु रहता ॥ ३ ॥ करन करावन अंतरजामी ॥ अनंद करै नानक का सुआमी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६४ ॥ आसा महला ५ ॥ कोटि जनम के रहे भवारे ॥ दुलभ देह जीती नही हारे ॥ १ ॥ किलबिख बिनासे दुख दरद दूरि ॥ भए पुनीत संतन की धूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ के संत उधारन जोग ॥ तिसु भेटे जिसु धुरि संजोग ॥ २ ॥ मनि आनंदु मंत्रु गुरि दीआ ॥ त्रिसन बुझी मनु निहचलु थीआ ॥ ३ ॥ नामु पदारथु नउ निधि सिधि ॥ नानक गुर ते पाई बुधि ॥ ४ ॥ १४ ॥ ६५ ॥ आसा महला ५ ॥ मिटी तिआस अगिआन अंधेरे ॥ साध सेवा अघ कटे घनेरे ॥ १ ॥ सूख सहज आनंदु घना ॥ गुर सेवा ते भए मन निरमल हरि हरि हरि हरि नामु सुना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनसिओ मन का मूरखु ढीठा ॥ प्रभ का भाणा लागा मीठा ॥ २ ॥ गुर पूरे के चरण गहे ॥ कोटि जनम के पाप लहे ॥ ३ ॥ रतन जनमु इहु सफल भइआ ॥ कहु नानक प्रभ करी मइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ६६ ॥ आसा महला ५ ॥ सतिगुरु अपना सद सदा सम्हारे ॥ गुर के चरन केस संगि झारे ॥ १ ॥ जागु रे मन जागनहारे ॥ बिनु हरि अवरु न आवसि कामा झूठा मोहु मिथिआ पसारे॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर की बाणी सिउ रंगु लाइ ॥ गुरु किरपालु होइ दुखु जाइ ॥ २ ॥ गुर बिनु दूजा नाही थाउ ॥ गुरु दाता गुरु देवै नाउ ॥ ३ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु आपि ॥ आठ पहर नानक गुर जापि ॥ ४ ॥ १६ ॥ ६७ ॥ आसा महला ५ ॥ आपे पेडु बिसथारी साख ॥ अपनी खेती आपे राख ॥ १ ॥ जत कत पेखउ एकै ओही ॥ घट घट अंतरि आपे सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे सूरु किरणि बिसथारु ॥ सोई गुपतु सोई आकारु ॥ २ ॥ सरगुण निरगुण थापै नाउ ॥ दुह मिलि एकै कीनो ठाउ ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि भ्रमु भउ खोइआ ॥ अनद रूपु सभु नैन अलोइआ ॥ ४ ॥ १७ ॥ ६८ ॥ आसा महला ५ ॥ उकति सिआनप किछू न जाना ॥

सुमिरन करता हूँ।। १ ।। केवल राम के, प्रभु के और सर्वत्र रमण करने वाली सर्वव्यापक परमसत्ता के गुण गाता हूँ तथा शान्त पुरुषों के प्रताप से साधु प्रवृत्ति वाले लोगों की कृगति में प्रभु के नाम का सुमिरन करता हूँ।। १ ।। रहाउ।। विश्व के समस्त पदार्थों के रूप में सम्पूर्ण सामग्री जिसने अपने नाम रूपी धागे में पिरो रखी है वही परम सत्ता प्रत्येक जीव-अजीव के अन्दर रमण कर रही है।। २ ।। वह क्षण भर में उत्पत्ति और प्रलय कर देता है परन्तु स्वयं फिर भी अलिप्त और निर्गुण बना रहता है।। ३ ।। नानक का स्वामी प्रभु स्वयं ही करने कराने वाला अन्तर्यामी और आनन्दित बना रहने वाला है।। ४ ।। १३ ।। ६४ ।। आसा महला ५ ।। करोड़ों जन्मों में भ्रमण करते रहने के फलस्वरूप भी हम हारे नहीं तथा इस दुर्लभ मानव-शरीर को पाकर हमने अन्ततः जीत प्राप्त की है।। १ ।। इसी मानव देह में रहते हुए अच्छे आचरण के माध्यम से हमने सभी पापों को विनष्ट करके दुखों और पीड़ाओं को दूर कर दिया है तथा शान्तपुरुषों की चरण-धूलि के माध्यम से हम पवित्र बन गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के शान्त पुरुष व्यक्ति को संसार-सागर से पार करा सकने के योग्य होते हैं परन्तु उनसे मिलाप उन्हीं का होता है जिनके भाग्य में शुरु से ही लिखा होता है।। २ ।। गुरु के उपदेश के माध्यम से मन आनन्दित हो जाता है और इस मन की तृष्णा समाप्त होकर यह स्थिर हो जाता है।। ३ ।। प्रभु-नाम रूपी पदार्थ ही नवनिधियों और सभी सिद्धियों के समान है; हे नानक, यह जानकारी मुझे गुरु से प्राप्त हुई है।। ४ ।। १४ ।। ६५ ।। आसा महला ५।। मेरा ज्ञान रूपी अन्धकार एवं तृष्णाएं समाप्त हो गई हैं और साधु पुरुषों की सेवा से मेरे बहुत से पाप कट गए हैं।। १ ।। अब मुझे सहज सुख और अत्यधिक आनन्द प्राप्त हो गया है। गुरु की सेवा के फलस्वरूप मेरा मन निर्मल हो गया है और अब मैं केवल प्रभु का ही नाम बार-बार सुनता हूँ।। १ ।। रहाउ।। मन की मूर्खता और ढीठता समाप्त हो गई है तथा अब प्रभु की रज़ा मुझे अच्छी लगने लग गई है।। २ ।। मैंने पूर्ण गुरु के चरण पकड़ लिए हैं जिससे करोड़ों जन्मों के मेरे पाप छूट गए हैं।। ३ ।। हे नानक, प्रभु ने मुझ पर ऐसी कृपा की है कि यह रत्न रूपी मेरा जीवन सार्थक बन गया है।। ४ ।। १५ ।। ६६ ।। आसा महला ५।। सच्चे गुरु का सदैव सुमिरन करना चाहिए और गुरु के चरणों को अपने केशों के साथ साफ करना चाहिए।। १ ।। हे जागने योग्य मन, तू चेतन बन क्योंकि प्रभु के बिना अन्य कोई भी काम नहीं आता तथा यह सृष्टि का सारा कार्य-व्यवहार झूठे मोह का ही प्रपंच है।। १ ।। रहाउ।। गुरु की वाणी के साथ प्रेम लगाओ क्योंकि गुरु कृपालु होगा तो दुख दूर हो जाएगा।। २ ।। व्यक्ति को गुरु के बिना अन्य कोई आसरा नहीं है क्योंकि गुरु ही दाता है और गुरु ही नाम देने वाला है।। ३ ।। परब्रह्म परमेश्वर स्वयं गुरु है और हे नानक, तू आठों प्रहर गुरु अर्थात परमात्मा का सुमिरन कर।। ४ ।। १६ ।। ६७ ।। आसा महला ५।। प्रभु स्वयं ही वृक्ष है जिसने सृष्टि रूप में अपनी शाखाओं को फैलाया हुआ है। यह सृष्टि उसी की खेती है जिसकी वह स्वयं ही रक्षा करता है।। १ ।। जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ मुझे एक वही प्रभु दिखाई देता है और वह स्वयं ही प्रत्येक हृदय में बस रहा है।। १ ।। रहाउ ।। वह स्वयं ही सूर्य है और उसी ने सृष्टि रूप में अपनी किरणों का विस्तार किया हुआ है। वह स्वयं ही आकारों के रूप में दृष्ट है और स्वयं ही प्रछन्न रूप में विद्यमान है।। २ ।। सगुण और निर्गुण उसी के नाम कहे जाते हैं और यह दोनों मिलकर अन्ततः एक ही बने रहते हैं।। ३ ।। हे नानक, गुरु के माध्यम से मेरे सभी भ्रम खो गए हैं और मैंने उसे आनन्द रूप में सर्वत्र फैले हुए अपनी आँखों से देखा है।। ४ ।। १७ ।। ६८ ।। आसा महला ५ ।। मैं युक्ति और चतुराई कुछ भी नहीं जानता हूँ और

दिनु रैणि तेरा नामु वखाना ॥ १ ॥ मै निरगुन गुणु नाही कोइ ॥ करन करावनहार प्रभ सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूरख मुगध अगिआन अवीचारी ॥ नाम तेरे की आस मनि धारी ॥ २ ॥ जपु तपु संजमु करम न साधा ॥ नामु प्रभू का मनहि अराधा ॥ ३ ॥ किछू न जाना मति मेरी थोरी ॥ बिनवति नानक ओट प्रभ तोरी ॥ ४ ॥ १८ ॥ ६९ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि हरि अखर दुइ इह माला ॥ जपत जपत भए दीन दइआला ॥ १ ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुनी ॥ करि किरपा राखहु सरणाई मोकउ देहु हरे हरि जपनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि माला उर अंतरि धारै ॥ जनम मरण का दूखु निवारै ॥ २ ॥ हिरदै समालै मुखि हरि हरि बोलै ॥ सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥ ३ ॥ कहु नानक जो राचै नाइ ॥ हरि माला ता कै संगि जाइ ॥ ४ ॥ १९ ॥ ७० ॥ आसा महला ५ ॥ जिस का सभु किछु तिस का होइ ॥ तिसु जन लेपु न बिआपै कोइ ॥ १ ॥ हरि का सेवकु सद ही मुकता ॥ जो किछु करै सोई भल जन कै अति निरमल दास की जुगता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल तिआगि हरि सरणी आइआ ॥ तिसु जन कहा बिआपै माइआ ॥ २ ॥ नामु निधानु जा के मन माहि ॥ तिस कउ चिंता सुपनै नाहि ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ भरमु मोहु सगल बिनसाइआ ॥ ४ ॥ २० ॥ ७१ ॥ आसा महला ५ ॥ जउ सुप्रसंन होइओ प्रभु मेरा ॥ तां दूखु भरमु कहु कैसे नेरा ॥ १ ॥ सुनि सुनि जीवा सोइ तुम्हारी ॥ मोहि निरगुन कउ लेहु उधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटि गइआ दूखु बिसारी चिंता ॥ फलु पाइआ जपि सतिगुर मंता ॥ २ ॥ सोई सति सति है सोइ ॥ सिमरि सिमरि रखु कंठि परोइ ॥ ३ ॥ कहु नानक कउन उह करमा ॥ जा कै मनि वसिआ हरि नामा ॥ ४ ॥ २१ ॥ ७२ ॥ आसा महला ५ ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विगूते ॥ हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥ १ ॥ सोइ रहे माइआ मद माते ॥ जागत भगत सिमरत हरि राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह भरमि बहु जोनि भवाइआ ॥ असथिरु भगत हरि चरण धिआइआ ॥ २ ॥ बंधन अंध कूप ग्रिह मेरा ॥ मुकते संत बुझहि हरि नेरा ॥ ३ ॥ कहु नानक जो प्रभ सरणाई ॥ ईहा सुखु

दिन-रात तुम्हारे नाम का ही बखान करता हूँ।। १ ।। मैं गुण विहीन हूँ अर्थात मुझमें कोई भी गुण नहीं है क्योंकि करने कराने वाला केवल वह प्रभु ही है।। १ ।। रहाउ।। हैरानी में पड़ा हुआ मैं मूर्ख अज्ञानी और विचारशून्य हूँ। मेरे मन में केवल तेरे नाम का ही आसरा है।। २ ।। मैंने कोई भी जप, तप, संयम, कर्म, आदि की साधना नहीं की और केवल प्रभु-नाम का ही सुमिरन मन में किया है।। ३ ।। मेरी मति बहुत ही कम है और मैं कुछ भी नहीं जानता। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, मुझे केवल तुम्हारा ही आसरा है।। ४ ।। १८ ।। ६६ ।। आसा महला ५ ।। हरि हरि ये दोनों अक्षर ही मेरी माला हैं जिसे जपते जपते व्यक्ति स्वयं दीनदयालु हो जाता है।। १ ।। हे सच्चे गुरु, मैं अपनी ओर से विनती करता हूँ कि मुझ पर कृपा करो और मुझे अपनी शरण में बनाए रख कर हरि की जाप-माला प्रदान करो।। १ ।। रहाउ।। जो हरि-नाम की माला को हृदय में धारण करता है वह जन्म-मरण का दुख दूर कर लेता है।। २ ।। जो सेवक हृदय में प्रभु को याद करता है और मुख से हरि-हरि बोलता है वह इस लोक और परलोक में कही भी घबराता नहीं।। ३ ।। हे नानक, जो प्रभु के नाम में लीन हो जाता है, प्रभु-नाम की माला सदैव उसके साथ ही बनी रहती है।। ४ ।। १६ ।। ७० ।। आसा महला ५।। जो व्यक्ति उस प्रभु का हो जाता है जिसका सब कुछ है तो उसे कोई भी मैल नहीं लग सकती।। १ ।। प्रभु का सेवक मुक्त अवस्था में बना रहता है और जो कुछ प्रभु करता है वह सेवक उसी को भला मानता है। इस प्रकार सेवक का आचरण अत्यन्त निर्मल बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। जो सब कुछ त्याग कर प्रभु की शरण में आ गया उस सेवक को भला माया कैसे प्रभावित कर सकती है।। २ ।। जिसके मन में नाम का भण्डार स्थित है उसे स्वप्न में भी कोई चिन्ता नहीं सताती।। ३ ।। नानक का कथन है कि पूर्ण गुरु पा लेने से समस्त भ्रम एवं मोह विनष्ट हो जाते हैं।। ४ ।। २० ।। ७१ ।। आसा महला ५।। जब मेरा प्रभु मुझ पर प्रसन्न हो गया तो दुख भ्रम भला कैसे मेरे पास आ सकते हैं।। १ ।। हे प्रभु, मैं तुम्हारी महिमा को सुन सुन कर ही जीवित बना रहता हूँ; मुझ गुण-विहीन का उद्धार कर दो।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु के मन्त्र को जप कर अर्थात उस पर आचरण करके मुझे यह फल प्राप्त हुआ है कि मेरा दुख मिट गया है और मेरी चिन्ता मुझे भूल गई है।। २ ।। वही और केवल वही प्रभु सत्य है। हे व्यक्ति, बार-बार उसी का सुमिरन करके उसे गले में माला की तरह पिरो कर धारण किये रह।। ३ ।। नानक का कथन है कि जिसके मन में प्रभु-नाम आन बसा है उसके लिए अब कौन सा कर्मकाण्ड करना बाकी रह गया है।। ४ ।। २१ ।। ७२।। आसा महला ५।। आम व्यक्ति काम, क्रोध और अहंकार में फंसे हुए हैं परन्तु प्रभु के सेवक प्रभु-सुमिरन करते हुए मुक्त हो जाते हैं।। १ ।। माया के मद में लीन प्राणी सोते रह जाते हैं परन्तु प्रभु के भक्त उस प्रभु में लीन होकर सुमिरन करते हुए सदैव जागते रहते हैं अर्थात चेतन बने रहते हैं।। १ ।। रहाउ ।। मोह और भ्रम अनेकों योनियों में भटकाते हैं परन्तु प्रभु के चरणों की आराधना कर भक्त-जन स्थिर हो जाते हैं ।। २ ।। जो मोह-ममता के बन्धन रूपी अन्धे कुएँ में पड़े हुए हैं वे यह कहते हैं कि यह लोक ही मेरा घर है; परन्तु मुक्त हो चुके शान्त पुरुष उस प्रभु को अत्यन्त निकट मानते हैं।। ३ ।। नानक का कथन है कि जो प्रभु की शरण में आ गया है उसे यहाँ तो सुख मिलता ही है,

आगै गति पाई ॥ ४ ॥ २२ ॥ ७३ ॥ आसा महला ५ ॥ तू मेरा तरंगु हम मीन तुमारे ॥ तू मेरा ठाकुरु हम तेरै दुआरे ॥ १ ॥ तूं मेरा करता हउ सेवकु तेरा ॥ सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू मेरा जीवनु तू आधारु ॥ तुझहि पेखि बिगसै कउलारु ॥ २ ॥ तू मेरी गति पति तू परवानु ॥ तू समरथु मै तेरा ताणु ॥ ३ ॥ अनदिनु जपउ नाम गुणतासि ॥ नानक की प्रभ पहि अरदासि ॥ ४ ॥ २३ ॥ ७४ ॥ आसा महला ५ ॥ रोवनहारै झूठु कमाना ॥ हसि हसि सोगु करत बेगाना ॥ १ ॥ को मूआ का कै घरि गावनु ॥ को रोवै को हसि हसि पावनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा ते बिरधाना ॥ पहुचि न मूका फिरि पछुताना ॥ २ ॥ त्रिहु गुण महि वरतै संसारा ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥ ३ ॥ कहु नानक जो लाइआ नाम ॥ सफल जनमु ता का परवान ॥ ४ ॥ २४ ॥ ७५ ॥ आसा महला ५ ॥ सोइ रही प्रभ खबरि न जानी ॥ भोरु भइआ बहुरि पछुतानी ॥ १ ॥ प्रिअ प्रेम सहजि मनि अनदु धरउ री ॥ प्रभ मिलबे की लालसा ता ते आलसु कहा करउ री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर महि अंम्रितु आणि निसारिओ ॥ खिसरि गइओ भूम परि डारिओ ॥ २ ॥ सादि मोहि लादी अहंकारे ॥ दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥ ३ ॥ साधसंगि मिटे भरम अंधारे ॥ नानक मेली सिरजणहारे ॥ ४ ॥ २५ ॥ ७६ ॥ आसा महला ५ ॥ चरन कमल की आस पिआरे ॥ जमकंकर नसि गए विचारे ॥ १ ॥ तू चिति आवहि तेरी मइआ ॥ सिमरत नाम सगल रोग खइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक दूख देवहि अवरा कउ ॥ पहुचि न साकहि जन तेरे कउ ॥ २ ॥ दरस तेरे की पिआस मनि लागी ॥ सहज अनंद बसै बैरागी ॥ ३ ॥ नानक की अरदासि सुणीजै ॥ केवल नामु रिदे महि दीजै ॥ ४ ॥ २६ ॥ ७७ ॥ आसा महला ५ ॥ मनु त्रिपतानो मिटे जंजाल ॥ प्रभु अपुना होइआ किरपाल ॥ १ ॥ संत प्रसादि भली बनी ॥ जा कै ग्रिहि सभु किछु है पूरनु सो भेटिआ निरभै धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु द्रिड़ाइआ साध क्रिपाल ॥ मिटि गई भूख महा बिकराल ॥ २ ॥ ठाकुरि अपुनै कीनी दाति ॥ जलनि बुझी मनि होई सांति ॥ ३ ॥ मिटि गई भाल मनु

उस लोक में भी परम गति प्राप्त होती है।। ४ ।। २२ ।। ७३ ।। आसा महला ५।। हे प्रभु, तुम हमारे लिए नदी की लहर हो और हम तुम्हारी मछलियाँ हैं। तुम हमारे मालिक हो और हम तुम्हारे द्वार पर खड़े हैं।। १ ।। तू मेरा कर्ता है और मैं तेरा सेवक हूँ। मैने तो गम्भीर गुणों वाले प्रभु की शरण पकड़ ली है।। १ ।। रहाउ ।। तू ही मेरा जीवन और जीवन का आधार है, तुझे देखकर मैं कमल की तरह खिल जाता हूँ।। २ ।। तू ही मेरी गति, सम्मान और स्वीकृति है। हे प्रभु, तू समर्थ है और तू ही मेरा बल है।। ३ ।। नानक की प्रभु के समक्ष यही अरदास है कि मैं प्रतिदिन नाम और गुणों के भण्डार प्रभु का सुमिरन करता रहूँ।। ४ ।। २३ ।। ७४ ।। आसा महला ५ ।। जीवन के सुखों के लिए रोते रहने वाले का आचरण झूठा ही होता है। ऐसा मूर्ख व्यक्ति हँसता-हँसता हुआ शोक में डूब रहा है। संसार में कोई रोता है और कोई हँसता रहता है।। १ ।। रहाउ।। प्राणी बालपन की अवस्था से आगे बढ़ते-बढ़ते वृद्धवस्था तक पहुंच जाता है परन्तु फिर भी अपने वास्तविक लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाता और पछताता रहता है।। २ ।। यह सारा संसार तीनों गुणों अर्थात रजो गुण, तमों गुण एवं सतो गुण के अन्तगर्त व्यवहार करता रहता है और बार-बार इसका नर्क और स्वर्ग में आना-जाना लगा रहता है।। ३ ।। नानक का कथन है कि जो प्रभु-नाम में लग गया उसका जन्म सफल और स्वीकृत हो जाता है।। ४ ।। २४ ।। ७५ ।। आसा महला ५ ।। मै। जीवन रूपी रात्रि में सोयी ही पड़ी रही और प्रभु-पति के बारे में मैंने कुछ भी नहीं जाना। जीवन की रात समाप्त होकर सुबह हो गई और मृत्यु के आ पहुंचने पर अब सिर्फ पछतावे के अलावा और कुछ नहीं बचा है।। १ ।। प्रियतम के प्रेम की अवस्था में पहुँच कर मन में मैं आनन्द धारण करूँ। जब प्रभु के मिलने की लालसा जग उठे तो फिर भला आलस्य कैसे किया जा सकता है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने तो जीव के हाथ में अमृत लाकर रखा था परन्तु वह अमृत जीव के शान्त न होने के कारण इधर-उधर चला गया और भूमि पर आ गिरा।। २ ।। जीवात्मा रूपी स्त्री स्वाद, मोह और अहंकार से लदी हुई है। अब इसमें भला उस कर्णहार प्रभु का क्या दोष है।। ३ ।। साधु-संगति में भ्रम का अन्धकार मिटता है और हे नानक, वह सृजनहार प्रभु स्वयं ही जीवात्मा को अपने से मिला लेता है।। ४ ।। २५ ।। ७६ ।। आसा महला ५।। हे प्रियतम, मुझे तेरे चरण-कमलों का ही आसरा है। यम के दूत बेचारे तो भाग खड़े हुए हैं।। १ ।। यदि तेरी कृपा हो तभी तू चित्त में आन बसता है और नाम के सुमिरन से सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। यमदूत अन्य लोगों को अनेक प्रकार के दुख देते हैं परन्तु तेरे सेवक के तो वे पास भी नहीं पहुँच पाते।। २ ।। तेरे दर्शन की प्यास मन में लग गई है और वैराग्यवान होकर मैं सहज आनन्द में लीन हो गया हूँ।। ३ ।। हे प्रभु, नानक की अरदास सुनिए तथा केवल अपना ही नाम मेरे हृदय में बसा दीजिए।। ४ ।। २६ ।। ७७ ।। आसा महला ५।। जब मेरा प्रभु कृपालु हो गया है तो मेरा मन तृप्त हो गया है तथा मेरे जंजाल मिट गए हैं।। १ ।। संत पुरुषों की कृपा से यह एक भली बात हो गई है कि अब मुझे वह निर्भय साहूकार मिल गया है जिसके घर में सब कुछ है और वह सर्व सम्पूर्ण है।। १ ।। रहाउ ।। कृपालु साधु पुरुषों ने प्रभु-नाम को मुझे बार-बार स्मरण कराया है जिससे मेरी विकराल भूख मिट गई है।। २ ।। मेरे स्वामी ने अपना यह दान मुझे दिया है कि मेरी जलन बुझ गई है और मन में शान्ति आन बसी है।। ३ ।। अब मेरी खोज समाप्त हो गई है और मेरा मन

सहजि समाना ॥ नानक पाइआ नाम खजाना ॥ ४ ॥ २७ ॥ ७८ ॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर सिउ जा की बनि आई ॥ भोजन पूरन रहे अघाई ॥ १ ॥ कछू न थोरा हरि भगतन कउ ॥ खात खरचत बिलछत देवन कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा का धनी अगम गुसाई ॥ मानुख की कहु केत चलाई ॥ २ ॥ जा की सेवा दस असट सिधाई ॥ पलक दिसटि ता की लागहु पाई ॥ ३ ॥ जा कउ दइआ करहु मेरे सुआमी ॥ कहु नानक नाही तिन कामी ॥ ४ ॥ २८ ॥ ७९ ॥ आसा महला ५ ॥ जउ मै अपुना सतिगुरु धिआइआ ॥ तब मेरै मनि महा सुखु पाइआ ॥ १ ॥ मिटि गई गणत बिनासिउ संसा ॥ नामि रते जन भए भगवंता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ मै अपुना साहिबु चीति ॥ तउ भउ मिटिओ मेरे मीत ॥ २ ॥ जउ मै ओट गही प्रभ तेरी ॥ तां पूरन होई मनसा मेरी ॥ ३ ॥ देखि चलित मनि भए दिलासा ॥ नानक दास तेरा भरवासा ॥ ४ ॥ २९ ॥ ८० ॥ आसा महला ५ ॥ अनदिनु मूसा लाजु टुकाई ॥ गिरत कूप महि खाहि मिठाई ॥ १ ॥ सोचत साचत रैनि बिहानी ॥ अनिक रंग माइआ के चितवत कबहू न सिमरै सारिंगपानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ द्रुम की छाइआ निहचल ग्रिहु बांधिआ ॥ काल कै फांसि सकत सरु सांधिआ ॥ २ ॥ बालू कनारा तरंग मुखि आइआ ॥ सो थानु मूड़ि निहचलु करि पाइआ ॥ ३ ॥ साधसंगि जपिओ हरि राइ ॥ नानक जीवै हरि गुण गाइ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ८१ ॥ आसा महला ५ दुतुके ९ ॥ उन कै संगि तू करती केल ॥ उन कै संगि हम तुम संगि मेल ॥ उन्ह कै संगि तुम सभु कोऊ लोरै ॥ ओसु बिना कोऊ मुखु नही जोरै ॥ १ ॥ ते बैरागी कहा समाए ॥ तिसु बिनु तुही दुहेरी री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उन्ह कै संगि तू ग्रिह महि माहरि ॥ उन्ह कै संगि तू होई है जाहरि ॥ उन्ह कै संगि तू रखी पपोलि ॥ ओसु बिना तूं छुटकी रोलि ॥ २ ॥ उन्ह कै संगि तेरा मानु महतु ॥ उन्ह कै संगि तुम साकु जगतु ॥ उन्ह कै संगि तेरी सभ बिधि थाटी ॥ ओसु बिना तूं होई है माटी ॥ ३ ॥ ओहु बैरागी मरै न जाइ ॥ हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ जोड़ि विछोड़े नानक थापि ॥ अपनी कुदरति जाणै आपि ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ८२ ॥ आसा महला ५ ॥

सहज-भाव में लीन हो गया है। हे नानक, मैंने नाम का खजाना प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। २४ ।। ७८ ।। आसा महला ५ ।। प्रभु रूपी ठाकुर के साथ जिनकी प्रीति बन गई है उन्होंने नाम रूपी भोजन प्राप्त कर लिया और वे तृप्त हो गए हैं।। १ ।। हरि के भक्तों को कुछ भी कम नहीं पड़ता। वे खाते खर्चते सुख में बने रहते हुए सदैव देने को तत्पर रहते हैं।। १ ।। रहाउ ।। जिसका साहूकार वह अगम्य प्रभु है उसके सामने भला किसी व्यक्ति की क्या चल सकती है।। २ ।। जिसकी सेवा में अठारहों सिद्धियाँ हैं उसके चरणों में लगने के लिए तो पलक झपकने जितना समय भी नहीं खोना चाहिए।। ३ ।। हे प्रभु, जिस पर तुम दया करते हो, नानक का कथन है कि उसे किसी भी प्रकार की कमी नहीं आती।। ४ ।। २८ ।। ६६ ।। आसा महला ५ ।। जब मैंने अपने सच्चे गुरु की आराधना की तब मेरे मन को महासुख प्राप्त हुआ है।। १ ।। मेरी गणनाएं समाप्त हो गई हैं और मेरा संशय विनष्ट हो गया है। प्रभु के सेवक नाम में लीन होकर बड़े भाग्य वाले बन गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। जब मैंने अपने चित्त में साहिब प्रभु को धारण कर लिया है तो हे मेरे मित्र, सभी भय समाप्त हो गए हैं।। २ ।। हे प्रभु, मैनें जैसे ही तुम्हारा आसरा लिया, मेरे मन की इच्छाएं पूरी हो गई हैं।। ३ ।। तुम्हारे कौतुकों को देखकर मुझे धैर्य बँधता है क्योंकि दास नानक को केवल तुझ पर ही विश्वास है।। ४ ।। २६ ।। ८० ।। आसा महला ५ ।। प्रतिदिन मौत रूपी चूहा जीवन रूपी रस्सी को काटता जा रहा है। संसार रूपी वृक्ष में लगे हुए छत्ते से टपक रहे मीठे शहद को खा खाकर अर्थात सांसारिक विषय वासनाओं में लीन बना रहकर यह सोच ही नहीं पाता कि उसके जीवन की रस्सी को लगातार काटा जा रहा है।। १ ।। अन्य रसों की चिन्ताओं में पड़े हुए ही उसकी जीवन रूपी रात्रि व्यतीत हो जाती है अर्थात वह मर जाता है। वह इस संसार में माया के अनेकों रूपों को देखता हुआ खुश तो बना रहता है परन्तु कभी भी धरती को धारण करने वाले प्रभु का सुमिरन नहीं करता।। १ ।। रहाउ।। पेड़ की छाया अर्थात सदैव बदलते रहने वाले मायावी प्रपंचों में वह अटल घर को बनाने का उपक्रम करता है। एक तो वह मौत के फन्दे में फँसा हुआ है और ऊपर से माया उस पर तीर चला रही है अर्थात उसे पाप कर्मों की ओर धकेल रही है।। २ ।। समुद्र का रेतीला तट सदैव समुद्र की लहरों के मुख में बना रहता है। अब ऐसे स्थान को मूर्ख व्यक्ति सदैव रहने वाला स्थान मानता है।। ३ ।। साधसंगत में जिसने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है, हे नानक, वह प्रभु के गुण गाता हुआ सदैव जीवित बना रहता है।। ४ ।। ३० ।। ८१ ।। आसा महला ५ ।। दो पंक्तियों वाले ६ ।। आत्मा के साथ रहते हुए हे शरीर, तू खेल खेले चला जाता है। आत्मा के साथ बनी रहने पर तू सदैव हर एक से मेल-मिलाप करता रहता है। आत्मा के साथ बने रहने पर सभी तुझे चाहते रहते हैं परन्तु आत्मा से विहीन होने पर कोई भी तुझे मिलना नहीं चाहता।। १ ।। वह अलिप्त आत्मा कहाँ चली जाती है जिसके बिना तू एक छोड़ी हुई स्त्री के समान बेकार हो जाता है।। १ ।। रहाउ।। हे काया, आत्मा के साथ बने रहने पर तू इस सारे संसार में कुशलतापूर्वक विचरण करती है और उसी आत्मा के साथ बने रहने पर तू सबके सामने प्रकट होती है। उसके साथ बने रहने पर ही तुझे प्रेमपूर्वक पलोसा जाता है और उस आत्मा के बिना तू मिट्टी की चुटकी की तरह इधर-उधर उड़ती फिरती है।। २ ।। आत्मा के साथ बने रहने पर ही तेरा मान-सम्मान है और उसके कारण ही तेरा सारे संसार के साथ सम्बन्ध बना रहता है। उसके साथ होने पर ही तुझे सब प्रकार से बना-सँवार कर रखा जाता है और उस आत्मा के बिना तो तू केवल मिट्टी बनकर ही रह जाती है।। ३ ।। वह आत्मा तो अलिप्त है; वह न मरती है और न कहीं जाती है। उसी के हुकम में बँधा हुआ तू सारे कार्य-व्यवहार करता है। हे नानक, वही उसे इस शरीर से जोड़ता, वियुक्त करता और पुनः इस शरीर की स्थापना करता है; अपने खेल को वह प्रभु केवल आप ही जानता है।। ४ ।। ३१ ।। ८२ ।। आसा महला ५ ।।

ना ओहु मरता ना हम डरिआ ॥ ना ओहु बिनसै ना हम कड़िआ ॥ ना ओहु निरधनु ना हम भूखे ॥ ना ओसु दूखु न हम कउ दूखे ॥ १ ॥ अवरु न कोऊ मारनवारा ॥ जीअउ हमारा जीउ देनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना उसु बंधन ना हम बाधे ॥ ना उसु धंधा ना हम धाधे ॥ ना उसु मैलु न हम कउ मैला ॥ ओसु अनंदु त हम सद केला ॥ २ ॥ ना उसु सोचु न हम कउ सोचा ॥ ना उसु लेपु न हम कउ पोचा ॥ ना उसु भूख न हम कउ त्रिसना ॥ जा उहु निरमलु तां हम जचना ॥ ३ ॥ हम किछु नाही एकै ओही ॥ आगै पाछै एको सोई ॥ नानक गुरि खोए भ्रम भंगा ॥ हम ओइ मिलि होए इक रंगा ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ८३ ॥ आसा महला ५ ॥ अनिक भांति करि सेवा करीऐ ॥ जीउ प्रान धनु आगै धरीऐ ॥ पानी पखा करउ तजि अभिमानु ॥ अनिक बार जाईऐ कुरबानु ॥ १ ॥ साई सुहागणि जो प्रभ भाई ॥ तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दासनि दासी की पनिहारि ॥ उन्ह की रेणु बसै जीअ नालि ॥ माथै भागु त पावउ संगु ॥ मिलै सुआमी अपुनै रंगि ॥ २ ॥ जाप ताप देवउ सभ नेमा ॥ करम धरम अरपउ सभ होमा ॥ गरबु मोहु तजि होवउ रेन ॥ उन्ह कै संगि देखउ प्रभु नैन ॥ ३ ॥ निमख निमख एही आराधउ ॥ दिनसु रैणि एह सेवा साधउ ॥ भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद ॥ साधसंगि नानक बखसिंद ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ८४ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइ ॥ प्रभ की प्रीति हउमै मलु खोइ ॥ प्रभ की प्रीति सद निरमल होइ ॥ १ ॥ सुनहु मीत ऐसा प्रेम पिआरु ॥ जीअ प्रान घट घट आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ की प्रीति भए सगल निधान ॥ प्रभ की प्रीति रिदै निरमल नाम ॥ प्रभ की प्रीति सद सोभावंत ॥ प्रभ की प्रीति सभ मिटी है चिंत ॥ २ ॥ प्रभ की प्रीति इहु भवजलु तरै ॥ प्रभ की प्रीति जम ते नही डरै ॥ प्रभ की प्रीति सगल उधारै ॥ प्रभ की प्रीति चलै संगारै ॥ ३ ॥ आपहु कोई मिलै न भूलै ॥ जिसु क्रिपालु तिसु साधसंगि घूलै ॥ कहु नानक तेरै कुरबाणु ॥ संत ओट प्रभ तेरा ताणु ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ८५ ॥ आसा महला ५ ॥ भूपति होइ कै राजु कमाइआ ॥ करि करि अनरथ

न तो प्रभु मरता है और न ही हम मौत से डरते हैं। न प्रभु विनष्ट होता है और न ही हम मौत के भय से चिन्तित होते हैं। न तो प्रभु निर्धन है और न ही हमें कोई भूख है। न उसे कोई दुख है और न हम ही दुखित होते हैं (क्योंकि हम उसी का अंश हैं) ।। १ ।। हमें अन्य कोई भी मारने वाला नहीं है और हमारा प्राण-दाता प्रभु सदैव जीवन्त बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। न तो वह किसी बन्धन में है और न हम ही बँधे हुए हैं। न उसके लिए कोई कर्म का धन्धा है और न हमें ही कोई व्यस्तता का बखेड़ा है। न उसे कोई मैल लगती है और न हम ही कभी मैले होते हैं। यदि वह आनन्दित बना रहता है तो हमें भी सदैव प्रसन्नता मिलती रहती है।। २ ।। उसे कोई चिन्ताएं नहीं है और हमें भी कोई सोच अथवा चिन्ता नहीं है। न तो वह किसी में लिप्त रहता है और न ही हमारे में कोई ऐसा दोष है। उसे कोई भूख नहीं और हमें कोई तृष्णा नहीं। यदि वह निर्मल है तो हम भी उसके साथ ही अनुकूल रूप में हैं।। ३ ।। हम कुछ भी नहीं हैं; सर्वत्र केवल एक वही है। आगे-पीछे सब ओर केवल एक वही है। हे नानक, गुरु ने मेरे भ्रम और अवगुण समाप्त कर दिए हैं। अब हम और वह प्रभु मिलकर एक रस हो गए हैं।। ४ ।। ३२ ।। ८३ ।। आसा महला ५।। उस प्रभु की अनेक प्रकार से सेवा करनी चाहिए। अपनी आत्मा, प्राण, धन सब कुछ उसके आगे डाल देना चाहिए। अभिमान को त्याग कर उसका पानी भरना चाहिए और उसे पंखा डुलाना चाहिए। इस प्रकार अनेकों बार उस पर बलिहारी जाना चाहिए।। १ ।। सुहागिन वही है जो प्रभु को भा जाती है; हे मेरी माँ, मैं भी ऐसी सुहागिन के संग उस प्रभु-पति से मिलना चाहूँगी।। १ ।। रहाउ ।। मैं प्रभु के दासों की दासी हूँ और उनका पानी भरने वाली हूँ। उनकी चरण-धूलि सदैव मेरे साथ अन्तर्मन में बसती है। यदि माथे पर भाग्यलेख हों तभी उनकी सत्संगत प्राप्त होती है और प्रभु तो केवल यदि उसकी मर्जी हो, तभी मिलता है।। २ ।। अपना जप, तप और सभी संयम मैं उस प्रभु को भेंट कर दूँ। कर्म-धर्म और सभी पूजा-अर्चना उसे अर्पण कर दूँ; अभिमान और मोह तज कर मैं उसकी चरण-धूलि बन जाऊँ और उसके साथ उसके सत्संगियों में प्रभु को अपनी आँखों से देख लूँ।। ३ ।। प्रत्येक क्षण मैं यही आराधना करूँ कि दिन-रात मैं प्रभु की यही सेवा-साधना करता रहूँ। धरती को धारण करने वाला परमात्मा कृपालु हो गया है और हे नानक, साधसंगत ही सब कुछ क्षमा कर देने वाली है।। ४ ।। ३३ ।। ८४ ।। आसा महला ५।। प्रभु से प्रेम करने पर सदैव सुख मिलता है और प्रभु की प्रीति के फलस्वरूप कोई भी दुख नहीं लगता। प्रभु-प्रेम अहंकार के मल को दूर कर देता है और प्रभु की प्रीति सदैव निर्मल बनाए रहती है।। १ ।। हे मित्र, तुम सुन लो कि प्रभु का प्रेम प्यार ऐसा है कि वह प्रेम ही सभी के जीवन, प्राणों और घट-घट का स्थायी आधार है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के प्रेम से हर प्रकार के समस्त खजाने प्राप्त हो जाते हैं और प्रभु की प्रीति से ही हृदय में निर्मल नाम का निवास होता है। प्रभु की प्रीति सदैव शोभा बढ़ाने वाली होती है और प्रभु के प्रेम के कारण ही सभी चिन्ताएं मिट जाती हैं।। २ ।। प्रभु के प्रेम से यह संसार सागर तैरा जाता है और प्रभु की प्रीति से ही यम से भय नहीं लगता। प्रभु का प्रेम ही सबका उद्धार करता है और प्रभु का प्रेम ही मौत के पश्चात् भी साथ चलता रहता है।। ३ ।। स्वयं आप कोई न तो परमात्मा को मिल सकता है और न ही उससे भूला रह सकता है। जिस पर वह कृपा करे उसे वह साधसंगत में अपने साथ मिला लेता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ, तेरा ही बल हे प्रभु, शान्त पुरुषों अर्थात संतों का भी आसरा है।। ४ ।। ३४ ।। ८५ ।। आसा महला ५।। हे जीव, तूने राजा बनकर राज किया और अनेकों प्रकार के अनर्थ करके तूने

विहाझी माइआ ॥ संचत संचत थैली कीन्ही ॥ प्रभि उस ते डारि अवर कउ दीन्ही ॥ १ ॥ काच गगरीआ अंभ मझरीआ ॥ गरबि गरबि उआहू महि परीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ होइओ भइआ निहंगा ॥ चीति न आइओ करता संगा ॥ लसकर जोड़े कीआ संबाहा ॥ निकसिआ फूक त होइ गइओ सुआहा ॥ २ ॥ ऊचे मंदर महल अरु रानी ॥ हसति घोड़े जोड़े मनि भानी ॥ वड परवारु पूत अरु धीआ ॥ मोहि पचे पचि अंधा मूआ ॥ ३ ॥ जिनहि उपाहा तिनहि बिनाहा ॥ रंग रसा जैसे सुपनाहा ॥ सोई मुकता तिसु राजु मालु ॥ नानक दास जिसु खसमु दइआलु ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ८६ ॥ आसा महला ५ ॥ इन्ह सिउ प्रीति करी घनेरी ॥ जउ मिलीऐ तउ वधै वधेरी ॥ गलि चमड़ी जउ छोडै नाही ॥ लागि छुटो सतिगुर की पाई ॥ १ ॥ जग मोहनी हम तिआगि गवाई ॥ निरगुनु मिलिओ वजी वधाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी सुंदरि मन कउ मोहै ॥ बाटि घाटि ग्रिहि बनि बनि जोहै ॥ मनि तनि लागै होइ कै मीठी ॥ गुर प्रसादि मै खोटी डीठी ॥ २ ॥ अगरक उस के वडे ठगाऊ ॥ छोडहि नाही बाप न माऊ ॥ मेली अपने उनि ले बांधे ॥ गुर किरपा ते मै सगले साधे ॥ ३ ॥ अब मोरै मनि भइआ अनंद ॥ भउ चूका टूटे सभि फंद ॥ कहु नानक जा सतिगुरु पाइआ ॥ घरु सगला मै सुखी बसाइआ ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ८७ ॥ आसा महला ५ ॥ आठ पहर निकटि करि जानै ॥ प्रभ का कीआ मीठा मानै ॥ एकु नामु संतन आधारु ॥ होइ रहे सभ की पग छारु ॥ १ ॥ संत रहत सुनहु मेरे भाई ॥ उआ की महिमा कथनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वरतणि जा कै केवल नाम ॥ अनद रूप कीरतनु बिस्राम ॥ मित्र सत्रु जा कै एक समानै ॥ प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥ २ ॥ कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥ दुख दूरि करन जीअ के दातारा ॥ सूरबीर बचन के बली ॥ कउला बपुरी संती छली ॥ ३ ॥ ता का संगु बाछहि सुरदेव ॥ अमोघ दरसु सफल जा की सेव ॥ कर जोड़ि नानकु करे अरदासि ॥ मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ८८ ॥ आसा महला ५ ॥ सगल सूख जपि एकै नाम ॥ सगल धरम हरि के गुण गाम ॥ महा पवित्र

धन-सम्पदा प्राप्त की। तूने संचय करते-करते धन का बहुत संचय किया परन्तु प्रभु ने तुझसे छीन कर वह सब किसी अन्य को दे दिया।। १ ।। यह शरीर रूपी गगरी कच्ची मिट्टी की है और यह मंझधार में पड़ी हुई है। अभिमान कर-कर के यह पुनः उसी मंझधार में गिरती पड़ती है (और नष्ट हो जाती है)।। १ ।। रहाउ।। व्यक्ति बेपरवाह होकर पूर्ण रूप से निर्भय हो गया है। वह इतना निधड़क हो गया है कि उसे उस प्रभु की कभी चित्त में याद ही नहीं आती जो सदैव उसके अंग-संग ही बना रहता है। फौजों को जोड़कर उसने अपने गुट को बहुत बढ़ा लिया है परन्तु जैसे ही उसमें से प्राण वायु रूपी हवा निकल जाती है तो वह राख का ढेर हो जाता है।। २ ।। ऊँचे महल और सुन्दर रानियों, हाथी, घोड़े जो उसके मन को भाने वाले थे उसने एकत्र कर लिए। उसने पुत्र और पुत्रियों वाला बड़ा परिवार प्राप्त कर लिया तथा वह अन्धा प्राणी उन्हीं के मोह में मर-खप गया है।। ३ ।। जिसने उसे उत्पन्न किया था उसी ने उसका विनाश कर दिया है और उसके रंग-रस सभी ऐसे खो गये जैसे कोई सपना था। दास नानक का कथन है कि जिस पर वह मालिक प्रभु दयालु होता है वही मुक्त होता है और वास्तविक राज-माल उसी का होता है।। ४ ।। ३५ ।। ८६ ।। आसा महला ५ ।। इस माया के साथ अधिक प्रीति बढ़ाने से यह जैसे-जैसे मिलती जाती है वैसे वैसे इसकी तृष्णा भी बढ़ती जाती है। यह इस प्रकार गले से आ चिमटती है कि फिर छोड़ती नहीं। केवल सच्चे गुरु के चरणों में लग जने से ही इससे छुटकारा मिलता है।। १ ।। संसार को मोहित करने वाली इस माया को हमने त्याग कर नष्ट कर दिया है। सभी गुणों से परे रहने वाला प्रभु मिल गया है जिससे मेरे अन्तर्मन में बधाई के वाद्य बजने लगे हैं।। १ ।। रहाउ ।। यह मन को मोहने वाली ऐसी सुन्दरी है कि यह रास्ते पर विशेष घाटों पर, घरों पर और वन-वन में व्यक्ति को अपने जाल में फँसाने के लिए ढूँढती रहती है। यह मीठी बनकर व्यक्ति के मन तन से सम्पर्क बना लेती है परन्तु गुरु की कृपा से मैंने इसे इसके खोटे रूप में देख लिया है।। २ ।। उसके आगे-आगे चलने वाले काम, क्रोध आदि उसके नौकर इसके बहुत बड़े ठग हैं जो माँ-बाप आदि तक को भी नहीं छोड़ते। इन विकारों ने तो अपने मेल मिलाप करने वालों को भी बाँध रखा है परन्तु गुरु की कृपा से मैंने सब को अपने काबू में कर लिया है।। ३ ।। अब मेरा मन आनन्दित हो उठा है; मेरा भय चुक गया है और मेरे सभी फन्दे टूट गए हैं। नानक का कथन है कि मैंने जैसे ही सच्चे गुरु को पा लिया तो मेरा सारा घर सुखपूर्वक बसने लगा है।। ४ ।। ३६ ।। ८७ ।। आसा महला ५।। शान्त व्यक्ति सदैव आठों प्रहर प्रभु को अपने पास ही जानता है और प्रभु के किए हुए को मीठा करके मानता है। शान्त पुरुषों का आधार केवल एक प्रभु का नाम ही होता है और वे सब के चरणों की धूलि ही बने रहते हैं।। १ ।। हे मेरे भाई, शान्त पुरुषों के आचरण के बारे में सुनो; उनकी महिमा का कथन नहीं किया जा सकता।। १ ।। रहाउ ।। केवल प्रभु का नाम ही उनका व्यवहार है और उनका विश्राम तथा आराम करना यही है कि वे आनन्दित होकर प्रभु की कीर्ति का गायन करते रहते हैं। उनके लिए मित्र और शत्रु एक समान ही होते हैं और अपने प्रभु के बिना वे अन्य किसी को नहीं जानते।। २ ।। वे करोड़ों पापों को काट देने वाले होते हैं और दुखों को दूर करके जीव को दान देने वाले होते हैं। वे वचन के पक्के और शूरवीर होते हैं और बेचारी माया तो ऐसे संत पुरुषों ने ही छली हुई है अर्थात वश में की हुई है।। ३ ।। देवताओं के सम्राट भी ऐसे शान्त पुरुषों की संगति को मानते है और इनकी की हुई सेवा निष्फल नहीं होती और इनका दर्शन फलदायक होता है। दोनों हाथ जोड़कर नानक अरदास करता है कि हे प्रभु, मुझे गुणों के भण्डार ऐसे संतजनों की सेवा का अवसर दीजिए।। ४ ।। ३७ ।। ८८ ।। आसा महला ५।। केवल एक प्रभु-नाम के सुमिरन से ही सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं और प्रभु के गुणानुवाद में ही सभी धर्म (कर्त्तव्य) निहित् होते हैं। साधु पुरुष की संगति महा पवित्र होती है

साध का संगु ॥ जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥ १ ॥ गुर प्रसादि ओइ आनंद पावै ॥ जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासा ता की गति मिति कहनु न जावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥ बेद पुरान तिनि सिंम्रिति सुनीजा ॥ महा पुनीत जा का निरमल थानु ॥ साधसंगति जा कै हरि हरि नामु ॥ २ ॥ प्रगटिओ सो जनु सगले भवन ॥ पतित पुनीत ता की पग रेन ॥ जा कउ भेटिओ हरि हरि राइ ॥ ता की गति मिति कथनु न जाइ ॥ ३ ॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥ उन साधा का दरसनु पावउ ॥ मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ ॥ नानक आइ पए सरणाइ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ८९ ॥ आसा महला ५ ॥ आठ पहर उदक इसनानी ॥ सद ही भोगु लगाइ सुगिआनी ॥ बिरथा काहू छोडै नाही ॥ बहुरि बहुरि तिसु लागह पाई ॥ १ ॥ सालगिरामु हमारै सेवा ॥ पूजा अरचा बंदन देवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घंटा जा का सुनीऐ चहु कुंट ॥ आसनु जा का सदा बैकुंठ ॥ जा का चवरु सभ ऊपरि झूलै ॥ ता का धूपु सदा परफुलै ॥ २ ॥ घटि घटि संपटु है रे जा का ॥ अभग सभा संगि है साधा ॥ आरती कीरतनु सदा अनंद ॥ महिमा सुंदर सदा बेअंत ॥ ३ ॥ जिसहि परापति तिस ही लहना ॥ संत चरन ओहु आइओ सरना ॥ हाथ चड़िओ हरि सालगिरामु ॥ कहु नानक गुरि कीनो दानु ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ९० ॥ आसा महला ५ पंचपदा ॥ जिह पैडै लूटी पनिहारी ॥ सो मारगु संतन दूरारी ॥ १ ॥ सतिगुर पूरै साचु कहिआ ॥ नाम तेरे की मुकते बीथी जम का मारगु दूरि रहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह लालच जागाती घाट ॥ दूरि रही उह जन ते बाट ॥ २ ॥ जह आवटे बहुत घन साथ ॥ पारब्रहम के संगी साध ॥ ३ ॥ चित्र गुपतु सभ लिखते लेखा ॥ भगत जना कउ द्रिसटि न पेखा ॥ ४ ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ वाजे ता कै अनहद तूरा ॥ ५ ॥ ४० ॥ ९१ ॥ आसा महला ५ दुपदा १ ॥ साधू संगि सिखाइओ नामु ॥ सरब मनोरथ पूरन काम ॥ बुझि गई त्रिसना हरि जसहि अघाने ॥ जपि जपि जीवा सारिगपाने ॥ १ ॥ करन करावन सरनि परिआ ॥ गुर परसादि सहज घरु पाइआ मिटिआ अंधेरा चंदु चड़िआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

क्योंकि उसके मिलाप से प्रभु के प्यार का रंग लग जाता है।। १।। गुरु की कृपा से ऐसा आनन्द मिलता है और पता लग जाता है कि जिसके सुमिरन से मन प्रकाशित हो उठता है उसके ओर-छोर के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।। १ ।। रहाउ।। प्रभु-नाम प्राप्त करने वाले के लिए व्रत, संयम, स्नान, पूजा और वेद-पुराणों तथा स्मृतियों के सुनने का कार्य हो जाता है। साधसंगति में जो प्रभु के नाम का सुमिरन करता है वह वास्तव में महा पवित्र और शुद्ध स्थान का निर्माण कर लेता है अर्थात साधसंगत में बना रहता है।। २ ।। ऐसा सेवक समस्त भुवनों में जाना जाता है और उसकी चरण-धूलि पतितों को भी पवित्र कर देती है। जिन्हें हरि-प्रभु मिल गया है उनकी ऊँची अवस्था की मर्यादा का कथन नहीं किया जा सकता।। ३ ।। मैं आठों प्रहर हाथ जोड़कर आराधना करता हूँ ताकि उन साधु पुरुषों का दर्शन पा सकूँ। मुझ गरीब को हे साधु पुरुषो, अपने साथ में मिला लो क्योंकि नानक आपकी शरण में आन पड़ा है।। ४ ।। ३८ ।। ८६ ।। आसा महला ५ ।। आठों प्रहर जल से स्नान करता और ज्ञानी व्यक्ति अपने इष्ट-देव को भोग लगाता रहता है। वह अपने इष्ट को कभी भी व्यर्थ नहीं बैठा रहने देता और बार-बार उसके चरणों को स्पर्श करता रहता है।। १ ।। हमारे मत में तो सेवा करना ही सालिग्राम है और यह सेवा ही पूजा, अर्चना, वन्दना और देवता को नमस्कार करना है।। १ ।। रहाउ ।। उसके हुकम का घंटा प्रत्येक क्षण सारे संसार में सुनाई देता रहता है और उसका आसन साधसंगत रूपी बैकुण्ठ में सदा ही लगा रहता है। उस प्रभु का चँवर वास्तव में तो वायु रूप में सब पर झूलता रहता है। उसे धूप चन्दन आदि की सुगन्धि के लिए उसके सुन्दर उद्यान सदैव फले-फूले रहते हैं।। २ ।। प्रत्येक हृदय उस प्रभु रूपी सालिग्राम को संभालने वाला कोष है। उसकी सभा भी साधसंगत रूप में अखण्ड भाव से लगी ही रहती है। उसकी प्राकृतिक आरती और कीर्ति का गायन सदैव आनन्द भाव में चलता रहता है। उसकी महिमा सुन्दर है और वह सदा अनन्त रूपों में विद्यमान बना रहता है।। ३ ।। जिसे वह प्राप्त होता है उसी के साथ बना रहता है और शान्त पुरुषों के चरणों की शरण में वह व्यक्ति लगा रहता है। परमात्मा रूपी सालिग्राम ऐसे व्यक्ति के हाथ लग जाता है और नानक का कथन है कि यह सब दान गुरु के माध्यम से ही प्राप्त होता है।। ४ ।। ३९ ।। ९० ।। आसा महला ५।। पंचपदे।। जिस रास्ते पर अर्थात यम के मार्ग पर जीव रूपी पनिहारिन लुट जाती है वह मार्ग संत पुरुषों से दूर ही बना रहता है अर्थात गुरमुख व्यक्ति उस रास्ते पर नहीं जाते।। १ ।। पूर्ण सच्चे गुरु ने सच ही कहा है कि हे प्रभु, तेरे नाम की गली मुक्त एवं विशाल है और यम का मार्ग इससे दूर ही बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। जिस रास्ते पर लोभ की चुंगी-चौकी है तेरा सेवक उस रास्ते से दूर ही रहता है।। २ ।। जहाँ लोगों के संगी-साथियों के झुण्डों को तपाया और दुखी किया जाता है वहाँ साधु-पुरुष परब्रह्म के संगी-साथी होते हैं अर्थात प्रभु उनके अंग-संग बना रहता है।। ३ ।। धर्मराज के लेखाकार चित्रगुप्त सभी हिसाब-किताब लिखते रहते हैं परन्तु भक्तजनों की ओर वे आँख उठाकर भी नहीं देखते।। ४ ।। नानक का कथन है कि जिसका सच्चा गुरु पूर्ण है उसके अन्तर्मन में सदैव अनहद् नाद के वाद्य बजते रहते हैं।। ५ ।। ४० ।। ९१ ।। आसा महला ५।। दुपदा १ ।। साधुपुरुषों की संगति में नाम-सुमिरन का ढंग सीखा जाता है जिससे सभी मनोरथ और कामनाएं पूरी हो जाती हैं। व्यक्ति की तृष्णा समाप्त हो जाती है और हरि के यश में ही वह तृप्त बना रहता है। व्यक्ति अब परमात्मा का सुमिरन करता हुआ ही आध्यात्मिक तौर पर जीवित बना रहता है।। १ ।। उस करने कराने वाले प्रभु की शरण में पड़ने से गुरु की कृपा से व्यक्ति सहज भाव में स्थित हो जाता है और ज्ञान के चन्द्रमा के उदित होने के फलस्वरूप अज्ञान का अन्धकार मिट जाता है।। १ ।। रहाउ।।

लाल जवेहर भरे भंडार ॥ तोटि न आवै जपि निरंकार ॥ अंम्रित सबदु पीवै जनु कोइ ॥ नानक ता की परम गति होइ ॥ २ ॥ ४१ ॥ ९२ ॥ आसा घरु ७ महला ५ ॥ हरि का नामु रिदै नित धिआई ॥ संगी साथी सगल तरांई ॥ १ ॥ गुरु मेरै संगि सदा है नाले ॥ सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा कीआ मीठा लागै ॥ हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥ २ ॥ ४२ ॥ ९३ ॥ आसा महला ५ ॥ साधू संगति तरिआ संसारु ॥ हरि का नामु मनहि आधारु ॥ १ ॥ चरन कमल गुरदेव पिआरे ॥ पूजहि संत हरि प्रीति पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै मसतकि लिखिआ भागु ॥ कहु नानक ता का थिरु सोहागु ॥ २ ॥ ४३ ॥ ९४ ॥ आसा महला ५ ॥ मीठी आगिआ पिर की लागी ॥ सउकनि घर की कंति तिआगी ॥ प्रिअ सोहागनि सीगारि करी ॥ मन मेरे की तपति हरी ॥ १ ॥ भलो भइओ प्रिअ कहिआ मानिआ ॥ सूखु सहजु इसु घर का जानिआ ॥ रहाउ ॥ हउ बंदी प्रिअ खिजमतदार ॥ ओहु अबिनासी अगम अपार ॥ ले पखा प्रिअ झलउ पाए ॥ भागि गए पंच दूत लावे ॥ २ ॥ ना मै कुलु ना सोभावंत ॥ किआ जाना किउ भानी कंत ॥ मोहि अनाथ गरीब निमानी ॥ कंत पकरि हम कीनी रानी ॥ ३ ॥ जब मुखि प्रीतमु साजनु लागा ॥ सूख सहज मेरा धनु सोहागा ॥ कहु नानक मोरी पूरन आसा ॥ सतिगुर मेली प्रभ गुणतासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ९५ ॥ आसा महला ५ ॥ माथै त्रिकुटी द्रिसटि करूरि ॥ बोलै कउड़ा जिहबा की फूड़ि ॥ सदा भूखी पिरु जानै दूरि ॥ १ ॥ ऐसी इसत्री इक रामि उपाई ॥ उनि सभु जगु खाइआ हम गुरि राखे मेरे भाई ॥ रहाउ ॥ पाइ ठगउली सभु जगु जोहिआ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ मोहिआ ॥ गुरमुखि नामि लगे से सोहिआ ॥ २ ॥ वरत नेम करि थाके पुनहचरना ॥ तट तीरथ भवे सभ धरना ॥ से उबरे जि सतिगुर की सरना ॥ ३ ॥ माइआ मोहि सभो जगु बाधा ॥ हउमै पचै मनमुख मूराखा ॥ गुर नानक बाह पकरि हम राखा ॥ ४ ॥ २ ॥ ९६ ॥ आसा महला ५ ॥ सरब दूख जब बिसरहि सुआमी ॥ ईहा ऊहा कामि न प्रानी ॥ १ ॥ संत त्रिपतासे

लालों और जवाहिरातों से भण्डार भर जाते हैं और निराकार प्रभु का जाप करने वाले को किसी किस्म की कमी नहीं आती। शब्द रूपी अमृत का पान कोई प्रभु का सेवक ही करता है और हे नानक, वही परम गति को प्राप्त होता है।। २ ।। ४१ ।। ६२ ।।आसा घरु ७ महला ५ ।। हृदय में सदैव हरि-नाम का सुमिरन करने से सभी संगी-साथी पार उतर जाते हैं।। १ ।। परमात्मा रूपी गुरु सदैव मेरे साथ ही है और हे मेरे मन, सदा चेतनता पूर्वक उसका बार-बार सुमिरन कर।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, तेरा किया हुआ मुझे मीठा लगता है और नानक तुमसे हरि-नाम रूपी पदार्थ की याचना करता है।। २ ।। ४२ ।। ६३ ।। आसा महला ५।। साधु पुरुषों की संगति में ही यह संसार पार उतरता है क्योंकि उस संगति में प्रभु-नाम ही मन का आधार होता है।। १ ।। वहाँ प्यारे गुरुदेव रूपी परमात्मा के चरण-कमलों को ही प्यार किया जाता है। संतजन प्रभु-प्रीति की ही प्रेमपूर्वक पूजा करते हैं।। १ ।। रहाउ।। जिसके माथे पर भाग्य-लेख लिखा है, नानक का कथन है कि उसी जीव-स्त्री का सुहाग स्थिर है।। २ ।। ४३ ।। ६४ ।। आसा महला ५।। जब प्रियतम प्रभु की आज्ञा मीठी लगने लगी तो उस पति प्रभु ने द्वैत-भाव रूपी मेरी सौतन को घर से निकाल बाहर किया है। प्रियतम ने मुझे सुहागिन बनाकर मेरा सिंगार किया है और उसने मेरे मन की पीड़ा को दूर कर लिया है।। १ ।। यह तो अच्छा ही हुआ कि मैने प्रियतम का हुकम मान लिया है और इस प्रकार इस शरीर रूपी घर में बना रहने वाला सुख और सहज भाव मैंने जान लिया है।। १ ।। रहाउ ।। अब मैं दासी उस प्रियतम की सेविका हूँ और वह अविनाशी प्रभु अगम्य एवं अपरंपर है। उसके चरणों में बैठकर मैं उस प्रियतम को पंखा डुलाती हूँ और इस प्रकार काम, क्रोध आदि शत्रु जो मुझे दुख देने वाले थे, यहाँ से पाँचों दूत भाग खड़े हुए हैं।। २ ।। मैं न तो कुलीन हूँ और न ही किसी विशेष शोभा वाली हूँ; मुझे यह भी पता नहीं कि प्रियतम को कैसे अच्छा लगा जाता है। मैं अनाथ, निर्धन और अत्यन्त विनम्र हूँ परन्तु उस प्रभु पति ने मुझे पकड़कर अपनी रानी बना लिया है।। ३ ।। जब मेरा मोह उस साजन प्रियतम के साथ लग गया तो मुझे पति मिलाप वाला और सुहागिन स्त्री वाला सारा सुख सहजभाव में पहुँचकर प्राप्त हो गया है। नानक का कथन है कि मेरी आशाएं पूर्ण हो गयीं और सच्चे गुरु ने मुझे गुणों के भण्डार प्रभु से मिला दिया है।। ४ ।। १ ।। ६५ ।। आसा महला ५।। द्वैतभाव वाली सौतन रूपी माया की दृष्टि बड़ी क्रोध-युक्त है और उसके माथे पर भी टेढ़ापन दृष्टमान हो रहा है। वह बोलती भी कड़वा है और उसकी जीभ भी फूहड़ है। वह सदैव भूखी बनी रहती है और प्रियतम परमात्मा को दूर ही मानती है।। १ ।। प्रभु ने इस प्रकार की एक माया रूपी स्त्री पैदा की है जिसने सारे संसार को खा लिया है परन्तु हे मेरे भाई, गुरु के माध्यम से हमारी रक्षा की गई है।। रहाउ ।। उसने ठग-बूटी से सारे संसार को काबू कर लिया है और ब्रह्मा, विष्णु, महादेव को भी मोहित कर लिया है। गुरमुख बनकर जो प्रभु-नाम में लीन हो गए हैं वास्तव में वे ही यहाँ वहाँ शोभायमान होते है।। २ ।। उस माया में ग्रस्त लोग व्रत, संयम और पापों के प्रायश्चित् के लिए किए गए जप, तप, होम आदि करके तथा सारी धरती के तट तीर्थों पर भटक-भटक कर थक गए हैं। केवल उन्हीं का उद्धार हो सका है जो सच्चे गुरु की शरण में आ गए हैं।। ३ ।। सारा संसार माया के मोह में बँधा हुआ है और मनमुख मूर्ख व्यक्ति अपने अहंकार में ही ख्वार होते रहते हैं। हे नानक, गुरु ने हमारी बाँह पकड़कर हमें बचा लिया है।। ४ ।। २ ।। ६६।। आसा महला ५ ।। जब स्वामी प्रभु भूल जाता है तो सभी प्रकार के दुख आ लगते हैं। ऐसा व्यक्ति यहाँ और वहाँ अर्थात इस लोक और परलोक में किसी काम का नहीं रहता।। १ ।। संत लोग प्रभु का सुमिरन कर कर के

हरि हरि ध्याइ ॥ करि किरपा अपुनै नाइ लाए सरब सूख प्रभ तुमरी रजाइ ॥ रहाउ ॥ संगि होवत कउ जानत दूरि ॥ सो जनु मरता नित नित झूरि ॥ २ ॥ जिनि सभु किछु दीआ तिसु चितवत नाहि ॥ महा बिखिआ महि दिनु रैनि जाहि ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभु सिमरहु एक ॥ गति पाईऐ गुर पूरे टेक ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९७ ॥ आसा महला ५ ॥ नामु जपत मनु तनु सभु हरिआ ॥ कलमल दोख सगल परहरिआ ॥ १ ॥ सोई दिवसु भला मेरे भाई ॥ हरि गुन गाइ परम गति पाई ॥ रहाउ ॥ साध जना के पूजे पैर ॥ मिटे उपद्रह मन ते बैर ॥ २ ॥ गुर पूरे मिलि झगरु चुकाइआ ॥ पंच दूत सभि वसगति आइआ ॥ ३ ॥ जिसु मनि वसिआ हरि का नामु ॥ नानक तिसु ऊपरि कुरबान ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९८ ॥ आसा महला ५ ॥ गावि लेहि तू गावनहारे ॥ जीअ पिंड के प्रान अधारे ॥ जा की सेवा सरब सुख पावहि ॥ अवर काहू पहि बहुड़ि न जावहि ॥ १ ॥ सदा अनंद अनंदी साहिबु गुन निधान नित नित जापीऐ ॥ बलिहारी तिसु संत पिआरे जिसु प्रसादि प्रभु मनि वासीऐ ॥ रहाउ ॥ जा का दानु निखूटै नाही ॥ भली भाति सभ सहजि समाही ॥ जा की बखस न मेटै कोई ॥ मनि वासाईऐ साचा सोई ॥ २ ॥ सगल समग्री ग्रिह जा कै पूरन ॥ प्रभ के सेवक दूख न झूरन ॥ ओटि गही निरभउ पदु पाईऐ ॥ सासि सासि सो गुन निधि गाईऐ ॥ ३ ॥ दूरि न होई कतहू जाईऐ ॥ नदरि करे ता हरि हरि पाईऐ ॥ अरदासि करी पूरे गुर पासि ॥ नानकु मंगै हरि धनु रासि ॥ ४ ॥ ५ ॥ ९९ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे मिटिआ तन का दूख ॥ मन सगल कउ होआ सूखु ॥ करि किरपा गुर दीनो नाउ ॥ बलि बलि तिसु सतिगुर कउ जाउ ॥ १ ॥ गुरु पूरा पाइओ मेरे भाई ॥ रोग सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई ॥ रहाउ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ मन चिंतत सगले फल पाए ॥ अगनि बुझी सभ होई सांति ॥ करि किरपा गुरि कीनी दाति ॥ २ ॥ निथावे कउ गुरि दीनो थानु ॥ निमाने कउ गुरि कीनो मानु ॥ बंधन काटि सेवक करि राखे ॥ अंम्रित बानी रसना चाखे ॥ ३ ॥ वडै भागि पूज गुर चरना ॥ सगल तिआगि

तृप्त हो गए हैं। तुमने कृपा करके उन्हें अपने नाम में लीन कर लिया है और हे प्रभु, तुम्हारी रज़ा में ही सभी प्रकार के सुख विद्यमान रहते हैं।। रहाउ ।। जो व्यक्ति सदा साथ बने रहने वाले प्रभु को दूर जानता है वह सदैव चिन्ता और क्लेष में बना रहकर मरता रहता है।। २ ।। जिसने सब कुछ दिया है व्यक्ति उसको ध्यान में नहीं लाता और माया रूपी महा विष में उसके दिन-रात व्यर्थ चले जाते हैं।। ३ ।। नानक का कथन है कि केवल एक प्रभु का सुमिरन करने से पूर्ण गुरु का आसरा लेकर परम गति प्राप्त होती है।। ४ ।। ३ ।। ६७ ।। आसा महला ५ ।। प्रभु-नाम के जाप से तन, मन अर्थात सम्पूर्ण अस्तित्व हरा-भरा बना रहता है। सभी पाप एवं अवगुण दूर हो गए हैं।। १ ।। हे भाई, वही दिन भला दिन है जिस दिन प्रभु गुण गाते हुए परम गति प्राप्त हो गई है।। रहाउ ।। साधु पुरुषों के चरण पूजने से मन से उपद्रव और शत्रुता की भावना मिट गई है।। २ ।। पूर्ण गुरु से मिलने पर सभी प्रकार का झगड़ा चुक गया है और काम, क्रोध आदि पाँचों दूत वश में आ गए हैं।। ३ ।। जिसके मन में हरि-नाम का निवास हो चुका है नानक उस पर बलिहारी जाता है।। ४ ।। ४ ।। ६८ ।। आसा महला ५।। हे गाने वाले, तू उसके गुणों का गायन कर ले जो जीव और शरीर का प्राण-आधार है। उसकी सेवा से सभी सुख प्राप्त होते हैं और फिर व्यक्ति अन्य किसी के पास नहीं जाता।। १ ।। प्रभु सदैव आनन्दित करने वाला आनन्द स्वरूप और गुणों का खज़ाना है जिसका सदैव सुमिरन किया जाना चाहिए। मैं उस प्यारे शान्त पुरुष पर बलिहारी जाता हूं जिसकी कृपा से प्रभु का मन में निवास होता है।। रहाउ।। उस सच्चे प्रभु को मन में बसाया जाना चाहिए जिसका दिया हुआ दान कभी कम नहीं पड़ता; जिसके कारण सभी सहज-भाव में भली-भाँति स्थित हो जाते हैं और जिसके दिए हुए दान को कोई मिटा नहीं सकता।। २ ।। प्रत्येक श्वास के साथ ऐवे गुणों के भण्डार का गायन किया जाना चाहिए जिसके घर में सभी पदार्थ भरे पड़े हैं; ऐसे प्रभु के सेवक को कभी भी दुख और चिन्ता नहीं होती और उस प्रभु का आसरा ले लेने से निर्भय पद प्राप्त होता है।। ३ ।। कभी भी उससे दूर नहीं जाना चाहिए क्योंकि वह कृपा-दृष्टि करे तो प्रभु की प्राप्ति हो जाती है। पूर्ण गुरु के पास नानक की यही अरदास है कि वह हरि-धन रूपी रास पूँजी की याचना करता है।। ४ ।। ५ ।। ६६ ।। आसा महला ५ ।। पहले तो मेरे तन का दुख मिट गया फिर मेरे सम्पूर्ण मन को सुख और शान्ति प्राप्त हो गई। कृपा करके गुरु ने प्रभु-नाम प्रदान किया है और मैं ऐसे सच्चे-गुरु पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। हे मेरे भाई, मैंने पूर्ण गुरु पा लिया है। सच्चे गुरु की शरण में आने से मेरे रोग, शोक और सभी प्रकार के दुख विनष्ट हो गए हैं।। रहाउ ।। गुरु के चरणों को हृदय में बसाने पर मुझे मनोवांछित सभी फल प्राप्त हो गए हैं। मेरी तृष्णा की अग्नि बुझ गई है और वह शान्त हो गई है। गुरु ने कृपा करके मुझे यह दान दिया है।। २ ।। निराश्रित को गुरु ने स्थान दिया है और सम्मानहीन का गुरु ने सम्मान किया है। सेवक के बन्धनों को काटकर उसकी रक्षा की है। अब मेरी जीभ अमृत रूप वाणी का आनन्द ले रही है।। ३ ।। बड़े भाग्य से ही गुरु के चरणों की वन्दना होती है और जब समस्त विकारों को त्याग दिया जाता है तब

पाई प्रभ सरना ॥ गुरु नानक जा कउ भइआ दइआला ॥ सो जनु होआ सदा निहाला ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०० ॥ आसा महला ५ ॥ सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥ चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥ उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥ माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥ १ ॥ जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥ प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ रहाउ ॥ दसी मासी हुकमि बालक जनमु लीआ ॥ मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ ॥ गुरबाणी सखी अनंदु गावै ॥ साचे साहिब कै मनि भावै ॥ २ ॥ वधी वेलि बहु पीड़ी चाली ॥ धरम कला हरि बंधि बहाली ॥ मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइआ ॥ भए अचिंत एक लिव लाइआ ॥ ३ ॥ जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ॥ बुलाइआ बोलै गुर कै भाणि ॥ गुझी छंनी नाही बात ॥ गुरु नानकु तुठा कीनी दाति ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०१ ॥ आसा महला ५ ॥ गुर पूरे राखिआ दे हाथ ॥ प्रगटु भइआ जन का परतापु ॥ १ ॥ गुरु गुरु जपी गुरू गुरु धिआई ॥ जीअ की अरदासि गुरू पहि पाई ॥ रहाउ ॥ सरनि परे साचे गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक सेव ॥ २ ॥ जीउ पिंडु जोबनु राखै प्रान ॥ कहु नानक गुर कउ कुरबान ॥ ३ ॥ ८ ॥ १०२ ॥

आसा घरु ८ काफी महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मै बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥ १ ॥ माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ॥ बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए ॥ जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ॥ २ ॥ चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईऐ ॥ तुठा साहिबु जो देवै सोई सुखु पाईऐ ॥ ३ ॥ जे लख करम कमाईअहि किछु पवै न बंधा ॥ जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धंधा ॥ ४ ॥ १ ॥ १०३ ॥ आसा महला ५ ॥ सरब सुखा मै भालिआ हरि जेवडु न कोई ॥ गुर तुठे ते पाईऐ सचु साहिबु सोई ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद सद कुरबाना ॥ नामु न विसरउ इकु खिनु चसा इहु कीजै दाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागठु सचा सोइ है जिसु हरि धनु

प्रभु की शरण प्राप्त होती है। हे नानक, जिस पर गुरु दयालु हो जाए वह व्यक्ति सदैव प्रसन्न बना रहता है।। ४ ।। ६।। १०० ।। आसा महला ५।। (इस पद में पुत्र-जन्म की खुशी का दृष्टान्त देकर गुरु की शरण से उत्पन्न एवं प्राप्त सुख का वर्णन किया गया है)। उस सच्चे प्रभु ने सच्चे गुरु (नानक) को संसार में भेजा है। उसके भाग्य के बड़प्पन के कारण अटल आध्यात्मिक जीवन पैदा हुआ है।। जब बच्चा माँ के पेट में निवास करता है तो माँ का मन आनन्द से खिल उठता है।। १ ।। परमात्मा का भक्त (नानक) पुत्र रूप में पैदा हुआ जिससे प्रारम्भ से लिखा हुआ प्रभु का लेख प्रकट हो उठा है।। रहाउ ।। दसवें महीने प्रभु के हुकम में बालक ने जन्म लिया जिससे संसार का शोक समाप्त हो गया है और चारों और महा-आनन्द फैल गया है। सत्संगी सहेलियाँ गुरु की वाणी का गायन करती हैं और आनन्द का अनुभव करती हैं। वे ही सदा स्थिर रहने वाले प्रभु के मन को प्यारी लगती हैं।। २ ।। गुरु के सिक्खों का पीढ़ी दर पीढ़ी विस्तार हुआ है और गुरु के सिक्खों में परमात्मा ने धर्म की वास्तविक शक्ति स्थायी तौर पर टिका दी है। सच्चे गुरु ने ही सब को मनोवांछित फल दिलाए हैं जिससे सेवकजनों ने चिन्ता मुक्त होकर एक प्रभु में ही लौ लगा ली है।। ३ ।। हे भाई, यह कोई लुकी-छिपी बात नहीं है कि गुरु नानक ने दयालु होकर प्रभु नाम का दान दिया है और प्राप्त करने वाला जो कुछ बोलता है गुरु की प्रेरणा से ही बोलता है। वह अपने गुरु पर ऐसे गर्व करता है जैसे कोई पुत्र अपने पिता पर गर्व करता है।। ४ ।। ७ ।। १०१ ।। आसा महला ५।। हे भाई, जिस सेवक को पूर्ण गुरु अपनी छत्र-छाया देकर विकार आदि से बचा लेता है उस सेवक की महिमा सारे संसार में प्रकट हो जाती है।। १ ।। हे भाई, मैं सदा गुरु का ही सुमिरन करता हूँ और सदैव गुरु का ही ध्यान करता हूँ। गुरु के समक्ष अरदास करके ही मैं गुरु से मनोवांछित पदार्थ प्राप्त करता हूँ।। रहाउ ।। जो सेवक सच्चे प्रभु रूपी गुरुदेव का आसरा ले लेते हैं उनकी सेवा पूर्ण हो जाती है।। २ ।। हे नानक, अपना सब कुछ उस गुरु पर बलिहारी कर देना चाहिए जो गुरु शरीर, प्राण और यौवन आदि की रक्षा करता है ।। ३ ।। ८ ।। १०२ ।।

आसा घरु ८ काफी महला ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

हे मेरे सच्चे प्रभु, मैं तुम्हारा खरीदा हुआ गुलाम हूँ। मेरा शरीर और प्राण तेरे हैं और मेरा सब कुछ तेरा ही है।।१।। सम्मानविहीन का तू ही सम्मान है, हे मालिक, मुझे तेरा ही भरोसा है। बिना सच्चे प्रभु के अन्य जो भी और आधार हैं उन्हें सब कच्चा जानना चाहिए।। १ ।। रहाउ।। तेरा हुकम (विधान) अपरंपर है जिसका कोई ओर-छोर नहीं जान पाता। जिसे पूर्ण गुरु मिल जाएगा वही तेरी रज़ा में चलेगा।। २ ।। चतुराईयाँ और चालाकियां किसी काम नहीं आती तथा प्रसन्न होकर प्रभु जो देता है उसी में ही सुख मिलता है।। ३ ।। लाखों कर्मकाण्ड करने पर भी तृष्णाएं रुकती नहीं। दास नानक ने तो अन्य सभी प्रपंचों को छोड़कर केवल नाम को ही आधार बना लिया है।। ४ ।। १ ।। १०३ ।। आसा महला ५ ।। सभी सुखों को मैंने खोज लिया है परन्तु परमात्मा जैसा सुख कोई भी नहीं है। गुरु के प्रसन्न होने पर ही सच्चा साहिब प्रभु प्राप्त होता है।। १ ।। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और सदैव क़ुर्बान होता रहता हूँ। हे प्रभु, मुझे यह दान दो कि मुझे एक क्षण एवं निमेष के लिए भी प्रभु-नाम विस्मृत न हो।। १ ।। रहाउ ।। वही भाग्यशाली और सच्चा है

अंतरि ॥ सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि ॥ २ ॥ गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत सरु ॥ ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥ ३ ॥ नामु धिआवहु सद सदा हरि हरि मनु रंगे ॥ जीउ प्राण धनु गुरू है नानक कै संगे ॥ ४ ॥ २ ॥ १०४ ॥ आसा महला ५ ॥ साई अलखु अपारु भोरी मनि वसै ॥ दूखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु नसै ॥ १ ॥ हउ वंञा कुरबाणु साई आपणे ॥ होवै अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिंदक गाल्हि सुणी सचे तिसु धणी ॥ सूखी हूं सुखु पाइ माइ न कीम गणी ॥ २ ॥ नैण पसंदो सोइ पेखि मुसताक भई ॥ मै निरगुणि मेरी माइ आपि लड़ि लाइ लई ॥ ३ ॥ बेद कतेब संसार हभा हूं बाहरा ॥ नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १०५ ॥ आसा महला ५ ॥ लाख भगत आराधहि जपते पीउ पीउ ॥ कवन जुगति मेलावउ निरगुण बिखई जीउ ॥ १ ॥ तेरी टेक गोविंद गुपाल दइआल प्रभ ॥ तूं सभना के नाथ तेरी स्रिसटि सभ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सहाई संत पेखहि सदा हजूरि ॥ नाम बिहूनड़िआ से मरन्हि विसूरि विसूरि ॥ २ ॥ दास दासतण भाइ मिटिआ तिना गउणु ॥ विसरिआ जिन्हा नामु तिनाड़ा हालु कउणु ॥ ३ ॥ जैसे पसु हर्हिआउ तैसा संसारु सभ ॥ नानक बंधन काटि मिलावहु आपि प्रभ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १०६ ॥ आसा महला ५ ॥ हभे थोक विसारि हिको खिआलु करि ॥ झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥ १ ॥ आठ पहर सालाहि सिरजनहार तूं ॥ जीवां तेरी दाति किरपा करहु मूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई कंमु कमाइ जितु मुखु उजला ॥ सोई लगै सचि जिसु तूं देहि अला ॥ २ ॥ जो न ढहंदो मूलि सो घरु रासि करि ॥ हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥ ३ ॥ तिन्हा पिआरा रामु जो प्रभ भाणिआ ॥ गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १०७ ॥ आसा महला ५ ॥ जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ ॥ भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ ॥ १ ॥ मनु तनु होइ निहालु तुम्ह संगि भेटिआ ॥ सुखु पाइआ जन परसादि दुखु सभु मेटिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते खंड ब्रहमंड उधारे तिंन्ह खे ॥ जिन्ह मनि वुठा आपि पूरे भगत से ॥ २ ॥

जिसके अन्दर प्रभु रूपी धन है। जो निरन्तर गुरु के शब्द को जीवन में उतारने का आचरण बनाता है वह माया के महा-जाल से छूट जाता है।। २ ।। गुरु की महिमा का क्या कथन किया जाए गुरु तो विवेक बुद्धि का सच्चा सरोवर है। वह युगों के आदि समय से और युगों युगों में पूर्ण परमेश्वर स्वयं ही है।। ३ ।। प्रभु के नाम का सुमिरन प्रभु के नाम में मन को रंगकर किया जाना चाहिए। नानक के साथ तो उसके जीव और प्राण का स्वामी गुरु विद्यमान है।। ४ ।। २ ।। १०४ ।। आसा महला ५।। हे मेरी माँ, यदि वह अलख अपरंपर प्रभु थोड़ा सा भी मेरे मन में बस जाए तो मेरे दुख दर्द और सभी रोग भाग जाएंगे।। १ ।। मैं अपने मालिक पर कुर्बान जाती हूँ। मन-तन से उसका जाप करके बहुत ही आनन्द प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ ।। मैंने उस सच्चे मालिक की थोड़ी सी ही बात सुनी है और हे मेरी माँ, मैंने इस प्रकार का सुख ही सुख पा लिया है जिसकी कीमत नहीं आंकी जा सकती।। २ ।। आँखों को अच्छा लगने वाले उस प्रभु को देखकर मैं मोहित हो गयी हूँ। हे माँ, मैं गुण-विहीन हूँ परन्तु उसने स्वयं मुझे अपना पल्लू पकड़ा दिया है।। ३ ।। वेद, कतेब और सारे संसार से वह प्रभु अलग ही है। वह केवल इन पुस्तकों और स्थानों में न होकर नानक का ऐसा हृदय-सम्राट है जो सब ओर प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता रहता है।। ४ ।। ३ ।। १०५ ।। आसा महला ५।। लाखों भक्त-जन उसे प्रिय-प्रिय कहकर उसका जाप करते रहते हैं। हे प्रभु, मुझ गुण-विहीन विषयी व्यक्ति को किस युक्ति से अपने साथ मिलाओगे। हे गोबिन्द गोपाल दयालु प्रभु, मुझे केवल एक तेरा ही आसरा है। तू सबका नाथ है और यह सारी सृष्टि तेरी ही है।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, तू सन्तों का सदैव सहायक है और वे सदैव तुम्हें अपने आस-पास प्रत्यक्ष देखते हैं। जो प्रभु-नाम से विहीन हो गए हैं वे सिसकते हुए मर जाते हैं।। २ ।। जिनके मन में सेवक भाव पैदा हो गया है उनका आवागमन मिट गया है परन्तु जिन्हें प्रभु-नाम भूल गया है उनका भला क्या हाल होगा।। ३।। जैसे बेगाने खेत में हरियाली खाने के लिए पशु घुस जाता है और मारा पीटा तथा बाँधा जाता है वैसे ही जीवात्मा के लिए यह संसार है जिसमें वह लालच करती है और दुखी होती है। हे प्रभु, नानक के बन्धन काटकर उसे अपने आप से मिला लो।। ४ ।। ४ ।। १०६ ।। आसा महला ५।। सभी चीज़ों को छोड़ दे और हे जीव, तू केवल एक का ही ध्यान कर। आठों प्रहर तू उस सृजनहार प्रभु का गुणानुवाद कर। हे प्रभु, मैं तो तेरे दान पर ही जीवित बना हुआ हूँ; तू मुझ पर कृपा कर।। १ ।। रहाउ।। हे प्राणी, तू वही कर्म कर जिसमें तेरा मुख उज्जवल बना रहे। हे प्रभु, जिसे तू सत्य का दान देता है वही सत्य में लीन हो जाता है।। २ ।। तू उस घर को अपनी पूँजी बना और उसमें निवास कर जो कभी भी नष्ट नहीं होता। तू केवल एक प्रभु को ही चित्त में बसा ले जो कभी भी मरता नही।। ३ ।। जो प्रभु को अच्छे लगते हैं उन्हें राम का नाम प्यारा लगता है। गुरु की कृपा से नानक ने उस अकथनीय प्रभु का बखान किया है।। ४ ।। ५ ।। १०७ ।। आसा महला ५ ।। वे कैसे लोग हैं जिन्हे प्रभु का नाम विस्मृत नहीं होता। उनमें और प्रभु में ज़रा सा भी भेद मत समझो क्योंकि वे प्रभु जैसे भी होते है।। १ ।। हे प्रभु, तुम्हारे मिलाप के बाद मन और तन आनन्दित हो जाता है। प्रभु के सेवक ने प्रभु के प्रसाद रूप में सुख प्राप्त किया है और सारा दुख मिटा दिया है।। १ ।। रहाउ ।। तेरे भक्तों ने जितने भी खण्ड ब्रह्माण्ड हैं उनका उद्धार कर दिया है और पूर्ण भक्त वे ही हैं जिनके मन में प्रभु स्वयं निवास करता है।। २।।

जिस नो मंने आपि सोई मानीऐ ॥ प्रगट पुरखु परवाणु सभ ठाई जानीऐ ॥ ३ ॥ दिनसु रैणि आराधि सम्हाले साह साह ॥ नानक की लोचा पूरि सचे पातिसाह ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०८ ॥ आसा महला ५ ॥ पूरि रहिआ स्रब ठाइ हमारा खसमु सोइ ॥ एकु साहिबु सिरि छतु दूजा नाहि कोइ ॥ १ ॥ जिउ भावै तिउ राखु राखणहारिआ ॥ तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपाले प्रभु आपि घटि घटि सारीऐ ॥ जिसु मनि वुठा आपि तिसु न विसारीऐ ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपि आपण भाणिआ ॥ भगता का सहाई जुगि जुगि जाणिआ ॥ ३ ॥ जपि जपि हरि का नामु कदे न झूरीऐ ॥ नानक दरस पिआस लोचा पूरीऐ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०९ ॥ आसा महला ५ ॥ किआ सोवहि नामु विसारि गाफल गहिलिआ ॥ कितीं इतु दरीआइ वंञन्हि वहदिआ ॥ १ ॥ बोहिथड़ा हरि चरण मन चड़ि लंघीऐ ॥ आठ पहर गुण गाइ साधू संगीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भोगहि भोग अनेक विणु नावै सुंञिआ ॥ हरि की भगति बिना मरि मरि रुंनिआ ॥ २ ॥ कपड़ भोग सुगंध तनि मरदन मालणा ॥ बिनु सिमरन तनु छारु सरपर चालणा ॥ ३ ॥ महा बिखमु संसारु विरलै पेखिआ ॥ छूटनु हरि की सरणि लेखु नानक लेखिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ११० ॥ आसा महला ५ ॥ कोइ न किस ही संगि काहे गरबीऐ ॥ एकु नामु आधारु भउजलु तरबीऐ ॥ १ ॥ मै गरीब सचु टेक तूं मेरे सतिगुर पूरे ॥ देखि तुम्हारा दरसनो मेरा मनु धीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु जंजालु काजि न कितै गनुो ॥ हरि कीरतनु आधारु निहचलु एहु धनुो ॥ २ ॥ जेते माइआ रंग तेत पछाविआ ॥ सुख का नामु निधानु गुरमुखि गाविआ ॥ ३ ॥ सचा गुणी निधानु तूं प्रभ गहिर गंभीरे ॥ आस भरोसा खसम का नानक के जीअरे ॥ ४ ॥ ९ ॥ १११ ॥ आसा महला ५ ॥ जिसु सिमरत दुखु जाइ सहज सुखु पाईऐ ॥ रैणि दिनसु कर जोड़ि हरि हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ नानक का प्रभु सोइ जिस का सभु कोइ ॥ सरब रहिआ भरपूरि सचा सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि संगि सहाई गिआन जोगु ॥ तिसहि अराधि मना बिनासै सगल रोगु ॥ २ ॥ राखनहारु अपारु राखै अगनि

हे प्रभु, जिसे तू स्वीकृत करता है केवल वही सम्मानित माना जाता है। ऐसा व्यक्ति प्रकट रूप से स्वीकृत होता है और उसे सब स्थानों पर जाना जाता है। हे प्रभु, तू नानक की यह इच्छा पूर्ण कर दे कि वह दिन-रात प्रत्येक श्वास के साथ तेरा चिन्तन और सुमिरन करता रहे।। ४ ।। ६ ।। १०८ ।। आसा महला ५ ।। मेरा मालिक सभी स्थानों में व्याप्त है। केवल उसी एक साहिब के सिर पर छत्र है क्योंकि अन्य कोई है ही नहीं।। १ ।। हे रक्षा करने वाले प्रभु, जैसे भी हो मेरी रक्षा कर। तेरे बिना मैंने अपनी दृष्टि से किसी भी अन्य को नहीं देखा है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु स्वयं सब का पालन करता है और सब के हृदय को सम्भालता है। जिसके हृदय में हे प्रभु, तू स्वयं निवास करता है तू उसे कभी भी नहीं भूलता।। २ ।। वह जो कुछ भी करता है वही करता है जो उसे भाता है। प्रभु सभी युगों में अपने भक्तों की सहायता करने वाले के रूप में जाना जाता है।। ३ ।। प्रभु के नाम का बार-बार सुमिरन करने से कभी भी चिन्ता में नहीं बना रहना पड़ता। हे प्रभु, नानक को तेरे दर्शन की प्यास है तू उसकी इच्छा पूरी कर दे।। ४ ।। ७ ।। १०६ ।। आसा महला ५ ।। हे लापरवाह और बेख़बर प्राणी, तू प्रभु-नाम को भुला कर क्यों सोया पड़ा है। कितने ही लोग जीवन रूपी इस नदी में बहते चले जा रहे हैं।। १ ।। प्रभु के चरणों का जहाज पकड़ कर ही संसार सागर से पार हुआ जाता है। हे मन, तू साधु संगति में आठों प्रहर प्रभु के गुणों का गायन करता रह।। १ ।। रहाउ ।। तू अनेक भोगों को भोगता है परन्तु प्रभु-नाम के बिना वे सब खाली और खोखले हैं। प्रभु की भक्ति के बिना तू मरता रहेगा और रोता रहेगा।। २ ।। तुम वस्त्र पहनते हो, खाते पीते हो, तन पर सुगन्धि और इत्र इत्यादि लगाते हो परन्तु प्रभु सुमिरन के बिना तेरा शरीर राख हो जाएगा और निश्चित् रूप से तुझे यहाँ से जाना ही पड़ेगा।। ३ ।। यह किसी बिरले व्यक्ति ने ही जाना है कि यह संसार महा विषम और भयंकर है। केवल प्रभु की शरण में आने पर ही यहाँ से छूटना सम्भव है। हे नानक, यही लेख व्यक्ति के लिए लिखा गया है।। ४ ।। ८ ।। ११० ।। आसा महला ५ ।। तू क्यों अभिमान करता है क्योंकि यहाँ तो कोई भी किसी के साथ नहीं है। केवल एक प्रभु-नाम को आधार बना कर ही संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है।। १ ।। हे मेरे पूर्ण सत्गुरु, मुझ गरीब का सच्चा आसरा तो तू ही है। तेरा दर्शन करके मेरे मन को साहस और धैर्य प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ ।। राज, धन-दौलत और कामों के जंजाल किसी भी गिनती में नहीं आते। प्रभु का गुणानुवाद ही मेरा पक्का आधार है और यही मेरी अटल सम्पत्ति है।। २ ।। धन-सम्पदा के जितने भी रंग और आनन्द हैं वे सभी परछाईं की तरह है। प्रभु का नाम ही सुख का खज़ाना है और गुरमुख व्यक्ति केवल उसी का गुणानुवाद करते हैं।। ३ ।। सत्य प्रभु गुणों का भण्डार है और हे प्रभु, तुम बहुत ही गहरे और गम्भीर हो। नानक के मन में तो केवल एक स्वामी प्रभु की ही आस और विश्वास है।। ४ ।। ६ ।। १११ ।। आसा महला ५।। जिसके सुमिरन से दुख चला जाता है और सहज सुख प्राप्त हो जाता है उसी प्रभु का हाथ जोड़कर दिन-रात सुमिरन किया जाना चाहिए।। १ ।। नानक का तो वही स्वामी है जिसका यह सारा कुछ अपनी सम्पदा है। वह सच्चे व्यक्तियों का भी सत्य है और वही सर्वत्र व्याप्त बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। अन्दर और बाहर वह सदैव साथ बना रहता है, सहायता करने वाला है और जानने योग्य है। हे मेरे मन, तू उसकी आराधना कर क्योंकि वही सभी दुखों को नष्ट करता है।। २ ।। वह अपरंपर प्रभु ही रक्षा करने वाला है और व्यक्ति को वह अग्नि में भी बचा लेता है।

माहि ॥ सीतलु हरि हरि नामु सिमरत तपति जाइ ॥ ३ ॥ सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा ॥ कारज सगले सिधि भए भेटिआ गुरु पूरा ॥ ४ ॥ १० ॥ ११२ ॥ आसा महला ५ ॥ गोबिंदु गुणी निधानु गुरमुखि जाणीऐ ॥ होइ क्रिपालु दइआलु हरि रंगु माणीऐ ॥ १ ॥ आवहु संत मिलाह हरि कथा कहाणीआ ॥ अनदिनु सिमरह नामु तजि लाज लोकाणीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपि जपि जीवा नामु होवै अनदु घणा ॥ मिथिआ मोहु संसारु झूठा विणसणा ॥ २ ॥ चरण कमल संगि नेहु किनै विरलै लाइआ ॥ धंनु सुहावा मुखु जिनि हरि धिआइआ ॥ ३ ॥ जनम मरण दुख काल सिमरत मिटि जावई ॥ नानक कै सुखु सोइ जो प्रभ भावई ॥ ४ ॥ ११ ॥ ११३ ॥ आसा महला ५ ॥ आवहु मीत इकत्र होइ रस कस सभि भुंचह ॥ अंम्रित नामु हरि हरि जपह मिलि पापा मुंचह ॥ १ ॥ ततु वीचारहु संत जनहु ता ते बिघनु न लागै ॥ खीन भए सभि तसकरा गुरमुखि जनु जागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुधि गरीबी खरचु लैहु हउमै बिखु जारहु ॥ साचा हटु पूरा सउदा वखरु नामु वापारहु ॥ २ ॥ जीउ पिंडु धनु अरपिआ सेई पतिवंते ॥ आपनड़े प्रभ भाणिआ नित केल करंते ॥ ३ ॥ दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ॥ राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥ ४ ॥ १२ ॥ ११४ ॥ आसा महला ५ ॥ उदमु कीआ कराइआ आरंभु रचाइआ ॥ नामु जपे जपि जीवणा गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ १ ॥ पाइ परह सतिगुरू कै जिनि भरमु बिदारिआ ॥ करि किरपा प्रभि आपणी सचु साजि सवारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु गहि लीने आपणे सचु हुकमि रजाई ॥ जो प्रभि दिती दाति सा पूरन वडिआई ॥ २ ॥ सदा सदा गुण गाईअहि जपि नामु मुरारी ॥ नेमु निबाहिओ सतिगुरू प्रभि किरपा धारी ॥ ३ ॥ नामु धनु गुण गाउ लाभु पूरै गुरि दिता ॥ वणजारे संत नानका प्रभु साहु अमिता ॥ ४ ॥ १३ ॥ ११५ ॥ आसा महला ५ ॥ जा का ठाकुरु तुही प्रभ ता के वडभागा ॥ ओहु सुहेला सद सुखी सभु भ्रमु भउ भागा ॥ १ ॥ हम चाकर गोबिंद के ठाकुरु मेरा भारा ॥ करन करावन सगल बिधि सो सतिगुरू हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजा नाही अउरु को ता का भउ

प्रभु का नाम अत्यन्त शीतल है जिसके सुमिरन से जलन समाप्त हो जाती है।। ३ ।। हे नानक, सेवक के चरणों की धूलि बनने वाले को बहुत सा सुख सहज-भाव और आनन्द प्राप्त होता है। जिसका पूर्ण गुरु से मिलाप हो गया है उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।। ४ ।। १० ।। ११२ ।। आसा महला ५।। सृष्टि का स्वामी प्रभु, गुणों का खज़ाना है और गुरमुख बनकर ही उसे जाना जाता है। गुरमुख पर जब वह कृपालु प्रभु दयालु हो जाता है तो प्रभु की प्रीति का आनन्द भोगा जाता है।। १ ।। हे शान्त पुरुषो, आओ और मिलकर प्रभु की कथा-कहानियां कहें। लोक-लाज को छोड़कर आओ और दिन-रात प्रभु-नाम का सुमिरन करें।। १ ।। रहाउ ।। मैं प्रभु के नाम का जाप करके ही जीवित बना रहता हूँ और मुझे बहुत ही आनन्द प्राप्त होता है। यह संसार का मोह झूठा है और इसीलिए यह शीघ्र ही विनष्ट हो जाता है।। २ ।। कोई बिरला व्यक्ति ही प्रभु के चरण कमलों के साथ स्नेह बढ़ाता है। वह मुख सुहावना है और धन्य है जो प्रभु-नाम का सुमिरन करता है।। ३ ।। काल और जन्म-मरण का दुख प्रभु के सुमिरन से मिट जाता है। नानक के लिए तो वही सुख है जो प्रभु को अच्छा लगता है।। ४ ।। ११ ।। ११३ ।। आसा महला ५ ।। हे मित्रों, आओ सभी इकट्ठे होकर सभी स्वादों का आनन्द लिया जाए। आओ सभी मिलकर प्रभु के अमृत रूपी नाम का जाप किया जाए और अपने पापों को उखाड़ फेंका जाए।। १ ।। हे शान्त पुरुषो, उस परम तत्व का चिन्तन करो जिससे तुमको कोई भी विघ्न नहीं लगेगा। नाम-सुमिरन से सभी विकार रूपी चोर कमज़ोर हो जाते हैं क्योंकि गुरमुख बनकर प्रभु के सेवक सदैव चेतन बने रहते हैं।। १ ।। रहाउ ।। विवेक-बुद्धि और नम्रता को इस जीवन यात्रा में खर्च के लिए अपने पास रखो और अहंकार रूपी विष को जला डालो। तुम्हारी दुकान भी सच्ची मानी जाएगी और उसमें पड़ा हुआ सौदा भी सच्चा माना जाएगा यदि प्रभु-नाम का लेन-देन तुम करते रहोगे।। २ ।। जिन्होंने अपना शरीर, प्राण और धन-सम्पत्ति उस प्रभु को अर्पण कर दी है वही सम्मानित बने रहते है।। ३ ।। जो दुर्मति रूपी मद्य को पीते हैं वे व्यभिचारिणी स्त्री के पति की तरह देखे और समझे जाते हैं। जो प्रभु-नाम के रसायन को पीने में व्यस्त हैं, हे नानक, वे वास्तविक रूप से नशा करने वाले हैं।। ४ ।। १२ ।। ११४ ।। आसा महला ५ ।। गुरु का कराया हुआ उद्यम मैंने किया और आध्यात्मिक जीवन के आरम्भ की नींव रखी। गुरु ने मुझे यही मन्त्र पक्का किया कि केवल नाम का सुमिरन करके ही आध्यात्मिक तौर पर जीवित बने रहना है।। १ ।। मैं सच्चे गुरु के चरणों में पड़ता हूँ जिसने मेरा भ्रम नष्ट कर दिया है। अपनी कृपा करके प्रभु-नाम को सत्य के साथ सुशोभित कर दिया है।। १ ।। रहाउ ।। मुझे सत्य और हुकम के अन्तर्गत अपना काम चलाने के लिए प्रभु ने हाथ पकड़कर अपना बना लिया है। प्रभु ने जो दान मुझे दिया है वही मेरे लिए पूर्ण सम्मान है।। २ ।। प्रभु के नाम का जाप कर और सदा उसका गुणानुवाद कर। प्रभु ने कृपा की और सच्चे गुरु के माध्यम से मेरा प्रण पूरा हो गया।। ३ ।। पूर्ण गुरु ने मुझे प्रभु-नाम का धन और प्रभु के गुणानुवाद का लाभ प्रदान किया है। हे नानक, साधु पुरुष छोटे व्यापारी हैं और अनन्त स्वामी प्रभु उनका साहूकार है।। ४ ।। १३ ।। ११५।। आसा महला ५ ।। हे प्रभु, जिसका तू स्वामी है वह बड़ा भाग्यशाली है। वह सदैव ही सुखी और प्रसन्न रहता है और उसके सभी भ्रम और भय भाग खड़े होते हैं।। १ ।। मेरा मालिक बहुत बड़ा है और हम उस प्रभु के नौकर हैं। मेरा सच्चा गुरु

करीऐ ॥ गुर सेवा महलु पाईऐ जगु दुतरु तरीऐ ॥ २ ॥ द्रिसटि तेरी सुखु पाईऐ मन माहि निधाना ॥ जा कउ तुम किरपाल भए सेवक से परवाना ॥ ३ ॥ अंम्रित रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै ॥ वजहु नानक मिलै एकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥ ४ ॥ १४ ॥ ११६ ॥ आसा महला ५ ॥ जा प्रभ की हउ चेरुली सो सभ ते ऊचा ॥ सभु किछु ता का कांढीऐ थोरा अरु मूचा ॥ १ ॥ जीअ प्रान मेरा धनो साहिब की मनीआ ॥ नामि जिसै कै ऊजली तिसु दासी गनीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेपरवाहु अनंद मै नाउ माणक हीरा ॥ रजी धाई सदा सुखु जा का तूं मीरा ॥ २ ॥ सखी सहेरी संग की सुमति द्रिड़ावउ ॥ सेवहु साधू भाउ करि तउ निधि हरि पावउ ॥ ३ ॥ सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा ॥ जिसहि सीगारे नानका तिसु सुखहि बसेरा ॥ ४ ॥ १५ ॥ ११७ ॥ आसा महला ५ ॥ संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखु री ॥ सगल गुणा गुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥ १ ॥ इहु मनु सुंदरि आपणा हरि नामि मजीठै रंगि री ॥ तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री ॥ दूजा भाउ विसारीऐ एहु तंबोला खाइ री ॥ २ ॥ गुर का सबदु करि दीपको इह सत की सेज बिछाइ री ॥ आठ पहर कर जोड़ि रहु तउ भेटै हरि राइ री ॥ ३ ॥ तिस ही चजु सीगारु सभु साई रूपि अपारि री ॥ साई सोहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥ ४ ॥ १६ ॥ ११८ ॥ आसा महला ५ ॥ डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा ॥ भ्रम काटे गुरि आपणै पाए बिसरामा ॥ १ ॥ ओइ बिखादी दोखीआ ते गुर ते हूटे ॥ हम छूटे अब उन्हा ते ओइ हम ते छूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा तेरा जानता तब ही ते बंधा ॥ गुरि काटी अगिआनता तब छुटके फंधा ॥ २ ॥ जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखीआ ॥ गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते सुखीआ ॥ ३ ॥ ना को दुसमनु दोखीआ नाही को मंदा ॥ गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बंदा ॥ ४ ॥ १७ ॥ ११९ ॥ आसा महला ५ ॥ सूख सहज आनदु घणा हरि कीरतनु गाउ ॥ गरह निवारे सतिगुरू दे अपणा नाउ ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे

वही है जो सब कुछ कराने की विधि को जानता है।। १ ।। रहाउ ।। दूसरा अन्य कोई है ही नहीं जिसका भय माना जाए। गुरु की सेवा से ही प्रभु के स्थान के दर्शन होते हैं और विषम संसार-सागर से पार हुआ जाता है।। २ ।। तेरी कृपादृष्टि से ही सुख प्राप्त होता है और मन में नाम का भण्डार स्थित हो जाता है। जिस पर तुम कृपालु हो जाते हो, हे प्रभु, वह सेवक स्वीकृत हो जाता है।। ३ ।। प्रभु का कीर्तन अमृत-रस के समान है जिसे कोई बिरला ही पीता है। हे नानक, ऐसे व्यक्ति को एक प्रभु-नाम की जीविका प्राप्त होती है और वह चित्त में प्रभु का जाप करता हुआ ही जीवित बना रहता है।। ४ ।। १४ ।। ११६ ।। आसा महला ५।। जिस प्रभु की मैं दासी हूँ वह सबसे ऊँचा है। छोटा और बड़ा सब उसी का कहा जाता है।। १ ।। मेरी आत्मा, प्राण और धन-दौलत आदि सब कुछ उस प्रभु का ही माना जाता है। मैं जिस के नाम के कारण निर्मल हुई हूँ मुझे उसी की दासी के रूप में जाना जाता है।। १ ।। रहाउ ।। तू बेपरवाह और आनन्द स्वरूप है तथा तेरा नाम माणिक और हीरे के समान है। जिसका तू मालिक है हे प्रभु, वह सदैव तृप्त और सुखी बनी रहती है।। २ ।। हे मेरी सखी सहेलियो अर्थात सत्संगियो, मुझे अच्छी मति दो ताकि मैं प्रेमपूर्वक साधु पुरुषों की सेवा करूँ और प्रभु रूपी भण्डार को पा सकूँ।। ३ ।। उस ठाकुर की तो सभी दासियां है और सभी कहती हैं कि वह मेरा स्वामी है। हे नानक, जिसका सिंगार प्रभु स्वयं करता है वही सुखपूर्वक बसती है।। ४ ।। १५ ।। ११७ ।। आसा महला ५ ।। शान्त पुरुषों की तू दासी हो जा और इस प्रकार के आचरण की सीख को ग्रहण कर समस्त गुणों में से उत्तम गुण यह ही है कि तू अपने पति -प्रभु को दूर मत देख।। १ ।। अपने सुन्दर मन को तू प्रभु-नाम के मजीठ रंग में रंग ले। तू चतुराई और अपने सयानेपन को त्याग कर प्रभु को सदैव अपने साथ ही देख।। १ ।। रहाउ ।। जो पति-प्रभु कहे उसी प्रकार का सिंगार कर। द्वैतभाव को भुलाने वाला तू पान चबाना सीख ले।। २ ।। तू शब्द-गुरु को दीपक बना ले और सच्चाई की सेज को बिछा ले। आठों प्रहर हाथ जोड़ कर यदि तू खड़ी रहेगी तो तुझे प्रभु-पति मिल सकेगा।। ३ ।। हे नानक, जो कर्ता-प्रभु को अच्छी लगती है वही सुहागिन है; उसे ही सब युक्तियां और सिंगार का रहस्य पता है और वह ही अपार रूप वाली है।। ४ ।। १ ।। ११८ ।। आसा महला ५ ।। डावाँडोल होना और भटकना तभी तक है जब तक मन भ्रमों से भरा हुआ है। जब गुरु ने मेरे भ्रम काट दिए हैं तो मुझे शान्ति प्राप्त हो गई तथा मेरा आना-जाना समाप्त हो गया है।। १ ।। मेरे शत्रु और दोस्त दिखने वाले अब गुरु की कृपा से मेरा पीछा छोड़ गए हैं। मैं अब उनसे मुक्त हो गया हूँ और वे मुझे अब छोड़ गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। जब तक व्यक्ति मेरा तेरा का भाव बनाए रखता है तब तक वह बन्धनों में बँधा रहता है। गुरु ने जब मेरा अज्ञान दूर कर दिया तब मेरे चारों ओर पड़ा हुआ फन्दा नष्ट हो गया।। २ ।। व्यक्ति जब तक प्रभु के हुकम के मर्म को नहीं जान पाता तब तक ही दुखी बना रहता है। गुरु से मिलकर जब वह प्रभु के हुकम को पहचान जाता है तभी वह आनन्दपूर्ण हो जाता है।। ३ ।। मेरा कोई भी शत्रु और बुरा चाहने वाला नहीं है तथा न ही कोई व्यक्ति बुरा है। हे नानक, जो गुरु की सेवा करता है वही उस स्वामी का सेवक जाना जाता है।। ४ ।। १७ ।। ११९ ।। आसा महला ५।। हे जीव, प्रभु का गुणानुवाद कर, तुझे सहज सुख और अत्यधिक आनन्द प्राप्त होगा। सच्चा गुरु परमात्मा अपने नाम का दान देकर सभी ग्रहों का निवारण कर देता है। मैं अपने गुरु पर

सद सद बलि जाउ ॥ गुरू विटहु हउ वारिआ जिसु मिलि सचु सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै ॥ तिसु जमु नेड़ि न आवई जो हरि प्रभि भावै ॥ २ ॥ पुंन दान जप तप जेते सभ ऊपरि नामु ॥ हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥ ३ ॥ भै बिनसे भ्रम मोह गए को दिसै न बीआ ॥ नानक राखे पारब्रहमि फिरि दूखु न थीआ ॥ ४ ॥ १८ ॥ १२० ॥

आसा घरु ९ महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चितवउ चितवि सरब सुख पावउ आगै भावउ कि न भावउ ॥ एकु दातारु सगल है जाचिक दूसर कै पहि जावउ ॥ १ ॥ हउ मागउ आन लजावउ ॥ सगल छत्रपति एको ठाकुरु कउनु समसरि लावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठउ बैसउ रहि भि न साकउ दरसनु खोजि खोजावउ ॥ ब्रहमादिक सनकादिक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार तिन्ह कउ महलु दुलभावउ ॥ २ ॥ अगम अगम आगाधि बोध कीमति परै न पावउ ॥ ताकी सरणि सति पुरख की सतिगुरु पुरखु धिआवउ ॥ ३ ॥ भइओ क्रिपालु दइआलु प्रभु ठाकुरु काटिओ बंधु गरावउ ॥ कहु नानक जउ साधसंगु पाइओ तउ फिरि जनमि न आवउ ॥ ४ ॥ १ ॥ १२१ ॥ आसा महला ५ ॥ अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी ॥ संगि चलन कउ तोसा दीन्हा गोबिंद नाम के बिउहारी ॥ १ ॥ अवर बिसारी बिसारी ॥ नाम दानु गुरि पूरै दीओ मै एहो आधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पंथि सम्हारी ॥ नाम द्रिड़ु गुरि मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥ २ ॥ दिनु भी गावउ रैनी गावउ गावउ सासि सासि रसनारी ॥ सतसंगति महि बिसासु होइ हरि जीवत मरत संगारी ॥ ३ ॥ जन नानक कउ इहु दानु देहु प्रभ पावउ संत रेन उरि धारी ॥ स्रवनी कथा नैन दरसु पेखउ मसतकु गुर चरनारी ॥ ४ ॥ २ ॥ १२२ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु १० महला ५ ॥

जिस नो तूं असथिरु करि मानहि ते पाहुन दो दाहा ॥

सदैव बलिहारी जाता हूँ। मैं उस गुरु के प्रति पूरी तरह समर्पित हूँ जिसे मिल कर मेरा वास्तविक प्रयोजन मुझे प्राप्त हुआ है।। १ ।रहाउ ।। शकुन, अपशकुन केवल उसी को प्रभावित करते हैं जिसे प्रभु याद नही रहता। जो प्रभु को अच्छा लगता है यम तो उसके पास भी नहीं आ पाता।। २ ।। जितने भी दान-पुण्य, जप-तप आदि हैं इन सबसे ऊँचा प्रभु का नाम है। जो अपनी जीभ से प्रभु नाम का सुमिरन करता है उसकी सभी कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।। ३ ।। उसके भय विनष्ट हो जाते हैं, उसके भ्रम मोह छूट जाते हैं और उसे प्रभु के अतिरिक्त कोई दिखाई नहीं देता। हे नानक, यदि परब्रह्म प्रभु रक्षक हो जाए तो फिर कभी भी कोई दुख व्यक्ति को नहीं लगता।। ४ ।। १८ ।। १२० ।।

आसा घरु ६ महला ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

उस प्रभु का ही मन में सुमिरन करते हुए मैं सभी सुख प्राप्त करता हूँ परन्तु यह नही जानता कि उस प्रभु को मैं अच्छा लगता हूँ कि नहीं। केवल एक प्रभु ही दाता है अन्य सभी तो याचक हैं। इसलिए मैं दूसरे किसी के पास कैसे माँगने जाऊँ।। १ ।। अन्य लोगों से माँगते हुए मुझे लज्जा का अनुभव होता है। सबका सम्राट केवल एक प्रभु ही है; मैं किसे उसके बराबर का समझूँ।। १ ।। रहाउ ।। उठते-बैठते हुए मैं उसके बिना रह भी नहीं सकता और उसके दर्शन के लिए मैं सदैव मार्ग खोजता रहता हूँ। ब्रह्मा जैसे देवतागण, सनक, सनन्दन और सनत कुमार जैसों के लिए तो उस प्रभु का ठिकाना खोजना दुर्लभ प्राप्ति है।। २ ।। प्रभु अगम्य, अनन्त और अथाह बुद्धि वाला है। उसका मूल्य आँका नहीं जा सकता। मैं उस सच्चे पुरुष प्रभु की शरण में हूँ और सबमें विराजमान सच्चे गुरु का सुमिरन करता हूँ।। ३ ।। मेरा स्वामी ठाकुर प्रभु कृपालु एवं दयालु हो गया है और उसने मेरे गले में पड़े हुए सभी बन्धन काट दिए हैं। नानक का कथन है कि जब मुझे साधु संगति प्राप्त हो गई है तो अब मैं फिर आवागमन में नहीं पड़ूँगा।। ४ ।। १ ।। १२१ ।। आसा महला ५ ।। मैं अन्दर-बाहर उस प्रभु का ही यश गायन करता हूँ। जागते सोते हुए भी मैं उसी के गुण गाता हूँ। मैं प्रभु के नाम का व्यापार व्यवहार करने वाला हूँ और उसी प्रभु ने मुझे अपने नाम का सफर खर्च बाँध दिया है।। १ ।। अन्य सभी वस्तुओं को मैने पूरी तरह भुला दिया है। पूर्ण गुरु ने मुझे नाम-दान दिया है और यही मेरा आसरा है।। १ ।। रहाउ ।। दुख में भी मैं उसी को गाता हूँ और सुख में भी उसी का गुणानुवाद करता हूँ। मार्ग पर चलते हुए और पथ पर भ्रमण करते हुए भी मैं उसी का नाम मन में संभाले रहता हूँ। गुरु ने मेरे चित्त में प्रभु-नाम पक्का कर दिया है और मेरी प्यास बुझ गई है।। २ ।। प्रभु का गुणानुवाद मैं दिन में भी करता हूँ और अपनी जीभ से प्रत्येक साँस के साथ भी उसके गुण गाता हूँ। सद्संगति में ही यह विश्वास पक्का होता है कि जीने मरने दोनों में ही प्रभु हमेशा हमारे साथ बना रहता है।। ३ ।। हे प्रभु, अपने दास नानक को यह दान दो कि मैं साधु व्यक्तियों की चरण धूलि प्राप्त करके उसे हृदय में धारण किए रहूँ। कानों से मैं प्रभु की कथा-वार्ता को सुनूं, नैनों से प्रभु का दर्शन करूँ और मेरा मस्तक गुरु के चरणों में लगा रहे।। ४ ।। २ ।। १२२।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि   आसा घरु १० महला ५।।

हे जीव, जिस शरीर को तू सदा बना रहने वाला मानता है वह तो दो दिनों का ही मेहमान है।

पुत्र कलत्र ग्रिह सगल समग्री सभ मिथिआ असनाहा ॥ १ ॥ रे मन किआ करहि है हा हा ॥ द्रिसटि देखु जैसे हरिचंदउरी इकु राम भजनु लै लाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोइ चारि भोराहा ॥ भीति ऊपरे केतकु धाईऐ अंति ओरको आहा ॥ २ ॥ जैसे अंभ कुंड करि राखिओ परत सिंधु गलि जाहा ॥ आवगि आगिआ पारब्रहम की उठि जासी मुहत चसाहा ॥ ३ ॥ रे मन लेखै चालहि लेखै बैसहि लेखै लैदा साहा ॥ सदा कीरति करि नानक हरि की उबरे सतिगुर चरण ओटाहा ॥ ४ ॥ १ ॥ १२३ ॥ आसा महला ५ ॥ अपुसट बात ते भई सीधरी दूत दुसट सजनई ॥ अंधकार महि रतनु प्रगासिओ मलीन बुधि हछनई ॥ १ ॥ जउ किरपा गोबिंद भई ॥ सुख संपति हरि नाम फल पाए सतिगुर मिलई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि किरपन कउ कोइ न जानत सगल भवन प्रगटई ॥ संगि बैठनो कही न पावत हुणि सगल चरण सेवई ॥ २ ॥ आढ आढ कउ फिरत ढूंढते मन सगल त्रिसन बुझि गई ॥ एकु बोलु भी खवतो नाही साधसंगति सीतलई ॥ ३ ॥ एक जीह गुण कवन वखानै अगम अगम अगमई ॥ दासु दास दास को करीअहु जन नानक हरि सरणई ॥ ४ ॥ २ ॥ १२४ ॥ आसा महला ५ ॥ रे मूड़े लाहे कउ तूं ढीला ढीला तोटे कउ बेगि धाइआ ॥ ससत वखरु तूं घिंनहि नाही पापी बाधा रेनाइआ ॥ १ ॥ सतिगुर तेरी आसाइआ ॥ पतित पावनु तेरो नामु पारब्रहम मै एहा ओटाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गंधण वैण सुणहि उरझावहि नामु लैत अलकाइआ ॥ निंद चिंद कउ बहुतु उमाहिओ बूझी उलटाइआ ॥ २ ॥ पर धन पर तन पर ती निंदा अखाधि खाहि हरकाइआ ॥ साच धरम सिउ रुचि नही आवै सति सुनत छोहाइआ ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ ठाकुर भगत टेक हरि नाइआ ॥ नानक आहि सरण प्रभ आइओ राखु लाज अपनाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२५ ॥ आसा महला ५ ॥ मिथिआ संगि संगि लपटाए मोह माइआ करि बाधे ॥ जह जानो सो चीति न आवै अहंबुधि भए आंधे ॥ १ ॥ मन बैरागी किउ न अराधे ॥ काच कोठरी माहि तूं बसता संगि सगल बिखै की बिआधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी मेरी करत

पुत्र, स्त्री घर एवं घर से सम्बन्धित सम्पूर्ण सामग्री के साथ लगा हुआ स्नेह झूठा ही झूठा है।। १ ।। हे मन, तू प्रसन्न होकर और खिलखिलाकर किस लिए हँस रहा है। सब कुछ दिखाई देने वाले को एक जादू नगरी की तरह समझ। इसमें तो केवल एक प्रभु के ही भजन गाकर लाभ प्राप्त कर।। १ ।। रहाउ ।। जैसे शरीर पर पहने हुए कपड़े दो-चार दिन में ही फट जाते हैं उसी प्रकार दीवार पर कितनी दूर तक भागा जा सकता है क्योंकि उसका अन्त तो निश्चित ही है।। २ ।। जैसे पानी के कुण्ड में गिरकर नमक गल जाता है वैसे ही यह शरीर है। जब परमात्मा की आज्ञा हो जाती है तो क्षण भर में प्राण रूपी हंस उठ खड़ा हो चल पड़ता है।। ३ ।। हे मन, तेरा चलना गिना जाता है, तेरे बैठने की भी गिनती है और इस प्रकार तेरे श्वास भी गिनती के ही हैं। हे नानक, तू सदैव प्रभु की कीर्ति का गायन करता रह; तू सच्चे गुरु के चरणों की शरण में आकर पार उतर जाएगा।। ४ ।। १ ।। १२३ ।। आसा महला ५ ।। उलटी बात अब सीधी हो गई है और विषय विकारों के दुष्ट दूत अब सज्जन बन गए है। अज्ञान के अन्धकार में ब्रह्म-ज्ञान का रत्न प्रकाशित हो उठा है जिससे मेरी मलीन बुद्धि शुद्ध हो गई हैं। जब सृष्टि के स्वामी प्रभु की कृपा हुई तो सच्चे गुरु से मिलाप करके मुझे सुख-सम्पत्ति एवं प्रभु नाम रूपी फल प्राप्त हो गया है।। १ ।। रहाउ।। मुझ कंजूस को कोई भी नहीं जानता था परन्तु अब मैं सारे संसार में प्रसिद्ध हो गया हूँ। पहले मैं किसी के साथ भी नहीं बैठ पाता था परन्तु अब सभी मेरे चरणों की सेवा करते हैं।। २ ।। पहले मैं आधे पैसे के लिए भी भटकता रहता था परन्तु अब मेरे मन की सारी प्यास बुझ गई है। पहले मैं किसी की एक भी बात नहीं सहन कर पाता था परन्तु अब साधु संगति में मैं शीतल हो गया हूँ।। ३ ।। अगम्य और अनन्त प्रभु के गुण मेरी एक जीभ भला क्या सुना सकती है। हे प्रभु, दास नानक तेरी शरण में है तू उसे अपने दास के दास का भी दास बना दो।। ४ ।। २ ।। १२४ ।। आसा महला ५ ।। हे मूर्ख, तू अपने लाभ के लिए तो ढीला है परन्तु अपना नुकसान करने के लिए तू दौड़ कर जाता है। हे पापी, तू प्रभु-नाम का सस्ता सौदा तो लेता नहीं परन्तु दुर्गुणों के कर्ज में सदैव बँधा रहता है।। १ ।। हे मेरे सच्चे गुरु मुझे तेरी ही आस है।। हे प्रभु, पतित पावन तेरा नाम है और मुझे परब्रह्म प्रभु का ही एक आसरा है।। १।। रहाउ ।। गन्दे गीत सुनकर तू उन्हीं में उलझ जाता है परन्तु प्रभु-नाम का जाप करने के लिए तुझे आलस्य ही बना रहता है। तेरी ऐसी विपरीत बुद्धि है कि निन्दा करने की चिन्ता में तेरे अन्दर सदैव उत्साह बना रहता है।। २ ।। पराया धन, पराया तन, परायी निन्दा और परायी स्त्री आदि के लिए तू सदैव तत्पर रहता है और ऐसी अखाद्य वस्तुओं को खाकर तू पागल हो गया है। सत्य रूपी कर्त्तव्य कर्म में तेरी कोई रुचि नहीं बनती और सच को सुनकर तू भड़क उठता है।। ३ ।। हे दीनों पर दयालु कृपालु होने वाले ठाकुर प्रभु, भक्तों को एक तेरे नाम की ही टेक है। नानक ने हे प्रभु, तेरी शरण ली है, उसे अपना कर उसकी लाज रख।। ४ ।। ३ ।। १२५।। आसा महला ५ ।। व्यक्ति सब नाशवान वस्तुओं के साथ लिपटा हुआ माया-मोह में बँधा रहता है। जहाँ जाना है वह तो इसको याद नहीं; अहंकार युक्त बुद्धि वाला बनकर यह अन्धा बना रहता है।। १ ।। हे बैरागी मन, तू क्यों प्रभु का सुमिरन नहीं करता। तू शरीर रूपी कच्ची कोठरी में बसता है और तेरे साथ ही विषय विकारों के रोग भी बस रहे हैं।।१।।रहाउ।। मेरा मेरा करते हुए

दिनु रैनि बिहावै पलु खिनु छीजै अरजाधे ॥ जैसे मीठै सादि लोभाए झूठ धंधि दुरगाधे ॥ २ ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह इह इंद्री रसि लपटाधे ॥ दीई भवारी पुरखि बिधातै बहुरि बहुरि जनमाधे ॥ ३ ॥ जउ भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे ॥ कहु नानक दिनु रैनि धिआवउ मारि काढी सगल उपाधे ॥ ४ ॥ इउ जपिओ भाई पुरखु बिधाते ॥ भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु जनम मरण दुख लाथे ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२६ ॥ आसा महला ५ ॥ निमख काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि ॥ घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥ १ ॥ अंधे चेति हरि हरि राइआ ॥ तेरा सो दिनु नेड़ै आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पलक द्रिसटि देखि भूलो आक नीम को तूंमरु ॥ जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे तैसो ही इहु पर ग्रिहु ॥ २ ॥ बैरी कारणि पाप करता बसतु रही अमाना ॥ छोडि जाहि तिन ही सिउ संगी साजन सिउ बैराना ॥ ३ ॥ सगल संसारु इहै बिधि बिआपिओ सो उबरिओ जिसु गुरु पूरा ॥ कहु नानक भव सागरु तरिओ भए पुनीत सरीरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ आसा महला ५ दुपदे ॥ लूकि कमानो सोई तुम्ह पेखिओ मूड़ मुगध मुकरानी ॥ आप कमाने कउ ले बांधे फिरि पाछै पछुतानी ॥ १ ॥ प्रभ मेरे सभ बिधि आगै जानी ॥ भ्रम के मूसे तूं राखत परदा पाछै जीअ की मानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु जितु लाए तितु तितु लागे किआ को करै परानी ॥ बखसि लैहु पारब्रहम सुआमी नानक सद कुरबानी ॥ २ ॥ ६ ॥ १२८ ॥ आसा महला ५ ॥ अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥ जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥ १ ॥ सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥ जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥ तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥ २ ॥ ७ ॥ १२९ ॥

आसा घरु ११ महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

नटूआ भेख दिखावै बहु बिधि जैसा है ओहु तैसा रे ॥ अनिक जोनि भ्रमिओ भ्रम भीतरि सुखहि नाही

दिन और रात बीतते चले जा रहे हैं। तेरी आयु हर पल और हर क्षण घटती जा रही है। जैसे मीठे के स्वाद ने सब को लुभा रखा है वैसे ही झूठे और मलीन कामों ने तुझे मोहित कर रखा है।।२।। तुम्हारी इन्द्रियां काम, क्रोध, लोभ और मोह आदि के रस में लिपटी हुई हैं। उस विधाता पुरुष प्रभु ने तुझे बार-बार जन्म लेने का चक्कर डाल रखा है।। ३ ।। जब दीनों का दुख भंजन प्रभु कृपालु हो जाता है तो गुरु को मिलकर सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं। नानक का कथन है कि उस प्रभु का मैं दिन-रात सुमिरन करता हूँ जिसने मेरे समस्त रोगों को मारकर बाहर निकाल दिया है।। ४ ।। हे भाई, इस प्रकार मैंने उस विधाता पुरुष प्रभु का सुमिरन किया है कि वह दीनों के दुखों का नाश करने वाला प्रभु कृपालु हो गया है और मेरे जन्म-मरण के दुख छूट गए हैं।। १ ।। रहाउ दूसरा।। ४ ।। ४ ।। १२६।। आसा महला ५।। एक क्षण भर के काम के रस के कारण तू करोड़ों दिनों तक दुख प्राप्त करता है। घड़ी पल के लिए तू आनन्द लेता है और फिर बार-बार पछताता रहता है।। १ ।। हे अन्धे, तू राजा प्रभु का ध्यान कर क्योंकि तेरा मौत का दिन पास चला आ रहा है।। १ ।। रहाउ ।। आक और नीम के फूलों की बाहरी सुन्दरता को देखकर तू भूल-भुलैयां में पड़ गया है और ऐसा ही सुन्दर तू संसार को मान रहा है। हे जीव, जैसे विषपूर्ण सर्प के साथ रहने का फल है वैसा ही पराये घर में पड़ा रहना अथवा पराये के साथ भोगविलास करने का फल प्राप्त होता है।। २ ।। धन-सम्पदा जो तेरे शत्रु हैं उनके लिए तू सब पाप करता है और वास्तविक वस्तु अर्थात आत्मा की ओर तू ध्यान ही नहीं देता और वह वैसी की वैसी ही पड़ी रहती है। जो तुझे त्याग देते हैं तू उन्हीं की संगति में पड़ा रहता है परन्तु अपने वास्तविक मित्रों के साथ तू शत्रुता का भाव रखता है।।३।। सारे संसार में यही ढंग तरीका चल रहा है। इसमें से उसी का उद्धार होता है जिसका गुरु एक पूर्ण गुरु है। नानक का कथन है कि मैं भयानक संसार से पार हो गया हूँ और मेरा शरीर पवित्र हो गया है।। ४ ।। ५ ।। १२७ ।। आसा महला ५ दुपदे ।। हे प्रभु, व्यक्ति जो कुछ भी छिपकर करता है उसे तुम देख लेते हो परन्तु मूढ़ एवं मूर्ख व्यक्ति इस तथ्य को नहीं मान पाते। ऐसे व्यक्ति अपने कर्मों के कारण जब बाँध लिए जाते हैं तब फिर वह पछतावा करते हैं।। १ ।। मेरा प्रभु कुछ होने से पहले ही सब कुछ जान जाता है। भ्रमों में पड़कर लुटे हुए हे जीव, तू सब बुरे कामों पर बहुत पर्दा डालकर रखता है परन्तु अन्ततः तुझे अपनी मन की बातों को प्रभु के सामने मानना ही पड़ेगा।। १ ।। रहाउ ।। जहाँ जहाँ जिसको लगाया है वह वहीं-वहीं लगा हुआ है; यह प्राणी भला क्या कर सकता है। हे परब्रह्म स्वामी प्रभु, मुझ पर कृपा कर; मैं नानक सदैव तुझ पर कुर्बान जाता हूँ।। २ ।। ६ ।। १२८ ।। आसा महला ५ ।। अपने सेवक के सम्मान की प्रभु स्वयं ही रक्षा करता है और स्वयं ही उससे अपने नाम का सुमिरन करवाता है। जहाँ-जहाँ भी उस सेवक का कोई काम होता है यह स्वामी प्रभु वहाँ-वहाँ ही भाग-भाग कर पहुँचता है।। १ ।। सेवक के निकट होकर प्रभु प्रत्यक्ष रूप में अपना आप दिखाता है। अपने स्वामी के सामने सेवक जो भी प्रार्थना करता है वह तत्काल पूरी होती है।। १ ।। रहाउ।। मै। उस सेवक पर बलिहारी जाता हूँ जो अपने मालिक प्रभु को अच्छा लगता है। उसकी महिमा को सुनकर मन हरा-भरा हो उठा है और ऐसे प्रभु का स्पर्श करने के लिए नानक उसके पास जाता है।। २ ।। ७ ।। १२६ ।।

आसा घरु ११ महला ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जैसे नट अनेकों स्वांग दिखाता है परन्तु अन्दर से वह जैसा वास्तव में होता है वही रहता है। उसी प्रकार जीव अनेकों योनियों में अपने भ्रमों के कारण भटकता रहता है परन्तु वह वैसे का वैसा अशान्त ही बना रहता है और सुख में

परवेसा रे ॥ १ ॥ साजन संत हमारे मीता बिनु हरि हरि आनीता रे ॥ साधसंगि मिलि हरि गुण गाए इहु जनमु पदारथु जीता रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ ब्रहम की कीन्ही कहहु कवन बिधि तरीऐ रे ॥ घूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥ २ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ ततु नानक इहु जाना रे ॥ सिमरत नामु निधानु निरमोलकु मनु माणकु पतीआना रे ॥ ३ ॥ १ ॥ १३० ॥ आसा महला ५ दुपदे ॥ गुर परसादि मेरै मनि वसिआ जो मागउ सो पावउ रे ॥ नाम रंगि इहु मनु त्रिपताना बहुरि न कतहूं धावउ रे ॥ १ ॥ हमरा ठाकुरु सभ ते ऊचा रैणि दिनसु तिसु गावउ रे ॥ खिन महि थापि उथापनहारा तिस ते तुझहि डरावउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब देखउ प्रभु अपुना सुआमी तउ अवरहि चीति न पावउ रे ॥ नानकु दासु प्रभि आपि पहिराइआ भ्रमु भउ मेटि लिखावउ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १३१ ॥ आसा महला ५ ॥ चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे ॥ सुंदर सुघर सरूप सिआने पंचहु ही मोहि छली रे ॥ १ ॥ जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे ॥ जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडी कोम वसि भागहि नाही मुहकम फउज हठली रे ॥ कहु नानक तिनि जनि निरदलिआ साधसंगति कै झली रे ॥ २ ॥ ३ ॥ १३२ ॥ आसा महला ५ ॥ नीकी जीअ की हरि कथा ऊतम आन सगल रस फीकी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु गुनि धुनि मुनि जन खटु बेते अवरु न किछु लाईकी रे ॥ १ ॥ बिखारी निरारी अपारी सहजारी साधसंगि नानक पीकी रे ॥ २ ॥ ४ ॥ १३३ ॥ आसा महला ५ ॥ हमारी पिआरी अंम्रित धारी गुरि निमख न मन ते टारी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन परसन सरसन हरसन रंगि रंगी करतारी रे ॥ १ ॥ खिनु रम गुर गम हरि दम नह जम हरि कंठि नानक उरि हारी रे ॥ २ ॥ ५ ॥ १३४ ॥ आसा महला ५ ॥ नीकी साध संगानी ॥ रहाउ ॥ पहर मूरत पल गावत गावत गोविंद गोविंद वखानी ॥ १ ॥ चालत बैसत सोवत हरि जसु मनि तनि चरन खटानी ॥ २ ॥ हंउ हउरो तू ठाकुरु गउरो नानक सरनि पछानी ॥ ३ ॥ ६ ॥ १३५ ॥

लीन नहीं हो पाता।। १ ।। हे मेरे दोस्तो, मित्रो और साधु-संतो, प्रभु के नाम के बिना सब कुछ अनित्य अर्थात नाशवान है। जिन्होंने साधसंगत में मिल बैठकर प्रभु का गुणानुवाद कर लिया है उन्होंने इस जन्म रूपी अमूल्य पदार्थ को जीत लिया है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने तीन गुणों वाला यह माया रूपी संसार बना दिया है। हे भाई, बताओ इसको कैसे पार किया जा सकता है। इस संसार रूपी सागर का भँवर अथाह एवं कठिन है इसे शब्द-गुरु के माध्यम से पार किया जाता है।। २ ।। लगातार खोजते-खोजते और विचार करते हुए नानक ने इस मूल बात को जान लिया है कि प्रभु-नाम रूपी भण्डार का सुमिरन करने से मन रूपी माणिक अच्छे काम करने के लिए मान जाता है।। ३ ।। १ ।। १३० ।। आसा महला ५।। दुपदे ।। गुरु की कृपा से प्रभु मेरे मन में आन बसा है और मैं उससे जो भी माँगता हूँ पा जाता हूँ। प्रभु-नाम के रंग में मेरा मन तृप्त हो चुका है और अब यह कहीं भी इधर-उधर दौड़ता भागता नहीं।। १ ।। मेरा ठाकुर प्रभु सबसे ऊँचा है और मैं रात-दिन उसके गुण गाता हूँ। वह क्षण-भर में स्थापना करके नष्ट कर देने वाला है। हे मेरे मन, मैं उसी के माध्यम से तुम्हें भय-युक्त बनाए रहता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। जब मैं अपने प्रभु को देख लेता हूँ तो फिर अन्य किसी को अपने चित्त में प्रवेश नहीं करने देता। दास नानक के प्रभु ने स्वयं सम्मान रूपी वस्त्र पहनाया है, इसी लिए वह भ्रम और भय को मिटाकर उसके गुणों को लिखता रहता है।। २ ।। २ ।। १३१।। आसा महला ५ ।। चारों वर्णों और चारों जातियों को जीत लेने वाले पुरुष तथा छः शास्त्रों को अपने हाथों के नीचे रखने वाले अर्थात उनका भली-भाँति पठन-पाठन करने वाले सुन्दर, सुघढ़, स्वरूपवान एवं सयाने व्यक्तियों को भी पाँचों विकारों ने अपनी ओर मोहित करके छल लिया है।।१।। ऐसा कौन बलशाली है जिसने इन पाँचों शूरवीरों को पकड़ कर मार डाला है। जो इन पाँचों को मार कर और हरा कर अपना जीवन यापन करता है वही इस कलियुग में पूर्ण पुरुष है।। १ ।। रहाउ ।। इन पाँचों विकारों की बिरादरी बहुत बड़ी और जबरदस्त है जो भागती नहीं; उनकी सेना पूरे हठ वाली और शक्तिशाली है। नानक का कथन है कि जो साधु पुरुषों की संगति में है वह व्यक्ति इन सारे विकारों और उनकी सेना का दलन कर देता है।। २ ।। ३ ।। १३२ ।। आसा महला ५ ।। प्रभु की श्रेष्ठ कथा-वार्ता ही इस जीव के लिए सबसे उत्तम है; अन्य सभी रस फीके हैं।। १ ।। रहाउ।। अनेकों गुणों वाले ध्वनि शास्त्र के ज्ञाता, मुनिजन एवं छः शास्त्रों के पण्डित अन्य किसी वस्तु को भी विचाार के लायक नहीं मानते।। १ ।। हे नानक, केवल प्रभु की कथा ही विषय विकारों को मारने वाली, निराली और सहज-भाव प्रदान करने वाली है तथा इसका साधसंगत में ही आनन्द लिया जाता है।। २ ।। ४ ।। १३३ ।। आसा महला ५।। अमृत की धारा के समान वाणी स्वरूप हरि कथा मेरी प्यारी है। गुरु इस धारा को मेरे हृदय की ओर ही बहाता रहता है और क्षण-भर के लिए भी इसे दूर नहीं करता।। १ ।। रहाउ।। यह वाणी कर्ता-प्रभु के प्रेम में रंगी हुई है इसलिए इसके माध्यम से प्रभु का दर्शन और उसका स्पर्श प्राप्त होता है। व्यक्ति इसी के माध्यम से रसिक और सुखी बनता है।। १ ।। यदि क्षण भर के लिए भी इस वाणी का उच्चारण किया जाए तो व्यक्ति की पहुँच गुरु तक हो जाती है; यदि हर श्वास के साथ इसका जाप किया जाए तो यम का भय नहीं रहता और प्रभु माला की तरह गले में पड़ा रहकर शोभायमान रहता है अर्थात अन्दर बाहर अंग-संग बना रहता है।। २ ।। ५ ।। १३४ ।। आसा महला ५ ।। साधसंगत की महिमा बहुत ही उत्तम है।। रहाउ ।। साधु संगति में हर प्रहर, मुहूर्त एवं पल में गोविन्द अर्थात परमात्मा ही गाया जाता है।। १ ।। चलते हुए, बैठते हुए, सोते हुए हरि यश का गायन होता है और तन, मन में हरि के चरण ही समाये रहते हैं।। २ ।। हे प्रभु, मैं बहुत ही हल्का हूँ और तू बहुत ही भारी है; नानक ने तो केवल तेरी शरण को ही पहचाना है और तेरी शरण में आ गया है।। ३ ।। ६ ।। १३५ ।।

रागु आसा महला ५ घरु १२ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तिआगि सगल सिआनपा भजु पारब्रहम निरंकारु ॥ एक साचे नाम बाझहु सगल दीसै छारु ॥ १ ॥ सो प्रभु जाणीऐ सद संगि ॥ गुर प्रसादी बूझीऐ एक हरि कै रंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि समरथ एक केरी दूजा नाही ठाउ ॥ महा भउजलु लंघीऐ सदा हरि गुण गाउ ॥ २ ॥ जनम मरणु निवारीऐ दुखु न जम पुरि होइ ॥ नामु निधानु सोई पाए क्रिपा करे प्रभु सोइ ॥ ३ ॥ एक टेक अधारु एको एक का मनि जोरु ॥ नानक जपीऐ मिलि साधसंगति हरि बिनु अवरु न होरु ॥ ४ ॥ १ ॥ १३६ ॥ आसा महला ५ ॥ जीउ मनु तनु प्रान प्रभ के दीए सभि रस भोग ॥ दीन बंधप जीअ दाता सरणि राखण जोगु ॥ १ ॥ मेरे मन धिआइ हरि हरि नाउ ॥ हलति पलति सहाइ संगे एक सिउ लिव लाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन धिआवहि तरण कउ संसारु ॥ करम धरम अनेक किरिआ सभ ऊपरि नामु अचारु ॥ २ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिलै सतिगुर देव ॥ नामु द्रिड़ु करि भगति हरि की भली प्रभ की सेव ॥ ३ ॥ चरण सरण दइआल तेरी तूं निमाणे माणु ॥ जीअ प्राण अधारु तेरा नानक का प्रभु ताणु ॥ ४ ॥ २ ॥ १३७ ॥ आसा महला ५ ॥ डोलि डोलि महा दुखु पाइआ बिना साधू संग ॥ खाटि लाभु गोबिंद हरि रसु पारब्रहम इक रंग ॥ १ ॥ हरि को नामु जपीऐ नीति ॥ सासि सासि धिआइ सो प्रभु तिआगि अवर परीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण कारण समरथ सो प्रभु जीअ दाता आपि ॥ तिआगि सगल सिआणपा आठ पहर प्रभु जापि ॥ २ ॥ मीतु सखा सहाइ संगी ऊच अगम अपारु ॥ चरण कमल बसाइ हिरदै जीअ को आधारु ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ पारब्रहम गुण तेरा जसु गाउ ॥ सरब सूख वडी वडिआई जपि जीवै नानकु नाउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३८ ॥ आसा महला ५ ॥ उदमु करउ करावहु ठाकुर पेखत साधू संगि ॥ हरि हरि नामु चरावहु रंगनि आपे ही प्रभ रंगि ॥ १ ॥ मन महि राम नामा जापि ॥ करि किरपा वसहु मेरै हिरदै होइ सहाई आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन

रागु आसा महला ५ घरु १२ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे जीव, तू सारी चतुराईयों को त्याग दे और निराकार परब्रह्म का सुमिरन कर। उसके एक सच्चे नाम के बिना बाकी सब कुछ राख के समान तुच्छ है।। १ ।। उस प्रभु को सदैव अपने साथ ही जानो और गुरु की कृपा द्वारा ही एक प्रभु के प्रेम रंग में रंगे रहने से उसका सदैव साथ बने रहना समझ में आता है।। १ ।। रहाउ ।। उस एक प्रभु की ही शरण समर्थ एवं शक्तिशाली है; उसके बिना अन्य कोई आसरा नहीं है। सदा उस प्रभु के गुण गाते हुए संसार रूपी भयंकर समुद्र को पार किया जाता है।। २ ।। ऐसा करने से जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है और यमपुरी का दुःख स्पर्श नहीं करता। जिस पर प्रभु कृपा करता है वही उसके नाम के भण्डार को प्राप्त करता है।। ३ ।। वह प्रभु ही केवल एक आधार और आसरा है और उस एक का ही मन पर जोर चलता है। हे नानक, साधु-संगति में मिल-बैठकर उसका सुमिरन किया जाए क्योंकि प्रभु के बिना अन्य कोई भी (स्थायी) नहीं है।। ४ ।। १ ।। १३६ ।। आसा महला ५ ।। तन, मन, प्राण इस जीव को उस प्रभु ने ही दिए हैं और साथ ही साथ सभी रस और भोगने योग्य पदार्थ भी दिए हैं। वही दीन-बन्धु जीवन दाता प्रभु सबको अपनी शरण में रख लेने में समर्थ है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु-नाम की ही आराधना कर क्योंकि वही इस लोक और परलोक में सहायक है; तुम उस एक प्रभु में ही अपनी सुरति को लीन करो।। १ ।। रहाउ ।। लोग संसार सागर से पार उतरने के लिए वेदों शास्त्रों का पठन-पाठन करते हैं। इस प्रकार के अनेकों ही धर्म, कर्म और क्रियाएं हैं परन्तु सबसे ऊपर प्रभु-नाम के अनुरूप आचरण बनाना ही श्रेष्ठ कार्य है।। २ ।। सच्चे गुरु से मिलाप होने पर काम, क्रोध, अहंकार आदि विनष्ट हो जाते हैं। हे जीव, दृढ़तापूर्वक प्रभु-नाम का सुमिरन और भक्ति कर क्योंकि यही सेवा प्रभु के लिए भली सेवा है।। ३ ।। हे दयालु प्रभु, तू ही सम्मानविहीन का सम्मान है और मैं तेरी ही शरण में हूँ। हे प्रभु, तू ही नानक के जीवन और प्राणों का आधार है और तू ही नानक का बल है।। ४ ।। २ ।। १३७ ।। आसा महला ५ ।। साधु-संगति से विहीन होकर भटकते-भटकते मैंने बहुत दुख पा लिया है। हे जीव, अब प्रभु-नाम के रस को चखकर उसके रंग में रंग कर लाभ प्राप्त कर ले।। १ ।। सदैव प्रभु-नाम का जाप करना चाहिए तथा अन्य पदार्थों से प्रीति त्याग कर हर साँस के साथ प्रभु का सुमिरन करते रहना चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। जीवन-दान देने वाला वह प्रभु स्वयं ही सब कुछ करने कराने में समर्थ है। इसलिए हे जीव, तू सारी चतुराईयों को त्याग कर आठों प्रहर उस प्रभु का ही जाप कर।। २ ।। वह ऊँचा, अगम्य और अपार प्रभु ही तेरा मित्र, सखा और सहायक संगी है। तू उसके चरण-कमलों को हृदय में बसा क्योंकि वही तेरे जीवन का आधार है।। ३ ।। हे प्रभु, परब्रह्म, मुझ पर कृपा करो ताकि मैं तेरे गुण और यश का गायन करता रहूँ। नानक प्रभु के नाम का सुमिरन करके ही जीवित बना रहता है यही उसके लिए सबसे बड़ा सुख और बड़प्पन है।। ४ ।। ३ ।। १३८ ।। आसा महला ५ ।। हे प्रभु, यदि तुम कराओ तो मैं साधसंगत के दर्शन करने के साथ तुझसे मिलाप के लिए कुछ उद्यम करूँ। हे प्रभु, तू स्वयं ही हरि-नाम का रंग मुझ पर चढ़ा कर मुझे प्रभु रंग में रंग दो।। १ ।। मेरे मन में राम-नाम का जाप ही चलता रहता है। हे प्रभु, आप मेरी सहायता करो और कृपा करके मेरे हृदय में आन बसो।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रियतम प्रभु, तुम्हारा नाम सुनकर मेरे मन में तुम्हें देखने का

का चाउ ॥ दइआ करहु किरम अपुने कउ इहै मनोरथु सुआउ ॥ २ ॥ तनु धनु तेरा तूं प्रभु मेरा हमरै वसि किछु नाहि ॥ जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि ॥ ३ ॥ जनम जनम के किलविख काटै मजनु हरि जन धूरि ॥ भाइ भगति भरम भउ नासै हरि नानक सदा हजूरि ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३९ ॥ आसा महला ५ ॥ अगम अगोचरु दरसु तेरा सो पाए जिसु मसतकि भागु ॥ आपि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी सतिगुरि बखसिआ हरि नामु ॥ १ ॥ कलिजुगु उधारिआ गुरदेव ॥ मल मूत मूड़ जि मुघद होते सभि लगे तेरी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू आपि करता सभ स्रिसटि धरता सभ महि रहिआ समाइ ॥ धरम राजा बिसमादु होआ सभ पई पैरी आइ ॥ २ ॥ सतजुगु त्रेता दुआपरु भणीऐ कलिजुगु ऊतमो जुगा माहि ॥ अहि करु करे सु अहि करु पाए कोई न पकड़ीऐ किसै थाइ ॥ ३ ॥ हरि जीउ सोई करहि जि भगत तेरे जाचहि एहु तेरा बिरदु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै अपणिआ संता देहि हरि दरसु ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४० ॥

रागु आसा महला ५ घरु १३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर बचन तुम्हारे ॥ निरगुण निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत संगारे ॥ १ ॥ जनम भवंते नरकि पड़ंते तिन्ह के कुल उधारे ॥ २ ॥ कोइ न जानै कोइ न मानै से परगटु हरि दुआरे ॥ ३ ॥ कवन उपमा देउ कवन वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥ ४ ॥ १ ॥ १४१ ॥ आसा महला ५ ॥ बावर सोइ रहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह कुटंब बिखै रस माते मिथिआ गहन गहे ॥ १ ॥ मिथन मनोरथ सुपन आनंद उलास मनि मुखि सति कहे ॥ २ ॥ अंम्रितु नामु पदारथु संगे तिलु मरमु न लहे ॥ ३ ॥ करि किरपा राखे सतसंगे नानक सरणि आहे ॥ ४ ॥ २ ॥ १४२ ॥ आसा महला ५ तिपदे ॥ ओहा प्रेम पिरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही ॥ १ ॥ राज न भाग न

चाव उत्पन्न हो गया है। अपने इस कीट पर दया करो क्योंकि तुम्हारे दर्शन का प्रयोजन ही मेरा मनोरथ है।। २ ।। मेरा तन और धन सब तेरा है और हे प्रभु, मेरा तू ही है; मेरे बस में कुछ नहीं है। तू जिस तरह भी मुझे रखेगा मुझे वैसे ही रहना है और मैं तेरा दिया हुआ ही खाता हूँ।। ३ ।। तेरे सेवकों की चरण-धूलि जन्म-जन्म के पापों को समाप्त कर देती है। प्रभु की प्रेमाभक्ति के फलस्वरूप भ्रम एवं भय नष्ट हो जाते हैं और हे नानक, प्रभु सदैव प्रत्यक्ष ही बना रहता है।। ४ ।। ४ ।। १३६ ।। आसा महला ५ ।। हे प्रभु, तेरा दर्शन अगम्य एवं अगोचर है; यह उसी को प्राप्त होता है जिसके माथे पर भाग्यशाली होना लिखा है। प्रभु ने स्वयं कृपालु होकर कृपा की है तथा सच्चे गुरु ने प्रभु नाम का दान दिया है।। १ ।। गुरुदेव ने कलियुग के जीवों का उद्धार किया है। इस युग में जितने भी मल-मूत्र की तरह से मलीन व्यक्ति थे और जो मूढ़ एवं बौराए हुए लोग थे सब तेरी सेवा में लीन हो गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तू स्वयं ही कर्ता है एवं सारी सृष्टि को धारण करने वाला है तथा सब में ही रमा हुआ है। धर्मराज भी हैरान हो गया जब उसने सारी सृष्टि को प्रभु के चरणों में लौ लगाए देखा। धर्मराज का यह विचार कि कलियुग में प्रभु का विस्मरण करने के कारण सृष्टि के लोग नर्कगामी बनेंगे उस समय उलट गया जब उसने देखा कि गुरु जी के प्रयत्न से सभी कलियुगी जीवों का झुकाव परमात्मा की ओर हो गया। उसका विस्मयपूर्ण होना इसी तथ्य का द्योतक है।। २ ।। सतियुग, त्रेता, द्वापर को भले युग कहा जाता था परन्तु अब सारे युगों में से कलियुग ही उत्तम है। इसमें व्यक्ति इस हाथ काम करता है और साथ ही साथ उस हाथ उसका उसे फल मिल जाता है (सतियुग, त्रेता युग, द्वापर युग की तरह एक व्यक्ति के पाप करने से क्रमशः सारे देश, नगर एवं परिवार पर विपत्ति आती थी परन्तु कलियुग में किसी को भी किसी अन्य के लिए सज़ा नहीं मिलती अर्थात हर कोई अपने किए का फल आप ही प्राप्त करता है। इसलिए कलियुग ही सर्वश्रेष्ठ है)।। ३ ।। परमात्मा वही करता है जो उसके भक्तगण चाहा करते हैं। हे प्रभु, यही तेरा बिरद (कर्त्तव्य कर्म) है जिसका तू पालन करता है। नानक हाथ जोड़कर यही दान माँगता है कि हे प्रभु, अपने संतों को दर्शन दो।। ४ ।। ५ ।। १४० ।।

रागु आसा महला ५ घरु १३ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे सच्चे गुरु, तुम्हारे वचनों ने गुणहीन व्यक्तियों को भी पार कर दिया है।। १ ।। रहाउ ।। जो महा विषयी दुष्ट और बकवाद करने वाले थे वे भी तुम्हारे साथ रहते हुए पवित्र एवं पुनीत हो गए हैं।। १ ।। जो जीवन भर भटकते रहे और फलस्वरूप नर्क में जाने योग्य थे तूने उनके कुलों का भी उद्धार कर दिया।। २ ।। जिनको न तो कोई जानता था और न ही कोई मानता था वे भी प्रभु के द्वार पर शोभायमान हो गए हैं।। ३ ।। तेरी तुलना किससे की जाए और तेरे बड़प्पन के बारे में क्या कहा जाए। नानक तो बार-बार और प्रति-क्षण तुझ पर बलिहारी जाता है।। ४ ।। १ ।। १४१ ।। आसा महला ५ ।। बावरे लोग माया की निद्रा में सो रहे हैं।। १ ।। रहाउ ।। वे परिवार में मोह और विषयों के रस में मस्त होकर झूठी वस्तुओं को पकड़े रहे हैं।। १ ।। जो मनोरथ मिथ्या है और जो आनन्द उल्लास सपने की तरह अस्थिर है, मन के पीछे चलने वाले लोग उन सबको ही सत्य रूप में मानते हैं।। २ ।। अमृत रूपी प्रभु का नाम व्यक्ति के साथ ही रहता है परन्तु व्यक्ति इसके रहस्य को तिल मात्र भी नहीं समझता।। ३ ।। हे नानक, वे ही प्रभु की शरण में हैं जिन्हें प्रभु ने कृपा करके सद्संगति में रखा हुआ है।। ४ ।। २ ।। १४२ ।। आसा महला ५।। तिपदे ।। मुझे तो इसी प्रियतम का प्रेम चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। सोना, रत्न, मोती, लाल मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।। १ ।। राज,

हुकम न सादन ॥ किछु किछु न चाही ॥ २ ॥ चरनन सरनन संतन बंदन ॥ सुखो सुखु पाही ॥ नानक तपति हरी ॥ मिलेप्रेम पिरी ॥ ३ ॥ ३ ॥ १४३ ॥ आसा महला ५ ॥ गुरहि दिखाइओ लोइना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि तूंही तूंही मोहिना ॥ १ ॥ कारन करना धारन धरना एकै एकै सोहिना ॥ २ ॥ संतन परसन बलिहारी दरसन नानक सुखि सुखि सोइना ॥ ३ ॥ ४ ॥ १४४ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि हरि नामु अमोला ॥ ओहु सहजि सुहेला ॥१॥ रहाउ॥ संगि सहाई छोडि न जाई ओहु अगह अतोला ॥१॥ प्रीतमु भाई बापु मोरो माई भगतन का ओल्हा ॥ २ ॥ अलखु लखाइआ गुर ते पाइआ नानक इहु हरि का चोल्हा ॥ ३ ॥ ५ ॥ १४५ ॥ आसा महला ५ ॥ आपुनी भगति निबाहि ॥ ठाकुर आइओ आहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु पदारथु होइ सकारथु हिरदै चरन बसाहि ॥ १ ॥ एह मुकता एह जुगता राखहु संत संगाहि ॥ २ ॥ नामु धिआवउ सहजि समावउ नानक हरि गुन गाहि ॥ ३ ॥ ६ ॥ १४६ ॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर चरण सुहावे ॥ हरि संतन पावे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु गवाइआ सेव कमाइआ गुन रसि रसि गावे ॥ १ ॥ एकहि आसा दरस पिआसा आन न भावे ॥ २ ॥ दइआ तुहारी किआ जंत विचारी नानक बलि बलि जावे ॥ ३ ॥ ७ ॥ १४७ ॥ आसा महला ५ ॥ एकु सिमरि मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु धिआवहु रिदै बसावहु तिसु बिनु को नाही ॥ १ ॥ प्रभ सरनी आईऐ सरब फल पाईऐ सगले दुख जाही ॥ २ ॥ जीअन को दाता पुरखु बिधाता नानक घटि घटि आही ॥ ३ ॥ ८ ॥ १४८ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि बिसरत सो मूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु धिआवै सरब फल पावै सो जनु सुखीआ हूआ ॥ १ ॥ राजु कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रमि सूआ ॥ २ ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु भेटिआ सो जनु निहचलु थीआ ॥ ३ ॥ ९ ॥ १४९ ॥

आसा महला ५ घरु १४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ओहु नेहु नवेला ॥ अपुने प्रीतम सिउ लागि रहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो प्रभ भावै जनमि न आवै ॥ हरि

अधिकार और महल भी नहीं चाहिए। इन सबमें से मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।। २ ।। हरि के चरणों की शरण प्राप्त करना और शान्त पुरुषों की वन्दना करने में मैं सुख ही सुख प्राप्त करता हूँ। हे नानक, जब मुझे प्रेम करने वाला मेरा प्रियतम मिल गया है तो मेरा संताप दूर हो गया है ।। ३ ।। ३ ।। १४३ ।। आसा महला ५।। गुरु ने ही मुझे आँखों से प्रभु दिखा दिया है।। १ ।। रहाउ ।। यहाँ-वहाँ घट-घट में हे मोहित करने वाले प्रभु, तू ही तू है।। १ ।। हे सुन्दर प्रभु, सारी सृष्टि का कारण और रचयिता तथा उसे धारण करने वाला एक तू ही है।। २ ।। संतों के स्पर्श और साथ में मै तेरे दर्शन पर बलिहारी जाता हूँ और हे नानक, पूर्ण सुख में आनन्दित होकर मैं विश्राम की अवस्था में स्थित हूँ।। ३ ।। ४ ।। १४४।। आसा महला ५।। जिसके पास अमूल्य प्रभु का नाम है वह सहज-भाव में सुखी बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। वह परमात्मा अथाह और अतुलनीय है। वह सदैव जीव का सहायक बना रहता है और उसे कभी भी छोड़ता नहीं है।। १ ।। वह प्रियतम प्रभु मेरी माँ-बाप भाई सब कुछ है तथा भक्तों को भी उसी का आसरा है।। २ ।। उस अलख को गुरु के माध्यम से प्रत्यक्ष देख लिया जाता है और हे नानक, यही परमात्मा का खेल और कौतुक है।। ३ ।। ५ ।। १४५ ।। आसा महला ५ ।। हे प्रभु, मैं तुम्हारे पास इसलिए आया हूँ कि तुम मेरी भक्ति को पूर्ण कर दो।। १ ।। रहाउ ।। नाम रूपी पदार्थ सार्थक हो जाता है जब प्रभु के चरण हृदय में आन बसते है।। १ ।। हे प्रभु, मेरे लिए यही मुक्ति और यही संसार में रहने की युक्ति है कि मुझे संतों की संगति में रहने का अवसर मिले।। २ ।। हे नानक, हरि के गुण मननपूर्वक गाते हुए नाम का सुमिरन करते हुए मैं सहज में समा जाऊँ।। ३ ।। ६ ।। १४६ ।। आसा महला ५ ।। हरि के चरण सुहावने हैं जिन्हें हरि के संतों ने ही प्राप्त किया है।। १ ।। रहाउ ।। अहम् भाव को गँवाकर सेवा की जाती है और रसपूर्वक प्रभु के गुण गाए जाते हैं।। १ ।। ऐसे व्यक्तियों की उस प्रभु के दर्शन करने की प्यास बने रहने की ही आशा है और उन्हें अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता।। २ ।। हे प्रभु, यह तुम्हारी ही दया है अन्यथा जीव बेचारा क्या कर सकता है। नानक तो तुझ पर बलिहारी जाता है।। ३ ।। ७ ।। १४७ ।। आसा महला ५।। हे जीव, केवल उस एक प्रभु का ही अपने मन में सुमिरन कर।। १ ।। रहाउ।। उसी के नाम की आराधना कर और उसे ही हृदय में बसाओ क्योंकि उसके बिना अन्य कोई भी नहीं है।। १ ।। प्रभु की शरण में आने से सभी फल प्राप्त हो जाते हैं और सारे दुख चले जाते हैं।। २ ।। जीवों का दाता वह विधाता पुरुष है। हे नानक, प्रत्येक जीव उसी में बस रहा है।। ३ ।। ८ ।। १४८ ।। आसा महला ५ ।। जिसने प्रभु को भुला दिया वह तो मर ही गया है।। १ ।। रहाउ ।। जो सेवक नाम का सुमिरन करता है वही सारे फलों को प्राप्त करता है और सुखी बना रहता है।। १ ।। वही राजा कहलाता है और जब अहंकार के वश में होकर काम करता है तो वह भ्रम में उसी प्रकार बँधा हुआ है जैसे तोता नलकी के धोखे में फँस जाता है।। २ ।। नानक का कथन है कि जिसका मिलाप सच्चे गुरु से हो गया वह सदा अटल पद को प्राप्त कर गया।। ३ ।। ९ ।। १४९ ।।

आसा महला ५ घ़रु १४   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

वही स्नेह अथवा प्रेम सदैव तरोताज़ा बना रहता है जो अपने प्रियतम प्रभु के साथ लगा रहता है।। १ ।। रहाउ ।। जो प्रभु को भा जाता है वह फिर जन्म - मरण के चक्कर में नहीं आता है ।

प्रेम भगति हरि प्रीति रचै ॥ १ ॥ प्रभ संगि मिलीजै इहु मनु दीजै ॥ नानक नामु मिलै अपनी दइआ करहु ॥ २ ॥ १ ॥ १५० ॥ आसा महला ५ ॥ मिलु राम पिआरे तुम बिनु धीरजु को न करै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंम्रिति सासत्र बहु करम कमाए प्रभ तुमरे दरस बिनु सुखु नाही ॥ १ ॥ वरत नेम संजम करि थाके नानक साध सरनि प्रभ संगि वसै ॥ २ ॥ २ ॥ १५१ ॥

आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बिकार माइआ मादि सोइओ सूझ बूझ न आवै ॥ पकरि केस जमि उठारिओ तद ही घरि जावै ॥ १ ॥ लोभ बिखिआ बिखै लागे हिरि वित चित दुखाही ॥ खिन भंगुना कै मानि माते असुर जाणहि नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही डोरा ॥ निपटि बाजी हारि मूका पछुताइओ मनि भोरा ॥ २ ॥ डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ ॥ जेंह कारजि रहै ओल्हा सोइ कामु न करिआ ॥ ३ ॥ ऐसो जगु मोहि गुरि दिखाइओ तउ एक कीरति गाइआ ॥ मानु तानु तजि सिआनप सरणि नानकु आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १५२ ॥ आसा महला ५ ॥ बापारि गोविंद नाए ॥ साध संत मनाए प्रिअ पाए गुन गाए पंच नाद तूर बजाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरपा पाए सहजाए दरसाए अब रातिआ गोविंद सिउ ॥ संत सेवि प्रीति नाथ रंगु लालन लाए ॥ १ ॥ गुर गिआनु मनि द्रिड़ाए रहसाए नही आए सहजाए मनि निधानु पाए ॥ सभ तजी मनै की काम करा ॥ चिरु चिरु चिरु चिरु भइआ मनि बहुतु पिआस लागी ॥ हरि दरसनो दिखावहु मोहि तुम बतावहु ॥ नानक दीन सरणि आए गलि लाए ॥ २ ॥ २ ॥ १५३ ॥ आसा महला ५ ॥ कोऊ बिखम गार तोरै ॥ आस पिआस धोह मोह भरम ही ते होरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मान इह बिआधि छोरै ॥ १ ॥ संतसंगि नाम रंगि गुन गोविंद गावउ ॥ अनदिनो प्रभ धिआवउ ॥ भ्रम भीति जीति मिटावउ ॥ निधि नामु नानक मोरै ॥ २ ॥ ३ ॥ १५४ ॥ आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु तिआगु ॥ मनि सिमरि गोबिंद नाम ॥ हरि भजन सफल काम ॥

वह प्रभु की प्रेम भक्ति और प्रीति में सदैव लीन बना रहता है।। १ ।। यह मन जब उसे अपर्ण कर दिया जाए तभी प्रभु के साथ मिलाप होता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, अपनी दया करो ताकि मुझे तुम्हारा नाम प्राप्त हो सके।। २ ।। १ ।। १५० ।। आसा महला ५ ।। हे प्यारे प्रभु, मुझे मिल जा क्योंकि तेरे बिना धीरज नहीं आता।। १ ।। रहाउ ।। स्मृतियों और शास्त्रों के आधार पर बहुत से कर्मकाण्ड किए हैं परन्त हे प्रभु, तुम्हारे दर्शन के बिना सुख प्राप्त नहीं होता।। १ ।। व्रत, नियम, अनेकों संयम कर के व्यक्ति थक जाता है परन्तु हे नानक, अन्ततः साधु पुरुषों की शरण में आकर ही प्रभु के साथ बसना सम्भव होता है।। २ ।। २ ।। १५१ ।।

आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जो व्यक्ति पाप और सांसारिक मोह के नशे में सोया पड़ा है उसे कुछ भी होश नहीं रहती। जब यम उसे बालों से पकड़कर उठाता है तब ही वह अपने वास्तविक घर के बारे में सावधान होता है (और पछताता है) ।। १ ।। जो विषय विकारों के लोभ में लगे हुए हैं वे दूसरों की धन-सम्पदा चुरा कर उनके हृदय को दुखाते हैं। क्षण-भर में नष्ट हो जाने वाली वस्तुओं के अभिमान में वे इतने मस्त हो जाते हैं कि राक्षस बने हुए वे कुछ भी नहीं समझते।। १ ।। रहाउ ।। वेद, शास्त्र आदि धार्मिक ग्रन्थ पुकार पुकार कर उन्हें सही मार्ग बताते हैं परन्तु बहरा व्यक्ति ज़रा भी नहीं सुनता। जब जीवन की बाज़ी पूरी की पूरी हार दी जाती है तब यह भोला जीव मन ही मन पछताता रहता है।। २ ।। सभी कर्म ऐसे व्यक्ति ने एक सज़ा के तौर पर अकारण ही किए और वे प्रभु के समक्ष किसी भी लेखे जोखे में नहीं आ सके। जिन कामों के करने से उसका कुछ पर्दा बना रहता वही काम उसने नहीं किए।। ३ ।। गुरु ने मुझे इस प्रकार का संसार दिखाया है तब मैं कहीं प्रभु की कीर्ति का गायन करने लगा हूँ। अब मैं नानक अपने सारे अभिमान, बल और चतुराई को त्याग कर प्रभु की शरण में आ गया हूँ।। ४ ।। १ ।। १५२ ।। आसा महला ५ ।। प्रभु-नाम के व्यापार के माध्यम से साधु-संतों को प्रसन्न किया जाता है, प्रियतम प्रभु को पाया जाता है, उसके गुण गाए जाते हैं और पाँचों तरह के वाद्य बजाकर नाद किया जाता है।। १ ।। रहाउ ।। उसकी कृपा से सहज-भाव में ही उसके दर्शन हो गए हैं और अब हम प्रभु के रंग में रंगे गए हैं। संतों की सेवा के माध्यम से मालिक प्रभु की प्रीति और प्यारे का प्यार लग गया है।। १ ।। गुरु का ज्ञान मन में घर कर जाने से मैं प्रसन्न हो उठा हूँ कि अब बार-बार आना नहीं होगा; अब तो सहज अवस्था प्राप्त हो गई है और मन में नाम का खज़ाना प्राप्त हो गया है। अब मन की सभी कामनाओं को मैंने त्याग दिया है। बहुत समय बीत गया है और अब मेरे बिछुड़े हुए मन में उसके दर्शन की प्यास लग गई है। हे प्रभु, मुझे बताओ कि अब मुझे कब दर्शन दिखाओगे। नानक का कथन है कि हम दीन तेरी शरण में आ गए हैं हमें अपने गले से लगा लो।। २ ।। २ ।। १५३ ।। आसा महला ५ ।। कोई ऐसा मिले जो पापों का विषम गढ़ (किला) तोड़ दे और मेरा आशाओं, तृष्णाओं, धोखे, मोह, भ्रम आदि से पीछा छुड़वा दे।। १ ।। रहाउ ।। काम, क्रोध, लोभ, अभिमान आदि रोग मुझे छोड़ जाएं।। १ ।। शान्त पुरुषों के संग में नाम के रंग में रंगा हुआ प्रभु के गुण गाऊँ और प्रतिदिन प्रभु का सुमिरन करूँ। इस प्रकार भ्रमों की दीवार तोड़कर मैं उसे मिटा दूँ। हे नानक, मेरा खज़ाना तो केवल प्रभु का ही नाम है।। २ ।। ३ ।। १५४ ।। आसा महला ५।। काम, क्रोध और लोभ को त्याग कर हे जीव, मन से प्रभु नाम का सुमिरन कर। प्रभु का भजन ही सभी काम सफल करेगा

१ ॥ रहाउ ॥ तजि मान मोह विकार मिथिआ जपि राम राम राम ॥ मन संतना के चरनि लागु ॥ १ ॥ प्रभ गोपाल दीन दइआल पतित पावन पारब्रहम हरि चरण सिमरि जागु ॥ करि भगति नानक पूरन भागु ॥ २ ॥ ४ ॥ १५५ ॥ आसा महला ५ ॥ हरख सोग बैराग अनंदी खेलु री दिखाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिनहूं भै निरभै खिनहूं खिनहू उठि धाइओ ॥ खिनहूं रस भोगन खिनहूं खिनहू तजि जाइओ ॥ १ ॥ खिनहूं जोग ताप बहु पूजा खिनहूं भरमाइओ ॥ खिनहूं किरपा साधू संग नानक हरि रंगु लाइओ ॥ २ ॥ ५ ॥ १५६ ॥

रागु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गोबिंद गोबिंद करि हां ॥ हरि हरि मनि पिआरि हां ॥ गुरि कहिआ सु चिति धरि हां ॥ अन सिउ तोरि फेरि हां ॥ ऐसे लालनु पाइओ री सखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंकज मोह सरि हां ॥ पगु नही चलै हरि हां ॥ गहडिओ मूड़ नरि हां ॥ अनिन उपाव करि हां ॥ तउ निकसै सरनि पै री सखी ॥ १ ॥ थिर थिर चित थिर हां ॥ बनु ग्रिहु समसरि हां ॥ अंतरि एक पिर हां ॥ बाहरि अनेक धरि हां ॥ राजन जोगु करि हां ॥ कहु नानक लोग अलोगी री सखी ॥ २ ॥ १ ॥ १५७ ॥ आसावरी महला ५ ॥ मनसा एक मानि हां ॥ गुर सिउ नेत धिआनि हां ॥ द्रिड़ु संत मंत गिआनि हां ॥ सेवा गुर चरानि हां ॥ तउ मिलीऐ गुर क्रिपानि मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ टूटे अन भरानि हां ॥ रविओ सरब थानि हां ॥ लहिओ जम भइआनि हां ॥ पाइओ पेड थानि हां ॥ तउ चूकी सगल कानि ॥ १ ॥ लहनो जिसु मथानि हां ॥ भै पावक पारि परानि हां ॥ निज घरि तिसहि थानि हां ॥ हरि रस रसहि मानि हां ॥ लाथी तिस भुखानि हां ॥ नानक सहजि समाइओ रे मना ॥ २ ॥ २ ॥ १५८ ॥ आसावरी महला ५ ॥ हरि हरि हरि गुनी हां ॥ जपीऐ सहज धुनी हां ॥ साधू रसन भनी हां ॥ छूटन बिधि सुनी हां ॥ पाईऐ वड पुनी मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजहि जन मुनी हां ॥ स्रब का प्रभ धनी हां ॥ दुलभ कलि दुनी हां ॥ दूख बिनासनी हां ॥ प्रभ पूरन आसनी मेरे मना ॥ १ ॥ मन सो सेवीऐ हां ॥

।। १ ।। रहाउ ।। अभिमान, मोह और झूठ आदि विकारों को त्याग कर केवल प्रभु के नाम का ही जाप कर। हे मन, तू शान्त पुरुषों के चरणों में लग जा।। १ ।। धरती का पालनहार प्रभु दीनदयालु एवं पतित पावन परब्रह्म है उस प्रभु के चरणों का होशपूर्वक सुमिरन कर। हे नानक, पूर्ण भाग्यशाली बनकर परमात्मा की भक्ति कर।। २ ।। ४ ।। १५५ ।। आसा महला ५।। खुशी, शोक, वैराग्य और आनन्द का खेल हे सखी, प्रभु ने दिखाया है।। १ ।। रहाउ।। क्षण भर में ही भय और क्षण भर में ही जीव निर्भय हो जाता है और क्षण भर में ही उठ कर चल देता है। क्षण भर में ही रसों का भोग करते हुए लोगों का खेल दिखा देता है और क्षण भर में ही सब कुछ छोड़ जाता है।। १ ।। क्षण भर में ही योगी होकर तपस्या के माध्यम से अनेक प्रकार की पूजा अर्चना करता है और क्षण भर में ही जीव भ्रमों में भटक जाता है। क्षण भर में ही प्रभु कृपा करके साधसंगति से मिला देता है और हे नानक, क्षण भर में ही वह प्रभु अपने रंग में रंग देता है।। २ ।। ५ ।। १५६ ।।

रागु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

गोबिन्द प्रभु का सुमिरन करो और मन लगाकर प्रभु से प्रेम करो। जो गुरु ने कहा है उसे चित्त में धारण करो और अन्य सबसे मोह तोड़कर मन को प्रभु की ओर फेर लो। हे सखी, इस तरह प्रियतम पाया जाता है।। १ ।। रहाउ ।। इस संसार रूपी सरोवर में मोह का कीचड़ है। मैं परमात्मा की ओर नहीं चलता। मैं मूर्ख व्यक्ति उसी कीचड़ में गड़कर फँस गया हूँ। कई उपाय कर चुका हूँ परन्तु इस कीचड़ में से निकलना तभी सम्भव होगा जब हे सखी, मैं परमात्मा की शरण में आऊँगा।। १ ।। यदि मन स्थिर होकर अडोल हो जाए और जंगल तथा घर एक समान ही लगने लग जाए तथा अन्तर्मन में केवल एक ही प्रभु प्रियतम रूप में बस जाए तथा मन के अन्दर के अनेकों विकारों को बाहर निकाल दिया जाए तभी राजयोग किया जा सकता है अर्थात संसार के धर्म-कर्म करते हुए परमात्मा के साथ जुड़ा जा सकता है। नानक का कथन है कि ऐसी स्थिति ही एक अलौकिक स्थिति होती है।। २ ।। १ ।। १५७ ।। आसावरी महला ५।। (प्रभु को मिलने की) केवल एक ही इच्छा मन में रखो। सदैव गुरु में ध्यान लगाए रखो और शान्त पुरुषों के उपदेश को याद रखने को ज्ञान बनाओ तथा गुरु के चरणों की सेवा करते रहो। यह सब करने पर ही गुरु की कृपा के माध्यम से हे मेरे मन, उस परमात्मा से मिला जाता है।। १ ।। रहाउ ।। मेरे सभी अन्य भ्रम टूट गए हैं और मैंने यह जान लिया है कि वह परमात्मा सभी स्थानों में रमण कर रहा है। यम का भय अब उतर चुका है। मैंने उस प्रभु रूपी पेड़ के नीचे स्थान को पा लिया है और इसी से मेरी समस्त मोहताजी चुक गई है।। १ ।। जिसके माथे पर इस प्रकार लेना लिखा हुआ है वह सांसारिक भय की अग्नि से पार होकर बच गया है और उसने अपने मूल ठिकाने को पा लिया है। ऐसा ही व्यक्ति रसों में श्रेष्ठ हरि-रस को माँगता है और उसकी भूख मिट जाती है। हे नानक, व्यक्ति का ऐसा बना हुआ मन सहज भाव में लीन हो जाता है।। २ ।। २ ।। १५८ ।। आसावरी महला ५।। धीरे-धीरे एक रस में लगातार प्रभु के उन गुणों का जाप करो जिन्हें सच्चे गुरु की जीभ उच्चारण करती है। सुना है कि यही मुक्त होने का साधन है जिसे बड़े पुण्यों और अच्छे भाग्य से प्राप्त किया जाता है।। १ ।। रहाउ ।। ऋषि-मुनि उस प्रभु को खोजते हैं जो सबका मालिक है। इस कलियुग में परमात्मा दुर्लभ है

अलख अभेवीऐ हां ॥ तां सिउ प्रीति करि हां ॥ बिनसि न जाइ मरि हां ॥ गुर ते जानिआ हां ॥ नानक मनु मानिआ मेरे मना ॥ २ ॥ ३ ॥ १५९ ॥ आसावरी महला ५ ॥ एका ओट गहु हां ॥ गुर का सबदु कहु हां ॥ आगिआ सति सहु हां ॥ मनहि निधानु लहु हां ॥ सुखहि समाईऐ मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवत जो मरै हां ॥ दुतरु सो तरै हां ॥ सभ की रेनु होइ हां ॥ निरभउ कहउ सोइ हां ॥ मिटे अंदेसिआ हां ॥ संत उपदेसिआ मेरे मना ॥ १ ॥ जिसु जन नाम सुखु हां ॥ तिसु निकटि न कदे दुखु हां ॥ जो हरि हरि जसु सुने हां ॥ सभु को तिसु मंने हां ॥ सफलु सु आइआ हां ॥ नानक प्रभ भाइआ मेरे मना ॥ २ ॥ ४ ॥ १६० ॥ आसावरी महला ५ ॥ मिलि हरि जसु गाईऐ हां ॥ परम पदु पाईऐ हां ॥ उआ रस जो बिधे हां ॥ ता कउ सगल सिधे हां ॥ अनदिनु जागिआ हां ॥ नानक बडभागिआ मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत पग धोईऐ हां ॥ दुरमति खोईऐ हां ॥ दासह रेनु होइ हां ॥ बिआपै दुखु न कोइ हां ॥ भगतां सरनि परु हां ॥ जनमि न कदे मरु हां ॥ असथिरु से भए हां ॥ हरि हरि जिन्ह जपि लए मेरे मना ॥ १ ॥ साजनु मीतु तूं हां ॥ नामु द्रिड़ाइ मूं हां ॥ तिसु बिनु नाहि कोइ हां ॥ मनहि अराधि सोइ हां ॥ निमख न वीसरै हां ॥ तिसु बिनु किउ सरै हां ॥ गुर कउ कुरबानु जाउ हां ॥ नानकु जपे नाउ मेरे मना ॥ २ ॥ ५ ॥ १६१ ॥ आसावरी महला ५ ॥ कारन करन तूं हां ॥ अवरु ना सूझै मूं हां ॥ करहि सु होईऐ हां ॥ सहजि सुखि सोईऐ हां ॥ धीरज मनि भए हां ॥ प्रभ कै दरि पए मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संगमे हां ॥ पूरन संजमे हां ॥ जब ते छूटे आप हां ॥ तब ते मिटे ताप हां ॥ किरपा धारीआ हां ॥ पति रखु बनवारीआ मेरे मना ॥ १ ॥ इहु सुखु जानीऐ हां ॥ हरि करे सु मानीऐ हां ॥ मंदा नाहि कोइ हां ॥ संत की रेन होइ हां ॥ आपे जिसु रखै हां ॥ हरि अंम्रितु सो चखै मेरे मना ॥ २ ॥ जिस का नाहि कोई हां ॥ तिस का प्रभू सोइ हां ॥ अंतरगति बुझै हां ॥ सभु किछु तिसु सुझै हां ॥ पतित उधारि लेहु हां ॥ नानक अरदासि एहु मेरे मना ॥ ३ ॥ ६ ॥ १६२ ॥ आसावरी महला ५ इकतुका ॥ ओइ परदेसीआ हां ॥ सुनत संदेसिआ हां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा सिउ रचि

जो दुखों का नाश करता है। प्रभु मन की सभी आशाओं को पूर्ण करने वाला है।। १ ।। हे मन, उसका सुमिरन करो जो अलख और रहस्यपूर्ण है; उससे प्रेम करो जो न तो विनष्ट होता है और न मरता है। ऐसे प्रभु को गुरु से मैंने जब जाना तो हे नानक, मेरा मन संतुष्ट हो गया।। २ ।। ३ ।। १५६ ।। आसावरी महला ५ ।। केवल एक प्रभु का ही आसरा लो और गुरु के वचनों का ही कथन करो। गुरु की आज्ञा को सत्य मानकर धारण करो तो मन में ही सभी सुखों का खज़ाना प्राप्त कर लो। हे मन, इस प्रकार सुख में लीन बना रहा जा सकता है।। १ ।। रहाउ ।। जो विषय-विकारों के प्रति जीवन में ही मर जाते हैं वे ही भयानक न पार किया जा सकने वाला संसार-सागर तैर जाते हैं। जो सब की चरण-धूलि बन जाते हैं वे ही निर्भय कहे जाते हैं। उनके सभी डर मिट जाते हैं जिन्हें हे मेरे मन, शान्त पुरुष उपदेश देते हैं।। १ ।। जिस सेवक को नाम का सुख प्राप्त हो गया है उसके पास फिर दुःख कभी नहीं आता। जिन्होंने हरि-यश को सुना है सभी उनका मान-सम्मान करते हैं। संसार में उसी का आना सफल होता है और हे नानक, वह ही प्रभु को भाता है।। २ ।। ४ ।। १६० ।। आसावरी महला ५।। मिल बैठकर प्रभु के यश का गायन करो और इस प्रकार परम पद को प्राप्त करो। जो प्रभु के रस में लीन हो गए हैं उनको सभी सिद्धियां प्राप्त हो गई हैं। हे नानक, ऐसे लोग बड़े भाग्य वाले हैं और सदैव सचेत बने रहते है।। १ ।। रहाउ।। शान्त पुरुषों के चरण धोओ और इस प्रकार दुर्मति को खो दो। प्रभु के सेवकों की चरण धूलि हो जाओ जिससे कोई भी दुख व्याप्त नहीं होगा। भक्तजनों की शरण में आ जाओ जिससे न तो कभी मरना होगा और न ही पुनः जन्मना होगा। ऐसे व्यक्ति जिन्होंने मन से प्रभु का सुमिरन कर लिया है वे स्थिर बुद्धि वाले हो गए हैं।। १ ।। हे प्रभु, तुम ही सज्जन और मित्र हो; तुम ही मुझे अपने नाम का सुमिरन करवाओ। उस प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं है इसलिए हे जीव, तू मन से उसकी आराधना कर। तू क्षण भर के लिए भी उसे मत भुला क्योंकि उसके बिना कैसे गुज़ारा हो सकता है। गुरु पर बलिहारी जाना चाहिए और नानक तो प्रभु के नाम का ही मन से सुमिरन करता है।। २ ।। ५ ।। १६१ ।। आसावरी महला ५।। सब कार्यों का कारण, हे प्रभु, तू ही है और मुझे तो अन्य कोई सुझाई नहीं देता। तू जो करता है वही होता है और तेरे ही कारण सहज भाव के सुख में सोया जाता है।। तेरे कारण मन को धैर्य आ जाता है और इसीलिए हम प्रभु के द्वार पर आन पड़े हैं।। १ ।। रहाउ ।। साधुजनों की संगति में पूर्ण तरीके से मन और इन्द्रियों को काबू में रख पाने का संयम आ गया है। जब से मेरा अभिमान छूट गया है तब से मेरे सभी दुख मिट गए हैं। मुझ पर कृपा धारण करो और हे परमात्मा, मेरे सम्मान की रक्षा करो।। १ ।। इसी बात में सुख जानो कि जो प्रभु करता है उसे माना जाए। साधु पुरुषों की चरण धूलि बन जाएं और यह भी मानें कि कोई बुरा नहीं है। प्रभु जिसे स्वयं रखता है अर्थात चाहता है वही हरि रूपी अमृत का स्वाद चख पाता है।। २ ।। जिसका कोई भी आसरा नहीं होता वह प्रभु ही उसका आसरा होता है। वही अन्तर्मन की बातों को बूझने वाला है और उसे ही सब कुछ सुझाई देता है। हे नानक, मेरे मन की यही अरदास है कि प्रभु तू पतित लोगों का उद्धार कर दे।। ३ ।। ६ ।। १६२ ।। आसावरी महला ५ एक पंक्ति वाला।। हे प्राणी, तू तो यहाँ परदेसी है और तू प्रभु के सन्देश को ध्यान से सुन।। १ ।। रहाउ ।। जिस माया में तू लीन

रहे हां ॥ सभ कउ तजि गए हां ॥ सुपना जिउ भए हां ॥ हरि नामु जिन्हि लए ॥ १ ॥ हरि तजि अन लगे हां ॥ जनमहि मरि भगे हां ॥ हरि हरि जनि लहे हां ॥ जीवत से रहे हां ॥ जिसहि क्रिपालु होइ हां ॥ नानक भगतु सोइ ॥ २ ॥ ७ ॥ १६३ ॥ २३२ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ९ ॥

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥ लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥ दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥ १ ॥ मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥ नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥ २ ॥ १ ॥ २३३ ॥

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

उतरि अवघटि सरवरि न्हावै ॥ बकै न बोलै हरि गुण गावै ॥ जलु आकासी सुंनि समावै ॥ रसु सतु झोलि महा रसु पावै ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु सुनहु अभ मोरे ॥ भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु ब्रतु नेमु न कालु संतावै ॥ सतिगुर सबदि करोधु जलावै ॥ गगनि निवासि समाधि लगावै ॥ पारसु परसि परम पदु पावै ॥ २ ॥ सचु मन कारणि ततु बिलोवै । सुभर सरवरि मैलु न धोवै ॥ जै सिउ राता तैसो होवै ॥ आपे करता करे सु होवै ॥ ३ ॥ गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै ॥ सेवा सुरति बिभूत चड़ावै ॥ दरसनु आपि सहज घरि आवै ॥ निरमल बाणी नादु वजावै ॥ ४ ॥ अंतरि गिआनु महा रसु सारा ॥ तीरथ मजनु गुर वीचारा ॥ अंतरि पूजा थानु मुरारा ॥ जोती जोति मिलावणहारा ॥ ५ ॥ रसि रसिआ मति एकै भाइ ॥ तखत निवासी पंच समाइ ॥ कार कमाई खसम रजाइ ॥ अविगत नाथु न लखिआ जाइ ॥ ६ ॥ जल महि उपजै जल ते दूरि ॥ जल महि जोति रहिआ भरपूरि ॥ किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥ निधि गुण गावा देखि हदूरि ॥ ७ ॥ अंतरि बाहरि अवरु न

हो रहा है उसे अनेकों लोग यहीं छोड़कर चले गए हैं और सपने की तरह अलोप हो गए हैं। तू प्रभु का नाम क्यों नहीं याद करता।। १ ।। प्रभु को त्याग कर व्यक्ति अन्य पदार्थों में लगा है। यह जन्मता-मरता, भागता-दौड़ता रहता है। प्रभु का सेवक ही प्रभु को प्राप्त करता है और वही वास्तविक जीवन जीता रहता है।। जिस पर प्रभु कृपा करता है, हे नानक, वास्तव में वही भक्त के रूप में जाना जाता है।। २ ।। ७ ।। १६३ ।। २३२ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।। रागु आसा महला ६

मैं अपने मन की पीड़ा किससे कहूँ क्योंकि मेरा मन लोभ से ग्रस्त होकर दसों दिशाओं में धन की आशा में दौड़ता फिर रहा है।। १ ।। रहाउ ।। सुख पाने के लिए वह बहुत कष्ट उठाता है और छोटे बड़े सब की सेवा में लगा रहता है। वह कुत्ते की तरह द्वार-द्वार पर भटकता रहता है और उसे परमात्मा के सुमिरन की कभी भी याद नहीं आती।। १ ।। उसे लोगों के हँसने पर भी लज्जा का अनुभव नहीं होता और वह अपने मानव-जन्म को निरर्थक ही खो देता है। हे नानक, वह प्रभु के यश का गायन क्यों नहीं करता जिससे उसके शरीर की दुर्मति विनष्ट हो जाए।। २ ।। १ ।। २३३ ।।

रागु आसा महला १ अष्टपदियां घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

विषय-विकारों की कठिन घाटी से नीचे उतर कर जीव यदि सतसंग के सरोवर में स्नान करे, व्यर्थ का प्रलाप न करे तथा परमात्मा के गुणों का ही गायन करे तो जिस प्रकार जल वायु-मण्डल में ही समाया रहता है उसी प्रकार सच्चा योगी भी शून्य ब्रह्म में लीन बना रहता है। ऐसा योगी ही प्रभु-नाम के सच्चे रस का मन्थन करके उसका पान करता है और सबसे बड़ा आनन्द प्राप्त करता है।। १ ।। हे मेरे अन्तःकरण, तू इस बात को जान ले कि वह प्रभु सर्वत्र व्याप्त है और सबको धारण किए हुए है।। १ ।। रहाउ ।। यदि सत्य रूपी व्रत को नियमित रूप से धारण कर ले तो व्यक्ति को काल का डर नहीं सताता। ऐसा व्यक्ति सच्चे गुरु के उपदेश के माध्यम से क्रोध को जला देता है। यदि वह दशम द्वार में निवास करके समाधि में लीन हो जाए तो वह प्रभु-नाम के पारस का स्पर्श करके परम-पद को प्राप्त कर लेता है।। २ ।। मन को स्वच्छ करने के लिए वह तत्व रूपी मक्खन को बिलोये और भली प्रकार से भरे हुए नाम के सरोवर में स्नान करे और अपने मन की मैल को धो ले; इस प्रकार जिस प्रभु से उसने प्रेम लगाया है वह उसी के जैसा हो जाएगा। जीव प्रभु की रज़ा में ही रहे और यह माने कि जो कुछ होना है वह प्रभु ने ही करना है।। ३ ।। हिम (बर्फ) की भाँति शीतलता देने वाला गुरु मन की अग्नि को बुझा देता है। सच्चा योगी सेवा करने की भावना रूपी भभूति को शरीर में लगाए। वह अपने अन्तर्मन का दर्शन करे अर्थात मन में उठ रही वृत्तियों को ध्यान से देखे और उन्हें छोड़ता हुआ सहज भाव में टिक जाए। प्रभु की निर्मल वाणी का ही सिंगी रूपी वाद्य बजाता रहे।। ४।। अन्तर्मन का ज्ञानवान होना ही महा-रस के सार तत्व का आनन्द लेने के समान है। गुरु के उपदेश का चिन्तन करना ही योगी के लिए तीर्थों पर स्नान करना है। अन्तर्मन से सदैव उसकी पूजा अर्चना करते रहना ही परमात्मा के स्थान के प्राप्त करने के समान है। वह परमात्मा ही अपनी ज्योति में जीव की ज्योति को मिला लेने वाला है।। ५ ।। जिसने केवल एक परमात्मा के आनन्द में अपनी बुद्धि को भर रखा है वही वास्तव में उस प्रभु के रस-रंग में रंगा हुआ है। वह सिंहासन पर बैठने वाले प्रमुख व्यक्ति में भी समाया हुआ है क्योंकि ऐसा पंच व्यक्ति उस प्रभु की रज़ा में की कार्य करता है। वह सबका स्वामी अव्यक्त है और उसे देखा नहीं जा सकता।। ६ ।। जिस प्रकार जल में कमल उत्पन्न होकर भी जल से दूर बना रहता है उसी तरह वह प्रभु भी संसार रूपी जल में ज्योति स्वरूप बनकर सब में व्याप्त है। अतः कैसे कहा जाए कि कौन उसके पास है और कौन उससे दूर है। मैं तो उस गुणों के भण्डार प्रभु को अपने आस पास प्रत्यक्ष देखकर ही उसके गुण गाता रहता हूँ।। ७ ।। अन्दर-बाहर परमात्मा के अतिरिक्त अन्य

कोइ ॥ जो तिसु भावै सो फुनि होइ ॥ सुणि भरथरि नानकु कहै बीचारु ॥ निरमल नामु मेरा आधारु ॥ ८ ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥ सभि जप सभि तप सभ चतुराई ॥ ऊझड़ि भरमै राहि न पाई ॥ बिनु बूझे को थाइ न पाई ॥ नाम बिहूणै माथे छाई ॥ १ ॥ साच धणी जगु आइ बिनासा ॥ छूटसि प्राणी गुरमुखि दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगु मोहि बाधा बहुती आसा ॥ गुरमती इकि भए उदासा ॥ अंतरि नामु कमलु परगासा ॥ तिन्ह कउ नाही जम की त्रासा ॥ २ ॥ जगु त्रिअ जितु कामणि हितकारी ॥ पुत्र कलत्र लगि नामु विसारी ॥ बिरथा जनमु गवाइआ बाजी हारी ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ ३ ॥ बाहरहु हउमै कहै कहाए ॥ अंदरहु मुकतु लेपु कदे न लाए ॥ माइआ मोहु गुर सबदि जलाए ॥ निरमल नामु सद हिरदै धिआए ॥ ४ ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ सिख संगति करमि मिलाए ॥ गुर बिनु भूलो आवै जाए ॥ नदरि करे संजोगि मिलाए ॥ ५ ॥ रूड़ो कहउ न कहिआ जाई ॥ अकथ कथउ नह कीमति पाई ॥ सभ दुख तेरे सूख रजाई ॥ सभि दुख मेटे साचै नाई ॥ ६ ॥ कर बिनु वाजा पग बिनु ताला ॥ जे सबदु बुझै ता सचु निहाला ॥ अंतरि साचु सभे सुख नाला ॥ नदरि करे राखै रखवाला ॥ ७ ॥ त्रिभवण सूझै आपु गवावै ॥ बाणी बूझै सचि समावै ॥ सबदु वीचारे एक लिव तारा ॥ नानक धंनु सवारणहारा ॥ ८ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ लेख असंख लिखि लिखि मानु ॥ मनि मानिऐ सचु सुरति वखानु ॥ कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु ॥ लेख असंख अलेखु अपारु ॥ १ ॥ ऐसा साचा तूं एको जाणु ॥ जंमणु मरणा हुकमु पछाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहि जगु बाधा जमकालि ॥ बांधा छूटै नामु सम्हालि ॥ गुरु सुखदाता अवरु न भालि ॥ हलति पलति निबही तुधु नालि ॥ २ ॥ सबदि मरै तां एक लिव लाए ॥ अचरु चरै तां भरमु चुकाए ॥ जीवन मुकतु मनि नामु वसाए ॥ गुरमुखि होइ त सचि समाए ॥ ३ ॥ जिनि धर साजी गगनु अकासु ॥ जिनि सभ थापी थापि उथापि ॥ सरब निरंतरि आपे आपि ॥ किसै न पूछे बखसे आपि ॥ ४ ॥ तू पुरु सागरु माणक हीरु ॥ तू निरमलु सचु गुणी गहीरु ॥

कोई नहीं है और जो उसे भाता है वही बार-बार होता है। हे भरथरी योगी, नानक जो विचार करके तुझसे कह रहा है तू उसे सुन कि मेरा आधार तो केवल परमात्मा का पवित्र नाम ही है।। ८ ।। १ ।। आसा महला १ ।। सभी जाप, सभी तपस्याएं और सभी चतुराईयां उस उजाड़ जंगल में भटकने के समान है जहाँ कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता। परमात्मा को जाने बिना कोई भी परिश्रम सफल नहीं होता। जो व्यक्ति प्रभु-नाम से विहीन है उसके सिर में राख ही पड़ती है।। १ ।। केवल वह मालिक प्रभु ही सत्य स्वरूप है तथा यह सारा जगत् जन्मता-मरता विनष्ट होता रहता है। प्राणी गुरमुख और प्रभु का सेवक बनकर ही मुक्ति प्राप्त करता है।। १ ।। रहाउ ।। अनेक आशाएं लगाता हुआ यह संसार मोह में बँधा हुआ है। गुरु की मति में चलकर ही व्यक्ति वास्तव में संसार में रहता हुआ भी मोह में नहीं बंधता और उदासीन बना रहता है। जिनके अन्तर्मन में प्रभु-नाम रूपी कमल खिल चुका है उन्हें यम का कोई भी डर नहीं रहता।। २ ।। यह सारा संसार स्त्री के मोह ने ही जीता हुआ है और व्यक्ति को सुन्दर स्त्री ही मोहित किए रहती है। वह पुत्र और स्त्री के मोह में लगा रहकर प्रभु-नाम को भुला देता है। ऐसे व्यक्ति ने व्यर्थ में ही जन्म गंवा लिया और जीवन की बाज़ी हार ली है। यदि वह सच्चे गुरु का सुमिरन करता है तो उसका यही करना उत्तम है।। ३ ।। सच्चे गुरु का सुमिरन करने वाला गुरमुख बेशक अत्यधिक कार्यशील बना हुआ बाहर से अहम्पूर्ण दिखाई दे सकता है परन्तु अन्तर्मन से वह सदैव मुक्त बना रहता है और कभी भी मन में अहंकार की भावना नहीं लाता। शब्द-गुरु माया मोह को जला देता है और व्यक्ति सदैव हृदय में प्रभु के निर्मल नाम की आराधना करता रहता है।। ४ ।। वह मन को भटकने से रोक लेता है और ऐसे सिक्खों की संगति प्रभु की कृपा से ही मिलती है। व्यक्ति गुरु के बिना भूलता भटकता हुआ आवागमन में पड़ा रहता है। प्रभु जब कृपादृष्टि करता है तो मिलाप का संयोग बना देता है।। ५ ।। प्रभु के सौन्दर्य को कहना चाहता हूँ परन्तु उसका कथन नहीं हो सकता है। उस अकथनीय प्रभु का वर्णन नहीं किया जा सकता और न ही उसका मूल्य आंका जा सकता है। सभी दुःख तेरी रज़ा को मानने से सुख बन गए और सभी दुःख सच्चे नाम की कृपा से मिट गए हैं।। ६ ।। यदि प्रभु-नाम की समझ बुद्धि प्राप्त हो जाए तो सचमुच ही व्यक्ति तृप्त हो जाता है। तब तो हाथों के बिना ही वाद्य बजने लगता है और पाँव के बिना ही नृत्य का ताल पूरा होता रहता है। जब अन्तर्मन में सत्य आन बसता है तो उसके साथ ही सभी सुख भी आ जाते हैं। वह प्रभु कृपा-दृष्टि करके रक्षक की तरह हमारी रक्षा करता है।। ७ ।। यदि शब्द का चिन्तन करते हुए केवल एक में ही लौ लगाई जाए तो हे नानक, ऐसे व्यक्ति को बुद्धि प्रदान करने वाला वह प्रभु धन्य है।। ८ ।। २।। आसा महला १ ।। अनेकों ही लेख पुस्तक और विचार रूप में लिखे जाते हैं और उन पर गर्व किया जाता है; परन्तु यदि वास्तव में मन को विश्वास बंध जाए तब ही सत्य का वर्णन सच्ची सुरति से हो सकता है अन्यथा वर्णन करना मुँह से बोले जाना अथवा केवल अध्ययन किए जाना एक बोझ से ज्यादा कुछ भी नहीं है क्योंकि उसके बारे में लेख तो असंख्य हैं परन्तु प्रभु इन सब लेखों से परे है।। १ ।। हे जीव, ऐसा सत्य तू जान ले कि ऐसा सत्य प्रभु एक ही है। तू आवागमन के मर्म को समझ और प्रभु के हुकम की पहचान कर।। १ ।। रहाउ ।। यम काल ने संसार को माया और मोह में बाँधा हुआ है। यह बँधा हुआ संसार केवल प्रभु-नाम को मन में संभालने अर्थात उसका सुमिरन करने से ही छूट सकता है। हे जीव, गुरु के अतिरिक्त अन्य किसी सुखदाता की खोज मत कर क्योंकि यही इस लोक और परलोक में तेरे साथ निभेगा।। २ ।। शब्द के अन्तर्गत यदि जीव विकारों की ओर से मृत हो जाए तभी इसकी लौ उस एक प्रभु में लगती है। जब यह न खाए जा सकने वाले अर्थात न मिटाए जा सकने वाले काम, क्रोध आदि को नष्ट कर दे तभी इसका भ्रम दूर होता है। प्रभु का नाम मन में बसाने से ही व्यक्ति जीवन में ही मुक्त हो जाता है और गुरमुख होकर ही सत्य में समाहित होता है।। ३ ।। जिसने यह धरती और आकाश का सृजन किया है; जिसने प्रत्येक वस्तु की स्थापना की है और जो बनाकर जड़ से उखाड़ भी देता है वह प्रभु स्वयं ही भली प्रकार सब में विद्यमान बना हुआ है। वह स्वयं ही क्षमा कर देता है और ऐसा करने के लिए उसे किसी से भी कुछ पूछना नहीं पड़ता।। ४ ।। हे प्रभु, तू भरपूर समुद्र है, तू ही माणिक एवं हीरा है, तू ही पवित्र सत्य और गहन गुणों का पुंज है।

सुखु मानै भेटै गुर पीरु ॥ एको साहिबु एकु वजीरु ॥ ५ ॥ जगु बंदी मुकते हउ मारी ॥ जगि गिआनी विरला आचारी ॥ जगि पंडितु विरला वीचारी ॥ बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै अहंकारी ॥ ६ ॥ जगु दुखीआ सुखीआ जनु कोइ ॥ जगु रोगी भोगी गुण रोइ ॥ जगु उपजै बिनसै पति खोइ ॥ गुरमुखि होवै बूझै सोइ ॥ ७ ॥ महघो मोलि भारि अफारु ॥ अटल अछलु गुरमती धारु ॥ भाइ मिलै भावै भइकारु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ ८ ॥ ३ ॥ आसा महला १ ॥ एकु मरै पंचे मिलि रोवहि ॥ हउमै जाइ सबदि मलु धोवहि ॥ समझि सूझि सहज घरि होवहि ॥ बिनु बूझे सगली पति खोवहि ॥ १ ॥ कउणु मरै कउणु रोवै ओही ॥ करण कारण सभसै सिरि तोही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूए कउ रोवै दुखु कोइ ॥ सो रोवै जिसु बेदन होइ ॥ जिसु बीती जाणै प्रभ सोइ ॥ आपे करता करे सु होइ ॥ २ ॥ जीवत मरणा तारे तरणा ॥ जै जगदीस परम गति सरणा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ गुरु बोहिथु सबदि भै तरणा ॥ ३ ॥ निरभउ आपि निरंतरि जोति ॥ बिनु नावै सूतकु जगि छोति ॥ दुरमति बिनसै किआ कहि रोति ॥ जनमि मूए बिनु भगति सरोति ॥ ४ ॥ मूए कउ सचु रोवहि मीत ॥ त्रै गुण रोवहि नीता नीत ॥ दुखु सुखु परहरि सहजि सुचीत ॥ तनु मनु सउपउ क्रिसन परीति ॥ ५ ॥ भीतरि एकु अनेक असंख ॥ करम धरम बहु संख असंख ॥ बिनु भै भगती जनमु बिरंथ ॥ हरि गुण गावहि मिलि परमारंथ ॥ ६ ॥ आपि मरै मारे भी आपि ॥ आपि उपाए थापि उथापि ॥ स्रिसटि उपाई जोती तू जाति ॥ सबदु वीचारि मिलणु नही भ्राति ॥ ७ ॥ सूतकु अगनि भखै जगु खाइ ॥ सूतकु जलि थलि सभ ही थाइ ॥ नानक सूतकि जनमि मरीजै ॥ गुर परसादी हरि रसु पीजै ॥ ८ ॥ ४ ॥ रागु आसा महला १ ॥ आपु वीचारै सु परखै हीरा ॥ एक द्रिसटि तारे गुर पूरा ॥ गुरु मानै मन ते मनु धीरा ॥ १ ॥ ऐसा साहु सराफी करै ॥ साची नदरि एक लिव तरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूंजी नामु निरंजन सारु ॥ निरमलु साचि रता पैकारु ॥ सिफति सहज घरि गुरु करतारु ॥ २ ॥ आसा मनसा सबदि जलाए ॥ राम नराइणु कहै कहाए ॥ गुर ते वाट महलु

हे प्रभु, जो तुझे ही गुरु और पीर समझ कर मिलता है वही सुख प्राप्त करता है। तू स्वयं ही राजा है और स्वयं ही अपना वज़ीर भी है।। ५ ।। सारा संसार गुलामी में पड़ा हुआ है परन्तु मुक्त वही है जिसने अपने अहंकार को मार लिया है। ज्ञानवान अर्थात सूचना रखने वाला तो सारा ही संसार है परन्तु अपने ज्ञान को आचरण में ढालने वाला कोई बिरला ही होता है। जग में पंडित अर्थात विद्वान तो बहुत हैं परन्तु विद्या का गहन् भाव से विचार चिन्तन करने वाला कोई बिरला ही होता है। सच्चे गुरु से मिलाप के बिना सभी अपने-अपने अहंकार में ही भटकते फिरते हैं।। ६ ।। सारा संसार दुखी है और इसमें कोई प्रभु का सेवक ही सुखी है। सारा संसार रोगी और भोगी है और गुण विहीन होने से रोता रहता है। संसार अपना सम्मान गँवाकर पैदा होता और विनष्ट होता रहता है। यदि कोई गुरमुख बन जाए तो ही वह इस रहस्य को बूझ सकता है।। ७ ।। प्रभु का मूल्य अर्थात बड़प्पन बहुत बड़ा है और उसके गुणों का भार भी अनन्त है। वह अटल है, न छला जा सकने वाला है परन्तु गुरु की मति के माध्यम से ही उसे धारण किया जा सकता है। वह प्रेम भाव से ही मिलता है उसे भयपूर्ण अर्थात अनुशासन का जीवन ही भाता है। निम्न श्रेणी में गिना जाने वाला नानक इस उपर्यक्त विचार का कथन कर रहा है।। ८ ।। ३ ।। आसा महला १।। जब एक व्यक्ति मरता है तो पाँचों सम्बन्धी अर्थात माता, पिता, भाई, स्त्री, पुत्र आदि इकट्ठा होकर उसे रोते हैं और अपने आप को असहाय अनुभव करते हैं परन्तु यदि व्यक्ति के अहंकार की मैल शब्द के माध्यम से धो ली जाए तो उसे रोने की जरूरत नहीं पड़ती। फिर व्यक्ति को सांसारिक प्रपंचों की सूझ बुद्धि प्राप्त हो जाती है और वह सहज भाव में स्थित हो जाता है। इस सारे रहस्य को समझे बिना वह अपने पूरे मान-सम्मान को खोता रहता है।। १ ।। इस संसार में कौन मरता है और भला उसे रोने वाला भी अन्य कौन है। हे कारण और कार्य करने वाले प्रभु, सबके सिर पर तू ही है।। १ ।। रहाउ।। मरे हुए व्यक्ति के वास्तविक दुःख में तो कोई ही रोता है। दरअसल रोता वही है जिसके अपने अन्दर पीड़ा होती है। जिस पर जो भी बीतता है वह प्रभु सब कुछ जानता है। वह कर्ता-प्रभु जो करता है वही होता है।। २ ।। यदि प्रभु पार करना चाहे तो विकारों के प्रति मर कर ही तैर कर संसार सागर को पार किया जा सकता है। हे जगत के स्वामी, तेरी जय हो क्योंकि तेरी शरण में ही उत्तम पदवी प्राप्त होती है। मैं तो सच्चे गुरु के चरणों पर बलिहारी जाता हूँ क्योंकि तेरी शरण में ही उत्तम पदवी प्राप्त होती है। मैं तो सच्चे गुरु के चरणों पर बलिहारी जाता हूँ क्योंकि गुरु ही जहाज है और गुरु के शब्द के माध्यम से ही भवसागर को तैरकर पार किया जाता है।। ३ ।। प्रभु स्वयं निर्भय है और एक ऐसी ज्योति है जो निरन्तर विद्यमान बनी रहती है। उस प्रभु के नाम के बिना सारा संसार ही अपवित्र है। सारा संसार दुर्मति के कारण ही विनष्ट होता है तो फिर भला क्या-क्या कहकर यह रोता है (क्योंकि दोष तो इसका अपना ही होता है)। भक्ति की अन्तर-लहर को सुने बिना इस संसार के लोग जन्मते और मरते रहते हैं।। ४ ।। मरे हुए व्यक्ति के लिए वास्तव में तो उसके मित्र ही रोते हैं अन्यथा तीनों गुणों में फँसे हुए अन्य संसारी लोग तो केवल रोने के लिए ही रोज़ रोते हैं। व्यक्ति को यह चाहिए कि वह दुख-सुख को त्याग कर चित्त में सहज भाव धारण करे और प्रभु के प्रेम के लिए तन, मन अर्पण कर दे।। ५ ।। प्रभु तो अन्तर्मन में एक ही है परन्तु बाहर संसार में अनेकों ही जीव विद्यमान हैं। इसी प्रकार धर्मों-कर्मों की भी संख्या अनगिनत है। प्रेम-भक्ति के बिना व्यक्ति का जन्म व्यर्थ है इसीलिए परमार्थ को चाहने वाले मिल बैठ कर संगति रूप में प्रभु के गुण गाते हैं।। ६ ।। प्रभु ही सब कुछ है क्योंकि वह आप ही मरता है और आप ही मारता भी है; वह स्वयं ही उत्पन्न करता है, स्थापना करता है तथा स्वयं ही नाश भी कर देता है। हे प्रभु, तूने ही सृष्टि को उत्पन्न किया और इसमें अपनी ज्योति को स्थापित किया है। तुझसे शब्द के चिन्तन के फलस्वरूप ही मिला जा सकता है अन्यथा सब भ्रान्ति ही भ्रान्ति है।। ७ ।। वास्तविक अपवित्रता तृष्णा रूपी अग्नि है जो सारे संसार को खाए जा रही है और यह अपवित्रता जल-थल अर्थात सभी स्थानों पर ही है। इस अपवित्रता में ही सबका जन्म-मरण होता है परन्तु गुरु की कृपा से ही प्रभु-नाम के रस को पीकर पवित्र हुआ जाता है।। ८ ।। ४।। रागु आसा महला १।। जो स्वयं का चिन्तन करके अपने मूल स्वरूप को जान लेता है वही प्रभु-नाम रूपी हीरे की वास्तविकता को पहचानता है। पूर्ण गुरु तो एक नज़र में ही जीव को पार उतार देता है। गुरु यदि प्रसन्न हो जाए तो मन के माध्यम से ही मन को धैर्य मिल जाता है।। १ ।। प्रभु ऐसा साहूकार है और इस प्रकार के कारोबार करता है कि उसकी कृपा की दृष्टि से व्यक्ति की एक रस लौ लग जाती है और व्यक्ति संसार सागर से पार उतर जाता है।। १ ।। रहाउ ।। निरंजन प्रभु का सार तत्व नाम ही व्यक्ति की पूँजी है। गुरु का सिक्ख मैल रहित सत्य में रंगा हुआ ऐसा व्यक्ति है जो पैकार (पंकार) बनकर राख में से सोने-चाँदी को अलग कर लेता है। गुरु रूपी परमात्मा गुणानुवाद और सहज-भाव में अन्तर्मन में ही मिल जाता है।। २ ।। व्यक्ति को चाहिए कि अपनी आशाओं और इच्छाओं को शब्द के माध्यम से जला कर राख कर दे और नारायण प्रभु का सुमिरन करे और सुमिरन करवाए। गुरु से ही परमात्मा के स्थान और उसके रास्ते

धरु पाए ॥ ३ ॥ कंचन काइआ जोति अनूपु ॥ त्रिभवण देवा सगल सरूपु ॥ मै सो धनु पलै साचु अखूटु ॥ ४ ॥ पंच तीनि नव चारि समावै ॥ धरणि गगनु कल धारि रहावै ॥ बाहरि जातउ उलटि परावै ॥ ५ ॥ मूरखु होइ न आखी सूझै ॥ जिहवा रसु नही कहिआ बूझै ॥ बिखु का माता जग सिउ लूझै ॥ ६ ॥ ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥ गुण कउ धावै अवगण धोवै ॥ बिनु गुर सेवे सहजु न होवै ॥ ७ ॥ हीरा नामु जवेहर लालु ॥ मनु मोती है तिस का मालु ॥ नानक परखै नदरि निहालु ॥ ८ ॥ ५ ॥ आसा महला १ ॥ गुरमुखि गिआनु धिआनु मनि मानु ॥ गुरमुखि महली महलु पछानु ॥ गुरमुखि सुरति सबदु नीसानु ॥ १ ॥ ऐसे प्रेम भगति वीचारी ॥ गुरमुखि साचा नामु मुरारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहिनिसि निरमलु थानि सुथानु ॥ तीन भवन निहकेवल गिआनु ॥ साचे गुर ते हुकमु पछानु ॥ २ ॥ साचा हरखु नाही तिसु सोगु ॥ अंम्रितु गिआनु महा रसु भोगु ॥ पंच समाई सुखी सभु लोगु ॥ ३ ॥ सगली जोति तेरा सभु कोई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े सोई ॥ आपे करता करे सु होई ॥ ४ ॥ ढाहि उसारे हुकमि समावै ॥ हुकमो वरतै जो तिसु भावै ॥ गुर बिनु पूरा कोइ न पावै ॥ ५ ॥ बालक बिरधि न सुरति परानि ॥ भरि जोबनि बूडै अभिमानि ॥ बिनु नावै किआ लहसि निदानि ॥ ६ ॥ जिस का अनु धनु सहजि न जाना ॥ भरमि भुलाना फिरि पछुताना ॥ गलि फाही बउरा बउराना ॥ ७ ॥ बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे ॥ सतिगुरि राखे से वडभागे ॥ नानक गुर की चरणी लागे ॥ ८ ॥ ६ ॥ आसा महला १ ॥ गावहि गीते चीति अनीते ॥ राग सुणाइ कहावहि बीते ॥ बिनु नावै मनि झूठु अनीते ॥ १ ॥ कहा चलहु मन रहहु घरे ॥ गुरमुखि राम नामि त्रिपतासे खोजत पावहु सहजि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा ॥ लबु लोभु अहंकारु सु पीरा ॥ राम नाम बिनु किउ मनु धीरा ॥ २ ॥ अंतरि नावणु साचु पछाणै ॥ अंतर की गति गुरमुखि जाणै ॥ साच सबद बिनु महलु न पछाणै ॥ ३ ॥ निरंकार महि आकारु समावै ॥ अकल कला सचु साचि टिकावै ॥ सो नरु गरभ जोनि नही आवै ॥ ४ ॥ जहां नामु मिलै तह जाउ ॥

को जान ले।। ३ ।। परमात्मा का स्थान पा जाने वाले का शरीर सोने की चमक जैसा अनुपम हो जाता है और उसमें प्रभु की परम ज्योति प्रकाशित हो जाती है। तीनों लोकों में वह सब रूपों आकारों का स्वरूप प्रभु ही दिखाई देता है। मेरी झोली में वह धन आ गया है जो सच्चा और अक्षय है।। ४ ।। वह ऐसा प्रभु है जो पाँचों तत्वों, तीनों लोकों, नवखण्डों और चारों ओर व्याप्त है। वही धरती और आकाश को अपनी शक्ति से धारण किए रहता है और जीव के बाहर भागते हुए मन को उलट कर सीधे रास्ते पर ले आता है।। ५ ।। जो मूर्ख है उसे आँखों से दिखाई नहीं पड़ता है, उसकी जीभ मीठी नहीं होती और वह कही हुई बात के मर्म को बूझ नहीं पाता। माया के विष में संलग्न होकर वह सारे संसार से वाद-विवाद में उलझा रहता है।। ६ ।। उत्तम संगति में रहते हुए व्यक्ति उत्तम हो जाता है और गुणों की ओर प्रयत्नशील बना रहकर वह अवगुणों को धो डालता है। बिना गुरु की सेवा किए और बिना उसका आदेश माने व्यक्ति कभी भी सहज अवस्था में नही बना रह सकता।। ७ ।। प्रभु का नाम हीरे, रत्न और लाल जैसा है। जीव का मन भी एक उत्तम मोती है और यह ऊपर बताए गए उत्तम पुरुष का धन और माल है। हे नानक, ऐसा उत्तम व्यक्ति ही नाम रूपी हीरे की परख कर लेने वाला होता है और ऐसा व्यक्ति ही प्रभु की कृपा दृष्टि से सुखी बना रहता है।। ८ ।। ५ ।। आसा महला १ ।। गुरमुख बनने पर ही ज्ञान-ध्यान का पता चलता है और मन संतुष्ट हो जाता है। गुरमुख बनकर ही ब्रह्माण्ड में व्याप्त प्रभु के स्थान की पहचान हो जाती है और गुरमुख बनकर ही वे चिन्ह प्रकट होते हैं जिनमें सुरति शब्द में लीन हो जाती है।। १ ।। गुरमुख बनकर इस प्रकार से प्रेम रूपी भक्ति का चिन्तन किया जाता है कि प्रभु का सच्चा नाम प्राप्त हो जाता है।। १।। रहाउ ।। गुरु के माध्यम से ही रात-दिन निर्मल बने रहने वाले पवित्र परमात्मा के स्थान का पता चलता है, तीनों लोकों के निर्मल ज्ञान की सूझ प्राप्त होती है और सच्चे गुरु से ही सर्वत्र व्याप्त प्रभु के हुकम रूपी दैवी विधान की पहचान हो जाती है।। २ ।। ऐसे व्यक्ति को वास्तविक आनन्द मिलता है और उसे कोई भी शोक नहीं रहता। वह ज्ञान रूपी अमृत का पान करता है और प्रेम रूपी महारस को भोगता रहता है। उसके पाँचों विकार स्वच्छ होकर खुशी में समाहित हो जाते हैं अर्थात उसके अच्छे सहायक बन जाते हैं और उसके घर के सभी लोग अर्थात सभी वृत्तियां शान्त हो जाती हैं।। ३ ।। हे प्रभु, सब कुछ तेरा ही है और इस सब में तेरी ही ज्योति रूपी शक्ति विद्यमान है। तू स्वयं ही जीवों को पास लाकर उन्हें जोड़ता है और स्वयं ही उनको वियुक्त भी कर देता है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही जीवों को पास लाकर उन्हें जोड़ता है और स्वयं ही उनको वियुक्त भी कर देता है। वह कर्ता प्रभु जो स्वयं करता है वही होता है।। ४ ।। वह गिराकर फिर बना देता है और अपने हुकम के अन्तर्गत ही सबको समाप्त कर देता है। जो उस प्रभु को भाता है हुकम के अन्तगर्त वही होता है। गुरु के बिना उस पूर्ण प्रभु को कोई भी नहीं पा सका है।। ५ ।। बचपन और बुढ़ापे में प्राणी को कोई होश नहीं रहती और जब वह जवानी में आता है तो अभिमान में डूबा रहता है। बिना प्रभु के नाम के वह भला अन्त में क्या प्राप्त कर लेगा।। ६ ।। जिसने सहज रूप से ही उसे नहीं जाना जिसका दिया हुआ यह अन्न और धन है; ऐसा व्यक्ति भ्रमों में भटकता रहता है और बार-बार पछताता रहता है। वह अपने गले में फन्दा डाले रहता है और बावले व्यक्तियों की तरह आचरण करता रहता है।। ७ ।। जब इस संसार को डूबते हुए देखता है तो डर कर व्यक्ति भाग खड़ा होता है। सच्चा गुरु जिनकी रक्षा करता है वही भाग्यशाली है। हे नानक, ये वही होते हैं जो गुरु के चरणों में आ लगते हैं।। ८ ।। ६।। आसा महला १ ।। पाखण्डी लोग बाहर से तो प्रभु के गीत गाते हैं परन्तु चित्त में कुकर्मो की अनीति धारण किए रहते हैं। लोगों को प्रभु का गुणानुवाद और कीर्ति सुनाते रहते है तथा अपने आप को इस संसार के प्रपंचों से परे जा चुके हुए कहलाते हैं। बिना प्रभु के नाम के उनके मन में सदैव झूठ और कुकर्म ही बसे रहते है।। १ ।। हे मन, तू किस ओर चल रहा है और क्यों अपने अन्दर ही विचारवान होकर स्थिर नहीं होता। गुरमुख बनकर प्रभु-नाम के माध्यम से तृप्त हुआ जाता है और इस तरह से उस प्रभु को खोजते-खोजते सहज रूप से ही पा लिया जाता है।। १ ।। रहाउ ।। व्यक्ति के मन में काम, क्रोध और शरीर का मोह विद्यमान बना रहता है। उसे सदैव ही ममता, लोभ और अहंकार की पीड़ा बनी रहती है। प्रभु नाम के बिना भला उसके मन को कैसे धैर्य आ सकता है।। २ ।। जब अन्तर्मन का स्नान करे तभी वह सत्य को पहचान सकता है। गुरमुख बनकर ही अन्तर जगत के कार्य-व्यामार को भली प्रकार जाना जाता है। सत्य रूपी शब्द के बिना परमात्मा के ठिकाने का पता नहीं लगता।। ३ ।। जो संसार के सभी आकारों को उस निराकार में समाहित मान लेता है वह व्यक्ति ऐसी कला का कलाकार हो जाता है जिसमें कुछ भी बनावटीपन नहीं होता अर्थात उसके कार्य जीवन की कला से भरपूर होते हुए भी कला का दिखावा नहीं करते और सत्य के माध्यम से उस परम सत्य में स्थिर बने रहते हैं। ऐसे व्यक्ति पुनः योनियों में नहीं आते।। ४ ।। जहाँ प्रभु-नाम प्राप्त होता है वहीं जाया जाना चाहिए

गुर परसादी करम कमाउ ॥ नामे राता हरि गुण गाउ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते आपु पछाता ॥ अंम्रित नामु वसिआ सुखदाता ॥ अनदिनु बाणी नामे राता ॥ ६ ॥ मेरा प्रभु लाए ता को लागै ॥ हउमै मारे सबदे जागै ॥ ऐथै ओथै सदा सुखु आगै ॥ ७ ॥ मनु चंचलु बिधि नही जाणै ॥ मनमुखि मैला सबदु न पछाणै ॥ गुरमुखि निरमलु नामु वखाणै ॥ ८ ॥ हरि जीउ आगै करी अरदासि ॥ साधू जन संगति होइ निवासु ॥ किलविख दुख काटे हरि नामु प्रगासु ॥ ९ ॥ करि बीचारु आचारु पराता ॥ सतिगुर बचनी एको जाता ॥ नानक राम नामि मनु राता ॥ १० ॥ ७ ॥ आसा महला १ ॥ मनु मैगलु साकतु देवाना ॥ बन खंडि माइआ मोहि हैराना ॥ इत उत जाहि काल के चापे ॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे ॥ १ ॥ बिनु गुर सबदै मनु नही ठउरा ॥ सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी ॥ बिनु समझे जम का दुखु सहसी ॥ आपे बखसे सतिगुरु मेलै ॥ कालु कंटकु मारे सचु पेलै ॥ २ ॥ इहु मनु करमा इहु मनु धरमा ॥ इहु मनु पंच ततु ते जनमा ॥ साकतु लोभी इहु मनु मूड़ा ॥ गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा ॥ ३ ॥ गुरमुखि मनु असथाने सोई ॥ गुरमुखि त्रिभवणि सोझी होई ॥ इहु मनु जोगी भोगी तपु तापै ॥ गुरमुखि चीन्है हरि प्रभु आपै ॥ ४ ॥ मनु बैरागी हउमै तिआगी ॥ घटि घटि मनसा दुबिधा लागी ॥ राम रसाइणु गुरमुखि चाखै ॥ दरि घरि महली हरि पति राखै ॥ ५ ॥ इहु मनु राजा सूर संग्रामि ॥ इहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि ॥ मारे पंच अपुनै वसि कीए ॥ हउमै ग्रासि इकतु थाइ कीए ॥ ६ ॥ गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे ॥ गुरमुखि इहु मनु भगती जागे ॥ अनहद सुणि मानिआ सबदु वीचारी ॥ आतमु चीन्हि भए निरंकारी ॥ ७ ॥ इहु मनु निरमलु दरि घरि सोई ॥ गुरमुखि भगति भाउ धुनि होई ॥ अहिनिसि हरि जसु गुर परसादि ॥ घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि ॥ ८ ॥ राम रसाइणि इहु मनु माता ॥ सरब रसाइणु गुरमुखि जाता ॥ भगति हेतु गुर चरण निवासा ॥ नानक हरि जन के दासनि दासा

और गुरु की कृपा से नाम में लीन रहने का कर्म किया जाना चाहिए। प्रभु नाम में ही लीन रहकर प्रभु के गुण गाए जाने चाहिए।। ५।। गुरु की सेवा के माध्यम से व्यक्ति अपने आप को पहचानता है और उसके अन्दर सुख देने वाला प्रभु का अमृत नाम बस जाता है। ऐसा व्यक्ति सदैव प्रभु की वाणी और नाम में लीन बना रहता है।। ६ ।। मेरा प्रभु यदि अपने नाम में लीन करे तभी कोई उसके नाम के साथ जुड़ा रह सकता है। ऐसा व्यक्ति शब्द के माध्यम से चैतन्य धारण किए रहता है और अहंकार को नष्ट कर देता है। इस लोक और परलोक में ऐसे व्यक्ति को सदैव सुख मिलता रहता है।।७।। यह चंचल मन नाम में लीन होने की विधि को नहीं जानता और व्यक्ति मनमुख बनकर मलीन बना रहता है तथा शब्द ब्रह्म को पहचानता नहीं। गुरमुख होकर ही वह निर्मल प्रभु-नाम का सुमिरन करता है।। ८ ।। मैं प्रभु के आगे यही अरदास करता हूँ कि मेरा निवास संतजनों की संगति में बना रहे क्योंकि यही संगति पाप-बुद्धि के दुखों को काट देती है और प्रभु-नाम का ज्ञान प्रदान करती है।। ६ ।। गुरु के उपदेश के चिन्तन करने से मुझे अच्छे आचरण से प्रीति बन गई है और सच्चे गुरु के उपदेश से ही उस एक प्रभु को मैंने जान लिया है। हे नानक, अब मेरा मन प्रभु-नाम में लीन हो गया है।। १० ।। ७ ।। आसा महला १ ।। यह मन हाथी है, प्रभु से टूटा हुआ है और पागल बना हुआ है। यह हाथी के जंगल में दौड़ने भागने की तरह सांसारिक माया-मोह में भटकता फिर रहा है। काल का दबाया हुआ यह इधर उधर भागता फिर रहा है। गुरमुख बनकर ही अपने स्थिर घर को खोजा और पाया जा सकता है।। १ ।। शब्द-गुरु के बिना मन को कोई ठिकाना नहीं मिलता इसलिए हे मन अत्यन्त निर्मल राम-नाम का सुमिरन कर तथा कड़वे अहंकार और द्वैत-भाव का त्याग कर।। १ ।। रहाउ ।। यह अनजान मूर्ख मन भला किस तरह सुखी होगा। बिना परमात्मा के हुकम को समझे यह यम का दुःख सहन करता रहेगा। प्रभु कृपा करे तो सच्चे गुरु से मिलाप होगा। अब वह काल के काँटे को समाप्त करके सत्य के अंकुश में बना रहकर कार्यशील हो जाता है।। २ ।। यह मन जो पाँच तत्वों से पैदा हुआ है यही अच्छे बुरे कर्म करने वाला और यही अपने धर्म अर्थात कर्त्तव्य को निभाने वाला होता है। यह मूर्ख मन लोभ के कारण प्रभु से टूटा हुआ (शाक्त) है। जब यह गुरमुख बनकर नाम का सुमिरन करता है तो यही मन सुन्दर बन जाता है।। ३ ।। गुरमुख बनकर ही यह मन अपने स्थान में स्थित हो जाता है और गुरमुख बनकर ही इसे तीनों लोकों की सूझ हो जाती है। यह मन ही योगी, भोगी और तपस्याएं करने वाला है और यही मन गुरमुख बनकर स्वयं ही प्रभु को पहचान जाता है।। ४ ।। यह मन ही वैराग्यवान होकर अहंकार का त्याग कर देता है। मन के कारण ही हर हृदय में दुविधा की स्थिति बनी रहती है परन्तु यदि यह गुरमुख बनकर राम रसायन को चख लेता है तो विश्व रूपी महल के मालिक प्रभु के द्वार पर इसका सम्मान बना रहता है।। ५ ।। यह मन ही राजा है और संसार के संग्राम में शूरवीर भी है। गुरमुख बनकर नाम के माध्यम से यही मन निर्भय भी हो जाता है। यह काम, क्रोध आदि को मारकर अपने वश में कर लेता है और अहंकार को खाकर अर्थात मिटाकर इन सब को एक परमात्मा के पवित्र रूप में टिकाकर उन्हें भी पवित्र कर देता है।। ६।। गुरमुख बनकर यह मन मोह स्वाद और अन्य भोगों को त्याग देता है और भक्तिपूर्ण होकर चेतन बना रहता है। आत्मा का अनहद् नाद सुनकर यह मन संतुष्ट हो जाता है और शब्द का चिन्तन करने वाला बन जाता है। आत्मा को ही पहचान कर यह निराकार परमात्मा का निराकारी सेवक बन कर उसी में लीन हो जाता है।। ७ ।। प्रभु के द्वार और घर में अर्थात उसके समक्ष यह मन पवित्र हो जाता है और गुरमुख बनकर इसे भक्ति, प्रेम और नाम की लौ लग जाती है। गुरु की कृपा से दिन-रात यह प्रभु का यश गायन करता है और प्रत्येक हृदय में इसे वह युगों-युगान्तरों में और युगों से पहले भी बना रहने वाला प्रभु दिखाई देने लग जाता है।। ८ ।। राम-नाम की रसायन में यह मन मस्त बना रहता है और गुरमुख बनकर इसने सब रोगों की औषधि परमात्मा को जान लिया है। भक्ति प्राप्त करने के लिए ही गुरु के चरणों में निवास इसने बना लिया है और हे नानक, अब यह प्रभु के सेवकों

॥ ९ ॥ ८ ॥ आसा महला १ ॥ तनु बिनसै धनु का को कहीऐ ॥ बिनु गुर राम नामु कत लहीऐ ॥ राम नाम धनु संगि सखाई ॥ अहिनिसि निरमलु हरि लिव लाई ॥ १ ॥ राम नाम बिनु कवनु हमारा ॥ सुख दुख सम करि नामु न छोडउ आपे बखसि मिलावणहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक कामनी हेतु गवारा ॥ दुबिधा लागे नामु विसारा ॥ जिसु तूं बखसहि नामु जपाइ ॥ दूतु न लागि सकै गुन गाइ ॥ २ ॥ हरि गुरु दाता राम गुपाला ॥ जिउ भावै तिउ राखु दइआला ॥ गुरमुखि रामु मेरै मनि भाइआ ॥ रोग मिटे दुखु ठाकि रहाइआ ॥ ३ ॥ अवरु न अउखधु तंत न मंता ॥ हरि हरि सिमरणु किलविख हंता ॥ तूं आपि भुलावहि नामु विसारि ॥ तूं आपे राखहि किरपा धारि ॥ ४ ॥ रोगु भरमु भेदु मनि दूजा ॥ गुर बिनु भरमि जपहि जपु दूजा ॥ आदि पुरख गुर दरस न देखहि ॥ विणु गुर सबदै जनमु कि लेखहि ॥ ५ ॥ देखि अचरजु रहे बिसमादि ॥ घटि घटि सुर नर सहज समाधि ॥ भरिपुरि धारि रहे मन माही ॥ तुम समसरि अवरु को नाही ॥ ६ ॥ जा की भगति हेतु मुखि नामु ॥ संत भगत की संगति रामु ॥ बंधन तोरे सहजि धिआनु ॥ छूटै गुरमुखि हरि गुर गिआनु ॥ ७ ॥ ना जमदूत दूखु तिसु लागै ॥ जो जनु राम नामि लिव जागै ॥ भगति वछलु भगता हरि संगि ॥ नानक मुकति भए हरि रंगि ॥ ८ ॥ ९ ॥ आसा महला १ इकतुकी ॥ गुरु सेवे सो ठाकुर जानै ॥ दूखु मिटै सचु सबदि पछानै ॥ १ ॥ रामु जपहु मेरी सखी सखैनी ॥ सतिगुरु सेवि देखहु प्रभु नैनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बंधन मात पिता संसारि ॥ बंधन सुत कंनिआ अरु नारि ॥ २ ॥ बंधन करम धरम हउ कीआ ॥ बंधन पुतु कलतु मनि बीआ ॥ ३ ॥ बंधन किरखी करहि किरसान ॥ हउमै डंनु सहै राजा मंगै दान ॥ ४ ॥ बंधन सउदा अणवीचारी ॥ तिपति नाही माइआ मोह पसारी ॥ ५ ॥ बंधन साह संचहि धनु जाइ ॥ बिनु हरिभगति न पवई थाइ ॥ ६ ॥ बंधन बेदु बादु अहंकार ॥ बंधनि बिनसै मोह विकार ॥ ७ ॥ नानक राम नाम सरणाई ॥ सतिगुरि राखे बंधु न पाई ॥ ८ ॥ १० ॥

का सेवक बन गया है।। ६ ।। ८ ।। आसा महला १ ।। शरीर के नष्ट हो जाने पर धन को किसका कहा जाए अर्थात मर जाने के बाद धन किसी के काम नहीं आता। गुरु के बिना प्रभु का नाम कहाँ प्राप्त किया जा सकता है। प्रभु का नाम ही ऐसा धन है जो मित्र की तरह साथी बना रहता है। प्रभु में सुरति लीन करके ही दिन-रात निर्मल बनकर रहा जाता है।। १ ।। प्रभु के नाम के बिना हमारा कौन है इसीलिए सुख और दुख को समान भाव से जानकर मैं प्रभु नाम को नहीं छोड़ता हूँ क्योंकि यह कृपा करने वाला और यही प्रभु से मिलाने वाला है। सोना और स्त्री के प्रेम में पड़कर मूर्ख जीव ने दुविधा में बने रहकर प्रभु-नाम को भुला दिया है। जिस पर तू कृपा करता है उसी से नाम का सुमिरन करवाता है और ऐसे प्रभु का गुणानुवाद करने वाले व्यक्ति को मौत का डर नहीं रहता।। २ ।। प्रभु ही गुरु है, प्रभु ही दाता सबमें रमण करने वाला और धरती का पालनहार है। हे दयालु प्रभु, तुझे जैसे भी अच्छा लगे मुझे वैसा ही बनाए रख। गुरमुख बनकर प्रभु-नाम मेरे मन को भा गया है। मेरे रोग मिट गए हैं और दुख पीछे हट गए हैं।। ३ ।। अन्य कोई भी औषधि, तन्त्र-मन्त्र काम नहीं करते; केवल प्रभु का सुमिरन ही पापों को नष्ट करने वाला है। यदि तू ही भुला दे तो नाम विस्मृत हो जाता है; अपनी कृपा कर तू स्वयं ही रक्षा करता है।। ४ ।। यदि मन में द्वैत-भाव अर्थात प्रभु के बिना अन्य मायावी शक्तियों का आसरा लिया हो तो रोग, भ्रम और परमात्मा से दूरी बढ़ती जाती है। गुरु के बिना भ्रमों में पड़कर लोग परमात्मा को छोड़कर अन्यों का जाप करते हैं। वे गुरु का दर्शन नहीं करते इसलिए आदि पुरुष परमात्मा का दर्शन भी उन्हें नहीं होता। शब्द-गुरु के बिना इस मानव जन्म की भला क्या सार्थकता है।। ५ ।। यह देखकर आश्चर्य और मस्ती भरी हैरानी होती है कि सहज समाधि में प्रभु सभी व्यक्तियों और (तथाकथित) देवताओं आदि के अन्दर भी रमण कर रहा है। उस पूर्ण प्रभु को मैंने अपने चित्त में धारण कर लिया है। हे प्रभु, तेरे समान अन्य कोई नहीं है।। ६ ।। जो सुमिरन से प्रेम करता हुआ मुँह में प्रभु का नाम धारण किए रहता है ऐसे शान्त पुरुष और प्रभु के भक्तों की संगति में प्रभु स्वयं बसता है। व्यक्ति के लिए यह उचित ही है कि वह बन्धनों को तोड़ दे और सहज भाव में आकर उस प्रभु में ध्यान लगाए। इस प्रकार प्रभु रुपी गुरु से ज्ञान प्राप्त करके गुरमुख बनता हुआ व्यक्ति मुक्त हो जाता है।। ७ ।। जो सेवक प्रभु-नाम में लौ लगाकर चेतन बना रहता है उसे यमदूत और अन्य कोई भी दुख स्पर्श नहीं कर पाता। भक्तवत्सल प्रभु सदैव भक्तों के साथ ही बना रहता है। हे नानक, प्रभु के रंग में रंगे जाने पर ही प्राणी मुक्त हो जाता है।। ८ ।। ६ ।। आसा महला १ ।। एक पंक्ति वाला।। जो गुरु के कहे अनुसार परिश्रम करता है वही प्रभु को जान लेता है। उसके दुख मिट जाते हैं और वह शब्द के माध्यम से सत्य रूपी प्रभु को पहचान लेता है।। १ ।। हे मेरे सखा और मित्रो, प्रभु-नाम का जाप करो। सच्चे गुरु की सेवा करके उस प्रभु को प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देख लो।। १ ।। रहाउ ।। सांसारिक माता-पिता आदि तो सब झूठे बन्धन ही हैं। इसी प्रकार पुत्र, कन्या, स्त्री आदि भी बन्धन हैं।। २ ।। यदि मन में द्वैतभाव हो तो अहंकार-वश किए हुए सभी धर्म-कर्म, पुत्र स्त्री आदि बन्धन ही बन्धन हैं।। ३ ।। द्वैतभाव मन में होने से किसान का खेती करना भी बन्धन ही है क्योंकि जब प्रभु रूपी राजा उससे अपना हिस्सा (टैक्स) लोक कल्याणार्थ माँगता है तो अहंकार के वश में पड़ा हुआ व्यक्ति अहंकार के कारण सज़ा पाता है।। ४ ।। विचार-विहीन व्यापार भी ऐसा बन्धन है जिससे कभी मन तृप्त नहीं होता और माया-मोह का प्रसार बढ़ता ही जाता है।। ५ ।। साहूकार धन का संचय करते हैं और वह धन जाता हुआ बन्धन बन जाता है। प्रभु की भक्ति के बिना प्रभु को कुछ भी स्वीकार नहीं होता।। ६ ।। अहंकारी बनकर किया हुआ वेद-पाठ भी बन्धन है और मोह के विकार के कारण बन्धन में पड़ा हुआ व्यक्ति नष्ट हो जाता है।। ७ ।। नानक तो प्रभु नाम की शरण में है और सच्चे गुरु ने जब उसकी रक्षा कर ली हो तो उसे किसी प्रकार का भी बन्धन नहीं रह गया है।। ८ ।। १० ।।

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥ से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥ महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥ १ ॥ आदेसु बाबा आदेसु ॥ आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि ॥ हीडोली चड़ि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥ उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥ २ ॥ इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ीआ ॥ गरी छुहारे खांदीआ माणन्हि सेजड़ीआ ॥ तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥ ३ ॥ धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥ दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥ जे तिसु भावै दे वडिआई जे भावै देइ सजाइ ॥ ४ ॥ अगो दे जे चेतीऐ तां काइतु मिलै सजाइ ॥ साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥ बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥ ५ ॥ इकना वखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ ॥ चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥ रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥ ६ ॥ इकि घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख ॥ इकन्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ नानक किआ मानुख ॥ ७ ॥ ११ ॥

आसा महला १ ॥ कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई ॥ कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई ॥ कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथै दिसहि नाही ॥ १ ॥ इहु जगु तेरा तू गोसाई ॥ एक घड़ी महि थापि उथापे जरु वंडि देवै भांई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहां सु घर दर मंडप महला कहा सु बंक सराई ॥ कहां सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई ॥ कहा सु पान तंबोली हरमा होईआ छाई माई ॥ २ ॥ इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥ पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥ जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई ॥ ३ ॥ कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु

रागु आसा महला १ अष्टपदियाँ घरु ३   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जिन सुंदरियों की माँग में सिन्दूर पड़कर उनके काले केशों की पट्टियाँ शोभायमान होती थी उनके सिरों को कैंची से काटा गया है और उनके मुँह में मिट्टी जा रही है। जिनका निवास कभी महलों में था उन्हें अब महलों के सामने भी बैठने नहीं दिया जा रहा है।। १ ।। हे प्रभु, तुझे ही प्रणाम है। हे आदि प्रभु, तेरे कार्यों का रहस्य नहीं जाना जा सकता और तू इन सब विभिन्न प्रकार के वेशों की गति स्वयं ही देख रहा है।। १ ।। रहाउ।। जब इन स्त्रियों का विवाह हुआ तो इनके दूल्हे इनके पास बने हुए सुन्दर लगते थे। यह पालकियों में चढ़कर आयी थीं और इन्होंने हाथी दाँत के चूड़े पहन रखे थे। शगुन के रूप में इनके सिर से पानी घुमा कर इनकी बलाएं ली जाती थी और इनके हाथों में शीशा जड़े हुए पंखे चमकते थे।। २ ।। ससुराल में शगुन के तौर पर बैठे-बिठाए एक लाख रुपये लेती थी और खड़ी हुई भी लाखों रुपया लेती थीं। यह नारियल, छुहारा आदि खाती हुई सुन्दर सेज का आनन्द लेती थीं। अब उनके गले में रस्सियां पड़ी हुई हैं और उनके मोतियों के हार टूट चुके हैं।। ३ ।। धन और यौवन, जिनका नशा इन्हें चढ़ा हुआ था आज दोनों ही इनके शत्रु बने हुए हैं। बाबर ने अपने सिपाहियों को हुकुम दे रखा है और वे इन सुंदरियों का अपमान करते हुए इन्हें ले जा रहे हैं। यदि प्रभु को अच्छा लगे तो वह जीवों को सम्मान दिलाता है और यदि वह चाहे तो इन्हें सज़ा भी देता है।। ४ ।। यदि अपने कर्त्तव्य का पहले ही ध्यान रखा जाए तो भला ऐसी सज़ा क्योंकर मिलेगी। यहाँ के शासकों ने रंग तमाशों में ही लीन होकर अपने कर्त्तव्य को भुला दिया था। अब जब बाबर की चारों ओर दुहाई फिर गई है तो प्रजा की तो बात ही छोड़ो कोई पठान शहज़ादा भी कहीं से रोटी नहीं खा सकता।। ५ ।। कईयों के तो पाँचों नमाज़ों के समय बर्बाद हो गए हैं और कईयों का पूजा पाठ का समय चला गया है। अब हिन्दू स्त्रियां भी चौके की पवित्रता कैसे बनाए रखेगीं और नहा-धोकर कैसे तिलक आदि लगाएंगी। जिन्होंने कभी राम का भी सुमिरन नहीं किया था अब उन्हें खुदा-खुदा कहना भी नसीब नहीं।। ६ ।। कई तो अपने घरों को ही वापस आ रहे हैं और कई उन्हीं लोगों से मिलकर अपने सम्बन्धित लोगों की कुशल-क्षेम पूछ रहे हैं। कईयों के भाग्य में तो यही लिखा है कि वे बैठे बैठे रोते रहें और दुखी होते रहें। जो उस प्रभु को भाता है वही होता है और हे नानक, यह आदमी भला क्या कर सकता है।। ७ ।। ११ ।। आसा महला १ ।। कभी यहाँ खेल-कूद और रौनक रहती थी परन्तु अब वे घोड़े और उनके खेल-तमाशे तथा उनके तबेले कहाँ चले गए। नगाड़े और तूतियां कहाँ चले गए और पशमीने के तेगबन्द तथा लाल वर्दियां कहाँ चली गईं। दर्पणों में देखे जाने वाले वे बांके चेहरे कहाँ चले गए। वे अब दिखाई नहीं पड़ते।। १ ।। हे प्रभु, यह संसार तेरा है और तू ही इसका स्वामी है। यह भी अजीब है कि वह प्रभु संसार की रचना करके एक घड़ी भर में उसे नष्ट भी कर देता है और दूसरों को धन और दौलत भी बाँट देता है।। १ ।। रहाउ ।। वे घर द्वार, मण्डप, महल, सुन्दर सराएं आदि कहाँ चली गई हैं। सुख देने वाली कामिनी और उसकी सुन्दर सेज जिसे देख कर नींद उड़ जाती थी, कहाँ चली गई है। पान और पान बेचने वाली कहाँ हैं; पर्दे में रहने वाली वे सभी स्त्रियां गुम हो गई हैं।। २ ।। इस धन-दौलत के पीछे संसार के अनेकों लोग ख्वार होते हैं और इसके पीछे लगकर अनन्त लोग बर्बाद हुए हैं। यह पाप और अत्याचार किए बिना इकट्ठी नहीं हो सकती और मरते समय यह किसी के भी साथ नहीं जाती। परन्तु जिसको कुमार्ग पर डालना होता है परमात्मा ही उसके अच्छे गुणों को उससे पहले ही छीन लेता है।। ३ ।। जब मीर बाबर के चढ़कर आने की बात हिन्द वासियों ने सुनी तो करोड़ों ही पीरों के जादू-टोने कर कर उसे रोकने के यत्न होते रहे। पीरों के स्थान

सुणिआ धाइआ ॥ थान मुकाम जले बिज मंदर मुछि मुछि कुइर रुलाइआ ॥ कोई मुगलु न होआ अंधा किनै न परचा लाइआ ॥ ४ ॥ मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाई ॥ ओन्ही तुपक ताणि चलाई ओन्ही हसति चिड़ाई ॥ जिन्ह की चीरी दरगह पाटी तिन्हा मरणा भाई ॥ ५ ॥ इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी ॥ इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी ॥ जिन्ह के बंके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी ॥ ६ ॥ आपे करे कराए करता किस नो आखि सुणाईऐ ॥ दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किस थै जाइ रूआईऐ ॥ हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥ ७ ॥ १२ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा काफी महला १ घरु ८ असटपटीआ ॥

जैसे गोइलि गोइली तैसे संसारा ॥ कूड़ु कमावहि आदमी बांधहि घर बारा ॥ १ ॥ जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नीत नीत घर बांधीअहि जे रहणा होई ॥ पिंडु पवै जीउ चलसी जे जाणै कोई ॥ २ ॥ ओही ओही किआ करहु है होसी सोई ॥ तुम रोवहुगे ओस नो तुम्ह कउ कउणु रोई ॥ ३ ॥ धंधा पिटिहु भाईहो तुम्ह कूड़ु कमावहु ॥ ओहु न सुणई कत ही तुम्ह लोक सुणावहु ॥ ४ ॥ जिस ते सुता नानका जागाए सोई ॥ जे घरु बूझै आपणा तां नीद न होई ॥ ५ ॥ जे चलदा लै चलिआ किछु संपै नाले ॥ ता धनु संचहु देखि कै बूझहु बीचारे ॥ ६ ॥ वणजु करहु मखसूदु लैहु मत पछोतावहु ॥ अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥ ७ ॥ धरमु भूमि सतु बीजु करि ऐसी किरस कमावहु ॥ तां वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ॥ ८ ॥ करमु होवै सतिगुरु मिलै बूझै बीचारा ॥ नामु वखाणै सुणे नामु नामे बिउहारा ॥ ९ ॥ जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई ॥ जो तिसु भावै नानका साई वडिआई ॥ १० ॥ १३ ॥ आसा महला १ ॥ चारे कुंडा ढूढीआ को नीम्ही मैडा ॥ जे तुधु भावै साहिबा तू मै हउ तैडा ॥ १ ॥ दरु बीभा मै नीम्हि को कै करी सलामु ॥ हिको मैडा तूं धणी साचा मुखि नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधा सेवनि सिध पीर मागहि रिधि सिधि ॥ मै इकु नामु न वीसरै साचे गुर

और वज्र के समान पक्के मन्दिरों को टुकड़े-टुकड़े किया गया तथा शहज़ादों और कुँवरों को मिट्टी में मिला दिया गया। जादू-टोने आदि के अनेक यत्नों के बावजूद कोई एक भी मुग़ल अन्धा नहीं हुआ अर्थात किसी का भी कुछ नहीं बिगड़ा और कागज़ पर लिखे हुए मन्त्र भी किसी काम न आ सके।। ४ ।। मुग़ल और पठानों की लड़ाई हुई तथा लड़ाई के मैदान में दोनों पक्षों ने ही तलवार चलायी। मुगलों ने तो छोटी तोपों का निशाना बाँध कर उन्हें चलाया परन्तु दूसरी ओर पठानों ने अंकुश मार-मार कर तथा चिढ़ा कर हाथियों को आगे किया। परन्तु हे भाई, जब ऊपर से ही उमर की चिट्ठी फट जाती है तो व्यक्ति को मरना ही पड़ता है।। ५ ।। हिन्दू स्त्रियों, मुसलमान औरतों, भाटों की और ठाकुरों की स्त्रियों आदि के सिर से पैर तक के लम्बे वस्त्र, बुर्का आदि तार-तार हो गए और कईयों का मर कर श्मशान भूमि निवास बन गया। जो बची हुई थीं और जिनके बाँके पति वापस घर नहीं पहुँचे उनकी जीवन रूपी रात्रि भला कैसे कटी होगी।। ६ ।। किसको कहकर सुनाया जाए क्योंकि कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता-कराता है। हे प्रभु, सुख और दुख सब तेरी ही रज़ा में हैं इसलिए किसके पास जाकर रोया जाए। रज़ा का मालिक प्रभु स्वयं सबको अपने हुकम में चलाता है, प्रसन्न होता है और हे नानक, जीव लिखा हुआ भाग्य ही प्राप्त करता है।। ७।। १२ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि आसा काफी महला १ घरु ८ अष्टपदियां।।

जिस प्रकार चारागाह में जानवर चराने वाला ग्वाला थोड़े समय के लिए ही वहाँ रहता है और उसका मालिक नहीं होता, इसी प्रकार जीवों के लिए यह संसार है। व्यक्ति घर-बार बड़े परिश्रम से बनाते हैं परन्तु यह सब जीव का परिश्रम व्यर्थ ही चला जाता है क्योंकि यह वास्तविक मालिक नहीं है।। १ ।। हे सोये हुए लोगो जाग जाओ क्योंकि यह अपने को मालिक मानने वाला प्राणी किसी समय भी चलने को तैयार है।। १ ।। रहाउ ।। यदि यहाँ हमेशा रहना हो तभी रोज़-रोज़ धन-सम्पदा एकत्र की जाए और पक्का ठिकाना बनाया जाए; यदि कोई बुद्धिमान हो तो यह सत्य समझ लेगा कि यह शरीर यहीं ढेरी हो जाएगा और इसमें से आत्मा निकल कर चल देगी।। २ ।। हाय-हाय क्या करते हो क्योंकि जो प्रभु द्वारा किया जाना है वही होगा। तुम तो जाने वाले प्राणी को रोओगे परन्तु तुम्हें कौन रोएगा।। ३ ।। हे भाईयो, यह रोने का तुम दिखावा कर रहे हो और झूठ के कार्य-क्लाप पूरे कर रहे हो। तुम्हारे रोने को वह जाने वाला प्राणी किसी तरह भी नहीं सुन सकता; तुम मात्र संसार के लिए दिखावा कर रहे हो।। ४ ।। जिस परमात्मा के हुकुम से व्यक्ति अज्ञान की नींद में सोया पड़ा है हे नानक, यदि वही चाहे तो यह नींद से जग सकता है। यदि जीव अपने वास्तविक घर को पहचान ले तो फिर इसे नींद नहीं घेरती।। ५ ।। यदि जाने वाला प्राणी कुछ सम्पत्ति साथ लेकर चल सका है तो बेशक तुम भी धन का संचय कर लो अन्यथा इस संसार के प्रपंच को भली प्रकार से विचारपूर्वक बूझ लो।। ६ ।। हे जीव, तू अपना वास्तविक व्यापार कर और मानव जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर; कहीं ऐसा न हो कि बाद में तुझे पछताना पड़े। अवगुणों को छोड़ दो और गुणों को धारण करने की वास्तविकता को समझ कर प्राप्त कर लो।। ७ ।। धर्म रूपी भूमि में सत्य रूपी बीज बो कर खेती का कार्य करो। यदि तू यहाँ से लाभ प्राप्त कर के जाएगा तभी तुझे वास्तविक व्यापारी के रूप में जाना जाएगा।। ८ ।। यदि प्रभु की कृपा हो तभी सच्चा गुरु मिलता है और जीव तत्व के विचार को पूर्ण रूप से समझता है। तभी व्यक्ति प्रभु-नाम का सुमिरन करता है, प्रभु-नाम को ही सुनता है और प्रभु-नाम का ही व्यवहार करता है।। ९ ।। जिस प्रकार लाभ सुख देता है उसी प्रकार जीवन में घाटा अर्थात दुख भी आवश्यक है और यही परम्परा चलती चली आ रही है। हे नानक, जो उस प्रभु को भाता है वही वास्तविक शोभायुक्त है।। १० ।। १३ ।। आसा महला १।। मैंने चारों दिशाओं में ढूँढ लिया है मेरा कोई भी नहीं है। हे मेरे स्वामी, यदि तुझे अच्छा लगे तो तू ही मेरा है और मैं तेरा हूँ।। १ ।। मेरे लिए अन्य कोई भी द्वार नहीं है जिस पर जाकर मैं प्रणाम करूँ। तू ही मेरा एक मालिक है जिसका सच्चा नाम मेरे मुख से निकलता रहता है।। १ ।। रहाउ ।। कई सिद्ध और पीर बनने के लिए सिद्धों की सेवा करते हैं और ऋद्धियों-सिद्धियों का दान माँगते हैं परन्तु मेरी तो यही माँग है कि मुझे सच्चे गुरु की शिक्षा के फलस्वरूप एक तेरा ही नाम कभी

बुधि ॥ २ ॥ जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥ गुर का सबदु न चीन्हही ततु सारु निरंतर ॥ ३ ॥ पंडित पाधे जोइसी नित पढ़हि पुराणा ॥ अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रहमु लुकाणा ॥ ४ ॥ इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥ आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥ ५ ॥ इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥ बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥ ६ ॥ इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥ नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सु जागे ॥ ७ ॥ गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै ॥ नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥ ८ ॥ १४ ॥ आसा महला १ ॥ मनसा मनहि समाइले भउजलु सचि तरणा ॥ आदि जुगादि दइआलु तू ठाकुर तेरी सरणा ॥ १ ॥ तू दातौ हम जाचिका हरि दरसनु दीजै ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ मन मंदरु भीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूड़ा लालचु छोडीऐ तउ साचु पछाणै ॥ गुर कै सबदि समाईऐ परमारथु जाणै ॥ २ ॥ इहु मनु राजा लोभीआ लुभतउ लोभाई ॥ गुरमुखि लोभु निवारीऐ हरि सिउ बणि आई ॥ ३ ॥ कलरि खेती बीजीऐ किउ लाहा पावै ॥ मनमुखु सचि न भीजई कूड़ु कूड़ि गडावै ॥ ४ ॥ लालचु छोडहु अंधिहो लालचि दुखु भारी ॥ साचौ साहिबु मनि वसै हउमै बिखु मारी ॥ ५ ॥ दुबिधा छोडि कुवाटड़ी मूसहुगे भाई ॥ अहिनिसि नामु सलाहीऐ सतिगुर सरणाई ॥ ६ ॥ मनमुख पथरु सैलु है ध्रिगु जीवणु फीका ॥ जल महि केता राखीऐ अभ अंतरि सूका ॥ ७ ॥ हरि का नामु निधानु है पूरै गुरि दीआ ॥ नानक नामु न वीसरै मथि अंम्रितु पीआ ॥ ८ ॥ १५ ॥ आसा महला १ ॥ चले चलणहार वाट वटाइआ ॥ धंधु पिटे संसारु सचु न भाइआ ॥ १ ॥ किआ भवीऐ किआ ढूढीऐ गुर सबदि दिखाइआ ॥ ममता मोहु विसरजिआ अपनै घरि आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि मिलै सचिआरु कूड़ि न पाईऐ ॥ सचे सिउ चितु लाइ बहुड़ि न आईऐ ॥ २ ॥ मोइआ कउ किआ रोवहु रोइ न जाणहू ॥ रोवहु सचु सलाहि हुकमु पछाणहू ॥ ३ ॥ हुकमी वजहु लिखाइ आइआ जाणीऐ ॥ लाहा पलै पाइ हुकमु सिञाणीऐ ॥ ४ ॥

भी न भूले।। २ ।। योगी, भोगी व्यक्ति और फटे हुए कपड़ों का चोला पहनने वाले किस उद्देश्य से देशों-देशान्तरों में भ्रमण किया करते हैं। ये शब्द-गुरु को पहचानते नहीं और जानते नहीं कि यह ही सारे संसार का लगातार बना रहने वाला सार-तत्व है।। ३ ।। विद्वान, शिक्षाविद् एवं ज्योतिषी आदि नित्य पुराणों को पढ़ते रहते हैं परन्त वे अपने अन्तर्मन को नहीं जानते कि इसी में ही प्रभु प्रछन्न रूप से विद्यमान है।। ४ ।। कई तपस्वी हैं जो वन में तपस्या करते हैं और सदैव तीर्थों पर निवास बनाए रखते हैं। वे अहंकारी व्यक्ति अपने अहंकार को नहीं पहचानते तो फिर भला उदासीन अथवा त्यागी क्यों बने बैठे हैं।। ५ ।। कई यत्नपूर्वक बिन्दु को सम्भाले रख कर ब्रह्मचारी बनते हैं और अपने आप को यति कहलाते हैं। शब्द-गुरु के बिना उनका छुटकारा नहीं होगा और भ्रमों में पड़े हुए वे इस संसार में आते जाते रहेंगें।। ६ ।। गृहस्थी धर्म का पालन करने वाले सेवक, साधु स्वभाव वाले व्यक्ति गुरु की मति के अनुसार इस संसार में चलते हैं। वे नाम-दान और अन्तर्मन के स्नान का आचरण करते हैं तथा प्रभु-भक्ति के माध्यम से चेतन बने रहकर संसार के प्रति जागरूक बने रहते हैं।। ७ ।। गुरु के माध्यम से अपने वास्तविक घर और उसके द्वार का अता-पता जाना जाता है और वहाँ पहुँच कर आसानी से उसकी पहचान कर ली जाती है। हे नानक, मुझे सत्य प्रभु का नाम कभी न भूले और उस सत्य प्रभु में लीन होकर ही मेरा मन सन्तुष्ट बना रहे।। ८ ।। १४ ।। आसा महला १ ।। जब मन की वासनाओं को मन में ही रोक लिया जाता है तो सत्य के माध्यम से संसार रूपी समुद्र को तैरा जाता है। आदि काल से और युगों के प्रारम्भ से ही दयालु बने रहने वाले हे स्वामी प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ।। १ ।। हे दाता, हम याचक हैं और तू प्रभु है हमें दर्शन दो। गुरमुख बनकर जब प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है तभी मन रूपी मन्दिर अन्दर-बाहर से उसके रस में भीग जाता है।। १ ।। रहाउ।। झूठा लालच जब छोड़ा जाता है तभी सत्य की पहचान होती है और शब्द-गुरु में जब लीन हुआ जाता है तभी वास्तव में आत्म-ज्ञान अथवा परमार्थ को जाना जाता है।। २ ।। यह मन लोभी व्यक्तियों का राजा है जो सदैव लोभ में ही लीन बना रहता है। गुरमुख बनकर लोभ का निवारण किया जाता है और तभी प्रभु से प्रेम बन आता है।। ३ ।। बंजर भूमि में यदि खेती बोई जाए तो भला लाभ कैसे प्राप्त होगा। मनमुख व्यक्ति सत्य में लीन नहीं होता और वह झूठा व्यक्ति झूठ में ही फँसा रहता है।। ४ ।। हे अन्धे व्यक्तियो, लालच छोड़ दो क्योंकि लालच में भारी दुख मिलता है। अहंकार के विष को जब मार दिया जाता है तो सच्चा प्रभु मन में आन बसता है।। ५ ।। हे भाई, दुविधा भाव का कुमार्ग छोड़ दो अन्यथा लुट जाओगे। दिन-रात प्रभु नाम का गुणानुवाद करो और सच्चे गुरु की शरण में पड़े रहो।। ६ ।। मनमुख व्यक्ति पत्थर की चट्टान है और उसके नीरस जीवन को धिक्कार है। उसे जब तक चाहे जल में रखा जाए परन्तु उसका हृदय अन्दर से सूखा और कठोर ही बना रहता है।। ७ ।। प्रभु का नाम सभी सुखों का घर है जो पूर्ण गुरु ही देता है। हे नानक, तुझे यह प्रभु-नाम कभी न विस्मृत हो जिसका सदैव मन्थन करके तूने अमृत-पान किया है।। ८ ।। १५ ।। आसा महला १ ।। यहाँ आने वाले अब अपना रास्ता बदलकर दूसरी और जाते रहते हैं अर्थात पैदा होते हैं और मौत के रास्ते पर चलते रहते हैं। यह सारा संसार व्यर्थ के धन्धे पीटता रहता है परन्तु सत्य इसे अच्छा नहीं लगता।। १ ।। उस परमात्मा के लिए भ्रमण करने और उसे इधर-उधर ढूँढने की क्या आवश्यकता है क्योंकि शब्द-गुरु के माध्यम से ही वह प्रभु अपने आप को दिखाता है। उसे देख लेने के बाद व्यक्ति की ममता मोह विसर्जित हो जाते हैं और जीव अपने वास्तविक घर में आन टिकता है।। १ ।। रहाउ ।। सत्य तो सचिआर बनकर अर्थात सत्याचरण धारण करके ही प्राप्त होता है; उसे झूठ के माध्यम से नहीं पाया जा सकता। सच्चे प्रभु में चित्त लीन करने से बार बार आवागमन में नहीं पड़ना पड़ता।। २ ।। मर चुकों के लिए क्यों रोते हो; तुम तो रोना भी नहीं जानते। सच्चे प्रभु के गुणानुवाद का रोना रोओ और उसके हुकुम को पहचान लो।। ३ ।। जो प्रभु की आज्ञा में प्रभु की भक्ति का नाम लिखाकर आया है उसे ही वास्तव में संसार में आया हुआ जानना चाहिए क्योंकि प्रभु की आज्ञा की पहचान ही लाभ देने वाली है।। ४।।

हुकमी पैधा जाइ दरगह भाणीऐ ॥ हुकमे ही सिरि मार बंदि रबाणीऐ ॥ ५ ॥ लाहा सचु निआउ मनि वसाईऐ ॥ लिखिआ पलै पाइ गरबु वञाईऐ ॥ ६ ॥ मनमुखीआ सिरि मार वादि खपाईऐ ॥ ठगि मुठी कूड़िआर बंन्हि चलाईऐ ॥ ७ ॥ साहिबु रिदै वसाइ न पछोतावही ॥ गुनहां बखसणहारु सबदु कमावही ॥ ८ ॥ नानकु मंगै सचु गुरमुखि घालीऐ ॥ मै तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहालीऐ ॥ ९ ॥ १६ ॥ आसा महला १ ॥ किआ जंगलु ढूढी जाइ मै घरि बनु हरीआवला ॥ सचि टिकै घरि आइ सबदि उतावला ॥ १ ॥ जह देखा तह सोइ अवरु न जाणीऐ ॥ गुर की कार कमाइ महलु पछाणीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि मिलावै सचु ता मनि भावई ॥ चलै सदा रजाइ अंकि समावई ॥ २ ॥ सचा साहिबु मनि वसै वसिआ मनि सोई ॥ आपे दे वडिआईआ दे तोटि न होई ॥ ३ ॥ अबे तबे की चाकरी किउ दरगह पावै ॥ पथर की बेड़ी जे चड़ै भर नालि बुडावै ॥ ४ ॥ आपनड़ा मनु वेचीऐ सिरु दीजै नाले ॥ गुरमुखि वसतु पछाणीऐ अपना घरु भाले ॥ ५ ॥ जंमण मरणा आखीऐ तिनि करतै कीआ ॥ आपु गवाइआ मरि रहे फिरि मरणु न थीआ ॥ ६ ॥ साई कार कमावणी धुर की फुरमाई ॥ जे मनु सतिगुर दे मिलै किनि कीमति पाई ॥ ७ ॥ रतना पारखु सो धणी तिनि कीमति पाई ॥ नानक साहिबु मनि वसै सची वडिआई ॥ ८ ॥ १७ ॥ आसा महला १ ॥ जिन्ही नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई ॥ मूलु छोडि डाली लगे किआ पावहि छाई ॥ १ ॥ बिनु नावै किउ छूटीऐ जे जाणै कोई ॥ गुरमुखि होइ त छूटीऐ मनमुखि पति खोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ही एको सेविआ पूरी मति भाई ॥ आदि जुगादि निरंजना जन हरि सरणाई ॥ २ ॥ साहिबु मेरा एकु है अवरु नही भाई ॥ किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई ॥ ३ ॥ गुर बिनु किनै न पाइओ केती कहै कहाए ॥ आपि दिखावै वाटड़ीं सची भगति द्रिड़ाए ॥ ४ ॥ मनमुखु जे समझाईऐ भी उझड़ि जाए ॥ बिनु हरि नाम न छूटसी मरि नरक समाए ॥ ५ ॥ जनमि मरै भरमाईऐ हरि नामु न लेवै ॥ ता की कीमति ना पवै बिनु गुर की सेवै ॥ ६ ॥

यदि प्रभु को भा जाए तो उसके हुकुम में ही जीव प्रभु के दरबार में सम्मान रूपी वस्त्र पहनता है और उसके हुकुम में ही अनेकों को कैद में मार पड़ने के समान मार पड़ती है।। ५ ।। यदि प्रभु को मन में बसाया जाए तो धर्म और न्याय रूपी लाभ मिलाता है। यदि अहंकार को दूर कर दिया जाए तो लिखा हुआ अच्छा भाग्य प्राप्त होता है।। ६ ।। मनमुख व्यक्तियों के सिर पर मार पड़ती है और वे विवादों में ही मर खप जाते हैं। यह झूठी दुनिया ठगी जा रही है और लूटी जा रही है; इसे बांध कर धकेला जाता है।। ७ ।। यदि प्रभु को हृदय में बसाया जाए तो कोई पछतावा नहीं होता और यदि शब्द के अनुरूप आचरण बनाया जाए तो परमात्मा सारे गुनाहों को क्षमा कर देता है।। ८ ।। नानक तो उस सच का दान माँग रहा है जिसे गुरमुख बनकर परिश्रमपूर्वक प्राप्त किया जाता है। हे प्रभु, मेरी ओर कृपादृष्टि से देखो क्योंकि मेरा तेरे बिना अन्य कोई भी नहीं है।। ६ ।। १६ ।। आसा महला १ ।। मैं जंगल में जाकर क्यों खोजूँ क्योंकि मेरे तो घर में ही हरा-भरा सुन्दर जंगल है। शब्द के माध्यम से शीघ्र ही सत्य मन में आन टिकता है।। १ ।। जहाँ तक देखा जाए वहाँ वह प्रभु ही है; मैं अन्य किसी को नहीं जानता। गुरु की सेवा करते हुए परमात्मा के महल की पहचान आ जाती है।। १ ।। रहाउ ।। जब वह स्वयं सत्य से मिलाता है तो वह मन को अच्छा लगने लगता है।। जीव यदि उस प्रभु की रज़ा में चलता रहे तो उसकी गोदी में लीन हो जाता है।। २ ।। जिस हृदय में सच्चा साहिब बस जाता है उसी हृदय को वास्तव में आबाद हुआ माना जाता है। वह प्रभु स्वयं ही बड़प्पन प्रदान करता है और यह सब देते हुए उसे कोई भी कमी नहीं आती।। ३ ।। हर ऐरे गैरे की चाकरी करते हुए भला कोई प्रभु के दरबार को कैसे पा सकता है। व्यक्ति यदि पत्थर की नाव पर सवार होगा तो वह उसके बोझ से पत्थर के साथ ही डूब जाएगा।। ४ ।। अपने मन को गुरु के पास बेचकर अपना सिर भी उसे अर्पण कर देना चाहिए। गुरमुख बनकर ही वास्तविक तत्व को पहचाना जाता है और अपने मूल निवास का पता लग जाता है।। ५ ।। लोग जन्म लेने और मरने की बातें करते हैं परन्तु यह सब उस कर्ता प्रभु का ही किया हुआ है। जो अपने अहंकार को दूर करके अहंकार के प्रति मृत हो जाते हैं वे फिर दुबारा नहीं मरते।। ६ ।। व्यक्ति को वही कार्य करने योग्य है जिसके लिए प्रभु ने ही आज्ञा की हुई है। यदि व्यक्ति अपने मन को सच्चे गुरु के समक्ष अर्पण कर दे तो ऐसे व्यक्ति का भला कौन मूल्य आंक सकता है।। ७ ।। वह प्रभु मन रूपी रत्न को जाँचने परखने वाला है और वही उसका मूल्य आंकता है। हे नानक, जिसके मन में प्रभु का निवास है उसी का बड़प्पन सच्चा है।। ८ ।। १७ ।। आसा महला १ ।। जिन्होंने प्रभु नाम को भुला दिया है वे द्वैतभाव में पड़कर भ्रमों में भटकते हुए भूले रहते हैं। जो जड़ को छोड़कर डालियों को पकड़ते हैं उन्हें भला छाया कैसे प्राप्त होगी।। १ ।। अच्छा है यदि कोई इस तथ्य को जानता हो कि प्रभु नाम के बिना जीव की मुक्ति कैसे हो सकती है। व्यक्ति यदि गुरमुख बन जाए तो वह बन्धनों से छूट सकता है अन्यथा मनमुख बनकर तो उसकी इज्जत ही जाती है।। १।। रहाउ।। जिन्होंने केवल एक प्रभु की ही सेवा की है हे भाई, उनकी बुद्धि पूर्ण है। प्रभु का सेवक उस हरि की शरण में है जो आदि और युगादि काल से स्थित और परम पवित्र है।। २ ।। हे भाई, मेरा मालिक एक ही है अन्य कोई नहीं। सच्चे प्रभु की कृपा के फलस्वरूप ही सुख प्राप्त होता है।। ३ ।। बेशक कोई कितना कहता रहे परन्तु गुरु के बिना कोई भी प्रभु को नहीं पा सका है। प्रभु स्वयं मार्गदर्शन करता है और सच्ची भक्ति को जीव के मन में पक्का करता है।। ४ ।। मनमुख व्यक्ति को यदि समझाया भी जाए तब भी वह कुमार्ग रूपी उजाड़ की तरफ ही जाता है। प्रभु के नाम के बिना उसका छुटकारा नहीं होता है और मौत के बाद वह नर्क में ही पड़ा रहता है।। ५ ।। जो प्रभु का नाम नहीं लेता वह जन्म लेकर मरता और भ्रमण करता रहता है। गुरु की सेवा के बिना कोई उसका कौड़ी जितना मूल्य भी नहीं आंकता।।६।।

जेही सेव कराईऐ करणी भी साई ॥ आपि करे किसु आखीऐ वेखै वडिआई ॥ ७ ॥ गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए ॥ नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए ॥ ८ ॥ १८ ॥ आसा महला १ ॥ रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी ॥ वडे भागि सतिगुरु मिलै पाईऐ पदु निरबाणी ॥ १ ॥ मै ओल्हगीआ ओल्हगी हम छोरू थारे ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा मुखि नामु हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआसा घणी भाणै मनि भाईऐ ॥ मेरे ठाकुर हाथि वडिआईआ भाणै पति पाईऐ ॥ २ ॥ साचउ दूरि न जाणीऐ अंतरि है सोई ॥ जह देखा तह रवि रहे किनि कीमति होई ॥ ३ ॥ आपि करे आपे हरे वेखै वडिआई ॥ गुरमुखि होइ निहालीऐ इउ कीमति पाई ॥ ४ ॥ जीवदिआ लाहा मिलै गुर कार कमावै ॥ पूरबि होवै लिखिआ ता सतिगुरु पावै ॥ ५ ॥ मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाए ॥ मनमुखु अंधु न चेतई किउ दरसनु पाए ॥ ६ ॥ ता जगि आइआ जाणीऐ साचै लिव लाए ॥ गुर भेटे पारसु भए जोती जोति मिलाए ॥ ७ ॥ अहिनिसि रहै निरालमो कार धुर की करणी ॥ नानक नामि संतोखीआ राते हरि चरणी ॥ ८ ॥ १९ ॥ आसा महला १ ॥ केता आखणु आखीऐ ता के अंत न जाणा ॥ मै निधरिआ धर एक तूं मै ताणु सताणा ॥ १ ॥ नानक की अरदासि है सच नामि सुहेला ॥ आपु गइआ सोझी पई गुर सबदी मेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै गरबु गवाईऐ पाईऐ वीचारु ॥ साहिब सिउ मनु मानिआ दे साचु अधारु ॥ २ ॥ अहिनिसि नामि संतोखीआ सेवा सचु साई ॥ ता कउ बिघनु न लागई चालै हुकमि रजाई ॥ ३ ॥ हुकमि रजाई जो चलै सो पवै खजानै ॥ खोटे ठवर न पाइनी रले जूठानै ॥ ४ ॥ नित नित खरा समालीऐ सचु सउदा पाईऐ ॥ खोटे नदरि न आवनी ले अगनि जलाईऐ ॥ ५ ॥ जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥ एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ॥ ६ ॥ अंम्रित फलु जिनी चाखिआ सचि रहे अघाई ॥ तिंना भरमु न भेदु है हरि रसन रसाई ॥ ७ ॥ हुकमि संजोगी आइआ चलु सदा रजाई ॥ अउगणिआरे कउ गुणु नानकै सचु मिलै वडाई ॥ ८ ॥ २० ॥ आसा महला १ ॥ मनु रातउ हरि नाइ सचु वखाणिआ ॥ लोका दा

व्यक्ति से जैसी सेवा प्रभु करवाता है वह वैसी ही करता रहता है। प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता है इसलिए अन्य किसी के बारे में क्या कहा जाए; वह स्वयं ही अपने बड़प्पन को देखता रहता है।। ७ ।। प्रभु की सेवा वही करता है जिससे प्रभु स्वयं करवाता है। हे नानक, गुरु को सिर देकर अर्थात अपना सब कुछ अर्पण करके मुक्त हुआ जाता है और प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त किया जाता है।। ८ ।। १८ ।। आसा महला १ ।। सर्वोच्च स्वामी प्रभु सुन्दर है और उसकी वाणी भी सुन्दर है। अच्छे भाग्य से ही सच्चा गुरु मिलता है और उसी के माध्यम से अमर पद प्राप्त होता है।। १ ।। मैं तेरे जूठे बर्तन माँजने वालों का भी नौकर हूँ, तुम्हारा दास हूँ। मेरे मुँह में तो सदैव तुम्हारा ही नाम है अतः तू जैसे रखेगा मैं वैसे ही रहूँगा।। १ ।। रहाउ ।। तेरे दर्शन की प्यास मुझे बहुत ही लगी हुई है। तेरी रज़ा को मानने से ही जीव तेरे मन को अच्छा लगता है। सभी बड़प्पन मेरे प्रभु के हाथ में हैं और उसी की रज़ा में सभी प्रकार का सम्मान प्राप्त होता है।। २ ।। वह सच्चा प्रभु दूर नहीं है उसे अन्तर्मन में ही देखा जाए। जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ वहाँ मैं अपने प्रभु को व्याप्त पाता हूँ। हे प्रभु, तेरा मूल्य कैसे आंका जा सकता है।। ३ ।। वह प्रभु स्वयं ही सृजन करता है, स्वयं ही नष्ट करता है और स्वयं ही अपने प्रभुत्व को देखता है। गुरमुख होकर ही उस प्रभु को देखा जाता है और इस प्रकार उसका मूल्य आंका जाता है।। ४ ।। गुरु की सेवा करने से जीते जी ही व्यक्ति को लाभ प्राप्त हो जाता है परन्तु सच्चा गुरु तभी मिलता है यदि प्रारम्भ से ही ऐसा लेख विधाता द्वारा लिखा गया हो।। ५ ।। मनमुख रूपी अन्धा ज्ञानी जीव चेतन नहीं बनता और प्रभु के सुमिरन के बिना भला वह कैसे उसका दर्शन पा सकता है।। ६ ।। इस संसार में व्यक्ति का आना तब ही सफल जाना जाता है यदि वह सच्चे प्रभु के साथ अपनी सुरति जोड़े रखे। गुरु के मिलाप के बाद व्यक्ति स्वयं पारस बन जाता है अर्थात अमूल्य पदार्थ बन जाता है और उसकी ज्योति परम ज्योति में लीन हो जाती है।। ७ ।। ऐसा व्यक्ति जो प्रभु की इच्छा के अनुरूप कार्य करता है दिन रात निराले रूप में बिना मोह माया में लिप्त हुए अपना कार्य-व्यवहार करता रहता है। हे नानक, जो प्रभु के नाम में संतुष्ट बने हुए हैं वे प्रभु के चरणों में ही लीन बने रहते हैं।। ८ ।। १६ ।। आसा महला १ ।। चाहे जितना भी उसका वर्णन किया जाए मैं उसके ओर-छोर को नहीं जान सकता। हे प्रभु, मुझ निराश्रित का आसरा केवल एक तू ही है और तू ही मेरा शक्तिशाली बल है।। १ ।। नानक की यही अरदास है कि उसे सच्चे नाम का सुख मिले। जब अपना अभिमान चला जाता है तो व्यक्ति को सूझ बुद्धि मिल जाती है तथा शब्द-गुरु के माध्यम से उसका परमात्मा से मिलाप हो जाता है।। १ ।। रहाउ ।। यदि अहंकार और झूठे अभिमान को छोड़ दिया जाए तो व्यक्ति को वास्तविक चिन्तन वाली बुद्धि प्राप्त हो जाती है। जब सच्चे प्रभु के साथ मन मान जाता है तो वह प्रभु इसको जीवन का आधार सत्य दान कर देता है।। २ ।। हे जीव, तू दिन-रात प्रभु नाम में संतुष्ट बना रह क्योंकि यही वास्तविक सच्ची सेवा है। जो प्रभु के हुकुम को रज़ा मानकर उसी के अनुरूप चलता है उसके सामने कभी भी कोई विघ्न नहीं आता।। ३ ।। जो प्रभु के हुकुम को रज़ा के रूप में मानकर उसके अनुरूप आचरण करता है उसे खरे सिक्के की तरह प्रभु के खज़ाने में प्रविष्ट कर लिया जाता है। खोटे व्यक्तियों को कोई ठौर-ठिकाना नहीं मिलता और उन्हें जूठन चाहने वाले खोटे लोगों में ही डाल दिया जाता है।। ४ ।। सदैव खरे सिक्के को ही संभाला जाता है अर्थात शुद्ध एवं पवित्र व्यक्ति का ही सम्मान होता है और ऐसा सच्चा सिक्का ही खरीदारी में काम आता है। खोटे सिक्के तो प्रभु के खज़ाने में दिखाई ही नहीं पड़ते; उन्हें पकड़कर फिर आग में जलाया तपाया जाता है।। ५ ।। जिन्होंने अपनी आत्मा को पहचान लिया है वे स्वयं ही परमात्मा हो गए हैं। वह एक प्रभु ही अमृत रूपी वृक्ष है जिसमें अमृत जैसे फल ही लगते हैं।। ६ ।। जो भी इस अमृत फल को चखता है वह इस सत्य रूपी फल के कारण तृप्त बना रहता है। जिनकी जीभ प्रभु के रस का आनन्द लेती है उन्हें कभी भी कोई भ्रम अथवा सन्देह नहीं सताता।। ७ ।। प्रभु की आज्ञा के अन्तर्गत ही हे जीव, तू पूर्व संयोगों के कारण इस संसार में आया है इसलिए तू सदैव उसकी रज़ा में ही चलता रह। हे प्रभु, अवगुणों वाले इस नानक को अपने सच्चे नाम का बड़प्पन और गुण प्रदान कर।। ८ ।। २० ।। आसा महला १।। जो सच बोलते हैं उनका मन प्रभु नाम में रंगा रहता है। लोगों का भला इसमें

किआ जाइ जा तुधु भाणिआ ॥ १ ॥ जउ लगु जीउ पराण सचु धिआईऐ ॥ लाहा हरि गुण गाइ मिलै सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सची तेरी कार देहि दइआल तूं ॥ हउ जीवा तुधु सालाहि मै टेक अधारु तूं ॥ २ ॥ दरि सेवकु दरवानु दरदु तूं जाणही ॥ भगति तेरी हैरानु दरदु गवावही ॥ ३ ॥ दरगह नामु हदूरि गुरमुखि जाणसी ॥ वेला सचु परवाणु सबदु पछाणसी ॥ ४ ॥ सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइ ॥ मनहु छोडि विकार सचा सचु देइ ॥ ५ ॥ सचे सचा नेहु सचै लाइआ ॥ आपे करे निआउ जो तिसु भाइआ ॥ ६ ॥ सचे सची दाति देहि दइआलु है ॥ तिसु सेवी दिनु राति नामु अमोलु है ॥ ७ ॥ तूं उतमु हउ नीचु सेवकु कांढीआ ॥ नानक नदरि करेहु मिलै सचु वांढीआ ॥ ८ ॥ २१ ॥ आसा महला १ ॥ आवण जाणा किउ रहै किउ मेला होई ॥ जनम मरण का दुखु घणो नित सहसा दोई ॥ १ ॥ बिनु नावै किआ जीवना फिटु ध्रिगु चतुराई ॥ सतिगुर साधु न सेविआ हरि भगति न भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवणु जावणु तउ रहै पाईऐ गुरु पूरा ॥ राम नामु धनु रासि देइ बिनसै भ्रमु कूरा ॥ २ ॥ संत जना कउ मिलि रहै धनु धनु जसु गाए ॥ आदि पुरखु अपरंपरा गुरमुखि हरि पाए ॥ ३ ॥ नटूऐ सांगु बणाइआ बाजी संसारा ॥ खिनु पलु बाजी देखीऐ उझरत नही बारा ॥ ४ ॥ हउमै चउपड़ि खेलणा झूठे अहंकारा ॥ सभु जगु हारै सो जिणै गुर सबदु बीचारा ॥ ५ ॥ जिउ अंधुलै हथि टोहणी हरि नामु हमारै ॥ राम नामु हरि टेक है निसि दउत सवारै ॥ ६ ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा हरि नाम अधारा ॥ अंति सखाई पाइआ जन मुकति दुआरा ॥ ७ ॥ जनम मरण दुख मेटिआ जपि नामु मुरारे ॥ नानक नामु न वीसरै पूरा गुरु तारे ॥ ८ ॥ २२ ॥

आसा महला ३ असटपदीआ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सासतु बेदु सिंम्रिति सरु तेरा सुरसरी चरण समाणी ॥ साखा तीनि मूलु मति रावै तूं तां सरब विडाणी ॥ १ ॥ ता के चरण जपै जनु नानकु बोले अंम्रित बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेतीस करोड़ी दास

क्या जाता है यदि तुझे यह सब अच्छा लगता है।। १ ।। जब तक शरीर में प्राण है सत्य की आराधना ही करनी चाहिए क्योंकि प्रभु के गुण गाने से लाभ भी प्राप्त होता है और सुख भी मिलता है।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तू दयालु होकर मुझे अपनी सच्ची सेवा प्रदान कर। मैं तो तेरे गुणानुवाद करके ही जीता हूँ और मेरा आसरा और भरोसा केवल एक तू ही है।। २ ।। तेरा सेवक तेरे द्वार का दरबान है और इसके दुख दर्द को तू ही जानता है। तेरी भक्ति आश्चर्यजनक है क्योंकि यह सभी कष्टों को मिटा देती है।। ३ ।। प्रभु के दरबार में उसके समक्ष केवल नाम का जाप ही स्थिर बना रहता है। इस तथ्य को गुरमुख बनकर ही माना जा सकता है। जो शब्द से पहचान बना लेता है उसका जीवन (समय) उत्तम और स्वीकृत माना जाता है।। ४ ।। जो सत्य, संतोष और प्रेम को जीवन मार्ग का खर्च बनाता है वही प्रभु-नाम को प्राप्त करता है। यदि मन के विकारों को छोड़ दिया जाए तो सच्चा प्रभु सत्य का दान देता है।। ५ ।। सच्चे प्रभु ने ही सत्य के साथ प्रेम को लगा दिया है और वह स्वयं ही जैसा उसको अच्छा लगता है न्याय करता है।। ६ ।। सच्चे प्रभु का दान भी सच्चा है और दयालु होकर वह देता है। मैं उस प्रभु की ही दिन-रात सेवा करता हूँ जिसका नाम अमूल्य है।। ७ ।। हे प्रभु, तू उत्तम है और मैं बेशक नीच हूँ परन्तु फिर भी तेरा सेवक समझा जाता हूँ। नानक का कथन है कि हे प्रभु, कृपा-दृष्टि करो ताकि सत्य से बिछुड़े हुओं का पुनः सत्य से मिलाप हो सके।। ८ ।। २१ ।। आसा महला १ ।। इस संसार में जन्म लेना और मरना तथा आवागमन कैसे समाप्त हो सकता है और कैसे उस प्रभु से मिलाप हो सकता है। जन्म और मरण का दुख बहुत ही अधिक बना रहता है और सदैव संशय का भाव बना रहता है।। १ ।। प्रभु के नाम के बिना जीवन क्या है; सारी चतुराईयां व्यर्थ हैं और उन्हें धिक्कार है। चतुराईयों में पड़कर ही साधु रूपी सच्चे गुरु की सेवा नहीं की और प्रभु की भक्ति से भी प्यार नहीं किया।। १ ।। रहाउ ।। जब पूर्ण गुरु को पा लिया जाए तभी आवागमन समाप्त होता है। जब राम-नाम रूपी धन की रासपूँजी मिल जाती है तभी झूठे भ्रम नष्ट हो जाते हैं।। २ ।। व्यक्ति संतजनों से मिलाप करके जीवन व्यतीत करे और उस प्रभु को धन्य-धन्य कहता हुआ उसके यश का गायन करे तभी गुरमुख बनकर उस अपरंपर आदि पुरुष परमात्मा को पाया जाता है।। ३ ।। जिस प्रकार नट अनेकों वेष बनाकर खेल दिखाता है उसी तरह यह संसार भी एक खेल है। थोड़े समय के लिए ही यहां यह जीव खेल खेलते हुए दिखाई देते हैं परन्तु इन्हें छिन्न-भिन्न होते हुए देर नहीं लगती।। ४ ।। व्यक्ति झूठे अहंकार और अभिमान की गोटियों के साथ जीवन रूपी चौपड़ की बाज़ी खेलता है। जो शब्द-गुरु के गहन चिन्तन मनन के फलस्वरूप इस सारे संसार को हार जाता है अर्थात संसार से अलिप्त हो जाता है वही वास्तव में जीतता है।। ५ ।। जैसे अन्धे के हाथ में रास्ता पहचानने के लिए एक छड़ी होती है इसी तरह हमारे हाथ में आसरा देने वाला एक प्रभु का नाम है। प्रभु नाम का ही आधार है जो दिन-रात हमें संभाल रहा है।। ६ ।। हे प्रभु, जैसे तू रखेगा मैं वैसे ही रहूँगा क्योंकि मुझे तो हे प्रभु, तेरे नाम का ही आसरा है। मुझे दास को तो वास्तव में अन्तिम समय का साथी और मुक्ति का द्वार मिल गया है।। ७ ।। प्रभु के नाम का सुमिरन करके मेरा जन्म-मरण का दुख मिट गया है। हे नानक, जिसे प्रभु का नाम विस्मृत नहीं होता, पूर्ण प्रभु उसको पार उतार देता है।। ८ ।। २२ ।।

आसा महला ३ अष्टपदियाँ घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

शास्त्र, वेद और स्मृतियां वास्तव में तेरा नाम रूपी सरोवर ही हैं और गंगा तेरे चरणों में लीन हो रही है अर्थात प्रभु नाम में ही सभी धार्मिक ग्रन्थ और प्रभु के चरणों में ही सभी तीर्थ समाए रहते हैं। हे प्रभु, व्यक्ति की बुद्धि तो केवल त्रिगुणात्मक संसार को ही समझ सकती है परन्तु हे प्रभु, तू तो सबसे बड़ा और निराला है इसलिए तुझे कैसे समझा जा सकता है।। १ ।। दास नानक ऐसे प्रभु के चरणों का सुमिरन करता है और उसकी अमृत-वाणी का गायन करता है।। १ ।। रहाउ ।। तथाकथित तेतीस करोड़ देवता तुम्हारे दास

तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी ॥ ता के रूप न जाही लखणे किआ करि आखि वीचारी ॥ २ ॥ तीनि गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरीआ खाणी ॥ करमु होवै ता परम पदु पाईऐ कथे अकथ कहाणी ॥ ३ ॥ तूं करता कीआ सभु तेरा किआ को करे पराणी ॥ जा कउ नदरि करहि तूं अपणी साई सचि समाणी ॥ ४ ॥ नामु तेरा सभु कोई लेतु है जेती आवण जाणी ॥ जा तुधु भावै ता गुरमुखि बूझै होर मनमुखि फिरै इआणी ॥ ५ ॥ चारे वेद ब्रहमे कउ दीए पड़ि पड़ि करे वीचारी ॥ ता का हुकमु न बूझै बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी ॥ ६ ॥ जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ॥ तिन भी अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी ॥ ७ ॥ तूं सचा तेरा कीआ सभु साचा देहि त साचु वखाणी ॥ जा कउ सचु बुझावहि अपणा सहजे नामि समाणी ॥ ८ ॥ १ ॥ २३ ॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ॥ हरि नामु निरंजनु मंनि वसाइआ ॥ सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे ततु गिआनु ॥ देवण वाला सभ बिधि जाणै गुरमुखि पाईऐ नामु निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर भेटे की वडिआई ॥ जिनि ममता अगनि त्रिसना बुझाई ॥ सहजे माता हरि गुण गाई ॥ २ ॥ विणु गुर पूरे कोइ न जाणी ॥ माइआ मोहि दूजै लोभाणी ॥ गुरमुखि नामु मिलै हरि बाणी ॥ ३ ॥ गुर सेवा तपां सिरि तपु सारु ॥ हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु ॥ दरि साचै दीसै सचिआरु ॥ ४ ॥ गुर सेवा ते त्रिभवण सोझी होइ ॥ आपु पछाणि हरि पावै सोइ ॥ साची बाणी महलु परापति होइ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते सभ कुल उधारे ॥ निरमल नामु रखै उरि धारे ॥ साची सोभा साचि दुआरे ॥ ६ ॥ से वडभागी जि गुरि सेवा लाए ॥ अनदिनु भगति सचु नामु द्रिड़ाए ॥ नामे उधरे कुल सबाए ॥ ७ ॥ नानकु साचु कहै वीचारु ॥ हरि का नामु रखहु उरि धारि ॥ हरि भगती राते मोख दुआरु ॥ ८ ॥ २ ॥ २४ ॥ आसा महला ३ ॥ आसा आस करे सभु कोई ॥ हुकमै बूझै निरासा होई ॥ आसा विचि सुते कई लोई ॥ सो जागै जागावै सोई ॥ १ ॥ सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु नावै भुख न

हैं। ऋद्धियों-सिद्धियों को ही अपने प्राणों का आधार मानने वाले भी प्रभु के रूप को नही समझ सकते फिर भला वे उसका विचार करके क्या कथन कर सकते हैं।। २।। तीनों गुण (सत्व, रजस, तमस) तुम्हारे जगत् के अन्दर ही विद्यमान हैं और हे प्रभु, जीव को उत्पन्न करने वाले चारों स्रोत भी तेरे ही हैं अर्थात यह सारी सृष्टि रचना तेरे अन्तर्गत ही है तू इससे बहुत बड़ा है। हे प्रभु, तेरी कृपा हो तो परम पद की प्राप्ति होती है और तेरी अकथनीय महिमा का थोड़ा बहुत कथन किया जाता है।। ३ ।। यह जीव भला क्या कर सकता है क्योंकि तू ही करता है और सब कुछ तेरा ही किया-कराया है। हे प्रभु, जिस पर तू अपनी कृपादृष्टि करता है वही सत्य में लीन बना रहता है।। ४ ।। जितने भी जन्म लेने और मरने वाले हैं वे सब तेरे नाम का ही जाप करते हैं। हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लगे तो जीव गुरमुख बनकर इस रहस्य को बूझता है अन्यथा अन्य लोग तो मूर्ख और मनमुख बनकर ही इधर-उधर भटकते रहते हैं।। ५ ।। यह जाना जाता है कि प्रभु ने चारों वेद ब्रह्मा को दिए जो उन्हें पढ़-पढ़कर उनका चिन्तन करता है। परन्तु बेचारा वह भी प्रभु के हुकुम रूपी विधान को नहीं जान पाया और नर्कों-स्वर्गों में भटकता रहा।। ६ ।। बड़े-बड़े लोग अपने.अपने युगों के महान राजा गण थे जिन्हें लोग प्रभु का अवतार जानते हुए उनका यश गायन करते हैं। वे सब भी प्रभु का ओर-छोर नहीं जान सके इसलिए मैं भला प्रभु के बारे में क्या विचार व्यक्त करूँ।। ७ ।। हे प्रभु, तू सच्चा है और तेरा किया हुआ भी सब कुछ सच्चा है; अब यदि तू मुझे शक्ति प्रदान करे तो मैं सत्य का कथन करूँ। हे प्रभु, जिसे तू सत्य के रहस्य को समझा देता है वह सहज भाव में ही प्रभु-नाम में लीन हो जाता है।। ८ ।। १ ।। २३ ।। आसा महला ३ ।। सच्चे गुरु ने मेरे भ्रम रूपी अज्ञान को नष्ट कर दिया है और पवित्र हरि के नाम को मेरे मन में बसा दिया है। शब्द-ब्रह्म को पहचान कर मैने सदैव सुख प्राप्त किया है।। १ ।। हे मेरे मन, तू तत्व ज्ञान की बात सुन। देने वाला प्रभु तो देने की सब विधियों को जानता है परन्तु लेने वाला गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम के भण्डार को प्राप्त कर सकता है।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु से मिलाप का सबसे बड़ा गुण यह है कि वह ममता और तृष्णा की अग्नि को बुझा देता है। प्रभु के गुण गाता हुआ व्यक्ति सहज भाव में लीन हो जाता है।। २।। पूर्ण गुरु के बिना उस प्रभु को कोई नहीं जानता; बाकी सब तो माया-मोह और द्वैत-भाव में लिपटे हुए हैं।। ३ ।। गुरमुख बनकर ही प्रभु मन में आन बसता है। ऐसा व्यक्ति ही सत्याचरण वाला बन कर उस सच्चे प्रभु के द्वार पर शोभायमान दिखाई देता है।। ४ ।। गुरु की सेवा से तीनों लोकों के रहस्य का पता चल जाता है। व्यक्ति अपने आप को पहचान लेता है और प्रभु को पा जाता है। प्रभु की सच्ची वाणी के माध्यम से ही उसके महल को जान लिया जाता है।। ५ ।। गुरु की सेवा से पूरे वंश का उद्धार हो जाता है क्योंकि गुरु ही प्रभु के निर्मल नाम को हृदय में पिरोकर रखता है। ऐसे व्यक्ति की महिमा सच्ची होती है। वही सच्चे प्रभु के द्वार पर शोभायमान होता है।। ६ ।। गुरु जिन्हें सेवा में लगाता है वे बड़े भाग्यशाली हैं। वह उनको प्रत्येक दिन भक्ति और सच्चे नाम के सुमिरन में परिपक्व करता है। प्रभु-नाम के फलस्वरूप ही व्यक्ति के सभी कुलों का उद्धार हो जाता है।। ७ ।। नानक इस सच्चे विचार का कथन कर रहा है कि प्रभु के नाम को हृदय में धारण किए रहो। प्रभु की भक्ति में लीन होकर ही मोक्ष का द्वार प्राप्त होता है।।८।।२।।२४।। आसा महला ३।। सभी जीव आशाएं और इच्छाएं ही करते रहते हैं परन्तु जो उस प्रभु के हुकुम को बूझ लेता है वह इच्छा रहित हो जाता है। आशाओं के अन्धेरे में कई लोग सोए पड़े हैं लेकिन इस अँधेरे में से जागता वही है जिसे ज्ञान हो जाता है।। १ ।। सच्चे गुरु ने नाम का रहस्य बताया है और अब पता चल गया है कि प्रभु-नाम के बिना तृष्णा समाप्त नहीं होती।

जाई ॥ नामे त्रिसना अगनि बुझै नामु मिलै तिसै रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलि कीरति सबदु पछानु ॥ एहा भगति चूकै अभिमानु ॥ सतिगुरु सेविऐ होवै परवानु ॥ जिनि आसा कीती तिस नो जानु ॥ २ ॥ तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाए ॥ करि किरपा नामु मंनि वसाए ॥ इहु सिरु दीजै आपु गवाए ॥ हुकमै बूझै सदा सुखु पाए ॥ ३ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ आपे गुरमुखि नामु वसाए ॥ आपि भुलावै आपि मारगि पाए ॥ सचै सबदि सचि समाए ॥ ४ ॥ सचा सबदु सची है बाणी ॥ गुरमुखि जुगि जुगि आखि वखाणी ॥ मनमुखि मोहि भरमि भोलाणी ॥ बिनु नावै सभ फिरै बउराणी ॥ ५ ॥ तीनि भवन महि एका माइआ ॥ मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ द्रिड़ाइआ ॥ बहु करम कमावै दुखु सबाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥ ६ ॥ अंम्रितु मीठा सबदु वीचारि ॥ अनदिनु भोगे हउमै मारि ॥ सहजि अनंदि किरपा धारि ॥ नामि रते सदा सचि पिआरि ॥ ७ ॥ हरि जपि पड़ीऐ गुर सबदु वीचारि ॥ हरि जपि पड़ीऐ हउमै मारि ॥ हरि जपीऐ भइ सचि पिआरि ॥ नानक नामु गुरमति उर धारि ॥ ८ ॥ ३ ॥ २५ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥

गुर ते सांति ऊपजै जिनि त्रिसना अगनि बुझाई ॥ गुर ते नामु पाईऐ वडी वडिआई ॥ १ ॥ एको नामु चेति मेरे भाई ॥ जगतु जलंदा देखि कै भजि पए सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर ते गिआनु ऊपजै महा ततु बीचारा ॥ गुर ते घरु दरु पाइआ भगती भरे भंडारा ॥ २ ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ बूझै वीचारा ॥ गुरमुखि भगति सलाह है अंतरि सबदु अपारा ॥ ३ ॥ गुरमुखि सूखु ऊपजै दुखु कदे न होई ॥ गुरमुखि हउमै मारीऐ मनु निरमलु होई ॥ ४ ॥ सतिगुरि मिलिऐ आपु गइआ त्रिभवण सोझी पाई ॥ निरमल जोति पसरि रही जोती जोति मिलाई ॥ ५ ॥ पूरै गुरि समझाइआ मति ऊतम होई ॥ अंतरु सीतलु सांति होइ नामे सुखु होई ॥ ६ ॥ पूरा सतिगुरु तां मिलै जां नदरि करेई ॥ किलविख पाप सभ कटीअहि फिरि दुखु बिघनु न

प्रभु-नाम के माध्यम से ही तृष्णाओं की अग्नि बुझती है परन्तु यह नाम उस प्रभु की रज़ा के अन्तर्गत ही प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ ।। कलियुग में हरि-यश गायन यही है कि शब्द को पहचाना जाए। यही भक्ति है कि व्यक्ति का अभिमान दूर हो जाए। सच्चे गुरु की सेवा करने से ही जीव प्रभु के समक्ष स्वीकृत होता है। हे जीव, तू उसको जान ले जिसने यह तृष्णा पैदा की है।। २ ।। उसे क्या भेंट दी जाए जो शब्द को सुनाता है और कृपा करके प्रभु-नाम को मन में बसा देता है। अपने अभिमान को त्याग कर उसे अपना जीवन ही अर्पण कर दिया जाए। इस भावना से जो प्रभु के हुकुम को जान जाता है वह सदा सुख प्राप्त करता है।। ३ ।। वह प्रभु ही स्वयं सब कुछ करता है और स्वयं ही सब कुछ करवाता है। स्वयं ही गुरमुख बने व्यक्ति के हृदय में प्रभु-नाम को बसाता है। प्रभु स्वयं ही भुलवाता है और स्वयं ही मार्ग दिखा देता है। सच्चे शब्द के माध्यम से व्यक्ति सत्य में ही लीन हो जाता है।। ४ ।। शब्द सच्चा है और वाणी भी सच्ची है जिसे समय-समय पर गुरमुखों ने उच्चारण किया है। मन के पीछे चलने वाले अर्थात मनमुख व्यक्ति भ्रम और मोह में भूले भटक रहे हैं। प्रभु-नाम के बिना सभी बौराए हुए इधर-उधर दौड़ भाग रहे हैं।। ५ ।। तीनों लोकों में एक माया का ही ज़ोर है। मूर्ख जीवों ने बार-बार जान बूझ कर माया के साथ अपना प्रेम पक्का किया है और माया का प्रेमी बनकर जीव अनेकों कर्म करता है जो सभी अन्ततः दुख ही दुख बन जाते हैं। जब जीव सच्चे गुरु की सेवा करता है तभी सुख प्राप्त होता है।। ६ ।। शब्द का चिन्तन अमृत के समान मीठा होता है। अपने अहंकार को मारकर व्यक्ति सदैव उस अमृत का आनन्द लेता है। प्रभु की कृपा के फलस्वरूप ऐसा व्यक्ति सहज आनन्द में लीन हो जाता है; वह प्रभु-नाम में रंग जाता है और सदैव सत्य का प्रेमी बन जाता है।। ७ ।। शब्द-गुरु के चिन्तन, मनन से ही प्रभु का सुमिरन जाना जाता है और प्रभु के सुमिरन से अहंकार को मारा जाता है। प्रभु के सुमिरन से ही प्रभु का भय और सत्य के प्रति प्यार मन में पैदा होता है। हे नानक, गुरु की मति के माध्यम से प्रभु नाम को हृदय में बसाए रखो।। ८ ।। ३ ।। २५ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि राग आसा महला ३ अष्टपदियाँ घरु ८ काफी।।

जिस गुरु ने तृष्णा रूपी अग्नि को बुझा दिया है उसी गुरु से शान्ति उत्पन्न होती है। गुरु से ही प्रभु-नाम जिसकी कि भारी महिमा है, प्राप्त होता है।। १ ।। हे मेरे भाई, केवल एक प्रभु-नाम का ही सुमिरन कर। सारे संसार को तृष्णा की अग्नि में जलता हुआ देखकर हम तो प्रभु की शरण के लिए भाग निकले ताकि बचाव हो सके।। १ ।। रहाउ ।। महान तत्व रूपी विचार यही है कि गुरु से ही ज्ञान पैदा होता है। गुरु से ही प्रभु के घर और द्वार को प्राप्त किया जाता है और भक्ति के भण्डारों को भरा जाता है।। २ ।। गुरमुख बनकर ही प्रभु नाम की आराधना की जानी चाहिए और इस विचार के रहस्य को बूझना चाहिए। गुरमुख बनकर ही भक्ति और गुणानुवाद किया जाता है तथा अन्तर्मन में अपरंपर शब्द आन बसता है।। ३ ।। गुरमुख बनने से ही सुख पैदा होता है और कभी दुख नहीं होता। गुरमुख बनकर ही अहंकार को मारा जाता है और मन निर्मल हो जाता है।। ४ ।। सच्चे गुरु से मिलाप होने पर भी अभिमान जाता है और तीनों लोकों अर्थात सारी सृष्टि रचना के रहस्य का पता लगता है। प्रभु की निर्मल ज्योति सब ओर भरी हुई दिखाई देती है और उस परम ज्योति में ही अपनी आत्मा लीन हो जाती है।। ५ ।। पूर्ण गुरु जब समझाता है तो व्यक्ति की मति उत्तम हो जाती है। व्यक्ति का अन्तर्मन शीतल और शान्त हो जाता है तथा प्रभु नाम के कारण ही उसे सुख प्राप्त होता है।। ६ ।। यदि प्रभु ही कृपादृष्टि करे तो पूरा सतिगुरु प्राप्त होता है और सच्चे गुरु के मिलने से सभी विकारयुक्त पाप कट जाते हैं और फिर न तो कोई दुख और न ही कोई विघ्न पास

होई ॥ ७ ॥ आपणै हथि वडिआईआ दे नामे लाए ॥ नानक नामु निधानु मनि वसिआ वडिआई पाए ॥ ८ ॥ ४ ॥ २६ ॥ आसा महला ३ ॥ सुणि मन मंनि वसाइ तूं आपे आइ मिलै मेरे भाई ॥ अनदिनु सची भगति करि सचै चितु लाई ॥ १ ॥ एको नामु धिआइ तूं सुखु पावहि मेरे भाई ॥ हउमै दूजा दूरि करि वडी वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु भगती नो सुरि नर मुनि जन लोचदे विणु सतिगुर पाई न जाइ ॥ पंडित पड़दे जोतिकी तिन बूझ न पाइ ॥ २ ॥ आपै थै सभु रखिओनु किछु कहणु न जाई ॥ आपे देइ सु पाईऐ गुरि बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ जीअ जंत सभि तिस दे सभना का सोई ॥ मंदा किस नो आखीऐ जे दूजा होई ॥ ४ ॥ इको हुकमु वरतदा एका सिरि कारा ॥ आपि भवाली दितीअनु अंतरि लोभु विकारा ॥ ५ ॥ इक आपे गुरमुखि कीतिअनु बूझनि वीचारा ॥ भगति भी ओना नो बखसीअनु अंतरि भंडारा ॥ ६ ॥ गिआनीआ नो सभु सचु है सचु सोझी होई ॥ ओइ भुलाए किसै दे न भुलन्ही सचु जाणनि सोई ॥ ७ ॥ घर महि पंच वरतदे पंचे वीचारी ॥ नानक बिनु सतिगुर वसि न आवन्ही नामि हउमै मारी ॥ ८ ॥ ५ ॥ २७ ॥ आसा महला ३ ॥ घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही ॥ गुर परसादी पाईऐ अंतरि कपट खुलाही ॥ १ ॥ सतिगुर ते हरि पाईऐ भाई ॥ अंतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीआ दिखाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का गाहकु होवै सो लए पाए रतनु वीचारा ॥ अंदरु खोलै दिब दिसटि देखै मुकति भंडारा ॥ २ ॥ अंदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा ॥ मन चिंदिआ फलु पाइसी फिरि होइ न फेरा ॥ ३ ॥ पारखीआ वथु समालि लई गुर सोझी होई ॥ नामु पदारथु अमुलु सा गुरमुखि पावै कोई ॥ ४ ॥ बाहरु भाले सु किआ लहै वथु घरै अंदरि भाई ॥ भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति गवाई ॥ ५ ॥ घरु दरु छोडे आपणा पर घरि झूठा जाई ॥ चोरै वांगू पकड़ीऐ बिनु नावै चोटा खाई ॥ ६ ॥ जिन्ही घरु जाता आपणा से सुखीए भाई ॥ अंतरि ब्रहमु पछाणिआ गुर की वडिआई ॥ ७ ॥ आपे दानु करे किसु आखीऐ आपे देइ बुझाई ॥ नानक नामु धिआइ तूं दरि सचै सोभा पाई ॥ ८ ॥ ६ ॥ २८ ॥

आता है।। ७ ।। सभी प्रकार के बड़प्पन प्रभु के अपने हाथ में हैं। वे सब जीव को देकर वह उसे नाम-सुमिरन में लगाता है। हे नानक, जब प्रभु नाम का भण्डार मन में बस जाता है तो जीव शोभा प्राप्त करता है।। ८ ।। ४ ।। २६ ।। आसा महला ३ ।। हे भाई, तू इस बात को ध्यान से सुन और प्रभु-नाम को अपने हृदय में बसा ले; वह स्वयं ही तुझे आन मिलेगा। दिन-रात तू प्रभु की भक्ति सच्चे मन से कर और अपने चित्त को उस सत्य प्रभु के साथ जोड़।। १ ।। हे भाई, तू केवल एक प्रभु के नाम की ही आराधना कर; इससे तुझे सुख मिलेगा। तू अपने अहंकार और द्वैत-भाव को मिटा दे; इससे तेरी शोभा और बढ़ेगी।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु की भक्ति को देवता, मानव एवं मुनिजन हमेशा ही चाहते रहते हैं परन्तु सच्चे गुरु के बिना इसे पाया नहीं जा सकता। विद्वान, पंडित भी और ज्योतिष जानने वाले भी ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं परन्तु वे भी उस परमात्मा को नहीं जान पाते।। २ ।। उस प्रभु के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसने सब कुछ अपने हाथ में ही रखा हुआ है। गुरु ने मुझे यह तथ्य समझा दिया है कि जो प्रभु स्वयं देता है व्यक्ति को मात्र वही प्राप्त होता है।। ३ ।। संसार के सभी जीव उसी प्रभु के हैं और इन जीव जन्तुओं का यदि कोई परमात्मा के अलावा दूसरा हो तो उसे तो भला कुछ कहा जाए अन्यथा किसको बुरा कहें।। ४ ।। सब में एक प्रभु का ही हुकुम कार्यशील है और सब जीवों के जिम्मे उसने उनके कर्त्तव्य लगाए हुए हैं। प्रभु ने स्वयं ही जीवों को उनके अन्दर लोभ और विकार आदि भरकर उन्हें भटका रखा है।। ५ ।। कईयों को उसने स्वयं ही गुरमुख बनाया हुआ है और वे प्रभु को जानते भी हैं और उसका चिन्तन भी करते हैं। प्रभु ने भक्ति भी उन्हें ही दान दी है और उनके अन्दर सभी भण्डार स्थापित कर दिए हैं।। ६ ।। ज्ञानवान व्यक्ति पवित्र सत्य को ही जानते हैं और उनको ही सत्य की सूझ-बुद्धि प्राप्त होती है। वे सत्य को भली प्रकार जानते हैं इसीलिए किसी के भुलावे में भूलकर वे अपने मार्ग को नहीं छोड़ते।। ७ ।। उनके शरीर में भी पाँचों विकार स्थित होते हैं परन्तु ये पाँचों विचारवान बनकर उनके शरीर में कार्यशील बने रहते हैं अर्थात मर्यादा में बने रहते हैं। हे नानक, सच्चे गुरु के बिना ये विकार वश में नहीं आते और प्रभु के नाम के माध्यम से ही अहंकार को मारा जाता है।। ८ ।। ५ ।। २७।। आसा महला ३ ।। जीव के अपने अन्दर ही सभी वस्तुएं हैं; बाहर ढूँढने की ज़रूरत नहीं क्योंकि बाहर कुछ भी नहीं है। गुरु की कृपा से आन्तरिक वस्तुओं (गुणों) का ज्ञान प्राप्त होता है और मन के कपाट खुल जाते हैं।। १ ।। हे भाई, सच्चे गुरु के माध्यम से प्रभु पाया जाता है। जीव के अन्दर ही नाम का खज़ाना है जो पूर्ण सच्चा गुरु दिखा देता है।। १ ।। रहाउ ।। जो प्रभु से मिलाप का इच्छुक हो वही नाम का भण्डार प्राप्त करता है और प्रभु सुमिरन के रत्न को प्राप्त कर लेता है। उसकी दिव्य दृष्टि उसके अन्तर्मन को खोल देती है और मोक्ष रूपी भण्डार को वह देख लेता है।। २ ।। शरीर के अन्दर ही अनेकों स्थान (खण्ड एवं मण्डल) हैं जिसमें यह जीवात्मा बसेरा करती है। इस तथ्य को जानने वाला व्यक्ति मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है और फिर उसका संसार में आना जाना नहीं होता।। ३ ।। परख करने वाले लोग नाम रूपी वस्तु को संभाल लेते हैं क्योंकि गुरु के माध्यम से वे सूझवान बन चुके होते है। नाम रूपी धन-सम्पदा अमूल्य है जिसे गुरमुख बनकर कोई बिरला ही प्राप्त करता है।। ४ ।। जो बाहर ढूँढता है; उसे क्या मिलेगा क्योंकि हे भाई, वास्तविक वस्तु तो अन्दर ही है। सारा संसार बाहरी भ्रमों में भूला हुआ भटकता रहता है तथा मनमुख व्यक्ति अपना सम्मान इसी भटकन में गँवा देता है।। ५ ।। मनमुख व्यक्ति अपना घर-द्वार छोड़कर दूसरों के घरों में जाता है जहाँ उसे चोर की भाँति पकड़ लिया जाता है। प्रभु-नाम के बिना वह अनेक प्रकार की चोटें सहन करता है।। ६ ।। हे भाई, जिन्होंने अपने मन रूपी घर को अच्छी तरह जान लिया है वे सुखी रहते हैं। उन्होंने गुरु के प्रताप से अपने अन्तर्मन में ही ब्रह्म को पहचान लिया होता है।। ७।। प्रभु स्वयं ही दान देता है, स्वयं ही सूझ-बुद्धि प्रदान करता है इसीलिए और किसके आगे प्रार्थना की जाए। हे नानक, तू प्रभु के नाम का सुमिरन कर क्योंकि इसी प्रकार तू सच्चे प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त करेगा।। ८ ।। ६ ।। २८ ।।

आसा महला ३ ॥ आपै आपु पछाणिआ सादु मीठा भाई ॥ हरि रसि चाखिऐ मुकतु भए जिन्हा साचो भाई ॥ १ ॥ हरि जीउ निरमल निरमला निरमल मनि वासा ॥ गुरमती सालाहीऐ बिखिआ माहि उदासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु सबदै आपु न जापई सभ अंधी भाई ॥ गुरमती घटि चानणा नामु अंति सखाई ॥ २ ॥ नामे ही नामि वरतदे नामे वरतारा ॥ अंतरि नामु मुखि नामु है नामे सबदि वीचारा ॥ ३ ॥ नामु सुणीऐ नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥ नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु पाई ॥ ४ ॥ नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई ॥ नामे ही सुखु ऊपजै नामे सरणाई ॥ ५ ॥ बिनु नावै कोइ न मंनीऐ मनमुखि पति गवाई ॥ जम पुरि बाधे मारीअहि बिरथा जनमु गवाई ॥ ६ ॥ नामै की सभ सेवा करै गुरमुखि नामु बुझाई ॥ नामहु ही नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥ ७ ॥ जिस नो देवै तिसु मिलै गुरमती नामु बुझाई ॥ नानक सभ किछु नावै कै वसि है पूरै भागि को पाई ॥ ८ ॥ ७ ॥ २९ ॥ आसा महला ३ ॥ दोहागणी महलु न पाइन्ही न जाणनि पिर का सुआउ ॥ फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥ १ ॥ इहु मनूआ किउ करि वसि आवै ॥ गुर परसादी ठाकीऐ गिआन मती घरि आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु ॥ सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥ २ ॥ सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ ॥ पिर कै प्रेमि मोहीआ मिलि प्रीतम सुखु पाइ ॥ ३ ॥ गिआन अपारु सीगारु है सोभावंती नारि ॥ सा सभराई सुंदरी पिर कै हेति पिआरि ॥ ४ ॥ सोहागणी विचि रंगु रखिओनु सचै अलखि अपारि ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा सचै भाइ पिआरि ॥ ५ ॥ सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु ॥ प्रेम पिरमलु तनि लावणा अंतरि रतनु वीचारु ॥ ६ ॥ भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ॥ बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥ ७ ॥ हउ हउ करदी सभ फिरै बिनु सबदै हउ न जाइ ॥ नानक नामि रते तिन हउमै गई सचै रहे समाइ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ३० ॥ आसा महला ३ ॥ सचे रते से निरमले सदा सची सोइ ॥ ऐथै घरि घरि जापदे आगै

आसा महला ३ ।। हे भाई, जिन्होंने अपने आप को पहचान लिया है उन्हें इस पहचान का आनन्द बहुत ही प्यारा लगता है। जो सत्य से प्रेम करते हैं वे हरि-रस को चख कर मुक्त हो जाते हैं। पवित्र प्रभु निर्मल से भी निर्मल है और निर्मल मन में ही उसका निवास होता है। गुरु के उपदेश में चलते हुए प्रभु का गुणानुवाद किया जाता है और व्यक्ति विषय-विकारों में रहता हुआ भी उनसे अलिप्त बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। हे भाई, शब्द के बिना अपने आप को नहीं जाना जाता और शब्द-गुरु से विहीन सभी अन्धे हैं। गुरु के उपदेश के माध्यम से ही अन्तर्मन में प्रकाश होता है और अन्ततः प्रभु-नाम ही व्यक्ति का मित्र बनता है।। २ ।। गुरमुख व्यक्ति प्रभु -नाम में ही निवास बनाए रहते हैं और केवल प्रभु-नाम ही उनका व्यवहार होता है। उनके हृदय में नाम होता है, मुख में नाम होता है और प्रभु नाम का ही वे चिन्तन करते हैं।। ३ ।। व्यक्ति द्वारा प्रभु-नाम के सुनने और मानने से व्यक्ति को बड़प्पन प्राप्त होता है। वे सदैव प्रभु-नाम का ही गुणानुवाद करते हैं और प्रभु के नाम के माध्यम से ही प्रभु के स्थान को पा लेते है।। ४ ।। प्रभु-नाम के द्वारा ही उनका मन प्रकाशित हो उठता है और नाम के कारण ही उन्हें शोभा और सम्मान प्राप्त होते हैं। नाम के कारण ही सुख उत्पन्न होता है और वे नाम को ही सबसे बड़ा शरण स्थल मानते हैं।। ५ ।। प्रभु-नाम के बिना कोई भी सफल नहीं होता और मनमुख व्यक्ति अपना सम्मान गँवा लेते हैं। ऐसे लोगों को यमपुरी में बाँधकर मारा जाता है और वे अपने जन्म को व्यर्थ ही गँवा देते हैं।। ६ ।। नाम का सुमिरन करने वाले गुरमख व्यक्ति की सभी सेवा करते हैं परन्तु वास्तव में वह प्रभु-नाम की ही सेवा होती है। हे जीव, तू केवल प्रभु-नाम की ही उपासना कर क्योंकि नाम के फलस्वरूप ही बड़प्पन प्राप्त होता है।। ७ ।। केवल वही व्यक्ति प्रभु-नाम को प्राप्त करता है जिसे प्रभु देता है। गुरु के उपदेश के माध्यम से प्रभु-नाम का रहस्य जाना जाता है। हे नानक, प्रत्येक वस्तु उस प्रभु के नाम के वश में ही है। कोई पूर्ण भाग्यशाली बनकर ही उसे प्राप्त करता है।। ८ ।। ७ ।। २६ ।। आसा महला ३ ।। दुर्गुणों वाली दुहागिन स्त्री प्रभु पति के स्थान को नहीं जान पाती और न ही वह प्रभु से मिलाप के रस को समझ पाती है। वह सदैव हल्की बातें करती है, विनम्र नहीं होती और उसका लगाव द्वैत-भाव में बना रहता है अर्थात वह अपने वास्तविक स्वामी को छोड़कर अन्यों की पूजा अर्चना में लीन रहती है।। १ ।। इस मन को कैसे वश में लाया जाए। गुरु की कृपा द्वारा ही इसको रोका जाता है तब यह ज्ञान के घर में प्रवेश करता है अर्थात ज्ञानवान होने की ओर अग्रसर होता है।। १ ।। रहाउ।। सुहागिन स्त्री अर्थात प्रभु में लीन जीवात्मा प्रेम प्यार के माध्यम से प्रभु ने स्वयं ही सँवारी हुई है। ऐसी स्त्रियां सच्चे गुरु की आज्ञा में चलती हैं और सहज-भाव में बनी रहकर प्रभु-नाम का सिंगार करती हैं।। २ ।। वे सदैव अपने प्रियतम के साथ ही रमण करती हैं और सत्य की सेज पर शोभायमान होती है।। अपने प्रियतम के प्रेम में वे मोहित बनी रहती हैं और प्रियतम से मिलकर सुख प्राप्त करती है।। ३ ।। ऐसी शोभा से युक्त स्त्री का ज्ञान ही एक अपरंपार सिंगार है। ऐसी सम्मानपूर्ण सुन्दर स्त्री प्रभु में अपना प्रेम लगाए रहती है।। ४ ।। सुहागिन स्त्रियों में अर्थात परमात्मा में लीन व्यक्तियों में सत्य अदृष्ट और अपार प्रभु ने अपने प्रेम का रंग भरा हुआ है। वे सच्ची प्रीति और सच्चे प्रेम के साथ अपने सच्चे गुरु की सेवा करती हैं।। ५ ।। सुहागिन स्त्रियों ने गुणों की माला अपने गले में धारण करके अपना सिंगार किया हुआ है। वे प्रेम की सुगन्ध अपने तन पर लगाती हैं और उनके अन्तर्मन में प्रभु-चिन्तन रूपी रत्न होते हैं।। ६ ।। जो प्रेमाभक्ति में रंगे हुए हैं वे श्रेष्ठ हैं। शब्द से ही आशाओं, इच्छाओं पर नियन्त्रण और सम्मान उत्पन्न होता है। नाम से विहीन सभी लोग नीच वर्ग वाले हैं और वे वास्तव में विष्ठा के कीड़े बने रहते हैं।। ७ ।। सभी अहंकार में मैं-मैं करते हुए भागते दौड़ते रहते हैं परन्तु शब्द-गुरु के बिना अहंकार नहीं जाता। हे नानक, जो प्रभु-नाम में रंगे हुए हैं उनका अहंकार चुक जाता है और वे सच्चे प्रभु में लीन बने रहते है।। ८ ।। ८ ।। ३० ।। आसा महला ३ ।। जो सत्य में लीन हैं वे निर्मल होते हैं और उनकी शोभा भी सदैव सच्ची होती है। इस लोक में भी वे घर-घर जाने जाते हैं और आगे

जुगि जुगि परगटु होइ ॥ १ ॥ ए मन रूढ़े रंगुले तूं सचा रंगु चड़ाइ ॥ रूड़ी बाणी जे रपै ना इहु रंगु लहै न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम नीच मैले अति अभिमानी दूजै भाइ विकार ॥ गुरि पारसि मिलिऐ कंचनु होए निरमल जोति अपार ॥ २ ॥ बिनु गुर कोइ न रंगीऐ गुरि मिलिऐ रंगु चड़ाउ ॥ गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ ॥ ३ ॥ भै बिनु लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ ॥ बिनु भै करम कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ॥ ४ ॥ जिस नो आपे रंगे सु रपसी सतसंगति मिलाइ ॥ पूरे गुर ते सतसंगति ऊपजै सहजे सचि सुभाइ ॥ ५ ॥ बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ॥ जिन्हि कीते तिसै न जाणन्ही बिनु नावै सभि चोर ॥ ६ ॥ इकि गुण विहाझहि अउगण विकणहि गुर कै सहजि सुभाइ ॥ गुर सेवा ते नाउ पाइआ वुठा अंदरि आइ ॥ ७ ॥ सभना का दाता कु है सिरि धंधै लाइ ॥ नानक नामे लाइ सवारिअनु सबदे लए मिलाइ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ३१ ॥ आसा महला ३ ॥ सभ नावै नो लोचदी जिसु क्रिपा करे सो पाए ॥ बिनु नावै सभु दुखु है सुखु तिसु जिसु मंनि वसाए ॥ १ ॥ तूं बेअंतु दइआलु है तेरी सरणाई ॥ गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि एकु है बहु बिधि स्रिसटि उपाई ॥ हुकमे कार कराइदा दूजा किसु कहीऐ भाई ॥ २ ॥ बुझणा अबुझणा तुधु कीआ इह तेरी सिरि कार ॥ इकन्हा बखसिहि मेलि लैहि इकि दरगह मारि कढे कूड़िआर ॥ ३ ॥ इकि धुरि पवित पावन हहि तुधु नामे लाए ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै सचै सबदि बुझाए ॥ ४ ॥ इकि कुचल कुचील विखली पते नाव्हु आपि खुआए ॥ ना ओन सिधि न बुधि है न संजमी फिरहि उतवताए ॥ ५ ॥ नदरि करे जिसु आपणी तिस नो भावनी लाए ॥ सतु संतोखु इह संजमी मनु निरमलु सबदु सुणाए ॥ ६ ॥ लेखा पड़ि न पहूचीऐ कथि कहणै अंतु न पाइ ॥ गुर ते कीमति पाईऐ सचि सबदि सोझी पाइ ॥ ७ ॥ इहु मनु देही सोधि तूं गुर सबदि वीचारि ॥ नानक इसु देही विचि नामु निधानु है पाईऐ गुर कै हेति अपारि ॥ ८ ॥ १० ॥ ३२ ॥ आसा महला ३ ॥ सचि रतीआ सोहागणी जिना गुर कै सबदि सीगारि ॥

भी युगों-युगों तक प्रसिद्ध बने रहते हैं।। १ ।। ऐ सुन्दर और रंगीले मन, तू अपने आप पर सच्चा रंग चढ़ा। सुन्दर वाणी अर्थात प्रभु के नाम से यदि तू रंगा जाए तो यह रंग कभी भी नहीं छूटेगा।। १ ।। रहाउ ।। द्वैतभाव के विकार में पड़े हूए हम नीच मैले और बहुत अभिमानी बने रहते हैं परन्तु गुरु रूपी पारस से मिलाप होने पर व्यक्ति सोना बन जाता है और उसकी निर्मल ज्योति अपार रूप से प्रकाशित हो उठती है।। २ ।। गुरु के बिना कोई भी नहीं रंगा जा सकता इसलिए गुरु से मिलकर ही अपने मन पर प्रेम का रंग चढ़ा। गुरु के प्रेम में जो रंगे जाते हैं वे सच्चे प्रभु के गुणानुवाद में लीन हो जाते हैं।। ३ ।। प्रभु के भय के बिना प्रभु का प्यार पैदा नहीं होता और न ही मन निर्मल होता है। प्रभु के भय से विहीन होकर जो कर्मकाण्ड किए जाते हैं वे झूठे हैं और झूठे प्राणी को कोई भी ठौर-ठिकाना नहीं मिलता।। ४ ।। जिसको प्रभु खुद रंग देता है वही वास्तव में रंगा जाता है और वह साधसंगत के साथ जुड़ जाता है। पूर्ण गुरु के माध्यम से ही सद्संगति प्राप्त होती है और व्यक्ति सहज भाव में ही सत्य से मिल जाता है।। ५ ।। बिना सद्संगति के लोग ऐसे ही रहते हैं जैसे पशु ढोर आदि रहते हैं। वे उस प्रभु को नहीं जानते जिसने उन्हें उत्पन्न किया है; इसलिए प्रभु नाम से विहीन ऐसे सभी लोग वास्तव में चोर हैं।। ६ ।। गुरु से सहज स्वभाव में ही लोग गुणों को तो खरीद लेते हैं और बदियों को बेचकर अपने से दूर कर लेते हैं। गुरु की सेवा से ही नाम प्राप्त होता है और वह प्रभु अन्तर्मन में आन टिकता है।। ७ ।। एक प्रभु ही सबका दाता है जिसने हर एक को काम-काज में लगा रखा है। हे नानक, प्रभु अपने नाम में लीन करके जीव की शोभा बढ़ा देता है और शब्द के माध्यम से उसे अपने में अभेद कर लेता है।। ८ ।। ९ ।। ३१ ।। आसा महला ३।। प्रभु-नाम की इच्छा तो सभी करते हैं परन्तु जिस पर कृपा हो वही इसे प्राप्त करता है। प्रभु नाम के बिना सब दुख ही दुख है और सुख उसको है जिसने प्रभु नाम को अपने मन में बसा लिया है। हे प्रभु, तू अनन्त है, दयालु है और मैं तेरी शरण में हूँ। पूर्णगुरु से ही प्रभु नाम के बड़प्पन के बारे में पता चलता है।। १ ।। रहाउ ।। अनेकों प्रकार की सृष्टि उत्पन्न करके केवल एक ही प्रभु इसके अन्दर भी है और बाहर भी है। वह प्रभु ही अपने हुकुम में सारे कार्य कराता है इसलिए किसी दूसरे को क्या कहा जाए।। २ ।। ज्ञान-अज्ञान हे प्रभु, सब तूने ही पैदा किया है; यह सब तेरा ही काम है। कईयों को तू क्षमा करके अपने में मिला लेता है और कई झूठे लोगों को तू अपने दरबार से मार भगाता है।। ३ ।। कई प्रारम्भ से ही पवित्र और पावन हैं और तुमने ही उन्हें नाम समिरन में लगा रखा है। गुरु की सेवा द्वारा ही सुख पैदा होता है और सत्य शब्द के माध्यम से व्यक्ति उस परमात्मा को जान जाता है।। ४ ।। कई खोटी चाल वाले गन्दे, दुराचारी व्यक्ति हैं जिन्हें हे प्रभु, तूने आप ही अपने नाम से विछिन्न कर रखा है। ऐसे व्यक्तियों के पास न तो कोई सिद्धि है, न बुद्धि है, न ही वे संयमशील हैं; वे तो उखड़े हुए डाँवाडोल होकर भटकते रहते हैं।। ५ ।। जिस पर तू अपनी कृपादृष्टि कर देता है उसके अन्तर्मन में श्रद्धा पैदा हो जाती है। ऐसा व्यक्ति पवित्र शब्द को सुनकर सत्यशील (सचिआर) संतोषी और संयमी मन वाला बन जाता है।। ६ ।। प्रभु के लेखे जोखे में पड़ने से उस तक नहीं पहुँचा जा सकता और अनेकों प्रकार के कथन करने पर भी उसका ओर-छोर नहीं पाया जा सकता। गुरु से ही प्रभु की अमोलकता को जाना जाता है और सच्चे शब्द के माध्यम से उसके रहस्य का पता लगता है।। ७ ।। हे भाई, शब्द-गुरु के विचार के माध्यम से तू इस मन और शरीर का शोधन कर ले। हे नानक, इस शरीर में ही नाम का भण्डार है जिसे गुरु के प्रति अपार प्रेम के माध्यम से ही पाया जाता है।। ८ ।। १० ।। ३२ ।। आसा महला ३ ।। वे सुहागिन स्त्रियां सत्य में लीन बनी रहती हैं जिन्होंने शब्द-गुरु का सिंगार किया हुआ है।

घर ही सो पिरु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ १ ॥ अवगण गुणी बखसाइआ हरि सिउ लिव लाई ॥ हरि वरु पाइआ कामणी गुरि मेलि मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि पिरु हदूरि न जाणन्ही दूजै भरमि भुलाइ ॥ किउ पाइन्हि डोहागणी दुखी रैणि विहाइ ॥ २ ॥ जिन कै मनि सचु वसिआ सची कार कमाइ ॥ अनदिनु सेवहि सहज सिउ सचे माहि समाइ ॥ ३ ॥ दोहागणी भरमि भुलाईआ कूड़ु बोलि बिखु खाहि ॥ पिरु न जाणनि आपणा सुंञी सेज दुखु पाहि ॥ ४ ॥ सचा साहिबु एकु है मतु मन भरमि भुलाहि ॥ गुर पूछि सेवा करहि सचु निरमलु मंनि वसाहि ॥ ५ ॥ सोहागणी सदा पिरु पाइआ हउमै आपु गवाइ ॥ पिर सेती अनदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ ॥ ६ ॥ मेरी मेरी करि गए पलै किछु न पाइ ॥ महलु नाही डोहागणी अंति गई पछुताइ ॥ ७ ॥ सो पिरु मेरा एकु है एकसु सिउ लिव लाइ ॥ नानक जे सुखु लोड़हि कामणी हरि का नामु मंनि वसाइ ॥ ८ ॥ ११ ॥ ३३ ॥ आसा महला ३ ॥ अंम्रितु जिन्हा चखाइओनु रसु आइआ सहजि सुभाइ ॥ सचा वेपरवाहु है तिस नो तिलु न तमाइ ॥ १ ॥ अंम्रितु सचा वरसदा गुरमुखा मुखि पाइ ॥ मनु सदा हरीआवला सहजे हरि गुण गाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि सदा दोहागणी दरि खड़ीआ बिललाहि ॥ जिन्हा पिर का सुआदु न आइओ जो धुरि लिखिआ सु कमाहि ॥ २ ॥ गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु ॥ जो इतु लाहै लाइअनु भगती देइ भंडार ॥ ३ ॥ गुरमुखि सदा सोहागणी भै भगति सीगारि ॥ अनदिनु रावहि पिरु आपणा सचु रखहि उर धारि ॥ ४ ॥ जिन्हा पिरु राविआ आपणा तिन्हा विटहु बलि जाउ ॥ सदा पिर कै संगि रहहि विचहु आपु गवाइ ॥ ५ ॥ तनु मनु सीतलु मुख उजले पिर कै भाइ पिआरि ॥ सेज सुखाली पिरु रवै हउमै त्रिसना मारि ॥ ६ ॥ करि किरपा घरि आइआ गुर कै हेति अपारि ॥ वरु पाइआ सोहागणी केवल एकु मुरारि ॥ ७ ॥ सभे गुनह बखसाइ लइओनु मेले मेलणहारि ॥ नानक आखणु आखीऐ जे सुणि धरे पिआरु ॥८॥१२॥३४॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभु मेलै सोइ ॥

उन्होंने सच्चे शब्द के चिन्तन और मनन के फलस्वरूप अपने अन्तर्मन में ही उस प्रियतम प्रभु को पा लिया होता है।। १ ।। प्रभु के साथ लौ लगाने पर गुणों के माध्यम से अवगुण माफ हो जाते हैं और जीव रूपी कामिनी प्रभु रूपी पति को पा लेती है। जीव और प्रभु का यह मेल गुरु के द्वारा ही होता है।। रहाउ ।। कई जीव आत्माएं ऐसी भी हैं जो अपने प्रियतम को प्रत्यक्ष आस-पास नहीं मानती और द्वैतभाव की दुविधा में भटकती रहती हैं। ऐसी दुहागिन (परित्यक्ता) स्त्रियां भला कैसे अपने पति को पा सकती है। उनकी जीवन रूपी रात्रि दुखों में ही बीतती है। जिनके अन्तर्मन में सत्य का निवास हो गया वे सच्चे कार्य करती हैं। प्रतिदिन वे सहज भाव में रहकर प्रभु की सेवा करती हैं और अन्ततः सत्य में लीन हो जाती हैं।। ३ ।। दुहागिन स्त्रियां भ्रमों में भटकती हुई तथा झूठ बोलती हुई प्रपंचों का विष खाती रहती हैं। वे अपने प्रियतम को नहीं पहचान पाती और खाली पड़ी सेज पर दुख ही दुख झेलती हैं।। ४ ।। हे मेरे मन, तू भ्रमों में मत भूल क्योंकि सच्चा साहिब तो केवल एक ही है। गुरु से पूछकर सेवा कार्य करो और पवित्र निर्मल सच्चे नाम को मन में टिकाकर रखो।। ५ ।। सुहागिन स्त्री रूपी जीव-आत्मा ने सदैव अपने प्रियतम प्रभु को पाया होता है और अपने अहंकार को गँवा दिया होता है। अपने प्रियतम के साथ वह रात-दिन लीन बनी रहती हैं और सत्य रूपी सेज पर सुख प्राप्त करती है।।६।। जो मेरा-मेरा ही कहते रहते हैं वे बिना कुछ प्राप्त किए यहां से चले जाते हैं। दुहागिन स्त्री को प्रभु का महल प्राप्त नहीं होता और अन्त में वह पछताती हुई इस संसार से चली जाती है।। ७ ।। मेरा वह प्रियतम प्रभु तो एक ही है। उस एक से ही लौ लगानी चाहिए। हे नानक, यदि जीव रूपी स्त्री सुख चाहती है तो उसे अपने हृदय में प्रभु का नाम बसाना चाहिए।। ८ ।। ११ ।। ३३ ।। आसा महला ३ ।। जिन्हें प्रभु ने नाम रूपी अमृत चखा दिया है उन्हें स्वाभाविक ही उसका स्वाद आने लगता है। वह सच्चा प्रभु बेपरवाह है और उसे तनिक सा भी लालच नहीं होता।। १ ।। सच्चा अमृत तो सदैव बरसता रहता है परन्तु वास्तव में वह गुरमुख व्यक्तियों के मुख में ही टपकता है। ऐसे गुरमुखों का मन सदैव हरा-भरा बना रहता है और वे सहजभाव में प्रभु का गुणानुवाद करते रहते हैं।। १ ।। रहाउ ।। मनमुख उस दुहागिन स्त्री की तरह है जो द्वार पर खड़ी हुई सदैव विलाप करती रहती है। जो अपने प्रियतम के आनन्द को नहीं भोगती वे ठीक वही कर रही होती हैं जो प्रभु ने प्रारम्भ में ही उनके भाग्य में लिखा है।। २ ।। गुरमुख व्यक्ति सच्चे नाम को बोता है। यही सच्चा नाम अंकुरित हो उठता है। गुरमुख केवल सच्चे नाम का ही व्यापार करता है। जिन्हें भक्ति का खज़ाना देकर उससे लाभ उठाने के लिए नियत किया गया है उन गुरमुखों का व्यापार ही सच्चा नाम है।। ३ ।। गुरमुख व्यक्ति उस सुहागिन स्त्री की तरह है जिसने भय और प्रेमाभक्ति का सिंगार किया हुआ है। वह सदैव सत्य को हृदय में धारण किए रहती है और दिन-रात प्रियतम प्रभु के साथ रमण करती है।। ४ ।। जिन्होंने अपने प्रियतम के साथ रमण कर लिया है मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। अपने अन्दर से अपना अभिमान गँवाकर वे सदैव अपने प्रियतम में लीन बनी रहती हैं।। ५ ।। अपने प्रियतम के प्रेम प्यार के कारण उनका तन-मन शीतल और मुख उज्जवल बना रहता है। अपने अहंकार और लालच को दूर करके जीव रूपी पत्नी सुखदायी सेज पर अपने पति प्रभु के साथ रमण करती है।। ६ ।। गुरु के प्रति अपार स्नेह के कारण स्वामी प्रभु कृपा करके जीव-स्त्री के हृदय में आन बैठता है। ऐसी सुहागिन जीव-स्त्री ने एक प्रभु के रूप में अपना वर प्राप्त कर लिया होता है।। ७ ।। गुरु जीव के सभी अवगुणों को क्षमा करवा लेता है और वह मिलाने वाला गुरु जीव को प्रभु से मिला लेता है। हे नानक, आओ ऐसे बोल बोले जाएं जिन्हें सुनकर परमात्मा हमें प्रेम करने लगे अर्थात गुरु की वाणी का उच्चारण किया जाए ताकि उसे सुनकर प्रभु का प्यार जीव के प्रति उमड़ पड़े।।८।।१२।।३४।। आसा महला ३ ।। जब प्रभु गुरु से मिला देता है तो उस सच्चे गुरु से अनेकों गुण पैदा होते हैं।

सहजे नामु धिआईऐ गिआनु परगटु होइ ॥ १ ॥ ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि ॥ सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ तिन्ही इक मनि धिआइआ ॥ सदा रवहि पिरु आपणा सचै नामि सुखु पाइआ ॥ २ ॥ ए मन तेरा को नही करि वेखु सबदि वीचारु ॥ हरि सरणाई भजि पउ पाइहि मोख दुआरु ॥ ३ ॥ सबदि सुणीऐ सबदि बुझीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ सबदे हउमै मारीऐ सचै महलि सुखु पाइ ॥ ४ ॥ इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ ॥ इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥ ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ से मुए मरि जाहि ॥ हरि रस सादु न आइओ बिसटा माहि समाहि ॥ ६ ॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु अनदिनु नामे लाइ ॥ सचु कमावहि सचि रहहि सचे सचि समाहि ॥ ७ ॥ बिनु सबदै सुणीऐ न देखीऐ जगु बोला अंन्हा भरमाइ ॥ बिनु नावै दुखु पाइसी नामु मिलै तिसै रजाइ ॥ ८ ॥ जिन बाणी सिउ चितु लाइआ से जन निरमल परवाणु ॥ नानक नामु तिन्हा कदे न वीसरै से दरि सचे जाणु ॥ ९ ॥ १३ ॥ ३५ ॥ आसा महला ३ ॥ सबदौ ही भगत जापदे जिन्ह की बाणी सची होइ ॥ विचहु आपु गइआ नाउ मंनिआ सचि मिलावा होइ ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जन की पति होइ ॥ सफलु तिन्हा का जनमु है तिन्ह मानै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु ॥ सबदि मरै ता जाति जाइ जोती जोति मिलै भगवानु ॥ २ ॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा ॥ नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट भंडारा ॥ ३ ॥ आवहि इसु रासी के वापारीए जिन्हा नामु पिआरा ॥ गुरमुखि होवै सो धनु पाए तिन्हा अंतरि सबदु वीचारा ॥ ४ ॥ भगती सार न जाणन्ही मनमुख अहंकारी ॥ धुरहु आपि खुआइअनु जूऐ बाजी हारी ॥ ५ ॥ बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ गुर भगती मन धीरि ॥ ६ ॥ जिस नो भगति कराए सो करे गुर सबद वीचारि ॥ हिरदै एको नामु वसै हउमै दुबिधा मारि ॥ ७ ॥ भगता की जति पति एको नामु है आपे लए सवारि ॥ सदा सरणाई तिस की जिउ भावै

जब सहज भाव से स्थिर होकर प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाए तो अन्तर्मन में ज्ञान प्रकट हो उठता है।। १ ।। हे मन, तू यह मत समझ कि हरि दूर है; उसे सदैव अपने सामने ही देखता रह। वह सदैव सुनता एवं सदैव देखता रहता है और शब्द अर्थात गुरबाणी में समाहित और स्थित बना रहता है।।१।। रहाउ।। जिन्होंने गुरमुख बनकर अपने आप को पहचान लिया है उन्होंने एकाग्र होकर प्रभु का सुमिरन किया है। ऐसे जीव सदैव प्रिय प्रभु के साथ रमण करते हैं और सच्चे नाम में ही सुख प्राप्त करते हैं।। २ ।। हे मन, तेरा यहाँ कोई नहीं है। गुरु के शब्द को बेशक तू सोच विचार कर देख ले। तू दौड़कर प्रभु की शरण में आ जा क्योंकि इस प्रकार तू मुक्ति के द्वार को पा लेगा।। ३ ।। तू शब्द को ही सुन, शब्द को ही समझ और प्रभु के सच्चे नाम में ही अपनी सुरति लगाए रख। शब्द के माध्यम से ही अपने अहंकार को मिटा दे और इस प्रकार सच्चे प्रभु के महल में सुख प्राप्त कर।। ४ ।। इस युग में प्रभु-नाम की महिमा है और प्रभु के नाम के बिना शोभा प्राप्त नहीं हो सकती। सांसारिक पदार्थों की शोभा तो केवल चार दिन की ही होती है जिसे जाते हुए ज़रा सी भी देर नहीं होती।। ५ ।। जो प्रभु-नाम को भुला देते हैं वे मरते रहते हैं और मरते रहेंगें। उन्हें प्रभु के रस का स्वाद नहीं आता और वे विष्ठा में ही मरते खपते रहते हैं।। ६ ।। कईयों को तो प्रभु स्वयं रात-दिन अपने नाम में लीन किए रखता है, उनको माफ करके अपने साथ मिला लेता है। वे सत्य का आचरण करते हैं; सत्य में ही निवास करते हैं और सच्चे होने के कारण सत्य में ही लीन हो जाते हैं।। ७ ।। शब्द के बिना संसार को न तो कुछ सुनता है और न ही कुछ दिखाई देता है। शब्द-विहीन यह जगत बहरा और अन्धा होकर भटकता रहता है। प्रभु नाम के बिना जीव दुख प्राप्त करता रहता है और इसे नाम भी उस प्रभु की रज़ा में ही प्राप्त होता है।। ८ ।। जिन्होंने गुरबाणी के साथ चित्त जोड़ लिया है वे सेवक ही पवित्र और स्वीकृत माने जाते हैं। हे नानक, ऐसे जीवों को कभी भी प्रभु नाम भूलता नहीं और प्रभु के दरबार में वे ही सच्चे गिने जाते हैं।। ९ ।। १३ ।। ३५ ।। आसा महला ३ ।। जिन भक्तों का शब्द अर्थात वाणी सच्ची होती है अर्थात जिनमें अटल वाक्य कहने की शक्ति आ जाती है वे नाम के अनुरूप बने हुए उनके आचरण से ही जाने जाते हैं; वे शब्द को सुनने की बजाय आचरण को आधार बनाते हैं। उनके अन्तर्मन से अहंकार दूर हो गया होता है और उन्होंने मन में प्रभु-नाम को पक्का किया होता है। इसी कारण उनका सत्य के साथ मिलाप हो जाता है।। १ ।। प्रभु के सेवक का सम्मान तो प्रभु का नाम ही है। ऐसे सेवकों का जीवन सफल है और सब लोग उनका सम्मान करते हैं।। १ ।। रहाउ ।। अहंकार मेरापन, अत्यन्त क्रोधित होना और अभिमान करना यह व्यक्ति का खास लक्ष्ण है। यदि व्यक्ति शब्द में ही लीन हो जाए तो वह ऊपर कहे हुए लक्ष्णों से मुक्ति पा लेता है और उसकी ज्योति प्रभु की ज्योति से मिल जाती है।। २ ।। जब से सच्चा और पूर्ण गुरु मिल गया है मेरा जन्म सफल हो गया है। नवनिधियों का रूप प्रभु-नाम मैंने पा लिया है और मेरे अन्दर नाम का अक्षय भण्डार भर गया है।। ३ ।। नाम-रस के व्यापारी ही यहाँ आते हैं जिन्हें प्रभु का नाम प्यारा लगता है। जो गुरमुख हो जाता है वह इस नाम रूपी सम्पत्ति को प्राप्त करता है क्योंकि उसके अन्तर्मन में शब्द का चिन्तन चलता ही रहता है।। ४ ।। मनमुख और अहंकारी व्यक्ति भक्ति के सार और महत्व को नहीं जानता। प्रभु ने प्रारम्भ से ही उनको ख्वार किया हुआ है; वे जीवन रूपी जुए की बाज़ी हार जाते हैं।। ५ ।। प्यार के बिना भक्ति नहीं होती और न ही शरीर को सुख प्राप्त होता है। गुरु की भक्ति और मन के धैर्य के फलस्वरूप ही प्रेम रूपी पदार्थ प्राप्त किया जाता है।। ६ ।। प्रभु जिससे भक्ति करवाता है वही शब्द-गुरु का चिन्तन करता है। अहंकार एवं दुविधा को समाप्त करने वाले ऐसे व्यक्ति के हृदय में केवल एक प्रभु का ही नाम बसता है।। ७ ।। भक्तों की जाति और सम्मान केवल एक प्रभु का नाम ही है। वह प्रभु स्वयं ही उनके जीवन को सँवारता है। भक्तजन सदैव प्रभु की शरण में ही बने रहते हैं और जैसे उस प्रभु को अच्छा लगता

तिउ कारजु सारि ॥ ८ ॥ भगति निराली अलाह दी जापै गुर वीचारि ॥ नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि ॥ ९ ॥ १४ ॥ ३६ ॥ आसा महला ३ ॥ अन रस महि भोलाइआ बिनु नामै दुख पाइ ॥ सतिगुरु पुरखु न भेटिओ जि सची बूझ बुझाइ ॥ १ ॥ ए मन मेरे बावले हरि रसु चखि सादु पाइ ॥ अन रसि लागा तूं फिरहि बिरथा जनमु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि गुरमुख निरमले सचि नामि रहहि लिव लाइ ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नही किआ करि कहिआ जाइ ॥ २ ॥ आपु पछाणहि सबदि मरहि मनहु तजि विकार ॥ गुर सरणाई भजि पए बखसे बखसणहार ॥ ३ ॥ बिनु नावै सुखु न पाईऐ ना दुखु विचहु जाइ ॥ इहु जगु माइआ मोहि विआपिआ दूजै भरमि भुलाइ ॥ ४ ॥ दोहागणी पिर की सार न जाणही किआ करि करहि सीगारु ॥ अनदिनु सदा जलदीआ फिरहि सेजै रवै न भतारु ॥ ५ ॥ सोहागणी महलु पाइआ विचहु आपु गवाइ ॥ गुर सबदी सीगारीआ अपणे सहि लईआ मिलाइ ॥ ६ ॥ मरणा मनहु विसारिआ माइआ मोहु गुबारु ॥ मनमुख मरि मरि जंमहि भी मरहि जम दरि होहि खुआरु ॥ ७ ॥ आपि मिलाइअनु से मिले गुर सबदि वीचारि ॥ नानक नामि समाणे मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥ ८ ॥ २२ ॥ १५ ॥ ३७ ॥

आसा महला ५ असटपदीआ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पंच मनाए पंच रुसाए ॥ पंच वसाए पंच गवाए ॥ १ ॥ इन्ह बिधि नगरु वुठा मेरे भाई ॥ दुरतु गइआ गुरि गिआनु द्रिड़ाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साच धरम की करि दीनी वारि ॥ फरहे मुहकम गुर गिआनु बीचारि ॥ २ ॥ नामु खेती बीजहु भाई मीत ॥ सउदा करहु गुरु सेवहु नीत ॥ ३ ॥ सांति सहज सुख के सभि हाट ॥ साह वापारी एकै थाट ॥ ४ ॥ जेजीआ डंनु को लए न जगाति ॥ सतिगुरि करि दीनी धुर की छाप ॥ ५ ॥ वखरु नामु लदि खेप चलावहु ॥ लै लाहा गुरमुखि घरि आवहु ॥ ६ ॥ सतिगुरु साहु सिख वणजारे ॥ पूंजी नामु लेखा साचु सम्हारे ॥ ७ ॥ सो वसै इतु घरि जिसु गुरु पूरा सेव ॥ अबिचल नगरी नानक देव ॥ ८ ॥ १ ॥

है वैसे ही वह उनके कार्यों को सँवारता है।। ८ ।। उस अल्लाह की भक्ति निराली है जिसे गुरु के उपदेश से जाना जाता है। हे नानक, जिसके मन में प्रभु-नाम बसता है वह प्रभु के डर और उसके प्रेम के माध्यम से भक्ति को सदैव मन में संवार कर बनाए रखता है।। ९ ।। १४ ।। ३६ ।। आसा महला ३।। प्रभु-नाम के रस के बिना अन्य रसों में भूला हुआ जीव प्रभु के नाम के बिना दुख पाता है। वह सच्चे गुरु रूपी परम पुरुष को नहीं मिलता जो सत्य के रहस्य को समझाता है।। १ ।। हे मेरे बावले मन, तू हरि रस का पान कर और इसके आनन्द का लाभ उठा। अन्य रसों में लगा हुआ तू भटक रहा है और तू अपना जीवन व्यर्थ ही गँवा रहा है।। १ ।। रहाउ ।। इस युग में गुरमुख व्यक्ति ही पवित्र हैं क्योंकि वे सच्चे नाम में अपनी लौ लगाए रहते हैं। बिना भाग्य के कुछ भी नहीं पाया जा सकता; हम लोग क्या कर सकते हैं और क्या कह सकते हैं।। २ ।। जो अपने आप को पहचान लेता है और शब्द-गुरु में लीन होकर सांसारिकता के प्रति मर जाता है वह वास्तव में अपने हृदय से पापों को निकाल देता है। जो गुरु की शरण की ओर भाग लेते हैं उन्हें क्षमाशील प्रभु क्षमा कर देता है।। ३ ।। प्रभु-नाम के बिना सुख नहीं मिलता और अन्तर्मन का दुख समाप्त नहीं होता। यह सम्पूर्ण संसार माया-मोह में लीन बना हुआ है और द्वैतभाव तथा संशय में पड़ा हुआ भटकता रहता है।। ४ ।। दुहागिन स्त्री प्रियतम की कद्र नहीं करती तो फिर भला वह सिंगार कर कर के क्या करेगी? ऐसी स्त्रियां दिन-रात विरह में जलती रहती हैं परन्तु उनका पति उनकी सेज पर उनसे रमण नहीं करता।। ५ ।। अन्तर्मन का अभिमान दूर करके सुहागिन रूपी जीव स्त्रियां प्रभु के महल को पा लेती हैं। शब्द-गुरु का सिंगार ही उन्होंने किया होता है और उनका मालिक प्रभु उन्हें अपने में मिला लेता है।। ६ ।। धन-सम्पदा रूपी मोह के अन्धेरे में व्यक्ति ने मरना तो बिल्कुल भुला ही दिया है। मनमुख व्यक्ति मर-मर कर जन्म लेते रहते हैं; फिर मरते हैं, और यम के द्वार पर ख्वार होते रहते हैं।। ७ ।। जिन्हें प्रभु खुद मिला लेता है वे शब्द-गुरु के चिन्तन के फलस्वरूप उस प्रभु में मिल जाते हैं। हे नानक, उनके मुख उस सच्चे दरबार में उज्जवल बने रहते हैं जो प्रभु-नाम में लीन हो चुके होते है।। ८ ।। २२ ।। १५ ।। ३७ ।।

आसा महला ५ अष्टपदियां घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

जब मैंने पाँच गुणों (सत्य, धर्म, ज्ञान, शान्ति, सहज) को अपना दोस्त बना लिया अर्थात उन्हें ग्रहण कर लिया तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि पाँचों अवगुण रूठ गए अर्थात मेरे अन्तर्मन से भाग खड़े हुए। पहले पाँच मेरे अन्दर बसने लगे और पिछले पाँच दूर हो गए।। १ ।। हे मेरे भाई, इस प्रकार फिर मेरा शरीर रूपी नगर बस गया। इसमें से दुर्मति दूर हो गई और गुरु ने मेरे अन्दर ब्रह्म-ज्ञान को दृढ़ कर दिया।। १ ।। रहाउ ।। इस नगर के चारों ओर सच्चे धर्म की बाड़ लगा दी गई और उसमें गुरु-ज्ञान और उसके चिन्तन रूपी खिड़कियां और मज़बूत फाटक लगा दिए गए।। २ ।। हे मेरे भाई मित्र, अब इसमें प्रभु के नाम की फसल बो दो। नित्य गुरु की सेवा करने का कार्य-व्यापार करो।। ३ ।। इस नगर में शान्ति सहजभाव और सुख की सभी दुकानें हैं। यहाँ साहूकार और व्यापारी एक ही जैसे बन कर विचरण करते हैं।। ४ ।। यहाँ कोई भी जजिया अथवा चुंगी आदि नहीं लगाई जाती। सच्चे गुरु ने सब टैक्सों की माफी के लिए प्रभु के नाम की मोहर लगा दी है।। ५ ।। नाम रूपी पदार्थ को लादकर हे मित्र तू अपनी खेप को रवाना कर। इस प्रकार गुरमुख बनकर तू लाभ कमाता हुआ वापस घर आ जाएगा।। ६ ।। सच्चा गुरु परमात्मा साहूकार है और सिक्ख उसके छोटे व्यापारी हैं। यहाँ पूँजी उस प्रभु का नाम ही है और प्रभु का सुमिरन ही वास्तव में हिसाब किताब है।। ७ ।। इस नगर के घर में वही रहता है जिसने पूर्ण गुरु परमात्मा की सेवा की है। हे नानक, यह प्रभु के अटल ठिकाने वाला नगर है।। ८ ।। १ ।।

आसावरी महला ५ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन हरि सिउ लागी प्रीति ॥ साधसंगि हरि हरि जपत निरमल साची रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार ॥ करहु अनुग्रहु पारब्रहम हरि किरपा धारि मुरारि ॥ १ ॥ मनु परदेसी आइआ मिलिओ साध कै संगि ॥ जिसु वखर कउ चाहता सो पाइओ नामहि रंगि ॥ २ ॥ जेते माइआ रंग रस बिनसि जाहि खिन माहि ॥ भगत रते तेरे नाम सिउ सुखु भुंचहि सभ ठाइ ॥ ३ ॥ सभु जगु चलतउ पेखीऐ निहचलु हरि को नाउ ॥ करि मित्राई साध सिउ निहचलु पावहि ठाउ ॥ ४ ॥ मीत साजन सुत बंधपा कोऊ होत न साथ ॥ एकु निवाहू राम नाम दीना का प्रभु नाथ ॥ ५ ॥ चरन कमल बोहिथ भए लगि सागरु तरिओ तेह ॥ भेटिओ पूरा सतिगुरू साचा प्रभ सिउ नेह ॥ ६ ॥ साध तेरे की जाचना विसरु न सासि गिरासि ॥ जो तुधु भावै सो भला तेरै भाणै कारज रासि ॥ ७ ॥ सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा अनंद ॥ कहु नानक सभ दुख मिटे प्रभ भेटे परमानंद ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

आसा महला ५ बिरहड़े घरु ४ छंता की जति १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पारब्रहमु प्रभु सिमरीऐ पिआरे दरसन कउ बलि जाउ ॥ १ ॥ जिसु सिमरत दुख बीसरहि पिआरे सो किउ तजणा जाइ ॥ २ ॥ इहु तनु वेची संत पहि पिआरे प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ ३ ॥ सुख सीगार बिखिआ के फीके तजि छोडे मेरी माइ ॥ ४ ॥ कामु क्रोधु लोभु तजि गए पिआरे सतिगुर चरनी पाइ ॥ ५ ॥ जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाइ ॥ ६ ॥ हरि रसु जिन्ही चाखिआ पिआरे त्रिपति रहे आघाइ ॥ ७ ॥ अंचलु गहिआ साध का नानक भै सागरु पारि पराइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥ जनम मरण दुखु कटीऐ पिआरे जब भेटै हरि राइ ॥ १ ॥ सुंदरु सुघरु सुजाणु प्रभु मेरा जीवनु दरसु दिखाइ ॥ २ ॥ जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे जनमि मरहि बिखु खाइ ॥ ३ ॥ जिसु तूं मेलहि सो मिलै पिआरे तिस कै लागउ पाइ ॥ ४ ॥ जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख ते कहणु न जाइ ॥ ५ ॥ साची प्रीति

आसावरी महला ५ घरु ३ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मेरे मन की प्रीति परमात्मा से लग गई है। सद्संगति में मैं प्रभु का सुमिरन करता हूँ और मेरा कार्य-व्यवहार पवित्र और सच्चा हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के दर्शन की प्यास मुझे बहुत लगी हुई है और मैं अनेकों प्रकार से उसको चित्त में याद करता हूँ। हे परमात्मा, कृपापूर्वक मुझ पर कृपा कीजिए (और मुझे दर्शन दो)।। १ ।। परदेसियों की तरह भटकता हुआ मन अनेक योनियों में से होता हुआ इस जगत् में आया है जहाँ उसका मिलाप साधसंगत से हो गया है। यह जिस आत्म-ज्ञान रूपी पदार्थ को चाहता है उसे प्रभु-नाम के रंग में रंगा जाकर प्राप्त किया जाता है।। २ ।। संसार के मायावी जितने प्रकार के भी कार्य-कलाप और रस हैं वे सभी क्षण-भर में विनष्ट हो जाते हैं। हे प्रभु, तेरे भक्त तो तेरे नाम में ही लीन बने हुए हैं और वे सभी स्थानों पर सुख ही भोगते हैं।। ३ ।। यह सारा संसार चलायमान दिखाई देता है; यहाँ केवल एक प्रभु का नाम ही स्थिर है। हे जीव, तू साधु पुरुषों के साथ मित्रता कर तभी तू पक्का ठिकाना प्राप्त कर सकेगा।। ४ ।। मित्र, सज्जन, पुत्र, बन्धु कोई भी तेरे साथ नहीं बना रहेगा। केवल एक प्रभु का नाम ही तेरे साथ निभेगा क्योंकि प्रभु ही दीनों का सहारा है।। ५ ।। प्रभु के चरण-कमल वह जहाज़ बन गए हैं जिनके साथ लगकर संसार-सागर को पार कर लिया जाता है। जब पूर्ण सच्चे गुरु से मिलाप हो जाता है तो प्रभु के साथ सच्चा प्रेम लग जाता है।। ६ ।। हे प्रभु, तेरे साधक की यही याचना है कि तू उसे एक श्वास और ग्रास लेते खाते हुए भी विस्मृत न हो। हे प्रभु, जो तुझे भाता है वही हम लोगों के लिए भला है क्योंकि तेरी आज्ञा में ही सभी कार्य सिद्ध होते हैं।। ७ ।। जब सुखों का सागर रूपी प्रियतम प्रभु मिल जाता है तो महा आनन्द होता है। हे नानक, उस परम आनन्द स्वरूप प्रभु को मिलने से सभी दुख मिट जाते है।। ८ ।। १ ।। २ ।।

आसा महला ५ बिरहड़े (वियोग के गीत) घरु ४ छन्द की टेक के अनुसार गायन करना १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे प्यारे, सदैव परमात्मा का सुमिरन किया जाना चाहिए; मैं उस प्रभु के दर्शन पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। हे प्यारे, जिस प्रभु का सुमिरन करने से सभी दुख भूल जाते हैं उस सुमिरन को क्यों छोड़ा जाए।। २ ।। हे प्यारे, मैं यह अपना शरीर उस शान्त पुरुष के पास बेचने के लिए तैयार हूँ जो उस प्रियतम प्रभु से मिला देता है।। ३ ।। हे मेरी माँ, अब मैंने विषय विकारों से युक्त माया के सभी सुख सिंगार फीके मानते हुए छोड़ दिए हैं (क्योंकि ये सभी प्रभु नाम के रस के सामने बेकार हैं)।। ४ ।। हे प्यारे, जब से मैं गुरु के चरणों में गिर पड़ा हूँ, काम, क्रोध, लोभ इत्यादि मेरा साथ छोड़ गए हैं।। ५ ।। हे प्यारे, जो प्रभु के सेवक परमात्मा के नाम में लीन हो जाते हैं वे फिर परमात्मा को छोड़कर अन्य किसी के पास नहीं जाते।। ६ ।। हे प्यारे, जिन्होंने परमात्मा के नाम का रस चख लिया है वे तृप्त होकर संतुष्ट बने रहते हैं।। ७ ।। हे नानक, जिस व्यक्ति ने साधु रूपी गुरु का आँचल पकड़ लिया है वह इस भयानक संसार सागर से पार उतर जाता है।। ८ ।। १ ।। ३ ।। हे प्यारे, जब परमात्मा रूपी सम्राट से भेंट हो जाती है तो जन्म-मरण के चक्र का दुख कट जाता है।। १ ।। मेरा प्रभु सुन्दर, सम्पूर्ण और सुजान है। जब वह मुझे दर्शन देता है तो ऐसा लगता है जैसे मुझमें प्राण-प्रतिष्ठा हो गई है अर्थात प्रभु का दर्शन ही मेरा जीवन है।। २ ।। हे प्यारे प्रभु, जो जीव तुझसे बिछुड़े हुए हैं वे माया के विष को खाते हुए जन्म लेते और मरते रहते हैं।। ३ ।। हे प्यारे प्रभु, तुझसे केवल उसी का मिलाप होता है जिसे तू स्वयं मिला देता है। मैं उस भाग्यशाली व्यक्ति के चरण छूता हूँ।। ४ ।। हे प्यारे, जो तेरा सुखदायक दर्शन करते हैं उनके दर्शन के आनन्द का मुँह से वर्णन नहीं किया जा सकता। हे प्यारे, तुझसे लगी हुई सच्ची प्रीति

न तुटई पिआरे जुगु जुगु रही समाइ ॥ ६ ॥ जो तुधु भावै सो भला पिआरे तेरी अमरु रजाइ ॥ ७ ॥ नानक रंगि रते नाराइणै पिआरे माते सहजि सुभाइ ॥ ८ ॥ २ ॥ ४ ॥ सभ बिधि तुम ही जानते पिआरे किसु पहि कहउ सुनाइ ॥ १ ॥ तूं दाता जीआ सभना का तेरा दिता पहिरहि खाइ ॥ २ ॥ सुखु दुखु तेरी आगिआ पिआरे दूजी नाही जाइ ॥ ३ ॥ जो तूं करावहि सो करी पिआरे अवरु किछु करणु न जाइ ॥ ४ ॥ दिनु रैणि सभ सुहावणे पिआरे जितु जपीऐ हरि नाउ ॥ ५ ॥ साई कार कमावणी पिआरे धुरि मसतकि लेखु लिखाइ ॥ ६ ॥ एको आपि वरतदा पिआरे घटि घटि रहिआ समाइ ॥ ७ ॥ संसार कूप ते उधरि लै पिआरे नानक हरि सरणाइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ २२ ॥ १५ ॥ २ ॥ ४२ ॥

रागु आसा महला १ पटी लिखी   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ससै सोइ स्रिसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ ॥ सेवत रहे चितु जिन्ह का लागा आइआ तिन्ह का सफलु भइआ ॥ १ ॥ मन काहे भूले मूड़ मना ॥ जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईवड़ी आदि पुरखु है दाता आपे सचा सोई ॥ एना अखरा महि जो गुरमुखि बूझै तिसु सिरि लेखु न होई ॥ २ ॥ ऊड़ै उपमा ता की कीजै जा का अंतु न पाइआ ॥ सेवा करहि सेई फलु पावहि जिन्ही सचु कमाइआ ॥ ३ ॥ ङंङै ङिआनु बूझै जे कोई पड़िआ पंडितु सोई ॥ सरब जीआ महि एको जाणै ता हउमै कहै न कोई ॥ ४ ॥ ककै केस पुंडर जब हूए विणु साबूणै उजलिआ ॥ जम राजे के हेरू आए माइआ कै संगलि बंधि लइआ ॥ ५ ॥ खखै खुंदकारु साह आलमु करि खरीदि जिनि खरचु दीआ ॥ बंधनि जा कै सभु जगु बाधिआ अवरी का नही हुकमु पइआ ॥ ६ ॥ गगै गोइ गाइ जिनि छोडी गली गोबिदु गरबि भइआ ॥ घड़ि भांडे जिनि आवी साजी चाड़ण वाहै तई कीआ ॥ ७ ॥ घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै ॥ बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि साहिबु रमतु रहै ॥ ८ ॥ चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चारि जुगा ॥ जुगु जुगु जोगी खाणी भोगी पड़िआ पंडितु

कभी टूट नहीं सकती और यह प्रीति युगों-युगों तक हृदय में स्थिर बनी रहती है।। ६ ।। हे प्यारे, जो तुझे भाता है वही भला है और तेरी रज़ा और हुकुम ही अटल है।। ७ ।। हे नानक, जो व्यक्ति प्रभु के प्रेम रंग में रंगे जाते हैं वे सदैव अपने सहज स्वभाव में स्थित होकर उस प्रभु के प्रेम में लीन बने रहते हैं।। ८ ।। २ ।। ४ ।। हे प्रभु, संसार के भरण-पोषण की सभी विधियों को तुम स्वयं ही जानते हो; मैं भला अब और किसे अपनी बात सुना कर कहूँ।।१।। तू ही सभी जीवों का दाता है और सब तेरा ही दिया हुआ खाते पहनते हैं।। २ ।। हे प्रभु, तेरी आज्ञा में ही जीवों को सुख और दुख प्राप्त होता है; जीवों को तेरे अतिरिक्त आश्रय देने वाला अन्य कोई भी स्थान नहीं है।। ३ ।। हे प्यारे, जो तू कराता है मैं वही करता हूँ; तेरी आज्ञा के उलट अन्य कुछ भी नहीं किया जा सकता।। ४ ।। हे प्यारे, प्रत्येक वह दिन और रात सुन्दर लगते हैं जब तेरे नाम का सुमिरन किया जाता है।। ५ ।। हे प्यारे, इस संसार के जीव वही काम किए चले जा रहे हैं जो प्रारम्भ से ही उनके भाग्यलेख में लिखा हुआ है।। ६ ।। हे प्यारे, इस सम्पूर्ण संसार में सर्वत्र तू ही कार्यशील है और तू ही घट-घट में समाहित होकर स्थित है।। ७ ।। नानक का कथन है कि हे प्रभु, मैं तेरी शरण में आ गया हूँ मुझे इस संसार के माया-मोह के कुँए में से बाहर निकाल कर मेरा उद्धार कर दे।। ८ ।। ३ ।। २२ ।। १५ ।। २ ।। ४२।।

रागु आसा महला १ पट्टी* पर आलेख लिखा   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

स- सृष्टि रचना करने वाला वह स्वामी सभी जीवों का एक अकेला ही मालिक है। जिनका चित्त उस प्रभु में लगा रहता है वे ही उसका सुमिरन करते हैं और इस संसार में उन्हीं का आना सफल माना जाता है।। १ ।। हे मेरे मूर्ख मन, तू वास्तविक प्रयोजन को क्यों भूल गया है।। हे भाई, तेरी पढ़ाई.लिखाई के हिसाब से तू तभी विद्वान समझा जा सकेगा जब तू अपने किए हुए कर्मों का ठीक-ठाक हिसाब किताब बता सकेगा।। १ ।। रहाउ ।। इ- आदि पुरुष परमात्मा ही सबका मूल है, वही दाता है और वही सच्चा है। जो गुरमुख बनकर इन अक्षरों के माध्यम से उस प्रभु को जान पाता है उसका कोई भी हिसाब-किताब बाकी नहीं बचता।। २ ।। उ- हे जीव, तू उसका गुणानुवाद कर जिसके ओर-छोर को नहीं जाना जा सकता। जो सेवा करते हैं और सत्य को जीवन में उतारते हैं वे ही जीवन के वास्तविक फल को प्राप्त करते हैं। ङ - जो वास्तव में ज्ञान के सार-तत्व को जान जाता है वही पढ़ा-लिखा हुआ और विद्वान पंडित हो जाता है। यदि कोई यह समझ और जान ले कि संसार के सभी जीवों में वह एक प्रभु ही विद्यमान है तो वह अहंकार भाव से युक्त होकर बात नहीं करता।। ४ ।। क- जब बाल सफेद हो जाते हैं तब बिना साबुन के ही वे चमकते रहते हैं। यमराज के शिकारी तब आन पहुँचते हैं और जीव को माया की जंजीर से बाँध कर जकड़ लेते हैं।। ५ ।। ख- वह प्रभु सारी सृष्टि का मालिक है जो सारे संसार को अपना सेवक जानकर उसे रोज़ी-रोटी देता है। उसी के बनाए हुए अनुशासन में सारा संसार बंधा हुआ है तथा अन्य किसी का हुकुम यहाँ नहीं चलता।। ६।। जिस प्रभु ने यह सारा संसार स्वयं ही रचा है और संसार की रचना करके जीव रूपी बर्तनों को पकाने के लिए संसार रूपी भट्ठी तैयार की है उस प्रभु को समझने के लिए जो व्यक्ति केवल अपनी विद्वता के माध्यम से बातें बनाता है वह वास्तव में अपने अहंकार को ही बताता है। ऐसे व्यक्ति के लिए ही उस प्रभु ने जन्म-मरण का चक्र तैयार किया हुआ है।। ७ ।। घ- जो सेवक को अपनी सेवा की साधना अर्पित करता हुआ शब्द-गुरु के साथ लीन बना रहता है तथा भले-बुरे को समान भाव से जानता है वह इसी विधि के माध्यम से उस प्रभु में लीन हो जाता है।। ८ ।। जिसने चारों वेदों की सृजना की है, जिसने जीवन के चारों स्रोतों और चारों युगों की रचना की है वह प्रभु ही सभी युगों का त्यागी, योगी, जीवन स्रोतों का आनन्द लेने वाला भोगी और विद्वान पण्डित

आपि थीआ ॥ ९ ॥ छछै छाइआ वरती सभ अंतरि तेरा कीआ भरमु होआ ॥ भरमु उपाइ भुलाईअनु आपे तेरा करमु होआ तिन्ह गुरू मिलिआ ॥ १० ॥ जजै जानु मंगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविआ ॥ एको लेवै एको देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥ ११ ॥ झझै झूरि मरहु किआ प्राणी जो किछु देणा सु दे रहिआ ॥ दे दे वेखै हुकमु चलाए जिउ जीआ का रिजकु पइआ ॥ १२ ॥ ञंञै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही ॥ एको रवि रहिआ सभ थाई एकु वसिआ मन माही ॥ १३ ॥ टटै टंचु करहु किआ प्राणी घड़ी कि मुहति कि उठि चलणा ॥ जूऐ जनमु न हारहु अपणा भाजि पड़हु तुम हरि सरणा ॥ १४ ॥ ठठै ठाढि वरती तिन अंतरि हरि चरणी जिन्ह का चितु लागा ॥ चितु लागा सेई जन निसतरे तउ परसादी सुखु पाइआ ॥ १५ ॥ डडै डंफु करहु किआ प्राणी जो किछु होआ सु सभु चलणा ॥ तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥ १६ ॥ ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे ॥ करि करि वेखै हुकमु चलाए तिसु निसतारे जा कउ नदरि करे ॥ १७ ॥ णाणै रवतु रहै घट अंतरि हरि गुण गावै सोई ॥ आपे आपि मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई ॥ १८ ॥ ततै तारू भवजलु होआ ता का अंतु न पाइआ ॥ ना तर ना तुलहा हम बूडसि तारि लेहि तारण राइआ ॥ १९ ॥ थथै थानि थानंतरि सोई जा का कीआ सभु होआ ॥ किआ भरमु किआ माइआ कहीऐ जो तिसु भावै सोई भला ॥ २० ॥ ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ ॥ जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥ २१ ॥ धधै धारि कला जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रंग कीआ ॥ तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकमु पइआ ॥ २२ ॥ नंनै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना संम्हलिआ ॥ गली हउ सोहागणि भैणे कंतु न कबहूं मै मिलिआ ॥ २३ ॥ पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥ देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥ २४ ॥ फफै फाही सभु जगु फासा जम कै संगलि बंधि लइआ ॥ गुर परसादी से नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पइआ ॥ २५ ॥ बबै बाजी खेलण लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा ॥

के रूप में स्थित हुआ है।। ६ ।। छ- हे प्रभु, माया रूपी तेरी छाया सब में क्रियाशील हो उठी है और तेरी की हुई रचना भ्रमपूर्ण हो गई है। अनेकों भ्रमों को उत्पन्न करके तूने सब को भुलावे में डाल दिया है परन्तु जिन पर तेरी कृपा होती है उन्हें ज्ञान रूपी गुरु प्राप्त हो जाता है।। १० ।। ज- यह दास रूपी भिखारी तुझसे वही ज्ञान माँगता है जिसकी भिक्षा के लिए यह चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता रहा है। यह लेने और देने वाला तो वास्तव में एक ही है, किसी दूसरे के बारे में तो मैंने सुना ही नहीं है।। ११ ।। झ- हे प्राणी, तू क्यों चिन्ता में मरा जा रहा है; प्रभु ने जो कुछ देना है वह तो दे ही रहा है। वह अपने विधान के अन्तर्गत सब को देता है और सब की देखभाल भी करता है। वह जितनी जिसके लिए लिखी है उसे उतनी ही रोज़ी देता जाता है।। १२ ।। ञ- जब अपनी नज़र से मैं चारो ओर देखता हूँ तो मुझे अन्य कोई दिखाई नहीं देता। वह एक प्रभु ही सब स्थानों में रमण कर रहा है और वही एक मेरे मन में भी बसा हुआ है। ट- हे प्राणी, क्यों व्यर्थ के धन्धों में पड़ा हुआ है क्योंकि घड़ी दो घड़ी के समय में ही इस संसार से उठ चलना है। अपने जीवन को जुए में हारने की तरह मत हारो और भाग कर प्रभु की शरण में पहुँच जाओ।। १४ ।। ठ- जिनका चित्त उस प्रभु के चरणों में लग गया है उनके अन्तर्मन में शान्ति पसर गई है। जिनका चित्त प्रभु में लीन हो गया है वे सेवक पार उतर गए हैं और तेरी कृपा से उन्होंने सुख प्राप्त कर लिया है।। १५ ।। ड- हे प्राणी, तू किस बात का दंभ अथवा दिखावा करता है क्योंकि जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है इस सबको यहाँ से चले जाना है। उस प्रभु का सुमिरन करो तभी तुम्हें सुख प्राप्त होगा क्योंकि वह प्रभु ही सब में सदा से समाया हुआ है।। १६ ।। ढ- वह प्रभु स्वयं ही गिरा देता है और स्वयं ही निर्माण कर देता है। उसे जैसा अच्छा लगता है वह वैसा ही करता है। वही सब कुछ करता हुआ सब को अपने हुकुम में स्थित किए रहता है और जिस पर कृपा-दृष्टि करता है उसी का पार-उतारा कर देता है। ण- जिसके अन्तर्मन में प्रभु समाया रहता है वही प्रभु के गुणों का गायन करता रहता है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही अपने आप से जीवों को मिला लेता है और फिर उनका जन्म-मरण नहीं होता।। १८ ।। त- तैरने के लिए संसार-सागर सामने है जिसका ओर-छोर दिखाई नहीं पड़ता। हे पार उतारने वाले प्रभु, कृपा करके हमें पार उतार ले।। १६।। थ- सभी स्थानों में और देशान्तरों में वही प्रभु विद्यमान है जिसका किया हुआ ही सब कुछ होता है। अब किसे भ्रम कहें और किसे माया कहा जाए, जो उस प्रभु को भाता है वही जीवों के लिए भला है।। २० ।। द- अपने दुखों के लिए किसी अन्य को दोष नहीं देना चाहिए क्योंकि दोष तो अपने किए हुए कर्मों का ही है। जैसा मैंने किया था उसी का ही फल मैंने पा लिया है इसलिए दूसरे लोगों का दोष नहीं माना जाना चाहिए।। २१ ।। ध- जिस प्रभु ने अपनी शक्ति को धारण कर रखा है और जिसने भिन्न भिन्न प्रकार के नमूनों की रचना की है उसी प्रभु का दिया हुआ सभी प्राप्त करते हैं और उसके दैवी विधान के अन्तर्गत अपने अपने कर्मों के अनुसार अपना-अपना भाग प्राप्त करते हैं।। २२ ।। न- स्त्रियों का पति स्त्रियों के साथ नित्य रमण करता है परन्तु मैंने तो उसे कभी देखा भी नहीं और न ही कभी उसका सुमिरन किया है। हे बहन, बातों से तो मैं सुहागिन बनी हुई हूँ परन्तु मुझे मेरा पति तो कभी मिला ही नहीं।।२३।। प - सब का सम्राट तो वह परमेश्वर है जिसने अपना आप दिखाने के लिए पाँचों तत्वों के विस्तार इस संसार को उत्पन्न किया है। वह प्रभु ही सब कुछ देखता, बूझता और सब कुछ जानता है तथा वह प्रभु ही अन्दर-बाहर अर्थात सर्वत्र समाया हुआ है।। २४ ।। फ- सारा संसार फन्दे में फँसा हुआ है और यम ने इसे अपनी जंजीर में बाँध रखा है। गुरु की कृपा से केवल वे लोग ही बच सके हैं जो भाग कर प्रभु की शरण में पहुँच गए हैं।।२५।। ब- यह प्रभु चौपड़ का खेल खेलने लगा और इस खेल में काम आने वाले चारों पाट उसने चार युगों को बनाया है।

जीअ जंत सभ सारी कीते पासा ढालणि आपि लगा ॥ २६ ॥ भभै भालहि से फलु पावहि गुर परसादी जिन्ह कउ भउ पइआ ॥ मनमुख फिरहि न चेतहि मूड़े लख चउरासीह फेरु पइआ ॥ २७ ॥ मंमै मोहु मरणु मधुसूदनु मरणु भइआ तब चेतविआ ॥ काइआ भीतरि अवरो पड़िआ मंमा अखरु वीसरिआ ॥ २८ ॥ ययै जनमु न होवी कद ही जे करि सचु पछाणै ॥ गुरमुखि आखै गुरमुखि बूझै गुरमुखि एको जाणै ॥ २९ ॥ रारै रवि रहिआ सभ अंतरि जेते कीए जंता ॥ जंत उपाइ धंधै सभ लाए करमु होआ तिन नामु लइआ ॥ ३० ॥ ललै लाइ धंधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु कीआ ॥ खाणा पीणा सम करि सहणा भाणै ता कै हुकमु पइआ ॥ ३१ ॥ ववै वासुदेउ परमेसरु वेखण कउ जिनि वेसु कीआ ॥ वेखै चाखै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥ ३२ ॥ ड़ाड़ै राड़ि करहि किआ प्राणी तिसहि धिआवहु जि अमरु होआ ॥ तिसहि धिआवहु सचि समावहु ओसु विटहु कुरबाणु कीआ ॥ ३३ ॥ हाहै होरु न कोई दाता जीअ उपाइ जिनि रिजकु दीआ ॥ हरि नामु धिआवहु हरि नामि समावहु अनदिनु लाहा हरि नामु लीआ ॥ ३४ ॥ आइड़ै आपि करे जिनि छोडी जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ करे कराए सभ किछु जाणै नानक साइर इव कहिआ ॥ ३५ ॥ १ ॥

रागु आसा महला ३ पटी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अयो अंङै सभु जगु आइआ काखै घंङै कालु भइआ ॥ रीरी लली पाप कमाणे पड़ि अवगण गुण वीसरिआ ॥ १ ॥ मन ऐसा लेखा तूं की पड़िआ ॥ लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधंङाइऐ सिमरहि नाही नंनै ना तुधु नामु लइआ ॥ छछै छीजहि अहिनिसि मूड़े किउ छूटहि जमि पाकड़िआ ॥ २ ॥ बबै बूझहि नाही मूड़े भरमि भुले तेरा जनमु गइआ ॥ अणहोदा नाउ धराइओ पाधा अवरा का भारु तुधु लइआ ॥ ३ ॥ जजै जोति हिरि लई तेरी मूड़े अंति गइआ पछुतावहिगा ॥ एकु सबदु तूं चीनहि नाही फिरि फिरि जूनी आवहिगा ॥ ४ ॥ तुधु सिरि लिखिआ सो पड़ु पंडित अवरा नो न

सभी जीव जन्तुओं को उसने गोटियां बनाया और स्वयं ही पासे फेंक-फेंक कर खेल में लग गया है।। २६।। भ- गुरु की कृपा से जिनके मन में प्रभु का भय स्थित हो गया वही उसे खोजते हैं और फलस्वरूप उसे पा लेते हैं। मनमुख जीव भटकते रहते हैं परन्तु उसका सुमिरन नहीं करते जिससे वे चौरासी लाख योनियों के चक्र में पड़े रहते हैं।। २७ ।। म- सांसारिक मोह के कारण मरने की और मधुसूदन अर्थात प्रभु की जीवन भर याद नहीं आई। अब जब मरने का समय आया तब जीव को यह सब याद आता है। जब तक शरीर में प्राण थे तब तक म अक्षर अर्थात मरना और मधुसूदन प्रभु इसे हमेशा विस्मृत ही बने रहे।। २८ ।। य- यदि सत्य को पहचान लिया जाए तो हे जीव कभी भी जन्म-मरण नहीं होगा। गुरमुख बनकर ही उस प्रभु के बारे में कुछ कहा जाता है, गुरमुख बनकर ही उसके रहस्य को बूझा जाता है और गुरमुख बनकर ही उस एक प्रभु को जाना जाता है।। २६ ।। र- जितने भी जीव-जन्तु उत्पन्न उस प्रभु ने किए हैं उन सब में वह स्वयं ही बस रहा है। जीवों को उत्पन्न करके उसी ने सबको अलग-अलग धन्धों में लगा रखा है। जिन पर उसकी कृपा होती है वे ही उसके नाम का सुमिरन करते हैं।। ३० ।। ल- उसने सभी जीवों को धन्धे में लगाकर छोड़ा हुआ है और जीवों को माया-मोह आदि मीठा लगता है। खाना-पीना समान भाव से सब कुछ सहन करना आदि सब उस प्रभु के हुकुम के अन्तर्गत ही होता है।। ३१ ।। व- वह प्रभु परमेश्वर स्वयं ही है जिसने अपने आप को देखने के लिए ही यह संसार रूपी वेश धारण किया हुआ है। वही इसे देखता, इसका स्वाद लेता, सब कुछ जानता है और वही इस संसार के अन्दर और संसार से परे व्याप्त हो रहा है।। ३२ ।। ड़- हे प्राणी, तू किस वाद-विवाद में पड़ा हुआ है; केवल उसी का सुमिरन कर जो अमर है अर्थात अकाल है; उसी का सुमिरन करते हुए सत्य में लीन हो जाओ और उसी प्रभु पर कुर्बान हो जाओ।। ३३ ।। ह- जिसने जीवों को पैदा करके उनके पालन-पोषण का साधन उन्हें प्रदान किया है उस प्रभु के अतिरिक्त अन्य कोई दाता नहीं है। प्रभु के नाम का सुमिरन करो, प्रभु के नाम में ही लीन बने रहो और रात-दिन प्रभु-नाम का ही लाभ प्राप्त करते रहो।। ३४ ।। जिस प्रभु ने स्वयं सृष्टि बना दी है वह जो कुछ भी इसके लिए करना है, किए जा रहा है। कवि नानक का यह कहना है कि वह प्रभु ही सब कुछ करता-कराता है और सब कुछ जानता है।। ३५ ।। १।।

रागु आसा महला ३ पट्टी १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

अयो अंङै काखै कंङे के बारे में यहाँ कहा गया है कि सारा संसार जिसने जन्म लिया है वह काल के वश में भी आएगा अर्थात नष्ट हो जाएगा। री री लली के बारे में कहा गया है कि प्राणी पाप करने के लिए अवगुणों में पड़कर गुणों को भूल जाता है।। १ ।। हे मेरे मन, तूने ऐसा लेखा जोखा भला क्योंकर पढ़ा है क्योंकि लेखा देना तो अभी भी तेरे सिर पर वैसे का वैसा ही बना हुआ है।। १ । रहाउ।। सिधं ङाईऐ- हे प्राणी, तू उस प्रभु का सुमिरन नहीं करता और न ही तू उसका नाम लेता है। छ- हे मूर्ख जीव, तू दिन-रात टूटता जा रहा है। तुझे यम ने पकड़ रखा है। तू भला इससे कैसे छूटेगा।। २ ।। ब- हे मूर्ख, तू प्रभु के मर्म को नहीं जानता और भ्रमों में भूला हुआ तेरा सारा जीवन व्यतीत हो गया है। तू जो नहीं है तूने वह अपना नाम रख लिया है अर्थात तू अध्यापक (पाधा) तो नहीं है पर तूने अपना नाम विद्वान के तौर पर प्रसिद्ध कर रखा है। इसलिए दूसरों के बनने बिगड़ने का भार अब तेरे सिर पर है।। ३ ।। ज- हे मूर्ख-, तेरी ऊँची सुरति तुझसे छीन ली गई है इसलिए अन्त समय में तू पछताएगा। प्रभु-नाम के एक शब्द को तूने नहीं पहचाना इसलिए तू बार-बार योनियों में आता जाता रहेगा ।। ४ ।। हे पंडित, जो तेरे भाग्यलेख में लिखा है तू उसे ही जान ले और यदि तू नहीं जान पाया तो दूसरों को

सिखालि बिखिआ ॥ पहिला फाहा पइआ पाधे पिछो दे गलि चाटड़िआ ॥ ५ ॥ ससै संजमु गइओ मूड़े एकु दानु तुधु कुथाइ लइआ ॥ साई पुत्री जजमान की सा तेरी एतु धानि खाधै तेरा जनमु गइआ ॥ ६ ॥ मंमै मति हिरि लई तेरी मूड़े हउमै वडा रोगु पइआ ॥ अंतर आतमै ब्रहमु न चीन्हिआ माइआ का मुहताजु भइआ ॥ ७ ॥ ककै कामि क्रोधि भरमिओहु मूड़े ममता लागे तुधु हरि विसरिआ ॥ पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूं डूबि मुआ ॥ ८ ॥ ततै तामसि जलिओहु मूड़े थथै थान भरिसटु होआ ॥ घघै घरि घरि फिरहि तूं मूड़े ददै दानु न तुधु लइआ ॥ ९ ॥ पपै पारि न पवही मूड़े परपंचि तूं पलचि रहिआ ॥ सचै आपि खुआइओहु मूड़े इहु सिरि तेरै लेखु पइआ ॥ १० ॥ भभै भवजलि डुबोहु मूड़े माइआ विचि गलतानु भइआ ॥ गुर परसादी एको जाणै एक घड़ी महि पारि पइआ ॥ ११ ॥ ववै वारी आईआ मूड़े वासुदेउ तुधु वीसरिआ ॥ एह वेला न लहसहि मूड़े फिरि तूं जम कै वसि पइआ ॥ १२ ॥ झझै कदे न झूरहि मूड़े सतिगुर का उपदेसु सुणि तूं विखा ॥ सतिगुर बाझहु गुरु नही कोई निगुरे का है नाउ बुरा ॥ १३ ॥ धधै धावत वरजि रखु मूड़े अंतरि तेरै निधानु पइआ ॥ गुरमुखि होवहि ता हरि रसु पीवहि जुगा जुगंतरि खाहि पइआ ॥ १४ ॥ गगै गोबिदु चिति करि मूड़े गली किनै न पाइआ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाइ मूड़े पिछले गुनह सभ बखसि लइआ ॥ १५ ॥ हाहै हरि कथा बूझु तूं मूड़े ता सदा सुखु होई ॥ मनमुखि पड़हि तेता दुखु लागै विणु सतिगुर मुकति न होई ॥ १६ ॥ रारै रामु चिति करि मूड़े हिरदै जिन्ह कै रवि रहिआ ॥ गुर परसादी जिन्ही रामु पछाता निरगुण रामु तिन्ही बूझि लहिआ ॥ १७ ॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ अकथु न जाई हरि कथिआ ॥ नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ ॥ १८ ॥ १ ॥ २ ॥

रागु आसा महला १ छंत घरु १ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

मुंध जोबनि बालड़ीए मेरा पिरु रलीआला राम ॥ धन पिर नेहु घणा

झूठ क्यों समझा रहा है। इस प्रकार पहले तो पाप का फन्दा तूने अपने गले में डाला हुआ है और बाद में तू अपने शिष्यों को भी ले मरेगा।। ५ ।। स- हे मूर्ख, तेरा अपने पर कुछ भी संयम नहीं रहा क्योंकि एक दान तूने न लेने योग्य स्थान से भी लिया है। तूने यजमान की पुत्री का विवाह कराकर दान लिया है यह पाप है क्योंकि यजमान की कन्या तो तेरी अपनी पुत्री के समान है। इस प्रकार के लिए हुए धन के कारण तेरा किया हुआ कार्य और जन्म व्यर्थ हो गया है।। ६ ।। म- हे मूर्ख जीव, तेरी मति तुझसे छिन गई है क्योंकि अहंकार का बड़ा रोग तुझमें उत्पन्न हो गया है। अब अपनी अन्तरात्मा में तू ब्रह्म को नहीं पहचानता और केवल धन-सम्पदा का ही मोहताज बनकर रह गया है।। ७ ।। क - हे मूर्ख, तू काम, क्रोध में भटकता रहा है; तुझे लालच लगा हुआ है जिसके फलस्वरूप परमात्मा तुझे भूल गया है। अपनी पढ़ाई और अपने गुणों की चीख-पुकार तो तू लगाए रहता है परन्तु इस सृष्टि के और सृष्टिकर्ता के मर्म को बूझे बिना वास्तव में तू डूब कर मर-खप गया है।। ८ ।। त, थ - हे मूर्ख, तू क्रोध में जला हुआ है और जहाँ तू खड़ा होता है वह स्थान भी तेरे पापों के कारण भ्रष्ट हो जाता है। घ, द - हे मूर्ख, तू अपने वास्तविक स्थान को छोड़कर दर-दर पर माँगता फिरता है परन्तु प्रभु-नाम का दान तूने कभी भी प्राप्त नहीं किया।। ६ ।। प - हे मूर्ख, तू संसार सागर से पार नहीं जा सकता क्योंकि तू इस संसार के प्रपंचों में ही लिपटा हुआ है। हे मूर्ख, तेरे भाग्य में ही ऐसा लेख लिखा हुआ है जिससे उस सच्चे प्रभु ने स्वयं ही तुझे ख्वार किया हुआ है।। १० ।। भ - हे मूर्ख, तू संसार सागर में डूबा हुआ है क्योंकि तू माया अर्थात धन-सम्पदा में ही लीन बना हुआ है। गुरु की कृपा से यदि तू केवल उस एक प्रभु को ही जान ले अर्थात उसका सुमिरन कर ले तो घड़ी भर में ही संसार सागर से पार हो सकता है।। ११ ।। व - हे मूर्ख, अब तेरी चलने की बारी आ गई है परन्तु उस सर्वव्यापी प्रभु को तूने सदैव भुलाए रखा है। हे मूर्ख, जब तू यम के वश में आ जाएगा तो तुझे फिर यह अवसर हाथ नहीं आएगा।। १२ ।। झ - हे मूर्ख, तुझे कभी भी कोई पछतावा नहीं होगा यदि तू सच्चे गुरु का उपदेश सुनकर देख ले। सच्चे गुरु के बिना अन्य कोई गुरु नहीं हो सकता और वास्तव में जो गुरु विहीन है उसका तो नाम भी बुरा ही है।। १३ ।। ध - हे मूर्ख, बाहर को दौड़ते हुए अपने मन को रोक कर रख क्योंकि तेरे अन्दर ही सुखों का भण्डार प्रभु-नाम पड़ा हुआ है। यदि तू गुरमुख बन जाए तभी तुझे हरि रस पीने के लिए मिले और तू उसे युगों युगान्तरों तक पीता चला जाए (तब भी वह समाप्त नहीं होगा) ।। १४ ।। ग - हे मूर्ख, धरती को आधार देने वाले प्रभु का चित्त में सुमिरन कर क्योंकि केवल बातों से उसे कोई भी प्राप्त नहीं कर सका है। हे मूर्ख, यदि तू गुरु के चरणों को हृदय में बसा लेगा तो तेरे पिछले सभी गुनाह (पाप) माफ कर दिए जाएंगे।। १५ ।। ह -हरि- कथा के रहस्य को हे मूर्ख जीव, तू समझ; तभी तुझे सदैव सुख प्राप्त होगा। मनमुख अर्थात गुरु-विहीन लोग जितना भी पढ़ते हैं उतना ही अहंकार पैदा करते हैं तथा उतना ही उन्हें दुखी रहना पड़ता है; सच्चे गुरु के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती।। १६ ।। र- हे मूर्ख, तू उन लोगों के माध्यम से प्रभु का सुमिरन कर जिनके हृदय में परमात्मा रमण कर रहा है। गुरु की कृपा से जिन्होंने राम को पहचान लिया है उन्होंने वास्तव में निर्गुण राम अर्थात परमात्मा के रहस्य को भी जान लिया है।। १७ ।। हे प्रभु, तेरा ओर-छोर नहीं देखा जा सकता और तेरी अकथनीय वार्ता का कथन नहीं किया जा सकता। हे नानक, जिनको सच्चा गुरु मिल गया है उनका लेखा-जोखा चुक गया है।। १८ ।। १ ।। २ ।।

रागु आसा महला १ छन्द घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे यौवनपूर्ण मुग्धा बालिके, मेरा प्रभु-पति बहुत ही आनन्द विहार करने वाला है। स्त्री और पुरुष में यदि बहुत प्रेम हो

रसि प्रीति दइआला राम ॥ धन पिरहि मेला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे ॥ सेजा सुहावी संगि पिर कै सात सर अंम्रित भरे ॥ करि दइआ मइआ दइआल साचे सबदि मिलि गुण गावओ ॥ नानका हरि वरु देखि बिगसी मुंध मनि ओमाहओ ॥ १ ॥ मुंध सहजि सलोनड़ीए इक प्रेम बिनंती राम ॥ मै मनि तनि हरि भावै प्रभ संगमि राती राम ॥ प्रभ प्रेमि राती हरि बिनंती नामि हरि कै सुखि वसै ॥ तउ गुण पछाणहि ता प्रभु जाणहि गुणह वसि अवगण नसै ॥ तुधु बाझु इकु तिलु रहि न साका कहणि सुनणि न धीजए ॥ नानका प्रिउ प्रिउ करि पुकारे रसन रसि मनु भीजए ॥ २ ॥ सखीहो सहेलड़ीहो मेरा पिरु वणजारा राम ॥ हरि नामो वणंजड़िआ रसि मोलि अपारा राम ॥ मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभ भावै ता मुंध भली ॥ इकि संगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली ॥ करण कारण समरथ स्रीधर आपि कारजु सारए ॥ नानक नदरी धन सोहागणि सबदु अभ साधारए ॥ ३ ॥ हम घरि साचा सोहिलड़ा प्रभ आइअड़े मीता राम ॥ रावे रंगि रातड़िआ मनु लीअड़ा दीता राम ॥ आपणा मनु दीआ हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावए ॥ तनु मनु पिर आगै सबदि सभागै घरि अंम्रित फलु पावए ॥ बुधि पाठि न पाईऐ बहु चतुराईऐ भाइ मिलै मनि भाणे ॥ नानक ठाकुर मीत हमारे हम नाही लोकाणे ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥ अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम ॥ मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम ॥ अनदिनु राता मनु बैरागी सुंन मंडलि घरु पाइआ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु पिआरा सतिगुरि अलखु लखाइआ ॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे ॥ नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण झुणकारे ॥ १ ॥ तितु अगम तितु अगम पुरे कहु कितु बिधि जाईऐ राम ॥ सचु संजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईऐ राम ॥ सचु सबदु कमाईऐ निज घरि जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना ॥ तितु साखा मूलु पतु नही डाली सिरि सभना परधाना ॥ जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईऐ ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईऐ ॥ २ ॥ गुरु सागरो

तो दयालु पति और भी अपना प्रेम प्रदान करता है। प्रभु-पति फिर स्वयं कृपा करता है और जीव-स्त्री का अपने पति के साथ मिलाप होता है। पति के मिलाप के समय सेज सुन्दर लगती है और स्त्री के सातों सरोवर अर्थात पाँचों इन्द्रियाँ मन एवं बुद्धि अमृत-रस से भर जाते हैं। हे प्रभु, दयालु होकर कृपा करो ताकि शब्द के माध्यम से मैं गुण गाता रहूं। हे नानक, प्रभु-पति को देखकर मुग्धा जीव-स्त्री खिल उठी है और उसके मन में चाव पैदा हो गया है।। १ ।। हे प्राकृतिक रूप से सुन्दर बनी रहने वाली सुन्दरी, मेरी एक प्रेम से भरी हुई विनती सुन ले। मुझे भी कुछ बता जिससे तन मन से मुझे प्रभु अच्छा लगे और मैं प्रभु के साथ लीन बनी रहूँ। जो जीव स्त्री प्रभु प्रेम में लीन होकर प्रभु से विनती करती है वह प्रभु के नाम में लीन होकर सुख में ही निवास करती है। हे प्रभु, जब यह जीव स्त्रियां तेरे गुणों को पहचान जाती हैं तब ही वास्तव में ये प्रभु को जान पाती हैं; गुण इनके अन्दर निवास कर लेते हैं और अवगुण भाग खड़े होते हैं। हे प्रभु, मैं तेरे बिना एक क्षण-भर के लिए भी नहीं जीवित बनी रह सकती। कुछ भी कहने-सुनने से मेरे मन को धैर्य नहीं आता। हे नानक, जो जीव-स्त्री प्रभु को प्रिय प्रिय पुकार कर याद करती रहती है उसका मन परमात्मा के नाम-रस में भीग जाता है।। २ ।। हे मेरी सत्संगी सहेलियो, प्रिय प्रभु प्रेम का व्यापारी है; जिसने उसके नाम का लेन-देन किया है वह अपने ऊँचे जीवन के कारण अपार मूल्य वाली हो जाती है। वह अमूल्य जीव-स्त्री सदैव प्रभु पति के स्थिर घर (ठिकाने) में लीन बनी रहती है और वास्तव में जो प्रभु को भाती है वह अनजान जीव-स्त्री भी अच्छी समझी जाती है। अनेकों ऐसी हैं जो प्रभु-पति के साथ मिलकर आनन्दित बनी रहती हैं परन्तु मैं तो उस प्रभु के द्वार पर ही खड़ी होकर उसके दर्शनों के लिए पुकार लगाए जा रही हूँ। वह सब कुछ करने-कराने वाला समर्थ प्रभु स्वयं ही सभी उद्देश्यों को सफल करता है और हे नानक, जिस जीव-स्त्री पर प्रभु की कृपा दृष्टि होती है वही भाग्यशाली सुहागिन मानी जाती है और शब्द उसके हृदय को आधार प्रदान किए रहता है।। ३ ।। हे सखियो, मेरा मित्र प्रभु मेरे अन्दर आ बसा है और इसलिए मेरे हृदय रूपी घर में खुशियों के सच्चे गीत गाए जा रहे हैं। वह प्रभु उन जीवों को मिल जाता है जो उसके प्रेम रंग में रंगे रहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपना मन उसको अर्पण करके उस प्रभु का नाम प्राप्त करते हैं। जो अपने मन को अर्पण करके प्रभु रूपी वर प्राप्त कर लेती है प्रभु उसके साथ जैसे चाहता है वैसे ही रमण करता है। जो जीव-स्त्री तन, मन प्रियतम को अर्पण कर शब्द के माध्यम से सौभाग्यशाली बनी है वह प्रभु-नाम के अमृत फल को अपने हृदय में ही प्राप्त कर लेती है। किसी बुद्धि और चतुराई तथा धार्मिक ग्रन्थों के मात्र पाठ करने से प्रभु नहीं मिलता; वह तो प्रेम-भाव के माध्यम से प्राप्त होता है। नानक का कथन है कि हे मेरे मित्र प्रभु, हम तुम्हारे अपने ही हैं और कोई ग़ैर लोग नहीं हैं।। ४ ।। १ ।। आसा महला १।। मेरा मन प्यारे प्रभु के अनहद् नाद के वाद्य की झंकार को एक रस सुना रहा है। मेरा मन उस प्रभु के सुमिरन में लीन होकर मस्त बना रहता है। सदैव मेरा मन माया के प्रपंचों से वैराग्यवान होकर निर्विकल्प अवस्था में स्थित हो गया है। वह आदि पुरुष अपरंपर है और उस अदृष्ट प्रभु को सच्चे गुरु ने मुझे दिखा दिया है। जो स्थिर आसन पर बैठने वाला स्थिर प्रभु है, चिन्तन के माध्यम से मेरा मन उसमें लीन हो गया है। हे नानक, जो प्रभु में लीन होकर विषय-विकारों की ओर से वैराग्यवान हो गए हैं उनके अन्तर्मन में अनहद् नाद की झंकार चलती रहती है।। १ ।। उस अगम्य स्थान पर जहाँ प्रभु बसता है बताओ किस विधि से पहुँचा जाए। इसके लिए सत्य, संयम और सारे गुणों के सार शब्द-गुरु के अनुरूप आचरण बनाया जाना चाहिए। सत्य शब्द के अनुरूप आचरण बनाने से जीव गुणों के भण्डार प्रभु को प्राप्त कर लेता है और अपने मूल स्वरूप में पहुँच जाता है। वह प्रभु एक ऐसा वृक्ष है जिसकी न तो कोई शाखा है, न जड़ है, न कोई पत्ता है और न डाली है अर्थात वह त्रिगुणात्मक जगत् से ऊँचा होता हुआ सब से प्रधान है। यह सारी सृष्टि जप, जाप, तप और अनेकों प्रकार के संयम कर कर के थक चुकी है परन्तु हठपूर्वक अपनी इन्द्रियों का निग्रह करने पर भी वह प्राप्त नहीं होता। हे नानक, सहज-भाव में जीवन यापन करने से ही वह जगजीवन प्रभु मिलता है और सच्चा गुरु ही इस रहस्य को समझता है।। २।। गुरु वह सागर है

रतनागरु तितु रतन घणेरे राम ॥ करि मजनो सपत सरे मन निरमल मेरे राम ॥ निरमल जलि न्हाए जा प्रभ भाए पंच मिले वीचारे ॥ कामु करोधु कपटु बिखिआ तजि सचु नामु उरि धारे ॥ हउमै लोभ लहरि लब थाके पाए दीन दइआला ॥ नानक गुर समानि तीरथु नही कोई साचे गुर गोपाला ॥ ३ ॥ हउ बनु बनो देखि रही त्रिणु देखि सबाइआ राम ॥ त्रिभवणो तुझहि कीआ सभु जगतु सबाइआ राम ॥ तेरा सभु कीआ तूं थिरु थीआ तुधु समानि को नाही ॥ तूं दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किसु सालाही ॥ अणमंगिआ दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भंडारा ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई नानकु कहै वीचारा ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु राता राम पिआरे राम ॥ सचु साहिबो आदि पुरखु अपरंपरो धारे राम ॥ अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रहमु परधानो ॥ आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो ॥ करम धरम की सार न जाणै सुरति मुकति किउ पाईऐ ॥ नानक गुरमुखि सबदि पछाणै अहिनिसि नामु धिआईऐ ॥ १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु मानिआ नामु सखाई राम ॥ हउमै ममता माइआ संगि न जाई राम ॥ माता पित भाई सुत चतुराई संगि न सपै नारे ॥ साइर की पुत्री परहरि तिआगी चरण तलै वीचारे ॥ आदि पुरखि इकु चलतु दिखाइआ जह देखा तह सोई ॥ नानक हरि की भगति न छोडउ सहजे होइ सु होई ॥ २ ॥ मेरा मनो मेरा मनु निरमलु साचु समाले राम ॥ अवगण मेटि चले गुण संगम नाले राम ॥ अवगण परहरि करणी सारी दरि सचै सचिआरो ॥ आवणु जावणु ठाकि रहाए गुरमुखि ततु वीचारो ॥ साजनु मीतु सुजाणु सखा तूं सचि मिलै वडिआई ॥ नानक नामु रतनु परगासिआ ऐसी गुरमति पाई ॥ ३ ॥ सचु अंजनो अंजनु सारि निरंजनि राता राम ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनो दाता राम ॥ जगजीवनु दाता हरि मनि राता सहजि मिलै मेलाइआ ॥ साध सभा संता की संगति नदरि प्रभू सुखु पाइआ ॥ हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा ॥ नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥ ४ ॥ ३ ॥

जो गुण रूपी रत्नों की खान है; उसमें अनेकों रत्न विद्यमान हैं। हे मेरे मन, तू सातों सरोवरों का रूप गुरु की संगति में स्नान कर और निर्मल हो जा। ऐसे पवित्र सरोवर में तभी स्नान किया जा सकता है यदि प्रभु को अच्छा लगे; तभी जीव का संतोष, दया, धर्म, सत्य, धैर्य आदि से मेल होता है और जीव चिन्तन करता हुआ काम, क्रोध, कपट, विषयलीनता आदि को त्याग कर सच्चे प्रभु के सत्य रूपी नाम को हृदय में धारण करता है। जब दीनदयालु प्रभु प्राप्त हो जाता है तो लोभ की लहरें थक कर क्षीण हो जाती हैं। हे नानक, गुरु के समान अन्य तीर्थ कोई नहीं है और वह सच्चा गुरु ही परमात्मा है।। ३ ।। मैं जंगल-जंगल में ढूँढ रही हूँ और मैने सारा तिनका-तिनका भी देख लिया है। इस सब का सार यही निकला है कि सारे जगत् को और तीनों लोकों को हे प्रभु तूने ही बनाया है। यह सब कुछ तेरा ही किया हुआ है, तू स्थिर है और तेरे समान अन्य कोई नहीं है। तू सबका दाता है और सभी तेरे द्वार पर याचक हैं; तेरे बिना मैं किसकी प्रशंसा करूँ। न माँगा जा सकने वाला दान भक्ति है। हे दाता प्रभु, मुझे वह दे जिससे भक्ति के मेरे भण्डार भरे रहें। नानक का चिन्तनपूर्ण यह कथन है कि प्रभु-नाम के बिना जीव की मुक्ति नहीं हो सकती।। ४ ।। २ ।। आसा महला १ ।। मेरा मन उस प्यारे राम रूपी प्रभु में लीन हो गया है। मेरे मन ने उस सच्चे साहिब, आदि पुरुष अपरंपर प्रभु को अपने में धारण कर लिया है। वह सर्व-शिरोमणि परब्रह्म प्रभु अगम्य, अगोचर और अपरंपर है; बाकी सब को झूठा एवं अस्थिर माना जाना चाहिए क्योंकि केवल प्रभु ही आदि से, युगों के प्रारम्भ से विद्यमान है। यह वर्तमान में भी है और भविष्य में भी बना रहेगा। मेरा मन धर्म-कर्म के सार-तत्व को नहीं जानता और न ही इसे यह पता है कि ऊँची सुरति और मुक्ति किस प्रकार प्राप्त की जाती है। हे नानक, यह तभी सम्भव होगा यदि गुरमुख बनकर यह शब्द-ब्रह्म को पहचान जाए और दिन-रात प्रभु नाम का सुमिरन करता रहे।। १ ।। मेरा मन प्रभु-नाम रूपी सखा के साथ मिलना मान गया है। यह जान गया है कि अहंकार, ममता, माया साथ जाने वाले नहीं हैं। माता, पिता, भाई, पुत्र, सम्पत्ति, स्त्री और चतुराईयां साथ जाने वाली नहीं हैं। मेरे मन ने समुद्र की पुत्री लक्ष्मी अर्थात माया को त्याग कर उसे अपने पैरों तले रौंद डाला है। उस आदि पुरुष प्रभु ने एक ऐसा कौतुक दिखाया है कि जहाँ भी देखा जाता है वह प्रभु ही दिखाई देता है। हे नानक, अब मैं प्रभु की भक्ति को नहीं छोड़ूँगा और स्वभाविक रूप अथवा सहज रूप में ही जो होना है वह होता रहे।। २ ।। मेरा मन उस निर्मल सच्चे प्रभु का सुमिरन कर करके स्वयं ही स्वच्छ हो गया है। यह मन अवगुणों को मिटा देता है क्योंकि इसके अन्दर ही गुणों का संगम भी स्थित बना रहता है। इसने अवगुणों को त्याग कर अच्छे कार्यों को संभाल लिया है और सच्चे प्रभु के द्वार पर सत्याचरण वाला बन गया है। गुरमुख बनकर इसने तत्व-चिन्तन किया है जिससे इसका आना-जाना रुक गया है। हे प्रभु, तू ही मेरा सज्जन, मित्र और मार्गदर्शक सखा है और मैं यह जानता हूँ कि सत्य के माध्यम से ही बड़प्पन प्राप्त होता है। हे नानक, मैंने गुरु का ऐसा उपदेश प्राप्त किया है कि प्रभु नाम का रत्न मेरे अन्दर प्रकाशित हो उठा है।। ३ ।। सत्य एक अंजन (सुरमा) है; इस अंजन को धारण करके मैं उस निरंजन प्रभु में लीन हो गया हूँ। मुझे यह अनुभव हो गया है कि वह जगजीवन दाता प्रभु मन-तन में बस रहा है। वह मन को अच्छा लगने वाला जगजीवन दाता प्रभु सहजभाव में मिलने पर ही मिलता है। साधु पुरुषों की सभा, संत पुरुषों की संगति की कृपादृष्टि से ही प्रभु का अपार सुख प्राप्त होता है। विषय-विकारों के प्रति वैराग्यवान व्यक्ति प्रभु की भक्ति में लीन बने रहते हैं और इससे उनका मोह और तृष्णा चुक जाती है। हे नानक, ऐसे वैराग्यवान तेरे सेवक बिरले ही हैं जो अपने अहंकार को मारकर संतुष्ट हो गए हैं।। ४ ।। ३ ।।

रागु आसा महला १ छंत घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ सभना का दाता करम बिधाता दूख बिसारणहारु जीउ ॥ दूख बिसारणहारु सुआमी कीता जा का होवै ॥ कोट कोटंतर पापा केरे एक घड़ी महि खोवै ॥ हंस सि हंसा बग सि बगा घट घट करे बीचारु जीउ ॥ तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ १ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ तिन जमु नेड़ि न आवै गुर सबदु कमावै कबहु न आवहि हारि जीउ ॥ ते कबहु न हारहि हरि हरि गुण सारहि तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जंमणु मरणु तिन्हा का चूका जो हरि लागे पावै ॥ गुरमति हरि रसु हरि फलु पाइआ हरि हरि नामु उर धारि जीउ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ २ ॥ जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ तिसै विटहु कुरबाणु जीउ ॥ ता की सेव करीजै लाहा लीजै हरि दरगह पाईऐ माणु जीउ ॥ हरि दरगह मानु सोई जनु पावै जो नरु एकु पछाणै ॥ ओहु नव निधि पावै गुरमति हरि धिआवै नित हरि गुण आखि वखाणै ॥ अहिनिसि नामु तिसै का लीजै हरि ऊतमु पुरखु परधानु जीउ ॥ जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ हउ तिसै विटहु कुरबानु जीउ ॥ ३ ॥ नामु लैनि सि सोहहि तिन सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ तिन फल तोटि न आवै जा तिसु भावै जे जुग केते जाहि जीउ ॥ जे जुग केते जाहि सुआमी तिन फल तोटि न आवै ॥ तिन्ह जरा न मरणा नरकि न परणा जो हरि नामु धिआवै ॥ हरि हरि करहि सि सूकहि नाही नानक पीड़ न खाहि जीउ ॥ नामु लैन्हि सि सोहहि तिन्ह सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला १ छंत घरु ३ ॥

तूं सुणि हरणा कालिआ की वाड़ीऐ राता राम ॥ बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम ॥ फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परतापए ॥

रागु आसा महला १ छन्द घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मैं जहाँ भी जाता हूँ हे मेरे सच्चे सृजनकर्ता प्रभु, सभी स्थानों में मैं तुझे ही देखता हूँ। तू ही सबको देने वाला दाता है, कर्मों के अनुसार फल देने वाला और दुखों को दूर करने वाला प्रभु है। दुखों को मिटाने वाला वह प्रभु ही है जिसका किया हुआ सब कुछ होता है। वह करोड़ों पापों को एक घड़ी भर में नष्ट कर देता है। प्रभु जीवों के बारे में विचार कर लेता है कि जो हंस है अर्थात जो निर्मल पुरुष है उसे हंस ही माना जाए और जो बगुले हैं अर्थात जो धूर्त और पाखण्डी हैं उनके साथ बगुले की तरह ही व्यवहार किया जाए। हे सच्चे सृजनकर्ता, मैं जहाँ भी जाता हूँ प्रत्येक स्थान पर तू ही दिखाई देता है।। १ ।। जिन्होने एकाग्र मन से तेरी आराधना की है उन्होंने सुख प्राप्त किया है परन्तु संसार में ऐसे लोग बिरले ही हैं। वे गुरु के उपदेश को आचरण में उतारते हैं इसलिए यम उनके पास भी नहीं आता और वे जिस कार्य को भी हाथ में लेते हैं उसमें हारते नहीं। वे कभी नहीं हारते और प्रभु के गुणों का सुमिरन करते रहते हैं तथा इसीलिए यम उनके पास भी नहीं आता और वे कालातीत हो जाते हैं। जो प्रभु के चरणों में आ लगते हैं उनका जन्म-मरण समाप्त हो जाता है। गुरु की मति को मन में बसाने से प्रभु नाम का रस और फल प्राप्त होता है और प्रभु का नाम हृदय में बस जाता है। परन्तु जिन्होंने एकाग्र मन से उस प्रभु की आराधना की है उन्होंने ही सुख प्राप्त किया है और संसार में ऐसे लोग बिरले ही होते हैं।। २ ।। जिसने इस जगत् को उत्पन्न करके उसे विभिन्न धन्धों में लगाया हुआ है मैं उस प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ। हे जीव, उसकी सेवा करो, लाभ उठाओ और प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त करो। प्रभु के दरबार में वही सेवक सम्मान पाता है जो केवल एक प्रभु को ही पहचानता है। गुरु उपदेश के माध्यम से वह नौ निधियां प्राप्त कर लेता है, प्रभु का सुमिरन करता है और सदैव प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है। हे जीव, उस उत्तम एवं प्रधान प्रभु पुरुष के नाम का ही दिन-रात सुमिरन किया जाना चाहिए। मैं उस प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने जगत् को उत्पन्न किया है और उसे काम-काज में लगाया है।। ३ ।। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं वे शोभायुक्त बनते हैं और सुख रूपी खेल को जीत लेते हैं। यदि प्रभु को भा जाए तो अनेकों युगों तक ऐसे व्यक्तियों को प्रभु की कृपा रूपी फल की कभी कमी नहीं आती। हे प्रभु, बेशक कितने ही युग गुज़र जाएं, प्रभु-नाम सुमिरन करने वालों को कभी भी कोई कमी नहीं आती। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं उन्हें बुढ़ापा, मृत्यु और नर्क आदि में जाना नहीं होता। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं उनका अन्तर्मन सूखता नहीं अर्थात हरा-भरा बना रहता है और हे नानक, वे कभी भी किसी कष्ट से पीड़ित नहीं होते। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं वे शोभायुक्त होते हैं; उन्हें आनन्द रूपी फल प्राप्त होता है तथा जो प्रभु-नाम को मानकर जीवन में उतारते हैं वे संसार रूपी खेल जीतकर जाते हैं।। ४ ।। १ ।। ४ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।। आसा महला १ छन्द घरु ३।।

हे जीव रूपी काले हिरन, तू इस संसार रूपी वाटिका में क्यों लीन बना हुआ है ? विषय विकारों का फल तो केवल चार दिन के लिए मीठा होता है और उसके बाद दुखदायी बन जाता है। यह फल दुखदायी हो जाता है जिसके लिए तू बहुत अधिक मदमस्त बना हुआ है। प्रभु-नाम के बिना यह बहुत अधिक पाप अर्थात दुख देता है।

ओहु जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए ॥ हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ ॥ १ ॥ भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम ॥ मै गुरु पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम ॥ बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातओ ॥ सूरजु चड़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातओ ॥ जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ ॥ २ ॥ मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले राम ॥ साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम ॥ मछुली विछुंनी नैण रुंनी जालु बधिकि पाइआ ॥ संसारु माइआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइआ ॥ भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि मनहु अंदेसिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ ॥ ३ ॥ नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम ॥ जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम ॥ कोई सहजि जाणै हरि पछाणै सतिगुरू जिनि चेतिआ ॥ बिनु नाम हरि के भरमि भूले पचहि मुगध अचेतिआ ॥ हरि नामु भगति न रिदै साचा से अंति धाही रुंनिआ ॥ सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुंनिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छंत घरु १ ॥

हम घरे साचा सोहिला साचै सबदि सुहाइआ राम ॥ धन पिर मेलु भइआ प्रभि आपि मिलाइआ राम ॥ प्रभि आपि मिलाइआ सचु मंनि वसाइआ कामणि सहजे माती ॥ गुर सबदि सीगारी सचि सवारी सदा रावे रंगि राती ॥ आपु गवाए हरि वरु पाए ता हरि रसु मंनि वसाइआ ॥ कहु नानक गुर सबदि सवारी सफलिउ जनमु सबाइआ ॥ १ ॥ दूजड़ै कामणि भरमि भुली हरि वरु न पाए राम ॥ कामणि गुणु नाही बिरथा जनमु गवाए राम ॥ बिरथा जनमु गवाए मनमुखि इआणी अउगणवंती झूरे ॥ आपणा सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ता पिरु मिलिआ हदूरे ॥ देखि पिरु विगसी अंदरहु सरसी सचै सबदि सुभाए ॥ नानक विणु नावै कामणि भरमि भुलाणी

यह इसी प्रकार से अस्थिर है जैसे समुद्र की लहर और चमकती हुई बिजली अस्थिर और चलायमान होती है। प्रभु के बिना कोई भी रक्षक नहीं है परन्तु उसी को ही तूने भुला दिया है। नानक का यह सत्य कथन है कि हे काले हिरण रूपी मन, तू चेत ले अन्यथा तेरी मौत निश्चित है।। १।। फूलों पर मंडराने वाले भँवरे, तुझे बहुत दुख सहन करना पड़ेगा। मैंने सत्य का विचार करते हुए अपने गुरु (परमात्मा) को पूछा कि यह जीव रूपी भँवरा विषय विकारों के फूल और बेलों में लीन बना हुआ है (इसका क्या हाल होगा)। जब सूर्य निकलेगा अर्थात व्यक्ति की आयु रूपी रात्रि समाप्त हो जाएगी तो इसका यह शरीर गिर पड़ेगा और इसे उस तेल की तरह तपाया जाएगा जिसे कड़ाही में तपाया जाता है। यह प्रभु-नाम के बिना वेताल बना हुआ प्राणी बाँधा हुआ मौत के मार्ग पर चलेगा और चोटें खाएगा। नानक का यह सत्य कथन है कि हे मन रूपी काले भँवरे, तू सावधान हो जा अन्यथा तू मारा जाएगा।। २ ।। हे मेरे परदेसी जीव, तू यहाँ इस संसार में किन जंजालों में फँसा हुआ है। दरअसल यदि सच्चा प्रभु मन में बस जाए तो फिर भला यम के जाल में तू क्यों फंसेगा। जब शिकारी ने जाल को पानी में डाला तो जाल में फंसकर मछली जल से बिछुड़ गई और आँखे भर कर रोने लगी। अब उसका भ्रम दूर हो गया कि यह जल रूपी जो संसार था यह कोरा माया का ही मीठा मोह था अर्थात् इसका सारा आकर्षण झूठा था। हे जीव, तू भक्ति कर, परमात्मा में अपने चित्त को लगा और मन की सभी दुविधाओं को छोड़ दे। नानक का यह सत्य कथन है कि हे मेरे परदेसी मन, तू सावधान हो जा।। ३ ।। जब नदियों के बहाव अलग-अलग हो जाते हैं तो फिर उनका मिलाप बड़े भाग्य और संयोग से ही होता है। इसी प्रकार भ्रमों में भूलकर अर्थात इस संसार के मीठे आकर्षण को विष से भरा हुआ जानने वाला कोई बिरला ही त्यागी पुरुष होता है। यह कोई बिरला ही व्यक्ति तीनों गुणों से ऊपर उठकर सहज भाव में आकर जानता है और प्रभु को पहचानता है। ऐसे व्यक्ति ने ही सच्चे गुरु का सुमिरन किया होता है अन्यथा अनेकों ही मूर्ख लोग प्रभु-नाम से विहीन होकर माया के भ्रम में भटकते हुए मर खप कर ख्वार होते रहते हैं। प्रभु-नाम की आराधना भक्ति और वह सच्चा प्रभु जिनके हृदय में नहीं हैं वे अन्त में विलाप करते हुए रोते हैं। नानक का यह कथन सत्य है कि हे प्रभु, सत्य शब्द के माध्यम से युगों से बिछुड़े हुए हम लोगों को अपने से मिला ले।। ४ ।। १ ।। ५ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।। आसा महला ३ छन्द घरु १।।

हमारे घर में अर्थात हमारे हृदय में सच्चा खुशी का गीत सच्चे शब्द के माध्यम से शोभाएमान बना हुआ है। जीव-स्त्री और प्रियतम का परस्पर मिलाप हो गया है और यह प्रभु ने ही सम्भव किया है। जब प्रभु ने स्वयं मिला दिया और सत्य को मन में बसा दिया तो जीव स्त्री सहज प्रेम में मग्न हो गई। शब्द-गुरु के माध्यम से शरीर को सजाकर सत्याचरण से अपने आप को सँवार कर वह प्रभु के प्रेम में लीन होकर सदैव उसके साथ रमण करती रहती है। जब जीव-स्त्री अपने अभिमान को त्याग देती है तो प्रभु रूपी वर उसे प्राप्त हो जाता है और हरि-रस उसके मन में आ बसता है। हे नानक, तू यह जान ले कि शब्द गुरु के माध्यम से सँवारी हुई जीव स्त्री का सारा जीवन ही सफल हो जाता है। द्वैत-भाव में उलझी हुई कामिनी भ्रमों में भटकती रहती है और प्रभु रूपी वर उसे प्राप्त नहीं होता। ऐसी स्त्री में कोई गुण नहीं होता और वह अपना जीवन व्यर्थ ही गँवा देती है। यह मनमुख और अज्ञानी अपने जन्म को व्यर्थ में ही गँवाकर अपने अवगुणों के कारण पछताती रहती है। सदा सुख की प्राप्ति तो अपने सच्चे गुरु की सेवा में ही मिलती है और वहीं प्रत्यक्ष रूप में प्रियतम प्रभु भी मिल जाता है। प्रियतम को देखकर अन्तर्मन से सरस होकर जीव-स्त्री प्रसन्न हो जाती है और सच्चे शब्द में चलने का उसका स्वाभाविक ही स्वभाव बन जाता है। हे नानक, प्रभु नाम के बिना स्त्री भ्रमों में भटकती रहती है

मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ २ ॥ पिरु संगि कामणि जाणिआ गुरि मेलि मिलाई राम ॥ अंतरि सबदि मिली सहजे तपति बुझाई राम ॥ सबदि तपति बुझाई अंतरि सांति आई सहजे हरि रसु चाखिआ ॥ मिलि प्रीतम अपणे सदा रंगु माणे सचै सबदि सुभाखिआ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थाके भेखी मुकति न पाई ॥ नानक बिनु भगती जगु बउराना सचै सबदि मिलाई ॥ ३ ॥ सा धन मनि अनदु भइआ हरि जीउ मेलि पिआरे राम ॥ सा धन हरि कै रसि रसी गुर कै सबदि अपारे राम ॥ सबदि अपारे मिले पिआरे सदा गुण सारे मनि वसे ॥ सेज सुहावी जा पिरि रावी मिलि प्रीतम अवगण नसे ॥ जितु घरि नामु हरि सदा धिआईऐ सोहिलड़ा जुग चारे ॥ नानक नामि रते सदा अनदु है हरि मिलिआ कारज सारे ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छंत घरु ३ ॥

साजन मेरे प्रीतमहु तुम सह की भगति करेहो ॥ गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो ॥ भगति करहु तुम सहै केरी जो सह पिआरे भावए ॥ आपणा भाणा तुम करहु ता फिरि सह खुसी न आवए ॥ भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा गुर दुआरै को पावए ॥ कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगती चितु लावए ॥ १ ॥ मेरे मन बैरागीआ तूं बैरागु करि किसु दिखावहि ॥ हरि सोहिला तिन्ह सद सदा जो हरि गुण गावहि ॥ करि बैरागु तूं छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणए ॥ जलि थलि महीअलि एको सोई गुरमुखि हुकमु पछाणए ॥ जिनि हुकमु पछाता हरी केरा सोई सरब सुख पावए ॥ इव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु हरि लिव लावए ॥ २ ॥ जह जह मन तूं धावदा तह तह हरि तेरै नाले ॥ मन सिआणप छोडीऐ गुर का सबदु समाले ॥ साथि तेरै सो सहु सदा है इकु खिनु हरि नामु समालहे ॥ जनम जनम के तेरे पाप कटे अंति परम पदु पावहे ॥ साचे नालि तेरा गंढु लागै गुरमुखि सदा समाले ॥ इउ कहै नानकु जह मन तूं धावदा तह हरि तेरै सदा नाले ॥ ३ ॥ सतिगुर मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥ नामु विहाझे नामु लए नामि रहे समाए ॥

परन्तु जब वह प्रियतम प्रभु से मिलती है तभी उसे सुख प्राप्त होता है।। २।। जिस जीव-स्त्री का गुरु के माध्यम से सद्संगति से मिलाप हो गया वह जीव-स्त्री सदैव प्रियतम को अपने साथ ही जानती मानती है। शब्द के माध्यम से वह अन्तर्मन से प्रियतम प्रभु से मिली और सहज शान्ति प्राप्त होने से उसके मन की जलन समाप्त हो गई है। शब्द ने उसकी जलन बुझा दी, उसके अन्तर्मन में शान्ति आ गई और स्वाभाविक रूप से ही उसने हरि-रस का पान कर लिया है। अब वह अपने प्रियतम से मिलकर सदैव आनन्दित बनी रहती है और सत्य शब्द के माध्यम से सुन्दर-सुन्दर बातें करती है। अनेकों पंडित, मौन धारण करने वाले और अनेकों वेषों को धारण करने वाले थक चुके हैं परन्तु ऐसे व्यक्तियों को मुक्ति नहीं मिलती। हे नानक, प्रभु भक्ति के बिना संसार बावरा बना हुआ है; प्रभु से मिलाप सच्चे गुरु के माध्यम से ही होता है।। ३ ।। जिस जीव स्त्री का मेल प्यारे प्रभु से हो गया उसका मन आनन्दित हो उठा है। अपरंपर शब्द-गुरु के माध्यम से वह जीव-स्त्री प्रभु के रस में लीन होकर स्वयं ही रस युक्त बन जाती है। अपार शब्द के माध्यम से उस प्यारे प्रभु से मिलाप होता है और वह सदैव प्रभु के सभी गुणों को मन में बसा लेती है। जब प्रभु से मिलाप हो गया तो उसकी जीवन रूपी सेज शोभायुक्त हो जाती है और प्रियतम प्रभु से मिलकर सभी अवगुण भाग खड़े होते हैं। जिस घर में प्रभु नाम का सदैव सुमिरन किया जाता है वहां चारों युगों में अर्थात सदैव आनन्द के गीतों का उच्चारण होता रहता है। हे नानक नाम में लीन रहने से ही सदैव आनन्द प्राप्त होता है और प्रभु से मिलाप होने पर ही सभी कार्य पूरे होते हैं।। ४ ।। १ ।। ६ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।। आसा महला ३ छन्द घरु ३।।

हे मेरे प्यारे सज्जनों, तुम प्रभु की भक्ति करो। सदैव अपने गुरु की सेवा करो और उससे प्रभु नाम रूपी पदार्थ को प्राप्त करो। तुम प्रभु की वैसी ही भक्ति करो जो उस प्यारे प्रभु को भाती हो। यदि तुम अपना मन का कहा हुआ करने लगोगे तो वह प्रभु प्रसन्न नहीं होगा। भक्ति-भाव का यह मार्ग बड़ा ही कठिन मार्ग है। गुरु के माध्यम से कोई बिरला ही इसे जान पाता है। नानक का कथन है कि जिस पर प्रभु ही कृपा करे वही हरि-भक्ति में मन लगाता है।। १ ।। हे वैराग्य करने वाले मेरे मन, तू अपना वैराग्यभाव किसे दिखाता है। प्रभु उनके लिए सदैव आनन्दायक है जो प्रभु का गुणानुवाद करते हैं। तू वास्तविक वैराग्य धारण कर और इस पाखण्ड को छोड़ दे क्योंकि वह स्वामी प्रभु सब कुछ जानता है। जल, स्थल और धरती-आकाश के बीच केवल एक वही प्रभु है जिसके हुकम को गुरमुख बनकर पहचाना जाता है। जिसने प्रभु के हुकम को पहचान लिया है वही सब प्रकार के सुखों को प्राप्त करता है। इस प्रकार नानक का कथन है कि वास्तव में बैरागी वह है जो सदैव अपनी सुरति को प्रभु में प्रेमपूर्वक लगाए रहता है।। २ ।। हे मन, तू जिधर जिधर भी दौड़ता भागता है वह प्रभु तेरे कार्य-कलापों को देखते हुए तेरे साथ ही बना रहता है। हे मन, तू चतुराईयों को छोड़ दे और गुरु के उपदेश को मन में संभाल अर्थात उस पर आचरण कर। वह प्रभु सदैव तेरे साथ है। तू कम से कम एक क्षण भर के लिए उस प्रभु-नाम की संभाल कर अर्थात उसे याद कर। तेरे जन्म-जन्म के पाप कट जाएंगे और अन्ततः परम पद तुझे प्राप्त हो जाएगा। तू गुरमुख बनकर सदैव उसका सुमिरन कर ताकि सच्चे प्रभु के साथ तेरा संबंध बन सके। नानक का कथन है कि हे मन, तू जहाँ जहाँ भी भागता है प्रभु तेरे साथ रहता है।। ३ ।। सच्चे गुरु से मिलाप होने पर यह दौड़ता हुआ मन थम जाता है और अपने वास्तविक घर अर्थात अपने वास्तविक स्वरूप (ज्योति स्वरूप) में स्थित हो जाता है। अब वह प्रभु-नाम का ही लेन-देन करता है, प्रभु-नाम ही प्राप्त करता है और प्रभु-नाम में ही लीन हो जाता है।

धावतु थंम्हिआ सतिगुरि मिलिऐ दसवा दुआरु पाइआ ॥ तिथै अंम्रित भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु थंम्हि रहाइआ ॥ तह अनेक वाजे सदा अनदु है सचे रहिआ समाए ॥ इउ कहै नानकु सतिगुरि मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥ ४ ॥ मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥ मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥ गुर परसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई ॥ मनि सांति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु ॥ इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु ॥ ५ ॥ मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जाहि ॥ माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि ॥ गारबि लागा जाहि मुगध मन अंति गइआ पछुतावहे ॥ अहंकारु तिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे ॥ मनमुख मुगध चेतहि नाही अगै गइआ पछुतावहे ॥ इउ कहै नानकु मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जावहे ॥ ६ ॥ मन तूं मत माणु करहि जि हउ किछु जाणदा गुरमुखि निमाणा होहु ॥ अंतरि अगिआनु हउ बुधि है सचि सबदि मलु खोहु ॥ होहु निमाणा सतिगुरू अगै मत किछु आपु लखावहे ॥ आपणै अहंकारि जगतु जलिआ मत तूं आपणा आपु गवावहे ॥ सतिगुर कै भाणै करहि कार सतिगुर कै भाणै लागि रहु ॥ इउ कहै नानकु आपु छडि सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु ॥ ७ ॥ धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ महा अनंदु सहजु भइआ मनि तनि सुखु पाइआ ॥ सो सहु चिति आइआ मंनि वसाइआ अवगण सभि विसारे ॥ जा तिसु भाणा गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे ॥ से जन परवाणु होए जिन्ही इकु नामु दिड़िआ दुतीआ भाउ चुकाइआ ॥ इउ कहै नानकु धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ ८ ॥ इकि जंत भरमि भुले तिनि सहि आपि भुलाए ॥ दूजै भाइ फिरहि हउमै करम कमाए ॥ तिनि सहि आपि भुलाए कुमारगि पाए तिन का किछु न वसाई ॥ तिन की गति अविगति तूंहै जाणहि जिनि इह रचन रचाई ॥ हुकमु तेरा खरा भारा गुरमुखि किसै बुझाए ॥ इउ कहै

जब सच्चे गुरु से मिलने पर इसकी भागदौड़ थम जाती है तो सुरति की उच्चतम अवस्था जहाँ मन की उधेड़बुन समाप्त हो जाती है अर्थात दशमू द्वार इसे प्राप्त हो जाता है। उस अवस्था में अमृत रूपी भोजन के स्वाद का अनुभव होता है और स्थिर बनाए रखने वाली संगीत लहरी सुनाई पड़ती रहती है। ऐसी संगीत लहरी के फलस्वरूप संसार भर के लोगों के भटकाव समाप्त हो जाने का अनुभव होता है। उस एकाग्रता में अनेकों वाद्यों का आनन्द बना रहता है और सुनने वाला प्रभु में लीन हुआ प्रतीत होता है। इस प्रकार नानक का कथन है कि सच्चे गुरु के मिलाप से दौड़ता भागता हुआ मन थम जाता है और अपने स्वरूप में स्थित हो जाता है।। ४ ।। हे मन, तेरा मूल स्वरूप ज्योतिमय है। तू अपने मूल को पहचान। हे मन, परमात्मा तेरे साथ ही है, तू गुरु के उपदेश के माध्यम से आनन्दित बना रह। जब तू अपने मूल स्वरूप को पहचान जाएगा तभी तू अपने मालिक को जान पाएगा तथा जीवन मरण के रहस्य का भी तुझे पता लग जाएगा। गुरु की कृपा से यदि तू केवल एक प्रभु को ही जानेगा तो तेरा अन्य किसी के साथ लगाव नहीं रहेगा। व्यक्ति के मन में जब शान्ति आ जाती है तो आनन्द के वाद्य बजने लगते हैं और तभी वह प्रभु-दरबार में स्वीकृत होता है। इस प्रकार नानक का कथन है कि हे मन, तू ज्योति स्वरूप है; तू अपने मूल स्वभाव और स्वरूप को पहचान ले।। ५ ।। हे मन, तू अभिमान से भरा हुआ है और अभिमान से लदा हुआ ही तू चला जाता है। मोहिनी माया ने तुझे मोहित कर रखा है और तू बार-बार योनियों में भटकता है। अभिमान में लगा हुआ यह मूर्ख मन सभी कार्य करता जाता है परन्तु अन्त में यहाँ से जाते समय वह पछताता है। अहंकार और तृष्णा के रोग को लगाकर वह अपना जीवन व्यर्थ गँवा देता है। हे मनमुख, तू मूर्ख है क्योंकि तू प्रभु को याद नहीं करता और आगे जाकर तुझे पछताना पड़ेगा। इस प्रकार नानक का कथन है कि हे मन तू अभिमान से भरा हुआ है और अभिमान ही यहाँ से लादकर तू चला जाता है।। ६ ।। हे मन, तू इस बात का गुमान मत कर कि तू कुछ जानता है; गुरमुख होकर तू विनम्र बन। तेरे अन्दर अज्ञान से उत्पन्न अहंकार वाली बुद्धि है; तू गुरु के सच्चे उपदेश से इसकी नासमझी और अहंकार की मैल दूर कर। सच्चे गुरु के सामने तू विनम्र बन और अपने आप को बड़ा मत बता। अपने अहंकार में ही सारा जगत जल रहा है। कहीं ऐसा न हो कि तू भी अपने आप को नष्ट कर ले। सच्चे गुरु की इच्छा के अनुसार काम करो और सच्चे गुरु के आदेश में ही लीन बने रहो। नानक का कथन है कि हे मन, तू अपने अहंकार को छोड़कर सुख प्राप्त कर और विनम्र बना रह।। ७ ।। वह समय धन्य है जब मुझे सच्चा गुरु मिल गया जिससे मुझे परमात्मा का स्मरण बना रहा। मुझे महा आनन्द तथा सहज प्राप्त हो गया है और मेरे मन तन ने सुख पा लिया है। जब वह स्वामी चित्त में आ बैठा और मन में बस गया तो मेरे समस्त अवगुण नष्ट हो गए हैं। उसकी इच्छा हुई तो मेरे अन्दर भी गुण प्रकट हो उठे तथा सच्चे गुरु ने स्वयं मुझे सँवार दिया है। वे ही जीव स्वीकृत होते हैं जिन्होंने एक प्रभु के ही नाम का सुमिरन किया और किसी अन्य के साथ प्रेम न लगाकर द्वैत-भाव को समाप्त कर दिया है। इस प्रकार नानक का कथन है कि वह समय धन्य है जब मैं सच्चे गुरु से मिला और वह प्रभु मुझे याद आया।। ८ ।। अनेकों जीव भ्रमों में भूले हुए हैं परन्तु उन्हें भी परमात्मा ने स्वयं भुला रखा है। वे द्वैतभाव में भटकते फिरते हैं और अहंकार वाले कर्म करते रहते हैं। उस स्वामी ने उन्हें भी स्वयं ही भ्रमों में डालकर कुमार्ग पर डाला हुआ है; उनके वश में कुछ नहीं है। उनकी अच्छी बुरी गति हे प्रभु, तू ही जानता है क्योंकि तूने ही यह रचना रची है। तेरा हुकम बहुत ही स्पष्ट और कठिन है; किसी गुरमुख को ही उसकी समझ आती है । इस प्रकार

नानकु किआ जंत विचारे जा तुधु भरमि भुलाए ॥ ९ ॥ सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु सुआमी तेरी कुदरति कहणु न जाई ॥ सची तेरी वडिआई जा कउ तुधु मंनि वसाई सदा तेरे गुण गावहे ॥ तेरे गुण गावहि जा तुधु भावहि सचे सिउ चितु लावहे ॥ जिस नो तूं आपे मेलहि सु गुरमुखि रहै समाई ॥ इउ कहै नानकु सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥ १० ॥ २ ॥ ७ ॥ ५ ॥ २ ॥ ७ ॥

रागु आसा छंत महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जीवनो मै जीवनु पाइआ गुरमुखि भाए राम ॥ हरि नामो हरि नामु देवै मेरै प्रानि वसाए राम ॥ हरि हरि नामु मेरै प्रानि वसाए सभु संसा दूखु गवाइआ ॥ अदिसटु अगोचरु गुर बचनि धिआइआ पवित्र परम पदु पाइआ ॥ अनहद धुनि वाजहि नित वाजे गाई सतिगुर बाणी ॥ नानक दाति करी प्रभि दातै जोती जोति समाणी ॥ १ ॥ मनमुखा मनमुखि मुए मेरी करि माइआ राम ॥ खिनु आवै खिनु जावै दुरगंध मड़ै चितु लाइआ राम ॥ लाइआ दुरगंध मड़ै चितु लागा जिउ रंगु कसुंभ दिखाइआ ॥ खिनु पूरबि खिनु पछमि छाए जिउ चकु कुम्हिआरि भवाइआ ॥ दुखु खावहि दुखु संचहि भोगहि दुख की बिरधि वधाई ॥ नानक बिखमु सुहेला तरीऐ जा आवै गुर सरणाई ॥ २ ॥ मेरा ठाकुरो ठाकुरु नीका अगम अथाहा राम ॥ हरि पूजी हरि पूजी चाही मेरे सतिगुर साहा राम ॥ हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै ॥ नीद भूख सभ परहरि तिआगी सुंने सुंनि समावै ॥ वणजारे इक भाती आवहि लाहा हरि नामु लै जाहे ॥ नानक मनु तनु अरपि गुर आगै जिसु प्रापति सो पाए ॥ ३ ॥ रतना रतन पदारथ बहु सागरु भरिआ राम ॥ बाणी गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ राम ॥ गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ निरमोलकु रतनु अपारा ॥ हरि हरि नामु अतोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा ॥ समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई ॥ गुर गोविंदु गुोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ आसा महला ४ ॥ झिमि झिमे झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा राम ॥

नानक का कथन है कि हे प्रभु यदि तू इन्हें भ्रमों में भटका दे तो यह जीव बेचारे क्या कर सकते हैं।। ६ ।। हे मेरे सच्चे साहिब, तेरा बड़प्पन भी सच्चा है। तू परब्रह्म और अनन्त विस्तार वाला मालिक है; तेरी शक्ति का कथन नहीं किया जा सकता। तेरी सच्ची शोभा को तूने स्वयं जिसके मन में बसा दिया है वह सदा ही तेरे गुण गाता रहता है। यदि तुझे भाता है तभी तेरे गुण गाए जाते हैं और सत्य प्रभु में चित्त लगाया जाता है। हे प्रभु, जिसे तू स्वयं मिलाता है वही गुरमुख बनकर तुझमें लीन बना रहता है। नानक का कथन है कि हे मेरे सच्चे साहिब, तेरा बड़प्पन और शोभा भी सच्ची है।। १० ।। २ ।। ७ ।। ५ ।। २ ।। ७।।

रागु आसा छन्द महला ४ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे भाई, मुझे जीवन अर्थात वास्तविक आध्यात्मिक जीवन मिल गया है। गुरमुख बनकर मुझे प्रभु भाने लगा है। गुरु मुझे हर समय प्रभु-नाम दिए जाता है और मेरे प्रत्येक श्वास में उसने हरि-नाम बसा दिया है। जब से मेरे प्राणों में गुरु ने हरि-नाम बसा दिया है मेरा संशय और दुख समाप्त हो गया है। गुरु के उपदेश के कारण मैंने उस अदृष्ट और अगोचर परमात्मा के नाम का सुमिरन करके पवित्र परमपद पा लिया है। जब से मैंने सच्चे गुरु की वाणी का गायन आरम्भ किया है तो ऐसा अनुभव होता है कि अनहद् ध्वनि सदैव मेरे अन्दर गूँजती रहती है। हे नानक, दाता प्रभु ने मुझे यह नाम दिया है कि मेरे प्राण प्रभु की ज्योति में लीन बने रहते हैं।।१।। हे भाई, मनमुख व्यक्ति मेरा-मेरा करते हुए आध्यात्मिक रूप से मर चुके हैं। धन-सम्पदा क्षण भर में आती है और क्षण भर में चली जाती है परन्तु मनमुख व्यक्ति दुर्गन्ध से पूर्ण इस शरीर में ही चित्त लगाए रहते हैं। मनमुख व्यक्ति दुर्गन्ध से भरे हुए शरीर में चित्त लगाए रहते हैं और यह सब कुसुम्भ के फूल के रंग की तरह दिखता तो सुन्दर है परन्तु जल्दी ही नष्ट हो जाने वाला होता है। जैसे परछाईं कभी पूर्व और कभी पश्चिम की तरफ हो जाती है और जैसे कुम्हार अपने चाक को घुमाता रहता है इसी प्रकार यह शारीरिक सुख-दुख क्षणिक है। मनमुख व्यक्ति दुख का ही संचय करते हैं, दुख ही भोगते हैं और अपने जीवन में दुखों की ही वृद्धि करते हैं। हे नानक, जब व्यक्ति गुरु की शरण में आ जाता है तभी यह विषम संसार-सागर सुखपूर्वक तैरा जाता है।। २ ।। मेरा मालिक सुन्दर है परन्तु वह मेरे लिए अगम्य और अथाह समुद्र की तरह है। हे मेरे साहूकार प्रभु, मैं तुझसे हरि-नाम की पूँजी माँगता हूँ। जो व्यक्ति प्रभु-नाम की पूँजी को खोजता है और हरि-नाम का ही कार्य-व्यापार करता है वह सदैव प्रभु के ही गुण गाता रहता है। ऐसे गुणों वाला व्यक्ति भी प्रभु को अच्छा ही लगता है। माया की नींद भूख वह त्याग देता है और सदा उस शून्य प्रभु में समाहित बना रहता है। जब प्रभु-नाम के व्यापारी मिल बैठते हैं तो वे प्रभु-नाम की कमाई करके यहाँ से ले जाते है। हे नानक, तू भी अपना मन अपना शरीर उस गुरु को अर्पण कर दे। यह हरि-नाम का सौदा वही प्राप्त करता है जिसके भाग्य में प्रारम्भ से ही लिखा होता है।। ३ ।। यह मानव-देह एक समुद्र है जो गुण रूपी रत्नों से भरा पड़ा है। जो सच्चे गुरु की वाणी में सदैव अपना मन लगाए रहते हैं उन्हें यह गुण रूपी रत्न मिल जाते हैं। जो व्यक्ति सच्चे गुरु की वाणी में लीन रहते हैं उन्हें अनन्त परमात्मा का अमूल्य नाम-रत्न मिल जाता है। उनके हृदय में तेरी भक्ति के भण्डार भर जाते हैं और वे मनुष्य तेरा अमूल्य नाम-रत्न प्राप्त कर लेते हैं। हे भाई, इस शरीर रूपी समुद्र की जब मैंने खोज पड़ताल कर के देखी तो मुझे एक अनुपम वस्तु दिखाई दी। हे नानक, गुरु ही परमात्मा है और परमात्मा ही गुरु है, इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है।। ४ ।। १ ।। ८ ।। आसा महला ४।। हे प्रभु, रिमझिम रिमझिम रूप में तेरे अमृत की धारा बरस रही है।

गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम ॥ राम नामु पिआरा जगत निसतारा राम नामि वडिआई ॥ कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पारि लघाई ॥ हलति पलति राम नामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी ॥ नानक दाति दइआ करि देवै राम नामि निसतारी ॥ १ ॥ रामो राम नामु जपिआ दुख किलविख नास गवाइआ राम ॥ गुर परचै गुर परचै धिआइआ मै हिरदै रामु रवाइआ राम ॥ रविआ रामु हिरदै परम गति पाई जा गुर सरणाई आए ॥ लोभ बिकार नाव डुबदी निकली जा सतिगुरि नामु दिड़ाए ॥ जीअ दानु गुरि पूरै दीआ राम नामि चितु लाए ॥ आपि क्रिपालु क्रिपा करि देवै नानक गुर सरणाए ॥ २ ॥ बाणी राम नाम सुणी सिधि कारज सभि सुहाए राम ॥ रोमे रोमि रोमि रोमे मै गुरमुखि रामु धिआए राम ॥ राम नामु धिआए पवितु होइ आए तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ रामो रामु रविआ घट अंतरि सभ त्रिसना भूख गवाई ॥ मनु तनु सीतलु सीगारु सभु होआ गुरमति रामु प्रगासा ॥ नानक आपि अनुग्रहु कीआ हम दासनि दासनि दासा ॥ ३ ॥ जिनी रामो राम नामु विसारिआ से मनमुख मूड़ अभागी राम ॥ तिन अंतरे मोहु विआपै खिनु खिनु माइआ लागी राम ॥ माइआ मलु लागी मूड़ भए अभागी जिन राम नामु नह भाइआ ॥ अनेक करम करहि अभिमानी हरि रामो नामु चोराइआ ॥ महा बिखमु जम पंथु दुहेला कालूखत मोह अंधिआरा ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआइआ ता पाए मोख दुआरा ॥ ४ ॥ रामो राम नामु गुरू रामु गुरमुखे जाणै राम ॥ इहु मनूआ खिनु ऊभ पइआली भरमदा इकतु घरि आणै राम ॥ मनु इकतु घरि आणै सभ गति मिति जाणै हरि रामो नामु रसाए ॥ जन की पैज रखै राम नामा प्रहिलाद उधारि तराए ॥ रामो रामु रमो रमु ऊचा गुण कहतिआ अंतु न पाइआ ॥ नानक राम नामु सुणि भीने रामै नामि समाइआ ॥ ५ ॥ जिन अंतरे राम नामु वसै तिन चिंता सभ गवाइआ राम ॥ सभि अरथा सभि धरम मिले मनि चिंदिआ सो फलु पाइआ राम ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ राम नामु धिआइआ राम नाम गुण गाए ॥ दुरमति कबुधि गई सुधि

गुरमुख व्यक्तियों को ऐसी दशा में प्यारा प्रभु प्रत्यक्ष हो जाता है। सभी जीवों को संसार सागर से पार कराने वाला परमात्मा का नाम प्यारा लगने लग जाता है। प्यारे प्रभु के नाम के कारण उनका संसार से उद्धार तो होता ही है साथ ही साथ उन्हें बड़प्पन भी प्राप्त होता है। वास्तव में विकारों के कारण अधोगति को पहुँची हुई कलियुगी अवस्था में प्रभु का नाम जहाज़ का काम देता है और गुरमुख व्यक्ति को पार उतार देता है। परमात्मा के नाम के साथ जुड़े रहने वाले और गुरमुख के रूप में आचरण करने वाले इस लोक और परलोक में सुखी बने रहते हैं। हे नानक, प्रभु दया कर के जिसे अपने नाम का दान देता है उसे नाम में लीन करके संसार सागर से पार कर देता है।। १ ।। राम-नाम का मैंने जाप किया है और परमात्मा ने मेरे दुख और पाप नष्ट कर दिए हैं। गुरु से परिचय अर्थात मेल होने पर मैंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया और प्रभु को हृदय में बसा लिया। जब मैं गुरु की शरण में आया तो मेरे हृदय में प्रभु लीन हो गया और मैंने परम गति प्राप्त कर ली है। जब सच्चे गुरु ने मुझे प्रभु-नाम सुमिरन करवाया तो लोभ और विकारों से भरी हुई मेरी डूबती नाव पानी से बाहर आ गई। जब प्रभु-नाम में मैंने अपने चित्त को लीन कर दिया तो पूर्ण गुरु ने मुझे सच्चे जीवन का दान दे दिया। हे नानक, गुरु की शरण में आने पर कृपालु प्रभु स्वयं ही कृपा करके अपना नाम देता है।। २ ।। जब राम-नाम की वाणी को मैंने सुना तो मेरे सारे काम ठीक हो गए और मुझे सुन्दर लगने लगे। मैंने गुरमुख बनकर रोम-रोम से प्रभु-नाम का सुमिरन किया। जिस प्रभु का कोई रूप और आकार नहीं है उस प्रभु के नाम का सुमिरन करने से जीव पवित्र हो जाते हैं। जब राम ही राम हृदय में घर कर गया तो सभी प्रकार की भूख और प्यास दूर हो गई। गुरमति के माध्यम से जब प्रभु-नाम का प्रकाश मेरे अन्दर हो गया तो मेरा मन-तन शीतल हो गया और मेरा सारा सिंगार भी हो गया। हे नानक, प्रभु ने स्वयं ही कृपा की है नहीं तो हम तो प्रभु के दासों के भी दास हैं।। ३ ।। जिन्होनें राम-नाम को भुला दिया है वे मनमुख, मूढ़ और अभागे हैं। उनके अन्तर्मन का मोह बना रहता है और हर क्षण वे माया में लीन बने रहते हैं। जिन्हें राम-नाम अच्छा नहीं लगा उन्हें माया की मैल लगी हुई है और वे मूर्ख अभागे हैं। ऐसे अहंकारी व्यक्ति अनेकों कर्म करते हैं परन्तु हरि-नाम का मुँह से उच्चारण नहीं करते और इसे छिपाए ही रहते हैं। मोह के घनघोर अँधेरे में होने के कारण उनके लिए मौत का रास्ता बहुत कठिनाई वाला तथा दुखदायी होता है। हे नानक, जब गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है तो व्यक्ति मोक्ष का द्वार पा जाता है।। ४ ।। प्रभु का नाम ही गुरु है और प्रभु को गुरमुख बनकर ही जाना जा सकता है। यह मन क्षण भर में ऊँचा हो जाता है और क्षण भर में ही पाताल की ओर भटकने लगता है। इसे एकता के घर में अर्थात अपने मूल स्वरूप में लाया जाना चाहिए। जब यह अपने एक मूल रूप में स्थित हो जाता है तो यह सब प्रकार की मर्यादाओं को जान जाता है और प्रभु-नाम का ही रस लेता है। प्रभु का नाम अपने सेवक के सम्मान की रक्षा करता है क्योंकि प्रभु ने प्रहलाद जैसे भक्तों को भी बचा लिया। राम का नाम ही ऊँचा है जिसमें व्यक्ति को लीन होना चाहिए; उसके गुणों का कथन करते रहने पर भी उसकी सीमाओं को नही पाया जा सकता। हे नानक, गुरमुख व्यक्ति राम-नाम को सुनकर तृप्त हो जाते हैं और राम नाम में ही लीन हो जाते हैं।। ५ ।। जिनके अन्तर्मन में राम-नाम बसता है उन्होंने अपनी सब चिन्ताओं को दूर कर दिया है। उन्हें सब प्रकार के अर्थ (धन सम्पत्तियां), सभी प्रकार के धर्मों का सार प्राप्त हो जाता है और मनोवांछित फल भी उन्हें प्राप्त हो जाते हैं। जिन्होंने राम-नाम का सुमिरन और गुणानुवाद किया है उन्हें मन चाहा फल प्राप्त होता है। उनकी दुर्मति और कुबुद्धि

होई राम नामि मनु लाए ॥ सफलु जनमु सरीरु सभु होआ जितु राम नामु परगासिआ ॥ नानक हरि भजु सदा दिनु राती गुरमुखि निज घरि वासिआ ॥ ६ ॥ जिन सरधा राम नामि लगी तिन्ह दूजै चितु न लाइआ राम ॥ जे धरती सभ कंचनु करि दीजै बिनु नावै अवरु न भाइआ राम ॥ राम नामु मनि भाइआ परम सुखु पाइआ अंति चलदिआ नालि सखाई ॥ राम नाम धनु पूंजी संची ना डूबै ना जाई ॥ राम नामु इसु जुग महि तुलहा जमकालु नेड़ि न आवै ॥ नानक गुरमुखि रामु पछाता करि किरपा आपि मिलावै ॥ ७ ॥ रामो राम नामु सते सति गुरमुखि जाणिआ राम ॥ सेवको गुर सेवा लागा जिनि मनु तनु अरपि चड़ाइआ राम ॥ मनु तनु अरपिआ बहुतु मनि सरधिआ गुर सेवक भाइ मिलाए ॥ दीना नाथु जीआ का दाता पूरे गुर ते पाए ॥ गुरू सिखु सिखु गुरू है एको गुर उपदेसु चलाए ॥ राम नाम मंतु हिरदै देवै नानक मिलणु सुभाए ॥ ८ ॥ २ ॥ ९ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा छंत महला ४ घरु २ ॥

हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ हरि सेवा भाई परम गति पाई हरि ऊतमु हरि हरि कामु जीउ ॥ हरि ऊतमु कामु जपीऐ हरि नामु हरि जपीऐ असथिरु होवै ॥ जनम मरण दोवै दुख मेटे सहजे ही सुखि सोवै ॥ हरि हरि किरपा धारहु ठाकुर हरि जपीऐ आतम रामु जीउ ॥ हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ १ ॥ हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥ गुरमुखि हरि पड़ीऐ गुरमुखि हरि सुणीऐ हरि जपत सुणत दुखु जाइ जीउ ॥ हरि हरि नामु जपिआ दुखु बिनसिआ हरि नामु परम सुखु पाइआ ॥ सतिगुर गिआनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ हरि हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि धुरि लिखि पाइ जीउ ॥ हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥ २ ॥ हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥ हरि प्रीति लगाई हरि नामु सखाई भ्रमु चूका आवणु जाणु जीउ ॥

शुद्ध हो जाती है जिन्होंने प्रभु नाम को मन में लगा लिया है। जिसके हृदय में राम-नाम का प्रकाश हो गया उसका जीवन, उसका शरीर सभी सफल हो गए। हे नानक, दिन-रात प्रभु का सुमिरन कर और गुरमुख बनकर अपने मूल स्थान में अपना निवास बना।। ६ ।। जिनकी श्रद्धा राम-नाम में लग गई है वे अन्य किसी वस्तु में चित्त नहीं लगाते। यदि धरती को सब सोना बनाकर दे दिया जाए तो भी ऐसे व्यक्तियों को प्रभु-नाम के बिना अन्य कुछ भी नहीं भाता। जब राम-नाम मन को भा जाता है तो परम सुख प्राप्त होता है और यही अन्तिम समय में साथी बनता है। राम-नाम रूपी धन की संचित की हुई पूँजी न तो कहीं डूबती है और न ही कहीं जाती है। राम-नाम ही इस संसार-सागर में बेड़े का काम करता है जिससे यम और आध्यात्मिक मृत्यु पास नहीं आती। हे नानक, जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु को पहचान लिया है उन्हीं पर कृपा करके प्रभु उन्हें अपने से मिला लेता है।। ७ ।। केवल कोई गुरमुख ही राम-नाम को पूर्ण सत्य मानता है। वही सेवक गुरु की सेवा में लगा हुआ समझा जाता है जिसने अपना मन-तन प्रभु के आगे अर्पण कर दिया है। जिसने मन-तन अर्पण कर दिया और जिसके मन में बहुत श्रद्धा पैदा हो गई, गुरु उसके सेवक भाव के कारण ही उसे प्रभु से मिलाता है। दीनों का स्वामी और जीवों को दान देने वाला प्रभु पूर्ण गुरु के माध्यम से ही पाया जाता है। गुरु सिक्ख है और सिक्ख ही गुरु है अर्थात दोनों एक दूसरे में लीन हैं क्योंकि सिक्ख भी उसी उद्देश्य की परम्परा का निर्वाह करता है जिस परंपरा को गुरु ने प्रारम्भ किया है। हे नानक, गुरु ही राम-नाम का मन्त्र हृदय में स्थित करता है जिससे प्रभु-मिलाप सहज हो जाता है।। ८ ।। २ ।। ६ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि आसा छन्द महला ४ घरु २ ।।

कर्ता-प्रभु दुखों का नाश करने वाला पतित पावन और प्रभु का नाम है। जिसे प्रभु की सेवा भा गई उसी ने परम गति पा ली है और यही उसका प्रभु के लिए किया हुआ उत्तम काम है। प्रभु-नाम का सुमिरन ही उत्तम काम है क्योंकि प्रभु के सुमिरन से ही व्यक्ति सब भटकावों से निकल कर स्थिर हो जाता है। उसके जन्म-मरण के दोनों ही दुख मिट जाते हैं और वह सहज भाव में ही सुख की नींद सोता है। हे प्रभु, कृपा करो जिससे मैं प्रभु का गुणानुवाद अन्तर्मन में करता रहूँ। कर्ता-प्रभु ही दुखों का विनाश करने वाला है और प्रभु का नाम ही पतितों को पावन करने वाला है।। १ ।। कलियुग में प्रभु रूपी पदार्थ ही उत्तम है; प्रभु का सुमिरन सच्चे गुरु के अनुसार ही करना चाहिए। गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम का अध्ययन करना चाहिए और प्रभु-नाम को सुना जाना चाहिए क्योंकि प्रभु का सुमिरन करते हुए और उसके नाम को सुनते हुए ही दुख समाप्त हो जाता है। जब प्रभु के नाम का जाप किया गया तो दुख विनष्ट हो गया है और प्रभु-नाम के कारण ही परम-सुख प्राप्त हुआ है। अब सच्चे गुरु का ज्ञान-दीपक हृदय में प्रज्जवलित हो गया है और इसके प्रकाश ने अज्ञान के अँधेरे को नष्ट कर दिया है। प्रभु-नाम की आराधना उन्हीं लोगों ने की है जिनके मस्तक पर प्रभु की ओर से ही ऐसा लिखा हुआ पाया जाता है। कलियुग में प्रभु-नाम रूपी पदार्थ ही उत्तम है जिसका सुमिरन सच्चे गुरु के अनुसार किया जाना चाहिए।।२।। प्रभु जब मन को भा गया तो परम सुख प्राप्त हो गया तथा लाभ रूप में निर्वाण पद

आवण जाणा भ्रमु भउ भागा हरि हरि हरि गुण गाइआ ॥ जनम जनम के किलविख दुख उतरे हरि हरि नामि समाइआ ॥ जिन हरि धिआइआ धुरि भाग लिखि पाइआ तिन सफलु जनमु परवाणु जीउ ॥ हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥ ३ ॥ जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ हरि नामु वडाई हरि नामु सखाई गुर सबदी हरि रस भोग जीउ ॥ हरि रस भोग महा निरजोग वडभागी हरि रसु पाइआ ॥ से धंनु वडे सत पुरखा पूरे जिन गुरमति नामु धिआइआ ॥ जनु नानकु रेणु मंगै पग साधू मनि चूका सोगु विजोगु जीउ ॥ जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १० ॥ आसा महला ४ ॥ सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥ मनि तनि हरि गावहि परम सुखु पावहि हरि हिरदै हरि गुण गिआनु जीउ ॥ गुण गिआनु पदारथु हरि हरि किरतारथु सोभा गुरमुखि होई ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको दूजा अवरु न कोई ॥ हरि हरि लिव लाई हरि नामु सखाई हरि दरगह पावै मानु जीउ ॥ सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥ १ ॥ तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥ पगु चउथा खिसिआ त्रै पग टिकिआ मनि हिरदै क्रोधु जलाइ जीउ ॥ मनि हिरदै क्रोधु महा बिसलोधु निरप धावहि लड़ि दुखु पाइआ ॥ अंतरि ममता रोगु लगाना हउमै अहंकारु वधाइआ ॥ हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि बिखु गुरमति हरि नामि लहि जाइ जीउ ॥ तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥ २ ॥ जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥ तपु तापन तापहि जग पुंन आरंभहि अति किरिआ करम कमाइ जीउ ॥ किरिआ करम कमाइआ पग दुइ खिसकाइआ दुइ पग टिकै टिकाइ जीउ ॥ महा जुध जोध बहु कीन्हे विचि हउमै पचै पचाइ जीउ ॥ दीन दइआलि गुरु साधु मिलाइआ मिलि सतिगुर मलु लहि जाइ जीउ ॥ जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी

अर्थात मोक्ष प्राप्त हो गया है। प्रभु में प्रेम लगने से प्रभु का नाम सहायक सखा बन गया तथा आने जाने (जन्म-मरण) का भ्रमण समाप्त हो गया। आवागमन, भ्रम और भय इत्यादि प्रभु के गुणानुवाद के फलस्वरूप भाग खड़े हुए हैं। जब से प्रभु-नाम में मैं लीन हो गया हूँ मेरे जन्मों-जन्मांतरों के पाप और दुख उतर गए हैं। परमात्मा की ओर से ही जिनके भाग्य में प्रभु सुमिरन लिखा हुआ मिला है उनका जन्म और जीवन सफल और स्वीकृत हो गया है। मन में प्रभु के भा जाने से परम सुख की प्राप्ति हो गई और लाभ में निर्वाण पद प्राप्त हो गया है।। ३ ।। जिन्हें प्रभु मीठा लगता है वे ही लोग वास्तव में प्रधान व्यक्ति है; वे ही लोग उत्तम हैं। वे मानते हैं कि प्रभु-नाम में ही शोभा है, प्रभु-नाम ही सखा है और शब्द-गुरु के माध्यम से ही प्रभु रूपी रस का आनन्द लिया जाता है। प्रभु-रस का आनन्द व्यक्ति को अलिप्त रहने की महादशा प्रदान करता है और भाग्यशाली लोग ही हरि-रस को प्राप्त करते हैं। वे सत्य पुरुष ही पूर्ण हैं, महान हैं और धन्य हैं जिन्होंने गुरु की शिक्षा के अनुसार नाम का सुमिरन किया है। दास नानक साधु पुरुषों की चरण-धूलि माँगता है क्योंकि अब उसका वियोग का दुख चुक गया है। जिन्हें प्रभु मीठा लग गया है वे लोग ही मुख्य व्यक्ति हैं और वे ही प्रभु के उत्तम सेवक जाने जाते हैं।। ४ ।। ३ ।। १० ।। आसा महला ४ ।। सतियुग में सभी लोग संतोषी थे और धर्म तथा प्रभु ध्यान अपने चारों पैरों पर दृढ़ था। मन-तन से लोग प्रभु का गुणानुवाद करते हुए सुख प्राप्त करते थे; उनके हृदय में हरि था और हरि गुणों से पूर्ण ज्ञान था। प्रभु के गुणों का ज्ञान ही उनके लिए धन था और हरि-हरि करके ही वे कृतार्थ होते थे और गुरमुख होना उनके लिए शोभायुक्त था। उनके लिए अन्दर-बाहर केवल एक ही प्रभु था अन्य दूसरा कोई भी नहीं था। वे प्रभु में ही सुरति लगाते, प्रभु-नाम को ही सखा मानते हुए प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त करते थे। सतयुग में सभी लोग संतोषी थे और धर्म तथा प्रभु ध्यान अपने चारों पैरों पर दृढ़ था।। १ ।। त्रेता युग आया तो बाहुबल ने ज़ोर पकड़ा और लोग ब्रह्मचर्य, संयम और कर्मकाण्डों के आधार पर आचरण करने लगे। धर्म का चौथा पैर खिसक गया और वह अब तीन पैरों पर ही आ टिका; लोगों के मन एवं हृदय में क्रोध की अग्नि जलने लगी। अब लोगों के मन में क्रोध एक अत्यन्त भयंकर विष की तरह विद्यमान हो गया। अब राजागण इधर-उधर दौड़-दौड़ कर लड़ने लगे और दुख पाने लगे। लोगों के मन में ममता अर्थात मैं-मेरी का रोग लग गया और इसने अहंकार भाव में वृद्धि कर दी। जब कभी प्रभु ने कृपा की तो गुरु के उपदेश और प्रभु-नाम के कारण यह विष उतर जाता रहा। त्रेता युग आया तो बाहुबल ने जोर पकड़ा और लोग ब्रह्मचर्य, संयम और कर्मकाण्डों के आधार पर आचरण करने लगे।। २ ।। अब द्वापर युग आया। प्रभु ने जगत् को भ्रमों में भटका दिया और गोपियों तथा कृष्ण को उत्पन्न कर दिया। लोग तपस्या करके तपने लगे, यज्ञों को फिर प्रारम्भ किया गया और इस प्रकार अनेकों कर्मकाण्ड किए जाने लगे। कर्मकाण्डी आचरण के कारण धर्म का दूसरा पैर भी खिसक गया और अब धर्म दो पैरों पर ही स्थिर हो गया। योद्धाओं ने अनेकों महायुद्ध किए और अपने अहंकार में ही मरते खपते रहे। दीन-दयालु प्रभु ने साधना करने वाले सच्चे गुरु का मिलाप लोगों से कराया जिसे मिलकर

कान्हु उपाइ जीउ ॥ ३ ॥ कलिजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ गुर सबदु कमाइआ अउखधु हरि पाइआ हरि कीरति हरि सांति पाइ जीउ ॥ हरि कीरति रुति आई हरि नामु वडाई हरि हरि नामु खेतु जमाइआ ॥ कलिजुगि बीजु बीजे बिनु नावै सभु लाहा मूलु गवाइआ ॥ जन नानकि गुरु पूरा पाइआ मनि हिरदै नामु लखाइ जीउ ॥ कलजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥ आसा महला ४ ॥ हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ हरि हरि रसु पाइआ गुरमति हरि धिआइआ धुरि मसतकि भाग पुरान जीउ ॥ धुरि मसतकि भागु हरि नामि सुहागु हरि नामै हरि गुण गाइआ ॥ मसतकि मणी प्रीति बहु प्रगटी हरि नामै हरि सोहाइआ ॥ जोती जोति मिली प्रभु पाइआ मिलि सतिगुर मनूआ मान जीउ ॥ हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ १ ॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ तिन्ह हम चरण सरेवह खिनु खिनु पग धोवह जिन हरि मीठ लगान जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ परम सुख पाइआ मुखि भागा रती चारे ॥ गुरमति हरि गाइआ हरि हारु उरि पाइआ हरि नामा कंठि धारे ॥ सभ एक द्रिसटि समतु करि देखै सभु आतम रामु पछान जीउ ॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ २ ॥ सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥ हरि हरि आराधिआ गुर सबदि विगासिआ बीजा अवरु न कोइ जीउ ॥ अवरु न कोइ हरि अंम्रितु सोइ जिनि पीआ सो बिधि जाणै ॥ धनु धंनु गुरू पूरा प्रभु पाइआ लगि संगति नामु पछाणै ॥ नामो सेवि नामो आराधै बिनु नामै अवरु न कोइ जीउ ॥ सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥ ३ ॥ हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ मोह चीकड़ि फाथे निघरत हम जाते हरि बांह प्रभू पकराइ जीउ ॥ प्रभि बांह पकराई ऊतम मति पाई गुर चरणी जनु

भ्रमों की मैल उतर जाती है। अब द्वापर युग आया। प्रभु ने जगत् को भ्रमों में भटका दिया और गोपियों तथा कृष्ण को उत्पन्न कर दिया।। ३ ।। इसके बाद प्रभु ने कलियुग बनाया जिसमें धर्म के तीन पैर खिसक गए और केवल चौथा एक पैर ही टिका रहा। इसमें शब्द-गुरु के अनुरूप आचरण करने वालों को प्रभु-नाम की औषधि प्राप्त हो गई और प्रभु की कीर्ति करने वालों को प्रभु ने शान्ति प्रदान की है। प्रभु के गुणानुवाद का समय आ गया और प्रभु-नाम को ही बड़ा जाना जाने लगा तथा लोगों ने शरीर रूपी खेत में हरि-नाम को बोया। जो व्यक्ति कलियुग में प्रभु-नाम के अतिक्ति कोई बीज बोता है वह लाभ तो गंवाता ही है साथ ही साथ अपनी मूल पूँजी भी गंवा लेता है। दास नानक ने पूर्ण गुरु प्राप्त किया है जिसने हृदय में ही प्रभु-नाम दिखा दिया है। प्रभु ने कलियुग बनाया जिसमें धर्म के तीन पैर खिसक गए और केवल चौथा एक पैर ही टिका रहा।। ४ ।। ४ ।। ११ ।। आसा महला ४ ।। प्रभु की कीर्ति जिनके मन को भा गई है उन्होंने परमगति प्राप्त कर ली है; उनके तन-मन को प्रभु अच्छा लगने लगा है। गुरमति के माध्यम से जिन्होंने प्रभु की आराधना की उन्होंने हरि-रस को प्राप्त कर लिया और प्रारम्भ से ही माथे पर लिखे हुए लेखों का प्रभाव पूरा हो गया। मस्तक के लेखों के कारण प्रभु-नाम मेरा सुहाग बन गया है और प्रभु-नाम के माध्यम से ही मैंने प्रभु का गुणानुवाद किया है। प्रेम की मणि मेरे मस्तक पर चमक उठी और हरि-नाम के गहने के कारण मेरा माथा सुन्दर लगने लगा है। मेरी आत्मा की ज्योति परमात्मा की ज्योति में लीन हो गई है और सच्चे गुरु के कारण मेरा मन संतुष्ट हो गया तथा मुझे प्रभु प्राप्त हो गया है। प्रभु की कीर्ति जिनके मन को भा गई है उन्होंने परमगति प्राप्त की ली है; उनके तन-मन को प्रभु अच्छा लगने लगा है।। १ ।। प्रभु के यश का गायन करने से परम पद प्राप्त हो गया और ऐसे व्यक्ति उत्तम एवं प्रमुख व्यक्ति बन गए हैं। जिन्हें प्रभु अच्छा लगता है उनके चरणों की हम सेवा करते हैं और प्रत्येक क्षण उनके चरण धोते हैं। प्रभु अच्छा लगने से परम सुख प्राप्त हुआ तथा मुख और भाग्य लाल और सुन्दर हो गए हैं। गुरमति के अनुरूप प्रभु का गायन किया और प्रभु को माला के रूप में गले में पहन लिया; यह सब प्रभु-नाम को कण्ठ में धारण करने से हुआ है। सभी को एक ही दृष्टि से एक जैसा देखना चाहिए और सब में व्याप्त परमात्मा के रूप की पहचान करनी चाहिए। प्रभु के यश का गायन करने से परम पद प्राप्त हो गया और ऐसे व्यक्ति उत्तम एवं प्रमुख व्यक्ति बन गए हैं।। २ ।। सद्संगति मेरे मन हो भा गई है क्योंकि वह प्रभु के रस में रसीली बनी हुई है; संगति में ही हरि रस उपलब्ध होता है। शब्द-गुरु के माध्यम से मेरा मन प्रकाशित हो उठा और मैंने प्रभु का ही सुमिरन किया तथा अन्य कोई बीज नहीं बोया है। हरि -अमृत के अलावा अन्य कोई भी नहीं है और इसे जिसने पीया है वही इसके आनन्द लेने की विधि को जानता है। पूर्ण गुरु रूपी प्रभु धन्य है जिसे मैंने पा लिया है और संगति में उसके नाम को पहचान लिया है। नाम का ही सुमिरन और नाम की ही आराधना की जाती है क्योंकि प्रभु-नाम के बिना अन्य कुछ भी नहीं है। सद्संगति मेरे मन को भा गई है क्योंकि वह प्रभु के रस में रसीली बनी हुई है; संगति में ही हरि रस उपलब्ध होता है।। ३ ।। हे प्रभु, दया धारण करो और हम पत्थरों को पार लगा दो; अपने शब्द के माध्यम से सहज भाव से ही हमें संसार की मोह-माया से निकाल लो। मोह के कीचड़ में फंसे हुए हम डूबते जा रहे हैं;

लागा ॥ हरि हरि नामु जपिआ आराधिआ मुखि मसतकि भागु सभागा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी मनि हरि हरि मीठा लाइ जीउ ॥ हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेव्हु सबदि सुभाइ जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२ ॥ आसा महला ४ ॥ मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ जो जन मरि जीवे तिन्ह अंम्रितु पीवे मनि लागा गुरमति भाउ जीउ ॥ मनि हरि हरि भाउ गुरु करे पसाउ जीवन मुकतु सुखु होई ॥ जीवणि मरणि हरि नामि सुहेले मनि हरि हरि हिरदै सोई ॥ मनि हरि हरि वसिआ गुरमति हरि रसिआ हरि हरि रस गटाक पीआउ जीउ ॥ मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ १ ॥ जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥ हरि अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको इहु जीअड़ा रखिआ न जाइ जीउ ॥ किउ जीउ रखीजै हरि वसतु लोड़ीजै जिस की वसतु सो लै जाइ जीउ ॥ मनमुख करण पलाव करि भरमे सभि अउखध दारू लाइ जीउ ॥ जिस की वसतु प्रभु लए सुआमी जन उबरे सबदु कमाइ जीउ ॥ जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥ २ ॥ धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ हरि सोभा पाई हरि नामि वडिआई हरि दरगह पैधे जानि जीउ ॥ हरि दरगह पैधे हरि नामै सीधे हरि नामै ते सुखु पाइआ ॥ जनम मरण दोवै दुख मेटे हरि रामै नामि समाइआ ॥ हरि जन प्रभु रलि एको होए हरि जन प्रभु एक समानि जीउ ॥ धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ ३ ॥ जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥ गुरु मंत्रु द्रिड़ाए हरि रसकि रसाए हरि अंम्रितु हरि मुखि चोइ जीउ ॥ हरि अंम्रित रसु पाइआ मुआ जीवाइआ फिरि बाहुड़ि मरणु न होई ॥ हरि हरि नामु अमर पदु पाइआ हरि नामि समावै सोई ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है बिनु नावै अवरु न कोइ जीउ ॥ जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १३ ॥

हे प्रभु, हमें अपनी बाँह पकड़ा दो। जब प्रभु ने बाँह पकड़ा दी तो उत्तम मति प्राप्त हो गई और प्रभु का सेवक गुरु के चरणों में आ लगा। उसने प्रभु-नाम का जाप और आराधना की जिससे उसके मुख और माथे पर अच्छा भाग्य लेख लिख दिया गया। दास नानक पर प्रभु ने कृपा की तो प्रभु उसके मन को अच्छा लगने लगा है। हे प्रभु, दया धारण करो और हम पत्थरों को पार लगा दो; अपने शब्द के माध्यम से सहज भाव से ही हमें संसार की मोह माया से निकाल लो।। ४ ।। ५ ।। १२ ।। आसा महला ४ ।। मन में प्रभु-नाम का जाप करने से प्रभु मन को अच्छा लगने लगा और भक्त लोगों के मन में प्रभु के लिए उत्साह पैदा हो गया है। जिस सेवक ने अहंकार भाव की ओर से मरकर जीवन प्राप्त कर लिया है वही अमृत पीता है और गुरु की शिक्षा के माध्यम से उसके हृदय में प्रेम उत्पन्न हुआ है। जब गुरु कृपा करता है तो मन प्रभु-प्रेम में लीन हो जाता है और ऐसा व्यक्ति जीवन में ही मुक्ति का सुख प्राप्त कर लेता है। ऐसे व्यक्ति जीवन और मरण दोनों में ही प्रभु-नाम के माध्यम से सुखी होते हैं और इनके मन एवं हृदय में वह प्रभु ही बसता है। मन में प्रभु बस जाता है और गुरु के उपदेश द्वारा प्रभु मन में रस सहित प्रवेश कर जाता है। अब व्यक्ति हरि-रस को बड़े-बड़े घूँट भर कर पीता चला जाता है। मन में प्रभु-नाम का जाप करने से प्रभु मन को अच्छा लगने लगा और भक्त लोगों के मन में प्रभु के लिए उत्साह पैदा हो गया है।। १ ।। संसार में किसी को भी मरना भाता नहीं और इसीलिए हर कोई अपने आप को मौत से छिपाता फिरता है कि कहीं मुझे यम पकड़ के ही न ले जाए। अन्दर-बाहर वह एक ही प्रभु विद्यमान है परन्तु इन प्राणों को बचाकर नहीं रखा जा सकता। प्राणों को कैसे रखा जा सकता है क्योंकि यह प्रभु की वस्तु है जिसकी ज़रूरत उसको है; जिसकी वस्तु होती है वह उसे ले ही जाता है। मनमुख व्यक्ति दुखी होकर चीख-पुकार करता हुआ इधर उधर भटकता है और सब प्रकार की दवाई-बूटी करता रहता है। यह प्राण जिसकी वस्तु है वह उसे ले लेता है परन्तु सेवक व्यक्ति का उद्धार शब्द के अनुरूप आचरण बनाने से ही होता है। संसार में किसी को भी मरना भाता नहीं और इसीलिए हर कोई अपने आप को मौत से छिपाता फिरता है कि कहीं मुझे यम पकड़ के ही न ले जाए।। २ ।। प्रारम्भ से ही जीव मरना लिखवा कर आता है और गुरमुख यह तथ्य समझ कर शोभायमान बना रहता है। प्रभु के सेवक का प्रभु का ध्यान लगाते रहने से ही उद्धार होता है। प्रभु-नाम के बड़प्पन से परमात्मा की शोभा प्राप्त होती है और ऐसे जीव प्रभु दरबार में आदर के साथ जाते हैं। प्रभु-नाम के माध्यम से ही जीव सिद्धि को प्राप्त होकर अर्थात सफल होकर प्रभु दरबार में प्रवेश करता है और प्रभु-नाम के माध्यम से ही सुख प्राप्त करता है। उसके जन्म मरण के दोनों दुख मिट जाते हैं और वह प्रभु के नाम में ही लीन हो जाता है। प्रभु का सेवक और प्रभु परस्पर मिलकर एक जैसे हो जाते हैं और प्रभु का सेवक प्रभु के समान ही होकर जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है। प्रारम्भ से ही जीव मरना लिखवा कर आता है और गुरमुख यह सत्य समझ कर शोभायमान होता है। प्रभु के सेवक का प्रभु का ध्यान लगाने से ही उद्धार होता है।। ३ ।। संसार पैदा होता है, विनष्ट होता है और समाप्त होता रहता है; यह गुरमुख बनकर ही स्थिर जीवन अर्थात अमर जीवन वाला बनता है। गुरु नाम रूपी मन्त्र पक्की तरह समझाता है, हरि रस को स्वाद ले लेकर आनन्दित होने की कला बताता है और प्रभु-नाम के अमृत को मुँह में चुआता है। हरि रूपी अमृत रस मिलने से मृतक भी आध्यात्मिक तौर पर जीवित हो उठता है और फिर उसका मरना नहीं होता। वह प्रभु-नाम रूपी अमर पद को प्राप्त कर लेता है और प्रभु-नाम में ही लीन हो जाता है। दास नानक का आधार और आसरा केवल एक प्रभु-नाम ही है; नाम के बिना अन्य कुछ भी नही; संसार पैदा होता है, विनष्ट होता है और समाप्त होता रहता है; यह गुरमुख बनकर ही स्थिर जीवन अर्थात अमर जीवन वाला बनता है।। ४ ।। ६ ।। १३ ।।

आसा महला ४ छंत ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ ता की गति कही न जाई अमिति वडिआई मेरा गोविंदु अलख अपार जीउ ॥ गोविंदु अलख अपारु अपरंपरु आपु आपणा जाणै ॥ किआ इह जंत विचारे कहीअहि जो तुधु आखि वखाणै ॥ जिस नो नदरि करहि तूं अपणी सो गुरमुखि करे वीचारु जीउ ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ १ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ घट अंतरि पारब्रहमु परमेसरु ता का अंतु न पाइआ ॥ तिसु रूपु न रेख अदिसटु अगोचरु गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती सहजे नामि समाइ जीउ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ २ ॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ हरि हरि प्रभु एको अवरु न कोई तूं आपे पुरखु सुजानु जीउ ॥ पुरखु सुजानु तूं परधानु तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तेरा सबदु सभु तूंहै वरतहि तूं आपे करहि सु होई ॥ हरि सभ महि रविआ एको सोई गुरमुखि लखिआ हरि नामु जीउ ॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ ३ ॥ सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ तुधु आपे भावै तिंवै चलावहि सभ तेरै सबदि समाइ जीउ ॥ सभ सबदि समावै जां तुधु भावै तेरै सबदि वडिआई ॥ गुरमुखि बुधि पाईऐ आपु गवाईऐ सबदे रहिआ समाई ॥ तेरा सबदु अगोचरु गुरमुखि पाईऐ नानक नामि समाइ जीउ ॥ सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥

हरि अंम्रित भिंने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना ॥

संसार पैदा होता है, विनष्ट होता है और समाप्त होता रहता है; यह गुरमुख बनकर ही स्थिर जीवन अर्थात अमर जीवन वाला बनता है।। ४ ।। ६ ।। १३ ।। आसा महला ४ छन्द ।। मेरा गोविन्द अगम्य, अगोचर, आदि निरंजन निराकार प्रभु है जो सबसे बड़ा है। उसकी गति और शक्ति के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता; मेरे गोविन्द प्रभु का बड़प्पन अपरिमित है क्योंकि वह इतना अपार है कि कुछ भी समझ में नहीं आता। वह अपार, अपरंपर एवं अदृष्ट प्रभु स्वयं ही अपने आप को जानता है। हे प्रभु, इन जीव बेचारों को क्या कहा जाए क्योंकि इनकी इतनी सामर्थ्य नहीं है कि तेरा बखान कर सकें। जिस पर तू अपनी कृपा-दृष्टि करता है वही गुरमुख तेरे बारे में चिन्तन करता है। मेरा गोविन्द अगम्य, अगोचर, आदि निरंजन, निराकार प्रभु है जो सबसे बड़ा है।। १ ।। हे कर्ता प्रभु, तू आदि पुरुष एवं अपरंपर है, तेरा ओर-छोर नहीं जाना जा सकता। तू प्रत्येक शरीर में निरन्तर रूप से विद्यमान है और तू ही सब में समाया हुआ है। तू परब्रह्म परमेश्वर घट-घट में है और तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता। उस प्रभु का न तो कोई रूप-आकार है और वह ऐसा अदृष्ट एवं अगोचर है जिस अदृष्ट को केवल गुरमुख ही देख पाता है। स्वाभाविक रूप से ही प्रभु-नाम में लीन बने रहने से सदा दिन-रात आनन्द बना रहता है। हे कर्ता प्रभु, तू आदि पुरुष अपरंपर है, तेरा ओर छोर नहीं जाना जा सकता है।। २ ।। तू सत्य-स्वरूप सदा अविनाशी परमेश्वर है और हे प्रभु, तू सभी गुणों का भण्डार है। हे प्रभु, तू एक ही है तेरे जैसा अन्य कोई नहीं है और तू स्वयं ही बुद्धिमान पुरुष के रूप में है। हे सुजान पुरुष, तू ही सर्व प्रमुख है तेरे जैसा अन्य कोई नहीं है। तेरा ही हुक्म और तू ही सर्वत्र कार्यशील है तथा जो भी होता है उसे तू ही स्वयं करता है। वह प्रभु एक रूप में सब में रमण कर रहा है और गुरमुख होकर ही उस प्रभु-नाम को देखा अनुभव किया जाता है। तू सत्य-स्वरूप सदा अविनाशी परमेश्वर है और हे प्रभु, तू सभी गुणों का भण्डार है।। ३ ।। हे कर्ता प्रभु, सब कुछ तू ही है, चारों ओर सब तेरा ही बड़प्पन है और जैसा तुझे भाता है तू वैसा ही इस संसार को चलाता है। तुझे जैसा भाता है तू वैसे ही संसार को चलाता है तथा सब तेरे ही हुकम में लीन बने रहते हैं। यदि तुझे भा जाए तो सभी शब्द के माध्यम से तुझमें लीन हो जाते हैं और तेरे शब्द के माध्यम से ही बड़प्पन प्राप्त होता है। गुरमुख बनकर बुद्धि प्राप्त होती है जिससे अपने अहंकार को गवाँया जाता है और जीव शब्द में लीन बना रहता है। तेरा शब्द भी अगोचर है जिसे गुरमुख बनकर प्राप्त किया जाता है और हे नानक, इस प्रकार प्रभु-नाम में समाहित हुआ जाता है। हे कर्ता प्रभु, सब कुछ तू ही है, चारों ओर सब तेरा ही बड़प्पन है और जैसा तुझे भाता है तू वैसा ही इस संसार को चलाता है।। ४ ।। ७ ।। १४ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि   आसा महला ४ छन्द घरु ४।।

प्रभु-नाम के अमृत से मेरी आँखें भीग रही हैं और मेरा मन प्रेम में रंगा हुआ है। मेरे मन को परखने के लिए प्रभु ने उसे कसौटी पर कसा है और यह खरा सोना निकला है। गुरमुख बनकर मेरा मन-तन प्रेम में भीगकर सुर्ख लाल रंग का हो गया है।

जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥ १ ॥ हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥ जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ ॥ जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥ २ ॥ हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥ मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥ मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सतसंगा ॥ ३ ॥ दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १५ ॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥ कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥ १ ॥ पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ॥ हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥ २ ॥ गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे ॥ मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने ॥ हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ॥ ३ ॥ गुर अंम्रित भिंनी देहुरी अंम्रितु बुरके राम राजे ॥ जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंम्रिति छकि छके ॥ गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥ हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥ ४ ॥ ९ ॥ १६ ॥ आसा महला ४ ॥ हरि अंम्रित भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ धनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥ जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥ १ ॥ सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ जो पावहि भांडे

दास नानक प्रभु-नाम की सुगन्धि से सुगन्धित बनाया गया है और इसका जन्म धन्य और सफल हो गया है।। १ ।। नुकीले तीरों जैसी प्रभु-प्रेम की वाणी ने ही मेरे मन को घायल कर दिया है। जिसे प्रियतम के प्रेम की पीड़ा सता रही हो वही जानता है कि उसे कैसे सहन किया जाता है। जो जीवित रहते हुए ही अहंकार के सन्दर्भ में मर जाता है उसे जीवन मुक्त कहा जाता है। हे सच्चे गुरु, सेवक नानक को प्रभु से मिला दे जो कठिनाई से तैरे जा सकने वाले संसार-सागर से पार करा देता है।। २ ।। हम मूर्ख और नासमझ तेरी शरण में आ गए हैं। हे रंगीले मौजी प्रभु, हमें आन मिल। पूर्ण गुरु के माध्यम से प्रभु मिलता है इसीलिए मैं गुरु से केवल एक प्रभु का प्रेम ही माँगता हूँ। सृष्टि की अनेकों लहरों अर्थात स्तरों को बनाने वाले प्रभु का सुमिरन करके शब्द के माध्यम से मेरा मन-तन खिल उठा है। सन्त पुरुषों से मिलाप करके हे नानक, उनके सत्संग में परमात्मा मिल जाता है।। ३ ।। हे राजन प्रभु, तू दीन-दयालु है; मेरी विनती को सुनो। मैं प्रभु-नाम की शरण माँगता हूँ और हे प्रभु, तू इसे मेरे मुख में डाल दे। भक्त-वत्सल होना प्रभु का प्रारम्भ से ही स्वभाव है और वह परमात्मा अपने बिरद की लाज अवश्य रखेगा। संसार सागर से पार उतार देने वाले प्रभु-नाम की शरण में दास नानक आ पड़ा है।। ४ ।। ८ ।। १५ ।। आसा महला ४ ।। गुरमुख बनकर ढूँढते-ढूँढते प्रभु रूपी सज्जन मैंने ढूँढ लिया है। शरीर रूपी सोने के किले में प्रभु का निवास सिद्ध (प्रकट) हुआ है। प्रभु रत्न और हीरे की तरह है जिसने मेरा मन-तन बींध दिया है। परमात्मा की ओर से ही लिखे हुए अच्छे भाग्य के कारण मैंने हरि को पा लिया है और हे नानक, अब मैं उसके रस में सराबोर हो गया हूँ।। १ ।। मैं कमसिन यौवन पूर्ण स्त्री सदैव खड़ी हुई अपने पति के पास जाने का राह पूछती हूँ। हे गुरु जी, मुझे प्रभु का नाम-सुमिरन कराओ अर्थात उसका पता बताओ ताकि मैं उसके मार्ग पर चल सकूँ। मेरे तन-मन का आधार (आसरा) केवल एक प्रभु का नाम ही है जिससे अहंकार रूपी विष जल जाता है। हे प्रभु, दास नानक को वह सच्चा गुरु मिला दे जिसका स्वयं प्रभु से मिलाप हो चुका है।। २ ।। गुरु के माध्यम से, हे प्रभु, मुझे आन मिलो क्योंकि मैं देर से तुमसे बिछुड़ा हुआ हूँ। मेरे मन-तन में बहुत प्रेम उमड़ पड़ा है और मेरी आँखें भी प्रभु के प्रेम में भीग उठी हैं। हे मेरे गुरु, मुझे मेरा प्रियतम प्रभु दिखा दे, उसे मिलकर मेरा चित्त प्रसन्न हो जाएगा। हे नानक, मुझ मूर्ख को परमात्मा ने अपने कार्य में लगा दिया है।। ३ ।। गुरु का शरीर (जीवन) प्रभु के नाम-अमृत के साथ भीगा हुआ है और गुरु अन्य लोगों पर उस अमृत को छिड़कता रहता है। गुरु की वाणी जिनके मन को अच्छी लग गई है वे इसे पीकर प्रभु के नाम-अमृत के द्वारा अघा गए हैं। गुरु के प्रसन्न होने पर मैंने प्रभु को पा लिया है जिससे मेरे आवागमन के धक्के समाप्त हो गए हैं। प्रभु का सेवक प्रभु ही हो जाता है और हे नानक, वास्तव में प्रभु और उसका सेवक एक ही हैं।। ४ ।। ६ ।। १६ ।। आसा महला ४ ।। सच्चे गुरु के पास प्रभु की अमृतमयी भक्ति का भण्डार है। सच्चा गुरु ही सच्चा साहूकार है जो प्रभु-नाम की रास पूँजी अपने सिक्ख को देता है। वह व्यापारी और उसका सौदा दोनों ही धन्य हैं और सफल हैं और गुरु रूपी साहूकार को भी उसकी महानता के लिए शाबास है। दास नानक का कथन है कि गुरु उन्हें ही प्राप्त होता है जिनके मस्तक पर प्रारम्भ से ही ऐसा भाग्य लिखा हुआ होता है।। १ ।। हे प्रभु, तू ही हमारा सच्चा मालिक और साहूकार है बाकी यह सारा जगत तो तेरा ही व्यापारी है। इन शरीर रूपी सभी बर्तनों की रचना तुमने ही की है और हे प्रभु, तुम्हारा ही अंश इनमें रखा हुआ है। बर्तन में जो डाला जाएगा

विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥ २ ॥ हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ॥ हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥ हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥ ३ ॥ जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥ हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए ॥ जनु नानकु दासु हरि कांढिआ हरि पैज रखाए ॥ ४ ॥ १० ॥ १७ ॥ आसा महला ४ ॥ जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥ १ ॥ जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए ॥ मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥ २ ॥ तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाए ॥ जिन्ह तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ॥ जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥ ३ ॥ कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥ हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥ ४ ॥ ११ ॥ १८ ॥ आसा महला ४ ॥ जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥ १ ॥ जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ गुरसिखी सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥ २ ॥ गुरसिखा मनि हरि

उसमें से वही तो निकलेगा अर्थात शरीर के माध्यम से यदि गुणों को सम्भाला जाएगा तो गुण वाले काम होंगे और यदि इसे अवगुणों से भरा जाएगा तो इसमें से बुरे काम ही बाहर निकलेंगे परन्तु हे प्रभु, इस विधान में कोई भला क्या कर सकता है। दास नानक को तो प्रभु ने कृपापूर्वक प्रभु भक्ति का भण्डार दे दिया है।। २ ।। हे प्रभु, तेरे गुणों का हम भला क्या विचार करें तू तो अपरंपर एवं ओर-छोर से परे है। हम तो प्रभु-नाम का गुणानुवाद दिन-रात करते हैं क्योंकि इसी से हमें आशा है और यही हमारा आसरा है। हम मूर्ख तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नही जानते फिर भला कैसे तुम्हारी थाह पा सकते हैं। दास नानक तो प्रभु का दास है और वास्तव में यह तो प्रभु के दासों का भी पानी भरने वाला है।। ३ ।। हे प्रभु, जैसे भी तुझे अच्छा लगे हमारी रक्षा कर क्योंकि हम तो तेरी शरण में आ गए हैं। हम गल्तियां करते हुए दिन-रात कुछ न कुछ बिगाड़ते रहते हैं; हे प्रभु, तू ही हमारी इज्ज़त बचा। हम तेरे बच्चे हैं और तू हमारा गुरु और पिता है; तू हमें बुद्धि देकर समझा दे। सेवक नानक को प्रभु का दास कहा जाता है इसलिए वह प्रभु ही उसकी लाज रखेगा।। ४ ।। १० ।। १७ ।। आसा महला ४ ।। जिनके मस्तक पर शुरु से ही प्रभु ने लेख लिखा है उन्हें प्रभु के समान सच्चा गुरु मिल गया है। अज्ञान का उनका अन्धेरा कट गया है और उनके हृदय में गुरु का दिया हुआ ज्ञान प्रज्जवलित हो उठा है। प्रभु रूपी रत्न पदार्थ अब प्राप्त हो गया है इसलिए अब फिर आना जाना नहीं होता अर्थात जन्म-मरण समाप्त हो गया है। सेवक नानक ने प्रभु नाम की आराधना की है और इस आराधना के फलस्वरूप ही उसे प्रभु मिला है।। १ ।। जिन्होंने ऐसे प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया वे भला इस संसार में क्या लेने आए हैं। यह मानव-जन्म दुर्लभ है परन्तु प्रभु-नाम से विहीन बनकर यह व्यर्थ में ही चला जाता है। अब जब कि योग्य भूमि तैयार है और फिर यदि उसमें प्रभु-नाम का बीज नहीं बोया गया तो हे जीव, तू आगे चलकर भूख लगने पर क्या खाएगा। मनमुख व्यक्ति बार-बार जन्म लेते हैं और हे नानक, ऐसा उसके हुकम में ही होता है।। २ ।। हे प्रभु, एक तू ही है, यह सब कुछ तेरा ही है और सबको तूने ही उत्पन्न किया है। किसी के भी हाथ में कुछ भी नहीं है, सभी उस प्रभु के चलाए हुए ही उसके हुकम में चलते रहते हैं। हे प्यारे प्रभु, जो तेरे मन को भा जाते हैं और जिन्हें तू मिलाता है वे ही तुझसे मिल पाते हैं। दास नानक का सच्चे गुरु से मिलाप हो गया है और प्रभु-नाम ने उसे संसार-सागर से तैराकर पार कर दिया है।।३ ।। कोई गायन के माध्यम से, कोई राग के माध्यम से और कोई विभिन्न प्रकार के अध्ययनों के माध्यम से प्रभु-भक्ति करता है। परन्तु प्रभु इन सब विधियों से प्रसन्न नहीं होता। जिनके अन्तर्मन में कपट और विकार है उनके ऊपर ऊपर से रोने गाने को क्या किया जाए। वह कर्ता प्रभु सब कुछ जानता है। बेशक हम कितना ही अपने हाथों से ढक कर अपने अहंकार के रोग को दबाने का प्रयत्न करें, हे नानक, जिन गुरमुख व्यक्तियों के हृदय शुद्ध हैं वे ही प्रभु भक्ति को प्राप्त करते हैं।। ४ ।। ११ ।। १८ ।। आसा महला ४ ।। जिनके हृदय में प्रभु की प्रीति है वे व्यक्ति समझदार भी हैं और सुन्दर भी हैं। यदि बाहर के क्रियाकलापों में वे कुछ भूल चूक भी कर जाते हैं तो भी वे प्रभु को बहुत भाते हैं। प्रभु के शान्त पुरुषों को प्रभु के अतिरिक्त और कोई भी स्थान नहीं है क्योंकि प्रभु ही सम्मान विहीनों का सम्मान है। हे नानक, सेवकों के लिए भी प्रभु-नाम ही फरियाद सुनाने की एक जगह है और प्रभु के बल के कारण ही वे बलशाली हैं।। १ ।। मेरा सच्चा गुरु जहाँ भी जाकर बैठ जाता है वह स्थान सौन्दर्यपूर्ण बन जाता है। गुरु के सिक्खों ने उस स्थान को प्रयत्नपूर्वक ढूँढ लिया होता है और वे उसकी धूलि को माथे पर लगाते हैं। ऐसे गुरु के सिक्खों की मेहनत सफल हो गई है जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है। जिन्होंने सच्चे गुरु नानक की वन्दना की है उन्हें प्रभु स्वयं पूज्य बना देता है।। २ ।। गुरु के सिक्खों के मन में

प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥ गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥ जन नानक हरि पुंनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी ॥ ३ ॥ गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥ आसा महला ४ ॥ जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु द्रिड़ावै राम राजे ॥ तिस की त्रिसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि क्रिपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥ १ ॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई ॥ जिन्हा नानकु सतिगुरु भेटिआ तिन्हा मिलिआ हरि सोई ॥ २ ॥ जिन्हा अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन्ह हरि रखणहारा राम राजे ॥ तिन्ह की निंदा कोई किआ करे जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥ ३ ॥ हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २० ॥

आसा महला ४ छंत घरु ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥ हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥ रंगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥ गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥ १ ॥ मै प्रेमु न चाखिआ मेरे पिआरे भाउ करे ॥ मनि त्रिसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे ॥ नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरे ॥ भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरि धारे ॥ २ ॥

प्रभु की और हरि नाम की अर्थात हे प्रभु, तेरी ही प्रीति है। जब गुरु को पूर्ण समझकर उसकी सेवा की जाए तो व्यक्ति की मैं और मेरी की भूख दूर हो जाती है। गुरु के सिक्खों की भूख तो मिट ही जाती है, उनके बाद में भी अनेकों उस नाम के रस का पान करते रहते हैं। हे दास नानक, यदि प्रभु-नाम के शुभ पुण्य को शरीर में बोया जाए तो प्रभु के नाम के इस पुण्य फल में फिर कभी भी कमी नहीं आती।। ३ ।। गुरु के उन सिक्खों को मुबारकबाद है जिन्होंने मेरे सच्चे गुरु को अपनी आँखों से देखा है। कोई भी व्यक्ति जो प्रभु-नाम की बात सुनाता है वह गुरु के सिक्खों को बहुत ही अच्छा लगता है। प्रभु के दरबार में गुरु के सिक्खों को ही सम्मान का वस्त्र पहनाया जाता है और ये ऐसे लोग होते हैं जिन पर मेरा सच्चा गुरु प्रसन्न हो चुका होता है। हे नानक, प्रभु का वह सेवक जिसके हृदय में प्रभु का नाम बस जाता है स्वयं प्रभु ही हो जाता है।। ४ ।। १२ ।। १६ ।। आसा महजा ४ ।। जिन्होंने पूर्ण सच्चे गुरु की संगति की है गुरु प्रभु नाम उनके हृदय में पक्का करता है। जो व्यक्ति प्रभु-नाम का सुमिरन करता है उसकी तृष्णा और भूख सब समाप्त हो जाते हैं। जो बार-बार प्रभु नाम का सुमिरन करते हैं यम तो उनके पास भी नहीं आता। हे प्रभु, दास नानक पर तू कृपा कर ताकि यह सदैव प्रभु-नाम का ही सुमिरन करे और प्रभु-नाम के माध्यम से ही दूसरों को भी संसार सागर से पार उतार दे।। १ ।। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का सुमिरन किया है उनको जीवन में कोई भी रुकावट सामने नहीं आती। जिन्होंने समर्थ सच्चे और प्यारे गुरु को प्रसन्न कर लिया है सभी लोग उनकी भी वन्दना करते हैं। जिन्होंने सच्चे और प्यारे गुरु की सेवा की है वे सदैव सुखी बने रहते हैं। हे नानक, जिन्होंने सच्चे गुरु से मिलाप कर लिया उनको तो वास्तव में प्रभु ही मिल गया है।। २ ।। गुरमुख बनकर जिनके अन्तर्मन में प्रभु की प्रीति बनी हुई है उनकी रक्षा करने वाला प्रभु स्वयं है। जिन्हें प्रभु का नाम प्यारा है उनकी भला कोई क्या निन्दा करेगा अर्थात की हुई निन्दा का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। जिनका मन प्रभु के साथ सहमत हो गया है दुष्ट व्यक्ति उनके चारों ओर झख मारते रहतें हैं परन्तु उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाते। सेवक नानक ने प्रभु के नाम का सुमिरन किया है और प्रभु ही उनका रक्षक है।। ३ ।। परमात्मा ने हर युग में भक्तों को पैदा किया है और साथ ही साथ प्रभु उनके सम्मान की भी रक्षा करता रहा है। दुष्ट हिरण्यकश्यप को परमात्मा ने मारा और प्रहलाद को बचा लिया। अहंकारी और निन्दक लोगों की ओर से मुँह मोड़कर प्रभु ने नामदेव को अपने मुख के सामने रखा। सेवक नानक ने भी ऐसे प्रभु की आराधना की है जो अन्त समय में व्यक्ति को मुक्त कर देता है।। ४ ।। १३ ।। २० ।।

आसा महला ४ छन्द घरु ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरे प्यारे परदेसी (भटकने वाले) मन तू अपने वास्तविक घर में वापस आ जा। प्रभु गुरु से मिलाप करो ताकि हे प्यारे प्रभु तू हृदय में बस जाए। हे प्यारे, प्रभु, ने कृपा की है इसलिए मौज करो और आनन्द का उपभोग करो। हे मेरे प्यारे, गुरु नानक ने कृपा की है तो अब हरि से मिलाप हो जाएगा।। १ ।। हे मेरे प्यारे, मैंने पूरी भावना से प्रेम रस को नहीं चखा है इसलिए हे मेरे प्यारे, मन की तृष्णा नहीं बुझ पाई है हालांकि मैं सदैव आशा लगाए हुए हूँ। एक-एक दिन के साथ जवानी गुजरती जा रही है और हे मेरे प्यारे, यम श्वासों को घटाता जा रहा है। परन्तु यदि प्रभु को हृदय में जीव-स्त्री टिकाती है तो वह, हे नानक, सुहागिन है और अच्छे भाग्य की मणि उसके मस्तक पर शोभायमान हो जाती है।। २ ।।

पिर रतिअड़े मैडे लोइण मेरे पिआरे चात्रिक बूंद जिवै ॥ मनु सीतलु होआ मेरे पिआरे हरि बूंद पीवै ॥ तनि बिरहु जगावै मेरे पिआरे नीद न पवै किवै ॥ हरि सजणु लधा मेरे पिआरे नानक गुरू लिवै ॥ ३ ॥ चड़ि चेतु बसंतु मेरे पिआरे भलीअ रुते ॥ पिर बाझड़िअहु मेरे पिआरे आंगणि धूड़ि लुते ॥ मनि आस उडीणी मेरे पिआरे दुइ नैन जुते ॥ गुरु नानकु देखि विगसी मेरे पिआरे जिउ मात सुते ॥ ४ ॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ मेरे पिआरे सतिगुरू सुणाईआ ॥ गुर विटड़िअहु हउ घोली मेरे पिआरे जिनि हरि मेलाईआ ॥ सभि आसा हरि पूरीआ मेरे पिआरे मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ ॥ हरि तुठड़ा मेरे पिआरे जनु नानकु नामि समाइआ ॥ ५ ॥ पिआरे हरि बिनु प्रेमु न खेलसा ॥ किउ पाई गुरु जितु लगि पिआरा देखसा ॥ हरि दातड़े मेलि गुरू मुखि गुरमुखि मेलसा ॥ गुरु नानकु पाइआ मेरे पिआरे धुरि मसतकि लेखु सा ॥ ६ ॥ १४ ॥ २१ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ५ छंत घरु १ ॥

अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम ॥ चाखिअड़ा चाखिअड़ा मै हरि रसु मीठा राम ॥ हरि रसु मीठा मन महि वूठा सतिगुरु तूठा सहजु भइआ ॥ ग्रिहु वसि आइआ मंगलु गाइआ पंच दुसट ओइ भागि गइआ ॥ सीतल आघाणे अंम्रित बाणे साजन संत बसीठा ॥ कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ सो प्रभु नैणी डीठा ॥ १ ॥ सोहिअड़े सोहिअड़े मेरे बंक दुआरे राम ॥ पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम ॥ संत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा ॥ आपे जाञी आपे माञी आपि सुआमी आपि देवा ॥ अपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ॥ कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥ २ ॥ नव निधे नउ निधे मेरे घर महि आई राम ॥ सभु किछु मै सभु किछु पाइआ नामु धिआई राम ॥ नामु धिआई सदा सखाई सहज सुभाई गोविंदा ॥ गणत मिटाई चूकी धाई कदे न विआपै मन चिंदा ॥ गोविंद गाजे अनहद वाजे अचरज सोभ बणाई ॥ कहु नानक पिरु मेरै संगे ता मै नव निधि पाई ॥ ३ ॥ सरसिअड़े

प्रियतम के प्रेम में मेरी आँखे उसकी ओर इस प्रकार प्रेम में रंगकर लगी हुई हैं जैसे पपीहा उत्सुकता से स्वांति बूँद की ओर देखता रहता है। हरि-नाम रूपी स्वांति बूँद को पीकर हे मेरे प्यारे, मेरा मन शीतल हो गया है। तन में विरह की पीड़ा के कारण हे प्यारे, मुझे नींद नहीं आती। हे नानक, गुरु में लौ लगाने के कारण मुझे प्रभु रूपी सज्जन मिल गया है।। ३ ।। चैत्र के महीने में, हे प्यारे, बसन्त की सुखदायक ऋतु आती है परन्तु हे मेरे प्यारे, तुझ प्रियतम के बिना मेरे आँगन में धूल ही उड़ती रहती है। मैं मन में उदास होकर हे मेरे प्यारे, आशा लगाए बैठी हूँ और मेरी दोनो आँखे प्रियतम की प्रतीक्षा कर रही हैं। नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे गुरु नानक को देखकर मेरे प्राण ऐसे खिल उठे हैं जैसे माँ अपने पुत्र को देखकर आनन्दित हो जाती है।। ४ ।। हे मेरे प्यारे, सच्चे गुरु ने मुझे प्रभु की कथा वार्ताएं सुनायी हैं। मैं गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने हे प्यारे, मुझे प्रभु से मिला दिया है। मेरी सभी आशाएं पूर्ण हो गई हैं और मनोवाछिंत फल मुझे प्राप्त हो गया है। प्यारे, प्रभु प्रसन्न हुआ और सेवक नानक प्रभु के नाम में ही लीन हो गया।। ५ ।। हे प्यारे, मुझे प्रभु के बिना किसी से भी प्रेम नही करना है। मैं उस गुरु को कैसे प्राप्त करूँ जिसके साथ लीन होकर प्रियतम प्रभु को मैं देख सकूँ। हे दाता प्रभु, मेरा मिलाप गुरु से करा दे ताकि गुरमुख बनकर मैं तुझसे आ मिलूँ। जब प्रारम्भ से ही मस्तक पर लेख लिखा था उसी के अनुरूप हे प्यारे, मुझे गुरु नानक प्राप्त हुआ है।। ६ ।। १४ ।। २१ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।। रागु आसा महला ५ छन्द घरु १।।

मैंने उस प्रभु का दर्शन कर लिया है इसलिए मेरा अन्तर्मन बहुत अधिक आनन्दित हो उठा है। मीठा हरि-रस मैंने प्रसन्नतापूर्वक पान कर लिया है। प्रभु-नाम का मीठा रस मन में बसने पर सच्चा गुरु प्रसन्न हो उठा है जिससे चारों ओर शान्त भाव एवं सहज पसर गया है। मेरा अपना हृदय अब मेरे वश में आकर मंगल गीत गाने लगा है जिससे काम, क्रोध आदि पाँचों दुष्ट भाग खड़े हुए हैं। मित्र, गुरु की अमृत वाणी के माध्यम से तथा शान्त पुरुषों के माध्यम से मैं शीतल होकर तृप्त हो गया हूँ। नानक का कथन है कि जब से मैंने अपनी हृदय की आँखों से प्रभु को देख लिया है तब से मेरा मन प्रभु के साथ लीन हो गया है।। १ ।। हे प्रभु, मेरे हृदय के सुन्दर द्वार शोभा से युक्त हो गए हैं क्योंकि प्रभु के प्यारे संत उसमें मेहमान बने हुए हैं। जब मैं प्रणाम करके सेवा में लीन हो गई हूँ तो शान्त पुरुषों ने मेरे सभी कार्य सँवार दिए हैं। हे प्रभु, तू स्वयं ही बाराती है और स्वयं ही कन्या पक्ष वाला भी है। हे प्रभु, तू स्वयं ही मालिक है और स्वयं ही इष्टदेव है। हे प्रभु, अपने कार्य को तू सँवार लेता है और स्वयं ही रचना को स्थित कर उसकी संभाल करता है। नानक का कथन है कि वह प्रभु, जब हृदय रूपी घर में आकर बैठ गया तो उसके हृदय के सुन्दर द्वार शोभाएमान हो उठे हैं।। २ ।। हे प्रभु, संसार की सम्पूर्ण निधियां मेरे हृदय में आ टिकी हैं। प्रभु-नाम के सुमिरन के फलस्वरूप मैंने सब कुछ प्राप्त कर लिया है। सदैव मित्र रूप में बने रहने वाले उस प्रभु का सहज स्वाभाविक रूप से सुमिरन करने से प्रभु व्यक्ति का सखा बन जाता है। उसकी सभी गणनाएं समाप्त हो जाती हैं। उसकी दौड़ भाग समाप्त हो जाती है और उसके चित्त में कभी चिन्ता व्याप्त नहीं रहती। जब प्रभु प्रकट होता है तो अनहद् ध्वनि बजने लगती है और आश्चर्यजनक शोभा का दृष्य बन जाता है। नानक का कथन है कि जब प्रभु मेरे साथ होता है तो मुझे संसार की नवनिधियां प्राप्त हो जाती हैं।। ३ ।।

सरसिअड़े मेरे भाई सभ मीता राम ॥ बिखमो बिखमु अखाड़ा मै गुर मिलि जीता राम ॥ गुर मिलि जीता हरि हरि कीता तूटी भीता भरम गड़ा ॥ पाइआ खजाना बहुतु निधाना साणथ मेरी आपि खड़ा ॥ सोई सुगिआना सो परधाना जो प्रभि अपना कीता ॥ कहु नानक जां वलि सुआमी ता सरसे भाई मीता ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा महला ५ ॥ अकथा हरि अकथ कथा किछु जाइ न जाणी राम ॥ सुरि नर सुरि नर मुनि जन सहजि वखाणी राम ॥ सहजे वखाणी अमिउ बाणी चरण कमल रंगु लाइआ ॥ जपि एकु अलखु प्रभु निरंजनु मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ तजि मानु मोहु विकारु दूजा जोती जोति समाणी ॥ बिनवंति नानक गुर प्रसादी सदा हरि रंगु माणी ॥ १ ॥ हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाई राम ॥ वडभागी वडभागी सतसंगति पाई राम ॥ वडभागी पाए नामु धिआए लाथे दूख संतापै ॥ गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे आपु मिटाइआ आपै ॥ करि किरपा मेले प्रभि अपुनै विछुड़ि कतहि न जाई ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा सदा हरि सरणाई ॥ २ ॥ हरि दरे हरि दरि सोहनि तेरे भगत पिआरे राम ॥ वारी तिन वारी जावा सद बलिहारे राम ॥ सद बलिहारे करि नमसकारे जिन भेटत प्रभु जाता ॥ घटि घटि रवि रहिआ सभ थाई पूरन पुरखु बिधाता ॥ गुरु पूरा पाइआ नामु धिआइआ जूऐ जनमु न हारे ॥ बिनवंति नानक सरणि तेरी राखु किरपा धारे ॥ ३ ॥ बेअंता बेअंत गुण तेरे केतक गावा राम ॥ तेरे चरणा तेरे चरण धूड़ि वडभागी पावा राम ॥ हरि धूड़ी न्हाईऐ मैलु गवाईऐ जनम मरण दुख लाथे ॥ अंतरि बाहरि सदा हदूरे परमेसरु प्रभु साथे ॥ मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुड़ि जोनि न पावा ॥ बिनवंति नानक गुर सरणि तरीऐ आपणे प्रभ भावा ॥ ४ ॥ २ ॥

आसा छंत महला ५ घरु ४   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि चरन कमल मनु बेधिआ किछु आन न मीठा राम राजे ॥ मिलि संत संगति आराधिआ हरि घटि घटे डीठा राम राजे ॥ हरि घटि घटे डीठा अंम्रितो वूठा जनम मरन दुख नाठे ॥ गुण निधि गाइआ

मेरे सभी भाई एवं मित्र परम प्रसन्न होकर सरस हो गए हैं। गुरु से मिलकर मैंने जीवन का विषम एवं कठिन मैदान में हो रहा युद्ध जीत लिया है। गुरु को मिलकर मैंने प्रभु की आराधना की है तथा भ्रम के किले और इसकी दीवारों को तोड़कर जीवन युद्ध में जीत प्राप्त कर ली है। मुझे अनेकों भण्डारों की सम्पत्ति प्राप्त हो गई क्योंकि प्रभु स्वंय मेरी सहायता के लिए मेरे साथ आ खड़ा हुआ है। वही श्रेष्ठ ज्ञानवान है, और वही सर्वोच्च है जिसे प्रभु ने अपना बना लिया है।। नानक का कथन है कि जिसकी तरफ प्रभु हो जाता है तो उसके भाई और मित्र सभी प्रसन्न हो उठते हैं।। ४ ।। १ ।। आसा महला ५ ।। प्रभु की कथा का वर्णन नहीं किया जा सकता और न ही इसके बारे में कुछ जाना जा सकता है। देवताओं, मनुष्यों, मुनिजनों ने इसका सहज रूप में बखान किया है। स्थिर होकर वे इसका व्याख्यान करते हैं और अमृत रूपी वाणी का उच्चारण करते हुए प्रभु के चरण-कमलों में प्रीति लगाते हैं। एक ही अदृष्ट एवं पवित्र प्रभु का सुमिरन करने से वे मनोवांछित फल को प्राप्त कर लेते हैं। अभिमान, मोह, द्वैतभाव और विकारों को त्याग देने से प्राणी की ज्योति उस परम ज्योति में लीन हो जाती है। नानक विनती करता है कि गुरु की कृपा से ही व्यक्ति सदैव प्रभु के प्रेम का आनन्द लेता रहता है।। १ ।। प्रभु के शान्त पुरुष और प्रभु के संत जन ही मेरे सज्जन, मित्र एवं सहायक हैं। बड़े भाग्य और बहुत ही बड़े भाग्य से मुझे साधसंगत प्राप्त हुई है। बड़े भाग्य से मुझे साधसंगत प्राप्त प्राप्त हुई है; मैंने नाम का सुमिरन किया है जिससे मेरे दुख एवं संताप नष्ट हो गए हैं। प्रभु ने स्वयं ही मेरा अभिमान मिटा दिया है। प्रभु ने कृपा करके मुझे आप अपने साथ मिला लिया है और अब मैं न तो उससे बिछड़ूगाँ और न ही इधर-उधर जाऊँगा। तेरा दास नानक हे प्रभु, प्रार्थना करता है कि मैं हमेशा तेरी शरण में ही पड़ा रहूँ।। २ ।। हे प्रभु, तेरे प्यारे भक्त सदैव तेरे द्वार पर ही शोभा देते हैं। हे प्रभु, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ और सदा ही बलिहारी जाता हूँ। मैं उन्हें वन्दना करता हूँ जिन्हें मिलने के कारण मैंने प्रभु को जान लिया है। वह पूर्ण विधाता पुरुष हर हृदय और हर स्थान में व्याप्त हो रहा है। जिसने पूर्ण गुरु प्राप्त करके प्रभु-नाम का सुमिरन किया है वह जुए में अपने जीवन को हारता नहीं। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ मुझे बचा ले।। ३ ।। हे प्रभु, तेरे गुण अनन्त हैं; तेरे कितने गुणों का मैं गायन करूँ। हे प्रभु, तेरे चरणों की धूलि मैंने बड़े भाग्य से प्राप्त की है। प्रभु की चरण-धूलि में स्नान करने से मैल समाप्त होती है तथा जन्म-मरण का दुख समाप्त हो जाता है। अन्दर-बाहर वह परमेश्वर प्रभु सदैव प्रत्यक्ष और अंग-संग बना रहता है। प्रभु की कीर्ति का गायन करने से दुख मिट जाता है, जीव का कल्याण हो जाता है तथा व्यक्ति फिर योनियों में नही आता-जाता। नानक का विनम्र कथन है कि गुरु की शरण में आने से व्यक्ति पार उतर जाता है और अपने प्रभु को अच्छा लगने लगता है।। ४ ।। २ ।।

आसा छन्द महला ५ घरु ४   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु के चरण कमलों में मेरा हृदय बिंध गया है इसलिए अब मुझे अन्य कुछ भी मीठा नहीं लगता। साधसंगत में मिल बैठकर मैं प्रभु की आराधना करता हूँ और सभी के हृदय में उस प्रभु का दर्शन करता हूँ। घट-घट में उस प्रभु को देखने से प्रभु रूपी अमृत मेरे हृदय में बरसता है और अब जन्म-मरण का दुख भाग खड़ा हुआ है। गुणों के भण्डार प्रभु का गायन करने से

सभ दूख मिटाइआ हउमै बिनसी गाठे ॥ प्रिउ सहज सुभाई छोडि न जाई मनि लागा रंगु मजीठा ॥ हरि नानक बेधे चरन कमल किछु आन न मीठा ॥ १ ॥ जिउ राती जलि माछुली तिउ राम रसि माते राम राजे ॥ गुर पूरै उपदेसिआ जीवन गति भाते राम राजे ॥ जीवन गति सुआमी अंतरजामी आपि लीए लड़ि लाए ॥ हरि रतन पदारथो परगटो पूरनो छोडि न कतहू जाए ॥ प्रभु सुघरु सरूपु सुजानु सुआमी ता की मिटै न दाते ॥ जल संगि राती माछुली नानक हरि माते ॥ २ ॥ चात्रिकु जाचै बूंद जिउ हरि प्रान अधारा राम राजे ॥ मालु खजीना सुत भ्रात मीत सभहूं ते पिआरा राम राजे ॥ सभहूं ते पिआरा पुरखु निरारा ता की गति नही जाणीऐ ॥ हरि सासि गिरासि न बिसरै कबहूं गुर सबदी रंगु माणीऐ ॥ प्रभु पुरखु जगजीवनो संत रसु पीवनो जपि भरम मोह दुख डारा ॥ चात्रिकु जाचै बूंद जिउ नानक हरि पिआरा ॥ ३ ॥ मिले नराइण आपणे मानोरथो पूरा राम राजे ॥ ढाठी भीति भरंम की भेटत गुरु सूरा राम राजे ॥ पूरन गुर पाए पुरबि लिखाए सभ निधि दीन दइआला ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई सुंदर गुर गोपाला ॥ सूख सहज आनंद घनेरे पतित पावन साधू धूरा ॥ हरि मिले नराइण नानका मानोरथो पूरा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

आसा महला ५ छंत घरु ६ १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन्ह राम सिउ भेटत साध संगात ॥ १ ॥ छंतु ॥ जल दुध निआई रीति अब दुध आच नही मन ऐसी प्रीति हरे ॥ अब उरझिओ अलि कमलेह बासन माहि मगन इकु खिनु भी नाहि टरै ॥ खिनु नाहि टरीऐ प्रीति हरीऐ सीगार हभि रस अरपीऐ ॥ जह दूखु सुणीऐ जम पंथु भणीऐ तह साधसंगि न डरपीऐ ॥ करि कीरति गोविंद गुणीऐ सगल प्राछत दुख हरे ॥ कहु नानक छंत गोविंद हरि के मन हरि सिउ नेहु करेहु ऐसी मन प्रीति हरे ॥ १ ॥ जैसी मछुली नीर इकु खिनु भी ना धीरे मन ऐसा

सभी दुख मिट गए हैं और मेरे अहंकार की गाँठ खुलकर विनष्ट हो गई है। अपने सहज-स्वभाव के अन्तर्गत मेरा प्रियतम मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाता। मेरी आत्मा को मजीठ रंग की पक्की रंगत चढ़ गई है। प्रभु के चरण-कमलों ने नानक के मन को बींध दिया है इससे अब अन्य कुछ भी उसे अच्छा नहीं लगता।। १ ।। जिस प्रकार मछली पानी में लीन बनी रहती है इसी प्रकार मैं प्रभु के नाम रस में मतवाला बना हुआ हूँ। पूर्ण गुरु ने मुझे उपदेश दिया है और मैं जीवन-मुक्ति प्रदान करने वाले प्रभु से प्रेम करता रहता हूँ। हृदय की बातों को जान लेने वाला प्रभु जिसे अपने आँचल के साथ जोड़ लेता है वे जीवन में ही मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। प्रभु रूपी रत्न एवं अमूल्य सम्पत्ति प्रत्यक्ष एवं पूर्ण रूप से विद्यमान है। प्रभु का सेवक उसे छोड़कर कहीं नहीं जाता। परमात्मा सुन्दर, स्वरूपवान, सुजान और सबका मालिक है; उसके दिए हुए दान कभी समाप्त नहीं होते। मछली पानी के साथ अनुरक्त बनी रहती है और ऐसे ही प्रभु में नानक लीन बना हुआ है।। २ ।। जिस प्रकार पपीहा स्वांति बूँद की याचना करता रहता है इसी प्रकार हे प्रभु, तुम भी मेरे प्राणों का आधार हो। वह प्रभु मुझे धन दौलत के भण्डारों, पुत्र, भाई और मित्र आदि सबसे ज्यादा प्यारा लगता है। वह निर्लिप्त एवं निराला प्रभु सबसे प्यारा है उसकी कार्यशैली को कोई भी नहीं समझ सकता। प्रत्येक श्वास् और ग्रास के साथ भी वह प्रभु मुझे विस्मृत नहीं होता; शब्द गुरु के माध्यम से मैं उसकी प्रीति का आनन्द लेता हूँ। बलवान, जगत का जीवन, जिसका नाम-रस सन्त-पुरुष पान करते हैं उस प्रभु का सुमिरन करके भ्रम एवं मोह आदि के दुखों को दूर फेंक दिया जाता है। जिस प्रकार पपीहा स्वांति बूँद को चाहता है, नानक को भी वह प्रभु इसी प्रकार प्यारा लगता है।। ३ ।। अपने प्रभु को मिलने से मेरे सभी उद्देश्य पूर्ण हो गए हैं। शूरवीर गुरु के साथ मिलाप होते ही हे प्रभु, मेरे सामने से भ्रम की दीवार गिर पड़ी है। उस दीन दयालु और सब सम्पदाओं के भण्डार प्रभु के पूर्व लिखे लेखों के फलस्वरूप पूर्ण गुरु प्राप्त होता है। संसार का पालन पोषण करने वाला सुन्दर गुरु परमात्मा ही प्रारम्भ, मध्य और अन्त तक विद्यमान बना रहने वाला है। साधुजनों की चरण-धूलि, सुख, सहज आनन्द, बहुत अधिक मात्रा में देती है और यही पापियों को भी पवित्र कर देती है। नानक को नारायण प्रभु प्राप्त हो गया है और उसका मनोरथ पूरा हो गया है।। ४ ।। १ ।। ३ ।।

आसा महला ५ छन्द घरु ६ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

श्लोक।। जिन पर प्रभु कृपालु हो जाते हैं वे ही बार-बार प्रभु-नाम का जाप करते हैं। हे नानक, साधसंगत से मिलने पर उनकी प्रीति प्रभु के साथ लग जाती है।। १ ।। छन्द ।। हे मन, तू अब ऐसी प्रीति प्रभु से कर जैसी जल और दूध की प्रीति होती है जिससे जल दूध को आँच नहीं लगने देता। भँवरा कमल की सुगन्ध में मस्त होकर उसी में फँसा रहता है और एक क्षण भर के लिए भी उससे दूर नहीं होता। इसी प्रकार प्रभु-प्रीति से क्षण भर के लिए भी नहीं हटा जाना चाहिए और सभी प्रकार के स्वाद और सिंगार उस प्रभु को अर्पण कर दिए जाने चाहिए। दुख के बारे में सुनकर और मौत के कहे जाने वाले मार्ग पर भी साधसंगति में रहते हुए जाने से नहीं डरना चाहिए। प्रभु की कीर्ति का गुणानुवाद किया जाना चाहिए जिससे सभी दुखों और पापों का हरण हो जाए। नानक का कथन है कि हे जीव, प्रभु के गुणों का गायन कर। तू प्रभु के साथ प्रेम कर और अपने हृदय में ऊपर बताए गए के अनुसार प्रीति को पक्का बनाए रख।। १ ।। जैसे मछली को पानी के बिना एक क्षण भर के लिए भी धैर्य नहीं बंधता हे मन, तू इसी प्रकार का

नेहु करेहु ॥ जैसी चात्रिक पिआस खिनु खिनु बूंद चवै बरसु सुहावे मेहु ॥ हरि प्रीति करीजै इहु मनु दीजै अति लाईऐ चितु मुरारी ॥ मानु न कीजै सरणि परीजै दरसन कउ बलिहारी ॥ गुर सुप्रसंने मिलु नाह विछुंने धन देदी साचु सनेहा ॥ कहु नानक छंत अनंत ठाकुर के हरि सिउ कीजै नेहा मन ऐसा नेहु करेहु ॥ २ ॥ चकवी सूर सनेहु चितवै आस घणी कदि दिनीअरु देखीऐ ॥ कोकिल अंब परीति चवै सुहावीआ मन हरि रंगु कीजीऐ ॥ हरि प्रीति करीजै मानु न कीजै इक राती के हभि पाहुणिआ ॥ अब किआ रंगु लाइओ मोहु रचाइओ नागे आवण जावणिआ ॥ थिरु साधू सरणी पड़ीऐ चरणी अब टूटसि मोहु जु कितीऐ ॥ कहु नानक छंत दइआल पुरख के मन हरि लाइ परीति कब दिनीअरु देखीऐ ॥ ३ ॥ निसि कुरंक जैसे नाद सुणि स्रवणी हीउ डिवै मन ऐसी प्रीति कीजै ॥ जैसी तरुणि भतार उरझी पिरहि सिवै इहु मनु लाल दीजै ॥ मनु लालहि दीजै भोग करीजै हभि खुसीआ रंग माणे ॥ पिरु अपना पाइआ रंगु लालु बणाइआ अति मिलिओ मित्र चिराणे ॥ गुरु थीआ साखी ता डिठमु आखी पिर जेहा अवरु न दीसै ॥ कहु नानक छंत दइआल मोहन के मन हरि चरण गहीजै ऐसी मन प्रीति कीजै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ आसा महला ५ ॥ सलोकु ॥ बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि ॥ नानक भेटे साध जब हरि पाइआ मन माहि ॥ १ ॥ छंत ॥ जा कउ खोजहि असंख मुनी अनेक तपे ॥ ब्रहमे कोटि अराधहि गिआनी जाप जपे ॥ जप ताप संजम किरिआ पूजा अनिक सोधन बंदना ॥ करि गवनु बसुधा तीरथह मजनु मिलन कउ निरंजना ॥ मानुख बनु तिनु पसू पंखी सगल तुझहि अराधते ॥ दइआल लाल गोबिंद नानक मिलु साधसंगति होइ गते ॥ १ ॥ कोटि बिसन अवतार संकर जटाधार ॥ चाहहि तुझहि दइआर मनि तनि रुच अपार ॥ अपार अगम गोबिंद ठाकुर सगल पूरक प्रभ धनी ॥ सुर सिध गण गंधरब धिआवहि जख किंनर गुण भनी ॥ कोटि इंद्र अनेक देवा जपत सुआमी जै जै कार ॥ अनाथ नाथ दइआल नानक साधसंगति मिलि उधार ॥ २ ॥ कोटि देवी जा कउ

प्रेम प्रभु से कर। जिस प्रकार पपीहे को प्यास बनी रहती है और वह हर क्षण बोल-बोल के कहता रहता है कि हे सुहावने बादल, तू बरस जा; इसी तरह तू अपने प्रभु से प्रेम कर, उसको अपना मन अर्पण कर दे और अपना चित्त उस प्रभु में लगा। तू अभिमान मत कर और उसकी शरण में आ जा तथा उसके दासों पर कुर्बान हो जा। जब गुरु प्रसन्न हो जाता है और पत्नी अपने प्रभु पति को अपनी प्रीति का सच्चा सन्देश भेजती है तो उसका बिछुड़ा हुआ प्रभु-पति उसे आ मिलता है। नानक का कथन है कि हे मेरे मन, तू अनन्त प्रभु के गीतों का गायन कर, तू उसके साथ प्रेम करके पक्की प्रीति बना ले।। २ ।। चकवी का सूर्य के साथ इतना प्रेम है कि वह चिन्ता करती रहती है कि कब दिन निकले और वह सूर्य को देखे। हे मेरे मन, कोयल का आम के साथ प्रेम है और वह मीठा मीठा गाती रहती है; तू भी इसी प्रकार प्रभु के रंग में रंगा जा। प्रभु के साथ ही प्रेम लगा और इस प्रेम का भी अहंकार न कर क्योंकि सभी एक रात भर के ही मेहमान हैं। यह तू कौन सी रंगरलियों में फंस कर सांसारिक मोह-ममता में लीन हो गया है क्योंकि इस संसार में तो नंगे ही आना होता है और नंगे ही जाना होता है। साधु पुरुषों की शरण में आने से और उनके चरणों में गिरने से तू अनुभव किए जा रहे सांसारिक आकर्षण को मिटा लेगा और स्थिरता का अनुभव करेगा। नानक का कथन है कि हे जीव, तू दयालु प्रभु के कीर्ति-छन्दों का गायन कर और प्रभु के साथ अपना प्रेम लगा अन्यथा तू प्रभु रूपी सूर्य को कब देख पाएगा।। ३ ।। रात के समय में हिरण जैसे नाद को अपने कानों में सुनकर अपना हृदय उसको अर्पण कर देता है, हे मन, तू भी इसी तरह से प्रभु को प्रेम कर। जिस प्रकार अपने पति के प्रेम में लीन युवती अपने प्रियतम की सेवा करती है उसी प्रकार ही तू यह अपना हृदय अपने प्रियतम को दे दे। अपना मन उस प्रियतम को दे दे और उसके साथ आनन्द का उपभोग कर; इस प्रकार तू समस्त खुशियों और रंगों का आनन्द ले सकेगा। मैंने अपने प्रियतम को प्राप्त कर लिया है और मेरे मन तन का रंग भी प्रेम जैसा लाल हो गया है। मैं बहुत ही समय के बाद अपने मित्र प्रभु को मिल सका हूँ। जब गुरु ही मेरा साक्षी अर्थात गवाह बन गया है तो मैंने अपनी आँखों से प्रभु रूपी पति को देख लिया है। मन को मोह लेने वाले स्वामी के गीतों का गायन कर और उसके चरणों को पकड़कर अपने हृदय में उसके साथ पक्का प्रेम कर ले।। ४ ।। १ ।। ४ ।। आसा महला ५ ।। श्लोक ।। मैं वन-वन में प्रभु को खोजती हुई भटकती हूँ और उसे ढूँढ-ढूँढ कर हार गई हूँ। हे नानक, जब मेरा मिलाप साधु पुरुषों से हो गया तो मैंने मन में ही प्रभु को पा लिया है।। १ ।। छन्द ।। जिसको बड़े-बड़े अनेकों तपस्वी और मुनिजन खोजते हैं; करोड़ों ब्रह्मा जिसकी आराधना करते हैं और ज्ञानी पुरुष उसका जाप करते हैं; अनेकों जप, तप, संयम, क्रियाएं, पूजा, शुद्धिकरण और वन्दना जिसके लिए होती है; उस पवित्र प्रभु को ही मिलने के लिए सारी धरती के तीर्थों पर व्यक्ति जाता है और स्नान करता है। हे प्रभु, मनुष्य वन-तृण, पशु-पक्षी सभी तेरी ही आराधना करते हैं। हे दयालु एवं धरती को धारण करने वाले प्रभु, नानक को साधसंगत में ही मिल जा जिससे मुझे मोक्ष प्राप्त हो जाए।। १ ।। करोड़ों ही विष्णु, उसके अवतार, जटाधारी शंकर, हे दयालु अपने तन-मन की पूर्ण रुचि के साथ तेरी चाहना करते रहते हैं। सर्वव्यापक सबका मालिक प्रभु अपार, अगम्य, सृष्टि को धारण करने वाला और सृष्टि का मालिक है। देवता, सिद्धगण, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर इत्यादि तेरी आराधना करते हैं और तेरे गुणों का उच्चारण करते हैं। करोड़ों ही इन्द्र और अनेकों ही देवतागण प्रभु का जाप करते हैं और उसकी जय-जयकार करते हैं। हे नानक, वह प्रभु अनाथों का नाथ है और साधसंगत में मिल बैठकर ही व्यक्ति का उद्धार हो सकता है।। २ ।। करोड़ों ही देवियां और

सेवहि लखिमी अनिक भाति ॥ गुपत प्रगट जा कउ अराधहि पउण पाणी दिनसु राति ॥ नखिअत्र ससीअर सूर धिआवहि बसुध गगना गावए ॥ सगल खाणी सगल बाणी सदा सदा धिआवए ॥ सिम्रिति पुराण चतुर बेदह खटु सासत्र जा कउ जपाति ॥ पतित पावन भगति वछल नानक मिलीऐ संगि साति ॥ ३ ॥ जेती प्रभू जनाई रसना तेत भनी ॥ अनजानत जो सेवै तेती नह जाइ गनी ॥ अविगत अगनत अथाह ठाकुर सगल मंझे बाहरा ॥ सरब जाचिक एकु दाता नह दूरि संगी जाहरा ॥ वसि भगत थीआ मिले जीआ ता की उपमा कित गनी ॥ इहु दानु मानु नानकु पाए सीसु साधह धरि चरनी ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ आसा महला ५ ॥ सलोक ॥ उदमु करहु वडभागीहो सिमरहु हरि हरि राइ ॥ नानक जिसु सिमरत सभ सुख होवहि दूखु दरदु भ्रमु जाइ ॥ १ ॥ छंतु ॥ नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥ भेटत साधू संग जम पुरि नह जाईऐ ॥ दूख दरद न भउ बिआपै नामु सिमरत सद सुखी ॥ सासि सासि अराधि हरि हरि धिआइ सो प्रभु मनि मुखी ॥ क्रिपाल दइआल रसाल गुण निधि करि दइआ सेवा लाईऐ ॥ नानकु पइअंपै चरण जंपै नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥ १ ॥ पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥ भरम अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना ॥ गुर गिआन अंजन प्रभ निरंजन जलि थलि महीअलि पूरिआ ॥ इक निमख जा कै रिदै वसिआ मिटे तिसहि विसूरिआ ॥ अगाधि बोध समरथ सुआमी सरब का भउ भंजना ॥ नानकु पइअंपै चरण जंपै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥ २ ॥ ओट गही गोपाल दइआल क्रिपा निधे ॥ मोहि आसर तुअ चरन तुमारी सरनि सिधे ॥ हरि चरन कारन करन सुआमी पतित उधरन हरि हरे ॥ सागर संसार भव उतार नामु सिमरत बहु तरे ॥ आदि अंति बेअंत खोजहि सुनी उधरन संतसंग बिधे ॥ नानकु पइअंपै चरन जंपै ओट गही गोपाल दइआल क्रिपा निधे ॥ ३ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥ जह जह संत अराधहि तह तह प्रगटाइआ ॥ प्रभि आपि लीए समाइ सहजि सुभाइ भगत कारज सारिआ ॥ आनंद हरि जस महा मंगल सरब

लक्ष्मी अनेकों प्रकार से उसकी सेवा करती हैं। प्रत्यक्ष और प्रछन्न सभी तथा पवन, पानी दिन और रात उसकी ही आराधना करते हैं। नक्षत्र, चन्द्र, सूर्य, धरती, आकाश सभी उसका गायन करते हैं। समस्त जीवन स्रोत, समस्त वाणियां सदा उसी की आराधना करते हैं। स्मृति, पुराण, चारों वेद, छः शास्त्र जिसका सुमिरन करते हैं वह पतित पावन, भक्त वत्सल प्रभु हे नानक, सत्संग के माध्यम से ही मिलता है।। ३ ।। जितनी सृष्टि प्रभु ने हमारे ज्ञान में ला दी है, यह जीभ उतना ही वर्णन कर देती है। इसके अतिरिक्त जो हमारी जानकारी में नहीं है और उस प्रभु की सेवा करती है वह हमसे गिनी नहीं जा सकती। वह ठाकुर अव्यक्त, अगणित, अथाह, सबमें व्याप्त परन्तु फिर भी सबसे परे है। सभी याचक हैं और वह केवल एक ही दाता है जो कहीं दूर नहीं है, अंग संग ही प्रत्यक्ष रूप से बना रहता है। वह भक्तों के वश में आता है और जो जीव उसे मिल चुके हैं उनकी महिमा का भला क्या बखान किया जाए। परमात्मा करे नानक को यह दान और सम्मान मिल जाए कि वह अपना मस्तक साधना करने वाले साधु पुरुषों के चरणों में धर सके।। ४ ।। २ ।। ५।। आसा महला ५।। श्लोक ।। हे भाग्यशाली लोगो, थोड़ी मेहनत करो और उस सम्राट प्रभु का सुमिरन करो। हे नानक, उसका सुमिरन करो जिसका सुमिरन करने से सभी सुख प्राप्त होते हैं और सभी दुख, दर्द, भ्रम समाप्त हो जाते हैं।। १ ।। छन्द।। सृष्टि को धारण करने वाले परमात्मा के नाम का सुमिरन करने में आलस्य नहीं किया जाना चाहिए। साधु पुरुषों की संगति करने से यमलोक में नही जाना पड़ता। नाम सुमिरन करने से सदैव सुख मिलता है तथा दुख दर्द और भय नहीं सताता। हे प्राणी, प्रत्येक श्वास् के साथ तू मन और मुख से उस हरि का सुमिरन करो। वह प्रभु कृपालु, दयालु, रसों का एवं गुणों का भण्डार है; वही जब दया करता है तो जीव उसकी सेवा में लग जाता है। नानक का कथन है कि उस प्रभु के चरणों का ध्यान-सुमिरन तथा प्रभु के नाम का सुमिरन करने में आलस्य नहीं की जानी चाहिए।। १ ।। उस निरंजन प्रभु का नाम पवित्र है और पतितों को भी पवित्र करने वाला है; गुरु द्वारा दिए गए अंजन से भ्रमों के अँधेरे का विनाश हो जाता है। गुरु का ज्ञान रूपी अंजन और निरंजन प्रभु जल, स्थल और अन्तरिक्ष में पूर्ण रूप से व्याप्त है। एक क्षण भर के लिए भी जिसके हृदय में प्रभु बस गया उसके सभी शोक-संताप मिट जाते हैं। वह समर्थ स्वामी अनन्त ज्ञान वाला और सब के भय को नष्ट करने वाला है। नानक का कथन है कि उसके चरणों का और उस पवित्र तथा पतितों को भी पवित्र करने वाले नाम का जाप करना चाहिए।। २ ।। मैंने उस कृपानिधान दयालु प्रभु की शरण पकड़ ली है। मुझे तेरे ही चरणों का आसरा है और तेरी ही शरण में मेरे जीवन की सफलता निहित है। स्वामी प्रभु के चरण ही सब कुछ करने कराने वाले और पतितों का उद्धार करने वाले हैं। संसार-सागर से पार उतारने वाला प्रभु का नाम ही है जिसका सुमिरन करके अनेकों पार उतर गए हैं। शुरू से लेकर अन्त तक तुझे अनन्त लोग खोजते रहे हैं लेकिन मैंने सुना है कि पार उतरने की विधि सद्संगति ही है। नानक का कथन है कि प्रभु के चरणों का जाप करते हुए मैंने उस दयालु कृपानिधि की शरण पकड़ ली है।। ३ ।। भक्तों को प्यार करने का अपना बिरद प्रभु ने स्वयं ही बनाया है। संत लोग जहाँ-जहाँ उसकी आराधना करते हैं वहीं-वहीं वह प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हो जाता है। प्रभु सबको ही अपने में स्वाभाविक रूप में समाहित कर लेता है और भक्तजनों के कार्य पूरे कर देता है। अब सब ओर आनन्द, हरि-यश और मंगल ही मंगल हो जाता है

दूख विसारिआ ॥ चमतकार प्रगासु दह दिस एकु तह द्रिसटाइआ ॥ नानकु पइअंपै चरण जंपै भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ आसा महला ५ ॥ थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ जा कै ग्रिहि हरि नाहु सु सद ही रावए ॥ अविनासी अविगतु सो प्रभु सदा नवतनु निरमला ॥ नह दूरि सदा हदूरि ठाकुरु दह दिस पूरनु सद सदा ॥ प्रानपति गति मति जा ते प्रिअ प्रीति प्रीतमु भावए ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ १ ॥ जा कउ राम भतारु ता कै अनदु घणा ॥ सुखवंती सा नारि सोभा पूरि बणा ॥ माणु महतु कलिआणु हरि जसु संगि सुरजनु सो प्रभू ॥ सरब सिधि नव निधि तितु ग्रिहि नही ऊना सभु कछू ॥ मधुर बानी पिरहि मानी थिरु सोहागु ता का बणा ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा को रामु भतारु ता कै अनदु घणा ॥ २ ॥ आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥ पीसउ चरण पखारि आपु तिआगीऐ ॥ तजि आपु मिटै संतापु आपु नह जाणाईऐ ॥ सरणि गहीजै मानि लीजै करे सो सुखु पाईऐ ॥ करि दास दासी तजि उदासी कर जोड़ि दिनु रैणि जागीऐ ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥ ३ ॥ जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥ ता की पूरन आस जिन्ह साधसंगु पाइआ ॥ साधसंगि हरि कै रंगि गोबिंद सिमरण लागिआ ॥ भरमु मोहु विकारु दूजा सगल तिनहि तिआगिआ ॥ मनि सांति सहजु सुभाउ वूठा अनद मंगल गुण गाइआ ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥ आसा महला ५ ॥ सलोकु ॥ हरि हरि नामु जपंतिआ कछु न कहै जमकालु ॥ नानक मनु तनु सुखी होइ अंते मिलै गोपालु ॥ १ ॥ छंत ॥ मिलउ संतन कै संगि मोहि उधारि लेहु ॥ बिनउ करउ कर जोड़ि हरि हरि नामु देहु ॥ हरि नामु मागउ चरण लागउ मानु तिआगउ तुम्ह दइआ ॥ कतहूं न धावउ सरणि पावउ करुणा मै प्रभ करि मइआ ॥ समरथ अगथ अपार निरमल सुणहु सुआमी बिनउ एहु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु

और सभी दुख भूल जाते हैं। दसों दिशाओं में प्रकाशित होने का चमत्कार यह है कि एक प्रभु ही चारों ओर दृष्टमान होता है। नानक का कथन है कि उसके चरणों का जाप करना चाहिए और भक्त-वत्सल होने का अपना बिरद प्रभु ने स्वयं ही बनाया है।। ४ ।। ३ ।। ६ ।। आसा महला ५ ।। शान्त पुरुषों का सुहाग (प्रभु) सदैव बना ही रहता है क्योंकि वह न तो कभी मरता है और न ही कहीं आता जाता है। जिसके घर में प्रभु जैसा पति हो वह सदा ही उसके साथ रमण करती है। वह अविनाशी अव्यक्त प्रभु सदैव नूतन और निर्मल बना रहता है। वह स्वामी दूर नहीं सदा सामने ही बना रहता है तथा सदैव दसों दिशाओं में पूर्ण रूप से व्याप्त है। वह प्राणों का मालिक है जिससे मुक्ति और बुद्धि प्राप्त होती है; प्रियतमा का प्रेम प्रियतम को अच्छा लगता है। नानक का कथन है कि गुरु के उपदेश के माध्यम से उसे जाना जाता है और शान्त पुरुषों का स्थिर बना रहने वाला स्वभाव न कभी मरता है और न कभी आता जाता है।। १ ।। प्रभु जिसका पति है उसका गहन् आनन्द बना ही रहता है। वही स्त्री सुख प्राप्त करने वाली है और उसी की पूरी शोभा बनी रहती है। उसी को सम्मान, बड़ाई, कुशल क्षेम और प्रभु का यश मिलता है क्योंकि वह प्रभु पति सदैव उसके साथ बना रहता है। उसके पास सर्व सिद्धियां और नवनिधियां घर में बनी रहती हैं तथा उसे कोई भी कमी न होते हुए सब कुछ उसके पास रहता है। प्रियतम द्वारा सम्मान दिए जाने के कारण उसकी वाणी मधुर हो जाती है और उसका स्वभाव स्थिर बना रहता है। नानक का कथन है कि गुरु के उपदेश के माध्यम से ही उसे जाना जाता है तथा प्रभु जिसका पति है उसका आनन्द अत्यन्त गहन् है।। २ ।। हे सखी, आओ चलें और शान्त पुरुषों की सेवा में लग जाएं। पिसान पीसें, उनके चरणों को धोएं तथा अपने अहंकार को त्याग दें; अपने अहंकार को त्यागने से आन्तरिक कष्ट, संताप मिट जाता है और फिर व्यक्ति अपने आप को जनवाता नहीं है। प्रभु की शरण पकड़ ली जाए, उसकी आज्ञा को मान लिया जाए और जो वह करता है उसी में सुख प्राप्त किया जाए। आओ प्रभु के दास की सेवा की जाए, चिन्ता को छोड़ा जाए और दोनों हाथ जोड़कर दिन-रात सावधान रहा जाए। नानक उसी का बखान कर रहा है जो उसने गुरु के उपदेश के माध्यम से जाना है। इसीलिए हे सखी आओ हम लोग शान्त पुरुषों की सेवा में लीन हो जाएं।। ३ ।। जिसके मस्तक पर भाग्य लेख है वही सेवा करता है। जिसने साधसंगत प्राप्त कर ली है उसकी आशाएं पूर्ण हो जाती हैं। साधसंगत में व्यक्ति प्रभु की प्रीति में लीन हो जाता है और प्रभु का सुमिरन करने लग जाता है। भ्रम, मोह, विकार, द्वैतभाव आदि सब कुछ ऐसा व्यक्ति त्याग देता है। शान्ति, सहज अच्छी भावना उसके मन में आ बसती है और वह आनन्दित होकर प्रभु का गुणानुवाद करता है। गुरु के उपदेश के माध्यम से ही जाने गए का बखान नानक करता है कि जिसके मस्तक पर भाग्य लेख लिखा है वही सेवा कार्य में लीन होता है।।४।।४।।७।। आसा महला ५ ।। श्लोक।। प्रभु नाम का सुमिरन करते रहने से यम और काल कुछ नहीं कहते। हे नानक, सुमिरन से मन तन सुखी होता है और अन्ततः प्रभु से मिलाप हो जाता है।।१।। छन्द।। हे प्रभु, शान्त पुरुषों की संगति में मुझसे आ मिलो और मेरा उद्धार कर दो। हे प्रभु, मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि मुझे अपने नाम का दान दे। हे प्रभु, यदि तुम्हारी दया हो तभी मैं तुम्हारा नाम माँगता हूँ, तुम्हारे चरणों में आता हूँ और अपने अभिमान का त्याग करता हूँ। हे करुणामय प्रभु, कृपा करो, मुझे और न दौड़ाओ तथा मुझे अपनी शरण में डाल लो। हे समर्थ, अकथनीय, अपार एवं निर्मल स्वामी, मेरी यह प्रार्थना सुनो। नानक हाथ जोड़कर तुझसे यह दान माँगता है कि हे प्रभु, मेरा जन्म-मरण समाप्त कर दो

॥ १ ॥ अपराधी मतिहीनु निरगुनु अनाथु नीचु ॥ सठ कठोरु कुलहीनु बिआपत मोह कीचु ॥ मल भरम करम अहं ममता मरणु चीति न आवए ॥ बनिता बिनोद अनंद माइआ अगिआनता लपटावए ॥ खिसै जोबनु बधै जरूआ दिन निहारे संगि मीचु ॥ बिनवंति नानक आस तेरी सरणि साधू राखु नीचु ॥ २ ॥ भरमे जनम अनेक संकट महा जोन ॥ लपटि रहिओ तिह संगि मीठे भोग सोन ॥ भ्रमत भार अगनत आइओ बहु प्रदेसह धाइओ ॥ अब ओट धारी प्रभ मुरारी सरब सुख हरि नाइओ ॥ राखनहारे प्रभ पिआरे मुझ ते कछू न होआ होन ॥ सूख सहज आनंद नानक क्रिपा तेरी तरै भउन ॥ ३ ॥ नाम धारीक उधारे भगतह संसा कउन ॥ जेन केन परकारे हरि हरि जसु सुनहु स्रवन ॥ सुनि स्रवन बानी पुरख गिआनी मनि निधाना पावहे ॥ हरि रंगि राते प्रभ बिधाते राम के गुण गावहे ॥ बसुध कागद बनराज कलमा लिखण कउ जे होइ पवन ॥ बेअंत अंतु न जाइ पाइआ गही नानक चरण सरन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥ आसा महला ५ ॥ पुरख पते भगवान ता की सरणि गही ॥ निरभउ भए परान चिंता सगल लही ॥ मात पिता सुत मीत सुरिजन इसट बंधप जाणिआ ॥ गहि कंठि लाइआ गुरि मिलाइआ जसु बिमल संत वखाणिआ ॥ बेअंत गुण अनेक महिमा कीमति कछू न जाइ कही ॥ प्रभ एक अनिक अलख ठाकुर ओट नानक तिसु गही ॥ १ ॥ अम्रित बनु संसारु सहाई आपि भए ॥ राम नामु उर हारु बिखु के दिवस गए ॥ गतु भरम मोह बिकार बिनसे जोनि आवण सभ रहे ॥ अगनि सागर भए सीतल साध अंचल गहि रहे ॥ गोविंद गुपाल दइआल सम्रिथ बोलि साधू हरि जै जए ॥ नानक नामु धिआइ पूरन साधसंगि पाई परम गते ॥ २ ॥ जह देखउ तह संगि एको रवि रहिआ ॥ घट घट वासी आपि विरलै किनै लहिआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि पूरन कीट हसति समानिआ ॥ आदि अंते मधि सोई गुर प्रसादी जानिआ ॥ ब्रहमु पसरिआ ब्रहम लीला गोविंद गुण निधि जनि कहिआ ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी हरि एकु नानक रवि रहिआ ॥ ३ ॥ दिनु रैणि सुहावड़ी आई सिमरत

।। १ ।। हे प्रभु, मैं अपराधी हूँ, मतिहीन हूँ, गुणों से विहीन, अनाथ एवं नीच हूँ। मैं मूर्ख कठोर, निर्दयी, कुलहीन वह व्यक्ति हूँ जिस पर मोह का कीचड़ पूर्ण रूप से प्रभावशाली है। भ्रम रूपी कर्मों की मैल और अहंकारयुक्त ममत्व के कारण मुझे मरना बिल्कुल ही भूला हुआ है। मैं स्त्रियों के साथ रंगरलियों तथा मायावी सुखों में अज्ञानी होने के कारण लिपटा हुआ हूँ। मेरी जवानी खिसकती जा रही है और वृद्धावस्था मेरी ओर बढ़ती चली आ रही है; उसके साथ-साथ मौत उस दिन को देख रही है जिस दिन मुझे मरना है। नानक की यह विनती है कि हे प्रभु, मुझे केवल तुम्हारा ही आसरा है, मुझ नीच को साधु पुरुषों की संगति में बनाए रख।। २ ।। मैं अनेक जन्मों तक भटकता रहा हूँ और योनियों के मैंने विकराल संकट झेले हैं। स्वर्ण के अर्थात धन-सम्पदा के भोगों को मीठा मानते हुए मैं उनके साथ लिपटा रहा हूँ। अनगिनत पापों के बोझ को लादकर मैं भटकता रहा हूँ और अनेकों देशों में भागा दौड़ा फिरता रहा हूँ। अब जबकि मैंने प्रभु की शरण गृहण कर ली है तो प्रभु-नाम में मुझे सभी सुख मिल गए हैं। हे प्यारे रक्षक प्रभु, मुझसे अभी तक न तो कुछ हुआ है और न ही आगे कुछ होगा। नानक पर हे प्रभु, तेरी कृपा होने से उसे सुख, सहज-भाव एवं आनन्द प्राप्त हुआ है और तेरी कृपा से ही वह इस संसार को तैर गया है।। ३ ।। हे प्रभु, जिन भक्तों ने तेरे नाम को थोड़ा सा भी माना है तूने संसार-सागर से उन्हें पार कर दिया है। फिर भला तेरे भक्तों को पार उतरने में क्या संशय हो सकता है। जैसे भी हो सके हे जीव, तू उस प्रभु का यश कानों से सुन। हे ज्ञानी पुरुष, तू कानों से उस प्रभु की वाणी को सुन और अपने अन्तर्मन में ही निधियों के भण्डार को प्राप्त कर ले। प्रभु के रंग में रंगकर उस विधाता प्रभु का गुणानुवाद करो। यदि सारी धरती काग़ज़ हो, वनस्पति कलम हो और लिखने के लिए यदि वायु हो तब भी उस अनन्त प्रभु का ओर-छोर नहीं पाया जा सकता; नानक ने तो उसके चरणों की शरण पकड़ ली है।। ४ ।। ५ ।। ८ ।। आसा महला ५ ।। सभी जीवों का स्वामी प्रभु है और मैंने उसी की शरण पकड़ ली है। मेरा जीवन अब निर्भय हो गया है और मेरी समस्त चिन्ताएं समाप्त हो गई है। मैंने उस प्रभु को ही माता, पिता, पुत्र, मित्र, भला व्यक्ति, अपना इष्ट और बन्धु के रूप में जाना है। जब गुरु के माध्यम से मैं उससे मिला और उसने पकड़ कर अपने गले से लगा लिया तो उसके निर्मल यश का संत पुरुषों ने बखान किया है जिसे मैंने सुना। उसके गुण अनेकों हैं और उसकी महिमा भी अनन्त है; कोई भी उसका मूल्य नहीं आंक सकता। वह प्रभु एक है जिसे समझा न जा सकने वाला सबका स्वामी कहा जाता है; नानक ने तो उसी का ओट आसरा ले रखा है।। १ ।। जब प्रभु स्वयं सहायक बन गया तो यह संसार मेरे लिए अमृत का कुण्ड हो गया है। अब प्रभु-नाम ही मेरे गले का हार बन गया और विकार रूपी विष से भरे हुए मेरे दिन अब पीछे चले गए हैं। मेरा मोह, भ्रम, विकार आदि चले गए और योनियों में आना-जाना अब समाप्त हो गया है। विषयों की अग्नियों के सागर गुरु का आँचल थामने से अब शीतल हो गए है। उस समर्थ धरती के पालनहार और धरती को धारण करने वाले दयालु प्रभु की और साधु रूपी गुरु की जय-जयकार कही जानी चाहिए। हे नानक, प्रभु-नाम के सुमिरन से ही पूर्ण साधु-संगति प्राप्त होती है और जीव परम गति को पा लेता है।। २ ।। मैं जिधर भी देखता हूँ मेरे साथ वह एक ही प्रभु रमण करता हुआ दिखाई देता है। वह प्रभु स्वयं प्रत्येक हृदय में बसने वाला है जिसे बिरला ही देख पाता है। पानी में, स्थल में, अन्तरिक्ष में वह पूरी तरह से व्याप्त है और हाथी तथा चींटी में भी समान रूप से विद्यमान है। वह आदि में, मध्य में और अन्त में भी निरन्तर बना रहता है जिसे गुरु की कृपा से ही जाना जाता है। परमात्मा का सब ओर व्याप्त होना उस परमात्मा का ही खेल है जिसे प्रभु के सेवक गुणों का भण्डार और धरती को धारण करने वाला कहते हैं। हे नानक, उस अन्तर्यामी प्रभु का ही सुमिरन कर क्योंकि वह एक ही सब में रमण कर रहा है।। ३ ।। दिन और रात उस प्रभु का नाम-सुमिरन करने से

नामु हरे ॥ चरण कमल संगि प्रीति कलमल पाप टरे ॥ दूख भूख दारिद्र नाठे प्रगटु मगु दिखाइआ ॥ मिलि साधसंगे नाम रंगे मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ हरि देखि दरसनु इछ पुंनी कुल संबूहा सभि तरे ॥ दिनसु रैणि अनंद अनदिनु सिमरंत नानक हरि हरे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

आसा महला ५ छंत घरु ७ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥ नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥ १ ॥ छंत ॥ भिंनी रैनड़ीऐ चामकनि तारे ॥ जागहि संत जना मेरे राम पिआरे ॥ राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो ॥ चरण कमल धिआनु हिरदै प्रभ बिसरु नाही इकु खिनो ॥ तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे ॥ बिनवंति नानक सदा जागहि हरि दास संत पिआरे ॥ १ ॥ मेरी सेजड़ीऐ आडंबरु बणिआ ॥ मनि अनदु भइआ प्रभु आवत सुणिआ ॥ प्रभ मिले सुआमी सुखह गामी चाव मंगल रस भरे ॥ अंग संगि लागे दूख भागे प्राण मन तन सभि हरे ॥ मन इछ पाई प्रभ धिआई संजोगु साहा सुभ गणिआ ॥ बिनवंति नानक मिले स्रीधर सगल आनंद रसु बणिआ ॥ २ ॥ मिलि सखीआ पुछहि कहु कंत नीसाणी ॥ रसि प्रेम भरी कछु बोलि न जाणी ॥ गुण गूड़ गुपत अपार करते निगम अंतु न पावहे ॥ भगति भाइ धिआइ सुआमी सदा हरि गुण गावहे ॥ सगल गुण सुगिआन पूरन आपणे प्रभ भाणी ॥ बिनवंति नानक रंगि राती प्रेम सहजि समाणी ॥ ३ ॥ सुख सोहिलड़े हरि गावण लागे ॥ साजन सरसिअड़े दुख दुसमन भागे ॥ सुख सहज सरसे हरि नामि रहसे प्रभि आपि किरपा धारीआ ॥ हरि चरण लागे सदा जागे मिले प्रभ बनवारीआ ॥ सुभ दिवस आए सहजि पाए सगल निधि प्रभ पागे ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी सदा हरि जन तागे ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥ आसा महला ५ ॥ उठि वंञु वटाऊड़िआ तै किआ चिरु लाइआ ॥ मुहलति पुंनड़ीआ कितु कूड़ि लोभाइआ ॥ कूड़े लुभाइआ धोहु माइआ करहि पाप अमितिआ ॥ तनु भसम ढेरी जमहि हेरी कालि बपुड़ै जितिआ ॥

सुहावने और हरे-भरे बन गए हैं। प्रभु के चरण कमलों के साथ प्रीति लगाने से मेरे पाप और मेरी बुराईयां दूर हो गई हैं। मेरे दुख, भूख, दरिद्रताएं आदि भाग गए हैं और अब मुझे स्पष्ट मार्ग दिख गया है। साधु-संगति में मिल बैठकर प्रभु-नाम में रंगे जाकर मैंने मनोवांछित फल प्राप्त कर लिया है। प्रभु के दर्शन करके मेरी सारी इच्छाएं पूर्ण हो गई हैं और मेरी सभी कुलें संसार-सागर से पार उतर गई हैं। हे नानक, निरन्तर प्रभु-नाम सुमिरन करने से दिन रात सदैव आनन्द ही बना रहता है।। ४ ।। ६ ।। ६ ।।

आसा महला ५ छन्द घरु ७ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।। श्लोक।।

हे प्रभु, ऐसी कृपा करो कि नानक का चिन्तन शुभ बने, वह प्रभु का जाप करता रहे, साधु पुरुषों की निर्मल संगति में बना रहे और उसे प्रभु-नाम एक घड़ी भर के लिए भी न भूले।। १ ।। छन्द ।। ओस से भीगी हुई रात में तारे चमक रहे हैं। इस सुहावनी जीवन रूपी रात्रि में मेरे प्रभु के प्यारे संतजन ही सावधानी पूर्वक जगते रहते हैं। ये प्रभु के प्यारे सदैव सावधान बने रहते हैं और रोज़ प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं। इनका ध्यान सदैव प्रभु चरणों में टिका रहता है और वे सदैव हृदय से यही चाहते हैं कि हे प्रभु तू एक क्षण के लिए भी हमें मत भूल। अभिमान, मोह और विकारों को त्यागकर मन की बुराईयों को तथा उनके साथ दुखों को भी इन्होंने जला दिया है। नानक विनती करता है कि हरि के दास, प्यारे संत पुरुष सदैव सावधान बने रहते हैं।। १ ।। मेरी हृदय रूपी सेज पर प्रभु से मिलाप का पूर्ण साज-सामान तैयार बना हुआ है। प्रभु के आने की बात को सुनकर मेरा मन आनन्दित हो उठा है। उस स्वामी प्रभु के मिलने की सुखदायक भावना से मेरे अन्दर चाव और मंगलमय रस भर गया है। वह प्रभु मेरे अंगों के साथ आ लगा है जिससे मेरे सभी दुख भाग गए हैं और मेरा मन तन तथा प्राण सभी हरे भरे हो गए हैं। मुझे सुमिरन का मनोवाछिंत फल प्राप्त हो गया है और यह संयोग और फल मेरे लिए शुभ बन गया है। नानक विनती करता है कि प्रभु से मिलकर समस्त प्रकार के रस और आनन्द का संयोग बन जाता है।। २ ।। सभी सत्संगी सखियां पूछती हैं कि उस पति-प्रभु का रूप आकार क्या है? परन्तु मैं तो उसके प्रेम-रस में इतना भर गई हूँ कि मुझसे कुछ बोलते ही नहीं बनता। उस प्रभु के गुण तो रहस्यपूर्ण एवं गुप्त हैं। उस अनन्त कर्ता-प्रभु का ओर-छोर तो निगम (वेद-वेदांग) भी नहीं पा सके। प्रेम भक्ति के माध्यम से ही उस प्रभु का सुमिरन करो और सदा उस स्वामी के गुणों का गायन करते रहो। जो जीव-स्त्री समस्त गुणों को धारण करती है और सभी प्रकार के ज्ञान में पूर्ण होती है वही अपने प्रियतम रूपी प्रभु के मन को भाती है। नानक की विनती है कि जो उसके प्रेम के रंग में रंगी हुई है वह सहज स्वाभाविक रूप से ही प्रभु-पति में लीन हो जाती है।। ३ ।। जब हम सब प्रभु के खुशी के गीत गाने लगे तो सज्जन पुरुष प्रसन्न हो उठे, परन्तु शत्रु और दुख भाग खड़े हुए हैं। उसके सहज सुख में सभी सरस हो उठे और हम सब भी जब प्रभु ने कृपा की तो उसके नाम में लीन हो गए हैं। प्रभु के चरणों में आ लगने से सभी पूर्ण रूप से सावधान हो गए और इस प्रकार सब को प्रभु की प्राप्ति हो गई है। अब अच्छे दिन आ गए क्योंकि हमने सहज-स्वाभाविक रूप से ही प्रभु के उन चरणों को प्राप्त कर लिया जिनमें समस्त निधियां विद्यमान हैं। नानक विनती करता है कि प्रभु के सेवक सदैव प्रभु की शरण की ओर ही दौड़ते हैं।। ४ ।। १ ।। १० ।। आसा महला ५ ।। हे जीव रूपी पथिक, तू अब उठ और यहाँ से चल दे; तूने इतनी देर क्यों लगा दी है। तुझे यहाँ रहने का मिला हुआ समय समाप्त हो गया है; तू किस झूठ के लोभ में अभी भी पड़ा हुआ है। झूठ में फँसा हुआ माया के हाथों तू धोखा खाता हुआ अपरिमित पाप करता जा रहा है। यह शरीर तो राख की ढेरी है जिस पर यम ने नज़र गड़ा ली है और काल ने अब बेचारे जीव को जीत लिया है।

मालु जोबनु छोडि वैसी रहिओ पैनणु खाइआ ॥ नानक कमाणा संगि जुलिआ नह जाइ किरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ फाथोहु मिरग जिवै पेखि रैणि चंद्राइणु ॥ सूखहु दूख भए नित पाप कमाइणु ॥ पापा कमाणे छडहि नाही लै चले घति गलाविआ ॥ हरिचंदउरी देखि मूठा कूड़ु सेजा राविआ ॥ लबि लोभि अहंकारि माता गरबि भइआ समाइणु ॥ नानक म्रिग अगिआनि बिनसे नह मिटै आवणु जाइणु ॥ २ ॥ मिठै मखु मुआ किउ लए ओडारी ॥ हसती गरति पइआ किउ तरीऐ तारी ॥ तरणु दुहेला भइआ खिन महि खसमु चिति न आइओ ॥ दूखा सजाई गणत नाही कीआ अपणा पाइओ ॥ गुझा कमाणा प्रगटु होआ ईत उतहि खुआरी ॥ नानक सतिगुर बाझु मूठा मनमुखो अहंकारी ॥ ३ ॥ हरि के दास जीवे लगि प्रभ की चरणी ॥ कंठि लगाइ लीए तिसु ठाकुर सरणी ॥ बल बुधि गिआनु धिआनु अपणा आपि नामु जपाइआ ॥ साधसंगति आपि होआ आपि जगतु तराइआ ॥ राखि लीए रखणहारै सदा निरमल करणी ॥ नानक नरकि न जाहि कबहूं हरि संत हरि की सरणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥ आसा महला ५ ॥ वंञु मेरे आलसा हरि पासि बेनंती ॥ रावउ सहु आपनड़ा प्रभ संगि सोहंती ॥ संगे सोहंती कंत सुआमी दिनसु रैणी रावीऐ ॥ सासि सासि चितारि जीवा प्रभु पेखि हरि गुण गावीऐ ॥ बिरहा लजाइआ दरसु पाइआ अमिउ द्रिसटि सिंचंती ॥ बिनवंति नानकु मेरी इछ पुंनी मिले जिसु खोजंती ॥ १ ॥ नसि वंञहु किलविखहु करता घरि आइआ ॥ दूतह दहनु भइआ गोविंदु प्रगटाइआ ॥ प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन साधसंगि वखाणिआ ॥ आचरजु डीठा अमिउ वूठा गुर प्रसादी जाणिआ ॥ मनि सांति आई वजी वधाई नह अंतु जाई पाइआ ॥ बिनवंति नानक सुख सहजि मेला प्रभू आपि बणाइआ ॥ २ ॥ नरक न डीठड़िआ सिमरत नाराइण ॥ जै जै धरमु करे दूत भए पलाइण ॥ धरम धीरज सहज सुखीए साधसंगति हरि भजे ॥ करि अनुग्रहु राखि लीने मोह ममता सभ तजे ॥ गहि कंठि लाए गुरि मिलाए गोविंद जपत अघाइण ॥ बिनवंति नानक सिमरि सुआमी सगल आस

धन-माल, यौवन यहीं छोड़कर यह चल पड़ेगा और इसका खाना-पहनना भी समाप्त हो गया है। हे नानक, कर्मों के माध्यम से जीव ने जो कमाया था वही इसके साथ चला है और किए हुए के फल को मिटाया नहीं जा सकता।। १ ।। हे जीव, तू सांसारिक पदार्थों की तड़क-भड़क को देखकर इस प्रकार फँस गया है जैसे शिकारी द्वारा किए गए प्रकाश को देखकर हिरण उसकी तरफ खिंचा चला आता और फँस जाता है। सुख लेते लेते तुझ पर दुख आ पड़े हैं और अब तू सदैव पाप के कार्य कर रहा है। तेरे कमाए हुए पाप तुझे छोड़ते नहीं और वे तुझे गले से पकड़ कर ले चलते हैं। तू झठे चमत्कारों को देखकर धोखा खा गया हैं और माया रूपी झूठी स्त्री को सत्य मान कर तू उसकी सेज पर रमण कर रहा है। इच्छाओं, लोभ एवं अहंकार में मस्त होकर तू अभिमान से भर गया है। हे नानक, जीव रूपी मृग अज्ञानवश विनष्ट होता है और उसका आवागमन मिटता नहीं।। २ ।। मीठे को देखकार मक्खी उड़ती नहीं और उसी से चिपक कर मर जाती है। काम वश होकर हाथी गड्ढे में गिर जाता है और वह अब भला उसमें से कैसे बाहर निकल सकता है। प्रभु की याद मन में न रहने से क्षण भर के लालच के पीछे उसका बाहर निकलना कठिन हो गया है। दुखों और सज़ाओं की अब उसके लिए कोई गिनती नहीं और वासनाओं के अधीन ऐसे जीव अपने किए कर्मों का ही फल प्राप्त करते हैं। छिपकर किए हुए काम प्रकट हो जाते हैं जिनसे इस लोक और परलोक दोनों में ही ख्वार होना पड़ता है। हे नानक, मनमुख अहंकारी व्यक्ति सच्चे गुरु से विहीन होकर सदैव ठगा और लूटा जाता है।। ३ ।। प्रभु के सेवक प्रभु के चरणों में लगकर आध्यात्मिक रूप से जीवित बने रहते हैं। उस प्रभु की शरण में रहते ही प्रभु उन्हें अपने गले से लगा लेता है। बल, बुद्धि, ज्ञान, ध्यान के माध्यम से प्रभु उन्हें अपना नाम सुमिरन करवाता है। वह प्रभु ही साधसंगत के रूप में स्वयं ही इस सारे संसार को पार उतार लेता है। उस रक्षक प्रभु ने सदैव निर्मल कर्म करने वालों की रक्षा की है। हे नानक, प्रभु के शान्त पुरुष प्रभु की शरण में रहते हुए कभी भी नर्क में नहीं जाते।। ४ ।। २ ।। ११ ।। आसा महला ५।। मैं परमात्मा के पास विनती करता हूँ कि हे मेरे आलस्य, तू भाग जा ताकि प्रभु के साथ शोभायमान होकर मैं दिन-रात उसका रमण करूँ। प्रत्येक श्वास् के साथ उसका सुमिरन करके मैं जीवित बनी रहूँ और प्रभु का दर्शन करके उसका गुणानुवाद करती रहूँ। जब मैंने दर्शन पा लिया तो विरह लज्जित होकर समाप्त हो गया। अब प्रियतम की अमृत से भरी हुई दृष्टि मेरे प्रेम को सींचती रहती है। नानक रूपी जीव स्त्री विनती करती है कि मैं जिसे खोजती थी वह मुझे मिल गया और मेरी इच्छा पूरी हो गई है।। १ ।। हे मेरे पाप, तुम लोग अब भाग जाओ क्योंकि मेरे हृदय रूपी घर में वह कर्ता प्रभु आ प्रकट हुआ है। उस प्रभु के प्रकट होने से यमदूत जल कर मर गए हैं। साधु पुरुषों के संग बैठकर जब उस प्रभु का बखान किया गया तो वह प्यारा गोविन्द गोपाल प्रभु प्रकट हो उठा है। मैंने एक आश्चर्यजनक दृश्य देखा कि अमृत बरस उठा है और अमृत के इस बरसने को मैंने गुरु की कृपा के माध्यम से ही जाना है। मेरे मन में अब शान्ति आ गई है, उसी के वाद्य बजने लगे हैं और अब इस खुशी का कोई ओर-छोर नहीं बचा है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, यह सुख प्रदायक सहज मिलाप तूने आप ही प्रायोजित किया है।। २ ।। प्रभु के सुमिरन करने से नर्क नहीं देखना पड़ता। धर्मराज भी जय-जयकार करता है और उसके यमदूत भी भाग खड़े होते हैं। साधसंगत में प्रभु के सुमिरन के साथ व्यक्ति धर्म, धैर्य और सहज सुख वाला हो जाता है। प्रभु कृपा करके रक्षा कर लेता है और मोह, ममता आदि सभी छोड़ दिए जाते हैं। गुरु के माध्यम से जब मिला जाता है तो प्रभु पकड़कर गले से लगा लेता है तथा जीव परमात्मा का सुमिरन करता हुआ तृप्त हो जाता है। नानक का विनयपूर्वक कथन है कि हे जीव, उस स्वामी प्रभु का सुमिरन कर जो सभी इच्छाओं

पुजाइण ॥ ३ ॥ निधि सिधि चरण गहे ता केहा काड़ा ॥ सभु किछु वसि जिसै सो प्रभू असाड़ा ॥ गहि भुजा लीने नाम दीने करु धारि मसतकि राखिआ ॥ संसार सागरु नह विआपै अमिउ हरि रसु चाखिआ ॥ साधसंगे नाम रंगे रणु जीति वडा अखाड़ा ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी बहुड़ि जमि न उपाड़ा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥ आसा महला ५ ॥ दिनु राति कमाइअड़ो सो आइओ माथै ॥ जिसु पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै ॥ संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाईऐ ॥ सुक्रितु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥ आठ पहर हरि नामु सिमरहु चलै तेरै साथे ॥ भजु साधसंगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥ १ ॥ वलवंच करि उदरु भरहि मूरख गावारा ॥ सभु किछु दे रहिआ हरि देवणहारा ॥ दातारु सदा दइआलु सुआमी काइ मनहु विसारीऐ ॥ मिलु साधसंगे भजु निसंगे कुल समूहा तारीऐ ॥ सिध साधिक देव मुनि जन भगत नामु अधारा ॥ बिनवंति नानक सदा भजीऐ प्रभु एकु करणैहारा ॥ २ ॥ खोटु न कीचई प्रभु परखणहारा ॥ कूड़ु कपटु कमावदड़े जनमहि संसारा ॥ संसारु सागरु तिन्ही तरिआ जिन्ही एकु धिआइआ ॥ तजि कामु क्रोधु अनिंद निंदा प्रभ सरणाई आइआ ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा ॥ बिनवंति नानक टेक जन की चरण कमल अधारा ॥ ३ ॥ पेखु हरिचंदउरड़ी असथिरु किछु नाही ॥ माइआ रंग जेते से संगि न जाही ॥ हरि संगि साथी सदा तेरै दिनसु रैणि समालीऐ ॥ हरि एक बिनु कछु अवरु नाही भाउ दुतीआ जालीऐ ॥ मीतु जोबनु मालु सरबसु प्रभु एकु करि मन माही ॥ बिनवंति नानकु वडभागि पाईऐ सूखि सहजि समाही ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

आसा महला ५ छंत घरु ८ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कमला भ्रम भीति कमला भ्रम भीति हे तीखण मद बिपरीति हे अवध अकारथ जात ॥ गहबर बन घोर गहबर बन घोर हे ग्रिह मूसत मन चोर हे दिनकरो अनदिनु खात ॥

को पूरा करने वाला है।। ३ ।। जब ऋद्धियों और सिद्धियों वाले प्रभु के चरण पकड़ लिए गए तो फिर भला दुख कैसा। सब कुछ जिसके वश में है वह प्रभु भी अब हमारा अपना ही है। उसने बाँह पकड़कर अपने पास रख लिया, अपने नाम का दान दिया और मेरे मस्तक पर हाथ रखकर मेरी रक्षा कर ली है। अमृत के समान प्रभु-नाम के रस को चखने से संसार रूपी सागर का कोई भी कष्ट अब प्रभावित नहीं करता। साधु-संगति में रहकर और प्रभु-नाम में पूरी तरह रंगकर इस संसार रूपी बहुत बड़े अखाड़े को जीत लिया गया है। नानक विनती पूर्वक कहता है कि प्रभु स्वामी की शरण में आ जाने से फिर यम व्यक्ति को मार नहीं पाता।। ४ ।। ३ ।। १२ ।। आसा महला ५।। हे जीव, जो तू दिन-रात करता रहा है वही तेरे माथे का लेख बन गया है। तू जिसके पास से छुपा छुपा कर सब कुछ करता था वह तो साथ ही बना रहकर सब कुछ देख रहा है। वह कर्ता-प्रभु तो साथ रहकर देख रहा है इसलिए हे जीव, क्यों पाप कर्मों में तू लगा हुआ है। यदि प्रभु के नाम का सुमिरन किया जाए और अच्छे कर्म किए जाएं तो कभी भी नर्क में नहीं जाना पड़ता। आठों प्रहर प्रभु के नाम का सुमिरन करो क्योंकि यही अन्त में तेरे साथ जाने वाला है। साधु-संगति के माध्यम से प्रभु-नाम का सुमिरन कर और हे नानक तेरे पैदा किए हुए दोष स्वयं ही मिट जाएंगे।। १ ।। हे गँवार मूर्ख, तू धोखाधड़ी कर कर के अपना पेट भरता है। वह देने वाला प्रभु तो सब कुछ देता ही जा रहा है। वह देने वाला दाता एवं दयालु स्वामी प्रभु सदैव दिए चला जा रहा है इसलिए उसे भला मन से क्यों भुलाया जाए। साधु-संगति में मिल बैठकर और निधड़क होकर उस प्रभु का जाप करो जिससे तुम्हारी समस्त कुलें पार उतर जाएंगी। बड़े-बड़े सिद्ध, साधक, देवी-देवता, मुनिगण और भक्त आदि लोगों का आधार तो केवल नाम ही होता है। नानक विनय पूर्वक कथन करता है कि वह एक ही प्रभु सब कुछ करने वाला है, उसी का सुमिरन करो।। २ ।। हे जीव, तुझे जरा सा भी धोखा नहीं करना चाहिए क्योंकि प्रभु स्वयं जाँच-परख करने वाला है। जो झूठ और कपट के कार्य करते हैं वे बार-बार संसार में जन्म लेते रहते हैं। जिन्होंने केवल एक प्रभु का ही सुमिरन किया है वे ही संसार सागर से पार उतर गए हैं। ऐसे व्यक्ति काम, क्रोध और अनिंद्य लोगों की निन्दा आदि का त्याग करके प्रभु की शरण में आ जाते हैं। वह ऊँचा, अगम्य एवं अपरंपर प्रभु जल, स्थल एवं अन्तरिक्ष में विद्यमान बना हुआ है। नानक विनयपूर्वक कहता है कि प्रभु के सेवक की टेक वह प्रभु ही है और प्रभु के चरण-कमल ही उसका आश्रय हैं।।३ ।। हे जीव, मायावी नगरी रूपी इस संसार को देख, इसमें कुछ भी स्थिर बना रहने वाला नहीं है। माया के जितने भी रूप हैं वे साथ नहीं जाते। प्रभु ही सदैव तुम्हारे साथ बना रहता है इसलिए दिन-रात उसी का ही सुमिरन करना चाहिए। मन के द्वैतभाव को जला कर नष्ट कर देना चाहिए क्योंकि उस एक प्रभु के बिना दूसरा कुछ भी नहीं है। अपने मन में प्रभु को ही अपना मित्र, जवानी, धन-सम्पदा और सर्वस्व मानता रह। नानक का कथन है कि ऐसा करने से बड़ा भाग्यशाली बना जाता है और सहज सुख में लीन हुआ जाता है।। ४ ।। ४ ।। १३ ।।

आसा महला ५ छन्द घरु ८ ।। १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

हे भाईयो, माया भ्रम की दीवार है और यह भ्रम की दीवार बहुत ही तीखा और उलटा नशा है जिसमें मस्त रहते हुए जीवन व्यर्थ हो जाता है । यह माया भयंकर और धना जंगल है जिसमें मन रूपी चोर घर को लूटे जा रहा है और समय रूपी सूर्य रोज़ आयु को खाए चला जा रहा है ।

दिन खात जात बिहात प्रभ बिनु मिलहु प्रभ करुणा पते ॥ जनम मरण अनेक बीते प्रिअ संग बिनु कछु नह गते ॥ कुल रूप धूप गिआनहीनी तुझ बिना मोहि कवन मात ॥ कर जोड़ि नानकु सरणि आइओ प्रिअ नाथ नरहर करहु गात ॥ १ ॥ मीना जलहीन मीना जलहीन हे ओहु बिछुरत मन तन खीन हे कत जीवनु प्रिअ बिनु होत ॥ सनमुख सहि बान सनमुख सहि बान हे म्रिग अरपे मन तन प्रान हे ओहु बेधिओ सहज सरोत ॥ प्रिअ प्रीति लागी मिलु बैरागी खिनु रहनु ध्रिगु तनु तिसु बिना ॥ पलका न लागै प्रिअ प्रेम पागै चितवंति अनदिनु प्रभ मना ॥ स्रीरंग राते नाम माते भै भरम दुतीआ सगल खोत ॥ करि मइआ दइआ दइआल पूरन हरि प्रेम नानक मगन होत ॥ २ ॥ अलीअल गुंजात अलीअल गुंजात हे मकरंद रस बासन मात हे प्रीति कमल बंधावत आप ॥ चात्रिक चित पिआस चात्रिक चित पिआस हे घन बूंद बचित्रि मनि आस हे अल पीवत बिनसत ताप ॥ तापा बिनासन दूख नासन मिलु प्रेमु मनि तनि अति घना ॥ सुंदरु चतुरु सुजान सुआमी कवन रसना गुण भना ॥ गहि भुजा लेवहु नामु देवहु द्रिसटि धारत मिटत पाप ॥ नानकु जंपै पतित पावन हरि दरसु पेखत नह संताप ॥ ३ ॥ चितवउ चित नाथ चितवउ चित नाथ हे रखि लेवहु सरणि अनाथ हे मिलु चाउ चाईले प्रान ॥ सुंदर तन धिआन सुंदर तन धिआन हे मनु लुबध गोपाल गिआन हे जाचिक जन राखत मान ॥ प्रभ मान पूरन दुख बिदीरन सगल इछ पुजंतीआ ॥ हरि कंठि लागे दिन सभागे मिलि नाह सेज सोहंतीआ ॥ प्रभ द्रिसटि धारी मिले मुरारी सगल कलमल भए हान ॥ बिनवंति नानक मेरी आस पूरन मिले स्रीधर गुण निधान ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥

१ओ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥ सलोकु मः १ ॥ बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥ जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी

दिन और रात आयु को खाते चले जा रहे हैं और इस प्रकार जीवन प्रभु से विहीन होकर गुज़रता जाता है। हे करुणापति प्रभु, मुझे आ मिलो। अनेकों जन्म और मरण बीत चुके हैं परन्तु प्रियतम प्रभु से मिले बिना कुछ भी नहीं संवरता। मैं कुल के ऊँचेपन, सौन्दर्य, शोभा और ज्ञान से विहीन हूँ। हे प्रभु, तेरे बिना भला मुझ पर कौन मोहित हो सकता है। नानक का कथन है कि मैं तो हाथ जोड़कर हे प्रिय एवं सबके प्रभु, तेरी शरण में आ गया हूँ; अब तू ही मुझे पार उतार ले।। १ ।। मछली पानी के बिना हो तो वह जल विहीन होकर क्षीण हो जाती है और मर जाती है। इसी प्रकार प्रिय प्रभु के बिना मेरा जीवन कैसे बना रह सकता है। नाद में मस्त हिरण सामने से चले आ रहे बाण को अपने सीने पर बर्दाश्त करता है तथा मन, तन और प्राण अर्पण कर देता है क्योंकि वह नाद सुनने के आनन्द में बिंधा रहता है। हे प्रिय, तुझसे मेरी प्रीति लग गई है। उसे मिलने के लिए मैंने बैरागी बन कर संसार के प्रपंचों का त्याग कर दिया है; अब तो धिक्कार है ऐसे शरीर को जो उस प्रभु से मिले बिना एक क्षण भी जीवित बना रहता है। मैं अपने प्रियतम के प्रेम में इतना लीन जो गई हूँ कि मेरी पलकें कभी भी बन्द नहीं होती अर्थात उसकी प्रतीक्षा करती रहती हैं। मेरा मन भी दिन-रात प्रभु का चिन्तन करता रहता है। धन-सम्पदा के स्वामी प्रभु-पति के रंग में रंगे जाकर और उसके नाम में मतवाले होकर मैंने सभी भय, सन्देह और द्वैतभाव खो दिए हैं। हे दयालु और परिपूर्ण प्रभु, अपनी कृपा कर ताकि नानक तेरे प्रेम में लीन बना रहे।। २ ।। भँवरा गूँज रहा है और गूँजता जा रहा है परन्तु वह फूलों के रस और गन्ध में मस्त होकर तथा कमल के फूल की प्रीति के कारण अपने आप को उसमें फँसा लेता है। पपीहे के हृदय में प्यास है और उसकी प्यास बनी ही हुई है। उसका चित्त बादल की बूँदों के लिए तरसता रहता है और उन बूँदों को पी लेने से उसके मन तन की जलन विनष्ट हो जाती है। हे जलन को दूर करने वाले प्रभु मुझसे आ मिल क्योंकि मेरे मन और तन में तेरे लिए बहुत ही अधिक प्रेम उमड़ा हुआ है। हे सुन्दर, चतुर, सुजान प्रभु, मैं किस जीभ से तेरे गुणों का कथन करूँ। हे प्रभु, मेरा हाथ पकड़ लो और मुझे अपना नाम प्रदान कर दो। जिस पर भी तू कृपादृष्टि करता है उसके सभी पाप मिट जाते हैं। नानक तो पापियों को पवित्र करने वाले प्रभु के नाम का जाप करता है; प्रभु का दर्शन करने वाले व्यक्ति का कोई भी कष्ट उसे तंग नहीं करता।। ३ ।। मैं अपने मन में उस नाथ प्रभु का सुमिरन करता हूँ और उसका सुमिरन करता ही जाता हूँ। मुझ अनाथ को हे प्रभु, अपनी शरण में रख लो क्योंकि मेरे प्राण तुझे चाहते हैं और तुझसे मिल कर मैं आनन्दित हो उठता हूँ। मेरा ध्यान तेरे इस समस्त रचना रूपी शरीर के साथ जुड़ा हुआ है और जुड़ता ही जा रहा है। हे प्रभु, मेरा मन तेरे ज्ञान ने मोहित कर रखा है। हे प्रभु, मैं जानता हूँ कि तू अपने याचक सेवक के सम्मान को बनाए रखता है। प्रभु ही पूर्ण सम्मान प्रदान करने वाला सभी दुखों का नाश करने वाला और सबकी इच्छाओं को पूरा करने वाला है। वे अवसर और दिन भाग्यशाली हैं जब मैं प्रभु के गले से लगती हूँ और प्रियतम प्रभु को मिलकर मेरी सेज शोभाएमान हो गई है। प्रभु ने कृपा-दृष्टि की और वह मुरारी मुझे आ मिला जिससे मेरे सभी पाप नष्ट हो गए हैं। नानक विनतीपूर्वक कहता है कि गुणों के भण्डार प्रभु के मिलने से मेरी आशा पूरी हो गई है।। ४ ।। १ ।। १४ ।।

१ ओअंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।। आसा महला १।।

श्लोकों समेत वार*, श्लोक भी महला पहला के लिखे हुए टुण्डे (लूले) असराज* की धुन। (गुरु नानक की वाररूपी इस रचना को लोकयान में प्रचलित लूले राजा असराज की जीवन कहानी गा कर सुनाने वाली धुन पर गायन करने का आदेश है)

श्लोक महला १ ।। मैं अपने उस गुरु पर एक दिन में सौ बार बलिहारी जाता हूँ जिसने साधारण मनुष्यों को देवता बना दिया और ऐसा करते हुए उसे ज़रा सी भी

वार ॥ १ ॥ महला २ ॥ जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥ एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥ २ ॥ मः १ ॥ नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥ खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥ दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥ करि आसणु डिठो चाउ ॥ १ ॥ सलोकु मः १ ॥ सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥ सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥ सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥ सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥ सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥ सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥ सची तेरी सिफति सची सालाह ॥ सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ नानक सचु धिआइनि सचु ॥ जो मरि जंमे सु कचु निकचु ॥ १ ॥ मः १ ॥ वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥ वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥ वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ वडी वडिआई जा आपे आपि ॥ नानक कार न कथनी जाइ ॥ कीता करणा सरब रजाइ ॥ २ ॥ महला २ ॥ इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥ एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ २ ॥ सलोक मः १ ॥ विसमादु नाद विसमादु वेद ॥ विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥ विसमादु रूप विसमादु रंग ॥ विसमादु नागे फिरहि जंत ॥

देर नहीं लगी।।१।। महला२।। यदि सौ चन्द्रमा भी आकाश में उग आएं और हज़ार सूर्य भी निकल आएं तब भी इतना प्रकाश होने के बावजूद गुरु के बिना घोर अंधकार ही बना रहता है।। २ ।। महला १ ।। हे नानक, जो गुरु के बताए हुए मार्ग के प्रति सचेत नहीं होते और अपने मन में ही बुद्धिमान बने रहते हैं उनका जीवन उन निरर्थक तिलों के समान है जिन्हें बेकार समझकर सूने खेतों में ही फेंक दिया जाता है। खेत में पड़े हुए ऐसे तिलों के सैंकड़ों मालिक बन जाते हैं अर्थात वे किसी एक स्वामी के नहीं बने रहते। वे बेचारे फलते-फूलते हुए दिखाई तो देते हैं परन्तु वास्तव में उनके अन्दर तेल न होकर राख ही भरी रहती है। इसी प्रकार जो जीव गुरु विहीन होते हैं उनके सैंकड़ों सलाहकार बन जाते हैं जिससे वे प्रतिष्ठित तो दिखाई देते हैं परन्तु उनके अन्दर खोखलापन ही होता है।। ३ ।। पउड़ी।। उस परमात्मा ने स्वयं ही अपनी सृजना आप की है और वह अपने नाम का रचयिता भी स्वयं ही है। दूसरे नम्बर पर उसने अपनी कुदरत (प्रकृति) की रचना की जिसमें वह स्वयं विराजमान होकर उत्साह से भरा हुआ उसके कार्य-कलाप को देखता है। हे प्रभु, तू स्वयं ही कर्ता है और प्रसन्न होकर तू स्वयं ही अपना प्रसार करता है। तू सबके हृदय की बात जानने वाला है और तू ही अपने हुकम में जीवों को प्राण देता है और उन प्राणों को फिर वापस भी ले लेता है। हे प्रभु, इस सृष्टि रचना में तू ही आसन जमाकर बैठा हुआ इसे चाव से देख रहा है।। १ ।। श्लोक महला १ ।। हे प्रभु, तेरे रचे हुए सभी खण्ड एवं ब्रह्माण्ड सच्चे हैं (मिथ्या नहीं है), तेरे रचे हुए लोग और सभी आकार भी वास्तविक है (झूठे नहीं है)। तेरे सभी विचार और कार्य सत्य हैं। तेरा हुकम और तेरा दरबार जहाँ तू न्याय करता है वे भी सच्चे हैं। तेरा आदेश और तेरा हुकमनामा दोनों ही सच्चे हैं। तेरी कृपा भी सच्ची है और तेरी स्वीकृति के चिन्ह (प्रेम, दया आदि) भी सच्चे हैं। लाखों करोड़ों जीव तेरा सत्य रूप में वर्णन करते हैं और हे प्रभु, तेरी शक्ति और उस शक्ति का विस्तार सभी सत्य हैं। तेरे गुण और तेरी शोभा सच्चे हैं और हे सच्चे सम्राट प्रभु, तेरी कुदरत रूपी यह रचना भी सच्ची है। हे नानक, जो इस सत्य का सुमिरन करते हैं और इसे जानते हैं वे भी सच्चे हैं; परन्तु जो इसे नहीं पहचानते और आवागमन में भटकते रहते हैं वे कच्चे से भी कच्चे हैं।। १ ।। महला १ ।। प्रभु का बड़प्पन इसलिए है कि उसका नाम और उसके गुणों का प्रकाश बड़ा है। प्रभु की महानता इसलिए भी है कि उसका न्याय सच्चा है। वह इसलिए भी बड़ा है कि उसका आसन स्थिर है अर्थात किसी भय या लिहाज से वह अपने नियमों को बदलता नहीं। उसका बड़प्पन इसलिए भी महान है कि वह भक्तों द्वारा कही हुई बात को समझ लेता है। वह इसलिए भी महान है कि कुछ न कहने पर भी वह सबके दिल के भाव को बूझ लेता है। उसकी बड़ाई इसलिए भी है कि देने के लिए उसे किसी से पूछना नहीं पड़ता और वह इसलिए भी बड़प्पन वाला है कि वह सब कुछ स्वयं ही है। हे नानक, उसके कार्यों का कथन नहीं किया जा सकता क्योंकि जो कुछ किया हुआ है और जो कुछ उसने करना है वह उसकी रज़ा में ही है।। महला २ ।। यह संसार तो सत्य का वह घर है जिसमें सत्य प्रभु का ही निवास है। कईयों को तो वह अपने हुकम में ही लीन किए रहता है और कईयों का वह हुकम के अन्तर्गत ही विनाश करता रहता है। कईयों को अपनी रज़ा में ही संसार-समुद्र से बाहर निकाल लेता है और कईयों का मायावी प्रपंचों में ही निवास बनाए रखता है। यह भी नहीं कहा जा सकता और यह जाना भी नहीं जा सकता कि किस जीव को वह सुधार देगा। हे नानक, गुरमुख व्यक्ति ही ऐसा जाना माना जाता है जिसे प्रभु स्वयं अपने प्रकाश से प्रकाशित कर देता है।। ३ ।। पउड़ी।। हे नानक, उसने जीव को पैदा करके उसके अन्दर ही अपना नाम रूपी धर्मराज (न्याय कर्ता) बिठा रखा है। उस नाम रूपी न्याय कर्ता के समक्ष केवल सत्य के अनुरूप ही फैसला होता है और बुरे व्यक्तियों को छाँटकर अलग कर लिया जाता है। झूठे व्यक्तियों को उसके सामने स्थान नहीं मिलता अर्थात वे टिक नहीं पाते और अपना काला मुँह लेकर वे नर्क की पीड़ा में पड़े रहते हैं। प्रभु ने अपने नाम के रूप में धर्मराज को अन्दर ही स्थित किया हुआ है।। २ ।। श्लोक महला १ ।। आश्चर्य है कि कितने प्रकार के नाद अर्थात बोलियां है और विभिन्न प्रकार के ज्ञान भी आश्चर्य ही आश्यर्च हैं। आश्चर्यकारक अनन्त जीव हैं और उनके भेद उपभेद भी विस्मयकारक हैं। अनेकों प्रकार के रूप हैरानी में डालने वाले हैं और विभिन्न प्रकार के रंग, स्वभाव आदि भी विस्मयकारक हैं। यह भी विस्मयकारक है कि जीव-जन्तु नंगे ही घूमते फिरते रहते हैं और

विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥ विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥ विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥ विसमादु सादि लगहि पराणी ॥ विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥ विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥ विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥ विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥ विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥ विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥ वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥ नानक बुझणु पूरै भागि ॥ १ ॥ मः १ ॥ कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥ कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥ कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥ कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥ कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥ कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥ कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥ सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥ वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥ अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥ मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ सलोक मः १ ॥ भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥ भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥ भै विचि धरती दबी भारि ॥ भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥ भै विचि राजा धरम दुआरु ॥ भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥ कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥ भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥ भै विचि आडाणे आकास ॥ भै विचि जोध महाबल सूर ॥ भै विचि आवहि जावहि पूर ॥ सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥ नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥ केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥ केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥ गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥ लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥ जितु तनि पाईअहि नानका

यह भी आश्चर्यजनक है कि अनेकों प्रकार की पवन है और पता नहीं कितने प्रकार के जल हैं। यह भी विस्मयकारक है कि कितने ही प्रकार की अग्नियां हैं जो अजीब-अजीब खेल खेलती हैं। अनेकों धरतियां भी विस्मय का कारण हैं और अनेकों प्रकार की जीवन उत्पन्न करने वाली खानें भी विस्मयकारक है। जिन स्वादों में जीव मन लगाए हुए हैं वे भी अनेकों हैं और विस्मय में डालने वाले हैं। मिलने और बिछुड़ने के अर्थात संयोग और वियोग के दोनों सिद्धान्त भी विस्मय ही हैं। तमाम प्रकार की भूख भी विस्मयकारी है और अनेकों भोग भी हैरानी में डालने वाले हैं। अनेकों गुण भी हैरानी में डालने वाले हैं और अनेक प्रकार से उनकी की जाने वाली प्रशंसा भी विस्मयादि बोधक है। अपने उद्देश्य से भटक जाना भी हैरानी का कारण है और पुनः ठीक मार्ग पर आ जाना भी आश्चर्यजनक ही है। पास होने का सुख और दूर होने का दुख हैरानी में डालने वाला ही है क्योंकि पता ही नहीं चल पाता कि कौन पास है और कौन दूर है। प्रभु की दिव्यता को प्रत्यक्ष रूप से देखना अनुभव करना भी आश्चर्य ही है। वह प्रभु अपने आश्चर्यजनक खेल को देखकर आश्चर्य भाव में बना रहता है और हे नानक उसके सारे कार्य-कलाप को बूझने वाला पूर्ण रूप से कोई भाग्यशाली व्यक्ति ही होता है।।१।। महला १।। जो कुछ भी दिखाई देता है अथवा जो कुछ भी सुना जाता है तथा भय का भाव और सुख का प्रारम्भ बिन्दु सब कुदरत के अनुरूप ही है अर्थात उस प्रभु की अन्तरनिहित ऊर्जा ही सब में रमण कर रही है। यही कुदरत रूपी शक्ति पातालों, आकाशों और रचना के सभी आकारों में विद्यमान है। यह कुदरत वेद-पुराण, कतेबों और सब प्रकार के चिन्तनों का मूल है। खाना-पीना, पहनना सर्व प्रेम की भावना आदि सब कुदरत के अन्तर्गत ही है। संसार के जीवों की तमाम किस्मों, प्रजातियों और रंगों में वह कुदरत ही कार्यशील है। हे कर्ता प्रभु, तू ही इस ऊर्जा का स्वामी है और तू ही अपने पवित्र नाम के कारण कार्यशील है। हे नानक, वह प्रभु अपने विधान के अन्तर्गत सब कुछ देखता करता रहता है और वह जो भी करता है पूरी निपुणता के साथ करता है। वह अन्धाधुन्ध कुछ भी नहीं करता।। २ ।। पउड़ी ।। भोगों में लीन रहने वाला व्यक्ति अपने पर आधारित भोगों को भोगता हुआ अन्ततः राख की ढेरी बनकर इस संसार से चला जाता है। दुनियादारी में ही लीन बना रहने वाला ऐसा व्यक्ति जब मर जाता है तो उसके गले में जंजीरे डालकर उसे धकेलकर ले जाया जाता है। आगे पहुँचने पर उसकी करनी की प्रशंसा अथवा निन्दा का बयान किया जाता है और उसके लेखे-जोखे की जाँच-पड़ताल की जाती है। जब उसे मार पड़ती है तो उसे कहीं भी (सिर छिपाने तक की) जगह नहीं मिलती। अब उसका रोना भी वहाँ कौन सुनेगा? अन्धे मन ने अपना जन्म और जीवन व्यर्थ ही गँवा लिया है।। ३ ।। श्लोक महला १ ।। सैंकड़ों प्रकार की वायु उस प्रभु के भय (नियम) के अन्तर्गत ही चलती है। लाखो नदियां भी उसके भय में ही बहती हैं। उसके भय रूपी हुकम में ही अग्नि भी कार्य करती है। प्रभु के भय रूपी नियम में ही धरती भार के नीचे दबी रहती है। सिर के बल घूमने वाला बादल भी किसी भय अथवा नियम के अन्तर्गत ही घूमता फिरता है। भय में ही प्रभु के द्वार पर धर्मराज स्थित बना रहता है। सूर्य और चन्द्रमा भी प्रभु के भय (नियम) में चलते हैं और करोड़ों कोस चलते रहने के बाद भी उनके चलने का कोई अन्त नहीं जाना जा सकता। बड़े-बड़े सिद्ध, बुद्ध, देवता और योगी भी उसी के भय में विचरण करते हैं और उसी के भय में आकाश भी चारों ओर फैला हुआ बना रहता है। महाबली शूरवीर एवं योद्धा भी उसी के भय में हैं और जीवों के झुण्डों के झुण्ड उसी के भय रूपी नियम में जन्मते मरते रहते हैं। सब के माथे पर उसके भय (नियम) का लेख लिखा हुआ है। हे नानक, निर्भय केवल वही एक निराकार सत्य-स्वरूप परमात्मा है।। १ ।। महला १ ।। हे नानक, अन्य कितने ही धूल के तुल्य राम आदि हो गुज़रे। कितने ही कृष्ण, उनकी कथाएं और वेदों के कितने ही विचार प्रचलित रहे हैं। कितने ही नाचने वाले भिखारी हैं जो प्राप्तियों के लिए बार-बार एक ही ताल पर नृत्य कर रहें हैं। सौदेबाज़ लोग बाज़ार में आकर अपने स्वार्थ के लिए अनेकों प्रकार के नाटक करते हैं। राजा, रानियां आदि सभी अपने स्वार्थ के लिए माँगते हुए ऊँचा-नीचा, उलटा-पुलटा कथन करते रहते हैं। लाखों रुपयों के कानों मे डालने के गहने और लाखों रुपयों के हार जिस शरीर पर धारण किए जाते हैं हे नानक, वह शरीर अन्ततः

से तन होवहि छार ॥ गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥ करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥ एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥ जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥ ४ ॥ सलोक मः १ ॥ घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥ गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥ सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥ नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥ १ ॥ मः १ ॥ वाइनि चेले नचनि गुर ॥ पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥ उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥ रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥ गावनि सीता राजे राम ॥ निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥ जा का कीआ सगल जहानु ॥ सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥ भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥ सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ नदरी करमि लघाए पारि ॥ कोलू चरखा चकी चकु ॥ थल वारोले बहुतु अनंतु ॥ लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥ सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥ नानक भउदिआ गणत न अंत ॥ बंधन बंधि भवाए सोइ ॥ पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥ नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥ उडि न जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु मन का चाउ ॥ नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥ जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥ जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥ ५ ॥ सलोक मः १ ॥ मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी सुंनि

राख हो जाता है। ज्ञान की प्राप्ति बातों से ही नहीं होती; उसका कथन करना तो लोहे जैसा कठिन कार्य हैं। यदि प्रभु की कृपा हो जाए तभी उसे पाया जाता है अन्यथा उसको पाने के लिए चालाकी और ज़ोर-ज़बरदस्ती केवल ख्वार करने वाले ही साबित होते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। यदि वह अपनी कृपादृष्टि करे तो उस कृपादृष्टि के फलस्वरूप सच्चा गुरु प्राप्त होता है। यह जीव अनेकों जन्मों तक भटकता रहा है और तब कहीं सच्चे गुरु के माध्यम से यह शब्द को सुन सका है। हे संसार के सभी लोगो, इस बात को ध्यान से सुन लो कि सच्चे गुरु जैसा दाता अन्य कोई नहीं है। जिन्होंने अपने अन्तर्मन से अहंकार को समाप्त कर दिया है वे ही सच्चे गुरु से मिले हैं और उन्होंने ही सत्य को प्राप्त किया है। वह सच्चा गुरु ही है जिसने सत्य के रहस्य को सही रूप से समझाया है।। ४ ।। श्लोक महला १ ।। समय की घड़ियों को रास लीला में नाचने वाली गोपियां समझो और प्रहरों को गोपाल कन्हैया अर्थात कृष्ण समझो। चन्द्र और सूर्य अर्थात समय को वह समझो जिनके स्वांग रासलीला वाले भरते हैं तथा हवा, पानी, अग्नि आदि तत्वों को इस लीला के पात्रों के गहने समझो। सारी धरती नाटक करने वालों का साज-सामान है और संसार का सारा व्यवहार और झमेले नाटक के पात्रों का परस्पर लेन-देन और बातचीत हैं। इस सब में स्थायी कुछ भी नहीं है इसलिए हे नानक, ज्ञान से विहीन लोग इस नाटक के धोखे में आकर लुट जाते हैं और समय उन्हें खा जाता है तथा यह दैवी नाटक चलता रहता है।। १ ।। महला १ ।। उपर्युक्त नाटक को न समझने वाले संसारी लोग झूठे लोगों के चेले बनकर अपनी-अपनी डफली बजाते रहते हैं और उनके तथाकथित गुरु उन्हीं की धुन पर नाचते हुए अनेकों प्रकार से पैरों को हिलाते हैं और सिरों को घुमाते रहते हैं। वे अपने सिर के बालों में बदनामी की उड़ती हुई धूल को डालते रहते हैं और लोग उनके व्यवहार को देखकर उन पर हँसते हुए अपने अपने घरों की राह लेते है। वास्तव में उनका सांसारिक सुरताल को पूरा करना मात्र अपने स्वार्थ अर्थात रोटियों के लिए ही होता है। इसीलिए वे अपने आप को पछाड़ पछाड़ कर धरती पर भी लोटते रहते हैं। इस प्रकार के बने हुए कई कृष्ण और कई गोपियां गायन- वादन करते रहते हैं तथा इसी प्रकार से अनेकों सीता और राम बनकर भी गाते रहते है। केवल निर्भय निराकार प्रभु का नाम ही सच्चा है जिसने सारे संसार को पैदा किया और धारण कर रखा है। सेवक ऐसे ही निर्भय प्रभु की वन्दना करते हैं और अपने शुभ कर्मों का चढ़ावा उसे अर्पण करते हैं। ऐसे प्रेम से भरे हुए मन वाले सेवकों की जीवन रूपी रात्रि सुहानी और रसदायक हो जाती है। सिक्खों ने गुरु के विचारों के माध्यम से यही सीखा है कि प्रभु की कृपादृष्टि करवाने वाले कर्म ही जीव को संसार-सागर से पार उतारते हैं। अनेकों ही कोल्हू, चरखा, चक्कियां और चाक है। इसी प्रकार रेगिस्तान के बवण्डर भी अनन्त हैं। अनेकों ही लट्टू, मथानियां और अन्न निकालने वाले यन्त्र हैं। अनेकों पक्षी घूमते फिरते रहते हैं और कभी भी थकते नहीं। कईयों को शूल पर चढ़ा कर भी घुमाया जाता है। हे नानक, इस प्रकार घूमते रहने वालों की गिनती का भी कोई अन्त नहीं है। बन्धनों में बाँधकर वही दौड़ाता रहता है और अपने किए हुए कर्मों के कारण ही सभी नाचते फिरते हैं। संसार की माया में खुश होकर जो नाच-नाचकर यहाँ केवल हंसते रहते हैं, यहाँ से चलते समय वे ही रोते हैं। इस जीवन से उड़ उड़ कर भागा नहीं जा सकता और न ही कोई सिध्दि प्राप्त कर सकता है। नाचना कूदना तो केवल मन का ही चाव और खेल है। हे नानक, जिनके मन में उस प्रभु का भय है वास्तविक प्रेम उन्हीं के मन में होता है।।२।। पउड़ी।। हे प्रभु, तू निराकार नाम वाला है और तेरे नाम का सुमिरन करने से व्यक्ति को नर्क में नहीं जाना पड़ता। यह प्राण और शरीर सब उसी प्रभु का है और जो भी पास में है बाँट कर खाना चाहिए तथा किसी को देने के बारे में कुछ कहना भी नहीं चाहिए क्योंकि देकर जताने से दिए हुए का प्रभाव गँवा लिया जाता है। यदि अपना भला चाहते हो तो पुण्य-कार्य करते हुए भी अपने आप को नीच एवं निम्न कोटि का ही जनवाओ। यदि बुढ़ापे के रंग जरा वर्ण अर्थात सफेद बालों को जो कि बुढ़ापे की निशानी है किसी तरीके से हटा भी दो तो बुढ़ापा किसी अन्य वेश में फिर भी आ जाएगा। जब जीवन रूपी घड़े में उम्र का पानी पूरा भर जाता है तो फिर कोई भी यहाँ बना नहीं रहता अर्थात मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।। ५ ।। श्लोक महला १ ।। मुसलमान अपनी शरियत (नियम कानून) की प्रशंसा करते हैं और उसे बार-बार पढ़कर उस पर विचार करते है। वे यह मानते हैं कि बन्दा वही है जो खुदा का दीदार करने के लिए शरियत की बन्दिश में बना रहता है। हिन्दु अपने शास्त्रों के माध्यम से उस अपरंपर एवं सुन्दर प्रभु की प्रशंसा करते हैं। वे तीर्थों पर स्नान करते हैं, मूर्तियों की पूजा अर्चना करते हैं तथा चन्दन आदि के सुगन्धित पदार्थों का प्रयोग करते है। योगी लोग निर्विकल्प अर्थात शून्य समाधि में जाकर

धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥ सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥ सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥ ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥ सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥ १ ॥ मः १ ॥ मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥ घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥ नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥ ६ ॥ सलोक मः १ ॥ हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥ हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥ १ ॥ महला २ ॥ हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥ हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥ हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥ हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥ किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥ नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सेव कीती

आराधना करते हैं और परमात्मा को अलख-अलख नाम से पुकारते हैं। उनके अनुसार वह प्रभु सूक्ष्म स्वरूप वाला है जिस पर माया की कालिख का प्रभाव नहीं पड़ता और यह सारा दृष्ट जगत उस प्रभु का ही शरीर है। त्यागी व्यक्तियों के मन में संतुष्टि पैदा होती है जब वे किसी ज़रूरतमन्द को कुछ देने का विचार करते हैं। परन्तु देने के साथ ही साथ वे अन्तर्मन में परमात्मा से तो हज़ारों गुना अधिक माँग भी लेते हैं और इधर दानी के रूप में संसार भी उनके गुण गाता है। दूसरी ओर संसार में अनेकों चोर, व्याभिचारी, झूठे और विकारों से युक्त बुरे लोग भी हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो की हुई कमाई को समाप्त करके यहाँ से चल पड़ते हैं। क्या वास्तव में उन्होंने यहां कोई कमाई की भी है? हे प्रभु, जल, स्थल, अनेकों पुरियों में रहने वाले लोगों के द्वारा जो भी कहा जाता है तू उस सब को जानता है और उन्हें केवल तेरा ही आसरा है। हे नानक, भक्तजनों को तो केवल तेरे (प्रभु के) गुणानुवाद की ही भूख है क्योंकि तेरा सच्चा नाम ही उनका आसरा और आधार है। वे गुणवान लोगों के चरणों की धूलि बनकर सदैव दिन-रात आनन्द में लीन बने रहते हैं।। १ ।। महला १ ।। मुसलमान को दबा देने के बाद जब उसका शरीर मिट्टी हो जाता है तो वह मिट्टी भी कभी कुम्हार के पास आ जाती है। कुम्हार उस मिट्टी के बर्तन बनाता और ईंटें भी बनाता है। जब वह बर्तन और ईंटे अर्थात वह मिट्टी भट्ठे में आ पड़ती है तो वह भी जलती हुई पुकार लगाती प्रतीत होती है। वह बेचारी भी जलती हुई रोती है क्योंकि उस पर भी अंगारे गिरते पड़ते रहते हैं। हे नानक, जिस प्रभु ने जगत की रचना की है वही इसके वास्तविक रहस्य को जानता है। इसीलिए यह मानना कि जलाया हुआ शरीर दोज़क में जाता है और मिट्टी में दफ़न किया हुआ जन्नत में जाता है व्यर्थ है।।२।। पउड़ी।। हे भाईयों, सच्चे गुरु के बिना किसी ने भी प्रभु को प्राप्त नहीं किया है। प्रभु ने अपने आप को सच्चे गुरु में स्थित किया हुआ है यह बात पूर्ण रूप से प्रकट में कह दी गई है। यदि सच्चा गुरु जिसने अपने अन्दर के मोह को दूर कर लिया है किसी व्यक्ति को मिल जाए तो वह व्यक्ति मायावी बन्धनों से मुक्त हो जाता है। सभी विचारों में से उत्तम विचार यही है कि जिस व्यक्ति ने सच के साथ चित्त जोड़ लिया है उसे जगत् का जीवन वह प्रभु मिल गया है।। ६ ।। श्लोक महला १ ।। यह जीव अहम् में ही इस संसार में आता है और परमात्मा से अपने आप को अलग समझ कर अहंकार में ही यहां से चला जाता है। अहंकार के वशीभूत होकर ही यह किसी योनि में जन्म लेता है और अहंकार में ही मर जाता है। संसार में इसका सब कुछ देना लेना अहंकार में ही होता है। अहंकार में ही यह सब कमाई करता है और अहंकार के वशीभूत होकर ही सब गँवा देता है। यह जीव तो सत्याचरण करने वाला भी अपने अहंकार के कारण ही है और झूठ का आसरा भी यह अहंकार में ही लेता है। अहंकार-वश होकर यह स्वयं को परमात्मा से अलग समझने का भ्रम पालते हुए अपने किए हुए पाप और पुण्यों की गणना करता रहता है। अहंकार वश ही यह कभी नर्क और कभी स्वर्ग की यात्रा करता है। इसका हँसना रोना भी अहंकार का ही एक रूप है। अहंकार के कारण ही जीव का मन पापों की मैल से मलीन हो जाता है और फिर कभी-कभी अच्छे कामों के द्वारा यह उस मैल को धो भी लेता है। अहंकार में ही यह मानव जाति की मानवता रूपी उच्च श्रेणी से निचली श्रेणी में आ जाता है। अहंकार में पड़ा हुआ ही यह कभी भूत बन जाता है और कभी अपने आप को सयाने लोगों की तरह प्रस्तुत करता है। अहंकार में रहते हुए इसे मोक्ष और मुक्ति की कोई खोज ख़बर नहीं रहती। अपने अहंकार में पड़े रहकर अर्थात अपने आप को परमात्मा से अलग मानकर यह भ्रमों में उलझा रहता है। अहंकार में ग्रस्त जीव ही बार-बार अनेक रूपों में जन्म लेता रहता है। वास्तव में यदि अहंकार के वास्तविक रूप को समझ लिया जाए तभी प्रभु के द्वार के बारे में पता चलता है अन्यथा ज्ञान से विहीन व्यक्ति तो केवल वाद-विवादों में ही उलझे रहते हैं। प्रभु के हुकम के अन्तर्गत ही व्यक्ति अपने कर्मों के लेख अपने लिए लिखता है और जैसा हम अपने आप को देखते हैं अर्थात अपने प्रति जैसी धारणा हम रखते हैं उसी के अनुरूप हम प्रभु के हुकुम की व्याख्या अपने लिए कर लेते हैं।। १ ।। महला २ ।। अहंकार ही हमारा व्यक्तित्व है और इसी के अन्तर्गत हम कर्म करते हैं। अहंकार के अन्तर्गत काम करते हुए यही बड़ा बन्धन है कि जीव बार-बार योनियों में पड़े रहते हैं। दरअसल यह अहंकार अथवा अपने आप को अलग समझने की भावना पैदा कहाँ से होती है और कौन सा ऐसा उपाय है जिससे यह भावना दूर होती है। यह अलगाव की भावना पैदा करने वाला भी परमात्मा है और जीव अपने ही पैदा किए हुए संस्कारों के अनुसार पुनः वैसे ही कर्म करने के लिए दौड़ते रहते हैं। अहंकार एक बहुत ही दीर्घ रोग है परन्तु इसका इलाज भी इसी में अन्तर्निहित है अर्थात जब अहंकार को अपने व्यक्तित्व का आभूषण न मानकर उसे व्यक्तित्व के रोग के रूप में देखने की समझ बुद्धि आ जाए तो यही रोग वास्तव में औषधि बन जाता है। जीव पर यदि प्रभु की कृपा हो जाए तो वह शब्द-गुरु के अनुरूप अपना आचरण बना लेता है और नानक का कथन है कि हे लोगो, ध्यान से सुन लो इस उपाय से ही अहंकार का यह दुख दूर हो सकता है।। २ ।। पउड़ी ।। संतोषी व्यक्ति ही सेवा करते हैं और वे ही

संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥ ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥ ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥ तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ वडिआई वडा पाइआ ॥ ७ ॥ सलोक मः १ ॥ पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥ दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥ अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥ सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥ नानक जंत उपाइ कै संमाले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥ सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥ १ ॥ मः १ ॥ लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥ लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥ जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥ मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥ विचि दुनीआ काहे आइआ ॥ ८ ॥ सलोकु मः १ ॥ पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥ १ ॥ मः १ ॥ लिखि लिखि पड़िआ ॥ तेता कड़िआ ॥ बहु तीरथ भविआ ॥ तेतो लविआ ॥ बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥ सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥ अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥ बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥ बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥ मोनि विगूता ॥ किउ जागै गुर बिनु सूता ॥ पग उपेताणा ॥ अपणा कीआ कमाणा ॥ अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥ मूरखि अंधै पति गवाई ॥ विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥ रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥ अंधु न

केवल और केवल एक सत्य का ही सुमिरन करते रहते हैं। वे बुरे रास्ते पर अपना पैर नहीं रखते और अच्छे आचरण के माध्यम से कर्त्तव्य कर्म करते रहते हैं। वे दुनियां के झूठे बन्धनों को तोड़ देते हैं और आहार भी कम ही खाते हैं। हे प्रभु, जब तेरी बहुत कृपा हो जाए तो तू सदैव और अधिक दान देता रहता है। इस प्रकार उस बड़े के बड़प्पन का गुणगान करने से ही उस बड़े को पा लिया जाता है।। ७ ।। श्लोक महला १ ।। हे नानक, वह प्रभु ही जानता है कि पुरुषों, वृक्षों, तीर्थों, तटों, बादलों और क्षेत्रों की कितनी गिनती है। वह परमात्मा ही जानता है कि कितने द्वीप, लोक, मण्डल, खण्ड एवं ब्रह्माण्ड हैं। कितने प्रकार के अण्डज, जेरज, उद्‌भिज और स्वेदज जीव है। वह प्रभु ही जानता है कि कितने प्रकार के समुद्र, पर्वत और जीव-जन्तु हैं। हे नानक, वह जीवों को पैदा करके सब का पालन-पोषण भी करता है। जिस कर्ता ने यह सब रचना की है वह ही इसकी चिन्ता भी करता है। जिस कर्ता ने यह संसार उत्पन्न किया है वही इसकी देखभाल की चिन्ता भी करता है। उस भले प्रभु को ही प्रणाम है। वही कल्याणकारी है और उसी का दरबार निरन्तर बना रहने वाला है। हे नानक, उस प्रभु के सच्चे नाम के बिना टीका और जनेऊ आदि का प्रपंच व्यर्थ है।। १ ।। महला १।। लाखों ही नेकियां, अच्छाइयां और लाखों ही स्वीकृत पुण्य कार्य हैं, लाखों प्रकार की तीर्थो पर तपस्याएं की जाती हैं और जंगलों मे सहज योग का अभ्यास किया जाता है। लाखों ही संग्रामों में जूझने वाले शूरवीर हैं जो युद्ध-क्षेत्र में ही प्राण त्यागते हैं। स्मृतियों में सुरति लीन करके लाखों ही ज्ञानी-ध्यानी होते हैं जो पुराणों आदि का भी पाठ करते हैं। परन्तु इन सब से कुछ नहीं होता। हे नानक, जिस कर्ता प्रभु ने संसार पैदा किया है और जीवों का जन्म लेना एवं मरना निर्धारित किया है उस प्रभु की कृपा ही वास्तव में सच्चा प्रतीक चिन्ह है जिसे प्राप्त किया जाना चाहिए; क्योंकि अन्य सब चतुराईयां झूठी ही हैं।। २ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, एक तू ही सच्चा साहिब है जिसने सब ओर सत्य ही सत्य व्याप्त कर रखा है। जिसे तू देता है वही सत्य प्राप्त करता है और प्राप्त करने के बाद ऐसे व्यक्ति सत्य पर आचरण करते हैं। जिन्हें सच्चा गुरु मिल जाता है उन्हें स्थिरता और सत्य की स्थिति प्राप्त होती है और सच्चा गुरु उनके हृदय में सत्य को बसा देता है। मूर्ख व्यक्ति इस सत्य की महिमा को नहीं जानते और मनमुख बनकर जीवन गँवा देते हैं। ऐसे व्यक्तियों को संसार में जन्म लेने का कोई लाभ नहीं होता।। ८ ।। श्लोक महला १।। बेशक गाड़ियों में लदी हुई सभी पुस्तकें पढ़ ली जाएं और बेशक इतनी पुस्तकें पढ़ ली जाएं कि उनके अच्छे खासे ढेर लगाए जा सकें; बेशक इतनी पुस्तकें पढ़ ली जाएं कि बड़ी-बड़ी नावों और खड्डों को उनसे भरा जा सकें; पढ़ाई करते हुए ही बेशक सालों साल व्यतीत हो जाएं और सालों के सभी महीने ही पढ़ाई की जाए; सारी उम्र भी बेशक पढ़ते हुए गुज़ार दी जाए और बेशक जीवन के सभी श्वास पढ़ाई करते हुए ही व्यतीत किए जाएं तो भी प्रभु के समक्ष इनमें से कुछ भी स्वीकृत नहीं होता। हे नानक, प्रभु के दरबार में केवल प्रभु के गुणानुवाद की एक बात ही स्वीकार की जाती है; बाकी सब कुछ तो अहंकार बढ़ाने के लिए सिर खपाना ही है।। १ ।। महला १ ।। जो जितना ही लिखता-पढ़ता है वह उतना ही जला-भुना रहता है। जो अनेकों तीर्थो पर भ्रमण करते हैं वे उतना ही ज्यादा अपने किए हुए का बखान करते हैं। जो अनेकों देश धारण करते हैं वे केवल अपने शरीर को ही कष्ट देते हैं। हे जीव, यह सब तेरे किए हुए ही प्रपंच हैं इसलिए अब तू ही अपने किए हुए का फल भोग। जो अन्न न खाकर व्रत आदि रखते हैं उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होता ब्लकि वे विभिन्न प्रकार के स्वादों से भी वंचित रह जाते हैं। द्वैतभाव में पड़कर व्यक्ति बहुत दुख ही प्राप्त करता है। व्यक्ति वस्त्र नहीं पहनता है और दिन-रात के प्रकोप को व्यर्थ ही सहन करता है। मौन धारण करके जीव ख्वार ही होता है और वह माया ही निद्रा में सोया हुआ भला गुरु के बिना कैसे जग सकता है। व्यक्ति नंगे पाँव घूमता है तो उसे अपने किए हुए इस प्रपंच का फल जरूर ही मिलता है अर्थात वह ठोकर आदि खाता ही रहता है। जो अभक्ष्य मल-मूत्र आदि का सेवन करते हैं उन्होंने सिर पर राख ही डाल रखी है। ऐसे अन्धे मूर्खो ने तो मानव होने का अपना सम्मान ही खो दिया है। प्रभु-नाम के बिना दरअसल कहीं भी जगह नहीं मिलेगी। लोग जंगलों और शमशानों में साधना करने के नाम पर रहते हैं परन्तु ये अन्धे उस प्रभु को नहीं पहचानते

जाणै फिरि पछुताणी ॥ सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ नानक नदरि करे सो पाए ॥ आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भगत तेरैमनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥ नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे ॥ इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥ हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥ तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ॥ ९ ॥ सलोकु मः १ ॥ कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥ कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हहारु ॥ कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥ नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥ १ ॥ मः १ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥ कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥ दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥ सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥ सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥ सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ ॥ मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥ १० ॥ सलोकु मः १ ॥ सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥ भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥ नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि

और इन्हें फिर पछताना पड़ता है। जो सच्चे गुरु से मिलता है वही सुख प्राप्त करता है। वही प्रभु के नाम को मन में बसाता है। हे नानक, प्रभु जिस पर कृपादृष्टि करता है वही उसे प्राप्त करता है, वही आशाओं और चिन्ताओं से विहीन होकर शब्द के माध्यम से अपने अहंकार को जलाकर नष्ट कर देता है।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तेरे मन को तेरे भक्त ही प्यारे लगते हैं जो तेरे द्वार पर शोभायमान हैं और तेरी कीर्ति का गान कर रहे हैं। हे नानक, अभागे और कृपा विहीन लोग भटकते फिरते हैं और उन्हें प्रभु के द्वार पर कोई आसरा नहीं मिलता। कई ऐसे हैं जो अपनी वास्तविकता को नहीं समझते और प्रभु नाम आदि उनके पास कुछ नहीं होता परन्तु फिर भी वे अपनी गिनती बड़े लोगों में करवाते हैं। हे प्रभु, मैं तो तथाकथित नीच जाति (कोटि) का व्यक्ति हूँ, अन्य सब तो अपने आप को उत्तम श्रेणी का व्यक्ति कहलाते हैं। मैं तो केवल उन्हीं का संग-साथ माँगता हूँ जो तेरा सुमिरन करते रहते हैं।। ६ ।। श्लोक महला १ ।। यह सारा संसार झूठा और छलावा है। इसमें राजा प्रजा सभी छल रूप ही हैं। राजाओं के मण्डप और महल सभी छल ही हैं और इनमें बसने वाले राजा भी क्षण भंगुर छल रूप ही हैं। सोना-चाँदी और इस सोने-चाँदी को पहनने वाले भी भ्रम रूप ही हैं। यह शरीर कपड़े और रूप सौन्दर्य सब झूठा ही है। पति, पत्नी आदि सारे सम्बन्ध छलावा ही हैं। कई इन्हीं सम्बन्धों में फंसे हुए ख्वार हो रहे हैं। इस छलावे में फंसे हुए जीवों का तो अब इस छ्ल से ही मोह पैदा हो गया है और इसीलिए अपना पैदा करने वाला कर्ता-प्रभु भूल गया है। इस संसार में भला किससे मित्रता की जाए क्योंकि यह सारा जगत ही विनाशशील है। यह छल रूपी जगत ही सब को प्रिय लग रहा है और इसीलिए यह छलावा ही झुण्डों के झुण्ड जीवों को डुबो दे रहा है। नानक, हे प्रभु, तेरे आगे अरदास करता है कि तुझ से विहीन होकर यह संसार केवल झूठ मात्र ही बनकर रह गया है।। १ ।। महला १ ।। जगत की सत्यता तभी समझ आ सकती है जब सत्य स्वरूप परमात्मा व्यक्ति के हृदय में टिक जाए। ऐसी अवस्था में झूठ और छल की मैल उतर जाती है और उसका शरीर भी धुलकर साफ हो जाता है। सत्य की समझ तो तभी आती है जब वास्तव में व्यक्ति उस सत्य के साथ प्रेमपूर्वक जुड़ता है। तभी उस प्रभु का नाम सुनकर उसका मन खिल उठता है और उसे सांसारिक छलावों से मुक्ति का द्वार दिखाई पड़ जाता है। सत्य की पहचान तो तभी आती है जब व्यक्ति जीवन की वास्तविक युक्ति को जान जाता है अर्थात काया रूपी धरती का शोधन करके वह उसमें प्रभु-नाम का बीज बो देता है। सत्य को तो तब जाना जाता है जब व्यक्ति सच्चे गुरु के पास से सच्ची शिक्षा लेता है तथा जीवों पर दया करने की युक्ति सीखता है और ज़रूरतमन्दों को यथाशक्ति दान बाँटकर पुण्य कमाता है। व्यक्ति के अन्दर क्रियाशील सत्य-प्रभु की पहचान तो तभी पड़ती है जब व्यक्ति अपने अन्तर्मन के तीर्थ पर अपना निवास बना ले। अपने सच्चे गुरु से उपदेश लेकर अपने आत्म-तीर्थ पर ही निवास बनाए रखे। नानक विनम्रतापूर्वक अरदास करता है कि जिनके हृदय में अर्थात जिनके पल्ले में सत्य प्रभु बना रहता है उनके सभी कष्टों की औषधि वह स्वयं बन जाता है और वह उनके सारे विकारों और पापों को धोकर बाहर निकाल देता है।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, मेरा दान तो सत्य को जानने वाले लोगों की चरण-धूलि ही है; यदि यह मुझे मिल जाए तो मैं माथे पर लगाऊँ। झूठे लालचों को छोड़ दिया जाना चाहिए और एकाग्र मन से केवल अदृष्ट प्रभु का ही सुमिरन करना चाहिए। व्यक्ति फल वैसा ही पाता है जैसा वह कर्म करता है। यदि पूर्व से ही भाग्यलेख लिखा हुआ हो तो ऐसे सत्य को जानने वाले शान्त पुरुषों की चरण-धूलि प्राप्त होती है। अल्पबुद्धि होने के कारण व्यक्ति अपनी की हुई सेवा को भी व्यर्थ बना लेता है।। १० ।। श्लोक महला १ ।। संसार के लोगों के मन से सत्य की भावना समाप्त हो गई है और कलियुग की कालिमा के कारण लोग वेताल (भूत, प्रेत जैसे) बन गए हैं। जिन्होंने धर्म का बीज बोया था वे उसकी महिमा और सम्मान अपने साथ ही ले गए हैं। अब तो धर्म का बीज दो टुकड़े होकर दाल बन गया है अर्थात अब विघटनकारी रुचियां प्रबल हो उठी हैं इसलिए यह दाल बना हुआ बीज भला अब कैसे उग सकता है। यदि यह अपने सम्पूर्ण रूप में एकत्व धारण करे तथा फिर वायुमण्डल भी अनुकूल हो तब यह पनप सकता है। हे नानक, जैसे कपड़े को रंग देने के योग्य बनाने के लिए पहले भट्ठी पर चढ़ाया जाता है उसी तरह मन को प्रभु के भय रूपी भट्ठी में डाल कर विनम्रता रूपी रसायन में से निकाला जाए तभी उस पर प्रभु-नाम का रंग चढ़ता है। हे नानक, यदि इस प्रकार मन को प्रभु रूपी भट्ठी में रंगा जाए तो छल आदि इसके पास भी नहीं आ पाता।। १ ।। महला १।। जगत में लोभ और पाप क्रमशः राजा और वज़ीर है और इनका मुख्य नौकर (चौधरी) झूठ है। इन्हीं के दरबार में काम नायब है और इसी से ही परामर्श लिया जाता है अर्थात यही बड़ा सलाहकार है।

बहि करे बीचारु ॥ अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥ गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥ ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥ मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥ धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥ जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥ सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥ पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥ २ ॥ मः १ ॥ वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥ सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥ अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥ एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥ इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥ गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥ सहजे ही सचि समाइआ ॥ ११ ॥ सलोकु मः १ ॥ दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥ १ ॥ बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ २ ॥ मः २ ॥ जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥ खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥ सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥ ३ ॥ मः २ ॥ एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥ आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥ ४ ॥ मः १ ॥ कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥ गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥ जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥ ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥ पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ मुहि चलै सु

इनकी प्रजा अन्धी और ज्ञानविहीन है और तृष्णा रूपी अग्नि के ही पीछे लगी हुई है। ज्ञानवान कहलाने वाले उपदेशक लोग अपने स्वार्थ के लिए नाचते, वाद्य बजाते और अनेकों प्रकार के वेश धारण करते हैं। वे ऊँचे सुर में युद्धों का वर्णन पुकार पुकार कर करते हैं और योद्धागणों की बहादुरी की कथाएं सुनाते और उनकी व्याख्या करते हैं। ये मूर्ख लोग ही अपना पाण्डित्य दिखाते हैं और अपनी हिकमत और हुज्जत के बल पर धन-माल इकट्ठा करने में लीन बने रहते हैं। अपने आपको धार्मिक समझने वाले धर्म का काम करते हुए दिखाई देते हैं परन्तु धर्म के फल को गँवा लेते हैं क्योंकि धार्मिक कार्यों के बदले में स्वार्थी बनकर वे अपनी मुक्ति माँगते हैं अर्थात निष्काम कर्म नहीं करते। कई ऐसे भी हैं जो बहुत संयमी हैं और अपने आप को यति कहलाते हैं परन्तु यति होने की युक्ति को वे नहीं जानते और देखा देखी ही अपने घर-बार को छोड़ बैठते हैं। पाप, काम और लोभ से प्रभावित हर व्यक्ति अपने आप को पूर्ण और सर्वगुण सम्पन्न समझता है। कोई भी अपनी कमी को स्वीकार नहीं करता परन्तु हे नानक, वही व्यक्ति तौल अर्थात परख में पूरा उतरता है जिसे तौलते समय यदि तराजू के दूसरी ओर परमात्मा की ओर से मिले सम्मान रूपी बाट को डाला जाए तो वह पूरा उतरे। प्रभु दरबार में सम्मान पाने वाला ही सभी कमियों से विहीन होता है।। २ ।। महला १ ।। हे नानक, जो बात होती है उसी की सब ओर चर्चा होती है अर्थात यह बात जानी मानी है कि सच्चा प्रभु स्वयं सब की संभाल कर रहा है। सभी जीव अपने-अपने हिसाब से इस संसार में एक दूसरे से आगे बढ़ने के लिए छलांगे लगाते हैं परन्तु जो कर्ता-प्रभु करता है वही होता है। प्रभु के दरबार में किसी की जाति का या किसी के बल का रुआब नहीं चल सकता क्योंकि वहाँ सभी ऐसे जीव हैं जो एक दूसरे के लिए अजनबी हैं। वहाँ उन्हीं लोगों को भला माना जाता है जिनको कर्मों का लेखा-जोखा होने पर वहाँ सम्मान प्राप्त होता है।। ३ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, जिन लोगों पर तूने पहले से ही कृपा की हुई है उन्होंने ही अपने मालिक प्रभु का सुमिरन किया है। इन जीवों के वश में कुछ भी नहीं है। यह तू ही है जिसने विभिन्न रूप रंगों वाला यह जगत् पैदा किया है। कई जीवों को तू अपने साथ मिलाए रहता है पर कईयों को तू अपने से दूर करके ख्वार करता रहता है। जिसको तुमने स्वयं समझाया है उसी ने ही गुरु की कृपा से प्रभु को जान लिया है। ऐसे व्यक्ति स्वाभाविक ही सत्य रूपी प्रभु में लीन हो जाते हैं।। ११।। श्लोक महला १ ।। जीव के लिए, सुखों से रोगी हो चले व्यक्ति के लिए दुख तो औषधि है क्योंकि जब सुख होता है तो परमात्मा याद नहीं रहता। हे प्रभु, तू ही कर्ता है मैं कुछ भी कर सकने वाला नहीं हूँ क्योंकि जो मैं करता हूँ वह नहीं होता। सारे संसार में बसे हुए हे प्रभु, मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ। तेरे ओर-छोर को समझा नहीं जा सकता।। १ ।। रहाउ।। जीवों की सभी जातियों, प्रजातियों में तेरी ही ज्योति है और तेरी ज्योति में ही सभी जीव स्थित हैं। तू बिना किसी खास कला-कौशल के इन सब में पूर्ण रूप से व्याप्त है। तू ही सच्चा मालिक है और तेरा गुणानुवाद सुन्दर है; जिसने यह किया है वह संसार सागर से पार हो गया है। हे नानक, यह सब उस कर्ता-प्रभु की लीला है कि उसने जो कुछ करना है वह किए जा रहा है।। २ ।। महला २।। योगियों का जीवन मार्ग ज्ञान प्राप्ति का जीवन मार्ग माना जाता है तथा ब्राह्मणों का जीवन मार्ग वेद-वेदांग का अध्ययन आदि करना परम्परा से माना जाता है। क्षत्रियों का जीवन-मार्ग अभी तक शौर्य का मार्ग माना जाता है तथा चली आ रही परम्परा से दूसरों की सेवा करना शूद्र का जीवन-मार्ग माना जा रहा है। सबका जीवन मार्ग वास्तव में एक ही जीवन मार्ग है अर्थात सब कार्य सबने करने है यदि कोई इस रहस्य को जान लेता है (और सबको समान भाव से देखता है) तो नानक उसका दास है और वही व्यक्ति कालिमा विहीन प्रभु का रूप है।।३।। महला२।। सभी देवताओं का कृष्ण अर्थात परमात्मा एक ही है। वही परमात्मा देवताओं के देवत्व की आत्मा है। आत्मा ही प्रभु है यदि कोई इस रहस्य को जानता है तो नानक उसका दास है और ऐसा व्यक्ति ही निरंजन रूप परमात्मा है।। ४ ।। महला १।। घड़े में पानी बँधा रहकर टिका रहता है परन्तु पानी के बिना घड़ा भी बन नहीं सकता। इसी प्रकार ज्ञान का बांधा हुआ मन टिका रहता है परन्तु ज्ञान स्वयं गुरु के बिना नहीं हो सकता।।५।पउड़ी।। यदि पढ़ा-लिखा व्यक्ति बुरे कर्मों वाला हो जाए तो अनपढ़ व्यक्ति को घबराना नहीं चाहिए क्योंकि यदि अनपढ़ व्यक्ति भी नेक है तो उसे मार नहीं सहनी पड़ती। मनुष्य जिस प्रकार का अच्छा बुरा कर्म करता है वह उसी प्रकार का प्रसिद्ध हो जाता है इसलिए जीवन में ऐसा खेल नहीं खेलना चाहिए जिससे प्रभु-दरबार में जीवन की बाज़ी को हार जाया जाए। वास्तविक रूप से पढ़ा लिखा कौन है और अनपढ़ कौन है इस तथ्य का विचार तो प्रभु के दरबार में ही होता है अर्थात अच्छे कर्म वाला पढ़ा लिखा और बुरे कर्म वाला तथाकथित पढ़ा-लिखा भी अनपढ़ ही माना जाता है। जो अपने मुँह की तरफ देखकर ही आगे चलता है अर्थात जो मनमुख है

अगै मारीऐ ॥ १२ ॥ सलोकु मः १ ॥ नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥ १ ॥ मः १ ॥ साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ सभु को सचि समावै ॥ रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥ नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥ जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ॥ पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥ नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ चारे वेद होए सचिआर ॥ पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥ भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखंतरु पाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥ जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥ खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥ १३ ॥ सलोकु मः १ ॥ सिंमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत ॥ मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥ अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥ सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥ १ ॥ मः १ ॥ पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ गलि माला तिलकु लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥ सभि फोकट निसचउ करमं ॥ कहु नानक निहचउ धिआवै ॥ विणु सतिगुर वाट न पावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥ मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥ हुकम

वह आगे जाकर अवश्य मार खाता है।। १ ।। श्लोक महला १ ।। हे नानक, सभी योनियों में सुमेरु पर्वत जैसा शिरोमणि यह मानव शरीर एक रथ है और एक इसका रथवान है। प्रत्येक युग में इस शरीर रूपी रथ और इसका स्वभाव रथवान बदलते रहते है; इस रहस्य को ज्ञानवान व्यक्ति ही बूझते हैं। सतियुग में मानव शरीर रूपी रथ संतोष का रथ कहा जाता है और इसका रथवान धर्म होता है। त्रेता युग में मानव शरीर संयम (यतीत्व) का रथ समझा जाता है और इसका रथवान बल माना जाता है। द्वापर युग में मानव शरीर तपस्या रूपी रथ बन जाता है और इसका रथवान ऊँचा आचरण होता है। कलियुग में मानव शरीर तृष्णा रूपी अग्नि का रथ बना हुआ है और अब इस रथ का रथवाहक (सारथी) झूठ बना हुआ है।। १ ।। महला १ ।। सामवेद कहता है कि सतियुग में जगत के मालिक का रंग सफेद है और उस समय सब कुछ सत्य में ही लीन बना रहता था और अन्ततः सत्य में ही समा जाता था। ऋगवेद कहता है कि वह प्रभु सब में श्रेष्ट रूप में उसी प्रकार व्याप्त है जैसे राम का नाम इष्ट देवों में श्रेष्ठ और सूर्य को देवताओं में श्रेष्ठ माना जाता है। प्रभु का नाम लेने से सभी पाप दूर होते थे और हे नानक, इस प्रकार लोग मुक्ति प्राप्त करते थे। यजुर्वेद के समय कृष्ण कन्हैया यादव हुआ जिसने अपने बल से चन्द्रावली नामक गोपी का हरण किया। वह अपनी प्रिय गोपी सत्यभामा के लिए इन्द्र के बाग से पारिजात वृक्ष भी ले आया और वृन्दावन में आनन्द उपभोग किया। कलियुग में अथर्ववेद प्रमुख हो गया है और अब संसार के मालिक का नाम खुदा और अल्लाह हो गया है। लोगों ने नीले वस्त्रों के कपड़े पहने हुए हैं और अब तुर्कों और पठानों का राज हो गया है। इस प्रकार चारों वेद अलग अलग स्वभावों और धर्मो को बताकर सच्चे बन जाते हैं। जो लोग उन्हें पढ़ते और उनका चिन्तन करते हैं उनको कर्मों के गुणों का पता चल जाता है। परन्तु हे नानक, वास्तविक तथ्य तो यह है कि यदि व्यक्ति प्रेम से प्रभु की भक्ति करके फिर भी अपने आप को विनम्र और नीचा ही कहलाए तभी वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है।। २ ।। पउड़ी ।। मैं ऐसे सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसके मिलने से प्रभु का सुमिरन किया जाता है। परमात्मा का सुमिरन और उपदेश रूपी ज्ञान-अंजन मिलने से ज्ञान की आँखों से इस संसार के विभिन्न रूपों को वास्तविक रूप में देखा जाता है। जो प्रभु को छोड़कर अन्यों के पीछे लगे रहते हैं जीवन के ऐसे व्यापारी डूब जाते हैं। कोई बिरला ही इस बात पर विचार करता है कि सच्चा गुरु वास्तव में पार ले जाने वाला जहाज है। वही कृपा करके जीव को संसार सागर से पार उतार देता है।। १३ ।। श्लोक महला १ ।। सेमल का वृक्ष तीर की तरह सीधा, लम्बा और रुई के समान लगे हुए फल वाला होता है। ऐसे लम्बे ऊँचे, सुन्दर और फलयुक्त वृक्ष को देखकर यदि कोई उसके पास आता है तो वही जानता है कि उसे कितनी निराशा होती है। विशाल दिखने वाले इस पेड़ के फल फीके, फूल स्वादहीन होते हैं और इसके पत्ते भी किसी काम नहीं आते। हे नानक, सभी नैतिक नियमों का तत्व सार यही है कि सभी गुणों से मीठा गुण विनम्रता ही है; उसी को ही व्यवहार में लाना चाहिए। व्यक्ति यदि विनम्र होते भी हैं तो वे अपने स्वार्थ के लिए ही होते हैं दूसरे की भलाई और सम्मान के लिए कोई भी विनम्र नहीं होता। परन्तु तराजू पर रख कर भी यदि तौला जाए तो विनम्र बना रहने वाला ही भारी नज़र आता है। कभी-कभी अपराधी व्यक्ति भी दुगना झुकता है- जैसे मृग पर निशाना साधने वाला झुक कर ही उसको मारता है। इसीलिए मात्र सिर झुकाने से क्या होगा यदि हृदय अशुद्ध एवं छल से भरा हुआ है।। महला १।। विद्वान पण्डित पुस्तकें पढ़कर संध्या समय वाद-विवाद करते हैं। वे शिलाओं को पूजते हैं और बगुलों की तरह समाधि लगाते हैं। झूठ बोल बोलकर लोहे को ही सोने का बना हुआ गहना बताते हैं। तीन पंक्तियों वाली गायत्री को दिन में तीन बार विचारपूर्वक कहते हैं। गले में माला डालकर माथे पर तिलक लगाए रहते हैं। धोती और सिर पर उसका पल्लू धारण किए रहते हैं। यदि वास्तव में ऐसे व्यक्ति ब्रह्म कर्म अर्थात प्रभु के आचरण को जानते होते तो उन्हें ये सब कर्म निश्चित् तौर से व्यर्थ कर्म ही दिखाई पड़ते। नानक कथन करता है कि यदि निश्चयपूर्वक प्रभु का सुमिरन किया जाए तो यही ठीक है परन्तु सच्चे गुरु के बिना इस ओर चलने का मार्ग दिखाई नहीं पड़ता।।२।। पउड़ी।। यह शरीर रूपी कपड़ा बहुत सुन्दर है परन्तु इसे इस दुनियां में ही छोड़कर जाना होता है। अच्छा और बुरा सब अपना ही किया हुआ है जिसका फल आप ही प्राप्त करना पड़ेगा।

कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥ करि अउगण पछोतावणा ॥ १४ ॥ सलोकु मः १ ॥ दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥ एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥ धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥ १ ॥ मः १ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥ कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥ नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥ २ ॥ मः १ ॥ नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥ दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥ ३ ॥ मः १ ॥ तगु न इंद्री तगु न नारी ॥ भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥ तगु न पैरी तगु न हथी ॥ तगु न जिहवा तगु न अखी ॥ वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे अवरा घतै ॥ लै भाड़ि करे वीआहु ॥ कढि कागलु दसे राहु ॥ सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥ मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥ सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइसी ॥ हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥ खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥ ता दरगह पैधा जाइसी ॥ १५ ॥ सलोक मः १ ॥ गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥ अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥ छोडीले पाखंडा ॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥ १ ॥ मः १ ॥ माणस खाणे करहि निवाज ॥ छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥ तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥ उन्हा भि आवहि ओई साद ॥ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥ हथि छुरी जगत

ज़िन्होंने मन को अच्छे न लगने वाले काम और आज्ञाएं की हैं उन्हें परलोक में बहुत कठिन रास्तों से गुज़रना पड़ेगा। जब यह जीव नंगा ही नर्क की ओर चलता है तो दिखने में बहुत ही भयानक और कुरूप लगता है। अवगुणों वाले काम करके अन्त में पछताना ही पड़ता है।। १४ ।। श्लोक महला १ ।। यदि दया की कपास हो, संतोष का सूत हो, काम वासना पर नियन्त्रण की गाँठ लगी हो तथा सत्य और दृढ़ता रूपी बटाई उस पर की गई हो, तो हे पाण्डे, यह आत्मा का जनेऊ यदि तुम्हारे पास है तो ला उसे मुझे पहना दे। यह न तो टूटेगा, न मैला होगा, न जलेगा और न ही नष्ट होगा। हे नानक, वे व्यक्ति धन्य हैं जो इसे हृदय में धारण करते हैं। साधारण जनेऊ चार कौड़ियों के मोल का है जिसे बुना जाता है और चौके में बैठकर जिसे पहन लिया जाता है। इस कार्य के लिए ब्राह्मण गुरु हो जाता है और वह कई शिक्षाएं कान में कहता है। परन्तु इसे पहनने वाला प्राणी जब मर जाता है तो यह जनेऊ भी शरीर से झड़कर अलग हो जाता है तथा पहनने वाला प्राणी जनेऊ विहीन होकर ही यहाँ से चला जाता है।। १ ।। महला १ ।। लाखों किस्म की चोरियां, लाखों व्याभिचार, लाखों झूठ और लाखों गालियाँ; लाखों प्रकार की ठगी और गुप्त रखे हुए पाप सदैव दिन-रात जीव के साथ ही लगे बने रहते हैं। साधारण जनेऊ का धागा कपास को कात कर बनाया जाता है और ब्राह्मण घर में आकर इसकी बटाई करता है। बकरे को मार कर, पका कर इस जनेऊ की रस्म वाले दिन सबको खाया खिलाया जाता है और सभी कहते हैं कि जनेऊ पहनाया जाए। जब यह जनेऊ पुराना हो जाता है तो इसे फेंक दिया जाता है तथा दूसरा पहन लिया जाता है। परन्तु हे नानक, यदि धागे में (दया, संतोष, सच्चाई, दृढ़ता आदि का) बल हो तो फिर यह आत्मा का धागा कभी टूटता नहीं।। २ ।। महला १ ।। प्रभु के गुणानुवाद के फलस्वरूप ही सच्चा धागा प्राप्त होता है और प्रभु-नाम को मन से मान लेने पर ही उसके पक्केपन का गुण और शोभा पैदा होते हैं। यही धागा प्रभु के दरबार में पहना जाता है और यह पवित्र धागा फिर कभी टूटता नहीं।। ३ ।। महला १ ।। स्त्री और पुरुष के भोग विलास के अंगों पर तो कोई भी धागा (बन्धन) नहीं डाला जाता और इसीलिए हर रोज़ उसके मुँह पर धिक्कार का थूक थूका जाता है अर्थात भोगविलास में पड़े हुए व्यक्ति रोज़ अपमानित ही होते रहते हैं। इसी प्रकार पाँव, हाथ, जीभ और आँख पर भी व्यक्ति कोई धागा (नियन्त्रण) नहीं रखता। दरअसल पहनाने वाला पण्डित भी स्वयं उपर्युक्त सच्चे जनेऊ से विहीन बना भटकता रहता है परन्तु अन्य लोगों को जनेऊ बना बना कर पहनाता चला जाता है। लोगों से भाड़ा लेकर तो वह लोगों के विवाह आदि करवाता है और पोथी-पत्रा आदि निकालकर उन्हें सही रास्ता बताने का उपक्रम करता है। हे लोगो, इस हैरानी वाली बात को सुनो और देखो कि जिस व्यक्ति का मन पूर्ण रूप से अन्धा है उसने अपना नाम सुजान अर्थात बुद्धिमान रखा हुआ है।। ४ ।। पउड़ी ।। जब प्रभु दयालु होता है तो कृपा करके वही सारे कार्य करवाता है। जिसको हुकम का रहस्य समझाकर मनवा लेता है वही सेवक उसकी सेवा करता है। उसके हुकम को मानने से व्यक्ति उसके दरबार में स्वीकृत होता है और तभी वह उस मालिक के दरबार में स्थान पाता है। जब जीव वह करता है जो परमात्मा रूपी मालिक को अच्छा लगता है तो उसे मन से माँगा हुआ फल भी प्राप्त हो जाता है। तभी व्यक्ति उसके दरबार में सम्मान सहित पुरस्कृत होकर जाता है।। १५ ।। श्लोक महला १ ।। एक ओर तो गाय और ब्राह्मण पर तुम लोग कर लगाते हो और दूसरी ओर गाय के गोबर से लीपी हुई धरती को पवित्र मानते हो। यह गोबर आदि से संसार-सागर से पार नहीं हुआ जा सकता। एक ओर तो धोती, टीका और माला का प्रयोग करते हो परन्तु दूसरी ओर मुसलमानों के हाथों से जिन्हें तुम मलेच्छ कहते हो धन-धान्य लेकर भी खाते हो। हे भाई, अपने घर के अन्दर बैठकर तो पूजा-पाठ करते हो परन्तु दिखावे के लिए इस्लामी पुस्तकों (कुरान शरीफ आदि) का भी पाठ करते हो तथा बाहरी व्यवहार भी मुसलमानों जैसा ही रखते हो। यह पाखण्ड छोड़ क्यों नहीं देते। प्रभु का नाम लेने से ही संसार-सागर से तैरा जा सकता है।। १ ।। महला १।। इन्सान को खा जाने वाले तो नमाज़ पढ़ते हैं तथा दूसरी ओर अत्याचार की छुरी चलाने वाले गले में धागा (जनेऊ) पहने घूमते हैं। उनके घर पर ब्राह्मण शंखनाद भी करते हैं और उन्हें भी वैसा ही आनन्द मिलता है जैसे अन्य संसारी लोगों को खाना-पीना स्वादिष्ट लगता है। दरअसल सब के पास झूठ और दिखावे की ही रास पूँजी है और झूठा ही सबका कार्य-व्यापार है। लोग तो झूठ बोलकर ही खाना खाते हैं और अपना गुज़ारा चला रहे हैं। लज्जा और धर्म का ठिकाना तो अब बहुत दूर रह गया है क्योंकि हे नानक, सब ओर पूर्ण रूप से झूठ ही व्याप्त है। लोगों ने माथे पर टीका लगा रखा है और नीचे कमर के साथ लम्बी लांग वाली धोती पहन रखी है। ऐसे लोग हाथों में छुरी पकड़े हुए हैं और ये सारे संसार पर

कासाई ॥ नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥ दे कै चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥ वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥ १६ ॥ सलोकु मः १ ॥ जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥ वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥ सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥ सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥ चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि हारिआ ॥ १७ ॥ सलोकु मः १ ॥ जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥ गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥ जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥ पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥ नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥ कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥ नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥ २ ॥ मः १ ॥ सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥ जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥ खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि ॥ नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ

अत्याचार करने वाले लोग हैं। ये नीले वस्त्र पहनकर मुसलमान हाकिमों की दृष्टि में स्वीकृत होने का दिखावा करते हैं क्योंकि एक ओर तो पुराण आदि के माध्यम से पूजा-पाठ करते हैं तथा दूसरी ओर मलच्छों से धन-धान्य लेकर खाते पीते हैं। एक ओर तो ये अरबी और उसमें लिखे हुए कलमें को न बोलने योग्य मानते हैं परन्तु उसी कलमें के उच्चारण के साथ हलाल किया हुआ बकरा यह खा जाते हैं। दूसरी ओर यही लोग यह ढोंग करते हुए आम व्यक्ति को अपने चौके में नही जाने देते ताकि वह चौका अपवित्र न हो जाए। पवित्रता को ध्यान में रखते हुए यह चौके के चारों ओर एक लकीर भी खींच देते हैं और ये झूठे और अपवित्र लोग अपने को और चौके को पवित्र समझते हुए उस चौके में बैठते हैं। वहाँ बैठकर ये पवित्रता का ऐसा स्वांग भरते हैं और कहते हैं कि कोई भी किसी भी सूरत में हमारा स्पर्श न करे क्योंकि ऐसा करने से हमारा यह अन्न अपवित्र और खराब हो जाएगा। खराब शरीर से ये बुराई तो किए जाते हैं परन्तु इनका मन जूठन का चुल्लू भी हमेशा भरे रहता है। नानक का कथन है कि सत्य और यथार्थ का सुमिरन किया जाना चाहिए क्योंकि यह सत्य तब ही प्राप्त होता है यदि वास्तव में हृदय शुद्ध, साफ और स्पष्ट हो।। २।। पउड़ी ।। उस प्रभु के ध्यान में यह सब कुछ है। वह सबको देख रहा है और अपनी दृष्टि के अन्तर्गत ही वह सबको चलाता चल रहा है। वह स्वयं ही अच्छे कार्य करवाता है और स्वयं ही बड़प्पन प्रदान करता है। बड़े से भी बड़ा वह प्रभु अपनी इस विशाल सृष्टि के जीवों को अपने अपने काम धन्धे में लगाए रहता है। यदि वह अपनी नज़र को उल्टा कर ले तो बड़े बड़े सुल्तानों को भी घास के तिनके के समान हल्का कर देता है; वे ऐसे हो जाते हैं कि द्वार द्वार पर भीख माँगने पर भी उन्हें भीख प्राप्त नहीं होती।। १६ ।। श्लोक महला १।। यदि कोई चोर किसी के घर में चोरी करे और घर के लूट के माल को वह अपने पित्रों को अर्पण करे अर्थात उनका श्राद्ध आदि करे तो परलोक में वह चोरी की चीज़ वास्तव में पहचानी जाएगी (क्योकि जिनके घर से माल चोरी गया है उनके घर के लोग भी तो परलोक में ही होंगें) और इस प्रकार चोरी करने वाले के पित्र भी वहाँ बैठे-बैठे चोर हो जाएंगें। न्याय करने वाला प्रभु न्याय यह करेगा कि यह माल जिस बिचौलिए ब्राह्मण ने अर्पण कराया है उस बिचौलिए के तो हाथ ही काट दिए जाएंगे। हे नानक, परलोक में तो वही मिलेगा जो व्यक्ति ने मेहनत मशक्कत से कमाया है और स्वयं लोगों को दिया और बाँटा हैं।। १ ।। महला १ ।। जिस प्रकार स्त्री को मासिक धर्म बार बार आता ही रहता है इसी प्रकार जूठन बने हुए व्यक्ति के मुँह में सदैव लोगों का छोड़ा हुआ जूठा पदार्थ ही पड़ा रहता है और वह सदैव ख्वार होता रहता है। शुद्ध और पवित्र वे नहीं कहे जाते जो केवल अपना शरीर धोकर आ बैठते हैं; हे नानक, वास्तव में पवित्र वही हैं जिनके मन में प्रभु बसा हुआ है।। २ ।। पउड़ी।। शानदार काठियों से सजाए हुए घोड़े जो पवन के वेग से चलते हैं और जिनके पास हर रंग में सजाए हुए हरम (रनिवास) भी हैं; जिनके पास बड़े-बड़े महल मण्डप फैली हुई जगह पर विद्यमान हैं और जो हर मन भाती मौज-मस्ती करते रहते हैं; यदि वे प्रभु को नहीं बूझते समझते तो वे इन्हीं विषय-विकारों में थके और टूटे हुए पड़े रहते हैं। वे आज्ञाएं देकर खाते मौज करते रहते हैं और अपने बड़प्पन में ही मस्त बने हुए मौत को भी भुला देते हैं। लेकिन समय के साथ जवानी हार जाती है और बुढ़ापा आ पहुँचता है।। १७ ।। श्लोक महला१।। यदि सूतक रूपी अपवित्रता को माना जाए तब तो सबमें ही अपवित्रता है। गोबर और लकड़ी के अन्दर भी कीड़ा होता है जिसे काम में लाने पर वह मर जाता है। जितने अन्न के दाने हैं उनमें से कोई भी प्राण से विहीन नहीं है। दरअसल सब से पहले तो जल भी एक जीव है जो जीव होने के नाते दूसरों को भी जीवन-दान देकर हरा-भरा रखता है। मारने मरने की अपवित्रता से कैसे बचा जा सकता है क्योंकि यह अपवित्रता तो खाने पीने की सभी वस्तुओं के माध्यम से हमारी रसोई में भी बनी रहती हैं। हे नानक, यह अपवित्रता इस प्रकार समाप्त नहीं होती और इसे ज्ञान के माध्यम से इसके बारे में सोच समझ कर ही इसे धोकर समाप्त किया जा सकता है।। १ ।। महला १ ।। लोभ मन की अपवित्रता है और झूठ जीभ की अपवित्रता है। आँखों की अपवित्रता परायी स्त्री को वासनापूर्ण होकर देखना, पराये धन और पराये रूप पर आँख गड़ाना है। कानों की अपवित्रता कानों से चुगली सुनना है। हे नानक, ऐसे व्यक्ति वास्तव में बँधे हुए यमपुरी को जाते हैं।। महला १ ।। दरअसल सब प्रकार की अपवित्रता तो भ्रम है जो एक को होने से छूत की तरह दूसरे को भी जा लगता है। जन्म लेना और मरना यह तो परमात्मा का हुकम है और उसके अन्तर्गत ही जीव इस संसार में आता जाता है। खाने पीने के पदार्थ जो प्रभु ने रोज़ी के रूप में दिए है सभी पवित्र हैं। हे नानक, जिन गुरमुखों ने इस रहस्य को समझ लिया है

तिन्हा सूतकु नाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥ सहि मेले ता नदरी आईआ ॥ जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥ करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥ १८ ॥ सलोकु मः १ ॥ पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥ सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥ अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥ १ ॥ मः १ ॥ भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥ भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥ भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥ सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥ भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥ नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥ जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥ नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥ मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥ १९ ॥ सलोकु मः १ ॥ नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥ फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥ फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥ फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ॥ तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ॥ रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ॥ दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥ दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥

उनको किसी प्रकार की भी अपवित्रता नही लगती।। ३ ।। पउड़ी।। सच्चे गुरु को बड़ा मानते हुए उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए क्योंकि उसमें बहुत ऊँचे और बड़े गुण हैं। परमात्मा यदि उससे मिला दे तभी उसके गुण नज़र आते हैं। जो प्रभु को अच्छा लग जाए उसी के मन में ये गुण बस जाते हैं। परमात्मा की आज्ञा में सच्चा गुरु सेवक के माथे पर अपना आशीर्वाद का हाथ रखता है और व्यक्ति के अन्दर से बुराईयों को मार कर निकाल दिया जाता है। परमात्मा प्रसन्न होता है तो नौनिधियां प्राप्त हो जाती हैं।। १८ ।। श्लोक महला १ ।। व्यक्ति पहले स्वयं पवित्र होकर पवित्र चौके पर आ बैठता है। यजमान उसके सामने वह भोजन लाकर रख देता है जिसको किसी ने भी स्पर्श करके अपवित्र नहीं किया। खाने वाला पवित्र होकर उस पवित्र भोजन को खाता है और साथ ही साथ श्लोक पढ़ने लग जाता है। खाने वाला (ब्राह्मण) इस पवित्र भोजन को गन्दे स्थान अर्थात पेट में डाल लेता है। गन्दे स्थान पर डाल देने का दोष भला किस पर लगेगा? अन्न, पानी, अग्नि, नमक सभी उत्तम और पवित्र पदार्थ हैं; पाँचवां घी भी पवित्र है जिसे इनमें मिला कर बड़ा पवित्र भोजन तैयार होता है। परन्तु इस पवित्र भोजन की जब पापी व्यक्ति से संगति हो जाती है तो गन्दा हो जाने के कारण इस पर लोग थूकते हैं। हे नानक, इस बात को इस प्रकार समझ लेना चाहिए कि जिस मुख से जीव प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करते और उसी मुँह से स्वादिष्ट भोजन करते हैं उस मुँह पर भी इसी प्रकार थूका जाता है।। १ ।। महला १ ।। स्त्री से व्यक्ति जन्म लेता है, स्त्री में ही जीव का गर्भाधान होता है और जीव के शरीर की रचना होती है। स्त्री के माध्यम से ही सभी सम्बन्ध बनते हैं और स्त्री से ही जगत् उत्पत्ति का मार्ग चलता रहता है। स्त्री के मर जाने पर पुनः अन्य स्त्री की ही खोज की जाती है और स्त्री से ही अन्य सबके साथ सम्बन्ध स्थापित हैं। स्त्री को भला बुरा क्यों कहा जाए जिसने बड़े-बड़े राजाओं को भी जन्म दिया है। स्त्री से ही स्त्री उत्पन्न होती है और संसार में कोई भी जीव स्त्री के बिना पैदा नहीं हो सकता। केवल एक सच्चा प्रभु ही है जो स्त्री से उत्पन्न न होकर स्वयं अपने आप से उत्पन्न हुआ है। जो अपने मुख से सदैव प्रभु के गुण गाता है उसका भाग्य बहुत ही सुन्दर होता है। हे नानक, प्रभु के गुण गाने वाला मुख ही उस सच्चे प्रभु के दरबार में सुन्दर लगता है।। २ ।। पउड़ी।। इस संसार में सभी मेरी-मेरी में लगे हुए हैं; जिसको यह ममत्व नहीं है उसे कोई छाँट कर अलग दिखाए अर्थात कोई बिरला ही है जिसे यह मैं मेरी का रोग नहीं लगा हुआ है। हर व्यक्ति अपने अपने कर्म करता है और किए हुए कर्मों का हिसाब उसे खुद ही देना पड़ता है। जब इस संसार में सदा के लिए बने ही नहीं रहना तो फिर भला क्यों अहंकार में पड़कर दुखी हुआ जाए। विद्यावान होकर यही समझ अपनानी चाहिए कि किसी को भी बुरा न कहा जाए। मूर्ख व्यक्ति के साथ कभी भी वाद-विवाद या झगड़ा नहीं करना चाहिए।। १६ ।। श्लोक महला १।। हे नानक, जो व्यक्ति हल्की बातें करता है उसका तन मन दोनों रूखे और फीके हो जाते हैं अर्थात प्रेम विहीन हो जाते हैं। हल्का और फीका बोलने वाला व्यक्ति लोगों में बदज़बान के तौर पर ही प्रसिद्ध हो जाता है और उस घटिया व्यक्ति के लिए लोग घटिया शब्दों से ही उसकी महिमा बताते हैं। ऐसा रूखा व्यक्ति प्रभु दरबार से भी बाहर फेंक दिया जाता है और लोग उसके मुँह पर थूकते हैं अर्थात उसे धिक्कारते हैं। बोलचाल और व्यवहार में फीका या घटिया व्यक्ति मूर्ख कहा जाता है और ऐसे व्यक्ति को जूतों की मार ही पड़ती है।। १ ।। महला १ ।। जो लोग मन से तो झूठे हैं परन्तु बाहर झूठा सम्मान बनाएं रखते हैं और संसार में कोई न कोई ढोंग बनाए रहते हैं वे बेशक अड़सठ तीर्थों पर जाकर स्नान करें, उनके मन की कपट की मैल कभी भी नहीं उतरती। जिन व्यक्तियों का अन्तर्मन प्रेम और कोमलता से पूर्ण है परन्तु बाहर से वे कुछ कठोर भी दिखाई देते हैं वे वैसे ही हैं जैसे व्यक्ति ने नीचे तो रेशम पहन रखा हो परन्तु ऊपर से ऊबड़-खाबड़ दिखाई देने वाली गुदड़ी धारण कर रखी हो। ये व्यक्ति इस संसार में भले व्यक्ति हैं जो दिखावा नहीं करते। उनका प्रेम प्रभु के साथ लगा हुआ है और सदा उस प्रभु का दर्शन करने के विचार से वे ओत-प्रोत बने रहते हैं; प्रभु-प्रेम में ही वे चुप्पी भी धारण किए रहते हैं अर्थात प्रभु-प्रेम में ही मस्त रहते हैं। वे सच्चे मालिक प्रभु के बिना किसी के भी मोहताज नहीं होते। जीवन के मार्ग पर चलते हुए ऐसे व्यक्ति परमात्मा के द्वार से ही प्रभु-नाम का भोजन माँगते हैं और जब वह प्रभु देता है तभी उसको खाते हैं। वे यह जानते हैं कि प्रभु स्वयं ही निर्णय करने वाला और स्वयं ही अपनी कलम से सबका लेखा लिखने वाला है। अच्छे बुरे सब प्रकार के जीव उसके द्वार पर ही परस्पर मिलते जुलते हैं। वह प्रभु सबसे उनके किए हुए कर्मों का लेखा माँगता है और पापी व्यक्तियों को इस प्रकार पेर देता है जैसे तेल निकालने के लिए बीजों को पेरा जाता है।

२ ॥ पउड़ी ॥ आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥ देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥ जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥ आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥ २० ॥ सलोकु महला २ ॥ एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥ चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥ आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥ १ ॥ महला २ ॥ सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥ नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥ जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥ जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥ किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥ २१ ॥ सलोकु महला २ ॥ चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥ आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥ नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥ १ ॥ महला २ ॥ जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ बीजे बिखु मंगै अंम्रितु वेखहु एहु निआउ ॥ २ ॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥ वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥ साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥ ३ ॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥ पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥ ४ ॥ महला २ ॥ होइ इआणा करे कंमु आणि न सकै रासि ॥ जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥ हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥ खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥ वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥ जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥ नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥ २२ ॥ सलोकु महला २ ॥ एह

२ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु तूने ही सृष्टि की रचना की है और स्वयं ही तूने अपनी शक्ति उसमें डाल दी है। कच्चे-पक्के अर्थात बुरे-भले सभी जीवों को पैदा करके तू ही सबकी संभाल कर रहा है। जो भी इस संसार में आया है उसे यहाँ से जाना ही है और सबकी बारी आती जा रही है। हे भाई, यह जीव और प्राण जिस साहिब प्रभु ने दिए हैं उसे भला मन से क्योंकर भुलाया जाए। व्यक्ति को यह चाहिए कि वह दूसरों पर निर्भर न होकर अपने हाथों से ही अपने काम को सँवार (कर) ले।। २० ।। श्लोक महला २ ।। यह भला कैसा प्रेम है जो एक प्रभु के साथ भी दिखाया जा रहा है और साथ ही साथ अन्य पदार्थों और इष्टों में भी प्रदर्शित किया जा रहा है। हे नानक, वास्तविक प्रेमी तो वही जाना जाता है जो सदैव अपने इष्ट प्रभु के ध्यान में ही लीन बना रहे। यदि व्यक्ति अपने लिए हो रहे अच्छे काम को देखकर अपने प्रभु को अच्छा-अच्छा कहे और बुरे व्यवहार और काम को देखकर अपने इष्ट मित्र प्रभु को बुरा-भला कहने लग जाए तो हे नानक, ऐसा व्यक्ति सच्चा मित्र, आशिक और प्रेमी नही कहा जा सकता क्योंकि उसका प्यार पूरा हिसाब-किताब के अन्दर ही किया हुआ प्यार होता है।। १ ।। महला २ ।। जो व्यक्ति अपने मालिक के सामने कभी तो सिर झुकाकर प्रणाम करता है और कभी उसकी जवाब-तलबी करने में भी नहीं हिचकिचाता, ऐसा व्यक्ति तो जीवन-मार्ग पर से मूल रूप से ही भटका हुआ है। हे नानक, सिर झुकाना और प्रभु के किए हुए कार्यो में दोष निकालना दोनों ही झूठे व्यवहार के प्रतीक हैं; इन दोनों में से कोई भी बात मालिक के दरबार में स्वीकृत नहीं होती।। २ ।। जिसका सुमिरन करने से सुख प्राप्त होता है उस प्रभु को सदा याद रखना चाहिए। जब किए हुए कार्य का फल स्वयं ही भुगतना है तो फिर किसी प्रकार का भी बुरा आचरण नहीं करना चाहिए। दूरदृष्टि से भी यदि देखा जाए तो बुरा काम भूल कर भी नहीं करना चाहिए। कुछ इस प्रकार का आचरण बनाना चाहिए जिससे उस साहिब प्रभु से प्रीति न टूटे। मानव जन्म में निश्चित रूप से कुछ लाभ वाली मेहनत मशक्कत की जानी चाहिए।। २१ ।। श्लोक महला २ ।। यदि कोई सेवक नौकरी भी करे और साथ ही साथ अपने मालिक के सामने अभिमानपूर्ण आचरण भी करे तथा मालिक के सामने ज्यादा बक बक करे तो वह सेवक मालिक की खुशी प्राप्त नहीं कर सकता। व्यक्ति अपने अभिमान को मिटाकर यदि मालिक की सेवा करे तब ही उसे कुछ मान-सम्मान प्राप्त हो सकता है। हे नानक, तब वह सेवक उस मालिक प्रभु से मिल जाता है जिसकी सेवा में वह लगा हुआ होता है। जो अभिमान को त्याग कर सेवा में लगा रहता है वही मालिक के द्वार पर स्वीकृत होता है।। १ ।। महला २ ।। व्यक्ति के मन में जो होता है वही प्रकट होकर मुँह से बाहर आता है अर्थात जो उसकी नीयत में होता है वैसा ही उसको फल मिलता है। यह कैसा न्याय है कि व्यक्ति बोला तो विष है परन्तु चाहता है कि उसे अमृत फल प्राप्त हो।।२।। महला २।। जैसे छोटे बच्चे के साथ मित्रता पूरी नहीं निभती उसी प्रकार अनजान मन रूपी बच्चे के पीछे चल कर कोई भी काम पूरा नहीं होता। बच्चा तो जैसा चाहेगा वैसा ही वह कार्य-क्लाप करेगा इस बात को बेशक कोई परखना चाहे तो परख ले। किसी वस्तु में कोई वस्तु तभी जा सकती है यदि उसमें पड़ी हुई पहली वस्तु को बाहर निकाला जाए अर्थात प्रभु से प्रेम करने के लिए यह आवश्यक है कि मन के दुर्गुणों को पहले बाहर निकाला जाए। मालिक प्रभु के सामने व्यक्ति के हुकम नही चलते अपितु उसके सामने तो अरदास करना ही उचित होता है। हे नानक, धोखाधड़ी से कार्य-व्यापार करने से अपने साथ भी धोखा ही होता है; केवल प्रभु गुणानुवाद से ही व्यक्ति का हृदय खिला रहता है।। ३ ।। महला २ ।। अबोध बच्चे के साथ मित्रता और अपने से बड़े व्यक्ति के साथ स्नेह पानी में खींची हुई लकीर के समान है जिसका कोई भी निशान नहीं रहता।। ४ ।। महला २ ।। अबोध बालक यदि कोई कार्य करे भी तो उस कार्य को पूरा नहीं कर पाता। एकाध बार हो सकता है वह अच्छा काम भी कर दे परन्तु दूसरे काम को वह बिगाड़ ही देगा।। ५ ।। पउड़ी।। जो नौकर अपने मालिक की इच्छानुसार चले उसे ही समझा जा सकता है कि वह मालिक प्रभु का नौकर है। एक ओर तो वह बहुत सम्मान भी पाता है दूसरी ओर वह मालिक से वेतन भी दुगना ले लेता है। परन्तु यदि सेवक अपने मालिक की बराबरी का यत्न करता है तो उसे लज्जित तो होना ही पड़ता है साथ ही साथ वह अपनी तनख्वाह भी गँवा लेता है और मुँह पर जूते भी खाता है। हे नानक, जिस प्रभु का दिया हुआ खाया जाता है सदैव उसी का आभार मानना चाहिए। मालिक का हुकम नहीं चलता। उसके सामने तो अरदास करना ही शोभा देता है।। २२ ।। श्लोक महला २ ।। यदि यह

किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥ १ ॥ महला २ ॥ एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार ॥ आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥ २३ ॥ सलोकु मः १ ॥ आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥ इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥ इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥ तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥ १ ॥ महला २ ॥ आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥ तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥ किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ॥ सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि ॥ साई कार कमावणी धुरि छोडी तिंनै पाइ ॥ नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥ सो करे जि तिसै रजाइ ॥ २४ ॥ १ ॥ सुधु

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु आसा बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ ॥ आसा स्री कबीर जीउ ॥ गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ ॥ कवन काजि जगु उपजै बिनसै कहहु मोहि समझाइआ ॥ १ ॥ देव करहु दइआ मोहि मारगि लावहु जितु भै बंधन तूटै ॥ जनम मरन दुख फेड़ करम सुख जीअ जनम ते छूटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ फास बंध नही फारै अरु मन सुंनि न लूके ॥ आपा पदु निरबाणु न चीन्हिआ इन बिधि अभिउ न चूके ॥ २ ॥ कही न उपजै उपजी जाणै भाव अभाव बिहूणा ॥ उदै असत की मन बुधि नासी तउ सदा सहजि लिव लीणा ॥ ३ ॥ जिउ प्रतिबिंबु बिंब कउ मिली है उदक कुंभु बिगराना ॥ कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुंनि समानां

कहा जाए कि मैंने अपनी मेहनत से यह वस्तु प्राप्त कर ली है तो उसे मालिक की तरफ से की हुई अनुकंपा नही कहा जा सकता। हे नानक, उसकी ओर से कृपापूर्वक दिया हुआ पदार्थ तो वह है जो वह प्रसन्न होकर देता है अर्थात कर्म करते जाना चाहिए परन्तु फल को उस प्रभु की कृपा ही मानना चाहिए।। १ ।। महला २ ।। यह भला कैसी चाकरी है जिसमें सेवक के मन से मालिक का भय ही दूर नहीं होता और उससे वास्तविक प्रेम नहीं बनता। हे नानक, सच्चा सेवक तो उसी को कहा जाता है जो अपने मालिक के साथ ही एकाकार हो कर उसमें लीन हो जाता है।। २ ।। पउड़ी।। हे नानक, उस प्रभु के ओर-छोर का पता नहीं लगाया जा सकता। वह स्वयं ही जीवों को उत्पन्न करता है और स्वयं ही उन्हें मार भी देता है। अनेकों ही जीवों के गले में अनेकों प्रकार के बन्धन (जंजीर) पड़े हुए हैं और अनेकों ही घोड़ों पर सवारी करते हुए मौज ले रहे हैं। यह सब कुछ प्रभु स्वयं ही कर रहा है इसलिए मैं किसके आगे इस भेद-भाव के लिए पुकार (शिकायत) लगा सकता हूँ। हे नानक, जिस कर्ता-प्रभु ने सृष्टि की रचना की है वही उसका भरण-पोषण कर रहा है।। २३ ।। श्लोक महला १ ।। जीव रूपी सारे बर्तन उस प्रभु ने ही बनाए हैं और स्वयं ही दुख-सुख रूपी पदार्थों से वह इन बर्तनों को भरता है। कई बर्तनों में तो दूध पड़ा रहता है और कई चूल्हे पर चढ़े हुए ही तपते रहते हैं अर्थात कष्ट सहारते रहते हैं। कई तो सुन्दर बिस्तरों पर आराम से सोते हैं और कई उनके सेवक बनकर उनके पास ही खड़े रहते हैं। परन्तु हे नानक, जिन पर वह कृपा-दृष्टि करता है उन्हीं के जीवन को वह सँवार देता है।। १ ।। महला २ ।। प्रभु स्वयं ही सृष्टि को उत्पन्न करता है और उसे सजाता सँवारता भी है। इस सृष्टि में जीवों को उत्पन्न करके उनकी देखभाल भी करता है, उन्हें स्थापित भी करता है और स्वयं ही उन्हें उखाड़ भी देता है। हे नानक, उस प्रभु के बिना किसी अन्य के सामने कुछ भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह स्वयं ही सब कुछ करने में समर्थ है।। २ ।। पउड़ी ।। उस महान प्रभु के गुणों और बड़प्पन के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। वह स्वयं ही कर्ता है, कुदरत को बनाने वाला है, जीवों पर कृपा करने वाला है और सब जीवों को (शारीरिक और आध्यात्मिक) रोज़ी-रोटी देने वाला है। सभी जीव वही कार्य करते हैं जो उस प्रभु ने शुरु से ही उनके हिस्से में करना लिखा होता है। हे नानक, उस एक प्रभु की शरण के बिना अन्य कोई भी स्थान (सुरक्षित) नहीं है। जैसा वह चाहता है वैसा ही वह कर लेता है।। २४ ।। १ ।। शुद्ध।।

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।
रागु आसा वाणी भक्तों की ।। कबीर जी नामदेव जी रविदास जी।।

आसा स्री कबीर जी। मैं अपने गुरु के चरणों में पड़कर विनती करता और पूछता हूँ कि यह संसार किस कारण से पैदा होता है और क्यों विनष्ट हो जाता है।।१।। हे गुरुदेव, मुझ पर दया करके मुझे जीवन के सच्चे मार्ग पर डाल दो जिससे मेरे मन के भय और बन्धन टूट जाएं। मेरा जन्म-मरण का भय समाप्त करके मुझ पर सुख की कृपा करो जिससे मेरा जीव बार-बार योनियों में आने से छूट जाए।।१।। रहाउ।। मेरा मन माया के फन्दे के बन्धन को तोड़ता नहीं है और न ही यह शून्य में लीन होता है। इस मन ने अपने वासना रहित मूल स्वरूप की पहचान नहीं की और इन्हीं कारणों से इसका कोरापन दूर नहीं होता।। २ ।। मेरा मन होने अथवा न होने के अन्तर को न समझता हुआ इस संसार को जो प्रभु-विहीन होकर टिक नहीं सकता उसे सदैव प्रभु से अलग ही समझता रहा है। परन्तु अब मेरे मन की वह मति नष्ट हो गई है जो जन्म-मरण के चक्र में डाले रहती है; अब मैं सदैव अचल अवस्था में टिका रहता हूँ।।३।।कबीर का कथन है कि जैसे पानी से भरा हुआ घड़ा टूटने पर पानी में पड़ने वाला बिम्ब पानी में ही विलीन हो जाता है वैसे ही तेरी कृपा से मेरा यह भ्रम भी मिट गया है कि यह जगत परमात्मा से अलग अस्तित्व रखता है। अब मेरा मन अचल शून्य प्रभु में लीन हो गया है

॥ ४ ॥ १ ॥ आसा ॥ गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥ गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥ ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥ १ ॥ ऐसे संत न मोकउ भावहि ॥ डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बासन मांजि चरावहि ऊपरि काठी धोइ जलावहि ॥ बसुधा खोदि करहि दुइ चूल्हे सारे माणस खावहि ॥ २ ॥ ओइ पापी सदा फिरहि अपराधी मुखहु अपरस कहावहि ॥ सदा सदा फिरहि अभिमानी सगल कुटंब डुबावहि ॥ ३ ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा तैसे करम कमावै ॥ कहु कबीर जिसु सतिगुरु भेटै पुनरपि जनमि न आवै ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा ॥ बापि दिलासा मेरो कीन्हा ॥ सेज सुखाली मुखि अंम्रितु दीन्हा ॥ तिसु बाप कउ किउ मनहु विसारी ॥ आगै गइआ न बाजी हारी ॥ १ ॥ मुई मेरी माई हउ खरा सुखाला ॥ पहिरउ नही दगली लगै न पाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि तिसु बापै जिनि हउ जाइआ ॥ पंचा ते मेरा संगु चुकाइआ ॥ पंच मारि पावा तलि दीने ॥ हरि सिमरनि मेरा मनु तनु भीने ॥ २ ॥ पिता हमारो वड गोसाई ॥ तिसु पिता पहि हउ किउ करि जाई ॥ सतिगुर मिले त मारगु दिखाइआ ॥ जगत पिता मेरै मनि भाइआ ॥ ३ ॥ हउ पूतु तेरा तूं बापु मेरा ॥ एकै ठाहर दुहा बसेरा ॥ कहु कबीर जनि एको बूझिआ ॥ गुर प्रसादि मै सभु किछु सूझिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा ॥ इकतु पतरि भरि उरकट कुरकट इकतु पतरि भरि पानी ॥ आसि पासि पंच जोगीआ बैठे बीचि नकट दे रानी ॥ १ ॥ नकटी को ठनगनु बाडा डूं ॥ किनहि बिबेकी काटी तूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल माहि नकटी का वासा सगल मारि अउहेरी ॥ सगलिआ की हउ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी ॥ २ ॥ हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै ॥ ओहु हमारै माथै काइमु अउरु हमरै निकटि न आवै ॥ ३ ॥ नाकहु काटी कानहु काटी काटि कूटि कै डारी ॥ कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि लोक की पिआरी ॥ ४ ॥ ४ ॥ आसा ॥ जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना ॥ लुंजित मुंजित मोनि जटाधर अंति तऊ मरना ॥ १ ॥ ता ते सेवीअले रामना ॥ रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगम निरगम

।। ४ ।। १ ।। आसा ।। जो साढ़े तीन गज़ लम्बी धोती पहनते हैं और तीन-तीन धागों से बना हुआ जनेऊ पहनते हैं तथा जिनके गले में मालाएं पड़ी हुई हैं तथा हाथों में चमकाए हुए लोटे पकड़े हुए हैं इनको प्रभु के सन्त मत कहो ये तो बनारस के ठग हैं।। १ ।। मुझे ऐसे सन्त बिल्कुल अच्छे नहीं लगते जो पेड़-पौधों को भी डालियों सहित ही गटक लेते हैं अर्थात धन लूटने के लिए यह व्यक्ति को मार डालने में भी नहीं हिचकिचाते।। १ ।। रहाउ ।। ये बर्तनों को खूब मांज-मांज कर चूल्हे पर रखते हैं और लकड़ियों को भी धो-धोकर जलाते हैं। धरती को खोद कर ये दोहरे प्रकार का चूल्हा पवित्रता को ध्यान में रखकर बनाते हैं परन्तु इनकी करतूत यह है कि ये समूचे मनुष्य को ही खा जाते हैं।।२।। इस प्रकार के अपराधी और पाप कमाने वाले इधर-उधर सदैव घूमते रहते हैं हालांकि मुँह से तो वे यही कहेंगे कि हम तो किसी के धन और सम्पदा को स्पर्श भी नहीं करते। ये अभिमानी व्यक्ति सदैव अकड़कर घूमते फिरते रहते हैं और अपने साथ अपने पूरे कुटुम्ब को भी डुबा देते हैं।। ३ ।। परन्तु हे परमात्मा, जिस व्यक्ति को तूने जिस ओर लगाया है वह उसी ओर लगा हुआ है और वह वैसे ही काम किए जा रहा है। कबीर का कथन है कि सत्य तो यह है कि जिसे सच्चा गुरु मिल जाता है वह फिर कभी दोबारा जन्म-मरण में नहीं आता।। ४ ।। २ ।। मेरे पिता प्रभु ने मुझे सहारा दिया है और मुझे अमृत नाम प्रदान किया है जिससे मेरी हृदय रूपी सेज सुखदायक बन गई है। ऐसे पिता को भला मैं मन से क्यों भुलाऊँ और जीवन के बाद आगे चलकर भी मैं मानव जीवन की बाज़ी को नहीं हारूँगा।।१।। मुझ पर से माया का प्रभाव समाप्त हो गया है जिससे मैं सुखी होकर खड़ा हूँ। अब मैं गुदड़ी को धारण नहीं करूँगा और मुझे अब मौत का डर नहीं रहेगा क्योंकि अब मैं जन्म-मरण में आऊँगा ही नहीं।।१।। जिस प्रभु पिता ने मुझे यह नया जन्म दिया है मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ क्योंकि उसी ने ही कामादिक पाँचों वासनाओं से मेरा मेल-जोल छुड़ा दिया है। मैंने उन पाँचों को मारकर अब पाँव के तले दबा दिया है क्योंकि अब हरि सुमिरन में मेरा मन तन रंग गया है।।२।। हमारा पिता प्रभु बहुत बड़ा मालिक है। मैं कैसे उस पिता तक पहुँचूं यह पता नहीं चलता। यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो वह ही मुझे मार्ग दिखाने वाला है और अब जगत का पिता प्रभु मेरे मन को भा गया है।। ३ ।। हे प्रभु, मैं तेरा पुत्र हूँ और तू मेरा बाप है और दरअसल हम दोनों का ठिकाना अब एक ही स्थान पर अर्थात मेरे हृदय में है। कबीर का कथन है कि प्रभु के सेवक ने उस एक प्रभु को पहचान लिया है और गुरु की कृपा से मुझे जीवन-मार्ग की सूझ प्राप्त हो गई है।। ४ ।। ३ ।। आसा।। पंच विकारों से नियन्त्रित होकर चलने वाले वाममार्गी एक बर्तन में मुर्गे का पकाया हुआ मांस डाल लेते हैं और दूसरे बर्तन में शराब रख लेते हैं। इनके चारों ओर प्रमुख योगी बैठ जाते हैं और इनके बीच में नकटी अर्थात निर्लज्ज स्त्री (माया) भी बैठ जाती है।।१।। निर्लज्ज माया रूपी स्त्री का रूप सौन्दर्य वाद्य की ध्वनि की तरह बजता है और ऐसी स्थिति में माया रूपी स्त्री के जाल को कोई विवेकशील व्यक्ति ही काट पाता है।। १ ।। रहाउ ।। सभी जीवों में इस निर्लज्ज माया रूपी स्त्री का वास बना हुआ है और यह सब को मार-मार कर उन्हें गौर से देखा करती है ताकि कोई जीवित न बचा रह सके। सब जीवों की यह बहन या भानजी होने का स्वाँग भरती है परन्तु यह यह भी कहती है कि जिसने मुझसे विवाह कर लिया अर्थात जिसने मेरा ज़ोर अपने पर नहीं चलने दिया उसकी मैं दासी हो जाती हूँ।।२।। मेरा पति तो बहुत बड़ा विवेकशील और शान्त पुरुष ही हो सकता है। वही मुझे माथे से पकड़ कर स्थिर करता है; अन्य कोई तो मेरे पास भी नहीं आ सकता।। ३ ।। कबीर का कथन है कि शान्त पुरुषों ने इस माया के नाक-कान आदि काट कर और इसका अंग भंग करके इसे फेंक दिया है। इसीलिए शान्त पुरुषों के साथ यह हमेशा शत्रुता बनाए रखती है परन्तु सारे संसार के लोग तो इसे प्यार ही करते है।। ४ ।। ४।। आसा।। अनेकों योगी, यति, तपस्वी, संन्यासी हैं और अनेकों ही तीर्थों पर भ्रमण करने वाले, श्रावक (जैनी) हैं जिन्होंने सिर के बालों को उखाड़ रखा है। इसी प्रकार कई बैरागी हैं, मौन व्रत करने वाले हैं तथा जटाओं को धारण करने वाले हैं। ये सब चाहे जो कुछ भी हैं परन्तु इन सबको भी अन्त में मरना ही पड़ेगा अर्थात यह जन्म-मरण में ही पड़े रहेंगे।।१।। इसलिए अच्छा तो यह है कि राम-नाम का सुमिरन किया जाए। जिस व्यक्ति के हृदय में राम-नाम है यम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता अर्थात उसका जन्म-मरण समाप्त हो जाता है।। १ ।। रहाउ ।। कई लोग शास्त्र, वेद, ज्योतिष

जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना ॥ तंत मंत्र सभ अउखध जानहि अंति तऊ मरना ॥ २ ॥ राज भोग अरु छत्र सिंघासन बहु सुंदरि रमना ॥ पान कपूर सुबासक चंदन अंति तऊ मरना ॥ ३ ॥ बेद पुरान सिंम्रिति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥ कहु कबीर इउ रामहि जंपउ मेटि जनम मरना ॥ ४ ॥ ५ ॥ आसा ॥ फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै ॥ पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥ १ ॥ राजा राम ककरीआ बरे पकाए ॥ किनै बूझनहारै खाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बैठि सिंघु घरि पान लगावै घीस गलउरे लिआवै ॥ घरि घरि मुसरी मंगलु गावहि कछूआ संखु बजावै ॥ २ ॥ बंस को पूतु बीआहन चलिआ सुइने मंडप छाए ॥ रूप कंनिआ सुंदरि बेधी ससै सिंघ गुन गाए ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु कीटी परबतु खाइआ ॥ कछूआ कहै अंगार भि लोरउ लूकी सबदु सुनाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ आसा ॥ बटूआ एकु बहतरि आधारी एको जिसहि दुआरा ॥ नवै खंड की प्रिथमी मागै सो जोगी जगि सारा ॥ १ ॥ ऐसा जोगी नउ निधि पावै ॥ तल का ब्रहमु ले गगनि चरावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिंथा गिआन धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै ॥ पंच ततु की करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥ २ ॥ दइआ फाहुरी काइआ करि धूई द्रिसटि की अगनि जलावै ॥ तिस का भाउ लए रिद अंतरि चहु जुग ताड़ी लावै ॥ ३ ॥ सभ जोगतण राम नामु है जिस का पिंडु पराना ॥ कहु कबीर जे किरपा धारै देइ सचा नीसाना ॥ ४ ॥ ७ ॥ आसा ॥ हिंदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई ॥ दिल महि सोचि बिचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ॥ १ ॥ काजी तै कवन कतेब बखानी ॥ पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकति सनेहु करि सुंनति करीऐ मै न बदउगा भाई ॥ जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥ २ ॥ सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ ॥ अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीऐ ॥ ३ ॥ छाडि कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥ कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ॥ ४ ॥ ८ ॥ आसा ॥ जब लगु

और अनेकों प्रकार के व्याकरण जानते हैं परन्तु तन्त्र-मन्त्र और औषधि विज्ञान को जानने वालों को भी मरना तो पड़ेगा ही।। २ ।। राज को भोगने वाले, सिंहासनों पर छत्र धारण करने वाले अनेकों सुन्दरियों के साथ रमण करने वाले, पान, कर्पूर और चन्दन जैसी सुगन्ध वालों को भी अन्ततः मरना ही पड़ेगा।। ३ ।। वेद-पुराण, स्मृतियां भी खोजी गई परन्तु किसी के माध्यम से भी पार उतारा नहीं होता। कबीर का कथन है कि राम-नाम का जाप करने से ही जन्म-मरण मिटाया जाता है।। ४ ।। ५ ।। आसा ।। प्रभु की कृपा से अब मन रूपी हाथी सुन्दर स्वर वाली वीणा बजाने वाला बन गया है; मेरा बैल जैसा स्वभाव पखावज़ की ध्वनि देने लगा है और कौए के स्वभाव वाला मन अब सुरताल में आ गया है। मेरा गधे वाला अड़ियल स्वभाव प्रेम का चोला पहनकर नाच रहा है और मेरी भैंसे वाली प्रकृति भक्ति में लीन हो गई है।। १ ।। हे मेरे राजा राम, पके हुए आम के समान दिखने वाला आक के पौधे का फल वास्तव में रसदायक आम बन गया है अर्थात मेरे कड़वे और कठोर स्वभाव में अब वास्तव में मिठास और वास्तविकता आ गई है। ऐसे स्वाद को किसी बिरले सूझवान ने ही चखा है।। १ ।। रहाउ।। निर्दयी स्वभाव वाला मन रूपी शेर अपने निज स्वरूप में टिककर सेवा में जुट गया है और उछल-कूद करने वाला मन प्रेम रूपी पान का बीड़ा बांट रहा है। मेरी सभी इन्द्रियां रूपी चुहियां खुशी के गीत गा रही हैं और वही मन जो पहले सत्संग की ओर जाने के लिए कछुए की चाल चलता था अब शंखनाद् करके अन्यों को उस ओर आने के लिए प्रेरित कर रहा है।। २ ।। युक्तियों से पैदा किया हुआ माया का पुत्र अब विवाह कराने के लिए चल पड़ा है और इस कार्य के लिए स्वर्ण के मण्डप लगाए गए हैं अर्थात अब चारों ओर खुशियां ही खुशियां बन गई हैं। अब इस मन ने परमात्मा की ओर जोड़ने वाली वृत्ति रूपी कन्या से विवाह कर लिया है और खरगोश तथा शेर ने अब मिल कर प्रभु के गुणों का गायन किया है अर्थात मन रूपी खरगोश का भय अब समाप्त हो गया है।। ३ ।। कबीर कहता है कि हे सन्त जनों, इस बात को ध्यान से सुनो कि मन का कोरापन समाप्त हो गया है और यह मन मानवीय ऊष्णता का चाहवान बन गया है। मन में छिपा हुआ अज्ञान अब ज्ञान बनकर अन्यों को गुरु का उपदेश सुना रहा है।। ४ ।। ६ ।। आसा ।। बहत्तर नाड़ियों वाला व्यक्ति का यह थैला रूपी शरीर है जिसमें प्रभु के मिलाप के लिए एक ही द्वार दशम द्वार है। सच्चा योगी इस शरीर के नवखण्डों के अन्दर ही टिक कर प्रभु के द्वार से उन नव खण्डों को धारण करने वाले प्रभु-नाम की भिक्षा माँगता है और वास्तव में वही एक पूर्ण योगी है।। १ ।। ऐसा ही योगी नवनिधियां प्राप्त कर लेता है जो माया में ग्रस्त आत्मा को ऊपर उठा कर गगन मण्डल में ले जाता है अर्थात माया के प्रभाव से मुक्त कर देता है।। १ ।। रहाउ ।। वास्तविक योगी ज्ञान की गुदड़ी बनाता है, प्रभु-चरणों में जुड़ी हुई सुरति की सुई तैयार करता है, शब्द-ब्रह्म का धागा बट कर अर्थात बार बार उसी के अनुरूप आचरण करके सुरति की सुई में डालता है और शरीर के मोह को नीचे दबाकर अर्थात उससे अप्रभावित बने रहकर उस पर आसन जमा कर सच्चे गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलता रहता है। सच्चा योगी अपने शरीर की धूनी रमाकर उसमें ही प्रभु को सर्वत्र देखने वाली दृष्टि की अग्नि जलाता है।। २ ।। शरीर रूपी धूनि की अग्नि और राख को अपनी ओर खीचनें के लिए वह दया का फावड़े के तौर पर प्रयोग करता है और परमात्मा का प्रेम अपने हृदय में बसाता है। इस प्रकार वह चारों युगों अर्थात शरीर की चारों अवस्थाओं, बचपन, जवानी, बुढ़ापा और मौत में प्रभु में लीन बना रहता है।। ३ ।। कबीर का कथन है कि यह सारा जोगीपना उस राम-राम के अन्तर्गत ही है जिसका यह दिया हुआ शरीर और प्राण हैं। यदि प्रभु स्वयं कृपा करे तो वह स्वयं ही सदा स्थिर बना रहने वाला प्रेम का सच्चा चिन्ह जीव को प्रदान करता है।। ४ ।। ७ ।। आसा।। हे व्यक्ति, तू समझने की कोशिश कर कि यह हिन्दु और मुसलमान कहाँ से आए हैं और फिर यह अलग-अलग झगड़े कराने वाले रास्ते किसने चला दिए हैं। हे वाद-विवाद करने वाले व्यक्ति, तू दिल में अच्छी तरह से सोच विचार कर कि यह स्वर्ग और नर्क का विचार किसने मन में डाल दिया है।। १ ।। हे क़ाज़ी, तू कौन से ग्रन्थों की तथा कतेबों की व्याख्या कर रहा है। साम्प्रायदिकता की पट्टी आँख पर बांध कर पढ़ने और विचारने वाले सभी मर-मरा जाते हैं परन्तु किसी को भी वास्तविक रहस्य का पता नहीं चलता।। १ ।। रहाउ।। स्त्री के मोह के कारण सुन्नत करवायी गई (इसका सम्बन्ध खुदा के मिलाप के साथ नहीं) इसलिए हे भाई, मैं तो इस बात को नहीं मानता। (यहाँ एक संकेत है कि हज़रत इब्राहीम ने अपनी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए ही सुन्नत करवाई थी)। यदि खुदा ने मुझे मुसलमान बनाना हुआ तो मेरी सुन्नत अपने आप ही हो जाएगी।। २ ।। यदि केवल सुन्नत करने से ही व्यक्ति मुसलमान बन सकता है तो फिर औरत का भला क्या किया जाएगा। पत्नी तो व्यक्ति के जीवन के दुख-सुख की सदा ही साझीदार है और कभी भी साथ नहीं छोड़ती। इसलिए हिन्दु बने रहना ही अच्छा है।। ३ ।। हे बावले व्यक्ति, कतेबों अर्थात धार्मिक पुस्तकों को छोड़ और परमात्मा की भजन-बन्दगी कर। फालतू विवादों में पड़कर तू अपने आप पर ही भारी अत्याचार कर रहा है। कबीर ने तो एक परमात्मा के सुमिरन का ही आसरा लिया है और वाद-विवादी मुसलमान तो विवादों में ही ख्वार हो रहे हैं।। ४ ।। ८ ।। आसा ।। जब तक

तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ॥ तेल जले बाती ठहरानी सूंना मंदरु होई ॥ १ ॥ रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई ॥ तूं राम नामु जपि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ का की मात पिता कहु का को कवन पुरख की जोई ॥ घट फूटे कोऊ बात न पूछै काढहु काढहु होई ॥ २ ॥ देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गए भाई ॥ लट छिटकाए तिरीआ रोवै हंसु इकेला जाई ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई ॥ इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नही हटै गुसाई ॥ ४ ॥ ९ ॥ दुतुके

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा स्री कबीर जीउ के चउपदे इकतुके ॥ सनक सनंद अंतु नही पाइआ ॥ बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई ॥ सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु करि मटुकी मन माहि बिलोई ॥ इसु मटुकी महि सबदु संजोई ॥ २ ॥ हरि का बिलोवना मन का बीचारा ॥ गुर प्रसादि पावै अंम्रित धारा ॥ ३ ॥ कहु कबीर नदरि करे जे मींरा ॥ राम नाम लगि उतरे तीरा ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥ आसा ॥ बाती सूकी तेलु निखूटा ॥ मंदलु न बाजै नटु पै सूता ॥ १ ॥ बुझि गई अगनि न निकसिओ धूंआ ॥ रवि रहिआ एकु अवरु नही दूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ टूटी तंतु न बजै रबाबु ॥ भूलि बिगारिओ अपना काजु ॥ २ ॥ कथनी बदनी कहनु कहावनु ॥ समझि परी तउ बिसरिओ गावनु ॥ ३ ॥ कहत कबीर पंच जो चूरे ॥ तिन ते नाहि परम पदु दूरे ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥ आसा ॥ सुतु अपराध करत है जेते ॥ जननी चीति न राखसि तेते ॥ १ ॥ रामईआ हउ बारिकु तेरा ॥ काहे न खंडसि अवगनु मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे अति क्रोप करे करि धाइआ ॥ ता भी चीति न राखसि माइआ ॥ २ ॥ चिंत भवनि मनु परिओ हमारा ॥ नाम बिना कैसे उतरसि पारा ॥ ३ ॥ देहि बिमल मति सदा सरीरा ॥ सहजि सहजि गुन रवै कबीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥ आसा ॥ हज हमारी गोमती तीर ॥ जहा बसहि पीतंबर पीर ॥ १ ॥ वाहु वाहु किआ खूबु गावता है ॥ हरि का नामु

दीपक में तेल है और दीपक के मुख पर बाती है तब तक तो घर में प्रत्येक वस्तु दिखाई देती है। तेल जल जाए बाती बुझ जाए तो घर सूना हो जाता है। शरीर रूपी घर में भी श्वास् खत्म होने से जीवन की ज्योति बुझ जाती है और यह शरीर रूपी घर अकेला और सूना हो जाता है।। १ ।। ओ बावले व्यक्ति, ऐसी स्थिति में तुझे एक घड़ी के लिए भी कोई अपने पास नहीं रखेगा। इसलिए प्रभु के नाम का जाप कर क्योंकि वही तेरे साथ चलने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। जब शरीर रूपी घड़ा फूट जाता है तो फिर किसकी माँ किसका पिता और भला किस पुरुष की स्त्री रह जाती है। फिर तो कोई बात नहीं पूछता और चारों तरफ से इसे निकालो, इसे ले चलो की आवाज़ें ही आती हैं।। २ ।। घर की दहलीज़ पर बैठकर माँ रोती है और भाई लोग खटिया पर व्यक्ति को श्मशान की तरफ ले जाते हैं। पत्नी भी खुले और बिखरे हुए बालों के साथ रोती चिल्लाती है परन्तु जीवात्मा तो अकेला ही जाता है।।३।। कबीर कहता है कि हे संतजनों, इस संसार सागर के बारे में भी सुन लो कि यहां जीव पर उसके किए हुए कर्मों के अनुसार ही मुसीबतें आती है और यम का भय कभी भी नहीं जाता।। ४ ।। ६ ।। दो पंक्तियों वाले पद दोतुके ।।

१ ओअंकार सति गुर प्रसादि ।। आसा स्री कबीर जी के चौपदे ।। एक पंक्ति वाले ।।

ब्रह्मा पुत्र सनक सनन्दन आदि भी उस प्रभु का ओर-छोर नहीं पा सके। ब्रह्मा ने भी वेद पढ़-पढ़ कर ही अपना जन्म गँवा दिया है।।१।। हे मेरे भाई, प्रभु-नाम को बिलोवो अर्थात उसके नाम के जाप का अभ्यास करो। सहजभाव से प्रभु जाप का अभ्यास करो क्योंकि धीरे-धीरे बिलोने से तत्व रूपी मक्खन जैसे विलीन नहीं होता वैसे ही धीरे-धीरे अर्थात प्रभु-नाम के अर्थ को समझते हुए अभ्यास करने से उस तत्व रूपी प्रभु की समझ आ जाती है।। १ ।। रहाउ ।। तन को मटकी बनाकर उसमें मन रूपी मथनी को डाला जाए। इस मटकी में शब्द रूपी दही को डाला जाए।। २ ।। मन में विचार पूर्वक अभ्यास करना ही प्रभु-नाम को बिलोने के समान है। उसी में से गुरु कृपा से नाम रूपी मक्खन की अमृत-धारा प्राप्त होती है।। ३ ।। कबीर का कथन है कि यदि वह प्रभु रूपी सम्राट कृपादृष्टि कर दे तो प्रभु-नाम में लीन होकर व्यक्ति संसार सागर को पार करके दूसरे किनारे पर जा पहुँचता है।। ४ ।। १ ।। १० ।। आसा ।। तृष्णा रूपी बाती जब सूख गई है और वासनाओं का तेल समाप्त हो गया है तो अब जीव के अन्दर माया के शोर का ढोल नहीं बजता। मन रूपी नट अब माया की ओर से हटकर विश्राम अवस्थ में आ गया है।। १ ।। जिस व्यक्ति के अन्तर्मन से तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है और तृष्णा के फलस्वरूप वासनाएं नष्ट हो जाती हैं उसे सब ओर एक प्रभु ही व्याप्त दिखाई देता है अन्य कोई नहीं।। १ ।। रहाउ ।। तृष्णा के समाप्त होने पर अब मोह रूपी तार टूट जाता है और शरीर रूपी रबाब अब वासनामय वाद्य के रूप में नहीं बजता। पहले इसी मोह में फंसा हुआ शरीर अपना काम बिगाड़ता जा रहा था।। २ ।। अब जब जीवात्मा को पूरी समझ आ गई है तो इस शरीर के लिए की जाने वाली पहले जैसी बातें कहना सुनना आदि सब कुछ भूल गया है।। ३ ।। कबीर का कथन है कि जिन व्यक्तियों ने पाँचों (काम, क्रोध आदि) को मार लिया है परम पद अब उनसे दूर नहीं रह जाता।। ४ ।। २ ।। ११ ।। आसा ।। पुत्र चाहे कितने ही अपराध करे लेकिन माँ उसके अपराधों को याद न रखकर भुला देती है।।१।। हे प्रभु, मैं तेरा ही बालक हूँ तू मेरी भूलों को क्यों क्षमा नहीं कर देता।। १ ।। रहाउ ।। यदि मूर्ख बच्चा अत्यन्त क्रोधित होकर माँ की ओर मारने के लिए भी दौड़े तो भी माँ उसके क्रोध को याद नहीं रखती।। २ ।। हे प्रभु, मेरा मन चिन्ता के घर में पड़ा हुआ है अर्थात मैं अत्यन्त चिन्तित हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि प्रभु-नाम के बिना भला कैसे पार उतरा जा सकता है।। ३ ।। हे प्रभु, इस शरीर को अर्थात मुझे निर्मल बुद्धि प्रदान कर जिससे सहज अवस्था में बना रहकर यह कबीर तेरे गुण गाता रहे।। ४ ।। ३ ।। १२ ।। आसा।। मेरा हज़ करना तो गोमती के किनारे पर चले जाने के समान ही है क्योंकि वहीं मेरा परमात्मा बसा हुआ है।। १ ।। मेरा मन सदैव बहुत सुन्दर ढंग से उस प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है और चाहे मैं जहाँ भी जाऊँ प्रभु का नाम ही

मेरै मनि भावता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नारद सारद करहि खवासी ॥ पासि बैठी बीबी कवला दासी ॥ २ ॥ कंठे माला जिहवा रामु ॥ सहंस नामु लै लै करउ सलामु ॥ ३ ॥ कहत कबीर राम गुन गावउ ॥ हिंदू तुरक दोऊ समझावउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

आसा स्री कबीर जीउ के पंचपदे ९ दुतुके ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥ जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥ १ ॥ भूली मालनी है एउ ॥ सतिगुरु जागता है देउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ ॥ तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किस की सेउ ॥ २ ॥ पाखान गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ ॥ जे एह मूरति साची है तउ गढ़णहारे खाउ ॥ ३ ॥ भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु ॥ भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥ ४ ॥ मालिनि भूली जगु भुलाना हम भुलाने नाहि ॥ कहु कबीर हम राम राखे क्रिपा करि हरि राइ ॥ ५ ॥ १ ॥ १४ ॥

आसा ॥ बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कीओ ॥ तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥ १ ॥ मेरी मेरी करते जनमु गइओ ॥ साइरु सोखि भुजं बलइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूके सरवरि पालि बंधावै लूणै खेति हथ वारि करै ॥ आइओ चोरु तुरंतह ले गइओ मेरी राखत मुगधु फिरै ॥ २ ॥ चरन सीसु कर कंपन लागे नैनी नीरु असार बहै ॥ जिहवा बचनु सुधु नही निकसै तब रे धरम की आस करै ॥ ३ ॥ हरि जीउ क्रिपा करै लिव लावै लाहा हरि हरि नामु लीओ ॥ गुर परसादी हरि धनु पाइओ अंते चलदिआ नालि चलिओ ॥ ४ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु अनु धनु कछूऐ लै न गइओ ॥ आई तलब गोपाल राइ की माइआ मंदर छोडि चलिओ ॥ ५ ॥ २ ॥ १५ ॥

आसा ॥ काहू दीन्हे पाट पटंबर काहू पलघ निवारा ॥ काहू गरी गोदरी नाही काहू खान परारा ॥ १ ॥ अहिरख वादु न कीजै रे मन ॥ सुक्रितु करि करि लीजै रे मन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुम्हारै एक जु माटी गूंधी बहु बिधि बानी लाई ॥ काहू महि मोती मुकताहल काहू बिआधि लगाई ॥ २ ॥ सूमहि धनु

मेरे मन को अच्छा लगता है।। १ ।। रहाउ ।। सरस्वती देवी और नारद मुनि आदि सब उस परमात्मा के सेवक का ही काम कर रहे हैं जिस परमात्मा के समक्ष माया रूपी दासी बैठी रहती है।। २ ।। मेरी जीभ पर राम नाम का जाप ही मेरे गले में पहनी हुई माला के समान है और मैं उस प्रभु के हज़ारों नामों का सुमिरन करके उसे प्रणाम करता हूँ।। ३ ।। कबीर का कथन है कि मैं तो सर्वत्र रमण करने वाले राम के गुण गाता हूँ और हिन्दू और मुसलमान दोनों को वास्तविक एक तथ्य समझाता हूँ कि उस प्रभु के ही अनेकों नाम और अनेकों स्थान हैं।। ४ ।। ४ ।। १३ ।।

आसा स्री कबीर के पाँच पदे ६ दो पंक्तियों वाले ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

पूजा के लिए हे मालिन, जिन डालियों से तू पत्ते और फूल तोड़ रही है उन सब पत्तियों आदि में जीव विद्यमान है और जिस पत्थर की मूर्ति के लिए तू यह फूल पत्तियां तोड़ रही है वह तो वास्तव में निर्जीव है।। १ ।। निर्जीव की सेवा के लिए सजीव फूल पत्तों को तोड़कर मालिन भूल कर रही है क्योंकि वास्तविक इष्ट प्रभु तो जागता हुआ दिव्यता का पुंज है।। १ ।। रहाउ ।। हे मालिन, पत्तों को ब्रह्मा का रूप समझ, डाली को विष्णु का रूप मान और फूल शिवरूप है। इन तीनों (तथाकथित) देवताओं को तो तू अपने सामने ही नष्ट कर रही है फिर भला तू किसकी सेवा में लगी हुई है।। २ ।। मूर्ति बनाने वाले ने पत्थर को तराश कर और तराशते समय छाती पर पैर रख कर मूर्ति तैयार की है। यदि यह मूर्ति ही वास्तविक देवता है तो फिर इस अनादर के लिए वह मूर्ति बनाने वाले को ही खा जाती।। ३ ।। चावल, दाल, लापसी, खस्ता और पंजीरी आदि तो इसके चारों ओर बैठकर भोगने वाला पुजारी ही खा जाता है और इस मूर्ति के मुख में तो कुछ भी नहीं जा पाता।। ४ ।। मालिन भूली हुई है और सारा संसार भी भुलावे में पड़ा हुआ है परन्तु हमने यह गलती नहीं की है। कबीर का कथन है कि परमात्मा ने अपनी कृपा करके हमें इस भुलावे से बचा लिया है।। ५ ।। १ ।। १४ ।। आसा ।। हे जीव, बारह वर्ष तो तेरे बचपने में ही निकल गए और बीस वर्ष तक भी तूने कोई साधना आदि नहीं की। तीस वर्ष और निकल जाने पर भी तूने प्रभु के लिए कोई भजन बन्दगी नहीं की और अब वृद्धावस्था को प्राप्त होकर तू पछता रहा है।।१।। मेरी मेरी करते हुए ही तेरा सारा जीवन निकल गया है। शरीर रूपी शक्ति के इस सूखे हुए सरोवर के तेरी भुजाओं का बल भी समाप्त हो गया है।।१।। रहाउ।। जो जीवन रूपी खेत अब कट चुका है तू उसके चारों ओर बाड़ लगा रहा है। मूर्ख व्यक्ति अब इस शरीर को बनाए रखने के लिए प्रयत्नों में दौड़ा-भागा फिरता है परन्तु यम रूपी चोर चुप-चाप ही आता है और जीव के प्राणों को ले चलता है।। २ ।। वृद्धावस्था में सिर, पैर, और हाथ सभी काँपने लग जाते हैं और आँखों से जल धारा स्वतः ही बहती रहती है। अब जब जीभ से साफ बोल भी नहीं बोला जा सकता तो हे मूर्ख, तू धर्म को अर्जित करने की आशा लगाए बैठा है।। ३ ।। परमात्मा जिस पर कृपा करता है उसकी लौ अपने में लगा लेता है और प्रभु के नाम का लाभ वही प्राप्त करता है। गुरु की कृपा से ही संसार से चलते समय यही नाम-धन व्यक्ति के साथ जाता है।। ४ ।। कबीर का कथन है कि हे संतजनों, ध्यान से सुन लो कि कोई भी अन्य धन अन्त में चलते समय साथ नहीं जाता। जब उस परमात्मा की तरफ से बुलावा आ जाता है तो यह जीव धन-सम्पत्ति छोड़कर यहाँ से चल पड़ता है।। ५ ।। २ ।। १५ ।। आसा ।। हे प्रभु, किसी को तो तूने रेशम के वस्त्र और किसी को तूने निवार वाले पलंग दिए है। किसी को तूने फटी पुरानी गुदड़ी दी है और कईयों को घर में बिस्तर के स्थान पर पुआल ही नसीब हुआ है।। १ ।। हे मन, तू ईर्ष्यालु मत बन और अच्छे कर्म करके ही सब कुछ अच्छा प्राप्त कर।। १ ।। रहाउ।। कुम्हार एक ही मिट्टी को गूँधता है और उसको कई प्रकार के रंग लगा देता है अर्थात विभिन्न प्रकार के बर्तन बना देता है। अब किसी बर्तन में व्यक्ति मोती और मोतियों की माला रख देता है और किसी में वह रोगी बनाने वाली (शराब आदि) वस्तुएं डाल देता है।। २ ।। कंजूस व्यक्ति तो धन

राखन कउ दीआ मुगधु कहै धनु मेरा ॥ जम का डंडु मूंड महि लागै खिन महि करै निबेरा ॥ ३ ॥ हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई ॥ जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मंनि वसाई ॥ ४ ॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी ॥ चिरगट फारि चटारा लै गइओ तरी तागरी छूटी ॥ ५ ॥ ३ ॥ १६ ॥ आसा ॥ हम मसकीन खुदाई बंदे तुम राजसु मनि भावै ॥ अलह अवलि दीन को साहिबु जोरु नही फुरमावै ॥ १ ॥ काजी बोलिआ बनि नही आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई ॥ सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥ २ ॥ निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै ॥ पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥ ३ ॥ खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी ॥ आपु जनाइ अवर कउ जानै तब होइ भिसत सरीकी ॥ ४ ॥ माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रहमु पछाना ॥ कहै कबीरा भिसत छोडि करि दोजक सिउ मनु माना ॥ ५ ॥ ४ ॥ १७ ॥ आसा ॥ गगन नगरि इक बूंद न बरखै नादु कहा जु समाना ॥ पारब्रहम परमेसुर माधो परम हंसु ले सिधाना ॥ १ ॥ बाबा बोलते ते कहा गए देही के संगि रहते ॥ सुरति माहि जो निरते करते कथा बारता कहते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बजावनहारो कहा गइओ जिनि इहु मंदरु कीन्हा ॥ साखी सबदु सुरति नही उपजै खिंचि तेजु सभु लीन्हा ॥ २ ॥ स्रवनन बिकल भए संगि तेरे इंद्री का बलु थाका ॥ चरन रहे कर ढरकि परे है मुखहु न निकसै बाता ॥ ३ ॥ थाके पंच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते ॥ थाका मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥ ४ ॥ मिरतक भए दसै बंद छूटे मित्र भाई सभ छोरे ॥ कहत कबीरा जो हरि धिआवै जीवत बंधन तोरे ॥ ५ ॥ ५ ॥ १८ ॥ आसा इकतुके ४ ॥ सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ ॥ जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ ॥ १ ॥ मारु मारु स्रपनी निरमल जलि पैठी ॥ जिनि त्रिभवणु डसीअले गुर प्रसादि डीठी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रपनी स्रपनी किआ कहहु भाई ॥ जिनि साचु पछानिआ तिनि स्रपनी खाई ॥ २ ॥ स्रपनी ते आन छूछ नही अवरा ॥ स्रपनी जीती कहा करै जमरा

जमा करके रखने के लिए ही मिला है और वह मूर्ख इस धन को मेरा-मेरा ही कहता है। जब यम का डण्डा सिर पर पड़ता है तो क्षण भर में ही यह फैसला हो जाता है कि यह धन तो किसी का भी नहीं है।। ३ ।। जो व्यक्ति प्रभु का उत्तम भक्त कहलाता है वह प्रभु की आज्ञा को मानकर सुख प्राप्त करता है। वह प्रभु की रज़ा को मन में बसाता है और जो प्रभु को भाता है उसी को ही वह ठीक समझता है।। ४ ।। कबीर कहता है कि हे संतजनों, यह मेरी-मेरी की रट बिल्कुल झूठी है क्योंकि यदि पिंजरे को फाड़कर कोई बिल्ली चिड़िया को पकड़ कर ले जाए तो उस चिड़िया का खाने-पीने का सामान वहीं का वहीं पड़ा रह जाता है।। ५ ।। ३ ।। १६ ।। आसा ।। हे काज़ी, हम तो निर्बल व्यक्ति ज़रूर हैं परन्तु हैं उस प्रभु के ही पैदा किए हुए। तुम्हें अपनी मन की हुकूमत ही अच्छी लगती है अर्थात तुम्हें उसी पर गर्व है। धर्म का सबसे बड़ा मालिक तो प्रभु है; उसने कभी भी किसी पर ज़ोर ज़बरदस्ती करने की बात नहीं कही है।। १ ।। हे काज़ी, तेरे मुँह से निकली हुई बातें शोभा नहीं देती।। १ ।। रहाउ ।। रोज़ा रखने, नमाज़ पढ़ने या कलमा पढ़ने से बहिश्त नहीं मिलती। खुदा का घर काबा तो हृदय के अन्दर ही है परन्तु वह मिलता तब है जब कोई इस बात को मान ले।।२।। जो व्यक्ति न्याय करता है वही वास्तव में नमाज़ पढ़ रहा है और यदि अपनी बुद्धि के साथ खुदा को पहचानता है तो वही मानों कलमा कह रहा है। पाँचों विकारों को अपने वश में करता है तो वही उसका मुसल्ला अथवा आसन को बिछाना है और सच्चे धर्म को पहचानना है।। ३ ।। हे काज़ी, तू अपने मालिक को पहचान, अपने हृदय में दया धारण कर तथा अहंकार रूपी मणि को बुरा समझकर उसे मारकर दूर भगा दे। जब व्यक्ति अपने आप को पहले समझा कर फिर दूसरों को अपने जैसा समझता है तभी वह बहिश्त का हकदार बनता है।।४।। मिट्टी तो एक ही है जिसने जीवों के रूप में अनेकों वेश धारण किए हुए हैं। वास्तविक धार्मिक व्यक्ति ने तो इन्हीं विभिन्न रूप रंग के जीवों में ही प्रभु को पहचाना है परन्तु कबीर का कथन है कि हे काज़ी, तुमने तो जानबूझ कर बहिश्त के रास्ते को छोड़कर दोज़ख (नर्क) के साथ अपना मन लगा लिया है।। ५ ।। ४ ।। १७।। आसा ।। गगन नगर अर्थात दसम द्वार से अब एक भी बूँद नहीं झरती अर्थात मस्तिष्क के कोमल भाव अब आकार नहीं लेते; वह बोलने की आवाज़ कहाँ चली गई जो मस्तिष्क में समा रही थी। जीवात्मा रूपी परमहंस परब्रह्म, परमेश्वर, माधव प्रभु को अपने साथ लेकर शरीर से दूर चला गया है।। १ ।। हे भाई, तेरी वह बोलचाल कहाँ गई जो सदैव शरीर से सम्बन्धित बनी रहती थी। तेरी कथा-वार्ता शारीरिक मोह से सम्बन्धित होकर तेरी सुरति में सदैव नृत्य किया करती थी।। १ ।। रहाउ ।। अब तो वह मन ही नही रह गया जिसने शरीर को अपने ढंग से बजाने के लिए ढोलक बना रखा था। प्रभु ने मन का वह सारा तेज खींच लिया है और अब पहली तरह की बातें (शब्द) और स्फुरण पैदा ही नहीं होते।। २ ।। हे भाई, तेरे वे कान कहाँ गए जो शारीरिक मोह में सदा व्याकुल बने रहते थे; अब तो तेरी इन्द्रियों का बल भी थक-थक कर समाप्त हो गया है। तेरे पाँव भी कमज़ोर रह गए हैं; तेरे हाथ भी लटक गए हैं और अब तो तेरे मुख से बात भी नहीं निकलती।। ३ ।। काम, क्रोध आदि पाँचों शत्रु भी अब भटक-भटक कर थक हार चुके हैं। मन रूपी हाथी और वह हृदय भी नहीं रह गया जिसका आसरा लेकर यह पाँचों विकार दौड़ भाग में लगे रहते थे।। ४ ।। मृतक हो जाने पर दस की दस इन्द्रियों के बन्धन भी छूट जाते हैं और सभी सज्जन मित्र भी पीछे रह जाते हैं। कबीर का कथन है कि जो भी व्यक्ति परमात्मा का सुमिरन करता है वह जीवित रहते हुए ही अपने सारे बन्धनों को तोड़ लेता है।। ५ ।। ५ ।। १८ ।। आसा एक पंक्ति वाले (एक तुके) चार ।। उस माया से ऊपर कोई भी बलवान नहीं है जिसने ब्रह्मा, विष्णु और महादेव जैसे लोगों को भी छल लिया है।। १ ।। मार-मार करने वाली यह माया रूपी सर्पिणी सद्संगति के निर्मल जल में पहुँचते ही ठण्डी पड़ जाती है। जिसने इस सारे संसार को डसा हुआ है, गुरु कृपा से उसकी वास्तविकता दिखाई पड़ जाती है।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, सर्पिणी, सर्पिणी कहकर क्यों डर रहे हो; जिसने भी सदैव स्थिर बने रहने वाले परमात्मा को पहचान लिया है उसने इस माया रूपी सर्पिणी को अपने वश में कर लिया है।। २ ।। इस सर्पिणी के प्रभाव से अन्य कोई भी जीव नहीं बचा है और जिन्होंने माया रूपी इस सर्पिणी को जीत लिया है यमराज भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता

॥ ३ ॥ इह स्रपनी ता की कीती होई ॥ बलु अबलु किआ इस ते होई ॥ ४ ॥ इह बसती ता बसत सरीरा ॥ गुर प्रसादि सहजि तरे कबीरा ॥ ५ ॥ ६ ॥ १९ ॥ आसा ॥ कहा सुआन कउ सिम्रिति सुनाए ॥ कहा साकत पहि हरि गुन गाए ॥ १ ॥ राम राम राम रमे रमि रहीऐ ॥ साकत सिउ भूलि नही कहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कऊआ कहा कपूर चराए ॥ कह बिसीअर कउ दूधु पीआए ॥ २ ॥ सतसंगति मिलि बिबेक बुधि होई ॥ पारसु परसि लोहा कंचनु सोई ॥ ३ ॥ साकतु सुआनु सभु करे कराइआ ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥ ४ ॥ अंम्रितु लै लै नीमु सिंचाई ॥ कहत कबीर उआ को सहजु न जाई ॥ ५ ॥ ७ ॥ २० ॥ आसा ॥ लंका सा कोटु समुंद सी खाई ॥ तिह रावन घर खबरि न पाई ॥ १ ॥ किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ॥ देखत नैन चलिओ जगु जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु लखु पूत सवा लखु नाती ॥ तिह रावन घर दीआ न बाती ॥ २ ॥ चंदु सूरजु जा के तपत रसोई ॥ बैसंतरु जा के कपरे धोई ॥ ३ ॥ गुरमति रामै नामि बसाई ॥ असथिरु रहै न कतहूं जाई ॥ ४ ॥ कहत कबीर सुनहु रे लोई ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई ॥ ५ ॥ ८ ॥ २१ ॥ आसा ॥ पहिला पूतु पिछैरी माई ॥ गुरु लागो चेले की पाई ॥ १ ॥ एकु अचंभउ सुनहु तुम्ह भाई ॥ देखत सिंघु चरावत गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल की मछुली तरवरि बिआई ॥ देखत कुतरा लै गई बिलाई ॥ २ ॥ तलै रे बैसा ऊपरि सूला ॥ तिस कै पेडि लगे फल फूला ॥ ३ ॥ घोरै चरि भैस चरावन जाई ॥ बाहरि बैलु गोनि घरि आई ॥ ४ ॥ कहत कबीर जु इस पद बूझै ॥ राम रमत तिसु सभु किछु सूझै ॥ ५ ॥ ९ ॥ २२ ॥ बाईस चउपदे तथा पंचपदे

आसा स्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दुतुके ७ इकतुका १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बिंदु ते जिनि पिंडु कीआ अगनि कुंड रहाइआ ॥ दस मास माता उदरि राखिआ बहुरि लागी माइआ ॥ १ ॥ प्रानी काहे कउ लोभि लागे रतन जनमु खोइआ ॥ पूरब जनमि करम भूमि बीजु नाही बोइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारिक ते बिरधि भइआ होना सो होइआ ॥ जा जमु आइ झोट पकरै तबहि काहे

।। ३ ।। यह माया रूपी सर्पिणी उस परमात्मा की ही बनाई हुई है इसलिए इसके भी अपने वश में नहीं है कि यह किसी पर ज़ोर डाल सके या किसी के सामने निर्बल हो जाए।। ४ ।। जब तक यह माया शरीर और मन में बनी रहती है तब तक यह आत्मा भी बार-बार शरीर में निवास बनाती रहती है अर्थात जन्म-मरण चलता रहता है। कबीर तो गुरु की कृपा से सहज स्वाभाविक ही इससे पार हो गया है।। ५ ।। ६ ।। १६ ।। आसा ।। कुत्ते को धर्मशास्त्र सुनाने का क्या लाभ और प्रभु से टूटे हुए और धन-सम्पदा के पीछे पड़े व्यक्ति के सामने हरि-गुण गाने का भी क्या लाभ है? उस राम, प्रभु, परमात्मा में ही रमें रहना चाहिए और साकत अर्थात प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति के साथ तो भूल कर भी राम-नाम की बात नहीं करनी चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। कौए को कर्पूर चुगाने का क्या लाभ और साँप को दूध पिलाने का क्या फायदा।। २ ।। सत्संगति में मिल बैठकर ही भले बुरे की पहचान करने वाली बुद्धि उत्पन्न होती है क्योंकि पारस के स्पर्श के साथ ही लोहा सोना हो जाता है।। ३ ।। साकत और कुत्ता दोनों ही प्रभु के चलाए हुए ही चलते हैं और जो प्रारम्भ से ही उनके भाग्य में लिखा है वे वैसे ही कर्म करते जाते हैं।। ४ ।। अमृत लेकर भी यदि नीम को सींचा जाए तो कबीर का कथन है कि उसका कड़वेपन का स्वभाव तब भी नहीं जाता।। ५ ।। ७ ।। २० ।। आसा ।। जिसके पास लंका जैसा किला और उसके चारों ओर समुद्र जैसी खाई थी उस रावण के घर का भी कहीं कोई पता नहीं चलता।। १ ।। मैं क्या माँगू क्योंकि कुछ भी तो स्थिर बना रहने वाला नहीं है। देखते-देखते ही यह सारा संसार चलता चला जा रहा है।। १ ।। रहाउ ।। जिसके घर में एक लाख पुत्र और सवा लाख पौत्र थे उस रावण के घर में भी कोई दीया बत्ती करने वाला भी बाकी नहीं बचा।। २ ।। चन्द्र और सूर्य रावण की रसोई में काम करते थे और अग्नि स्वयं उसके कपड़े धोती थी।।३।। जब मन को गुरु के उपदेश के माध्यम से राम-नाम में बसा दिया गया तब वह कहीं नहीं जाता और स्थिर बना रहता है।। ४ ।। कबीर कहता है कि हे लोई, तू मेरी बात सुन; राम-नाम के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती।। ५ ।। ८ ।। २१ ।। आसा ।। परमात्मा का अंश रूपी जीवात्मा तू पहले था और इसकी माँ बनी बैठी माया बाद में पैदा हुई अर्थात मन के पीछे चल रही है।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, एक अचम्भे वाली बात सुनो कि निर्भय बना रहने वाला जीवात्मा रूपी शेर गाय रूपी इन्द्रियों को प्रसन्न करता फिर रहा है। ऐसा लग रहा है कि जैसे शेर गायों को चरा रहा है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के अमृत जल में रहने वाली आत्मा रूपी मछली जल छोड़कर पेड़ रूपी संसार में उलझ गई है। तृष्णा रूपी बिल्ली इसके सन्तोष रूपी पिल्ले को देखते देखते ही पकड़ कर ले भागी है।।२।। हे भाई, यह जीव उस संसार रूपी वृक्ष के नीचे बैठा है जिस वृक्ष पर काँटे ही काँटे लगे हैं और इस पेड़ के आस पास भी वासनाओं के ही फल फूल लग रहे हैं।। ३ ।। मन रूपी घोड़े पर सवार होकर वासनाओं की भैंसें जीव को भोग भोगने के लिए दौड़ाए फिर रही हैं। परिणाम स्वरूप इसका धैर्य रूपी बैल भी बाहर निकल भागा है परन्तु तृष्णाओं का बोझ जीव के घर पहुँच गया है।। ४।। कबीर का कथन है कि जो इस पद वाली अवस्था को समझ लेता है, परमात्मा का सुमिरन करके उसे जीवन के सही मार्ग की समझ आ जाती है और वह तृष्णा के जाल में नहीं फंसता।। ५ ।। ६ ।। २२ ।। बाईस चौपदे एवं पंचपदे।।

आसा स्री कबीर जी के तिपदे आठ दोतुके (दो पंक्तियों वाले) ७ और एक पंक्ति वाला १

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जिस प्रभु ने पिता के बिन्दु से तेरा शरीर बना दिया और मां के पेट के अग्निकुण्ड में से तुझे बचाए रखा; दस महीने माँ के पेट में तेरी रक्षा की; अब संसार में जन्म लेकर प्रभु को भुलाने से माया ने तुझे आ दबाया है।। १ ।। हे प्राणी, लोभ में लीन होकर तूने हीरे-मोती जैसा जन्म क्यों गँवा दिया है? इस मानव शरीर में तू क्यों प्रभु का नाम रूपी बीज नहीं बोता।। १ ।। रहाउ ।। बालक से बढ़कर अब तू वृद्ध हो गया है और निकला बीता हुआ समय तेरे हाथ नहीं आएगा। जिस समय यम तेरे सिर के बालों से तुझे पकड़ लेगा तब भला

रोइआ ॥ २ ॥ जीवनै की आस करहि जमु निहारै सासा ॥ बाजीगरी संसारु कबीरा चेति ढालि पासा ॥ ३ ॥ १ ॥ २३ ॥ आसा ॥ तनु रैनी मनु पुन रपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥ राम राइ सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रंगि राती ॥ १ ॥ गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा ॥ मेरे ग्रिह आए राजा राम भतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाभि कमल महि बेदी रचि ले ब्रहम गिआन उचारा ॥ राम राइ सो दूलहु पाइओ अस बड भाग हमारा ॥ २ ॥ सुरि नर मुनि जन कउतक आए कोटि तेतीस उजानां ॥ कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना ॥ ३ ॥ २ ॥ २४ ॥ आसा ॥ सासु की दुखी ससुर की पिआरी जेठ के नामि डरउ रे ॥ सखी सहेली ननद गहेली देवर के बिरहि जरउ रे ॥ १ ॥ मेरी मति बउरी मै रामु बिसारिओ किन बिधि रहनि रहउ रे ॥ सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु का सउ कहउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बापु सावका करै लराई माइआ सद मतवारी ॥ बडे भाई कै जब संगि होती तब हउ नाह पिआरी ॥ २ ॥ कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनमु गवाइआ ॥ झूठी माइआ सभु जगु बाधिआ मै राम रमत सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥ २५ ॥ आसा ॥ हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ॥ तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे ॥ १ ॥ मेरी जिहबा बिसनु नैन नाराइन हिरदै बसहि गोबिंदा ॥ जम दुआर जब पूछसि बवरे तब किआ कहसि मुकंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम गोरू तुम गुआर गुसाई जनम जनम रखवारे ॥ कबहूं न पारि उतारि चराइहु कैसे खसम हमारे ॥ २ ॥ तूं बाम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥ तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥ ३ ॥ ४ ॥ २६ ॥ आसा ॥ जगि जीवनु ऐसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानं ॥ साचु करि हम गाठि दीनी छोडि परम निधानं ॥ १ ॥ बाबा माइआ मोह हितु कीन्ह ॥ जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन्ह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नैन देखि पतंगु उरझै पसु न देखै आगि ॥ काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनि लागि ॥ २ ॥ करि बिचारु बिकार परहरि तरन तारन सोइ ॥ कहि कबीर जगजीवनु ऐसा दुतीअ नाही कोइ ॥ ३ ॥ ५ ॥ २७ ॥ आसा ॥

रोने का क्या लाभ होगा।। २ ।। तू इधर जीने की आशाएं लगाए बैठा है और उधर यम तेरे साँसों को तुझे मारने की नीयत से देख रहा है। हे कबीर, जगत् तो एक नट का खेल है और तू इस खेल को जीतने के लिए प्रभु का सुमिरन रूपी पांसा फेंक।। ३ ।। १ ।। २३ ।। आसा ।। मैंने अपने शरीर को रंगने वाला बर्तन बनाया है और मन को अच्छे गुणों के रंग से रंग दिया है। पाँचों तत्वों को मैने अपना बाराती बनाया है और अब मैं उस प्रभु पति अर्थात परमात्मा के साथ भाँवर ले रही हूँ। मेरी आत्मा उस प्रभु पति के रंग में रंगी गई है।। १ ।। हे दुल्हन स्त्रियों, तुम बार बार मंगल गीतों का गान करो क्योंकि मेरे हृदय रूपी घर में मेरा पति संसार का स्वामी परमात्मा आ पहुँचा है।। १ ।। रहाउ ।। नाभि कमल से चलने वाले श्वास प्रश्वास को मैंने विवाह की वेदी बनाया है और ब्रह्म ज्ञान रूपी मन्त्रों का उच्चारण किया है। मेरा ऐसा बड़ा भाग्य है कि मैंने परमात्मा जैसा पति पा लिया है।। २ ।। सुर, नर, मुनि रूपी मेरे करोड़ों सत्संगी इस आश्चर्यजनक विवाह को देखने के लिए आए हैं। कबीर का कथन है कि मुझे वह एक परमात्मा पति विवाह करके ले चला है।।३।। २ ।। २४ ।। आसा ।। हे भाई, मैं माया रूपी सास के हाथों दुखी हूँ फिर भी शरीर रूपी ससुर को मैं प्यार करती हूँ और जेठ के नाम अर्थात मौत के नाम से मुझे डर लगता है। हे सखी सहेलियो, कुबुद्धि रूपी इन्द्रियों ने मुझे पकड़ लिया है और विवेक बुद्धि रूपी देवर के वियोग में मैं सड़ रही हूँ।।१।। मेरी मति बौरा गई है क्योंकि मैंने प्रभु को विस्मृत कर दिया है; मैं किस तरह का जीवन व्यतीत करूँ। मेरा पति (प्रभु) मेरी सेज अर्थात मन में विद्यमान है परन्तु मुझे अपनी आँखों से दिखाई नहीं देता है। यह दुख भला मैं किसे बताऊँ।। १ ।। रहाउ ।। मेरे पहले शरीर से उत्पन्न संस्कार मेरा बाप बनकर मुझे इस शरीर में ले आए हैं और सदैव वे संस्कार मुझसे लड़ते रहते हैं। स्वार्थ रूपी मेरी माँ सदैव मायावी नशे में मस्त बनी रहती है। जब मैं ज्ञान रूपी अपने बड़े भाई के साथ होती हूँ तब मैं उस पति रूपी प्रभु की प्यारी बनी रहती हूँ।। २ ।। कबीर का कथन है कि पाँचों विकारों का झगड़ा झगड़ते झगड़ते ही जीव ने यह जीवन गँवा दिया है। सारा संसार झूठी माया के बन्धन में बँधा हुआ है परन्तु मैंने राम में लीन होकर सुख प्राप्त कर लिया है।। ३ ।। ३ ।। २५।। आसा ।। हे पण्डित, तुम्हारे गले में तो सूत का बना हुआ एक जनेऊ ही है परन्तु हमारे घर में तो सूत का ही रोज़ ताना-बाना रहता है। तुम तो वेद के गायत्री मन्त्र का पाठ ही करते हो परन्तु हमारे हृदय में तो परमात्मा स्वयं बसता है।। १ ।। मेरी जीभ आँखों और हृदय में वह गोविन्द नारायण प्रभु बसता है। हे मुकुन्द ब्राह्मण, जब यम प्रभु द्वार पर जाँच-पड़ताल करेंगे तब तू उन्हें क्या कहेगा।। १ ।। रहाउ ।। हम सब तो ढोर डंगर हैं और तुम ब्राह्मण बनकर जन्मों जन्मों से हमारे रक्षक ग्वाले बने हुए हो लेकिन कभी भी तुमने हमें उस पार उतार कर नहीं चराया अर्थात हमें आत्म ज्ञान अथवा ब्रह्म ज्ञान नहीं दिया। तुम हमारे कैसे मालिक हो?।। २ ।। तुम ब्राह्मण हो और मैं काशी का जुलाहा हूँ; मेरी बात को समझकर उसका उत्तर दो। तुम तो जा जाकर राजाओं से दान माँगते हो परन्तु मेरा ध्यान तो केवल उस प्रभु पर ही लगा हुआ है।। ३ ।। ४ ।। २६ ।। आसा।। यह संसारी जीवन सपने जैसा है परन्तु हमने इसे सत्य समझकर पूरी तरह पकड़ा हुआ है और परम निधान प्रभु को छोड़ रखा है।। १ ।। हे बाबा, जीव का माया से और मोह से इतना लगाव बन गया है कि इसने जीव का ज्ञान रूपी रत्न इससे छीन लिया है।। १ ।। रहाउ ।। आँखों से देखकर पतंगा अग्नि की लौ से उलझ पड़ता है और मूर्ख उस आग के प्रभाव को नहीं देख पाता। इसी प्रकार सोने और स्त्री में लगा हुआ जीव सावधान नहीं होता और मूर्ख काल के फन्दे में फँस जाता है।। २ ।। हे जीव, विचार कर, और विकारों का त्याग कर दे क्योंकि पार होने वाला और पार उतारने वाला वह स्वयं प्रभु ही है। कबीर कहता है कि जगत् का जीवन वह परमात्मा ऐसा महान है कि दूसरा कोई भी वैसा नहीं है।। ३ ।। ५ ।। २७ ।। आसा।।

जउ मै रूप कीए बहुतेरे अब फुनि रूपु न होई ॥ तागा तंतु साजु सभु थाका राम नाम बसि होई ॥ १ ॥ अब मोहि नाचनो न आवै ॥ मेरा मनु मंदरीआ न बजावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु माइआ लै जारी त्रिसना गागरि फूटी ॥ काम चोलना भइआ है पुराना गइआ भरमु सभु छूटी ॥ २ ॥ सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥ कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा ॥ ३ ॥ ६ ॥ २८ ॥ आसा ॥ रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥ आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥ १ ॥ काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै ॥ खबरि न करहि दीन के बउरे ता ते जनमु अलेखै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नही कोई ॥ पढे गुने नाही कछु बउरे जउ दिल महि खबरि न होई ॥ २ ॥ अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी ॥ हिंदू तुरक दुहूं महि एकै कहै कबीर पुकारी ॥ ३ ॥ ७ ॥ २९ ॥ आसा ॥ तिपदा ॥ इकतुका ॥ कीओ सिंगारु मिलन के ताई ॥ हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥ १ ॥ हरि मेरो पिरु हउ हरि की बहुरीआ ॥ राम बडे मै तनक लहुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धन पिर एकै संगि बसेरा ॥ सेज एक पै मिलनु दुहेरा ॥ २ ॥ धंनि सुहागनि जो पीअ भावै ॥ कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥ ३ ॥ ८ ॥ ३० ॥

आसा स्री कबीर जीउ के दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हीरै हीरा बेधि पवन मनु सहजे रहिआ समाई ॥ सगल जोति इनि हीरै बेधी सतिगुर बचनी मै पाई ॥ १ ॥ हरि की कथा अनाहद बानी ॥ हंसु हुइ हीरा लेइ पछानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहि कबीर हीरा अस देखिओ जग मह रहा समाई ॥ गुपता हीरा प्रगट भइओ जब गुर गम दीआ दिखाई ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥ आसा ॥ पहिली करूपि कुजाति कुलखनी साहुरै पेईऐ बुरी ॥ अब की सरूपि सुजानि सुलखनी सहजे उदरि धरी ॥ १ ॥ भली सरी मुई मेरी पहिली बरी ॥ जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु टरिओ ॥ लहुरी संगि भई अब मेरै जेठी अउरु धरिओ

मैं बहुत से स्वांग कर चुका हूँ इसलिए अब फिर मुझसे और रूप धारण नहीं किया जा सकता। मेरा मन रूपी वाद्य, उसकी तारें आदि सब थक गए हैं और अब मुझे पता लग गया है कि प्रभु-नाम के वश में होना ही ठीक है।। १ ।। कर्म-धर्म रूपी नाचना अब मुझसे नहीं होता और मेरा मन संसार की थाप पर ढोलक नहीं बजा सकता।। १ ।। रहाउ ।। काम, क्रोध और माया को मैने इकट्ठा ही जला दिया है और मेरा तृष्णा रूपी घड़ा भी टूट गया है। काम वासना का चोला अर्थात शौक भी अब बहुत पुराना हो गया है और अब मेरे सभी भ्रम छूट गए हैं।। २ ।। जब से मैंने सब जीवों में उस एक प्रभु को ही जान लिया है तब से मेरे वाद-विवाद चुक गए हैं। कबीर का कथन है कि मैंने उस पूर्ण प्रभु को पा लिया है और मुझ पर प्रभु की कृपा हो गई है।। ३ ।। ६।। २८ ।। आसा ।। हे व्यक्ति, तू खुदा को खुश करने के लिए रोज़ा रखता है पर साथ ही साथ अपने स्वाद के लिए जीवों को मारता भी है। तू केवल अपने आप को ही देख रहा है और अपने जैसा अन्य किसी को भी नहीं देखता। तू क्यों बेकार में ही झख मार रहा है।। १ ।। हे काज़ी, वह एक खुदा तेरे अन्दर ही है तू सोच विचार कर उसे देखता नहीं है। हे मूर्ख कट्टरवादी, तू इस बात को नहीं समझता इसीलिए तेरा जन्म किसी भी लेखे में नहीं आता अर्थात व्यर्थ है।। १ ।। रहाउ ।। तेरे धार्मिक ग्रंथ उस अल्लाह को सच्चा बखान करते हैं और उसे स्त्री या पुरुष नहीं मानते। परन्तु यह सब पढ़ने सुनने का कोई भी लाभ नहीं है जब तक तेरे दिल में इस बात की समझ नहीं पड़ती।। २ ।। वह अदृष्ट अल्लाह सभी दिलों में बसता है तू इस बात को मन में जान ले। कबीर पुकार पुकार कर यह कह रहा है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों में वह एक ही प्रभु अथवा अल्लाह बसता है।। ३ ।। ७ ।। २६।। आसा।। तीन पदों का ।। एक पंक्ति वाला ।। उस प्रभु से मिलने के लिए मैंने सिंगार किया है परन्तु उस जगजीवन परमात्मा से मेल नहीं होता।। १ ।। परमात्मा मेरा प्रियतम है और मैं उस प्रभु की स्त्री हूँ। प्रभु बहुत बड़ा है परन्तु मैं छोटी सी हूँ।। १ ।। रहाउ ।। स्त्री और पति अर्थात आत्मा और परमात्मा एक ही घर में रहते हैं, उनकी सेज भी एक ही है परन्तु फिर भी उससे मिलन अत्यन्त कठिन है क्योंकि मलीन आत्मा रूपी स्त्री उसे पहचानती ही नहीं और प्रेम नहीं करती।। २ ।। वह सुहागिन स्त्री धन्य है जो प्रियतम को भा जाती है। कबीर कहता है कि ऐसी सुहागिन जीव-स्त्री को फिर जन्मों में नहीं आना पड़ता।। ३ ।। ८ ।। ३० ।।

आसा स्री कबीर जी के दुपदे १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जब जीव रूपी हीरा प्रभु रूपी हीरे को बींध लेता है तो जीव का पवन रूपी चंचल मन सहज भाव में टिक जाता है। प्रभु रूपी हीरे ने तो सारे जीवों की ज्योति को अपने में लीन कर रखा है। यह तथ्य मैंने सच्चे गुरु के उपदेश के फलस्वरूप जाना है।। १ ।। प्रभु की कथा और उसकी निरन्तर चल रही अनहत् वाणी को जीव हंस जैसा निर्मल बन कर पहचान लेता है।। १ ।। रहाउ।। कबीर का कथन है कि मैंने ऐसा हीरा देखा है जो सारे जगत् में समाया हुआ है। जब गुरु ने मुझे उसका दर्शन कराया तो प्रछन्न रूप में कार्यशील वह हीरा मैंने अपने अन्दर ही देख लिया है।। २ ।। १ ।। ३१ ।। आसा।। पहले मेरे मन की वृत्ति कुरूप, तथाकथित नीच घर में पैदा हुई और कुलक्षणों वाली थी। मेरे इस जीवन में और परलोक के जीवन में भी वह बुरी ही बुरी रहने वाली थी परन्तु अब जो वृत्ति मैंने मन में धारण की है अर्थात अब जब मेरा मन टिक गया है तो वही वृत्ति सुन्दर स्वरूप वाली सुजान और सुलक्षणा बन गई है।। १ ।। यह तो अच्छा ही हुआ कि मेरी पहली मनोवृत्ति नष्ट हो गई है जो मुझे पहले अच्छी लगा करती थी। जो मुझे अब मिली है, ईश्वर करे वह हमेशा बनी रहे।। १ ।। रहाउ ।। कबीर का कथन है कि जब विनम्र स्वभाव वाली तथाकथित छोटी वृत्ति आई तो अहंकार वाली तथाकथित वृत्ति का ज़ोर मेरे पर से टल गया है। यह विनम्रता वाली बुद्धि अब मेरे साथ रहती है और अपने आप को बड़ा समझने वाली अहंकार रूपी बुद्धि ने कोई और जगह ढूँढ ली है

॥ २ ॥ २ ॥ ३२ ॥ आसा ॥ मेरी बहुरीआ को धनीआ नाउ ॥ ले राखिओ राम जनीआ नाउ ॥ १ ॥ इन्ह मुंडीअन मेरा घरु धुंधरावा ॥ बिटवहि राम रमऊआ लावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहतु कबीर सुनहु मेरी माई ॥ इन्ह मुंडीअन मेरी जाति गवाई ॥ २ ॥ ३ ॥ ३३ ॥ आसा ॥ रहु रहु री बहुरीआ घूंघटु जिनि काढै ॥ अंत की बार लहैगी न आढै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घूंघटु काढि गई तेरी आगै ॥ उन की गैलि तोहि जिनि लागै ॥ १ ॥ घूंघट काढे की इहै बडाई ॥ दिन दस पांच बहू भले आई ॥ २ ॥ घूंघटु तेरो तउ परि साचै ॥ हरि गुन गाइ कूदहि अरु नाचै ॥ ३ ॥ कहत कबीर बहू तब जीतै ॥ हरि गुन गावत जनमु बितीतै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥ आसा ॥ करवतु भला न करवट तेरी ॥ लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥ १ ॥ हउ वारी मुखु फेरि पिआरे ॥ करवटु दे मोकउ काहे कउ मारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ तनु चीरहि अंगु न मोरउ ॥ पिंडु परै तउ प्रीति न तोरउ ॥ २ ॥ हम तुम बीचु भइओ नही कोई ॥ तुमहि सु कंत नारि हम सोई ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई ॥ अब तुमरी परतीति न होई ॥ ४ ॥ २ ॥ ३५ ॥ आसा ॥ कोरी को काहू मरमु न जानां ॥ सभु जगु आनि तनाइओ तानां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब तुम सुनि ले बेद पुरानां ॥ तब हम इतनकु पसरिओ तानां ॥ १ ॥ धरनि अकास की करगह बनाई ॥ चंदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥ २ ॥ पाई जोरि बात इक कीनी तह तांती मनु मानां ॥ जोलाहे घरु अपना चीन्हां घट ही रामु पछानां ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु कारगह तोरी ॥ सूतै सूत मिलाए कोरी ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३६ ॥ आसा ॥ अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानां ॥ लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥ १ ॥ पूजहु रामु एकु ही देवा ॥ साचा नावणु गुर की सेवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥ जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥ २ ॥ मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बांचिआ जाई ॥ हरि का संतु मरै हाड़ंबै त सगली सैन तराई ॥ ३ ॥ दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा ॥ कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

।। २ ।। २ ।। ३२ ।। आसा ।। मेरे प्राण रूपी मेरी पत्नी पहले धन की प्यारी कहलाती थी परन्तु अब मेरे सत्संगियों ने अपने प्रभाव में इसे लेकर इसका नाम रामदासी रख दिया है अर्थात इसका प्रेम राम में लगा दिया है।। १ ।। माया से मोह करने वाला मेरा प्राण जिस घर में रहता था मेरे सत्संगियों ने उस घर को खाली करवा लिया है क्योंकि मेरे अनजान मन को इन्होंने परमात्मा के सुमिरन की आदत डाल दी है।। १ ।। रहाउ ।। कबीर का कथन है कि हे मेरी माँ तू ध्यान से सुन, इन सत्संगियों ने तो मेरी तथाकथित नीची जाति भी समाप्त कर दी है क्योंकि इनकी नज़रों में मैं अब शूद्र नहीं रहाउ।। २ ।। ३ ।। ३३ ।। आसा ।। हे मेरी प्राण रूपी पत्नी, तू प्रभु पति के सामने अब घूँघट मत निकाल क्योंकि ऐसा करने से तेरे जीवन के अवसर का कौड़ी मोल भी नहीं रहेगा।। १ ।। रहाउ ।। तुझ से पहले अनेकों जीव रूपी पत्नियां घूँघट निकाले और परमात्मा रूपी पति को देखे बिना ही यहाँ से चली गई हैं। देखना कहीं तू भी उसी आदत को अपनाती हुई उसी रास्ते पर मत चली जाना।। १ ।। घूँघट निकालने अर्थात प्रभु से दूर रहने और माया में लीन होने से इस संसार में लोग दस-पाँच दिन ही यह कहते हैं कि यह बहू अच्छी आई है।। २ ।। तेरा सच्चा घूँघट तो तभी माना जाएगा यदि तू प्रभु के गुण गाती हुई प्रभु के गुणानुवाद में प्रसन्नता से नाचती-कूदती हुई सारे काम करे।। ३ ।। कबीर का कथन है कि यह जीव रूपी बहू तभी जीत प्राप्त कर सकती है जब इसका जीवन प्रभु का गुणानुवाद करते हुए व्यतीत हो।। ४ ।। १ ।। ३४ ।। आसा ।। हे प्रभु, तेरे मुँह फेर लेने से तो मुझे शरीर पर आरा चलवा लेना अधिक भला लगता है। हे प्रभु, मेरी विनती सुन और मेरे गले लग जा अर्थात तेरा सुमिरन मेरे गले का हार बना रहे।। १ ।। हे प्रियतम, मेरी ओर मुँह कर मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ। दूसरी ओर करवट लेकर तू मुझे क्यों मार रहा है अर्थात तेरी कृपा के बिना मैं जी ही नहीं सकता।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, यदि मेरा तन चीर भी दिया जाए तो भी मैं तेरे से प्यार करने में पीछे नहीं हटूँगा। मेरा शरीर नष्ट भी हो जाए तब भी मेरी प्रीति तुझ से नहीं टूटेगी।। २ ।। तुम्हारे और हमारे बीच कोई भी बिचौलिया नहीं है और तुम सदा बने रहने वाले मेरे वही पति हो और मैं वही जीव स्त्री रूपी तुम्हारी पत्नी हूँ।।३ ।। कबीर का कथन है कि हे लोकाई, अर्थात संसार के लोगो, तुम ध्यान से सुन लो कि अब किसी भी भुलावे में न पड़ने के लिए मैं तुम्हारे प्रेम-जाल में नहीं फसूंगा।। ४ ।। २ ।। ३५ ।। आसा ।। उस महान जुलाहे रूपी परमात्मा का रहस्य किसी ने भी नहीं जाना जिसने सारे संसार में जीव पैदा करके मानों ताना-बाना बना दिया है।। १ ।। रहाउ।। हे पण्डित, जितनी देर तक तुम वेद-पुराणों को सुनते रहे उतने समय में ही मैंने यह ताना-बाना तान लिया है अर्थात तुम अपने अध्ययन को रोज़ी-रोटी के लिए काम में लाते हो और मैं भी जुलाहे के इस काम से रोज़ी-रोटी ही कमाता हूँ अर्थात दोनों में कोई फर्क नहीं है।। १ ।। उस प्रभु रूपी जुलाहे ने धरती और आकाश की कंघी (करघी) बना दी है और चाँद तथा सूरज को वह नलकियां बना कर उनसे काम ले रहा है।। २ ।। जुलाहे की तरह पैर जोड़कर काम करते हुए मैंने एक ही कार्य किया है कि उस बड़े जुलाहे के साथ अपना मन जोड़ लिया है। इस मेरे शरीर रूपी जुलाहे ने अपना वास्तविक घर पहचान लिया है और हृदय में ही प्रभु को जान लिया है।। ३ ।। कबीर कहता है कि जब शरीर रूपी करघी टूट गई तो इस जुलाहे का मन उसके सूत सहित अर्थात उसकी सुरति सहित प्रभु के साथ लीन हो गया है।। ४ ।। ३ ।। ३६ ।। आसा ।। अन्तर्मन में यदि मैल है और व्यक्ति तीर्थों का स्नान करता फिर रहा है तो समझ लो उसे पता ही नहीं है कि बैकुण्ठ क्या है और कहाँ है। दिखावे से लोगों को सन्तुष्ट करने से क्या होगा; प्रभु इतना बच्चा नहीं है कि तुम्हारे इस प्रपंच से प्रसन्न हो जाएगा।।१ ।। केवल एक प्रभु की ही पूजा करो क्योंकि वही सबसे बड़ा देवता है और सच्चा स्नान वास्तव में गुरु की सेवा है अर्थात गुरु के उपदेश अनुसार आचरण करना है।। १ ।। रहाउ।। जल में स्नान करने से यदि परमगति प्राप्त होती हो तो मेढक तो रोज स्नान ही करता रहता है। ऐसे व्यक्ति तो उस मेढक के समान ही हैं जो बार-बार योनियों में आता रहता है।। २ ।। कठोर और पापी मन वाला व्यक्ति यदि बनारस में भी मरे तो वह नर्क से बच नहीं सकता है और प्रभु-प्रेम में शान्त हो चुका सन्त यदि मगहर (जहाँ मरने पर माना जाता है कि व्यक्ति गधे की योनि में पड़ता है) में भी मरे तब भी वह अपने को तो मुक्त करता ही है साथ ही साथ अपने सेवकों की पूरी सेना को भी पार उतार लेता है।। ३ ।। निराकार प्रभु का निवास वहाँ है जहाँ न दिन है न रात है न वेद है और न शास्त्र है। कबीर कहता है कि हे जीव, ऐसे प्रभु का ही सुमिरन करो और इस संसार की परवाह मत करो यह तो बावला है।। ४ ।। ४ ।। ३७ ।।

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा बाणी स्री नामदेउ जी की

एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई ॥ माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई ॥ १ ॥ सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई ॥ सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे ओति पोति प्रभु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिंन न होई ॥ इहु परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत आन न होई ॥ २ ॥ मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ ॥ सुक्रित मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ ॥ ३ ॥ कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा ॥ आनीले कुंभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥ बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥ १ ॥ जत्र जाउ तत बीठलु भैला ॥ महा अनंद करे सद केला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥ पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥ २ ॥ आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥ पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥ ३ ॥ ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥ थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा ॥ मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥ मपि मपि काटउ जम की फासी ॥ १ ॥ कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥ राम को नामु जपउ दिन राती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ ॥ राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥ २ ॥ भगति करउ हरि के गुन गावउ ॥ आठ पहर अपना खसमु धिआवउ ॥ ३ ॥ सुइने की सूई रुपे का धागा ॥ नामे का चितु हरि सउ लागा ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा ॥ सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै ॥ उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥ १ ॥ काहे कउ कीजै धिआनु जपंना ॥ जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंघच भोजनु जो नरु जानै ॥ ऐसे ही ठगदेउ बखानै ॥ २ ॥ नामे के

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि आसा वाणी स्री नामदेव जी की।।

एक प्रभु ही अनेक रूपों में व्याप्त है और जिधर देखें उधर ही वह दिखाई देता है। यह माया विचित्र रूप से जीव को मोह लेती है इस तथ्य को कोई बिरला ही समझ पाता है।। १ ।। सब ओर परमात्मा ही परमात्मा है; परमात्मा के बिना अन्य कोई नहीं है। जैसे एक धागे में सैंकड़ों हज़ारों मणियाँ पिरोई हुई हों उसी प्रकार परमात्मा की सत्ता उस धागे की तरह सब में विद्यमान है।। १ ।। रहाउ ।। जैसे जल की लहरें, झाग और जल के बुलबुले जल से भिन्न नहीं होते वैसे ही यह दृश्यमान सांसारिक प्रपंच उस परब्रह्म की ही लीला है जिस पर विचार करने से पता चल जाता है कि उस प्रभु से अलग कुछ भी नहीं है। जीवों ने यह झूठा भ्रम पाल लिया है और सपने जैसे संसार को सदा स्थिर बना रहने वाला मान लिया है।। २ ।। जिसे सच्चे गुरु ने भली प्रकार से अच्छी बुद्धि प्रदान की है वह इस भ्रमपूर्ण स्वप्न से जग जाता है और उसके मन को यह पता लग जाता है कि यह सब कुछ स्थायी नहीं है।। ३ ।। नामदेव का कथन है कि हे भाई, हृदय में अच्छी तरह विचार कर देख लो कि यह तो प्रभु का एक खेल है जिसमें सभी शरीरों में केवल एक परमात्मा ही स्थायी रूप से निवास करता है।। ४ ।। १ ।। आसा ।। घड़ा लाकर, उसे पानी से भरकर यदि मैं ठाकुर की मूर्ति को स्नान कराऊँ तो यह जूठा पानी ठाकुर को स्वीकृत नहीं क्योंकि जल में तो बयालीस लाख योनियों के जीव रहते हैं। अलिप्त प्रभु तो पहले ही उनमें विद्यमान है तो भला अब किसलिए यह स्नान वगैरह उसे कराया जाए।। १ ।। मैं जिधर जाता हूँ उधर ही प्रभु प्रत्यक्ष है और महा आनन्दित होकर कौतुक और लीला कर रहा है।। १ ।। रहाउ ।। फूल लाकर, उनकी माला पिरोकर यदि मैं ठाकुर की पूजा करूँ तो क्योंकि फूलों की गन्ध को भँवरे ने तो पहले ही चख लिया है और भँवरे में वह प्रभु पहले ही विद्यमान है तो फिर भला इन फूलों के माध्यम से मूर्ति की पूजा भला मैं किस लिए करूँ।। २ ।। दूध लाकर, उसकी खीर बनाकर यदि मैं ठाकुर को भोग लगाने के लिए उसके सामने रखूँ तो बछड़े का जूठा दूध उसे स्वीकृत नहीं हो सकता। ठाकुर तो पहले ही उस बछड़े में बस रहा है और स्वयं ही दूध पी रहा है तो फिर अब उसे खीर का भोग लगाने का प्रपंच मैं भला क्यों करूँ।। ३ ।। इधर-उधर सब ओर परमात्मा ही परमात्मा है और उस ठाकुर के बिना यह संसार रह ही नहीं सकता। नामदेव विनती करता है कि हे प्रभु, तू ही सब स्थानों में और सब जीवों में पूर्ण रूप से व्याप्त है।। ४ ।। २ ।। आसा।। मेरा मन नापने के लिए गज़ (मीटर) बन गया है और मेरी जीभ मेरी कैंची बन गई है। अब मैं अपने मन रूपी मीटर से नाप नाप कर यम के फन्दे को काटता जा रहा हूँ।। १ ।। मुझे अब किसी ऊँची नीची जात-पात की परवाह नहीं रही क्योंकि अब मैं दिन-रात परमात्मा का सुमिरन करता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। अब मैं रंगाई और सिलाई का काम किए चला जा रहा हूँ परन्तु प्रभु-नाम के बिना घड़ी भर भी जीवित नहीं रह सकता।। २ ।। मैं प्रभु की भक्ति कर रहा हूँ और प्रभु का गुणानुवाद कर रहा हूँ; आठों प्रहर मैं अपने मालिक प्रभु का सुमिरन कर रहा हूँ।। ३ ।। गुरु के उपदेश रूपी सोने की सुई मुझे मिल गई है और मेरी निर्मल सुरति चाँदी के धागे के समान हो गई है। इस सुई-धागे के साथ मैंने (नामदेव ने) अपना मन प्रभु के साथ सी लिया है।। ४ ।। ३ ।। आसा।। साँप केचुली छोड़ देता है परन्तु विष का त्याग नहीं करता। यह उसी प्रकार है जैसे पानी में खड़ा हुआ बगुला समाधि लगाए हुए दिखाई पड़ता है। केचुंली उतारना और आँखें बन्द करना वास्तव में पाखण्ड हैं क्योंकि अन्दर का विष और तृष्णा नहीं छोड़ी जाती।। १ ।। हे भाई, जब तक मन शुद्ध नहीं है तब तक यह ध्यान और जाप का प्रपंच क्यों कर रहे हो।। १ ।। रहाउ ।। जो व्यक्ति बाहर से भला दिखाई देता है परन्तु अन्दर से अत्याचार और शोषण की रोटी कमाना ही जानता है संसार ऐसे व्यक्ति को ठगों का देवता कहा करता है।। २ ।। हे नामदेव,

सुआमी लाहि ले झगरा ॥ राम रसाइन पीओ रे दगरा ॥ ३ ॥ ४ ॥ आसा ॥ पारब्रहमु जि चीन्हसी आसा ते न भावसी ॥ रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥ १ ॥ कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना ॥ झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ॥ संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥ २ ॥ ५ ॥

आसा बाणी स्री रविदास जीउ की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥ पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥ १ ॥ माधो अबिदिआ हित कीन ॥ बिबेक दीप मलीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच ॥ मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥ २ ॥ जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥ काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥ ३ ॥ रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥ भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा ॥ संत तुझी तनु संगति प्रान ॥ सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥ १ ॥ संत ची संगति संत कथा रसु ॥ संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥ २ ॥ अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥ जणी लखावहु असंत पापी सणि ॥ ३ ॥ रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥ संत अनंतहि अंतरु नाही ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा ॥ तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥ नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥ १ ॥ माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥ हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥ सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥ २ ॥ जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥ राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥ ३ ॥ ३ ॥ आसा ॥ कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥ प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥ १ ॥ तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥ पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संपति बिपति

तेरे मालिक प्रभु ने पाखण्ड के इस झगड़े को ही मिटा दिया है इसलिए हे पत्थर दिल इन्सान, तू परमात्मा का नाम रूपी अमृत पी और सभी पाखण्डों को छोड़ दे।। ३ ।। ४ ।। आसा ।। जो व्यक्ति परब्रह्म को पहचान जाता है उसे अन्य आशाएं अच्छी नहीं लगती। जो प्रभु का सुमिरन करते हैं उन भक्तों को प्रभु चिन्ता से बचाए रहता है।। १ ।। हे मेरे मन, यह संसार सागर विषय-विकारों के पानी से भरा पड़ा है तू इसे कैसे पार करेगा। हे मन, इन नष्ट हो जाने वाले पदार्थों को देखकर तू भुलावे में आ गया है।। १ ।। रहाउ।। मुझे बेशक छीपी के घर प्रभु ने जन्म दिया है परन्तु मुझे सच्चे गुरु का भी उपदेश प्राप्त हो गया है। अब शान्त पुरुषों की कृपा से नामदेव को प्रभु प्राप्त हो गया है।। २ ।। ५ ।।

आसा वाणी स्री रविदास जी की १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मृग, मछली, भँवरा, पतंगे और हाथी का तो उनमें एक-एक अवगुण होने पर ही विनाश हो जाता है परन्तु मानव जिसमें पाँच असाध्य दोष (पाँचों विकार आदि) हैं उसके भला आध्यात्मिक रूप से जीवित बने रहने की कितनी आशा लगायी जा सकती है।। १ ।। हे प्रभु, व्यक्ति ने अज्ञान के साथ अपना प्रेम लगा लिया है और विवेक बुद्धि का उसका दीपक क्षीण हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। त्रिगद योनि (धरती पर रेंगने और टेढ़ा चलने वाले जीव) तो विचारहीन हैं और पाप-पुण्य के बारे में वे नहीं सोच सकते परन्तु मनुष्य का दुर्लभ जीवन पाकर भी मनुष्य की संगति अत्यन्त ही नीच है अर्थात वह काम, क्रोध के साथ बना रहता है।। २ ।। जीव-जन्तु जहाँ भी हैं वे कर्मो के वश में होकर ही जन्म लेते हैं। कभी न काटा जा सकने वाला काल का फन्दा उन पर लगा हुआ है और उसे रोकने के लिए उनका कोई भी उपाय काम नहीं करता।। ३ ।। हे उदास हो चुके सेवक रविदास, तू भ्रम को छोड़ दे और गुरु के उपदेश को आचरण में उतारने की तपस्या कर। हे भक्तों के भय को दूर करने वाले प्रभु, तुम ही कुछ उपाय करो।। ४ ।। १ ।। आसा ।। हे प्रभु, संत जो कि तेरा ही शरीर हैं, जिनकी संगत तेरे प्राण हैं उन संतों को हे देवों के देव प्रभु, मैंने सच्चे गुरु के दिए हुए ज्ञान से पहचान लिया है।। १ ।। हे देवों के देव परमात्मा, मुझे संतों की संगति, संतों के वचनों का रस और संतों के प्रति प्रेम प्रदान करो।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, मुझे शान्त पुरुषों अर्थात संतों जैसा आचरण, संतों का मार्ग और संतों के दासों की सेवा प्रदान कर।। २ ।। मैं तुझसे एक और दान माँगता हूँ कि मुझे अपनी भक्ति दो जो सभी मनोवांछित फल देने वाली मणि है। मुझे असंत अर्थात दुष्टों और पापियों का दर्शन मत करवा।। ३ ।। रविदास कहता है कि वास्तविक सुजान व्यक्ति वह है जो संत पुरुषों और अनन्त प्रभु में कोई अन्तर नहीं मानता।। ४ ।। २ ।। आसा ।। हे प्रभु, तुम चन्दन हो और हम तो केवल रेण्डी का पौधा हैं; परन्तु तुम्हारी कृपा से तुम्हारे पास रहने का स्थान हमें मिल गया है। तुम्हारी मीठी सुगन्ध मेरे अन्दर भी निवास कर गई है इसलिए मैं निम्न कोटि के वृक्ष से उच्च कोटि में आ गया हूँ।। १ ।। हे प्रभु, मैंने तुम्हारी सद्संगति की शरण ली है; मैं अवगुणों वाला हूँ और तुम परोपकारी हो।। १ ।। रहाउ ।। तुम सफेद और पीले रंग के साफ-सुन्दर रेशम हो और मैं छोटा सा कीड़ा हूँ जो रेशम को छोड़कर बाहर निकलता है और मर जाता है। हे प्रभु, जैसे मधुमक्खियाँ शहद के छत्ते से जुड़ी रहती हैं मैं भी वैसे ही सत्संगति में लीन बना रहूँ।। २ ।। मेरी जाति और गोत्र नीचा माना जाता है और मेरा जन्म भी नीचा ही है। रविदास चर्मकार का कथन है कि सब कुछ नीच होने के साथ ही साथ मैंने तो प्रभु का भी सुमिरन नहीं किया है।। ३ ।। ३ ।। आसा ।। यदि मेरे तन के टुकड़े-टुकड़े भी हो जाएं तो भी मुझे कोई परवाह नहीं है। तेरे सेवक को तो इसी बात का डर है कि कहीं तेरा प्रेम भी मुझसे दूर न हट जाए।। १ ।। हे मन को भाने वाले प्रभु, मेरा मन, कमल जैसे तेरे सुन्दर चरणों में अपना स्थान बना चुका है। तेरा नाम रस पीते पीते मैंने तेरे नाम धन के बारे में हे प्रभु, जान लिया है।। १ ।। रहाउ ।। सम्पत्ति, विपत्ति,

पटल माइआ धनु ॥ ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥ २ ॥ प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥ कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥ ३ ॥ ४ ॥ आसा ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥ हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम कबीर उजागर ॥ जनम जनम के काटे कागर ॥ १ ॥ निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥ तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥ २ ॥ जन रविदास राम रंगि राता ॥ इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥ ३ ॥ ५ ॥ माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥ देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥ माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥ १ ॥ मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥ बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥ २ ॥ कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥ बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥ ३ ॥ ६ ॥

आसा बाणी भगत धंने जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥ लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥ गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥ १ ॥ जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥ बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥ २ ॥ गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥ प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए ॥ ३ ॥ जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥ धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ महला ५ ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥ आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥ नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥ १ ॥ रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥ परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥ २ ॥ सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥ हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता

प्रपंच और धन यह सब धोखे के पर्दे हैं। इन सब में तेरा यह सेवक लीन नहीं होता।। २ ।। हे प्रभु, तेरे प्रेम की रस्सी में तेरा सेवक बंधा हुआ है और रविदास का कथन है कि भला इस रस्सी में से क्यों छूटा जाए।। ३ ।। ४ ।। आसा।। श्वास प्रश्वास के साथ प्रभु सुमिरन करने से प्रभु के दास संसार सागर से पूरी तरह पार हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के नाम सुमिरन के फलस्वरूप कबीर प्रसिद्ध हो गया और उसके जन्म-जन्म के कर्मों का लेखा-जोखा समाप्त हो गया।। १ ।। भक्ति के निमित्त नामदेव ने ठाकुर को दूध पिलाया तो वह तब से ही जगत् के जन्म-मरण के संकट से दूर हो गया।। २ ।। सेवक रविदास भी प्रभु के रंग में लीन हो गया है और इस प्रकार वह नर्क में नहीं जाएगा।। ३ ।। ५ ।। जीव है तो माटी का पुतला परन्तु कैसे नाचता फिरता है। वह देखता हुआ, सुनता हुआ, बोलता हुआ भागा ही फिर रहा है।। १ ।। रहाउ ।। जब इसे कुछ प्राप्त हो जाता है तब अपनी प्राप्ति पर यह बहुत अभिमान करता है परन्तु जैसे ही धन-सम्पदा चली जाती है तो यह रोने लग जाता है।। १ ।। मन-वचन-कर्म से यह सांसारिक खाद्य-अखाद्य के रस और विष का और अधिक लोभ किए चला जाता है और मर कर प्रभु चरणों में लीन होने की बजाय जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है।। २ ।। रविदास का कथन है कि हे भाई, यह संसार तो एक खेल है परन्तु मेरी प्रीति तो उस खेल खिलाने वाले परमात्मा के साथ लगी हुई है।। ३ ।। ६ ।।

आसा वाणी भक्त धन्ना जी की १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

भटकते भटकते बहुत जन्म बीत गए लेकिन तन, मन और धन तीनों में ही स्थिरता नहीं आ सकी। लोभी जीव विष रूप पदार्थों के लालच में कामवासना में लीन बना रहता है और हीरे जैसा अमूल्य प्रभु इसके मन से विस्मृत हो जाता है।। १ ।। रहाउ।। हे बावले मन, यह विष रूपी फल तुझे मीठे लगते रहे हैं और तूने सुन्दर विचारों को नहीं जाना बूझा है। गुणो की अपेक्षा तेरी प्रीति अन्य प्रकार की हो गई है और तूने जन्म-मरण का ताना-बाना बना लिया है।। १ ।। हे मन, तूने जीवन की वास्तविक युक्ति को समझकर उसे अपने हृदय में पक्का नहीं किया और अब तृष्णाओं में जलते हुए तुझ पर यम का जाल और फन्दा आ पड़ा है। हे मन, तू विषय विकारों के विष रूपी फलों का ही संचय करता रहा और परम पुरुष प्रभु को तूने विस्मृत कर दिया।। २ ।। जिसे गुरु ने ज्ञान के माध्यम से प्रभु के सामीप्य का धन प्रदान कर दिया है उसकी सुरति प्रभु के साथ एकाकार हो गई है। उसे प्रभु का प्रेम, प्रभु की भक्ति अच्छी लगी और वह माया की ओर से पूर्ण रूप से अघा गया और सभी बन्धनों से मुक्त हो गया है। जिस व्यक्ति के अन्दर प्रभु की ज्योति समा गई उसने उस अचल प्रभु को पहचान लिया है। मैं धन्ना ने भी उस प्रभु का नाम रूपी धन प्राप्त कर लिया है और यही धन सारी धरती का आसरा है। मैं संतजनों को मिलकर प्रभु में लीन हो गया हूँ।। ४ ।। १ ।। महला ५ ।। नामदेव का मन उस प्रभु में लीन बना रहता था इसलिए वह आधी कौड़ी का जाना जाने वाला छीपी प्रभु के सुमिरन के फलस्वरूप लखपतियों के समान हो गया क्योंकि अब वह किसी का भी मोहताज नहीं रहा।। १ ।। रहाउ ।। बुनने और ताना तनने के काम में ही लगा न रहकर कबीर ने प्रभु चरणों में प्रीति लगाई तो नीच कुल का माना जाने वाला वह निर्धन जुलाहा गुणों का समुद्र बन गया।। १ ।। नित्य मरे हुए पशु ढोने वाले रविदास ने जब माया मोह को त्याग दिया तो साधसंगत में रहकर वह भी प्रसिद्ध हो गया और उसने परमात्मा का दर्शन पा लिया।। २ ।। जाति का नाई सैन लोगों के छोटे मोटे काम करने वाला था परन्तु वह भी घर-घर में जाना जाने लगा;उसके हृदय में परमात्मा बस गया और उसकी

महि गनिआ ॥ ३ ॥ इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥ मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥ ४ ॥ २ ॥ रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥ जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा ॥ देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा ॥ १ ॥ कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही ॥ पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही ॥ २ ॥ पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही ॥ कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही ॥ ३ ॥ ३ ॥

आसा सेख फरीद जीउ की बाणी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दिलहु मुहबति जिंन्ह सेई सचिआ ॥ जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ ॥ १ ॥ रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥ विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ॥ तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से ॥ २ ॥ परवदगार अपार अगम बेअंत तू ॥ जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं ॥ ३ ॥ तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥ सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा ॥ बोलै सेख फरीदु पिआरे अलह लगे ॥ इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥ १ ॥ आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न आईऐ ॥ झूठी दुनीआ लगि न आपु वञाईऐ ॥ २ ॥ बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥ जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥ ३ ॥ छैल लंघंदे पारि गोरी मनु धीरिआ ॥ कंचन वंने पासे कलवति चीरिआ ॥ ४ ॥ सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ ॥ जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ ॥ ५ ॥ कतिक कूंजां चेति डउ सावणि बिजुलीआं ॥ सीआले सोहंदीआं पिर गलि बाहड़ीआं ॥ ६ ॥ चले चलणहार विचारा लेइ मनो ॥ गंढेदिआं छिअ माह तुड़ंदिआ हिकु खिनो ॥ ७ ॥ जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किंनि गए ॥ जालण गोरां नालि उलामे जीअ सहे ॥ ८ ॥ २ ॥

गणना भी भक्तों में होने लगी।। ३ ।। यह कथा वार्ता सुनकर धन्ना जाट भी प्रभु की भक्ति करने लगा; उसे प्रत्यक्ष प्रभु का दर्शन हुआ और धन्ना भी भाग्यशाली बन गया।। ४ ।। २ ।। हे मेरे मन, तू उस दयालु दामोदर प्रभु का सुमिरन क्यों नहीं करता? देखना, किसी अन्य पर आशा मत लगाए रखना। यदि तू सारी सृष्टि और ब्रह्माण्ड के खण्डों में भी भटकता रहेगा तब भी वही कुछ होगा जो प्रभु करेगा।। १ ।। रहाउ।। माँ के पेट के जल में प्रभु ने हमारा दस द्वारों वाला शरीर बना दिया है; वह हमारा ऐसा मालिक है कि आहार देकर वह माँ के पेट की आग में भी हमारी रक्षा करता है।।१।। कछुआ तो पानी में रहता है परन्तु उसके बच्चे बाहर पड़े रहते हैं। न तो उन बच्चों के पर हैं कि वे उड़ कर कुछ खा लें और न ही मादा कछुए के स्तन हैं कि उन्हें दूध पिला सके। परन्तु हे मन, तू अच्छी तरह समझ ले कि यह उस पूर्ण परमानन्द मनोहर प्रभु का ही कार्य है कि वह उनका पालन करता है।।२।। पत्थर में कीड़ा गुप्त रूप में पड़ा रहता है और पत्थर से बाहर जाने का उसका कोई मार्ग नहीं होता। पर उसका पालक भी पूर्ण परमात्मा है। भक्त धन्ना का कथन है कि हे जीव, तू भी मत डर।। ३ ।। ३ ।।

आसा शेख़ फ़रीद जी की वाणी १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जिन्हें हृदय से प्रभु प्यारा है वही वास्तव में सत्याचरण वाले हैं। जिनके मन में कुछ है और मुँह से वे कुछ और ही बोलते हैं उन्हें कच्चे और झूठे समझा जाता है।।१।। जो खुदा के प्यार में रंगे हुए हैं वे उनके दर्शन के रंग की मस्ती में ही बने रहते हैं। जिनको प्रभु का नाम भूल गया है वे तो धरती पर बोझ बन गए हैं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के द्वार के दरवेश फ़कीर तो वही हैं जिनको खुदा ने स्वयं कबूल किया है। उनको जन्म देने वाली उनकी माँ धन्य है और उन्हीं का संसार में आना सफ़ल समझा जाता है।। २ ।। हे पालन कर्ता प्रभु, तू अपरंपर, अगम्य और अनन्त है। जिन्होंने वास्तविक सत्य को पहचान लिया है मैं उनके पाँव चूमता हूँ।। ३ ।। हे खुदा, मैं तेरी शरण में आ गया हूँ और तू ही बख्श लेने वाला है। तू शेख़ फ़रीद को ख़ैरात के रूप में अपनी भक्ति का दान दे।। ४ ।। १ ।। आसा ।। शेख़ फ़रीद कहता है कि हे खुदा के प्यारो, उस अल्लाह की तरफ लग जाओ क्योंकि यह शरीर तो बेचारा कब्र रूपी घर में जाकर मिट्टी हो जाएगा।। १ ।। मेरा खुदा के साथ मेल तुरन्त हो सकता है यदि मैं इन्द्रिय रूपी कूंजों को, जिन्हें कि मन ने भड़का रखा है, रोक लूँ।। १ ।। रहाउ ।। यदि यह पता हो कि मर कर फिर यहाँ नही आना है तो झूठी दुनियां के पीछे लगकर अपने आप को ऐसे ही बेकार नहीं बनाना चाहिए।। २ ।। हमेशा सत्य और धर्म की बात ही करनी चाहिए। झूठ नहीं बोलना चाहिए और जो मार्ग गुरु बताए मुरीद को उसी पर ही चलना चाहिए।। ३ ।। जैसे नौजवानों को नदी पार करते देखकर कमज़ोर स्त्री के मन में भी पार करने का साहस आ जाता है इसी प्रकार शान्त पुरुषों को पार होते देख कमज़ोर व्यक्ति भी साहसी बन जाता है।। इसलिए संतजनों की संगति ही लाभदायक है। जो केवल सोना, धन-सम्पदा आदि की ओर ही लगे रहते हैं उन्हें तो आरे के साथ चीरा जाता है अर्थात वे दुखी बने रहते हैं।। ४ ।। हे शेख़, तू यह जान ले कि इस संसार में कोई सदा के लिए नहीं रहा है। जिस आसन अथवा स्थान पर हम बैठे हैं उस पर कितने ही लोग बैठकर यहाँ से चले गए हैं।। ५ ।। कार्तिक के महीने में कूंजें आती है; चैत्र के महीने में जंगलों को आग लगना शुरु हो जाती है, सावन में बिजली चमकती है और सर्दी में कोमल और सुन्दर बाहें पति के गले की शोभा बढ़ाती हैं।। ६ ।। इस प्रकार यह सारा कार्य-व्यवहार चलता जा रहा है। जाने वाले जीव चलते चले जा रहे हैं इसलिए हे जीव इसको अच्छी तरह से विचार ले कि इस संसार में सम्बन्ध बनने में तो छः महीने लग सकते हैं परन्तु सम्बन्ध टूटते हुए यहाँ एक क्षण ही लगता है।। ७ ।। ज़मीन आसमान को पूछती है कि यहाँ से बड़े-बड़े मार्ग-दर्शक जो संसार के लिए केवट के रूप में कार्य करते थे कहाँ चले गए। आसमान उत्तर देता है कि कई कब्रों में लेटे हुए संघर्ष कर रहे हैं और उनकी रूहें अनेक प्रकार की डाँट फटकार बर्दाश्त कर रही हैं।। ८ ।। २ ।।

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु गूजरी महला १ चउपदे घरु १ ॥

तेरा नामु करी चनणाठीआ जे मनु उरसा होइ ॥ करणी कुंगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ ॥ १ ॥ पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाहरि देव पखालीअहि जे मनु धोवै कोइ ॥ जूठि लहै जीउ माजीऐ मोख पइआणा होइ ॥ २ ॥ पसू मिलहि चंगिआईआ खड़ु खावहि अंम्रितु देहि ॥ नाम विहूणे आदमी ध्रिगु जीवण करम करेहि ॥ ३ ॥ नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे संम्हाले ॥ जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी महला १ ॥ नाभि कमल ते ब्रहमा उपजे बेद पड़हि मुखि कंठि सवारि ॥ ता को अंतु न जाई लखणा आवत जात रहै गुबारि ॥ १ ॥ प्रीतम किउ बिसरहि मेरे प्राण अधार ॥ जा की भगति करहि जन पूरे मुनि जन सेवहि गुर वीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रवि ससि दीपक जा के त्रिभवणि एका जोति मुरारि ॥ गुरमुखि होइ सु अहिनिसि निरमलु मनमुखि रैणि अंधारि ॥ २ ॥ सिध समाधि करहि नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै ॥ अंतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबेरै ॥ ३ ॥ सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा ॥ ४ ॥ २ ॥

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैर अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।।

राग़ु गूजरी महला १ चौपदे घरु १।।

यदि मेरा मन पत्थर हो जाए तो मैं तेरे नाम को चन्दन मानकर उस पर घिस लूँ। यदि अच्छे आचरण का केसर साथ मिला दें तो हृदय के अन्दर ही प्रभु की पूजा चलती रहती है।। १ ।। नाम का सुमिरन करके पूजा की जाए क्योंकि बिना प्रभु-नाम के पूजा नहीं होती।। १ ।। रहाउ ।। बाहर से ठाकुर रूपी पत्थरों को लोग धोते हैं परन्तु यदि कोई अपने मन को धो ले तो मन की जूठन उतर जाती है और मन माँजने के फलस्वरूप पवित्र होकर मोक्ष प्राप्त करने वाला बन जाता है।। २ ।। पशु को मिलने से भी अच्छा फल प्राप्त होता है क्योंकि वह घास खाता है और अमृत तुल्य दूध देता है; परन्तु प्रभु नाम से विहीन व्यक्ति का जीवन और कर्म धिक्कार योग्य है क्योंकि उसका कोई भी अच्छा फल नहीं होता।। ३ ।। हे जीव, उस प्रभु को दूर मत जानो वह पास ही है और सदैव सब की खोज ख़बर लेता रहता है तथा सबका पालन करता है। नानक का कथन है कि वह जो देता है हमें उसी को खाना है और वही एक सच्चा स्वामी है।। ४ ।। १ ।। गूजरी महला १ ।। पौराणिक वर्णनों के अनुसार विष्णु के नाभि कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए और मुख तथा गले को सँवार कर वेद पाठ करने लगे। परन्तु उस परमात्मा का अन्त नहीं जान सके और अज्ञान के अँधेरे में भटकते हुए आते जाते रहे।। १ ।। जीवन के आधार प्रभु को भला कैसे भुलाया जाए जिसकी भक्ति पूर्ण पुरुष किया करते हैं और मुनिजन भी गुरु के उपदेश के माध्यम से उसी का सुमिरन करते हैं।। १ ।। रहाउ।। सूर्य और चन्द्रमा जिसके दीपक हैं, तीनों लोकों में एक उसी प्रभु की ज्योति जल रही है।। गुरमुख व्यक्ति तो रात-दिन निर्मल बना रहता है और मनमुख व्यक्ति के लिए सब ओर अँधेरी रात ही है।। २ ।। सिद्ध लोग समाधियों में संघर्ष करते हुए उसी की खोज करते हैं परन्तु वे इन दो आँखों से उसे कैसे देख सकते हैं। जब अन्तर की ज्योति और नाम सुमिरन की लगातार ध्वनि उठती है तो सच्चा गुरु ही इस संघर्ष का सुखद अन्त करता है।। ३ ।। हे देवता तुल्य व्यक्तियों के मालिक अनन्त एवं अजन्मा हरि, मुझे अपने अटल और अद्वितीय महल में सहज अवस्था के माध्यम से जगजीवन मिल सकता है यदि तुम अपनी कृपादृष्टि से मुझे पार उतार लो।। ४ ।। २ ।।

रागु गूजरी महला ३ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ध्रिगु इवेहा जीवणा जितु हरि प्रीति न पाइ ॥ जितु कंमि हरि वीसरै दूजै लगै जाइ ॥ १ ॥ ऐसा सतिगुरु सेवीऐ मना जितु सेविऐ गोविद प्रीति ऊपजै अवर विसरि सभ जाइ ॥ हरि सेती चितु गहि रहै जरा का भउ न होवई जीवन पदवी पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिंद प्रीति सिउ इकु सहजु उपजिआ वेखु जैसी भगति बनी ॥ आप सेती आपु खाइआ ता मनु निरमलु होआ जोती जोति समई ॥ २ ॥ बिनु भागा ऐसा सतिगुरु न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥ कूड़ै की पालि विचहु निकलै ता सदा सुखु होइ ॥ ३ ॥ नानक ऐसे सतिगुर की किआ ओहु सेवकु सेवा करे गुर आगै जीउ धरेइ ॥ सतिगुर का भाणा चिति करे सतिगुरु आपे क्रिपा करेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ गूजरी महला ३ ॥ हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी ॥ हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥ १ ॥ हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ॥ गुर प्रसादि मेरा मनु भीजै एहा सेव बनी जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मेरा सिम्रिति हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ॥ हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु त्रिपतै हरि मेरा साकु अंति होइ सखाई ॥ २ ॥ हरि बिनु होर रासि कूड़ी है चलदिआ नालि न जाई ॥ हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै जहा हउ जाउ तह जाई ॥ ३ ॥ सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई ॥ कहै नानकु हरि का भाणा होआ कहणा कछू न जाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ गूजरी महला ३ ॥ जुग माहि नामु दुलंभु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ बिनु नावै मुकति न होवई वेखहु को विउपाइ ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ सतिगुर मिलिऐ हरि मनि वसै सहजे रहै समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जां भउ पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ ॥ बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥ २ ॥ सेइ मुकत जि मनु जिणहि फिरि धातु न लागै आइ ॥ दसवै दुआरि रहत करे त्रिभवण सोझी पाइ ॥ ३ ॥ नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की

राग गूजरी महला ३ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

ऐसे जीने को धिक्कार है जिसमें प्रभु से प्रेम नहीं डाला जाता। ऐसे काम को भी धिक्कार है जिसमें लगकर व्यक्ति प्रभु को विस्मृत कर दे और द्वैतभाव में लीन हो जाए।। १ ।। हे मन, ऐसे सच्चे गुरु की सेवा कर जिसकी सेवा करने से प्रभु-प्रेम उत्पन्न हो और सब कुछ भूल जाए।। मेरा प्रभु के साथ चित्त लगा रहे, बुढ़ापे का भय न रहे और जीवन की ऊँची पदवी (परम उद्देश्य) प्राप्त हो जाए।। १ ।। रहाउ ।। देखो, प्रभु के साथ कैसी भक्ति बन गई कि प्रभु-प्रेम के माध्यम से जीवन में एक सहज भाव उत्पन्न हो गया। अपने प्रयत्न से ही जब अहंकार का भाव नष्ट कर दिया गया तो मन निर्मल हो गया और परम ज्योति में मेरी ज्योति लीन हो गई है।। २ ।। यदि सब चाहें भी तो बिना भाग्य के ऐसा सच्चा गुरु प्राप्त नहीं होता। झूठ की दीवार जो हमारे सामने बनी रहती है अगर बीच से निकल जाए तो व्यक्ति सदा के लिए सुखी हो जाता है।। ३ ।। हे नानक, ऐसे सच्चे गुरु की यह सेवक भला क्या सेवा करे? यही किया जाए कि गुरु के आगे अपना मन अर्पण कर दिया जाए। सच्चे गुरु का आदेश मन में बसाया जाए तो सच्चा गुरु स्वयं ही कृपा कर देता है।। ४ ।। १ ।। ३ ।। गूजरी महला ३ ।। हे जीव, तू प्रभु की सेवा कर, प्रभु के बिना दूसरे किसी की भी सेवा नहीं की जानी चाहिए क्योंकि प्रभु की सेवा से मनोवांछित फल प्राप्त होता है और अन्यों की सेवा से जन्म (जीवन) व्यर्थ चला जाता है।। १ ।। प्रभु ही मेरी प्रीति है और प्रभु का सुमिरन ही मेरा आचरण है; मेरी कथा-वार्ता का आधार भी केवल प्रभु ही है। यदि गुरु की कृपा से मेरा मन प्रभु प्रेम में भीग जाए तो यही सेवा का बहुत बड़ा फल है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ही मेरी स्मृति, प्रभु ही मेरा शास्त्र, प्रभु ही मेरा सम्बन्धी और प्रभु ही मेरा भाई है। प्रभु के नाम की ही मुझे भूख लगती है और हरि-नाम से ही मेरा मन तृप्त होता है; प्रभु ही मेरा सम्बन्धी और अन्त में साथी बना रहने वाला है।। २ ।। प्रभु के बिना अन्य सारी रास पूँजी झूठी है जो यहाँ से चलते समय साथ नहीं जाती। प्रभु ही मेरा धन है जो मेरे साथ चलेगा और मैं जहाँ भी जाऊँगा वहां साथ जाएगा।। ३ ।। जो झूठ में लीन बना रहता है वही झूठा है और वह झूठे कार्य ही करता है। नानक का कथन है कि जो हो रहा है वह प्रभु का ही हुकुम है; इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है।। ४ ।। २ ।। ४ ।। गूजरी महला ३ ।। इस ज़माने में हरि-नाम दुर्लभ है जिसे गुरमुख बन ही प्राप्त किया जा सकता है।। बेशक कोई दूसरा उपाय कर के देख लो, प्रभु-नाम के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती।। १ ।। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और सदैव ही बलिहारी जाता हूँ। सच्चे गुरु से मिलने पर ही सत्य मन में आ बसता है और व्यक्ति सहज में लीन हो जाता हैं।। १ ।। रहाउ ।। जब परमात्मा अपना भय हमारे मन में बसाता है तो मन में मोह-विहीनता की भावना पैदा होती है। मोह से परे जाकर ही प्रभु को पाया जाता है और प्रभु में लीन रहा जाता है।। २ ।। जो मन को जीत लेने हैं वे ही मुक्त हो जाते हैं और फिर माया मोह उन्हें प्रभावित नहीं करते। वे अपना ठिकाना दशम द्वार (उच्चतम अवस्था) में बना लेते हैं और उन्हें तीनों लोकों की सूझ प्राप्त हो जाती है।। ३ ।। हे नानक, उस प्रभु की

रजाइ ॥ इहु कारणु करता करे जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ गूजरी महला ३ ॥ राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ ॥ गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥ १ ॥ अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ॥ हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै जिन्ह कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ॥ त्रिसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि ॥ २ ॥ अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ ॥ जिसु नर की दुबिधा न जाइ धरम राइ तिसु देइ सजाइ ॥ ३ ॥ करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ॥ नानक विचहु हउमै मारे तां हरि भेटै सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥ गूजरी महला ३ ॥ तिसु जन सांति सदा मति निहचल जिस का अभिमानु गवाए ॥ सो जनु निरमलु जि गुरमुखि बूझै हरि चरणी चितु लाए ॥ १ ॥ हरि चेति अचेत मना जो इछहि सो फलु होई ॥ गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि सदा सुखु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइ त पूज कराए ॥ जो उसु पूजे सो फलु पाए दीखिआ देवै साचु बुझाए ॥ २ ॥ विणु पारसै पूज न होवई विणु मन परचे अवरा समझाए ॥ गुरू सदाए अगिआनी अंधा किसु ओहु मारगि पाए ॥ ३ ॥ नानक विणु नदरी किछू न पाईऐ जिसु नदरि करे सो पाए ॥ गुर परसादी दे वडिआई अपणा सबदु वरताए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥ गूजरी महला ३ पंचपदे ॥ ना कासी मति ऊपजै ना कासी मति जाइ ॥ सतिगुर मिलिऐ मति ऊपजै ता इह सोझी पाइ ॥ १ ॥ हरि कथा तूं सुणि रे मन सबदु मंनि वसाइ ॥ इह मति तेरी थिरु रहै तां भरमु विचहु जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि चरण रिदै वसाइ तू किलविख होवहि नासु ॥ पंच भू आतमा वसि करहि ता तीरथ करहि निवासु ॥ २ ॥ मनमुखि इहु मनु मुगधु है सोझी किछू न पाइ ॥ हरि का नामु न बुझई अंति गइआ पछुताइ ॥ ३ ॥ इहु मनु कासी सभि तीरथ सिम्रिति सतिगुर दीआ बुझाइ ॥ अठसठि तीरथ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरदै रहिआ समाइ ॥ ४ ॥ नानक सतिगुर मिलिऐ हुकमु बुझिआ एकु वसिआ मनि आइ ॥ जो तुधु भावै सभु सचु है सचे

रज़ा को देखो कि सिक्ख गुरु कृपा से गुरु का रूप हो गया। परमात्मा ही यह सब होने का स्वयं कारण बनता है और गुरु के शरणागत् की आत्मा परमात्मा की ज्योति में लीन हो जाती है।। ४ ।। ३ ।। ५ ।। गूजरी महला ३ ।। राम-राम तो सभी कहते हैं परन्तु कहने मात्र से राम की प्राप्ति नहीं होती। गुरु की कृपा से जब राम हृदय में आ बसता है तभी जीव को सफलता और लाभ प्राप्त होते हैं।। १ ।। जिसके हृदय में परमात्मा के लिए प्रेम पैदा हो जाता है परमात्मा ऐसे व्यक्ति को कभी नहीं भूलता क्योंकि वह सदा अपने चित्त में परमात्मा को याद करता रहता है।। १ ।। रहाउ ।। जो बाहर से तो संत कहलाते हैं परन्तु जिनके हृदय में छल कपट रहता है उनकी तृष्णाएं तो बिल्कुल ही समाप्त नहीं होती और संसार से जाते समय वे अन्त में पछताते ही जाते हैं।। २ ।। व्यक्ति अनेकों तीर्थों पर जाकर स्नान आदि का उपक्रम करता है परन्तु फिर भी उसके अन्तर्मन का अहंकार कभी भी नहीं छूटता और जिस व्यक्ति का दुविधा भाव समाप्त नहीं होता धर्मराज अर्थात न्यायकर्ता प्रभु उसे दण्ड देता है।। ३ ।। जिस पर कृपा हो जाए वही सेवक उस प्रभु को पाता है और इस तथ्य को कोई बिरला गुरमुख ही बूझता है। हे नानक, यदि व्यक्ति अन्तर्मन से अहंकार को नष्ट कर दे तभी वह परमात्मा से मिलाप कर पाता है।। ४ ।। ४ ।। ६ ।। गूजरी महला ३।। जिसका अभिमान चुक जाता है उसी सेवक को शान्ति प्राप्त होती है और केवल उसी की मति सदैव स्थिर बनी रहती है। वही सेवक निर्मल होता है जो गुरमुख बनकर परमात्मा के रहस्य को जानता है और हरि-चरणों में चित्त लगाए रहता है।। १ ।। हे भुलक्कड़ मन, तू प्रभु का सुमिरन कर; तू जो इच्छा करेगा वही फल तुझे मिल जाएगा। गुरु की कृपा से ही जीव हरि-रस प्राप्त करता है और उसे पीते हुए सदैव सुखी बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु से मिलाप हो जाने से व्यक्ति पारस बन जाता है और पारस बना हुआ व्यक्ति ही संसार में मान्य होता है। जो ऐसे व्यक्ति का सम्मान करता है उसका उसे फल प्राप्त होता है और पारस बना हुआ व्यक्ति ही लोगों को शिक्षा देकर सत्य के रहस्य को समझाता है।। २ ।। पारस बने बिना अर्थात गुणवान बने बिना लोगों की ओर से मान्यता प्राप्त नहीं होती। यदि स्वयं अच्छी तरह अपने मन को संतुष्ट किए बिना कोई दूसरों को समझाना चाहे, अन्धा अज्ञानी होने के बावजूद गुरु कहलाने लग जाए तो भला वह किसका मार्गदर्शक बन सकता है।।३।। हे नानक, प्रभु की कृपादृष्टि बिना कुछ भी प्राप्त नहीं किया जाता; प्रभु जिस पर कृपादृष्टि करता है वही सब कुछ प्राप्त करता है। गुरु की कृपा से बड़प्पन प्रदान करके वह प्रभु अपना नाम (शब्द) जीवों के हृदय में व्याप्त कर देता है।। ४ ।। ५ ।। ७।। गूजरी महला ३ ।। पंचपदे।। न तो काशी में रहने पर ज्ञान पैदा होता है और न ही काशी में रहने पर व्यक्ति की बुद्धि चली जाती है; विवेक बुद्धि तो सच्चे गुरु के मिलाप से पैदा होती है और फिर मनुष्य सूझवान बन जाता है।।१।। हे मन, तू शब्द को हृदय में धारण करके प्रभु की कथा-वार्ता सुन जिससे तेरी बुद्धि स्थिर बनी रहेगी और तेरे अन्तर्मन का भ्रम, संशय आदि समाप्त हो जाएंगे।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के चरणों को हृदय में बसा ले तेरे समस्त पाप नष्ट हो जाएंगे।। २।। यह मन मनमुख और मूर्ख है इसको कुछ भी पता नहीं चलता। प्रभु के नाम के रहस्य को यह नहीं बूझता और अन्त में पछताता हुआ यहाँ से चला जाता है।। ३ ।। यह मन ही काशी, सभी तीर्थ और स्मृति एवं शास्त्र है; सच्चे गुरु ने यह बात अच्छी तरह समझा दी है। जिसके हृदय में परमात्मा बसा रहता है, अड़सठ तीर्थ उसके साथ ही निवास करते रहते हैं।। ४ ।। हे नानक, सच्चे गुरु को मिलने से हुकुम को जाना जाता है और केवल एक ही प्रभु मन में आ बसता है। हे प्रभु, जो तुझे भाता है वह सब कुछ सत्य ही है और यह जान लेने वाला जीव सत्य में ही

रहै समाइ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ८ ॥ गूजरी महला ३ तीजा ॥ एको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई ॥ दूजै भाइ जेता पड़हि पड़त गुणत सदा दुखु होई ॥ १ ॥ हरि चरणी तूं लागि रहु गुर सबदि सोझी होई ॥ हरि रसु रसना चाखु तूं तां मनु निरमलु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर मिलिऐ मनु संतोखीऐ ता फिरि त्रिसना भूख न होइ ॥ नामु निधानु पाइआ पर घरि जाइ न कोइ ॥ २ ॥ कथनी बदनी जे करे मनमुखि बूझ न होइ ॥ गुरमती घटि चानणा हरि नामु पावै सोइ ॥ ३ ॥ सुणि सासत्र तूं न बुझही ता फिरहि बारो बार ॥ सो मूरखु जो आपु न पछाणई सचि न धरे पिआरु ॥ ४ ॥ सचै जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जिउ तिस की रजाइ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ९ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ॥

हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥ १ ॥ मेरे मीत गुरदेव मोकउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन्ह हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥ ३ ॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धंनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि नानक नामु परगासि ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी महला ४ ॥ गोविंदु गोविंदु प्रीतमु मनि प्रीतमु मिलि सतसंगति सबदि मनु मोहै ॥ जपि गोविंदु गोविंदु धिआईऐ सभ कउ दानु देइ प्रभु ओहै ॥ १ ॥ मेरे भाई जना मोकउ गोविंदु गोविंदु गोविंदु मनु मोहै ॥ गोविंद गोविंद गोविंद गुण गावा मिलि गुर साधसंगति जनु सोहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख सागर हरि भगति है गुरमति कउला रिधि सिधि लागै पगि ओहै ॥ जन कउ

लीन बना रहता है।। ५ ।। ६।। ८ ।। गूजरी महला ३ तीसरा ।। हे पण्डित, प्रभु का एक नाम ही सच्चा खज़ाना है; उसी को सुन और सत्य जानकर समझ ले। द्वैतभाव में अन्य जो कुछ भी तू पढ़ता या चिन्तन करता है उससे सदैव दुख ही प्राप्त होगा।।१।। प्रभु के चरणों में तू लगा रह, शब्द-गुरु के माध्यम से ही तुझे समझ आएगी। अपनी जीभ द्वारा तू हरि-रस का पान कर, तभी तेरा मन निर्मल होगा।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु के मिलाप से मन में सन्तोष भाव आ जाता है और फिर आशाओं, तृष्णाओं की भूख नहीं लगती। जब व्यक्ति नाम रूपी खज़ाना पा जाता है तो फिर कोई भी प्रभु के बिना किसी दूसरे घर का आसरा नहीं देखता।। २ ।। वाद-विवाद में पड़े रहने वाले मनमुख को रहस्य की समझ नहीं आती परन्तु गुरमति के माध्यम से जिसका हृदय प्रकाशित हो जाता है वही प्रभु नाम को प्राप्त करता है।। ३ ।। हे जीव, तू शास्त्रों को सुनकर भी उस प्रभु को नही जान पाता इसीलिए तू बार-बार इधर उधर भटकता रहता है। जो अपने आप को पहचानता नहीं और सत्य के साथ प्रेम नहीं लगाता केवल वही मूर्ख है।। ४ ।। उस सत्य प्रभु ने ही सारे जगत को भ्रम में डाला हुआ है; उसके इस कौतुक के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। हे नानक जो उसको भाता है और जैसी उसकी रज़ा होती है वह वैसा ही करता है।। ५ ।। ७ ।। ६ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।। रागु गूजरी महला ४ चौपदे घरु १।।

हे महापुरुष गुरु, हे प्रभु के प्यारे सद्गुरु मैं तेरे आगे प्रार्थना करता हूँ कि मेरे जैसे अनेकों ही तुच्छ जीव उस परमात्मा की शरण देख रहे हैं। कृपा कर, मेरे हृदय में प्रभु-नाम का प्रकाश पैदा कर दो।। १ ।। हे मेरे मित्र गुरु, मेरे हृदय में राम-नाम का प्रकाश पैदा कर दे। गुरु के द्वारा दी गई बुद्धि एवं मार्गदर्शन ही सदैव मेरे प्राणों के साथी बने रहें। प्रभु का गुणानुवाद मेरे जीवन के सफर की पूँजी बना रहे।।१।। रहाउ ।। प्रभु के अनन्य सेवकों का बड़ा ऊँचा भाग्य है जिनके अन्दर प्रभु-नाम के लिए श्रद्धा है, तड़प है। उन्हें जब परमात्मा का नाम प्राप्त होता है तो वे पूर्ण रूपेण तृप्त हो जाते हैं।। संगत में मिल बैठने से ही उनके अन्दर अनेकों गुण प्रकाशित हो उठते हैं ।।२।। परन्तु जिनको परमात्मा के नाम में रस नहीं आया, जिन्हें प्रभु-नाम नहीं मिला वे भाग्यहीन हैं। वे यमपाश में पड़े हुए समझे जाने चाहिए और मौत का भय हमेशा ही उन पर सवार रहता है। जो गुरु की शरण में नहीं आते, जो सद्संगति में नही बैठते उन्हें धिक्कार है एवं उनका जीवन भी धिक्कार योग्य है।।३।। जिनको सद्गुरु एवं संगति प्राप्त हो चुकी है उनके माथे पर प्रारम्भ से ही अच्छे लेख लिखे हुए हैं। हे नानक, सद्संगति धन्य है जिसमें सम्मिलित होकर प्रभु के नाम का आनन्द प्राप्त होता है और जहाँ सत्संगियों से मिलकर परमात्मा का नाम हृदय में आ बसता है।।४।।१।। गूजरी महला ४।। धरती का स्वामी, धरती का वह स्वामी प्रभु मेरा प्रियतम है; सद्संगति में उसे शब्द के माध्यम से मिला जाता है और वह मेरे मन को मोह लेता है। प्रभु का जाप करते हुए प्रभु का सुमिरन करो क्योंकि वही प्रभु सबको दान देता है।। १ ।। मेरे भाईयो और प्रभु के सेवको, मेरे मन को तो उस प्रभु ने ही मोहित कर लिया है। मैं उस गोविन्द प्रभु के ही गुण गाता जाऊँ; उसका सेवक गुरु से मिलकर साधसंगत में शोभायमान बना रहता है।।१।। रहाउ।। प्रभु की भक्ति सुखों का सागर है; गुरु के उपदेश के माध्यम से माया, ऋद्धियां, सिद्धियां आदि सब उस व्यक्ति के चरणों में आ गिरती हैं जो प्रभु भक्ति को ही सुख सागर मानता है। प्रभु के सेवक को

राम नामु आधारा हरि नामु जपत हरि नामे सोहै ॥ २ ॥ दुरमति भागहीन मति फीके नामु सुनत आवै मनि रोहै ॥ कऊआ काग कउ अंम्रित रसु पाईऐ त्रिपतै विसटा खाइ मुखि गोहै ॥ ३ ॥ अंम्रित सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै ॥ नानक धनु धंनु वडे वडभागी जिन्ह गुरमति नामु रिदै मलु धोहै ॥ ४ ॥ २ ॥ गूजरी महला ४ ॥ हरि जन ऊतम ऊतम बाणी मुखि बोलहि परउपकारे ॥ जो जनु सुणै सरधा भगति सेती करि किरपा हरि निसतारे ॥ १ ॥ राम मोकउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ मेरे प्रीतम प्रान सतिगुरु गुरु पूरा हम पापी गुरि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि वडभागी वडभागे जिन हरि हरि नामु अधारे ॥ हरि हरि अंम्रितु हरि रसु पावहि गुरमति भगति भंडारे ॥ २ ॥ जिन दरसनु सतिगुर सतपुरख न पाइआ ते भागहीण जमि मारे ॥ से कूकर सूकर गरधभ पवहि गरभ जोनी दयि मारे महा हतिआरे ॥ ३ ॥ दीन दइआल होहु जन ऊपरि करि किरपा लेहु उबारे ॥ नानक जन हरि की सरणाई हरि भावै हरि निसतारे ॥ ४ ॥ ३ ॥ गूजरी महला ४ ॥ होहु दइआल मेरा मनु लावहु हउ अनदिनु राम नामु नित धिआई ॥ सभि सुख सभि गुण सभि निधान हरि जितु जपिऐ दुख भुख सभ लहि जाई ॥ १ ॥ मन मेरे मेरा राम नामु सखा हरि भाई ॥ गुरमति राम नामु जसु गावा अंति बेली दरगह लए छडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं आपे दाता प्रभु अंतरजामी करि किरपा लोच मेरै मनि लाई ॥ मै मनि तनि लोच लगी हरि सेती प्रभि लोच पूरी सतिगुर सरणाई ॥ २ ॥ माणस जनमु पुंनि करि पाइआ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु बिरथा जाई ॥ नाम बिना रस कस दुखु खावै मुखु फीका थुक थूक मुखि पाई ॥ ३ ॥ जो जन हरि प्रभ हरि हरि सरणा तिन दरगह हरि हरि दे वडिआई ॥ धंनु धंनु साबासि कहै प्रभु जन कउ जन नानक मेलि लए गलि लाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ गूजरी महला ४ ॥ गुरमुखि सखी सहेली मेरी मोकउ देवहु दानु हरि प्रान जीवाइआ ॥ हम होवह लाले गोले गुरसिखा के जिन्हा अनदिनु हरि प्रभु पुरखु धिआइआ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि बिरहु गुरसिख पग लाइआ ॥ मेरे प्रान सखा गुर के

प्रभु के नाम का सहारा ही बना रहता है और प्रभु-नाम का जाप करते हुए ही प्रभु-नाम में ही उसका आध्यात्मिक जीवन सुन्दर बन जाता है।। २ ।। हे भाई, दुर्मति के पीछे चलने वाले भाग्यहीन और हल्की बुद्धि वाले होते हैं; परमात्मा का नाम सुनते ही उनका मन क्रोधित हो उठता है। कौवे के आगे यदि स्वादिष्ट भोजन रखा जाए तब भी वह विष्ठा को ही अपने मुँह में डालकर प्रसन्न होता है।। ३ ।। प्रभु-नाम का जाप करने वाला सच्चा गुरु आध्यात्मिक जीवन देने वाले अमृत-नाम रूपी जल का वह सरोवर है जिसमें स्नान करने से कौवे जैसी बुद्धि वाले मनुष्य भी मोती चुगने वाले हंस के समान हो जाते हैं। हे नानक, वे मनुष्य धन्य हैं, और भाग्यशाली हैं जिनको गुरमति के माध्यम से प्रभु-नाम प्राप्त हुआ है और यह नाम उनके हृदय के मल को धोता रहता है।। ४ ।। २ ।। गूजरी महला ४ ।। प्रभु के सेवक उत्तम होते हैं; उनकी वाणी उत्तम होती है और वे मुख से परोपकारी वचनों का उच्चारण करते हैं। जो व्यक्ति उन्हें श्रद्धा-भक्ति के साथ सुनता है, प्रभु कृपा करके उन्हें पार उतार देता है।। १ ।। हे प्यारे प्रभु, मुझे अपने सेवकों से मिला दे। मेरा पूर्ण गुरु मुझे प्राणों जैसा प्यारा है और मुझ पापी को गुरु ने ही संसार-सागर से पार कर दिया है।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, गुरमुख व्यक्ति बड़े भाग्यशाली होते हैं क्योंकि परमात्मा का नाम ही उनके जीवन का आधार बना रहता है। वे आध्यात्मिक जीवन देने वाले प्रभु-नाम के रस को प्राप्त करते रहते हैं और गुरु के उपदेश पर चलने से उनके अन्दर प्रभु-भक्ति के भण्डार भरे रहते हैं।। २ ।। जिसने सच्चे पुरुष, सच्चे गुरु का दर्शन नहीं किया वे भाग्यहीन हैं और यम की मार को सहते रहते हैं। ऐसे हत्यारों को परमात्मा स्वयं मार देता है और वे कुत्ते, सूअर और गधे की योनि में पड़े रहते हैं।। ३ ।। हे दीनदयालु प्रभु, सेवक पर भी कृपा करो और इसे बचा लो। सेवक नानक प्रभु की शरण में है अब यदि प्रभु को अच्छा लगेगा तो वह इसे पार उतार लेगा।। ४।। ३ ।। गूजरी महला ४ ।। हे प्रभु, मुझ पर दया करके मेरा मन अपने चरणों में लगाए रखो ताकि मै हर समय तेरे नाम का सुमिरन करता रहूँ। सभी सुख, सभी खज़ाने उस प्रभु के पास ही हैं जिसके नाम का जाप करने से सभी दुख दूर हो जाते हैं और सब प्रकार की भूख शान्त हो जाती है।। १।। हे मेरे मन, वास्तविक मित्र और भाई परमात्मा ही है। गुरु की शिक्षा के फलस्वरूप मैं परमात्मा का गुणानुवाद करता रहूँ क्योंकि अन्त समय में यही सहायक बनता है और फंसे हुए को प्रभु के समक्ष छुड़ा लेता है।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तू स्वयं ही दाता और स्वयं ही अन्तर्यामी है; तूने ही कृपा करके मेरे हृदय में अपनी भक्ति की लगन लगाई है। मेरे मन तन में परमात्मा के साथ मिलाप की इच्छा बन गई है और परमात्मा ने मुझे सच्चे गुरु की शरण में डालकर मेरी यह इच्छा पूरी कर दी है।। २ ।। अनेकों पुण्य करने के बाद यह मानव जीवन प्राप्त हुआ है परन्तु प्रभु-नाम के बिना यह जीवन धिक्कार योग्य बनकर व्यर्थ ही जा रहा है। व्यक्ति प्रभु का नाम भुलाकर संसार के भक्ष्य-अभक्ष्य पदार्थ खाता हुआ दुखी होता रहता है और मुँह से बुरे बोल बोलता रहता है। इसीलिए सब दुनियां उसे धिक्कारती रहती है।। ३ ।। जो व्यक्ति प्रभु की शरण में पड़े रहते हैं प्रभु उन्हें अपने दरबार में बड़प्पन प्रदान करता है। प्रभु उनकी वाह-वाह तो करता ही है उन्हें शाबाश भी देता है और हे नानक ऐसे व्यक्तियों को वह गले से लगाकर भी मिलता है।। ४ ।। ४ ।। गूजरी महला ४ ।। हे गुरमुख रूप में रहने वाली मेरी सखी सहेलियो, मुझे प्राणों को जीवित रखने वाले प्रभु के नाम का दान दो। मैं उन गुरसिक्खों का सदैव दास हूँ जो हर समय परम पुरुष प्रभु के नाम का सुमिरन करते रहते हैं।। १ ।। मेरे मन और तन में गुरु के सिक्खों के चरणों का प्रेम पैदा हो गया है। हे मेरे प्राणों के मित्र गुरु के सिक्ख

सिख भाई मोकउ करहु उपदेसु हरि मिलै मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा हरि प्रभ भावै ता गुरमुखि मेले जिन्ह वचन गुरू सतिगुर मनि भाइआ ॥ वडभागी गुर के सिख पिआरे हरि निरबाणी निरबाण पदु पाइआ ॥ २ ॥ सतसंगति गुर की हरि पिआरी जिन हरि हरि नामु मीठा मनि भाइआ ॥ जिन सतिगुर संगति संगु न पाइआ से भागहीण पापी जमि खाइआ ॥ ३ ॥ आपि क्रिपालु क्रिपा प्रभु धारे हरि आपे गुरमुखि मिलै मिलाइआ ॥ जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नामि समाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ गूजरी महला ४ ॥ जिन सतिगुरु पुरखु जिनि हरि प्रभु पाइआ मोकउ करि उपदेसु हरि मीठ लगावै ॥ मनु तनु सीतलु सभ हरिआ होआ वडभागी हरि नामु धिआवै ॥ १ ॥ भाई रे मोकउ कोई आइ मिलै हरि नामु द्रिड़ावै ॥ मेरे प्रीतम प्रान मनु तनु सभु देवा मेरे हरि प्रभ की हरि कथा सुनावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धीरजु धरमु गुरमति हरि पाइआ नित हरि नामै हरि सिउ चितु लावै ॥ अंम्रित बचन सतिगुर की बाणी जो बोलै सो मुखि अंम्रितु पावै ॥ २ ॥ निरमलु नामु जितु मैलु न लागै गुरमति नामु जपै लिव लावै ॥ नामु पदारथु जिन नर नही पाइआ से भागहीण मुए मरि जावै ॥ ३ ॥ आनद मूलु जगजीवन दाता सभ जन कउ अनदु करहु हरि धिआवै ॥ तूं दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥ ४ ॥ ६ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गूजरी महला ४ घरु ३ ॥

माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए ॥ सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए ॥ १ ॥ हमरा जोरु सभु रहिओ मेरे बीर ॥ हरि का तनु मनु सभु हरि कै वसि है सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जना कउ सरधा आपि हरि लाई ॥ विचे ग्रिसत उदास रहाई ॥ २ ॥ जब अंतरि प्रीति हरि सिउ बनि आई ॥ तब जो किछु करे सु मेरे हरि प्रभ भाई ॥ ३ ॥ जितु कारै कंमि हम हरि लाए ॥ सो हम करह जु आपि कराए ॥ ४ ॥ जिन की भगति मेरे प्रभ भाई ॥ ते जन नानक राम नाम लिव लाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ७ ॥ १६ ॥

भाईयो, मुझे ऐसी शिक्षा दो जिसके माध्यम से प्रभु मुझे मिल जाए।। १ ।। रहाउ ।। यदि प्रभु चाहे तभी उन गुरमुखों से मिलाप होता है जिनको गुरु के शब्द मन में प्यारे लगते हैं। गुरु के वे प्यारे सिक्ख बड़े भाग्य वाले हैं जिन्होंने परमात्मा से मिलकर आध्यात्मिक निर्वाण पद प्राप्त कर लिया है।। २ ।। जिन व्यक्तियों को प्रभु का मीठा नाम मन में अच्छा लगता है उन्हें सच्चे गुरु की सद्संगत भी प्रिय लगती है; परन्तु जो सच्चे गुरु की संगत प्राप्त नहीं करते वे भाग्यहीन और पापी होते हैं और उन्हें आध्यात्मिक मौत ने खा लिया होता है।। ३ ।। जब कृपालु प्रभु कृपा करता है तो वह स्वयं ही उस व्यक्ति को उसके गुरु के माध्यम से मिल जाता है। दास नानक भी प्रभु के गुणानुवाद की वाणी का उच्चारण करता है और गुरवाणी के माध्यम से ही व्यक्ति परमात्मा में लीन हो जाता है।। ४ ।। ५ ।। गूजरी महला ४ ।। जिस व्यक्ति ने समर्थ सच्चे गुरु और हरि प्रभु को प्राप्त किया है वह मुझे भी उपदेश देकर मेरा प्यार प्रभु के साथ लगा दे। जो भाग्यशाली व्यक्ति परमात्मा के नाम का सुमिरन करता है उसका तन, मन, सब कुछ शीतल हो जाता है अर्थात वह आध्यात्मिक तौर से परिपूर्ण हो जाता है।। १ ।। हे भाई, मुझे कोई ऐसा सज्जन आ मिले जो मेरे हृदय में परमात्मा का नाम दृढ़ कर दे; जो मुझे परमात्मा के गुणानुवाद की कथावार्ता सुनाता रहे मैं उस सज्जन पर अपना तन, मन, प्राण सब कुछ अर्पण कर दूँगा।। १ ।। रहाउ।। गुरु के उपदेश के माध्यम से व्यक्ति धैर्य, धर्म प्राप्त कर लेता है और फिर सदैव ही प्रभु-नाम में अपना चित्त लगाए रहता है। सच्चे गुरु की वाणी अमृत वचन है; जो भी इसका उच्चारण करता है वह वास्तव में अपने मुँह से अमृत-पान करता है।। २ ।। प्रभु-नाम अत्यन्त निर्मल है जिसे कोई मैल नहीं लगती और जो व्यक्ति गुरु की मति के अनुरूप प्रभु-नाम का जाप करता है वह उसी में ही अपनी लौ लगा लेता है। जिन व्यक्तियों ने नाम रूपी पुरुषार्थ प्राप्त नहीं किया वे भाग्यहीन आध्यात्मिक तौर से मरे हुए हैं और मरते ही रहते हैं।। ३ ।। हे आनन्द के परम स्रोत संसार को जीवन देने वाले प्रभु, सभी सेवकों को आनन्द प्रदान करो ताकि वे तेरा (परमात्मा का) सुमिरन करते रहें। हे प्रभु, सब तेरे जीव हैं, तेरे ही सेवक हैं और तू सबका दाता है; हे नानक, गुरमुख बने हुए जीवों पर कृपा करके वह उन्हें अपने से मिला लेता है।। ४ ।। ६।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

गूजरी महला ४ घरु ३ ।। माता-पिता, पुत्र सबकी रचना परमात्मा ने ही की है और सबके परस्पर सम्बन्ध प्रभु ने ही बनाएं हैं।। १ ।। हे मेरे भाई, हमारा सारा बल तो छूट गया है; यह तन, यह मन सब प्रभु का ही है और यह शरीर भी उसी के वश में है।। १ ।। रहाउ ।। भक्तजनों के मन में प्रीति प्रभु ने स्वयं ही लगाई है जिसके कारण वे गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी संसार में लीन नहीं होते।। २ ।। जब अन्तर्मन में प्रभु से सच्चा प्रेम लग गया तो सेवक जो कुछ भी करता है प्रभु को अच्छा लगता है।। ३ ।। जिस काम-काज में प्रभु ने हमें लगाया है हम उसी में लगे हैं। हम वही करते हैं जो वह स्वयं करवाता है।। ४ ।। प्रभु को जिनकी भक्ति भा जाती है हे नानक, उन्हीं सेवकों की राम-नाम में सुरति लीन हो जाती है।। ५ ।। १ ।। ७।। १६ ।।

गूजरी महला ५ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥ १ ॥ मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सि तरिआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥ २ ॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ उन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥ ३ ॥ सभ निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

गूजरी महला ५ चउपदे घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किरिआचार करहि खटु करमा इतु राते संसारी ॥ अंतरि मैलु न उतरै हउमै बिनु गुर बाजी हारी ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी ॥ कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत बेद सिम्रिति सभि सोधे सभ एका बात पुकारी ॥ बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ॥ २ ॥ अठसठि मजनु करि इसनाना भ्रमि आए धर सारी ॥ अनिक सोच करहि दिन राती बिनु सतिगुर अंधिआरी ॥ ३ ॥ धावत धावत सभु जगु धाइओ अब आए हरि दुआरी ॥ दुरमति मेटि बुधि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥ गूजरी महला ५ ॥ हरि धनु जाप हरि धनु ताप हरि धनु भोजनु भाइआ ॥ निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि साधसंगति महि पाइआ ॥ १ ॥ माई खाटि आइओ घरि पूता ॥ हरि धनु चलते हरि धनु बैसे हरि धनु जागत सूता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि धनु इसनानु हरि धनु गिआनु हरि संगि लाइ धिआना ॥ हरि धनु तुलहा हरि धनु बेड़ी हरि हरि तारि

गूजरी महला ५।। चौपदे घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मन, तू क्यों चिन्ता में ग्रस्त है जबकि तेरे लिए तो परमात्मा सदा ही कार्यशील है। जिन जीवों को प्रभु ने चट्टानों एवं पत्थरों में भी पैदा किया है उनके भरण पोषण का भी प्रबन्ध परमात्मा ने पहले से ही कर रखा है। हे मेरे प्रभु, जो व्यक्ति सद्संगत में रहते हैं वे ही व्यर्थ की चिन्ताओं से बचे रहते हैं। गुरु की कृपा से जिसको इस अवस्था की प्राप्ति को जाती है वह मानो उसी तरह से है जैसे सूखी लकड़ी हरी भरी हो जाए।। १ ।। रहाउ ।। माता-पिता, पुत्र अन्य लोग पत्नी आदि कोई भी किसी का सहारा नहीं हैं। हे मन, तू क्यों डरता है; पालन-पोषण करने वाला प्रभु प्रत्येक जीव को खुद ही उसका आहार देता है।। २ ।। पक्षी सैंकड़ो मीलों से उड़कर कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं और उनके पीछे बच्चे अकेले ही छोड़े होते हैं। उनको कौन खिलाता है अथवा कौन चुगाता है; क्या कभी तुमने सोचा है कि उनका भरण-पोषण कौन करता है अर्थात प्रभु ही सबकी देख-रेख करता है।। ३ ।। हे प्रभु, संसार के सम्पूर्ण भण्डार एवं अठारहों सिद्धियां तेरी हथेली पर सदैव बनी रहती हैं। हे विनम्र नानक, ऐसे प्रभु पर सदा बलिहारी होता रह। हे प्रभु, तेरी कृपाओं का कोई पारावार नहीं जान सकता।। ४ ।। १ ।।

गूजरी महला ५ ।। चौपदे घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

संसार के लोग कर्मकाण्ड और षटकर्मो (धौती, नेती, न्योली आदि) में ही लीन बने हुए हैं। उनके अन्दर से अहंकार की मैल नहीं उतरती और गुरु के बिना ऐसे लोग जीवन की बाज़ी हार जाते हैं।। १ ।। हे मेरे ठाकुर प्रभु, कृपा करके मुझे बचा ले। करोड़ों में कोई बिरला ही प्रभु का सेवक है अन्य सब तो सौदेबाज़ ही होते हैं।। १ ।। रहाउ ।। सब शास्त्रों, वेदों स्मृतियों की समीक्षा करके देख ली है सभी एक ही बात कहते हैं कि इस तथ्य को मन में विचार करके देख लो कि गुरु के बिना कोई भी कैसे मुक्ति प्राप्त कर सकता है।।२।। व्यक्ति अड़सठ तीर्थों पर स्नान करके सारी धरती का भ्रमण करता है। वह अनेकों प्रकार के शौच कर्म दिन रात करता है परन्तु सच्चे गुरु के बिना तो अज्ञान का अँधेरा ही अँधेरा है।। ३ ।। दौड़ता-भागता हुआ संसार घूम फिरकर अन्त में प्रभु के द्वार पर ही आता है। प्रभु ने दुर्मति को मिटाकर हमारी बुद्धि को प्रकाशित कर दिया है और हे नानक, हमें गुरमुख बनाकर पार उतार दिया है।। ४ ।। १ ।। २ ।। गूजरी महला ५ ।। परमात्मा का नाम-धन ही मेरे लिए जाप है, नाम धन ही मेरे लिए धूनी तपाना है, प्रभु का नाम-धन ही मेरे लिए भोजन है और यही भोजन मेरे मन को भाता है।। १ ।। हे माँ, वही बेटा कमाई करके घर में आया हुआ समझा जाए जो चलते बैठते जागते सोते हर समय प्रभु-नाम रूपी धन का ही व्यापार करता है।। १ ।। रहाउ ।। जिस व्यक्ति ने परमात्मा के नाम-धन को ही तीर्थों का स्नान माना है, नाम-धन को ही शास्त्रों का ज्ञान समझा है, जो परमात्मा के चरणों में ही सुरति लगाए रहता है, जिस व्यक्ति ने संसार रूपी नदी को पार करने के लिए प्रभु-नाम को ही बेड़ा और नाव बना लिया है, परमात्मा उसे ही संसार-सागर से पार करके दूसरी ओर

पराना ॥ २ ॥ हरि धन मेरी चिंत विसारी हरि धनि लाहिआ धोखा ॥ हरि धन ते मै नव निधि पाई हाथि चरिओ हरि थोका ॥ ३ ॥ खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे ॥ लादि खजाना गुरि नानक कउ दीआ इहु मनु हरि रंगि रंगे ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ गूजरी महला ५ ॥ जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो ॥ सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु जा का अंतु न पारो ॥ १ ॥ पूता माता की आसीस ॥ निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला संतसंगि तेरी प्रीति ॥ कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥ २ ॥ अंम्रितु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥ रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥ ३ ॥ भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥ नानक दासु उन संगि लपटाइओ जिउ बूंदहि चात्रिकु मउला ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ गूजरी महला ५ ॥ मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात ॥ खिन महि थापि उथापनहारा आपन हाथि मतात ॥ १ ॥ सिआनप काहू कामि न आत ॥ जो अनरूपिओ ठाकुरि मेरै होइ रही उह बात ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देसु कमावन धन जोरन की मनसा बीचे निकसे सास ॥ लसकर नेब खवास सभ तिआगे जम पुरि ऊठि सिधास ॥ २ ॥ होइ अनंनि मन हठ की द्रिड़ता आपस कउ जानात ॥ जो अनिंदु निंदु करि छोडिओ सोई फिरि फिरि खात ॥ ३ ॥ सहज सुभाइ भए किरपाला तिसु जन की काटी फास ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥ गूजरी महला ५ ॥ नामु निधानु जिनि जनि जपिओ तिन के बंधन काटे ॥ काम क्रोध माइआ बिखु ममता इह बिआधि ते हाटे ॥ १ ॥ हरि जसु साधसंगि मिलि गाइओ ॥ गुर परसादि भइओ मनु निरमलु सरब सुखा सुख पाइअउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु कीओ सोई भल मानै ऐसी भगति कमानी ॥ मित्र सत्रु सभ एक समाने जोग जुगति नीसानी ॥ २ ॥ पूरन पूरि रहिओ स्रब थाई आन न कतहूं जाता ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि रंगि रविओ रंगि राता ॥ ३ ॥ भए क्रिपाल दइआल

पहुँचा देता है।। २ ।। परमात्मा के नाम-धन ने मेरी चिन्ता दूर कर दी है और इस नाम-धन ने ही मुझे सब प्रकार के छल से बचा लिया है। प्रभु नाम-धन के कारण ही मैंने नौ निधियां प्राप्त कर ली हैं क्योंकि प्रभु रूपी धन मेरे हाथ लग गया है।। ३ ।। यह ऐसा धन है कि खाते खर्चते हुए इसमें कोई कमी नहीं आती और इस लोक व परलोक में यही साथ बना रहता है। गुरु ने नानक को यह नाम रूपी धन का खज़ाना लादकर दे दिया है ताकि यह मन प्रभु के रंग में ही रंगा रहे।। ४ ।। २ ।। ३ ।। गूजरी महला ५ ।। जिसके सुमिरन से सभी पाप भाग खड़े होते हैं और पित्रों का भी उद्धार हो जाता है, हे पुत्र, ऐसे प्रभु का तुम सदैव ही जाप करते रहो जिसका न तो कोई अन्त है और न ही कोई सीमा है।। १ ।। हे मेरे पुत्र, तुझे माँ का यही आशीर्वाद है कि तुझे एक निमिष भर के लिए भी प्रभु विस्मृत न हो और तू सदैव प्रभु के नाम का सुमिरन करता रहे।। १ ।। रहाउ ।। तुझ पर सच्चा गुरु दयालु बना रहे और शान्त पुरुषों के साथ तेरी प्रीति बनी रहे। जैसे कपड़ा व्यक्ति को ढकता है ऐसे ही परमात्मा तेरा सम्मान बनाए रखे और प्रभु का गुणानुवाद तेरा भोजन बना रहे।। २ ।। तू नाम रूपी अमृत का पान सदा करता रहे और प्रभु का सुमिरन करते हुए अनन्त रूप से आनन्दित बना रहकर तू लम्बी आयु को भोगे। सभी राग-रंग और कौतुक तथा तेरी आशाएं पूर्ण हों और तुझे कभी भी चिन्ता न सताए। तेरा मन भँवरा हो और प्रभु के चरण कमल जैसे हों; दास नानक उन चरणों के साथ ऐसे लिपटा रहे जैसे चातक वर्षा की बूँद को प्राप्त करके मस्त और प्रफुल्लित हो जाता है।। ४ ।। ३ ।। ४ ।। गूजरी महला ५ ।। व्यक्ति पश्चिम की ओर जाने का निश्चय करता है परन्तु प्रभु उसे विपरीत दिशा पूर्व में ले जाता है। वह क्षण भर में स्थापना करके उसे उखाड़ फेंकने वाला भी है और उसने सभी निर्णय अपने हाथ में ही रखे हुए हैं।। १ ।। चतुराई किसी काम नहीं आती। जो मेरे प्रभु ने उचित समझा है वही होकर रहता है।। १ ।। रहाउ।। देशों को जीतने और धन को इकट्ठा करने की तृष्णा करने में ही व्यक्ति के श्वास समाप्त हो जाते हैं। वह सेना, नायब और नौकर आदि सब को छोड़कर यमपुरी की ओर चल पड़ता है।। २ ।। उसका उद्देश्य तो केवल एक (धन सम्पदा) ही होता है तब भी वह मन के हठ की दृढ़ता को दिखाने के लिए अपने आप को बड़ा जनवाता है। जो वस्तु अनिन्द्य है उसी को बुरा कहकर छोड़ देता है और मज़बूरन उसे बार-बार उसी को खाना पड़ता है।। ३ ।। सहज रूप में ही उस प्रभु ने कृपालु बनकर सेवक के गले में पड़े हुए फन्दे को काट दिया है। नानक का कथन है कि पूर्ण गुरु से मिलाप करके व्यक्ति घरबारी बना रहकर अलिप्त भाव से रहते हुए प्रभु के समक्ष स्वीकृत हो जाता है।। ४ ।। ४ ।। ५ ।। गूजरी महला ५ ।। जिन्होंने प्रभु-नाम रूपी भण्डार का सुमिरन किया है उनके बन्धन कट जाते हैं और वे काम, क्रोध, माया विष रूपी ममता आदि रोगों से बच जाते हैं।। १ ।। साधसंगत में मिल बैठकर जिन्होंने हरि यश का गायन किया है, गुरु की कृपा से उनका मन निर्मल हो गया है और सभी सुखों का सुख (प्रभु) उन्हें प्राप्त हो गया है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के सेवक की भक्ति का आचरण ऐसा है कि प्रभु जो कुछ करता है उसे वह भला मानता है। उसे मित्र और शत्रु सब एक समान नज़र आने लगते हैं और यही परमात्मा के साथ मेल होने की विधि की निशानी है।। २ ।। ऐसे व्यक्ति को पूर्ण प्रभु सब स्थानों में रमा हुआ दिखाई देने लग जाता है और फिर वह अन्य किसी को भी नहीं जानता मानता। उसे अब घट-घट में निरन्तर सब में बसने वाला प्रभु आनन्दपूर्ण रूप में दिखाई देता है।। ३ ।। जब दयालु एवं कृपालु प्रभु प्रसन्न हो जाता है

गुपाला ता निरभै कै घरि आइआ ॥ कलि कलेस मिटे खिन भीतरि नानक सहजि समाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ गूजरी महला ५ ॥ जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ ॥ पारब्रहमु जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ ॥ १ ॥ गुर हरि बिनु को न ब्रिथा दुखु काटै ॥ प्रभु तजि अवर सेवकु जे होई है तितु मानु महतु जसु घाटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ के सनबंध सैन साक कित ही कामि न आइआ ॥ हरि का दासु नीच कुलु ऊचा तिसु संगि मन बांछत फल पाइआ ॥ २ ॥ लाख कोटि बिखिआ के बिंजन ता महि त्रिसन न बूझी ॥ सिमरत नामु कोटि उजीआरा बसतु अगोचर सूझी ॥ ३ ॥ फिरत फिरत तुम्हरै दुआरि आइआ भै भंजन हरि राइआ ॥ साध के चरन धूरि जनु बाछै सुखु नानक इहु पाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥

गूजरी महला ५ पंचपदा घरु २ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रथमे गरभ माता कै वासा ऊहा छोडि धरनि महि आइआ ॥ चित्र साल सुंदर बाग मंदर संगि न कछहू जाइआ ॥ १ ॥ अवर सभ मिथिआ लोभ लबी ॥ गुरि पूरै दीओ हरि नामा जीअ कउ एहा वसतु फबी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसट मीत बंधप सुत भाई संगि बनिता रचि हसिआ ॥ जब अंती अउसरु आइ बनिओ है उन्ह पेखत ही कालि ग्रसिआ ॥ २ ॥ करि करि अनरथ बिहाझी स्मपै सुइना रूपा दामा ॥ भाड़ी कउ ओहु भाड़ा मिलिआ होरु सगल भइओ बिराना ॥ ३ ॥ हैवर गैवर रथ स्मबाहे गहु करि कीने मेरे ॥ जब ते होई लांमी धाई चलहि नाही इक पैरे ॥ ४ ॥ नामु धनु नामु सुख राजा नामु कुट्मब सहाई ॥ नामु स्मपति गुरि नानक कउ दीई ओह मरै न आवै जाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ८ ॥

गूजरी महला ५ तिपदे घरु २ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

दुख बिनसे सुख कीआ निवासा त्रिसना जलनि बुझाई ॥ नामु निधानु सतिगुरू द्रिड़ाइआ बिनसि न आवै जाई ॥ १ ॥ हरि जपि माइआ बंधन तूटे ॥ भए क्रिपाल दइआल प्रभ मेरे साधसंगति मिलि छूटे

तभी जीव निर्भय बन जाता है। उसके झगड़े और दुख क्षण भर में ही मिट जाते हैं और हे नानक, जीव सहज अवस्था में लीन हो जाता है।। ४ ।। ५ ।। ६ ।। गूजरी महला ५ ।। जिस किसी व्यक्ति के पास भी मैं अपने दुख की बात करता हूँ तो वह मुझे पहले से ही दुखों से भरा हुआ दिखाई देता है। वास्तव में जिसने हृदय से परब्रह्म का सुमिरन कर लिया उसने ही भव-सागर को पार कर लिया है।। १ ।। प्रभु रूपी गुरु के बिना अन्य कोई भी मेरे दुख और व्यथा को दूर नहीं कर सकता। प्रभु को छोड़कर यदि अन्य किसी के सेवक बना जाए तो इससे सम्मान, बड़प्पन और यश घटता है।। १ ।। रहाउ ।। मायावी सांसारिक सम्बन्ध और रिश्ते किसी काम नहीं आते परन्तु हरि का दास तथाकथित नीच जाति वाला भी हो तो वह उत्तम है और उसी की संगत में मनोवांछित फल प्राप्त होते है।। २ ।। लाखों-करोड़ों विषय विकारों वाले व्यंजन खाने पर भी तृष्णा बुझती नहीं है परन्तु प्रभु के नाम सुमिरन से करोड़ों प्रकाश हो जाते हैं और अगोचर नाम रूपी पदार्थ भी सुझाई देने लग जाते हैं।। ३ ।। भयनाशक हे प्रभु, मैं भटकता हुआ तुम्हारे द्वार पर आया हूँ। मैं साधु पुरुष के चरणों की धूलि चाहता हूँ और नानक के लिए तो यही सुख है।। ४ ।। ५ ।। ६ ।।

गूजरी महला ५ पंचपदा घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जीव पहले माता के गर्भ में रहा और फिर उसे छोड़कर यह धरती पर आया। इसके लिए चित्रकारी वाले सुन्दर महल और बगीचे आदि विद्यमान रहते हैं परन्तु अन्ततः इसके साथ कुछ भी नहीं जाता।। १ ।। अन्य सब झूठा लालच नाशवान है। पूर्ण गुरु ने जीव को प्रभु-नाम दिया है और जीवात्मा के लिए यही वस्तु उपयुक्त है।। १ ।। रहाउ ।। प्यारे मित्र, सम्बन्धी, पुत्र, स्त्री आदि के साथ व्यक्ति जीवन भर मस्त होकर हँसता खेलता रहा। जब अन्तिम समय आ बना तो उन सब के देखते देखते ही काल जीव को ग्रस लेता है।। २ ।। बुरे कार्य कर कर के व्यक्ति ने सम्पत्ति एवं सोना, धन आदि इकट्ठा किया परन्तु मज़दूरी करने वाले व्यक्ति की तरह जीव को तो सिर्फ गुज़ारा करने के लिए भाड़ा ही मिल पाया तथा उसका सारा माल उसके लिए बेगाना हो गया है।। ३ ।। श्रेष्ठ घोड़े और हाथी और रथ आदि पूरी तरह पकड़ और संभालकर व्यक्ति ने रखे अर्थात उन्हें अपना समझा परन्तु जब लम्बे सफर (मौत के सफर) पर जाना पड़ा तो वे सब चीज़ें एक कदम भी उसके साथ न जा सकीं।। ४ ।। वास्तव में प्रभु-नाम ही धन, सुख का राजा और पूरे परिवार का सहायक होता है। नाम रूपी धन गुरु ने नानक को प्रदान किया है और यह धन न तो समाप्त होता है और न ही कहीं इसकी चोरी होती है।। ५ ।। १ ।। ८ ।।

गूजरी महला ५ तिपदे घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु सुमिरन से दुख विनष्ट हो गये हैं; सुखों का निवास मन में हो गया है और मन की तृष्णा और ईर्ष्या समाप्त हो गई है। सच्चे गुरु ने नाम का खज़ाना हृदय में दृढ़ कर दिया है जो न तो नष्ट होता है और न ही चोरी होता है।। १ ।। प्रभु का जाप करने से माया के बन्धन टूट गए हैं; कृपालु प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है और साधसंगत से मिलकर मैं मुक्त हो गया हूँ

॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुन गावै भगति प्रेम रसि माता ॥ हरख सोग दुहु माहि निराला करणैहारु पछाता ॥ २ ॥ जिस का सा तिन ही रखि लीआ सगल जुगति बणि आई ॥ कहु नानक प्रभ पुरख दइआला कीमति कहणु न जाई ॥ ३ ॥ १ ॥ ९ ॥

गूजरी महला ५ दुपदे घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पतित पवित्र लीए करि अपुने सगल करत नमसकारो ॥ बरनु जाति कोऊ पूछै नाही बाछहि चरन रवारो ॥ १ ॥ ठाकुर ऐसो नामु तुम्हारो ॥ सगल स्रिसटि को धणी कहीजै जन को अंगु निरारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि नानक बुधि पाई हरि कीरतनु आधारो ॥ नामदेउ त्रिलोचनु कबीर दासरो मुकति भइओ चंमिआरो ॥ २ ॥ १ ॥ १० ॥ गूजरी महला ५ ॥ है नाही कोऊ बूझनहारो जानै कवनु भता ॥ सिव बिरंचि अरु सगल मोनि जन गहि न सकाहि गता ॥ १ ॥ प्रभ की अगम अगाधि कथा ॥ सुनीऐ अवर अवर बिधि बुझीऐ बकन कथन रहता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे भगता आपि सुआमी आपन संगि रता ॥ नानक को प्रभु पूरि रहिओ है पेखिओ जत्र कता ॥ २ ॥ २ ॥ ११ ॥ गूजरी महला ५ ॥ मता मसूरति अवर सिआनप जन कउ कछू न आइओ ॥ जह जह अउसरु आइ बनिओ है तहा तहा हरि धिआइओ ॥ १ ॥ प्रभ को भगति वछलु बिरदाइओ ॥ करे प्रतिपाल बारिक की निआई जन कउ लाड लडाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जप तप संजम करम धरम हरि कीरतनु जनि गाइओ ॥ सरनि परिओ नानक ठाकुर की अभै दानु सुखु पाइओ ॥ २ ॥ ३ ॥ १२ ॥ गूजरी महला ५ ॥ दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला ॥ संत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥ १ ॥ मोहनु प्रान मान रागीला ॥ बासि रहिओ हीअरे कै संगे पेखि मोहिओ मनु लीला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु सिमरत मनि होत अनंदा उतरै मनहु जंगीला ॥ मिलबे की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥ २ ॥ ४ ॥ १३ ॥ गूजरी महला ५ ॥ मुनि जोगी सासत्रगि कहावत सभ कीन्हे बसि अपनही ॥ तीनि देव अरु कोड़ि तेतीसा तिन की हैरति

।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तेरा भक्त अब प्रेम के रस में मस्त होकर आठों प्रहर प्रभु के गुण गाता है। अब वह हर्ष और शोक दोनों में अलिप्त बना रहता है और उसने कर्ता प्रभु को पहचान लिया है।। २ ।। जिस प्रभु का वह दास था उसी ने उसे बचा लिया है और दास की समस्त युक्तियां उपयुक्त बैठ गई हैं। नानक का कथन है कि शक्तिशाली प्रभु दयालु है और उसके बड़प्पन का कथन नहीं किया जा सकता।। ३ ।। १ ।। ६ ।।

गूजरी महला ५ दुपदे घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

पतित पापियों को भी हे प्रभु, तुमने अपनाकर पवित्र कर लिया है और सब लोग अब उन्हें प्रणाम करते हैं। अब उनके वर्ण और जाति को भी कोई नहीं पूछता और सभी उनके चरणों की धूलि की कामना करते हैं।। १ ।। हे प्रभु, तुम्हारे नाम का ऐसा प्रताप है। तुमने अपने सेवक के पक्ष का ऐसा निराला काम किया है कि तुम्हारा सेवक सारे संसार का मालिक बन गया है।। १ ।। रहाउ।। साधसंगत में ही नानक ने सूझ प्राप्त की तथा उसे प्रभु का गुणानुवाद जीवन के आधार के रूप में प्राप्त हुआ। तेरी कृपा से हे प्रभु, नामदेव, त्रिलोचन, कबीरदास और रविदास भी मुक्त हो गए हैं।। २।। १ ।। १०।। कोई भी उस परमेश्वर को बूझने वाला नहीं है। उसकी युक्ति को कौन जान सकता है। शिव, ब्रह्मा और सारे मुनिगण प्रभु की गति को जान और पकड़ नहीं पाते।। १ ।। प्रभु की कथावार्ता अगम्य और अगाध है। सुनने में यह कुछ और है और इसे समझ लेने पर यह कुछ और ही दिखाई देती है; यह कहने सुनने और वर्णन करने से परे है।। १ ।। रहाउ।। वह प्रभु स्वयं ही भक्त है, स्वयं ही मालिक है और स्वयं ही अपने आप में लीन है। नानक का प्रभु सर्वत्र व्याप्त है और मैंने उसे यत्र-तत्र अर्थात सब स्थानों में देखा है।। २ ।। २ ।। ११ ।। गूजरी महला ५।। प्रभु के सेवक को विचार विमर्श अथवा अन्य चतुराईयां आदि कुछ भी नहीं आता। जहाँ कहीं भी उस पर कठिन समय पड़ता है वहीं-वहीं उसने प्रभु का सुमिरन किया है।। १ ।। भक्त वत्सल होना ही प्रभु का बिरद (स्वभाव) है। वह अपने भक्तों का पालन पोषण अपने बच्चों की तरह करता है और अपने सेवकों को लाड-प्यार करता है।। १ ।। रहाउ।। दास के लिए जप, तप, संयम, कर्म, धर्म यही है कि उसने प्रभु की कीर्ति का ही गायन किया है।। नानक उस प्रभु की शरण में पड़ा हुआ है जिसने उसे सुख और अभयदान दिया हुआ है।। २ ।। ३ ।। १२ ।। गूजरी महला ५ ।। हे प्यारे भाईयो, दिन रात उस प्रभु की आराधना करने में क्षण भर की भी ढिलाई मत लाओ। अभिमान और हठ को छोड़कर संतों की सेवा करते हुए प्रभु के साथ प्रीति लगाई जाए।। १ ।। प्राणों का सिंगार कौतुक करने वाला प्रभु मन के साथ ही बना रहता है।। मन उसकी लीला को देखकर मोहित हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। उस प्रभु के सुमिरन से मन आनन्दित हो उठता है और मन पर चढ़ी हुई पापों और अज्ञान की मैल उतर जाती है। ऐसे प्रभु के मिलाप की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता क्योंकि हे नानक, उसका बड़प्पन परे से परे अनन्त है।। २ ।। ४ ।। १३ ।। गूजरी महला ५ ।। जो भी योगी, मुनि शास्त्रों के ज्ञाता कहलाते हैं उन सब को माया ने अपने वश में कर रखा है। तीनों देवता (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) और तेतीस करोड़ अन्य देवता भी माया के सामने हैरान हैं और उनकी हैरानी की

कछु न रही ॥ १ ॥ बलवंति बिआपि रही सभ मही ॥ अवरु न जानसि कोऊ मरमा गुर किरपा ते लही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीति जीति जीते सभि थाना सगल भवन लपटही ॥ कहु नानक साध ते भागी होइ चेरी चरन गही ॥ २ ॥ ५ ॥ १४ ॥ गूजरी महला ५ ॥ दुइ कर जोड़ि करी बेनंती ठाकुरु अपना धिआइआ ॥ हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ ठाकुर होए आपि दइआल ॥ भई कलिआण आनंद रूप हुई है उबरे बाल गुपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि वर नारी मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥ २ ॥ ६ ॥ १५ ॥ गूजरी महला ५ ॥ मात पिता भाई सुत बंधप तिन का बलु है थोरा ॥ अनिक रंग माइआ के पेखे किछु साथि न चालै भोरा ॥ १ ॥ ठाकुर तुझ बिनु आहि न मोरा ॥ मोहि अनाथ निरगुन गुणु नाही मै आहिओ तुम्हरा धोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि बलि बलि बलि चरण तुम्हारे ईहा ऊहा तुम्हारा जोरा ॥ साधसंगि नानक दरसु पाइओ बिनसिओ सगल निहोरा ॥ २ ॥ ७ ॥ १६ ॥ गूजरी महला ५ ॥ आल जाल भ्रम मोह तजावै प्रभ सेती रंगु लाई ॥ मन कउ इह उपदेसु द्रिड़ावै सहजि सहजि गुण गाई ॥ १ ॥ साजन ऐसो संतु सहाई ॥ जिसु भेटे तूटहि माइआ बंध बिसरि न कबहूं जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करत करत अनिक बहु भाती नीकी इह ठहराई ॥ मिलि साधू हरि जसु गावै नानक भवजलु पारि पराई ॥ २ ॥ ८ ॥ १७ ॥ गूजरी महला ५ ॥ खिन महि थापि उथापनहारा कीमति जाइ न करी ॥ राजा रंकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥ १ ॥ धिआईऐ अपनो सदा हरी ॥ सोच अंदेसा ता का कहा करीऐ जा महि एक घरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी टेक पूरे मेरे सतिगुर मन सरनि तुम्हारै परी ॥ अचेत इआने बारिक नानक हम तुम राखहु धारि करी ॥ २ ॥ ९ ॥ १८ ॥ गूजरी महला ५ ॥ तूं दाता जीआ सभना का बसहु मेरे मन माही ॥ चरण कमल रिद माहि समाए तह भरमु अंधेरा नाही ॥ १ ॥ ठाकुर जा सिमरा तूं ताही ॥ करि किरपा सरब प्रतिपालक प्रभ कउ सदा सलाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासि सासि तेरा नामु समारउ तुम ही कउ प्रभ आही ॥ नानक टेक भई

कोई सीमा नहीं है।। १ ।। बलवान माया सबको ही प्रभावित कर रही है। अन्य कोई भी उसका मर्म नहीं जानता; गुरु की कृपा से ही उसका रहस्य जाना जाता है।। १ ।। रहाउ ।। माया ने सभी स्थानों को जीत रखा है और सभी घरों को वह चिपटी हुई है। नानक का कथन है कि साधु पुरुषों से यह भाग खड़ी हुई है और इसने भाग कर उनके चरण पकड़ लिए हैं।। २ ।। ५ ।। १४ ।। गूजरी महला ५ ।। दोनों हाथ जोड़कर विनती की और प्रभु का सुमिरन किया गया। परमेश्वर ने स्वयं अपना हाथ (आसरा) देकर सेवक की रक्षा कर ली और उसका सारा पाप मिटा दिया।। १ ।। प्रभु ने स्वयं दया की, और फलस्वरूप सब ओर कल्याण और आनन्द का प्रसार हो गया तथा प्रभु के बालक जीवों का उद्धार हो गया।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु पति से मिलकर जीव रूपी स्त्री ने मंगल गीत गाए और प्रभु का जय जयकार किया। नानक कहता है कि मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने प्रभु से मिला कर सब का उद्धार कर दिया है।। २ ।। ६ ।। १५।। गूजरी महला ५ ।। माता, पिता, भाई, पुत्र, बंधु आदि का बल बहुत ही कम है। व्यक्ति माया के अनेकों ही रंग संसार में देखता है परन्तु यहाँ से तनिक भर भी उसके साथ नहीं चलता।। १ ।। हे प्रभु, तेरे बिना मेरा कोई भी नहीं है। मुझ अनाथ गुणविहीन में कोई भी गुण नहीं है और मैंने केवल एक तुम्हारा ही आसरा चाहा है।। १ ।। रहाउ ।। मैं तुम्हारे चरणों पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ और इस लोक तथा परलोक में मेरे साथ केवल तुम्हारा ही बल है। नानक ने साधसंगत में प्रभु का दर्शन प्राप्त किया है जिससे अन्य सब का एहसान अब समाप्त हो गया है।। २ ।। ७ ।। १६ ।। गूजरी महला ५ ।। सच्चा गुरु घर के जंजाल और भ्रम तथा मोह छुड़ा देता है तथा प्रभु के साथ प्रेम लगा देता है।। वही मन के लिए यह शिक्षा पक्की कर देता है कि सहजभाव में स्वाभाविक ही प्रभु के गुण गाए जाते हैं।। १ ।। शान्त पुरुष सच्चा गुरु ऐसा सज्जन और सहायता करने वाला है जिसके दर्शन करने से माया के बन्धन टूट जाते हैं और प्रभु कभी भी भूलता नहीं।। १ ।। रहाउ ।। अनेकों प्रकार की क्रियाएं करते करते अन्त में यही बात अच्छी लगी है कि साधु पुरुष सच्चे गुरु को मिलकर प्रभु का गुणानुवाद किया जाए क्योंकि हे नानक, यही संसार-सागर को पार कराने वाला है।। २ ।। ८ ।। १७ ।। गूजरी महला ५ ।। प्रभु एक क्षण भर में स्थापित करके पुनः गिरा देने में समर्थ है। उसके बड़प्पन को आंका नहीं जा सकता है। राजा को क्षण-भर में निर्धन कर देता है और नीच माने जाने वाले व्यक्ति को श्रेष्ठ ज्योति से भर देता है।। १ ।। सदैव अपने प्रभु का ही सुमिरन किया जाना चाहिए। उस संसार में इस जीवन की चिन्ता क्यों की जाए जिसमें एक घड़ी भर अर्थात थोड़े समय के लिए ही रहना है।। १ ।। रहाउ ।। हे मेरे सच्चे गुरु, मुझे तुम्हारा ही आसरा है। मेरा मन तुम्हारी शरण में आ पड़ा है। हे नानक, हम नासमझ और अनजान बच्चे हैं तुम अपना हाथ देकर हमें बचा लो।। २ ।। ९ ।। १८ ।। गूजरी महला ५ ।। हे प्रभु, तू सभी जीवों को दान देने वाला है; तुम मेरे मन में बसे रहो। तेरे चरण-कमल जिसके हृदय में समा जाते हैं वहाँ भ्रम और अज्ञान का अँधेरा नहीं रहता।। १ ।। हे प्रभु, मैं जहाँ भी तेरा सुमिरन करता हूँ तू वहीं पर मौजूद रहता है। हे सब का पालन करने वाले प्रभु, मुझ पर कृपा कर जिससे मैं सदा ही तेरा गुणानुवाद करता रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। हर साँस के साथ तेरे नाम का सुमिरन करूँ और हे प्रभु, सदैव तुम्हें ही प्रेम करूँ। हे नानक, जब उस एक

करते की होर आस बिडाणी लाही ॥ २ ॥ १० ॥ १९ ॥ गूजरी महला ५ ॥ करि किरपा अपना दरसु दीजै जसु गावउ निसि अरु भोर ॥ केस संगि दास पग झारउ इहै मनोरथ मोर ॥ १ ॥ ठाकुर तुझ बिनु बीआ न होर ॥ चिति चितवउ हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी ओर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दइआल पुरख सरब के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि ॥ नामु जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर ॥ २ ॥ ११ ॥ २० ॥ गूजरी महला ५ ॥ ब्रहम लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाइ ॥ साधसंगति कउ जोहि न साकै मलि मलि धोवै पाइ ॥ १ ॥ अब मोहि आइ परिओ सरनाइ ॥ गुहज पावको बहुतु प्रजारै मोकउ सतिगुरि दीओ है बताइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिध साधिक अरु जख्य किंनर नर रही कंठि उरझाइ ॥ जन नानक अंगु कीआ प्रभि करतै जा कै कोटि ऐसी दासाइ ॥ २ ॥ १२ ॥ २१ ॥ गूजरी महला ५ ॥ अपजसु मिटै होवै जगि कीरति दरगह बैसणु पाईऐ ॥ जम की त्रास नास होइ खिन महि सुख अनद सेती घरि जाईऐ ॥ १ ॥ जा ते घाल न बिरथी जाईऐ ॥ आठ पहर सिमरहु प्रभु अपना मनि तनि सदा धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि सरनि दीन दुख भंजन तूं देहि सोई प्रभ पाईऐ ॥ चरण कमल नानक रंगि राते हरि दासह पैज रखाईऐ ॥ २ ॥ १३ ॥ २२ ॥ गूजरी महला ५ ॥ बिस्वंभर जीअन को दाता भगति भरे भंडार ॥ जा की सेवा निफल न होवत खिन महि करे उधार ॥ १ ॥ मन मेरे चरन कमल संगि राचु ॥ सगल जीअ जा कउ आराधहि ताहू कउ तूं जाचु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक सरणि तुम्हारी करते तूं प्रभ प्रान अधार ॥ होइ सहाई जिसु तूं राखहि तिसु कहा करे संसारु ॥ २ ॥ १४ ॥ २३ ॥ गूजरी महला ५ ॥ जन की पैज सवारी आप ॥ हरि हरि नामु दीओ गुरि अवखधु उतरि गइओ सभु ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिगोबिंदु रखिओ परमेसरि अपुनी किरपा धारि ॥ मिटी बिआधि सरब सुख होए हरि गुण सदा बीचारि ॥ १ ॥ अंगीकारु कीओ मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई ॥ अबिचल नीव धरी गुर नानक नित नित चड़ै सवाई ॥ २ ॥ १५ ॥ २४ ॥ गूजरी महला ५ ॥ कबहू हरि सिउ

कर्ता प्रभु का आसरा मुझे मिल गया है तो मैंने अन्य सभी आशाओं को त्याग दिया है।। २ ।। १० ।। १६ ।। गूजरी महला ५ ।। हे प्रभु, मैं रात-दिन तुम्हारा ही यश गाता हूँ, कृपा करके मुझे अपना दर्शन दो। मेरे जीवन का उद्देश्य यही है कि मैं अपने केशों के साथ प्रभु के दासों के चरण साफ करूँ अर्थात नम्रतापूर्वक उनकी सेवा करूँ।। १ ।। हे प्रभु मेरे लिए तेरे सिवाय दूसरा कोई भी नहीं है। मैं चित्त में तुम्हारा सुमिरन करता हूँ, जीभ से तुम्हारी आराधना करता हूँ और आँखों से केवल तुम्हारी ओर ही देखता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। हे सबके स्वामी दयालु प्रभु, मैं हाथ जोड़कर तुम्हारे सामने यह प्रार्थना करता हूँ कि दास नानक तुम्हारे नाम का सुमिरन करे ताकि वह आँख झपकने जितने समय में ही पार उतर जाए।। २ ।। ११ ।। २० ।। गूजरी महला ५ ।। माया, ब्रह्मलोक, शिवलोक और इन्द्रलोक को जीतती हुई दौड़ी चली आई है परन्तु साधसंगत की ओर तो वह देख भी नहीं पाती और साधु पुरुषों के चरणों को मल मल कर धोती है।। १।। मैं तो अब सच्चे गुरु की शरण में आन पड़ा हूँ। माया रूपी छिपी हुई आग ने बहुत लोगों को जला डाला है परन्तु सच्चे गुरु ने मुझे इसके बारे में बता कर सावधान कर दिया है।। १ ।। रहाउ।। सिद्ध, साधक, यक्ष, किन्नर और मनुष्यों के गले के साथ लिपटकर यह उलझी हुई है।। दास नानक का साथ तो प्रभु ने दिया है जिसके पास ऐसी करोड़ों दासियाँ हैं।। २ ।। १२ ।। २१ ।। गूजरी महला ५ ।। प्रभु-नाम सुमिरन से अपयश मिट जाता है, संसार में कीर्ति फैल जाती है और प्रभु के दरबार में सम्मानपूर्ण आसन मिलता है। क्षण-भर में यम का भय नष्ट हो जाता है और व्यक्ति सुख तथा आनन्दपूर्वक अपने मूल घर प्रभु के चरणों में लीन हो जाता है।। १ ।। जो हमारी मेहनत को व्यर्थ नहीं जाने देता उस प्रभु का आठों प्रहर सुमिरन करना चाहिए और तन मन से सदैव उसे याद करते रहना चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। हे दीनों के दुख को नष्ट करने वाले प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ और जो तू देता है मैं वही प्राप्त करता हूँ। नानक तो प्रभु के चरण कमलों की मौज में लीन है। हे प्रभु, तू अपने दासों की लाज रख ले।। २ ।। १३ ।। २२ ।। गूजरी महला ५ ।। संसार को पालने वाला, जीवों का दाता प्रभु है और उसके भण्डार भक्ति से परिपूर्ण हैं। उसकी की हुई सेवा कभी निष्फल नहीं जाती और जीव को क्षण-भर में ही वह मुक्त कर देता है।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु के चरण-कमलों में अपनी रुचि लगा। समस्त जीव जिसकी आराधना करते हैं तू उस प्रभु से ही जो चाहता है माँग।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तू मेरे प्राणों का आधार है और नानक तो तुम्हारी शरण में है। सहायता करके जिसकी तू रक्षा करता है उसका भला सारा संसार भी क्या बिगाड़ सकता है।। २ ।। १४ ।। २३ ।। गूजरी महला ५।। प्रभु ने अपने सेवक की लाज स्वयं ही रख ली है। गुरु ने प्रभु-नाम रूपी औषधि दी है जिसके माध्यम से सब रोग नष्ट हो गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने अपनी कृपा की हरिगोबिन्द (जी) की रक्षा कर ली। (हालांकि लोग रोग होने पर देवी-देवताओं की पूजा के लिए निकल पड़ते हैं) प्रभु के गुणानुवाद और चिन्तन से सारा रोग मिट गया है और सभी प्रकार के सुख प्राप्त हो गए।। १ ।। यह पूर्ण गुरु का ही बड़प्पन है कि प्रभु ने हमें अपने साथ जोड़ कर स्वीकार कर लिया है। गुरु ने सदैव अटल बनी रहने वाली (सिक्ख जीवन की) नींव रखी जो दिन-रात फल फूल रही हैं।। २ ।। १५ ।। २४ ।। गूजरी महला ५ ।। हे जीव, तूने कभी भी प्रभु प्रेम में

चीतु न लाइओ ॥ धंधा करत बिहानी अउधहि गुण निधि नामु न गाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउडी कउडी जोरत कपटे अनिक जुगति करि धाइओ ॥ बिसरत प्रभ केते दुख गनीअहि महा मोहनी खाइओ ॥ १ ॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइओ ॥ गोबिंद दइआल क्रिपाल सुख सागर नानक हरि सरणाइओ ॥ २ ॥ १६ ॥ २५ ॥ गूजरी महला ५ ॥ रसना राम राम रवंत ॥ छोडि आन बिउहार मिथिआ भजु सदा भगवंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु एकु अधारु भगता ईत आगै टेक ॥ करि क्रिपा गोबिंद दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥ १ ॥ करण कारण संम्रथ स्रीधर सरणि ता की गही ॥ मुकति जुगति रवाल साधू नानक हरि निधि लही ॥ २ ॥ १७ ॥ २६ ॥

गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे   १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ ॥ पारब्रहम परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ॥ १ ॥ रे चित चरण कमल अराधि ॥ सरब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत मीत भाई तिसु बिना नही कोइ ॥ ईत ऊत जीअ नालि संगी सरब रविआ सोइ ॥ २ ॥ कोटि जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै कामि ॥ सरणि साधू निरमला गति होइ प्रभ कै नामि ॥ ३ ॥ अगम दइआल प्रभू ऊचा सरणि साधू जोगु ॥ तिसु परापति नानका जिसु लिखिआ धुरि संजोगु ॥ ४ ॥ १ ॥ २७ ॥ गूजरी महला ५ ॥ आपना गुरु सेवि सद ही रमहु गुण गोबिंद ॥ सासि सासि अराधि हरि हरि लहि जाइ मन की चिंद ॥ १ ॥ मेरे मन जापि प्रभ का नाउ ॥ सूख सहज अनंद पावहि मिली निरमल थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि उधारि इहु मनु आठ पहर आराधि ॥ कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिटै सगल उपाधि ॥ २ ॥ अटल अछेद अभेद सुआमी सरणि ता की आउ ॥ चरण कमल अराधि हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥ ३ ॥ पारब्रहमि प्रभि दइआ धारी बखसि लीन्हे आपि ॥ सरब सुख हरि नामु दीआ नानक सो प्रभु जापि ॥ ४ ॥ २ ॥ २८ ॥ गूजरी महला ५ ॥ गुर प्रसादी प्रभु

चित्त नहीं लगाया; सांसारिक काम-काज में ही तेरी आयु व्यतीत हो गई और तूने गुणों के समुद्र प्रभु के नाम का यश गायन नहीं किया।। १ ।। रहाउ ।। कपटपूर्वक अनेकों युक्तियों से भाग दौड़ करके व्यक्ति कौड़ी-कौड़ी जोड़कर धन इकट्ठा करता है। प्रभु को भुलाते ही दुखों की गिनती कितनी ही हो जाती है और वास्तव में महामोहिनी माया ने तो हमें खा ही लिया है।। १।। हे मेरे स्वामी, कृपा करो और मेरे किए हुए कार्मों की गिनती मत करो। वह प्रभु दयालु, कृपालु और सुखों का सागर है; नानक उसी प्रभु की शरण में है।। २ ।। १६।। २५ ।। गूजरी महला ५ ।। जीभ प्रभु-नाम का बार-बार सुमिरन करती है। हे जीव, अन्य सब मिथ्या व्यवहार छोड़ दे और सदैव प्रभु का भजन कर।। १ ।। रहाउ ।। केवल एक प्रभु-नाम ही भक्तों का आधार है और यहाँ वहाँ उन्हें उसी का आसरा है। प्रभु ने कृपा कर ऐसे व्यक्तियों को ही गुरु का ज्ञान और विवेक बुद्धि प्रदान की है।। १ ।। मैंने उसकी शरण पकड़ ली है जो सब कुछ करने कराने में समर्थ प्रभु ही है। मुक्ति और सांसारिक सफलता की युक्ति संत रूपी गुरु के चरणों की धूलि है और नानक ने यह सम्पदा प्रभु से प्राप्त की है।। २ ।। १७ ।। २६ ।।

गूजरी महला ५ घरु ४ चौपदे ੧ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

अपनी सब चतुराईयों को छोड़कर साधु रूपी गुरु की शरण में आ जाओ तथा परब्रह्म परमेश्वर प्रभु के गुणों का गायन करो।। १ ।। हे मन, तू प्रभु के चरण कमलों का ध्यान कर। तू समस्त सुखों और कल्याण को प्राप्त कर लेगा तथा तेरी समस्त विपदाएं भी मिट जाएंगी।। १ ।। रहाउ ।। उस प्रभु के बिना माता, पिता, पुत्र, दोस्त, भाई आदि कोई भी सहायक नहीं होता; वह प्रभु ही है जो इस लोक परलोक में जीव के संग बना रहता है और सब में रमण करता रहता है।। २ ।। करोड़ो यत्न उपाय सभी झूठे हैं और अन्ततः कुछ भी काम नहीं आता। साधु पुरुषों की शरण में ही व्यक्ति मल रहित होता है और प्रभु के नाम से ही मुक्ति प्राप्त होती है।। ३ ।। अगम्य और दयालु प्रभु बहुत ऊँचा है और साधु पुरुषों को शरण देने में समर्थ है। हे नानक, प्रभु उसी को मिलता है जिसके भाग्य में प्रारम्भ से ही प्रभु मिलाप लिखा होता है।। ४ ।। १ ।। २७ ।। गूजरी महला ५ ।। सदैव अपने गुरु की सेवा करो और प्रभु के गुणों में लीन बने रहो। प्रत्येक श्वास के साथ प्रभु का सुमिरन करो जिससे मन की चिन्ताएं समाप्त हो जाएंगी।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु का नाम जपने से सहज सुख और आनन्द मिल जाता है और निर्मल स्थान की भी प्राप्ति होती है।। १ ।। रहाउ।। हे जीव, आठों प्रहर उस प्रभु का सुमिरन करके साधसंगत में इस मन का उद्धार करो। ऐसा करने से काम, क्रोध और अहंकार विनष्ट हो जाएंगे तथा सभी दुख मिट जाएंगे।। २ ।। हे जीव, उस स्वामी प्रभु की शरण में आओ जो अटल है, अभंजन है और अभेद्य है। उसके चरण-कमलों का हृदय में सुमिरन करते हुए उस एक के साथ ही अपनी सुरति जोड़े रखो।। ३ ।। परब्रह्म प्रभु ने स्वयं कृपा की और पाप क्षमा कर दिए; उसने सभी सुखो का रूप प्रभु-नाम प्रदान किया और हे नानक, तू ऐसे प्रभु का सुमिरन कर।। ४ ।। २ ।। २८ ।। गूजरी महला ५ ।। गुरु की कृपा से प्रभु का

धिआइआ गई संका तूटि ॥ दुख अनेरा भै बिनासे पाप गए निखूटि ॥ १ ॥ हरि हरि नाम की मनि प्रीति ॥ मिलि साध बचन गोबिंद धिआए महा निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप ताप अनेक करणी सफल सिमरत नाम ॥ करि अनुग्रहु आपि राखे भए पूरन काम ॥ २ ॥ सासि सासि न बिसरु कबहूं ब्रहम प्रभ समरथ ॥ गुण अनिक रसना किआ बखानै अगनत सदा अकथ ॥ ३ ॥ दीन दरद निवारि तारण दइआल किरपा करण ॥ अटल पदवी नाम सिमरण द्रिडु नानक हरि हरि सरण ॥ ४ ॥ ३ ॥ २९ ॥ गूजरी महला ५ ॥ अहंबुधि बहु सघन माइआ महा दीरघ रोगु ॥ हरि नामु अउखधु गुरि नामु दीनो करण कारण जोगु ॥ १ ॥ मनि तनि बाछीऐ जन धूरि ॥ कोटि जनम के लहहि पातिक गोबिंद लोचा पूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि अंते मधि आसा कूकरी बिकराल ॥ गुर गिआन कीरतन गोबिंद रमणं काटीऐ जम जाल ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मोह मूठे सदा आवा गवण ॥ प्रभ प्रेम भगति गुपाल सिमरण मिटत जोनी भवण ॥ ३ ॥ मित्र पुत्र कलत्र सुर रिद तीनि ताप जलंत ॥ जपि राम रामा दुख निवारे मिलै हरि जन संत ॥ ४ ॥ सरब बिधि भ्रमते पुकारहि कतहि नाही छोटि ॥ हरि चरण सरण अपार प्रभ के द्रिडु गही नानक ओट ॥ ५ ॥ ४ ॥ ३० ॥

गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आराधि स्रीधर सफल मूरति करण कारण जोगु ॥ गुण रमण स्रवण अपार महिमा फिरि न होत बिओगु ॥ १ ॥ मन चरणारबिंद उपास ॥ कलि कलेस मिटंत सिमरणि काटि जमदूत फास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सत्रु दहन हरि नाम कहन अवर कछु न उपाउ ॥ करि अनुग्रहु प्रभू मेरे नानक नाम सुआउ ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥ गूजरी महला ५ ॥ तूं समरथु सरनि को दाता दुख भंजनु सुख राइ ॥ जाहि कलेस मिटे भै भरमा निरमल गुण प्रभ गाइ ॥ १ ॥ गोविंद तुझ बिनु अवरु न ठाउ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी जपी तुमारा नाउ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर

सुमिरन किया तो सारी शंका, भ्रम अज्ञान आदि नष्ट हो गए। दुख, अज्ञान का अन्धकार और भय विनिष्ट हो गए तथा पाप भी समाप्त हो गए।। १ ।। प्रभु के नाम की प्रीति मन में लग गई है। साधु पुरुषों के उपदेश को लेकर गोविन्द प्रभु को महा निर्मल होने की रीति से स्मरण किया है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के नाम के सुमिरन के फलस्वरूप ही मेरे जाप, तपस्याएं और अनेकों प्रकार के कर्म सफल हो गए। प्रभु ने कृपा करके हमें बचा लिया और हमारी कामनाएं पूर्ण हो गई हैं।।२।। समर्थ ब्रह्म प्रभु को कभी भी विस्मृत न किया जाए और प्रत्येक श्वास के साथ उसका सुमिरन किया जाए। उसके गुण अनेक हैं जिनका बखान जीभ भला क्या कर सकती है। वे अनगिनत हैं और अकथनीय हैं।। ३ ।। वह प्रभु कृपा करने वाला, दयालु, दीनों के दुख को निवृत्त करके उन्हें पार उतार देने वाला है। प्रभु-नाम सुमिरन ही अटल पदवी है। हे नानक, तू प्रभु की शरण में पड़कर उसी पर बल दे।। ४ ।। ३ ।। २६ ।। गूजरी महला ५ ।। अहंकार और माया के सघन प्रपंच महा दीर्घ रोग हैं। गुरु ने सम्पूर्ण, समर्थ प्रभु का नाम औषधि के रूप में दिया है।।१।। तन, मन से प्रभु के सेवकों की धूलि माँगते रहना चाहिए इससे करोड़ों जन्मों के पाप उतर जाते हैं और परमात्मा सब इच्छाएं पूर्ण कर देता है।। १ ।। रहाउ ।। जीवन के आदि, मध्य और अन्त तक डरावनी कुतिया की तरह तृष्णा बनी ही रहती है। गुरु द्वारा दिए ज्ञान की कीर्ति-गायन करने से तथा उस परमात्मा में ही रमे रहने से यम का जाल काटा जाता है।। २ ।। काम, क्रोध और लोभ मोह में ठगे हुए जीव सदैव आवागमन में पड़े रहते हैं। प्रभु की प्रेमाभक्ति और प्रभु के सुमिरन से योनियों में भ्रमण करना समाप्त हो जाता है।। ३ ।। मित्र, पुत्र, स्त्री और सभी शुभचिन्तक भी तीन प्रकार के तापों में जलते रहते हैं। प्रभु का नाम-सुमिरन दुखों को निवृत्त कर देता है और प्रभु के सेवक का शान्त पुरुषों से मिलाप हो जाता है।। ४ ।। जीव सब प्रकार से भटकते फिरते चीख पुकार लगाए रहते हैं कि हमारा किसी भी प्रकार छुटकारा नहीं। इसीलिए हे नानक, हमने प्रभु के चरणों में शरण लेकर उसके आसरे को दृढ़तापूर्वक पकड़ लिया है।। ५ ।। ४ ।। ३०।।

गूजरी महला ५ घरु ४ दो पदे १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु की आराधना करो जिसके दर्शन सभी फल देने वाले हैं और जो सब कुछ करने कराने में समर्थ है। उसके गुणानुवाद में लीन होने और उसकी अपार महिमा को सुनने से फिर कभी उससे वियोग नहीं होता।। १ ।। हे मन, प्रभु के चरण कमलों की उपासना कर। कलह क्लेष उस प्रभु के सुमिरन के फलस्वरूप मिट जाते हैं और यमदूतों द्वारा डाला गया फन्दा भी कट जाता है।। १ ।। रहाउ ।। शत्रु को जला डालने के लिए प्रभु-नाम का सुमिरन ही एक साधन है; अन्य कोई भी उपाय काम नहीं करता।। हे मेरे प्रभु, कृपा कर ताकि नानक को तेरे नाम का स्वाद मिल सके।। २ ।। १ ।। ३१।। गूजरी महला ५ ।। हे प्रभु, तू समर्थ है, शरण देने वाला है, सुखों का राजा है और दुखों को नष्ट करने वाला है। प्रभु के पवित्र गुण गाने से क्लेष, भय और भ्रम मिट जाते हैं।। १ ।। हे पृथ्वी के स्वामी प्रभु, तेरे बिना अन्य कोई ठिकाना नहीं है। हे परब्रह्म स्वामी, तू कृपा कर जिससे मैं तुम्हारे नाम का सुमिरन करता रहूँ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु की

सेवि लगे हरि चरनी वडै भागि लिव लागी ॥ कवल प्रगास भए साधसंगे दुरमति बुधि तिआगी ॥ २ ॥ आठ पहर हरि के गुण गावै सिमरै दीन दैआला ॥ आपि तरै संगति सभ उधरै बिनसे सगल जंजाला ॥ ३ ॥ चरण अधारु तेरा प्रभ सुआमी ओति पोति प्रभु साथि ॥ सरनि परिओ नानक प्रभ तुमरी दे राखिओ हरि हाथ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥

गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

एक नगरी पंच चोर बसीअले बरजत चोरी धावै ॥ त्रिहदस माल रखै जो नानक मोख मुकति सो पावै ॥ १ ॥ चेतहु बासुदेउ बनवाली ॥ रामु रिदै जपमाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उरध मूल जिसु साख तलाहा चारि बेद जितु लागे ॥ सहज भाइ जाइ ते नानक पारब्रहम लिव जागे ॥ २ ॥ पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला ॥ सरब जोति निरंजन संभू छोडहु बहुतु जंजाला ॥ ३ ॥ सुणि सिखवंते नानकु बिनवै छोडहु माइआ जाला ॥ मनि बीचारि एक लिव लागी पुनरपि जनमु न काला ॥ ४ ॥ सो गुरू सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी ॥ तिसु कारणि कंमु न धंधा नाही धंधै गिरही जोगी ॥ ५ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु तजीअले लोभु मोहु तिस माइआ ॥ मनि ततु अविगतु धिआइआ गुर परसादी पाइआ ॥ ६ ॥ गिआनु धिआनु सभ दाति कथीअले सेत बरन सभि दूता ॥ ब्रहम कमल मधु तासु रसादं जागत नाही सूता ॥ ७ ॥ महा गंभीर पत्र पाताला नानक सरब जुआइआ ॥ उपदेस गुरू मम पुनहि न गरभं बिखु तजि अंम्रितु पीआइआ ॥ ८ ॥ १ ॥ गूजरी महला १ ॥ कवन कवन जाचहि प्रभ दाते ता के अंत न परहि सुमार ॥ जैसी भूख होइ अभ अंतरि तूं समरथु सचु देवणहार ॥ १ ॥ ऐ जी जपु तपु संजमु सचु अधार ॥ हरि हरि नामु देहि सुखु पाईऐ तेरी भगति भरे भंडार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुंन समाधि रहहि लिव लागे एका एकी सबदु बीचार ॥ जलु थलु धरणि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार ॥ २ ॥ ना तदि माइआ मगनु न छाइआ ना सूरज चंद न जोति अपार ॥ सरब

सेवा के माध्यम से प्रभु के चरणों में लगा जाता है और बड़े भाग्य से ही उसमें लौ लगती है।। साधसंगत में हृदय रूपी कमल खिल उठता है और बुरे विचारों वाली बुद्धि का त्याग हो जाता है।। २ ।। जो व्यक्ति आठों प्रहर प्रभु के गुण गाता है और उस दीनदयालु का सुमिरन करता है वह स्वयं तो पार उतरता ही है साथ ही साथ उसकी संगति में सभी का उद्धार हो जाता है और सम्पूर्ण झमेले विनष्ट हो जाते हैं।। ३ ।। हे प्रभु, तेरे चरण ही मेरा आधार हैं और मैं प्रभु के साथ ही ओत-प्रोत बना रहता हूँ। हे प्रभु, नानक तुम्हारी शरण में आ पड़ा है और इसे प्रभु ने अपना हाथ देकर बचा लिया है।। ४ ।। २ ।। ३२ ।।

गूजरी अष्टपदियाँ महला १ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

शरीर रूपी नगर में पाँच चोर, काम, क्रोध आदि बसते हैं जिन्हें रोकने पर भी वे चोरी करने के लिए दौड़ते रहते हैं। तीन गुण और दस इन्द्रियों के विषयों से अपनी आध्यात्मिक सम्पत्ति जो बचा के रख ले, हे नानक, वही मुक्ति प्राप्त करता है।। १ ।। वन रूपी संसार के मालिक उस प्रभु का सुमिरन करो और उस राम को हृदय में बसाए रखना ही जाप कराने वाली माला बनायी जानी चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। ब्रह्म रूपी वृक्ष की जड़ ऊपर की ओर है और शाखाएं नीचे की ओर हैं जिसमें चारों वेद रूपी पत्ते लगे हुए हैं परन्तु इन तीन गुणों का विस्तार बताने वाले वेदों से ऊपर उठकर जब सहजभाव में लीन हुआ जाता है तो हे नानक परब्रह्म में सुरति जग जाती है।। २ ।। पारिजात वृक्ष रूपी परमात्मा मेरे घर आँगन में है। सार-तत्व उसके फूल, पत्ते और टहनियां हैं। अपने आप से उत्पन्न हुआ प्रभु माया से रहित है, उसकी ज्योति सर्वत्र है। हे जीव, तू व्यर्थ के झमेलों को छोड़ दे।। ३ ।। हे सीखने वाले जीवो, नानक यह विनती करता है कि सभी माया-जालों को छोड़ दो। जब मन में विचार करके उस एक में लौ लग जाएगी तो फिर न तो जन्म होगा और न मौत होगी।। ४ ।। वैद्य वही है जो रोगी को समझ जाए। इसी प्रकार वास्तव में गुरु और उसका शिक्षित किया हुआ शिष्य वही है जो रोगी संसार को समझ जाए। उसके लिए जीवन का कार्य-कारण आदि उसे ऊबाने वाला कार्य नहीं होता क्योंकि धन्धा करता हुआ भी वह गृहस्थ में योगी बनकर अलिप्त बना रहता है।। ५ ।। काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह, तृष्णा, माया आदि को त्याग दो। जब मन में उस अव्यक्त तत्व रूपी प्रभु का सुमिरन किया जाता है तो गुरु की कृपा से वह प्राप्त हो जाता है।। ६ ।। ज्ञान, ध्यान आदि सब कुछ उस प्रभु का दान कहा जाना चाहिए और जिसे यह प्राप्त हो जाए उसके सामने यमदूतों के चेहरे भी डर के कारण सफेद हो जाते हैं। उसने परब्रह्म रूपी कमल का शहद (प्रेम रस) चख लिया होता है और वह सदैव सावधानी की अवस्था में बना रहता है; कभी सुस्त नहीं होता।। ७ ।। वह परमात्मा रूपी कमल बहुत गहरा है और हे नानक, उसके पत्ते पाताल में हैं और वह सारी सृष्टि के साथ जुड़ा हुआ है अर्थात सर्वव्यापक है। गुरु के उपदेश के कारण मैं पुनः योनियों में नहीं आऊँगा क्योंकि मैंने माया के विष को छोड़कर नाम रूपी अमृत पान किया है।। ८ ।। १ ।। गूजरी महला १।। दाता प्रभु के समक्ष कौन-कौन माँगने वाले हैं इनका कोई अन्त नहीं और न ही इन्हें गिना जा सकता है। जिसके हृदय में जैसी भूख होती है, हे सत्य-प्रभु, तू उसे वैसा ही देने में समर्थ है।। १ ।। हे लोगो, जप, तप, संयम और सत्य ही व्यक्ति का वास्तविक आधार हैं।। हे प्रभु, हरि नाम प्रदान करो जिससे सुख प्राप्त होता है और तेरे नाम की भक्ति भण्डारों को भर देती है।। १ ।। रहाउ।। कई लोग तो शून्य समाधि में लौ लगाए रहते हैं और केवल एक नाम का ही चिन्तन करते हैं। उस अवस्था में जल, स्थल, धरती, आकाश आदि नहीं होते और वह कर्ता प्रभु स्वयं ही विद्यमान होता है।। २ ।। उस अवस्था में न तो माया की लीनता होती है, न अज्ञान का अन्धकार, न सूर्य, और न ही चन्द्रमा की आश्चर्यजनक चाँदनी होती है। सब को

द्रिसटि लोचन अभ अंतरि एका नदरि सु त्रिभवण सार ॥ ३ ॥ पवणु पाणी अगनि तिनि कीआ ब्रहमा बिसनु महेस अकार ॥ सरबे जाचिक तूं प्रभु दाता दाति करे अपुनै बीचार ॥ ४ ॥ कोटि तेतीस जाचहि प्रभ नाइक देदे तोटि नाही भंडार ॥ ऊंधै भाडै कछु न समावै सीधै अंम्रितु परै निहार ॥ ५ ॥ सिध समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि जाचि करहि जैकार ॥ जैसी पिआस होइ मन अंतरि तैसो जलु देवहि परकार ॥ ६ ॥ बडे भाग गुरु सेवहि अपुना भेदु नाही गुरदेव मुरार ॥ ता कउ कालु नाही जमु जोहै बूझहि अंतरि सबदु बीचार ॥ ७ ॥ अब तब अवरु न मागउ हरि पहि नामु निरंजन दीजै पिआरि ॥ नानक चात्रिकु अंम्रित जलु मागै हरि जसु दीजै किरपा धारि ॥ ८ ॥ २ ॥ गूजरी महला १ ॥ ऐ जी जनमि मरै आवै फुनि जावै बिनु गुर गति नही काई ॥ गुरमुखि प्राणी नामे राते नामे गति पति पाई ॥ १ ॥ भाई रे राम नामि चितु लाई ॥ गुर परसादी हरि प्रभ जाचे ऐसी नाम बडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐ जी बहुते भेख करहि भिखिआ कउ केते उदरु भरन कै ताई ॥ बिनु हरि भगति नाही सुखु प्रानी बिनु गुर गरबु न जाई ॥ २ ॥ ऐ जी कालु सदा सिर ऊपरि ठाढे जनमि जनमि वैराई ॥ साचै सबदि रते से बाचे सतिगुर बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ गुर सरणाई जोहि न साकै दूतु न सकै संताई ॥ अविगत नाथ निरंजनि राते निरभउ सिउ लिव लाई ॥ ४ ॥ ऐ जीउ नामु दिड़हु नामे लिव लावहु सतिगुर टेक टिकाई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी किरतु न मेटिआ जाई ॥ ५ ॥ ऐ जी भागि परे गुर सरणि तुम्हारी मै अवर न दूजी भाई ॥ अब तब एको एकु पुकारउ आदि जुगादि सखाई ॥ ६ ॥ ऐ जी राखहु पैज नाम अपुने की तुझ ही सिउ बनि आई ॥ करि किरपा गुर दरसु दिखावहु हउमै सबदि जलाई ॥ ७ ॥ ऐ जी किआ मागउ किछु रहै न दीसै इसु जग महि आइआ जाई ॥ नानक नामु पदारथु दीजै हिरदै कंठि बणाई ॥ ८ ॥ ३ ॥ गूजरी महला १ ॥ ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग ॥ नाम रते केवल बैरागी सोग बिजोग बिसरजित रोग ॥ १ ॥ भाई रे

देखने वाली आँखें अर्थात सब कुछ का ज्ञान हृदय में ही हो जाता है और उसकी एक दृष्टि के साथ ही तीनों लोकों की सूझ बुद्धि प्राप्त हो जाती है।। ३ ।। उस प्रभु ने ही पवन, पानी अग्नि, ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सारे संसार के आकारों की रचना की है। हे प्रभु, तू दाता है और सभी तेरे याचक है; तू अपने विचार के अनुरूप ही सबको दान देता है।। ४ ।। तेतीस करोड़ देवता भी सब के नायक उस प्रभु से माँगते हैं और देते हुए उसके भण्डार में कोई भी कमी नहीं आती। मन रूपी उलटे बर्तन में कुछ भी नहीं पड़ता परन्तु सीधे में तू देख ले अमृत भर जाता है।। ५ ।। सिद्धगण अपनी समाधि में ऋद्धियों सिद्धियों की कामना करते हैं और उन्हें प्राप्त करके प्रभु की जय-जयकार करते है। जिसके मन में जैसी प्यास होती है वह प्रभु उसे वैसा ही जल प्रदान करता है।। ६ ।। बड़े भाग्य से ही अपने गुरु की सेवा की जाती है तथा गुरु और परमात्मा में कोई भी अन्तर नहीं होता। जो अन्तर्मन में शब्द को चिन्तन पूर्वक बूझ लेते हैं उन्हें काल भी मारने की इच्छा से नहीं देखता।। ७ ।। किसी समय भी मैं परमात्मा से अन्य कुछ नहीं माँगता; हे पवित्र प्रभु, मुझे प्रभु-नाम के साथ ही प्रेम प्रदान करो। नानक रूपी पपीहा अमृत रूपी जल की कामना करता है। हे प्रभु, उसे कृपा करके हरि यश का दान दो।। ८ ।। २ ।। गूजरी महला १ ।। हे भाई जी, व्यक्ति जन्मता है मरता है, आता है फिर जाता है परन्तु गुरु के बिना किसी की गति नहीं होती। गुरमुख व्यक्ति प्रभु नाम में ही लीन रहतें हैं और उन्हें प्रभु-नाम में ही मुक्ति और सम्मान प्राप्त होते हैं।। १ ।। हे भाई, राम नाम में ही चित्त को लगाना चाहिए। गुरु की कृपा से ही व्यक्ति प्रभु की कामना करता है क्योंकि प्रभु-नाम का प्रताप ही ऐसा है।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, अनेकों व्यक्ति भिक्षा पाने के लिए ही और पेट भरने के लिए ही अनेकों वेश धारण करते हैं। प्रभु की भक्ति के बिना प्राणी को सुख नहीं मिलता और गुरु के बिना अहंकार नहीं जाता।। २ ।। हे भाई, हर जन्म का शत्रु काल सदैव सिर पर खड़ा रहता है। जो सच्चे शब्द में लीन हो गए हैं, सच्चे गुरु के ज्ञान के माध्यम से वे ही वचे रहते हैं।। ३ ।। गुरु की शरण में आ जाने से न तो यमदूत सता पाते हैं और न ही वे प्राणी को ढूँढ पाते हैं। जो उस अव्यक्त एवं सब के स्वामी निर्मल प्रभु में लीन बने रहते हैं वे ही उस निर्भय प्रभु में अपनी लौ लगाए रहते हैं।। ४ ।। हे भाई, प्रभु नाम का सुमिरन करो, नाम में ही लौ लगाओ क्योंकि सच्चे गुरु ने यही एक आसरा प्रदान किया है। जो उसे अच्छा लगता है वह वही करता है और उसके किए हुए को मिटाया नहीं जा सकता। हे गुरु, मैं भाग कर तुम्हारी शरण में आ गया हूँ और किसी अन्य की शरण मुझे अच्छी नहीं लगी। यहाँ वहाँ उस एक प्रभु का ही सुमिरन करो जो सदैव सखा की तरह सहायता करता है।। ६ ।। हे प्रभु, मेरी तेरे साथ ही बनी हुई है इसलिए तुम अपने नाम की लाज रखो। हे गुरु, कृपा करके मुझे अपना दर्शन दो क्योंकि मैंने शब्द के माध्यम से अपने अहंकार को जला दिया है।। ७ ।। हे भाई, मैं क्या माँगू, इस संसार में तो कुछ भी स्थिर बना रहने वाला दिखाई नहीं देता। नानक को हे प्रभु, नाम रूपी उत्तम वस्तु प्रदान करो जिसे मैं अपने हृदय पर गले से लगाए रखूँ।। ८ ।। ३ ।। गूजरी महला १ ।। हे भाई, न तो हम उत्तम हैं, न नीच हैं और न ही मध्यम वर्ग के हैं; हम तो प्रभु के दास हैं और उस प्रभु के ही शरणागत् हैं। जो प्रभु-नाम में रंगे हुए हैं वे ही शुद्ध वैराग्यवान हैं क्योंकि उन्होंने शोक, वियोग और रोगों को अपने से दूर विदा किया हुआ है।। १ ।। हे भाई,

गुर किरपा ते भगति ठाकुर की ॥ सतिगुर वाकि हिरदै हरि निरमलु ना जम काणि न जम की बाकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण रसन रवहि प्रभ संगे जो तिसु भावै सहजि हरी ॥ बिनु हरि नाम ब्रिथा जगि जीवनु हरि बिनु निहफल मेक घरी ॥ २ ॥ ऐ जी खोटे ठउर नाही घरि बाहरि निंदक गति नहीं काई ॥ रोसु करै प्रभु बखस न मेटै नित नित चड़ै सवाई ॥ ३ ॥ ऐ जी गुर की दाति न मेटै कोई मेरै ठाकुरि आपि दिवाई ॥ निंदक नर काले मुख निंदा जिन्ह गुर की दाति न भाई ॥ ४ ॥ ऐ जी सरणि परे प्रभु बखसि मिलावै बिलम न अधूआ राई ॥ आनद मूलु नाथु सिरि नाथा सतिगुरु मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ ऐ जी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई ॥ पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ॥ ६ ॥ हरि जलु निरमलु मनु इसनानी मजनु सतिगुरु भाई ॥ पुनरपि जनमु नाही जन संगति जोती जोति मिलाई ॥ ७ ॥ तूं वड पुरखु अगंम तरोवरु हम पंखी तुझ माही ॥ नानक नामु निरंजन दीजै जुगि जुगि सबदि सलाही ॥ ८ ॥ ४ ॥

गूजरी महला १ घरु ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भगति प्रेम आराधितं सचु पिआस परम हितं ॥ बिललाप बिलल बिनंतीआ सुख भाइ चित हितं ॥ १ ॥ जपि मन नामु हरि सरणी ॥ संसार सागर तारि तारण रम नाम करि करणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ए मन मिरत सुभ चिंतं गुर सबदि हरि रमणं ॥ मति ततु गिआनं कलिआण निधानं हरि नाम मनि रमणं ॥ २ ॥ चल चित वित भ्रमा भ्रमं जगु मोह मगन हितं ॥ थिरु नामु भगति दिड़ं मती गुर वाकि सबद रतं ॥ ३ ॥ भरमाति भरमु न चूकई जगु जनमि बिआधि खपं ॥ असथानु हरि निहकेवलं सति मती नाम तपं ॥ ४ ॥ इहु जगु मोह हेत बिआपितं दुखु अधिक जनम मरणं ॥ भजु सरणि सतिगुर ऊबरहि हरि नामु रिद रमणं ॥ ५ ॥ गुरमति निहचल मनि मनु मनं सहज बीचारं ॥ सो मनु निरमलु जितु साचु अंतरि गिआन रतनु सारं ॥ ६ ॥ भै भाइ भगति तरु भवजलु मना चितु लाइ हरि चरणी ॥

गुरु की कृपा से ही परमात्मा की भक्ति होती है। सच्चे गुरु के उपदेश से निर्मल प्रभु हृदय में बसता है और फिर न तो धर्मराज का कोई लेखा-जोखा बचता है और न ही उसका मोहताज होना पड़ता है।। १ ।। रहाउ ।। ऐसे व्यक्ति अपनी जीभ से प्रभु के गुणों में रमण किया करते हैं और प्रभु के साथ बने हुए जो उस प्रभु को भाता है वे उसे हरि-इच्छा समझ कर स्वीकार करते हैं। प्रभु के नाम के बिना इस संसार में जीवन व्यर्थ है और प्रभु के सुमिरन के बिना एक घड़ी भर भी गुज़ारा निष्फल है।। २ ।। हे भाई, खोटे व्यक्तियों को घर-बाहर कोई ठिकाना नहीं मिलता और निन्दक व्यक्ति की तो कहीं भी गति नहीं है। इस सब के बावजूद भी नाराज होकर प्रभु अपनी दिए जाने की वृत्ति को समाप्त नहीं कर देता अपितु वह दिन प्रतिदिन और बढ़ती ही जाती है।। ३ ।। हे भाई, गुरु के दिए हुए को कोई नष्ट नहीं कर सकता क्योंकि वह मालिक प्रभु ने स्वयं दिलवाया हुआ होता है। जिनको गुरु का दिया हुआ अच्छा नहीं लगता उन निन्दकों का मुख काला (भ्रष्ट) ही बना रहता है।। ४ ।। हे भाई, शरण में आने पर प्रभु क्षमा करके अपने में मिला लेता है और ऐसा करते हुए उसे राई भर जितना भी विलम्ब नहीं लगता। सच्चे गुरु ने सभी प्रकार के आनन्द का मूल स्रोत और नाथों के भी नाथ प्रभु को मुझसे मिला दिया है।। ५ ।। हे भाई, सदा दयालु बना रहने वाला प्रभु दयापूर्ण होकर मेरे हृदय में बस गया है और गुरमत के माध्यम से मेरे भ्रम और भाग-दौड़ चुक गए हैं। गुरु रूपी पारस को मिलकर साधारण धातु (साधारण मनुष्य) सोना हो गया है, यही सत्संगत का बड़प्पन है।। ६ ।। प्रभु-नाम निर्मल जल है, मन उसमें स्नान करने वाला है और सच्चा गुरु स्नान कराने वाला है। प्रभु के सेवक की संगत में रहकर फिर योनि में नहीं आना पड़ता क्योंकि उस संगत के फलस्वरूप प्रभु की ज्योति में हमारी ज्योति मिल जाती है।। ७ ।। हे बलशाली प्रभु, तू अगम्य और अपार वृक्ष है और हम सब तेरे पक्षी हैं। नानक को हे प्रभु, अपना नाम-दान दो जिससे शब्द के माध्यम से हर युग में मैं तुम्हारा गुणानुवाद करता रहूँ।। ८ ।। ४ ।।

गूजरी महला १ घरु ४   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

जो व्यक्ति परमात्मा की भक्ति करते हैं, सदैव स्थिर प्रभु की प्रेमपूर्वक आराधना करते हैं उनके अन्दर प्रभु-प्रेम की प्यास बनी रहती है। वे प्रभु के लिए विलाप करते हुए विनती करते हैं और उनके चित्त प्रभु के प्रेम में ही लगे रहकर आध्यात्मिक आनन्द लेते रहते हैं।। १ ।। हे मन, परमात्मा के नाम का सुमिरन कर और प्रभु की शरण में आ जा। संसार-सागर से पार होने के लिए परमात्मा का नाम जहाज़ है। इसलिए परमात्मा के नाम में लीन होकर उसे ही अपने कार्य-कलाप का केन्द्र बना।। १ ।। रहाउ ।। हे मन, सदैव शुभ प्रभु का चिन्तन करते हुए शब्द-गुरु के माध्यम से परमात्मा का सुमिरन कर। जो व्यक्ति मन में हरि-नाम का सुमिरन करते हैं उनकी बुद्धि जगत् के कल्याण के मूल प्रभु के साथ रमण करती रहती है और वे सुखों के भण्डार प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं।। २ ।। धन व्यक्ति के मन को भागदौड़ में लगाए रहता है परन्तु फिर भी संसार इसी धन के मोह में मस्त बना रहता है। प्रभु के भक्त यह अच्छी तरह से जान लेते हैं कि प्रभु-नाम ही स्थायी बना रहने वाला हैं। वे शब्द-गुरु में लीन होकर गुणानुवाद में लगे रहते हैं।। ३ ।। संसार जन्म-मरण में भटकता रहता है और इसका भ्रमण समाप्त नहीं होता। हे मन, परमात्मा की शरण ही ऐसा स्थल हैं जो माया मोह से दूर करता है। परमात्मा के नाम का तप ही वास्तविक सूझ बूझ है।। ४ ।। माया-मोह में फंसे हुए इस संसार को जन्म-मरण का दुख लगा ही रहता है। हे भाई, सच्चे गुरु की शरण में दौड़ता हुआ आकर और प्रभु का सुमिरन करके ही तू उबर सकेगा।। ५ ।। जो व्यक्ति अपने मन में गुरु की शिक्षा को पक्के तौर पर धारण कर लेता है उसका मन सहजभाव में आकर चिन्तन करता रहता है। जिस मन में सदैव स्थिर रहने वाला प्रभु स्थित हो जाए वह मन पवित्र हो जाता है और उसमें प्रभु-ज्ञान का श्रेष्ठ रत्न विद्यमान बना रहता है।। ६ ।। हे मन, तू परमात्मा के भय और प्रेम में बना रह, प्रभु की भक्ति कर, प्रभु के चरणों में अपनी सुरति को लीन कर दे और इस प्रकार संसार सागर से पार हो जा।

हरि नामु हिरदै पवित्रु पावनु इहु सरीरु तउ सरणी ॥ ७ ॥ लब लोभ लहरि निवारणं हरि नाम रासि मनं ॥ मनु मारि तुही निरंजना कहु नानका सरनं ॥ ८ ॥ १ ॥ ५ ॥

गूजरी महला ३ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

निरति करी इहु मनु नचाई ॥ गुर परसादी आपु गवाई ॥ चितु थिरु राखै सो मुकति होवै जो इछी सोइ फलु पाई ॥ १ ॥ नाचु रे मन गुर कै आगै ॥ गुर कै भाणै नाचहि ता सुखु पावहि अंते जम भउ भागै ॥ रहाउ ॥ आपि नचाए सो भगतु कहीऐ आपणा पिआरु आपि लाए ॥ आपे गावै आपि सुणावै इसु मन अंधे कउ मारगि पाए ॥ २ ॥ अनदिनु नाचै सकति निवारै सिव घरि नीद न होई ॥ सकती घरि जगतु सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई ॥ ३ ॥ सुरि नर विरति पखि करमी नाचे मुनि जन गिआन बीचारी ॥ सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि वीचारी ॥ ४ ॥ खंड ब्रहमंड त्रै गुण नाचे जिन लागी हरि लिव तुमारी ॥ जीअ जंत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी ॥ ५ ॥ जो तुधु भावहि सेई नाचहि जिन गुरमुखि सबदि लिव लाए ॥ से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु मनाए ॥ ६ ॥ एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई ॥ जीवतु मरै ता सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई ॥ ७ ॥ माइआ कै अरथि बहुतु लोक नाचे को विरला ततु बीचारी ॥ गुर परसादी सोई जनु पाए जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ ८ ॥ इकु दमु साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाइ ॥ साहि साहि सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाइ ॥ ९ ॥ सेई नाचहि जो तुधु भावहि जि गुरमुखि सबदु वीचारी ॥ कहु नानक से सहज सुखु पावहि जिन कउ नदरि तुमारी ॥ १० ॥ १ ॥ ॥ ६ ॥

गूजरी महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि बिनु जीअरा रहि न सकै जिउ बालकु खीर अधारी ॥ अगम अगोचर प्रभु गुरमुखि पाईऐ अपुने सतिगुर कै बलिहारी ॥ १ ॥ मन रे हरि कीरति तरु तारी ॥ गुरमुखि नामु अंम्रित जलु पाईऐ जिन

परमात्मा का पवित्र नाम अपने हृदय में धारण कर और प्रभु से कह कि मेरा यह शरीर अब तेरी ही शरण में है।। ७ ।। हे नानक, प्रभु नाम रूपी पूँजी को अपने मन में तू संभाल कर रख क्योंकि यही लोभ लालच की लहरों को रोकने में समर्थ है। मन को काबू में रखते हुए प्रभु की शरण में बने रहने की प्रर्थना कर।। ८ ।। १ ।। ५ ।।

गूजरी महला ३ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

मैं प्रभु के प्रेम में नृत्य करूँ और इस मन को भी उस नृत्य में लगा लूँ। गुरु की कृपा से ही मैं अपना अहंकार नष्ट कर दूँ क्योंकि जो चित्त को स्थिर रखता है वही मुक्त होता है और वही जो इच्छा करता है वैसा ही फल प्राप्त कर लेता है।। १ ।। हे मेरे मन, गुरु के सामने श्रद्धापूर्वक नृत्य कर क्योंकि यदि गुरु की रज़ा में ही तू नाचता हुआ अर्थात प्रसन्नतापूर्वक कार्यशील बना रहेगा तभी तुझे सुख प्राप्त होगा और तभी अन्ततः तेरा यम का भय भागेगा।। रहाउ ।। जिसे वह स्वयं नचाता है वही वास्तविक भक्त है और उसी को ही वह अपना प्रेम लगाता है (बाकी सब तो दिखावे के लिए अथवा स्वार्थ के लिए नाचते हैं)। वह प्रभु स्वयं ही गाता है, स्वयं ही सुनाता है और इस अज्ञानी अन्धे मन को ठीक रास्ते पर ले आता है।। २ ।। वह रात-दिन प्रभु के सम्मुख अर्पित होकर नृत्य करता हुआ माया रूपी शक्ति को दूर कर देता है तथा चेतन प्रभु में अपनी सुरति को लगाकर फिर कभी निद्रा का अर्थात लापरवाही का अनुभव नहीं करता। सारा संसार तो माया के प्यार में बेहोशी की अवस्था में ही नाचता कूदता और पता नहीं क्या-क्या गाता रहता है; इस प्रकार मनमुख बनकर भक्ति नहीं होती।। ३ ।। उत्तम पुरुष, त्यागी कर्म करने वाले लोग, मुनिजन, ज्ञानवान और चिंतक हे प्रभु, तेरी आज्ञा में ही नाचते हैं अर्थात कार्यशील बने रहते हैं। सिद्ध और साधना करने वाले भी गुरमुख बनकर और विचारपूर्वक उस प्रभु में लौ लगाकर नाचते रहते हैं।। ४ ।। संसार के खण्ड और ब्रह्माण्ड और सृष्टि के तीनों गुण जिनकी लौ तुम्हारी ओर लगी हुई है सभी नाच रहे हैं। जीवन के चारों स्रोत और सभी जीव-जन्तु, हे प्रभु, तेरे हुकम में ही एक लय विशेष में सूत्रबद्ध होकर नाच रहे हैं अर्थात कार्यशील हैं।। ५ ।। परन्तु जो तुझे अच्छे लगते हैं और जिन्होंने गुरमुख बनकर शब्द में लौ लगाई है वे ही वास्तव में जीवन का नृत्य (सफलतापूर्वक) कर रहे हैं। जिन्हें प्रभु अपना हुकम मनाता है वे ही वास्तव में भक्त हैं और तत्व ज्ञानी हैं।। ६ ।। भक्ति यही है कि सच्चे प्रभु के साथ लौ लगी रहे परन्तु बिना सेवा किए भक्ति नहीं हो सकती। विकारों में जीवित रहने के भाव से यदि व्यक्ति मर जाए तभी वह शब्द का चिन्तन कर सकता है और तभी वह सत्य को प्राप्त कर सकता है।। ७ ।। धन-सम्पदा के लिए तो बहुत से लोग नाचा करते हैं परन्तु कोई बिरला ही तत्व ज्ञान का चिन्तन करता है। हे प्रभु, जिस पर तुम्हारी कृपा है वही गुरु के प्रसाद के रूप में इस ज्ञान को प्राप्त कर पाता है।। ८ ।। एक श्वास के लिए भी यदि वह सच्चा प्रभु विस्मृत हो जाए तो वह समय व्यर्थ चला जाता है। उस प्रभु को प्रत्येक श्वास के साथ मन में धारण किया जाना चाहिए और ऐसा उसकी कृपा और रज़ा में ही होता है।। ९ ।। जो तुझे भाते हैं वास्तव में उन्हीं का नाचना सफल हैं क्योंकि वे ही गुरमुख बनकर शब्द का चिन्तन करते हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु, जिन पर तुम्हारी कृपादृष्टि है वास्तव में वे ही सहजभाव से प्राप्त होने वाले आध्यात्मिक सुख को प्राप्त करते हैं।। १० ।। १ ।। ६ ।।

गूजरी महला ४ घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

जिस प्रकार बच्चा दूध के आधार पर ही जीता है उसी प्रकार उस प्रभु के बिना यह जीव आध्यात्मिक रूप से जीवित नहीं रह सकता। मैं अपने सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ क्योंकि गुरमुख बनकर उसके माध्यम से ही अगम्य, अगोचर प्रभु को पाया जााता है।। १ ।। हे मन, प्रभु की कीर्ति का गायन करते हुए तू संसार सागर से तैर कर पार हो जा। गुरमुख बनकर नाम रूपी अमृत-जल वे ही पाते हैं जिन

कउ क्रिपा तुमारी ॥ रहाउ ॥ सनक सनंदन नारद मुनि सेवहि अनदिनु जपत रहहि बनवारी ॥ सरणागति प्रहलाद जन आए तिन की पैज सवारी ॥ २ ॥ अलख निरंजनु एको वरतै एका जोति मुरारी ॥ सभि जाचिक तू एको दाता मागहि हाथ पसारी ॥ ३ ॥ भगत जना की ऊतम बाणी गावहि अकथ कथा नित निआरी ॥ सफल जनमु भइआ तिन केरा आपि तरे कुल तारी ॥ ४ ॥ मनमुख दुबिधा दुरमति बिआपे जिन अंतरि मोह गुबारी ॥ संत जना की कथा न भावै ओइ डूबे सणु परवारी ॥ ५ ॥ निंदकु निंदा करि मलु धोवै ओहु मलभखु माइआ धारी ॥ संत जना की निंदा विआपे ना उरवारि न पारी ॥ ६ ॥ एहु परपंचु खेलु कीआ सभु करतै हरि करतै सभ कल धारी ॥ हरि एको सूतु वरतै जुग अंतरि सूतु खिंचै एकंकारी ॥ ७ ॥ रसनि रसनि रसि गावहि हरि गुण रसना हरि रसु धारी ॥ नानक हरि बिनु अवरु न मागउ हरि रस प्रीति पिआरी ॥ ८ ॥ १ ॥ ७ ॥

गूजरी महला ५ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

राजन महि तूं राजा कहीअहि भूमन महि भूमा ॥ ठाकुर महि ठकुराई तेरी कोमन सिरि कोमा ॥ १ ॥ पिता मेरो बडो धनी अगमा ॥ उसतति कवन करीजै करते पेखि रहे बिसमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखीअन महि सुखीआ तूं कहीअहि दातन सिरि दाता ॥ तेजन महि तेजवंसी कहीअहि रसीअन महि राता ॥ २ ॥ सूरन महि सूरा तूं कहीअहि भोगन महि भोगी ॥ ग्रसतन महि तूं बडो ग्रिहसती जोगन महि जोगी ॥ ३ ॥ करतन महि तूं करता कहीअहि आचारन महि आचारी ॥ साहन महि तूं साचा साहा वापारन महि वापारी ॥ ४ ॥ दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका ॥ लखिमी केतक गनी न जाईऐ गनि न सकउ सीका ॥ ५ ॥ नामन महि तेरो प्रभ नामा गिआनन महि गिआनी ॥ जुगतन महि तेरी प्रभ जुगता इसनानन महि इसनानी ॥ ६ ॥ सिधन महि तेरी प्रभ सिधा करमन सिरि करमा ॥ आगिआ महि तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिरि हुकमा

पर तुम्हारी कृपा होती है।। रहाउ ।। उस प्रभु को सनक, सनन्दन, नारद मुनि आदि प्रति दिन जपते रहते हैं और उसकी सेवा करते हैं। सेवक प्रहलाद जब शरण में आया तो प्रभु ने उसके सम्मान को बचाकर उसकी लाज रख ली।। २ ।। वह अदृष्ट, निरंजन एक ही प्रभु सब स्थानों में व्याप्त है और उस एक ही प्रभु की ज्योति चारों ओर फैली हुई है। हे प्रभु केवल एक तू ही दाता है, बाकी सब तो याचक हैं जो हाथ फैलाकर माँगते रहते हैं।। ३।। भक्तजनों की वाणी भी उत्तम है जो नित्य नवीन उस प्रभु की अकथनीय कथा का गायन करती रहती है। उन सबका जीवन सफल हो गया क्योंकि वे स्वयं भी पार हो गए और उनका पूरा कुल भी पार उतर गया।। ४ ।। जिसके अन्तर्मन में मोह का घोर अन्धकार है उस मनमुख को दुविधा और दुर्मति सदैव प्रभावित करती रहती है। ऐसे व्यक्तियों को शान्त पुरुषों की कथावार्ता नहीं भाती और वे परिवार समेत डूब मरते हैं।। ५ ।। निन्दक व्यक्ति निन्दा करते हुए दूसरों की मैल को साफ करता है और वास्तव में वह निन्दक धन-दौलत को प्यार करने वाला तथा मल का भक्षण करने वाला ही होता है। शान्त पुरुषों की निन्दा का यह प्रभाव होता है कि निन्दक न इस पार और न उस पार पहुँच पाते हैं अर्थात बीच में ही डूब मरते हैं।। ६ ।। यह सारा प्रपंच और खेल उस कर्ता पुरुष ने ही किया है और उस कर्ता प्रभु ने ही सारी शक्तियों को धारण कर रखा है। प्रभु सूत्र रूप में सारे संसार में व्याप्त है और इस संसार का सूत्र (धागा) जब खिंच जाता है तो सारा संसार छिन्न-भिन्न हो जाता है परन्तु यह अकेला सूत्र ही बाकी बच जाता है।। ७ ।। जो जीव जीभ से प्रेमपूर्वक रस ले लेकर हरि के गुण गाते हुए अपनी जीभ को हरि रस से परिपूर्ण कर लेते हैं वे सदैव अपनी जीभ पर हरि रस को ही धारण किए रहते हैं। नानक का कथन है कि मैं प्रभु के बिना अन्य कुछ नहीं माँगता मुझे हरि रस की ही प्रीति से ही प्यार बना रहे।। ८ ।। १ ।। ७ ।।

गूजरी महला ५ घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

हे प्रभु, राजाओं में तू सबसे बड़ा राजा है और जमींदारों में तू सबसे बड़ा जमींदार है।। मालिकों में तेरी ही मालकीयत है और सब कौमों में सर्वोच्च तेरी ही कौम है (तुझसे प्रेम करने वाले सर्वोच्च हैं)।। १ ।। मेरा पिता प्रभु बहुत बड़ा मालिक है जिसके बराबर अन्य कोई नहीं पहुँच सकता। हे कर्ता-प्रभु, तेरी स्तुति कैसे की जाए; तुझे देखकर तो केवल आश्चर्यचकित ही हुआ जाता है।। १ ।। रहाउ ।। सुखी लोगों में तू ही सुखी कहा जाता है और सभी दाताओं से तू ही ऊँचा दाता है। तेजस्वी लोगों में तू ही सबसे तेजवान कहा जाता है और रसिक लोगों में भी तू ही बसा हुआ है।। २ ।। शूरवीरों में तुझे ही शूरवीर कहा जाता है और भोगियों में तू ही भोगी है। घरबारी लोगों में तू सबसे बड़ा गृहस्थी है और योगियों में तू ही योगी है।। ३ ।। नए कार्य करने वाले लोगों में तू ही आविष्कारक है और संयमपूर्वक आचरण करने वालों में तू ही महानतम आचरण वाला है। साहूकारों में तू ही सच्चा साहूकार है और व्यापारियों में भी तू ही सच्चा व्यापारी है।। ४ ।। दरबार लगाने वालों में भी सबसे ऊँचा दरबार तेरा ही है तथा तू ही शरण में आए हुओं का पालन पोषण करने का भार लेता है। तेरी धन-सम्पदा कितनी है इसे गिना नहीं जा सकता और तेरे पास कितने प्रकार के सिक्के हैं वे भी नही जाने जा सकते।। ५ ।। सभी नामों में हे प्रभु, तेरा नाम ही सर्वश्रेष्ठ है और ज्ञानवानों में तू ही सबसे बड़ा ज्ञानी है। सब विधियों में हे प्रभु, तेरी विधि ही सर्वश्रेष्ठ है और सब प्रकार के स्नानों में तुझमें किया हुआ स्नान ही उत्तम है।। ६ ।। सभी सिद्धियों में हे प्रभु, तेरी सिद्धि ही महान है और सब कर्मों में श्रेष्ठ तेरा किया हुआ कर्म ही है। सभी आज्ञाओं में हे प्रभु, तेरी आज्ञा विद्यमान है और सभी प्रकार के

॥ ७ ॥ जिउ बोलावहि तिउ बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी ॥ साधसंगि नानक जसु गाइओ जो प्रभ की अति पिआरी ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥

गूजरी महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाथ नरहर दीन बंधव पतित पावन देव ॥ भै त्रास नास क्रिपाल गुण निधि सफल सुआमी सेव ॥ १ ॥ हरि गोपाल गुर गोबिंद ॥ चरण सरण दइआल केसव तारि जग भव सिंध ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध हरन मद मोह दहन मुरारि मन मकरंद ॥ जनम मरण निवारि धरणीधर पति राखु परमानंद ॥ २ ॥ जलत अनिक तरंग माइआ गुर गिआन हरि रिद मंत ॥ छेदि अहंबुधि करुणा मै चिंत मेटि पुरख अनंत ॥ ३ ॥ सिमरि समरथ पल महूरत प्रभ धिआनु सहज समाधि ॥ दीन दइआल प्रसंन पूरन जाचीऐ रज साध ॥ ४ ॥ मोह मिथन दुरंत आसा बासना बिकार ॥ रखु धरम भरम बिदारि मन ते उधरु हरि निरंकार ॥ ५ ॥ धनाढि आढि भंडार हरि निधि होत जिना न चीर ॥ खल मुगध मूड़ कटाख्य स्रीधर भए गुण मति धीर ॥ ६ ॥ जीवन मुकत जगदीस जपि मन धारि रिद परतीति ॥ जीअ दइआ मइआ सरबत्र रमणं परम हंसह रीति ॥ ७ ॥ देत दरसनु स्रवन हरि जसु रसन नाम उचार ॥ अंग संग भगवान परसन प्रभ नानक पतित उधार ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥ ५ ॥ १ ॥ १ ॥ २ ॥ ५७ ॥

गूजरी की वार महला ३ सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु मः ३ ॥ इहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि ॥ गुर कै भाणै जो चलै तां जीवण पदवी पाहि ॥ ओइ सदा सदा जन जीवते जो हरि चरणी चितु लाहि ॥ नानक नदरी मनि वसै गुरमुखि सहजि समाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ अंदरि सहसा दुखु है आपै सिरि धंधै मार ॥ दूजै भाइ सुते कबहि न जागहि माइआ मोह पिआर ॥ नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु

आदेशों के ऊपर तेरा ही हुकुम है।। ७ ।। तू जैसे बुलाता है हे स्वामी, हम वैसा ही बोलते हैं और हमारी क्या शक्ति है कि हम अन्य कुछ कह सकें। नानक ने तो उस साधसंगत में प्रभु के यश का गायन किया है जो प्रभु को अत्यन्त ही प्यारी है।। ८ ।। १ ।। ८ ।।

गूजरी महला ५ घरु ४ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

वह प्रभु सबका नाथ, सबसे श्रेष्ठ दीनबन्धु, पतित पावन, भय को नाश करने वाला कृपालु और गुणों का भण्डार है। उस सबके स्वामी प्रभु की सेवा से ही सभी फल प्राप्त होते हैं।। १ ।। वह प्रभु धरती का पालन करने वाला और गुरु रूप में पृथ्वी का मालिक है। उस लम्बे केशों वाले दयालु प्रभु के चरणों की शरण में मैं हूँ क्योंकि वही संसार सागर को पार कराने वाला है।। १।। रहाउ ।। वह काम, क्रोध को काटने वाला, मोह और अभिमान को जला देने वाला प्रभु है जो मन रूपी भँवरे का शहद है। हे धरती को धारण करने वाले तथा परम आनन्द देने वाले प्रभु, तू हमारा जन्म-मरण का चक्र निवृत्त कर दे और हे परमानन्द प्रभु, हमारी लाज रख।। २ ।। माया की अनेक लहरें जल कर नष्ट हो जाती हैं जब प्रभु का ज्ञान हृदय में मन्त्र की तरह बस जाए। हे करुणामय अनन्त पुरुष प्रभु, तू हमारी अहंकार वाली बुद्धि को नष्ट कर दे और हमारी चिन्ता को मिटा दे।। ३ ।। हे जीव, सहज समाधि के माध्यम से हर पल और हर मुहूर्त में उस समर्थ प्रभु का सुमिरन कर। दीनदयालु प्रभु पूर्ण आनन्द स्वरूप है; उसमें लीन साधु पुरुषों की चरण-धूलि माँगनी चाहिए।। ४ ।। हे निराकार प्रभु, झूठे मोह, बुरे अन्त वाली आशाएं और विकारों से युक्त वासनाओं से धर्म को बचाए रखो तथा जीवों के मन से भ्रमों को नष्ट करके उनका उद्धार करो।। ५ ।। जिनके पास पहनने के लिए कपड़ा तक नहीं था वे भण्डारों सहित धनवान हो गए हैं क्योंकि उन्होंने प्रभु रूपी खज़ाना पा लिया है। अत्यन्त मूढ़ और मूर्ख व्यक्ति भी प्रभु की कृपादृष्टि के संकेत मात्र से गुणवान और धैर्यवान हो गए हैं।। ६ ।। हे मन, तू हृदय में उस प्रभु का प्रेम धारण कर ले; उस प्रभु के सुमिरन से जीवन-मुक्त हो जाया जाता है। हृदय में जीव-दया और कृपा के होने से ब्रह्म ज्ञानी पुरुष सर्वत्र उस प्रभु को व्याप्त मानते हैं।। ७ ।। जब प्रभु दर्शन देता है तो कान हरि-यश को सुनते हैं और जीभ प्रभु-नाम का उच्चारण करती है। फिर तो परमात्मा भी सदैव अंग-संग अनुभव होता है और हे नानक, प्रभु पतित लोगों का भी उद्धार कर देता है।। ८ ।। १ ।। २ ।। ५ ।। १ ।। १ ।। २ ।। ५७ ।।

गूजरी की वार महला ३
सिकंदर इब्राहीम* की वार की धुन पर गायी जानी चाहिए १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्लोक महला ३ ।। यह संसार अपने ममत्व अर्थात अहंकार में ही मरा जा रहा है इसे जीवन की विधि का पता नहीं है। यदि यह गुरु की रज़ा में चले तो इसे वास्तविक जीवन पदवी प्राप्त होती है। हे नानक, प्रभु की कृपादृष्टि के माध्यम से ही प्रभु मन में आ बसता है और गुरमुख बनकर ही व्यक्ति सहज भाव में लीन हो जाता है।। १ ।। महला ३ ।। जीवों के अन्दर भ्रम और दुख है और इसीलिए ये अपने सिर पर बेगारी की भार सहते हैं। जीव द्वैतभाव में फंसकर बेहोश पड़े हुए हैं और उन्हें माया के मोह का इतना प्यार है कि वे कभी सचेत नहीं होते।

मनमुख का आचारु ॥ हरि नामु न पाइआ जनमु बिरथा गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई ॥ मता मसूरति आपि करे जो करे सु होई ॥ तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥ तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति होई ॥ जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ १ ॥ सलोकु मः ३ ॥ साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु कमाइ ॥ ओहु अउहाणी कदे नाहि ना आवै ना जाइ ॥ सदा सदा सो सेवीऐ जो सभ महि रहै समाइ ॥ अवरु दूजा किउ सेवीऐ जंमै तै मरि जाइ ॥ निहफलु तिन का जीविआ जि खसमु न जाणहि आपणा अवरी कउ चितु लाइ ॥ नानक एव न जापई करता केती देइ सजाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सचा नामु धिआईऐ सभो वरतै सचु ॥ नानक हुकमु बुझि परवाणु होइ ता फलु पावै सचु ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूलि न बुझई अंधा कचु निकचु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ संजोगु विजोगु उपाइओनु स्रिसटी का मूलु रचाइआ ॥ हुकमी स्रिसटि साजीअनु जोती जोति मिलाइआ ॥ जोती हूं सभु चानणा सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धंधै लाइआ ॥ माइआ का मूलु रचाइओनु तुरीआ सुखु पाइआ ॥ २ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सो जपु सो तपु जि सतिगुर भावै ॥ सतिगुर कै भाणै वडिआई पावै ॥ नानक आपु छोडि गुर माहि समावै ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुर की सिख को विरला लेवै ॥ नानक जिसु आपि वडिआई देवै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु अगिआनु है बिखमु अति भारी ॥ पथर पाप बहु लदिआ किउ तरीऐ तारी ॥ अनदिनु भगती रतिआ हरि पारि उतारी ॥ गुर सबदी मनु निरमला हउमै छडि विकारी ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हरि हरि निसतारी ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ कबीर मुकति दुआरा संकुड़ा राई दसवै भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहा निकसिआ किउ करि जाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नानक मुकति दुआरा अति नीका नान्हा होइ सु जाइ ॥ हउमै मनु असथूलु है किउ करि विचु दे जाइ ॥ सतिगुर मिलिऐ हउमै

मनमुख व्यक्ति का यही आचरण है कि वह न तो नाम का सुमिरन करता है और न ही शब्द का चिन्तन करता है। उसने प्रभु-नाम को प्राप्त नहीं किया और व्यर्थ ही जीवन गँवा दिया है। हे नानक, अब अन्त में यम उसे मारकर ख्वार करता है।। २ ।। पउड़ी ।। जब कर्ता प्रभु ने अपने आप को स्वयं ही पैदा किया तो उस समय अन्य कोई भी नहीं था। वह अपने आप के साथ ही सलाह परामर्श करता था और जो उसने चाहा वही हुआ। उस समय न आकाश था, न पाताल था और न ही तीनों लोक थे। उस समय निराकार रूप में वह स्वयं ही था और कोई भी उत्पत्ति नहीं हुई थी। जैसा उसे भाता था वह वैसा ही करता था और उसके बिना अन्य कोई भी नहीं था।। १ ।। श्लोक महला ३ ।। मेरा साहिब प्रभु सदैव बना रहने वाला है परन्तु उसके दर्शन शब्द के अनुरूप आचरण करने पर ही होते हैं। वह कभी भी नष्ट नहीं होता और न ही उसका आवागमन होता है। सदैव उस प्रभु का ही सुमिरन किया जाना चाहिए जो सब में समाया रहता है। किसी दूसरे का सुमिरन भला क्यों किया जाए जो जन्म लेता है और मर जाता है। उनका जीवित बने रहना निष्फल है जिन्होंने अपने मालिक को नहीं जाना और अन्य लोगों में अपने मन को लगाया है। हे नानक, इस बात का भी कोई अनुमान नहीं लगता कि ऐसे लोगों को परमात्मा कितनी सज़ा देता है।। १ ।। महला ३ ।। सच्चे नाम का सुमिरन किया जाना चाहिए क्योंकि सब जीवों एवं स्थानों में सत्य ही कार्यशील है। हे नानक, जो प्रभु के हुकम को बूझकर उसके समक्ष स्वीकृत होता है उसी को ही सत्य रूपी फल प्राप्त होता है। जो व्यक्ति मुंह से तो बहुत कुछ कहता और करता हुआ भागता दौड़ता रहता है परन्तु उस प्रभु के हुकम को बिल्कुल ही नहीं समझता वह अन्धा, अज्ञानी और बिल्कुल ही कच्चा व्यक्ति है।। २ ।। पउड़ी ।। मिलने और अलग होने अर्थात प्रभु ने संयोग और वियोग के नियम को बनाकर उसके अन्तर्गत ही सृष्टि की उत्पत्ति के मूल सिद्धान्त की रचना की है। हुकम के अन्तर्गत ही सृष्टि की सृजना की गई और प्रभु ने अपनी ज्योति को सब ज्योतियों में स्थित किया। सच्चे गुरु ने यह उपदेश दिया है कि उस परमात्मा की ज्योति से ही सारा प्रकाश होता है। उस परमात्मा ने ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश को तथा त्रिगुणात्मक माया को अपने-अपने कार्यों में लगाया है। माया के मूल उस प्रभु ने ही सब कुछ पैदा किया है और तीनों गुणों से ऊपर उठकर तुरीय अवस्था में ही जीव वास्तविक सुख प्राप्त करता है।। २ ।। श्लोक महला ३ ।। जो सच्चे गुरु को भाता है वही जप और तप वास्तविक है। यदि सच्चे गुरु को ही अच्छा लगे तो जीव बड़प्पन प्राप्त करता है। हे नानक, जीव जब अहम् भाव को छोड़ देता है तभी वह गुरु में वास्तविक रूप से लीन होता है।। १ ।। महला ३ ।। गुरु की शिक्षा कोई बिरला ही लेता है और हे नानक, ऐसा बिरला व्यक्ति वही होता है जिसे प्रभु स्वयं बड़प्पन प्रदान करता है।। २ ।। पउड़ी ।। माया-मोह और अज्ञान बहुत ही भारी और विषम पदार्थ हैं। यदि व्यक्ति पाप रूपी पत्थरों से अत्यधिक लदा हुआ हो तो वह भला कैसे तैरकर भवसागर से पार हो सकता है। जो सदैव भक्ति में रंगे रहते हैं प्रभु उन्हें पार उतार देता है। गुरु के उपदेश से उनका मन निर्मल हो जाता है और वे अहंकार और विकारों को छोड़ चुके होते हैं। प्रभु के नाम का ही सुमिरन किया जाना चाहिए क्योंकि प्रभु ही व्यक्ति को पार उतारता है।। ३ ।। श्लोक ।। हे कबीर, मुक्ति का द्वार तो राई के दसवें भाग के बराबर छोटा है; यह मन तो हाथी बना हुआ है; यह भला उसमें से कैसे निकलकर जाएगा। यदि ऐसा सच्चा गुरु मिल जाए जो दयालु होकर मेहरबान हो जाए तो मुक्ति का द्वार भी पर्याप्त चौड़ा हो जाता है जिसमें से आसानी से ही आया जाया जा सकता है।। १ ।। महला ३ ।। हे नानक, मुक्ति का द्वार अत्यन्त छोटा है इसमें से वही जा सकता है जो अत्यन्त छोटा अर्थात बहुत अधिक विनम्र बन जाए। अहंकार के फलस्वरूप मन तो बहुत मोटा हो गया है इसलिए यह भला कैसे उसमें से जा सकता है। सच्चे गुरु के मिलाप से अहंकार

गई जोति रही सभ आइ ॥ इहु जीउ सदा मुकतु है सहजे रहिआ समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता ॥ गणतै प्रभू न पाईऐ दूजै भरमीता ॥ सतिगुर मिलिऐ जीवतु मरै बुझि सचि समीता ॥ सबदे हउमै खोईऐ हरि मेलि मिलीता ॥ सभ किछु जाणै करे आपि आपे विगसीता ॥ ४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर सिउ चितु न लाइओ नामु न वसिओ मनि आइ ॥ ध्रिगु इवेहा जीविआ किआ जुग महि पाइआ आइ ॥ माइआ खोटी रासि है एक चसे महि पाजु लहि जाइ ॥ हथहु छुड़की तनु सिआहु होइ बदनु जाइ कुमलाइ ॥ जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ तिन्ह सुखु वसिआ मनि आइ ॥ हरि नामु धिआवहि रंग सिउ हरि नामि रहे लिव लाइ ॥ नानक सतिगुर सो धनु सउपिआ जि जीअ महि रहिआ समाइ ॥ रंगु तिसै कउ अगला वंनी चड़ै चड़ाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥ इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥ गुरमुखि कोई गारड़ू तिनि मलि दलि लाई पाइ ॥ नानक सेई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ढाढी करे पुकार प्रभू सुणाइसी ॥ अंदरि धीरक होइ पूरा पाइसी ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु से करम कमाइसी ॥ जा होवै खसमु दइआलु ता महलु घरु पाइसी ॥ सो प्रभु मेरा अति वडा गुरमुखि मेलाइसी ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥ सभना का सहु एकु है सद ही रहै हजूरि ॥ नानक हुकमु न मंनई ता घर ही अंदरि दूरि ॥ हुकमु भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदरि करेइ ॥ हुकमु मंनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ रैणि सबाई जलि मुई कंत न लाइओ भाउ ॥ नानक सुखि वसनि सोहागणी जिन्ह पिआरा पुरखु हरि राउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु जगु फिरि मै देखिआ हरि इको दाता ॥ उपाइ कितै न पाईऐ हरि करम बिधाता ॥ गुर सबदी हरि मनि वसै हरि सहजे जाता ॥ अंदरहु त्रिसना अगनि बुझी हरि अंम्रित सरि नाता ॥ वडी वडिआई वडे की गुरमुखि बोलाता ॥ ६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ काइआ हंस किआ प्रीति है जि पइआ ही छडि जाइ ॥ एस नो कूड़ु

विनष्ट हो जाता है और ईश्वर की ज्योति मन में भर जाती है। अब यह जीव सदा के लिए मुक्त हो जाता है और सहज भाव में लीन बना रहता है।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु ने सारे संसार को उत्पन्न करके अपने वश में किया हुआ है। गणनाओं के बल पर अर्थात चतुराईयों में लगे रहकर प्रभु को नहीं पाया जा सकता और जीव द्वैत भाव में भटकता रहता है। सच्चे गुरु से मिलाप होने पर जीवन में ही विकारों के प्रति मरकर व्यक्ति इस रहस्य को बूझते हुए सत्य में समाहित हो जाता है। शब्द-गुरु के माध्यम से अहम् मिट जाता है और प्रभु से मिलाप हो जाता है। वह प्रभु सब कुछ स्वयं ही जानता और करता है और स्वयं ही प्रसन्न बना रहता है।। ४ ।। श्लोक महला ३ ।। व्यक्ति ने सच्चे गुरु में तो ध्यान लगाया नहीं और न ही प्रभु-नाम उसके मन में बसा है। ऐसे जीवन को धिक्कार है और ऐसे व्यक्ति ने भला इस संसार में आकर क्या प्राप्त किया है। माया ऐसी खोटी पूँजी है जिसका एक निमेष मात्र में पाखण्ड नंगा हो जाता है। यह जब व्यक्ति के हाथों से खिसक जाती है तो उसका शरीर आभाहीन हो जाता है और उसका चेहरा मुरझा जाता है। जिसने सच्चे गुरु के साथ चित्त से प्रेम लगा लिया उसके मन में सदैव सुख का निवास बना रहता है। जो व्यक्ति प्रभु-नाम का सुमिरन मस्त होकर करता है और प्रभु-नाम में ही अपनी लौ लगाए रहता है हे नानक, सच्चा गुरु उसे ऐसा नित्य बना रहने वाला धन सौंप देता है जो सदा उसके मन में ही समाया रहता है। ऐसे व्यक्ति को ही प्रेम का गाढ़ा रंग लगता है और उसके रंग की रंगत बहुत ही अधिक होती है।। १ ।। महला ३ ।। इस माया रूपी नागिन ने सारे संसार को अपने लपेटे में ले रखा है। जो इसी की सेवा में लगे रहते हैं यह उन्हें ही खा जाती है। कोई गुरमुख ही इसके औषधि रूपी मन्त्र को जानता है और इसे कुचल मसल कर अपने पैरों में गिरा लेता है। हे नानक, केवल उन्हीं का उद्धार होता है जो सच्चे प्रभु के साथ लौ लगाए रहते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु के दरबार का नीच सेवक एक गायक के रूप में पुकार लगाता है तो प्रभु उसे सुनता है। ऐसी स्थिति में सेवक के मन में धैर्य आ जाता है और उसे वह पूर्ण प्रभु मिल जाता है। जीव के जैसे भाग्य लेख प्रारम्भ से ही लिखे होते हैं वह वैसे ही कर्मों में लीन बना रहता है। यदि वह मालिक प्रभु दयालु हो जाए तो सेवक भी उस प्रभु के महल में ही ठिकाना प्राप्त कर लेता है। वह मेरा प्रभु अत्यन्त विशाल है जिससे गुरमुख होकर ही मिलाप होता है।। ५ ।। श्लोक महला ३ ।। सबका मालिक वह एक प्रभु ही है जो सदैव ही प्रत्यक्ष बना रहता है। हे नानक, यदि व्यक्ति उसका हुकम न माने तो घर में रहते हुए भी वह उस प्रभु से दूर ही बना रहता है। प्रभु अपना हुकम भी उन्हीं को मनवाता है जिन पर उनकी कृपादृष्टि होती है। जिसने उसके हुकम को मानकर सुख प्राप्त किया है वही जीवात्मा प्रेम करने वाली सुहागिन बन जाती है।। १ ।। महला ३ ।। जीव-स्त्री सारी रात भर वियोग में जलती हुई मरणासन्न हो गई परन्तु प्रभु रूपी पति के साथ उसने प्रेम का सम्बन्ध नहीं जोड़ा। हे नानक, वे सुहागिन जीव-स्त्रियां सुखी बसती हैं जिन्होंने प्रभु रूपी मालिक के साथ प्यार सम्बन्ध बनाकर उसे ही हरि रूपी राजन माना है।। २ ।। पउड़ी ।। मैंने सारे संसार में घूम फिर कर देख लिया है कि वह दाता प्रभु तो एक ही है। उन्हें अनेकों प्रकार के चतुराईपूर्ण उपायों से कभी भी नहीं प्राप्त किया जाता। वह प्रभु तो स्वयं ही सबको कर्मों के अनुरूप चलाने वाला है। शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु मन में बसता है और उस प्रभु को सहज-भाव से ही जाना जाता है। जब हरि रूपी अमृत सरोवर में स्नान किया गया तो जीव की आन्तरिक तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है। उस महान प्रभु का बड़प्पन भी बड़ा है और उस बड़प्पन का गुणानुवाद भी वह गुरमुखों के माध्यम से करवाता है।। ६ ।। श्लोक महला ३ ।। इस शरीर और आत्मा का कैसा प्रेम है कि आत्मा शरीर को छोड़कर चल पड़ती है। फिर इस शरीर को झूठ

बोलि कि खवालीऐ जि चलदिआ नालि न जाइ ॥ काइआ मिटी अंधु है पउणै पुछहु जाइ ॥ हउ ता माइआ मोहिआ फिरि फिरि आवा जाइ ॥ नानक हुकमु न जातो खसम का जि रहा सचि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥ इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ ॥ इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले जाइ ॥ पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ ॥ धनु वापारी नानका जिन्हा नाम धनु खटिआ आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मेरा साहिबु अति वडा सचु गहिर गंभीरा ॥ सभु जगु तिस कै वसि है सभु तिस का चीरा ॥ गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा ॥ किरपा ते हरि मनि वसै भेटै गुरु सूरा ॥ गुणवंती सालाहिआ सदा थिरु निहचलु हरि पूरा ॥ ७ ॥ सलोकु मः ३ ॥ ध्रिगु तिन्हा दा जीविआ जो हरि सुखु परहरि तिआगदे दुखु हउमै पाप कमाइ ॥ मनमुख अगिआनी माइआ मोहि विआपे तिन्ह बूझ न काई पाइ ॥ हलति पलति ओइ सुखु न पावहि अंति गए पछुताइ ॥ गुर परसादी को नामु धिआए तिसु हउमै विचहु जाइ ॥ नानक जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो गुर चरणी आइ पाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुखु ऊधा कउलु है ना तिसु भगति न नाउ ॥ सकती अंदरि वरतदा कूड़ु तिस का है उपाउ ॥ तिस का अंदरु चितु न भिजई मुखि फीका आलाउ ॥ ओइ धरमि रलाए ना रलन्हि ओना अंदरि कूड़ु सुआउ ॥ नानक करतै बणत बणाई मनमुख कूड़ु बोलि बोलि डुबे गुरमुखि तरे जपि हरि नाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बिनु बूझे वडा फेरु पइआ फिरि आवै जाई ॥ सतिगुर की सेवा न कीतीआ अंति गइआ पछुताई ॥ आपणी किरपा करे गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाई ॥ त्रिसना भुख विचहु उतरै सुखु वसै मनि आई ॥ सदा सदा सालाहीऐ हिरदै लिव लाई ॥ ८ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जि सतिगुरु सेवे आपणा तिस नो पूजे सभु कोइ ॥ सभना उपावा सिरि उपाउ है हरि नामु परापति होइ ॥ अंतरि सीतल साति वसै जपि हिरदै सदा सुखु होइ ॥ अंम्रितु खाणा अंम्रितु पैनणा नानक नामु वडाई होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ ए मन गुर की सिख सुणि हरि

बोल बोलकर भला क्यों खिलाया-पिलाया जाए जो चलते समय साथ ही नहीं चलता। यह देह तो मिट्टी है और अन्धी अर्थात ज्ञानहीन है। प्राण अथवा जीवात्मा से यदि पूछा जाए तो उसका उत्तर होता है कि मैं तो माया के मोह में ही फंसी हुई बार-बार योनियों में पड़ी रहती हूँ। हे नानक, मैंने उस मालिक का हुकम नही जाना अन्यथा मैं भी सत्य में ही लीन हो जाता।। १ ।। महला ३ ।। केवल नाम-धन ही एक स्थायी धन है अन्य सारी धन-सम्पदा तो आती जाती रहती है।। नाम-धन को चोर भी देख नहीं पाता और न ही कोई उचक्का ठग उसे लेकर जा सकता है। यह प्रभु रूपी धन तो प्राणों में रमा रहता है और जीवात्मा के साथ ही चलता है। यह धन पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है और मन के पीछे चलने से कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता। हे नानक, वे व्यापारी धन्य हैं जिन्होंने प्रभु-नाम रूपी धन की कमाई की है।। २ ।। पउड़ी ।। मेरा मालिक प्रभु बहुत बड़ा है, सच्चा है और गम्भीर रूप से गहरा है अर्थात धैर्यवान है। सारा संसार उसी के बस में है और यह सारा उसी का विस्तार है। गुरु की कृपा से ही यह स्थिर बना रहने वाला धैर्य रूपी धन प्राप्त होता है। यदि बलशाली गुरु से मेल हो जाए तो उसी की कृपा से प्रभु का निवास जीव के मन में होता है। गुणवान लोगों ने हमेशा उसका गुणानुवाद किया है क्योंकि वही पूर्ण प्रभु सदैव स्थिर बना रहने वाला है।। ७ ।। श्लोक महला ३ ।। उन लोगों का जीवन धिक्कार है जो प्रभु के सुख को दूर कर उसे छोड़ते हैं और अहंकार के दुख में पड़े हुए पाप कमाते हैं। मनमुख अज्ञानी व्यक्ति माया-मोह में डूबे रहते हैं और उन्हें किसी प्रकार की भी समझ नही होती। इस लोक और परलोक में उन्हें सुख नहीं मिलता और अन्ततः वे पछताते हुए यहां से जाते हैं। गुरु की कृपा के फलस्वरूप जो हरि-नाम का सुमिरन करता है उसके अन्तर्मन से अहंकार समाप्त हो जाता है। हे नानक, जिसका पहले से ही ऐसा भाग्य लेख लिखा हो वह गुरु के चरणों में आ जाता है।। १ ।। महला ३ ।। मनमुख व्यक्ति एक उलटा पड़ा हुआ कमल है जिसमें न तो भक्ति और न ही प्रभु का नाम कार्यशील होता है। वह माया के अन्तर्गत ही व्यवहार करता है और अपने काम को साधने के लिए केवल एक झूठ ही उसका उपाय होता है। उसका अन्तर्मन कभी भी प्रेम से नहीं भीगता और वह अपने मुँह से हल्की बातें ही करता है। धर्म की मर्यादा के अन्तर्गत लाए जाने पर भी वह उस मर्यादा में नही आता क्योंकि ऐसे व्यक्तियों के अन्दर झूठे स्वार्थ ही बने रहते हैं। हे नानक, कर्ता-प्रभु ने कुछ ऐसा संयोग बनाया है कि मनमुख व्यक्ति झूठ बोलकर ही डूब मरते हैं और गुरमुख व्यक्ति प्रभु-नाम सुमिरन करते हुए पार उतर जाते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। बिना वास्तविक सूझ बुद्धि प्राप्त किए जीव को बहुत बड़ा चक्कर पड़ जाता है और वह बार-बार इस संसार में आता जाता ही रहता है। उसने सच्चे गुरु की सेवा नहीं की होती इसलिए वह अन्त में पछताता हुआ ही यहाँ से जाता है। यदि प्रभु कृपा करे तो गुरु प्राप्त होता है जो व्यक्ति के अन्दर का अभिमान समाप्त कर देता है। इस प्रकार व्यक्ति की तृष्णाएं और भूख अन्दर से समाप्त हो जाती हैं और मन में सुख का निवास हो जाता है। सदैव उस प्रभु का ही गुणानुवाद करना चाहिए और अपने हृदय की पूरी लौ लगाकर ऐसा करना चाहिए।। ८ ।। श्लोक महला ३।। जो अपने सच्चे गुरु की सेवा करते हैं सभी उनकी वन्दना करते हैं। सभी प्रयत्नों में सबसे बड़ा उपाय यह है कि प्रभु नाम की प्राप्ति हो जाए। ऐसा होने से अन्तर्मन में शीतलता आन बसती है और हृदय से उसका जाप करने से सदैव सुख प्राप्त होता है। जो प्रभु-नाम रूपी अमृत ही खाते और पहनते हैं; हे नानक, उन्हीं के माध्यम से प्रभु-नाम का बड़प्पन उजागर होता है।। १ ।। महला ३ ।। हे मन,

पावहि गुणी निधानु ॥ हरि सुखदाता मनि वसै हउमै जाइ गुमानु ॥ नानक नदरी पाईऐ ता अनदिनु लागै धिआनु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतु संतोखु सभु सचु है गुरमुखि पविता ॥ अंदरहु कपटु विकारु गइआ मनु सहजे जिता ॥ तह जोति प्रगासु अनंद रसु अगिआनु गविता ॥ अनदिनु हरि के गुण रवै गुण परगटु किता ॥ सभना दाता एकु है इको हरि मिता ॥ ९ ॥ सलोकु मः ३ ॥ ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु कहीऐ जि अनदिनु हरि लिव लाए ॥ सतिगुर पुछै सचु संजमु कमावै हउमै रोगु तिसु जाए ॥ हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाए ॥ इसु जुग महि को विरला ब्रहम गिआनी जि हउमै मेटि समाए ॥ नानक तिस नो मिलिआ सदा सुखु पाईऐ जि अनदिनु हरि नामु धिआए ॥ १ ॥ मः ३ ॥ अंतरि कपटु मनमुख अगिआनी रसना झूठु बोलाइ ॥ कपटि कीतै हरि पुरखु न भीजै नित वेखै सुणै सुभाइ ॥ दूजै भाइ जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ ॥ इतु कमाणै सदा दुखु पावै जंमै मरै फिरि आवै जाइ ॥ सहसा मूलि न चुकई विचि विसटा पचै पचाइ ॥ जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ ॥ हरि नामु धिआवै हरि नामो गावै हरि नामो अंति छडाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना हुकमु मनाइओनु ते पूरे संसारि ॥ साहिबु सेवन्हि आपणा पूरै सबदि बीचारि ॥ हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि ॥ हरि का महलु तिन्ही पाइआ जिन्ह हउमै विचहु मारि ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहे जपि हरि नामा उर धारि ॥ १० ॥ सलोकु मः ३ ॥ गुरमुखि धिआन सहज धुनि उपजै सचि नामि चितु लाइआ ॥ गुरमुखि अनदिनु रहै रंगि राता हरि का नामु मनि भाइआ ॥ गुरमुखि हरि वेखहि गुरमुखि हरि बोलहि गुरमुखि हरि सहजि रंगु लाइआ ॥ नानक गुरमुखि गिआनु परापति होवै तिमर अगिआनु अधेरु चुकाइआ ॥ जिस नो करमु होवै धुरि पूरा तिनि गुरमुखि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुरु जिना न सेविओ सबदि न लगो पिआरु ॥ सहजे नामु न धिआइआ कितु आइआ संसारि ॥ फिरि फिरि जूनी पाईऐ विसटा सदा खुआरु ॥ कूड़ै लालचि लगिआ ना उरवारु न पारु ॥

गुरु की शिक्षा को सुन तो तुझे गुणों का खज़ाना प्रभु प्राप्त हो जाएगा। सुखदाता प्रभु तेरे मन में बस जाएगा और तेरा अहंकार और अभिमान समाप्त हो जाएगा। हे नानक, गुरु की कृपादृष्टि से ही गुरु की शिक्षा प्राप्त होती है और तभी सदैव प्रभु में ही ध्यान बना रहता है।। २ ।। पउड़ी ।। गुरमुख व्यक्ति पवित्र है और पूर्ण रूप से सत्य, संतोष का ही रूप है। उसके मन में से कपट और विकार चले गए हैं और उसने स्वाभाविक रूप से ही अपने मन को जीत लिया है। गुरमुख अवस्था में ही प्रभु की ज्योति प्रकाशित होती है, आनन्द रस की प्राप्ति होती है और अज्ञान दूर हो जाता है। वह सदैव प्रभु के गुणों में लीन बना रहता है और अपने माध्यम से उन गुणों को प्रकट करता है। सभी जीवों का दाता एक ही है और वह एक ही प्रभु सबका मित्र है।। ६ ।। श्लोक महला ३ ।। जो परब्रह्म को जानता है वह ब्राह्मण है और वह सदैव प्रभु में लौ लगाए रहता है। वह सच्चे गुरु से जिज्ञासा शान्त करके सत्य और संयम जीवन में धारण करता है और इस प्रकार उसका अहंकार का रोग समाप्त हो जाता है। वह प्रभु के गुण गाता है, गुणों का संग्रह करता है और प्रभु की ज्योति में अपनी ज्योति मिलाए रखता है। इस संसार में कोई बिरला ही ऐसा ब्रह्मज्ञानी है जो अहंकार को मिटाकर प्रभु में लीन बना रहता है। हे नानक, जो सदैव प्रभु-नाम का सुमिरन करता रहता है ऐसे व्यक्ति को मिलकर सदा सुख प्राप्त किया जाता है।। १ ।। महला ३ ।। मनमुख अज्ञानी व्यक्ति के अन्तर्मन में कपट होता है और जीभ से वह झूठ ही बोलता रहता है। कपट करने से परमात्मा प्रसन्न नहीं होता और प्रभु तो सदैव स्वाभाविक ही सब कुछ देखता और सुनता रहता है। मनमुख व्यक्ति द्वैतभाव में लीन होकर संसार को शिक्षा देता रहता है परन्तु वह ऐसा माया रूपी विष और मोह के स्वार्थ में ही करता है। ऐसे आचरण के कारण वह सदैव दुख पाता है, जन्मता मरता रहता है और बार-बार आवागमन में पड़ा रहता है। उसका भ्रम कभी भी समाप्त नहीं होता और गन्दगी में पड़ा हुआ ही वह उसी में मर खप जाता है। मेरा प्रभु जिस पर कृपा करता है उसे ही वह गुरु से उपदेश सुनवाता है। ऐसा व्यक्ति प्रभु-नाम का ही सुमिरन करता है, प्रभु-नाम का ही गायन करता है और यह प्रभु-नाम ही उसे अन्त में मुक्त करवा देता है।। २ ।। पउड़ी ।। जिन्हें प्रभु ने अपना हुकम मनवा लिया है वे व्यक्ति इस संसार में परिपूर्ण होते हैं। वे अपने मालिक की शब्द के विचार के माध्यम से सेवा करते हैं। सच्चे शब्द से प्रेम करने के फलस्वरूप ही प्रभु की सेवा और उसकी चाकरी होती है। प्रभु का दरबार उन्हीं लोगों ने प्राप्त किया है जिन्होंने अन्तर्मन से अहंकार को मार दिया है। हे नानक, प्रभु के नाम को हृदय में धारण करके गुरमुख व्यक्ति ही उस प्रभु को मिल पाते हैं।। १० ।। श्लोक महला ३ ।। गुरमुख के अन्तर्मन में सदैव सहज की ध्वनि उत्पन्न होती है और उसका चित्त सच्चे नाम में ही लगा रहता है। प्रेम में रंगे हुए गुरमुख के मन को सदैव प्रभु का नाम ही अच्छा लगता है। गुरमुख प्रभु को सर्वत्र देखता है, गुरमुख ही सदैव प्रभु से संवाद में बना रहता है और गुरमुख ही सहजभाव से प्रभु के साथ प्रेम लगा लेता है। हे नानक, गुरमुख को ही ज्ञान प्राप्त होता है और उसका अज्ञान रूपी अन्धकार नष्ट हो जाता है। जिसे प्रभु की ओर से ही कृपा प्राप्त हो वही गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का सुमिरन करता है।। १ ।। महला ३ ।। जिसने सच्चे गुरु की सेवा नही की, जिसे शब्द-ब्रह्म के साथ प्यार नहीं लगा और जिसने स्वाभाविक रूप से ही प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया वह भला किस लिए संसार में आया है। वह बार-बार योनियों में पड़ता रहता है और विष्ठा रूपी माया के चक्कर में सदैव भटकता रहता है। ऐसा व्यक्ति झूठे लालच में

नानक गुरमुखि उबरे जि आपि मेले करतारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भगत सचै दरि सोहदे सचै सबदि रहाए ॥ हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाए ॥ हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते रसना हरि रसु पिआए ॥ सफलु जनमु जिन्ही गुरमुखि जाता हरि जीउ रिदै वसाए ॥ बाझु गुरू फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआए ॥ ११ ॥ सलोकु मः ३ ॥ कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ हरि उतम पदु पाइआ ॥ सतिगुर सेवि हरि नामु मनि वसाइआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ विचे ग्रिह गुर बचनि उदासी हउमै मोहु जलाइआ ॥ आपि तरिआ कुल जगतु तराइआ धंनु जणेदी माइआ ॥ ऐसा सतिगुरु सोई पाए जिसु धुरि मसतकि हरि लिखि पाइआ ॥ जन नानक बलिहारी गुर आपणे विटहु जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ त्रै गुण माइआ वेखि भुले जिउ देखि दीपकि पतंग पचाइआ ॥ पंडित भुलि भुलि माइआ वेखहि दिखा किनै किहु आणि चड़ाइआ ॥ दूजै भाइ पड़हि नित बिखिआ नावहु दयि खुआइआ ॥ जोगी जंगम संनिआसी भुले ओन्हा अहंकारु बहु गरबु वधाइआ ॥ छादनु भोजनु न लैही सत भिखिआ मनहठि जनमु गवाइआ ॥ एतड़िआ विचहु सो जनु समधा जिनि गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ जन नानक किस नो आखि सुणाईऐ जा करदे सभि कराइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु परेतु है कामु क्रोधु अहंकारा ॥ एह जम की सिरकार है एन्हा उपरि जम का डंडु करारा ॥ मनमुख जम मगि पाईअन्हि जिन्ह दूजा भाउ पिआरा ॥ जम पुरि बधे मारीअनि को सुणै न पूकारा ॥ जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै गुरमुखि निसतारा ॥ १२ ॥ सलोकु मः ३ ॥ हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो गई खाइ ॥ जो मोहि दूजै चितु लाइदे तिना विआपि रही लपटाइ ॥ गुर कै सबदि परजालीऐ ता एह विचहु जाइ ॥ तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ नानक माइआ का मारणु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इहु मनु केतड़िआ जुग भरमिआ थिरु रहै न आवै जाइ ॥ हरि भाणा ता भरमाइअनु करि परपंचु खेलु उपाइ ॥ जा हरि बखसे ता गुर

में लगा हुआ न इस किनारे पर और न ही उस किनारे पर अर्थात न इस लोक में और न ही परलोक में सुखी होता है। हे नानक, यदि कर्ता-प्रभु स्वयं मिला ले तो गुरमुख बनकर व्यक्ति का उद्धार हो जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु के सच्चे भक्त उसके द्वार पर शोभायमान होते हैं और वे सच्चे शब्द के माध्यम से स्थिर बने रहते हैं। उनके मन में प्रभु की प्रीति उत्पन्न होती है और प्रभु का प्रेम उन्हें प्रभु की ओर आकर्षित करता रहता है। प्रभु की मस्ती में वे सदा प्रभु के रंग में रंगे रहते हैं और उनकी जीभ हरि-रस पिलाती रहती है। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु को जान लिया और अपने हृदय में बसा लिया, उनका जीवन सफल हो जाता है। गुरु के बिना सारी दुनियां विलाप करती रहती है और विलाप करती हुई द्वैतभाव में ख्वार होती रहती है।। ११ ।। श्लोक महला ३ ।। इस कलियुग में भक्त जनों ने ही प्रभु नाम का ख़ज़ाना प्राप्त किया है और प्रभु से ही उन्होंने उत्तम पद प्राप्त किया है। सच्चे गुरु की सेवा करने से उन्होंने हरि-नाम को मन में बसाया है और सदैव प्रभु-नाम का सुमिरन किया है। गुरु के उपदेश के माध्यम से वे घरबारी होते हुए भी अपने अहंकार और मोह को जलाकर तटस्थ बने रहते हैं अर्थात दुनियांदारी में लीन नहीं होते। ऐसे व्यक्ति को जन्म देने वाली वह माँ धन्य है क्योंकि ऐसा व्यक्ति स्वयं तो पार उतरता ही है वह साथ ही साथ सारे संसार को भी पार उतार देता है। ऐसा सच्चा गुरु वही प्राप्त करता है जिसके माथे पर प्रभु ने प्रारम्भ से ही लेख लिख दिया हो। दास नानक ऐसे गुरु पर बलिहारी जाता है जिसने भ्रमों में भूले हुए व्यक्ति को सही मार्ग पर डाल दिया है।। १ ।। महला ३ ।। त्रिगुणात्मक माया को देखकर व्यक्ति ऐसे ही सब कुछ भूल जाता है जैसे पतंगा दीपक को देखकर सब कुछ भुलाकर मर खप जाता है। पंडित बार-बार धन के लालच में फंसकर मन में यह सोचता और देखता रहता है कि किसी ने कुछ भेंट दी या नहीं। योगी, जंगम, संन्यासी आदि भी भूले फिरते हैं क्योंकि उन्होंने अपना अहंकार बहुत बढ़ा रखा है। कपड़े और खाने के रूप में यह अच्छी भिक्षा नहीं लेते परन्तु मन के हठ के पीछे लगकर जीवन को व्यर्थ ही गँवा देते है। इन सब में से वही सेवक समान बुद्धि वाला अर्थात सहजभाव वाला है जिसने गुरमुख बनकार प्रंभु नाम का सुमिरन किया है। हे दास नानक, किसको कहकर सुनाया जाए जब कि वह कर्ता ही सब कुछ करने कराने वाला है।। २ ।। पउड़ी ।। काम, क्रोध, अहंकार, माया मोह आदि विकराल प्रेत हैं। यह सब यमराज की प्रजा हैं और इन पर यमराज का कठोर दण्ड बना रहता है। द्वैतभाव को प्यार करने वाले मनमुख व्यक्ति यम के मार्ग पर धकेल दिए जाते हैं। यमपुरी में बंधे हुए उनको ekjk tkrk gS vkSj dksbZ Hkh mudh iqdkj ugha lqurk gSA ftl ij izHkq कृपा करे उसी को गुरु प्राप्त होता है और गुरमुख बनकर उसे ही मुक्ति मिलती है।। १२ ।। श्लोक महला ३ ।। अहंकार और ममता ऐसे ठग हैं जो मनमुख व्यक्तियों को खा जाते हैं। जो मोह में लीन होकर द्वैतभाव में चित्त लगाते हैं उन्हें यह ठगने वाली माया लिपटी रहती है और उन्हें प्रभावित करती रहती है। शब्द-गुरु के माध्यम से इसे जब अच्छी तरह जला दिया जाता है तभी यह व्यक्ति के अन्तर्मन से दूर होती है। तभी व्यक्ति का तन मन पवित्र होता है और व्यक्ति के मन में प्रभु नाम आन बसता है। हे नानक, माया को मारने वाला पदार्थ प्रभु का नाम ही है जिसे गुरमुख बनकर प्राप्त किया जाता है।। १ ।। महला ३ ।। यह मन कितने युगों तक भटकता रहा यह स्थिर नहीं रहता ओर जन्मता मरता रहता है। प्रभु को ऐसा ही अच्छा लगा तभी उसने माया का छलने वाला खेल पैदा करके मन को भटकने में लगा दिया है।

मिलै असथिरु रहै समाइ ॥ नानक मन ही ते मनु मानिआ ना किछु मरै न जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ काइआ कोटु अपारु है मिलणा संजोगी ॥ काइआ अंदरि आपि वसि रहिआ आपे रस भोगी ॥ आपि अतीतु अलिपतु है निरजोगु हरि जोगी ॥ जो तिसु भावै सो करे हरि करे सु होगी ॥ हरि गुरमुखि नामु धिआईऐ लहि जाहि विजोगी ॥ १३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु आपि अखाइदा गुर सबदी सचु सोइ ॥ वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ वाहु वाहु बाणी सचु है सचि मिलावा होइ ॥ नानक वाहु वाहु करतिआ प्रभु पाइआ करमि परापति होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु करती रसना सबदि सुहाई ॥ पूरै सबदि प्रभु मिलिआ आई ॥ वडभागीआ वाहु वाहु मुहहु कढाई ॥ वाहु वाहु करहि सेई जन सोहणे तिन्ह कउ परजा पूजण आई ॥ वाहु वाहु करमि परापति होवै नानक दरि सचै सोभा पाई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बजर कपाट काइआ गढ़ भीतरि कूड़ु कुसतु अभिमानी ॥ भरमि भूले नदरि न आवनी मनमुख अंध अगिआनी ॥ उपाइ कितै न लभनी करि भेख थके भेखवानी ॥ गुर सबदी खोलाईअन्हि हरि नामु जपानी ॥ हरि जीउ अंम्रित बिरखु है जिन पीआ ते त्रिपतानी ॥ १४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु करतिआ रैणि सुखि विहाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ सदा अनंदु होवै मेरी माइ ॥ वाहु वाहु करतिआ हरि सिउ लिव लाइ ॥ वाहु वाहु करमी बोलै बोलाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ सोभा पाइ ॥ नानक वाहु वाहु सति रजाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि ॥ वाहु वाहु सबदे उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि ॥ वाहु वाहु करतिआ हरि पाइआ सहजे गुरमुखि भालि ॥ से वडभागी नानका हरि हरि रिदै समालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ए मना अति लोभीआ नित लोभे राता ॥ माइआ मनसा मोहणी दह दिस फिराता ॥ अगै नाउ जाति न जाइसी मनमुखि दुखु खाता ॥ रसना हरि रसु न चखिओ फीका बोलाता ॥ जिना गुरमुखि अंम्रितु चाखिआ से जन त्रिपताता ॥ १५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सचा गहिर गंभीरु ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ

यदि प्रभु कृपा करे तो सच्चे गुरु से मेल होता है और मन स्थिर होकर प्रभु में समा जाता है। हे नानक, मन के माध्यम से ही मन को शान्ति मिलती है और फिर न कोई मरता है और न आता जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। यह शरीर एक विशाल किला है जो बड़े संयोग से ही प्राप्त होता है। इस काया में ही प्रभु स्वयं बसता है और स्वयं ही सब रसों को भोगता है। प्रभु स्वयं अतीत और अलिप्त बना रहता है और प्रभु रूपी योगी स्वयं किसी से भी संयुक्त नहीं बना रहता। जो उसे भाता है वह वही करता है और जो वह करता है उसे ही होना होता है। गुरमुख बनकर प्रभु का नाम सुमिरन करने से परमात्मा से वियोग की अवस्था समाप्त हो जाती है।। १३ ।। श्लोक महला ३ ।। प्रभु का प्रेम और यश वह स्वयं ही करवाता है और ऐसा सत्य रूप में शब्द-गुरु के माध्यम से ही होता है। उस परम आश्चर्य रूपी प्रभु को वाह वाह कहना ही उसका गुणानुवाद है परन्तु कोई बिरला ही गुरमुख बनकर इसे बूझता है। यह वाणी भी विस्मयकारक एवं सत्य है और यही सत्य प्रभु से भी मिला देती है। हे नानक, वाह-वाह करते हुए ही प्रभु को उसकी कृपा के फलस्वरूप प्राप्त किया जाता है।। १ ।। महला ३ ।। वाह-वाह करती हुई जीभ शब्द के माध्यम से सुन्दर लगती है। पूर्ण शब्द के माध्यम से प्रभु आ मिलता है और बड़े भाग्यशालियों के मुँह से ही वाह-वाह निकलता है। जो विस्मयपूर्ण होकर वाह-वाह करते हैं वे व्यक्ति सुन्दर हैं और उन्हीं की वन्दना करने के लिए लोक पहुँचते हैं। हे नानक, वाह-वाह की कृपा से ही व्यक्ति को सब कुछ प्राप्त होता है और वह प्रभु के सच्चे दरबार में शोभायमान बना रहता है।। २ ।। पउड़ी ।। इस काया रूपी किले में वज्र जैसे कठोर किवाड़ लगे हुए हैं और ये किवाड़ झूठ, धोखाधड़ी और अहंकार के हैं। भ्रमों में भूले हुए मनमुख अन्धे अज्ञानी को ये किवाड़ नज़र नहीं आते। कर्मकाण्डी उपायों से ये कभी भी नज़र नहीं आते क्योंकि इन्हें जानने के लिए अनेकों वेश धारण करने वाले अनेकों लोग थक चुके हैं। प्रभु के नाम के जाप और शब्द-गुरु के माध्यम से ये किवाड़ खुलते हैं। प्रभु ही वह अमृत रूपी वृक्ष है जिस अमृत का जो पान करता है वह तृप्त हो जाता है।। १४ ।। श्लोक महला ३ ।। वाह-वाह करते यह जीवन रूपी रात्रि सुखपूर्वक व्यतीत होती है। वाह-वाह करते हुए हे मेरी माँ सदा आनन्द बना रहता है। वाह-वाह करते हुए ही प्रभु के साथ लौ लगी रहती है। वाह-वाह प्रभु की कृपा से ही व्यक्ति बुलाया हुआ बोलता है। वाह-वाह करते हुए ही व्यक्ति शोभा प्राप्त करता है; हे नानक, वाह करते हुए अर्थात उसका सुमिरन करते हुए जीव उस प्रभु की रज़ा में लीन बना रहता है।। १ ।। महला ३ ।। वाह-वाह की वाणी ही वास्तव में सत्य है जिसे गुरमुख बनकर व्यक्ति खोज लेता है। वाह-वाह का उच्चारण शब्द के माध्यम से और पूर्ण हृदय से करना चाहिए। वाह-वाह करते हुए ही गुरमुख व्यक्ति उस प्रभु को ढूँढ कर सहज स्वाभाविक रूप से ही प्राप्त कर लेता है। हे नानक, ऐसे व्यक्ति भाग्यशाली हैं जिन्होंने प्रभु को अपने हृदय में संभाला हुआ है अर्थात जो उसे याद करते रहते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। यह मन अत्यन्त लोभी है और सदा लोभ में ही लीन बना रहता है। मन के प्रपंच और मन की तृष्णा अत्यन्त मोह लेने वाली है और यह व्यक्ति को दसों दिशाओं में भटकाती रहती है। उस लोक में अपना बड़ा नाम या तथाकथित बड़ी जाति की गणना नहीं होगी और मनमुख बने हुए व्यक्ति को उसके अपने ही दुख खा जाते हैं। मनमुख व्यक्ति की जीभ ने कभी भी हरि-रस को नहीं चखा और उसकी जीभ सदैव कड़वा ही बोलती रहती है। जिन्होंने गुरमुख बनकर अमृत रूपी नाम को चख लिया है वे व्यक्ति सदैव के लिए तृप्त हो जाते हैं।। १५ ।। श्लोक महला ३ ।। उस प्रभु को वाह-वाह कहकर उसका गुणानुवाद किया जाए जो सच्चा है, गहरा है और धैर्यवान है। उसी को वाह-वाह

जि गुणदाता मति धीरु ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सभ महि रहिआ समाइ ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि देदा रिजकु सबाहि ॥ नानक वाहु वाहु इको करि सालाहीऐ जि सतिगुर दीआ दिखाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु गुरमुख सदा करहि मनमुख मरहि बिखु खाइ ॥ ओना वाहु वाहु न भावई दुखे दुखि विहाइ ॥ गुरमुखि अंम्रितु पीवणा वाहु वाहु करहि लिव लाइ ॥ नानक वाहु वाहु करहि से जन निरमले त्रिभवण सोझी पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि कै भाणै गुरु मिलै सेवा भगति बनीजै ॥ हरि कै भाणै हरि मनि वसै सहजे रसु पीजै ॥ हरि कै भाणै सुखु पाईऐ हरि लाहा नित लीजै ॥ हरि कै तखति बहालीऐ निज घरि सदा वसीजै ॥ हरि का भाणा तिनी मंनिआ जिना गुरू मिलीजै ॥ १६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु से जन सदा करहि जिन्ह कउ आपे देइ बुझाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ ॥ वाहु वाहु गुरसिखु जो नित करे सो मनि चिंदिआ फलु पाइ ॥ वाहु वाहु करहि से जन सोहणे हरि तिन्ह कै संगि मिलाइ ॥ वाहु वाहु हिरदै उचरा मुखहु भी वाहु वाहु करेउ ॥ नानक वाहु वाहु जो करहि हउ तनु मनु तिन्ह कउ देउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु साहिबु सचु है अंम्रितु जा का नाउ ॥ जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ वाहु वाहु गुणी निधानु है जिस नो देइ सु खाइ ॥ वाहु वाहु जलि थलि भरपूरु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ वाहु वाहु गुरसिख नित सभ करहु गुर पूरे वाहु वाहु भावै ॥ नानक वाहु वाहु जो मनि चिति करे तिसु जम कंकरु नेड़ि न आवै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी ॥ सतिगुर ते सचु पछाणीऐ सचि सहजि समाणी ॥ अनदिनु जागहि ना सवहि जागत रैणि विहाणी ॥ गुरमती हरि रसु चाखिआ से पुंन पराणी ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ पचि मुए अजाणी ॥ १७ ॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥ वाहु वाहु वेपरवाहु है वाहु वाहु करे सु होइ ॥ वाहु वाहु अंम्रित नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ वाहु वाहु करमी

कहा जाता है जो प्रभु गुणों का दाता है और धैर्यमति वाला है। वाह-वाह उसको कहा जाए जो सबमें ही समाया हुआ है। वाह-वाह उसको कहा जाए जो सब को रोज़ी पहुँचाता है। हे नानक, वाह-वाह कहकर उस एक प्रभु का ही गुणानुवाद किया जाए जिसका दर्शन सच्चे गुरु ने करा दिया है।। १ ।। महला ३।। गुरमुख व्यक्ति सदैव आत्म विभोर होकर प्रभु को वाह-वाह कहते रहते हैं और मनमुख व्यक्ति माया के विष को खाकर मरते खपते रहते हैं। उन्हें प्रभु का विस्मयकारक रूप अच्छा नहीं लगता और उनकी आयु दुख ही दुख में गुज़रती है। गुरमुख व्यक्ति नाम-अमृत पीते हैं और प्रभु में लौ लगाकर उसका सुमिरन करते हैं। हे नानक जो व्यक्ति उस प्रभु के आश्चर्च स्वरूप को देखकर उसके प्रति विस्मय की भावना से भरे रहते हैं वे ही निर्मल व्यक्ति होते हैं और उन्हें ही तीनों लोकों की सूझ प्राप्त हो जाती है।। २ ।। पउड़ी ।। जब प्रभु को भाता है तभी गुरु से मिलाप होता है और तभी सेवा और भक्ति का अवसर प्राप्त होता है। प्रभु की रज़ा में चलने से प्रभु मन में बस जाता है और जीव सहज स्वाभाविक रूप से ही नाम-रस का पान करता है। प्रभु की रज़ा में ही सुख पाया जाता है ओर तभी सदैव लाभ के रूप में प्रभु प्राप्त होता है। ऐसे गुरमुख व्यक्ति प्रभु के दरबार में सिंहासन पर बिठाए जाते हैं अर्थात उनका सम्मान होता है और वे अपनी आत्मा में ही स्थिर होकर टिक जाते हैं। जिनका मिलाप गुरु से हो गया वे ही प्रभु के आदेश को प्रसन्नतापूर्वक मानते चले जाते हैं।। १६ ।। श्लोक महला ३ ।। वे व्यक्ति ही उसका गुणानुवाद करते हैं जिन्हें वे स्वयं समझा देता है। प्रभु का सुमिरन करते हुए मन निर्मल हो जाता है और अन्तर्मन का अहंकार चला जाता है। गुरु का सिक्ख जो सदैव सुमिरन करता है वह मनोवांछित फल पा जाता है। प्रभु का सुमिरन करने वाले व्यक्ति सौन्दर्य वाले हो जाते है; हे प्रभु, मुझे ऐसे व्यक्तियों से मिला दे। मैं हृदय से और मुँह से उस प्रभु का सुमिरन करूँ और हे नानक, जो उस प्रभु का सुमिरन करते हैं मैं अपना तन, मन उनके सम्मुख अर्पण कर दूँ।। १ ।। महला ३ ।। वह महान साहिब प्रभु सत्य स्वरूप है और उसका नाम अमर कर देने वाला फल है। जिन्होंने उसका सुमिरन किया उन्हें वह फल प्राप्त होता है और मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। प्रभु का सुमिरन सभी गुणों का भण्डार है और इसे वही चखता है जिसको वह प्रभु स्वयं देता है। वह विस्मय स्वरूप प्रभु जल, स्थल अर्थात सब ओर व्याप्त है और गुरमुख बनकर ही उसे पाया जाता है। सभी गुरु के सिक्ख सदैव उसका सुमिरन करते हैं और पूर्ण गुरु को विस्मय भाव से भरे जाना ही अच्छा लगता है। हे नानक, जो मन और चित्त के साथ उस प्रभु का सुमिरन करता है यमदूत उसके पास भी नहीं आता।। २ ।। पउड़ी ।। सच्चा परमात्मा सत्य स्वरूप है और गुरु की वाणी भी सच्ची है। सच्चे गुरु के माध्यम से ही सत्य की पहचान होती है और सत्य के माध्यम से ही सहजभाव में लीन हुआ जाता है। ऐसे व्यक्ति सदैव जाग्रत (मानसिक रूप से चेतन) अवस्था में बने रहते है; वे लापरवाह नहीं बनते और चेतन बने हुए उनकी जीवन रूपी रात्रि व्यतीत होती है। जिन्होंने गुरमत के माध्यम से हरि रस को चख लिया है ऐसे प्राणी उत्तम हैं। गुरु के बिना कोई भी उस प्रभु को नहीं पा सका है और अनजान लोग उलझ उलझ के ही मर मिट जाते हैं।। १७ ।। श्लोक महला ३ ।। विस्मय और आनन्दपूर्णता उस निराकार प्रभु की वाणी है और उसके जितना महान अन्य कोई नहीं है। प्रभु की वाणी अगम्य एवं अथाह है और यह विस्मयपूर्णता ही सत्य प्रभु का प्रत्यक्ष रूप है। वह प्रभु बेपरवाह है और जो उस प्रभु का सुमिरन करता है उसे भी किसी की परवाह करने की ज़रूरत नहीं रहती। प्रभु का अमृत-नाम विस्मय (विस्माद्) को उत्पन्न करने वाला है जिसे कोई गुरमुख ही प्राप्त करता है। अच्छे भाग्य से ही प्रभु का सुमिरन प्राप्त होता है और वह स्वयं ही दया

पाईऐ आपि दइआ करि देइ ॥ नानक वाहु वाहु गुरमुखि पाईऐ अनदिनु नामु लएइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे साति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमै न पाइआ जाइ ॥ जिन्हा अंतरि लोभ विकारु है दूजे भाइ खुआइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ जिन्हा सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि ॥ तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ढाढी तिस नो आखीऐ जि खसमै धरे पिआरु ॥ दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ॥ ढाढी दरु घरु पाइसी सचु रखै उर धारि ॥ ढाढी का महलु अगला हरि कै नाइ पिआरि ॥ ढाढी की सेवा चाकरी हरि जपि हरि निसतारि ॥ १८ ॥ सलोकु मः ३ ॥ गूजरी जाति गवारि जा सहु पाए आपणा ॥ गुर कै सबदि वीचारि अनदिनु हरि जपु जापणा ॥ जिसु सतिगुरु मिलै तिसु भउ पवै सा कुलवंती नारि ॥ सा हुकमु पछाणै कंत का जिस नो क्रिपा कीती करतारि ॥ ओह कुचजी कुलखणी परहरि छोडी भतारि ॥ भै पइऐ मलु कटीऐ निरमल होवै सरीरु ॥ अंतरि परगासु मति ऊतम होवै हरि जपि गुणी गहीरु ॥ भै विचि बैसै भै रहै भै विचि कमावै कार ॥ ऐथै सुखु वडिआईआ दरगह मोख दुआर ॥ भै ते निरभउ पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ नानक खसमै भावै सा भली जिस नो आपे बखसे करतारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सदा सदा सालाहीऐ सचे कउ बलि जाउ ॥ नानक एकु छोडि दूजै लगै सा जिहवा जलि जाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंसा अउतारु उपाइओनु भाउ दूजा कीआ ॥ जिउ राजे राजु कमावदे दुख सुख भिड़ीआ ॥ ईसरु ब्रहमा सेवदे अंतु तिन्ही न लहीआ ॥ निरभउ निरंकारु अलखु है गुरमुखि प्रगटीआ ॥ तिथै सोगु विजोगु न विआपई असथिरु जगि थीआ ॥ १९ ॥ सलोकु मः ३ ॥ एहु सभु किछु आवण जाणु है जेता है आकारु ॥ जिनि एहु लेखा लिखिआ सो होआ परवाणु ॥ नानक जे को आपु गणाइदा सो मूरखु गावारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा जह खिंचे तह जाइ ॥ नानक हसती कुंडे बाहरा फिरि फिरि उझड़ि पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसु आगै

करके देता है। हे नानक, गुरमुख बनने पर ही वाह-वाह रूपी आश्चर्य भाव प्राप्त होता है और व्यक्ति सदैव उस प्रभु का नाम ही जपता है।। १ ।। महला ३ ।। सच्चे गुरु की सेवा किए बिना शान्ति नहीं आती और द्वैत-भावना नहीं जाती। बेशक जितना मर्जी ज़ोर लगाया जाए, बिना उस प्रभु की कृपा के वह प्राप्त नहीं होता। जिनके अन्तर्मन में लोभ रूपी विकार हैं वे माया के द्वैतभाव में भटकते रहते हैं। उनका जन्म-मरण चुकता नहीं और अपने अहंकार में ही वे दुख पाते रहते हैं। जिन्होंने सच्चे गुरु में अपना मन लगा लिया उन्हें किसी प्रकार की भी कमी नहीं आती। यम उनसे लेखा नहीं माँगता और उन्हें दुख भी नहीं सहना पड़ता। हे नानक, सत्य शब्द में लीन होकर गुरमुख व्यक्ति का उद्धार हो जाता है।। २ ।। पउड़ी।। गुणानुवाद करने वाला सेवक उसे कहा जाता है जो अपने मालिक के साथ प्यार करता है। वह गुरु के उपदेश का चिन्तन करता है और परमात्मा के द्वार पर खड़ा होकर उसकी सेवा करता है। ऐसा गायक सेवक सत्य को हृदय में धारण किए रहता है और उसे ही प्रभु के महल में स्थान प्राप्त होता है। ऐसे गुणानुवादी सेवक की पदवी ऊँची होती है क्योंकि उसकी प्रभु के नाम के साथ प्रीति होती है। ऐसे गुणानुवाद करने वाले सेवक की यही चाकरी है कि वह प्रभु की सेवा करता है और प्रभु नाम सुमिरन से प्रभु उसका उद्धार कर देता है।। १८ ।। श्लोक मः ३ ।। गँवार व्यक्ति तो तथाकथित नीच जाति की स्त्री के समान है, परन्तु जब उसे अपना पति मिल जाए तो शब्द-गुरु के माध्यम से वह सदैव प्रभु का सुमिरन करती रहती है। जिसे सच्चा गुरु मिल जाता है उसी के मन में प्रभु-सम्मान और प्रेम पैदा होता है तथा वही स्त्री कुलीन बन जाती है। जिस पर प्रभु ने कृपा की होती है वही परमात्मा रूपी स्त्री पति के हुकुम को पहचान लेती है। जिसको पति ने त्याग दिया है वह स्त्री मूर्ख और बुरे लक्ष्णों वाली होती है। उस प्रभु के संयम में रहने से मन की मैल कट जाती है और शरीर निर्मल हो जाता है। अन्तर्मन में प्रकाश उत्पन्न हो जाता है, व्यक्ति की मति उत्तम हो जाती है और प्रभु के सुमिरन से व्यक्ति गुणों का भण्डार हो जाता है। परमात्मा के भय में व्यक्ति बैठे, भय में ही स्थित बना रहे और उसके भय में ही यदि वह कार्यशील बना रहे तो उसे इस लोक में सुख और बड़प्पन प्राप्त होता है तथा प्रभु के दरबार में मुक्ति प्राप्त होती है। प्रभु के भय में रहने से व्यक्ति निर्भय हो प्रभु को प्राप्त कर लेता है और उसकी ज्योति उस अपार प्रभु की ज्योति में मिल जाती है। हे नानक, वही जीव-स्त्री भली है जो मालिक रूपी प्रभु को अच्छी लगती है और जिस पर कर्ता प्रभु स्वयं कृपा करता है।। १ ।। महला ३ ।। सदैव उस प्रभु का गुणानुवाद करो और उस सच्चे पर बलिहारी जाना चाहिए। हे नानक, ऐसी जीभ जल कर नष्ट हो जाए जो एक प्रभु को छोड़कर अन्य दूसरे का गुणानुवाद करती है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु ने अंशावतारों की रचना की और द्वैतभाव को पैदा किया। ये अवतार भी माया मोह में लगकर राजाओं की तरह राज करने लगे और दुख सुख के लिए लड़ने जूझने लगे। लोग शिव और ब्रह्मा की वन्दना करते हैं परन्तु इन्होंने भी परमात्मा के ओर छोर को नहीं जाना है। वह परमात्मा निर्भय, निराकार और अदृष्ट है जो गुरमुख बनकर ही प्रत्यक्ष होता है। गुरमुख एक ऐसी अवस्था है जहाँ शोक, वियोग आदि का प्रभाव नहीं रहता और यह संसार सदैव बना रहने वाला दिखाई नहीं देता।।१९।। श्लोक महला ३।। आकार रूप जितनी भी रचना है वह सब चलायमान है। जिस व्यक्ति ने इस हिसाब को समझ लिया है वही व्यक्ति आगे स्वीकृत होता है। हे नानक, जो अपने आप को बड़ा मानता है वही व्यक्ति मूर्ख और गँवार होता है।।१।। महला ३।। व्यक्ति का मन हाथी है, गुरु महावत है, ज्ञान अंकुश है, गुरु जहाँ भी ले जाए मन वहीं जाता है। हे नानक, मन रूपी हाथी जो ज्ञान के अंकुश से विहीन है वह बार-बार कुमार्ग पर चला जाता है।।२।। पउड़ी।। मेरी अरदास

अरदासि जिनि उपाइआ ॥ सतिगुरु अपणा सेवि सभ फल पाइआ ॥ अंम्रित हरि का नाउ सदा धिआइआ ॥ संत जना कै संगि दुखु मिटाइआ ॥ नानक भए अचिंतु हरि धनु निहचलाइआ ॥ २० ॥ सलोक मः ३ ॥ खेति मिआला उचीआ घरु उचा निरणउ ॥ महल भगती घरि सरै सजण पाहुणिअउ ॥ बरसना त बरसु घना बहुड़ि बरसहि काहि ॥ नानक तिन्ह बलिहारणै जिन्ह गुरमुखि पाइआ मन माहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मिठा सो जो भावदा सजणु सो जि रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा सांई ॥ तू रखवाला सदा सदा हउ तुधु धिआई ॥ जीअ जंत सभि तेरिआ तू रहिआ समाई ॥ जो दास तेरे की निंदा करे तिसु मारि पचाई ॥ चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई ॥ २१ ॥ सलोक मः ३ ॥ आसा करता जगु मुआ आसा मरै न जाइ ॥ नानक आसा पूरीआ सचे सिउ चितु लाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आसा मनसा मरि जाइसी जिनि कीती सो लै जाइ ॥ नानक निहचलु को नही बाझहु हरि कै नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइओनु करि पूरा थाटु ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु ॥ आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु ॥ जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख काटु ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु

रागु गूजरी वार महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः ५ ॥ अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥ नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥ सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥ कहु नानक किरपा करे जिस नो एह वथु देइ ॥ जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥ गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥ होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥ साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥ साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥

उसी प्रभु के सामने है जिसने सब कुछ उत्पन्न किया है। मैंने अपने सच्चे गुरु का सुमिरन करके सभी फल पा लिए हैं। प्रभु के अमृत रूपी नाम का मैंने सदैव सुमिरन किया है और शान्त पुरुषों की संगत में अपना दुख मिटा दिया है। हे नानक, अब मैं चिन्ता मुक्त हो गया हूँ क्योंकि प्रभु का नाम रूपी धन ऐसा है जो सदैव स्थित बना रहता है।। २० ।। श्लोक महला ३ ।। ऊँचे बादलों को देखकर किसान खेतों की मेंढ को ऊँचा कर देता है ताकि पानी बाहर न जा सके। उसी प्रकार जब जीव-स्त्री का साजन उसके हृदय में आ बैठता है तो भक्ति के घेरे के कारण वह फिर हृदय रूपी घर में मेहमान बना रहता है। हे मेघ रूपी सच्चे गुरु, यदि प्रभु-नाम की वर्षा करनी है तो अभी कर लो अन्यथा आयु के व्यतीत हो जाने पर फिर भला बरसने का क्या लाभ। हे नानक, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु को अपने हृदय में ही पा लिया है।। १ ।। महला ३ ।। जो स्वादिष्ट लगता है वही मीठा होता है और सज्जन मित्र वही है जो सच्चा और काम आने वाला है। हे नानक, गुरमुख बनकर ही उसको जाना जाता है और इस तथ्य को वही जानता है जिस पर प्रभु स्वयं कृपा करे।। २ ।। पउड़ी ।। इस सेवक की प्रभु के पास विनती है कि हे प्रभु, तू ही सच्चा मालिक है। तू ही सदैव रक्षा करने वाला है और मैं तेरा ही सुमिरन करता हूँ। ये जितने भी जीव-जन्तु हैं ये सब तेरे ही हैं और तू ही इनमें समाया हुआ है। जो तेरे सेवक की निन्दा करता है तू उसे मारकर नष्ट कर देता है। हे नानक, तू चिन्ता को छोड़कर उस प्रभु के चरणों में लगकर निश्चिंत हो जा।। २१ ।। श्लोक महला ३ ।। इच्छाएं और आशाएं करता हुआ संसार स्वयं तो मर खप जाता है परन्तु इच्छाएं नहीं मरती। हे नानक, सच्चे प्रभु के साथ मन लगाने से ही आशाएं पूरी होती हैं।। १ ।। महला ३ ।। इच्छाएं और आशाएं मर जाएंगी क्योंकि इन्हें जिस प्रभु ने पैदा किया है वह इनका नाश कर देगा। हे नानक, प्रभु के नाम के बिना अन्य कुछ भी यहाँ अटल नहीं है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु ने स्वयं ही पूरे ठाठ और साजो-सामान के साथ इस संसार को उत्पन्न किया है। वह प्रभु स्वयं ही साहूकार है, स्वयं ही व्यापारी है और स्वयं ही हाट बाज़ार है। प्रभु स्वयं ही सागर है, स्वयं ही जहाज है और स्वयं ही पार उतारने वाला केवट है। वह स्वयं ही गुरु है स्वयं ही चेला है और वह स्वयं ही जीव को उसके जीवन का उद्देश्य, उसका मूल ठिकाना बताने वाला है। हे दास नानक, तू उस प्रभु के नाम का सुमिरन कर क्योंकि वही सब पापों को काटने वाला है।। २ ।। १ ।। शुद्ध ।।

रागु गूजरी वार महला ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्लोक महला ५ ।। अन्तर्मन में गुरु को याद करना चाहिए और जीभ से परम गुरु के नाम का जाप करना चाहिए। नेत्रों से सच्चे गुरु का दर्शन करना चाहिए और कानों से गुरु के नाम को सुनना चाहिए। सच्चे गुरु में लीन होकर प्रभु के द्वार में स्थान प्राप्त होता है। नानक का कथन है कि जिस पर प्रभु कृपा करता है उसे यह मूल्यवान वस्तु प्राप्त होती है और इस संसार में बिरले ही लोग होते हैं जो उत्तम व्यक्ति के तौर पर जाने जाते है।।१।। महला५।। रक्षक प्रभु ने रक्षा की और स्वयं ही हमें बचा लिया। गुरु के चरणों में लगने से सभी कार्य सँवर गए। वह मुझ पर दयालु हुआ क्योंकि मैंने मन से उसे विस्मृत नहीं किया है। साधु पुरुषों की संगत में उसने संसार सागर से पार उतार दिया और प्रभु से टूटे हुए निन्दकों तथा दुष्टों को क्षण-भर में नष्ट कर दिया। हे नानक, इस प्रकार के मालिक की टेक मेरे मन में बनी हुई है कि

जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अकुल निरंजन पुरखु अगमु अपारीऐ ॥ सचो सचा सचु सचु निहारीऐ ॥ कूड़ु न जापै किछु तेरी धारीऐ ॥ सभसै दे दातारु जेत उपारीऐ ॥ इकतु सूति परोइ जोति संजारीऐ ॥ हुकमे भवजल मंझि हुकमे तारीऐ ॥ प्रभ जीउ तुधु धिआए सोइ जिसु भागु मथारीऐ ॥ तेरी गति मिति लखी न जाइ हउ तुधु बलिहारीऐ ॥ १ ॥ सलोकु मः ५ ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान अचिंतु वसहि मन माहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान नउ निधि घर महि पाहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान ता गुर का मंत्रु कमाहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान ता नानक सचि समाहि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ किती बैहन्हि बैहणे मुचु वजाइनि वज ॥ नानक सचे नाम विणु किसै न रहीआ लज ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु धिआइन्हि बेद कतेबा सणु खड़े ॥ गणती गणी न जाइ तेरै दरि पड़े ॥ ब्रहमे तुधु धिआइन्हि इंद्र इंद्रासणा ॥ संकर बिसन अवतार हरि जसु मुखि भणा ॥ पीर पिकाबर सेख मसाइक अउलीए ॥ ओति पोति निरंकार घटि घटि मउलीए ॥ कूड़हु करे विणासु धरमे तगीऐ ॥ जितु जितु लाइहि आपि तितु तितु लगीऐ ॥ २ ॥ सलोकु मः ५ ॥ चंगिआईं आलकु करे बुरिआईं होइ सेरु ॥ नानक अजु कलि आवसी गाफल फाही पेरु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ कितीआ कुढंग गुझा थीऐ न हितु ॥ नानक तै सहि ढकिआ मन महि सचा मितु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ मागउ तुझै दइआल करि दासा गोलिआ ॥ नउ निधि पाई राजु जीवा बोलिआ ॥ अंम्रित नामु निधानु दासा घरि घणा ॥ तिन कै संगि निहालु स्रवणी जसु सुणा ॥ कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ ॥ पखा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ ॥ आपहु कछू न होइ प्रभ नदरि निहालीऐ ॥ मोहि निरगुण दिचै थाउ संत धरम सालीऐ ॥ ३ ॥ सलोक मः ५ ॥ साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पतित पुनीत असंख होहि हरि चरणी मनु लाग ॥ अठसठि तीरथ नामु प्रभ जिसु नानक मसतकि भाग ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नित जपीऐ सासि गिरासि नाउ परवदिगार दा ॥ जिस नो करे रहंम तिसु न विसारदा ॥ आपि उपावणहार

उस मालिक का सुमिरन करने से सुख प्राप्त होता है और सभी दुख भाग खड़े होते हैं।। २ ।। पउड़ी।। कुलातीत माया से अलेप बलशाली प्रभु अगम्य और अनन्त है। वह सच्चा प्रभु सत्य स्वरूप है और उसे सत्य रूप होकर ही देखा जाता है। तेरी धारण की हुई सृष्टि में हे प्रभु, कुछ भी झूठा नहीं लगता। हे प्रभु, जितनी भी सृष्टि तूने पैदा की हुई है तू उस सब को देने वाला दाता है। सब को एक सूत्र में ही पिरोकर तूने सब में अपनी ज्योति का संचार किया हुआ है। तेरे हुकम में ही सृष्टि के जीव भवसागर में बीचों बीच डूबते हैं और तेरे हुकम के अन्तर्गत ही उनका उद्धार होता है। हे प्रभु, वही तेरा सुमिरन करता है जिसके माथे पर भाग्य लेख लिखा होता है। तेरे ओर छोर और शक्ति को जाना नहीं जा सकता इसीलिए हे प्रभु, मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। श्लोक महला ५ ।। हे कृपालु प्रभु, यदि तुम प्रसन्न हो जाओ तो तुम किसी प्रयत्न के बिना ही मन में स्वतः ही आ बसते हो। यदि तुम प्रसन्न हो जाओ तो घर में नवनिधियां प्राप्त हो जाती हैं। यदि तुम प्रसन्न हो जाओ तो व्यक्ति गुरु के उपदेश के अनुरूप आचरण बनाता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, यदि तुम कृपालु हो जाओ तो व्यक्ति सत्य में लीन हो जाता है।। १ ।। महला ५ ।। अनेकों ही बैठने लायक अच्छे स्थानों पर बैठते हैं और ऊँचे स्वर में अपने नाम के बाजे बजाते हैं परन्तु हे नानक, सच्चे नाम के बिना किसी के सम्मान की भी रक्षा नही होती।। २ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, वेद और कतेब साथ-साथ खड़े हुए तेरी आराधना करते हैं और तेरे द्वार पर पड़े हुओं की तो गिनती ही नहीं की जा सकती। इन्द्र इन्द्रासन पर बैठे हुए तथा ब्रह्मा भी तेरा सुमिरन करता है। शिव, विष्णु आदि के अवतार भी अपने मुख से हरि-यश का गायन करते हैं। पीर-पैगम्बर और अनेकों शेख औलिया उस एक निराकार प्रभु में लीन होकर हृदय में खिले रहते हैं। झूठ हमें टुकड़े-टुकड़े करके विनष्ट करता है तथा धर्म सूत्र बनकर व्यक्ति को जोड़ता है। हे प्रभु, जिस कार्य में भी तू हमें लगाता है हम लोग उसी में ही लगे रहते हैं।। २ ।। श्लोक महला ५ ।। व्यक्ति अच्छे काम के लिए तो आलस्य करता है परन्तु बुरा काम करने के लिए सदैव शेर बना रहता है। हे नानक, आज या कल मौत को आना ही है और तुझ लापरवाह के पैरों में उसका फन्दा पड़ ही जाएगा।। १ ।। महला ५ ।। बेशक हम कितनी ही हेराफेरियां करें लेकिन अपना स्वार्थी हित छुपा नही रहता। हे नानक, उस सच्चे मित्र प्रभु ने ही मेरे मन में बसकर मेरे अवगुणों को ढका हुआ है।। २ ।। पउड़ी ।। हे दयालु प्रभु, मैं तुझसे यही माँगता हूँ कि मुझे अपने सेवकों का दास बना ले। तुझसे ही मैंने नवनिधियों का राज प्राप्त किया है और तेरे यश गायन के साथ ही मैं जीवित बना हुआ हूँ। खुशियों का घर अमृत रूपी नाम है जो प्रभु के सेवकों के पास बहुत है। कानों से प्रभु का यश सुनते हुए मैं प्रभु के सेवकों के साथ ही प्रसन्नतापूर्वक स्थित बना हुआ हूँ। मैं उनकी सेवा करता हूँ जिससे मेरा शरीर पवित्र होता है। उनके लिए पंखा डुलाकर, पानी लाकर, अनाज पीसकर और उनके चरण धोकर मैं प्रफुल्लित बना रहता हूँ। हे प्रभु, तुम अपनी कृपादृष्टि से मुझे धन्य कर दो क्योंकि मुझ से तो कुछ भी नहीं होगा। मुझ गुणविहीन को शान्त पुरुषों के धर्म आचरण के स्थान पर रहने का स्थान प्रदान करो।। ३ ।। श्लोक महला ५ ।। हे साजन प्रभु, मैं सदैव तेरे चरणों की धूलि बना रहूँ। नानक का कथन है कि हे प्रभु, मैं तेरी शरण में पड़ा रहूँ और सदैव तुझे सामने देखता रहूँ।। १ ।। महला ५ ।। प्रभु के चरणों में मन को लगाकर असंख्य पतित लोग पवित्र हो जाते हैं। प्रभु का नाम अड़सठ तीर्थो के बराबर है और प्रभु उसी को मिलता है जिसके माथे पर भाग्य लेख लिखे होते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। उस परवरदिगार प्रभु का नाम हर श्वास और ग्रास के साथ सदैव जपना चाहिए। जिस पर वह करुणा करता है उसको वह कभी भी भुलाता नहीं। वह प्रभु स्वयं ही जीवों को उत्पन्न करने वाला है

आपे ही मारदा ॥ सभु किछु जाणै जाणु बुझि वीचारदा ॥ अनिक रूप खिन माहि कुदरति धारदा ॥ जिस नो लाए सचि तिसहि उधारदा ॥ जिस दै होवै वलि सु कदे न हारदा ॥ सदा अभगु दीबाणु है हउ तिसु नमसकारदा ॥ ४ ॥ सलोक मः ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु छोडीऐ दीजै अगनि जलाइ ॥ जीवदिआ नित जापीऐ नानक साचा नाउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सिमरत सिमरत प्रभु आपणा सभ फल पाए आहि ॥ नानक नामु अराधिआ गुर पूरै दीआ मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ ॥ तिस की गई बलाइ मिटे अंदेसिआ ॥ तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ ॥ जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइ ॥ अंम्रितु साचा नाउ ओथै जापीऐ ॥ मन कउ होइ संतोखु भुखा ध्रापीऐ ॥ जिसु घटि वसिआ नाउ तिसु बंधन काटीऐ ॥ गुर परसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीऐ ॥ ५ ॥ सलोक मः ५ ॥ मन महि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि नीत ॥ हरि कीरतन का आहरो हरि देहु नानक के मीत ॥ १ ॥ मः ५ ॥ द्रिसटि धारि प्रभि राखिआ मनु तनु रता मूलि ॥ नानक जो प्रभ भाणीआ मरउ विचारी सूलि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥ छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥ पूजहु गुर के पैर दुरमति जाइ जरि ॥ साध जना कै संगि भवजलु बिखमु तरि ॥ सेवहु सतिगुर देव अगै न मरहु डरि ॥ खिन महि करे निहालु ऊणे सुभर भरि ॥ मन कउ होइ संतोखु धिआईऐ सदा हरि ॥ सो लगा सतिगुर सेव जा कउ करमु धुरि ॥ ६ ॥ सलोक मः ५ ॥ लगड़ी सुथानि जोड़णहारै जोड़ीआ ॥ नानक लहरी लख सै आन डुबण देइ न मा पिरी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ बनि भीहावलै हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि नामा ॥ बलि बलि जाई संत पिआरे नानक पूरन कामां ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पाईअनि सभि निधान तेरै रंगि रतिआ ॥ न होवी पछोताउ तुध नो जपतिआ ॥ पहुचि न सकै कोइ तेरी टेक जन ॥ गुर पूरे वाहु वाहु सुख लहा चितारि मन ॥ गुर पहि सिफति भंडारु करमी पाईऐ ॥ सतिगुर नदरि निहाल बहुड़ि न धाईऐ ॥ रखै आपि दइआलु करि दासा आपणे ॥ हरि

और स्वयं ही उनका संहार करने वाला है। वह सब कुछ जानने वाला प्रभु सब कुछ जानता है और सब कुछ जानकर उसको समझ कर उस पर विचार करता रहता है। वह अपनी शक्ति के बल पर ही क्षण भर में अनेकों रूप धारण कर लेता है। जिसे वह सत्य की ओर प्रेरित कर देता है उसी का वह उद्धार भी कर देता है। जिसके पक्ष में प्रभु हो जाए वह कभी भी हारता नहीं। उस प्रभु का दरबार सदैव अटल है। मैं उसे प्रणाम करता हूँ।। ४ ।। श्लोक महला ५ ।। काम, क्रोध, लोभ इत्यादि को छोड़कर उन्हें आग में जला देना चाहिए। हे नानक, जीवित बने रहकर सदैव उस प्रभु के सच्चे नाम का सुमिरन करना चाहिए।। १ ।। महला ५ ।। प्रभु का सुमिरन करते हुए मैंने सभी फल पा लिए हैं। नानक ने प्रभु के नाम का सुमिरन किया और पूर्ण गुरु ने उसे प्रभु से मिला दिया है।। २ ।। पउड़ी ।। जिसे गुरु ने सद्जीवन का उपदेश दे दिया है संसार में वही मुक्त व्यक्ति है। उस व्यक्ति की सभी विपत्तियां समाप्त हो जाती हैं और उसके सभी भय नष्ट हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति का दर्शन करके सारा संसार आनन्दित हो जाता है। ऐसे प्रभु के सेवक की संगति में व्यक्ति विभोर हो जाता है और उसके पापों की मैल धुल जाती है। प्रभु के सेवकों के साथ सच्चे अमृत रूपी नाम की प्राप्ति होती है, मन संतोष से भर जाता है और भूख मिट जाती है। जिसके मन में प्रभु के नाम का वास हो गया उसके बन्धन कट जाते हैं। गुरु की कृपा से कोई बिरला ही प्रभु-नाम रूपी धन को प्राप्त करता है।। ५ ।। श्लोक महला ५ ।। मैं यह मन में सोचता ही रहता हूँ कि नित्य प्रातःकाल उठकर कुछ प्रयत्न करूँ। हे मित्र रूपी मेरे प्रभु, मुझे प्रभु के गुणानुवाद का शौक और कार्य दे दो।। १ ।। महला ५ ।। प्रभु ने कृपादृष्टि करके मुझे बचा लिया और वास्तव में मेरा मन और तन उसके प्रेम में रंगा गया है। हे नानक, जो जीवात्माएं प्रभु को भा जाती हैं उनके हृदय की पीड़ा समाप्त हो जाती है।। २ ।। पउड़ी ।। हे जीव, तेरे हृदय में जो भी व्यथा है तू उसे दूर करने के लिए गुरु के सामने अरदास कर। तू अपनी सभी चतुराईयों को छोड़कर अपना मन तन उसके आगे अर्पण कर दे। गुरु की चरण वन्दना कर, तेरी दुर्मति कर नाश हो जाएगा। साधु पुरुषों के साथ बना रहकर तू इस विषम भवसागर को पार कर। सच्चे गुरु रूपी प्रभु की यदि तू सेवा करेगा तो परलोक में भी तुझे मरने का भय नही लगेगा। वह प्रभु क्षण भर में जल विहीनों को भर देता है और उन्हें आनन्दित कर देता है। सदैव प्रभु की आराधना करने से मन संतुष्ट बना रहता है। वही प्राणी सच्चे गुरु की सेवा में लगता है जिस पर प्रभु की शुरु से ही कृपा होती है।। ६ ।। श्लोक महला ५ ।। मेरी प्रीति अच्छे स्थान अर्थात हरि-चरणों में लगी है और उस लगाने वाले प्रभु ने यह प्रीति स्वयं लगाई है। हे नानक, इस संसार सागर में लाखों लहरें हैं परन्तु मेरा प्रियतम प्रभु मुझे डूबने नहीं देता।। १ ।। महला ५।। इस संसार रूपी भयानक जंगल में दुख हरने वाला प्रभु-नाम रूपी एक साथी मुझे मिल गया है। हे नानक, मैं उस प्यारे शान्त पुरुष रूपी प्रभु पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ जो सभी कामनाओं को पूरा करने वाला है।। २ ।। पउड़ी ।। तेरे प्रेम के रंग में लीन होकर सभी खज़ाने पा लिए जाते हैं और तेरा सुमिरन करते हुए कभी भी पछतावा नहीं होता। तेरे सेवकों को तेरा ही आसरा है और उन तक कोई भी बुरा व्यक्ति पहुँच नहीं पाता। मेरा पूर्ण गुरु धन्य है; उसे मन में याद करके मैं सुखी बना रहता हूँ। गुरु के पास ही प्रभु गुणानुवाद का भण्डार है जिसे बड़े भाग्य सेही पाया जाता है। यदि सच्चा गुरु कृपादृष्टि से देखकर आनन्द प्रदान कर दे तो फिर इधर उधर भटका नहीं जाता। प्रभु दयालु होकर अपने सेवकों की रक्षा करता है।

हरि हरि हरि नामु जीवा सुणि सुणे ॥ ७ ॥ सलोक मः ५ ॥ प्रेम पटोला तै सहि दिता ढकण कू पति मेरी ॥ दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ तैडै सिमरणि हभु किछु लधमु बिखमु न डिठमु कोई ॥ जिसु पति रखै सचा साहिबु नानक मेटि न सकै कोई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ होवै सुखु घणा दयि धिआइऐ ॥ वंञै रोगा घाणि हरि गुण गाइऐ ॥ अंदरि वरतै ठाढि प्रभि चिति आइऐ ॥ पूरन होवै आस नाइ मंनि वसाइऐ ॥ कोइ न लगै बिघनु आपु गवाइऐ ॥ गिआन पदारथु मति गुर ते पाइऐ ॥ तिनि पाए सभे थोक जिसु आपि दिवाइऐ ॥ तूं सभना का खसमु सभ तेरी छाइऐ ॥ ८ ॥ सलोक मः ५ ॥ नदी तरंदड़ी मैडा खोजु न खुंभै मंझि मुहबति तेरी ॥ तउ सह चरणी मैडा हीअड़ा सीतमु हरि नानक तुलहा बेड़ी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई ॥ हउ ढूढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले केई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आवै साहिबु चिति तेरिआ भगता डिठिआ ॥ मन की कटीऐ मैलु साधसंगि वुठिआ ॥ जनम मरण भउ कटीऐ जन का सबदु जपि ॥ बंधन खोलन्हि संत दूत सभि जाहि छपि ॥ तिसु सिउ लाइन्हि रंगु जिस दी सभ धारीआ ॥ ऊची हूं ऊचा थानु अगम अपारीआ ॥ रैणि दिनसु कर जोड़ि सासि सासि धिआईऐ ॥ जा आपे होइ दइआलु तां भगत संगु पाईऐ ॥ ९ ॥ सलोक मः ५ ॥ बारि विडानड़ै हुंमस धुंमस कूका पईआ राही ॥ तउ सह सेती लगड़ी डोरी नानक अनद सेती बनु गाही ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सची बैसक तिन्हा संगि जिन संगि जपीऐ नाउ ॥ तिन्ह संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सा वेला परवाणु जितु सतिगुरु भेटिआ ॥ होआ साधू संगु फिरि दूख न तेटिआ ॥ पाइआ निहचलु थानु फिरि गरभि न लेटिआ ॥ नदरी आइआ इकु सगल ब्रहमेटिआ ॥ ततु गिआनु लाइ धिआनु द्रिसटि समेटिआ ॥ सभो जपीऐ जापु जि मुखहु बोलेटिआ ॥ हुकमे बुझि निहालु सुखि सुखेटिआ ॥ परखि खजानै पाए से बहुड़ि न खोटिआ ॥ १० ॥ सलोकु मः ५ ॥ विछोहे जंबूर खवे न वंञनि गाखड़े ॥ जे सो धणी मिलंनि नानक सुख संबूह सचु ॥ १ ॥

उस प्रभु का नाम ही बार बार सुनकर मैं जीवित बना रहता हूँ।। ७ ।। श्लोक महला ५ ।। हे मेरे मालिक प्रभु, तूने अपने प्रेम का वस्त्र मुझे अपनी इज्ज़त को ढकने के लिए दिया है। मेरा मालिक सब कुछ जानने और देखने वाला है परन्तु हे नानक, मैं तेरी कीमत नहीं जानता।। १ ।। महला ५ ।। तेरे सुमिरन से ही हे प्रभु, मुझे सब कुछ मिल गया है और मैंने किसी प्रकार की भी कठिनाई अब नहीं देखी है। वह सच्चा प्रभु जिसकी स्वयं लाज रखता है हे नानक, उसे कोई भी नहीं मिटा सकता।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु का सुमिरन करने से गहन सुख की अनुभूति होती है और प्रभु के गुणानुवाद के फलस्वरूप ही रोगों का समूह भाग खड़ा होता है। मन में प्रभु आ बसने पर व्यक्ति के अन्दर शान्ति व्याप्त हो जाती है। प्रभु के नाम को मन में बसाने से व्यक्ति की आशा पूरी हो जाती है। व्यक्ति का अहंकार भी समाप्त हो जाता है और उसे कोई भी विघ्न अब नहीं लगता। ज्ञान रूपी पदार्थ वाली बुद्धि का धन गुरु से ही प्राप्त होता है और जिसे वह प्रभु स्वयं दिलाता है उसे सभी पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं। हे प्रभु, तू सबका मालिक है और सब तेरी ही छाया में (फल फूल रहे) हैं।। ८ ।। श्लोक महला ५ ।। हे प्रभु, तुझ से गहरा प्रेम होने के कारण इस संसार रूपी नदी में तैरते हुए मेरा पाँव विषय-विकारों के कीचड़ में नहीं फंसता। तुझ मालिक के चरणों के साथ मेरा मन सिल चुका है; हे प्रभु तेरा नाम मेरी नैया को तैराने वाला बेड़ा है।। महला ५ ।। जिनका दर्शन करने से हमारी दुर्मति भाग खड़ी होती है वास्तव में वे ही हमारे मित्र हैं। मैं ऐसे मित्रों को सारे संसार में ढूँढती फिर रही हूँ। हे नानक, ऐसे प्रभु के सेवक बिरले ही हैं।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तेरे भक्तों के दर्शन करने मात्र से हमें अपना मालिक प्रभु याद आता है। साधसंगत में स्थित बने रहने से मन की मैल कट जाती है। साधु पुरुषों के उपदेश को मानकर जन्म-मरण का भय कट जाता है क्योंकि शान्त पुरुष बन्धनों को खोलने वाले हैं और उनके साथ रहने से दुख देने वाले दूत सभी छिप जाते हैं। साधु पुरुष हमारी प्रीति उसके साथ लगा देते हैं जिसने सारी सृष्टि को धारण कर रखा है। उस प्रभु का स्थान ऊँचे से भी ऊँचा है और वह प्रभु सब की पहुँच से परे एवं अनन्त है। रात दिन हाथ जोड़कर प्रत्येक श्वास के साथ उसका सुमिरन किया जाना चाहिए और यदि वह स्वयं दयालु हो जाए तो भक्त जनों की संगति में उस प्रभु को पाया जा सकता है।। ६ ।। श्लोक महला ५ ।। हैरान करने वाले जंगल रूपी संसार में बहुत ही आपाधापी का शोर है और हर मार्ग पर चीख-पुकार चल रही है; परन्तु यदि तुझ मालिक के साथ चित्त की तार जुड़ी हो तो सुखपूर्वक इस संसार रूपी जंगल से पार हो जाया जाता है।। १ ।। महला ५ ।। सच्ची संगत तो उन्हीं लोगों के साथ हुई समझी जाती है जिनके साथ बैठकर प्रभु-नाम का सुमिरन होता है। हे नानक, उनकी संगत तो कभी नहीं की जानी चाहिए जिनके सामने केवल अपना ही स्वार्थ होता है।। २ ।। पउड़ी ।। वही समय धन्य है जिसमें सच्चे गुरु से मिलाप होता है। जब साधु रूपी संगत हो जाती है तो फिर व्यक्ति दुखों के हत्थे नहीं चढ़ता। फिर वह स्थिर बने रहने वाले ठिकाने को पा लेता है और फिर गर्भ योनि में उसे नहीं आना पड़ता। उसे अब सब स्थानों पर एक ब्रह्म ही नज़र आता है और तत्व-ज्ञान की बात तो यह है कि व्यक्ति अपनी सब दृष्टियों को समेट कर केवल एक प्रभु का ही सुमिरन करे। मुख से जो भी बोला जाए वह प्रभु का जाप ही हो और प्रभु के हुकम को बूझकर आनन्दित हुआ जाए और इसी सुख में सुखी रहा जाए। जिनको प्रभु ने परख कर अपने खज़ाने में डाल लिया है अर्थात अपने से मिला लिया है वे फिर कभी भी खोटे सिक्के नहीं बनते।। १० ।। महला ५ ।। वियोग के दुख जम्बूर की तरह है और उनकी पीड़ा इतनी कठिन है कि वह जाती नहीं। यदि वह मालिक प्रभु मिल जाए तो हे नानक, इस बात को सत्य जानो कि सभी सुख मिल जाते हैं।। १ ।।

मः ५ ॥ जिमी वसंदी पाणीऐ ईधणु रखै भाहि ॥ नानक सो सहु आहि जा कै आढलि हभु को ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तेरे कीते कंम तुधै ही गोचरे ॥ सोई वरतै जगि जि कीआ तुधु धुरे ॥ बिसमु भए बिसमाद देखि कुदरति तेरीआ ॥ सरणि परे तेरी दास करि गति होइ मेरीआ ॥ तेरै हथि निधानु भावै तिसु देहि ॥ जिस नो होइ दइआलु हरि नामु सेइ लेहि ॥ अगम अगोचर बेअंत अंतु न पाईऐ ॥ जिस नो होहि क्रिपालु सु नामु धिआईऐ ॥ ११ ॥ सलोक मः ५ ॥ कड़छीआ फिरंन्हि सुआउ न जाणन्हि सुञीआ ॥ सेई मुख दिसंन्हि नानक रते प्रेम रसि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ खोजी लधमु खोजु छडीआ उजाड़ि ॥ तै सहि दिती वाड़ि नानक खेतु न छिजई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि ॥ दुहा सिरिआ खसमु आपि खिन महि करे रासि ॥ तिआगहु सगल उपाव तिस की ओट गहु ॥ पउ सरणाई भजि सुखी हूं सुख लहु ॥ करम धरम ततु गिआनु संता संगु होइ ॥ जपीऐ अंम्रित नामु बिघनु न लगै कोइ ॥ जिस नो आपि दइआलु तिसु मनि वुठिआ ॥ पाईअन्हि सभि निधान साहिबि तुठिआ ॥ १२ ॥ सलोक मः ५ ॥ लधमु लभणहारु करमु करंदो मा पिरी ॥ इको सिरजणहारु नानक बिआ न पसीऐ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पापड़िआ पछाड़ि बाणु सचावा संन्हि कै ॥ गुर मंत्रड़ा चितारि नानक दुखु न थीवई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वाहु वाहु सिरजणहार पाईअनु ठाढि आपि ॥ जीअ जंत मिहरवानु तिस नो सदा जापि ॥ दइआ धारी समरथि चुके बिल बिलाप ॥ नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रतापि ॥ कीतीअनु आपणी रख गरीब निवाजि थापि ॥ आपे लइअनु छडाइ बंधन सगल कापि ॥ तिसन बुझी आस पुंनी मन संतोखि ध्रापि ॥ वडी हूं वडा अपार खसमु जिसु लेपु न पुंनि पापि ॥ १३ ॥ सलोक मः ५ ॥ जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध संगात ॥ १ ॥ मः ५ ॥ रामु रमहु बडभागीहो जलि थलि महीअलि सोइ ॥ नानक नामि अराधिऐ बिघनु न लगै कोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाइ ॥ भगता तेरी टेक रते सचि नाइ ॥ जिस नो

महला ५ ।। धरती पानी में बसी हुई है और लकड़ी आग को अपने में टिकाए रहती है। हे नानक, सबका मालिक वही एक है जिसके आसरे सब कुछ है।। २ ।। पउड़ी ।। तेरे किए हुए काम हे प्रभु, तेरे ही अधीन है। संसार में वही सब कुछ होता है जो तूने प्रारम्भ से ही नियमबद्ध किया है। तेरी कलाओं और शक्तियों को देखकर आश्चर्य भी हैरान हो जाता है। तेरे सेवक तेरी शरण में आ पड़े हैं। हे प्रभु, यदि तू ही चाहेगा तो मेरी मुक्ति होगी। तेरे हाथ में सब सुखों का खज़ाना है। तुझे जो भाता है तू उसे ही देता है। जिस पर तू दयालु होता है वही प्रभु-नाम का सुमिरन करता है। तू अगम्य, अगोचर एवं अनन्त है। तेरी सीमाओं को नहीं जाना जा सकता। तू ही जिस पर कृपालु होता है वही प्रभु-नाम का सुमिरन करता है।। ११ ।। श्लोक महला ५ ।। कलछियां खाने के बर्तनों में चलती रहती हैं परन्तु वे खाने के स्वाद से विहीन खाली की खाली ही रह जाती हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु मुझे उन्हीं लोगों का मुख देखने को मिले जो प्रेम के स्वाद में लीन बने हुए हैं और केवल ज्ञान की बातें भर ही करके कलछी की तरह स्वाद विहीन नहीं बने रहते।। १ ।। महला ५ ।। खोज के माध्यम से मुझे उसका संकेत मिल गया है जिसने मेरी खेती को उजाड़ दिया था अर्थात गुरु रूपी खोजा से मुझे पता लग गया कि पाप कैसे मेरे अच्छे कर्मों की खेती को उजाड़ते हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु, तूने गुरु रूपी बाड़ मुझे दे दी है इसलिए अब मेरी खेती नहीं उजड़ेगी।। २ ।। पउड़ी ।। उसी सच्चे प्रभु की आराधना की जानी चाहिए जिसके पास सब कुछ है। वह दोनों किनारों का अर्थात जन्म-मरण का स्वयं मालिक है और क्षण भर में वह सभी कार्य ठीक कर देता है। हे जीव, समस्त उपायों को त्याग कर उसकी शरण में आ जाओ और सबसे बड़ा सुख प्राप्त कर लो। शान्त पुरुषों के साथ ही धर्म कर्म और तत्व-ज्ञान की समझ आती है। उनके साथ ही अमृत-नाम का सुमिरन किया जाता है जिसके कारण किसी किस्म की भी रुकावट नहीं पड़ती। जिस पर प्रभु स्वयं दयालु होता है उसी के मन में उसका निवास हो जाता है और प्रभु के प्रसन्न होने पर सब प्रकार के खज़ाने प्राप्त हो जाते हैं।। २ ।। श्लोक महला ५ ।। मेरे प्रिय ने कृपा की और मैंने खोजने के योग्य प्रभु को खोज लिया है। हे नानक, वह एक ही प्रभु सृजनकर्ता है, उस एक के बिना अन्य कोई दिखाई नहीं देता।। १ ।। महला ५ ।। हे जीव, सत्य के तीर को पूरी शक्ति लगाकर चला और पापों को पछाड़ दे। हे नानक, गुरु के उपदेश को याद रख तुझे दुख नहीं होगा।। २ ।। पउड़ी ।। धन्य है वह रचनहार प्रभु जिसने स्वयं मुझे शीतल कर दिया है। वह सभी जीव जन्तुओं पर कृपा करता है इसलिए सदैव उसी का जाप करना चाहिए। उस समर्थ प्रभु ने कृपा की तो मेरे सारे दुख संताप चुक गए। गुरु के प्रताप से मेरे दुख रोग एवं संताप भाग खड़े हुए हैं। उस गरीबनिवाज़ प्रभु ने अपनी कृपा करके मेरी रक्षा की है और मेरे समस्त बन्धनों को काट कर उसने मुझे मुक्त कर दिया है। अब मेरी तृष्णा समाप्त हो गई, इच्छा पूर्ण हो गई और मन संतुष्टि से भर गया है। वह अपार प्रभु जो पुण्य पाप से अलिप्त है बड़े से बड़ा अर्थात सबसे बड़ा है।। १३ ।। श्लोक महला ५ ।। केवल वे ही प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं जिन पर प्रभु स्वयं कृपालु हो जाता है। हे नानक, जो साधसंगत में मिल बैठते हैं उन्हीं की प्रीति उस प्रभु से लगी रहती है।। १ ।। महला ५ ।। हे भाग्यशाली लोगो, उस राम का ही सुमिरन करो जो जल, स्थल और अन्तरिक्ष में सर्वत्र व्याप्त है। हे नानक, प्रभु-नाम का सुमिरन करने से रास्ते की कोई भी रुकावट पास नहीं फटकती।। २ ।। पउड़ी ।। भक्तजनों का कुछ भी कहा हुआ स्वीकृत होता है और प्रभु के दरबार में कबूल माना जाता है। हे प्रभु, सच्चे नाम में लीन भक्तों को केवल तेरा ही आसरा है। जिस पर

होइ क्रिपालु तिस का दूखु जाइ ॥ भगत तेरे दइआल ओन्हा मिहर पाइ ॥ दूखु दरदु वड रोगु न पोहे तिसु माइ ॥ भगता एहु अधारु गुण गोविंद गाइ ॥ सदा सदा दिनु रैणि इको इकु धिआइ ॥ पीवति अंम्रित नामु जन नामे रहे अघाइ ॥ १४ ॥ सलोक मः ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पिरी मिलावा जा थीऐ साई सुहावी रुति ॥ घड़ी मुहतु नह वीसरै नानक रवीऐ नित ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सूरबीर वरीआम किनै न होड़ीऐ ॥ फउज सताणी हाठ पंचा जोड़ीऐ ॥ दस नारी अउधूत देनि चमोड़ीऐ ॥ जिणि जिणि लैन्हि रलाइ एहो एना लोड़ीऐ ॥ त्रै गुण इन कै वसि किनै न मोड़ीऐ ॥ भरमु कोटु माइआ खाई कहु कितु बिधि तोड़ीऐ ॥ गुरु पूरा आराधि बिखम दलु फोड़ीऐ ॥ हउ तिसु अगै दिनु राति रहा कर जोड़ीऐ ॥ १५ ॥ सलोक मः ५ ॥ किलविख सभे उतरनि नीत नीत गुण गाउ ॥ ॥ कोटि कलेसा ऊपजहि नानक बिसरै नाउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥ हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो सतिगुरु धनु धंनु जिनि भरम गड़ु तोड़िआ ॥ सो सतिगुरु वाहु वाहु जिनि हरि सिउ जोड़िआ ॥ नामु निधानु अखुटु गुरु देइ दारूओ ॥ महा रोगु बिकराल तिनै बिदारूओ ॥ पाइआ नामु निधानु बहुतु खजानिआ ॥ जिता जनमु अपरु आपु पछानिआ ॥ महिमा कही न जाइ गुर समरथ देव ॥ गुर पारब्रहम परमेसुर अपरंपर अलख अभेव ॥ १६ ॥ सलोकु मः ५ ॥ उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥ नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तेरा कीता होइ त काहे डरपीऐ ॥ जिसु मिलि जपीऐ नाउ तिसु जीउ अरपीऐ ॥ आइऐ चिति निहालु साहिब बेसुमार ॥ तिस नो पोहे कवणु जिसु वलि निरंकार ॥ सभु किछु तिस कै वसि न कोई बाहरा ॥ सो भगता मनि वुठा सचि समाहरा ॥ तेरे दास धिआइनि

प्रभु कृपालु हो जाता है उसका दुख समाप्त हो जाता है। हे दयालु, ये भक्त तेरे हैं उन पर कृपा कर। उनके दुख दर्द समाप्त हो जाते हैं और माया का बड़ा रोग भी उन्हें छू नहीं पाता। भक्तों का मूल आधार भी प्रभु का गुणानुवाद ही होता है और वे दिन-रात सदैव एक ही प्रभु का सुमिरन करते रहते हैं। हे प्रभु, तेरे सेवक अमृत-नाम का पान करते रहते हैं और नाम पीकर ही वे तृप्त बने रहते हैं।। १४ ।। श्लोक महला ५ ।। जिसको प्रभु-नाम भूल जाता है उसके रास्ते में करोड़ों रुकावटें आ खड़ी होती है। हे नानक, ऐसे व्यक्ति सदैव इस प्रकार चीखते चिल्लाते रहते हैं जैसे सुनसान घर में कोई कौआ कांव-कांव करता हो।। १ ।। महला ५ ।। जिस भी मौसम में उस प्रियतम प्रभु से मिलाप हो जाए वही मौसम सुहावना होता है। हे नानक, सदैव उसका सुमिरन करते रहना चाहिए ताकि वह किसी भी घड़ी और किसी भी मुहूर्त में भूल न जाए अर्थात सदैव उसकी याद बनी रहे।। २ ।। पउड़ी ।। पाँचों विकारों ने बहुत बलशाली सेना बना ली है और ये पाँचों विकार किसी के रोके रुकते नही। अवधूत अर्थात त्यागी पुरुषों को भी दसों इन्द्रियां विषयों में लगाए रहती हैं। ये पाँचों शूरवीर सबको जीतकर अपने साथ मिला लेते हैं और यही कार्य करते जाने की इनकी इच्छा बनी रहती है। तीनों गुणों वाली सारी सृष्टि इनके बस में है और कोई भी इनका मुँह मोड़ नहीं सकता। अज्ञान रूपी किला है और माया का प्रेम उसके चारों ओर खाई है तो भला यह बताओ कि इस किले को कैसे तोड़ा (जीता) जाए। पूर्ण गुरु को याद करके इस विषम दल को छिन्न-भिन्न किया जा सकता है। ऐसे सच्चे गुरु की सेवा में मैं दिन रात हाथ जोड़कर पड़ा रहता हूँ।। १५ ।। श्लोक महला ५ ।। सदैव उस प्रभु का गुणानुवाद करते रहने से सभी पाप उतर जाते हैं और हे नानक प्रभु का नाम विस्मृत हो जाने से करोड़ों प्रकार के क्लेश उत्पन्न हो जाते हैं।। १ ।। महला ५ ।। हे नानक, सच्चे गुरु को मिलने से जीवन की पूरी युक्ति की समझ आ जाती है और हँसते, खेलते, पहनते खाते साथ ही साथ मुक्ति भी प्राप्त हो जाती है।। २ ।। पउड़ी ।। वह सच्चा गुरु स्वामी प्रभु धन्य है जिसने मेरे भ्रम के किले को तोड़ डाला है। वह सच्चा गुरु धन्य-धन्य है जिसने मुझे परमात्मा के साथ जोड़ दिया है। प्रभु-नाम का खज़ाना अक्षय है और उसी भण्डार में से गुरु औषधि प्रदान करता है और महा विकराल रोग उस औषधि से ही नष्ट हो जाते हैं। मैंने नाम का बहुत बड़ा खज़ाना पा लिया है जिससे मेरा जन्म अपार रूप से सफल हो गया है और मैंने स्वयं को पहचान लिया है। समर्थ गुरु की शक्ति की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता क्योंकि परब्रह्म परमेश्वर अपरंपर अदृष्ट एवं रहस्यपूर्ण वह प्रभु ही गुरु है।। १६।। श्लोक महला ५ ।। हे जीव, तू उद्यम करते हुए कमाई कर और उसके सुख और आनन्द का उपभोग कर। हे नानक, उसका सुमिरन करते हुए तू प्रभु से मिलाप कर जिससे तेरी सारी चिन्ताएं दूर हो जाएंगी।। १ ।। महला ५ ।। हे प्रभु, ऐसी कृपा करो कि मेरा चिन्तन शुभ हो, मैं परमेश्वर का सुमिरन करूँ और निर्मल साधसंगत में बना रहूँ। हे भगवन, ऐसी कृपा करो कि नानक को एक घड़ी भर के लिए भी प्रभु नाम न भूले।। २ ।। पउड़ी ।। जब सब कुछ तेरा ही किया हुआ होता है तो भला किस लिए डरा जाए। जिससे मिलकर प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है उसको अपने प्राण सौंप दिए जाने चाहिए। उस अनन्त मालिक के चित्त में याद आने से व्यक्ति आनन्दित हो उठता है क्योंकि उसे यह पता लग जाता है कि जिसके पक्ष में वह निराकार प्रभु है उसे भला कौन छू सकता है। सब कुछ तो उस प्रभु के वश में है और उससे बाहर कोई भी नहीं है, वह भक्तों के मन में स्थित है और सत्य के माध्यम से उनके हृदय मे लीन होता है। हे प्रभु, तेरे सेवक तेरा ही सुमिरन करते हैं और

तुधु तूं रखण वालिआ ॥ सिरि सभना समरथु नदरि निहालिआ ॥ १७ ॥ सलोक मः ५ ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह दुसट बासना निवारि ॥ राखि लेहु प्रभ आपणे नानक सद बलिहारि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ खांदिआ खांदिआ मुहु घठा पैनंदिआ सभु अंगु ॥ नानक ध्रिगु तिना दा जीविआ जिन सचि न लगो रंगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥ जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा ॥ नाम तेरै कै रंगि दुरमति धोवणा ॥ जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा ॥ जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा ॥ अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा ॥ जिन्ही पछाता हुकमु तिन्ह कदे न रोवणा ॥ नाउ नानक बखसीस मन माहि परोवणा ॥ १८ ॥ सलोक मः ५ ॥ जीवदिआ न चेतिओ मुआ रलंदड़ो खाक ॥ नानक दुनीआ संगि गुदारिआ साकत मूड़ नपाक ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जीवंदिआ हरि चेतिआ मरंदिआ हरि रंगि ॥ जनमु पदारथु तारिआ नानक साधू संगि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आदि जुगादी आपि रखण वालिआ ॥ सचु नामु करतारु सचु पसारिआ ॥ ऊणा कही न होइ घटे घटि सारिआ ॥ मिहरवान समरथ आपे ही घालिआ ॥ जिन्ह मनि वुठा आपि से सदा सुखालिआ ॥ आपे रचनु रचाइ आपे ही पालिआ ॥ सभु किछु आपे आपि बेअंत अपारिआ ॥ गुर पूरे की टेक नानक संम्हालिआ ॥ १९ ॥ सलोक मः ५ ॥ आदि मधि अरु अंति परमेसरि रखिआ ॥ सतिगुरि दिता हरि नामु अंम्रितु चखिआ ॥ साधा संगु अपारु अनदिनु हरि गुण रवै ॥ पाए मनोरथ सभि जोनी नह भवै ॥ सभु किछु करते हथि कारणु जो करै ॥ नानकु मंगै दानु संता धूरि तरै ॥ १ ॥ मः ५ ॥ तिस नो मंनि वसाइ जिनि उपाइआ ॥ जिनि जनि धिआइआ खसमु तिनि सुखु पाइआ ॥ सफलु जनमु परवानु गुरमुखि आइआ ॥ हुकमै बुझि निहालु खसमि फुरमाइआ ॥ जिसु होआ आपि क्रिपालु सु नह भरमाइआ ॥ जो जो दिता खसमि सोई सुखु पाइआ ॥ नानक जिसहि दइआलु बुझाए हुकमु मित ॥ जिसहि भुलाए आपि मरि मरि जमहि नित ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ निंदक मारे ततकालि खिनु टिकण न दिते ॥ प्रभ दास का दुखु न खवि सकहि फड़ि

तू ही उनका रक्षक है। तू ही सबके ऊपर समर्थ हाकिम है और तू ही अपनी कृपा दृष्टि से सब को सुखी कर देने वाला है।। १७ ।। श्लोक महला ५ ।। हे प्रभु, काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह इत्यादि दुष्ट वासनाओं को दूर करके मेरी रक्षा कर। नानक तुझ पर सौ बार बलिहारी जाता है।। १ ।। महला ५ ।। खाते-खाते तो मेरा मुँह घिस गया है और पहनते-पहनते मेरे सभी अंग भी अब शक्तिहीन हो गए हैं। ऐसी अवस्था में पहुँच कर भी हे नानक, जिन्हें सत्य के साथ प्रेम नहीं लगा उनका जीना धिक्कार है।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, जैसा जैसा तेरा हुकम है वैसा वैसा ही होना है। जहाँ तू मुझे रखेगा हमें तो वहीं जाकर खड़े हो जाना है। तेरे नाम के रंग से हमें अपनी दुर्मति को धोना है और हे प्रभु, तेरा सुमिरन कर कर के हमें भ्रम और भय को दूर करना है। जो तेरे रंग में रंगे हैं उन्हें फिर योनियों में नहीं भटकना पड़ता। उनकी आँखें अन्दर बाहर अर्थात सर्वत्र एक तुझे ही देखती हैं। जिन्होने प्रभु के हुकम को पहचान लिया है उन्हें कभी भी पछतावा नहीं होता। हे नानक, उन्हें प्रभु नाम की बख्शीश प्राप्त होती है जिसे वे मन में पिरोये (बसाए) रखते हैं।। १८ ।। श्लोक महला ५ ।। जीवित रहते हुए तो व्यक्ति ने उसका सुमिरन नहीं किया और मर कर व्यक्ति मिट्टी में मिल जाता है। हे नानक, ऐसे मूर्ख अपवित्र और प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति ने अपना सारा जीवन दुनियांदारी में ही गुज़ार दिया है।। १ ।। महला ५ ।। जिसने जीवन में प्रभु का सुमिरन किया है और मरते हुए भी प्रभु रंग में रंगा रहा है हे नानक, उसने जीवन रूपी अमूल्य पदार्थ को साधु पुरुषों की संगत में सफल बनाया है।। २ ।। पउड़ी ।। आदिकाल और युगों के भी प्रारम्भ से ही हे प्रभु, तू स्वयं ही रक्षा करने वाला है। उस सच्चे कर्ता-प्रभु का सच्चा नाम सत्य रूप में चारों ओर फैला हुआ है। वह किसी के अन्दर भी कम मात्रा में नही है अपितु सभी घट घट में विद्यमान है। वह कृपालु समर्थ प्रभु स्वयं ही सत्याचरण की मेहनत करवाता है। वह जिनके मन में बस जाता है वे सदैव सुखी बने रहते हैं। वह स्वयं ही सृष्टि रचना करता है और स्वयं ही उसका पालन-पोषण करता है। वह अनन्त अपरंपर प्रभु स्वयं ही सब कुछ है (और उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है)। नानक ने पूर्ण गुरु का आसरा लेकर ऐसे प्रभु का सुमिरन किया है।। १६ ।। श्लोक महला ५ ।। आदि, मध्य और अन्त में भी अर्थात सदैव ही परमेश्वर ने रक्षा की है। सच्चे गुरु ने प्रभु-नाम रूपी अमृत प्रदान किया है जिसे मैंने चखा है। साधु पुरुषों की संगत में सदैव उस प्रभु के गुण गाए जाते हैं जिससे व्यक्ति के सभी मनोरथ पूरे हो जाते हैं और फिर वह योनियों में नहीं भटकता। सब कुछ उस कर्ता-प्रभु के ही हाथ में है और कार्य करने के लिए वह जो भी कारण चाहे बना देता है। नानक तो यही दान माँगता है कि शान्त पुरुषों की चरण-धूलि मिल जाए जिससे व्यक्ति पार निकल जाता है।। १ ।। महला ५ ।। हे जीव, जिसने उत्पन्न किया है उसी को मन में बसा क्योंकि जिस जिस ने भी उस मालिक का सुमिरन किया है उसने सुख पाया है। गुरमुख व्यक्ति का आना ही स्वीकृत होता है और उसी का जन्म सफल होता है। मालिक ने भी यही बताया है कि हुकम को बूझ कर ही आनन्दित हुआ जाता है। जिस पर प्रभु स्वयं कृपालु हो जाता है वह कभी भी भटकता नहीं है। जो प्रभु उसे देता है वह उसी में ही सुखी बना रहता है। हे नानक, जिस पर वह दयालु होता है उसी को ही वह मित्रवत् हुकम का रहस्य समझा देता है और जिसे वह प्रभु स्वयं भटकाता है वह सदैव मर-मर कर जन्म लेता रहता है।। २ ।। पउड़ी ।। निन्दक व्यक्तियों को तो प्रभु स्वयं मारता है और क्षण भर भी उन्हें टिकने नहीं देता। प्रभु अपने सेवकों का दुख नही सह सकता और निन्दकों को पकड़ कर

जोनि जुते मथे वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते ॥ दुखि लगै बिललाणिआ नरकि घोरि सुते ॥ कंठि लाइ दास रखिअनु नानक हरि सते ॥ २० ॥ सलोक मः ५ ॥ रामु जपहु वडभागी हो जलि थलि पूरनु सोइ ॥ नानक नामि धिआइऐ बिघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिमरि सिमरि दातारु मनोरथ पूरिआ ॥ इछ पुंनी मनि आस गए विसूरिआ ॥ पाइआ नामु निधानु जिस नो भालदा ॥ जोति मिली संगि जोति रहिआ घालदा ॥ सूख सहज आनंद वुठे तितु घरि ॥ आवण जाण रहे जनमु न तहा मरि ॥ साहिबु सेवकु इकु इकु द्रिसटाइआ ॥ गुर प्रसादि नानक सचि समाइआ ॥ २१ ॥ १ ॥ २ ॥ सुधु

रागु गूजरी भगता की बाणी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

स्री कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥ चारि पाव दुइ सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गईहै ॥ ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत मूड लुकईहै ॥ १ ॥ हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥ फाटे नाकन टूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सारो दिनु डोलत बन महीआ अजहु न पेट अघईहै ॥ जन भगतन को कहो न मानो कीओ अपनो पईहै ॥ २ ॥ दुख सुख करत महा भ्रमि बूडो अनिक जोनि भरमई है ॥ रतन जनमु खोइओ प्रभु बिसरिओ इहु अउसरु कत पईहै ॥ ३ ॥ भ्रमत फिरत तेलक के कपि जिउ गति बिनु रैनि बिहई है ॥ कहत कबीर राम नाम बिनु मूंड धुने पछुतईहै ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी घरु ३ ॥ मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ॥ ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥ १ ॥ तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ॥ हरि का नामु लिखि लीओ सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु तागा बाहउ बेही ॥ तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥ २ ॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ हरि का नामु लहिओ मै लाहा ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इन का दाता एकु रघुराई ॥ ४ ॥ २ ॥

योनियों में धकेलता रहता है। निन्दकों को सिर के बालों से पकड़कर और पछाड़ कर यम के मार्ग में धकेल दिया जाता है जहाँ दुखी होते हुए वे विलाप करते हैं और घोर नर्क में जा पड़ते हैं। अपने सेवकों को हे नानक, प्रभु ने अपने गले से लगाकर सचमुच ही बचा लिया है।। २० ।। श्लोक महला ५।। हे भाग्यशाली जीवो, राम का सुमिरन करो क्योंकि वही जल-स्थल में पूर्ण रूप से व्याप्त है। हे नानक, प्रभु नाम के सुमिरन से कोई भी रुकावट रास्ते में नहीं आती।। १ ।। महला ५ ।। जिसे प्रभु-नाम विस्मृत हो जाता है उसे करोड़ों ही रुकावटों का सामना करना पड़ता है। हे नानक, ऐसे व्यक्ति सदैव उसी प्रकार चीखते पुकारते रहते हैं जैसे सुनसान घर में कौआ कांव कांव करता रहता है।। २ ।। पउड़ी ।। उस दाता प्रभु का सदैव श्वास-श्वास सुमिरन करो क्योंकि उसने सभी उद्देश्य पूरे किए हैं। मन की इच्छाएं और आशाएं पूरी हो गई हैं तथा सभी प्रकार के शोक और पश्चाताप समाप्त हो गए हैं। जिसे मैं खोजता फिर रहा था वह प्रभु नाम का खज़ाना मिल गया है और मेरी आत्मा की ज्योंति अब उस प्रभु की ज्योति में मिल गई है जिससे मेरी सारी मेहनत अब समाप्त हो गई है। अब उसके घर में ही निवास हो गया है जिससे सब प्रकार के सुख, सहजभाव और आनन्द मिल गए हैं। वहां जन्म और मरण नहीं होता और आवागमन भी समाप्त हो गया है। अब मालिक और सेवक एक ही हो गए हैं और दोनों एक ही दिखने लग गए हैं। हे नानक, गुरु की कृपा से मैं सत्य में लीन हो गया हूँ।। २१ ।। १ ।। २ ।। शुद्ध ।।

रागु गूजरी भक्तों की वाणी ९ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्री कबीर जी का चौपदा घरु २ दूसरा ।। हे जीव, जब तू चार पैरों वाला और दो सींगों वाला बनकर मुँह से गूँगा जीव (गाय बैल आदि) बन जाएगा तब भला कैसे उस मुँह से प्रभु का गुणानुवाद करोगे। उठते-बैठते तुझे जब सदा डण्डा लगता रहेगा तो फिर भला कहाँ तू अपने सिर को छिपाएगा ।। १ ।। प्रभु के बिना तो आवारा बैल ही बना जाता है जिसका कन्धा टूटा हुआ नाक फटा हुआ होता है और जो भूसा ही खाने में पाता है ।। १ ।। सारा दिन जंगल में भटकने के बावजूद भी तेरा पेट नहीं भर पाएगा। भक्तजनों का कहना तुमने माना नहीं इसलिए तू अपने किए हुए का फल अवश्य प्राप्त करेगा ।। २ ।। जीव दुख-सुख भोगता हुआ और महा अज्ञान में डूबा हुआ अनेकों योनियों में भटकता है। प्रभु को भुलाकर यह हीरे जैसा मानव जीवन तूने खो दिया है; यह अवसर अब तुझे कहाँ मिलेगा ।। ३ ।। तमाशा दिखाने वाले मदारी के गोल गोल भटकते हुए बन्दर की तरह तेली का बैल बनकर हे जीव, तेरी जीवन रूपी सारी रात्रि बिना कुछ पाए ही व्यतीत हो जाएगी। कबीर का कथन है कि हे जीव, प्रभु के बिना तू अन्त में सिर धुन धुन कर पछताएगा।। गूजरी महला ३ ।। कबीर की माता सिसकियां ले लेकर यह सोचती है कि हे प्रभु, ये (कबीर के) बच्चे कैसे जीवन जीएंगे।। १ ।। कबीर ने तो तनना और बुनना सब कुछ छोड़ दिया है और प्रभु-नाम को ही उसने शरीर पर धारण कर लिया है।। १ ।। रहाउ ।। कबीर तो इस तरह सोचता है कि जितनी देर में छेद में धागा डालता हूँ उतना समय तो मुझे मेरा (प्यारा) प्रभु विस्मृत हो जाता है।। २ ।। लोगों के हिसाब से तो मेरी बुद्धि बहुत ही छोटी है और मेरी जाति भी जुलाहा है परन्तु मैंने तो प्रभु नाम का बहुत सा लाभ कमा लिया है। कबीर कहता है कि हे मेरी माँ, मेरी बात को ध्यान से सुन; मेरा और इन सब का दाता तो केवल एक प्रभु ही है।। ४।। २ ।।

गूजरी स्री नामदेव जी के पदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥ जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥ १ ॥ तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥ बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तै उपाई भरम भुलाई ॥ जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई ॥ २ ॥ सतिगुरु मिलै त सहसा जाई ॥ किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई ॥ ३ ॥ एकै पाथर कीजै भाउ ॥ दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥ जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥ कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी घरु १ ॥ मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई ॥ आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥ १ ॥ कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई ॥ जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥ २ ॥ जिउ आकासै घड़ूअलो म्रिग त्रिसना भरिआ ॥ नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥ ३ ॥ २ ॥

गूजरी स्री रविदास जी के पदे घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥ फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥ १ ॥ माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥ अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैलागर बेर्हे है भुइअंगा ॥ बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा ॥ २ ॥ धूप दीप नईबेदहि बासा ॥ कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥ ३ ॥ तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥ गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥ ४ ॥ पूजा अरचा आहि न तोरी ॥ कहि रविदास कवन गति मोरी ॥ ५ ॥ १ ॥

गूजरी स्री त्रिलोचन जीउ के पदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥ हिरदै कमलु घटि ब्रहमु न चीन्हा काहे

गूजरी स्री नामदेव जी के पद घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

हे प्रभु, यदि तू मुझे राज दे दे तो भला इसमें कौन सी बड़ी बात है और यदि तू मुझसे भीख मंगवा ले तो भी भला मेरा क्या घट जाएगा। हे मेरे मन, तू माया से ऊँचे पद पर बने रहने वाले प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि ऐसा करने से फिर तेरा आवागमन इस संसार में नहीं होगा ।। १ ।। रहाउ ।। सारी सृष्टि को तूने उत्पन्न किया है और इसे भ्रमों में तूने ही भुलाया हुआ है। इसकी समझ, हे प्रभु, तू जिसे देता है वही जान पाता है। जब सच्चा गुरु मिल जाता है तो सब प्रकार का सन्देह चुक जाता है। मैं किसकी पूजा करूँ मुझे तो दूसरा कोई नज़र ही नहीं आता ।। ३ ।। यह तो आश्चर्य की बात है कि एक पत्थर के साथ तो प्रेम और श्रद्धा की जाती है और दूसरे पत्थर पर लोग पाँव भी धरते हैं। यदि वह देवता है तो यह दूसरा भी देवता ही है। नामदेव कहता है कि मैंने तो मूर्ति और पत्थर का झंझट ही छोड़ दिया है और प्रभु की सेवा में लग गया हूँ ।। ४ ।। १ ।। गूजरी घरु १ ।। उस प्रभु में मैल का कोई अंश नहीं। वह मलविहीन प्रभु सुगन्ध की तरह सब में बसा बैठा है। हे माँ, उसे आते हुए तो किसी ने देखा नही इसलिए उसके स्वरूप को भला कौन जान सकता है।। १ ।। कौन उसके बारे में कह सकता है और किसने उसको पहचाना है क्योंकि हे माँ, वह प्रभु तो सभी कुलों से बाहर है।। १ ।। रहाउ ।। जिस प्रकार आकाश में पक्षी उड़ता है परन्तु उसके रास्ते को देखा नही जा सकता; जिस प्रकार पानी में मछली के मार्ग को देखा नहीं जा सकता।। २ ।। जिस प्रकार किसी को मृगतृष्णा की तरह जल से भरा हुआ घड़ा आकाश में प्रभु रूप में दिखाई दे और ऊँचे से ऊँचा जाने पर भी वह और ऊँचा हो जाता है अर्थात उस प्रभु का ठिकाना प्राप्त नहीं होता। नामदेव का स्वामी विट्ठल तो इसी प्रकार का है जिसने मेरे तीनों प्रकार के ताप जला कर नष्ट कर दिए हैं।। ३ ।। २ ।।

गूजरी स्री रविदास जी के पद घरु ३ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

दूध तो बछड़े ने गाय के थनों में ही जूठा कर दिया है, फूल को भँवरे ने और पानी को मछली ने विकृत कर दिया है।। १ ।। हे माँ, मैं प्रभु की पूजा के लिए क्या चढाऊँ।। अन्य कोई सुन्दर फूल आदि नहीं मिलता जो अनुपम हो और पवित्र हो।। १ ।। रहाउ।। चन्दन के वृक्ष को भी विषैले साँपों ने बाँध रखा है। विष और अमृत भी समुद्र में साथ-साथ बसते बताए गए हैं।। २ ।। धूप, दीप, नैवेद्य और सुगन्धि आदि के साथ तेरा यह दास कैसे तेरी पूजा करे।। ३ ।। तन मन अर्पण करके पूजा अर्चना मैं करूँ तो गुरु की कृपा से उस अलिप्त प्रभु को पा जाऊँ।। ४ ।। हे प्रभु, तेरी पूजा अर्चना मुझसे हो नहीं पाती और रविदास का कथन है कि अन्ततः भला मेरा हाल क्या होगा।। ५।। १ ।।

गूजरी स्री त्रिलोचन जी के पद घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

यदि अन्दर मैला है, मन निर्मल नहीं है, बाहर उदासीन व्यक्ति का वेष धारण कर रखा है तो उसका क्या लाभ ? अपने हृदय कमल में हे जीव, यदि तूने परमात्मा को नहीं पहचाना तो तू भला दिखावे

भइआ संनिआसी ॥ १ ॥ भरमे भूलीरे जैचंदा ॥ नही नही चीन्हिआ परमानंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ खिंथा मुंदा माइआ ॥ भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइआ ॥ २ ॥ काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी ॥ लख चउरासीह जिन्हि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥ ३ ॥ काइ कमंडलु कापड़ीआ रे अठसठि काइ फिराही ॥ बदति त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी ॥ अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ सरप जोनि वलि वलि अउतरै ॥ १ ॥ अरी बाई गोबिद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥ अंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै ॥ २ ॥ अंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ॥ ३ ॥ अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥ ४ ॥ अंति कालि नाराइणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीतंबरु वा के रिदै बसै ॥ ५ ॥ २ ॥

गूजरी स्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४ १ ओ सतिगुर प्रसादि ॥

परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥ परमदभुतं परक्रिति परं जदिचिंति सरब गतं ॥ १ ॥ केवल राम नाम मनोरमं ॥ बदि अंम्रित तत मइअं ॥ न दनोति जसमरणेन जनम जराधि मरण भइअं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इछसि जमादि पराभयं जसु स्वसति सुक्रित क्रितं ॥ भव भूत भाव समब्यिअं परमं प्रसंनमिदं ॥ २ ॥ लोभादि द्रिसटि पर ग्रिहं जदिबिधि आचरणं ॥ तजि सकल दुहक्रित दुरमती भजु चक्रधर सरणं ॥ ३ ॥ हरि भगति निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥ जोगेन किं जगेन किं दानेन किं तपसा ॥ ४ ॥ गोबिंद गोबिंदेति जपि नर सकल सिधि पदं ॥ जैदेव आइउ तस सफुटं भव भूत सरब गतं ॥ ५ ॥ १ ॥

का संन्यासी क्यों बना बैठा है।। १ ।। हे जयचन्द, सारी दुनियां भ्रमों में भूली पड़ी है। बाहरी दिखावे से कभी भी परमात्मा को नहीं जाना जा सकता ।। १ ।। रहाउ ।। घर-घर से माँग कर खा लिया। शरीर को मोटा-ताजा कर लिया और गुदड़ी तथा कानों में मुद्राएं धारण करने का प्रपंच किया। श्मशान-भूमि की राख तन पर मलने का ढोंग किया परन्तु तुझे गुरु के बिना सत्य का पता न लग सका ।। २ ।। यह जाप क्यों करते हो और क्यों अपने आप को पंचाग्नि से तपाते हुए पानी को बिलोने के समान कार्य कर रहे हो। केवल उस अलिप्त प्रभु का सुमिरन करो जिसने चौरासी लाख योनियां उत्पन्न की हैं। हे भगवा वेषधारी योगी, तू हाथ में कमण्डल लिए हुए क्यों अड़सठ तीर्थों पर भटकता फिरता है। त्रिलोचन का कथन है कि हे प्राणी, तू दाने से विहीन भूसे को क्यों खलिहान में बिखेरे हुए है ।। ४ ।। १ ।। गूजरी ।। अन्तिम समय में जो धन का सुमिरन करता है और उसकी चिन्ता में ही मर जाता है वह बार-बार सर्प योनि धारण करता है ।। १ ।। हे माँ, मुझे प्रभु का नाम कभी भी न भूले ।। रहाउ ।। अन्तिम समय में जो स्त्री में ध्यान लगाए रहता है और ऐसी चिन्ता में ही मर जाता है वह बार-बार वेश्या योनि में ही अवतरित होता रहता है ।। २ ।। मौत के समय जो पुत्रों को याद करता रहता है और ऐसी चिन्ता में ही मर जाता है वह बार-बार सूअर की योनि में आता रहता है।। ३ ।। अन्तिम समय में जो मकान आदि में ही मन लगाए रहता है और ऐसी चिन्ता में ही मर जाता है वह बार-बार प्रेत योनि में ही पड़ा रहता है ।। ४ ।। अन्तिम समय में जो परमात्मा का सुमिरन करता है और उसी का चिन्तन करते हुए मर जाता है तो त्रिलोचन का कथन है कि वह व्यक्ति मुक्त हो जाता है और परमात्मा उसके हृदय में बसा रहता है ।। ५ ।। २ ।।

गूजरी स्री जयदेव जी का पद घरु ४   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

सर्वप्रथम कालातीत पुरुष (ब्रह्म) था जिसकी तुलना नहीं की जा सकती। उसमें स्थिरता आदि सभी गुण हैं। वह प्रभु परम अद्भुत है और प्रकृति के गुणों से परे है। उस पूर्ण स्वरूप को नहीं जाना जा सकता और वह सर्वत्र व्याप्त है ।। १ ।। हे भाई, केवल प्रभु-नाम को ही मन में प्रेम करो। केवल अमृत-नाम जो कि संसार का सार तत्व है उसी का जाप करो। उसके गुणानुवाद से जन्म, बुढ़ापा और मौत का भय दुख नहीं देता ।। १ ।। रहाउ ।। यदि यम आदि को विजय करना चाहते हो तो प्रभु का यश गायन करो, उस प्रभु को मानो और शुभ कर्म करते जाओ। परमात्मा वर्तमान, भूत और भविष्य में समान रूप में बना रहने वाला है ।। २ ।। यदि अच्छा आचरण बनाना चाहते हो तो लोभ आदि और पराए घर पर ध्यान टिकाना छोड़ दो और समस्त बुरे काम तथा दुर्मति का त्याग कर चक्रधारी प्रभु की शरण में आकर उसका सुमिरन करो ।। ३ ।। केवल एक प्रभु की भक्ति मन, वचन और कर्म के साथ करो। यज्ञ, दान और तपस्या आदि का इस संसार में क्या लाभ है ।। ४ ।। हे प्राणी, केवल परमात्मा के नाम का ही जाप कर जो सब प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति का स्थान है। जयदेव उसी की शरण में आया है जो वर्तमान में भी और पहले भी सबकी गति करता आया है।। ५ ।। १ ।।

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु देवगंधारी महला ४ घरु १ ॥

सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे ॥ जो तुमरा जसु कहते गुरमति तिन मुख भाग सभागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ टूटे माइआ के बंधन फाहे हरि राम नाम लिव लागे ॥ हमरा मनु मोहिओ गुर मोहनि हम बिसम भई मुखि लागे ॥ १ ॥ सगली रैणि सोई अंधिआरी गुर किंचत किरपा जागे ॥ जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहि तुम सरि अवरु न लागे ॥ २ ॥ १ ॥ देवगंधारी ॥ मेरो सुंदरु कहहु मिलै कितु गली ॥ हरि के संत बतावहु मारगु हम पीछै लागि चली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रिअ के बचन सुखाने हीअरै इह चाल बनी है भली ॥ लटुरी मधुरी ठाकुर भाई ओह सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥ १ ॥ एको प्रिउ सखीआ सभ प्रिअ की जो भावै पिर सा भली ॥ नानकु गरीबु किआ करै बिचारा हरि भावै तितु राहि चली ॥ २ ॥ २ ॥ देवगंधारी ॥ मेरे मन मुखि हरि हरि हरि बोलीऐ ॥ गुरमुखि रंगि चलूलै राती हरि प्रेम भीनी चोलीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ फिरउ दिवानी आवल बावल तिसु कारणि हरि ढोलीऐ ॥ कोई मेलै मेरा प्रीतमु पिआरा हम तिस की गुल गोलीऐ ॥ १ ॥ सतिगुरु पुरखु मनावहु अपुना हरि अंम्रितु पी झोलीऐ ॥ गुर प्रसादि जन नानक पाइआ हरि लाधा देह टोलीऐ ॥ २ ॥ ३ ॥ देवगंधारी ॥ अब हम चली ठाकुर पहि हारि ॥ जब हम सरणि प्रभू की आई राखु प्रभू भावै मारि

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।।

रागु देवगंधारी महला ४ घरु १ ।।

जो प्रभु के सेवक बन गए हैं उनकी लौ प्रभु से लग गई है। गुरमति के अनुरूप चलते हुए जो तुम्हारा गुणानुवाद करते हैं उनके मुख और भाग्य अच्छे हैं ।। १।। रहाउ ।। प्रभु-नाम में लौ लगने पर माया के बन्धन और फन्दे टूट जाते हैं। उस प्रभु रूपी गुरु ने हमारा मन मोह लिया है और हम उसके दर्शन करके आश्चर्य से भर गए हैं ।। १ ।। सारी रात भर अर्थात जीवन भर मैं अज्ञान के अन्धकार में सोती रही हूँ परन्तु गुरु की थोड़ी सी कृपा के साथ ही मुझे चेतनता प्राप्त हो गई है। दास नानक के हे सुन्दर स्वामी प्रभु, मुझे तुम्हारे जैसा अन्य कोई भी सुझाई नहीं पड़ता ।। २ ।। १ ।। देवगंधारी ।। मुझे कोई बताओ कि मेरा प्यारा प्रभु किस गली में मिलेगा। हे प्रभु के शान्त पुरुषो, तुम मुझे मार्ग बताओ; मैं तो तुम लोगों के ही पीछे हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। अब तो यही एक भली युक्ति है कि उस प्रियतम के बोल हृदय को अच्छे लगें। जिसके बाल बिखरे हुए हों, छोटे कद वाली हो और चाहे जैसी भी हो जो भी प्रभु को अच्छी लगे वही सुन्दर है। वास्तव में वही प्रभु को पानी की तरह बहकर उससे जा मिलती है और उससे मिलकर एक हो जाती है ।। १ ।। प्रियतम तो एक है और उस प्रियतम की सखियां कई हैं; परन्तु जो उसे भा जाती है वही सुन्दर है। बेचारा विनम्र नानक क्या करे; जो प्रभु को अच्छा लगता है उसे उसी रास्ते पर चलना चाहिए ।। २ ।। २ ।। देवगंधारी ।। हे मेरे मन मुख से उस प्रभु का नाम ही बोला जाए। गुरमुख बनकर प्रेम के गाढ़े रंग में रंगी गई मेरी चोली प्रभु प्रेम में ही भीग गई है ।। १ ।। रहाउ ।। उस प्रभु के लिए मैं बावली दीवानी होकर इधर-उधर भटक रही हूँ ।। १।। प्रभु-नाम रूपी अमृत को हिला हिला कर आनन्दपूर्वक पीओ और समर्थ सच्चे गुरु को मना लो। गुरु कृपा से दास नानक ने अपने शरीर के अन्दर ही खोजकर पा लिया है ।। २ ।। ३ ।। देवगंधारी ।। अब मैं सब ओर से हारकर अपने प्रभु की शरण में आ गई हूँ। अब जब मैं प्रभु की शरण में आ गई हूँ तो हे प्रभु, चाहे मुझे बचा ले और चाहे मार डाल

॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंतरि जारि ॥ कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ हम तनु दीओ है ढारि ॥ १ ॥ जो आवत सरणि ठाकुर प्रभु तुमरी तिसु राखहु किरपा धारि ॥ जन नानक सरणि तुमारी हरि जीउ राखहु लाज मुरारि ॥ २ ॥ ४ ॥ देवगंधारी ॥ हरि गुण गावै हउ तिसु बलिहारी ॥ देखि देखि जीवा साध गुर दरसनु जिसु हिरदै नामु मुरारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम पवित्र पावन पुरख प्रभ सुआमी हम किउ करि मिलह जूठारी ॥ हमरै जीइ होरु मुखि होरु होत है हम करमहीण कूड़िआरी ॥ १ ॥ हमरी मुद्र नामु हरि सुआमी रिद अंतरि दुसट दुसटारी ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरणि तुम्हारी ॥ २ ॥ ५ ॥ देवगंधारी ॥ हरि के नाम बिना सुंदरि है नकटी ॥ जिउ बेसुआ के घरि पूतु जमतु है तिसु नामु परिओ है ध्रकटी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कै हिरदै नाहि हरि सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी ॥ जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओहु हरि दरगह है भ्रसटी ॥ १ ॥ जिन कउ दइआलु होआ मेरा सुआमी तिना साध जना पग चकटी ॥ नानक पतित पवित मिलि संगति गुर सतिगुर पाछै छुकटी ॥ २ ॥ ६ ॥ छका १

देवगंधारी महला ५ घरु २   ੧ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

माई गुर चरणी चितु लाईऐ ॥ प्रभु होइ क्रिपालु कमलु परगासे सदा सदा हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि एको बाहरि एको सभ महि एकु समाईऐ ॥ घटि अवघटि रविआ सभ ठाई हरि पूरन ब्रहमु दिखाईऐ ॥ १ ॥ उसतति करहि सेवक मुनि केते तेरा अंतु न कतहू पाईऐ ॥ सुखदाते दुख भंजन सुआमी जन नानक सद बलि जाईऐ ॥ २ ॥ १ ॥ देवगंधारी ॥ माई होनहार सो होईऐ ॥ राचि रहिओ रचना प्रभु अपनी कहा लाभु कहा खोईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कह फूलहि आनंद बिखै सोग कब हसनो कब रोईऐ ॥ कबहू मैलु भरे अभिमानी कब साधू संगि धोईऐ ॥ १ ॥ कोइ न मेटै प्रभ का कीआ दूसर नाही अलोईऐ ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिह प्रसादि सुखि सोईऐ ॥ २ ॥ २ ॥

।। १ ।। रहाउ ।। चतुराई से लोगों की खुशामद के माध्यम से की हुई स्तुति को मैंने आग में डालकर जला दिया है। कोई मुझे भला कहे अथवा बुरा कहे मैंने तो अपना शरीर प्रभु को अर्पण कर दिया है ।। १ ।। हे मालिक प्रभु, जो तुम्हारी शरण में आ जाता है उस पर कृपा करके उसकी रक्षा कर लो। हे प्रभु, दास नानक तुम्हारी शरण में है अब तुम ही उसके सम्मान की रक्षा करो ।। २ ।। ४ ।। देवगंधारी ।। जो प्रभु का गुणानुवाद करता है मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। मैं उस साधक गुरु के दर्शन को देख देख कर जीवित बना रहता हूँ जिसके हृदय में प्रभु का नाम है ।। १ ।। रहाउ ।। हे स्वामी प्रभु, तुम समर्थ, पवित्र और निर्मल हो और हम मलीन व्यक्ति भला तुमसे किस प्रकार मिलें। हमारे मन में तो कुछ और होता है और मुख में कुछ और होता है; हम शुभ कर्मों से विहीन झूठ में ही लीन बने रहने वाले हैं ।। १ ।। हमारा बाह्य चिन्ह तो प्रभु-नाम है पर हमारे हृदय में दुष्टों जैसी दुष्टता भरी हुई है। हे स्वामी, दास नानक तुम्हारी शरण में है; जैसा तुम्हें अच्छा लगे इसे बचा ले ।। २ ।। ५ ।। देवगंधारी ।। प्रभु के नाम से विहीन गुणवान मनुष्य भी वैसा ही है जैसे कोई वह सुन्दरी हो जिसका नाक कटा हुआ हो। जैसे वेश्या के घर कोई पुत्र पैदा होता है तो उसका नाम धिक्कार से भरा हुआ होता है ।। १ ।। रहाउ ।। जिनके हृदय में स्वामी प्रभु नहीं है वह बिगड़े हुए रूप वाले कोढ़ी हैं। गुरु-विहीन अर्थात ज्ञानहीन व्यक्ति बातें तो अनेकों जानता होता है परन्तु वह प्रभु के दरबार में भ्रष्ट ही समझा जाता है ।। १ ।। जिन पर मेरा स्वामी प्रभु दयालु हो गया है वे साधु व्यक्तियों के चरणों को चूमते रहते हैं। हे नानक, पतित व्यक्ति भी साधसंगत में आकर पवित्र हो जाते हैं और सच्चे गुरु के कारण मुक्त हो जाते हैं।। २ ।। ६ ।। छका १।। (छः पंक्तियों की रचना)

देवगंधारी महला ५ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

हे माँ, चित्त को गुरु चरणों में लगाया जाना चाहिए। जब प्रभु कृपालु हो जाता है तो व्यक्ति का हृदय कमल खिल जाता है और फिर सदैव प्रभु का सुमिरन ही किया जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। अन्दर-बाहर वह एक ही प्रभु सब में समाया हुआ दिखाई देता है। प्रत्येक घट घट में और सब स्थानों में वह पूर्ण ब्रह्म ही दिखाई देता है ।। १ ।। तेरे सेवक और अनेकों मुनिजन तेरी स्तुति करते रहते हैं परन्तु कहीं भी वे तेरी सीमा को नहीं जान पाते। हे सुख देने वाले और दुखों का नाश करने वाले स्वामी, दास नानक तो यही चाहता है कि सदैव तुझ पर बलिहारी होता रहूँ ।। २ ।। १ ।। देवगंधारी ।। हे माँ, जो होना है वह होकर रहेगा। प्रभु तो अपनी रचना में आनन्दित बना हुआ है। उसे लाभ और हानि से क्या लेना देना है ।। १ ।। रहाउ ।। कहीं तो आनन्द से भरे हुए लोग फल फूल रहे हैं और कहीं विष के समान शोकाकुलता है; कभी हँसा जाता है और इस संसार में कभी रोया जाता है। कभी तो अभिमानी व्यक्ति विषयों आदि की मैल से भरे हुए दिखाई देते हैं और कभी वे ही लोग साधु पुरुषों की संगत में मैल को धोकर पवित्र हो जाते है ।। १ ।। प्रभु के किए हुए को कोई नहीं मिटा सकता और प्रभु के बिना दूसरा कोई दिखाई भी नहीं देता। नानक का कथन है कि मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसकी कृपा से सुखपूर्वक निश्चिन्त होकर रहा जाता है ।। २ ।। २ ।।

देवगंधारी ॥ माई सुनत सोच भै डरत ॥ मेर तेर तजउ अभिमाना सरनि सुआमी की परत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो कहै सोई भल मानउ नाहि न का बोल करत ॥ निमख न बिसरउ हीए मोरे ते बिसरत जाई हउ मरत ॥ १ ॥ सुखदाई पूरन प्रभु करता मेरी बहुतु इआनप जरत ॥ निरगुनि करूपि कुलहीण नानक हउ अनद रूप सुआमी भरत ॥ २ ॥ ३ ॥ देवगधारी ॥ मन हरि कीरति करि सदहूं ॥ गावत सुनत जपत उधारै बरन अबरना सभहूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह ते उपजिओ तही समाइओ इह बिधि जानी तबहूं ॥ जहा जहा इह देही धारी रहनु न पाईओ कबहूं ॥ १ ॥ सुखु आइओ भै भरम बिनासे क्रिपालु हूए प्रभ जबहू ॥ कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ साधसंगि तजि लबहूं ॥ २ ॥ ४ ॥ देवगंधारी ॥ मन जिउ अपुने प्रभ भावउ ॥ नीचहु नीचु नीचु अति नान्हा होइ गरीबु बुलावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक अडंबर माइआ के बिरथे ता सिउ प्रीति घटावउ ॥ जिउ अपुनो सुआमी सुखु मानै ता महि सोभा पावउ ॥ १ ॥ दासन दास रेणु दासन की जन की टहल कमावउ ॥ सरब सूख बडिआई नानक जीवउ मुखहु बुलावउ ॥ २ ॥ ५ ॥ देवगंधारी ॥ प्रभ जी तउ प्रसादि भ्रमु डारिओ ॥ तुमरी क्रिपा ते सभु को अपना मन महि इहै बीचारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटे तेरी सेवा दरसनि दूखु उतारिओ ॥ नामु जपत महा सुखु पाइओ चिंता रोगु बिदारिओ ॥ १ ॥ कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिसारिओ ॥ माइआ बंध काटे किरपा निधि नानक आपि उधारिओ ॥ २ ॥ ६ ॥ देवगंधारी ॥ मन सगल सिआनप रही ॥ करन करावनहार सुआमी नानक ओट गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु मेटि पए सरणाई इह मति साधू कही ॥ प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ भरमु अधेरा लही ॥ १ ॥ जान प्रबीन सुआमी प्रभ मेरे सरणि तुमारी अही ॥ खिन महि थापि उथापनहारे कुदरति कीम न पही ॥ २ ॥ ७ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ हरि प्रान प्रभू सुखदाते ॥ गुर प्रसादि काहू जाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत तुमारे तुमरे प्रीतम तिन कउ काल न खाते ॥ रंगि तुमारै लाल

देवगंधारी ।। हे माँ, यमपुरी की बातें सुनते और सोचते हुए भी डर लगता है। अब मैंने तेरे मेरे का अभिमान छोड़ दिया है और मैं स्वामी प्रभु की शरण में आ पड़ा हूँ। जो कुछ भी प्रभु कहे उसे ही भला करके मानता हूँ और न नहीं आदि व्यर्थ वचन नहीं बोलता। हे प्रभु मेरे हृदय से क्षण भर के लिए भी विस्मृत न हो क्योंकि तुम्हें भूलते ही मैं मरने लगता हूँ ।। १ ।। सुख देने वाला वह पूर्ण कर्ता-प्रभु मेरी बहुत सी मूर्खतापूर्ण बातों को सह जाता है। नानक का कथन है कि मैं गुणविहीन, कुरुप, कुलहीन हूँ तथा मेरा पति परमेश्वर आनन्द का ही साक्षात् स्वरूप है ।। २ ।। ३ ।। देवगंधारी ।। हे मन, सदैव प्रभु की कीर्ति का गायन करता रह। वह प्रभु गाते, सुनते अैर सुमिरन करते हुए ऊँचे वर्ण और तथाकथित नीचे वर्ण वाले सब का उद्धार कर देता है ।। १ ।। रहाउ ।। जीव जिससे उत्पन्न हुआ है वह उसी में समा जाता है। इस तथ्य को मैंने जान लिया है क्योंकि जहाँ-जहाँ भी इस जीव ने देह धारण की है वहाँ वह कभी भी टिक नहीं पाया है ।। १ ।। जब से प्रभु ने कृपा की है मेरा भय और भ्रम विनष्ट हो गया है और मुझे सुख ही सुख मिल गया है। नानक का कथन है कि मेरे सभी उद्देश्य पूरे हो गए हैं और साधसंगत में मैंने लोभ को त्याग दिया है ।। २ ।। ४ ।। देवगंधारी।। हे मन, जैसे भी हो अपने प्रभु के लिए अच्छा बन। तू अत्यन्त विनम्र बनते हुए तथाकथित नीचों से भी नीच बनकर उस प्रभु को पुकार ले ।। रहाउ ।। मायावी प्रपंचों के जो व्यर्थ के अनेकों आडम्बर हैं उनसे अपनी प्रीति कम कर लो। जिसमें भी अपना स्वामी प्रसन्न बना रहे उसी में ही बड़प्पन प्राप्त करो ।। १ ।। मैं तो प्रभु के दासों के दास की चरण-धूलि हूँ और प्रभु के सेवकों की सेवा करता हूँ ।। हे नानक, मुझे सभी सुख और बड़प्पन मिल गए हैं और मैं मुख से तेरा नाम बोलते हुए ही जीवित बना हुआ हूँ ।। २ ।। ५ ।। देवगंधारी ।। हे प्रभु, तेरी कृपा से ही मैंने भ्रम को त्याग दिया है। तुम्हारी कृपा से ही मेरे मन ने यह विचार किया है कि सब जीव अपने ही हैं कोई बेगाना नहीं है ।। १ ।। रहाउ ।। तेरी सेवा करने से मेरे करोड़ों अपराध मिट गए हैं और तेरे दर्शन करके मेरे दुख समाप्त हो गए हैं। तेरे नाम का सुमिरन करते हुए मैंने अत्यधिक सुख प्राप्त किया है और मेरा चिन्ता का रोग नष्ट हो गया है ।। १ ।। साधु पुरुषों के साथ रहते हुए मैंने काम, क्रोध, लोभ, झूठ निन्दा आदि को भुला दिया है। हे नानक, उस कृपा के भण्डार प्रभु ने माया के बन्धनों को काट दिया है और स्वयं मेरा उद्धार कर दिया है ।। २ ।। ६। । देवगंधारी ।। मन की समस्त चतुराईयां छूट गई है और हे नानक, वह प्रभु ही सब कुछ करने कराने वाला है और मैंने उसी का आसरा पकड़ लिया है ।। १ ।। रहाउ ।। साधुजनों के दिए हुए उपदेश के फलस्वरूप मैं अपने अभिमान को मिटाकर उसकी शरण में आ गया हूँ। प्रभु की आज्ञा को मानकर मैंने सुख प्राप्त कर लिया है और मेरा भ्रम रूपी अंधकार समाप्त हो गया है।। १ ।। हे मेरे स्वामी प्रभु, तुझे सब गुणों में पूर्ण और निपुण जानते हुए मैंने तुम्हारी शरण चाही है। हे क्षण भर में स्थापित करके उखाड़ फेंकने वाले प्रभु तेरी शक्ति की कीमत को आंका नहीं जा सकता ।। २ ।। ७ ।। देवगंधारी महला ५ ।। प्रभु ही प्राण है और सब सुखों को देने वाला है; यह तथ्य गुरु की कृपा से किसी विरले ने ही जाना है ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रियतम प्रभु, ये शान्त पुरुष तुम्हारे ही हैं और इसीलिए इन्हें काल खा नहीं सकता। ये तुम्हारे प्रेम के रंग में

भए है राम नाम रसि माते ॥ १ ॥ महा किलबिख कोटि दोख रोगा प्रभ द्रिसटि तुहारी हाते ॥ सोवत जागि हरि हरि हरि गाइआ नानक गुर चरन पराते ॥ २ ॥ ८ ॥ देवगंधारी ५ ॥ सो प्रभु जत कत पेखिओ नैणी ॥ सुखदाई जीअन को दाता अंम्रितु जा की बैणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगिआनु अधेरा संती काटिआ जीअ दानु गुर दैणी ॥ करि किरपा करि लीनो अपुना जलते सीतल होणी ॥ १ ॥ करमु धरमु किछु उपजि न आइओ नह उपजी निरमल करणी ॥ छाडि सिआनप संजम नानक लागो गुर की चरणी ॥ २ ॥ ९ ॥ देवगंधारी ५ ॥ हरि राम नामु जपि लाहा ॥ गति पावहि सुख सहज अनंदा काटे जम के फाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ हरि संत जना पहि आहा ॥ तिन्हा परापति एहु निधाना जिन्ह कै करमि लिखाहा ॥ १ ॥ से बडभागी से पतिवंते सेई पूरे साहा ॥ सुंदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन्ह हरि हरि नामु विसाहा ॥ २ ॥ १० ॥ देवगंधारी ५ ॥ मन कह अहंकारि अफारा ॥ दुरगंध अपवित्र अपावन भीतरि जो दीसै सो छारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीआ तिसु सिमरि परानी जीउ प्रान जिनि धारा ॥ तिसहि तिआगि अवर लपटावहि मरि जनमहि मुगध गवारा ॥ १ ॥ अंध गुंग पिंगुल मति हीना प्रभ राखहु राखनहारा ॥ करन करावनहार समरथा किआ नानक जंत बिचारा ॥ २ ॥ ११ ॥ देवगंधारी ५ ॥ सो प्रभु नेरै हू ते नेरै ॥ सिमरि धिआइ गाइ गुन गोबिंद दिनु रैनि साझ सवेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उधरु देह दुलभ साधू संगि हरि हरि नामु जपेरै ॥ घरी न मुहतु न चसा बिलंबहु कालु नितहि नित हेरै ॥ १ ॥ अंध बिला ते काढहु करते किआ नाही घरि तेरै ॥ नामु अधारु दीजै नानक कउ आनद सूख घनेरै ॥ २ ॥ १२ ॥ छके २ ॥ देवगंधारी ५ ॥ मन गुर मिलि नामु अराधिओ ॥ सूख सहज आनंद मंगल रस जीवन का मूलु बाधिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो काटे माइआ फाधिओ ॥ भाउ भगति गाइ गुण गोबिद जम का मारगु साधिओ ॥ १ ॥ भइओ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा अमोल पदारथु लाधिओ ॥ बलिहारै नानक

लाल हो गए हैं और राम-नाम के रस में मस्त बने हुए हैं ।। १।। हे प्रभु, केवल तुम्हारी कृपादृष्टि के फलस्वरूप ही करोड़ों महापाप और दुख रोग नष्ट हो जाते हैं। हे नानक, मैंने सोते हुए से जागकर उस प्रभु के गुणों का गायन किया और मैं गुरु के चरणों में आ पड़ा हूँ ।। २ ।। ८ ।। देवगंधारी ५।। यहाँ-वहाँ सभी ओर उस प्रभु को ही अपनी आँखों से मैने देखा है। वह सुख देने वाला जीवों का दाता है और उसके वचन अमृत के समान हैं ।। १।। रहाउ ।। संत पुरुषों ने मेरे अज्ञान के अन्धेरे को समाप्त कर दिया है और मेरा गुरु मुझे जीवन दान देने वाला दाता है। उसने कृपा करके मुझे अपना बना दिया है जिससे तृष्णा की अग्नि में जलता हुआ मैं शीतल हो गया हूँ। मैंने कुछ भी धर्म-कर्म पैदा नहीं किया है और न ही मैं निर्मल आचरण उत्पन्न कर सका हूँ। इसीलिए हे नानक, मैं सभी चतुराईयों और संकोच को छोड़कर गुरु के चरणों में आ लगा हूँ ।। २ ।। ९ ।। देवगंधारी ५ ।। हे जीव, प्रभु के नाम का सुमिरन कर इसी में तेरा लाभ है। सुमिरन के फलस्वरूप ही व्यक्ति मुक्ति, सहज सुख और आनन्द प्राप्त करता है और उसके यमपाश कट जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। खोजते-खोजते मैंने यह विचार बना लिया है कि प्रभु-नाम शान्त पुरुषों के पास ही है। जिनके भाग्य में लिखा होता है उन्हें ही यह खज़ाना प्राप्त होता है ।। १ ।। वे ही भाग्यशाली हैं, सम्मानित व्यक्ति हैं और पूर्ण साहूकार हैं जिन्होंने हे नानक, प्रभु-नाम पर भरोसा किया है। वास्तव में वे ही सुन्दर एवं मनमोहक है ।। २ ।। १० ।। देवगंधारी ५ ।। हे मन, तू अहंकार में क्यों अकड़ा हुआ है। शरीर के भीतर तो अपवित्र, अशुद्ध दुर्गन्ध ही भरी हुई है और जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह सब कुछ राख के बराबर ही है ।। १ ।। रहाउ ।। हे जीव, उसका सुमिरन कर जिसने तेरी रचना की है और जिसने तुझे जीव और प्राण धारण करने के लिए दिए हैं। उसको छोड़कर तू अन्यों में लिपट रहा है इसलिए हे गँवार मूर्ख तू मरता जन्मता रहता है।। हे नानक, यह जीव बेचारा किस योग्य है, क्योंकि करने कराने में समर्थ वह केवल प्रभु ही है ।। २ ।। ११ ।। देवगंधारी ५ ।। वह प्रभु बहुत ही पास और समीप ही है। हे जीव, तू दिन रात, सुबह शाम उस प्रभु के गुण गाता रह ।। १ ।। रहाउ ।। हे देही, तू भी साधसंगत के माध्यम से प्रभु-नाम का सुमिरन करके अपना उद्धार कर ले। काल तो सदैव तुझे खोजता फिर रहा है और यहाँ से ले जाने के लिए वह घड़ी, मुहूर्त और निमेष जितना भी विलम्ब नहीं करेगा ।। १ ।। हे प्रभु, तेरे घर में क्या नहीं है। तू मुझे संसार रूपी इस अंधी गुफा से बाहर निकाल ले। नानक को हे प्रभु, तू अपने नाम का आसरा प्रदान कर जिससे उसे अत्यधिक सुख और आनन्द बना रहे ।। २ ।। १२ ।। छके (छः पंक्तियों वाले) ।। २ ।। देवगंधारी ५ ।। मन ने गुरु को मिलकर प्रभु नाम की आराधना की है और इस प्रकार सहज सुख आनन्द मंगल और जीवन के रस की नींव डाल दी है ।। १ ।। रहाउ।। प्रभु ने अपनी कृपा करके मुझे अपना सेवक बना लिया है और मेरे माया के बंधन काट दिए हैं। प्रेम और श्रद्धा से प्रभु के गुणों का गायन किया है जिससे यम के रास्ते को मैंने जीत लिया है ।। १ ।। प्रभु की कृपा हुई और मेरे मन पर पड़ा हुआ काल रूपी जंग उतर गया है तथा मुझे प्रभु-नाम रूपी अमूल्य पदार्थ मिल गया है। हे नानक, मैं अगम्य और अत्यन्त गहन स्वामी पर

लख बेरा मेरे ठाकुर अगम अगाधिओ ॥ २ ॥ १३ ॥ देवगंधारी ५ ॥ माई जो प्रभ के गुन गावै ॥ सफल आइआ जीवन फलु ता को पारब्रहम लिव लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघड़ु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ॥ नामु उचारु करे हरि रसना बहुड़ि न जोनी धावै ॥ १ ॥ पूरन ब्रहमु रविआ मन तन महि आन न द्रिसटी आवै ॥ नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लड़ि लावै ॥ २ ॥ १४ ॥ देवगंधारी ५ ॥ चंचलु सुपनै ही उरझाइओ ॥ इतनी न बूझै कबहू चलना बिकल भइओ संगि माइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसम रंग संग रसि रचिआ बिखिआ एक उपाइओ ॥ लोभ सुनै मनि सुखु करि मानै बेगि तहा उठि धाइओ ॥ १ ॥ फिरत फिरत बहुतु स्रमु पाइओ संत दुआरै आइओ ॥ करी क्रिपा पारब्रहमि सुआमी नानक लीओ समाइओ ॥ २ ॥ १५ ॥ देवगंधारी ५ ॥ सरब सुखा गुर चरना ॥ कलिमल डारन मनहि सधारन इह आसर मोहि तरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा अरचा सेवा बंदन इहै टहल मोहि करना ॥ बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥ १ ॥ सफल मूरति परसउ संतन की इहै धिआना धरना ॥ भइओ क्रिपालु ठाकुरु नानक कउ परिओ साध की सरना ॥ २ ॥ १६ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ अपुने हरि पहि बिनती कहीऐ ॥ चारि पदारथ अनद मंगल निधि सूख सहज सिधि लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानु तिआगि हरि चरनी लागउ तिसु प्रभ अंचलु गहीऐ ॥ आंच न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की अहीऐ ॥ १ ॥ कोटि पराध महा अक्रितघन बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ ॥ करुणा मै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीऐ ॥ २ ॥ १७ ॥ देवगंधारी ५ ॥ गुर के चरन रिदै परवेसा ॥ रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना ॥ नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि धिआना ॥ १ ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो बंधन तोरि निरारे ॥ जपि जपि नामु जीवा तेरी बाणी नानक दास बलिहारे ॥ २ ॥ १८ ॥ छके ३ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ माई प्रभ के चरन

लाखों बार बलिहारी जाता हूँ ।। २ ।। १३ ।। देवगंधारी ५ ।। हे माई, जो प्रभु के गुण गाता है उसका संसार में आना सफल है और उसी को ही जीवन का वास्तविक फल प्राप्त होता है और वह ही परब्रह्म प्रभु में अपनी लौ लगाए रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। जो साधु पुरुषों की संगत पा लेता है वही सुन्दर, सुघढ़, शूरवीर और ज्ञानवान हो जाता है। वह अपनी जीभ से प्रभु-नाम का उच्चारण करता है और फिर योनियों में नहीं भटकता रहता ।। १ ।। पूर्ण ब्रह्म उसके मन तन में समाया रहता है और उसे अन्य कोई भी नज़र नहीं आता। प्रभु के सेवक के साथ नर्क रूपी रोग नष्ट हो जाता है और हे नानक, ऐसा उसी के साथ होता है जिसे प्रभु स्वयं थाम लेता है ।। २ ।। १४ ।। देवगंधारी ५ ।। चंचल मन सपने में ही उलझा हुआ है। वह इतनी सी बात भी नहीं समझता कि यहाँ से किसी भी समय चल पड़ना है; वह माया के साथ ही पूरी तरह व्याकुल बना हुआ है ।। १ ।। रहाउ ।। वह शीघ्र मुरझा जाने वाले फूलों के प्रेम में ही लीन बना हुआ है और केवल विषय-विकारों के लिए ही प्रयत्न करता रहता है। जहाँ किसी लोभ की बात सुनता है तो मन में सुख माँग कर शीघ्र ही उस ओर भाग उठता है ।। १ ।। दौड़ते भागते इसने बहुत दुख उठाया और अन्ततः यह शान्त पुरुषों के द्वार पर आन पड़ा है। हे नानक, परब्रह्म प्रभु ने अब इस पर कृपा की है और इसे अपने साथ मिला लिया है ।। २ ।। १५ ।। देवगंधारी ५ ।। सभी सुख गुरु के चरणों में ही हैं। यही चरण पापों को दूर करने वाले और मन को आश्रय देने वाले हैं; इन्हीं के आसरे मुझे पार उतरना है ।। १ ।। रहाउ ।। मुझे इन्हीं की सेवा, वन्दना और पूजा अर्चना करनी है। इन्हीं के कारण मेरा मन खिल उठता है, मेरे अन्दर ज्ञान का प्रकाश हो जाता है जिससे मुझे फिर गर्भ में नहीं पड़ना पड़ता ।। १ ।। मुझे इसी तथ्य का ध्यान बनाए रखना है कि मैं शान्त पुरुषों का फलदायक दर्शन प्राप्त करूँ। नानक का ठाकुर प्रभु कृपालु हो गया है और मैं अब साधु पुरुषों की शरण में आ गया हूँ ।। २ ।। १६ ।। देवगंधारी महला ५ ।। अपने प्रभु से ही प्रार्थना की जानी चाहिए और उसी से ही चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) आनन्द और मंगल का भण्डार तथा सहज सुख और सभी शक्तियां प्राप्त की जाती हैं ।। १ ।। रहाउ ।। अपने अभिमान को त्याग कर उस प्रभु का आँचल पकड़ते हुए प्रभु के चरणों में पड़ना चाहिए। यदि परमात्मा का आसरा मांगा जाए तो तृष्णा के अग्नि सागर की आँच नहीं लग पाती।। १ ।। प्रभु ऐसा सहनशील है कि बड़े बड़े कृतघ्न लोगों के बार-बार किए हुए पापों को भी वह सहारता रहता है। हे नानक, वह पूर्ण परमेश्वर करुणामय है और हमें उसी की शरण में आना चाहिए ।। २ ।। १७ ।। देवगंधारी ५ ।। गुरु के चरण हृदय में धारण करने से रोग शोक और सभी दुख नष्ट हो जाते हैं तथा सभी क्लेश समाप्त हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। गुरु के चरणों के फलस्वरूप जन्म-जन्मान्तरों के पाप भाग खड़े होते हैं और करोड़ों तीर्थ स्नानों जैसी स्थिति बन जाती है। प्रभु के गुण गाते हुए नाम का भण्डार प्राप्त हो जाता है और सहजभाव से ही उस प्रभु में ध्यान लग जाता है ।। १ ।। प्रभु ने अपनी कृपा करके मुझे अपना सेवक बना लिया है और मेरे बन्धनों को मुझसे तोड़कर अलग कर लिया है। हे प्रभु, दास नानक तुझ पर बलिहारी जाता है और तेरे नाम का सुमिरन करके ही जीवित बना रहता है ।। २ ।। १८ ।। छके ३ ।। देवगंधारी महला ५ ।। हे माँ, मैं केवल प्रभु के चरणों की

निहारउ ॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे मन ते कबहु न डारउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू धूरि लाई मुखि मसतकि काम क्रोध बिखु जारउ ॥ सभ ते नीचु आतम करि मानउ मन महि इहु सुखु धारउ ॥ १ ॥ गुन गावह ठाकुर अबिनासी कलमल सगले झारउ ॥ नाम निधानु नानक दानु पावउ कंठि लाइ उरि धारउ ॥ २ ॥ १९ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ प्रभ जीउ पेखउ दरसु तुमारा ॥ सुंदर धिआनु धारु दिनु रैनी जीअ प्रान ते पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पुरान अविलोके सिम्रिति ततु बीचारा ॥ दीना नाथ प्रानपति पूरन भवजल उधरनहारा ॥ १ ॥ आदि जुगादि भगत जन सेवक ता की बिखै अधारा ॥ तिन जन की धूरि बाछै नित नानकु परमेसरु देवनहारा ॥ २ ॥ २० ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ तेरा जनु राम रसाइणि माता ॥ प्रेम रसा निधि जा कउ उपजी छोडि न कतहू जाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बैठत हरि हरि सोवत हरि हरि हरि रसु भोजनु खाता ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीनो साधू धूरी नाता ॥ १ ॥ सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता ॥ सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहमु पछाता ॥ २ ॥ २१ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ माई गुर बिनु गिआनु न पाईऐ ॥ अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह रोग सोग तनु बाधिओ बहु जोनी भरमाईऐ ॥ टिकनु न पावै बिनु सतसंगति किसु आगै जाइ रूआईऐ ॥ १ ॥ करै अनुग्रहु सुआमी मेरा साध चरन चितु लाईऐ ॥ संकट घोर कटे खिन भीतरि नानक हरि दरसि समाईऐ ॥ २ ॥ २२ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ ठाकुर होए आपि दइआल ॥ भई कलिआण अनंद रूप होई है उबरे बाल गुपाल ॥ रहाउ ॥ दुइ कर जोड़ि करी बेनंती पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥ हाथु देइ राखे परमेसुरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ वर नारी मिलि मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु नानक जन कउ बलि जाईऐ जो सभना करे उधारु ॥ २ ॥ २३ ॥

ओर ही देखूँ। हे मेरे स्वामी प्रभु, मुझ पर कृपा करो ताकि मैं अपने मन से तुम्हें दूर न करूँ ।। १ ।। रहाउ ।। साधु पुरुषों की चरण धूलि में मुख और माथे पर लगाऊँ और काम, क्रोध जैसे विष को जला डालूँ। अपने आप को मैं सबसे निचले दर्जे का समझूँ और इसी बात पर मन में सुखी बना रहूँ ।। १ ।। उस अविनाशी प्रभु के गुणों का गायन करते हुए मैं अपने समस्त पाप झाड़ कर फेंक दूँ। हे नानक, प्रभु नाम का खज़ाना दान स्वरूप मैं प्राप्त करूँ और उसे गले से लगाकर हृदय में धारण किए रहूँ ।। २ ।। १६ ।। देवगंधारी महला ५ ।। हे प्रभु जी, मैं तुम्हारा दर्शन देख लूँ क्योंकि तुम ही वह सुन्दर स्वरूप हो जिसको मैं दिन रात ध्यान में धारण किए रहता हूँ और तुम्हारा स्वरूप ही मुझे अपनी आत्मा और प्राणों से भी प्यारा है ।। १ ।। रहाउ ।। मैंने शास्त्र, वेद, पुराण, स्मृतियां आदि को देख परख कर यह सार तत्व निकाला है कि केवल दीनों का नाथ सबके प्राणों का स्वामी पूर्ण प्रभु ही संसार सागर से पार उतारने वाला है। प्रारम्भ से ही युगों के भी आरम्भ से ही हे प्रभु, तुम ही भक्तों और सेवकों का इन विषय विकारों के संसार में आसरा बने रहे हो। नानक तो सदैव उन सेवकों की चरण-धूलि की कामना करता है जो केवल परमेश्वर को ही सब कुछ देने वाला मानते हैं ।। २ ।। २० ।। देवगंधारी महला ५ ।। हे प्रभु, तेरा सेवक तो राम रसायन पीकर ही मस्त बना रहता है। नाम के प्रेम रस का भण्डार जिसके हृदय में उत्पन्न हो गया वह फिर उसे छोड़कर कहीं भी नहीं जाता ।। १ ।। रहाउ ।। ऐसा व्यक्ति बैठते सोते हुए हरि-नाम का ही सुमिरन करता रहता है और हरि-नाम रूपी रस को ही भोजन के तौर पर खाता रहता है। इस प्रकार का व्यक्ति ही अड़सठ तीर्थों के स्नान का फल पाने वाला बन जाता है जो वास्तव में साधु पुरुषों की चरण-धूलि में स्नान कर लेता है ।। १ ।। उस प्रभु के सेवक का जीवन सफल बन जाता है जिसने लोगों को सुधार कर प्रभु के अच्छे पुत्र बना दिया है। ऐसे सेवक सम्पूर्ण लोगों को साथ लेकर संसार-सागर से पार उतर जाते हैं और हे नानक, ऐसे ही लोगों ने पूर्ण ब्रह्म की पहचान की हुई होती है ।। २ ।। २१ ।। देवगंधारी महला ५ ।। हे मेरी माँ, गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता; लोग तो अनेकों प्रकार से चीख पुकार लगाते हुए भटकते रहते हैं परन्तु वे अपने प्रपंचों से धरतियों के स्वामी उस प्रभु को नहीं मिल पाते। मोह और शोक जैसे रोगों को अपने तन से बाँधे हुए लोग अनेकों योनियों में भटकते रहते हैं। सद्संगत के बिना ऐसे व्यक्ति कहीं भी स्थिर नहीं बने रह पाते और उन्हें अनुभव होता रहता है कि अब किसके सामने जाकर रोयें ।। १ ।। यदि मेरा स्वामी प्रभु कृपा कर दे तो व्यक्ति साधु पुरुषों के चरणों में अपना चित्त जोड़ लेता है। ऐसा करने से हे नानक, व्यक्ति के घोर संकट क्षण-भर में कट जाते हैं और व्यक्ति प्रभु के दर्शनों में ही लीन बना रहता है ।। २ ।। २२ ।। देवगंधारी महला ५ ।। उस प्रभु के स्वयं दयालु हो जाने से मेरा कल्याण हो गया है और मैं आनन्द रूप हो गया हूँ तथा सभी बाल-गोपालों का (जीवों का) उद्धार हो गया है ।। रहाउ।। दोनों हाथ जोड़कर मैंने विनती की और परब्रह्म प्रभु का मन से सुमिरन किया तो उस परमेश्वर ने अपना हाथ देकर मेरी रक्षा की और मेरा सम्पूर्ण दुख मिटा दिया है। सभी स्त्री पुरुषों ने मिलकर उस प्रभु का जयकार किया तथा मंगल गीतों का गान किया। नानक का कथन है कि प्रभु के सेवकों पर बलिहारी जाना चाहिए जो सब का उद्धार कर देते हैं ।। २ ।। २३।।

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

देवगंधारी महला ५ ॥ अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ ॥ भए क्रिपाल दइआल दुख भंजन मेरा सगल अंदेसरा गइआ ॥ रहाउ ॥ हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुनु अवगुनु सभु सहिआ ॥ करु मसतकि धारि साजि निवाजे मुए दुसट जो खइआ ॥ १ ॥ परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ ॥ कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ ॥ २ ॥ २४ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ अनाथ नाथ प्रभ हमारे ॥ सरनि आइओ राखनहारे ॥ रहाउ ॥ सरब पाख राखु मुरारे ॥ आगै पाछै अंती वारे ॥ १ ॥ जब चितवउ तब तुहारे ॥ उन सम्हारि मेरा मनु सधारे ॥ २ ॥ सुनि गावउ गुर बचनारे ॥ बलि बलि जाउ साध दरसारे ॥ ३ ॥ मन महि राखउ एक असारे ॥ नानक प्रभ मेरे करनैहारे ॥ ४ ॥ २५ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ प्रभ इहै मनोरथु मेरा ॥ क्रिपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ॥ रहाउ ॥ प्रातहकाल लागउ जन चरनी निस बासुर दरसु पावउ ॥ तनु मनु अरपि करउ जन सेवा रसना हरि गुन गावउ ॥ १ ॥ सासि सासि सिमरउ प्रभु अपुना संतसंगि नित रहीऐ ॥ एकु अधारु नामु धनु मोरा अनदु नानक इहु लहीऐ ॥ २ ॥ २६ ॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मीता ऐसे हरि जीउ पाए ॥ छोडि न जाई सद ही संगे अनदिनु गुर मिलि गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलिओ मनोहरु सरब सुखैना तिआगि न कतहू जाए ॥ अनिक अनिक भाति बहु पेखे प्रिअ रोम न समसरि लाए ॥ १ ॥ मंदरि भागु सोभ दुआरै अनहत रुणु झुणु लाए ॥ कहु नानक सदा रंगु माणे ग्रिह प्रिअ थीते सद थाए ॥ २ ॥ १ ॥ २७ ॥ देवगंधारी ५ ॥ दरसन नाम कउ मनु आछै ॥ भ्रमि आइओ है सगल थान रे आहि परिओ संत पाछै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किसु हउ सेवी किसु आराधी जो दिसटै सो

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि

देवगंधारी महला ५ ।। मैंने उस सच्चे गुरु परमात्मा के समक्ष अरदास की तो वह दुखों का नाशक दयालु प्रभु कृपालु हुआ जिससे मेरी सारी चिन्ताएं समाप्त हो गई हैं।। रहाउ ।। हम सब तो पापी पाखण्डी और लोभी हैं परन्तु उस प्रभु ने हमारे सभी गुण दोषों को सहन किया है। उसने हमारे माथे पर हाथ रख कर हमें बड़प्पन प्रदान किया जिससे जो मारने वाले थे उन सब का स्वयं ही नाश हो गया ।। १ ।। वह प्रभु सबका उपकार करने वाला सबका आधार बना रहने वाला है जिसके दर्शन से अवश्य अच्छा फल प्राप्त होता है; वही सहज और शान्ति का पुंज है। नानक का कथन है कि वह प्रभु गुणविहीनों का भी दाता है ओर मैंने उसी के चरण कमलों को हृदय में धारण किया है ।। २ ।। २४ ।। देवगंधारी महला ५ ।। हे हमारे प्रभु, तुम अनाथों के नाथ हो और हे रक्षक प्रभु, हम लोग तेरी ही शरण में आन पड़े हैं ।। रहाउ ।। हे प्रभु, सभी ओर से हमारी रक्षा करो। आगे पीछे और जीवन के अन्तिम अवसर में भी हमारी रक्षा करते रहो ।। १ ।। मैं जब भी स्मरण करता हूँ तो तुम्हारे ही गुणों को याद करता हूँ। तुम्हारे गुणों को हृदय में संभालकर वास्तव में मेरा मन सुधर जाता है ।। २ ।। गुरु के वचनों को सुनकर हे प्रभु, मैं तेरे गुण गाता हूँ और मैं गुरु के दर्शनों पर बलिहारी जाता हूँ ।। ३ ।। मैं मन में केवल एक प्रभु का ही आसरा रखता हूँ। हे नानक, मेरा प्रभु ही सब कुछ करने वाला है ।। ४ ।। २५ ।। देवगंधारी महला ५ ।। हे प्रभु, मेरा सब से बड़ा उद्देश्य यह है कि हे कृपा के भण्डार दयालु प्रभु, मुझे शान्त पुरुषों का सेवक बना दे ।। रहाउ ।। प्रातःकाल भी मैं तेरे सेवकों के चरणों में लगा रहूँ और दिन-रात उन्हीं का दर्शन करता रहूँ। मैं अपना सम्पूर्ण तन और मन अर्पण करके तेरे सेवकों की सेवा करूँ और अपनी जीभ से प्रभु के गुणों का गायन करता रहूँ ।। १ ।। मैं प्रत्येक श्वास के साथ अपने प्रभु का सुमिरन करता रहूँ और सदैव शान्त पुरुषों की संगत में बना रहूँ। प्रभु का नाम-धन ही मेरा एक मात्र आधार है और हे नानक, मैं इस आनन्द को सदैव लेता रहूँ ।। २ ।। २६ ।।

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ३ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

प्रभु में मैंने ऐसा मित्र प्राप्त कर लिया है जो सदैव मेरे साथ ही बना रहता है, मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाता और गुरु से मिलकर मैं प्रतिदिन उसके गुण गाता हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। सबको सुख देने वाला वह मनोहर प्रभु मुझे मिल गया है और वह मुझे छोड़कर कहीं भी नहीं जाता। मैंने अनेकों प्रकार के लोगों को देखा है परन्तु मेरे प्रियतम प्रभु के एक रोम के बराबर भी वे नहीं हैं ।। १ ।। उसके मन्दिर (स्थान) और द्वार सदैव शोभायमान बने रहते हैं और अनहद् शब्द की धीमी-धीमी धुन वहाँ चलती ही रहती है। नानक का कथन है कि जो प्रभु के स्थान पर सदा के लिए स्थित हो जाते हैं वे सदैव उस प्रभु का आनन्द भोगते रहते हैं ।। २ ।। १ ।। २७ ।। देवगंधारी ५ ।। मेरा मन सदैव दर्शनों की कामना करता रहता है और सब स्थानों में भटककर अब शान्त पुरुषों के पीछे आ लगा है ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, मैं किसकी सेवा करूँ, किसकी आराधना करूँ क्योंकि मुझे जो कुछ भी दिखाई देता है

गाछै ॥ साधसंगति की सरनी परीऐ चरण रेनु मनु बाछै ॥ १ ॥ जुगति न जाना गुनु नही कोई महा दुतरु माइ आछै ॥ आइ पइओ नानक गुर चरनी तउ उतरी सगल दुराछै ॥ २ ॥ २ ॥ २८ ॥ देवगंधारी ५ ॥ अंम्रिता प्रिअ बचन तुहारे ॥ अति सुंदर मनमोहन पिआरे सभहू मधि निरारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा मोहि ठाकुर ही दरसारे ॥ १ ॥ दीनु दुआरै आइओ ठाकुर सरनि परिओ संत हारे ॥ कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥ २ ॥ ३ ॥ २९ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ हरि जपि सेवकु पारि उतारिओ ॥ दीन दइआल भए प्रभ अपने बहुड़ि जनमि नही मारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगमि गुण गावह हरि के रतन जनमु नही हारिओ ॥ प्रभ गुन गाइ बिखै बनु तरिआ कुलह समूह उधारिओ ॥ १ ॥ चरन कमल बसिआ रिद भीतरि सासि गिरासि उचारिओ ॥ नानक ओट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिओ ॥ २ ॥ ४ ॥ ३० ॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

करत फिरे बन भेख मोहन रहत निरार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कथन सुनावन गीत नीके गावन मन महि धरते गार ॥ १ ॥ अति सुंदर बहु चतुर सिआने बिदिआ रसना चार ॥ २ ॥ मान मोह मेर तेर बिबरजित एहु मारगु खंडे धार ॥ ३ ॥ कहु नानक तिनि भवजलु तरीअले प्रभ किरपा संत संगार ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मै पेखिओ री ऊचा मोहनु सभ ते ऊचा ॥ आन न समसरि कोऊ लागै ढूढि रहे हम मूचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु बेअंतु अति बडो गाहरो थाह नही अगहूचा ॥ तोलि न तुलीऐ मोलि न मुलीऐ कत पाईऐ मन रूचा ॥ १ ॥ खोज असंखा अनिक तपंथा बिनु गुर नही पहूचा ॥ कहु नानक किरपा करी ठाकुर मिलि

वह सब चला जाने वाला ही है अर्थात चलायमान है। मेरा मन तो साधसंगत की चरण-धूलि माँगता है और साधसंगत की शरण में ही पड़ा रहना चाहता है ।। १ ।। न तो मैं कोई युक्ति जानता हूँ और न ही मेरे पास कोई गुण है; माया मेरे सामने एक बहुत ही कठिनाई से तैरे जाने वाले सागर की तरह है। हे नानक, जब मैं गुरु के चरणों में आन पड़ा हूँ तो मेरी समस्त बुरी इच्छाएं (वासनाएं) समाप्त हो गई हैं ।। २ ।। २ ।। २८ ।। देवगंधारी ५ ।। हे प्रिय, तुम्हारे वचन अमृत के समान हैं। हे मन को मोहने वाले प्यारे प्रभु, तुम अत्यन्त सुन्दर हो, सबमें विराजमान हो और सब से निराले भी हो ।। १ ।। रहाउ ।। मेरे मन में तेरे चरण-कमलों की प्रीति बनी हुई है इसलिए मुझे न तो राज की इच्छा है और न ही मुझे मुक्ति की इच्छा है। अन्यों के लिए तो ब्रह्मा, महेश, सिद्धगण, मुनिगण और इन्द्र जैसों की चाहना होगी परन्तु मुझे तो केवल अपने प्रभु के ही दर्शन की इच्छा है ।। १ ।। हे प्रभु, मैं दीन व्यक्ति तेरे द्वार पर आया हूँ और हार कर शान्त पुरुषों की शरण में पड़ा हुआ हूँ।। नानक का कथन है कि जब मनोहर प्रभु मिल जाता है तो मन शीतल होकर खिल उठता है ।। २ ।। ३ ।। ३६ ।। देवगंधारी महला ५ ।। प्रभु का जाप करते हुए सेवक को प्रभु ने पार उतार लिया है। दीनदयालु प्रभु अब मेरा अपना हो गया है जिससे अब उसने बार बार मुझे जन्म मरण के चक्कर में नही डाला है ।। १ ।। रहाउ ।। साधुसंगति में जो प्रभु के गुण गाते हैं वे इस रत्न रूपी जीवन को हारते नहीं। प्रभु के गुण गाते हुए विषय-विकार रूपी सागर से पार हुआ जाता है और समस्त कुलों का भी उद्धार हो जाता है ।। १ ।। प्रभु के चरण-कमल हृदय में जब आ बसते हैं तो हर श्वास और ग्रास के साथ उसी प्रभु के नाम का उच्चारण होता है। हे नानक, संसार के स्वामी उस प्रभु की शरण मैंने पकड़ ली है और मैं बार बार उस पर बलिहारी जाता हूँ ।। २ ।। ४ ।। ३०।।

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ४ ।। १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

लोग वेष बनाकर उस प्रभु के लिए जंगलों में भटकते रहते हैं परन्तु वह मोहन प्रभु उन सब से अलग ही बना रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। ऐसे व्यक्ति मुँह से सुन्दर बातें सुनाते हैं, सुन्दर गीत गाते हैं परन्तु मन में सदैव गंदगी ही धारण किए रहते हैं ।। १ ।। जो वास्तव में विद्या के कारण सुन्दर जीभ (वाणी) वाले हैं वे ही वास्तव में चतुर, सयाने और अच्छे हैं ।।२।। मान, मोह और तेरे मेरे को छोड़ने का मार्ग वास्तव में खड्ग की धार के समान है ।। ३ ।। नानक का कथन है कि प्रभु की कृपा से जिनकी संगत शान्त पुरुषों के साथ हो गई है उन्होंने ही संसार सागर को पार कर लिया है ।। ४ ।। १ ।। ३१ ।।

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

हे सखी, मैंने उस प्रभु को सबसे ऊँचा देखा है। हम सब उसे बहुत ही ढूंढते रहे हैं परन्तु उसके जैसा दूसरा कोई दिखाई नहीं देता ।। १ ।। रहाउ ।। वह अनन्त, अत्यन्त बड़ा, गहरा और इतना ऊँचा है कि उसकी थाह नहीं पायी जा सकती। उसको तौला नहीं जा सकता, उसकी कीमत नहीं आंकी जा सकती तो भला मन को रुचिकर लगने वाले उस प्रभु को कैसे पाया जाए ।। १ ।। असंख्य विधियों से उसकी खोज की, उसको अनेकों मार्गों में देखा परन्तु वास्तव में गुरु के बिना उस तक नहीं पहुँचा जा सकता। नानक का कथन है कि उस प्रभु ने ही जब कृपा की तो

साधू रस भूंचा ॥ २ ॥ १ ॥ ३२ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ मै बहु बिधि पेखिओ दूजा नाही री कोऊ ॥ खंड दीप सभ भीतरि रविआ पूरि रहिआ सभ लोऊ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगंमा कवन महिंमा मनु जीवै सुनि सोऊ ॥ चारि आसरम चारि बरंना मुकति भए सेवतोऊ ॥ १ ॥ गुरि सबदु द्रिड़ाइआ परम पदु पाइआ दुतीअ गए सुख होऊ ॥ कहु नानक भव सागरु तरिआ हरि निधि पाई सहजोऊ ॥ २ ॥ २ ॥ ३३ ॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

एकै रे हरि एकै जान ॥ एकै रे गुरमुखि जान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहे भ्रमत हउ तुम भ्रमहु न भाई रविआ रे रविआ स्रब थान ॥ १ ॥ जिउ बैसंतरु कासट मझारि बिनु संजम नही कारज सारि ॥ बिनु गुर न पावैगो हरि जी को दुआर ॥ मिलि संगति तजि अभिमान कहु नानक पाए है परम निधान ॥ २ ॥ १ ॥ ३४ ॥ देवगंधारी ५ ॥ जानी न जाई ता की गाति ॥ १ ॥ रहाउ कह पेखारउ हउ करि चतुराई बिसमन बिसमे कहन कहाति ॥ १ ॥ गण गंधरब सिध अरु साधिक ॥ सुरि नर देव ब्रहम ब्रहमादिक ॥ चतुर बेद उचरत दिनु राति ॥ अगम अगम ठाकुरु आगाधि ॥ गुन बेअंत बेअंत भनु नानक कहनु न जाई परै पराति ॥ २ ॥ २ ॥ ३५ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ धिआए गाए करनैहार ॥ भउ नाही सुख सहज अनंदा अनिक ओही रे एक समार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल मूरति गुरु मेरै माथै ॥ जत कत पेखउ तत तत साथै ॥ चरन कमल मेरे प्रान अधार ॥ १ ॥ समरथ अथाह बडा प्रभु मेरा ॥ घट घट अंतरि साहिबु नेरा ॥ ता की सरनि आसर प्रभ नानक जा का अंतु न पारावार ॥ २ ॥ ३ ॥ ३६ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ उलटी रे मन उलटी रे ॥ साकत सिउ करि उलटी रे ॥ झूठै की रे झूठु परीति छुटकी रे मन छुटकी रे साकत संगि न छुटकी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ काजर भरि मंदरु राखिओ जो पैसै कालूखी रे ॥ दूरहु ही ते भागि गइओ है जिसु गुर मिलि छुटकी त्रिकुटी रे ॥ १ ॥ मागउ दानु क्रिपाल क्रिपा निधि मेरा

साधु पुरुषों के साथ मिलकर हमने नाम-रस का आनन्द लिया है।। २ ।। १ ।। ३२ ।। देवगंधारी महला ५ ।। हे सखी, मैंने बहुत विधियाँ अपना कर देख ली हैं। उसके जैसे अन्य कोई नहीं है। वह सभी खण्डों, द्वीपों में रमण कर रहा है और सभी लोकों में भी वही विद्यमान है ।। १ ।। रहाउ ।। वह परे से परे है, उसकी महिमा कौन जान सकता है; हमारा मन तो केवल उसी की चर्चा को सुनकर आध्यात्मिक रूप से जीवित बना रहता है। चारों वर्णों और चारों आश्रमों में विचरण करने वाले सभी लोग, हे प्रभु, केवल तेरी सेवा करके ही मुक्त होते हैं ।। १ ।। गुरु ने शब्द को मन में पक्का कर दिया है और उसी से परम पद प्राप्त हो गया है; मन से द्वैतभाव चला गया और सुख पैदा हो गया है। नानक का कथन है कि अब स्वाभाविक तौर से ही प्रभु रूपी खज़ाना प्राप्त करके यह संसार रूपी सागर पार कर लिया गया है ।।२।।२।।३३।।

राागु देवगंधारी महला ५ घरु ६ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

वह प्रभु एक ही है और हे जीव, तू उसे एक ही समझ। वह एक ही है उसे गुरमुख बनकर जान ले ।। १ ।। रहाउ।। तुम क्यों भटकते हो, हे भाई, तुम भटको मत क्योंकि वह तो सभी स्थानों में रमण कर रहा है ।। १ ।। जिस प्रकार लकड़ी में ही आग होती है परन्तु उस आग को उत्पन्न करने की विधि जाने बिना हमारा काम नहीं बनता; उसी प्रकार गुरु के बिना प्रभु का द्वार नहीं पाया जा सकता। नानक का कथन है कि संगत में मिल बैठकर, अभिमान को तजकर प्रभु के नाम रूपी परम भण्डार को पाया जाता है ।। २ ।। १ ।। ३४ ।। देवगंधारी ५ ।। उस प्रभु की गति को नहीं जाना जा सकता ।। १ ।। रहाउ।। मैं अपनी चतुरता से उसकी गति को कैसे दिखाऊँ क्योंकि उसकी अवस्था का वर्णन करने वाले तो विस्मय से भरपूर बने रहते हैं ।। १ ।। गण, गंधर्व, सिद्ध, साधक, देवता, मनुष्य, ब्रह्मऋषि और ब्रह्मा आदि तथा चारों वेद दिन रात यही उच्चारण करते रहते हैं कि वह प्रभु अगम्य एवं अत्यन्त गहरा है जिसकी थाह नहीं पाई जा सकती। हे नानक, उस प्रभु के गुण अनन्त हैं, ऐसा ही कहा जाना चाहिए क्योंकि अगम्य होने के करण उनका वर्णन नहीं हो सकता ।। २ ।। २ ।। ३५ ।। देवगंधारी महला ५।। उस प्रभु का सुमिरन और गायन करने से भय नहीं रहता, सहज आनन्द का सुख प्राप्त होता है और हे जीव, तू उसी का सुमिरन कर जो अनेक भी है और फिर एक भी है ।। १ ।। रहाउ ।। मेरे मन में वह प्रभु रूपी गुरु है जिसके दर्शन से ही फल प्राप्त हो जाता है। उसे मैं जिधर भी देखता हूँ उधर ही वह मेरे साथ दिखाई देता है। उसके चरण-कमल मेरे प्राणों का आधार हैं ।। १।। वह मेरा महान प्रभु, समर्थ एवं अथाह है। वह प्रभु प्रत्येक हृदय में बसता है और सबके पास बना रहने वाला वह मेरे साथ ही है। नानक को उसी प्रभु का आसरा है और उसने उसी की शरण पर ध्यान लगाया है जिसका न तो कोई अन्त है और न ही कोई ओर-छोर है ।। २ ।। ३ ।। ३६ ।। देवगंधारी महला ५ ।। हे मन, तू अब अपने स्वभाव को उलट दे और प्रभु से टूटे हुए लोगों की संगत से मुँह फेर ले। झूठे व्यक्ति के साथ प्रेम छूटेगा तभी हे मन, छुटकारा मिलेगा और प्रभु से वियुक्त बुरे लोगों की संगत में रहने से मुक्ति नहीं मिलती ।। १ ।। रहाउ ।। काजल से भरे हुए मकान में जो भी जाऐगा उस पर कालिख लगेगी ही लगेगी। परन्तु गुरु से मिलकर जिसके तीनों गुणों के बन्धन छूट गए हैं वह विषयों की कालिमा वाले ऐसे वातावरण से दूर से ही भाग खड़ा होता है ।। १ ।। हे कृपानिधि, कृपालु प्रभु मैं तुझसे एक ही दान माँगता हूँ कि

मुखु साकत संगि न जुटसी रे ॥ जन नानक दास दास को करीअहु मेरा मूंडु साध पगा हेठि रुलसी रे ॥ २ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ७ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सभ दिन के समरथ पंथ बिठुले हउ बलि बलि जाउ ॥ गावन भावन संतन तोरै चरन उवा कै पाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जासन बासन सहज केल करुणा मै एक अनंत अनूपै ठाउ ॥ १ ॥ रिधि सिधि निधि कर तल जगजीवन स्रब नाथ अनेकै नाउ ॥ दइआ मइआ किरपा नानक कउ सुनि सुनि जसु जीवाउ ॥ २ ॥ १ ॥ ३८ ॥ ६ ॥ ४४ ॥

१ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु देवगंधारी महला ९ ॥

यह मनु नैक न कहिओ करै ॥ सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥ करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥ १ ॥ सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥ २ ॥ १ ॥ देवगंधारी महला ९ ॥ सभ किछु जीवत को बिवहार ॥ मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥ आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥ १ ॥ म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥ २ ॥ २ ॥ देवगंधारी महला ९ ॥ जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥ अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥ अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥ १ ॥ मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥ नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥ ३८ ॥ ४७ ॥

मेरा मुँह मायावी शाक्त के सामने न पड़े। मुझ दास नानक को तो उन प्रभु के दासों का भी दास बना लो ताकि मेरा सिर साधु पुरुषों के चरणों के नीचे पड़ा रहे ।। २ ।। ४ ।। ३७ ।।

राग़ु देवगंधारी महला ५ घरु ७   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

हे सदैव समर्थ और मेरे जीवन मार्ग प्रभु, मैं तेरे पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ। तेरे शान्त पुरुषों का गुणानुवाद ही मुझे भाता है और मैं उन्हीं के चरणों में झुका रहता हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। हे हमारे यश के पात्र, सहजभाव में खेलने वाले करुणामय प्रभु, तेरा ठिकाना अनुपम है ।। १ ।। हे जगजीवन प्रभु, ऋद्धियां-सिद्धियां और सभी खज़ाने तेरे हाथ के नीचे ही हैं; हे सबके नाथ, तेरे ही अनेकों नाम है। हे प्रभु, नानक पर यह कृपा और प्रेम करो ताकि यह तुम्हारा यश सुन सुन कर ही जीवित बना रहे।। २ ।। १ ।। ३८ ।। ६ ।। ४४ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।। रागु देवगंधारी महला ९ ।।

मेरा यह मन मेरा कहा हुआ ज़रा भी नहीं मानता। अपनी ओर से तो मैं इसे बहुत शिक्षा दे चुका हूँ परन्तु फिर भी यह दुर्मति पूर्वक काम करने से टलता नहीं ।। १ ।। रहाउ ।। माया के अभिमान में यह बावला बना हुआ है और कभी भी प्रभु का गुणानुवाद नहीं करता। यह अनेकों प्रपंच करता हुआ संसार को ठगता रहता है और अपना पेट भरता रहता है ।। १ ।। यह कुत्ते की पूंछ की तरह सीधा नहीं होता और कही हुई बात पर कान नहीं धरता। नानक का कथन है कि हे जीव, सदैव राम नाम का ही भजन करो ताकि तेरे सभी कार्य पूर्ण हो सकें ।। २ ।। १ ।। देवगंधारी महला ९ ।। माता-पिता, भाई, पुत्र, सम्बन्धी और घर की स्त्री भी सब जीवित बने रहने तक ही अपना व्यवहार बनाए रहते हैं (मृत्यु के बाद कोई साथ नहीं चलता) ।। १ ।। रहाउ ।। जब इस शरीर से प्राण अलग होते हैं तो ये सभी प्रेत-प्रेत कहकर पुकारने लगते है। आधी घड़ी के लिए भी कोई नहीं रखता और घर से निकाल देते है ।। १ ।। ज़रा मन में विचार के देखो कि यह सारी सृष्टि रचना मृग-तृष्णा के समान ही है अर्थात यह है कुछ और तथा दिखाई कुछ और देती है। नानक का कथन है कि हे जीव, तू सदैव राम-नाम का सुमिरन कर जिससे तेरा उद्धार होगा ।। २ ।। २ ।। देवगंधारी महला ९ ।। मैने संसार में सभी लोगों का प्रेम झूठा ही देखा है चाहे अपनी स्त्री हो या मित्र; सभी अपने सुख के लालच में ही साथ लगे रहते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। सभी मेरा-मेरा कहते हैं और अपने हित के कारण ही अपने चित्त को व्यक्ति के साथ लगाए रहते हैं। यहाँ की एक आश्चर्यजनक रीति है कि अन्तिम समय में कोई भी संगी-साथी नहीं बनता ।। १ ।। मैं इस मन को शिक्षा देकर हार गया हूँ परन्तु यह मूर्ख अभी भी नहीं समझता। हे नानक, यदि प्रभु के गुणों के गीत गाए जाएं तभी इस संसार सागर से पार हुआ जाता है ।। २ ।। ३ ।। ६ ।। ३८ ।। ४७ ।।

੧ਓ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु बिहागड़ा चउपदे महला ५ घरु २ ॥

दूतन संगरीआ ॥ भुइअंगनि बसरीआ ॥ अनिक उपरीआ ॥ १ ॥ तउ मै हरि हरि करीआ ॥ तउ सुख सहजरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथन मोहरीआ ॥ अन कउ मेरीआ ॥ विचि घूमन घिरीआ ॥ २ ॥ सगल बटरीआ ॥ बिरख इक तरीआ ॥ बहु बंधहि परीआ ॥ ३ ॥ थिरु साध सफरीआ ॥ जह कीरतनु हरीआ ॥ नानक सरनरीआ ॥ ४ ॥ १ ॥

੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बिहागड़ा महला ९ ॥

हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥ जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥ रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥ १ ॥ अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥ नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥ २ ॥ अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥ सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥

रागु बिहागड़ा छंत महला ४ घरु १

੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ मेरी जिंदुड़ीए गुरमुखि नामु अमोले राम ॥ हरि रसि बीधा हरि मनु पिआरा

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनि सैभं गुर प्रसादि ।।

रागु बिहागड़ा चौपदे महला ५ घरु २ ।।

मेरा काम-क्रोध आदि दूतों के साथ संग-साथ था और वह ऐसा था मानों साँपों के साथ बसर करना हो। इस साथ को छोड़ने के लिए मैंने अनेकों उपाय किए ।। १ ।। अन्ततः मैंने हरि-नाम का सुमिरन किया तो कहीं सहज शान्ति वाला सुख मुझे प्राप्त हुआ ।। १ ।। रहाउ ।। मायावी संसार के साथ मोह मिथ्या है और इस झूठे मोह के अन्तर्गत ही जो अपना नहीं है उसे अपना माना जाता है। यही भावना व्यक्ति को आवगमन के चक्र में डाले रखती है ।। २ ।। सभी जीव मार्गों पर चलने वाले मुसाफिर हैं जो जीवन रूपी वृक्ष के नीचे आ बैठते हैं और परस्पर मोह में पड़कर अनेकों बन्धनों में जकड़े जाते हैं ।। ३ ।। केवल साधसंगत ही स्थिर बनी रहने वाली है जहाँ प्रभु का गुणानुवाद होता है। नानक ने उसी साध संगत की शरण ली है ।। ४ ।। १ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।। रागु बिहागड़ा महला ९ ।।

प्रभु की सीमा और गति को कोई नहीं जानता। उसे जानने के लिए योगी, यति, तपस्वी और अनेकों चतुर लोग थक हार गए हैं और मर खप गए हैं परन्तु उसे नहीं जान सके ।। १ ।। रहाउ ।। वह एक क्षण भर में राजा को निर्धन और निर्धनों को राजा बना डालता है। उसका तो ऐसा व्यवहार है कि वह खाली चीज़ों को तो भर देता है और भरे हुओं को बिल्कुल खाली कर देता है ।। १ ।। उसने स्वयं ही अपनी माया का प्रसार किया हुआ है और स्वयं ही उसके खेलों को देखने वाला है। अनेकों रंगों को बदल लेने वाला वह प्रभु स्वयं ही अनेकों रूप धारण करता है और आप सबसे अलग बना रहता है ।। २ ।। वह निर्मल प्रभु अनन्त, अपार एवं अदृश्य बना रहने वाला है जिसने सारे संसार को भटकाव में डाल रखा है। सारे भ्रमों को त्याग कर नानक रूपी प्राणी ने उसी परमात्मा में अपना ध्यान लगा लिया है ।।३।।१।।२।।

रागु बिहागड़ा छंद महला ४ घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

हे मेरे प्राण, प्रभु के नाम का सुमिरन किया जाना चाहिए क्योंकि गुरमुख बनकर जो प्रभु - नाम मिलता है वह अमूल्य होता है । मन अब हरि - रस के साथ बिंध गया है; प्रभु

मनु हरि रसि नामि झकोले राम ॥ गुरमति मनु ठहराईऐ मेरी जिंदुड़ीए अनत न काहू डोले राम ॥ मन चिंदिअड़ा फलु पाइआ हरि प्रभु गुण नानक बाणी बोले राम ॥ १ ॥ गुरमति मनि अंम्रितु वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीए मुखि अंम्रित बैण अलाए राम ॥ अंम्रित बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीए मनि सुणीऐ हरि लिव लाए राम ॥ चिरी विछुंना हरि प्रभु पाइआ गलि मिलिआ सहजि सुभाए राम ॥ जन नानक मनि अनदु भइआ है मेरी जिंदुड़ीए अनहत सबद वजाए राम ॥ २ ॥ सखी सहेली मेरीआ मेरी जिंदुड़ीए कोई हरि प्रभु आणि मिलावै राम ॥ हउ मनु देवउ तिसु आपणा मेरी जिंदुड़ीए हरि प्रभ की हरि कथा सुणावै राम ॥ गुरमुखि सदा अराधि हरि मेरी जिंदुड़ीए मन चिंदिअड़ा फलु पावै राम ॥ नानक भजु हरि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए वडभागी नामु धिआवै राम ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ आइ मिलु मेरी जिंदुड़ीए गुरमति नामु परगासे राम ॥ हउ हरि बाझु उडीणीआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ जल बिनु कमल उदासे राम ॥ गुरि पूरै मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सजणु हरि प्रभु पासे राम ॥ धनु धनु गुरू हरि दसिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि बिगासे राम ॥ ४ ॥ १ ॥ रागु बिहागड़ा महला ४ ॥ अंम्रितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए अंम्रितु गुरमति पाए राम ॥ हउमै माइआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीए हरि अंम्रिति बिखु लहि जाए राम ॥ मनु सुका हरिआ होइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हरि नामु धिआए राम ॥ हरि भाग वडे लिखि पाइआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि समाए राम ॥ १ ॥ हरि सेती मनु बेधिआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक लगि दुध खीरे राम ॥ हरि बिनु सांति न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए जिउ चात्रिकु जल बिनु टेरे राम ॥ सतिगुर सरणी जाइ पउ मेरी जिंदुड़ीए गुण दसे हरि प्रभ केरे राम ॥ जन नानक हरि मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए घरि वाजे सबद घणेरे राम ॥ २ ॥ मनमुखि हउमै विछुड़े मेरी जिंदुड़ीए बिखु बाधे हउमै जाले राम ॥ जिउ पंखी कपोति आपु बन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए तिउ मनमुख सभि वसि काले राम ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से मनमुख मूड़

अब मन को प्यारा लगता है और मन हरि-रस रूपी नाम के साथ भीगकर धुल गया है। हे मेरे प्राण, गुरु के उपदेश के माध्यम से यदि मन को निरुद्ध कर लिया जाए तो वह फिर अन्य कहीं भी भटकता नहीं है। भटकाव समाप्त होने पर अब मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है और हे नानक, मन अब प्रभु के गुणों की वाणी बोलने लग गया है ।। १ ।। गुरमति के माध्यम से मन में नाम रूपी अमृत बस गया है इसलिए अब मन अमृत के समान मीठे वचन बोलता है। भक्तजनों की वाणी यदि मन से सुनी जाए तो हे मेरे प्राण, तेरी लौ उस प्रभु में लग जाती है। फिर बहुत देर से बिछुड़ा हुआ प्रभु प्राप्त हो जाता है, और वह इस प्रकार गले से मिलता है जैसे उसका स्वभाव ही सहजभाव में मिलना होता है। दास नानक का मन हे मेरे प्राण, आनन्दित हो गया है और अनहत् शब्द प्रभु की कृपा से बजने लगा है ।। २ ।। हे मेरे प्राण, मेरी कोई भी सखी सहेली यदि वास्तव में मेरी है तो मुझे उस हरि-प्रभु से मिला दे। हे मेरे प्राण, जो मुझे हरि प्रभु की कथा वार्ता सुनाए मैं उसके समक्ष अपना मन अर्पण कर दूँगा। हे मेरे प्राण, तू गुरमुख बनकर सदैव उस प्रभु की आराधना कर जिससे तुझे मनोवांछित फल प्राप्त होगा। हे नानक, तू प्रभु की शरण में आकर उसका भजन कर क्योंकि बड़े भाग्य वाला जीव ही प्रभु के नाम का सुमिरन करता है ।। ३ ।। हे प्रभु, कृपा करके मुझे आन मिलो जिससे गुरमति का नाम मेरे अन्दर प्रकाशित हो उठे। मैं प्रभु के बिना हे मेरे प्राण, ऐसे ही आस लगाकर उदास बैठा हूँ जैसे जल के बिना कमल मुरझा जाता है। पूर्ण गुरु ने ही मुझे उस प्रभु से मिलाया है और हे मेरे प्राण, वह प्रभु रूपी सज्जन अब मेरे आस-पास ही है। हे मेरे प्राण, वह गुरु धन्य है जिसने मुझे प्रभु के बारे में बता दिया है और उसकी कृपा से नानक रूपी सेवक उसके नाम के माध्यम से आनन्दित हो उठा है ।। ४ ।। १ ।। रागु बिहागड़ा महला ४ ।। हे मेरे प्राण, प्रभु का नाम अमृत के समान मीठा है और यह अमृत गुरमति के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। यह अहंकार तो मायावी विष है और यह विष प्रभु रूपी अमृत से ही नष्ट होता है। प्रभु के नाम का सुमिरन करने से हे मेरे प्राण, मेरा सूखा मन भी हरा हो उठा है। प्रभु ने बड़े भाग्य मेरे अन्दर अंकित कर दिए हैं जिससे दास नानक उस प्रभु नाम में ही लीन बना रहता है ।। १ ।। हे मेरे प्राण, मेरा मन उसी प्रकार परमात्मा के साथ बिंधा हुआ है जैसे बच्चे को दूध के साथ प्यार हो जाता है। हे मेरे प्राण, मुझे प्रभु के बिना उसी प्रकार शान्ति नहीं मिलती जैसे चातक पक्षी जल विहीन होकर पुकारता रहता है। हे मेरे प्राण, तू सच्चे गुरु की शरण में चला जा जहाँ तुझे प्रभु के गुण बताए जाएंगे। दास नानक का मिलाप प्रभु से हो गया है और अब हे मेरे प्राण मेरे अन्तर्मन में ही अनेकों प्रकार के शब्द बजने लगे हैं ।। २ ।। मनमुख व्यक्ति अपने अहंकार के कारण प्रभु से बिछुड़े हुए हैं और अहंकार रूपी विष में बंधे हुए वे अपने आप को जलाए जा रहे हैं। जैसे कबूतर पक्षी ने दाने की लालच में अपने आप को पकड़वा लिया है इसी तरह हे मेरे प्राण, सभी मनमुख व्यक्ति काल के वश में पड़े हुए हैं। जो मोह माया में ध्यान लगाए रहते हैं, हे मेरे प्राण, वे मनमुख मूर्ख हैं

बिताले राम ॥ जन त्राहि त्राहि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए गुर नानक हरि रखवाले
राम ॥ ३ ॥ हरि जन हरि लिव उबरे मेरी जिंदुड़ीए धुरि भाग वडे हरि पाइआ
राम ॥ हरि हरि नामु पोतु है मेरी जिंदुड़ीए गुर खेवट सबदि तराइआ राम ॥
हरि हरि पुरखु दइआलु है मेरी जिंदुड़ीए गुर सतिगुर मीठ लगाइआ राम ॥ करि
किरपा सुणि बेनती हरि हरि जन नानक नामु धिआइआ राम ॥ ४ ॥ २ ॥
बिहागड़ा महला ४ ॥ जगि सुक्रितु कीरति नामु है मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरति
हरि मनि धारे राम ॥ हरि हरि नामु पवितु है मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि नामु
उधारे राम ॥ सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिंदुड़ीए मलु गुरमुखि
नामि उतारे राम ॥ वड पुंनी हरि धिआइआ जन नानक हम मूरख मुगध निसतारे
राम ॥ १ ॥ जो हरि नामु धिआइदे मेरी जिंदुड़ीए तिना पंचे वसगति आए राम ॥
अंतरि नव निधि नामु है मेरी जिंदुड़ीए गुरु सतिगुरु अलखु लखाए राम ॥ गुरि
आसा मनसा पूरीआ मेरी जिंदुड़ीए हरि मिलिआ भुख सभ जाए राम ॥ धुरि
मसतकि हरि प्रभि लिखिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक हरि गुण गाए राम ॥ २ ॥
हम पापी बलवंचीआ मेरी जिंदुड़ीए परद्रोही ठग माइआ राम ॥ वडभागी
गुरु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए गुरि पूरै गति मिति पाइआ राम ॥ गुरि अंम्रितु हरि मुखि
चोइआ मेरी जिंदुड़ीए फिरि मरदा बहुड़ि जीवाइआ राम ॥ जन नानक सतिगुर
जो मिले मेरी जिंदुड़ीए तिन के सभ दुख गवाइआ राम ॥ ३ ॥ अति ऊतमु हरि
नामु है मेरी जिंदुड़ीए जितु जपिऐ पाप गवाते राम ॥ पतित पवित्र गुरि हरि
कीए मेरी जिंदुड़ीए चहु कुंडी चहु जुगि जाते राम ॥ हउमै मैलु सभ उतरी
मेरी जिंदुड़ीए हरि अंम्रिति हरि सरि नाते राम ॥ अपराधी पापी उधरे मेरी
जिंदुड़ीए जन नानक खिनु हरि राते राम ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिहागड़ा महला ४ ॥
हउ बलिहारी तिन्ह कउ मेरी जिंदुड़ीए जिन्ह हरि हरि नामु अधारो राम ॥
गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मेरी जिंदुड़ीए बिखु भउजलु तारणहारो राम ॥
जिन इक मनि हरि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए तिन संत जना जैकारो

और वेतालों के समान बने रहते हैं। प्रभु के सेवक त्राहिमाम, त्राहिमाम करते हुए शरण में आते हैं और हे नानक, परमात्मा गुरु उनके रक्षक बन जाते हैं।। ३ ।। प्रभु में लौ लगाने के फलस्वरूप प्रभु के सेवकों का उद्धार हो जाता है और ऐसे सेवकों का उस परमात्मा ने शुरु से ही ऐसा भाग्य लिखा होता है। प्रभु का नाम तो जहाज़ है और हे मेरे प्राण, गुरु केवट बनकर शब्द के माध्यम से व्यक्ति को पार उतार देता है। वह सर्वव्यापक प्रभु दयालु है और गुरु ने उस सच्चे गुरु को मीठा करके जनवाया है। हे प्रभु, कृपा कर; मेरी अरदास को सुन क्योंकि सेवक नानक ने तो केवल तेरे नाम का ही सुमिरन किया है।। ४ ।। २ ।। संसार में अच्छा कार्य यही है कि प्रभु-यश वाले नाम का सुमिरन किया जाए और प्रभु के गुणों को मन में धारण किया जाए।। हे मेरे प्राण, प्रभु का नाम पवित्र है। तू सदैव प्रभु के नाम का ही जाप कर क्योंकि यही प्रभु-नाम उद्धार करने वाला है। प्रभु का नाम ही सभी प्रकार की मल उतारने वाला है और प्रभु-नाम ही सभी पापों और दुखों को काटने वाला है। बड़े पुण्य वाले कर्मों के फलस्वरूप ही प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है और हे नानक, हम जैसे मूर्ख और गँवारों का भी पार उतारा हो जाता है।। १ ।। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करते है, हे मेरे प्राण, पाँचों विकार उनके वश में आ जाते हैं।। नौ निधियों वाला प्रभु-नाम अन्तर्मन में ही है परन्तु हे मेरे प्राण, वह सच्चा गुरु ही इस अदृश्य प्रभु-नाम को दिखाता है। गुरु ने ही हमारी आशाएं और इच्छाएं पूरी कर दी हैं और हे मेरे प्राण, प्रभु से मिलकर ही सारी भूख समाप्त होती है। प्रारम्भ से ही प्रभु ने जिनके भाग्य में यह लिख दिया है उन्हीं सेवकों ने हे नानक, प्रभु का गुणानुवाद किया है।। २ ।। हम पापी और छल-बल करने वाले हैं और हे मेरे प्राण, हम दूसरों को ठगकर मारने वाले और माया को ठगकर कमाने वाले जीव हैं। बड़े भाग्य से ही गुरु पाया जाता है और पूर्ण गुरु के माध्यम से ही हमने ऊँची अवस्था और सम्मान प्राप्त किया है। गुरु ने ही हरि रूपी अमृत मेरे मुख में डाला और मुझ मरते हुए को पुनः जीवित कर दिया है। हे नानक, जिन्हें सच्चा गुरु मिल जाए उनके सभी दुख समाप्त हो जाते हैं।। ३ ।। प्रभु-नाम सर्वोत्तम है जिसका सुमिरन करने से पाप नष्ट हो जाते है। प्रभु रूपी गुरु ने पतितों को भी पवित्र कर दिया है और वे पवित्र बने हुए चारों दिशाओं और चारों युगों में जाने माने जाते हैं। प्रभु रूपी अमृत सरोवर में स्नान करने से अहंकार की सारी मैल उतर जाती है और हे मेरे प्राण, दास नानक का कथन है एक क्षण भर के लिए भी प्रभु के नाम में लीन होने वाले पापियों का उद्धार हो जाता है।। ४ ।। ३।। बिहागड़ा महला ४ ।। मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ जिन्होंने प्रभु-नाम को ही अपना आसरा बनाया है। सच्चे गुरु ने प्रभु-नाम पूरी और पक्की तरह से मेरे मन में बिठा दिया और हे मेरे प्राण, यह प्रभु नाम ही विष रूपी संसार सागर से पार कराने वाला है। हे मेरे प्राण, जिन्होंने एकाग्र मन से प्रभु का सुमिरन किया है उन शान्त पुरुषों को नमस्कार है।

राम ॥ नानक हरि जपि सुखु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए सभि दूख निवारणहारो राम ॥ १ ॥ सा रसना धनु धंनु है मेरी जिंदुड़ीए गुण गावै हरि प्रभ केरे राम ॥ ते स्रवन भले सोभनीक हहि मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम ॥ सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिंदुड़ीए जो जाइ लगै गुर पैरे राम ॥ गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि हरि हरि नामु चितेरे राम ॥ २ ॥ ते नेत्र भले परवाणु हहि मेरी जिंदुड़ीए जो साधू सतिगुरु देखहि राम ॥ ते हसत पुनीत पवित्र हहि मेरी जिंदुड़ीए जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम ॥ तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिंदुड़ीए जो मारगि धरम चलेसहि राम ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सुणि हरि नामु मनेसहि राम ॥ ३ ॥ धरति पातालु आकासु है मेरी जिंदुड़ीए सभ हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ पउणु पाणी बैसंतरो मेरी जिंदुड़ीए नित हरि हरि हरि जसु गावै राम ॥ वणु त्रिणु सभु आकारु है मेरी जिंदुड़ीए मुखि हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ नानक ते हरि दरि पैन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए जो गुरमुखि भगति मनु लावै राम ॥ ४ ॥ ४ ॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ मेरी जिंदुड़ीए ते मनमुख मूड़ इआणे राम ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से अंति गए पछुताणे राम ॥ हरि दरगह ढोई ना लहन्हि मेरी जिंदुड़ीए जो मनमुख पापि लुभाणे राम ॥ जन नानक गुर मिलि उबरे मेरी जिंदुड़ीए हरि जपि हरि नामि समाणे राम ॥ १ ॥ सभि जाइ मिलहु सतिगुरू कउ मेरी जिंदुड़ीए जो हरि हरि नामु द्रिड़ावै राम ॥ हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिंदुड़ीए मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम ॥ सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु है मेरी जिंदुड़ीए जितु हरि मेरा चिति आवै राम ॥ जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए जमकंकरु नेड़ि न आवै राम ॥ २ ॥ हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिंदुड़ीए सो डरै जिनि पाप कमते राम ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है मेरी जिंदुड़ीए तिनि जनि सभि डर सुटि घते राम ॥ हरि

हे नानक, प्रभु के सुमिरन से सुख प्राप्त होता है क्योंकि हे प्राण, प्रभु ही सब दुखों को दूर करने वाला है।। १ ।। वह जीभ धन्य एवं सफल है जो प्रभु के गुणों का गायन करती है। वे कान भी भले और शोभायुक्त हैं जो प्रभु की कीर्ति के गान को सुना करते हैं। हे मेरे प्राण, वह सिर भी भला, निर्मल एवं पवित्र है जो गुरु के चरणों में जा लगता है। नानक तो उस गुरु पर कुर्बान जाता है जिसने प्रभु-नाम का सुमिरन करवाया है।। २ ।। हे मेरे प्राण, वे नेत्र भले और सफल हैं जो साधु रूपी सच्चे गुरु का दर्शन करते हैं। वे हाथ भी पुनीत एवं पवित्र हैं जो हरि यश लिखते रहते हैं। प्रभु के उस सेवक के चरणों की सदैव पूजा की जानी चाहिए जो धर्म के मार्ग पर चलते हैं। नानक तो उन लोगों पर बलिहारी जाता है जो प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं।। ३ ।। हे मेरे प्राण, धरती, पाताल, आकाश आदि सभी उस प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं। पवन, पानी, अग्नि सदैव हरि यश का ही गायन करते रहते है। वन तृण एवं सारी सृष्टि अपने मुख से प्रभु-नाम का ही सुमिरन करती है। हे नानक, ऐसे व्यक्तियों को प्रभु के दरबार में शोभा-वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया जाता है जो गुरमुख बनकर मन में प्रभु-भक्ति को धारण करते हैं।। ४ ।। ४ ।। बिहागड़ा महला ४।। जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया वे मनमुख मूर्ख एवं अनजान हैं। जो मोह-माया में चित्त लगाते हैं वे अन्ततः पछताते हुए यहाँ से जाते हैं। जो मनमुख व्यक्ति पापों में लीन बने रहते हैं, हे मेरे प्राण, उनको प्रभु-दरबार में ठिकाना नहीं मिलता। हे नानक, गुरु से मिलकर व्यक्ति का उद्धार होता है और ऐसे व्यक्ति प्रभु का सुमिरन करते हुए प्रभु-नाम में ही लीन हो जाते हैं।।१।। सभी सच्चे गुरु को जा मिलो जो प्रभु के नाम को मन में पक्का करता है। हे मेरे प्राण, प्रभु सुमिरन में तनिक भी देरी नहीं लगानी चाहिए क्योंकि पता नहीं है कि अन्दर गया हुआ श्वास बाहर आएगा या नहीं। वह समय, घड़ी और वह मुहूर्त सफल है जिसमें मेरा प्रभु याद आ जाता है। नानक का कथन है कि जिन्होंने प्रभु नाम का सुमिरन किया, यम का दूत उनके पास भी नही आ पाता।।२।। हे मेरे प्राण, प्रभु सदैव सब कुछ देखता सुनता रहता है; उससे उन्हीं को डर लगता है जिन्होंने जीवन में पाप किए हैं। जिनका हृदय शुद्ध है उन सेवकों ने सब प्रकार के भय को परे फेंक दिया है। ऐसे व्यक्ति का

निरभउ नामि पतीजिआ मेरी जिंदुड़ीए सभि झख मारनु दुसट कुपते राम ॥ गुरु पूरा नानकि सेविआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि पैरी आणि सभि घते राम ॥ ३ ॥ सो ऐसा हरि नित सेवीऐ मेरी जिंदुड़ीए जो सभ दू साहिबु वडा राम ॥ जिन्ही इक मनि इकु अराधिआ मेरी जिंदुड़ीए तिना नाही किसै दी किछु चडा राम ॥ गुर सेविऐ हरि महलु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए झख मारनु सभि निंदक घंडा राम ॥ जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए धुरि मसतकि हरि लिखि छडा राम ॥ ४ ॥ ५ ॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ सभि जीअ तेरे तूं वरतदा मेरे हरि प्रभ तूं जाणहि जो जीइ कमाईऐ राम ॥ हरि अंतरि बाहरि नालि है मेरी जिंदुड़ीए सभ वेखै मनि मुकराईऐ राम ॥ मनमुखा नो हरि दूरि है मेरी जिंदुड़ीए सभ बिरथी घाल गवाईऐ राम ॥ जन नानक गुरमुखि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हाजरु नदरी आईऐ राम ॥ १ ॥ से भगत से सेवक मेरी जिंदुड़ीए जो प्रभ मेरे मनि भाणे राम ॥ से हरि दरगह पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीए अहिनिसि साचि समाणे राम ॥ तिन कै संगि मलु उतरै मेरी जिंदुड़ीए रंगि राते नदरि नीसाणे राम ॥ नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीए मिलि साधू संगि अघाणे राम ॥ २ ॥ हे रसना जपि गोबिंदो मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि त्रिसना जाए राम ॥ जिसु दइआ करे मेरा पारब्रहमु मेरी जिंदुड़ीए तिसु मनि नामु वसाए राम ॥ जिसु भेटे पूरा सतिगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हरि धनु निधि पाए राम ॥ वडभागी संगति मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हरि गुण गाए राम ॥ ३ ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रहमु प्रभु दाता राम ॥ ता का अंतु न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु बिधाता राम ॥ सरब जीआ प्रतिपालदा मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक पित माता राम ॥ सहस सिआणप नह मिलै मेरी जिंदुड़ीए जन नानक गुरमुखि जाता राम ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

बिहागड़ा महला ५ छंत घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का एकु अचंभउ देखिआ मेरे लाल जीउ जो करे सु धरम निआए राम ॥ हरि रंगु अखाड़ा पाइओनु

उस निर्भय प्रभु के नाम में मन रीझ गया है और अब कामादि दुष्ट विकार झख मारकर रह जाते हैं और उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाते। नानक ने, पूर्ण गुरु की सेवा की है जिसने सब को प्रभु के सेवक के चरणों में डाल दिया है।। ३ ।। हे मेरे प्राण, ऐसे प्रभु का सदैव सुमिरन करना चाहिए जो सबसे बड़ा मालिक है। जिन्होंने एक मन से उस एक प्रभु का सुमिरन किया है, हे मेरे प्राण, उन्हें अब किसी की भी परवाह नहीं है। गुरु की सेवा करने से प्रभु का ठिकाना प्राप्त हो जाता है और हे मेरे प्राण, सभी दुष्ट एवं निन्दक झख मारते रह जाते है।। दास नानक ने उस प्रभु के नाम का सुमिरन किया है जिसे प्रभु ने प्रारम्भ से ही माथे पर लिख दिया था।। ४ ।। ५ ।। बिहागड़ा महला ४ ।। हे प्रभु, सभी जीव तुम्हारे हैं; तू ही सब में कार्यशील है और जीव जो कुछ भी कर्म करते हैं तू सब कुछ जानता है। प्रभु अन्दर बाहर हर जीव के साथ है और हे मेरे प्राण हम चाहे मन में कितना ही मुकर जाएं परन्तु वह प्रभु सब कुछ जानता है। मनमुख व्यक्तियों के लिए वह प्रभु बहुत दूर बना रहता है और हे मेरे प्राण, मनमुख व्यक्ति अपनी की हुई सारी मेहनत को व्यर्थ ही गंवा लेते हैं। दास नानक ने गुरमुख होकर प्रभु का सुमिरन किया है और हे मेरे प्राण, उसे अब प्रभु प्रत्यक्ष रूप से नज़र आने लगा है।। १ ।। जो मेरे प्रभु के मन को भाते हैं, हे मेरे प्राण, वे ही वास्तव में भक्त हैं और प्रभु के सेवक हैं। ऐसे ही लोगों को प्रभु दरबार में शोभा वस्त्र पहनाया जाता है और हे मेरे प्राण, वे रात दिन सत्य रूपी प्रभु में लीन बने रहते हैं। उनकी संगति में ही मन की मैल उतरती है और हे मेरे प्राण, उन पर प्रभु में लीन बने रहने का चिन्ह अंकित बना रहता है।। २ ।। हे मेरी जीभ, तू प्रभु का जाप कर क्योंकि प्रभु का जाप करने से तृष्णा समाप्त हो जाती है। हे मेरे प्राण, जिस पर मेरा परब्रह्म दयालु हो जाए उसके मन में प्रभु का नाम बस जाता है। जिसे पूर्ण एवं सच्चा गुरु मिल जाए उसे प्रभु रूपी धन का भण्डार प्राप्त हो जाता है। बड़े भाग्य से ही सत्संगति प्राप्त होती है और हे मेरे प्राण, नानक उस हरि के गुण गाता है।। ३।। हे मेरे प्राण, वह परब्रह्म दाता प्रभु सभी स्थानों और छिद्रों में रमण कर रहा है। वह पूर्ण, सर्वव्यापक, सृष्टि का रचयिता है और हे मेरे प्राण, उसकी सीमा को नहीं जाना जा सकता। हे मेरे प्राण, वह सभी जीवों का वैसे ही पालन-पोषण करता है जैसे माता-पिता अपने बच्चों का पोषण करते हैं। हज़ारों चतुराईयां करने पर भी हे मेरे प्राण वह प्रभु प्राप्त नहीं होता परन्तु दास नानक ने गुरमुख बनकर उसे जान लिया है।। ४ ।। ६ ।। छका १ ।।

बिहागड़ा महला ५ छंद घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरे प्यारे, प्रभु का एक आश्चर्यजनक कार्य देखा है कि वह जो कुछ करता है वह धर्म के अनुकूल एवं सच्चा न्याय ही होता है अर्थात न्याय करते हुए वह किसी का लिहाज नहीं करता इस संसार को उसने एक ऐसी रंगशाला बनाया है

मेरे लाल जीउ आवणु जाणु सबाए राम ॥ आवणु त जाणा तिनहि कीआ जिनि मेदनि सिरजीआ ॥ इकना मेलि सतिगुरु महलि बुलाए इकि भरमि भूले फिरदिआ ॥ अंतु तेरा तूहै जाणहि तूं सभ महि रहिआ समाए ॥ सचु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि वरतै धरम निआए ॥ १ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो मेरे लाल जीउ हरि हरि नामु अराधे राम ॥ करि सेवहु पूरा सतिगुरू मेरे लाल जीउ जम का मारगु साधे राम ॥ मारगु बिखड़ा साधि गुरमुखि हरि दरगह सोभा पाईऐ ॥ जिन कउ बिधातै धुरहु लिखिआ तिन्हा रैणि दिनु लिव लाईऐ ॥ हउमै ममता मोहु छुटा जा संगि मिलिआ साधे ॥ जनु कहै नानकु मुकतु होआ हरि हरि नामु अराधे ॥ २ ॥ कर जोड़िहु संत इकत्र होइ मेरे लाल जीउ अबिनासी पुरखु पूजेहा राम ॥ बहु बिधि पूजा खोजीआ मेरे लाल जीउ इहु मनु तनु सभु अरपेहा राम ॥ मनु तनु धनु सभु प्रभू केरा किआ को पूज चड़ावए ॥ जिसु होइ क्रिपालु दइआलु सुआमी सो प्रभ अंकि समावए ॥ भागु मसतकि होइ जिस कै तिसु गुर नालि सनेहा ॥ जनु कहै नानकु मिलि साधसंगति हरि हरि नामु पूजेहा ॥ ३ ॥ दह दिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइअड़ा घरि आए राम ॥ हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु महि रहिआ समाए राम ॥ सरबे समाणा आपि सुआमी गुरमुखि परगटु होइआ ॥ मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि रसु चोइआ ॥ जहा देखा तहा सुआमी पारब्रहमु सभ ठाए ॥ जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइआ हरि पाइअड़ा घरि आए ॥ ४ ॥ १ ॥ रागु बिहागड़ा महला ५ ॥ अति प्रीतम मन मोहना घट सोहना प्रान अधारा राम ॥ सुंदर सोभा लाल गोपाल दइआल की अपर अपारा राम ॥ गोपाल दइआल गोबिंद लालन मिलहु कंत निमाणीआ ॥ नैन तरसन दरस परसन नह नीद रैणि विहाणीआ ॥ गिआन अंजन नाम बिंजन भए सगल सीगारा ॥ नानकु पइअपै संत जंपै मेलि कंतु हमारा ॥ १ ॥ लाख उलाहने मोहि हरि जब लगु नह मिलै राम ॥ मिलन कउ करउ उपाव किछु हमारा नह चलै राम ॥ चल चित बित अनित प्रिअ बिनु कवन बिधी

जिसमें सभी पात्रों के रूप में आते जाते रहते हैं। जिसने धरती की सृजना की है उसी ने ही इसमें आवागमन का चक्र भी बनाया है। कईयों को तो सच्चा गुरु मिलाकर प्रभु अपने स्थान पर बुला लेता है और कई भ्रमों में ही भूले हुए भटकते रहते हैं। हे प्रभु, अपनी सीमा को तू ही जानता है और तू ही सब में समाया हुआ है। हे संतजनों, इस बात को सुन लो कि नानक सच कहता है कि प्रभु धर्म और न्याय करने में लगा रहता है।। १ ।। हे मेरे प्यारे संगी साथियों, आ जाओ, मिल बैठो और प्रभु नाम का सुमिरन किया जाए। पूर्ण सच्चे गुरु की सेवा करो और हे मेरे प्यारे, यह सेवा ही यम के मार्ग को तुम्हारे लिए ठीक कर देगी। गुरु के माध्यम से इस विषम मार्ग पर साधनापूर्वक चलकर प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त की जाती है। जिनके भाग्य में प्रभु ने प्रारम्भ से ही लिख दिया है, दिन रात उन ही लोगों में लौ लगानी चाहिए। जब साधु पुरुष अर्थात गुरु की संगति के द्वारा मिलाप हुआ तो अहंकार, ममता, मोह इत्यादि छूट गए हैं। सेवक नानक का कथन है कि वह प्रभु-नाम का सुमिरन करते-करते ही मुक्त हो गया है।। २ ।। हे शान्त पुरुषो, इकट्ठे होकर हाथ जोड़ो ताकि अविनाशी एवं सर्वव्यापक प्रभु की सेवा की जा सके। हे प्यारे, पूजा की अनेकों विधियां खोजी गई परन्तु कोई भी ठीक नहीं लगी; आओ यह अपना मन, तन अर्थात सब कुछ प्रभु के समक्ष अर्पण कर दिया जाए। वास्तव में तो यह मन, तन, धन आदि तो सब प्रभु का ही है इसलिए पूजा में उसे भला क्या अर्पण किया जा सकता है। वह कृपालु प्रभु जिस पर दयालु हो जाता है वह प्रभु की गोद में ही लीन बना रहता है। जिसके मस्तक पर भाग्य लेख हो उसे ही गुरु के साथ प्रेम उत्पन्न होता है। दास नानक का कथन है कि साधसंगत में मिल बैठकर ही प्रभु नाम की पूजा की जाती है।। ३ ।। हे मेरे प्यारे, हम तो दसों दिशाओं में उसे खोजते रहे परन्तु उस प्रभु को अपने घर में ही अर्थात अपने अन्तर्मन में ही पा लिया है। प्रभु ने शरीर रूपी एक सुन्दर महल बनाया है और उसमें वह स्वयं ही समाया रहता है। वह स्वामी प्रभु सब में समाया हुआ है परन्तु गुरमुख बनकर ही उसे प्रकट रूप में अनुभव किया जाता है। ऐसा होने पर अज्ञान का अन्धकार मिट जाता है, दुख भाग खड़ा होता है और अमृत रूपी हरि रस टपकने लगता है। मैं जहाँ भी देखता हूँ वह परब्रह्म स्वामी सब स्थानों में दिखाई देता है। सेवक नानक कहता है कि सच्चे गुरु ने उसे मिला दिया है और उस प्रभु को मैंने अपने घर में ही पा लिया है।। ४ ।। १ ।। रागु बिहागड़ा महला ५ ।। वह प्रभु अत्यन्त प्रियतम है, मन को मोहने वाला है, सभी शरीरों में सुन्दर लगने वाला और जीवन का मूल आधार है। धरती के पालनहार उस दयालु प्रभु की शोभा अत्यन्त सुन्दर है और अपरंपर है। हे गोपाल, दयालु प्रभु, मुझ विनम्र भाग्य वाली को भी आ मिलो। तुम्हारा दर्शन देखने के लिए मेरे नयन तरस गए हैं और रात बीत जाती है परन्तु मुझे नींद नहीं आती। ज्ञान रूपी अंजन को डालकर नाम को उत्तम भोजन बनाकर और सभी सिंगारों को पूरा करके नानक पुकार कर कहता हुआ शान्त पुरुषों के समक्ष विनती करता है कि मुझे मेरे पति प्रभु से मिला दो।। १ ।। जब तक प्रभु नहीं मिल जाता तब तक लाखों उपालम्भ मुझे मिलते हैं कि मुझमें यह दोष है वह दोष है। मैं प्रभु से मिलने के लिए उपाय करता हूँ परन्तु हे राम, मेरा कोई भी बस नहीं चलता। धन-सम्पदा से बना हुआ यह सब कुछ चलचित्र की तरह चलायमान और अनित्य है; प्यारे प्रभु के बिना किसी भी तरीके से

न धीजीऐ ॥ खान पान सीगार बिरथे हरि कंत बिनु किउ जीजीऐ ॥ आसा पिआसी रैनि दिनीअरु रहि न सकीऐ इकु तिलै ॥ नानकु पइअंपै संत दासी तउ प्रसादि मेरा पिरु मिलै ॥ २ ॥ सेज एक प्रिउ संगि दरसु न पाईऐ राम ॥ अवगन मोहि अनेक कत महलि बुलाईऐ राम ॥ निरगुनि निमाणी अनाथि बिनवै मिलहु प्रभ किरपा निधे ॥ भ्रम भीति खोईऐ सहजि सोईऐ प्रभ पलक पेखत नव निधे ॥ ग्रिहि लालु आवै महलु पावै मिलि संगि मंगलु गाईऐ ॥ नानकु पइअंपै संत सरणी मोहि दरसु दिखाईऐ ॥ ३ ॥ संतन कै परसादि हरि हरि पाइआ राम ॥ इछ पुंनी मनि सांति तपति बुझाइआ राम ॥ सफला सु दिनस रैणे सुहावी अनद मंगल रसु घना ॥ प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन कवन रसना गुण भना ॥ भ्रम लोभ मोह बिकार थाके मिलि सखी मंगलु गाइआ ॥ नानकु पइअंपै संत जंपै जिनि हरि हरि संजोगि मिलाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ करि किरपा गुर पारब्रहम पूरे अनदिनु नामु वखाणा राम ॥ अंम्रित बाणी उचरा हरि जसु मिठा लागै तेरा भाणा राम ॥ करि दइआ मइआ गोपाल गोबिंद कोइ नाही तुझ बिना ॥ समरथ अगथ अपार पूरन जीउ तनु धनु तुम्ह मना ॥ मूरख मुगध अनाथ चंचल बलहीन नीच अजाणा ॥ बिनवंति नानक सरणि तेरी रखि लेहु आवण जाणा ॥ १ ॥ साधह सरणी पाईऐ हरि जीउ गुण गावह हरि नीता राम ॥ धूरि भगतन की मनि तनि लगउ हरि जीउ सभ पतित पुनीता राम ॥ पतिता पुनीता होहि तिन्ह संगि जिन्ह बिधाता पाइआ ॥ नाम राते जीअ दाते नित देहि चड़हि सवाइआ ॥ रिधि सिधि नव निधि हरि जपि जिनी आतमु जीता ॥ बिनवंति नानकु वडभागि पाईअहि साध साजन मीता ॥ २ ॥ जिनी सचु वणंजिआ हरि जीउ से पूरे साहा राम ॥ बहुतु खजाना तिंन पहि हरि जीउ हरि कीरतनु लाहा राम ॥ कामु क्रोधु न लोभु बिआपै जो जन प्रभ सिउ रातिआ ॥ एकु जानहि एकु मानहि राम कै रंगि मातिआ ॥ लगि संत चरणी पड़े सरणी मनि तिना ओमाहा ॥ बिनवंति नानकु जिन नामु पलै सेई सचे साहा ॥ ३ ॥ नानक

धैर्य नहीं आता। उस प्रभु पति के बिना कैसे जीया जाए क्योंकि उसके बिना खाना-पीना और श्रृंगार आदि सब व्यर्थ हैं। मैं रात-दिन उसके दर्शनों की प्यासी हूँ और एक क्षण-भर के लिए भी उसके बिना नहीं रह सकती। नानक कहता है कि मैं तो शान्त पुरुषों की दासी हूँ और हे प्रभु रूपी शान्त पुरुषो, आपकी कृपा से ही मुझे मेरा प्रियतम प्रभु मिल सकता है।। २ ।। मेरी और मेरे प्रियतम प्रभु की सेज एक ही है परन्तु मुझे फिर भी उसका दर्शन नहीं होता। मुझमें अनेक अवगुण हैं और इन अवगुणों के रहते हुए वह मुझे अपने ठिकाने पर भला क्यों बुलाएगा। मैं विनम्र अनाथ और गुणहीन विनती करती हूँ कि कृपा के भण्डार हे प्रभु, मुझे आन मिलो। नवनिधियों के रूप प्रभु को पल भर के लिए भी देख लेने पर भ्रम (अज्ञान) की दीवार दूर हो जाती है और सहजभाव में विश्राम किया जाता है। प्यारा प्रभु जब घर में आ जाए तो जीव रूपी स्त्री घर वाली हो जाती है और संगति में मिल बैठ कर खुशी के गीत गाती है। नानक का कथन है कि मैं शान्त पुरुषों की शरण में हूँ इसलिए हे प्रभु, मुझे दर्शन दो।। ३ ।। संतों (शान्त पुरुषो) की कृपा से ही हरि प्रभु पाया जाता है। प्रभु प्राप्त होने से इच्छाए पूरी हो जाती हैं और मन की तपन बुझ कर मन शान्त हो जाता है। प्रभु से मिलने का दिन सार्थक बन जाता है और रात सुहावनी हो जाती है क्योंकि उससे मिलाप का रस बहुत ही गहरा होता है। अन्तर्मन में धरती को पालने वाला प्रिय प्रभु प्रकट हो जाता है और फिर समझ नहीं पड़ती कि किस जीभ से उसके गुणों का गायन किया जाए। लोभ, मोह, भ्रम आदि विकार शिथिल हो जाते हैं और अब सत्संगियों के साथ मिलकर मंगलगान किया जाता है। नानक का कथन है कि वह तो उन शान्त पुरुषों पर ध्यान लगाए रहता है जिन्होंने अवसर बनाकर मुझे उस प्रभु से मिला दिया है।। ४ ।। २ ।। बिहागड़ा महला ५।। हे परब्रह्म रूपी पूर्ण गुरु, तुम कृपा करो जिससे मैं नित्य प्रभु-नाम का गुणानुवाद करता रहूँ। मैं अमृतवाणी का उच्चारण करूँ और हरि यश के माध्यम से मुझे तेरी रज़ा मीठी लगे। हे धरती के पालक प्रभु, दया और प्रेम दिखाओ क्योंकि तेरे बिना मेरा कोई भी नहीं है। वह अपरंपर प्रभु, पूर्ण प्रभु समर्थ एवं अकथनीय है। हे प्रभु, तुम ही मेरे तन, मन और धन हो। मैं मूर्ख, गंवार, अनाथ, चंचल, बलहीन और नीच अनजान व्यक्ति हूँ। नानक विनती करता है कि तेरी शरण मिल जाए और हे प्रभु तू मेरा आवागमन समाप्त कर दे।। १ ।। ऐसे साधु पुरुषों की शरण में जाने से प्रभु प्राप्त होता है जो सदैव प्रभु के गुण गाते रहते हैं। जब ऐसे भक्तों की चरण-धूलि मन तन में लग जाती है तो हे प्रभु, सभी पतित भी पवित्र हो जाते हैं। जिन्होंने उस विधाता प्रभु को पा लिया है उनकी संगत में बहुत नीचे गिरे हुए लोग भी पवित्र और ऊँचे हो जाते हैं। वे भक्त लोग जो प्रभु के नाम में रंगे हुए और आध्यात्मिक जीवन प्रदान करने वाले लोग हैं, वे यह दान रोज़ देते रहते हैं और यह दान भी फलता फूलता रहता है। जिन्होंने अपने मन को जीत लिया है उन्हें सब प्रकार की ऋद्धियां-सिद्धियां तथा नवनिधियां प्राप्त हो जाती हैं। नानक विनती करता है कि बड़े भाग्य से ही साधु रूपी सज्जन, मित्र प्राप्त होते हैं।। २ ।। जिन्होंने सत्य रूपी प्रभु का व्यापार किया है वे ही दरअसल पूर्ण साहूकार हैं। ऐसे व्यापार में लाभ यह मिलता है कि व्यक्ति हरि के यश का गायन करने लग जाता है। जो व्यक्ति प्रभु के रंग में रंगा गया उसे काम, क्रोध लोभ आदि प्रभावित नहीं करते। ऐसे व्यक्ति उस परमात्मा को ही जानते हैं और प्रभु के रंग में मस्त होकर वे केवल एक परमात्मा को ही मानते हैं। वे शान्त पुरुषों के चरणों में पड़कर उनकी शरण में आ जाते हैं और उनके मन में परमात्मा से मिलने का उत्साह बन जाता है। नानक विनती करता है कि हे भाई, जिनके पास प्रभु-नाम रूपी सम्पत्ति है वे ही सच्चे साहूकार हैं।। ३ ।। हे नानक,

सोई सिमरीऐ हरि जीउ जा की कल धारी राम ॥ गुरमुखि मनहु न वीसरै हरि जीउ करता पुरखु मुरारी राम ॥ दूखु रोगु न भउ बिआपै जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ संत प्रसादि तरे भवजलु पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ वजी वधाई मनि सांति आई मिलिआ पुरखु अपारी ॥ बिनवंति नानकु सिमरि हरि हरि इछ पुंनी हमारी ॥ ४ ॥ ३ ॥

बिहागड़ा महला ५ घरु २ ੧ੴ सति नामु गुर प्रसादि ॥

वधु सुखु रैनड़ीए प्रिअ प्रेमु लगा ॥ घटु दुख नीदड़ीए परसउ सदा पगा ॥ पग धूरि बांछउ सदा जाचउ नाम रसि बैरागनी ॥ प्रिअ रंगि राती सहज माती महा दुरमति तिआगनी ॥ गहि भुजा लीन्ही प्रेम भीनी मिलनु प्रीतम सच मगा ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा रहउ चरणह संगि लगा ॥ १ ॥ मेरी सखी सहेलड़ीहो प्रभ कै चरणि लगह ॥ मनि प्रिअ प्रेमु घणा हरि की भगति मंगह ॥ हरि भगति पाईऐ प्रभु धिआईऐ जाइ मिलीऐ हरि जना ॥ मानु मोहु बिकारु तजीऐ अरपि तनु धनु इहु मना ॥ बड पुरख पूरन गुण संपूरन भ्रम भीति हरि हरि मिलि भगह ॥ बिनवंति नानक सुणि मंत्रु सखीए हरि नामु नित नित नित जपह ॥ २ ॥ हरि नारि सुहागणे सभि रंग माणे ॥ रांड न बैसई प्रभ परख चिराणे ॥ नह दूख पावै प्रभ धिआवै धंनि ते बडभागीआ ॥ सुख सहजि सोवहि किलबिख खोवहि नाम रसि रंगि जागीआ ॥ मिलि प्रेम रहणा हरि नामु गहणा प्रिअ बचन मीठे भाणे ॥ बिनवंति नानक मन इछ पाई हरि मिले पुरख चिराणे ॥ ३ ॥ तितु ग्रिहि सोहिलड़े कोड अनंदा ॥ मनि तनि रवि रहिआ प्रभ परमानंदा ॥ हरि कंत अनंत दइआल स्रीधर गोबिंद पतित उधारणो ॥ प्रभि क्रिपा धारी हरि मुरारी भै सिंधु सागर तारणो ॥ जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥ बिनवंति नानक हरि कंतु मिलिआ सदा केल करंदा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ हरि चरण सरोवर तह करहु निवासु मना ॥

उस प्रभु का ही सुमिरन किया जाना चाहिए जिसने सृष्टि रूपी कला को धारण किया हुआ है अर्थात जो सृष्टि के रहस्यजनक कामों को चला रहा है। गुरमुख बनने पर वह कर्ता, सर्वव्यापक प्रभु, मन से विस्मृत नहीं होता। जिन्होंने उस प्रभु का सुमिरन किया है उनको दुख रोग और भय आदि प्रभावित नहीं कर पाते। वे गुरु रूपी शान्त पुरुष की कृपा से संसार-सागर को पार कर जाते हैं और इस प्रकार प्रभु द्वारा प्रारम्भ से ही लिखा हुआ लेख (हुकम) पूरा हो जाता है। सर्वव्यापक अपरंपर प्रभु के मिलाप से खुशी के बाजे बजने लगते हैं और मन में शान्ति आ जाती है। नानक विनती करता है कि हमारी इच्छाएं तो प्रभु का बार-बार सुमिरन करते रहने से ही पूरी हुई हैं।। ४ ।। ३ ।।

बिहागड़ा महला ५ घरु २ १ ओअंकार सतिनामु गुर प्रसादि।।

हे रात, तू लम्बी हो जा क्योंकि मुझे प्रियतम का प्रेम लग गया है। हे दुखों वाली नींद तू घट जा ताकि मैं सदैव प्रियतम के चरणों का स्पर्श पाती रहूँ। मैं सदैव उसके चरणों की धूलि चाहती हूँ और सदैव यही मांगती हूँ कि प्रभु-नाम के रस में मैं बैरागन बनी रहूँ। उस प्रियतम के रंग में रंगकर और सहज भाव में लीन होकर मैंने घोर दुर्मति को त्याग दिया है। प्रभु रूपी पति ने मुझ प्रेम से भीगी हुई की बाँह पकड़ी ली और उससे मिलाप करने के लिए मैं सत्य के मार्ग पर चल पड़ी। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, मुझ पर कृपा करो जिससे मैं सदैव तुम्हारे चरणों के साथ लगा रहूँ।। १ ।। हे मेरी सखी सहेलियो (सत्संगियो) आओ प्रभु के चरणों में लग जाएं। हम सब के मन में प्रभु के प्रति अनन्य प्रेम है। आओ मिलकर प्रभु की भक्ति माँगें। प्रभु की भक्ति पाकर प्रभु का सुमिरन करें और प्रभु के सेवकों को जा मिलें। मान, मोह और विकारों को तज दिया जाए और अपना तन, मन, धन उस प्रभु को अर्पण कर दिया जाए। वह प्रभु पूर्ण रूप से सर्वत्र व्याप्त हैं और गुणों से भरा हुआ है; उसको मिलकर भ्रम की दीवारें टूटती हैं और वास्तव में भ्रम के पर्दे नष्ट हो जाते हैं। नानक विनती करता है कि हे सखियो, इस मन्त्रणा (शिक्षा) को ध्यान से सुन लो कि सदैव प्रभु-नाम का ही सुमिरन करना है।। २ ।। जो प्रभु की सुहागिन स्त्री बन जाती है वह हर प्रकार के आनन्द का उपभोग करती है। अब वह विधवा न रहकर सधवा हो जाती है क्योंकि उसका पति प्रभु चिरंतन बना रहने वाला है। ऐसे भाग्यशाली व्यक्ति धन्य हैं जो प्रभु का सुमिरन करते हैं और जिन्हें कोई भी दुख नहीं मिलता। वे पापों को नष्ट करके सहज सुख में निवास करते हैं और नाम रस में रंगकर चेतन हो जाते हैं। वे मिलकर प्रेम में बने रहते हैं, प्रभु नाम ही उनका गहना बन जाता है और उन्हें प्रियतम प्रभु के वचन ही मीठे लगते हैं। नानक कहता है कि उस चिरंतन प्रभु से मिलकर मेरे मन की इच्छा पूरी हो गई हैं।। ३ ।। जिस घर में परमानन्द प्रभु प्रत्येक के मन तन में बसा रहता है उस घर में खुशी के गीत, कौतुकपूर्णता और सर्वव्यापी आनन्द बना रहता है। वह प्रभु पति ही अनन्त रूप से दयालु है, सब प्रकार के ऐश्वर्य को धारण करने वाला है और पतितों का उद्धार करने वाला है। प्रभु ही कृपा धारण करने वाला और दुष्टों को मारने वाला है तथा इस भयानक संसार-सागर से पार उतारने वाला है। उस प्रभु का यही बिरद (मर्यादा) है कि जो उसकी शरण में आता है उसे वह अपने गले से लगा लेता है। नानक विनती करता है कि मुझे वह प्रभु पति मिल गया है जो सदा केलि-क्रीड़ा अर्थात आनन्दित करने वाले कार्य करता रहता है।। ४ ।। १ ।। ४ ।। बिहागड़ा महला ५ ।। हे मन, प्रभु के चरण पवित्र सरोवर के समान हैं तुम उसी में निवास करो।

करि मजनु हरि सरे सभि किलबिख नासु मना ॥ करि सदा मजनु गोबिंद सजनु दुख अंधेरा नासे ॥ जनम मरणु न होइ तिस कउ कटै जम के फासे ॥ मिलु साधसंगे नाम रंगे तहा पूरन आसो ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो ॥ १ ॥ तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम ॥ मिलि गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम ॥ मिलि संत गावहि खसम भावहि हरि प्रेम रस रंगि भिंनीआ ॥ हरि लाभु पाइआ आपु मिटाइआ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ गहि भुजा लीने दइआ कीन्हे प्रभ एक अगम अपारो ॥ बिनवंति नानक सदा निरमल सचु सबदु रुण झुणकारो ॥ २ ॥ सुणि वडभागीआ हरि अंम्रित बाणी राम ॥ जिन कउ करमि लिखी तिसु रिदै समाणी राम ॥ अकथ कहाणी तिनी जाणी जिसु आपि प्रभु किरपा करे ॥ अमरु थीआ फिरि न मूआ कलि कलेसा दुख हरे ॥ हरि सरणि पाई तजि न जाई प्रभ प्रीति मनि तनि भाणी ॥ बिनवंति नानक सदा गाईऐ पवित्र अंम्रित बाणी ॥ ३ ॥ मन तन गलतु भए किछु कहणु न जाई राम ॥ जिस ते उपजिअड़ा तिनि लीआ समाई राम ॥ मिलि ब्रहम जोती ओति पोती उदकु उदकि समाइआ ॥ जलि थलि महीअलि एकु रविआ नह दूजा द्रिसटाइआ ॥ बणि त्रिणि त्रिभवणि पूरि पूरन कीमति कहणु न जाई ॥ बिनवंति नानक आपि जाणै जिनि एह बणत बणाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ खोजत संत फिरहि प्रभ प्राण अधारे राम ॥ ताणु तनु खीन भइआ बिनु मिलत पिआरे राम ॥ प्रभ मिलहु पिआरे मइआ धारे करि दइआ लड़ि लाइ लीजीऐ ॥ देहि नामु अपना जपउ सुआमी हरि दरस पेखे जीजीऐ ॥ समरथ पूरन सदा निहचल ऊच अगम अपारे ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा मिलहु प्रान पिआरे ॥ १ ॥ जप तप बरत कीने पेखन कउ चरणा राम ॥ तपति न कतहि बुझै बिनु सुआमी सरणा राम ॥ प्रभ सरणि तेरी काटि बेरी संसारु सागरु तारीऐ ॥ अनाथ निरगुनि कछु न जाना मेरा गुणु अउगणु न बीचारीऐ ॥ दीन दइआल गोपाल प्रीतम समरथ कारण करणा ॥ नानक चात्रिक हरि

हे मन, प्रभु रूपी सरोवर में स्नान करो और सभी पापों को नष्ट कर लो। उस प्रभु रूपी सरोवर में सदैव स्नान करते रहो जिससे तुम्हारा दुख और अज्ञान रूपी अंधेरा भाग खड़ा होगा। ऐसे व्यक्ति का फिर जन्म-मरण नहीं होता और उस पर पड़ा हुआ यम का फन्दा कट जाता है। प्रभु-नाम में रंगकर साधसंगत में मिल बैठो। तुम्हारी सभी आशाएं पूर्ण हो जाएंगी। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, कृपा करो जिससे मेरा निवास तुम्हारे चरण कमलों में बना रहे।। १ ।। उस प्रभु के समक्ष सदैव आनन्द, विनोद और अनहत् नाद की झंकार बनी रहती है। शान्त पुरुष मिलकर उस प्रभु की स्तुति का गान करते हैं। प्रभु के प्रेम-रस में भीगे हुए संतजन मिल कर उस प्रभु का गुणानुवाद करते हैं और उस स्वामी प्रभु को अच्छे लगते हैं। अपने अहंकार को मिटाकर वे प्रभु रूपी खज़ाने को पा लेते हैं और बहुत देर से बिछुड़े हुए उसको मिल जाते हैं। वह अगम्य एवं अपार तथा एक ही बना रहने वाला प्रभु दया पूर्वक हमारी बाँह पकड़ लेता है अर्थात हमको आसरा प्रदान करता है। नानक विनती करता है कि उस सत्य शब्द रूपी प्रभु की झंकार सदैव निर्मल ही होती है।। २ ।। हे भाग्यशाली जीव, तू प्रभु की अमृत-वाणी को सुन क्योंकि यह वाणी जिनके भाग्य में लिखी होती है उन्हीं के हृदय में प्रवेश करती है। जिन पर प्रभु स्वयं कृपा करता है वे ही उसकी अकथनीय वार्ता को समझ पाते हैं। ऐसे व्यक्ति अमर हो जाते हैं, बार-बार नहीं मरते और उनकी कलह क्लेश तथा दुख दूर हो जाते हैं। जो हरि की शरण में आ जाता है वह फिर उसे तजता नहीं क्योंकि शरण में आकर प्रभु की प्रीति उसके मन तन को भा जाती है। इसलिए नानक विनती करता है कि सदैव उस अमृत-वाणी का ही गायन करते रहना चाहिए।। ३ ।। अमृत-वाणी में मन तन ऐसा मस्त हो जाता है कि फिर कुछ भी कहना संभव नहीं रहता। यह जीव जिससे उत्पन्न हुआ था अब यह उसी में ही समा जाता है। वह ब्रह्म की ज्योति से ऐसे ओत प्रोत हो जाता है जैसे जल जल में लीन हो जाता है। अब जीव को जल, स्थल और अंतरिक्ष में केवल एक ही प्रभु व्याप्त दिखाई देता है अन्य दूसरा नहीं दिखता। वह प्रभु ही वन, तृण और तीनों लोकों में भरपूर दिखाई देता है परन्तु उसकी महानता का कथन असम्भव हो जाता है। नानक विनती करता है कि जिस प्रभु ने यह सारा संसार और सारा कार्य-व्यापार बनाया है वह स्वयं ही इसके बारे में जानता है अन्य कोई नहीं।। ४ ।। २ ।। ५ ।। बिहागड़ा महला ५ ।। सबके प्राणों के आधार उस प्रभु को संतजन खोजते फिरते हैं। प्रभु से मिलाप न हो सकने के कारण उन शान्त पुरुषों का तन निर्बल हो गया और सारा बल भी क्षीण हो गया है। हे प्यारे प्रभु, मुझसे आन मिलो, मुझ पर दया करो और मुझे अपने आँचल से लगा लो। हे प्रभु, तुम मुझे अपना नाम प्रदान करो जिससे मैं तुम्हारा सुमिरन करूँ और तेरे दर्शन को पाकर आध्यात्मिक रूप से जीवित बना रहूँ। हे प्रभु, तुम पूर्ण समर्थ हो, सदैव अटल हो, ऊँचे, अगम्य हो तथा अपरंपार हो। नानक विनती करता है कि हे प्राण प्यारे प्रभु, कृपा धारण करो और मुझसे आन मिलो।। १ ।। तुम्हारे चरणों का दर्शन करने के लिए ही अनेकों जप, तप, व्रत आदि किए गए हैं परन्तु प्रभु की शरण में आए बिना मन की तपन (अशान्ति) दूर नहीं होती। हे प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ, तू मेरी बेड़ियों को काट दे और मुझे संसार-सागर से पार कर दे। मैं अनाथ हूँ, गुण विहीन हूँ, कुछ भी नहीं जानता हूँ इसलिए हे प्रभु, मेरे गुणों और अवगुणों का विचार मत करो। धरती का पालक समर्थ प्रियतम प्रभु दीन दयालु है और सब कुछ करने कराने वाला है। नानक रूपी चातक प्रभु रूपी

बूंद मागै जपि जीवा हरि हरि चरणा ॥ २ ॥ अमिअ सरोवरो पीउ हरि हरि नामा राम ॥ संतह संगि मिलै जपि पूरन कामा राम ॥ सभ काम पूरन दुख बिदीरन हरि निमख मनहु न बीसरै ॥ आनंद अनदिनु सदा साचा सरब गुण जगदीसरै ॥ अगणत ऊच अपार ठाकुर अगम जा को धामा ॥ बिनवंति नानक मेरी इछ पूरन मिले स्रीरंग रामा ॥ ३ ॥ कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥ हरि हरि नामु जपत कुल सगले तारे राम ॥ हरि नामु जपत सोहंत प्राणी ता की महिमा कित गना ॥ हरि बिसरु नाही प्रान पिआरे चितवंति दरसनु सद मना ॥ सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए प्रभ ऊच अगम अपारे ॥ बिनवंति नानक सफलु सभु किछु प्रभ मिले अति पिआरे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ अन काए रातड़िआ वाट दुहेली राम ॥ पाप कमावदिआ तेरा कोइ न बेली राम ॥ कोए न बेली होइ तेरा सदा पछोतावहे ॥ गुन गुपाल न जपहि रसना फिरि कदहु से दिह आवहे ॥ तरवर विछुंने नह पात जुड़ते जम मगि गउनु इकेली ॥ बिनवंत नानक बिनु नाम हरि के सदा फिरत दुहेली ॥ १ ॥ तूं वलवंच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम ॥ लेखा धरम भइआ तिल पीड़े घाणी राम ॥ किरत कमाणे दुख सहु पराणी अनिक जोनि भ्रमाइआ ॥ महा मोहनी संगि राता रतन जनमु गवाइआ ॥ इकसु हरि के नाम बाझहु आन काज सिआणी ॥ बिनवंत नानक लेखु लिखिआ भरमि मोहि लुभाणी ॥ २ ॥ बीचु न कोइ करे अक्रितघणु विछुड़ि पइआ ॥ आए खरे कठिन जमकंकरि पकड़ि लइआ ॥ पकड़े चलाइआ अपणा कमाइआ महा मोहनी रातिआ ॥ गुन गोविंद गुरमुखि न जपिआ तपत थंम्ह गलि लातिआ ॥ काम क्रोधि अहंकारि मूठा खोइ गिआनु पछुतापिआ ॥ बिनवंत नानक संजोगि भूला हरि जापु रसन न जापिआ ॥ ३ ॥ तुझ बिनु को नाही प्रभ राखनहारा राम ॥ पतित उधारण हरि बिरदु तुमारा राम ॥ पतित उधारन सरनि सुआमी क्रिपा निधि दइआला ॥ अंध कूप ते उधरु करते सगल घट प्रतिपाला ॥ सरनि तेरी कटि महा बेड़ी इकु नामु देहि अधारा ॥

बूँद का दान माँगता है और प्रभु के चरणों का सुमिरन करके जीवित बना रहना चाहता है।। २ ।। प्रभु-नाम के अमृत सरोवर का पान करो। यह शान्त पुरुषों की संगत में प्राप्त होता है और उस प्रभु का जाप करने से सभी कामनाएं पूरी हो जाती हैं, दुखों का नाश हो जाता है और क्षण-भर के लिए भी प्रभु मन से भूलता नहीं। वह प्रभु आनन्द स्वरूप सदैव सत्य रूप में विद्यमान बना रहने वाला सर्वगुण सम्पन्न है और संसार का मालिक है। अनन्त रूप से वह ऊँचा अपार स्वामी है जिसके ठिकाने तक पहुँचना असम्भव है। नानक विनती करता है कि उस परमात्मा से मिलकर मेरी इच्छाएं पूरी हो गई हैं।। ३ ।। हरि-यश सुनकर उसका गायन करने वाले को करोड़ों यज्ञों का फल प्राप्त होता है और प्रभु-नाम का सुमिरन करने वालों के सभी कुल मुक्त हो जाते हैं। प्रभु-नाम का सुमिरन करने वाले प्राणी शोभायुक्त बने रहते हैं और उनकी महिमा को जाना नहीं जा सकता। हे प्राणों से प्यारे प्रभु, तू मुझे विस्मृत न हो क्योंकि मेरा मन तेरे दर्शन की इच्छा बनाए रखता है। भले दिन ही आ गए हैं कि अगम्य ऊँचे प्रभु ने हमें पकड़कर अपने गले से लगा लिया है। नानक विनती करता है कि अत्यन्त प्यारा प्रभु मिलने से सब कुछ सफल एवं धन्य हो जाता है।। ४ ।। ३ ।। ६ ।। बिहागड़ा महला ५ ।। छन्द ।। हे जीव, तू अन्य वस्तुओं में क्यों लीन बना हुआ है; तेरे जीवन का सफर बड़ा ही कठिन है। पापों को कमाते रहने पर तेरा कोई भी संगी साथी नहीं बनेगा। जब कोई भी तेरा साथी नहीं होगा तो तू सदैव पछताता रहेगा। तू उस गोपाल परमात्मा के गुणों का सुमिरन अपनी जीभ से नहीं करता; फिर भला यह अवसर तुझे कब मिलेगा। पेड़ से टूटे हुए पत्ते फिर उससे नहीं जुड़ पाते। इसी प्रकार यम के मार्ग पर तुझे अकेला ही जाना होगा (कोई संगी-साथी तेरे साथ नही जुड़ सकेगा)। नानक विनती करता है कि जीव रूपी स्त्री प्रभु-नाम से विहीन होकर सदा दुखी ही बनी रहती है।। १ ।। तू धोखाधड़ी और छुप कर बुरे काम करता है; इस सब को वह अन्तर्यामी परमात्मा जानता है। जब धर्मराज के पास लेखा जोखा होगा तो ऐसा व्यक्ति हमेशा तिलों की तरह घानी में पेरा जाता है। प्राणी को किए हुए कर्मों का दुख सहना पड़ता है और वह अनेकों योनियों में भटकाया जाता है। महा मोहिनी माया के साथ लीन रहकर वह हीरे जैसा जीवन गंवा देता है। प्रभु के नाम के बिना यह मन और आत्मा अन्य सब कामों के लिए चतुर है। नानक विनती करता है कि प्रभु ने ही ऐसा लेख लिखा हुआ है कि यह भ्रमों में मोहित होकर फंसी हुई है।। २ ।। कृतघ्न व्यक्ति की वकालत करने वाला कोई बिचौलिया नहीं बनता और वह प्रभु से दूर हो जाता है। भयानक यम के दूत आ खड़े होते हैं और उसे पकड़ लेते हैं। महामोहिनी माया में लीन व्यक्ति को उसके अपने कर्मों के अनुरूप ले चला जाता है। गुरमुख बनकर जिस व्यक्ति ने प्रभु के गुणों का सुमिरन नहीं किया उसे अग्नि से तपाये हुए खम्भे के साथ लगा दिया जाता है अर्थात उसे अनेकों कष्ट मिलते हैं। काम, क्रोध और अहंकार से ठगा हुआ व्यक्ति अपने ज्ञान को खोकर पछताता रहता है। नानक विनती करता है कि अपने कर्मों के द्वारा बनाए गए संयोग-वश ही व्यक्ति उस परमात्मा को भूला हुआ है और उसने अपनी जीभ से परमात्मा का जाप नहीं किया है।। ३ ।। हे प्रभु, तेरे बिना अन्य कोई भी रक्षा करने वाला नहीं है। तुम्हारा तो स्वभाव ही हे प्रभु, पतितों का उद्धार करने वाला है। हे कृपा के भण्डार दयालु एवं पतितों का उद्धार करने वाले स्वामी, मैं तुम्हारी शरण में हूँ। हे सभी जीवों का पालन पोषण करने वाले कर्ता प्रभु मुझे अज्ञान के अंधे कुँए में से बाहर निकाल लो; मैं तेरी शरण में ही हूँ, तू मेरे बंधन को काट दे और एक अपने नाम का ही आसरा प्रदान कर।

बिनवंत नानक कर देइ राखहु गोबिंद दीन दइआरा ॥ ४ ॥ सो दिनु सफलु गणिआ हरि प्रभू मिलाइआ राम ॥ सभि सुख परगटिआ दुख दूरि पराइआ राम ॥ सुख सहज अनद बिनोद सद ही गुन गुपाल नित गाईऐ ॥ भजु साधसंगे मिले रंगे बहुड़ि जोनि न धाईऐ ॥ गहि कंठि लाए सहजि सुभाए आदि अंकुरु आइआ ॥ बिनवंत नानक आपि मिलिआ बहुड़ि कतहू न जाइआ ॥ ५ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ सुनहु बेनंतीआ सुआमी मेरे राम ॥ कोटि अप्राध भरे भी तेरे चेरे राम ॥ दुख हरन किरपा करन मोहन कलि कलेसह भंजना ॥ सरनि तेरी रखि लेहु मेरी सरब मै निरंजना ॥ सुनत पेखत संगि सभ कै प्रभ नेरहू ते नेरे ॥ अरदासि नानक सुनि सुआमी रखि लेहु घर के चेरे ॥ १ ॥ तू समरथु सदा हम दीन भेखारी राम ॥ माइआ मोहि मगनु कढि लेहु मुरारी राम ॥ लोभि मोहि बिकारि बाधिओ अनिक दोख कमावने ॥ अलिपत बंधन रहत करता कीआ अपना पावने ॥ करि अनुग्रहु पतित पावन बहु जोनि भ्रमते हारी ॥ बिनवंति नानक दासु हरि का प्रभ जीअ प्रान अधारी ॥ २ ॥ तू समरथु वडा मेरी मति थोरी राम ॥ पालहि अकिरतघना पूरन द्रिसटि तेरी राम ॥ अगाधि बोधि अपार करते मोहि नीचु कछू न जाना ॥ रतनु तिआगि संग्रहन कउडी पसू नीचु इआना ॥ तिआगि चलती महा चंचलि दोख करि करि जोरी ॥ नानक सरनि समरथ सुआमी पैज राखहु मोरी ॥ ३ ॥ जा ते वीछुड़िआ तिनि आपि मिलाइआ राम ॥ साधू संगमे हरि गुण गाइआ राम ॥ गुण गाइ गोविद सदा नीके कलिआण मै परगट भए ॥ सेजा सुहावी संगि प्रभ कै आपणे प्रभ करि लए ॥ छोडि चिंत अचिंत होए बहुड़ि दूखु न पाइआ ॥ नानक दरसनु पेखि जीवे गोविंद गुण निधि गाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥ बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ बोलि सुधरमीड़िआ मोनि कत धारी राम ॥ तू नेत्री देखि चलिआ माइआ बिउहारी राम ॥ संगि तेरै कछु न चालै बिना गोबिंद नामा ॥ देस वेस सुवरन रूपा सगल ऊणे कामा ॥ पुत्र कलत्र न संगि सोभा हसत घोरि विकारी ॥ बिनवंत नानक बिनु साधसंगम सभ मिथिआ

नानक विनती करता है कि हे दीनदयालु धरती के पालनहार प्रभु, अपना हाथ देकर मेरी रक्षा करो।। ४ ।। वही दिन सफल और धन्य गिना जाता है जिस दिन हरि प्रभु से मेल होता है। उसी दिन सभी सुख प्रकट हो जाते हैं और दुख दूर हो जाता है। सदैव प्रभु का गुणानुवाद करने से सहज सुख आनन्द और मौज प्राप्त होती है। साधसंगत में प्रेम पूर्वक मिल कर प्रभु का सुमिरन करने से पुनः योनियों में नही भटका जाता। प्रभु ने स्वाभाविक रूप से ही पकड़कर हमें अपने गले से लगा लिया और हमारे पूर्व जन्मों के अच्छे कार्यों का अंकुर फूट निकला है। नानक विनती करता है कि वह प्रभु जब स्वयं मिल गया तो फिर मैं कहीं भी इधर उधर नहीं भटका हूं।। ५ ।। ४ ।। ७ ।। विहागड़ा महला ५ ।। छन्द ।। हे मेरे प्रभु स्वामी, मेरी प्रार्थना सुन लो। हममें बेशक करोड़ों अपराध भरे हुए हों परन्तु फिर भी हम तेरे ही दास हैं। हे प्रभु, तुम दुख को हर लेने वाले, कृपा करने वाले मोहन और कलह क्लेष का नाश करने वाले हो। हे सर्वत्र व्याप्त निरंजन प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ इसलिए मेरी इज्ज़त रख ले। सुनते हुए, देखते हुए वह सबके अंग-संग ही बना हुआ प्रभु बिलकुल निकट से भी निकट है। हे स्वामी, नानक की अरदास सुन लो और अपने ही घर के इस दास की रक्षा कर लो।। १ ।। तू सदैव समर्थ है और हम दीन तेरे दरवाजे के भिखारी हैं। हम माया मोह में लीन हैं इसलिए हे प्रभु, तू हमें इस मोह से निकाल ले। लोभ मोह के विकारों से हम बंधे हुए हैं और अनेकों पाप एवं दोषपूर्ण कार्य कर रहे हैं। माया से अलेप और बंधनों से रहित तो वह केवल कर्ता-प्रभु ही है; हम सब तो अपने-अपने कर्मों के फल भोगने वाले हैं। हे गिरे हुए लोगों को पवित्र करने वाले प्रभु, कृपा करो; अनेकों योनियों में भटकती हुई हमारी आत्मा अब हार चुकी है। नानक विनती करता है कि जो प्रभु का दास है उसके जीव और प्राण का आधार केवल प्रभु ही है।। २ ।। हे प्रभु, तू समर्थ और बड़ा है तथा मेरी मति तुच्छ है। तेरी कृपादृष्टि इतनी परिपूर्ण है कि तू एहसान फरामोश लोगों का भी पालन पोषण करता जाता है। हे कर्ता, तू अगाध-बोध एवं अपरंपार है; मुझ नीच ने तुझे कुछ भी नहीं जाना है। नीच एवं मूर्ख पशु की तरह मैंने रत्न को त्यागकर कौड़ियों का ही संग्रह किया है। मैंने पाप कर कर के यह धन सम्पदा इकट्ठी की है जो कि बहुत ही चंचल है और यह हमें छोड़कर चली ही जाती है। नानक समर्थ स्वामी की शरण में है और हे प्रभु, तुम मेरे सम्मान की रक्षा करो।। ३ ।। जिससे यह जीव बिछुड़ा था उसने स्वयं ही उसे अपने से मिला लिया है। साधु पुरुषों की संगत में प्रभु गुण गाया जाता है। उस सदैव सुन्दर प्रभु के गुण गाते जाने से वह कल्याण करने वाला प्रभु प्रकट हो गया है। प्रभु की सुहावनी सेज की संगत प्राप्त हुई और प्रभु ने अपना बना लिया। अब हम सभी चिन्ताओं को छोड़कर निश्चिन्त हो गए और फिर हमें कभी भी दुख नहीं मिला। नानक तो उस प्रभु के दर्शन देख कर ही जीवित बना रहता है और उसने गुणों के भण्डार प्रभु का ही गुणानुवाद किया है।। ४ ।। ५ ।। ८ ।। बिहागड़ा महला ५ ।। छन्द ।। हे सुन्दर धर्म वाले जीव, तू बोलता क्यों नही है और तूने चुप्पी क्यों साध ली है। तूने अपनी आँखों से देख लिया है कि माया तो केवल सांसारिक व्यवहारों वाली ही है। प्रभु के नाम के बिना तेरे साथ कुछ भी नहीं जाता। देश, कपड़े, सोना, चाँदी ये सभी न्यूनता से भरे हुए काम हैं। पुत्र, स्त्री और सांसारिक शोभा बनाने वाले हाथी, घोड़े एवं अन्य सामान साथ नहीं जाते। नानक विनती करता है कि साधसंगत के बिना सब कुछ मिथ्या और

संसारी ॥ १ ॥ राजन किउ सोइआ तू नीद भरे जागत कत नाही राम ॥ माइआ झूठु रुदनु केते बिललाही राम ॥ बिललाहि केते महा मोहन बिनु नाम हरि के सुखु नही ॥ सहस सिआणप उपाव थाके जह भावत तह जाही ॥ आदि अंते मधि पूरन सरबत्र घटि घटि आही ॥ बिनवंत नानक जिन साधसंगमु से पति सेती घरि जाही ॥ २ ॥ नरपति जाणि ग्रहिओ सेवक सिआणे राम ॥ सरपर वीछुड़णा मोहे पछुताणे राम ॥ हरिचंदउरी देखि भूला कहा असथिति पाईऐ ॥ बिनु नाम हरि के आन रचना अहिला जनमु गवाईऐ ॥ हउ हउ करत न त्रिसन बूझै नह कांम पूरन गिआने ॥ बिनवंति नानक बिनु नाम हरि के केतिआ पछुताने ॥ ३ ॥ धारि अनुग्रहो अपना करि लीना राम ॥ भुजा गहि काढि लीओ साधू संगु दीना राम ॥ साधसंगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले ॥ महा धरम सुदान किरिआ संगि तेरै से चले ॥ रसना अराधै एकु सुआमी हरि नामि मनु तनु भीना ॥ नानक जिस नो हरि मिलाए सो सरब गुण परबीना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

बिहागड़े की वार महला ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होर थै सुखु न भालि ॥ गुर कै सबदि मनु भेदीऐ सदा वसै हरि नालि ॥ नानक नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सिफति खजाना बखस है जिसु बखसै सो खरचै खाइ ॥ सतिगुर बिनु हथि न आवई सभ थके करम कमाइ ॥ नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ तेरी तू सभस दा सभ तुधु उपाइआ ॥ सभना विचि तू वरतदा तू सभनी धिआइआ ॥ तिस दी तू भगति थाइ पाइहि जो तुधु मनि भाइआ ॥ जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ सभि करनि तेरा कराइआ ॥ सलाहिहु हरि सभना ते वडा जो संत जनां की पैज रखदा आइआ ॥ १ ॥ सलोक मः ३ ॥ नानक गिआनी जगु जीता जगि जीता सभु कोइ ॥ नामे कारज सिधि है सहजे होइ सु होइ ॥ गुरमति मति अचलु है चलाइ न सकै कोइ ॥ भगता

सांसारिकता है।। १ ।। हे राजन, तू गहरी नींद में क्यों सोया हुआ है और क्यों जगता नहीं। धन सम्पदा का रोना तो झूठा ही है और कितने ही लोग इसके लिए चीख-पुकार लगाए हुए हैं। इस महामोहिनी के लिए अनेकों ही रोते भटकते रहतें हैं परन्तु प्रभु-नाम के बिना वास्तविक सुख नहीं प्राप्त होता। हज़ारों चतुराईयां और उपाय थक चुके हैं परन्तु वास्तव में जहाँ प्रभु चाहता है जीव वहीं जाता है। वह प्रभु ही आदि, अन्त, मध्य में सभी घट घट में पूरी तरह से समाया हुआ है। नानक विनती करता है कि जो साधसंगत में बने रहते हैं वे सम्मान सहित अपने मूल घर अर्थात परमात्मा के समक्ष पहुँच जाते हैं।। २ ।। हे लोगों के राजा, तू इस बात को समझ ले कि घर में सेवक भी समझदार हैं। इन्होंने शीघ्र और निश्चित् ही बिछुड़ जाना है; जो इनके साथ मोह डाल लेते हैं वे पछताते हैं। कल्पित गंधर्व नगरी जैसे झूठे संसार को देखकर तू भटक गया है। प्रभु-नाम के बिना अन्य रचनाओं के साथ लीन होने से जीवन व्यर्थ गंवा लिया जाता है। मेरा और मैं-मैं करते हुए न तो तृष्णा समाप्त होती है और न ही काम पूरे होते हैं। नानक विनती करता है कि प्रभु के नाम के बिना पता नहीं कितनों को पछताना पड़ रहा है।। ३ ।। प्रभु ने कृपा करके मुझे अपना बना लिया है। मेरी बाँह पकड़कर मुझे कुसंगत से निकालकर साधसंगत में डाल दिया है। साधसंगत में प्रभु की आराधना करने से सारे पाप और दुख जलकर नष्ट हो गए हैं। यही तेरे लिए बड़ा धर्म, अच्छा दान और शुभ कर्म है; यही तेरे साथ जाएंगे। यह जीभ एक प्रभु का सुमिरन करती है और मन तन प्रभु-नाम में भीग गया है। हे नानक, जिसे प्रभु स्वयं मिला ले वही सर्वगुणों में प्रवीण और सम्पन्न माना जाता है।। ४ ।। ६ ।। ६ ।।

बिहागड़े की वार महला ४ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

श्लोक महला ३ ।। गुरु की सेवा से ही सुख मिलता है; तू सुख को अन्य कहीं मत खोज। शब्द-गुरु से ही मन को बींधा जाए और यह माना जाए कि प्रभु सदैव साथ ही बसता है। हे नानक, प्रभु-नाम उन्हें ही प्राप्त होता है जिन्हें प्रभु कृपा-दृष्टि से निहार लेता है।। १ ।। महला ३ ।। प्रभु का गुणानुवाद प्रभु का दिया हुआ वह भण्डार है कि जिसे वह प्रदान करता है वही इसे खाता खर्चता है। सच्चे गुरु के बिना यह हाथ नहीं लगता और अन्य सभी इसे पाने के लिए अनेकों कर्मकाण्ड करते हुए थक गए हैं। हे नानक, यह मनमुख जगत तो प्रभु-नाम रूपी धन से विहीन है; आगे भूख लगने पर यह क्या खाएगा?।। २ ।। पउड़ी ।। यह सृष्टि तेरी है, तू सब का है और सबको तूने ही उत्पन्न किया है। सब में तू ही व्याप्त है और सब तेरा ही सुमिरन करते हैं। परन्तु जो तेरे मन को भा जाता है तू उसी की भक्ति को स्वीकार करता है। जो हरि-प्रभु को भाता है वही होता है और हे प्रभु, यह सब तेरा ही किया कराया है। उस प्रभु का गुणानुवाद करो जो सबसे बड़ा है और जो संतजनों की लाज बचाता रहा है।। १ ।। श्लोक महला ३ ।। हे नानक, ज्ञानवान पुरुष ने तो इस संसार को जीत लिया है और अन्य सबको इस संसार ने जीत लिया है। प्रभु-नाम के माध्यम से ही कार्य की सिद्धि होती है अर्थात जीवन सफल होता है परन्तु जो होता है स्वाभाविक ही होता है। गुरु द्वारा प्रदान की गई मति अटल होती है उसे कोई नही बदल सकता है। भक्तों का

का हरि अंगीकारु करे कारजु सुहावा होइ ॥ मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अहंकारु ॥ झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥ सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ दितै कितै न संतोखीअनि अंतरि त्रिसना बहुतु अग्यानु अंधारु ॥ नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली जिना माइआ मोहि पिआरु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ तिन्ह भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु ॥ धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीअ जंत सभि तेरिआ तू सभना रासि ॥ जिस नो तू देहि तिसु सभु किछु मिलै कोई होरु सरीकु नाही तुधु पासि ॥ तू इको दाता सभस दा हरि पहि अरदासि ॥ जिस दी तुधु भावै तिस दी तू मंनि लैहि सो जनु साबासि ॥ सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु सुखु तुधु पासि ॥ २ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि सचै भावदे दरि सचै सचिआर ॥ साजन मनि आनंदु है गुर का सबदु वीचार ॥ अंतरि सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥ नानक रखणहारा रखसी आपणी किरपा धारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुर की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ ॥ जेहा सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ ॥ नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तेरी वडिआई तूहै जाणदा तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तुधु जेवडु होरु सरीकु होवै ता आखीऐ तुधु जेवडु तूहै होई ॥ जिनि तू सेविआ तिनि सुखु पाइआ होरु तिस दी रीस करे किआ कोई ॥ तू भंनण घड़ण समरथु दातारु हहि तुधु अगै मंगण नो हथ जोड़ि खली सभ होई ॥ तुधु जेवडु दातारु मै कोई नदरि न आवई तुधु सभसै नो दानु दिता खंडी वरभंडी पाताली पुरई सभ लोई ॥ ३ ॥ सलोक मः ३ ॥ मनि परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ ॥ सबदै सादु न पाइओ मनहठि किआ गुण गाइ ॥ नानक आइआ सो परवाणु है जि गुरमुखि सचि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आपणा आपु न पछाणै मूड़ा अवरा आखि दुखाए ॥ मुंढै दी खसलति न गईआ अंधे विछुड़ि चोटा खाए ॥ सतिगुर कै भै भंनि न घड़िओ रहै

पक्ष प्रभु स्वयं लेता है और सारा कार्य सुन्दर तरीके से हो जाता है। मनमुख व्यक्ति धुर अन्दर तक लालच और अहंकार आदि अवगुणों में भूले हुए भटकते रहते हैं। उनका प्रत्येक दिन झगड़ों (वाद-विवादों) में ही गुज़रता है और वे शब्द के माध्यम से उस प्रभु का चिन्तन नहीं करते। उनकी सुधि और बुद्धि कर्ता प्रभु ने छीन ली है और फलस्वरूप वे केवल व्यर्थ ही बोलते रहते हैं। कितना कुछ दिए जाने पर भी वे संतुष्ट नहीं होते क्योंकि उनके अन्दर तृष्णा रूपी अग्नि और अज्ञान रूपी घना अन्धकार होता है। हे नानक, माया मोह से प्यार करने वाले मनमुख से तो सम्बन्ध का टूट जाना ही भला है।। १ ।। महला ३ ।। उन व्यक्तियों को भय या भ्रम छू नहीं सकता जिनके सिर पर सच्चा गुरु और कर्ता प्रभु है। वह सबका रक्षक प्रभु सदैव उनके सम्मान की रक्षा करता है। सत्य शब्द के चिन्तन के माध्यम से ही प्रियतम से मिला जाता है और सुख पाया जाता है। नानक ने तो उस सुखदाता प्रभु का ही सुमिरन किया है जो स्वयं सबकी परख कर लेने वाला है।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, ये जीव-जन्तु सब तेरे ही हैं और तू ही सबकी रास पूँजी है। जिसे तू देता है उसे सब कुछ प्राप्त हो जाता है; तेरे बराबर का अन्य कोई भी नहीं है। सबका दाता एक तू ही है और मेरी अरदास भी प्रभु के सामने ही है। जिसकी अरदास तुझे भा जाती है उसकी तू स्वीकार कर लेता है और ऐसा तेरा सेवक धन्य हो जाता है। यहाँ सब कुछ तेरे ही कौतुक खेल रूप में हो रहे हैं और हे प्रभु, जीवों का दुख और सुख सब तेरे सामने है।। २।। श्लोक महला ३।। गुरमुख व्यक्ति उस सच्चे प्रभु को भाते हैं और वे ही सत्याचरण वाले होने के कारण सच्चे प्रभु के द्वार पर विद्यमान रहते हैं। शब्द-गुरु का चिन्तन करने वाले सज्जन पुरुषों के मन में आनन्द बना रहता है। प्रभु ने अन्तर्मन में शब्द को बसा दिया है जिससे मेरा दुख कट गया है और कर्ता-प्रभु ने मुझे प्रकाश-पूर्ण कर दिया है। हे नानक, अपनी कृपा को धारण करके वह रक्षक प्रभु हमारी रक्षा करेगा।। १ ।। महला ३ ।। गुरु की सेवा, सेवक के समान उसका आदेश मानना और उसके भय में बने रहकर कार्यशील बने रहना हैं। उस प्रभु की रज़ा में चलकर व्यक्ति जिस पर ध्यान लगाए रहता है वह वैसा ही हो जाता है। हे नानक, वह प्रभु ही स्वयं सब कुछ है, उसके बिना अन्य कोई स्थान नहीं है जहाँ से कुछ पाया जा सके।। २ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, अपने बड़प्पन को तू स्वयं ही जानता है और तेरे जैसा अन्य कोई नहीं है। यदि कोई तेरे बराबर हो तब तो कहा जाए क्योंकि तेरे जितना महान केवल तू ही है। जिसने तेरा सुमिरन किया है उसी ने सुख प्राप्त किया है तथा उसका मुकाबला भला कौन कर सकता है। तू बनाने वाला, मिटाने वाला समर्थ दाता है और तेरे सामने ही माँगने के लिए हाथ जोड़कर सारी सृष्टि खड़ी हुई है। हे प्रभु, तेरे जैसा दाता मुझे नज़र नहीं आता; तूने सबको खण्डों, ब्रह्माण्डों, पातालों, पुरियों और सब लोकों में डाल दिया है।। ३ ।। श्लोक महला ३ ।। यदि हृदय में उसके प्रति प्रेम नहीं उत्पन्न हुआ और स्वाभाविक रूप से निष्काम प्यार नहीं जगा; शब्द में भी आनन्द यदि नहीं प्राप्त हुआ तो मन के हठ के साथ बिना रस के तू क्या गुणानुवाद करता है। हे नानक, इस संसार में उसी का आना स्वीकृत है जो गुरमुख बनकर सत्य में लीन बना रहता है।। १ ।। महला ३ ।। मूर्ख व्यक्ति अपने आप को तो पहचानता नहीं परन्तु दूसरे लोगों की बातें कर करके उनका हृदय दुखाता रहता है। व्यक्ति की शुरु की आदत नहीं जा सकी और अज्ञानी अंधा व्यक्ति प्रभु से बिछुड़ कर चोटें खाता रहता है। सच्चे गुरु के भय से हे जीव, तूने अपने मन को तथा अपने स्वभाव को उलटा कर पुनः इसे नये सिरे से नहीं ढाला;

अंकि समाए ॥ अनदिनु सहसा कदे न चूकै बिनु सबदै दुखु पाए ॥ कामु क्रोधु लोभु अंतरि सबला नित धंधा करत विहाए ॥ चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेड़ै आए ॥ सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि नव निधि पाए ॥ जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतरु पाए ॥ धुरि करमु न पाइओ पराणी विणु करमा किआ पाए ॥ गुर का सबदु समालि तू मूड़े गति मति सबदे पाए ॥ नानक सतिगुरु तद ही पाए जां विचहु आपु गवाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस दै चिति वसिआ मेरा सुआमी तिस नो किउ अंदेसा किसै गलै दा लोड़ीऐ ॥ हरि सुखदाता सभना गला का तिस नो धिआइदिआ किव निमख घड़ी मुहु मोड़ीऐ ॥ जिनि हरि धिआइआ तिस नो सरब कलिआण होए नित संत जना की संगति जाइ बहीऐ मुहु जोड़ीऐ ॥ सभि दुख भुख रोग गए हरि सेवक के सभि जन के बंधन तोड़ीऐ ॥ हरि किरपा ते होआ हरि भगतु हरि भगत जना कै मुहि डिठै जगतु तरिआ सभु लोड़ीऐ ॥ ४ ॥ सलोक मः ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का सुआउ न पाइआ ॥ नानक रसना सबदि रसाइ जिनि हरि हरि मंनि वसाइआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ ॥ नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइ पिआरिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि आपे ठाकुरु सेवकु भगतु हरि आपे करे कराए ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे जितु भावै तितु लाए ॥ हरि इकना मारगि पाए आपे हरि इकना उझड़ि पाए ॥ हरि सचा साहिबु सचु तपावसु करि वेखै चलत सबाए ॥ गुर परसादि कहै जनु नानकु हरि सचे के गुण गाए ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥ दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेसु ॥ जे घरि घरि हंढै मंगदा धिगु जीवणु धिगु वेसु ॥ जे आसा अंदेसा तजि रहै गुरमुखि भिखिआ नाउ ॥ तिस के चरन पखालीअहि नानक हउ बलिहारै जाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नानक तरवरु एकु फलु दुइ पंखेरू आहि ॥ आवत जात न दीसही ना पर पंखी ताहि ॥ बहु रंगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु ॥ हरि रसि फलि राते नानका करमि सचा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे धरती आपे है राहकु आपि जंमाइ पीसावै ॥ आपि पकावै आपि भांडे

इसे ऐसा नहीं बनाया कि तू प्रभु की गोदी में समाहित हो जाता। दिन-रात का संशय और भ्रम तेरा कभी भी चुकता नहीं और शब्द के बिना तू दुख पाता रहता है। अन्तर्मन में बहुत ही शक्तिशाली काम, क्रोध और लोभ बना हुआ है और धंधों में लगा हुआ ही तू अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। पैर चलते हुए, हाथ काम करते हुए, नेत्र देखते हुए और कान सुनते हुए थक गए हैं और जीवन के दिन समाप्त होने से मौत का दिन पास आ गया है। हे जीव, जिस प्रभु-नाम से नवनिधियां प्राप्त होती हैं वह सच्चा नाम तुझे कभी भी मीठा नहीं लगा। जीवित रहते हुए ही यदि व्यक्ति विकारों की ओर से मर जाए और इस प्रकार मरकर आध्यात्मिक रूप से जीवित हो उठे तभी व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त होता है। हे प्राणी, तुझे यदि प्रभु की ओर से ही कृपा नहीं हुई तो उसकी कृपा के बिना भला क्या पाया जा सकता है। हे मूर्ख, शब्द-गुरु को हृदय में संभाल क्योंकि शब्द के माध्यम से ही मुक्ति की समझ प्राप्त होती है। हे नानक, सच्चे गुरु को तभी पाया जा सकता है यदि अन्तर्मन से अभिमान को गंवा दिया जाए।। २ ।। पउड़ी।। मेरा स्वामी जिसके हृदय में बस गया है उसे भला किस बात की शंका हो सकती है। प्रभु ही सभी वस्तुओं का सुख देने वाला है इसलिए उसका सुमिरन करते हुए एक क्षण भर के लिए भी क्यों उससे मुँह मोड़ा जाए। जिसने प्रभु का सुमिरन किया है उसका पूर्ण कल्याण हो जाता है इसलिए सदैव शान्त पुरुषों की संगति में मिलकर बैठना चाहिए। प्रभु के सेवक के सभी दुख, रोग और तृष्णाएं समाप्त हो गई हैं और प्रभु ने सेवक के सभी बंधनों को तोड़ दिया है। प्रभु की कृपा से ही प्रभु का भक्त बना जाता और भक्तजनों के मुख को देखने मात्र से ही सारे संसार का पार उतर जाना आवश्यक ही है।। ४ ।। श्लोक महला ३।। वह जीभ तो जल ही जाए जिसने प्रभु का स्वाद नहीं देखा। हे नानक, वह जीभ रस वाली हो जाती है जिसने शब्द के माध्यम से प्रभु को मन में बसा लिया है।। १ ।। महला ३ ।। वह जीभ जल जाए जिसने प्रभु के नाम को भुला दिया है। हे नानक, गुरमुख व्यक्ति की जीभ हरि-हरि का सुमिरन करती है और प्रभु के नाम के साथ ही प्रेम बनाए रहती है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु स्वयं ही इष्ट देव, स्वयं ही सेवक, भक्त है और स्वयं ही सब कुछ करता कराता है। प्रभु स्वयं ही देखता है, प्रसन्न होता है और स्वयं ही जिसे जहाँ चाहता है वहाँ लगा देता है। कईयों को तो वह सही मार्ग पर डाल देता है और कईयों को वह प्रभु सुनसान और उल्टे रास्तों पर डाल देता है। प्रभु सच्चा साहिब है और सच्चा ही उसका न्याय है; वह स्वयं ही सभी खेल किया करता है। गुरु की कृपा से दास नानक उस सच्चे प्रभु के गुण गाता हुआ उसका कथन करता है।।५।। श्लोक महला ३।। कोई बिरला फकीर ही उस प्रभु के द्वार की इच्छा बनाए रखता है। यदि कोई दरवेश घर-घर घूम कर माँगता फिरता है तो उसके जीवन और वेश को धिक्कार है। यदि आशाओं और भय को तजकर गुरमुख बनकर प्रभु-नाम की कोई भीख माँगता है तो हे नानक, मैं उसके चरण धोता हूँ और उस पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। महला ३ ।। हे नानक, संसार वह वृक्ष है जिसे माया के मोह का एक फल लगा हुआ है। गुरमुख और मनमुख रूप में दो पक्षी इस पर बैठे हुए हैं और इन पक्षियों को कोई पंख भी नहीं लगे हुए जिससे वे आते जाते दिखाई नहीं पड़ते अर्थात यह पता नहीं लग पाता कि जीव रूपी पक्षी कहाँ से आते हैं और कहाँ चले जाते है। संसार के रंगों में लीन बने रहने वाले लोगों ने तो रसों का भोग किया है परन्तु आशाओं में ग्रस्त ना होने वाला पक्षी शब्द-ब्रह्म में लीन बना रहता है। हे नानक, प्रभु की कृपा के फलस्वरूप जिसके माथे पर प्रभु-कृपा का चिन्ह अंकित है वह नाम के रस रूपी फल के स्वाद में मस्त बना रहता है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु स्वयं ही धरती है, स्वयं ही हल चलाने वाला है, स्वयं ही खेती को पैदा करता है और स्वयं ही उसे चक्की में पिसवाता है। वह स्वयं उसे पकाता है, स्वयं ही बर्तन

देइ परोसै आपे ही बहि खावै ॥ आपे जलु आपे दे छिंगा आपे चुली भरावै ॥ आपे संगति सदि बहालै आपे विदा करावै ॥ जिस नो किरपालु होवै हरि आपे तिस नो हुकमु मनावै ॥ ६ ॥ सलोक मः ३ ॥ करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबंधु ॥ ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु ॥ जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु ॥ नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ अंधे चानणु ता थीऐ जा सतिगुरु मिलै रजाइ ॥ बंधन तोड़ै सचि वसै अगिआनु अधेरा जाइ ॥ सभु किछु देखै तिसै का जिनि कीआ तनु साजि ॥ नानक सरणि करतार की करता राखै लाज ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जदहु आपे थाटु कीआ बहि करतै तदहु पुछि न सेवकु बीआ ॥ तदहु किआ को लेवै किआ को देवै जां अवरु न दूजा कीआ ॥ फिरि आपे जगतु उपाइआ करतै दानु सभना कउ दीआ ॥ आपे सेव बणाईअनु गुरमुखि आपे अंम्रितु पीआ ॥ आपि निरंकार आकारु है आपे आपे करै सु थीआ ॥ ७ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि प्रभु सेवहि सद साचा अनदिनु सहजि पिआरि ॥ सदा अनंदि गावहि गुण साचे अरधि उरधि उरि धारि ॥ अंतरि प्रीतमु वसिआ धुरि करमु लिखिआ करतारि ॥ नानक आपि मिलाइअनु आपे किरपा धारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ कहिऐ कथिऐ न पाईऐ अनदिनु रहै सदा गुण गाइ ॥ विणु करमै किनै न पाइओ भउकि मुए बिललाइ ॥ गुर कै सबदि मनु तनु भिजै आपि वसै मनि आइ ॥ नानक नदरी पाईऐ आपे लए मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे वेद पुराण सभि सासत आपि कथै आपि भीजै ॥ आपे ही बहि पूजे करता आपि परपंचु करीजै ॥ आपि परविरति आपि निरविरती आपे अकथु कथीजै ॥ आपे पुंनु सभु आपि कराए आपि अलिपतु वरतीजै ॥ आपे सुखु दुखु देवै करता आपे बखस करीजै ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ सेखा अंदरहु जोरु छडि तू भउ करि झलु गवाइ ॥ गुर कै भै केते निसतरे भै विचि निरभउ पाइ ॥ मनु कठोरु सबदि भेदि तूं सांति वसै मनि आइ ॥ सांती विचि कार कमावणी सा खसमु पाए थाइ ॥ नानक कामि क्रोधि किनै न पाइओ पुछहु गिआनी जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥

में परोसता है और स्वयं ही बैठकर खाता है। वह स्वयं ही जल देता है, दाँत कुरेदने वाला तिनका देता है और स्वयं ही कुल्ला करता है। वह स्वयं ही अपनी संगत में बुलाकर बिठाता है और स्वयं ही विदा भी करा देता है। जिस पर प्रभु स्वयं कृपालु हो जाए वह उसी को ही अपना हुकम मनाता है।। ६ ।। श्लोक महला ३ ।। धर्म-कर्म यदि सच्ची भावना से विहीन है तो सभी बन्धन भी हैं तथा ये पाप और पुण्य से ही सम्बन्ध जोड़ने वाले बनकर रह जाते हैं। ममता और मोह भी बन्धन ही हैं और पुत्र स्त्री आदि तो कई जंजालों में डाले रहते हैं। जिधर भी देखा जाए उधर ही फंदा दिखाई देता है और सभी सम्बन्ध धन दौलत के ही नज़र आते हैं। हे नानक, सच्चे नाम के बिना यह सारा जगत अन्धे, अज्ञानपूर्ण व्यवहार में ही लीन बना हुआ है।। १ ।। महला ४ ।। उसे अर्थात अज्ञानी को ज्ञान का प्रकाश तब मिलता है यदि प्रभु के हुकम में सच्चा गुरु प्राप्त हो जाए। सच्चा गुरु बन्धनों को तोड़ता है, सत्य में निवास बनाता है तथा अज्ञान का अन्धेरा भाग खड़ा होता है। यदि व्यक्ति सब कुछ उस परमात्मा का ही माने जिसने शरीर की सृजना करके सब कुछ बनाया है तो हे नानक, ऐसे कर्ता प्रभु की शरण में आने से वह रचयिता प्रभु शरणागत् के सम्मान की लाज बचाता है।। २ ।। २ ।। पउड़ी ।। जब प्रभु ने स्वयं बैठकर रचना की तो उसने किसी दूसरे सेवक से पूछकर ऐसा नहीं किया। जब उसके जैसा अन्य कोई है ही नहीं तब फिर किसी से क्या लेना और क्या देना। उस कर्ता प्रभु ने स्वयं ही संसार उत्पन्न किया और सबको सब कुछ प्रदान किया। उसने स्वयं ही सेवा का भाव उत्पन्न किया और सृष्टि रूप में गुरमुख बनकर स्वयं ही उसने अमृत पान किया। वह निराकार प्रभु ही सब आकारों में विद्यमान है और जो कुछ भी हो रहा है वह स्वयं ही कर रहा है।। ७ ।। श्लोक महला ३।। गुरमुख व्यक्ति सदैव सच्चे प्रभु का नित्य स्वाभाविक प्रेम से ही सुमिरन करते हैं। वे नीचे, ऊपर और अपने हृदय में उसे धारण किए हुए सदैव उसके सच्चे गुणों का आनन्दपूर्वक गुणानुवाद करते हैं। कर्ता-प्रभु ने प्रारम्भ से ही उनका ऐसा भाग्य लेख लिखा है कि उनके अन्तर्मन में प्रियतम प्रभु आन बसा है। हे नानक, कृपालु होकर वह प्रभु स्वयं ही अपने से मिला लेता है।। १ ।। महला ३ ।। कहने और कथन करने से और नित्य प्रति उसके गुण गाते रहने से भी वह प्राप्त नही होता। प्रभु की कृपा के बिना तो वह किसी को भी नहीं मिलता बेशक अनेकों बक-बक करते हुए और रोते चीखते हुए मर खप गए हैं। शब्द-गुरु के माध्यम से ही मन तन भीगता है और वह प्रभु स्वयं ही मन में आ बसता है। हे नानक, उसकी कृपादृष्टि हो तभी वह प्राप्त होता है और वह स्वयं ही अपने से मिला लेता है।। २ ।। पउड़ी ।। वेद, पुराण, शास्त्र आदि वह स्वयं ही है और वह स्वयं ही उनका कथन करता है और प्रसन्न बना रहता है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही बैठकर पूजा अर्चना करता है और स्वयं ही सांसारिक प्रपंच का विस्तार करता है। वह स्वयं ही प्रवृत्तिमूलक (लीन बना रहने वाला) और स्वंय ही निवृत्तिमूलक (त्यागी) बना रहता है और स्वयं ही अकथनीय और कथन में आ जाने वाला भी बन जाता है। वह स्वयं ही सभी पुण्य कार्य करवाता है और स्वयं ही अलिप्त बना रहकर सारे कार्य-व्यवहार में विद्यमान बना रहता है। वह कर्ता स्वयं ही सुख और दुख देता है और स्वयं ही दोषों को क्षमा कर देता है।। ८ ।। श्लोक महला ३ ।। हे शेख, तू अपने मन का हठ छोड़ दे और प्रभु से डरता हुआ अपने पागलपन को समाप्त कर दे। अनेकों ही व्यक्ति गुरु के भय (प्रेमपूर्ण अनुशासन) में रहते हुए पार उतर गए हैं और इस भय के अन्तर्गत ही निर्भय प्रभु को पा गए हैं। अपने कठोर मन को तू शब्द के साथ बींध देगा तो तेरे मन में शान्ति आ बसेगी। जो कार्य व्यापार शान्ति में किया जाता है वही वह स्वामी स्वीकार करता है। हे नानक, ज्ञानवान लोगों से पूछ कर देख लो कि किसी को भी वह प्रभु काम, क्रोध के माध्यम से नहीं मिल सका है।। १ ।। महला ३ ।।

मनमुख माइआ मोहु है नामि न लगो पिआरु ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु संग्रहै कूड़ु करे आहारु ॥ बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंते होइ सभु छारु ॥ करम धरम सुच संजम करहि अंतरि लोभु विकारु ॥ नानक जि मनमुखु कमावै सु थाइ ना पवै दरगहि होइ खुआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे खाणी आपे बाणी आपे खंड वरभंड करे ॥ आपि समुंदु आपि है सागरु आपे ही विचि रतन धरे ॥ आपि लहाए करे जिसु किरपा जिस नो गुरमुखि करे हरे ॥ आपे भउजलु आपि है बोहिथा आपे खेवटु आपि तरे ॥ आपे करे कराए करता अवरु न दूजा तुझै सरे ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा सफल है जे को करे चितु लाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥ जनम मरन दुखु कटीऐ हउमै ममता जाइ ॥ उतम पदवी पाईऐ सचे रहै समाइ ॥ नानक पूरबि जिन कउ लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नामि रता सतिगुरू है कलिजुग बोहिथु होइ ॥ गुरमुखि होवै सु पारि पवै जिना अंदरि सचा सोइ ॥ नामु सम्हाले नामु संग्रहै नामे ही पति होइ ॥ नानक सतिगुरु पाइआ करमि परापति होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे पारसु आपि धातु है आपि कीतोनु कंचनु ॥ आपे ठाकुरु सेवकु आपे आपे ही पाप खंडनु ॥ आपे सभि घट भोगवै सुआमी आपे ही सभु अंजनु ॥ आपि बिबेकु आपि सभु बेता आपे गुरमुखि भंजनु ॥ जनु नानकु सालाहि न रजै तुधु करते तू हरि सुखदाता वडनु ॥ १० ॥ सलोकु मः ४ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना जेते करम कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि आइ ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअहि मुहि कालै उठि जाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु ॥ नानक जनमु सवारनि आपणा कुल का करनि उधारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे चाटसाल आपि है पाधा आपे चाटड़े पड़ण कउ आणे ॥ आपे पिता माता है आपे आपे बालक करे सिआणे ॥ इक थै पड़ि बुझै सभु आपे इक थै आपे करे इआणे ॥ इकना

मनमुख व्यक्ति का मन मोह माया में लगा रहता है और उसका प्यार प्रभु-नाम के साथ नहीं लगता। वह झूठ की कमाई करता है, झूठ का ही संग्रह करता है और झूठ का ही आहार करता है। वह माया रूपी विष और धन-दौलत का संचय करता हुआ मर जाता है और अन्त में उसका यह सब कमाया हुआ राख की ढेरी हो जाता है। उसके अन्तर्मन में तो लोभ रूपी विकार बना रहता है परन्तु दिखावे के लिए वह धर्म, कर्म एवं शुचिता का उपक्रम करता हुआ दिखाई देता रहता है। हे नानक, मनमुख व्यक्ति की कमाई सफल नहीं होती और वह प्रभु के दरबार में भी ख्वार ही होता है।। २ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, तूने ही जीवन के स्रोत, अनेकों वाणियां, खण्ड एवं ब्रह्माण्ड उत्पन्न किए हैं। तू स्वयं ही समुद्र है, सागर है और स्वयं ही उनमें मोती और रत्न भी है। प्रभु जिस पर स्वयं कृपा करता है वे ही इन रत्नों को ढूँढ पाते हैं; प्रभु इन पाने वालो को स्वयं ही गुरमुख बनाता है। परमात्मा स्वयं ही संसार-सागर है, स्वयं ही जहाज़ है, स्वयं ही केवट है और स्वयं ही उससे पार होने वाला है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही करता-कराता है और हे प्रभु तेरे जैसा अन्य कोई नहीं है।। ६ ।। श्लोक महला ३ ।। सच्चे गुरु की की हुई वही सेवा सफल है जिसे कोई मन से करे। ऐसा सेवक प्रभु-नाम रूपी अमूल्य धन पा जाता है और स्वतः ही प्रभु का नाम उसके मन में आ बैठता है। जन्म-मरण का दुख कट जाता है तथा अहंकार और मेरेपन की भावना छूट जाती है। व्यक्ति उत्तम पद प्राप्त करता है और सत्य में लीन हो जाता है। हे नानक, जिनका पहले से ही भाग्य लेख लिखा होता है सच्चा गुरु उन्हें ही आ मिलता है।। १ ।। महला ३ ।। नाम में लीन ही सच्चा गुरु है और वह ही कलियुग में पार उतारने वाला जहाज़ है। जो व्यक्ति गुरमुख होता है और जिसके अन्दर सत्य विद्यमान बना रहता है वही पार उतरता है। वही प्रभु-नाम को मन में धारण करता है और नाम का ही संग्रह करता है तथा प्रभु नाम के कारण ही उसका सम्मान होता है। हे नानक, सच्चे गुरु को पा लेने से उस परमात्मा की कृपा प्राप्त हो जाती है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु स्वयं ही पारस है, स्वयं ही धातु है और स्वयं ही उसने धातु को सोना बना दिया है। मालिक और सेवक वह प्रभु स्वयं ही है और स्वयं ही पापों का खण्डन करने वाला है। सभी शरीरों में विद्यमान होकर उन शरीरों को भोगने वाला स्वामी भी वह स्वयं ही है और स्वयं ही अंजन रूप में वह माया भी है। स्वयं ही वह विवेक बुद्धि वाला ज्ञाता और स्वयं ही गुरमुख बनकर सब बन्धनों को तोड़ने वाला भी है। दास नानक, हे कर्ता प्रभु, तेरा गुणानुवाद करता हुआ कभी सन्तुष्ट नहीं होता; तू ही सुख दाता और महान प्रभु है।। १० ।। श्लोक महला ४ ।। सच्चे गुरु की सेवा किए बिना जीव जितने भी कर्म करता है वे सब जीव को बाँधने वाले ही हो जाते हैं। सच्चे गुरु की सेवा के बिना कोई ठौर-ठिकाना नहीं मिलता और व्यक्ति जन्मता मरता हुआ आवागमन में पड़ा रहता है। सच्चे गुरु की सेवा के बिना व्यक्ति का बोल भी फीका (कड़वा) हो जाता है और प्रभु-नाम मन में नहीं बसता। हे नानक, सच्चे गुरु की सेवा के बिना व्यक्ति काला मुँह लेकर संसार से उठ जाता है और आगे यमपुरी में उसे बाँधकर मारा जाता है।। १ ।। महला ३ ।। कई ऐसे हैं जो सच्चे गुरु की सेवा सच्चे सेवकों की तरह करते हैं और उन्हें प्रभु-नाम के साथ भी प्रेम लग जाता है। हे नानक, वे अपने जीवन को तो संवार ही लेते हैं साथ ही साथ अपने कुल का भी उद्धार कर लेते हैं।। २ ।। पउड़ी।। वह प्रभु स्वयं ही पाठशाला है, स्वयं ही पढ़ाने वाला है और स्वयं ही पढ़ने वाला है और स्वयं ही पढ़ने वालों को भी (जिज्ञासु बनाने के लिए) लेकर आता है। वह स्वयं ही पिता है, माता है और स्वयं ही बालक-बुद्धि वालों को सयाना बनाता है। एक ओर तो स्वयं ही सब कुछ पढ़ता है और समझता है और दूसरी ओर स्वयं ही कईयों को अनजान बना देता है।

अंदरि महलि बुलाए जा आपि तेरै मनि सचे भाणे ॥ जिना आपे गुरमुखि दे वडिआई से जन सची दरगहि जाणे ॥ ११ ॥ सलोकु मरदाना १ ॥ कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु ॥ क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहंकारु ॥ मजलस कूड़े लब की पी पी होइ खुआरु ॥ करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु ॥ गुण मंडे करि सीलु घिउ सरमु मासु आहारु ॥ गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाहि बिकार ॥ १ ॥ मरदाना १ ॥ काइआ लाहणि आपु मदु मजलस त्रिसना धातु ॥ मनसा कटोरी कूड़ि भरी पीलाए जमकालु ॥ इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥ गिआन गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥ नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥ २ ॥ कांयां लाहणि आपु मदु अंम्रित तिस की धार ॥ सतसंगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी अंम्रित भरी पी पी कटहि बिकार ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपे सुरि नर गण गंधरबा आपे खट दरसन की बाणी ॥ आपे सिव संकर महेसा आपे गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ आपे जोगी आपे भोगी आपे संनिआसी फिरै बिबाणी ॥ आपै नालि गोसटि आपि उपदेसै आपे सुघड़ु सरूपु सिआणी ॥ आपणा चोजु करि वेखै आपे आपे सभना जीआ का है जाणी ॥ १२ ॥ सलोकु मः ३ ॥ एहा संधिआ परवाणु है जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै ॥ हरि सिउ प्रीति ऊपजै माइआ मोहु जलावै ॥ गुर परसादी दुबिधा मरै मनूआ असथिरु संधिआ करे वीचारु ॥ नानक संधिआ करै मनमुखी जीउ न टिकै मरि जंमै होइ खुआरु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिआस न जाइ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ मेरी पिआस गई पिरु पाइआ घरि आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे तंतु परम तंतु सभु आपे आपे ठाकुरु दासु भइआ ॥ आपे दस अठ वरन उपाइअनु आपि ब्रहमु आपि राजु लइआ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे बखसे करे दइआ ॥ आपि अभुलु न भुलै कब ही सभु सचु तपावसु सचु थिआ ॥ आपे जिना बुझाए गुरमुखि तिन अंदरहु दूजा भरमु गइआ ॥ १३ ॥ सलोकु मः ५ ॥ हरि नामु न सिमरहि साधसंगि तै तनि उडै खेह ॥ जिनि कीती तिसै न जाणई

कई ऐसों को तो अन्दर अपने सामने बुला भेजता है जो हे प्रभु, तेरे अपने मन को भा जाते हैं। जिनको गुरमुखों के रूप में वह बड़प्पन प्रदान करता है वे सेवक ही उसके सच्चे दरबार में जाने माने जाते हैं।। ११ ।। श्लोक मरदाना १ ।। कलियुग का समय शराब बनाने वाला है जिसमें काम की शराब है और मन उसे पीने वाला है। क्रोध कटोरा है जिसे भरने वाला मोह है और अहंकार सब को पिलाने वाला है। झूठे लालच की महफिलें लगी हुई हैं और सभी इस शराब को पी पीकर ख्वार हो रहे हैं। दूसरी ओर गुरमुख शुभ कर्मों का घड़ा लेकर उसमें सत्य का गुड़ डालते हैं और सच्चे प्रभु के नाम की असली शराब बनाते है। गुणों को रोटियां बनाया जाता है और शील स्वभाव को घी तथा लज्जा को मांसाहार समझा जाता है। हे नानक, गुरमुख बनकर इस प्रकार के खान-पान से सभी विकार भाग खड़े होते हैं।। १ ।। मरदाना १ ।। शरीर घड़ा है, अहंकार शराब है और लालच की भागदौड़ मजलिस है। वासनाओं की कटोरी को झूठ भरता जाता है और मौत इसे पिलाए जाती है। इस शराब के पीने से हे नानक, अनेकों विकार पैदा कर लिए जाते हैं। यदि ज्ञान का गुड़ हो, गुणानुवाद की रोटियां हो और अनुशासनात्मक भय रूपी मांस का आहार हो तो हे नानक, सच्चे प्रभु-नाम के आधार वाला ऐसा भोजन ही सच्चा भोजन है।। २ ।। शरीर घड़ा हो, अपनी पहचान की शराब हो तो उसकी धारा अमृत के समान होती है। सत्संगत के मेल से पैदा हुई सुरति की कटोरी हो तो ऐसे अमृत से भर भरकर पीने से सभी विकार कट जाते हैं।। ३ ।। पउड़ी।। प्रभु स्वयं ही सुर, नर, गण, गन्धर्व और स्वयं ही छः शास्त्रों का उपदेश है। वह स्वयं ही शिव, शंकर और महेश है और स्वयं ही वह गुरमुख है जो प्रभु की अकथनीय वार्ता बताता है। परमात्मा स्वयं ही योगी, भोगी, संन्यासी बनकर स्वयं ही निर्जन स्थानों में भटकता फिरता है। उसकी अपने साथ ही गोष्ठी होती रहती है, वह स्वयं ही उपदेश देता रहता है और स्वयं वह सयाना प्रभु सुन्दर स्वरूप वाला है। अपने कौतुक करके वह स्वयं ही देखता है और स्वयं ही सभी के हृदय की बात को जानने वाला है।। १२ ।। श्लोक महला ३।। ऐसी पूजा और ऐसा पाठ ही स्वीकार होता है जिसके माध्यम से मेरा प्रभु मुझे याद आता रहे तथा प्रभु के प्रति प्रेम उत्पन्न हो और माया मोह का नाश हो जाए। गुरु की कृपा से जब दुविधा मर जाती है तो मन स्थिर होकर चिन्तन और संध्या करता है। हे नानक, मनमुख बने रहकर जो संध्या करते हैं उनका मन स्थिर नहीं होता और वे आवागमन में पड़े रहकर ख्वार होते रहते हैं।। १ ।। महला ३ ।। प्रिय-प्रिय चिल्लाती हुई मैं सारे संसार में घूमती रही परन्तु मेरी प्यास बुझ न सकी। हे नानक, सच्चे गुरु के मिलाप से मेरी प्यास शान्त हो गई और मैंने अपने प्रियतम को अपने घर के अन्दर ही पा लिया है।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु स्वयं ही तत्व है और स्वयं ही सभी तत्वों का परम तत्व है; वह स्वयं ही मालिक है और स्वयं ही सेवक बन गया है। अठारह वर्णों को उसने स्वयं ही पैदा किया माना जाता है और स्वयं ही उसने सबका सिरमौर ब्रह्म बनकर सब पर शासन किया है। वह स्वयं ही मारता है, स्वयं ही छोड़ देता है और स्वयं ही दया करके क्षमा कर देता है। वह कभी भी भूलता नहीं, उसका न्याय सदैव सच्चा होता है और वह सत्य रूप में ही बना रहता है। जिनको वह स्वयं ही बुद्धि देकर रहस्य समझा देता है उन गुरमुख व्यक्तियों के अन्दर से अन्य सभी भ्रम समाप्त हो जाते हैं।। १३ ।। श्लोक महला ५ ।। हे जीव, तू साधसंगत में प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करता इसलिए तेरे शरीर पर तो मिट्टी ही उड़ती रहेगी। हे नानक, जिस परमात्मा ने इस शरीर को बनाया है तू उसे ही नहीं जानता

नानक फिटु अलूणी देह ॥ १ ॥ मः ५ ॥ घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल ॥ नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे अठसठि तीरथ करता आपि करे इसनानु ॥ आपे संजमि वरते स्वामी आपि जपाइहि नामु ॥ आपि दइआलु होइ भउ खंडनु आपि करै सभु दानु ॥ जिस नो गुरमुखि आपि बुझाए सो सद ही दरगहि पाए मानु ॥ जिस दी पैज रखै हरि सुआमी सो सचा हरि जानु ॥ १४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ नानक बिनु सतिगुर भेटे जगु अंधु है अंधे करम कमाइ ॥ सबदै सिउ चितु न लावई जितु सुखु वसै मनि आइ ॥ तामसि लगा सदा फिरै अहिनिसि जलतु बिहाइ ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुरू फुरमाइआ कारी एह करेहु ॥ गुरू दुआरै होइ कै साहिबु संमालेहु ॥ साहिबु सदा हजूरि है भरमै के छउड़ कटि कै अंतरि जोति धरेहु ॥ हरि का नामु अंम्रितु है दारू एहु लाएहु ॥ सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सचा नेहु ॥ नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी अगै हरि सिउ केल करेहु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे भार अठारह बणसपति आपे ही फल लाए ॥ आपे माली आपि सभु सिंचै आपे ही मुहि पाए ॥ आपे करता आपे भुगता आपे देइ दिवाएं ॥ आपे साहिबु आपे है राखा आपे रहिआ समाए ॥ जनु नानक वडिआई आखै हरि करते की जिस नो तिलु न तमाए ॥ १५ ॥ सलोक मः ३ ॥ माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥ जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥ आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥ जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥ झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥ नानक नदरी सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इहु जगतु जीवतु मरै जा इस नो सोझी होइ ॥ जा तिन्हि सवालिआ तां सवि रहिआ जगाए तां सुधि होइ ॥ नानक नदरि करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ ॥ गुर प्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस दा कीता सभु किछु होवै तिस नो परवाह नाही किसै केरी ॥ हरि

है इसलिए इस नीरस शरीर को धिक्कार है।। १ ।। महला ५ ।। मन में प्रभु के चरण-कमल बसे हों और जीभ पर उस प्रभु का जाप बना रहे तो हे नानक, ऐसे शरीर का पालन किया जाना चाहिए जिसके माध्यम से प्रभु का सुमिरन होता है।। २ ।। पउड़ी।। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही अड़सठ तीर्थ है और स्वयं ही उन पर स्नान करने वाला है। वह स्वयं ही युक्ति पूर्वक सब में मालिक के रूप में कार्यशील बना रहता है और स्वयं ही अपना नाम जपाता है। भय का खण्डन करने वाला प्रभु स्वयं ही दयालु होता है और स्वयं ही सब कुछ प्रदान करता है। जिस गुरमुख बने हुए व्यक्ति को वह स्वयं ही समझा देता है वह ही प्रभु दरबार में सम्मान प्राप्त करता है। प्रभु स्वयं जिसके सम्मान की रक्षा करता है प्रभु की दृष्टि में उसे ही सच्चा माना जाता है।। १४ ।। श्लोक महला ३ ।। हे नानक, सच्चे गुरु से मिलाप के बिना सारा संसार अन्धों की तरह है और अज्ञानपूर्ण अन्धे काम ही करता रहता है। यह उस शब्द-गुरु में चित्त नहीं लगाता जिसके फलस्वरूप मन में सुख आ बसता है। क्रोधित होकर यह सदैव भटकता रहता है और जलते हुए ही इसके रात-दिन व्यतीत होते हैं। जो उस प्रभु को भाता है वही होता है और उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता।। १ ।। महला ३ ।। सच्चे गुरु ने यह बताया कि इसकी औषधि यही है कि गुरु के द्वार पर स्थित होकर अर्थात गुरु के माध्यम से उस प्रभु का सुमिरन किया जाय। स्वामी प्रभु तो सदैव प्रत्यक्ष ही है और भ्रम के पर्दों को काटकर उसकी ज्योति को अन्तर्मन में धारण करो। प्रभु का नाम तो अमृत है और इसी औषधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। सच्चे गुरु की रज़ा को चित्त में बसाते हुए सच्चे प्रेम का आचरण बनाया जाए। हे नानक, ऐसा आचरण यहाँ तो सुखी रखेगा ही आगे चलकर भी तुम प्रभु के साथ रमण करोगे।। २।। पउड़ी ।। संसार की समस्त अठारह भार (एक भार = पाँच मन कच्चा) वनस्पति वह स्वयं ही है और स्वयं ही उसे फल लगाता है। वह स्वयं ही माली है, स्वयं ही उसकी सिंचाई करता है और स्वयं ही उन फलों को खाता है। वह स्वयं ही पैदा करने वाला और स्वयं ही आनन्द लेने वाला है; वह स्वयं ही देता और दिलाता भी है। वह मालिक स्वयं ही रखवाला है और स्वयं ही सबमें समाया हुआ है। दास नानक उस कर्ता प्रभु के बड़प्पन का बखान करता है जिसे तिल भर भी लालच नहीं है।। १५ ।। श्लोक महला ३।। एक व्यक्ति भरा हुआ शराब का बर्तन लाता है और दूसरा उसमें प्याला भर लेता है। ऐसे मद्य को पीने से बुद्धि दूर भाग खड़ी होती है और व्यक्ति के हर कार्य में पागलपन आ जाता है। अब वह अपना पराया नहीं पहचानता और उसे मालिक की तरफ से भी धक्के ही मिलते हैं। जिसे पीने से स्वामी प्रभु भूल जाए और प्रभु के दरबार में सज़ा मिले तो ऐसी शराब जहाँ तक भी हो सके भूल कर भी नहीं पीनी चाहिए। हे नानक, जिसे सच्चा गुरु मिल जाता है उसे प्रभु की कृपादृष्टि की सच्ची शराब प्राप्त हो जाती है। ऐसा व्यक्ति सदैव प्रभु के रंग में रंगा रहता है और उसे प्रभु के महल में ठिकाना मिल जाता है।। १ ।। महला ३ ।। यदि इसे होश आ जाए तो यह संसार जीवित रहते हुए ही विकारों की ओर से मर जाए परन्तु प्रभु के सुलाए जाने पर ही यह सोया रहता है और उसके जगाने से ही इसको होश आती है। हे नानक, यदि प्रभु कृपादृष्टि से देखे तो सच्चे गुरु से मिलाप हो जाता है। गुरु की कृपा से व्यक्ति यदि जीवित रहते हुए ही विकारों की ओर से मर जाए तो उसे फिर मरना नहीं पड़ता।। २ ।। पउड़ी ।। जिसका किया हुआ सब कुछ होता है उसको किसी की भी परवाह नही। हे प्रभु, तेरा

जीउ तेरा दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी ॥ जि तुध नो सालाहे सु सभु किछु पावै जिस नो किरपा निरंजन केरी ॥ सोई साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरि नामु धनु तेरी ॥ सभि तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि विडारी ढेरी ॥ १६ ॥ सलोक ॥ कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ ॥ ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइ ॥ जे करि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला मरणा होइ ॥ मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै सभु कोइ ॥ गुर परसादी जीवतु मरै हुकमै बूझै सोइ ॥ नानक ऐसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जा आपि क्रिपालु होवै हरि सुआमी ता आपणां नाउ हरि आपि जपावै ॥ आपे सतिगुरु मेलि सुखु देवै आपणां सेवकु आपि हरि भावै ॥ आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै आपणिआ भगता की पैरी पावै ॥ धरम राइ है हरि का कीआ हरि जन सेवक नेड़ि न आवै ॥ जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ १७ ॥ सलोक मः ३ ॥ रामु रामु करता सभु जगु फिरै रामु न पाइआ जाइ ॥ अगमु अगोचरु अति वडा अतुलु न तुलिआ जाइ ॥ कीमति किनै न पाईआ कितै न लइआ जाइ ॥ गुर कै सबदि भेदिआ इन बिधि वसिआ मनि आइ ॥ नानक आपि अमेउ है गुर किरपा ते रहिआ समाइ ॥ आपे मिलिआ मिलि रहिआ आपे मिलिआ आइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ ए मन इहु धनु नामु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ तोटा मूलि न आवई लाहा सद ही होइ ॥ खाधै खरचिऐ तोटि न आवई सदा सदा ओहु देइ ॥ सहसा मूलि न होवई हाणत कदे न होइ ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे सभ घट अंदरे आपे ही बाहरि ॥ आपे गुपतु वरतदा आपे ही जाहरि ॥ जुग छतीह गुबारु करि वरतिआ सुंनाहरि ॥ ओथै वेद पुरान न सासता आपे हरि नरहरि ॥ बैठा ताड़ी लाइ आपि सभ दू ही बाहरि ॥ आपणी मिति आपि जाणदा आपे ही गउहरु ॥ १८ ॥ सलोक मः ३ ॥ हउमै विचि जगतु

दिया हुआ सभी लोग खाते हैं और सब तेरे पर ही निर्भर हैं। जिस पर प्रभु की कृपा होती है और जो हे प्रभु, तेरा गुणानुवाद करता है उसे सब कुछ प्राप्त हो जाता है। वही साहूकार सच्चा व्यापारी है जिसने हे प्रभु, तेरे नाम रूपी धन का सौदा लाद लिया है। हे सन्तजनों, सब उसी की प्रशंसा करो जिसने द्वैतभाव की गाँठ को मारकर नष्ट कर दिया है।। १६ ।। श्लोक ।। हे कबीर, मरता-मरता सारा संसार ही मर चुका है परन्तु कोई भी वास्तव में मरना नहीं जानता। व्यक्ति को इस प्रकार से मरना चाहिए कि उसे फिर बार बार न मरना पड़े।। १ ।। महला ३ ।। क्या पता हम कैसे मरेंगे और हमारी मौत कैसी होगी। यदि वह मालिक प्रभु मन से न भूले तो मरना आसान हो जाता है। मरने से तो सारा संसार डरा हुआ है और सभी जीवित बने रहना चाहते हैं। गुरु की कृपा से ही व्यक्ति जीवन में ही विकारों के प्रति मरता है और ऐसा व्यक्ति ही प्रभु के हुकम को बूझ लेने वाला होता है। हे नानक, जो इस प्रकार की मौत मरता है वह सदैव जीवित बना रहता है।। २ ।। पउड़ी।। यदि प्रभु मालिक स्वयं कृपालु हो जाय तो वह अपना नाम स्वयं जपाता है। वह स्वयं ही सच्चे गुरु से मिलाकर सुख देता है और इस प्रकार प्रभु को अपना सेवक स्वयं ही अच्छा लगता है। अपने सेवकों की वह स्वयं लाज बचाता है और लोगों को अपने भक्तों के चरणों में ले आता है। धर्मराज को भी प्रभु ने ही बनाया है इसलिए वह प्रभु के सेवकों के पास भी नहीं आता। जो प्रभु का प्यारा होता है वह सबका ही प्यारा होता है; अन्य कितने ही लोग झख मारते हुए आवागमन में पड़े रहते हैं।। १७।। श्लोक महला ३ ।। सारा संसार राम-राम करता घूमता रहता है परन्तु वह सबमें रमा रहने वाला प्रभु प्राप्त नहीं होता। वह प्रभु अगम्य, अगोचर अत्यन्त विशाल और अतुलनीय है जिसे किसी भी तरीके से तौला नहीं जा सकता अर्थात वह मन वाणी से परे है। उसका मूल्य कोई नहीं आंक सकता और न ही उसे खरीदा जा सकता है। शब्द-गुरु के माध्यम से उसका रहस्य जाना जाता है और इस विधि से वह मन में आन बसता है। हे नानक, वह किसी भी नाप-तौल से परे है और गुरु की कृपा से ही वह मन में समा गया है। वह स्वयं ही मिला है, मिलता जा रहा है और वह स्वयं ही आकर मिलता है।। १ ।। महला ३।। हे मन, वास्तविक धन प्रभु-नाम है जिससे सदैव सुख प्राप्त होता है। उसके कारण कभी भी घाटा नहीं पड़ता और वह सदैव देता ही जाता है। इसके कारण ही मन में कभी भी संशय नहीं होता और न ही कभी हानि होती है। हे नानक, जिस पर वह कृपादृष्टि करता है वही गुरमुख बनकर उसे प्राप्त करता है।। २ ।। पउड़ी। वह सभी शरीरों के अन्दर भी है और बाहर भी विद्यमान है। वह गुप्त रूप से स्वयं ही कार्यशील है और स्वयं ही वह प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान है। छत्तीसों युगों तक वह घोर अन्धकार में शून्य रूप में बना रहा। वहाँ न तो वेद, न पुराण और न ही शास्त्र थे; सब मनुष्यों का स्वामी वह प्रभु स्वयं ही था। वह समाधि लगाए बैठा था सबकी पहुँच के परे था। वह अपनी मर्यादा और सीमा स्वयं ही जानता है और वह स्वयं ही गहन सागर है।। १८ ।। श्लोक महला ३ ।। अहंकार में ही यह संसार

मुआ मरदो मरदा जाइ ॥ जिचरु विचि दंमु है तिचरु न चेतई कि करेगु अगै जाइ ॥ गिआनी होइ सु चेतंनु होइ अगिआनी अंधु कमाइ ॥ नानक एथै कमावै सो मिलै अगै पाए जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ अंतरि रवि रहिआ सदा रहिआ लिव लाइ ॥ दमि दमि सदा समालदा दंमु न बिरथा जाइ ॥ जनम मरन का भउ गइआ जीवन पदवी पाइ ॥ नानक इहु मरतबा तिस नो देइ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे दानां बीनिआ आपे परधानां ॥ आपे रूप दिखालदा आपे लाइ धिआनां ॥ आपे मोनी वरतदा आपे कथै गिआनां ॥ कउड़ा किसै न लगई सभना ही भाना ॥ उसतति बरनि न सकीऐ सद सद कुरबाना ॥ १९ ॥ सलोक मः १ ॥ कली अंदरि नानका जिंनां दा अउतारु ॥ पुतु जिनूरा धीअ जिंनूरी जोरू जिंना दा सिकदारु ॥ १ ॥ मः १ ॥ हिंदू मूले भूले अखुटी जांही ॥ नारदि कहिआ सि पूज करांही ॥ अंधे गुंगे अंध अंधारु ॥ पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ॥ ओहि जा आपि डुबे तुम कहा तरणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु किहु तेरै वसि है तू सचा साहु ॥ भगत रते रंगि एक कै पूरा वेसाहु ॥ अंम्रितु भोजनु नामु हरि रजि रजि जन खाहु ॥ सभि पदारथ पाईअनि सिमरणु सचु लाहु ॥ संत पिआरे पारब्रहम नानक हरि अगम अगाहु ॥ २० ॥ सलोक मः ३ ॥ सभु किछु हुकमे आवदा सभु किछु हुकमे जाइ ॥ जे को मूरखु आपहु जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ नानक हुकमु को गुरमुखि बुझै जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सो जोगी जुगति सो पाए जिस नो गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ तिसु जोगी की नगरी सभु को वसै भेखी जोगु न होइ ॥ नानक ऐसा विरला को जोगी जिसु घटि परगटु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे जंत उपाइअनु आपे आधारु ॥ आपे सूखमु भालीऐ आपे पासारु ॥ आपि इकाती होइ रहै आपे वड परवारु ॥ नानकु मंगै दानु हरि संता रेनारु ॥ होरु दातारु न सुझई तू देवणहारु ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु ॥

मरा हुआ है और लगातार मरता ही जाता है और जब तक इसमें साँस है तब तक यह नहीं चेतता; आगे जाकर यह भला क्या करेगा। जो ज्ञानवान हैं वे तो खबरदार हो जाते हैं परन्तु अज्ञानी अन्धे आचरण में ही लीन बने रहते हैं।। हे नानक, जो यहाँ कमाया जाता है वही आगे मिलता है और उसी को आगे प्राप्त किया जाता है।। १ ।। महला ३ ।। परमात्मा का मूल रूप से ही यह हुकम स्थित है कि सच्चे गुरु के बिना व्यक्ति को होश नहीं आती। सच्चा गुरु मिलता है तो वह प्रभु अन्तर्मन में रमण करता हुआ प्रतीत होता है और व्यक्ति सदैव उसमे लौ लगाए रहता है। अब वह प्रत्येक श्वास के साथ उसका सुमिरन करता है और किसी भी श्वास को व्यर्थ नहीं जाने देता। ऐसा करने वाले का जन्म और मरण का भय समाप्त हो जाता है और उसे अमर जीवन का पद प्राप्त हो जाता है। हे नानक, वह प्रभु यह पदवी उसी को देता है जिस पर अपनी रज़ा में ही कृपा करता है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु स्वयं ही ज्ञाता, अर्न्तयामी और स्वयं ही प्रधान है। स्वयं ही अपना रूप दिखाता है और स्वयं ही ध्यान लगाता है। वह स्वयं ही मौन धारण किए रहता है और स्वयं ही ज्ञान का कथन करता है। वह किसी को भी कड़वा नहीं लगता और सब को अच्छा लगता है। उसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता और मैं सदा उस पर कुर्बान जाता हूँ।। १६ ।। श्लोक महला १ ।। हे नानक, कलियुग में तो मनुष्य जिन्न के रूप में पैदा हुए हैं। पुत्र भी छोटा जिन्न है, पुत्री भी छोटी जिन्न है और पत्नी तो सभी जिन्नों की सरदार (मार्गदर्शक) है।। १ ।। महला १ ।। हिन्दु तो बिल्कुल ही प्रभु को भुलाकर कुमार्ग पर चले गए हैं। उन्हें तो जो नारद ने कहा वे उसी की पूजा किए जा रहे हैं अर्थात मूर्ति पूजा कर रहे हैं। वे अन्धे, गूँगे और अज्ञान के अन्धकार में बने रहने वाले अन्धे हो गए हैं। ये मुग्ध बने हुए मूर्ख पत्थर को लेकर उसकी पूजा किए जा रहे हैं। पत्थर तो स्वयं डूब जाने वाले हैं वे भला तुम्हें कैसे पार उतारेंगे।। २ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, सब कुछ तेरे वश में है और तू ही सच्चा साहूकार है। भक्त लोग तो पूर्ण विश्वास के साथ एक प्रभु के रंग में ही रंगे रहते हैं; उनका भोजन प्रभु का अमृत नाम है और सेवक बनकर वे इसे भर पेट खाते हैं। प्रभु सुमिरन का तो ऐसा सच्चा लाभ होता है कि उन्हें सभी पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं। हे नानक, परब्रह्म परमेश्वर को तो शान्त पुरुष ही प्यारे लगते हैं और वह प्रभु स्वयं अगम्य एवं गहन गम्भीर है।। २० ।। श्लोक महला ३।। सब कुछ हुकम में ही आता है और हुकम में ही यहां से चला जाता है। यदि कोई मूर्ख इसे अपना किया हुआ कार्य समझता है तो वह अन्धा अज्ञान के अंधकार का ही अर्जन किए जाता है। हे नानक, कोई बिरला, जिस पर प्रभु की कृपा होती है, गुरमुख बनकर ही इस हुकम को बूझता है।। १ ।। महला ३।। वास्तव में योगी वही है और युक्ति भी उसी के पास है जिसको गुरमुख बनकर प्रभु नाम प्राप्त होता है। उस योगी के शरीर रूपी नगर में हर प्रकार के गुण बसते हैं परन्तु केवल वेश धारण करने वाला ही योगी नहीं हो सकता। हे नानक, ऐसा कोई बिरला ही योगी है जिसके हृदय में प्रभु प्रकट होता है।। २ ।। पउड़ी ।। परमात्मा ने स्वयं ही जीव-जन्तु पैदा किए हैं और स्वयं ही वह सबका आधार है। वह स्वयं ही सूक्ष्म रूप में जाना जाता है और स्वयं ही उसका विस्तार संसार रूप में दिखाई देता है। वह स्वयं ही अकेला बने रहने वाला है और स्वयं ही संसार रूपी बड़े परिवार वाला है। नानक तो उस प्रभु से शान्त पुरुषों की चरण-धूलि माँगता है। हे देने वाले प्रभु तेरे बिना मुझे अन्य कोई दाता सुझाई नहीं पड़ता।। २१ ।। १ ।। शुद्ध ।।

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु वडहंसु महला १ घरु १ ॥

अमली अमलु न अंबड़ै मछी नीरु न होइ ॥ जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥ १ ॥ हउ वारी वंञा खंनीऐ वंञा तउ साहिब के नावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहिबु सफलिओ रुखड़ा अंम्रितु जा का नाउ ॥ जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ २ ॥ मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि ॥ तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि ॥ ३ ॥ नानकु तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि ॥ मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला १ ॥ गुणवंती सहु राविआ निरगुणि कूके काइ ॥ जे गुणवंती थी रहै ता भी सहु रावण जाइ ॥ १ ॥ मेरा कंतु रीसालू की धन अवरा रावे जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करणी कामण जे थीऐ जे मनु धागा होइ ॥ माणकु मुलि न पाईऐ लीजै चिति परोइ ॥ २ ॥ राहु दसाई न जुलां आखां अंमड़ीआसु ॥ तै सह नालि अकूअणा किउ थीवै घर वासु ॥ ३ ॥ नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ ॥ तै सह लगी जे रहै भी सहु रावै सोइ ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला १ घरु २ ॥ मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ ॥ तेरे मुंध कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लुभाइआ ॥ तेरे दरसन विटहु खंनीऐ वंञा तेरे नाम विटहु कुरबाणो ॥ जा तू ता मै माणु कीआ है तुधु बिनु केहा मेरा माणो ॥ चूड़ा भंनु पलंघ सिउ मुंधे सणु बाही सणु बाहा ॥ एते वेस

੧ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनि सैभं गुर प्रसादि।।

रागु वडहंसु महला १ घरु १।।

जैसे नशेड़ी के लिए नशे के बराबर अन्य कोई वस्तु नहीं पहुँच पाती और मछली के लिए पानी के बराबर कोई नहीं पहुँचता, इसी प्रकार जो अपने मालिक प्रभु के साथ प्रेम में लीन हैं उनके पास भी हरि प्रभु के अतिरिक्त कोई भी बराबरी नहीं कर सकता।। १ ।। तू मेरा स्वामी फलदायक वृक्ष है और तेरा नाम अमृत के समान है। जिन्होंने इस अमृत का पान किया है वे तृप्त हो गए हैं और मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ।। २ ।। तू सबके साथ बस रहा है लेकिन मुझे दिखाई नहीं देता। प्यासे व्यक्ति की प्यास भला कैसे बुझे जब पानी वाले तालाब के बीच और मेरे बीच दीवार बनी हुई हो अर्थात प्रभु और हमारे बीच में भ्रम एवं अहंकार का पर्दा बना हुआ है।। ३ ।। नानक तो तेरा व्यापारी है और हे मालिक, तू ही मेरी रास पूँजी है। मेरे मन से धोखा तो तभी दूर हो सकता है यदि तेरा यश गान करके तेरे सामने अरदास की जाए।। ४ ।। १ ।। वडहंस महला १ ।। गुणवान जीव स्त्री ने तो प्रियतम के साथ रमण किया है परन्तु गुण-विहीन भला क्यों चीख पुकार रही है। यदि वह भी गुणवान हो जाए तो वह भी प्रभु के साथ रमण करने के लिए आगे बढ़ सकती है।। १ ।। मेरा पति तो रस और प्यार का भण्डार है फिर भला स्त्री अन्यों के साथ रमण करने के लिए क्यों जाती है।। १ ।। रहाउ।। यदि शुभ कर्मों वाला मनका हो और मन उसे पिरो लेने वाला धागा हो तो वह उसमें अपने पति के मन रूपी उस हीरे को अपने साथ पिरो लेती है जो किसी भी कीमत पर प्राप्त नहीं होता।। २ ।। मैं अन्यों से तो रास्ता पूछती हूँ; खुद उस पर नहीं चलती परन्तु फिर भी कहती हूँ कि मैं पहुँच चुकी हूँ। हे प्रभु पति, तेरे साथ तो मैं बात भी नहीं करती; फिर भला मुझे तेरे घर में निवास कैसे मिलेगा।। ३ ।। हे नानक, उस एक प्रभु के बिना अन्य कोई भी नहीं है तथा यदि जीव-स्त्री तुझ पति के साथ लीन बनी रहे तो वह भी पति रूप में तुम्हारे साथ आनन्द का उपभोग करेगी।। ४ ।। २ ।। वडहंस महला १ ।। घरु २ ।। मोरों ने मीठे बोलों की झंकार लगा दी है; हे मेरी बहनों, सावन का महीना आ गया है। हे प्रियतम, तेरे रसपूर्ण नयन तो मुझे रस्सी की तरह बाँध लेने वाले हैं। उनके आकर्षण ने मुझे मोहित कर दिया है। तेरे दर्शन के लिए मैं टुकड़े-टुकड़े हो जाऊँ और तेरे नाम पर मैं कुर्बान जाती हूँ। अब जब तू मेरा है तभी मैं तुझ पर गर्व करती हूँ; तेरे बिना भला मेरा गर्व कैसा होगा। अपनी बाँहों में पहने हुए चूड़े को हे मुग्धा स्त्री, पलंग समेत तोड़ दे। अपनी बाँहों सहित अपने पलंग के बाहुओं को भी तोड़ दे। तेरे इतने

करेदीए मुंधे सहु रातो अवराहा ॥ ना मनीआरु न चूड़ीआ ना से वंगुड़ीआहा ॥ जो सह कंठि न लगीआ जलनु सि बाहड़ीआहा ॥ सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा ॥ अंमाली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा ॥ माठि गुंदाईं पटीआ भरीऐ माग संधूरे ॥ अगै गई न मंनीआ मरउ विसूरि विसूरे ॥ मै रोवंदी सभु जगु रुना रुंनड़े वणहु पंखेरू ॥ इकु न रुना मेरे तन का बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी ॥ सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ ॥ आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ ॥ आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ ॥ तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥ सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥ किउ न मरीजै जीअड़ा न दीजै जा सहु भइआ विडाणा ॥ १ ॥ ३ ॥

वडहंसु महला ३ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥ इह जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥ १ ॥ जपि मन मेरे तू एको नामु ॥ सतगुरि दीआ मोकउ एहु निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधा के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाइ ॥ मन की मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ ॥ २ ॥ इसु मन कउ होरु संजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ ॥ सतगुरि मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाइ ॥ ३ ॥ भणति नानकु सतिगुर कउ मिलदो मरै गुर कै सबदि फिरि जीवै कोइ ॥ ममता की मलु उतरै इहु मनु हछा होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ नदरी सतगुरु सेवीऐ नदरी सेवा होइ ॥ नदरी इहु मनु वसि आवै नदरी मनु निरमलु होइ ॥ १ ॥ मेरे मन चेति सचा सोइ ॥ एको चेतहि ता सुखु पावहि फिरि दूखु न मूले होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नदरी मरि कै जीवीऐ नदरी सबदु वसै मनि आइ ॥ नदरी हुकमु बुझीऐ हुकमे रहै समाइ ॥ २ ॥ जिनि जिहवा हरि रसु न चखिओ सा जिहवा जलि जाउ ॥ अन रस सादे लगि रही दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥ ३ ॥ सभना नदरि एक है आपे फरकु करेइ ॥ नानक

हार-सिंगार करने के बावजूद हे मुग्धा स्त्री, तेरा पति तो किसी अन्य के प्रेम में लीन बना हुआ है। तेरे पास तो चूड़ी चढ़ाने वाला अर्थात गुरु भी नहीं है, भक्ति रूपी चूड़ियां भी नहीं है ब्लकि तेरे पास जो चूड़ियां हैं वे वास्तविक चूड़ियां नही हैं अपितु दिखावे वाली ही हैं। जो बाहें पति के गले के साथ नहीं लगी उन बाँहों को तो वास्तव में जल ही जाना चाहिए। मेरी सभी सहेलियां अपने पतियों के साथ रमण करने गई हैं परन्तु मैं विरह की अग्नि में जली हुई किसके दरवाज़े पर जाऊँ। हे सखी, मैं तो मेरे हिसाब से बहुत ही अच्छे आचरण वाली हूँ परन्तु मेरा एक काम भी उस पति प्रभु को अच्छा नहीं लगता। मैंने अपने केशों को संवारकर उनकी छोटी-छोटी चोटियाँ बनायी हैं और उनके चीर में सिन्दूर भी मैंने भरा है। पर जब मैं अपने प्रियतम के सामने जाती हूँ तो मैं स्वीकृत नहीं होती और इसलिए मैं घोर पश्चाताप में बिसूर बिसूर कर मर रही हूँ। मैं रोती हूँ तो सारा संसार रोता है और मेरे साथ वनों के पक्षी भी रोते हैं परन्तु जिन मेरे प्राणों के वियोग ने मुझे पति से दूर किया था वही नहीं रोया अर्थात मेरा वियोग दूर नहीं हुआ। वह सपने में मेरे पास आया और फिर चला भी गया; इस पर मैं आँखें भर-भर कर रोती रही। हे मेरे प्रियतम मैं न तो तुम्हारे पास आ सकती हूँ और न ही किसी को तुम्हारे पास भेज सकती हूँ। हे भाग्यशाली नींद, तू आ जा और शायद मैं अपने पति को फिर सपने में देख लूँ। नानक कहता है कि जो मुझे मेरे मालिक का संदेश देगा मैं भला उसे क्या दूँगा। मैं अपना सिर काटकर उसके बैठने का आसन प्रस्तुत करूँगा और सिर के बिना ही मैं उसकी सेवा करता रहूँगा अर्थात मैं अपना सम्पूर्ण अहंकार नष्ट कर दूँगा। मैं भला मर क्यों नहीं जाती और अपना जीवन समाप्त क्यों नहीं कर देती जब कि मेरा पति किसी अन्य का हो गया है।। १ ।। ३ ।।

वडहंस महला ३ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

यदि मन मैला है तो सब कुछ मैला ही मैला है; तन को धो लेने से मन ठीक नहीं हो जाता। यह सारा संसार भ्रम में भूला हुआ है और इसमें कोई बिनला ही इस तथ्य को बूझता है।। १ ।। हे मेरे मन, तू केवल एक प्रभु के नाम का ही जाप कर क्योंकि सच्चे गुरु ने मुझे यही सुखों का भण्डार दिया है।। १ ।। रहाउ।। यदि व्यक्ति सिद्ध पुरुषों के आसन लगाना भी सीख जाए तथा इन्द्रियों को वश में करके आचरण करे तब भी मन की मैल न उतरने के कारण अहंकार का मल दूर नहीं होता।। २ ।। इस मन को सच्चे गुरु की शरण में जाने के अलावा अन्य किसी भी ढंग से संयमित नहीं किया जा सकता। सच्चे गुरु से मिलकर मन की दशा उलट जाती है और फिर इसे कुछ भी नहीं कहना पड़ता।। ३ ।। नानक का कथन है कि सच्चे गुरु से मिलते ही यह मन बुराईयों की ओर से मर जाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से फिर जीवित हो उठता है। इसके अहम् की मैल उतर जाती है और यह मन अच्छा बन जाता है।। ४।। १ ।। वडहंस महला ३।। प्रभु की कृपादृष्टि के फलस्वरूप ही सच्चे गुरु का सुमिरन होता है और कृपादृष्टि से ही उसकी सेवा होती है। प्रभु की कृपादृष्टि से ही यह मन वश में आता है और कृपादृष्टि से ही यह निर्मल होता है।। १ ।। हे मेरे मन, तू उस सच्चे प्रभु का ही सुमिरन कर। यदि तू केवल एक का ही सुमिरन करेगा तो तुझे सुख प्राप्त होगा और तुझे ज़रा सा भी दुख नहीं मिलेगा।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु की कृपादृष्टि से ही संसार के कुकर्मों के सन्दर्भ में मर कर पुनः जीवित हुआ जाता है और उसकी कृपादृष्टि से ही शब्द-गुरु का निवास मन में होता है। उसकी कृपादृष्टि के फलस्वरूप ही हुकम को जाना जाता है और हुकम में ही लीन हुआ जाता है।। २ ।। जिस जीभ ने हरि रस को नही चखा है उस जीभ को तो जल ही जाना चाहिए। उसने अन्य रसों के स्वाद में लगकर, द्वैतभाव में पड़कर दुख ही दुख प्राप्त किया है।। ३ ।। सब पर प्रभु की कृपादृष्टि एक जैसी ही है परन्तु जीवों के आध्यात्मिक स्तरों के अन्तर भी उसने ही रखे हुए हैं। हे नानक,

सतगुरि मिलिऐ फलु पाइआ नामु वडाई देइ ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ माइआ मोहु गुबारु है गुर बिनु गिआनु न होई ॥ सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई ॥ १ ॥ मन मेरे गुरमति करणी सारु ॥ सदा सदा हरि प्रभु रवहि ता पावहि मोख दुआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुणा का निधानु एकु है आपे देइ ता को पाए ॥ बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाए ॥ २ ॥ मेरी मेरी करदे घटि गए तिना हथि किहु न आइआ ॥ सतगुरि मिलिऐ सचि मिले सचि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ आसा मनसा एहु सरीरु है अंतरि जोति जगाए ॥ नानक मनमुखि बंधु है गुरमुखि मुकति कराए ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ सोहागणी सदा मुखु उजला गुर कै सहजि सुभाइ ॥ सदा पिरु रावहि आपणा विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइ ॥ सतगुरि मोकउ हरि दीआ बुझाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइ ॥ दूजै भाइ करूपी दूखु पावहि आगै जाइ ॥ २ ॥ गुणवंती नित गुण रवै हिरदै नामु वसाइ ॥ अउगणवंती कामणी दुखु लागै बिललाइ ॥ ३ ॥ सभना का भतारु एकु है सुआमी कहणा किछू न जाइ ॥ नानक आपे वेक कीतिअनु नामे लइअनु लाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ अंम्रित नामु सद मीठा लागा गुर सबदी सादु आइआ ॥ सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइआ ॥ १ ॥ हरि करि किरपा सतगुरू मिलाइआ ॥ पूरै सतगुरि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमै बेद बाणी परगासी माइआ मोह पसारा ॥ महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु बहुतु अहंकारा ॥ २ ॥ किसनु सदा अवतारी रूधा कितु लगि तरै संसारा ॥ गुरमुखि गिआनि रते जुग अंतरि चूकै मोह गुबारा ॥ ३ ॥ सतगुर सेवा ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा ॥ साचै नाइ रते बैरागी पाइनि मोख दुआरा ॥ ४ ॥ एको सचु वरतै सभ अंतरि सभना करे प्रतिपाला ॥ नानक इकसु बिनु मै अवरु न जाणा सभना दीवानु दइआला ॥ ५ ॥ ५ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ गुरमुखि सचु संजमु ततु गिआनु ॥ गुरमुखि साचे लगै धिआनु ॥ १ ॥

सच्चे गुरु से मिलने पर ही नाम रूपी फल प्राप्त होता है जो व्यक्ति को बड़प्पन प्रदान करता है।। ४ ।। २ ।। वडहंस महला ३ ।। माया और मोह घोर अन्धकार हैं और गुरु के बिना ज्ञान का प्रकाश नहीं होता। जो शब्द में लीन होते हैं उन्होंने ही इस रहस्य को जाना है। द्वैतभाव में पड़े हुए लोग तो दुखी ही हुए हैं।। १ ।। हे मेरे मन, गुरु की ही मति अनुसार आचरण करना सभी कामों का सार तत्व है। जब व्यक्ति सदैव प्रभु का सुमिरन करता रहे तो उसे मुक्ति का द्वार भी प्राप्त हो जाता है।। १ ।। रहाउ ।। गुणों का भण्डार तो एक प्रभु ही है और जिसे वह स्वयं देता है वही गुण प्राप्त करता है। प्रभु नाम के बिना सभी बिछुड़े हुए हैं और शब्द-गुरु के माध्यम से ही सभी उससे मिल जाते हैं।। २ ।। मेरा-मेरा करते हुए ही लोग यहाँ से चले गए परन्तु उनके हाथ कुछ नहीं आया। सच्चे गुरु से मिलने पर ही सत्य मिलता है और व्यक्ति सच्चे नाम में लीन हो जाता है।। ३ ।। हमारा यही शरीर आशाओं और तृष्णाओं का ही रूप है जिसके अन्दर व्यक्ति यदि चाहे तो प्रभु-नाम की ज्योति जलाता है। हे नानक, मनमुख व्यक्ति तो आशाओं तृष्णाओं के बन्धन में बँधा रहता है परन्तु गुरमुख व्यक्ति अपने आप को मुक्त कर लेता है।। ४ ।। ३ ।। वडहंस महला ३ ।। गुरु के सहज स्वभाव वाले उपदेश के फलस्वरूप सुहागिन अर्थात प्रभु को पति मानने वाली स्त्रियों के मुख सदैव उज्जवल बने रहते हैं। वे अपने अन्तर्मन का अभिमान गँवा कर सदैव अपने प्रभु पति के साथ रमण करती हैं।। १।। हे मेरे मन, तू प्रभु के नाम का सुमिरन कर क्योंकि सच्चे गुरु ने मुझे यही समझाया है।। १ ।। रहाउ ।। दुहागिन जीव स्त्रियां गति-विहीन होकर रोती चिल्लाती रहती हैं परन्तु वे प्रभु के ठिकाने पर नहीं पहुँच पाती। माया के द्वैतभाव में पड़ी हुई वे कुरूप बनी रहती हैं और आगे जाकर दुखी ही बनी रहती है।। २ ।। गुणवान स्त्री प्रभु-नाम को मन में बसाकर सदैव गुणों में ही रमण करती है परन्तु अवगुणों वाली जीव स्त्री दुखी होकर विलाप करती रहती है।। ३ ।। सबका पति तो एक प्रभु ही है जिसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। हे नानक, उसने स्वयं ही लोगों को अपने से अलग किया हुआ है और स्वयं ही वह लोगों को प्रभु-नाम में लगा लेता है।। ४ ।। ४ ।। वडहंसु महला ३ ।। जिनको अमृत नाम सदैव मीठा लगता है उन्हें शब्द-गुरु के माध्यम से इसका स्वाद अच्छा लगा है। सच्ची वाणी स्वाभाविक ही सहजभाव में लीन बनी रहती है और प्रभु को मन में बसा देती है।। १ ।। प्रभु ने कृपा करके सच्चे गुरु से मिला दिया है और पूर्ण सच्चे गुरु ने हरि नाम का ही सुमिरन करवा दिया है।। १ ।। रहाउ।। ब्रह्मा ने वेद-वाणी की रचना की परन्तु वह भी माया मोह का प्रसार ही करता रहा। महादेव ज्ञानवान है और अपने आप में ही मस्त बना रहने वाला है परन्तु उसमें भी क्रोध और अहंकार बहुत अधिक है।। २ ।। कृष्ण रंग वाला विष्णु सदैव अवतार धारण करने में ही मस्त रहता है; अब बताओ किसके पीछे लगकर संसार पार उतर सकेगा। गुरमुख व्यक्ति संसार में रहते हुए ज्ञान में लीन बने रहते हैं और उनका मोह रूपी अहंकार दूर हो चुका होता है।। ३ ।। सच्चे गुरु की सेवा से ही मुक्ति मिलती है और गुरमुख ही संसार सागर से पार उतरता है। वास्तविक प्रेमी लोग तो प्रभु के सच्चे नाम में लीन बने रहते हैं और मोक्ष का द्वार पा जाते हैं।। ४ ।। एक ही सच सबके अन्दर कार्यशील है और वह ही सबका पालन करता है। हे नानक, उस एक के बिना मैं अन्य किसी को नहीं जानता क्योंकि वही दयालु सबका हाकिम है (जो हमारी फरियाद सुनता है)।। ५ ।। ५ ।। वडहंसु महला ३।। गुरमुख के पास ही सत्य की युक्ति और तत्व ज्ञान होता है और गुरमुख ही उस सत्य स्वरूप प्रभु में ध्यान लगाए रहता है।। १ ।।

गुरमुखि मन मेरे नामु समालि ॥ सदा निबहै चलै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि जाति पति सचु सोइ ॥ गुरमुखि अंतरि सखाई प्रभु होइ ॥ २ ॥ गुरमुखि जिस नो आपि करे सो होइ ॥ गुरमुखि आपि वडाई देवै सोइ ॥ ३ ॥ गुरमुखि सबदु सचु करणी सारु ॥ गुरमुखि नानक परवारै साधारु ॥ ४ ॥ ६ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ रसना हरि सादि लगी सहजि सुभाइ ॥ मनु त्रिपतिआ हरि नामु धिआइ ॥ १ ॥ सदा सुखु साचै सबदि वीचारी ॥ आपणे सतगुर विटहु सदा बलिहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अखी संतोखीआ एक लिव लाइ ॥ मनु संतोखिआ दूजा भाउ गवाइ ॥ २ ॥ देह सरीरि सुखु होवै सबदि हरि नाइ ॥ नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ नानक मसतकि जिसु वडभागु ॥ गुर की बाणी सहज बैरागु ॥ ४ ॥ ७ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ सचै सबदि सचि समाइ ॥ १ ॥ ए मन नामु निधानु तू पाइ ॥ आपणे गुर की मंनि लै रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै सबदि विचहु मैलु गवाइ ॥ निरमलु नामु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ भरमे भूला फिरै संसारु ॥ मरि जनमै जमु करे खुआरु ॥ ३ ॥ नानक से वडभागी जिन हरि नामु धिआइआ ॥ गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥ हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥ १ ॥ हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ ॥ हुकमु मंनहि ता हरि मिलै ता विचहु हउमै जाइ ॥ रहाउ ॥ हउमै सभु सरीरु है हउमै ओपति होइ ॥ हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुझि न सकै कोइ ॥ २ ॥ हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइ ॥ हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइ ॥ सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ १२ ॥

वडहंसु महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सेज एक एको प्रभु ठाकुरु ॥ गुरमुखि हरि रावे सुख सागरु ॥१॥ मै प्रभ मिलण प्रेम मनि आसा॥

हे मेरे गुरमुख मन, तू प्रभु के नाम को याद रख क्योंकि यही सदैव तुम्हारे साथ निभने वाला है।रहाउ।। गुरमुख व्यक्तियों की जाति एवं सम्मान केवल एक सत्य-प्रभु ही है। गुरमुख व्यक्तियों के अन्दर प्रभु बसता है जो सदैव उनकी सहायता करता है। परमात्मा जिसे गुरमुख बनाता है वही गुरमुख होता है और वह प्रभु ही गुरमुख को बड़प्पन प्रदान करता है।। ३ ।। गुरमुख व्यक्ति नाम रूपी सच्चे आचरण को अपनाते हैं और हे नानक, गुरमुख व्यक्ति ही अपने परिवार के सुधार का सुदृढ़ आधार बनते हैं।। ४ ।। ६ ।। वडहंसु महला ३ ।। मेरी जीभ प्रभु के स्वाद में स्वाभाविक ही लग गई और मेरा मन प्रभु नाम का सुमिरन करके तृप्त हो गया है।। १ ।। सच्चे शब्द का चिन्तन ही सदा सुख देने वाला होता है और यह चिन्तन करवाने वाले सच्चे गुरु पर मैं सदैव बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। रहाउ।। उस एक प्रभु में लौ लगाने से मेरी आँखें तृप्त हो गई हैं और द्वैतभाव को अर्थात माया मोह को छोड़ देने से मेरा मन सन्तुष्ट हो गया है।। २ ।। शब्द रूपी प्रभु के नाम के माध्यम से मेरा शरीर सुखी हो गया है और चन्दन रूपी नाम मेरे हृदय में समा गया है।। ३ ।। हे नानक, जिसके माथे पर बड़े भाग्य लेख लिखे हुए हैं उसे ही गुरु की वाणी के माध्यम से पूर्ण शान्ति देने वाला वैराग्य भाव प्राप्त हो जाता है।। ४ ।। ७ ।। वडहंसु महला ३।। पूर्ण गुरु से ही नाम प्राप्त होता है और सच्चे शब्द के माध्यम से सत्य में लीन हुआ जाता है।। १ ।। हे मन, तू सब प्रकार के सुखों के घर नाम के खज़ाने को प्राप्त कर और अपने गुरु की रज़ा को मान ले।। १ ।। रहाउ ।। शब्द-गुरु के माध्यम से अन्तर्मन की मैल छूट जाती है और निर्मल नाम मन में आन बसता है।। २ ।। सारा संसार भ्रमों में भूला हुआ भटक रहा है; यह मरता-जन्मता रहता है और यम इसे सदैव तंग करता रहता है।। ३ ।। हे नानक, जिन्होंने प्रभु के नाम का सुमिरन किया वे भाग्यशाली हैं। उन्होंने ही गुरु की कृपा से प्रभु को मन में बसा लिया है।। ४ ।। ८।। वडहंसु महला ३ ।। अहंकार और प्रभु के नाम में तो परस्पर विरोध बना ही रहता है; ये दोनों एक स्थान पर नहीं बस सकते। अहंकार में सेवा नहीं होती और इस प्रकार मन के सभी कार्य व्यर्थ हो जाते हैं।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु का सुमिरन कर और शब्द-गुरु के अनुरूप आचरण बना। हुकम को मानने से ही प्रभु से मिलाप होता है और व्यक्ति के अन्तर्मन से अहंकार चला जाता है।। रहाउ ।। सभी शरीरों में अहंकार बना रहता है और अहंकार से ही सारी उत्पत्ति होती है अर्थात जीव जन्म धारण करते रहते हैं। अहंकार ही सबसे बड़ा घोर अंधकार है और अहंकार में ग्रस्त व्यक्ति को कुछ भी समझ नहीं पड़ता।। २।। अहंकार में ग्रस्त होकर न तो प्रभु भक्ति होती है और न ही प्रभु के हुकम को बूझा जाता है। जीव अहंकार में ही बंधा हुआ है और इसी कारण इसके मन में नाम का निवास नहीं होता।। ३ ।। हे नानक, जब सच्चा गुरु मिलता है तो अहंकार छूट जाता है और मन में सत्य का निवास हो जाता है। जो व्यक्ति सत्य को मानकर उसके अनुरूप आचरण करता है, सत्य में स्थिर बना रहता है और सत्य की ही सेवा करता है वह अन्ततः सत्य में समाहित हो जाता है।। ४ ।। ६ ।। १२ ।।

वडहंसु महला ४ घरु १   १ ओअंकार सति गुर प्रसादि।।

गुरमुख व्यक्ति का हृदय एक सेज है और सबका मालिक प्रभु पति भी एक ही है। गुरमुख जीव-स्त्री उस प्रभु पति में लीन होकर सुख के सागर परमात्मा के साथ आध्यात्मिक रमण करती है।। १ ।। मेरे मन में प्रेम होने के कारण प्रभु से मिलाप होने की आशा बनी हुई है।

गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरू कउ जासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै अवगण भरपूरि सरीरे ॥ हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ॥ २ ॥ जिनि गुणवंती मेरा प्रीतमु पाइआ ॥ से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ॥ ३ ॥ हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे ॥ नानक गरीब राखहु हरि मेरे ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ४ ॥ मेरा हरि प्रभु सुंदरु मै सार न जाणी ॥ हउ हरि प्रभ छोडि दूजै लोभाणी ॥ १ ॥ हउ किउ करि पिर कउ मिलउ इआणी ॥ जो पिर भावै सा सोहागणि साई पिर कउ मिलै सिआणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै विचि दोस हउ किउ करि पिरु पावा ॥ तेरे अनेक पिआरे हउ पिर चिति न आवा ॥ २ ॥ जिनि पिरु रविआ सा भली सुहागणि ॥ से मै गुण नाही हउ किआ करी दुहागणि ॥ ३ ॥ नित सुहागणि सदा पिरु रावै ॥ मै करमहीण कब ही गलि लावै ॥ ४ ॥ तू पिरु गुणवंता हउ अउगुणिआरा ॥ मै निरगुण बखसि नानकु वेचारा ॥ ५ ॥ २ ॥

वडहंसु महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मै मनि वडी आस हरे किउ करि हरि दरसनु पावा ॥ हउ जाइ पुछा अपने सतगुरै गुर पुछि मनु मुगधु समझावा ॥ भूला मनु समझै गुर सबदी हरि हरि सदा धिआए ॥ नानक जिसु नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि चरणी चितु लाए ॥ १ ॥ हउ सभि वेस करी पिर कारणि जे हरि प्रभ साचे भावा ॥ सो पिरु पिआरा मै नदरि न देखै हउ किउ करि धीरजु पावा ॥ जिसु कारणि हउ सीगारु सीगारी सो पिरु रता मेरा अवरा ॥ नानक धनु धंनु सोहागणि जिनि पिरु राविअड़ा सचु सवरा ॥ २ ॥ हउ जाइ पुछा सोहाग सुहागणि तुसी किउ पिरु पाइअड़ा प्रभु मेरा ॥ मै ऊपरि नदरि करी पिरि साचै मै छोडिअड़ा मेरा तेरा ॥ सभु मनु तनु जीउ करहु हरि प्रभ का इतु मारगि भैणे मिलीऐ ॥ आपनड़ा प्रभु नदरि करि देखै नानक जोति जोती रलीऐ ॥ ३ ॥ जो हरि प्रभ का मै देइ सनेहा तिसु मनु तनु अपणा देवा ॥ नित पखा फेरी सेव कमावा तिसु आगै पाणी ढोवां ॥ नित नित सेव करी

पूर्ण गुरु ही प्रियतम प्रभु से मिलाता है और इसलिए मैं अपने गुरु पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। रहाउ।। मेरा शरीर अवगुणों से भरा हुआ है और मैं उस पूर्ण प्रियतम से भला कैसे मिल सकती हूँ।। २ ।। गुण वाली जिस गुरमुख रूपी जीव स्त्री ने मेरे प्रियतम प्रभु को पा लिया है, मुझमें वे सब गुण नहीं हैं; इसलिए हे मेरी माँ, मैं उसे किस तरह मिलूँ।। ३ ।। मै बहुत से उपाय करते हुए थक गया हूँ; हे मेरे प्रभु, गरीब नानक का उद्धार कर दे।। ४ ।। १ ।। वडहंसु महला ४ ।। मेरा हरि प्रभु तो बहुत सुन्दर है परन्तु मैंने उसकी वास्तविकता को नहीं समझा। मैंने हरि प्रभु को छोड़कर द्वैतभाव अर्थात माया में ही अपने आप को लगाए रखा है।। १ ।। मैं अनजान और मूर्ख स्त्री भला उस प्रियतम को कैसे मिल सकती हूँ। जो प्रियतम को भा जाती है वही सुहागिन है और वही ज्ञानवान स्त्री उससे मिलाप करती है।। १ ।। रहाउ ।। मुझमें दोष है इसलिए मैं भला उस प्रियतम को कैसे पा सकती हूँ। हे प्रियतम, तुझे तो अनेकों ही प्यार करने वाले हैं और मैं तो तुझे कभी याद ही नहीं आती।। २ ।। जिसने प्रियतम के साथ रमण किया है वह ही वास्तविक रूप से सुन्दर सुहागिन है। मैं दुहागिन (कुलटा) स्त्री क्या करूँ क्योंकि मुझमें वे सब गुण नहीं हैं।। ३ ।। सदैव सुहागिन बने रहने वाली तो सदा प्रियतम के साथ रमण करती रहती है; काश, ऐसा भी होता कि मुझ अभागिन को भी वह गले लगा लेता।। ४ ।। तू गुणवान प्रियतम है और मैं अवगुणों वाली हूँ। मैं गुणों से विहीन हूँ इसलिए बेचारे नानक को तू क्षमा प्रदान कर दे।। ५ ।। २ ।।

वडहंसु महला ४ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मेरे हृदय में ज़बरदस्त इच्छा बनी हुई है कि किसी भी प्रकार मैं प्रभु के दर्शन प्राप्त करूँ। मैं अपने सच्चे गुरु से जाकर पूछती हूँ और गुरु से पूछकर इस मूर्ख मन को समझाती हूँ। शब्द-गुरु के माध्यम से ही भटकता हुआ मन समझदार बनता है तथा मैं सदैव प्रभु का सुमिरन करती रहती हूँ। हे नानक, मेरा प्यारा प्रभु जिस पर कृपादृष्टि करता है वही प्रभु के चरणों में चित्त लगाता है।। १ ।। मैं सारे वेश (सिंगार) आदि सच्चे प्रभु को प्रसन्न करने के लिए ही करती हूँ ताकि किसी भी तरह सच्चे प्रभु को अच्छी लग सकूँ। वह प्यारा प्रियतम जब मेरी ओर नज़र उठाकर भी नहीं देखता तो भला मैं कैसे धैर्य प्राप्त करूँ। जिस पति की खातिर मैं सिंगार करती हूँ वह पति तो अन्य लोगों के साथ उनके प्रेम में रंगा हुआ है। हे नानक, वही स्त्री धन्य है और सच्ची सुहागिन है जिसने प्रियतम के साथ रमण किया है और उसी सत्य प्रभु को ही श्रेष्ठ पति माना है।। २ ।। मैं उन भाग्यशाली सुहागिनों से जाकर पूछती हूँ कि तुम लोगों ने किस प्रकार मेरे प्रभु पति को प्राप्त किया है। जब मेरे सच्चे प्रियतम ने मेरे ऊपर कृपादृष्टि की तो मैंने मेरे तेरे की भावना का त्याग कर दिया है। हे बहन, मन तन प्राण आदि सब कुछ प्रभु को अर्पण कर दो। इस मार्ग पर चलकर ही वास्तव में अपना प्रिय प्रभु कृपादृष्टि से देखता है और हे नानक, मेरी आत्मा रूपी ज्योति उस परम ज्योति में लीन हो जाती है।। ३ ।। हरि प्रभु की मुझे जो कोई खबर भी दे दे मैं अपना तन मन उसके सामने अर्पण कर दूँ। मैं सदैव उस पर पंखा झुलाऊँ, उसकी सेवा करूँ और उसका पानी भरता रहूँ।

हरि जन की जो हरि हरि कथा सुणाए ॥ धनु धंनु गुरू गुर सतिगुरु पूरा नानक मनि आस पुजाए ॥ ४ ॥ गुरु सजणु मेरा मेलि हरे जितु मिलि हरि नामु धिआवा ॥ गुर सतिगुर पासहु हरि गोसटि पूछां करि सांझी हरि गुण गावां ॥ गुण गावा नित नित सद हरि के मनु जीवै नामु सुणि तेरा ॥ नानक जितु वेला विसरै मेरा सुआमी तितु वेलै मरि जाइ जीउ मेरा ॥ ५ ॥ हरि वेखण कउ सभु कोई लोचै सो वेखै जिसु आपि विखाले ॥ जिस नो नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि हरि सदा समाले ॥ सो हरि हरि नामु सदा सदा समाले जिसु सतगुरु पूरा मेरा मिलिआ ॥ नानक हरि जन हरि इके होए हरि जपि हरि सेती रलिआ ॥ ६ ॥ १ ॥ ३ ॥

वडहंसु महला ५ घरु १ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

अति ऊचा ता का दरबारा ॥ अंतु नाही किछु पारावारा ॥ कोटि कोटि कोटि लख धावै ॥ इकु तिलु ता का महलु न पावै ॥ १ ॥ सुहावी कउणु सु वेला जितु प्रभ मेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाख भगत जा कउ आराधहि ॥ लाख तपीसर तपु ही साधहि ॥ लाख जोगीसर करते जोगा ॥ लाख भोगीसर भोगहि भोगा ॥ २ ॥ घटि घटि वसहि जाणहि थोरा ॥ है कोई साजणु परदा तोरा ॥ करउ जतन जे होइ मिहरवाना ॥ ता कउ देई जीउ कुरबाना ॥ ३ ॥ फिरत फिरत संतन पहि आइआ ॥ दूख भ्रमु हमारा सगल मिटाइआ ॥ महलि बुलाइआ प्रभ अंम्रितु भूंचा ॥ कहु नानक प्रभु मेरा ऊचा ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ धनु सु वेला जितु दरसनु करणा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ १ ॥ जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे ॥ मनु जीवै प्रभ नामु चितेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु मंत्रु तुमारा अंम्रित बाणी ॥ सीतल पुरख द्रिसटि सुजाणी ॥ २ ॥ सचु हुकमु तुमारा तखति निवासी ॥ आइ न जावै मेरा प्रभु अबिनासी ॥ ३ ॥ तुम मिहरवान दास हम दीना ॥ नानक साहिबु भरपुरि लीणा ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ तू बेअंतु को विरला जाणै ॥ गुर प्रसादि को सबदि पछाणै ॥ १ ॥ सेवक की अरदासि

जो भी प्रभु का सेवक प्रभु की कथा वार्ता मुझे सुनाए मैं सदैव उसकी सेवा करता रहूँ। पूर्ण सच्चा गुरु मुझ जीव स्त्री के लिए धन्य है क्योंकि हे नानक, यही मन की इच्छा को पूरी करता है।। ४ ।। हे प्रभु, मेरा सज्जन गुरु से मिलाप करा दे जिसे मिलकर मैं प्रभु के नाम का सुमिरन करता रहूँ। सच्चे गुरु से ही मैं प्रभु की चर्चा करूँ और गुरु के साथ साझा करके मैं प्रभु के गुणों को गाता रहूँ। हे प्रभु, मैं सदैव उस गुरु के गुणों का गायन करता रहूँ। हे प्रभु, मैं सदैव उस गुरु के गुणों का गायन करता रहूँ क्योंकि तेरा नाम सुनकर ही मेरा मन आध्यात्मिक तौर से जीवित बना रहता है। हे नानक, जिस समय मेरा स्वामी मेरे मन से भूल जाए मेरे प्राण तो उसी समय मर जाते हैं।। ५ ।। प्रभु को देखना तो सभी चाहते हैं परन्तु वही देख पाते हैं जिन्हें वह स्वयं दिखाता है। मेरा प्रियतम जिस पर भी कृपादृष्टि करता है वही सदैव प्रभु को मन में बसाए रहता है। जिसने भी मेरे सच्चे गुरु से मुझसे मिला दिया है वही उस प्रभु के नाम को सदैव हृदय में संभाले रहता है। हे नानक, प्रभु का सेवक और प्रभु एक ही हो गए हैं क्योंकि सेवक भी प्रभु का सुमिरन करके प्रभु में ही लीन हो गया है।। ६ ।। १ ।। ३ ।।

वडहंसु महला ५ घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

उस प्रभु का दरबार अत्यन्त ऊँचा है और उसका कोई ओर-छोर और सीमा नहीं है। लाखों करोड़ों व्यक्ति उसके लिए भागे दौड़े फिरते हैं परन्तु उसके वास्तविक ठिकाने का एक तिल मात्र भी नहीं जान पाते।। १ ।। वह कौन सा सुहावना समय है जब प्रभु का मिलाप होता है।। १ ।। रहाउ ।। लाखों ही भक्त जिसकी आराधना करते हैं और लाखों ही तपस्वी जिसके लिए तप साधना करते हैं; लाखों ही योगेश्वर उसके लिए योग साधना करते हैं और लाखों ही भोगी लोग उसके भोगों को भोगते रहते हैं।। २ ।। ऐसा प्रभु घट घट में बसता है परन्तु उसके वास्तविक रूप को जानने वाले थोड़े ही होते हैं। क्या कोई ऐसा सज्जन है जिसने अपने और उसके मध्य में बने हुए अज्ञान के पर्दे को तोड़ डाला हो। मैं प्रयत्न करता हूँ कि कैसे वह प्रभु कृपालु हो जाए तो मैं उस पर अपने प्राणों समेत कुर्बान हो जाऊँ।। ३ ।। घूमता-भटकता हुआ मैं शान्त पुरुषों के पास आया हूँ जिन्होंने मेरे सारे ही दुख और भ्रमों को मिटा दिया है। प्रभु ने मुझे अपने स्थान पर बुलाया और मैंने प्रभु रूपी अमृत का आनन्द लिया। नानक का कथन है कि मेरा प्रभु बहुत ही विशाल और ऊँचा है।। ४ ।। १ ।। वडहंसु महला ५ ।। वह समय सफल एवं धन्य है जिसमें मुझे प्रभु के दर्शन होते हैं। मैं अपने सच्चे गुरु के चरणों पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। मेरा प्रियतम प्रभु मेरे जीवन का दाता है और प्रभु-नाम का सुमिरन करके ही मेरा मन जीवित बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तुम्हारा उपदेश ही सच्चा है और तुम्हारी वाणी अमृत के समान है। तू शान्ति और शीतलता प्रदान करने वाला तथा सर्वव्यापक दृष्टि वाला सुजान है।। २ ।। तू ही हृदय रूपी सिंहासन पर बैठने वाला है और तेरा ही हुकम सच्चा हुकम है। मेरा मालिक अविनाशी प्रभु है जो कभी भी आवागमन में नहीं पड़ता।।३।। हम दीन व्यक्ति हैं, तुम्हारे दास हैं और तुम कृपा करने वाले हो; हे नानक, वह सबका स्वामी सर्वत्र समाया हुआ है।। ४ ।। २ ।। वडहंसु महला ५ ।। हे प्रभु, तू अनन्त है और कोई बिरला ही इस तथ्य को जानता है। गुरु की कृपा से कोई बिरला ही शब्द को पहचानता है।। १ ।। इस सेवक की हे प्यारे प्रभु, यही अरदास है कि

पिआरे ॥ जपि जीवा प्रभ चरण तुमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दइआल पुरख मेरे प्रभ दाते ॥ जिसहि जनावहु तिनहि तुम जाते ॥ २ ॥ सदा सदा जाई बलिहारी ॥ इत उत देखउ ओट तुमारी ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण गुणु किछू न जाता ॥ नानक साधू देखि मनु राता ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहंसु मः ५ ॥ अंतरजामी सो प्रभु पूरा ॥ दानु देइ साधू की धूरा ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ तेरी ओट पूरन गोपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरे ॥ निकटि वसै नाही प्रभु दूरे ॥ २ ॥ जिस नो नदरि करे सो धिआए ॥ आठ पहर हरि के गुण गाए ॥ ३ ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ सरनि परिओ नानक हरि दुआरे ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ तू वडदाता अंतरजामी ॥ सभ महि रविआ पूरन प्रभ सुआमी ॥ १ ॥ मेरे प्रभ प्रीतम नामु अधारा ॥ हउ सुणि सुणि जीवा नामु तुमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी सरणि सतिगुर मेरे पूरे ॥ मनु निरमलु होइ संता धूरे ॥ २ ॥ चरन कमल हिरदै उरि धारे ॥ तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे ॥ ३ ॥ करि किरपा तेरे गुण गावा ॥ नानक नामु जपत सुखु पावा ॥ ४ ॥ ५ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ साधसंगि हरि अंम्रितु पीजै ॥ ना जीउ मरै न कबहू छीजै ॥ १ ॥ वडभागी गुरु पूरा पाईऐ ॥ गुर किरपा ते प्रभू धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रतन जवाहर हरि माणक लाला ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भए निहाला ॥ २ ॥ जत कत पेखउ साधू सरणा ॥ हरि गुण गाइ निरमल मनु करणा ॥ ३ ॥ घट घट अंतरि मेरा सुआमी वूठा ॥ नानक नामु पाइआ प्रभु तूठा ॥ ४ ॥ ६ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ विसरु नाही प्रभ दीन दइआला ॥ तेरी सरणि पूरन किरपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह चिति आवहि सो थानु सुहावा ॥ जितु वेला विसरहि ता लागै हावा ॥ १ ॥ तेरे जीअ तू सद ही साथी ॥ संसार सागर ते कढु दे हाथी ॥ २ ॥ आवणु जाणा तुम ही कीआ ॥ जिसु तू राखहि तिसु दूखु न थीआ ॥ ३ ॥ तू एको साहिबु अवरु न होरि ॥ बिनउ करै नानकु कर जोरि ॥ ४ ॥ ७ ॥ वडहंसु मः ५ ॥ तू जाणाइहि ता कोई जाणै ॥ तेरा दीआ नामु वखाणै ॥ १ ॥ तू अचरजु कुदरति

मैं तुम्हारे चरणों का सुमिरन करता हुआ जीवित बना रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। हे मेरे दाता प्रभु, तुम दयालु और सर्वव्यापक हो; जिसे तुम जनवाते हो केवल वही तुझे जान पाता है।। २ ।। मैं सदैव तुम पर बलिहारी जाता हूँ और यहाँ वहाँ तुम्हारा ही आश्रय ढूँढता हूँ।। ३ ।। मैं गुणविहीन हूँ और मैंने तुम्हारे किसी गुण को भी नहीं जाना है। नानक का कथन है कि मेरा मन साधु पुरुष को देखकर उसमें लीन हो गया है।। ४ ।। ३ ।। वडहंसु महला ५ ।। वह पूर्ण प्रभु अन्तर्यामी है और हे प्रभु, मुझे साधु पुरुषों की चरण की धूलि का दान दो।। १ ।। हे दीन दयालु प्रभु, कृपा करो क्योंकि हे पूर्ण स्वामी, मुझे तेरा ही आसरा है।। १ ।। रहाउ।। जल-थल और अंतरिक्ष में वह प्रभु पूर्ण रूप से समाया हुआ है और वह प्रभु दूर नहीं है, निकट ही है।। २ ।। जिस पर वह कृपादृष्टि करता है वही उसका सुमिरन करता है तथा आठों प्रहर प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है।। ३ ।। सभी जीव-जन्तुओं का पालन-पोषण करने वाले हे प्रभु, नानक तेरे द्वार पर तेरी शरण में आ पहुँचा है ।। ४ ।। ४ ।। वडहंसु महला ५ ।। तू अन्तर्यामी और महान दाता है। हे स्वामी प्रभु, तू ही पूर्ण रूप से सभी में रम रहा है।। १ ।। हे मेरे प्रियतम प्रभु, मेरे जीवन का आधार तुम्हारा नाम ही है और तुम्हारे नाम को ही सुन सुन कर मैं जीवित बना रहता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। हे मेरे सच्चे गुरु, मैं तुम्हारी शरण में हूँ और मेरा मन शान्त पुरुषों की चरण धूलि में निर्मल हो जाता है।। २ ।। तेरे चरण-कमलों को मैंने हृदय में धारण किया हुआ है और तेरे दर्शन के लिए मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ।। ३ ।। मुझ पर कृपा करो ताकि मैं तेरे गुण गाता रहूँ।। ४ ।। ५ ।। वडहंसु महला ५ ।। साधसंगत में प्रभु रूपी अमृत का पान करो जिससे न तो तुम्हारे प्राणों का अन्त होगा और न ही व्यक्ति नष्ट होता है।। १ ।। बड़े भाग्य से पूर्ण गुरु प्राप्त होता है और गुरु की कृपा से ही प्रभु का सुमिरन किया जाता है।। १ ।। रहाउ ।। परमात्मा ही रत्न, जवाहर, माणिक और मोती की तरह है जिसका सुमिरन करते हुए प्रभु-कृपा से व्यक्ति आनन्दित हो उठता है।। २ ।। जिधर भी मैं देखता हूँ मुझे साधु पुरुष अर्थात सच्चे गुरु की शरण ही एक आसरा दिखाई देती है। प्रभु के गुण गाने से मन को निर्मल किया जाता है।। ३ ।। सभी घट घट में मेरा स्वामी प्रभु बस रहा है। हे नानक, प्रभु के प्रसन्न होने पर ही उसका नाम प्राप्त हुआ है।। ४ ।। ६ ।। वडहंसु महला ५ ।। हे दीनदयालु प्रभु, मुझे कभी भी भूल मत क्योंकि हे पूर्ण कृपालु मैं तेरी ही शरण में हूँ।। १ ।। रहाउ ।। जिस स्थान पर वह प्रभु याद आए वही स्थान सुहावना है और जिस समय प्रभु भूल जाए उसी समय मुझे वियोग का दुख लग जाता है।। १ ।। हे प्रभु, तू ही सदैव हमारा साथी है और ये सब जीव तेरे ही हैं। तू अपना हाथ देकर हमें संसार सागर से बाहर खींच ले।। २ ।। आवागमन तो तुम्हारा ही बनाया हुआ है परन्तु इससे जिसकी तू रक्षा कर लेता है उसे फिर कभी भी दुख नहीं होता।। ३ ।। नानक हाथ जोड़कर तेरे सम्मुख विनती करता है, कि तू एक ही मालिक है अन्य कोई नहीं है।।४ ।। ७ ।। वडहंसु महला ५ ।। जब तू जनवाता है तभी कोई तेरे बारे में जान पाता है और तेरे दिए हुए नाम का उच्चारण करता है अर्थात सुमिरन करता है।। १ ।। तुम आश्चर्य रूप हो और तेरी कला

तेरी बिसमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु आपे कारणु आपे करणा ॥ हुकमे जंमणु हुकमे मरणा ॥२॥ नामु तेरा मन तन आधारी ॥ नानक दासु बखसीस तुमारी ॥ ३ ॥ ८ ॥

वडहंसु महला ५ घरु २ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै अंतरि लोचा मिलण की पिआरे हउ किउ पाई गुर पूरे ॥ जे सउ खेल खेलाईऐ बालकु रहि न सकै बिनु खीरे ॥ मेरै अंतरि भुख न उतरै अंमाली जे सउ भोजन मै नीरे ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु पिरंम का बिनु दरसन किउ मनु धीरे ॥ १ ॥ सुणि सजण मेरे प्रीतम भाई मै मेलिहु मित्रु सुखदाता ॥ ओहु जीअ की मेरी सभ बेदन जाणै नित सुणावै हरि कीआ बाता ॥ हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सका जिउ चात्रिकु जल कउ बिललाता ॥ हउ किआ गुण तेरे सारि समाली मै निरगुण कउ रखि लेता ॥ २ ॥ हउ भई उडीणी कंत कउ अंमाली सो पिरु कदि नैणी देखा ॥ सभि रस भोगण विसरे बिनु पिर कितै न लेखा ॥ इहु कापड़ु तनि न सुखावई करि न सकउ हउ वेसा ॥ जिनी सखी लालु राविआ पिआरा तिन आगै हम आदेसा ॥ ३ ॥ मै सभि सीगार बणाइआ अंमाली बिनु पिर कामि न आए ॥ जा सहि बात न पुछीआ अंमाली ता बिरथा जोबनु सभु जाए ॥ धनु धनु ते सोहागणी अंमाली जिन सहु रहिआ समाए ॥ हउ वारिआ तिन सोहागणी अंमाली तिन के धोवा सद पाए ॥ ४ ॥ जिचरु दूजा भरमु सा अंमाली तिचरु मै जाणिआ प्रभु दूरे ॥ जा मिलिआ पूरा सतिगुरू अंमाली ता आसा मनसा सभ पूरे ॥ मै सरब सुखा सुख पाइआ अंमाली पिरु सरब रहिआ भरपूरे ॥ जन नानक हरि रंगु माणिआ अंमाली गुर सतिगुर कै लगि पैरे ॥ ५ ॥ १ ॥ ९ ॥

वडहंसु महला ३ असटपदीआ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ॥ अनदिनु सचु सलाहणा धनु धनु वडभाग हमारा ॥ १ ॥ मन मेरे साचे नाम विटहु बलि जाउ ॥ दासनि दासा होइ रहहि ता पावहि

(तेरी शक्ति, कुदरत) भी हैरानी में डालने वाली है।। १ ।। रहाउ ।। तू स्वयं ही सारे कार्यों का कारण है और स्वयं ही सब कुछ करने वाला है। तेरे हुकम में ही जीव जन्म लेते हैं और तेरे हुकम में ही वे मर जाते हैं।। २ ।। तेरा नाम ही मेरे मन और तन का आसरा है और दास नानक पर तुम्हारी ही कृपा है।। ३ ।। ८ ।।

वडहंसु महला ५ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मेरे अन्तर्मन में हे प्यारे प्रभु, तुझ से मिलने की तीव्र इच्छा है। मैं कैसे पूर्ण गुरु से मिलाप करूँ। छोटे बच्चे को बेशक सैंकड़ों खेलों में लगाया जाए परन्तु वह दूध के बिना रह नहीं सकता। हे मेरी सहेली, बेशक सैंकड़ों भोजन मेरे लिए परोसे जाएं परन्तु फिर भी मेरे अन्तर्मन की भूख समाप्त नहीं होती। मेरे तन में अत्यन्त प्यारे प्रभु का प्रेम बना हुआ है और उसके दर्शन के बिना मुझे भला कैसे धैर्य प्राप्त होगा।। १ ।। हे मेरे सज्जन और प्रिय भाई, मुझे उस सुखदाता मित्र से मिला दो। वही मेरे हृदय की सारी वेदना को जानता है और वही सदैव मुझे प्रभु की बातें सुनाता है। मैं उसके बिना एक क्षण-भर के लिए भी उसी तरह नहीं रह पाता जैसे चातक पक्षी जल के लिए विलाप किए जाता है। मैं तेरे किन गुणों को याद करूँ क्योंकि तू तो मुझ गुण विहीन को सदा ही बचा लेता है।। ८ ।। मैं अपने प्रियतम पति के लिए उदास हूँ और हे मेरी सहेली, मैं कब उस प्रियतम को अपनी आँखों से देख सकूँगी। प्रियतम के बिना मुझे सभी रसों के भोग भूल गए हैं और वे अब मेरे किसी काम के नहीं रहे। मेरे तन को वस्त्र भी अच्छे नहीं लगते और मैं अब इस पोशाक को भी नहीं पहन सकती। हे सखी, मैंने पूरा सिंगार किया परन्तु प्रियतम के बिना यह किसी काम नहीं आता है। जब पति ने मेरी बात ही नहीं पूछी तो हे सखी, मेरा सारा यौवन तो व्यर्थ ही जा रहा है। वे सुहागिन स्त्रियां धन्य हैं हे सखी, जिनमें प्रियतम पति लीन बना हुआ है। मैं उन सुहागिनों पर हे सखी, बलिहारी हूँ और सदैव उनके चरण धोती हूँ।। ४ ।। जब तक मुझे द्वैतभाव का भ्रम लगा हुआ था, हे सखी, तब तक मैंने उस को अपने से दूर ही समझा परन्तु हे मेरी उत्तम सखी, जब मुझे पूर्ण सच्चा गुरु मिल गया तो मेरी सभी आशाएं और इच्छाएं पूरी हो गई हैं। हे सखी, मैंने सभी सुखों के मूल सुख प्रभु को पा लिया है जो प्रियतम रूप में सब में व्याप्त है। सेवक नानक ने भी हे सखी, सच्चे गुरु के चरणों में लगकर प्रभु प्रेम के रंग का उपभोग किया है।। ५ ।। १ ।। ६ ।।

वडहंसु महला ३ अष्टपदियां १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सच्ची वाणी, सच्ची धुन और शब्द का सच्चा विचार तथा प्रतिदिन सत्य का गुणानुवाद होने से हम बड़े भाग्य वाले और सफल हो गए हैं।। १ ।। हे मेरे मन, सच्चे नाम पर बलिहारी जाओ। वास्तव में जब प्रभु के सेवकों का भी सेवक बन कर रहा जाता है तो सच्चे नाम की प्राप्ति होती है।। १ ।। रहाउ ।।

सचा नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा सची सचि रती तनु मनु सचा होइ ॥ बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइ ॥ २ ॥ सचु खेती सचु बीजणा साचा वापारा ॥ अनदिनु लाहा सचु नामु धनु भगति भरे भंडारा ॥ ३ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचु टेक हरि नाउ ॥ जिस नो बखसे तिसु मिलै महली पाए थाउ ॥ ४ ॥ आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि ॥ गुरमुखि दरि साचै सचिआर हहि साचे माहि समाहि ॥ ५ ॥ अंतरु सचा मनु सचा सची सिफति सनाइ ॥ सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुर बलिहारै जाउ ॥ ६ ॥ सचु वेला मूरतु सचु जितु सचे नालि पिआरु ॥ सचु वेखणा सचु बोलणा सचा सभु आकारु ॥ ७ ॥ नानक सचै मेले ता मिले आपे लए मिलाइ ॥ जिउ भावै तिउ रखसी आपे करे रजाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ मनूआ दह दिस धावदा ओहु कैसे हरि गुण गावै ॥ इंद्री विआपि रही अधिकाई कामु क्रोधु नित संतावै ॥ १ ॥ वाहु वाहु सहजे गुण रवीजै ॥ राम नामु इसु जुग महि दुलभु है गुरमति हरि रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदु चीनि मनु निरमलु होवै ता हरि के गुण गावै ॥ गुरमती आपे आपु पछाणै ता निज घरि वासा पावै ॥ २ ॥ ए मन मेरे सदा रंगि राते सदा हरि के गुण गाउ ॥ हरि निरमलु सदा सुखदाता मनि चिंदिआ फलु पाउ ॥ ३ ॥ हम नीच से ऊतम भए हरि की सरणाई ॥ पाथरु डुबदा काढि लीआ साची वडिआई ॥ ४ ॥ बिखु से अंम्रित भए गुरमति बुधि पाई ॥ अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई ॥ ५ ॥ माणस जनमु दुलंभु है जग महि खटिआ आइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै हरि नामु धिआइ ॥ ६ ॥ मनमुख भूले बिखु लगे अहिला जनमु गवाइआ ॥ हरि का नामु सदा सुख सागरु साचा सबदु न भाइआ ॥ ७ ॥ मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ॥ नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन्ह पाइआ ॥ ८ ॥ २ ॥

वडहंसु महला १ छंत ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥ नाता सो परवाणु सचु कमाईऐ ॥ जब साच अंदरि होइ साचा

जीभ सच्चे प्रभु के रंग में लीन हो तभी तन मन भी सच्चा होता है। उस सच्चे प्रभु के बिना किसी अन्य की स्तुति करने वाले अपने जीवन को गँवा कर ही यहाँ से जाएंगे।। २ ।। सच की खेती करना, सत्य ही बोना, सत्य का व्यापार करना और प्रतिदिन सच्चे नाम रूपी धन का लाभ प्राप्त करना वास्तव में भक्ति के भण्डार को भरने जैसा है।। ३ ।। सच्चा खाना, सच्चा पहनना और प्रभु के नाम का सच्चा आसरा लेना हे प्राणी, उसी को मिलता है जिसको वह प्रभु कृपा पूर्वक देता है। ऐसे व्यक्ति को ही उस प्रभु के दरबार में स्थान प्राप्त होता है।। ४ ।। ऐसे व्यक्तियों का आना और जाना दोनों ही सफल होता है और फिर कभी भी वे योनियों में नहीं पड़ते। गुरमुख बनकर ही व्यक्ति प्रभु के दरबार में सत्याचरण करने वाले के रूप में पहुँचता है और उस परम सत्य में ही लीन हो जाता है।। ५ ।। जिनका अन्तर्मन भी सच्चा है, हृदय भी सच्चा है उनकी शोभा भी सच्ची ही है। वह सच्ची अवस्था में ही सत्य का गुणानुवाद करते हैं और सच्चे गुरु पर ही बलिहारी जाते हैं।। ६ ।। वही समय मुहूर्त सच्चा है जिसमें सत्य प्रभु के साथ प्रेम बन जाता है। सत्य देखने और सत्य बोलने वाले के लिए सारी सृष्टि रचना ही सच्ची बन जाती है।। ७ ।। हे नानक, वह सच्चा प्रभु यदि मिलाप करवाए तभी वह मिलता है और स्वयं ही अपने आप से मिला लेता है। वह अपनी रज़ा में ही जैसे भी उसको अच्छा लगता है वैसे ही सब को रखता है।। ८ ।। १ ।। वडहंसु महला ३ ।। दसों दिशाओं में भटकने वाला यह मन भला कैसे प्रभु के गुणों का गायन करेगा। इन्द्रियों की शक्ति अर्थात विषय विकार इसे भीषण रूप से प्रभावित किए हुए हैं और इसे काम, क्रोध तो सदा ही सताते रहते हैं।। १ ।। उस प्रभु के लिए वाह-वाह कहते हुए सहज रूप में ही उसके गुणों का सुमिरन किया जाए। प्रभु का नाम इस जगत में दुर्लभ पदार्थ है; हे जीव, गुरमति के माध्यम से हरि रस का पान किया जाना चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। शव्द को पहचान कर ही मन निर्मल होता है और प्रभु के गुणों का गायन करता है। गुरु के उपदेश के फलस्वरूप यह अपने आप को पहचानता है और तभी इसका निवास अपने वास्तविक घर में हो जाता है।। २ ।। हे मेरे मन, उसके रंग में सदैव रंगे हुए बनकर उस प्रभु के गुण गाते रहो। वह निर्मल प्रभु सदैव सुख देने वाला है; तुम सभी मनोवांछित फल उसी से प्राप्त करो।। ३ ।। प्रभु की शरण में आकर ही हम नीच से उत्तम बन गए हैं और उस प्रभु का सच्चा बड़प्पन इसी में ही है कि उसने मुझ जैसे डूबते हुए पत्थर को भी बाहर निकाल लिया है।। ४ ।। गुरु की दी हुई बुद्धि को पाकर हम विष से भी अमृत बन गए हैं, आक से हम चन्दन हो गए हैं और हमारे अन्दर सुगन्ध बस गई है।। ५ ।। मानव जीवन दुर्लभ है जिसे इस संसार में प्राप्त किया गया है। पूर्ण भाग्य से ही सच्चा गुरु मिलता है और व्यक्ति प्रभु-नाम का सुमिरन करता है।। ६ ।। मनमुख भटकते हुए विष में ही लीन बने हुए हैं और उन्होंने अपना जीवन व्यर्थ ही गँवा दिया है। उन्हे सदैव सुखों का सागर बना रहने वाला प्रभु का नाम और सच्चा उपदेश कभी भी अच्छा नहीं लगा है।। ७ ।। मुँह से तो सभी हरि हरि कहते हैं परन्तु किसी बिरले ने ही उस प्रभु को मन में बसाया है। हे नानक, जिनके हृदय में वह परमात्मा बस गया है उन्होंने ही मोक्ष और सांसारिक बन्धनों से मुक्ति पा ली है।। ८ ।। २ ।।

वडहंसु महला १ छन्द १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

शरीर को झूठ से मैला करके भला स्नान करने का क्या लाभ । प्रभु को वही स्नान स्वीकार्य है जिसमें व्यक्ति सत्य को आचरण में उतारे। जब अन्तर्मन में सत्य हो तो व्यक्ति सच्चा बन जाता है

तामि साचा पाईऐ ॥ लिखे बाझहु सुरति नाही बोलि बोलि गवाऐ ॥ जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ सुरति सबदु लिखाईऐ ॥ काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥ १ ॥ ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ अंम्रितु हरि का नामु मेरै मनि भाइआ ॥ नामु मीठा मनहि लागा दूखि डेरा ढाहिआ ॥ सूखु मन महि आइ वसिआ जामि तै फुरमाइआ ॥ नदरि तुधु अरदासि मेरी जिंनि आपु उपाइआ ॥ ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ २ ॥ वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥ मंदा किसै न आखि झगड़ा पावणा ॥ नह पाइ झगड़ा सुआमि सेती आपि आपु वञावणा ॥ जिसु नालि संगति करि सरीकी जाइ किआ रूआवणा ॥ जो देइ सहणा मनहि कहणा आखि नाही वावणा ॥ वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥ ३ ॥ सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥ कउड़ा कोइ न मागै मीठा सभ मागै ॥ सभु कोइ मीठा मंगि देखै खसम भावै सो करे ॥ किछु पुंन दान अनेक करणी नाम तुलि न समसरे ॥ नानका जिन नामु मिलिआ करमु होआ धुरि कदे ॥ सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला १ ॥ करहु दइआ तेरा नामु वखाणा ॥ सभ उपाईऐ आपि आपे सरब समाणा ॥ सरबे समाणा आपि तूहै उपाइ धंधै लाईआ ॥ इकि तुझ ही कीए राजे इकना भिख भवाईआ ॥ लोभु मोहु तुझु कीआ मीठा एतु भरमि भुलाणा ॥ सदा दइआ करहु अपणी तामि नामु वखाणा ॥ १ ॥ नामु तेरा है साचा सदा मै मनि भाणा ॥ दूखु गइआ सुखु आइ समाणा ॥ गावनि सुरि नर सुघड़ सुजाणा ॥ सुरि नर सुघड़ सुजाण गावहि जो तेरै मनि भावहे ॥ माइआ मोहे चेतहि नाही अहिला जनमु गवावहे ॥ इकि मूड़ मुगध न चेतहि मूले जो आइआ तिसु जाणा ॥ नामु तेरा सदा साचा सोइ मै मनि भाणा ॥ २ ॥ तेरा वखतु सुहावा अंम्रितु तेरी बाणी ॥ सेवक सेवहि भाउ करि लागा साउ पराणी ॥ साउ प्राणी तिना लागा जिनी अंम्रितु पाइआ ॥ नामि तेरै जोइ राते नित चड़हि सवाइआ ॥ इकु करमु धरमु न होइ संजमु जामि न एकु पछाणी ॥ वखतु सुहावा सदा तेरा अंम्रित तेरी बाणी ॥ ३ ॥ हउ

और तब ही वह सत्य-प्रभु को पा लेता है। भाग्य लेख के बिना चेतनता नहीं आती तथा व्यक्ति व्यर्थ ही बोल बोलकर अपने आप को समाप्त कर लेता है। व्यक्ति जहाँ भी जाकर बैठे वहाँ भली बातें मुँह से निकाले और शब्द-ब्रह्म को अपनी सुरति में धारण करे। झूठ से इस शरीर को पलीत करके स्नान करने का भला क्या लाभ।। १ ।। हे प्रभु, मैंने जो कुछ भी कहा वह तभी कहा जब तूने मुझसे कहलाया। प्रभु का अमृत-नाम मेरे मन को भा गया। तेरा नाम मेरे मन को मीठा लगता है और इसने मेरे दुखों का ठिकाना गिरा दिया है। जब तेरा हुकम हो गया तो सुख मेरे मन में आन बसा है। मेरा काम तो तेरे सामने अरदास करना है और तेरा काम कृपादृष्टि धारण करना है। तू वह है जिसने स्वयं को स्वयं ही उत्पन्न किया हुआ है। हे प्रभु, मैंने यह सब तभी कहा है जब तुमने मुझसे कहलवाया है।। २ ।। किये हुए कर्मों के अनुरूप ही प्रभु मानव जीवन का अवसर व्यक्ति को प्रदान करता है। किसी को भी बुरा कहकर विवाद खड़े नहीं करने चाहिए। अपने मालिक के साथ झगड़कर तू विवाद मत कर क्योंकि इस प्रकार हे जीव, तू अपने आप को पूरी तरह नष्ट कर लेगा। जिस स्वामी के साथ निवास करना है उसके साथ शत्रुभाव रखने पर आगे भला किसे नहीं रोना पड़ेगा। जो प्रभु देता है उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए और मन को यह समझाना चाहिए कि व्यर्थ में ही न चीखे चिल्लाए। प्रभु जीव द्वारा किये गए कर्मों के अनुरूप ही व्यक्ति को मानव जीवन का अवसर देता है।। ३ ।। प्रभु ने स्वयं ही सबकी सृजना की है और वह स्वयं ही उन पर कृपादृष्टि रखता है। कोई भी व्यक्ति कड़वा अनुभव नही चाहता, हर कोई मीठा और मधुर ही चाहता है। सभी मीठे के लिए आकांक्षा कर लें परन्तु जो उस मालिक को अच्छा लगेगा वह वही करता है। दान-पुण्य और अनेकों कर्म-काण्ड किसी भी प्रकार प्रभु-नाम के समान नहीं है। हे नानक, जिनको प्रभु नाम प्राप्त हो गया वे प्रारम्भ से ही प्रभु की कृपा के पात्र हैं। प्रभु ने स्वयं ही सबको उत्पन्न किया है और स्वयं ही वह सब पर कृपादृष्टि करता है।।४।।१।। वडहंसु महला १।। हे प्रभु, मुझ पर दया करो ताकि मैं तेरे नाम का उच्चारण करता रहूँ। तूने स्वयं ही सबको उत्पन्न किया है और तू स्वयं ही सबमें व्याप्त बना हुआ है। तू सबमें समाया हुआ है और इनको उत्पन्न करके तूने ही सबको काम काज में लगाया हुआ है। कईयों को तो तूने राजा बना दिया है और कई भीख माँगते भटक रहे हैं। लालच और मोह तूने उत्पन्न करके इन्हें इतना मीठा अनुभव बना दिया है कि व्यक्ति इन्हीं के भ्रम में भूला हुआ घूम रहा है। हे प्रभु, यदि तुम दया करो तभी मैं तेरे नाम का उच्चारण करता रह सकता हूँ।। १ ।। तेरा नाम सदैव सत्य है और यह मेरे मन को अच्छा लगता है। मेरा दुख समाप्त हो गया है और सुख मेरे अन्दर आ बसा है। हे प्रभु, तथाकथित देवता, मानव और सभी समझदार सुजान व्यक्ति तेरा ही गुणानुवाद करते हैं। ये देवता, मानव वे सयाने व्यक्ति ही तेरा गायन करते हैं जो तेरे मन को अच्छे लगते हैं। जो माया के मोह में पड़े हुए हैं, हे प्रभु, वे तेरा सुमिरन नहीं करते और अपना जीवन व्यर्थ ही गँवा लेते हैं। कई मूर्ख और गँवार व्यक्ति इस बात को बिल्कुल ही नही समझ पाते कि जो यहाँ आया है उसने जाना ही जाना है। हे प्रभु, तेरा नाम ही सदैव सत्य स्वरूप है और वह ही मेरे मन को अच्छा लगता है।। २ ।। तेरे सुमिरन का समय ही सुन्दर है और तेरी वाणी ही अमृत के समान है। तेरे सेवक प्रेमपूर्वक तेरी सेवा करते हैं और उन्हीं जीवों को तेरी सेवा का रस प्राप्त होता है। उन प्राणियों को ही प्रभु की सेवा का स्वाद अनुभव होता है जिनको प्रभु का अमृत नाम मिल चुका है। जो तेरे नाम में लीन हो चुके है वे दिन-प्रतिदिन फलते फूलते रहते हैं। कई जो एक प्रभु को नहीं जानते, वे धर्म-कर्म और संयम आदि नहीं करते। हे प्रभु, तेरे सुमिरन का समय ही सुहावना है और तेरी वाणी अमृत के समान है।। ३ ।। मैं

बलिहारी साचे नावै ॥ राजु तेरा कबहु न जावै ॥ राजो त तेरा सदा निहचलु एहु कबहु न जावए ॥ चाकरु त तेरा सोइ होवै जोइ सहजि समावए ॥ दुसमनु त दूखु न लगै मूले पापु नेड़ि न आवए ॥ हउ बलिहारी सदा होवा एक तेरे नावए ॥ ४ ॥ जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ कीरति करहि सुआमी तेरै दुआरे ॥ जपहि त साचा एकु मुरारे ॥ साचा मुरारे तामि जापहि जामि मंनि वसावहे ॥ भरमो भुलावा तुझहि कीआ जामि एहु चुकावहे ॥ गुर परसादी करहु किरपा लेहु जमहु उबारे ॥ जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ ५ ॥ वडे मेरे साहिबा अलख अपारा ॥ किउ करि करउ बेनंती हउ आखि न जाणा ॥ नदरि करहि ता साचु पछाणा ॥ साचो पछाणा तामि तेरा जामि आपि बुझावहे ॥ दूख भूख संसारि कीए सहसा एहु चुकावहे ॥ बिनवंति नानकु जाइ सहसा बुझै गुर बीचारा ॥ वडा साहिबु है आपि अलख अपारा ॥ ६ ॥ तेरे बंके लोइण दंत रीसाला ॥ सोहणे नक जिन लंमड़े वाला ॥ कंचन काइआ सुइने की ढाला ॥ सोवंन ढाला क्रिसन माला जपहु तुसी सहेलीहो ॥ जम दुआरि न होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो ॥ हंस हंसा बग बगा लहै मन की जाला ॥ बंके लोइण दंत रीसाला ॥ ७ ॥ तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥ कुहकनि कोकिला तरल जुआणी ॥ तरला जुआणी आपि भाणी इछ मन की पूरीए ॥ सारंग जिउ पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु संधूरए ॥ स्रीरंग राती फिरै माती उदकु गंगा वाणी ॥ बिनवंति नानकु दासु हरि का तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥ ८ ॥ २ ॥

वडहंसु महला ३ छंत ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आपणे पिर कै रंगि रती मुईए सोभावंती नारे ॥ सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाइ पिआरे ॥ सचै भाइ पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाइआ ॥ आपु गवाइआ ता पिरु पाइआ गुर कै सबदि समाइआ ॥ सा धन सबदि सुहाई प्रेम कसाई अंतरि प्रीति पिआरी ॥ नानक सा धन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी ॥ १ ॥ निरगुणवंतड़ीए पिरु देखि हदूरे राम ॥ गुरमुखि जिनी

प्रभु के सच्चे नाम पर बलिहारी जाता हूँ। तेरा राज (आदेश) कभी भी समाप्त नहीं होता। तेरा राज तो सदैव अटल है; यह कभी भी समाप्त नहीं होता। तेरा वास्तविक सेवक तो वही है जो सहजभाव में लीन बना रहता है। शत्रु और दुख तो उसे कभी भी नही सताते और पाप तो बिल्कुल ही उसके पास नहीं आते। मैं तेरे एक नाम पर ही सदैव बलिहारी जाता हूँ।। ४ ।। युगों-युगान्तरों से तेरे भक्तजन हे प्रभु, तेरे द्वार पर खड़े होकर तेरा यश गायन करते हैं। वे उस एक सच्चे प्रभु का ही सुमिरन करते हैं। वे तभी सच्चे प्रभु का सुमिरन करते हैं जब वे उसे अपने मन में बसा लेते हैं। भ्रम और भुलावा सब तूने ही पैदा किया है। जब भ्रम और भुलावा चला जाता है और गुरु की कृपा से तू दयालु होता है तब तू ही मौत के दूतों से जीव को बचा लेता है। सभी युगों में तेरे भक्त तेरा गुणानुवाद करते हैं।। ५ ।। हे मेरे अदृष्ट और अपरंपर प्रभु, मैं किस प्रकार तेरे सामने विनती करूँ, मुझे यह कहना ही नहीं आता। यदि तू कृपादृष्टि करे तो मैं सत्य को पहचान जाऊँ। यदि तू स्वयं ही समझा दे तभी मैं तेरे सत्य को पहचान पाता हूँ। दुख, भूख आदि तूने ही जगत में पैदा किए हैं और हे प्रभु, इस चिन्ता से तू मुझे मुक्त कर। नानक विनती करता है कि गुरु के दिए हुए उपदेश को बूझ लेने पर ही व्यक्ति का संशय-भाव समाप्त होता है। वह महान स्वामी स्वयं ही अदृष्ट एवं अपरंपर है।। ६ ।। हे प्रभु, तेरे नैन सुन्दर हैं और तेरे दांत भी मनोरम हैं। तू वह प्रभु है जिसका सुन्दर नाक है और लम्बे केश हैं। सोने की तरह सुन्दर तेरा शरीर स्वर्ण रूप में ही ढला हुआ प्रतीत होता है। सोने में ढला हुआ काले रंग की माला वाला वह प्रभु का शरीर है जिसकी आराधना हे मेरी सत्संगी सहेलियो, तुम करती रहो। यदि तुम उसका जाप करोगे तो तुम्हें यम के द्वार पर खड़ा नहीं रहना पड़ेगा। तुम्हारे मन की मैल उतर जाएगी और सफ़ेद बगुले से तुम हंसों में श्रेष्ठ हंस बन जाओगे। हे प्रभु, तेरे नयन सुन्दर हैं और तेरे दांत रसदायक हैं।।७।। तेरी चाल सुन्दर है और तेरी वाणी मधुर है। तेरे बोल कोयल की तरह हैं और तेरा यौवन फूट-फूट पड़ता है। तेरी उठती हुई जवानी तुझे स्वयं भी अच्छी लगती है और इसका दर्शन मन की इच्छाओं को पूरा कर देता है। तू हाथी की तरह धीरे धीरे कदम बढ़ाता है और अपने आप में ही मस्त बना रहता है। जो अपने प्रभु के प्रेम में रंग गयी है वह मतवाली होकर गंगा के जल के समान अठखेलियां करती है। दास नानक प्रभु के समक्ष विनती करता है कि हे प्रभु, तेरी चाल सुन्दर है और तेरी वाणी मधुर है।। ८ ।। २ ।।

वडहंसु महला ३ छन्द   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मरणशील सुन्दर स्त्री, तू अपने प्रियतम के रंग में रंगी रह। हे मरणशील स्त्री, तू सच्चे शब्द में लीन बनी रह और इस तरह प्रेमपूर्वक अपने प्रियतम के साथ तू रमण कर लेगी। जो सच्चे भाव से उस प्रभु-पति की प्यारी बन जाती है वही उसके द्वारा संवार दी जाती है और प्रभु के साथ उसका प्रेम बन जाता है। जब स्त्री ने अहम् भाव को त्याग दिया तभी उसे प्रियतम मिला और वह शब्द-गुरु में लीन हो गई। ऐसी स्त्री जिसको उसके पति-प्रेम ने आकर्षित किया हुआ है और जिसके हृदय को उसकी प्रीति अच्छी लगती है उसके अन्तर्मन में उसका प्रेम ही उसका प्यारा प्रेम बना रहता है। हे नानक, उस जीव-स्त्री को प्यारा पति अपने साथ मिला लेता है और सच्चा सम्राट उसका अपने नाम के माध्यम से श्रृँगार कर देता है।।१।। हे गुणहीन स्त्री, तू अपने पति को अपने साथ ही देख। हे मरणशील स्त्री, जिसने गुरमुख बनकर

रावआ मुईए पिरु रवि रहिआ भरपूरे राम ॥ पिरु रवि रहिआ भरपूरे वेखु हजूरे जुगि जुगि एको जाता ॥ धन बाली भोली पिरु सहजि रावै मिलिआ करम बिधाता ॥ जिनि हरि रसु चाखिआ सबदि सुभाखिआ हरि सरि रही भरपूरे ॥ नानक कामणि सा पिर भावै सबदे रहै हदूरे ॥ २ ॥ सोहागणी जाइ पूछहु मुईए जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥ पिर का हुकमु न पाइओ मुईए जिनी विचहु आपु न गवाइआ ॥ जिनी आपु गवाइआ तिनी पिरु पाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ सदा रंगि राती सहजे माती अनदिनु नामु वखाणै ॥ कामणि वडभागी अंतरि लिव लागी हरि का प्रेमु सुभाइआ ॥ नानक कामणि सहजे राती जिनि सचु सीगारु बणाइआ ॥ ३ ॥ हउमै मारि मुईए तू चलु गुर कै भाए ॥ हरि वरु रावहि सदा मुईए निज घरि वासा पाए ॥ निज घरि वासा पाए सबदु वजाए सदा सुहागणि नारी ॥ पिरु रलीआला जोबनु बाला अनदिनु कंति सवारी ॥ हरि वरु सोहागो मसतकि भागो सचै सबदि सुहाए ॥ नानक कामणि हरि रंगि राती जा चलै सतिगुर भाए ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ गुरमुखि सभु वापारु भला जे सहजे कीजै राम ॥ अनदिनु नामु वखाणीऐ लाहा हरि रसु पीजै राम ॥ लाहा हरि रसु लीजै हरि रावीजै अनदिनु नामु वखाणै ॥ गुण संग्रहि अवगण विकणहि आपै आपु पछाणै ॥ गुरमति पाई वडी वडिआई सचै सबदि रसु पीजै ॥ नानक हरि की भगति निराली गुरमुखि विरलै कीजै ॥ १ ॥ गुरमुखि खेती हरि अंतरि बीजीऐ हरि लीजै सरीरि जमाए राम ॥ आपणे घर अंदरि रसु भुंचु तू लाहा लै परथाए राम ॥ लाहा परथाए हरि मंनि वसाए धनु खेती वापारा ॥ हरि नामु धिआए मंनि वसाए बूझै गुर बीचारा ॥ मनमुख खेती वणजु करि थाके त्रिसना भुख न जाए ॥ नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाए ॥ २ ॥ हरि वापारि से जन लागे जिना मसतकि मणी वडभागो राम ॥ गुरमती मनु निज घरि वसिआ सचै सबदि बैरागो राम ॥ मुखि मसतकि भागो सचि बैरागो साचि रते वीचारी ॥ नाम बिना सभु जगु बउराना सबदे हउमै मारी ॥ साचै सबदि लागि मति उपजै गुरमुखि

अपने प्रभु प्रियतम को याद किया है वह उसे भरपूर रूप से सब ओर व्याप्त देखती है। प्रिय प्रभु भरपूर रूप से सबमें व्याप्त है; उसी को तू अपने सामने देख क्योंकि उस एक को ही युगों युगों में जाना जाता है। भोलीभाली स्त्री सहज भाव में ही अपने पति का आनन्द उपभोग करती है और उसे वास्तव में अपना कर्म विधाता मिल जाता है। जिन्होने हरि-रस को चख लिया है और नाम-शब्द का उच्चारण कर लिया है वह प्रभु रूपी सरोवर में पूर्ण रूप से लीन बनी रहती है। हे नानक, वही स्त्री प्रियतम प्रभु को अच्छी लगती है जो शब्द के माध्यम से उसके सामने बनी रहती है।। २ ।। हे मरणशील स्त्री, उन सुहागिनों से भी पूछ ले जिन्होंने अपने अन्तर्मन का अहंकार गंवा दिया है। हे बेचारी स्त्री, जिन्होंने अपने अन्तर्मन से अहंकार नहीं गंवाया वे प्रियतम के हुकम को नही जान पाती। जिसने अपने अहंकार को मिटा दिया है, उसने ही प्रियतम को पा लिया है और वह ही प्रियतम के साथ मौज-मस्ती करती है। वह प्रतिदिन प्रभु-नाम का उच्चारण करती हुई सदैव उसके रंग में रंगी रहकर सहजभाव में मस्त बनी रहती है। वह स्त्री बड़े भाग्य वाली है जिसके अन्तर्मन की लौ उस प्रभु से लग गई है और जिसे अपने प्रभु का प्रेम अच्छा लगता है। हे नानक, जिस जीव स्त्री ने सत्य को अपना सिंगार बना लिया है वह स्त्री सहजभाव में लीन बनी रहती है।। ३ ।। हे मरजानी स्त्री, तू अपने अहंकार को समाप्त कर दे और गुरु के बताए मार्ग पर चल। इस तरह तू सदैव प्रभु रूपी वर के साथ रमण करेगी और अपने मूल घर में निवास कर लेगी। मूल घर में निवास पाकर तू अनहद् शब्द बजता हुआ सुनेगी और सदैव सुहागिन स्त्री बनी रहेगी। जो पति रंगीला और नवयौवन वाला है उस पति ने सदैव अपनी प्रियतमा को सँवारा है। सदैव जीवित बना रहने वाला प्रभु-पति स्त्री के माथे का भाग्य चिन्ह है और सच्चे शब्द के माध्यम से वह अन्तर्मन में शोभायमान बनता है। हे नानक, वही कामिनी प्रभु के रंग में रंगी रहती है जो सच्चे गुरु के बताए मार्ग पर चलती है।। ४ ।। १ ।। वडहंसु महला ३ ।। सहजभाव में पूर्ण और गुरमुख होकर जो भी कार्य किया जाए वह भला है। प्रतिदिन उसके नाम का उच्चारण करना ही उसका लाभ है और ऐसे कार्य में ही प्रभु रूपी रस का पान किया जाता है। प्रतिदिन प्रभु-नाम का उच्चारण करके हरि-रस का लाभ प्राप्त किया जाता है और प्रभु का सुमिरन किया जाता है। गुणों का संग्रह करने पर और अवगुणों को बाहर निकाल देने पर व्यक्ति स्वयं ही अपने आप को पहचान लेता है। गुरमति को धारण करना बड़ा बड़प्पन है और सच्चे शब्द के माध्यम से ही रस पीया जाता है। हे नानक, प्रभु की भक्ति निराली है जिसे कोई बिरला ही गुरमुख बनकर करता है।। १ ।। गुरमुख बनकर प्रभु रूपी खेती को अन्तर्मन में बोया जाए और इस शरीर में प्रभु ही उसे जमाता है। इस प्रकार हे जीव, तू अपने घर में ही प्रभु-नाम के रस का उपभोग कर लेगा और परलोक में भी लाभ उठाएगा। प्रभु को हृदय में बसाने की खेती और व्यापार सफल है और इसी से ही परलोक में भी लाभ प्राप्त होता है। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करता है और नाम को मन में बसा लेता है वही गुरु के विचार को बूझ लेता है। मनमुख व्यक्ति तो सांसारिक खेती और व्यापार करके थक जाता है परन्तु उसकी तृष्णा और भूख समाप्त नहीं होती। हे नानक, मन के अन्दर तू प्रभु-नाम का बीज शब्द-गुरु के माध्यम से अच्छी भावना के साथ बो दे।। २ ।। वे ही व्यक्ति प्रभु के व्यापार में लीन होते हैं जिनके मस्तक पर बड़े भाग्य की मणि स्थित होती है। गुरमति में चलकर ही मन अपने मूल स्वभाव में बस जाता है और उसे पता लग जाता है कि सच्चे शब्द के माध्यम से ही बुरे कार्यों की तरफ से उदासीनता बन जाती है। मस्तक पर भाग्य होने से सच के साथ प्रेम बनता है और विचारवान व्यक्ति सत्य में ही लीन हो जाता है। प्रभु-नाम के बिना सारा संसार पागल बना रहता है और वास्तव में शब्द के माध्यम से ही अहंकार को मारा जाता है। सच्चे शब्द में लीन होने से विवेक बुद्धि उत्पन्न होती है और गुरमुख बनकर

नामु सोहागो ॥ नानक सबदि मिलै भउ भंजनु हरि रावै मसतकि भागो ॥ ३ ॥ खेती वणजु सभु हुकमु है हुकमे मंनि वडिआई राम ॥ गुरमती हुकमु बूझीऐ हुकमे मेलि मिलाई राम ॥ हुकमि मिलाई सहजि समाई गुर का सबदु अपारा ॥ सची वडिआई गुर ते पाई सचु सवारणहारा ॥ भउ भंजनु पाइआ आपु गवाइआ गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ मन मेरिआ तू सदा सचु समालि जीउ ॥ आपणै घरि तू सुखि वसहि पोहि न सकै जमकालु जीउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै साचै सबदि लिव लाए ॥ सदा सचि रता मनु निरमलु आवणु जाणु रहाए ॥ दूजै भाइ भरमि विगुती मनमुखि मोही जमकालि ॥ कहै नानकु सुणि मन मेरे तू सदा सचु समालि ॥ १ ॥ मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है बाहरि वसतु न भालि ॥ जो भावै सो भुंचि तू गुरमुखि नदरि निहालि ॥ गुरमुखि नदरि निहालि मन मेरे अंतरि हरि नामु सखाई ॥ मनमुख अंधुले गिआन विहूणे दूजै भाइ खुआई ॥ बिनु नावै को छूटै नाही सभ बाधी जमकालि ॥ नानक अंतरि तेरै निधानु है तू बाहरि वसतु न भालि ॥ २ ॥ मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइ कै इकि सचि लगे वापारा ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा ॥ अंतरि सबदु अपारा हरि नामु पिआरा नामे नउ निधि पाई ॥ मनमुख माइआ मोह विआपे दूखि संतापे दूजै पति गवाई ॥ हउमै मारि सचि सबदि समाणे सचि रते अधिकाई ॥ नानक माणस जनमु दुलंभु है सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ मन मेरे सतिगुरु सेवनि आपणा से जन वडभागी राम ॥ जो मनु मारहि आपणा से पुरख बैरागी राम ॥ से जन बैरागी सचि लिव लागी आपणा आपु पछाणिआ ॥ मति निहचल अति गूड़ी गुरमुखि सहजे नामु वखाणिआ ॥ इक कामणि हितकारी माइआ मोहि पिआरी मनमुख सोइ रहे अभागे ॥ नानक सहजे सेवहि गुरु अपणा से पूरे वडभागे ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ रतन पदारथ वणजीअहि सतिगुरि दीआ बुझाई राम ॥ लाहा लाभु हरि भगति है गुण महि गुणी समाई राम ॥

प्रभु-नाम सुहाग के रूप में प्राप्त होता है। हे नानक, शब्द के माध्यम से भय का नाश करने वाला प्रभु प्राप्त होता है और जीव के माथे पर भाग्य लेख लिखे होने के कारण ही जीव प्रभु के साथ रमण करता है।। ३ ।। प्रभु के हुकम को मानना ही सबसे अच्छी खेती और सबसे अच्छा व्यापार है। हुकम को मानकर ही व्यक्ति को बड़प्पन प्राप्त होता है। गुरमत के माध्यम से ही हुकम की सूझ प्राप्त होती है और हुकम के अन्तर्गत ही प्रभु से मेल होता है। हुकम के अन्तर्गत ही जीव प्रभु से मिलता है और सहजभाव में स्थित होता है अर्थात माया के तीनों गुणों से ऊपर चला जाता है। अब उसे शब्द-गुरु ही अपरंपर लगने लग जाता है। गुरु से ही सच्चा वड़प्पन प्राप्त होता है और सत्य रूप प्रभु ही सबको संवारने वाला है। अहंकार को गंवाकर भय-भंजन प्रभु को पाया जाता है और गुरमुख बनकर उस प्रभु से मिलाप होता है। नानक का कथन है कि प्रभु का निर्मल नाम अगम्य एवं अगोचर है और वह प्रभु हुकम में ही समाया हुआ है।। ४ ।। २ ।। वडहंसु महला ३ ।। हे मेरे मन, तू सदैव सत्य प्रभु को ही हृदय में संभालकर रख; तू अपने घर में ही सुखपूर्वक बसेगा और यम भी तुझे डरा नहीं सकेगा। जो सच्चे शब्द में अपनी लौ लगाए रहता है, मौत रूपी फन्दा अर्थात यम उसकी ओर देख भी नहीं सकता। ऐसा व्यक्ति सदैव सत्य में लीन बना रहता है, उसका मन निर्मल हो जाता है और उसका आवागमन वन्द हो जाता है। प्रभु के बिना द्वैतभाव के भ्रमों में फंसी हुई मनमुख रूपी जीवात्मा यम रूपी काल ने ठगी हुई है। नानक का कथन है कि हे मेरे मन, तू सुन और सदैव सत्य पर ही ध्यान लगाए रख।। १ ।। हे मेरे मन, तेरे अन्दर ही सुखों का खज़ाना है इसलिए तू आनन्द और सुख को बाहर मत खोज। तुझे जो अच्छा लगता है तू उसे सुखपूर्वक खा और गुरमुख बनकर प्रभु की कृपादृष्टि के साथ सुखी हो जा। कृपादृष्टि से प्रसन्न होना हे मेरे मन, गुरमुख बनकर ही संभव होता है और सवसे बड़ा मददगार मित्र प्रभु-नाम अन्तर्मन में आ बसता है। मनमुख अन्धे व्यक्ति ज्ञान से विहीन हैं और द्वैतभाव में अर्थात माया के मोह में पड़कर ख्वार होते रहते हैं। प्रभु नाम के बिना किसी का भी छुटकारा नहीं होता और यमकाल ने सबको ही बांध रखा है। हे नानक, तेरे अन्दर ही सुखों का खज़ाना है इसलिए तू इसको बाहर मत खोज।। २ ।। हे मेरे मन, जन्म रूपी अमूल्य वस्तु को पाकर कई तो सत्य के व्यापार में लगे हुए हैं। वे अपने सच्चे गुरु की सेवा करते हैं और अन्तर्मन में अपरंपर शब्द का अनुभव करते हैं। उनके अन्दर अपार शब्द स्थित होता है, उन्हें हरि-नाम ही प्यारा लगता है और प्रभु-नाम से ही उन्हें नवनिधियां प्राप्त होती हैं। मनमुख व्यक्ति को माया का मोह सताता रहता है, वे दुखों से पीड़ित रहते हैं और द्वैतभाव में अपने आत्म सम्मान को भी गंवा लेते हैं। जब वे अहंकार को मारकर सत्य रूपी शब्द में लीन हो जाते हैं तो वे खूब अच्छी तरह सत्य में ही रंग जाते हैं। हे नानक, सच्चे गुरु ने ही यह बात समझायी है कि मनुष्य-जीवन (प्रभु से मिलने का) दुर्लभ अवसर है।। ३ ।। हे मेरे मन, जो सच्चे गुरु की सेवा करते हैं वे व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं। जो अपने मन को काबू में कर लेते हैं वे ही वास्तव में संसार के पदार्थों के प्रति वैराग्य भाव से भरे रहते हैं। ऐसे वैरागी व्यक्तियों की सच्चे प्रभु के साथ लौ लग जाती है और वे अपने आप को सही अर्थों में पहचान जाते हैं। उनकी मति दृढ़ और गहरी होती है और गुरमुख बनकर उन्होंने स्वाभाविक रूप से ही प्रभु नाम का गुणानुवाद किया होता है। कई ऐसे भी हैं जो स्त्री के आकर्षण में पड़कर संसारिक मोह के प्यार में पड़े रहते हैं; ऐसे वे मनमुख अभागे बनकर जीवन भर सोये पड़े रहते हैं अर्थात अज्ञानी बने रहते हैं। हे नानक, ऐसे व्यक्ति ही पूर्ण रूप से बड़े भाग्यशाली होते है जो सहज स्वाभाविक रूप से ही अपने प्रभु की सेवा में जुटे रहते हैं।। ४ ।। ३ ।। वडहंसु महला ३ ।। यदि सच्चा गुरु वास्तव में ज्ञान करा दे तो व्यक्ति रत्न पदार्थों की तरह अमूल्य प्रभु-नाम का व्यापार करता है। ऐसे व्यापार का लाभ तो प्रभु-भक्ति ही है और प्रभु के गुण गाने वाला गुरमुख उस गुणी परमात्मा में ही समाहित हो जाता है।

गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे ॥ बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई गुरमति नामु अधारे ॥ वखरु नामु सदा लाभु है जिस नो एतु वापारि लाए ॥ रतन पदारथ वणजीअहि जां सतिगुरु देइ बुझाए ॥ १ ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा राम ॥ कूड़ु बोलि बिखु खावणी बहु वधहि विकारा राम ॥ बहु वधहि विकारा सहसा इहु संसारा बिनु नावै पति खोई ॥ पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न होई ॥ आवण जाणा कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा ॥ २ ॥ खोटे खरे सभि परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम ॥ खोटे दरगह सुटीअनि ऊभे करनि पुकारा राम ॥ ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ बिखिआ माइआ जिनि जगतु भुलाइआ साचा नामु न भाइआ ॥ मनमुख संता नालि वैरु करि दुखु खटे संसारा ॥ खोटे खरे परखीअनि तितु सचै दरवारा राम ॥ ३ ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई राम ॥ जितु भावै तितु लाइसी जिउ तिस दी वडिआई राम ॥ जिउ तिस दी वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई ॥ जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बखसे सोई ॥ गुर परसादी आपु गवाईऐ नानक नामि पति पाई ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ॥ गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम ॥ अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी ॥ अंतरि बाहरि भगती राते सचि नामि लिव लागी ॥ नदरि करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि वीचारा ॥ नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइआ साचै के वापारा ॥ १ ॥ हंउमै माइआ मैलु है माइआ मैलु भरीजै राम ॥ गुरमती मनु निरमला रसना हरि रसु पीजै राम ॥ रसना हरि रसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि बीचारी ॥ अंतरि खूहटा अंम्रिति भरिआ सबदे काढि पीऐ पनिहारी ॥ जिसु नदरि करे सोई सचि लागै रसना रामु रवीजै ॥ नानक नामि रते से निरमल होर हउमै मैलु भरीजै ॥ २ ॥ पंडित जोतकी सभि

जिसे स्वयं समझाता है वही गुणों के माध्यम से उस गुणी प्रभु में लीन हो जाता है और संसार में भक्ति ही उसका लाभ होती है। भक्ति के बिना सुख नहीं होता अपितु द्वैतभाव में व्यक्ति अपना सम्मान खो लेता है। गुरु के उपदेश के माध्यम से ही प्रभु-नाम आसरे के तौर पर प्राप्त होता है। जिसको प्रभु इस व्यापार में लगाता है उसके लिए नाम रूपी सौदा सदैव लाभदायक ही रहता है। यदि सच्चा गुरु वास्तव में समझा दे तभी नाम रूपी रत्न का व्यापार किया जाता है।। १ ।। माया मोह आदि सब दुख है और यह एक खोटा व्यापार है। ऐसा व्यापार करने वाले झूठ बोलने के ज़हर को खाते रहते हैं जिससे उनके अन्दर बसे हुए विकार और भी बढ़ जाते हैं। विकारों के बढ़ने से यह सारा संसार संशय और भ्रम जैसा ही लगने लगता है और व्यक्ति प्रभु-नाम से विहीन होकर अपना सम्मान खो देता है। पंडित लोग पोथी पढ़-पढ़ कर वाद-विवाद करने में लगे रहते हैं परन्तु प्रभु-नाम को जाने बिना सुख प्राप्त नहीं होता। उनका आवागमन कभी भी समाप्त नहीं होता क्योंकि वे माया मोह को प्यार करते रहते हैं। माया-मोह आदि सब दुख ही दुख है और इसी में लीन होकर किया गया व्यापार (कार्य) भी खोटा व्यापार है।।२।। उस सच्चे प्रभु के दरबार में खरे और खोटे सब की परख कर ली जाती है। खोटे व्यक्तियों को प्रभु के सामने से दूर फेंक दिया जाता है जहाँ वे खड़े होकर चीखते पुकारते रहते हैं। वे मूर्ख गँवार खड़े होकर पुकार लगाते रहते हैं और वास्तव में ऐसे मनमुखों ने तो अपना जन्म ही गँवा दिया होता है। यह माया ऐसा विष है जिसने सारे संसार के होश-हवास भुलाए हुए हैं और यहां व्यक्ति को प्रभु का सच्चा नाम अच्छा नही लगता। मनमुख व्यक्ति शान्त पुरुषों के साथ शत्रुभाव रखकर सारे संसार के दुखों को इकठ्ठा कर लेते हैं। उस सच्चे दरबार में हे प्रभु, खोटे और खरे की परख हो जाती है।। ३ ।। जब वह प्रभु ही स्वयं सब करने वाला है तो अन्य किसको कुछ कहा जाए क्योंकि अन्य कोई भी कुछ नहीं कर सकता। वह जैसा अच्छा समझता है व्यक्ति को वैसे ही कार्य में लगा देता है; यही उसका बड़प्पन है।उसका जैसा अपना स्वभाव है वह वैसा ही करता है और उसके सामने न तो कोई शूरवीर है न ही कोई कायर है। संसार को जीवन देने वाला वह दाता प्रभु ही सबके कर्मों का विधाता है और वह स्वयं ही सबको क्षमा भी कर देता है। हे नानक, गुरु की कृपा से अहंकार को दूर किया जाए और प्रभु-नाम के माध्यम से ही वास्तविक सम्मान प्राप्त किया जाए। वह स्वयं ही सब कुछ करता है इसलिए अन्य किसी से क्या कहा जाए क्योंकि अन्य कोई कुछ भी नहीं कर सकता है।। ४ ।। ४ ।। वडहंसु महला ३ ।। प्रभु-नाम ही सच्चा सौदा और सच्चा व्यापार है जिसे शब्द-गुरु के माध्यम से किया जाता है; हरि नाम रूपी व्यापार का मूल्य अत्यन्त अधिक है। उस अत्यन्त मूल्यवान सत्य रूपी व्यापार में कोई बड़ा भाग्यशाली व्यक्ति ही लगता है। ऐसा व्यक्ति अन्दर से बाहर से भक्ति में लीन बना रहता है और उसकी सच्चे नाम में ही लौ लगी रहती है। जिस पर प्रभु कृपादृष्टि करता है वही शब्द-गुरु के चिन्तन के माध्यम से सत्य को प्राप्त करता है। हे नानक, नाम में लीन होकर उन्होंने ही सुख को प्राप्त किया है जो सत्य के व्यापारी हैं।। १ ।। हे प्रभु, अहंकार मायावी मैल है और व्यक्ति में यही माया की मैल भरी रहती है। गुरु के उपदेश के माध्यम से मन निर्मल होता है और जीभ हरि रस का पान करती है। जब जीभ हरि रस का पान करती है तो अन्तर्मन पसीज जाता है और ऐसा सत्य शब्द के विचार के पश्चात् ही अनुभव होता है। जीव के मन में अमृत का कुआँ भरा पड़ा है जिसे शब्द के माध्यम से पनिहारिन रूपी सुरति निकाल निकाल कर उसका पान करती है। जिस पर प्रभु कृपादृष्टि करे वही सच्चे सत्य की ओर उन्मुख होता है और ऐसा होने के लिए जीभ से राम का सुमिरन किया जाता है। हे नानक, जो प्रभु-नाम में लीन बने हुए हैं वे ही निर्मल हैं; अन्य सभी तो अहंकार की मैल से भरे हुए हैं ।।२।। पंडित और ज्योतिषी सभी

पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम ॥ माइआ मोहु अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम ॥ माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि दुखु पाई ॥ बिखु का कीड़ा बिखु सिउ लागा बिस्टा माहि समाई ॥ जो धुरि लिखिआ सोइ कमावै कोइ न मेटणहारा ॥ नानक नामि रते तिन सदा सुखु पाइआ होरि मूरख कूकि मुए गावारा ॥ ३ ॥ माइआ मोहि मनु रंगिआ मोहि सुधि न काई राम ॥ गुरमुखि इहु मनु रंगीऐ दूजा रंगु जाई राम ॥ दूजा रंगु जाई साचि समाई सचि भरे भंडारा ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा ॥ आपे मेले सो हरि मिलै होरु कहणा किछू न जाए ॥ नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंगु लाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ ए मन मेरिआ आवा गउणु संसारु है अंति सचि निबेड़ा राम ॥ आपे सचा बखसि लए फिरि होइ न फेरा राम ॥ फिरि होइ न फेरा अंति सचि निबेड़ा गुरमुखि मिलै वडिआई ॥ साचै रंगि राते सहजे माते सहजे रहे समाई ॥ सचा मनि भाइआ सचु वसाइआ सबदि रते अंति निबेरा ॥ नानक नामि रते से सचि समाणे बहुरि न भवजलि फेरा ॥ १ ॥ माइआ मोहु सभु बरलु है दूजै भाइ खुआई राम ॥ माता पिता सभु हेतु है हेते पलचाई राम ॥ हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सकै कोई ॥ जिनि स्रिसटि साजी सो करि वेखै तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ मनमुखि अंधा तपि तपि खपै बिनु सबदै सांति न आई ॥ नानक बिनु नावै सभु कोई भुला माइआ मोहि खुआई ॥ २ ॥ एहु जगु जलता देखि कै भजि पए हरि सरणाई राम ॥ अरदासि करी गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई राम ॥ रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुधु जेवडु अवरु न दाता ॥ सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि एको जाता ॥ जतु सतु संजमु करम कमावै बिनु गुर गति नही पाई ॥ नानक तिस नो सबदु बुझाए जो जाइ पवै हरि सरणाई ॥ ३ ॥ जो हरि मति देइ सा ऊपजै होर मति न काई राम ॥ अंतरि बाहरि एकु तू आपे देहि बुझाई राम ॥ आपे देहि बुझाई अवर न भाई गुरमुखि हरि रसु चाखिआ ॥ दरि साचै सदा है साचा साचै

पढ़ते हैं और ऊँचा बोल बोलकर सुनाते हैं परन्तु यह पता नहीं लगता कि ये किसे सुना रहे हैं। इनके अन्तर्मन में तो माया मोह की मैल लगी हुई है और ये सांसारिक धन सम्पदा का ही व्यापार करते हैं। इस संसार में उन्हें मायावी प्रपंच प्यारे लगते हैं और इसी कारण वे इस संसार में आते जाते दुख पाते रहते हैं। माया का लोभी जीव विष का वह कीड़ा है जो विष में ही लगा रहता है और अन्ततः गन्दगी में ही मर खप जाता है। जो प्रभु की ओर से उसके लिए आदेश हुआ है वह उसी के अनुसार आचरण करता है; उस हुकम को कोई भी मिटा नहीं सकता। हे नानक, जो नाम में लीन हैं वे सदैव सुख प्राप्त करते हैं तथा अन्य मूर्ख तो चीख-चीख कर ही मर जाते हैं।। ३ ।। जिनका मन माया के मोह में रंगा हुआ है, मोह में पड़े हुए ऐसे लोगों को कुछ भी होश नहीं रहता। यदि गुरमुख बनकर इस रंग को रंगा जाए तो द्वैतभाव का रंग अर्थात माया का रंग छूट जाता है। जब द्वैतभाव का रंग छूट जाता है तो जीव सत्य में लीन हो जाता है और सत्य के माध्यम से उसके भण्डार भर जाते हैं। जो व्यक्ति गुरमुख होता है वही इस तथ्य को बूझता है और वही सत्य के माध्यम से अपने आप को सुधार सँवार लेता है। जिन्हें वह स्वयं मिलाता है वे ही प्रभु से मिल पाते हैं और इसके बारे में अन्य कुछ भी नहीं कहा जा सकता। हे नानक, नाम-विहीन जीव भ्रमों में भूला हुआ है और जो एक नाम में ही लीन बने रहते हैं वास्तव में उन्हीं को ही सच्चा रंग लगता है।। ४ ।। ५ ।। वडहंसु महला ३ ।। हे मेरे मन, यह संसार तो आवागमन स्वरूप ही है अर्थात यहाँ जो जन्म लेता है वह मरता है परन्तु अन्तिम निर्णय तो सत्य (सत्याचरण) के आधार पर ही होना होता है। जब वह सच्चा प्रभु कृपा कर दे तो फिर यहाँ पर आना नहीं होता और अन्ततः सत्य के अनुसार ही निर्णय होता है तथा गुरमुख बनने पर बड़प्पन प्राप्त होता है। जो सच्चे प्रभु के रंग में रंग गए हैं वे ही सहज आध्यात्मिक आनन्द में लीन हो जाते हैं और उसी सहज में ही समा जाते हैं। जब सच्चा प्रभु मन को भा जाता है तो सत्य मन में आ बसता है और शब्द में लीन होकर ही अन्त में जीवन मरण का झगड़ा समाप्त होता है। हे नानक, जो प्रभु नाम में लीन हैं वे सत्य में समा जाते हैं और उन्हें फिर संसार सागर में नहीं आना पड़ता।। १ ।। माया का मोह तो एक प्रकार का पागलपन है क्योंकि द्वैतभाव में तो व्यक्ति ख्वार ही होता है। माता पिता सभी मोह के कारक हैं और इनके मोह में उलझकर जीव अशान्त हो जाता है। जीव का मोह में उलझना और पिछले कमाए हुए कर्मों का फल कोई मिटा नहीं सकता। जिसने इस सृष्टि की सृजना ही है वही इसको उत्पन्न कर इसकी देखभाल करता है और उसके जैसा अन्य कोई भी नहीं है। अज्ञानी मनमुख जीव अनेक प्रकार के कष्टों में मरता खपता रहता है परन्तु शब्द के बिना उसे शान्ति प्राप्त नहीं होती। हे नानक, प्रभु नाम के बिना तो हर कोई भटका हुआ है और माया मोह में ख्वार होता रहता हैं।। २ ।। इस संसार को जलता हुआ देखकर हम तो भाग कर प्रभु की शरण में आ गए हैं। पूर्ण गुरु के सामने यही अरदास करते हैं कि हमारी रक्षा कर लो और हमे भी बड़प्पन प्रदान करो। हे प्रभु, हमें रख लो क्योंकि तुम्हारे नाम में ही यह रक्षा करने का बड़प्पन है; तेरे जैसा अन्य कोई भी दाता नहीं है। जो तेरी सेवा में लगे हुए हैं वे बड़े भाग्यशाली हैं और हर युग में उन्होंने केवल एक प्रभु को ही जाना माना है। ब्रह्मचारी रहना, दान देना घोर संयमपूर्ण कार्य करते हुए भी गुरु के बिना गतिशीलता प्राप्त नहीं होती। हे नानक, वही लोग शब्द को बूझते हैं जो प्रभु की शरण में आ पड़ते हैं।। ३ ।। प्रभु जैसी बुद्धि प्रदान करता है वैसी ही व्यक्ति में उत्पन्न होती है तथा अन्य कोई भी बुद्धि उसको नही मिलती। हे प्रभु, अन्दर बाहर एक तू ही स्थित है और तू स्वयं ही हमें समझा दे। हे प्रभु, तू ही समझा दे, तेरे बिना अन्य कुछ भी नही भाता क्योंकि गुरमुख व्यक्ति ने ही हरि रस का पान किया होता है। उसके सच्चे दरबार में सदैव सत्य ही सत्य है और सच्चे शब्द के माध्यम से ही भली प्रकार से प्रभु के बारे में कहा जा सकता है। मैने अपने अन्तर्मन के घर में ही

सबदि सुभाखिआ ॥ घर महि निज घरु पाइआ सतिगुरु देइ वडाई ॥ नानक जो नामि रते सेई महलु पाइनि मति परवाणु सचु साई ॥ ४ ॥ ६ ॥

वडहंसु महला ४ छंत १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम ॥ हरि हरि हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई राम ॥ हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई सभि दूख विसारणहारा ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धनु सतिगुरू हमारा ॥ ऊठत बैठत सतिगुरु सेवह जितु सेविऐ सांति पाई ॥ मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर प्रीति लगाई ॥ १ ॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे राम ॥ हरि नामो हरि नामु द्रिड़ाए जपि हरि हरि नामु विगसे राम ॥ जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरि नामु नवं निधि पाई ॥ हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा हरि सहजि समाधि लगाई ॥ हरि नामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतिगुर देव मनु परसे ॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे ॥ २ ॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा राम ॥ हउ मनु तनु हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम ॥ हउ मनु तनु काटि काटि तिसु देई जो सतिगुर बचन सुणाए ॥ मेरै मनि बैरागु भइआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु पाए ॥ हरि हरि क्रिपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा ॥ ३ ॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई राम ॥ हरि दानो हरि दानु देवै हरि पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन का दुखु भरमु भउ भागा ॥ सेवक भाइ मिले वडभागी जिन गुर चरनी मनु लागा ॥ कहु नानक हरि आपि मिलाए मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई ॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ४ ॥ हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी राम ॥ जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम ॥ सतिगुरु मेलि हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ जिसु कारणि हंउ ढूंढि ढूढेदी सो सजणु हरि घरि

अपना वास्तविक घर पा लिया है और सच्चे गुरु ने ही मुझे यह बड़प्पन प्रदान किया है। हे नानक, जो प्रभु-नाम में लीन होते हैं वे ही प्रभु के दरबार को प्राप्त कर लेते हैं और उस सच्चे मालिक के समक्ष उनकी बुद्धि ही स्वीकृत होती है।। ४ ।। ६।।

वडहंसु महला ४ छन्द १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मेरे मन में सच्चे गुरु ने प्रेम उत्पन्न कर दिया है और प्रभु-नाम को मेरे मन में बसा दिया है। मेरे मन में प्रभु-नाम बसा दिया है और यह ही सभी दुखों को भुला देने वाला है। बड़े भाग्य से मैंने गुरु का दर्शन प्राप्त किया है और हमारा सच्चा गुरु धन्य है। उठते बैठते सच्चे गुरु का सुमिरन करना चाहिए क्योंकि उसका सुमिरन करने से ही शान्ति प्राप्त होती है। मेरे मन में तो सच्चे गुरु ने परमात्मा के प्रति प्रेम उत्पन्न कर दिया है।। १ ।। सच्चे गुरु को देखकर मैं जीता हूँ और उसी को देखकर मैं रस से भरकर आनन्दित हो गया हूँ। सच्चा गुरु ही प्रभु का नाम मन में पक्का करता है और प्रभु के नाम का जाप करने से ही हृदय रूपी कमल खिल गया है। प्रभु के नाम सुमिरन से हृदय कमल खिल जाता है और प्रभु-नाम के माध्यम से ही सभी सुखों के भण्डार प्राप्त हो जाते हैं। अहंकार का रोग छूट जाता है, दुख समाप्त हो जाता है ओर व्यक्ति प्रभु में सहजभाव की समाधि के माध्यम से लीन हो जाता है। प्रभु-नाम के बड़प्पन को सच्चे गुरु से ही पाया जाता है और मन को वास्तविक सुख तब मिलता है कि जब सुख देने वाला सच्चा गुरु उसका स्पर्श करता है। मैं सच्चे गुरु को देखकर ही जीवित बना रहता हूँ और उसे ही देखकर रसपूर्ण आनन्द में बना रहता हूँ।। २ ।। कोई आ जाए और मुझे मेरा पूरा सच्चा गुरु मिला दे। मैं उसे तन मन और अपना शरीर भी काटकर अर्पण कर दूँगा। ऐसे व्यक्ति को तो मैं अपना तन मन काट काट कर दे दूँगा जो मुझे सच्चे गुरु के वचनों को सुना दे। मेरा मन संसार के पदार्थों के प्रति वैराग्यवान हो गया है और अब गुरु से मिलकर उसके दर्शन के सुख को प्राप्त करता है। हे सुखदाता प्रभु, मुझ पर कृपा करो और मुझे सच्चे गुरु के चरणों की धूलि प्रदान करो। कोई आ जाए और मुझे मेरा पूर्ण सच्चा गुरु मिला दे।। ३ ।। गुरु के समान अन्य कोई भी दाता नहीं है। प्रभु ही सब दान देता है और प्रभु ही माया से रहित सर्वव्यापक व्यक्तित्व है। जिन्होंने भी प्रभु का सुमिरन किया है उनका दुख, भय और भ्रम आदि भाग खड़ा हुआ है। बड़े भाग्यशाली लोग जिनका मन गुरु के चरणों में लग गया है वे ही सेवकभाव से प्रभु से मिलते हैं। नानक का कथन है कि प्रभु स्वयं ही मिलाता है और सर्वव्यापक सच्चे प्रभु को मिलकर ही सुख प्राप्त होता है। गुरु जैसा दाता तो मेरे लिए अन्य कोई भी नहीं है।। ४ ।। १ ।। वडहंसु महला ४ ।। गुरु के बिना तो मैं बहुत ही बेबस और विनम्र होकर खड़ी हूँ। संसार को जीवन देने वाला वह दाता प्रभु गुरु के माध्यम से मुझे मिल गया है और मैं उसमें लीन हो गई हूँ। सच्चे गुरु ने मिलाया और मैं हरि-नाम में लीन हो गई हूँ; अब मैंने प्रभु-नाम का सुमिरन और जाप किया है। जिस मित्र को मैं तलाश करती घूम रही थी उसे मैंने घर (मन) में ही

पाइआ ॥ एक द्रिस्टि हरि एको जाता हरि आतम रामु पछाणी ॥ हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी ॥ १ ॥ जिना सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए राम ॥ तिन चरण तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाए राम ॥ हरि हरि चरण सरेवह तिन के जिन सतिगुरु पुरखु प्रभु ध्याइआ ॥ तू वडदाता अंतरजामी मेरी सरधा पूरि हरि राइआ ॥ गुरसिख मेलि मेरी सरधा पूरी अनदिनु राम गुण गाए ॥ जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए ॥ २ ॥ हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे राम ॥ हरि नामो हरि नामु सुणाए मेरा प्रीतमु नामु अधारे राम ॥ हरि हरि नामु मेरा प्रान सखाई तिसु बिनु घड़ी निमख नही जीवां ॥ हरि हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि अंम्रितु पीवां ॥ हरि आपे सरधा लाइ मिलाए हरि आपे आपि सवारे ॥ हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे ॥ ३ ॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ हरि आपे हरि आपे मेलै करै सो होई राम ॥ जो हरि प्रभ भावै सोई होवै अवरु न करणा जाई ॥ बहुतु सिआणप लइआ न जाई करि थाके सभि चतुराई ॥ गुर प्रसादि जन नानक देखिआ मै हरि बिनु अवरु न कोई ॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला ४ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ राम ॥ तिमर अगिआनु गवाइआ गुर गिआनु अंजनु गुरि पाइआ राम ॥ गुर गिआन अंजनु सतिगुरू पाइआ अगिआन अंधेर बिनासे ॥ सतिगुर सेवि परम पदु पाइआ हरि जपिआ सास गिरासे ॥ जिन कंउ हरि प्रभि किरपा धारी ते सतिगुर सेवा लाइआ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ ॥ १ ॥ मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई राम ॥ हरि नामो हरि नामु देवै मेरा अंति सखाई राम ॥ हरि हरि नामु मेरा अंति सखाई गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ जिथै पुतु कलत्रु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि नामि छडाइआ ॥ धनु धनु सतिगुरु पुरखु निरंजनु जितु मिलि हरि नामु धिआई ॥ मेरा सतिगुरु मेरा

पा लिया है। मुझे एक ही प्रभु दिखाई दिया है और मैंने केवल एक प्रभु को ही जाना है जो मेरी आत्मा में रमा हुआ है। उस प्रभु रूपी गुरु के बिना मैं बलहीन होकर खड़ी हुई हूँ।। १ ।। जिन्होंने सच्चे गुरु को पा लिया है उन्हें प्रभु हरि ने अपने साथ मिला लिया है। ऐसे व्यक्तियों के चरणों की हम सेवा करते हैं और उनके चरणों में लगे रहते हैं। जिन्होंने सच्चे गुरु रूपी प्रभु की आराधना की है हम सदैव उनके चरणों की सेवा करते हैं। हे बड़े दाता अन्तर्यामी प्रभु, मेरी प्रेम भरी आशा को तुम पूरा कर दो। गुरु के सिक्ख से मुझे मिला दे जिससे मेरी आशा पूरी हो जाए और मैं प्रतिदिन उस प्रभु के गुण गाता रहूँ। जिन्होंने सच्चे गुरु को पा लिया है वास्तव में उनका मिलाप हरि प्रभु से हो गया है।। २ ।। मैं गुरु के सिक्ख प्यारे मित्र पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ। वह मित्र मुझे प्रभु-नाम सुनाता है और प्रभु का नाम ही मेरे जीवन का आधार है। प्रभु-नाम ही मेरे प्राणों का मित्र है और उसके बिना मैं एक घड़ी भर भी जीवित नहीं रह सकता। वह सुखदाता प्रभु यदि कृपा करे तो मैं गुरमुख बनकर नाम रूपी अमृत का पान करूँ। प्रभु स्वयं ही विश्वास एवं श्रद्धा जगाकर अपने से मिला लेता है और प्रभु स्वयं ही जीवन संवार देता है। मैं गुरसिख रूपी प्यारे मित्र पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ।। ३ ।। वह प्रभु स्वयं ही सब स्थानों में रमा हुआ है और माया से अलिप्त बना रहने वाला है। प्रभु स्वयं तो जीव को अपने से मिला लेता है और वह प्रभु ही जो चाहता है वही होता है। जो हरि-प्रभु को भाता है वही होता है; अन्य कुछ भी नहीं किया जा सकता। उसे बहुत चतुराईयों से प्राप्त नहीं किया जा सकता और सभी उसको पाने के लिये सभी प्रकार की चतुराईयां करके थक चुके हैं। दास नानक ने गुरु की कृपा से यह देख लिया है कि मेरा प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं हैं। वह सर्वव्यापक निरंजन प्रभु स्वयं ही सब ओर स्थित है।। ४ ।। २ ।। वडहंसु महला ४ ।। हे प्रभु, मुझे सच्चे गुरु से मिला दो क्योंकि सच्चे गुरु के चरण मुझे भा गये हैं। गुरु के द्वारा ज्ञान रूपी अंजन प्राप्त कर लेने से मेरा घोर अंधकार रूपी अज्ञान समाप्त हो गया है। यह गुरु का ज्ञान रूपी अंजन मैंने सच्चे गुरु से ही प्राप्त किया है जिससे यह अज्ञान रूपी अंधकार विनष्ट हो गया है। सच्चे गुरु की सेवा करने से मैंने परमपद् को प्राप्त कर लिया है और अब मैं प्रत्येक साँस और ग्रास के साथ प्रभु का सुमिरन करता हूँ। जिन पर प्रभु ने कृपा की है वे ही सच्चे गुरु की सेवा में लग जाते हैं। हे प्रभु, हमें सच्चे गुरु से मिला दे क्योंकि सच्चे गुरु के चरण हमें भा गये हैं।। १ ।। मेरा सच्चा गुरु ऐसा प्रिय है कि मैं गुरु के बिना रह ही नहीं सकता। वही मुझे प्रभु का नाम प्रदान करता है और वही अंतिम समय में मेरा सहायक सखा होगा। प्रभु-नाम ही मेरा अंतिम समय में सहायक है और सच्चे गुरु ने यही प्रभु-नाम दृढ़ता पूर्वक मेरे मन में बिठा दिया है। जहाँ पुत्र स्त्री आदि कोई भी मित्र नहीं होता वहाँ प्रभु नाम ही बचा लेता है। वह सर्वव्यापक निरंजन सच्चा गुरु धन्य है जिसे मिलने पर प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है। सच्चा गुरु मेरा

सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई ॥ २ ॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ राम ॥ तिन निहफलु तिन निहफलु जनमु सभु ब्रिथा गवाइआ राम ॥ निहफलु जनमु तिन ब्रिथा गवाइआ ते साकत मुए मरि झूरे ॥ घरि होदै रतनि पदारथि भूखे भागहीण हरि दूरे ॥ हरि हरि तिन का दरसु न करीअहु जिनी हरि हरि नामु न धिआइआ ॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ ॥ ३ ॥ हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती राम ॥ गुर मिलि गुर मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती राम ॥ हरि हरि सतिगुर करह भगती जां हरि प्रभु किरपा धारे ॥ मै गुर बिनु अवरु न कोई बेली गुरु सतिगुरु प्राण हम्हारे ॥ कहु नानक गुरि नामु द्रिड़्हाइआ हरि हरि नामु हरि सती ॥ हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहंसु महला ४ ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि सतिगुरु मेलि सुखदाता राम ॥ हम पूछह हम पूछह सतिगुर पासि हरि बाता राम ॥ सतिगुर पासि हरि बात पूछह जिनि नामु पदारथु पाइआ ॥ पाइ लगह नित करह बिनंती गुरि सतिगुरि पंथु बताइआ ॥ सोई भगतु दुखु सुखु समतु करि जाणै हरि हरि नामि हरि राता ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि गुरु सतिगुरु मेलि सुखदाता ॥ १ ॥ सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामि सभि बिनसे हंउमै पापा राम ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु लथिअड़े जगि तापा राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन के दुख पाप निवारे ॥ सतिगुरि गिआन खड़गु हथि दीना जमकंकर मारि बिदारे ॥ हरि प्रभि क्रिपा धारी सुखदाते दुख लाथे पाप संतापा ॥ सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामु सभि बिनसे हंउमै पापा ॥ २ ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ राम ॥ मुखि गुरमुखि मुखि गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ राम ॥ गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ अरोगत भए सरीरा ॥ अनदिनु सहज समाधि हरि लागी हरि जपिआ गहिर गंभीरा ॥ जाति अजाति नामु जिन धिआइआ तिन परम पदारथु पाइआ ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि

अत्यन्त प्यारा है और गुरु के बिना मुझसे रहा नहीं जाता।। २ ।। जिन्होंने सर्वव्यापक सच्चे गुरु का दर्शन नहीं प्राप्त किया है उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन निष्फल कर दिया है और व्यर्थ में ही गंवा लिया है। जीवन तो उन्होंने निष्फल करके व्यर्थ में गंवाया ही है साथ ही साथ प्रभु से टूटे हुए ऐसे लोग पश्चाताप् करते हुए मर जाते हैं। ऐसे भाग्यहीन अपने घर में ही अर्थात् अपने पास ही प्रभु नाम रूपी रत्न होते हुए भी भूखे नंगे रहते हुए प्रभु से दूर ही बने रहते हैं। हे प्रभु, जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया है ऐसे लोगों का मुझे दर्शन भी ना करना पड़े। जिन्होंने सच्चे गुरु रूपी उस सर्वव्यापक को नहीं पाया है मुझे उन्हें देखना भी ना पड़े।। ३ ।। हम दीन-हीन चातक पक्षी की तरह हैं और सदैव प्रभु के पास ही विनती करते रहते हैं। हे प्रभु, हमें गुरु मिले; हमें प्यारा गुरु मिला दे ताकि हम सच्चे गुरु की भक्ति (सेवा) करते रहें। सच्चे गुरु की भक्ति भी तभी होती है यदि प्रभु कृपा कर दे। सच्चे गुरु के बिना मेरा कोई भी मित्र नहीं है और सच्चा गुरु प्रभु ही हमारा प्राण है। हे नानक, गुरु ने ही उस सच्चे नाम का सुमिरन कराया है जो सच्चा नाम सदैव सत्य रूप में बना रहने वाला है। हम तो दीन-हीन चातक हैं जो प्रभु के समक्ष विनती करते रहने वाले हैं।। ४ ।। ३ ।। वडहंसु महला ४ ।। हे प्रभु, कृपा करो और सुखदाता एवं सबमें रमण करने वाला सच्चा गुरु मिला दो। सच्चे गुरु से हम सदैव प्रभु की कथा-वार्ता ही सुनते रहे। ऐसे सच्चे गुरु से ही हम बातें पूछते रहें जिसने स्वयं प्रभु-नाम रूपी पदार्थ पा लिया है। मैं ऐसे सच्चे गुरु का चरण स्पर्श करता हूँ, उससे सदैव विनती करता हूँ क्योंकि उस सच्चे गुरु ने ही प्रभु से मिलने का मार्ग बताया है। वही भक्त दुख सुख को समान भाव से जानता है जिसने हरि नाम में ही अपने आप को लीन किया हुआ है। हे प्रभु, मुझ पर कृपा कर और मुझे सुखदाता सच्चा गुरु मिला दे।। १ ।। गुरमुख बनकर प्रभु नाम को सुनने से मेरे सभी अहंकार और पाप विनष्ट हो गये हैं। प्रभु के नाम का जाप करने से संसार के सभी कष्ट दूर हो गये हैं। जिन्होंने हरि नाम की ही आराधना की है उनके दुख और पाप दूर हो गये हैं। सच्चे गुरु ने ऐसा ज्ञान रूपी खड्ग हाथ में दिया है जिससे सभी यमदूतों को मार डाला गया है। सुखदाता प्रभु ने जैसे ही मुझ पर कृपा की तो मेरे पाप, संताप और दुख दूर हो गये हैं। गुरमुख बनकर प्रभु नाम को सुनने से मेरे सभी पाप और अहंकार नष्ट हो गये हैं।। २ ।। प्रभु नाम का जाप करने से प्रभु नाम मेरे मन को भा गया है। गुरमुख बनकर प्रभु नाम की आराधना करने से मेरे सभी रोग नष्ट हो गये हैं। गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का जाप करने से सभी रोग नष्ट हो गये हैं और मेरा शरीर निरोग हो गया है। अब प्रतिदिन उस हरि प्रभु में मेरी सहज समाधि लग गई है क्योंकि मैंने उस गहन् और गंभीर प्रभु का जाप किया है। चाहे तथाकथित ऊँची जाति वाले अथवा नीची जाति वाले, जिस किसी ने भी सुमिरन किया है उसने प्रभु रूपी सर्वोच्च पदार्थ को पा लिया है। प्रभु-नाम का जाप करते रहने से प्रभु नाम मेरे मन को भा

भाइआ ॥ ३ ॥ हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ हम पापी हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे राम ॥ हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे हरि दैआल सरणाइआ ॥ तू दुख भंजनु सरब सुखदाता हम पाथर तरे तराइआ ॥ सतिगुर भेटि राम रसु पाइआ जन नानक नामि उधारे ॥ हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ ४ ॥ ४ ॥

वडहंसु महला ४ घोड़ीआ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

देह तेजणि जी रामि उपाईआ राम ॥ धंनु माणस जनमु पुंनि पाईआ राम ॥ माणस जनमु वड पुंने पाइआ देह सु कंचन चंगड़ीआ ॥ गुरमुखि रंगु चलूला पावै हरि हरि हरि नव रंगड़ीआ ॥ एह देह सु बांकी जितु हरि जापी हरि हरि नामि सुहावीआ ॥ वडभागी पाई नामु सखाई जन नानक रामि उपाईआ ॥ १ ॥ देह पावउ जीनु बुझि चंगा राम ॥ चड़ि लंघा जी बिखमु भुइअंगा राम ॥ बिखमु भुइअंगा अनत तरंगा गुरमुखि पारि लंघाए ॥ हरि बोहिथि चड़ि वडभागी लंघै गुरु खेवटु सबदि तराए ॥ अनदिनु हरि रंगि हरि गुण गावै हरि रंगी हरि रंगा ॥ जन नानक निरबाण पदु पाइआ हरि उतमु हरि पदु चंगा ॥ २ ॥ कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ राम ॥ तनि प्रेमु हरि चाबकु लाइआ राम ॥ तनि प्रेमु हरि हरि लाइ चाबकु मनु जिणै गुरमुखि जीतिआ ॥ अघड़ो घड़ावै सबदु पावै अपिउ हरि रसु पीतिआ ॥ सुणि स्रवण बाणी गुरि वखाणी हरि रंगु तुरी चड़ाइआ ॥ महा मारगु पंथु बिखड़ा जन नानक पारि लंघाइआ ॥ ३ ॥ घोड़ी तेजणि देह रामि उपाईआ राम ॥ जितु हरि प्रभु जापै सा धनु धंनु तुखाईआ राम ॥ जितु हरि प्रभु जापै सा धंनु साबासै धुरि पाइआ किरतु जुड़ंदा ॥ चड़ि देहड़ि घोड़ी बिखमु लघाए मिलु गुरमुखि परमानंदा ॥ हरि हरि काजु रचाइआ पूरै मिलि संत जना जंञ आई ॥ जन नानक हरि वरु पाइआ मंगलु मिलि संत जना वाधाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ वडहंसु महला ४ ॥ देह तेजनड़ी हरि नवरंगीआ राम ॥ गुर गिआनु गुरू हरि मंगीआ राम ॥

गया है।। ३ ।। हे प्रभु, मुझ पर कृपा करो और कृपा करके मुझे संसार सागर से उबार लो। हम पापी हैं और गुणहीन हैं परन्तु दीन होते हुए भी तुम्हारे ही हैं। हम गुणहीन, पापी और दीन हैं, परन्तु हे दयालु प्रभु, तेरी शरण में आ पहुँचे हैं। तू दुखों का नाश करने वाला, सब सुख देने वाला है और हम ऐसे पत्थर हैं जो तेरे तैराये हुए ही पार उतर सकते हैं। सच्चे गुरु के दर्शन करके ही हमने रामरस प्राप्त किया है और हे नानक, अनेकों सेवकों को प्रभु नाम ने ही पार कर दिया है। हे प्रभु, कृपा धारण करो और कृपा करते हुए हमें इस संसार सागर से उबार लो।। ४ ।। ४ ।।

वडहंसु महला ४ घोड़ियां (विवाह के समय स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाले मंगलगीत) १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

यह शरीर रूपी घोड़ी सर्वत्र रमण करने वाले प्रभु ने उत्पन्न की है। यह मानव जीवन धन्य है जिसे बड़े पुण्य कर्मों के कारण प्राप्त किया गया है। मानव जीवन बड़े पुण्य कर्म के कारण प्राप्त हुआ है और यह शरीर सोना है जो बहुत ही बढ़िया है। गुरमुख बनकर इस जीवन में प्रेम रूपी लाल रंग प्राप्त किया जाता है और फिर यह देह प्रभु के नये रंग में रंगी जाती है। यह देह उसी की सुन्दर रूप वाली है जिसने प्रभु नाम का जाप किया है और प्रभु का नाम के कारण यह देह सुन्दर बन गयी है। बड़े भाग्य से यह देह प्राप्त हुई है जिसका परम मित्र प्रभु का नाम ही है और नानक का कथन है कि इसे प्रभु ने ही पैदा किया है।। १ ।। देह रूपी घोड़ी पर काठी (ज़ीन) इस प्रकार डाली जाए कि प्यारे प्रभु को बूझ लिया जाए और इस शरीर रूपी घोड़ी पर चढ़ कर विषम संसार सागर को पार किया जाय। इस विषम संसार-सागर में अनेकों लहरें हैं और गुरु की ओर मुख करने वाले इससे पार उतर जाते हैं। प्रभु रूपी जहाज़ पर चढ़ कर भाग्यशाली इसको पार करता है और गुरु रूपी केवट शब्द के माध्यम से जीव को पार उतारता है। नित्यप्रति प्रभु के प्रेम में जो प्रभु के गुण गाता है वह हरि के प्रेम वाला व्यक्ति हरि के रंग में रंग कर हरि जैसा हो जाता है। सेवक नानक ने तो दुख से रहित निर्वाण पद को पा लिया है और यही पद उत्तम और सुखदायक है।। २ ।। शरीर रूपी घोड़ी के मुँह में गुरु ने ज्ञान रूपी लगाम का लोहा मज़बूती से बैठा दिया है और अब उसने इसके तन पर प्रभु-प्रेम का चाबुक लगाया है। इसके शरीर पर प्रेम का चाबुक लगा लगा कर अपने मन को जीत कर गुरमुख व्यक्ति ने विजय प्राप्त की है। व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने अनघड़ (ऊबड़ खाबड़) मन को सुन्दर स्वरूप प्रदान करे और शब्द के माध्यम से ना पिये जा सकने वाले नाम-रस का पान करे। गुरु द्वारा उच्चारण की हुई वाणी को कानों से सुनकर इस शरीर रूपी घोड़ी को प्रभु के रंग में लीन कर दे। ऐसा करने से जो जीवन के वाद का मौत का महामार्ग है, हे नानक, व्यक्ति उसके पार चला जाता है।। ३ ।। इस शरीर रूपी घोड़ी को प्रभु ने ही पैदा किया है और जिस शरीर रूपी घोड़ी ने हरि प्रभु की आराधना की है वही धन्य भी है और सफल जीवात्मा भी है। जिसके माध्यम से प्रभु का जाप होता है वही धन्य है और उसी को शाबास है। प्रारम्भ से किये हुए कर्मों के अनुरूप ही व्यक्ति को सब कुछ प्राप्त होता है। जीव इस शरीर रूपी घोड़ी पर चढ़कर ही संसार रूपी विषम सागर से पार उतरता है और गुरु से मिलकर गुरमुख बनकर परम आनन्द को प्राप्त करता है। प्रभु ने ही इस जीवात्मा का विवाह कार्य आगे वढ़ाया है और इसकी बारात में शान्त पुरुष इकट्ठा होकर आए। दास नानक का कथन है कि प्रभु रूपी वर प्राप्त होने पर सभी ओर आनन्द मंगल हो गया और संत सेवकों ने भी मिलकर बधाईयां दी है।। ४ ।। १ ।। ५ ।। वडहंसु महला ४ ।। यह देह प्रभु के नवीन रंग में रंगी हुई एक सुन्दर घोड़ी के रूप में प्रभु से गुरु द्वारा प्रदान किए जाने वाले ज्ञान को मांगती है।

गिआन मंगी हरि कथा चंगी हरि नामु गति मिति जाणीआ ॥ सभु जनमु सफलिउ कीआ करतै हरि राम नामि वखाणीआ ॥ हरि राम नामु सलाहि हरि प्रभ हरि भगति हरि जन मंगीआ ॥ जनु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि भगति गोविंद चंगीआ ॥ १ ॥ देह कंचन जीनु सुविना राम ॥ जड़ि हरि हरि नामु रतंना राम ॥ जड़ि नाम रतनु गोविंद पाइआ हरि मिले हरि गुण सुख घणे ॥ गुर सबदु पाइआ हरि नामु धिआइआ वडभागी हरि रंग हरि बणे ॥ हरि मिले सुआमी अंतरजामी हरि नवतन हरि नव रंगीआ ॥ नानकु वखाणै नामु जाणै हरि नामु हरि प्रभ मंगीआ ॥ २ ॥ कड़ीआलु मुखे गुरि अंकसु पाइआ राम ॥ मनु मैगलु गुर सबदि वसि आइआ राम ॥ मनु वसगति आइआ परम पदु पाइआ सा धन कंति पिआरी ॥ अंतरि प्रेमु लगा हरि सेती घरि सोहै हरि प्रभ नारी ॥ हरि रंगि राती सहजे माती हरि प्रभु हरि हरि पाइआ ॥ नानक जनु हरि दासु कहतु है वडभागी हरि हरि धिआइआ ॥ ३ ॥ देह घोड़ी जी जितु हरि पाइआ राम ॥ मिलि सतिगुर जी मंगलु गाइआ राम ॥ हरि गाइ मंगलु राम नामा हरि सेव सेवक सेवकी ॥ प्रभ जाइ पावै रंग महली हरि रंगु माणै रंग की ॥ गुण राम गाए मनि सुभाए हरि गुरमती मनि धिआइआ ॥ जन नानक हरि किरपा धारी देह घोड़ी चड़ि हरि पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

रागु वडहंसु महला ५ छंत घरु ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुर मिलि लधा जी रामु पिआरा राम ॥ इहु तनु मनु दितड़ा वारो वारा राम ॥ तनु मनु दिता भवजलु जिता चूकी कांणि जमाणी ॥ असथिरु थीआ अंम्रितु पीआ रहिआ आवण जाणी ॥ सो घरु लधा सहजि समधा हरि का नामु अधारा ॥ कहु नानक सुखि माणे रलीआं गुर पूरे कंउ नमसकारा ॥ १ ॥ सुणि सजण जी मैडड़े मीता राम ॥ गुरि मंत्रु सबदु सचु दीता राम ॥ सचु सबदु धिआइआ मंगलु गाइआ चूके मनहु अदेसा ॥ सो प्रभु पाइआ कतहि न जाइआ सदा सदा संगि बैसा ॥ प्रभ जी भाणा सचा

यह ज्ञान मांगती है, इसे हरि कथा अच्छी लगती है और प्रभु के नाम के माध्यम से प्रभु के बड़प्पन के बारे में कुछ थोड़ा सा जान पाती है। प्रभु-नाम का जाप करने से उस कर्ता प्रभु ने इसका जीवन सफल कर दिया है। प्रभु के नाम का गुणानुवाद करते हुए प्रभु के सेवक उस प्रभु की ही भक्ति मांगते हैं। दास नानक का कथन है कि हे संतजनों, उस प्रभु की भक्ति ही श्रेष्ठ है।। १ ।। सोने जैसी देह (घोड़ी) की काठी भी सोने की ही है और हरि नाम रूपी रत्न उस पर जड़े हुए हैं। नाम-रत्न के कारण इस ने प्रभु को पा लिया है और प्रभु से मिलने पर इसमें प्रभु जैसे गुण उत्पन्न हो गए हैं जिससे अनेकों सुख भी प्राप्त हो गए हैं। भाग्यशाली लोगों ने शब्द-गुरु को पाकर प्रभु नाम का सुमिरन किया है और वे हरि रंग में रंगकर प्रभु जैसे ही हो गए हैं। अन्तर्यामी प्रभु के मिलने पर यह शरीर रूपी घोड़ी प्रभु के सदैव नवीन बने रहने वाले रंग में रंगी गई है। नानक कहता है कि वह तो केवल प्रभु-नाम को ही जानता है और प्रभु से केवल हरि नाम ही मांगता है।। २ ।। इस शरीर रूपी घोड़ी के मुख में प्रभु ने गुरु ज्ञान रूपी लगाम का अंकुश डाला हुआ है; यह मन एक हाथी है जो शब्द-गुरु के माध्यम से वश में आता है। जिसका मन वश में आ गया उसी ने परम पद को प्राप्त कर लिया है और वही जीव-स्त्री प्रभु पति को प्यारी लगती है। उसी के अन्तर्मन में प्रभु का प्रेम लगा होता है और वही स्त्री अपने घर में शोभायमान बनी रहती है। वह प्रभु के रंग में सहजभाव में रंग कर मस्त बनी रहती है और वास्तव में उसे ही प्रभु प्राप्त होता है। प्रभु का दास नानक कहता है कि बड़े भाग्य वाला ही प्रभु का सुमिरन करता है।। ३ ।। वास्तविक शरीर रूपी घोड़ी वही है जिसने प्रभु को पा लिया है। उसी ने ही सच्चे गुरु से मिलाप के बाद मंगलगीत गाए हैं। उसी ने मंगल गीत गाते हुए राम नाम का जाप करते हुए प्रभु के सेवकों की सेवा की है। प्रेम अवस्था में पहुँच कर वही प्रभु के रंग के आनन्द का उपभोग करती है। वही प्रभु के गुण गाती है और उसके मन को गुरु की मति में चलते हुए प्रभु की आराधना अच्छी लगती है। दास नानक पर प्रभु ने कृपा की है और उस ने देह रूपी घोड़ी पर सवार होकर प्रभु को पा लिया है।। ४ ।। २ ।। ६ ।।

रागु वडहंसु महला ५ छन्द घरु ४ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

गुरु से मिलकर मैंने प्यारे प्रभु को ढूँढ लिया है। मैंने बारी बारी से यह तन मन उस पर कुर्बान कर दिया है। तन मन उसे दे दिया है जिससे मैंने संसार सागर को पा लिया है और मेरा यम का भय चूक गया है। प्रभु नाम का अमृत पीने से मैं स्थिर (अमर) हो गया हूँ और मेरा आवागमन थम गया है। मैंने वह स्थान अर्थात अवस्था प्राप्त कर ली है जिसमें सहजभाव में लीन हुआ जाता है और जहाँ केवल प्रभु-नाम ही आधार होता है। नानक कहता है कि ऐसी अवस्था में जीव सुख के माध्यम से आनन्दित होता रहता है और पूर्ण गुरु को नमस्कार करता रहता है।। १ ।। हे मेरे मित्र प्रभु, मेरी बात सुनो; गुरु ने मुझे सत्य रूपी शब्द मन्त्र रूप में दिया है। मैंने सत्य शब्द की आराधना की है और प्रभु का गुणानुवाद किया है जिससे मेरे मन के भय चुक गए हैं। मैंने ऐसा प्रभु पा लिया है जो कहीं भी इधर उधर नहीं जाता और सदैव साथ ही बना रहता है। जो प्रभु को भा गया है वास्तव में उसे ही सच्चा

माणा प्रभि हरि धनु सहजे दीता ॥ कहु नानक तिसु जन बलिहारी तेरा दानु सभनी है लीता ॥ २ ॥ तउ भाणा तां त्रिपति अघाए राम ॥ मनु थीआ ठंढा सभ त्रिसन बुझाए राम ॥ मनु थीआ ठंढा चूकी डंझा पाइआ बहुतु खजाना ॥ सिख सेवक सभि भुंचण लगे हंउ सतिगुर कै कुरबाना ॥ निरभउ भए खसम रंगि राते जम की त्रास बुझाए ॥ नानक दासु सदा संगि सेवकु तेरी भगति करंउ लिव लाए ॥ ३ ॥ पूरी आसा जी मनसा मेरे राम ॥ मोहि निरगुण जीउ सभि गुण तेरे राम ॥ सभि गुण तेरे ठाकुर मेरे कितु मुखि तुधु सालाही ॥ गुणु अवगुणु मेरा किछु न बीचारिआ बखसि लीआ खिन माही ॥ नउ निधि पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे ॥ कहु नानक मै वरु घरि पाइआ मेरे लाथे जी सगल विसूरे ॥ ४ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ किआ सुणेदो कूड़ु वंञनि पवण झुलारिआ ॥ नानक सुणीअर ते परवाणु जो सुणेदे सचु धणी ॥ १ ॥ छंतु ॥ तिन घोलि घुमाई जिन प्रभु स्रवणी सुणिआ राम ॥ से सहजि सुहेले जिन हरि हरि रसना भणिआ राम ॥ से सहजि सुहेले गुणह अमोले जगत उधारण आए ॥ भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पारि लघाए ॥ जिन कंउ क्रिपा करी मेरै ठाकुरि तिन का लेखा न गणिआ ॥ कहु नानक तिसु घोलि घुमाई जिनि प्रभु स्रवणी सुणिआ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥ नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥ १ ॥ छंतु ॥ जिनी हरि प्रभु डिठा तिन कुरबाणे राम ॥ से साची दरगह भाणे राम ॥ ठाकुरि माने से परधाने हरि सेती रंगि राते ॥ हरि रसहि अघाए सहजि समाए घटि घटि रमईआ जाते ॥ सेई सजण संत से सुखीए ठाकुर अपणे भाणे ॥ कहु नानक जिन हरि प्रभु डिठा तिन कै सद कुरबाणे ॥ २ ॥ सलोकु ॥ देह अंधारी अंध सुंञी नाम विहूणीआ ॥ नानक सफल जनंमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥ १ ॥ छंतु ॥ तिन खंनीऐ वंञां जिन मेरा हरि प्रभु डीठा राम ॥ जन चाखि अघाणे हरि हरि अंम्रितु मीठा राम ॥ हरि मनहि मीठा प्रभू तूठा अमिउ वूठा सुख भए ॥ दुख नास भरम बिनास तन ते जपि जगदीस ईसह जै जए ॥ मोह रहत बिकार

सम्मान मिला है और उसी को ही प्रभु ने स्वाभाविक रूप से ही हरि नाम रूपी धन प्रदान किया है। नानक का कथन है कि मैं प्रभु के ऐसे सेवक पर बलिहारी जाता हूँ और हे प्रभु, तेरा दान तो सब ने ही प्राप्त किया है।। २ ।। हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लगे तब ही हम तन मन से तृप्त होकर अघाते हैं। मन शीतल हो जाता है और सभी तृष्णाएं समाप्त हो जाती हैं। दास नानक सदैव तेरे सेवकों के साथ बना रहता है और तुझ में अपनी लौ लगाकर तेरी भक्ति करता रहता है।। ३।। हे मेरे राम, मेरी आशा और उद्देश्य पूरा हो गया है; मैं तो गुण विहीन हूँ और सभी गुण तेरे ही है। हे मेरे मालिक सभी गुण तेरे ही हैं। मैं भला किस मुँह से प्रशंसा करूँ। तुम ने मेरी अच्छाई बुराई पर कुछ भी विचार न करते हुए मुझे क्षण भर में ही क्षमा कर दिया है। मुझे नवनिधि रूपी नाम की प्राप्ति हो गई। अन्तर्मन में मंगल गीत तथा आनन्द के वाद्य बजने लगे हैं। नानक का कथन है कि मैंने अपने प्रभु पति को घर में ही अर्थात मन में ही प्राप्त कर लिया है और मेरी सभी चिन्ताएं दूर हो गई हैं।। ४ ।। १ ।। श्लोक।। हे मन, तू झूठे पदार्थों की बात क्या सुनता है; ये तो हवा के झोंके की तरह उड़ जाने वाले हैं। हे नानक, वे कान ही प्रभु के सामने स्वीकृत माने जाते हैं जो सच्चे मालिक प्रभु के नाम को ही सुनते हैं।। १ ।। छन्द ।। जिन्होंने कानों से प्रभु नाम को सुना है मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। वे व्यक्ति ही सहजभाव में सफल हैं जिन्होंने अपनी जीभ से प्रभु के नाम का ही उच्चारण किया है। सहजभाव में ही वे सफल हैं और उनके पास अमूल्य गुण हैं तथा वे संसार का उद्धार करने के लिए ही आए हैं। इस भयानक संसार सागर में से प्रभु के चरण रूपी जहाज ने अनेकों को ही पार उतार दिया है। जिन पर मेरे प्रभु ने कृपा की है उनके किसी भी हिसाब किताब की जांच पड़ताल नहीं होती है। नानक कहता है कि मैं उन पर बार बार बलिहारी जाता हूँ जिन्होंने अपने कानों से प्रभु यश को सुना है।। १ ।। श्लोक ।। इन आँखों से मैंने प्रकाश रूपी परमात्मा को देख लिया है और उसे देखते रहने की मेरी प्यास बुझती नहीं है। हे नानक वे (ज्ञान की) आँखें दूसरी ही है जिनसे वह प्यारा प्रभु दिखाई देता है।। १ ।। छन्द ।। जिन्होंने उस हरि प्रभु को देखा है मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। ऐसे व्यक्ति ही प्रभु के सच्चे दरबार में प्रसन्न किए जाते हैं। जो प्रभु को मानते हैं वे ही सबसे श्रेष्ठ माने जाते हैं और वे ही प्रभु के रंग में रंगे रहते हैं। वे ही प्रभु के नाम-रस में तृप्त बने रहते है, वे सहज भाव में समाहित रहते हैं तथा घट घट में उस परमात्मा को बसा हुआ जानते हैं। वे ही भद्र और शान्त पुरुष होते हैं, वे ही सुखी बने रहते हैं और अपने प्रभु को अच्छे लगते हैं। नानक का कथन है कि जिन्होंने प्रभु का दर्शन कर लिया है मैं ऐसे व्यक्तियों पर बलिहारी जाता हूँ।। २ ।। श्लोक।। प्रभु नाम से विहीन यह देह अन्धकारमय और सुनसान बनी रहती है। हे नानक, जिसके मन में सच्चा मालिक बसा हुआ है उसी का जीवन सफल है।। १ ।। छन्द।। मैं टुकड़े टुकड़े होकर उस पर बलिहारी जाता हूँ जिसने मेरा हरि प्रभु देख लिया है। प्रभु के सेवक, प्रभु के मीठे अमृत नाम को चख कर अघा गए हैं अर्थात उन्हें अब अन्य कोई भूख नहीं रही। प्रभु कृपालु हुआ तो वह मन में मीठा लगने लगा, अमृत की वर्षा होने लगी और सभी सुख प्राप्त हो गए हैं। सभी दुखों और भ्रमों का विनाश हो गया और परमात्मा की आराधना करने से अन्तर्मन में परमात्मा की जय जयकार होने लगी है। शरीर मोह से विहीन हो गया, इसके सभी विकार

थाके पंच ते संगु तूटा ॥ कहु नानक तिन खंनीऐ वंञा जिन घटि मेरा हरि प्रभु वूठा ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ जो लोड़ीदे राम सेवक सेई कांढिआ ॥ नानक जाणे सति सांई संत न बाहरा ॥ १ ॥ छंतु ॥ मिलि जलु जलहि खटाना राम ॥ संगि जोती जोति मिलाना राम ॥ संमाइ पूरन पुरख करते आपि आपहि जाणीऐ ॥ तह सुंनि सहजि समाधि लागी एकु एकु वखाणीऐ ॥ आपि गुपता आपि मुकता आपि आपु वखाना ॥ नानक भ्रम भै गुण बिनासे मिलि जलु जलहि खटाना ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ प्रभ करण कारण समरथा राम ॥ रखु जगतु सगल दे हथा राम ॥ समरथ सरणा जोगु सुआमी क्रिपा निधि सुखदाता ॥ हंउ कुरबाणी दास तेरे जिनी एकु पछाता ॥ वरनु चिहनु न जाइ लखिआ कथन ते अकथा ॥ बिनवंति नानक सुणहु बिनती प्रभ करण कारण समरथा ॥ १ ॥ एहि जीअ तेरे तू करता राम ॥ प्रभ दूख दरद भ्रम हरता राम ॥ भ्रम दूख दरद निवारि खिन महि रखि लेहु दीन दैआला ॥ मात पिता सुआमि सजणु सभु जगतु बाल गोपाला ॥ जो सरणि आवै गुण निधान पावै सो बहुड़ि जनमि न मरता ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा सभि जीअ तेरे तू करता ॥ २ ॥ आठ पहर हरि धिआईऐ राम ॥ मन इछिअड़ा फलु पाईऐ राम ॥ मन इछ पाईऐ प्रभु धिआईऐ मिटहि जम के त्रासा ॥ गोबिदु गाइआ साध संगाइआ भई पूरन आसा ॥ तजि मानु मोहु विकार सगले प्रभू कै मनि भाईऐ ॥ बिनवंति नानक दिनसु रैणी सदा हरि हरि धिआईऐ ॥ ३ ॥ दरि वाजहि अनहत वाजे राम ॥ घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम ॥ गोविद गाजे सदा बिराजे अगम अगोचरु ऊचा ॥ गुण बेअंत किछु कहणु न जाई कोइ न सकै पहूचा ॥ आपि उपाए आपि प्रतिपाले जीअ जंत सभि साजे ॥ बिनवंति नानक सुखु नामि भगती दरि वजहि अनहद वाजे ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु वडहंसु महला १ घरु ५ अलाहणीआ   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधे लाइआ ॥ मुहलति पुनी पाई भरी जानीअड़ा घति

थक कर चूर हो गए और पाँच चोरों (काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार) का साथ भी छूट गया है। नानक का कथन है कि मैं उन पर खण्ड खण्ड होकर बलिहारी जाता हूँ जिनके हृदय में मेरा प्रभु बसता है।। ३ ।। श्लोक ।। राम के सेवक उन्हीं को कहा जाता है जो राम अर्थात प्रभु को खोजते रहते हैं। हे नानक, इस बात को सत्य करके जान ले कि वह प्रभु शान्त पुरुषों से अलग नहीं है।। १ ।। छन्द ।। जैसे जल से जल मिलकर एक हो जाता है उसी प्रकार गुरमुख व्यक्तियों की ज्योति परमात्मा के साथ मिलकर एक हो जाती है। उस पूर्ण सर्वव्यापक कर्ता मे लीन होकर अपने आपकी वास्तविकता को जाना जाता है, उस शून्य अवस्था में सहजभाव से ही समाधि लग जाती है और फिर केवल एक प्रभु का गुणानुवाद होता है। प्रभु स्वयं ही सबमें छिपा हुआ है और स्वयं ही स्वतन्त्र और अपने आपको प्रकट करने वाला है। हे नानक, ऐसा जान लेने वाले के भ्रम और तीनों गुण (रजो, तमो, सतो गुण) नष्ट हो जाते हैं। वे प्रभु से इस प्रकार मिल जाते हैं जैसे पानी पानी के साथ मिल जाता है।। ४ ।। २ ।। वडहंसु महला ५ ।। प्रभु ही सब कुछ करने कराने वाला और समर्थ है। हे प्रभु, सारे संसार को अपना हाथ देकर बचा ले। तू ही समर्थ, शरण देने योग्य, कृपानिधि, सुखदाता और सबका स्वामी है। मैं तेरे उस सेवक पर कुर्बान जाता हूँ जिसने एक प्रभु को पहचान लिया है। प्रभु का वर्ण, चिन्ह आदि नहीं देखा जा सकता और वह सब कथनों से परे अकथनीय है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुनो क्योंकि तुम ही सब कुछ करने कराने में समर्थ हो।। १ ।। हे प्रभु, तू सबका कर्ता है और ये सब तेरे ही जीव हैं। प्रभु ही इनके दुख, दर्द और भ्रमों का हरण करने वाला है। हे दीनदयालु प्रभु, तू क्षण भर में ही भ्रम, दुख और दर्द को समाप्त कर दे और हमारी रक्षा कर ले। हे परमात्मा, तू ही हमारा माता-पिता स्वामी, सज्जन है और यह सारा जगत् तेरा ही बाल गोपाल है। जो प्रभु की शरण में आ जाता है वह गुणों के भण्डार उस प्रभु को पा जाता है। वह फिर न जन्म लेता है न ही मरता है। दास नानक विनती करता है कि हे प्रभु, ये सभी जीव तेरे ही हैं और तू ही इन सबका कर्ता है।। २ ।। आठों प्रहर प्रभु की आराधना की जानी चाहिए क्योंकि इससे मनोवाछिंत फल पाया जाता है। प्रभु की आराधना करने से मनोवांछित फल तो मिलता ही है साथ ही साथ यम का भय भी मिट जाता है। साधु पुरुषों की संगत में प्रभु का गुणानुवाद करने से आशाएं पूर्ण हो जाती हैं। अहंकार, मोह, विकार आदि सबको छोड़कर ही प्रभु के मन को अच्छा लगा जाता है। नानक दिन-रात विनती करता है कि मैं सदा प्रभु की आराधना करता रहूँ।। ३ ।। प्रभु के द्वार पर ही आध्यात्मिक आनन्द के वाद्य बजते रहते हैं; प्रत्येक हृदय में प्रभु ही बोलता है। वह प्रभु ही बोलता है और वही हर स्थान पर बसा हुआ है और वह ही अगम्य अगोचर और ऊँचे से ऊँचा है। उसके गुण अनन्त हैं जिनके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता और कोई भी उन तक पहुँच नहीं सकता। वह स्वयं ही उत्पन्न करता है, स्वयं ही सबका पालन करता है और ये सारे जीव उसी के ही बनाये हुए हैं। नानक विनती करता है कि उस प्रभु के नाम की भक्ति में ही सुख है और उस प्रभु के द्वार पर ही अनहद वाद्य बजते रहते हैं।। ४।। ३ ।।

रागु वडहंसु महला १ घरु ५ अलाहणियां (मृत्यु पर गाए जाने वाले शोक गीत) १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

धन्य है वह सर्जना करने वाला सच्चा प्रभु जिसने सारे संसार को धंधों में लगाया हुआ है। जब व्यक्ति का समय पूरा हो गया, उसकी आयु की प्याली भर गई अर्थात उसके श्वास समाप्त हो गए तो इस प्यारे मित्र को पकड़ कर यमदूतों

चलाइआ ॥ जानी घति चलाइआ लिखिआ आइआ रुंने वीर सबाए ॥ कांइआ हंस थीआ वेछोड़ा जां दिन पुंने मेरी माए ॥ जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पुरबि कमाइआ ॥ धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥ १ ॥ साहिबु सिमरहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥ एथै धंधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा ॥ आगै सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै ॥ जितु सेविऐ दरगह सुखु पाईऐ नामु तिसै का लीजै ॥ आगै हुकमु न चलै मूले सिरि सिरि किआ विहाणा ॥ साहिबु सिमरिहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥ २ ॥ जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ साचड़ा सिरजणहारो ॥ साचा सिरजणहारो अलख अपारो ता का अंतु न पाइआ ॥ आइआ तिन का सफलु भइआ है इक मनि जिनी धिआइआ ॥ ढाहे ढाहि उसारे आपे हुकमि सवारणहारो ॥ जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ ३ ॥ नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥ वालेवे कारणि बाबा रोईऐ रोवणु सगल बिकारो ॥ रोवणु सगल बिकारो गाफलु संसारो माइआ कारणि रोवै ॥ चंगा मंदा किछु सूझै नाही इहु तनु एवै खोवै ॥ ऐथै आइआ सभु को जासी कूड़ि करहु अहंकारो ॥ नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला १ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहां ॥ रोवह बिरहा तन का आपणा साहिबु संम्हालेहां ॥ साहिबु सम्हालिह पंथु निहालिह असा भि ओथै जाणा ॥ जिस का कीआ तिन ही लीआ होआ तिसै का भाणा ॥ जो तिनि करि पाइआ सु आगै आइआ असी कि हुकमु करेहा ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहा ॥ १ ॥ मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे मरि जाणै ऐसा कोइ ॥ सेविहु साहिबु संम्रथु आपणा पंथु सुहेला आगै होइ ॥ पंथि सुहेलै जावहु तां फलु पावहु आगै मिलै वडाई ॥ भेटै सिउ जावहु सचि समावहु तां पति लेखै पाई ॥ महली जाइ पावहु खसमै भावहु रंग सिउ रलीआ माणै ॥ मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे कोई मरि जाणै ॥ २ ॥ मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि

ने आगे लगा लिया। देह का प्यारा साथी जीवात्मा जब पकड़कर आगे लगा लिया और जब परमेश्वर की ओर से उसको ले चलने का हुक्म आ गया तो सभी भाई बन्धु रोने लग पड़े। हे मेरी माँ, जब अवधि समाप्त हो गई तो देह और आत्मा का वियोग हो गया। अब जैसा पहले आचरण किया था और भाग्य लिखा गया था वैसा ही फल प्राप्त हो गया। वह सच्चा सम्राट प्रभु धन्य है जिसने सबको उत्पन्न किया और सारे संसार को धन्धों में लगाया हुआ है।। १ ।। हे मेरे भाईयो, सभी उस मालिक का सुमिरन करो क्योंकि सभी ने यहां से कूच करना ही करना है।। यहाँ का झूठा धंधा तो चार दिनों का है जिनके बाद निश्चित तौर से आगे जाना ही जाना है। तुम एक मेहमान की तरह हो जिसने निश्चित तौर से आगे चले जाना है, इसलिए तुम क्यों अभिमान करते हो। उसी प्रभु के नाम का जाप करो जिसका सुमिरन करने से प्रभु के दरबार में सुख प्राप्त होता है। आगे उस प्रभु के सामने तो व्यक्ति का हुकम बिल्कुल ही नही चलता और पता भी नहीं चलता कि किसके साथ क्या होता है। हे मेरे भाईयो, उस साहिब का सुमिरन करो क्योंकि सबने यहां से कूच करना ही करना है।। २ ।। जो उस समर्थ प्रभु को भाता है वही होता है। इस संसार का कार्य व्यवहार तो मात्र एक बहाना है। वह सच्चा सृजनहार प्रभु जल, स्थल और अंतरिक्ष में व्याप्त है। वह सच्चा सर्जक प्रभु अलख एवं अपार है जिसका अंत नहीं जाना जा सकता है। इस संसार में आना उन्हीं का सफल हुआ है जिन्होंने एक मन से उस प्रभु का सुमिरन किया है। वह तोड़ देता है, तोड़ कर फिर बना देता है और स्वंय अपने विधान में ही सबका भला करने वाला बन जाता है। जो उस समर्थ प्रभु को भाता है वही होता है; इस संसार का कार्य व्यवहार तो मात्र एक बहाना है।। ३ ।। हे नानक, अपने आप को सफल हुआ तभी जानना चाहिए जब वह हम रोते हुओं को प्यार करे। यदि पदार्थों के लिए उस प्रभु के सामने रोया जाए तो ऐसा रोना पूर्ण रूप से बेकार ही जाता है। सारा रोना बेकार है क्योंकि यह बेखबर संसार केवल धन सम्पदा के लिए ही रोता है। इसे अच्छे बुरे की कुछ भी पहचान नहीं है और व्यक्ति इस शरीर को व्यर्थ ही गंवा देता है। यहां आया हुआ हर कोई जाएगा इसलिए अहंकार करना झूठा है। हे नानक, उस प्रभु के समक्ष अपने आपको सच्चा और सफल तभी जानना चाहिए यदि वह हम रोते हुओं को प्यार करने लगे।। ४ ।। १ ।। वडहंसु महला १ ।। आओ मेरी सतसंगी सहेलियो, हम सब मिलकर उस प्रभु के सच्चे नाम का सुमिरन करें। इस शरीर का वियोग उस प्रभु से हुआ है इस बात के लिए हम अफसोस करें और अपने साहिब को याद करें। अपने मालिक को याद करें और आगे जिस रास्ते पर जाना है उसे ध्यान में रखें कि जिस रास्ते पर अन्य अनेकों लोग चले गए हैं हमने भी एक दिन उसी रास्ते पर जाना है। जिसका यह सब किया हुआ है उसी ने ही सब कुछ वापिस ले लिया है और यह सब उसी की रज़ा में हुआ है। जो उस प्रभु ने कर दिया वही हमारे सामने आया है; अब हम क्या हुक्म कर सकते हैं अर्थात हम कुछ नहीं कर सकते। हे सखियो, आओ और मिल बैठो और सच्चे प्रभु का नाम याद करो।। १ ।। ऐ लोगो, मरने को बुरा मत कहो क्योंकि यदि कोई वास्तव में मरना जानता हो तो वह अपने समर्थ प्रभु की सेवा करता है जिससे उसका आगे का मार्ग सुखदायक बन जाता है। जब सुखदायक मार्ग पर जाओगे तो अच्छे कर्मों के अनुरूप फल पाओगे और प्रभु के दरबार में सम्मान मिलेगा। प्रेम की भेंट लेकर यदि तुम प्रभु के दरबार में जाओगे तो सत्य में ही लीन हो जाओगे और तुम्हारा सम्मान होगा। उस प्रभु के महल में चले जाओगे, उस मालिक को अच्छे लगोगे और प्रेमपूर्वक आनन्द का उपभोग करोगे। इसलिए हे लोगों, मरने को बुरा मत जानो बशर्ते कोई मरना जानता हो।।२।। उन्हीं शूरवीरों का मरना सच्चा है जो

परवाणो ॥ सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो ॥ दरगह माणु पावहि पति सिउ जावहि आगै दूखु न लागै ॥ करि एकु धिआवहि तां फलु पावहि जितु सेविऐ भउ भागै ॥ ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै जाणो ॥ मरणु मुणसां सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो ॥ ३ ॥ नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥ कीता वेखै साहिबु आपणा कुदरति करे बीचारो ॥ कुदरति बीचारे धारण धारे जिनि कीआ सो जाणै ॥ आपे वेखै आपे बूझै आपे हुकमु पछाणै ॥ जिनि किछु कीआ सोई जाणै ता का रूपु अपारो ॥ नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला १ दखणी ॥ सचु सिरंदा सचा जाणीऐ सचड़ा परवदगारो ॥ जिनि आपीनै आपु साजिआ सचड़ा अलख अपारो ॥ दुइ पुड़ जोड़ि विछोड़िअनु गुर बिनु घोरु अंधारो ॥ सूरजु चंदु सिरजिअनु अहिनिसि चलतु वीचारो ॥ १ ॥ सचड़ा साहिबु सचु तू सचड़ा देहि पिआरो ॥ रहाउ ॥ तुधु सिरजी मेदनी दुखु सुखु देवणहारो ॥ नारी पुरख सिरजिऐ बिखु माइआ मोहु पिआरो ॥ खाणी बाणी तेरीआ देहि जीआ आधारो ॥ कुदरति तखतु रचाइआ सचि निबेड़णहारो ॥ २ ॥ आवा गवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो ॥ जंमणु मरणा आइ गइआ बधिकु जीउ बिकारो ॥ भूडड़ै नामु विसारिआ बूडड़ै किआ तिसु चारो ॥ गुण छोडि बिखु लदिआ अवगुण का वणजारो ॥ ३ ॥ सदड़े आए तिना जानीआ हुकमि सचे करतारो ॥ नारी पुरख विछुंनिआ विछुड़िआ मेलणहारो ॥ रूपु न जाणै सोहणीऐ हुकमि बधी सिरि कारो ॥ बालक बिरधि न जाणनी तोड़नि हेतु पिआरो ॥ ४ ॥ नउ दर ठाके हुकमि सचै हंसु गइआ गैणारे ॥ सा धन छुटी मुठी झूठि विधणीआ मिरतकड़ा अंङनड़े बारे ॥ सुरति मुई मरु माईए महल रुंनी दर बारे ॥ रोवहु कंत महेलीहो सचे के गुण सारे ॥ ५ ॥ जलि मलि जानी नावालिआ कपड़ि पटि अंबारे ॥ वाजे वजे सची बाणीआ पंच मुए मनु मारे ॥ जानी विछुंनड़े मेरा मरणु भइआ ध्रिगु जीवणु संसारे ॥ जीवतु मरै सु जाणीऐ पिर सचड़ै हेति पिआरे ॥ ६ ॥ तुसी रोवहु रोवण आईहो झूठि मुठी

स्वीकृत होकर मरते हैं । प्रभु के दरबार में उन्हीं को शूरवीर कहा जाता है और उन्हें ही वहाँ सच्चा सम्मान प्राप्त होता है। वे प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त करते हैं और सम्मानपूर्वक ही वहां जाते हैं तथा उन्हें आगे कोई भी दुख सताता नहीं है। वे एक ही प्रभु को अद्वितीय मानकर सुमिरन करते हैं तभी उन्हें फल प्राप्त होता है और उनका भय भाग खड़ा होता है। ऊँचे बोल नहीं बोलने चाहिए और अपने आपको नियन्त्रण में रखना चाहिए क्योंकि जानने वाला वह प्रभु सब कुछ जानता है। उन शूरवीरों का मरना ही सच्चा एवं सफल है जो प्रभु के समक्ष स्वीकृत होकर मरते हैं।। ३ ।। हे नानक, किसके लिए रोया जाए; यह संसार तो एक खेल है। वह प्रभु अपने किए हुए को देखता है और अपनी कला के माध्यम से ही चिन्तन में लीन बना रहता है। अपनी शक्ति का विचार करते हुए वह संसार को धारण किए रहता है और वास्तव में जिसने यह रचना की है वही इसके बारे में जानता है। वह स्वयं ही देखता है स्वयं ही बूझता है और स्वयं ही परम विधान हुकम ही पहचान करता है। जिसने यह सब कुछ किया है वही इसके बारे में जानता है और उसी का स्वरूप अनन्त है। हे नानक, यहाँ किसको रोया जाए क्योंकि यह दुखिया संसार तो एक खेल है।। ४ ।। २ ।। वडहंसु महला १ दक्खनी।। सत्य के सृजक को सच्चा ही जाना जाता है और वह सच्चा प्रभु ही सबका पालन पोषण करने वाला है। उसने स्वयं अपने आप को पैदा किया है और वही सच्चा अदृष्ट एवं अपरंपर है। प्रभु ने दोनों सिरों को अर्थात धरती और आकाश को जोड़ कर बनाया और फिर इन्हें अलग अलग कर दिया। गुरु के बिना घोर अंधकार बना रहता है और प्रभु की कुछ भी सूझ नहीं पड़ती। सूर्य और चन्द्रमा उसने पैदा किए हैं; वही दिन रात उनकी गति को देखता है।। १ ।। हे प्रभु, तू ही सच्चा मालिक है और तू ही हमें सच्चा प्रेम प्रदान कर।। रहाउ ।। हे प्रभु, तूने ही प्रकृति को बनाया है और तू ही दुख सुख देने वाला है। तूने ही स्त्री और पुरुष का सृजन किया है और तूने ही माया मोह और वासना का विष पैदा किया है। उत्पत्ति के चारों स्रोत और अनेक प्रकार की वाणियां भी तेरी ही हैं और तू ही जीवों को जीवन का आधार देता है। परमात्मा ने प्रकृति को अपने बैठने का सिंहासन बनाया है जहाँ वह सच्चा न्याय करता है।। २ ।। आवागमन भी तूने ही बनाया है और तू ही जीवों को स्थिरता प्रदान करने वाला है। यह जीव जीवन-मरण आने जाने तथा विकास में बंधा है ।मलीन मति वाले जीव ने प्रभु नाम को भुला दिया है, इससे यह जीव डूब रहा है और इसका कोई चारा नहीं है। इसने गुणों को छोड़कर विषय विकारों को लाद लिया है और इस प्रकार यह अवगुणों का व्यापारी बन गया है।। ३ ।। शरीर के प्यारे जीवात्मा को उस सच्चे कर्ता प्रभु के विधान में बुलावा आ गया है जिससे स्त्रियों के पति बिछुड़ गए हैं; परन्तु उन बिछुड़े हुओं को परमात्मा ही मिला सकता है। यमदूत तो हुकम के बंधे हुए हैं और वे किसी के रूप अथवा कुरूपता को नहीं पहचानते। वे बालक और वृद्ध व्यक्ति के अन्तर को भी नहीं जानते और सबका इस संसार से प्यार तोड़ देते हैं।। ४ ।। सच्चे प्रभु के हुकम के अन्तर्गत अब शरीर के नौ दरवाजे बन्द हो गए और हंस रूपी जीवात्मा आकाश की ओर उड़ चला है। स्त्री पति से अलग हो गई और झूठ में ही ठगी गई वह विधवा हो गई है तथा मृत व्यक्ति अब आँगन में पड़ा हुआ है। हे माँ, इसके मरने के साथ ही इसकी मति भी नष्ट हो गयी; अब स्त्री प्रभु के दरबार में पुकार करती रहती है। पति परमेश्वर की स्त्रियो, यदि रोना ही है तो सच्चे हरि के गुणों को याद करके प्रेमपूर्ण होकर रोओ।। ५ ।। फिर प्राणी को जल से मल मल कर नहलाया जाता है और उसे बहुत सारे रेशम के कपड़ों में लपेटा जाता है। तब बाजे बजाए जाते हैं और सच्ची वाणी का उच्चारण किया जाता है; जीव के सम्बन्धी मन मार कर अफसोस में मुर्दों के समान ही हो जाते हैं। स्त्री कहती है कि मेरे पति के बिछुड़ जाने के कारण मेरा जीवन भी धिक्कार योग्य हो गया है और मैं अब जीवित रहते हुए भी मरी हुई हूँ। सच्चा मरना तो होता है यदि सच्चे पति प्रभु के प्रेम में व्यक्ति जीवित रहते हुए विकारों के प्रति मर जाए।। ६ ।। हे रोने के लिए आए हुए लोगों, तुम भी इस संसार में झूठे ही ठगे जा रहे हो। मैं

संसारे ॥ हउ मुठड़ी धंधै धावणीआ पिरि छोडिअड़ी विधणकारे ॥ घरि घरि कंतु महेलीआ रूड़ै हेति पिआरे ॥ मै पिरु सचु सालाहणा हउ रहसिअड़ी नामि भतारे ॥ ७ ॥ गुरि मिलिऐ वेसु पलटिआ सा धन सचु सीगारो ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सिमरहु सिरजणहारो ॥ बईअरि नामि सोहागणी सचु सवारणहारो ॥ गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रहम बीचारो ॥ ८ ॥ ३ ॥ वडहंसु महला १ ॥ जिनि जगु सिरजि समाइआ सो साहिबु कुदरति जाणोवा ॥ सचड़ा दूरि न भालीऐ घटि घटि सबदु पछाणोवा ॥ सचु सबदु पछाणहु दूरि न जाणहु जिनि एह रचना राची ॥ नामु धिआए ता सुखु पाए बिनु नावै पिड़ काची ॥ जिनि थापी बिधि जाणै सोई किआ को कहै वखाणो ॥ जिनि जगु थापि वताइआ जालो सो साहिबु परवाणो ॥ १ ॥ बाबा आइआ है उठि चलणा अध पंधै है संसारोवा ॥ सिरि सिरि सचड़ै लिखिआ दुखु सुखु पुरबि वीचारोवा ॥ दुखु सुखु दीआ जेहा कीआ सो निबहै जीअ नाले ॥ जेहे करम कराए करता दूजी कार न भाले ॥ आपि निरालमु धंधै बाधी करि हुकमु छडावणहारो ॥ अजु कलि करदिआ कालु बिआपै दूजै भाइ विकारो ॥ २ ॥ जम मारग पंथु न सुझई उझड़ु अंध गुबारोवा ॥ ना जलु लेफ तुलाईआ ना भोजन परकारोवा ॥ भोजन भाउ न ठंढा पाणी ना कापड़ु सीगारो ॥ गलि संगलु सिरि मारे ऊभौ ना दीसै घर बारो ॥ इब के राहे जंमनि नाही पछुताणे सिरि भारो ॥ बिनु साचे को बेली नाही साचा एहु बीचारो ॥ ३ ॥ बाबा रोवहि रवहि सु जाणीअहि मिलि रोवै गुण सारेवा ॥ रोवै माइआ मुठड़ी धंधड़ा रोवणहारेवा ॥ धंधा रोवै मैलु न धोवै सुपनंतरु संसारो ॥ जिउ बाजीगरु भरमै भूलै झूठि मुठी अहंकारो ॥ आपे मारगि पावणहारा आपे करम कमाए ॥ नामि रते गुरि पूरै राखे नानक सहजि सुभाए ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहंसु महला १ ॥ बाबा आइआ है उठि चलणा इहु जगु झूठु पसारोवा ॥ सचा घरु सचड़ै सेवीऐ सचु खरा सचिआरोवा ॥ कूड़ि लबि जां थाइ न पासी अगै लहै न ठाओ ॥ अंतरि आउ न बैसहु कहीऐ जिउ सुंञै घरि काओ ॥ जंमणु मरणु वडा वेछोड़ा बिनसै जगु सबाए ॥ लबि धंधै माइआ जगतु

ठगी हुई अनेकों धंधों में लगी हुई भटक रही हूँ। दुहागिन स्त्रियों के कर्म करने के कारण मुझे पति ने वास्तव में छोड़ा हुआ है। वह प्रभु रूपी पति घर घर में है और उसकी स्त्रियाँ भी सभी जीवात्माओं के रूप में स्थित हैं जो अपने सुन्दर पति के साथ प्यार करती हैं। मैंने भी जब सच्चे पति प्रभु का गुणानुवाद किया तो सच्चे पति के नाम के कारण मुझे भी आनन्द प्राप्त हुआ है।। ७ ।। गुरु के साथ मिलाप होने से मेरा वेष रूपी स्वभाव पलट गया है अर्थात अच्छा हो गया है। अब जीव स्त्री ने सत्य का श्रंगार कर लिया है। हे मेरी सतसंगी सहेलियो आओ मिल बैठो और उस सच्चे सृजनहार प्रभु का सुमिरन करो। नवेली बहू वास्तव में प्रभु नाम के माध्यम से ही सुहागिन होती है और सत्य ही उसके जीवन को संवारने वाला होता है। अब वियोग का गीत न गाओ और हे नानक ब्रह्म-चिन्तन का प्रेम पूर्ण गीत गाओ।। ८ ।। ३ ।। वडहंसु महला १।। जिसने संसार को पैदा करके उसे फिर अपने में लीन कर लिया है उस मालिक की पहचान उसकी प्रकृति के माध्यम से करो। उस सच्चे प्रभु को दूर जाकर न खोजा जाए अपितु शब्द रूप में घट-घट में बसे हुए उस प्रभु की पहचान करो जिसने यह सारी रचना बनाई है। उसे सत्य शब्द के माध्यम से पहचानो तथा उसे दूर मत समझो। प्रभु के नाम का सुमिरन करने से सुख प्राप्त होता है और प्रभु के नाम से विहीन होकर मानव जीवन की बाजी कच्ची ही बनी रहती है। जिसने इस सृष्टि की स्थापना की है वही इसकी युक्ति को भी जानता है तथा अन्य कोई भी भला उसका क्या बखान कर सकता है। जिसने संसार को बनाकर उस पर मोह रूपी जाल बिछाया है उसी प्रभु को मालिक के तौर पर मानो।। १ ।। हे बाबा, जो आया है उसने उठकर जाना ही जाना है क्योंकि यह संसार तो आधी मंजिल है पूरी मंजिल नहीं अर्थात यहां से आगे जाना ही जाना है। जीव के माथे पर पूर्व कर्मों के हिसाब से उस सच्चे प्रभु ने दुख सुख लिखा हुआ है। जिसने जैसा किया है उसके अनुरूप ही उसे दुख-सुख दिया गया है और केवल वह परमात्मा ही जीव के साथ हमेशा बना रहने वाला होता है। प्रभु इस जीव से जैसे कर्म कराता है वह वैसे ही करता है तथा अन्य कोई भी कार्य नहीं कर पाता। वह स्वयं तो संसार से अलिप्त है परन्तु इस संसार को उसने झूठे धंधों में बांध रखा है। उसका हुकम ही जीव को छुटकारा दिलाने योग्य होता है। प्रभु-नाम सुमिरन के लिए जीव आज-कल करता हुआ द्वैतभाव के विकारों में लगा रहता है और इस प्रकार आज कल परसों करते हुए उसका काल आ पहुँचता है।। २ ।। यम के मार्ग पर चलते हुए उसे रास्ता नहीं सूझता क्योंकि वहां उजाड़ और घोर अंधकार बना रहता है। वहां न तो जल होता है न सोने के लिए गद्दा होता है और न खाने के जिए विभिन्न प्रकार का भोजन होता है। वहां भोजन, ठंडा पानी, कपड़े और श्रँगार का सामान आदि कुछ भी नहीं होता। वहां तो गले में जंजीर पड़ी होती है और सिर पर खड़ा यम मारे चला जाता है। वहां कोई भी घर बार अर्थात छिपने का स्थान नहीं मिलता। उस समय का बोया हुआ फलता नहीं अर्थात उस समय किया हुआ कोई भी यत्न काम नहीं आता। अब व्यक्ति सिर पर पापों का बोझ उठाए हुए पछताता रहता है। सच्चा विचार तो यही है कि उस सच्चे प्रभु के बिना कोई भी सच्चा मित्र नहीं है।। ३ ।। हे भाई, ठीक तरह से रोते बोलते वही लोग जाने जाते हैं जो मिल बैठ कर प्रभु के गुणों का सुमिरन करके उसके प्रेम में रोते हैं। जो सृष्टि माया के मोह में फँसी हुई है वह तो संसार के झूठे प्रपंचों के लिए रोती है। प्रपंच पूर्ण तरीके से रोने वाला मन की मैल को नहीं धोता और यह नहीं जानता कि यह संसार एक स्वप्न की तरह है। जिस प्रकार खेल दिखाने वाला बाजीगर अपने खेल में ही लीन होकर भूला रहता है इसी प्रकार यह संसार झूठ और अहंकार में फंसा रहता है। वह स्वयं ही मार्ग दिखाने वाला है और वह स्वयं ही सब कर्म करने वाला है। हे नानक, जो प्रभु के नाम में लगे हुए हैं पूर्ण गुरु सहज स्वाभाविक रूप में ही उनको बचा लेता है।। ४ ।। ४ ।। वडहंसु महला १ ।। हे भाई, जब तू यहां आया है तो तुझे एक दिन उठ के यहां से चलना ही है क्योंकि यह संसार तो झूठ का ही फैलाव है। इस झूठे संसार की अपेक्षा सच्चा ठिकाना सच्चे प्रभु के सुमिरन से ही प्राप्त होता है। निर्मल सत्य सत्यशील होने से ही प्राप्त होता है। झूठ और लोभ के साथ व्यक्ति स्वीकृत नहीं हो सकेगा और उसे परलोक में भी ठिकाना नहीं मिलेगा। उसकी आवभगत नहीं होगी और जिस प्रकार उजड़े हुए सुनसान घर में कौआ आता है और चला जाता है उसी प्रकार वह भी प्रभु के दरबार में खाली बने रहेंगे। जन्म लेना और मरना यह बहुत बड़ा वियोग है और इसी में ही सारे संसार के लोग विनष्ट होते रहते है। माया के प्रपंचों और लोभ में संसार

भुलाइआ कालु खड़ा रूआए ॥ १ ॥ बाबा आवहु भाईहो गलि मिलह मिलि मिलि देह आसीसा हे ॥ बाबा सचड़ा मेलु न चुकई प्रीतम कीआ देह असीसा हे ॥ आसीसा देवहो भगति करेवहो मिलिआ का किआ मेलो ॥ इकि भूले नावहु थेहहु थावहु गुर सबदी सचु खेलो ॥ जम मारगि नही जाणा सबदि समाणा जुगि जुगि साचै वेसे ॥ साजन सैण मिलहु संजोगी गुर मिलि खोले फासे ॥ २ ॥ बाबा नांगड़ा आइआ जग महि दुखु सुखु लेखु लिखाइआ ॥ लिखिअड़ा साहा ना टलै जेहड़ा पुरबि कमाइआ ॥ बहि साचै लिखिआ अंम्रितु बिखिआ जितु लाइआ तितु लागा ॥ कामणिआरी कामण पाए बहु रंगी गलि तागा ॥ होछी मति भइआ मनु होछा गुड़ु सा मखी खाइआ ॥ ना मरजादु आइआ कलि भीतरि नांगो बंधि चलाइआ ॥ ३ ॥ बाबा रोवहु जे किसै रोवणा जानीअड़ा बंधि पठाइआ है ॥ लिखिअड़ा लेखु न मेटीऐ दरि हाकारड़ा आइआ है ॥ हाकारा आइआ जा तिसु भाइआ रुंने रोवणहारे ॥ पुत भाई भातीजे रोवहि प्रीतम अति पिआरे ॥ भै रोवै गुण सारि समाले को मरै न मुइआ नाले ॥ नानक जुगि जुगि जाण सिजाणा रोवहि सचु समाले ॥ ४ ॥ ५ ॥

वडहंसु महला ३ महला तीजा ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभु सचड़ा हरि सालाहीऐ कारजु सभु किछु करणै जोगु ॥ सा धन रंड न कबहू बैसई ना कदे होवै सोगु ॥ ना कदे होवै सोगु अनदिनु रस भोग सा धन महलि समाणी ॥ जिनि प्रिउ जाता करम बिधाता बोले अंम्रित बाणी ॥ गुणवंतीआ गुण सारहि अपणे कंत समालहि ना कदे लगै विजोगो ॥ सचड़ा पिरु सालाहीऐ सभु किछु करणै जोगो ॥ १ ॥ सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥ सा धन प्रिअ कै रंगि रती विचहु आपु गवाए ॥ विचहु आपु गवाए फिरि कालु न खाए गुरमुखि एको जाता ॥ कामणि इछ पुंनी अंतरि भिंनी मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ सबद रंगि राती जोबनि माती पिर कै अंकि समाए ॥ सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥ २ ॥ जिनी आपणा कंतु पछाणिआ

भूला हुआ है और काल सामने खड़ा हुआ इस संसार को रुलाता रहता है।। १ ।। हे भाईयो, आओ गले मिलो और मिलकर एक दूसरे को शुभकामनाएं दो। यह शुभकामनाएं दो कि हे भाई, उस प्रीतम प्रभु का सच्चा मेल कभी भी हमसे दूर न रहे। आशीर्वाद दो और उस प्रभु की भक्ति करते रहो; परन्तु जो पहले ही प्रभु से मिले हुए हैं उनको भला शुभकामनाएं देने की भी क्या आवश्यकता है (वास्तव में प्रभु नाम और सद्संगत से भूले हुए लोगों को शुभकामनाएं दो)। अनेकों ही लोग प्रभु के नाम और ठिकाने से दूर भटके हुए हैं; सद्गुरु के माध्यम से उन्हें सत्य का खेल खेलना सिखाओ। उनको बताओ कि वे यम के मार्ग पर न जाएं, शब्द में लीन बने रहें क्योंकि यह शब्द ही युगों युगान्तरों में स्थित बना हुआ है। उन सज्जनों एवं साथियों से बड़े भाग्य के कारण ही मिलाप होता है जिन्होंने गुरु के साथ मिलकर माया के बन्धनों को खोल लिया है।। २ ।। हे भाई, तू इस संसार में सुख, दुख का लेख लिखा कर नंगा ही आया है। पूर्व में किए हुए कर्मों के फलस्वरूप प्रभु के पास जाने की जो तिथि लिखी गयी है वह कभी टल नहीं सकती। सच्चे प्रभु ने बैठकर अमृत और विष अर्थात सुख और दुख का लेख लिखा है और उसने जीव को जहाँ लगाया है वह वहीं लगा हुआ है। माया रूपी जादूगरनी ने बहुत जादू बिखेरा हुआ है और जीवों के गले में अनेक प्रकार के रसों के धागों को बांध दिया है। जीव की मति और मन दोनों ही मूर्ख बने हुए हैं और यह मक्खी समेत ही गुड़ रूपी रस को खाता चला जाता है। मर्यादा विहीन होकर नंगा ही संसार में आया था और नंगा ही यहां से बांध कर भेज दिया जाता है।। ३ ।। हे भाई, जिसने रोना हो रो ले क्योंकि प्यारे जीव को बांधकर भेज दिया गया है। संदेशा देने वाला द्वार पर आ पहुंचा है और प्रभु का लिखा हुआ लेख मिटाया नहीं जा सकता। जब उस प्रभु को अच्छा लगा संदेश देने वाला भेज दिया गया जिसे देखकर सभी रोने लग गए। पुत्र, भाई, भतीजे तथा अन्य अत्यन्त प्यारे लोग रोने लगे हैं। मरे हुए व्यक्ति के साथ कोई भी मरता नहीं और ये सभी रो धोकर चुप हो जाते हैं। परन्तु जो उस प्रभु के भय में रोता है और उसके गुणों को याद करता है वह बहुत ही अच्छा है। हे नानक, जो प्रभु के सच्चे नाम का सुमिरन करते हैं वे युगों युगों तक समझदार माने जाते हैं।। ४ ।। ५ ।।

वडहंसु महला ३ तीसरा   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

उस सच्चे प्रभु का गुणानुवाद करना चाहिए क्योंकि वही सब कार्यों को करने योग्य है। अपने प्रियतम का गुणानुवाद करने वाली जीव-स्त्री कभी विधवा नहीं होती और न ही उसे कोई शोक होता है। उसे कभी शोक नहीं होता, वह प्रतिदिन प्रभु के नाम-रस का आनन्द लेती है और ऐसी जीव रूपी स्त्री प्रभु के महल में निवास करती है। जिसने प्यारे प्रभु को जान लिया है कि वह कर्मों के अनुसार ही फल देने वाला है तो वह सदैव अमृत रूप वाली मीठी वाणी ही बोलती है। गुणवान स्त्रियां प्रभु-पति के गुणों का सुमिरन करती हैं और उन्हें कभी भी वियोग की अवस्था नहीं सहन करनी पड़ती; इसलिए सदैव सच्चे प्रियतम प्रभु का ही गुणानुवाद करना चाहिए जो सब कुछ करने योग्य है।। १ ।। सच्चे मालिक को शब्द के माध्यम से जब पहचाना जाए तो वह स्वयं ही जीव को अपने में मिला लेता है। ऐसी जीव-स्त्री प्रियतम के प्रेम में रंगी रहती है और अपने अन्तर्मन में से अहंकार को त्याग देती है। जब अहंकार को अन्दर से गँवा दिया जाता है तो फिर व्यक्ति को काल नहीं खाता और वह गुरमुख बनकर केवल एक परमात्मा को ही जानता बूझता है। जब जीव-स्त्री को जीवन देने वाला दाता प्रभु मिल जाता है तो उसका हृदय प्रेम से भर जाता है और उसकी इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं। जो प्रेम के फलस्वरूप मिले यौवन में मस्त बनी रहती है और शब्द अर्थात प्रभु नाम के रंग में रंगी रहती है वह अपने प्रियतम के अंक (स्वरूप) में समा जाती हैं। सच्चे प्रभु को शब्द के माध्यम से ही पहचाना जाता है और वह स्वयं ही जीव को अपने में मिला लेता है।। २ ।। जिन्होंने अपने पति प्रभु को पहचान लिया है

हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ आपु छोडि सेवा करी पिरु सचड़ा मिलै सहजि सुभाए ॥ पिरु सचा मिलै आए साचु कमाए साचि सबदि धन राती ॥ कदे न रांड सदा सोहागणि अंतरि सहज समाधी ॥ पिरु रहिआ भरपूरे वेखु हदूरे रंगु माणे सहजि सुभाए ॥ जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ ३ ॥ पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ सतिगुरु सदा दइआलु है अवगुण सबदि जलाए ॥ अउगुण सबदि जलाए दूजा भाउ गवाए सचे ही सचि राती ॥ सचै सबदि सदा सुखु पाइआ हउमै गई भराती ॥ पिरु निरमाइलु सदा सुखदाता नानक सबदि मिलाए ॥ पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारि ॥ अवगणवंती पिरु न जाणई मुठी रोवै कंत विसारि ॥ रोवै कंत संमालि सदा गुण सारि ना पिरु मरै न जाए ॥ गुरमुखि जाता सबदि पछाता साचै प्रेमि समाए ॥ जिनि अपणा पिरु नही जाता करम बिधाता कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारे ॥ १ ॥ सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारा ॥ माइआ मोहु खुआइअनु मरि जंमै वारो वारा ॥ मरि जंमै वारो वारा वधहि बिकारा गिआन विहूणी मूठी ॥ बिनु सबदै पिरु न पाइओ जनमु गवाइओ रोवै अवगुणिआरी झूठी ॥ पिरु जगजीवनु किस नो रोईऐ रोवै कंतु विसारे ॥ सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारे ॥ २ ॥ सो पिरु सचा सद ही साचा है ना ओहु मरै न जाए ॥ भूली फिरै धन इआणीआ रंड बैठी दूजै भाए ॥ रंड बैठी दूजै भाए माइआ मोहि दुखु पाए आव घटै तनु छीजै ॥ जो किछु आइआ सभु किछु जासी दुखु लागा भाइ दूजै ॥ जमकालु न सूझै माइआ जगु लूझै लबि लोभि चितु लाए ॥ सो पिरु साचा सद ही साचा ना ओहु मरै न जाए ॥ ३ ॥ इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी ना जाणै पिरु नाले ॥ गुर परसादी साचा पिरु मिलै अंतरि सदा समाले ॥ पिरु अंतरि समाले सदा है नाले मनमुखि जाता दूरे ॥ इहु तनु रुलै रुलाइआ कामि न आइआ जिनि खसमु न

मैं उन शान्त पुरुषों से प्रभु के मिलाप के बारे में पूछता हूँ। जब अभिमान भाव को छोड़कर सेवा की जाती है तो सच्चा प्रभु स्वाभाविक रूप से ही आ मिलता है। जब सच्चा प्रभु मिल जाता है तो सत्य का आचरण बन जाता है और जीव-स्त्री सच्चे शब्द में लीन हो जाती है। अब वह कभी भी विधवा न होकर, सदैव सुहागिन बनी रहती है और उसके अन्तर्मन में परमात्मा के लिए एक स्थिर लौ लग जाती है। वह प्रभु जो सबमें व्याप्त है उसे अपने सामने प्रत्यक्ष देखकर हे जीव-स्त्री, तू स्वाभाविक रूप से ही आनन्दित बनी रहेगी। जिन्होंने अपने प्रियतम को पहचान लिया है मैं उन शान्त पुरुषों से उसके मिलाप का मार्ग पूछता हूँ।। ३ ।। प्रियतम से बिछुड़ी हुई भी जा मिलती हैं यदि वे सच्चे गुरु के चरणों में आ लगें। सच्चा गुरु सदैव दयालु है और शब्द के माध्यम से वह अवगुणों को जलाकर नष्ट कर देता है। शब्द के माध्यम से अवगुण को नष्ट करके एवं द्वैतभाव को गंवा कर जीव-स्त्री पूर्ण सत्य में ही लीन बनी रहती है। सच्चे शब्द के माध्यम से ही वह सदैव सुख प्राप्त करती है और उसके अहंकार और भ्रम दूर हो जाते हैं। वह प्रियतम प्रभु निर्मल, पवित्र और सदा सुख देने वाला है तथा हे नानक, वह शब्द के माध्यम से मिलता है। प्रियतम से बिछुड़ी हुई जीवात्माएं भी उससे मिल जाती हैं यदि वे सच्चे गुरु के चरणों से आ लगें।। ४ ।। १ ।। वडहंसु महला ३ ।। हे प्रियतम प्रभु की स्त्रियो, उस प्रियतम को शब्द के चिन्तन के माध्यम से याद करो। अवगुणो से भरी हुई अपने प्रियतम को नहीं जान पाती और प्रभु को भुला कर संसारिकता के द्वारा ठगी हुई वह रोती रहती हैं। परन्तु गुरमुख जीव-स्त्री प्रभु पति को याद करके रोती है और सदैव उसके गुणों को मन में बसाती रहती है। उसका प्रियतम न तो मरता है न आवागमन में पड़ता है। गुरमुख बनकर वह उस प्रभु को जान जाती है और शब्द के माध्यम से उसको पहचान कर उस सच्चे के प्रेम में लीन बनी रहती है। कर्मों के विधाता प्रियतम प्रभु को जिसने नहीं जाना, झूठ ने उस स्त्री को ठग लिया है। हे मेरे प्रभु की जीव-स्त्रियो, इस बात को कान से सुनो और शब्द के माध्यम से चिन्तन करते हुए उस परमात्मा का सुमिरन करो।।१।। उस प्रभु ने ही स्वयं आवागमन वाले संसार को उत्पन्न किया। उसी ने ही इसको माया मोह के भ्रम में भुलाया हुआ है जिससे यह बार-बार जन्मता और मरता रहता है। यह बार-बार जन्मता है, मरता है और इसके विकार बढ़ते ही जाते हैं और यह सृष्टि ज्ञान से विहीन होने के कारण ठगी गई है। शब्द के बिना प्रियतम को नहीं पाया जाता और अवगुणों से भरी हुई झूठी जीव-स्त्री ने रोते हुए ही जीवन को गंवा दिया। प्रियतम प्रभु तो संसार को जीवन देने वाला है इसलिए हम किसके लिए रोएं। जिन्होंने प्रियतम को विस्मृत कर दिया है वास्तव में उन्हें ही जीवन भर का रोना पड़ा रहता है। आवागमन वाला यह संसार उस प्रभु ने स्वयं ही उत्पन्न किया है।। २ ।। वह प्रियतम सदैव ही सत्य रूप है; वह न तो मरता है और न उसे कहीं जाना पड़ता है। मूर्ख जीव-स्त्री द्वैतभाव में भटकती रहती है और विधवा बनी रहती है अर्थात प्रभु से बिछुड़ी रहती है। द्वैतभाव में विधवा बनी बैठी जीव-स्त्री माया-मोह में लीन होकर दुख पाती है क्योंकि दिन प्रतिदिन इसकी आयु घटती जाती है और इसका तन निर्बल होता जाता है। यहाँ जो कुछ भी आया हुआ है उस सबको जाना है और द्वैतभाव में उलझे हुए हर एक को दुख लगा हुआ है। यम और काल का जीव को कुछ पता नहीं चलता और यह सारा संसार धन-सम्पदा के लिए झगड़ता हुआ लोभ और लालच में मन जोड़े रहता है। वह प्रियतम प्रभु ही सदैव बना रहने वाला सत्य है और वह न तो मरता है और न कहीं जाता है।।३ ।। प्रियतम से बिछुड़ कर अनेकों रोती रहती हैं और अज्ञान के अंधकार में पड़ी रहकर यह नहीं जानती कि वह प्रियतम तो साथ ही बसता है। गुरु की कृपा से सच्चा प्रियतम मिल जाता है यदि जीव-स्त्री सदैव अन्तर्मन में उसका सुमिरन करे। सदैव साथ बसे रहने वाले प्रियतम को अन्तर्मन में याद रखा जाना चाहिए परन्तु मनमुख व्यक्ति उसे अपने से दूर ही मानता

...का शरीर मिट्टी बना हुआ व्यर्थ हो जाता है और किसी काम नहीं आता जिन्होंने परमात्मा को अपने पास न

जाता हदूरे ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई पिरु अंतरि सदा समाले ॥ इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी न जाणै पिरु है नाले ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु मः ३ ॥ रोवहि पिरहि विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ जिनी चलणु सही जाणिआ सतिगुरु सेवहि नामु समाले ॥ सदा नामु समाले सतिगुरु है नाले सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ ॥ सबदे कालु मारि सचु उरि धारि फिरि आवण जाणु न होइआ ॥ सचा साहिबु सची नाई वेखै नदरि निहाले ॥ रोवहि पिरहु विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ १ ॥ प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किव मिलां प्रीतम पिआरे ॥ सतिगुरि मेली तां सहजि मिली पिरु राखिआ उर धारे ॥ सदा उर धारे नेहु नालि पिआरे सतिगुर ते पिरु दिसै ॥ माइआ मोह का कचा चोला तितु पैधै पगु खिसै ॥ पिर रंगि राता सो सचा चोला तितु पैधै तिखा निवारे ॥ प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किउ मिला प्रीतम पिआरे ॥ २ ॥ मै प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ मै सदा रावे पिरु आपणा सचड़ै सबदि वीचारे ॥ सचै सबदि वीचारे रंगि राती नारे मिलि सतिगुर प्रीतमु पाइआ ॥ अंतरि रंगि राती सहजे माती गइआ दुसमनु दूखु सबाइआ ॥ अपने गुर कंउ तनु मनु दीजै तां मनु भीजै त्रिसना दूख निवारे ॥ मै पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ ३ ॥ सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ आपि मिलाए आपि मिलै आपे देइ पिआरो ॥ आपे देइ पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु सवारे ॥ धनु जग महि आइआ आपु गवाइआ दरि साचै सचिआरो ॥ गिआनि रतनि घटि चानणु होआ नानक नाम पिआरो ॥ सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आए ॥ गुरि राखे से उबरे होरु मरि जंमै आवै जाए ॥ होरि मरि जंमहि आवहि जावहि अंति गए पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई ॥ ऐथै कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति खोई ॥ जम पुरि घोर अंधारु महा गुबारु ना तिथै भैण न भाई ॥ इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आई ॥ १ ॥ काइआ

मानकर दूर माना है। हे नानक, वह जीव स्त्री ही अपने पति प्रभु को मिल पाती है जिसे वह अपने से मिला लेता है और जो सदैव अन्तर्मन में उस प्रभु को याद रखती है। प्रियतम से बिछुड़ी हुई अनेकों रोती हैं और अज्ञान में अन्धी बनी हुई यह नहीं जानतीं कि प्रियतम तो साथ ही बसता है।। ४ ।। २ ।। वडहंसु महला ३ ।। मेरा सच्चा प्रियतम तो सदैव मेरे साथ है परन्तु अनेकों उस प्रियतम से बिछुड़ कर रोती रहती हैं। जिन्होंने यहां से चले जाने को सही मान लिया है वे प्रभु-नाम का सुमिरन करते हुए सच्चे गुरु की सेवा करते हैं। सच्चे गुरु को साथ मानकर वे सदैव प्रभु नाम का सुमिरन करती रहती हैं और सच्चे गुरु की सेवा से उन्हें सुख प्राप्त होता है। उन्होंने शब्द द्वारा मौत का भय समाप्त करके सत्य को हृदय में धारण कर लिया है जिस कारण उनका जन्म मरण नहीं होता। सच्चे नाम के कारण वह परमात्मा सत्य का रूप ही है और वह अपनी कृपादृष्टि से सुखी एवं आनन्दित कर देता है। मेरे साथ तो मेरा सच्चा प्रियतम बना हुआ है परन्तु अनेकों उस प्रियतम से बिछुड़ कर रोती रहती हैं।। १ ।। मेरा मालिक प्रभु सबसे ऊँचा है, मैं कैसे उस प्यारे प्रियतम को मिलूं। सच्चे गुरु ने जब मिलाया तो मैं बिना किसी प्रयत्न के ही उस प्रभु से जा मिली और मैंने उस प्रियतम को हृदय में बसा लिया। उस प्रियतम के साथ मेरा प्रेम बना हुआ है जिसके कारण मैंने सदैव उसे हृदय में धारण कर रखा है परन्तु सच्चे गुरु के माध्यम से ही वह प्रियतम प्रभु दिखाई देता है। माया मोह का चोला तो बहुत ही कच्चा और अस्थिर है जिसको पहनने से परमेश्वर की ओर से व्यक्ति का पैर खिसकने लगता है अर्थात व्यक्ति परमात्मा को भूल जाता है। प्रियतम के रंग में रंगे हुए व्यक्ति का चोला ही सच्चा चोला है जिसके पहनने से सब प्रकार की तृष्णा निवृत्त हो जाती है। मेरा मालिक प्रभु तो सबसे ऊँचा है परन्तु मैं उस प्रियतम को कैसे मिलूं।। २ ।। मैंने तो प्रभु को सत्य रूप में पहचान लिया है तथा अन्य सब अवगुणों से भरकर उसे भूले हुए हैं। मैंने सदैव सच्चे शब्द के चिंतन के माध्यम से उस प्रभु के साथ रमण किया है। सच्चे शब्द के विचार के माध्यम से ही जीव-स्त्री उसके रंग में रंगी रहती है और सच्चे गुरु से मिलकर उस प्रियतम प्रभु को पा जाती है। सहजभाव में लीन और अन्तर्मन से उसमें रमी हुई जीव-स्त्री के सभी शत्रु और दुख भाग खड़े होते हैं। जब अपने गुरु को तन और मन दे दिया जाता है तो मन प्रेम में भीग उठता है तथा तृष्णा और दुख समाप्त हो जाते हैं। मैंने तो प्रियतम को सत्य रूप में पहचान लिया है तथा अन्य सब अवगुणों से भरी हुई उसे भुलाए बैठी है।। ३ ।। उस सच्चे प्रभु ने स्वयं ही जगत उत्पन्न किया है और इस जगत में गुरु (ज्ञान) के बिना घोर अंधकार है। वह स्वयं ही मिलाता है स्वयं ही मिलता है और स्वयं ही प्रेमभाव देता है। वह स्वयं ही प्रेम देता है, सहजभाव का कार्य व्यापार देता है जिससे गुरमुख व्यक्ति का जन्म संवर जाता है। ऐसे व्यक्ति का संसार में आना सफल हो जाता है क्योंकि उसने उस सच्चे प्रभु की ओर उन्मुख होकर सत्यशील जीवन अपना लिया होता है और अन्तर्मन से अहंकार को गंवा लिया होता है। हे नानक, उस प्रभु के नाम से प्यार हो जाने से ज्ञान रूपी रत्न के कारण अन्तर्मन प्रकाशित हो जाता है। उस सच्चे प्रभु ने ही स्वयं जगत् उत्पन्न किया है परन्तु गुरु (ज्ञान) के बिना इसमें घोर अंधकार है।। ४ ।। ३ ।। वडहंसु महला ३ ।। यह शरीर जर्जर हो गया है और इसको अब बुढ़ापा आ पकड़ेगा। जिन्हें गुरु ने बचा लिया है वे तो बच गए हैं अन्य सब जन्मते-मरते, आते-जाते रहेंगे। अन्य जन्मते-मरते, आते-जाते अन्त में पछताते रहेंगे क्योंकि प्रभु नाम के बिना सुख नहीं मिलता। जो यहाँ कमाया जाता है उसी का फल प्राप्त होता है तथा मनमुख व्यक्ति अपनी इज्ज़त गंवा लेता है। यमलोक में तो घोर अंधकार है और महा धुंध का वातावरण है जहां न कोई भाई है न कोई बहन है। यह शरीर तो जर्जर हो गया है इसे शीघ्र ही बुढ़ापा आ पकड़ेगा।। १ ।।

कंचनु तां थीऐ जां सतिगुरु लए मिलाए ॥ भ्रमु माइआ विचहु कटीऐ सचड़ै नामि समाए ॥ सचै नामि समाए हरि गुण गाए मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती विचहु हंउमै जाए ॥ जिनी पुरखी हरि नामि चितु लाइआ तिन कै हंउ लागउ पाए ॥ कांइआ कंचनु तां थीऐ जा सतिगुरु लए मिलाए ॥ २ ॥ सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ बिनु सतिगुर भरमि भुलाणीआ किआ मुहु देसनि आगै जाए ॥ किआ देनि मुहु जाए अवगुणि पछुताए दुखो दुखु कमाए ॥ नामि रतीआ से रंगि चलूला पिर कै अंकि समाए ॥ तिसु जेवडु अवरु न सूझई किसु आगै कहीऐ जाए ॥ सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ ३ ॥ जिनी सचड़ा सचु सलाहिआ हंउ तिन लागउ पाए ॥ से जन सचे निरमले तिन मिलिआ मलु सभ जाए ॥ तिन मिलिआ मलु सभ जाए सचै सरि नाए सचै सहजि सुभाए ॥ नामु निरंजनु अगमु अगोचरु सतिगुरि दीआ बुझाए ॥ अनदिनु भगति करहि रंगि राते नानक सचि समाए ॥ जिनी सचड़ा सचु धिआइआ हंउ तिन कै लागउ पाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

वडहंस की वार महला ४ ललां बहलीमा की धुनि गावणी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक मः ३ ॥ सबदि रते वड हंस है सचु नामु उरि धारि ॥ सचु संग्रहहि सद सचि रहहि सचै नामि पिआरि ॥ सदा निरमल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि ॥ नानक हउ तिन कै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मै जानिआ वड हंसु है ता मै कीआ संगु ॥ जे जाणा बगु बपुड़ा त जनमि न देदी अंगु ॥ २ ॥ मः ३ ॥ हंसा वेखि तरंदिआ बगां भि आया चाउ ॥ डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥ तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ ॥ तू करण कारण समरथु है तू करहि सु थीआ ॥ तू अणमंगिआ दानु देवणा सभनाहा जीआ ॥ सभि आखहु सतिगुरु वाहु वाहु जिनि दानु हरि नामु मुखि

जब सच्चा गुरु अपने उपदेश के माध्यम से जीव को अपने साथ मिला लेता है तो यह शरीर सोने जैसा शुद्ध हो जाता है। सच्चे प्रभु के नाम में लीन होने से भ्रम और प्रपंच का जाल कट जाता है। प्रभु के गुण गाने से सच्चे नाम में लीन हुआ जाता है और प्रियतम को मिलकर सुख पाया जाता है। अब दिन रात सदैव आनन्द बना रहता है और अन्तर्मन से अहंकार छूट जाता है। जिन व्यक्तियों ने हरि नाम में अपना चित्त लगा लिया है मैं उनके चरणों में लगना चाहता हूँ। सच्चा गुरु जब जीव को अपने में मिला लेता है तो यह शरीर सोने जैसा शुद्ध हो जाता है।। २ ।। यदि सच्चा गुरु समझा दे तो उस सत्य परमात्मा का गुणानुवाद किया जाता है। सच्चे गुरु के विना तो सभी जीव-स्त्रियां भ्रमों में भूली रहती हैं और भला ये किस मुख से आगे परलोक में जाएंगी। ये क्या मुंह दिखाएंगी, अवगुणों में फंसी पछताती रहेंगी और दुख ही दुख पैदा करती रहेंगी। जो प्रभु के नाम में मस्त बनी हुई हैं उनका रंग लाल सुर्ख अर्थात चमकदार हो गया है और वे प्रियतम के अंक में लीन हो गई हैं। अन्य किसके आगे जाकर पुकार लगाएं उस प्रभु के समान अन्य कोई दिखाई नहीं पड़ता। यदि सच्चा गुरु समझा दे तो सच्चे प्रभु का गुणानुवाद किया जाता है।। ३ ।। जिन्होंने उस सत्यस्वरूप परम सत्य का गुणानुवाद किया है मैं उनके चरणों को स्पर्श करता हूँ। वे ही प्रभु के सेवक सच्चे और पवित्र हैं और उनको मिलने से ही सारी मैल छूट जाती है। उनको मिलने से सारा मल नष्ट हो जाता है, व्यक्ति सत्संग के सच्चे सरोवर में स्नान करके सच्चे और सहज स्वभाव वाला हो जाता है। सच्चे गुरु ने अगम्य, अगोचर और निर्मल प्रभु के नाम का रहस्य समझा दिया है। हे नानक, अब हर दिन उसके रंग में रंग कर भक्ति की जाती है और जीव अन्ततः सत्य में लीन हो जाता है। जिन्होंने परम सत्य की आराधना की है मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ।। ४ ।। ४ ।।

वडहंसु की वार महला ४

ललला वहलीमा* की धुन पर गायन का आदेश है ।। १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

श्लोक महला ३ ।। जो शब्द रूपी ब्रह्म में लीन हैं वे ही परमहंस हैं और उन्होंने ही परम विवेकशील बनकर प्रभु के सत्य नाम को हृदय में धारण कर रखा है। वे सदैव सत्य का ही संग्रह करते हैं, सत्य में ही सदैव लीन बने रहते हैं और प्रभु के सच्चे नाम के साथ प्यार करते हैं। कर्ता प्रभु ने उन पर ऐसी कृपादृष्टि की हुई है कि वे सदैव पवित्र बने रहते हैं और उन्हें कभी भी मैल नही लगती। हे नानक, मैं सदैव उन पर बलिहारी जाता हूँ जो प्रत्येक दिन उस प्रभु का सुमिरन करते रहते हैं।।१।। मः३।। मैंने तो यह समझा था कि यह परम शान्त और परम हंस व्यक्ति है और इसीलिए मैंने इसकी संगत की थी। यदि मैं यह जानती कि यह बेचारा तो बगुला (पाखण्डी) है तो मैं जीवन भर इसको स्पर्श न करती।। २।। मः ३ ।। हंसों (गुरमुखों) को तैरते हुए देखकर पाखंडी बगुलों को भी तैरने के लिए मन में उत्साह पैदा हुआ परन्तु बेचारे बगुले तो इस संसार-सागर में डूब कर मर गए; उनका सिर तो नीचे हो गया और पाँव उपर की ओर उठ गए।। ३ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, तू स्वयं ही सब कुछ है, तू स्वयं ही कारण है और करने वाला भी है। निराकार रूप में तू स्वयं ही सब कुछ है अन्य और कोई नहीं है। तू ही करने कराने वाला स्मर्थ है और जो तू करता है वही होता है। तू ही सब जीवों को बिना मांगे हुए दान देता है। सभी लोग सच्चे गुरु की प्रशंसा करो जिसने प्रभु के नाम का दान हमारे मुँह में

दीआ ॥ १ ॥ सलोकु मः ३ ॥ भै विचि सभु आकारु है निरभउ हरि जीउ सोइ ॥ सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै तिथै भउ कदे न होइ ॥ दुसमनु दुखु तिस नो नेड़ि न आवै पोहि न सकै कोइ ॥ गुरमुखि मनि वीचारिआ जो तिसु भावै सु होइ ॥ नानक आपे ही पति रखसी कारज सवारे सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इकि सजण चले इकि चलि गए रहदे भी फुनि जाहि ॥ जिनी सतिगुरु न सेविओ से आइ गए पछुताहि ॥ नानक सचि रते से न विछुड़हि सतिगुरु सेवि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसु मिलीऐ सतिगुर सजणै जिसु अंतरि हरि गुणकारी ॥ तिसु मिलीऐ सतिगुर प्रीतमै जिनि हंउमै विचहु मारी ॥ सो सतिगुरु पूरा धनु धंनु है जिनि हरि उपदेसु दे सभ स्रिस्टि सवारी ॥ नित जपिअहु संतहु राम नामु भउजल बिखु तारी ॥ गुरि पूरै हरि उपदेसिआ गुर विटड़िअहु हंउ सद वारी ॥ २ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा चाकरी सुखी हूं सुख सारु ॥ ऐथै मिलनि वडिआईआ दरगह मोख दुआरु ॥ सची कार कमावणी सचु पैनणु सचु नामु अधारु ॥ सची संगति सचि मिलै सचै नाइ पिआरु ॥ सचै सबदि हरखु सदा दरि सचै सचिआरु ॥ नानक सतिगुर की सेवा सो करै जिस नो नदरि करै करतारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ होर विडाणी चाकरी ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ अंम्रितु छोडि बिखु लगे बिखु खटणा बिखु रासि ॥ बिखु खाणा बिखु पैनणा बिखु के मुखि गिरासि ॥ ऐथै दुखो दुखु कमावणा मुइआ नरकि निवासु ॥ मनमुख मुहि मैलै सबदु न जाणनी काम करोधि विणासु ॥ सतिगुर का भउ छोडिआ मनहठि कंमु न आवै रासि ॥ जम पुरि बधे मारीअहि को न सुणे अरदासि ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा गुरमुखि नामि निवासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो सतिगुरु सेविहु साध जनु जिनि हरि हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ सो सतिगुरु पूजहु दिनसु राति जिनि जगंनाथु जगदीसु जपाइआ ॥ सो सतिगुरु देखहु इक निमख निमख जिनि हरि का हरि पंथु बताइआ ॥ तिसु सतिगुर की सभ पगी पवहु जिनि मोह अंधेरु चुकाइआ ॥ सो सतगुरु कहहु सभि धंनु धंनु जिनि हरि भगति भंडार लहाइआ ॥ ३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ भुख गई भेखी

प्रदान किया है।। १ ।। श्लोक महला ३ ।। यह जितनी भी सृष्टि रचना है सब भय में चालित है और एक प्रभु ही निर्भय है। सच्चे गुरु की सेवा करने से प्रभु मन में बसता है और फिर मन में कोई भी भय नहीं रहता। शत्रु और कष्ट ऐसे व्यक्ति के पास नहीं आते और उसे कभी भी स्पर्श तक नहीं कर पाते। गुरमुख व्यक्ति मन में यह विचार बनाए रखता है कि जो उस प्रभु को भाता है वही होता है। हे नानक, वह स्वयं ही हमारे सम्मान की रक्षा करेगा और स्वयं ही हमारे कामों को पूरा करेगा।। १ ।। मः ३ ।। अनेकों सज्जन मित्र यहां से चले गए और जो बच गए हैं वे भी अन्ततः यहां से जाएंगे। जिन्होंने सच्चे गुरु की सेवा नहीं की वे आते जाते हुए पछताते रहते हैं। हे नानक, जो बच गए हैं वे भी अंततः यहां से जाएंगे। जिन्होंने सच्चे गुरु की सेवा नहीं की वे आते जाते हुए पछताते रहते हैं। हे नानक, जो सत्य में लीन बने रहते हैं वे कभी भी प्रभु से बिछुड़ते नहीं और सच्चे गुरु प्रभु का सुमिरन करते हुए उसके साथ एक ही हो जाते हैं।। २ ।। पउड़ी।। ऐसे सज्जन सच्चे गुरु से मिलना चाहिए जिसके अन्तर्मन में गुण देने वाला प्रभु बसता है। ऐसे प्रियतम सच्चे गुरु से मिलना चाहिए जिसने अन्तर्मन में से अहंकार को मार दिया है। वह पूर्ण सच्चा गुरु धन्य है जिसने प्रभु का उपदेश देकर सारी सृष्टि को सुधार दिया है। हे संतजनों, सदैव राम-नाम का जाप करो क्योंकि यह विषय विकारों के संसार रूपी सागर से पार ले जाने वाला है। पूर्ण गुरु ने परमात्मा का उपदेश दिया है और उस गुरु पर से मैं सदैव बलिहारी जाता हूँ।। २।। श्लोक महला ३।। सच्चे गुरु की सेवा और चाकरी सभी सुखों का सार तत्व है। उसके माध्यम से यहां इस लोक में बड़प्पन प्राप्त होता है और प्रभु के दरबार में मोक्ष का द्वार मिल जाता है। अब व्यक्ति सच्चा काम करता है, सत्य को ही धारण करता है और सच्चे प्रभु-नाम को ही जीवन का आसरा बनाता है। सच्ची संगत में सत्य ही प्राप्त होता है और परमात्मा के सच्चे नाम के साथ प्रेम लग जाता है। सच्चे शब्द के माध्यम से सदैव आनन्द बना रहता है और सत्य प्रभु के द्वार पर व्यक्ति सच्चा बनकर उपस्थित होता है। हे नानक, सच्चे गुरु की सेवा वही करता है जिस पर कर्ता प्रभु की कृपादृष्टि होती है।। १ ।। मः ३ ।। गुरु को छोड़कर अन्य किसी की चाकरी धिक्कार है; ऐसा जीवन भी धिक्कार है और ऐसा निवास भी धिक्कार योग्य है। ऐसे व्यक्ति अमृत को छोड़कर ज़हर में लीन बने रहते हैं; वे विष ही कमाते हैं और विष ही उनकी रास पूंजी होती है। उनका खाना, पहिनना विष ही है और उनके मुख में जाने वाला ग्रास भी विष ही होता है। वे यहां पर भी दुख ही दुख पैदा करते हैं और मरने पर उनका निवास नर्क में होता है। मनमुख व्यक्ति (मलीन) मैला मुँह होने के कारण शब्द-गुरु को नहीं जानते और काम, क्रोध के अन्तर्गत विनष्ट हो जाते हैं। उन्होंने सच्चे गुरु का भय (प्रेम) छोड़ दिया होता है और उनके मन के हठ के कारण उनका कोई भी काम ठीक नहीं होता। वे यमलोक में बाँधे हुए मारे जाते हैं और कोई भी उनकी अरदास अथवा पुकार नहीं सुनता। हे नानक, पूर्व में अर्जित की हुई कमाई के अनुसार ही भुगतान करना पड़ता है परन्तु यदि व्यक्ति गुरमुख बन जाए तो उसका निवास प्रभु के नाम में हो जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। हे साधुजनों, तुम सच्चे गुरु की सेवा करो जिसने प्रभु के नाम को पक्की तरह समझा दिया है। ऐसे सच्चे गुरु की तो दिन रात पूजा करो जो जगत के नाथ और जगत के सम्राट परमात्मा का नाम जपता है। ऐसे सच्चे गुरु को तो प्रत्येक क्षण देखते रहना चाहिए जो प्रभु के मार्ग को बताता है। उस सच्चे गुरु के चरणों में सभी आ जाओ जिसने मोह रूपी अंधकार को चुका दिया है। उस सच्चे गुरु को सभी धन्य कहो जिसने प्रभु भक्ति के भंडार को दिखा दिया है।।३।। श्लोक मः ३ ।। सच्चे गुरु के मिलने से तो भूख अर्थात तृष्णा चली जाती है परन्तु किसी पाखण्डी को मिलने से

भुख न जाइ ॥ दुखि लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ ॥ अंदरि सहजु न आइओ सहजे ही लै खाइ ॥ मनहठि जिस ते मंगणा लैणा दुखु मनाइ ॥ इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ ॥ सबदि रते तिना सोझी पई दूजै भरमि भुलाइ ॥ पइऐ किरति कमावणा कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावहि से भले जिन की पति पावहि थाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुरि सेविऐ सदा सुखु जनम मरण दुखु जाइ ॥ चिंता मूलि न होवई अचिंतु वसै मनि आइ ॥ अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥ मैलु गई मनु निरमलु होआ अंम्रित सरि तीरथि नाइ ॥ सजण मिले सजणा सचै सबदि सुभाइ ॥ घर ही परचा पाइआ जोती जोति मिलाइ ॥ पाखंडि जमकालु न छोडई लै जासी पति गवाइ ॥ नानक नामि रते से उबरे सचे सिउ लिव लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तितु जाइ बहहु सतसंगती जिथै हरि का हरि नामु बिलोईऐ ॥ सहजे ही हरि नामु लेहु हरि ततु न खोईऐ ॥ नित जपिअहु हरि हरि दिनसु राति हरि दरगह ढोईऐ ॥ सो पाए पूरा सतगुरू जिसु धुरि मसतकि लिलाटि लिखोईऐ ॥ तिसु गुर कंउ सभि नमसकारु करहु जिनि हरि की हरि गाल गलोईऐ ॥ ४ ॥ सलोक मः ३ ॥ सजण मिले सजणा जिन सतगुर नालि पिआरु ॥ मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआरु ॥ मन ही ते मनु मानिआ गुर कै सबदि अपारि ॥ एहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि ॥ इकना दरसन की परतीति न आईआ सबदि न करहि वीचारु ॥ विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाइ पिआरु ॥ मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि ॥ इसु परीति तुटदी विलमु न होवई इतु दोसती चलनि विकार ॥ जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआरु ॥ नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इकि सदा इकतै रंगि रहहि तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ तनु मनु धनु अरपी तिन कउ निवि निवि लागउ पाइ ॥ तिन मिलिआ मनु संतोखीऐ त्रिसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामि रते सुखीए सदा सचे सिउ लिव लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसु गुर

भूख नहीं जाती। पाखण्डी के चक्कर में पड़े रहने वाले व्यक्ति को बहुत दुख उठाना पड़ता है। वह घर घर भटकता फिरता है और परलोक में उसे इससे भी दोगुनी सज़ा मिलती है। उसके अन्दर सहजभाव उत्पन्न नहीं होता नहीं तो वह शान्त भाव से खाता पीता रहता है। मन के हठ के अधीन होकर माँगना अपने मन पर ज़ोर डालकर ही हो सकता है और जिससे लिया जाता है वह भी दुख का अनुभव करता है। ऐसे पाखण्डी से तो गृहस्थी जीवन व्यतीत करने वाला अच्छा है जहाँ से किसी को भी कुछ न कुछ तो मिलता ही है। जो शब्द में लीन हो गए हैं उन्हें ही सूझ-बुद्धि प्राप्त होती है और अन्य सभी तो भ्रमों में भूले रहते हैं। जैसा बीज डाला जाता है वैसी ही कमाई होती है और इस बात से कोई भी इनकार नहीं कर सकता। हे नानक, जो उस प्रभु को भाते हैं वे ही भले हैं और उनका सम्मान ही वास्तविक सम्मान हैं।। १ ।। मः ३।। सच्चे गुरु की सेवा करने से सदैव सुख प्राप्त होता है और जन्म-मरण का दुख चला जाता है। अब चिन्ता तो बिल्कुल ही नहीं होती क्योंकि सब चिन्ताओं से परे रहने वाला प्रभु मन में आ बसता है। ज्ञान ही अन्तर्मन का तीर्थ है जो सच्चा गुरु बता देता है। इस अमृत रूपी सरोवर को तीर्थ मानकर स्नान करने से मैल छूट जाती है और मन निर्मल हो जाता है। सच्चे शब्द से प्रेम करने से सज्जन पुरुष ही मिलते हैं। उन्हें घर बैठे ही अन्तर्मन के ज्ञान से परिचय हो जाता है और उनकी ज्योति परम ज्योति के साथ मिल जाती है। पाखण्डी व्यक्ति को यमदूत नहीं छोड़ता और उसका अपमान करके उसे ले जाता है। हे नानक, सच्चे प्रभु के साथ लौ लगाने और उसके नाम में लीन बने रहने वाले व्यक्ति ही इस संसार से उबरते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। हे सत्संगत करने वालो, उस स्थान पर जा बैठो जहाँ हरि के नाम का गंभीर चिंतन, मनन होता है। सहजभाव में ही प्रभु का नाम लो और सभी के तत्व रूप परमात्मा को कभी भी मत भूलो। दिन रात उस प्रभु के नाम का जाप करने से प्रभु के दरबार में शरण मिल जाएगी। वही व्यक्ति पूर्ण सच्चे गुरु को प्राप्त करता है जिसके माथे पर प्रारम्भ से ही लेख लिखे होते है। उस गुरु को सभी प्रणाम करो, जिसने प्रभु की ही बात की है।। ४ ।। श्लोक मः ३ ।। सच्चे गुरु से प्यार करने वाले सज्जन उसी प्रकार के सज्जनों से ही मिलते हैं। उन्होंने अपने सच्चे प्रेम-प्यार के माध्यम से मिल बैठकर प्रियतम की आराधना की होती है। ऐसे व्यक्तियों के मन गुरु के अपरंपर शब्द के माध्यम से ही मान चुके होते हैं। ऐसे सज्जन मिलकर फिर बिछुड़ते नहीं क्योंकि उन्हें परमात्मा ने मिलाया होता है। कई ऐसे भी हैं जिनको प्रभु दर्शन का प्रेम उत्पन्न नहीं होता और जो शब्द का भी विचार नहीं करते। जिनका द्वैतभाव में पहले से ही प्यार बना हुआ है ऐसे प्रभु से बिछुड़े हुए लोगों को भला और अधिक वियोग क्या होगा। मनमुख व्यक्ति के साथ मित्रता थोड़े से चार दिन की ही होती है। इनसे प्रेम टूटते हुए विलम्ब नहीं लगता क्योंकि इस प्रकार की दोस्ती से केवल विकार ही उत्पन्न होते हैं। जिनके हृदय में सत्य प्रभु का भय नहीं और जो प्रभु के नाम से प्रेम नहीं करते हे नानक, ऐसे व्यक्तियों से भला कैसी मित्रता हो सकती है जिन्हें स्वयं प्रभु ने ही भुला दिया है।। १ ।। मः ३ ।। कई ऐसे भी हैं जो सदैव प्रभु के प्रेम में ही लीन बने रहते हैं; मैं सदैव उन पर बलिहारी जाता हूँ। मैं तन-मन-धन उनको अर्पण करता हूँ और झुक-झुक कर उनके चरण स्पर्श करता हूँ। उनको मिलने से मन में सन्तोष उत्पन्न होता है तथा तृष्णा भूख आदि सब समाप्त हो जाते हैं। हे नानक, जिन्होंने सच्चे प्रभु के साथ लौ लगाई हुई है वे ही नाम में लीन बने रह कर सदैव सुखी बने रहते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। मैं उस गुरु पर

कउ हउ वारिआ जिनि हरि की हरि कथा सुणाई ॥ तिसु गुर कउ सद बलिहारणै जिनि हरि सेवा बणत बणाई ॥ सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लए छडाई ॥ तिसु गुर कउ साबासि है जिनि हरि सोझी पाई ॥ नानकु गुर विटहु वारिआ जिनि हरि नामु दीआ मेरे मन की आस पुराई ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥ त्रिसना दाधी जलि मुई जलि जलि करे पुकार ॥ सतिगुर सीतल जे मिलै फिरि जलै न दूजी वार ॥ नानक विणु नावै निरभउ को नही जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि ॥ वरमी मारी सापु ना मरै तिउ निगुरे करम कमाहि ॥ सतिगुरु दाता सेवीऐ सबदु वसै मनि आइ ॥ मनु तनु सीतलु सांति होइ त्रिसना अगनि बुझाइ ॥ सुखा सिरि सदा सुखु होइ जा विचहु आपु गवाइ ॥ गुरमुखि उदासी सो करे जि सचि रहै लिव लाइ ॥ चिंता मूलि न होवई हरि नामि रजा आघाइ ॥ नानक नाम बिना नह छूटीऐ हउमै पचहि पचाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनी हरि हरि नामु धिआइआ तिनी पाइअड़े सरब सुखा ॥ सभु जनमु तिना का सफलु है जिन हरि के नाम की मनि लागी भुखा ॥ जिनी गुर कै बचनि आराधिआ तिन विसरि गए सभि दुखा ॥ ते संत भले गुरसिख है जिन नाही चिंत पराई चुखा ॥ धनु धंनु तिना का गुरू है जिसु अंम्रित फल हरि लागे मुखा ॥ ६ ॥ सलोक मः ३ ॥ कलि महि जमु जंदारु है हुकमे कार कमाइ ॥ गुरि राखे से उबरे मनमुखा देइ सजाइ ॥ जमकालै वसि जगु बांधिआ तिस दा फरू न कोइ ॥ जिनि जमु कीता सो सेवीऐ गुरमुखि दुखु न होइ ॥ नानक गुरमुखि जमु सेवा करे जिन मनि सचा होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ एहा काइआ रोगि भरी बिनु सबदै दुखु हउमै रोगु न जाइ ॥ सतिगुरु मिलै ता निरमल होवै हरि नामो मंनि वसाइ ॥ नानक नामु धिआइआ सुखदाता दुखु विसरिआ सहजि सुभाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनि जगजीवनु उपदेसिआ तिसु गुर कउ हउ सदा घुमाइआ ॥ तिसु गुर कउ हउ खंनीऐ जिनि मधुसूदनु हरि नामु सुणाइआ ॥ तिसु गुर कउ हउ वारणै जिनि हउमै बिखु सभु रोगु गवाइआ ॥ तिसु सतिगुर कउ

बलिहारी जाता हूं जिसने मुझे हरि की कथा वार्ता सुनाई है। उस गुरु पर मैं सदैव बलिहारी जाता हूँ जिसने प्रभु सेवा का अवसर बना दिया है। वह प्यारा सच्चा गुरु मेरे साथ है और यहाँ-वहाँ वही मुझे छुड़ा लेता है। उस गुरु का धन्यवाद है जिसने मेरे मन में प्रभु की सूझ डाल दी है। गुरु नानक पर मैं बलिहारी जाता हूँ जिसने प्रभु नाम प्रदान कर मेरे मन की आशा पूरी कर दी है।। ५ ।। श्लोक मः ३ ।। तृष्णा में जलती हुई मैं जल मरी हूँ और जलती हुई ही चीख पुकार कर रही हूँ। यदि शीतल सच्चा गुरु मिल जाए तो मुझे दूसरी बार नहीं जलना पड़ेगा। हे नानक, शब्द का चिन्तन किए बगैर प्रभु नाम से विहीन होकर कोई भी निर्भय नहीं बना रह सकता।। १ ।। मः ३ ।। पाखण्डी व्यक्ति की तृष्णा की आग बुझती नहीं क्योंकि उसके मन में सदैव चिन्ता ही बनी रहती है। बाहरी वेश से शरीर को कष्ट देने से मन नहीं मरता और प्रभु प्राप्त नहीं होता क्योंकि साँप की बाम्बी को पीटने मारने से साँप नहीं मरता; ऐसे काम तो गुरु-विहीन लोग ही किया करते हैं। उस दाता सच्चे गुरु का सुमिरन करने से शब्द मन में आ बसता है। इससे तन, मन शीतल और शान्त हो जाता है तथा तृष्णा रूपी अग्नि बुझ जाती है। यदि अन्तर्मन से अहंकार गँवा दिया जाए तो यही सभी सुखों का परम सुख है। पाखण्ड के मुकाबले में गुरमुख बनकर उदासीन बना रहने वाला व्यक्ति वह है जो सच्चे प्रभु में सदैव अपनी लौ लगाए रहता है। उसे बिल्कुल ही चिन्ता नहीं होती और प्रभु नाम को पाकर वह तृप्त होकर अघा जाता है। हे नानक, प्रभु नाम के बिना मुक्ति नहीं होती और व्यक्ति अहंकार में पड़ा हुआ ही मर खप जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। जिन्होंने प्रभु नाम की आराधना की है उन्होंने सभी सुख पा लिए हैं। जिनके मन में प्रभु नाम की भूख जग गई है उनका सारा जीवन सफल हो जाता है। जिन्होंने गुरु के उपदेश के माध्यम से उस गुरु की आराधना की है उनके सभी दुख समाप्त हो गए हैं। वे ही संत भले और गुरु के सिक्ख हैं जिन्हें थोड़ी सी भी चिन्ता अथवा तनाव नहीं होता। जिस गुरु के मुँह को प्रभु नाम रूपी अमृत फल लगते हैं अर्थात जो अमृत वचन बोलते हैं वह गुरु धन्य है।। ६ ।। श्लोक मः ३ ।। कलियुग में यम बहुत ही बुरा है परन्तु वह भी प्रभु के हुक्म में ही कार्यशील बना रहता है। जिनकी रक्षा गुरु ने की वे तो बच गए परन्तु मनमुख व्यक्तियों को वह सज़ा देता है। यमकाल ने अपने वश में करके संसार को बांधा हुआ है और उसको रोकने वाला कोई भी नहीं है। जिसने यम को उत्पन्न किया है यदि गुरमुख बनकर उसका सुमिरन किया जाए तो फिर कभी भी दुख नहीं होता। हे नानक, जिनका मन सच्चा होता है यम गुरमुख बनकर उनकी सेवा करता है।। १।। मः ३।। यह काया रोगों से भरी हुई है और शब्द के बिना इसका दुख और अहंकार का रोग जाता नहीं। यदि यह सच्चे गुरु से मिल ले तभी यह निर्मल होती है और प्रभु नाम को मन में बसाती है। हे नानक, सुखदाता प्रभु के नाम की आराधना करने पर सहज स्वभाव रूप में ही दुख भूल जाता है।। २ ।। पउड़ी।। जिसे संसार को जीवन देने वाले ने उपदेश दिया है उस गुरु पर मैं सदैव बलिहारी जाता हूँ। मैं टुकड़े-टुकड़े होकर उस गुरु पर कुर्बान होता हूँ जिसने मुझे प्रभु नाम सुनाया है। मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने ज़हर जैसे अहंकार के रोग को दूर कर दिया है। उस सच्चे गुरु का तो

वड पुंनु है जिनि अवगण कटि गुणी समझाइआ ॥ सो सतिगुरु तिन कउ भेटिआ जिन कै मुखि मसतकि भागु लिखि पाइआ ॥ ७ ॥ सलोकु मः ३ ॥ भगति करहि मरजीवड़े गुरमुखि भगति सदा होइ ॥ ओना कउ धुरि भगति खजाना बखसिआ मेटि न सकै कोइ ॥ गुण निधानु मनि पाइआ एको सचा सोइ ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहे फिरि विछोड़ा कदे न होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ किआ ओहु करे वीचारु ॥ सबदै सार न जाणई बिखु भूला गावारु ॥ अगिआनी अंधु बहु करम कमावै दूजै भाइ पिआरु ॥ अणहोदा आपु गणाइदे जमु मारि करे तिन खुआरु ॥ नानक किस नो आखीऐ जा आपे बखसणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू करता सभु किछु जाणदा सभि जीअ तुमारे ॥ जिसु तू भावै तिसु तू मेलि लैहि किआ जंत विचारे ॥ तू करण कारण समरथु है सचु सिरजणहारे ॥ जिसु तू मेलहि पिआरिआ सो तुधु मिलै गुरमुखि वीचारे ॥ हउ बलिहारी सतिगुर आपणे जिनि मेरा हरि अलखु लखारे ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ रतना पारखु जो होवै सु रतना करे वीचारु ॥ रतना सार न जाणई अगिआनी अंधु अंधारु ॥ रतनु गुरू का सबदु है बूझै बूझणहारु ॥ मूरख आपु गणाइदे मरि जंमहि होइ खुआरु ॥ नानक रतना सो लहै जिसु गुरमुखि लगै पिआरु ॥ सदा सदा नामु उचरै हरि नामो नित बिउहारु ॥ क्रिपा करे जे आपणी ता हरि रखा उर धारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ मत तुम जाणहु ओइ जीवदे ओइ आपि मारे करतारि ॥ हउमै वडा रोगु है भाइ दूजै करम कमाइ ॥ नानक मनमुखि जीवदिआ मुए हरि विसरिआ दुखु पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है तिसु जन कउ सभि नमसकारी ॥ जिसु अंदरि नामु निधानु है तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ जिसु अंदरि बुधि बिबेकु है हरि नामु मुरारी ॥ सो सतिगुरु सभना का मितु है सभ तिसहि पिआरी ॥ सभु आतम रामु पसारिआ गुर बुधि बीचारी ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना विचि हउमै करम कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे ठउर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि ॥ बिनु

वहुत वड़ा उपकार है जिसने अवगुणों को नष्ट करके मुझे गुणों की चेतना प्रदान की है। ऐसा सच्चा गुरु उन्हीं को मिलता है जिनके मुँह माथे पर परमात्मा ने इस मिलाप के अवसर का लेख लिख दिया है।। ७ ।। श्लोक मः ३ ।। जो संसार के विकारों की ओर से मर चुके होते हैं ऐसे लोग ही प्रभु की भक्ति करते हैं और ऐसे गुरमुखों की भक्ति ही सदैव स्वीकृत होती है। परमात्मा ने उन्हें प्रारम्भ से ही भक्ति का खज़ाना दिया होता है जिसे कोई भी मिटा नहीं सकता। उन्हें गुणों का भण्डार एक ही सच्चा प्रभु अन्तर्मन में ही मिल जाता है। हे नानक, गुरमुख व्यक्ति ही प्रभु से मिलते हैं और उन्हें कभी फिर बिछुड़ना नहीं होता।। १ ।। मः ३ ।। जिसने सच्चे गुरु की सेवा नहीं की वह भला क्या चिंतन करेगा। वह शब्द के सार तत्व को नहीं जान पाता और गँवार बन कर विषयों में भटकता रहता है। अन्धे अज्ञानी जीव द्वैतभाव के मोह में अनेकों प्रकार के कर्म करते रहते हैं। जो मनमुख व्यक्ति गुण न होने पर भी अपने आप को गुणी लोगो की श्रेणी में रखते हैं, यमदूत उन्हें मारकर ख्वार करते हैं। हे नानक, अन्य किसी को क्या कहा जाए जव वह प्रभु स्वयं ही कृपा करके क्षमा कर देने वाला।। २ ।। पउड़ी ।। हे कर्ता प्रभु, तू सब कुछ जानता है और सभी जीव तुम्हारे अपने ही हैं। जिसे तू चाहता है उसे तू अपने से मिला लेता है अन्यथा ये जीव बेचारे भला क्या हैं। हे सच्चे सृजनहार प्रभु, तू ही सब कुछ करने कराने में समर्थ है। हे प्रिय प्रभु, जिन्हें तू मिलाता है वे ही तुझ से गुरमुख वनकर विचार के माध्यम से मिलते हैं। मैं अपने सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने समझ में न आने वाला मेरा प्रभु मुझे बता दिया है।। ८ ।। श्लोक मः ३ ।। जो रत्नों की परख करने वाला होता है वही रत्न पर अपना विचार प्रकट करता है और जो प्रभु-नाम रूपी रत्न के मूल्य को नहीं जानता वह अंधा अंधकार में पड़ा हुआ अज्ञानी व्यक्ति है। शब्द-गुरु ही रत्न है जिसे केवल जानने वाला ही जान पाता है। जो मूर्ख व्यक्ति अपने आपको बड़ा जताते हैं वे जन्मते मरते हुए ख्वार होते रहते हैं। हे नानक, रत्नों को केवल वही जान पाता है जिसके मन में गुरमुख बनकर प्रभु के लिए प्रेम उत्पन्न हो जाता है। ऐसा व्यक्ति सदैव प्रभु-नाम का जाप करता हुआ सदैव प्रभु-नाम का व्यवहार हृदय में वनाए रहता है। प्रभु यदि अपनी कृपा बनाए रखे तो मैं भी उसके नाम को हृदय में धरण किए रखूं।। १ ।। मः ३ ।। जिन्होंने सच्चे गुरु की सेवा नहीं की और जिन्होंने प्रभु नाम से प्यार नहीं लगाया उन्हें तुम जीवित मत समझो क्योंकि उन्हें तो स्वयं परमात्मा ने ही मार रखा है। अहंकार बहुत बड़ा रोग है और अहंकारी व्यक्ति द्वैतभाव में ही काम किए चला जाता है। हे नानक, मनमुख व्यक्ति तो जिन्दा रहते हुए भी मुर्दे के समान हैं क्योंकि वे प्रभु को भुलाकर दुख पाते रहते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। जिनका हृदय अन्दर से शुद्ध है उन्हें सभी प्रणाम करते हैं। जिसके अन्तर्मन में प्रभु नाम का भण्डार है उस व्यक्ति पर मैं बलिहारी जाता हूँ। जिसके अन्दर विवेक बुद्धि है और प्रभु का नाम स्थित है वही सच्चा गुरु सवका मित्र है और सभी उससे प्रेम करते हैं। गुरु की मति लेकर जब वे चिंतन करते हैं तो उन्हें सब ओर अपनी आत्मा का ही प्रसार दिखाई देता है।। ९ ।। सच्चे गुरु की सेवा के बिना बन्धनों में पड़ा व्यक्ति अपने अहंकार के अन्तर्गत ही कर्म किए जाता है। सच्चे गुरु की सेवा के बिना कोई ठिकाना नहीं मिलता और जीव जन्मता मरता और आता जाता रहता है।

सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मन माहि ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअनि मुहि कालै उठि जाहि ॥ १ ॥ महला १ ॥ जालउ ऐसी रीति जितु मै पिआरा वीसरै ॥ नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि इको दाता सेवीऐ हरि इकु धिआईऐ ॥ हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ ॥ जे दूजे पासहु मंगीऐ ता लाज मराईऐ ॥ जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ तिसु जन की सभ भुख गवाईऐ ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ जिन अनदिनु हिरदै हरि नामु धिआईऐ ॥ १० ॥ सलोकु मः ३ ॥ भगत जना कंउ आपि तुठा मेरा पिआरा आपे लइअनु जन लाइ ॥ पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु सिरि छतु सचा हरि बणाइ ॥ सदा सुखीए निरमले सतिगुर की कार कमाइ ॥ राजे ओइ न आखीअहि भिड़ि मरहि फिरि जूनी पाहि ॥ नानक विणु नावै नकीं वढ़ीं फिरहि सोभा मूलि न पाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सुणि सिखिऐ सादु न आइओ जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥ सतिगुरि सेविऐ नामु मनि वसै विचहु भ्रमु भउ भागै ॥ जेहा सतिगुर नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक नामि मिलै वडिआई हरि दरि सोहनि आगै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरसिखां मनि हरि प्रीति है गुरु पूजण आवहि ॥ हरि नामु वणंजहि रंग सिउ लाहा हरि नामु लै जावहि ॥ गुरसिखा के मुख उजले हरि दरगह भावहि ॥ गुरु सतिगुरु बोहलु हरि नाम का वडभागी सिख गुण सांझ करावहि ॥ तिना गुरसिखा कंउ हउ वारिआ जो बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवहि ॥ ११ ॥ सलोक मः ३ ॥ नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ मनमुख घरि होदी वथु न जाणनी अंधे भउकि मुए बिललाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ कंचन काइआ निरमली जो सचि नामि सचि लागी ॥ निरमल जोति निरंजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी ॥ नानक गुरमुखि सदा सुखु पावहि अनदिनु हरि बैरागी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ से गुरसिख धनु धंनु है जिनी गुर उपदेसु सुणिआ हरि कंनी ॥ गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ तिनि हंउमै दुबिधा भंनी ॥ बिनु हरि नावै को मित्रु नाही

सच्चे गुरु की सेवा के बिना व्यक्ति फीका बोलता है और उसके हृदय में प्रभु नाम का निवास नहीं होता। हे नानक, सच्चे गुरु की सेवा न करने से व्यक्ति यमपुरी में बाँधकर मारा जाता है और इस लोक से काला मुँह लेकर ही जाता है।। १ ।। महला ३ ।। मैं ऐसी परम्परा और दिनचर्या को आग लगा दूं जिसके कारण मेरा प्यारा प्रभु मुझसे बिछुड़ता हो। हे नानक, वही प्रीति भली है जिसके माध्यम से प्रभु के समक्ष मेरा सम्मान बना रहे।। २ ।। पउड़ी ।। केवल एक ही दाता प्रभु की सेवा करनी चाहिए और केवल एक ही प्रभु की आराधना करनी चाहिए। केवल एक ही दाता प्रभु से मांगना चाहिए और उसी से ही मनोवांछित फल प्राप्त करना चाहिए। यदि अन्य किसी से मांगोगे तो उससे कुछ भी न मिलने के कारण लज्जित होकर मरना पड़ेगा। जिसने प्रभु का सुमिरन किया है उसी ने फल प्राप्त किया है और उसी सेवक की सारी भूख मिट जाती है। नानक तो उन पर से बलिहारी जाता है जो सदैव हृदय में प्रभु नाम का सुमिरन करते हैं।। १० ।। श्लोक मः ३ ।। मेरा प्यारा प्रभु भक्तों पर प्रसन्न हुआ है और अपने सेवकों को उसने अपने साथ लगा लिया है। उनके सिर पर सच्चा छत्र प्रभु ने स्वयं बनाकर उन भक्तजनों को बादशाहत प्रदान की है। ऐसे निर्मल व्यक्ति सच्चे गुरु की सेवा करते हुए सदैव सुखी बने रहते हैं। उन लोगों को राजा नहीं कहा जा सकता जो परस्पर भिड़ते रहते हैं और योनियों में पड़े रहते हैं। हे नानक, प्रभु नाम के बिना लोग नकटे होकर भटकते रहते हैं और कभी भी शोभा के पात्र नहीं बनते।। १ ।। मः ३ ।। सुनकर और शिक्षा लेकर भी आनन्द नहीं आता जब तक व्यक्ति गुरमुख बन कर शब्द में लीन नहीं होता। सच्चे गुरु की सेवा करने से प्रभु नाम मन में बसता है और अन्तर्मन से भ्रम एवं भय भाग खड़े होते हैं। जिस रूप में कोई गुरु को जानता है वह स्वयं ही वही बन जाता है अर्थात यदि गुरु को ऊँचा समझता है तो व्यक्ति स्वयं भी ऊँचा हो जाता है। ऐसी अवस्था में पहुंचकर उस व्यक्ति में प्रभु नाम की लगन लग जाती है। हे नानक, प्रभु नाम से बड़प्पन प्राप्त होता है और आगे प्रभु के द्वार पर भी शोभा प्राप्त होती है।। २ ।। पउड़ी।। जिन गुरु के सिक्खों के मन में प्रभु की प्रीति है वे गुरु का सम्मान करने के लिए उसके पास आते हैं। वे प्रेम पूर्वक प्रभु-नाम का व्यापार करते हैं और प्रभु-नाम का ही लाभ प्राप्त करते हैं। ऐसे गुरु के सिख व्यक्तियों के मुख उज्जवल बने रहते हैं और वे प्रभु दरबार में भी सबको भाते हैं। सच्चा गुरु परमात्मा के नाम का एक बहुत बड़ा भण्डार अथवा ढेर है और उसके पास पहुंचकर भाग्यशाली सिक्ख परस्पर गुणों की भागीदारी करते हैं। गुरु के उन सिक्खों पर मैं बलिहारी जाता हूं जो उठते बैठते प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं।। ११ ।। श्लोक मः ३ ।। हे नानक, प्रभु का नाम ऐसा भण्डार है जिसे गुरमुख बनकर ही पाया जाता है। मनमुख व्यक्ति घर में अर्थात अन्तर्मन में बहुमूल्य पदार्थ (प्रभु-नाम) होने पर भी उसे नहीं जान पाते और अंधे अज्ञानी बनकर चीखते पुकारते बोलते हुए ही मर खप जाते हैं।। १ ।। मः ३ ।। वही माया सोने की है और निर्मल है जो वास्तव में प्रभु के सच्चे नाम में ही लीन बनी रहती है। जब इस शरीर को निर्मल ज्योति वाला पवित्र प्रभु मिल जाता है तो गुरमुख बनकर इसका भ्रम और भय भाग खड़े होते हैं। हे नानक, प्रभु के प्रेम में सदैव बने रहने वाले गुरमुख सदा सुख प्राप्त करते रहते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। गुरु के सिक्ख धन्य और सफल हैं जिन्होंने अपने कानों से परमात्मा रूपी गुरु का उपदेश सुना है। सच्चे गुरु ने प्रभु-नाम को मन में पक्का कर दिया है जिससे मन का अहंकार और दुविधा नष्ट हो गए हैं। प्रभु-नाम के बिना अन्य कोई भी मित्र नहीं है इस तथ्य को प्रभु के

वीचारि डिठा हरि जंनी ॥ जिना गुरसिखा कउ हरि संतुसटु है तिनी सतिगुर की गल मंनी ॥ जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिनी चड़ी चवगणि वंनी ॥ १२ ॥ सलोक मः ३ ॥ मनमुखु काइरु करूपु है बिनु नावै नकु नाहि ॥ अनदिनु धंधै विआपिआ सुपनै भी सुखु नाहि ॥ नानक गुरमुखि होवहि ता उबरहि नाहि त बधे दुख सहाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुरमुखि सदा दरि सोहणे गुर का सबदु कमाहि ॥ अंतरि सांति सदा सुखु दरि सचै सोभा पाहि ॥ नानक गुरमुखि हरि नामु पाइआ सहजे सचि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि प्रहिलादि जपि हरि गति पाई ॥ गुरमुखि जनकि हरि नामि लिव लाई ॥ गुरमुखि बसिसटि हरि उपदेसु सुणाई ॥ बिनु गुर हरि नामु न किनै पाइआ मेरे भाई ॥ गुरमुखि हरि भगति हरि आपि लहाई ॥ १३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की परतीति न आईआ सबदि न लागो भाउ ॥ ओस नो सुखु न उपजै भावै सउ गेड़ा आवउ जाउ ॥ नानक गुरमुखि सहजि मिलै सचे सिउ लिव लाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ ॥ सहसा मूलि न होवई हउमै सबदि जलाइ ॥ कूड़ै की पालि विचहु निकलै सचु वसै मनि आइ ॥ अंतरि सांति मनि सुखु होइ सच संजमि कार कमाइ ॥ नानक पूरै करमि सतिगुरु मिलै हरि जीउ किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस कै घरि दीबानु हरि होवै तिस की मुठी विचि जगतु सभु आइआ ॥ तिस कउ तलकी किसै दी नाही हरि दीबानि सभि आणि पैरी पाइआ ॥ माणसा किअहु दीबाणहु कोई नसि भजि निकलै हरि दीबाणहु कोई किथै जाइआ ॥ सो ऐसा हरि दीबानु वसिआ भगता कै हिरदै तिनि रहदे खुहदे आणि सभि भगता अगै खलवाइआ ॥ हरि नावै की वडिआई करमि परापति होवै गुरमुखि विरलै किनै धिआइआ ॥ १४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जगतु मुआ बिरथा जनमु गवाइ ॥ दूजै भाइ अति दुखु लगा मरि जंमै आवै जाइ ॥ विसटा अंदरि वासु है फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ नानक बिनु नावै जमु मारसी अंति गइआ पछुताइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि

सेवकों ने अच्छी तरह विचार कर देख लिया है। गुरु के जिन सिक्खों पर प्रभु प्रसन्न है वे सच्चे गुरु की बात को मानते जाते हैं और जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु-नाम की आराधना ही है उनके प्रेम की रंगत चार गुणा बढ़ गई है।। १२ ।। श्लोक मः ३ ।। मनमुख व्यक्ति कायर और कुरूप है क्योंकि वह प्रभु-नाम से विहीन होकर नकटा बना हुआ है। वह प्रत्येक दिन सांसारिक प्रपंचों में ही उलझा रहता है और उसे सपने में भी सुख प्राप्त नहीं होता। हे नानक, यदि वह गुरमुख बन जाए तो उसका उद्धार होता है अन्यथा ऐसे व्यक्ति बंधे हुए दुख सहते रहते हैं।। १ ।। मः ३।। गुरमुख व्यक्ति प्रभु के द्वार पर सदैव सुन्दर बने रहते हैं क्योंकि वे शब्द-गुरु के अनुरूप आचरण करते हैं। उनका अन्तर्मन सदैव शान्त बना रहता है, वे सदैव सुखी बने रहते हैं और प्रभु के सच्चे द्वार पर शोभायमान रहते हैं। हे नानक, गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम को प्राप्त किया जाता है और स्वाभाविक रूप से ही सत्य में लीन हुआ जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। गुरमुख प्रहलाद ने प्रभु का सुमिरन कर परम गति को प्राप्त कर लिया। गुरमुख जनक ने भी प्रभु-नाम में ही अपनी सुरति को लीन रखा। गुरमुख बने वसिष्ठ ने भी आगे प्रभु-नाम का उपदेश सुनाया। हे मेरे भाई, गुरु के बिना किसी को भी हरि-नाम प्राप्त नहीं हो सका। गुरमुख बने हुए को ही प्रभु स्वयं हरि भक्ति के रहस्य को समझा देता है।। १३ ।। श्लोक महला ३ ।। जिसके मन में सच्चे गुरु के प्रति विश्वास नहीं बना और शब्द के साथ जिसका प्रेम नहीं लगा वह चाहे सौ बार धरती पर आता जाता रहे उसके मन में कभी भी सुख पैदा नहीं होता। हे नानक, यदि गुरमुख बनकर सच्चे प्रभु में लौ लगाई जाए तो वह स्वाभाविक रूप से ही मिल जाता है।। १ ।। मः ३ ।। हे मेरे मन, तू ऐसे सच्चे गुरु को खोज ले जिसकी सेवा करने से जन्म-मरण कर दुख चला जाता है। जब शब्द-गुरु अहंकार को जला देता है तो फिर कोई भी संशय बाकी नहीं बचता। अन्तर्मन में से बनी हुई झूठ की दीवार निकल जाती है और सत्य मन में आन बसता है। अन्तर्मन शान्त होकर सुखी हो जाता है और सत्य तथा संयम से भरा आचरण बन जाता है। हे नानक, पूर्ण भाग्य होने से ही सच्चा गुरु मिलता है और प्रभु अपनी रज़ा में कृपा करता है।। २ ।। पउड़ी ।। जिसके हृदय रूपी घर में ही परमात्मा जैसा हाकिम विराजमान हो, सारा संसार तो उसकी मुट्ठी में ही आ जाता है। उसे फिर किसी की मोहताजी नहीं करनी पड़ती और प्रभु हाकिम सबको खींचकर उसके चरणों में डाल देता है। व्यक्तियों की कचहरी में से तो भला कोई भाग दौड़ कर निकल सकता है परन्तु प्रभु की कचहरी से भला कोई कहाँ बचकर जा सकेगा। प्रभु की यह कचहरी भक्तों के मन में इस प्रकार निवास कर गई है कि अब जो बचे-खुचे लोग भी थे प्रभु ने उन सबको भक्तों के सामने ला खड़ा किया है। प्रभु नाम का बड़प्पन भाग्य से ही प्राप्त होता है और किसी बिरले गुरमुख ने ही उसके नाम की आराधना की होती है।। १४ ।। श्लोक मः ३ ।। सच्चे गुरु की सेवा से विहीन सारा संसार मृतक के समान है और अपना जीवन व्यर्थ ही गंवाता है। वह द्वैतभाव में बना रहने से अत्यन्त दुख पाता है तथा जन्मता मरता आवागमन में पड़ा रहता है। उसका निवास गन्दगी में बना रहता है और वह बार-बार योनियों में भटकता रहता है। हे नानक, प्रभु नाम के बिना तो यम मारता है और व्यक्ति अन्त में यहां से पछताता हुआ जाता है।। १ ।। मः ३ ।। इस संसार में सर्वव्यापक पुरुष (प्रभु) तो एक ही है, बाकी सब तो उसकी जीव-स्त्रियां

सबाई ॥ सभि घट भोगवै अलिपतु रहै अलखु न लखणा जाई ॥ पूरै गुरि वेखालिआ सबदे सोझी पाई ॥ पुरखै सेवहि से पुरख होवहि जिनी हउमै सबदि जलाई ॥ तिस का सरीकु को नही ना को कंटकु वैराई ॥ निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई ॥ अनदिनु सेवकु सेवा करे हरि सचे के गुण गाई ॥ नानकु वेखि विगसिआ हरि सचे की वडिआई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन कै हरि नामु वसिआ सद हिरदै हरि नामो तिन कंउ रखणहारा ॥ हरि नामु पिता हरि नामो माता हरि नामु सखाई मित्रु हमारा ॥ हरि नावै नालि गला हरि नावै नालि मसलति हरि नामु हमारी करदा नित सारा ॥ हरि नामु हमारी संगति अति पिआरी हरि नामु कुलु हरि नामु परवारा ॥ जन नानक कंउ हरि नामु हरि गुरि दीआ हरि हलति पलति सदा करे निसतारा ॥ १५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जिन कंउ सतिगुरु भेटिआ से हरि कीरति सदा कमाहि ॥ अचिंतु हरि नामु तिन कै मनि वसिआ सचै सबदि समाहि ॥ कुलु उधारहि आपणा मोख पदवी आपे पाहि ॥ पारब्रहमु तिन कंउ संतुसटु भइआ जो गुर चरनी जन पाहि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ हंउमै अंदरि खड़कु है खड़के खड़कि विहाइ ॥ हंउमै वडा रोगु है मरि जंमै आवै जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ नानक गुर परसादी उबरे हउमै सबदि जलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा प्रभु अबिगतु अगोचरु अबिनासी पुरखु बिधाता ॥ हरि नामु हम स्रेवह हरि नामु हम पूजह हरि नामे ही मनु राता ॥ हरि नामै जेवडु कोई अवरु न सूझै हरि नामो अंति छडाता ॥ हरि नामु दीआ गुरि परउपकारी धनु धंनु गुरू का पिता माता ॥ हंउ सतिगुर अपुणे कंउ सदा नमसकारी जितु मिलिऐ हरि नामु मै जाता ॥ १६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ गुरमुखि सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ सबदै सादु न आइओ मरि जनमै वारो वार ॥ मनमुखि अंधु न चेतई कितु आइआ सैसारि ॥ नानक जिन कउ नदरि करे से गुरमुखि लंघे पारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता मोहि पिआसि ॥ सतिगुरु सेवनि

ही हैं। वह सब शरीरों, आकारों में रमण करता हुआ भी उनसे अलिप्त बना रहता है और उसे जानना असम्भव होता है। पूर्ण गुरु ही उसके दर्शन कराता है और शब्द के माध्यम से ही उसकी अनुभूति प्राप्त होती है। सर्वव्यापक पुरुष का सुमिरन करने वाले स्वयं ही सर्व व्यापक हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने शब्द के माध्यम से अपने अहंकार को जला दिया होता है। उस प्रभु के समान अन्य कोई नहीं है और न ही कोई उसे दुख देने वाला और न ही कोई उसका शत्रु है। सारे जगत् पर उसका स्थिर राज है और वह न तो कभी आता है और न ही कभी यहां से जाता है। प्रत्येक दिन उसका सेवक उस सच्चे प्रभु के गुण गाता है और नानक उस सच्चे प्रभु के बड़प्पन को देखकर खिला रहता है।। २ ।। पउड़ी ।। जिनके हृदय में प्रभु-नाम सदैव बसता रहता है, प्रभु-नाम ही उनकी रक्षा करने वाला है। हमारा तो प्रभु-नाम ही पिता है, प्रभु-नाम ही माता है, प्रभु-नाम ही सहायक है और प्रभु-नाम ही मित्र है। हमारी तो प्रभु-नाम के माध्यम से ही बातचीत होती है, प्रभु-नाम से ही विचार विमर्श होता है और प्रभु-नाम ही सदैव हमारी देखभाल करता रहता है। प्रभु-नाम ही हमारी प्यारी संगत है और प्रभु-नाम ही हमारा कुल और परिवार है। प्रभु रूपी गुरु ने सेवक नानक को प्रभु-नाम प्रदान किया है जो इस लोक और परलोक में पार उतारता है।। १५ ।। श्लोक मः ३ ।। जिन्हें सच्चा गुरु मिल गया है वे सदैव प्रभु-यश को अर्जित करते रहते हैं। चिन्ताओं को नष्ट करने वाला प्रभु-नाम उनके मन में आ बसता है और वे सच्चे शब्द में लीन हो जाते हैं। वे अपने कुल का उद्धार तो करते ही हैं, स्वयं भी मोक्ष पद प्राप्त कर लेते हैं। जो सेवक गुरु के चरणों में लगे हुए हैं परब्रह्म परमात्मा उन पर प्रसन्न बना रहता है। सेवक नानक तो प्रभु का दास है और हे प्रभु, कृपा कर मेरी इज़्ज़त बचा ले।। १ ।। मः ३।। अहंकार के कारण अन्तर्मन में सदैव खटका बना ही रहता है और सारा जीवन इसी संदेह में निकल जाता है। अहंकार एक बड़ा रोग है जिसमें व्यक्ति मरता-जन्मता आवागमन में पड़ा रहता है। पूर्व से ही जिनके भाग्य में लिखा रहता है उनको प्रभु रूपी सच्चा गुरु आ मिलता है। हे नानक, गुरु की कृपा से ही उद्धार होता है और शब्द के माध्यम से अहंकार जलकर नष्ट हो जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। हरि-नाम ही हमारा अव्यक्त, अगोचर, अविनाशी प्रभु है जो सर्वत्र व्याप्त विधाता है। हरि-नाम का ही हम सुमिरन करते हैं, हरि-नाम को ही हम पूजते हैं और हरि-नाम में ही हमारा मन रंगा रहता है। हरि-नाम जैसा अन्य कोई भी सुझाई नहीं पड़ता और हरि-नाम ही हमें अन्ततः मुक्ति प्रदान करता है। परोपकारी गुरु ने ही हमें प्रभु-नाम प्रदान किया है और गुरु के माता पिता धन्य एवं महान हैं। मैं अपने सच्चे गुरु को सदैव प्रणाम करता हूँ जिसको मिलने से मैंने हरि-नाम को जाना है।। १६।। श्लोक मः ३ ।। जिसने गुरमुख बनकर सेवा नहीं की, जिसका प्यार हरि-नाम में नही लगा और जिसे शब्द के रस का अनुभव नहीं हुआ वह बार-बार जन्मता और मरता रहता है। अन्धा मनमुख व्यक्ति सावधान नहीं होता इसलिए उसका संसार में आने का उद्देश्य क्या है। हे नानक, जिन पर प्रभु कृपादृष्टि कर देता है वे गुरमुख व्यक्ति संसार सागर से पार उतर जाते हैं।।१।। मः ३।। सारा संसार तो मोह और तृष्णा में सोया हुआ है केवल एक सच्चा गुरु ही चेतन अवस्था में बना रहता है। जो सच्चे गुरु की सेवा करते हैं

जागंनि से जो रते सचि नामि गुणतासि ॥ मनमुखि अंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि ॥ नानक गुरमुखि तिनी नामु धिआइआ जिन कंउ धुरि पूरबि लिखिआसि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा भोजनु छतीह परकार जितु खाइऐ हम कउ त्रिपति भई ॥ हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि नंगे न होवह होर पैनण की हमारी सरध गई ॥ हरि नामु हमारा वणजु हरि नामु वापारु हरि नामै की हम कंउ सतिगुरि कारकुनी दीई ॥ हरि नामै का हम लेखा लिखिआ सभ जम की अगली काणि गई ॥ हरि का नामु गुरमुखि किनै विरलै धिआइआ जिन कंउ धुरि करमि परापति लिखतु पई ॥ १७ ॥ सलोक मः ३ ॥ जगतु अगिआनी अंधु है दूजै भाइ करम कमाइ ॥ दूजै भाइ जेते करम करे दुखु लगै तनि धाइ ॥ गुर परसादी सुखु ऊपजै जा गुर का सबदु कमाइ ॥ सची बाणी करम करे अनदिनु नामु धिआइ ॥ नानक जितु आपे लाए तितु लगे कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ हम घरि नामु खजाना सदा है भगति भरे भंडारा ॥ सतगुरु दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा ॥ अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि अपारा ॥ सबदु गुरू का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ॥ इहु मनूआ सदा सुखि वसै सहजे करे वापारा ॥ अंतरि गुर गिआनु हरि रतनु है मुकति करावणहारा ॥ नानक जिस नो नदरि करे सो पाए सो होवै दरि सचिआरा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जो सतिगुर चरणी जाइ पइआ ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि हरि नामा मुखि रामु कहिआ ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिसु हरि नामि सुणिऐ मनि अनदु भइआ ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि सतिगुर सेवा करि हरि नामु लइआ ॥ तिसु गुरसिख कंउ हंउ सदा नमसकारी जो गुर कै भाणै गुरसिखु चलिआ ॥ १८ ॥ सलोकु मः ३ ॥ मनहठि किनै न पाइओ सभ थके करम कमाइ ॥ मनहठि भेख करि भरमदे दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥ रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ ॥ गुर सेवा ते मनु निरमलु होवै अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ नामु रतनु घरि परगटु होआ नानक सहजि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥

और जो गुणों के भण्डार सच्चे नाम में रंगे रहते हैं वे ही जागृत अवस्था में बने रहते हैं। अंधे मनमुख व्यक्ति कभी भी सावधान नहीं होते और जन्म लेकर मरते रहते हैं तथा विनष्ट होते रहते हैं। हे नानक, उन गुरमुख व्यक्तियों ने ही प्रभु-नाम का सुमिरन किया है जिनके भाग्य में पहले से ही लिखा हुआ है।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु-नाम ही हमारा छत्तीस प्रकार का भोजन है जिसके खाने से हम तृप्त हो गए हैं। प्रभु-नाम ही हमारा पहनावा है जिसके पहनने से हम फिर नंगे नहीं होते और वस्त्र पहनने की हमारी सभी इच्छाएं पूरी हो गई हैं। प्रभु-नाम ही हमारा सौदा है, प्रभु-नाम ही व्यापार है और सच्चे गुरु ने हमें प्रभु-नाम की ही चाकरी दी है। प्रभु-नाम का ही हमने लेखा लिखा है जिससे यम का डर दूर हो गया है। किसी बिरले गुरमुख ने ही प्रभु-नाम का सुमिरन किया है ओर यह उन लोगों ने ही किया है जिन पर कृपा करके प्रभु ने ऐसा लेख लिखा है।। १७ ।। श्लोक मः ३ ।। सारा संसार अज्ञानी एवं अंधा है जो द्वैतभाव में कर्म किए जाता है। द्वैतभाव में जितने भी कर्म किए जाते हैं, उनके कारण शरीर में दुख दौड़ कर आ लगता है। गुरु की कृपा से शब्द-गुरु के अनुरूप आचरण बनाने से सुख उत्पन्न होता है (द्वैतभाव की अपेक्षा) सच्ची वाणी का आचरण करते हुए कर्म किया जाना चाहिए और प्रत्येक दिन प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाना चाहिए। हे नानक, प्रभु जहाँ लगाए वहीं लगा रहना चाहिए और उसके सामने हमें कुछ भी कहना उचित नहीं होता।। १ ।। मः ३ ।। हमारे घर में ही प्रभु-नाम का खज़ाना है और प्रभु ने जीव के अन्तर्मन में ही भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं। सच्चा गुरु ही जीव का दाता है और वह देने वाला प्रभु सदैव ही चेतन बना रहता है। उस प्रभु का ही शब्द-गुरु के माध्यम से कीर्तन किया जाना चाहिए। शब्द-गुरु का सदैव उच्चारण किया जाना होता है क्योंकि यही प्रत्येक युग में देने वाला दाता है। स्वाभाविक रूप से प्रभु-नाम का व्यापार करके यह मन सदैव सुखपूर्वक बसता है। अन्तर्मन में ही गुरु का ज्ञान रूपी हरि रत्न विद्यमान है और यह ही मुक्ति दिलाने वाला है। हे नानक, जिस पर प्रभु कृपादृष्टि करता है वही इसे प्राप्त करता है और वही प्रभु द्वार पर सच्चे रूप में जाना जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। उस गुरु के सिक्ख को धन्य कहा जाता है जो सच्चे गुरु के चरणों में आ लगा है। गुरु के उन गुरसिक्खों को ही धन्य कहा जाता है जिन्होंने अपने मुख से हरि-नाम अर्थात् प्रभु-नाम का उच्चारण किया है। गुरु के उस सिक्ख को भी धन्य कहा जाता है जिसका मन हरिनाम सुनते ही आनन्दित हो उठता है। गुरु का वह सिक्ख भी धन्य कहा जाता है जिसने सच्चे गुरु की सेवा करके उससे प्रभु-नाम प्राप्त किया है। मैं उस गुरु के सिक्ख को भी सदैव प्रणाम करता हूँ जो गुरु की आज्ञा में चलकर वास्तविक रूप से गुरु का सिक्ख बना है।। १८ ।। श्लोक मः ३ ।। सभी अनेकों प्रकार के कर्म करके थक गए हैं परन्तु अपने मन के हठ के बलबूते कोई भी प्रभु को नही पा सका है। मन के हठ के पीछे लगकर जो अनेकों वेष धारण कर भटकते फिरते हैं वे द्वैतभाव में फंसे हुए दुख ही दुख प्राप्त करते रहते हैं। ऋद्धियां सिद्धियां सभी मन का मोह हैं जिनके कारण प्रभु का नाम हृदय में नही बसता। गुरु की सेवा से ही मन निर्मल होता है और अज्ञान का अंधकार चला जाता है। हे नानक, ऐसी अवस्था में नाम रूपी रत्न मन में प्रकट हो उठता है और जीव सहजभाव में लीन हो जाता है।। १ ।। मः ३ ।।

सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥ रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ नानक किरति पइऐ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम कउ सांति आई ॥ धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम हरि भगति पाई ॥ धनु धनु हरि भगतु सतिगुरू हमारा जिस की सेवा ते हम हरि नामि लिव लाई ॥ धनु धनु हरि गिआनी सतिगुरू हमारा जिनि वैरी मित्रु हम कउ सभ सम द्रिसटि दिखाई ॥ धनु धनु सतिगुरू मित्रु हमारा जिनि हरि नाम सिउ हमारी प्रीति बणाई ॥ १९ ॥ सलोकु मः १ ॥ घर ही मुंधि विदेसि पिरु नित झूरे संम्हाले ॥ मिलदिआ ढिल न होवई जे नीअति रासि करे ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक गाली कूड़ीआ बाझु परीति करेइ ॥ तिचरु जाणै भला करि जिचरु लेवै देइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनि उपाए जीअ तिनि हरि राखिआ ॥ अंम्रितु सचा नाउ भोजनु चाखिआ ॥ तिपति रहे आघाइ मिटी भभाखिआ ॥ सभ अंदरि इकु वरतै किनै विरलै लाखिआ ॥ जन नानक भए निहालु प्रभ की पाखिआ ॥ २० ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ॥ डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ हउमै मैलु न चुकई नामि न लगै पिआरु ॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु दुबिधा तजि विकार ॥ नानक इकि दरसनु देखि मरि मिले सतिगुर हेति पिआरि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुरू न सेविओ मूरख अंध गवारि ॥ दूजै भाइ बहुतु दुखु लागा जलता करे पुकार ॥ जिन कारणि गुरू विसारिआ से न उपकरे अंती वार ॥ नानक गुरमती सुखु पाइआ बखसे बखसणहार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे आपि आपि सभु करता कोई दूजा होइ सु अवरो कहीऐ ॥ हरि आपे बोलै आपि बुलावै हरि आपे जलि थलि रवि रहीऐ ॥ हरि आपे मारै हरि आपे छोडै मन हरि सरणी पड़ि रहीऐ ॥ हरि बिनु कोई मारि जीवालि न सकै मन होइ निचिंद निसलु होइ रहीऐ ॥ उठदिआ बहदिआ सुतिआ सदा सदा हरि नामु धिआईऐ जन नानक गुरमुखि हरि लहीऐ ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु

जिसे शब्द का स्वाद नहीं लगा और जिसका प्रभु-नाम के साथ प्रेम नहीं लग सका वह अपनी जीभ से फीका बोलता है और सदैव ख्वार होता रहता है। हे नानक, किए हुए कर्मों के अनुरूप अर्थात पिछले संस्कारों के फलस्वरूप बने स्वभाव के कारण ही जीव कर्म करते रहते हैं और उन संस्कारों को कोई नहीं मिटा सकता।। २ ।। पउड़ी ।। सत्य रूप में सर्वत्र व्याप्त वह सच्चा गुरु धन्य है जिसको मिलने से हमें शान्ति प्राप्त हुई है। वह सत्य पुरुष सच्चा गुरु धन्य है जिसके मिलने से हमने प्रभु की भक्ति प्राप्त कर ली है। वह प्रभु रूपी भक्त एवं हमारा सच्चा गुरु धन्य है जिसकी सेवा करने से हमारी लौ प्रभु-नाम में लग गई है। हमारा सच्चा गुरु सर्वज्ञ प्रभु धन्य है जिसने शत्रु और मित्र को हमें समान दृष्टि से देखने की युक्ति बता दी है। वह सच्चा गुरु हमारा मित्र धन्य है जिसने प्रभु-नाम से हमारी प्रीति बना दी है।। १६ ।। श्लोक मः १ ।। जीव रूपी स्त्री घर में ही बैठी है और उसका पति रूपी प्रभु विदेश में है अर्थात बहुत दूर है; वह नित्य दुखी होती हुई उसको याद करती रहती है। यदि वह अपनी नीयत को साफ कर ले तो प्रभु पति से मिलने में उसे ज़रा सी भी देरी नहीं लगती।। १ ।। मः १ ।। हे नानक, प्रीति लगाने के अतिरिक्त सभी बातें झूठी और व्यर्थ हैं क्योंकि ऐसी जीव-स्त्री तभी तक अच्छा जानती है जब तक उसे कुछ न कुछ मिलता रहे और प्रभु उसे देता रहे अर्थात उसकी प्रीति निष्काम नहीं होती और उसके सारे प्रयत्न असफल रहते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। जिस प्रभु ने इन जीवों को पैदा किया है वही प्रभु इनकी रक्षा भी करता है। इन जीवों के लिए उस प्रभु का सच्चा नाम ही अमृत के समान भोजन है जिसे वे खाते रहते हैं। वे नाम रूपी भोजन से तृप्त होकर अघा जाते हैं और उनकी और खाने की इच्छा अर्थात बुभुक्षा समाप्त हो जाती है। सब जीवों में वह एक प्रभु ही बसता है इस तथ्य को किसी बिरले ने ही समझा है। दास नानक, प्रभु के पक्ष में आ मिलने से अर्थात उसकी शरण में आ जाने से आनन्दित हो गया है।। २० ।। श्लोक मः ३ ।। सच्चे गुरु को तो सारा संसार ही देखता है परन्तु संसार की मुक्ति तब तक नहीं होती जब तक शब्द के माध्यम से वह उस पर चिंतन नहीं करता और उसे जीवन में नही अपनाता। अहंकार से कभी मन की मैल नहीं हटती और प्रभु-नाम में प्रेम नहीं लगता। अनेकों को प्रभु ने क्षमा करके अपने से मिला लिया है और अब उनकी दुविधाएं और विकार छूट गए हैं। हे नानक, सच्चे गुरु से प्रेम करके अनेकों ऐसे हैं जो प्रभु का दर्शन करके अपने अहं भाव के संदर्भ में मरकर उस प्रभु में जा मिले हैं।। १ ।। मः ३ ।। जिसने सच्चे गुरु की सेवा नहीं की वह मूर्ख, अंधा और गंवार है। द्वैतभाव में लगे हुए ऐसे व्यक्ति को बहुत दुख लगता है और वह जलता हुआ सदैव चीखता, पुकारता रहता है। जिन सांसारिक पदार्थों और सम्बन्धियों के कारण ऐसे व्यक्तियों ने गुरु को भुला दिया था वे अन्तिम समय में उसके किसी भी काम नहीं आ सके। हे नानक, गुरु के उपदेशों में ही सुख पाया जाता है और क्षमाशील प्रभु क्षमा कर देता है।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तू स्वयं ही सबका कर्ता है और यदि अन्य कोई हो तो तब तो उसका नाम लिया जाए। प्रभु स्वयं ही बोलता है, बोलवाता है और वह स्वयं ही जल, स्थल अर्थात् सर्वत्र रमण करता है। प्रभु स्वयं ही मारता है और स्वयं ही छोड़ देता है। अतः हे मन, प्रभु की शरण में ही पड़े रहना चाहिए। हे मन, तू निश्चिंत होकर आराम कर क्योंकि प्रभु के बिना अन्य कोई भी न तो मार सकता है और न ही जीवित कर सकता है। उठते बैठते सोते अर्थात सदैव प्रभु-नाम का सुमिरन ही करना चाहिए। दास नानक का कथन है कि गुरमुख बनकर ही प्रभु को प्राप्त किया जाता है।। २१ ।। १ ।। शुद्ध ।। अर्थात मूल के साथ मिलान किया हुआ।

੧ਓ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

੧ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सोरठि महला १ घरु १ चउपदे ॥

सभना मरणा आइआ वेछोड़ा सभनाह ॥ पुछहु जाइ सिआणिआ आगै मिलणु किनाह ॥ जिन मेरा साहिबु वीसरै वडड़ी वेदन तिनाह ॥ १ ॥ भी सालाहिहु साचा सोइ ॥ जा की नदरि सदा सुखु होइ ॥ रहाउ ॥ वडा करि सालाहणा है भी होसी सोइ ॥ सभना दाता एकु तू माणस दाति न होइ ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ रंन कि रुंनै होइ ॥ २ ॥ धरती उपरि कोट गड़ केती गई वजाइ ॥ जो असमानि न मावनी तिन नकि नथा पाइ ॥ जे मन जाणहि सूलीआ काहे मिठा खाहि ॥ ३ ॥ नानक अउगुण जेतड़े तेते गली जंजीर ॥ जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर ॥ अगै गए न मंनीअनि मारि कढहु वेपीर ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला १ घरु १ ॥ मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥ नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥ भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥ १ ॥ बाबा माइआ साथि न होइ ॥ इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ रहाउ ॥ हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥ सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिस नो रखु ॥ वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥ २ ॥ सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥ खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥ निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥ ३ ॥ लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु ॥

१ ओअंकार सति नामु करता पुरख निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

सोरठि महला १ घरु १ चउपदे।।

मरना सबके लिए आवश्यक है और सबने एक दूसरे से बिछुड़ना भी है। ज्ञानवान लोगों से पूछो कि मरने के बाद आगे पहुँच कर प्रभु के साथ मिलाप किन लोगों का होता है। जिन लोगों ने मेरे मालिक प्रभु को भुला दिया है उनकी वेदना अर्थात मुसीबत तो बहुत ही बड़ी है।। १ ।। बार-बार उस सच्चे प्रभु का गुणानुवाद करो जिसकी कृपादृष्टि से सदैव सुख प्राप्त होता है।। रहाउ।। उस प्रभु को ही बड़ा समझकर उसका गुणानुवाद किया जाना चाहिए क्योंकि वह ही वर्तमान में भी है और भविष्य में भी बना रहेगा। हे प्रभु, एक तू ही सबका दाता है और मनुष्य का दिया हुआ तो कुछ भी तेरे देने जैसा नहीं होता। जो उस प्रभु को भाता है वही होता है और स्त्रियों के समान चीख-चीख कर विलाप करने से कुछ भी नहीं होता अर्थात् उसके हुकुम को नहीं टाला जा सकता।। २ ।। धरती पर करोड़ों ही किले बनाकर कितने ही लोग अपना ढोल पीटकर यहां से चले गए। जो अहंकार में फूले हुए आकाश में भी नहीं समाते थे अंततः उनके नाक में भी गुलामों की तरह जंजीरे डाली गई हैं। यदि वास्तव में मन यह जानता हो कि उसके पापों का फल सूली चढ़ने के दुख के समान है तो फिर भला वह क्यों विषय-विकारों को मीठा मानते हुए उनका सेवन करे।। ३ ।। हे नानक, जितने अवगुण हैं उतने ही व्यक्ति के गले में फंदे पड़े हुए हैं। अब यदि गुण हों तो उन फंदों को काटा जा सकता है और इस तरह ये गुण ही हमारे भाई एवं मित्र हैं। गुणहीन व्यक्तियों का मरने के बाद आदर नहीं होता और उन्हें आध्यात्मिकता से विमुख बने रहने वाले कहकर एवं मारकर भगा दिया जाता है।। ४ ।। १ ।। सोरठि महला १ घरु १ ।। हे जीव, अपने मन को हल चलाने वाला किसान बना, व्यवहारिक जीवन को तू खेती का चिन्ह बना, मेहनत को पानी बना और शरीर को खेत बना, प्रभु नाम को बीज, सन्तोष को मिट्टी समतल करने वाला हेंगा (सोहागा) बना और अपनी विनम्रता को खेत की रक्षा करने वाली बाड़ बना। प्यार से कार्यशील बने रहने के फलस्वरूप यह नाम रूपी बीज तेरे शरीर रूपी खेत में अंकुरित हो उठेगा। जो इस प्रकार की खेती करते हैं उन्हें और उनके घरों को तुम भाग्यशाली रूप में देखोगे।। १।। हे बाबा, माया कभी भी साथ नहीं देगी। इस माया ने सारे संसार को मोहित कर रखा है इस तथ्य को कोई बिरला ही जानता है।। रहाउ।। हे जीव, नित्य नष्ट होती आयु को तू दुकान बना और प्रभु के सच्चे नाम को तू सौदा समझ। अपने ध्यान और विचार को तू सौदा रखने का स्थान (भण्डार) बना और उसमें प्रभु के सच्चे नाम को टिका कर रख ले। शान्त पुरुषों जैसे व्यवहार करने वाले व्यापारियों के साथ तू व्यापार कर और इस प्रकार लाभ प्राप्त करते हुए प्रसन्न बना रह।। २ ।। हे जीव, तू धार्मिक ग्रन्थों को सुनने के रूप में सौदागिरी कर और सत्य रूपी घोड़ों को लादकर ले चल। अपने अच्छेपन को तू रास्ते का खर्चा बना और हे मन, तू कल पर भरोसा न कर और जो करना है आज ही कर ले। इस प्रकार तू प्रभु के देश में जा पहुंचेगा और तुझे सुखपूर्वक रहने के लिए वहां स्थान मिल जाएगा।। ३ ।।

बंनु बदीआ करि धावणी ता को आखै धंनु ॥ नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वंनु ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि मः १ चउतुके ॥ माइ बाप को बेटा नीका ससुरै चतुरु जवाई ॥ बाल कंनिआ कौ बापु पिआरा भाई कौ अति भाई ॥ हुकमु भइआ बाहरु घरु छोडिआ खिन महि भई पराई ॥ नामु दानु इसनानु न मनमुखि तितु तनि धूड़ि धुमाई ॥ १ ॥ मनु मानिआ नामु सखाई ॥ पाइ परउ गुर कै बलिहारै जिनि साची बूझ बुझाई ॥ रहाउ ॥ जग सिउ झूठ प्रीति मनु बेधिआ जन सिउ वादु रचाई ॥ माइआ मगनु अहिनिसि मगु जोहै नामु न लेवै मरै बिखु खाई ॥ गंधण वैणि रता हितकारी सबदै सुरति न आई ॥ रंगि न राता रसि नही बेधिआ मनमुखि पति गवाई ॥ २ ॥ साध सभा महि सहजु न चाखिआ जिहबा रसु नही राई ॥ मनु तनु धनु अपुना करि जानिआ दर की खबरि न पाई ॥ अखी मीटि चलिआ अंधिआरा घरु दरु दिसै न भाई ॥ जम दरि बाधा ठउर न पावै अपुना कीआ कमाई ॥ ३ ॥ नदरि करे ता अखी वेखा कहणा कथनु न जाई ॥ कंनी सुणि सुणि सबदि सलाही अंम्रितु रिदै वसाई ॥ निरभउ निरंकारु निरवैरु पूरन जोति समाई ॥ नानक गुर विणु भरमु न भागै सचि नामि वडिआई ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला १ दुतुके ॥ पुड़ु धरती पुड़ु पाणी आसणु चारि कुंट चउबारा ॥ सगल भवण की मूरति एका मुखि तेरै टकसाला ॥ १ ॥ मेरे साहिबा तेरे चोज विडाणा ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा आपे सरब समाणा ॥ रहाउ ॥ जह जह देखा तह जोति तुमारी तेरा रूपु किनेहा ॥ इकतु रूपि फिरहि परछंना कोइ न किस ही जेहा ॥ २ ॥ अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता ॥ एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता ॥ ३ ॥ तेरे गुण बहुते मै एकु न जाणिआ मै मूरख किछु दीजै ॥ प्रणवति नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजै ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला १ ॥ हउ पापी पतितु परम पाखंडी तू निरमलु निरंकारी ॥ अंम्रितु चाखि परम रसि राते ठाकुर सरणि तुमारी ॥ १ ॥ करता तू मै माणु निमाणे ॥ माणु महतु नामु धनु पलै साचे सबदि समाणे ॥ रहाउ ॥ तू पूरा

चित्त को प्रभु में जोड़ने को तू उसकी चाकरी समझ और प्रभु नाम पर विश्वास रखना उस चाकरी में किया हुआ काम है। पापों को रोकने को ही यदि तू भाग दौड़ और उत्साह बनाएगा तो लोग तुझे धन्य-धन्य कहेंगे। हे नानक, जब प्रभु कृपादृष्टि से तुझे देखेंगे तो तेरा रूप सौन्दर्य चार गुना और अधिक बढ़ जाएगा।। ४ ।। २ ।। सोरठि महला १ चार पंक्तियों वाला।। माँ-बाप को अपना बेटा अच्छा लगता है और ससुर को समझदार दामाद प्यारा लगता है। पुत्रों और पुत्रियों को पिता प्यारा लगता है और भाई को भाई अत्यन्त अच्छा लगता है। परन्तु जब प्रभु का वैधानिक आदेश हो जाता है अर्थात मृत्यु का समय आ जाता है तो जीव घर और बाहर सबको छोड़ देता है और उसकी सारी धन-सम्पदा क्षण भर में दूसरों की हो जाती है। मनमुख बना व्यक्ति प्रभु-नाम, दान, स्नान आदि को नहीं समझता और उसके तन पर धूल पड़ती रहती है अर्थात वह भटकता रहता है।। १ ।। जब प्रभु-नाम को अपना सहायक बनाया गया तो मन भी शान्त हो गया। मैं उस गुरु के चरणों पर पड़कर उस पर बलिहारी जाता हूँ जिसने मुझे सच्ची सूझ बुद्धि दी है।। रहाउ।। मनमुख व्यक्ति का मन संसार के साथ झूठी प्रीति में बिंधा हुआ है और इसलिए वह प्रभु के सेवकों के साथ वाद-विवाद करता रहता है। वह माया में लीन होकर रात-दिन माया का रास्ता ही देखता रहता है और भलाई करने वाला प्रभु का शब्द उसकी सुरति में स्थित नहीं होता। वह न तो प्रभु-रंग में रंगा जाता है और न ही प्रभु के रस में मगन होता है; ऐसा मनमुख अपने सम्मान को गँवा लेता है ।।२।। जिसने साधु-पुरुषों की सभा अर्थात सत्संगत में बैठकर सहज रस का पान नहीं किया और जिसकी जीभ को प्रभु-रस राई मात्र भी नहीं लगा वह आँखे बन्द हो जाने पर घोर अंधकार में चला जाता है। फिर उसे प्रभु का घर और उसका द्वार कुछ भी दिखाई नहीं देता। यम के द्वार पर बंधा हुआ वह कोई भी ठिकाना प्राप्त नहीं कर पाता और अपने किए हुए कर्मों के अनुसार ही आचरण करता है।। ३ ।। यदि प्रभु कृपादृष्टि करे तो मैं प्रभु को अपनी आँखों से देखूं; उस प्रभु का कथन नहीं किया जा सकता। जीव कानों से उसके शब्द सुनकर उसका गुणानुवाद करता है और हृदय में उस नाम-अमृत को बसाता है। इस प्रकार वह उस निर्भय, निराकार, बैर रहित, पूर्ण प्रभु-ज्योति में समा जाता है। हे नानक, गुरु के बिना मन का भ्रम दूर नहीं होता और वास्तविक बड़प्पन तो सच्चे नाम के माध्यम से ही प्राप्त होता है।।४।। ३।। सोरठि महला १ दो पंक्तियों वाला।। एक पाट तो धरती है और एक पाट जल को धारण करने वाला आसमान है। इस प्रकार चारों तरफ फैला हुआ चौबारा हे प्रभु, तेरे बैठने का स्थान है। हे प्रभु, तू एक ही सारी सृष्टि का मालिक है और तेरा मुँह उस टकसाल की तरह है जहाँ खोटे और खरे की परख होती है।। १।। हे मेरे साहिब, तेरे खेल भी आश्चर्यजनक हैं। जल, स्थल और अंतरिक्ष में तू ही भरपूर रूप से व्याप्त है और तू ही सबमें समाया हुआ है।। रहाउ।। मैं जहां भी देखता हूं वहां तुम्हारी ही ज्योति दिखाई देती है; तेरा स्वरूप कैसा है कि तू एक ही रूप में प्रछन्न होकर सबमें व्याप्त है परन्तु फिर भी कोई भी रूप आकार में किसी से मेल नहीं खाता।। २ ।। अंडज उदभिज, स्वेदज और मां के गर्भ से पैदा होने वाले सभी जीव जन्तु तेरे ही बनाए हुए हैं। मैंने तेरा एक बड़प्पन देखा है कि तू सबमें ही रमण कर रहा है।। ३।। तेरे गुण अनेक हैं परन्तु मैंने एक को भी नहीं जाना; इसलिए हे प्रभु, मुझ डूबते हुए पत्थर को बचा ले।।४।।४।। सोरठि महला १।। मैं बहुत ही पतित, पाखण्डी और पापी हूँ और तू निर्मल, निराकार है। हम अमृत को चखकर परमरस में लीन हो गए हैं और हे ठाकुर, तेरी शरण में आ पड़े हैं।।१।। हे कर्ता प्रभु, तू मुझ गरीब का मान सम्मान है। जिनके पल्ले में प्रभु-नाम रूपी धन और उसका विशाल सम्मान है वे ही सच्चे शब्द में लीन बने रहते हैं।। रहाउ।। हे प्रभु, तू पूर्ण है,

हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे ॥ तुझ ही मन राते अहिनिसि परभाते हरि रसना जपि मन रे ॥ २ ॥ तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे ॥ अहिनिसि नामि रते से सूचे मरि जनमे से काचे ॥ ३ ॥ अवरु न दीसै किसु सालाही तिसहि सरीकु न कोई ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा गुरमति जानिआ सोई ॥ ४ ॥ ५ ॥ सोरठि महला १ ॥ अलख अपार अगंम अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥ जाति अजाति अजोनी संभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥ १ ॥ साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥ ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ साचे सबदि नीसाणु ॥ रहाउ ॥ ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न नारी ॥ अकुल निरंजन अपर परंपरु सगली जोति तुमारी ॥ २ ॥ घट घट अंतरि ब्रहमु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई ॥ बजर कपाट मुकते गुरमती निरभै ताड़ी लाई ॥ ३ ॥ जंत उपाइ कालु सिरि जंता वसगति जुगति सबाई ॥ सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥ ४ ॥ सूचै भाडै साचु समावै विरले सूचाचारी ॥ तंतै कउ परम तंतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥ ५ ॥ ६ ॥ सोरठि महला १ ॥ जिउ मीना बिनु पाणीऐ तिउ साकतु मरै पिआस ॥ तिउ हरि बिनु मरीऐ रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥ १ ॥ मन रे राम नाम जसु लेइ ॥ बिनु गुर इहु रसु किउ लहउ गुरु मेलै हरि देइ ॥ रहाउ ॥ संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ ॥ अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥ २ ॥ जिउ जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु संतोखु ॥ तिउ नामै बिनु देहुरी जमु मारै अंतरि दोखु ॥ ३ ॥ साकत प्रेमु न पाईऐ हरि पाईऐ सतिगुर भाइ ॥ सुख दुख दाता गुरु मिलै कहु नानक सिफति समाइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि महला १ ॥ तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ ॥ मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥ १ ॥ घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ जलि थलि महीअलि गुपतो वरतै गुर सबदी देखि निहारी जीउ ॥ रहाउ ॥ मरत पइआल अकासु दिखाइओ गुरि सतिगुरि किरपा धारी जीउ ॥ सो ब्रहमु अजोनी है भी होनी घट भीतरि

हम अपूर्ण और ओछे हैं; तू बहुत ही भारी है और हम बहुत ही हल्के हैं। तुझमें ही मन लीन किया हुआ है और हे मन, तू दिन रात भोर के समय अपनी जीभ से प्रभु का सुमिरन कर।। २ ।। तुम सच्चे हो और हम तुझमें ही लीन बने हुए हैं और शब्द के माध्यम से तेरे भेद को जानकर सच्चे हो गए हैं। जो दिन-रात प्रभु-नाम में लीन हैं वे ही पवित्र हैं और जो आवागमन में भटक रहे हैं वे कच्चे व्यक्ति हैं।। ३ ।। मैं और किसका गुणानुवाद करूं, मुझे तो अन्य कोई दिखाई नहीं देता और वास्तव में उस प्रभु के बराबर कोई अन्य है भी नहीं। तेरे दासों का दास नानक विनती करता है कि गुरु की मति में चलकर ही मैंने उस प्रभु को जाना है।। ४ ।। ५ ।। सोरठि महला १ ।। समझ में न आने वाला वह अपरंपर प्रभु अगम्य एवं अगोचर है। उसे न तो कर्मों के बन्धन में पड़ना पड़ता है और न ही उसकी मृत्यु होती है। वह सभी जातियों से परे है, अयोनि है, स्वयंभू है और उसे न तो किसी से विशेष लगाव है और न ही कोई भ्रम है।। १ ।। मैं उस सच्चे प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ। उसका न तो कोई रूप है न वर्ण है और न ही कोई आकार है; वह सच्चे शब्द के माध्यम से प्रकट होता है अर्थात सच्चा शब्द ही उसका चिन्ह है।। रहाउ।। उसकी न तो कोई माता है न ही पिता है न ही पुत्र है और न ही बंधु है; न तो उसमें कामवासना है और न ही उसकी कोई स्त्री है। वह अकुल है, निरंजन है और हे अपरंपर प्रभु सम्पूर्ण विश्व की ज्योति वास्तव में तेरी ही ज्योति है। घट घट में वह ब्रह्म छिपा हुआ है और हे प्रभु, प्रत्येक शरीर में तुम्हारी ही ज्योति विराजमान है। गुरु के मत के माध्यम से वज्र कपाट अर्थात पत्थर जैसे कठोर बुद्धि के बंद पड़े दरवाज़े खुल जाते हैं और उस निर्भय प्रभु में समाधि लग जाती है।। ३ ।। प्रभु ने जीव उत्पन्न करके उनके सिर पर काल को स्थित किया हुआ है और सारे जीवन की युक्तियां उस प्रभु ने अपने वश में की हुई हैं। सच्चे गुरु की सेवा करने से अमूल्य पदार्थ प्राप्त होता है और शब्द पर आचरण करने से ही व्यक्ति छुटकारा पाता है।। ४ ।। शरीर रूपी स्वच्छ बर्तन में ही सत्य प्रतिष्ठित होता है परन्तु स्वच्छ आचरण करने वाले बिरले ही होते हैं। जीव रूपी तत्व को परम तत्व अपने में मिला लेता है और हे प्रभु, नानक तुम्हारी शरण में है।। ५ ।। ६ ।। सोरठि महला १ ।। जिस प्रकार मछली पानी के बिना मर जाती है वैसे ही प्रभु से टूटा हुआ व्यक्ति प्यासा ही मर जाता है। हे मेरे मन, प्रभु के बिना व्यर्थ जाने वाले श्वास जीव को प्रभु से विहीन बनाकर उसे मार देते हैं।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु-नाम का यश हृदय में धारण कर। गुरु के बिना भला यह रस कैसे मिल सकता है और गुरु मिलता है तो प्रभु यह रस प्रदान करता है।। रहाउ।। शान्त पुरुषों की संगत में मिल बैठना ही गुरमुख व्यक्ति के लिए तीर्थ के समान है। अड़सठ तीर्थों पर स्नान करना एक गुरु के दर्शन कर लेने के समान ही है।। २ ।। जिस प्रकार इन्द्रियों को वश में किए बिना योगी नहीं हुआ जा सकता और यदि सत्य और सन्तोष को धारण न किया हो तो तप नहीं हो सकता, उसी प्रकार प्रभु-नाम से विहीन शरीर व्यर्थ है; इस शरीर को तो यम मारेगा ही क्योंकि इसके अन्दर अच्छे गुण नहीं हैं तथा दोष ही दोष इकट्ठे किए हुए हैं।। ३ ।। प्रभु से टूटकर प्रभु-प्रेम को प्राप्त नहीं किया जा सकता और सच्चे गुरु को अच्छा लगे बिना प्रभु नहीं पाया जा सकता। नानक का कथन है कि यदि सुख और दुख देने वाला वह गुरु मिल जाए तो व्यक्ति प्रभु के गुणानुवाद में ही लीन हो जाता है।। ४ ।। ७ ।। सोरठि महला १ ।। हे प्रभु, तू दाता है और दानी तथा पूर्ण मति वाला होने के कारण तू पूर्ण है; हम तो तेरे द्वार पर भिखारी हैं। हे प्रभु, मैं तुझसे क्या मांगूँ क्योंकि यहां तो कुछ भी स्थिर बना रहने वाला नहीं है इसलिए मुझे सबसे प्यारा पदार्थ प्रभु-नाम प्रदान करो।। १ ।। प्रत्येक घट में वह परमात्मा रमण कर रहा है। वह गुप्त रूप से ही जल, स्थल और अंतरिक्ष में व्याप्त बना हुआ है और उसको शब्द-गुरु के माध्यम से देखकर आनन्दित हुआ जाता है।। रहाउ।। सच्चे गुरु ने कृपा की और मृत्युलोक, पाताल लोक और सारे आकाश की छानबीन करके उस प्रभु के दर्शन करा दिए हैं। वह अयोनि, ब्रह्म वर्तमान में भी है और भविष्य में भी बना रहने वाला है। हे जीव, उस प्रभु परमेश्वर को अपने हृदय में ही

देखु मुरारी जीउ ॥ २ ॥ जनम मरन कउ इहु जगु बपुड़ो इनि दूजै भगति विसारी जीउ ॥ सतिगुरु मिलै त गुरमति पाईऐ साकत बाजी हारी जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर बंधन तोड़ि निरारे बहुड़ि न गरभ मझारी जीउ ॥ नानक गिआन रतनु परगासिआ हरि मनि वसिआ निरंकारी जीउ ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला १ ॥ जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अंम्रितु गुर पाही जीउ ॥ छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥ १ ॥ मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥ बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अंम्रितु घट माही जीउ ॥ रहाउ ॥ अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ ॥ सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ॥ २ ॥ अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ॥ निरमल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ ॥ ३ ॥ परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुर बचनी फलु पाही जीउ ॥ जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ॥ ४ ॥ ९ ॥ सोरठि महला १ पंचपदे ॥ अपना घरु मूसत राखि न साकहि की पर घरु जोहन लागा ॥ घरु दरु राखहि जे रसु चाखहि जो गुरमुखि सेवकु लागा ॥ १ ॥ मन रे समझु कवन मति लागा ॥ नामु विसारि अन रस लोभाने फिरि पछुताहि अभागा ॥ रहाउ ॥ आवत कउ हरख जात कउ रोवहि इहु दुखु सुखु नाले लागा ॥ आपे दुख सुख भोगि भोगावै गुरमुखि सो अनरागा ॥ २ ॥ हरि रस ऊपरि अवरु किआ कहीऐ जिनि पीआ सो त्रिपतागा ॥ माइआ मोहित जिनि इहु रसु खोइआ जा साकत दुरमति लागा ॥ ३ ॥ मन का जीउ पवनपति देही देही महि देउ समागा ॥ जे तू देहि त हरि रसु गाई मनु त्रिपतै हरि लिव लागा ॥ ४ ॥ साधसंगति महि हरि रसु पाईऐ गुरि मिलिऐ जम भउ भागा ॥ नानक राम नामु जपि गुरमुखि हरि पाए मसतकि भागा ॥ ५ ॥ १० ॥ सोरठि महला १ ॥ सरब जीआ सिरि लेखु धुराहू बिनु लेखै नही कोई जीउ ॥ आपि अलेखु कुदरति करि देखै हुकमि चलाए सोई जीउ ॥ १ ॥ मन रे राम जपहु सुखु होई ॥ अहिनिसि

देख ले।। २ ।। यह बेचारा संसार तो जन्म-मरण में पड़ा हुआ है क्योंकि इसने द्वैतभाव में पड़कर प्रभु-भक्ति को भुला दिया है। यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो उसकी शिक्षा प्राप्त होती है तथा प्रभु से टूटा हुआ व्यक्ति तो जीवन की बाजी हार कर ही जाता है।। ३ ।। सच्चे गुरु ने बंधन तोड़ कर अलग कर दिए हैं और फिर जीव दुबारा गर्भ में नहीं आता। हे नानक, जब ज्ञान रूपी रत्न प्रकाशित हो उठा तो मन में वह निराकार प्रभु आन बसा है।। ४ ।। ८ ।। सोरठि महला १ ।। जिस अमृत के खज़ाने के लिए तुम इस जगत में आए हो वह अमृत गुरु के पास ही होता है। सभी प्रकार के पाखण्ड, वेष, चतुराईयां छोड़ दो क्योंकि दुविधा में पड़े जीव को यह अमृत फल नहीं मिलता।। १ ।। हे मेरे मन, तू स्थिर बना रह और कहीं भी अटक मत। बाहर ढूँढने से बहुत दुख मिलते हैं परन्तु अमृत तो इस शरीर रूपी घर में ही स्थित है।। रहाउ।। अवगुणों को छोड़कर गुणों की ओर चल निकलो क्योंकि अवगुणों के अनुरूप कार्य करने से पछताना ही पड़ता है। जीव अच्छे-बुरे के सार तत्व को नहीं जानता और बार-बार माया मोह के कीचड़ में ही डूबता रहता है।। २ ।। यदि अन्तर्मन में लोभ की मैल और बहुत सा झूठ भरा है तो बाहर से नहाने का क्या लाभ है। सच्चे गुरमुख बनकर इस प्रभु के नाम का सुमिरन करो; उसी से ही तुम्हारे अन्तर्मन की शुद्धि हो सकेगी।। ३ ।। लोभ, निंदा और झूठ को परे हटाकर उनका त्याग कर दो क्योंकि गुरु के उपदेश के माध्यम से ही सत्य रूपी फल प्राप्त होगा। हे प्रभु, तुझे जैसे भी अच्छा लगता है तू हमें वैसे ही रख; दास नानक तो शब्द के माध्यम से तेरा गुणानुवाद करता है।। ४ ।। ६ ।। सोरठि महला १ ।। पंचपदे।। तू अपना लुटता घर तो बचा नहीं सकता फिर भला तू क्यों पराए घर को लूटने की दृष्टि से देख रहा है। तू अपना घर, द्वार तभी बचा सकता है यदि तू प्रभु-रस का पान करे; यह काम वहीं करता है जो गुरमुख बनकर सेवक होकर नाम में लीन बना रहता है।। १ ।। हे मन, तू समझ ले कि तू किसके पीछे लगा हुआ है। तू प्रभु-नाम को भुलाकर अन्य रसों का लोभ कर रहा है; हे अभागे, तू पछताएगा।। रहाउ।। धन सम्पदा आती हुई देखकर तू प्रसन्न हो जाता है और जब वह जाती है तो रोने लग जाता है; यह दुख सुख तो जीव के साथ ही लगा रहता है। गुरमुख तो वह रागातीत व्यक्ति है जो यह जानता है कि प्रभु स्वयं ही दुख और सुख के भोगों को भोगवाता है।। २ ।। हरि-रस से ऊपर भला अन्य क्या बताया जाए क्योंकि इसको जिसने भी पीया है वह तृप्त हो जाता है। माया में लीन होकर जिसने इस रस को खो दिया है प्रभु से टूटा वह व्यक्ति दुर्बुद्धि में लीन हो जाता है।। ३ ।। शरीर में प्रकाश रूपी ब्रह्म समाया हुआ है जो मन का जीवन (आसरा) और इस शरीर का प्राण पति है अर्थात इसके श्वासों का मालिक है। हे प्रभु, यदि तू ही यह दान दे तो मैं हरि-रस का गायन करूँ जिससे मेरा मन तृप्त हो जाए और मेरी लौ प्रभु में लग जाए।। ४ ।। साधसंगत में प्रभु-नाम का रस प्राप्त होता है और गुरु को मिलने के फलस्वरूप यम का भय भाग खड़ा होता है। हे नानक, राम नाम का जाप कर जिससे गुरमुख बनकर तू अपने माथे के लेखों के कारण प्रभु को प्राप्त कर ले।। २ ।। सोरठि महला १ ।। सभी जीवों के लेख प्रारम्भ से ही लिखे हुए हैं और लेखों के बिना कोई भी नहीं हैं। वह प्रभु स्वयं अलेख है और अपनी कलाशक्ति के व्यवहार को देखता रहता है और स्वयं ही अपने हुक्म के विधान को चलाता रहता है।। १।। हे मन, तुझे राम का जाप करने से ही सुख प्राप्त होगा। दिन रात

गुर के चरन सरेवहु हरि दाता भुगता सोई ॥ रहाउ ॥ जो अंतरि सो बाहरि देखहु अवरु न दूजा कोई जीउ ॥ गुरमुखि एक द्रिसटि करि देखहु घटि घटि जोति समोई जीउ ॥ २ ॥ चलतौ ठाकि रखहु घरि अपनै गुर मिलिऐ इह मति होई जीउ ॥ देखि अद्रिसटु रहउ बिसमादी दुखु बिसरै सुखु होई जीउ ॥ ३ ॥ पीवहु अपिउ परम सुखु पाईऐ निज घरि वासा होई जीउ ॥ जनम मरण भव भंजनु गाईऐ पुनरपि जनमु न होई जीउ ॥ ४ ॥ ततु निरंजनु जोति सबाई सोहं भेदु न कोई जीउ ॥ अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥ ५ ॥ ११ ॥

सोरठि महला १ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जा तिसु भावा तद ही गावा ॥ ता गावे का फलु पावा ॥ गावे का फलु होई ॥ जा आपे देवै सोई ॥ १ ॥ मन मेरे गुर बचनी निधि पाई ॥ ता ते सच महि रहिआ समाई ॥ रहाउ ॥ गुर साखी अंतरि जागी ॥ ता चंचल मति तिआगी ॥ गुर साखी का उजीआरा ॥ ता मिटिआ सगल अंध्यारा ॥ २ ॥ गुर चरनी मनु लागा ॥ ता जम का मारगु भागा ॥ भै विचि निरभउ पाइआ ॥ ता सहजै कै घरि आइआ ॥ ३ ॥ भणति नानकु बूझै को बीचारी ॥ इसु जग महि करणी सारी ॥ करणी कीरति होई ॥ जा आपे मिलिआ सोई ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥

सोरठि महला ३ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सेवक सेव करहि सभि तेरी जिन सबदै सादु आइआ ॥ गुर किरपा ते निरमलु होआ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ अनदिनु गुण गावहि नित साचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर हम बारिक सरणि तुमारी ॥ एको सचा सचु तू केवलु आपि मुरारी ॥ रहाउ ॥ जागत रहे तिनी प्रभु पाइआ सबदे हउमै मारी ॥ गिरही महि सदा हरि जन उदासी गिआन तत बीचारी ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि राखिआ उर धारी ॥ २ ॥ इहु मनूआ दह दिसि धावदा दूजै भाइ खुआइआ ॥

गुरु के चरणों की सेवा करो क्योंकि वही प्रभु रूपी गुरु दान देने वाला और दान लेकर खाने वाला है।। रहाउ।। अपने अन्दर जो परमात्मा है उसे ही बाहर भी देखो क्योंकि दूसरा अन्य कोई भी नहीं है। गुरमुख बनकर सबकी समदृष्टि से देखते हुए इस तथ्य का अनुभव करो कि घट घट में उस प्रभु की ज्योति ही समाई हुई है।। २ ।। भटकते हुए मन को अपने स्थान पर टिका कर रखो परन्तु यह सूझ बुद्धि गुरु को मिलने से ही प्राप्त होती है। उस अदृष्ट प्रभु को अनुभव करके आश्यर्चभाव में बने रहो; तुम्हें दुख भूल जाएगा और सुख प्राप्त हे जाएगा।। ३ ।। अमृत का पान करो इससे परम सुख प्राप्त होगा और अपने मूल स्थान में ही निवास बन जाएगा। यदि जन्म मरण और संसार के दुखों को नष्ट करने वाले प्रभु का गुणानुवाद किया जाए तो दुबारा जन्म नहीं लेना पड़ता।। ४ ।। माया से अलिप्त परमात्मा ही सबका सार तत्त्व है और सब स्थानों में उसी की ज्योति (सत्ता) विद्यमान है। वह प्रभु सब कुछ स्वयं ही हैं, उससे अलग कुछ भी नहीं है। हे नानक, अपरंपर, परब्रह्म परमेश्वर मुझे गुरु होकर मिला अर्थात मेरा गुरु परमेश्वर स्वयं है।। ५ ।। ११ ।।

सोरठि महला १ घरु ३   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

यदि उसे भाता है तभी मैं उसके गुण गाता हूँ और वास्तव में तभी उसके गणानुवद का फल भी प्राप्त होता है। जो वह स्वयं देता है वही उसके गायन का फल होता है।। १ ।। हे मेरे मन, गुरु के उपदेश से ही सभी सुखों का खज़ाना प्राप्त होता है। इसलिए समझदार जीव सत्य में लीन बना रहता है।। रहाउ।। गुरु की शिक्षा जब अन्तर्मन में प्रकाशित हो उठती है तो चंचल बुद्धि का त्याग हो जाता है। गुरु की शिक्षा का उजाला जब अंदर हो जाता है तो समस्त अंधकार समाप्त हो जाता है।। २ ।। जब मन गुरु के चरणों में लग जाता है तो यम का मार्ग स्वयं भाग खड़ा होता है।। ३ ।। नानक का कथन है कि कोई बिरला चिन्तन करने वाला ही इस बात को बूझ पाता है कि इस संसार में उत्तम करने योग्य क्या है। प्रभु की कीर्ति का गायन ही उत्तम करने योग्य कार्य है वह प्रभु स्वयं ही आन मिलता है।। ४ ।। १ ।। १२ ।।

सोरठि महला ३ घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जिनको शब्द का स्वाद प्राप्त हो गया है हे प्रभु, वे सभी सेवक तेरी ही सेवा करते हैं। गुरु की कृपा से ही जिसने अपने अन्तर्मन से अहंकार गंवा दिया है वही निर्मल हो गया है। प्रत्येक दिन वह शब्द-गुरु के माध्यम से शोभायमान होकर उस सच्चे प्रभु के गुण गाता है।। १ ।। हे मेरे मालिक, हम तेरे बालक हैं और तुम्हारी शरण में है। तू एक ही सच्चा स्वरूप है और हे प्रभु, केवल तू ही एक सबमें है।। रहाउ।। जो सावधान बने रहते हैं वे ही प्रभु को प्राप्त करते हैं और उन्होंने ही शब्द के माध्यम से अहंकार को मार लिया होता है। गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए भी प्रभु के सेवक सदैव अलिप्त बने रहते हैं और तत्वज्ञान के चिन्तन में लीन बने रहते हैं। उन्होंने ही सच्चे गुरु की सेवा करके सदैव बने रहने वाले सुख को पा लिया होता है और प्रभु को हृदय में बसा लिया होता है।। २ ।। द्वैतभाव में दुखी होकर यह मन दसों दिशाओं में भागता रहता है।

मनमुख मुगधु हरि नामु न चेतै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ सतिगुरु भेटे ता नाउ पाए हउमै मोहु चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरि जन साचे साचु कमावहि गुर कै सबदि वीचारी ॥ आपे मेलि लए प्रभि साचै साचु रखिआ उर धारी ॥ नानक नावहु गति मति पाई एहा रासि हमारी ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला ३ ॥ भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हरि धनु सचु सोइ ॥ अखुटु नाम धनु कदे निखुटै नाही किनै न कीमति होइ ॥ नाम धनि मुख उजले होए हरि पाइआ सचु सोइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुर सबदी हरि पाइआ जाइ ॥ बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाइ ॥ रहाउ ॥ इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥ अंम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥ अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा ॥ २ ॥ हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न चलदिआ नालि ॥ गुरमुखि होवै सु नामु धिआवै सदा हरि नामु समालि ॥ सची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि ॥ ३ ॥ सतिगुर गिआनु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा ॥ नानक राम नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि मः ३ ॥ दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई ॥ भगता का कारजु हरि अनंदु है अनदिनु हरि गुण गाई ॥ सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥ १ ॥ हरि जीउ साची नदरि तुमारी ॥ आपणिआ दासा नो क्रिपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥ रहाउ ॥ सबदि सलाही सदा हउ जीवा गुरमती भउ भागा ॥ मेरा प्रभु साचा अति सुआलिओ गुरु सेविआ चितु लागा ॥ साचा सबदु सची सचु बाणी सो जनु अनदिनु जागा ॥ २ ॥ महा गंभीरु सदा सुखदाता तिस का अंतु न पाइआ ॥ पूरे गुर की सेवा कीनी अचिंतु हरि मंनि वसाइआ ॥ मनु तनु निरमलु सदा सुखु अंतरि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरि का मारगु सदा पंथु विखड़ा को पाए गुर वीचारा ॥ हरि कै रंगि राता सबदे माता हउमै तजे विकारा ॥ नानक नामि रता इक रंगी सबदि सवारणहारा

स्वेच्छाचारी, मूर्ख, मनमुख व्यक्ति प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करता और अपने जीवन को व्यर्थ ही गँवा देता है। सच्चे गुरु से मिलाप हो तभी वह प्रभु-नाम प्राप्त करता है और अपने अहंकार तथा मोह को समाप्त कर देता है।। ३ ।। प्रभु के सेवक सच्चे होते हैं और शब्द-गुरु के चिंतन के फलस्वरूप सच्चा आचरण बनाए रखते हैं। उस सच्चे प्रभु ने स्वयं ही उन्हें अपने से मिला लिया है। हे नानक, हमने तो प्रभु-नाम से ही मुक्ति और ज्ञान प्राप्त किया है और यही हमारी रास पूंजी है।। ४ ।। १ ।। सोरठि मः ३ ।। प्रभु-प्रेम का खज़ाना भक्तों को तो प्रभु ने ही दिया है और हरि नाम ही उनका सच्चा धर्म है। अक्षय नाम रूपी धन कभी कम नहीं होता और कोई भी इसकी कीमत को आंक नहीं सकता। नाम-धन के फलस्वरूप ही जीवों के मुख उज्जवल होते हैं और वे सत्य रूपी परमात्मा को पा जाते हैं।। १ ।। हे मेरे मन, शब्द-गुरु के माध्यम से ही प्रभु को पाया जाता है। शब्द की सूझ से विहीन सारा संसार भ्रमों में पड़ा हुआ भटकता रहता है और प्रभु के दरबार में उसे सज़ा मिलती है।। रहाउ।। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पाँचों चोर इस शरीर में ही बसते हैं। मनमुख व्यक्ति यह नहीं जानता कि वह अन्तर्मन के अमृत को लूट रहे हैं और लूटने के पश्चात ये किसी की चीख पुकार नहीं सुनते। यह संसार अंधा है और इसका व्यवहार भी अज्ञानियों जैसा अंधा है; प्रकाश रूप गुरु के बिना चारों ओर घोर अंधकार ही अंधकार है।। २ ।। अहंकार भाव में मेरा मेरा करते हुए जीव दुखी बने रहते हैं परन्तु मरते समय कुछ भी साथ नहीं जाता। जो व्यक्ति गुरमुख हो जाता है वह प्रभु-नाम की आराधना करता है और सदैव प्रभु-नाम का ही सुमिरन करता रहता है। उस प्रभु की सच्ची वाणी के माध्मय से जो प्रभु के गुण गाता है वह उसकी कृपादृष्टि से परम सुख को प्राप्त कर लेता है।। ३ ।। सच्चे गुरु का दिया हुआ ज्ञान सदैव अन्तर्मन का प्रकाश बना रहता है और बादशाहों के ऊपर भी उस प्रभु का हुकम ही चलता है। इस तथ्य को जान लेने वाले दिन रात उस प्रभु की भक्ति करते हैं और प्रभु नाम रूपी सच्चे लाभ को प्राप्त करते हैं। हे नानक, राम नाम के माध्यम से ही जीव का उद्धार होता है और शब्द में लीन होने से ही प्रभु मिलता है।। ४ ।। २ ।। सोरठि महला ३ ।। यदि व्यक्ति प्रभु के दासों का भी दास हो जाए और अपने अर्न्तमन से अहंकार गँवा दे तो वह प्रभु को प्राप्त कर सकता है। भक्तजनों की वयस्तता तो आनन्द रूप हरि ही है। वे सदैव हरि के ही गुण गाते रहते हैं। शब्द-ब्रह्म में सदैव लीन होकर वे एक ही रंग में रहते हुए प्रभु में समाए रहते हैं।। १ ।। हे प्रभु, तेरी कृपादृष्टि ही सच्ची है। हे प्यारे प्रभु, अपने सेवकों पर कृपा करो और हमारे सम्मान को बचा लो।। रहाउ।। शब्द के माध्मय से गुणानुवाद करते हुए मैं सदैव आध्यात्मिक रूप से जीवित बना रहता हूँ और गुरु की मति में चलते रहने से मेरा भय भाग खड़ा होता है। मेरा सच्चा प्रभु अत्यन्त सौन्दर्य का घर है। गुरु की सेवा करने से ही उसमें चित्त लीन होता है। जिसने सच्चे शब्द और सच्ची वाणी को जान लिया है वह सेवक ही सदैव सावधान बना रहता है।। २ ।। वह प्रभु अत्यन्त गंभीर और सदैव सुख देने वाला दाता है; उसकी सीमा को नहीं जाना जा सकता। जब पूर्ण गुरु की सेवा की जाती है तो चिन्ताओं से परे रहने वाला प्रभु मन में बस जाता है। ऐसी स्थिति में मन, तन निर्मल हो जाता है, अन्तर्मन में सदैव सुख बना रहता है और मन से भ्रम चुक जाता है।। ३ ।। प्रभु का मार्ग सदैव एक विषम मार्ग है जिसे कोई गुरु के विचारों का चिंतन करके ही पा सकता है। ऐसा जीव प्रभु के प्रेम में लीन होकर और शब्द में मस्त होकर अहंकार एवं अन्य विकारों को छोड़ देता है। हे नानक, ऐसा जीव उस एक प्रभु के नाम के रस में रंग जाता है जो शब्द के माध्यम से व्यक्ति के जीवन को सँवारने योग्य होता है

॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ तुधु नो सदा सालाही पिआरे जिचरु घट अंतरि है सासा ॥ इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा ॥ हम मूड़ मुगध सदा से भाई गुर कै सबदि प्रगासा ॥ १ ॥ हरि जीउ तुम आपे देहु बुझाई ॥ हरि जीउ तुधु विटहु वारिआ सद ही तेरे नाम विटहु बलि जाई ॥ रहाउ ॥ हम सबदि मुए सबदि मारि जीवाले भाई सबदे ही मुकति पाई ॥ सबदे मनु तनु निरमलु होआ हरि वसिआ मनि आई ॥ सबदु गुर दाता जितु मनु राता हरि सिउ रहिआ समाई ॥ २ ॥ सबदु न जाणहि से अंने बोले से कितु आए संसारा ॥ हरि रसु न पाइआ बिरथा जनमु गवाइआ जंमहि वारो वारा ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा माहि समाणे मनमुख मुगध गुबारा ॥ ३ ॥ आपे करि वेखै मारगि लाए भाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ जो धुरि लिखिआ सु कोइ न मेटै भाई करता करे सु होई ॥ नानक नामु वसिआ मन अंतरि भाई अवरु न दूजा कोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ३ ॥ गुरमुखि भगति करहि प्रभ भावहि अनदिनु नामु वखाणे ॥ भगता की सार करहि आपि राखहि जो तेरै मनि भाणे ॥ तू गुणदाता सबदि पछाता गुण कहि गुणी समाणे ॥ १ ॥ मन मेरे हरि जीउ सदा समालि ॥ अंत कालि तेरा बेली होवै सदा निबहै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ दुसट चउकड़ी सदा कूड़ु कमावहि ना बूझहि वीचारे ॥ निंदा दुसटी ते किनि फलु पाइआ हरणाखस नखहि बिदारे ॥ प्रहिलादु जनु सद हरि गुण गावै हरि जीउ लए उबारे ॥ २ ॥ आपस कउ बहु भला करि जाणहि मनमुखि मति न काई ॥ साधू जन की निंदा विआपे जासनि जनमु गवाई ॥ राम नामु कदे चेतहि नाही अंति गए पछुताई ॥ ३ ॥ सफलु जनमु भगता का कीता गुर सेवा आपि लाए ॥ सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए ॥ नानक दासु कहै बेनंती हउ लागा तिन कै पाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ सोरठि महला ३ ॥ सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै ॥ आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ॥ बिनु सतिगुर सुखु कदे न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥ १ ॥ हरि के दास

।। ४ ।। ३ ।। सोरठि महला ३ ।। हे मेरे प्यारे प्रभु, जब तक मेरे अन्दर सांस चल रही है मैं सदैव तेरा ही यश गाता रहूं। एक क्षण भर के लिए भी हे प्रभु, यदि तू मुझे भूल जाए तो ऐसा लगता है जैसे तेरा सुमिरन किए पचासों बरस हो गए हैं। हम तो सदा से ही मूढ़ और मूर्ख व्यक्ति थे परन्तु शब्द-गुरु के माध्यम से ही हमें प्रकाश प्राप्त हुआ है।। १ ।। हे प्रभु, तू स्वयं ही हमें अपने रहस्य को बता दे। हे प्रभु, मैं तो तुझ पर सदैव बलिहारी जाता हूँ और तेरे नाम पर, अपने आप को न्यौछावर करता हूं।। रहाउ।। हम शब्द के माध्यम से ही अहम् भाव के प्रति मरे और शब्द ने ही हमें मारकर हे भाई, पुनः जीवित कर दिया तथा शब्द के माध्यम से ही हमें मुक्ति प्राप्त हुई है। शब्द के माध्यम से ही हमारा तन, मन निर्मल बना और मन में प्रभु का निवास हुआ है। शब्द ही गुरु और वह दाता है जिसमें मन लीन बना है और प्रभु में समाया हुआ है।। २ ।। जो शब्द के रहस्य को नहीं जानते वे अंधे और बहरे हैं तथा वे भला संसार में क्या करने आए हैं। उन्होंने हरि रस को प्राप्त नहीं किया, व्यर्थ ही जीवन गँवा दिया है और अब वे बार-बार जन्म लेते रहते हैं। वे गन्दगी के कीड़े गन्दगी में ही लीन बने रहकर मनमुख रूप में मूर्ख बने हुए अज्ञान के अंधकार में भटकते रहते हैं।। ३ ।। हे मेरे भाई, प्रभु स्वयं ही सबको पैदा करता है, उनका भरण पोषण करता है तथा स्वयं ही उन्हें सीधे रास्ते पर ले आता है; उस प्रभु के बिना अन्य कोई भी नहीं है। हे भाई, जो प्रारम्भ से ही लिखा गया है उसे कोई मिटा नहीं सकता और कर्ता प्रभु जो करता है वही होता है। हे नानक, जब मन में प्रभु-नाम बस गया है तो हे भाई, फिर दूसरा अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता।। ४ ।। ४ ।। सोरठि मः ३ ।। गुरमुख बनकर जो भक्ति करते हैं वे प्रभु को भाते हैं और वे ही प्रति दिन उस प्रभु के नाम का उच्चारण करते रहते हैं। भक्तजनों की खोज खबर प्रभु स्वयं रखता है परन्तु भक्त वे ही हैं जो तेरे मन को भाते हैं। तू ही वह गुणों का दाता है जिसे शब्द के माध्यम से पहचाना जाता है और यह जाना जाता है कि गुण गाते हुए ही गुणों वाले प्रभु में लीन हुआ जाता है।। १ ।। हे मेरे मन, तू सदैव प्रभु का सुमिरन करता रह। अंतिम समय में प्रभु ही तेरा साथी होगा और प्रभु ही सदैव तेरे साथ बना रहेगा।। रहाउ।। दुष्टों की मण्डली सदैव झूठा आचरण ही अपनाए रखती है और न तो कुछ बूझती है और न ही कुछ चिंतन करती है। पापिन निन्दा से भला किसने लाभ प्राप्त किया है क्योंकि हिरण्यकशिपु जैसे को भी नाखुनों से ही चीर दिया गया। सेवक प्रहलाद जो सदैव हरि के गुण गाता था उसे परमात्मा ने बचा लिया।। २ ।। मनमुख व्यक्ति अपने आप को बहुत भला जानता है और वास्तव में उसे कुछ भी अक्ल नहीं होती। ऐसे व्यक्ति साधु पुरुषों की निन्दा में ही लीन बने रहते हैं और अपने जीवन को गंवाकर यहां से चले जाते हैं। ये कभी भी प्रभु नाम का सुमिरन नहीं करते और अन्त में यहां से पछताते हुए चले जाते हैं।। ३ ।। प्रभु ने गुरु की सेवा में लगाकर भक्त जनों का जन्म सफल कर दिया है। वे शब्द में और सहजभाव में रंगे हुए मस्त होकर सदैव प्रभु के गुण गाते रहते हैं। दास नानक विनती करता है कि मैं तो उनके चरणों में आ लगा हूँ।। ४ ।। ५ ।। सोरठि महला ३ ।। हे भाई, वही सिक्ख अच्छा है जो गुरु की रज़ा में चलता है। जो अपनी मर्जी में जीवन व्यतीत करता है वह प्रभु से बिछुड़ कर चोटें खाता रहता है। सच्चे गुरु के बिना हे भाई, यह कभी भी सुख प्राप्त नहीं करता और बार-बार पछताता रहता है।। १ ।। प्रभु के सेवक,

सुहेले भाई ॥ जनम जनम के किलबिख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥ इहु कुटंबु सभु जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा ॥ बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ॥ करम करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारो वारा ॥ २ ॥ हउ मेरा जगु पलचि रहिआ भाई कोइ न किस ही केरा ॥ गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ बसेरा ॥ ऐथै बूझै सु आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥ ३ ॥ सतिगुरू सदा दइआलु है भाई विणु भागा किआ पाईऐ ॥ एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाईऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ सोरठि महला ३ चौतुके ॥ सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदै बाणी ॥ सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए हउमै सबदि समाणी ॥ बिनु गुर साचे भगति न होवी होर भूली फिरै इआणी ॥ मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुए विणु पाणी ॥ १ ॥ भाई रे सदा रहहु सरणाई ॥ आपणी नदरि करे पति राखै हरि नामो दे वडिआई ॥ रहाउ ॥ पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सचै वीचारा ॥ हिरदै जगजीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अहंकारा ॥ सदा हजूरि रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा ॥ जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आइआ ॥ हरि रसु चाखि सदा मनु त्रिपतिआ गुण गावै गुणी अघाइआ ॥ कमलु प्रगासि सदा रंगि राता अनहद सबदु वजाइआ ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी सचे सचि समाइआ ॥ ३ ॥ राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै समाई ॥ गुरमुखि होवै सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई ॥ जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥ नानक नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि मः ३ दुतुके ॥ सतिगुर मिलिऐ उलटी भई भाई जीवत मरै ता बूझ पाइ ॥ सो गुरू सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ मन रे हरि हरि सेती लिव लाइ ॥ मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाए हरि थाइ ॥ रहाउ ॥

हे भाई, सदैव सुखी रहते हैं। उनके जन्मों जन्मों के पाप और दुख कट जाते हैं और वह प्रभु स्वयं ही उन्हें अपने में मिला लेता है।। रहाउ।। यह परिवार इत्यादि तो जीव के लिए मात्र बन्धन हैं और हे भाई, संसार तो भ्रमों में भूला हुआ है। गुरु के बिना बन्धन नहीं टूटते और गुरमुख बनकर ही मोक्ष के द्वार का पता चलता है। शब्द-गुरु को न पहचान कर किए जाने वाले कर्मों के फलस्वरूप जीव बार-बार जन्मता मरता रहता है।। २ ।। हे भाई, यह सारा संसार मैं और मेरे में उलझा हुआ है। यहाँ कोई भी किसी का सहायक नहीं। गुरमुख व्यक्ति ही प्रभु का साक्षात्कार प्राप्त करते हैं, उसके गुण गाते हैं और अपने अन्तर्मन में ही अर्थात अपने आत्मज्ञान में ही निवास बनाए रहते हैं। जो इस संसार में रहते हुए भी अपने आप को समझ लेता है वह वास्तव में अपने आप को पहचान लेता है और प्रभु भी उसी का होता है।। ३ ।। हे भाई, सच्चा गुरु तो सदैव दयालु बना रहता है परन्तु भाग्य के बिना क्या प्राप्त किया जा सकता है। वह प्रभु तो समान कृपादृष्टि से सबको देखता है परन्तु जिस जिस जीव का जैसा जैसा भाव होता है उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। हे नानक, अन्तर्मन में प्रभु नाम तभी निवास करता है जब अपने अन्दर से अपना अभिमान त्याग दिया जाता है।। ४ ।। ६ ।। सोरठि महला ३ चार पंक्तियों वाले ।। सच्चे गुरु के माध्यम से ही सच्ची भक्ति होती है और हृदय में भी सच्ची वाणी स्थित हो जाती है। सच्चे गुरु की सेवा से व्यक्ति सदैव सुख प्राप्त करता है और उसका अहंकार प्रभु-नाम में ही लीन होकर समाप्त हो जाता है। नासमझ दुनियां भूल कर भटकती रहती है क्योंकि सच्चे गुरु के बिना सच्ची भक्ति नहीं हो सकती। मनमुख व्यक्ति भटकते हुए सदैव दुख पाते हैं और ऐसे ही नष्ट हो जाते हैं जैसे कोई पानी के बिना नष्ट हो जाता है।। १ ।। हे भाई, सदैव प्रभु की शरण में रहो। वह अपनी कृपादृष्टि से जीव के सम्मान की रक्षा करता है और जीव को नाम के माध्यम से बड़प्पन प्रदान करता है।। रहाउ।। शब्द की सच्ची विचार और पूर्ण गुरु के माध्यम से व्यक्ति अपने आपको पहचानता है। काम, क्रोध और अहंकार का त्याग करने से वह सारे संसार का प्राण प्रभु सदैव हृदय में बसता रहता है। हृदय में प्रभु का अपरंपर नाम धारण करने से प्रभु सदैव सामने साक्षात् और सब ओर व्याप्त नज़र आता है। प्रत्येक युग में प्रभु की वाणी शब्द के माध्यम से पहचानी जाती है और इस वाणी के माध्यम से प्रभु-नाम मन को प्यारा लगता है।। २ ।। सच्चे गुरु की सेवा करके जिसने प्रभु-नाम को पहचान लिया है उसका संसार में आना और सम्पूर्ण जीवन सफल माना जाता है। प्रभु-नाम के रस को चखकर मन सदा के लिए तृप्त होकर प्रभु के गुण गाता है और उसके गुणों से ही सन्तुष्ट बना रहता है। उसके हृदय का कमल खिल उठता है और सदैव प्रभु के रंग में रंगे हुए के हृदय में अनहत् शब्द बजने लग जाता है। अब उसका तन और मन एवं वाणी निर्मल हो जाते हैं और वह जीव सच्चा बनकर उस परम सत्य में लीन हो जाता है।। ३ ।। राम नाम की वास्तविकता को कोई भी नहीं बूझता; वह गुरु की मति में चलने से हृदय में धारण होती है। जो व्यक्ति गुरमुख हो जाता है वही इस मार्ग को पहचानता है और प्रभु नाम के रस के साथ उसकी जीभ भी रसमय हो जाती है। जप, तप संयम सब गुरु के माध्यम से ही होते हैं और हृदय में प्रभु-नाम आन बसता है। हे नानक, जो प्रभु के नाम को मन में संभाल लेते हैं वे सेवक ही सुन्दर लगते हैं और उन्हें ही सच्चे प्रभु के द्वार पर सम्मान प्राप्त होता है।। ४ ।। ७ ।। सोरठि महला ३ दो पंक्तियों वाले ।। हे भाई, सच्चे गुरु को मिलकर यह मति संसार की ओर से उलट गई है और व्यक्ति जब आध्यात्मिक रूप से जीवित होकर विषय विकारों के संदर्भ से मरता है तभी वह इस सारे संसार के रहस्य को समझ पाता है। हे भाई, वही गुरु है और वही सच्चा सिक्ख है जो परमात्मा रूपी ज्योति के साथ अपनी ज्योति मिला देता है।। १ ।। हे मन, तू प्रभु के साथ अपनी लौ लगा। हे मन, प्रभु का जाप करने से वह प्यारा लगने लग जाता है और गुरमुख बनकर यह मन प्रभु के स्थान को पा लेता है।। रहाउ।।

बिनु गुर प्रीति न ऊपजै भाई मनमुखि दूजै भाइ ॥ तुह कुटहि मनमुख करम करहि भाई पलै किछू न पाइ ॥ २ ॥ गुर मिलिऐ नामु मनि रविआ भाई साची प्रीति पिआरि ॥ सदा हरि के गुण रवै भाई गुर कै हेति अपारि ॥ ३ ॥ आइआ सो परवाणु है भाई जि गुर सेवा चितु लाइ ॥ नानक नामु हरि पाईऐ भाई गुर सबदी मेलाइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ३ घरु १ ॥ तिही गुणी त्रिभवणु विआपिआ भाई गुरमुखि बूझ बुझाइ ॥ राम नामि लगि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ १ ॥ मन रे त्रै गुण छोडि चउथै चितु लाइ ॥ हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई सदा हरि के गुण गाइ ॥ रहाउ ॥ नामै ते सभि ऊपजे भाई नाइ विसरिऐ मरि जाइ ॥ अगिआनी जगतु अंधु है भाई सूते गए मुहाइ ॥ २ ॥ गुरमुखि जागे से उबरे भाई भवजलु पारि उतारि ॥ जग महि लाहा हरि नामु है भाई हिरदै रखिआ उर धारि ॥ ३ ॥ गुर सरणाई उबरे भाई राम नामि लिव लाइ ॥ नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जितु लगि पारि जन पाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ सोरठि महला ३ घरु १ ॥ सतिगुरु सुख सागरु जग अंतरि होर थै सुखु नाही ॥ हउमै जगतु दुखि रोगि विआपिआ मरि जनमै रोवै धाही ॥ १ ॥ प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाइ ॥ सतिगुरु सेवहि ता सुखु पावहि नाहि त जाहिगा जनमु गवाइ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण धातु बहु करम कमावहि हरि रस सादु न आइआ ॥ संधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझे दुखु पाइआ ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवे सो वडभागी जिस नो आपि मिलाए ॥ हरि रसु पी जन सदा त्रिपतासे विचहु आपु गवाए ॥ ३ ॥ इहु जगु अंधा सभु अंधु कमावै बिनु गुर मगु न पाए ॥ नानक सतिगुरु मिलै त अखी वेखै घरै अंदरि सचु पाए ॥ ४ ॥ १० ॥ सोरठि महला ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागा जुग चारे भरमाई ॥ हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि बुझाई ॥ १ ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु तुम पिआरे ॥ सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरि नामु देवहु आधारे ॥ रहाउ ॥ मनसा मारि दुबिधा सहजि समाणी पाइआ नामु अपारा ॥ हरि रसु चाखि मनु निरमलु होआ किलबिख काटणहारा

गुरु के बिना प्रभु से प्रीति पैदा नहीं होती और मनमुख व्यक्ति तो द्वैतभाव में ही लगा रहता है। मनमुख व्यक्ति जो भी कर्म करता है वह केवल छिलका कूटने के समान व्यर्थ कार्य होता है; उसके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता। हे भाई, गुरु के मिलने से मन नाम में लीन होता है और सच्ची प्रीति उत्पन्न होती है। व्यक्ति अब सदैव प्रभु के गुणों में लीन रहता है और हे भाई, गुरु के साथ उसका अपार प्रेम बन जाता है।। ३ ।। हे भाई, इस संसार में आया हुआ वही स्वीकृत है जो गुरु की सेवा में अपना मन लगा लेता है। हे नानक, नाम के माध्यम से उस प्रभु से मिलाप होता है।। ४ ।। ८ ।। सोरठि महला ३ घरु १ ।। हे भाई, तीनों लोकों में तीनों गुण (रज, तम, सत) फैले हुए हैं, केवल गुरमुख होकर ही इस रहस्य को बूझा जा सकता है। हे भाई, ज्ञानवान लोगों से भी जाकर पूछ लो कि राम नाम में लीन होकर ही छुटकारा अथवा मुक्ति संभव होती है।। १ ।। हे मन, तू तीनों गुणों को छोड़कर चौथे पद की सहज अवस्था में चित्त को लीन कर। हे भाई, सदैव प्रभु के गुण गाता जा इससे वह प्रभु तुझे तेरे मन में बसता हुआ ही प्रतीत हो जाएगा।। रहाउ।। प्रभु नाम में से ही सभी लोग पैदा हुए हैं और नाम भूल जाने से सभी मर जाते हैं। हे भाई, यह अज्ञानी जगत तो अंधा है और यहाँ अज्ञान की निद्रा में लीन बने रहने वाले लोग लूट लिए जाते हैं।। २ ।। गुरमुख बन कर जो सावधान हो जाते हैं हे भाई, उनका उद्धार हो जाता है और वे संसार-सागर से पार उतर जाते हैं। इस संसार में प्रभु-नाम ही लाभदायक है। हे भाई, उसे हृदय में धारण करके रखा जाना चाहिए।। ३ ।। हे भाई, प्रभु नाम में लौ लगाकर और गुरु की शरण में आकर ही उद्धार होता है। हे नानक, प्रभु का नाम ही जहाज़ है और प्रभु का नाम ही वह बेड़ा है जिसको पकड़कर व्यक्ति पार उतर जाता है।। ४ ।। ६ ।। सोरठि महला ३ घरु १ ।। इस संसार में सच्चा गुरु ही सुख का सागर है; अन्य किसी स्थान पर भी सुख नहीं है। सारे संसार में अहंकार रूपी दुख का रोग फैला हुआ है जिसमें यह संसार जन्मता है और चीख चीख कर रोता रहता है।। १ ।। हे प्राणी, तू सच्चे गुरु की सेवा करके सुख प्राप्त कर; यदि तू गुरु की सेवा करेगा तो सुख पाएगा अन्यथा तू अपने जीवन को गंवा कर यहां से चला जाएगा।। रहाउ।। तीनों गुणों वाली सांसारिक भाग दौड़ में व्यक्ति अनेकों कर्म करता है परन्तु प्रभु के नाम के रस का स्वाद उसे कभी भी नहीं आता। वह संध्या तर्पण और गायत्री का पाठ करता है परन्तु बिना उनको समझे हुए दुख ही दुख पाता है।। २ ।। जो सच्चे गुरु की सेवा करते हैं और जिसको प्रभु स्वयं अपने में मिला लेता है वह भाग्यशाली है। प्रभु के सेवक हरि रस को पीकर सदैव तृप्त बने रहते हैं और वे अपने अन्तर्मन का अभिमान गंवा देते हैं।। ३ ।। यह संसार अंधा है और अंधकार बढ़ाने वाले आचरण के माध्यम से यह काम करता है; परन्तु गुरु के बिना यह मार्ग नहीं पा सकता। हे नानक, यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो यह अपने ज्ञान की आँखों से देखने लगता है और फिर यह सत्य को अपने अन्दर ही पा लेता है।। ४ ।। १० ।। सोरठि महला ३।। सच्चे गुरु की सेवा के बिना बहुत दुख बना रहता है और जीव चारों युगों में भटकता रहता है। हे प्रभु, हम दीनहीन हैं और तुम सभी युगों में देते रहने वाले दाता हो। हमें शब्द के माध्यम से अपने रहस्य को समझा दो।। १ ।। हे प्रभु, तुम हम पर कृपा करो। हमें दाता सच्चे गुरु का मेल करा दो और हमें प्रभु-नाम का आसरा प्रदान करो।। रहाउ।। मानसिक तृष्णाओं को समाप्त करके अब दुविधाभाव सहजभाव में बदल गया है क्योंकि प्रभु का अपंरपर नाम प्राप्त हो गया है। पापों को काटने वाले हरि रस को चखकर अब मन निर्मल हो गया है

॥ २ ॥ सबदि मरहु फिरि जीवहु सद ही ता फिरि मरणु न होई ॥ अंम्रितु नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई ॥ ३ ॥ दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई ॥ नानक नामि रते सुखु पाइआ दरगह जापहि सेई ॥ ४ ॥ ११ ॥ सोरठि महला ३ ॥ सतिगुर सेवे ता सहज धुनि उपजै गति मति तद ही पाए ॥ हरि का नामु सचा मनि वसिआ नामे नामि समाए ॥ १ ॥ बिनु सतिगुर सभु जगु बउराना ॥ मनमुखि अंधा सबदु न जाणै झूठै भरमि भुलाना ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ भरमि भुलाइआ हउमै बंधन कमाए ॥ जंमणु मरणु सिर ऊपरि ऊभउ गरभ जोनि दुखु पाए ॥ २ ॥ त्रै गुण वरतहि सगल संसारा हउमै विचि पति खोई ॥ गुरमुखि होवै चउथा पदु चीनै राम नामि सुखु होई ॥ ३ ॥ त्रै गुण सभि तेरे तू आपे करता जो तू करहि सु होई ॥ नानक राम नामि निसतारा सबदे हउमै खोई ॥ ४ ॥ १२ ॥

सोरठि महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आपे आपि वरतदा पिआरा आपे आपि अपाहु ॥ वणजारा जगु आपि है पिआरा आपे साचा साहु ॥ आपे वणजु वापारीआ पिआरा आपे सचु वेसाहु ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नामु सलाह ॥ गुर किरपा ते पाईऐ पिआरा अंम्रितु अगम अथाह ॥ रहाउ ॥ आपे सुणि सभ वेखदा पिआरा मुखि बोले आपि मुहाहु ॥ आपे उझड़ि पाइदा पिआरा आपि विखाले राहु ॥ आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे वेपरवाहु ॥ २ ॥ आपे आपि उपाइदा पिआरा सिरि आपे धंधड़ै लाहु ॥ आपि कराए साखती पिआरा आपि मारे मरि जाहु ॥ आपे पतणु पातणी पिआरा आपे पारि लंघाहु ॥ ३ ॥ आपे सागरु बोहिथा पिआरा गुरु खेवटु आपि चलाहु ॥ आपे ही चड़ि लंघदा पिआरा करि चोज वेखै पातिसाहु ॥ आपे आपि दइआलु है पिआरा जन नानक बखसि मिलाहु ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला ४ चउथा ॥ आपे अंडज जेरज सेतज उतभुज आपे खंड आपे सभ लोइ ॥ आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु परोइ ॥

।। २ ।। यदि शब्द में लीन होकर मर जाओगे तो सदैव जीवित बने रहोगे और फिर कभी भी मरण नहीं होगा। प्रभु का अमृत-नाम सदैव मन को मीठा लगता है परन्तु कोई बिरला ही शब्द के माध्यम से इसे प्राप्त करता है।। ३ ।। दाता प्रभु ने देने योग्य सभी वस्तुएं अपने हाथ में ही रखी हैं; वह जिसे चाहता है उसी को ही देता है। हे नानक, प्रभु के दरबार में वे ही प्रकट रूप से दिखाई देते हैं जिन्होंने प्रभु नाम में रंगकर सुख प्राप्त किया है।। ४ ।। ११ ।। सोरठि महला ३।। यदि सच्चे गुरु की सेवा की जाए तो सहजभाव की धुन उत्पन्न होती है और तभी जीव को मुक्ति और ज्ञान प्राप्त होता है। जब प्रभु का सच्चा नाम मन में बस जाता है तो जीव नाम के माध्यम से नाम के धारक प्रभु में समा जाता है।। १।। सच्चे गुरु के बिना सारा संसार पागल बना रहता है। यह मनमुख और अंधा बनकर शब्द को नहीं पहचानता और झूठ में लीन होकर भ्रमों में भटकता रहता है।। रहाउ।। तीनों गुणों से मुक्त होकर और माया के भ्रमों में भटकता हुआ यह अहंकार के बंधनों को इकट्ठा कर लेता है। जन्म मरण अब इसके सिर पर खड़ा रहता है और अब यह गर्भ योनियों में पड़कर दुख पाता रहता है।। २ ।। सारे संसार का व्यवहार तीनों गुणों के अन्तर्गत ही है और अहंकार में पड़कर इसने अपने सम्मान को खो दिया है। यदि व्यक्ति गुरमुख हो जाए तब वह चौथे पद को अर्थात परमपद को जानता है और तब उसे प्रभु नाम के माध्यम से सुख प्राप्त होता है।। ३ ।। हे प्रभु, तू स्वयं ही कर्ता है, ये तीनों गुण सब तेरे ही हैं और जो तू करता है वही होता है। हे नानक, राम नाम के माध्यम से ही मुक्ति प्राप्त होती है और शब्द के माध्यम से ही अहंकार खोया जाता है।। ४ ।। १२ ।।

सोरठि महला ४ घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

वह प्यारा प्रभु स्वयं ही सबमें कार्यशील बना रहता है और आप ही वह सबसे अलिप्त है। जगत् रूप व्यापारी वह स्वयं ही है और स्वयं ही सच्चा साहूकार है जो सबको रासपूंजी देता है। स्वयं ही वह व्यापारी है और वह प्यारा प्रभु स्वयं ही सच्ची साख (भरोसा) है।। १ ।। हे मन, तू प्रभु का गुणानुवाद करते हुए उसका सुमिरन कर। वह अमृत रूपी अगम्य एवं अथाह प्यारा प्रभु गुरु की कृपा से ही पाया जाता है।। रहाउ।। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही सब कुछ सुनता देखता है और सारे जीवों के मुखों के माध्यम से स्वयं ही बोलता है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही उजाड़ मार्गों पर डाल देता है और स्वयं ही रास्ता भी दिखा देता है। यह प्यारा प्रभु स्वयं ही सब कुछ है और स्वयं ही बेपरवाह भी है।। २ ।। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही सब कुछ उत्पन्न करता है और स्वयं ही सबको अपने अपने काम में लगाए रहता है। वह प्रभु स्वयं ही इस रचना को बनाता है और वह प्यारा जब इसे नष्ट करता है तो यह नष्ट हो जाती है। वह प्रभु स्वयं ही दरिया को पार करवा देने वाला घाट है और स्वयं ही सबको पार भी कराता है।। ३ ।। वह प्रभु स्वयं ही सागर है, स्वयं ही सागर पर चलने वाला जहाज़ है और स्वयं ही गुरु रूप केवट बनकर उस जहाज़ को चलाता है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही उस पर बैठकर पार होता है और वह सम्राट प्रभु स्वयं ही कौतुक रच रच कर उन्हें देखता रहता है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही दयालु है और हे नानक, अपने दासों को क्षमा करके उन्हें अपने से मिला लेता है।। ४ ।। १ ।। सोरठि महला ४ ।। वह प्रभु स्वयं ही जीवन के चारों स्रोत (अंडज, स्वेदज, उदभिज और माँ का गर्भ) है, स्वयं ही सभी द्वीप और लोक है। वह स्वयं ही सूत्र और उसकी अनेक मणियां है और अपनी शक्ति के माध्यम से उसने सारे जगत को उस सूत्र में पिरो रखा है।

आपे ही सूतधारु है पिआरा सूतु खिंचे ढहि ढेरी होइ ॥ १ ॥ मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ सतिगुर विचि नामु निधानु है पिआरा करि दइआ अंम्रितु मुखि चोइ ॥ रहाउ ॥ आपे जल थलि सभतु है पिआरा प्रभु आपे करे सु होइ ॥ सभना रिजकु समाहदा पिआरा दूजा अवरु न कोइ ॥ आपे खेल खेलाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ २ ॥ आपे ही आपि निरमला पिआरा आपे निरमल सोइ ॥ आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ आपे अलखु न लखीऐ पिआरा आपि लखावै सोइ ॥ ३ ॥ आपे गहिर गंभीरु है पिआरा तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ सभि घट आपे भोगवै पिआरा विचि नारी पुरख सभु सोइ ॥ नानक गुपतु वरतदा पिआरा गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै ॥ आपे वेखि विगसदा पिआरा करि चोज वेखै प्रभु आपै ॥ आपे वणि तिणि सभतु है पिआरा आपे गुरमुखि जापै ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नाम रसि ध्रापै ॥ अंम्रित नामु महा रसु मीठा गुर सबदी चखि जापै ॥ रहाउ ॥ आपे तीरथु तुलहड़ा पिआरा आपि तरै प्रभु आपै ॥ आपे जालु वताइदा पिआरा सभु जगु मछुली हरि आपै ॥ आपि अभुलु न भुलई पिआरा अवरु न दूजा जापै ॥ २ ॥ आपे सिंङी नादु है पिआरा धुनि आपि वजाए आपै ॥ आपे जोगी पुरखु है पिआरा आपे ही तपु तापै ॥ आपे सतिगुरु आपि है चेला उपदेसु करै प्रभु आपै ॥ ३ ॥ आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपे ही जपु जापै ॥ आपे अंम्रितु आपि है पिआरा आपे ही रसु आपै ॥ आपे आपि सलाहदा पिआरा जन नानक हरि रसि ध्रापै ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे कंडा आपि तराजी प्रभि आपे तोलि तोलाइआ ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइआ ॥ आपे धरती साजीअनु पिआरै पिछै टंकु चड़ाइआ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि हरि धिआइ सुखु पाइआ ॥ हरि हरि नामु निधानु है पिआरा गुरि पूरै मीठा लाइआ ॥ रहाउ ॥ आपे धरती आपि जलु पिआरा आपे करे कराइआ ॥ आपे हुकमि वरतदा पिआरा जलु माटी बंधि रखाइआ ॥ आपे ही भउ

वह स्वयं ही सूत्रधार है, उस सूत्र को अपने हाथ में रखने वाला है और जब सूत्र खिंच जाता है तो सारी जगत रूपी मणियां बिखर जाती हैं।। १ ।। हे मेरे मन, मुझे प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं दिखता। सच्चे गुरु में ही प्रभु-नाम का भंडार है और वह प्रभु स्वयं ही दया करके हमारे मुंह में नाम रूपी अमृत डालता है।। रहाउ।। जल और स्थल वह प्यारा प्रभु स्वयं ही है और जो वह स्वयं करता है वही होता है। वह सबको रोज़ी देता है और उस प्यारे प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं है। वह स्वयं ही संसार के खेल खिलाता है और वास्तव में जो वह स्वयं करता है वही होता है।। २ ।। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही पवित्र है और उसका यश भी पवित्र है। वह स्वयं ही अपने मूल्य को जानता है और स्वयं ही जो करता है वह होता है। वह स्वयं समझ में न आने वाला प्यारा है जिसे देखा नहीं जा सकता; वह स्वयं ही अपने आपको दिखाता है।। ३ ।। वह स्वयं ही गहरा और गंभीर है; उसके जितना बड़ा अन्य कोई नहीं। सभी शरीरों में स्थित होकर वह उनके भोगों को भोगता है और स्त्री पुरुष सब में वह स्वयं ही है। हे नानक, वह प्यारा प्रभु स्वयं ही गुप्त रूप से सबमें कार्यशील है तथा वह गुरु के मुख से ही प्रकट होता है।। ४ ।। २ ।। सोरठि महला ४ ।। वह प्यारा सब कुछ स्वयं ही है और वह स्वयं ही सृजना करता है और स्वयं ही नष्ट कर देता है। वह प्यारा प्रभु सब कुछ देखकर स्वयं ही आनन्दित हो उठता है और वह प्रभु स्वयं ही सब खेल तमाशे बनाकर उन्हें देखता है। वह वृक्षों, वनों और घास आदि में स्वयं ही लीन है और गुरु के उपदेश के माध्यम से ही उसे जाना जाता है।। १ ।। हे मन, तू प्रभु का जाप कर ताकि उसके नाम के रस से तू तृप्त हो जाए। अमृत-नाम महान एवं मीठा रस है जिसे शब्द-गुरु के माध्यम से चखकर जाना जाता है।। रहाउ।। प्रभु स्वयं ही पार उतारने वाला बेड़ा और तीर्थ है और वह प्रभु स्वयं ही तैर कर पार होता है। वह स्वयं ही अपना जाल फेंकता है और यह सारा संसार मछली के रूप में वास्तव में वह स्वयं परमात्मा ही होता है। वह स्वयं कभी भी न भूलने वाला प्रभु है और दूसरा कोई भी दिखाई नहीं देता।। २ ।। वह स्वयं ही योगियों का सिंगीनाद है और वह प्यारा प्रभु स्वयं ही उसमें से स्वर निकालता है। वह योगी पुरुष स्वयं प्रभु ही है और स्वयं ही कठोर साधना वाला तप करता है। वह स्वयं ही सच्चा गुरु है, स्वयं ही चेला है और वह प्रभु स्वयं ही द्वेष करने वाला है।। ३ ।। वह प्रभु स्वयं ही नाम का सुमिरन करवाता है और वह स्वयं ही जाप भी है और जपने वाला भी है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही अमृत है और स्वयं ही सब प्रकार का रस है। हे दास नानक, प्रभु स्वयं ही अपना गुणानुवाद करता है और स्वयं ही नाम-रस से तृप्त होता है ।।४।।३।। सोरठि महला ।।४।। वह स्वयं ही छोटा सा कंडा और स्वयं ही तराजू है जिसमें प्रभु स्वयं ही बाटों के साथ तौला जाता है। वह स्वयं ही साहूकार है, स्वयं ही व्यापारी है और स्वयं ही व्यापार कराता है। उस प्यारे प्रभु ने स्वयं ही धरती की रचना की है और पीछे तराजू में चार माशे भर का बाट डालकर धरती को सम्भाला हुआ है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु सुमिरन से ही सुख मिला है। प्रभु का नाम ही सुखों का भण्डार है और पूर्ण गुरु ने इसकी तरफ ध्यान लगवाया है।। रहाउ।। प्रभु स्वयं ही धरती और स्वयं ही जल है और वह प्यारा स्वयं ही सब कुछ करता कराता है। वह अपने हुकुम में स्वयं ही कार्यशील होता है और उसने पानी और धरती जैसे तरल और ठोस को एक स्थान पर ही बांध कर रखा हुआ है। वह स्वयं ही सब में नियम के रूप में भय

पाइदा पिआरा बंनि बकरी सीहु हढाइआ ॥ २ ॥ आपे कासट आपि हरि पिआरा विचि कासट अगनि रखाइआ ॥ आपे ही आपि वरतदा पिआरा भै अगनि न सकै जलाइआ ॥ आपे मारि जीवाइदा पिआरा साह लैदे सभि लवाइआ ॥ ३ ॥ आपे ताणु दीबाणु है पिआरा आपे कारै लाइआ ॥ जिउ आपि चलाए तिउ चलीऐ पिआरे जिउ हरि प्रभ मेरे भाइआ ॥ आपे जंती जंतु है पिआरा जन नानक वजहि वजाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे स्रिसटि उपाइदा पिआरा करि सूरजु चंदु चानाणु ॥ आपि निताणिआ ताणु है पिआरा आपि निमाणिआ माणु ॥ आपि दइआ करि रखदा पिआरा आपे सुघड़ु सुजाणु ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु नीसाणु ॥ सतसंगति मिलि धिआइ तू हरि हरि बहुड़ि न आवण जाणु ॥ रहाउ ॥ आपे ही गुण वरतदा पिआरा आपे ही परवाणु ॥ आपे बखस कराइदा पिआरा आपे सचु नीसाणु ॥ आपे हुकमि वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ॥ २ ॥ आपे भगति भंडार है पिआरा आपे देवै दाणु ॥ आपे सेव कराइदा पिआरा आपि दिवावै माणु ॥ आपे ताड़ी लाइदा पिआरा आपे गुणी निधानु ॥ ३ ॥ आपे वडा आपि है पिआरा आपे ही परधाणु ॥ आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे तुलु परवाणु ॥ आपे अतुलु तुलाइदा पिआरा जन नानक सद कुरबाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे सेवा लाइदा पिआरा आपे भगति उमाहा ॥ आपे गुण गावाइदा पिआरा आपे सबदि समाहा ॥ आपे लेखणि आपि लिखारी आपे लेखु लिखाहा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु ओमाहा ॥ अनदिनु अनदु होवै वडभागी लै गुरि पूरै हरि लाहा ॥ रहाउ ॥ आपे गोपी कानु है पिआरा बनि आपे गऊ चराहा ॥ आपे सावल सुंदरा पिआरा आपे वंसु वजाहा ॥ कुवलीआ पीड़ु आपि मराइदा पिआरा करि बालक रूपि पचाहा ॥ २ ॥ आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा करि वेखै आपि चोजाहा ॥ करि बालक रूप उपाइदा पिआरा चंडूरु कंसु केसु माराहा ॥ आपे ही बलु आपि है पिआरा बलु भंनै मूरख मुगधाहा ॥ ३ ॥ सभु आपे जगतु उपाइदा पिआरा वसि

स्थित करता है और बकरी तथा शेर को इकट्ठा बांध कर चलाता है।। २ ।। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही लकड़ी है और लकड़ी में रखी हुई आग भी है क्योंकि वह प्रभु स्वयं ही लकड़ी और आग में कार्यशील बना रहता है। भयभीत अग्नि लकड़ी के अन्दर होते हुए भी उसे जला नहीं पाती। वह प्रभु स्वयं ही मारकर जीवित कर देने वाला है और सब उसी के प्रदान किए श्वास लेते हैं।। ३ ।। वह स्वयं ही बल और आदेश देने वाली शक्ति है और उसने ही सबको कामों में लगाया हुआ है। हे प्यारे, जैसे वह चलाता है वैसे ही हम चलते हैं और जैसे हरि प्रभु को भाता है वही होता है। वह स्वयं ही वाद्य बजाने वाला और स्वयं ही वाद्य है। संसार रूपी जीव वाद्य रूप में हे नानक, उसी के बजाए हुए ही हम बजते रहते हैं।। ४ ।। ४ ।। सोरठि महला ४ ।। सूर्य और चन्द्रमा को प्रकाशित करके वह प्यारा प्रभु स्वयं ही सृष्टि उत्पन्न करता है। बलहीनों का बल वह प्यारा प्रभु है और विनम्र लोगों का मान सम्मान भी वही प्रभु है। वह दया करके स्वयं ही रक्षा करता है तथा वह प्यारा प्रभु चतुर और सब कुछ अच्छी तरह जानने वाला है।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु नाम का सुमिरन कर जो प्रकट रूप से सब ओर स्थित है। सत्संगत में मिलकर तू प्रभु का सुमिरन कर इससे तुझे फिर आना जाना नहीं पड़ेगा।। रहाउ।। सभी गुणों में वह प्रभु स्वयं ही कार्यशील है और स्वयं ही वह स्वीकृत होता है। वह स्वयं ही कृपा करता है और स्वयं ही जीव को सच्चे होने का निशान भी लगाता है। वह प्रभु स्वयं ही हुकुम के रूप में कार्यशील रहता है और स्वयं ही आदेश रूप में विचरण करता है।। २ ।। वह प्रभु स्वयं ही भक्ति का भंडार है और स्वयं ही दान देने वाला है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही सेवा कराता है और स्वयं ही सम्मान दिलाता है। वह प्यारा स्वयं ही समाधि लगाता है और स्वयं ही गुणों का भण्डार है।। ३ ।। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही बड़ा है और स्वयं ही प्रधान है। वह स्वयं ही अपना मूल्य आंकता है और स्वयं ही तौल में पूरा उतरता है। न तौले जा सकने वालों को वह प्यारा प्रभु स्वयं ही तौल लेता है तथा दास नानक सदैव उस पर कुर्बान जाता है।। ४ ।। ५ ।। सोरठि महला ४ ।। वह प्रभु स्वयं ही सेवा में लगाता है और वह स्वयं ही प्रेम भक्ति का उत्साह रूप है। वह स्वयं ही अपने गुण का गायन करवाता है और स्वयं ही शब्द में लीन बना हुआ है। वह स्वयं ही लेखनी है, स्वयं ही लेखक है और स्वयं ही लिखा हुआ लेख है।। १ ।। हे मेरे मन, उत्साह पूर्वक प्रभु नाम का जाप कर। प्रत्येक दिन बड़े भाग्य से आनन्द होगा और तुम पूर्ण गुरु से प्रभु नाम रूपी लाभ प्राप्त कर लो।। रहाउ।। गोपी, कृष्ण वह स्वयं ही है और वह स्वयं ही गौ चराने वाला भी है। वह सांवला, सुन्दर, प्यारा स्वयं ही है और स्वयं ही बाँसुरी बजाने वाला भी है। कुवलयापीड़ नामक हाथी को मारने वाला वह प्रभु स्वयं ही है और प्रभु ने ही बालक रूप में उसका नाश किया था।। २ ।। वह प्रभु स्वयं ही जगत् रूपी अखाड़ा बनाता है और स्वयं ही उसमें कौतुक पूर्ण खेल खेलकर उन्हें देखता रहता है। वह बालक रूप में प्यारा प्रभु ही उत्पन्न होता है जिससे वह चंडूर, कंस और केशी आदि को मरवाता है। वास्तविक बल वह प्रभु स्वयं ही है और यह प्यारा प्रभु मूर्खों ओर अज्ञानियों के बल को तोड़ देता है।। ३ ।। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही जगत उत्पन्न

आपे जुगति हथाहा ॥ गलि जेवड़ी आपे पाइदा पिआरा जिउ प्रभु खिंचै तिउ जाहा ॥ जो गरबै सो पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥ ४ ॥ ६ ॥ सोरठि मः ४ दुतुके ॥ अनिक जनम विछुड़े दुखु पाइआ मनमुखि करम करै अहंकारी ॥ साधू परसत ही प्रभु पाइआ गोबिद सरणि तुमारी ॥ १ ॥ गोबिद प्रीति लगी अति पिआरी ॥ जब सतसंग भए साधू जन हिरदै मिलिआ सांति मुरारी ॥ रहाउ ॥ तू हिरदै गुपतु वसहि दिनु राती तेरा भाउ न बुझहि गवारी ॥ सतिगुरु पुरखु मिलिआ प्रभु प्रगटिआ गुण गावै गुण वीचारी ॥ २ ॥ गुरमुखि प्रगासु भइआ साति आई दुरमति बुधि निवारी ॥ आतम ब्रहमु चीनि सुखु पाइआ सतसंगति पुरख तुमारी ॥ ३ ॥ पुरखै पुरखु मिलिआ गुरु पाइआ जिन कउ किरपा भई तुमारी ॥ नानक अतुलु सहज सुखु पाइआ अनदिनु जागतु रहै बनवारी ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि महला ४ ॥ हरि सिउ प्रीति अंतरु मनु बेधिआ हरि बिनु रहणु न जाई ॥ जिउ मछुली बिनु नीरै बिनसै तिउ नामै बिनु मरि जाई ॥ १ ॥ मेरे प्रभ किरपा जलु देवहु हरि नाई ॥ हउ अंतरि नामु मंगा दिनु राती नामे ही सांति पाई ॥ रहाउ ॥ जिउ चात्रिकु जल बिनु बिललावै बिनु जल पिआस न जाई ॥ गुरमुखि जलु पावै सुख सहजे हरिआ भाइ सुभाई ॥ २ ॥ मनमुख भूखे दह दिस डोलहि बिनु नावै दुखु पाई ॥ जनमि मरै फिरि जोनी आवै दरगहि मिलै सजाई ॥ ३ ॥ क्रिपा करहि ता हरि गुण गावह हरि रसु अंतरि पाई ॥ नानक दीन दइआल भए है त्रिसना सबदि बुझाई ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ४ पंचपदा ॥ अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई ॥ प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥ १ ॥ मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ॥ गुरमति राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सभु आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ॥ २ ॥ जिस की वथु सोई प्रभु जाणै जिस नो देइ सु पाए ॥ वसतु अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ॥ ३ ॥ जिनि इह चाखी सोई जाणै

करता है और ऐसा करने की सारी युक्ति उसके अपने हाथ में है। वह प्यारा प्रभु ही सबके गले में रस्सी डालता है और जिधर वह प्रभु खींचता है मैं उधर ही जाता हूँ। हे नानक, जो अभिमान करेगा वह नष्ट हो जाएगा इसीलिए सुमिरन करके उसकी भक्ति में लीन हो जा।। ४ ।। ६ ।। सोरठि महला ४ दो पंक्तियों वाले।। मनमुख व्यक्ति ने अनेकों जन्मों से बिछुड़कर दुख पाया है और वह अहंकार में ही सभी कर्म करता चला जाता है।

साधु पुरुषों के चरण स्पर्श से ही प्रभु को पा लिया गया है और हे प्रभु अब मैं तुम्हारी शरण में हूँ।। १ ।। जब साधुजनों के साथ सत्संग हुआ तो मेरे हृदय में ही वह शान्ति स्वरूप प्रभु मिल गया।। रहाउ।। तू तो गुप्त रूप से दिन रात हृदय में ही बसता है परन्तु मूर्ख प्राणी तेरा रहस्य नहीं समझते। सर्वव्यापक सच्चा गुरु जब मिल गया तब प्रभु प्रकट हो उठा और अब जीव उसके गुणों का चिंतन करते हुए उसका गुणानुवाद करने लगा।। २ ।। गुरमुख बनकर चित्त प्रकाशित हो उठा, शान्ति प्राप्त हो गई और बुरी मति एवं बुद्धि दूर हो गई है। आत्मा में ही ब्रह्म को पहचान कर मैंने सुख को प्राप्त कर लिया है और हे प्रभु, यह तुम्हारी सत्संगत के कारण ही हुआ है।। ३ ।। हे हरि, जिस पर तेरी कृपा हुई उसने गुरु पा लिया है। हे नानक, अब उसने तौला न जा सकने वाला सहज सुख प्राप्त कर लिया है और यह वन रूपी संसार जिसका है वह सदैव इसमें जागृत बना रहता है।। ४ ।। ८ ।। सोरठि महला ४ ।। प्रभु की प्रीति से मेरा अन्तर्मन बिंध गया है और अब प्रभु के बिना रहा नहीं जाता। जैसे पानी के बिना मछली नष्ट हो जाती है वैसे ही जीव प्रभु-नाम के बिना मर खप जाता है।। १ ।। हे मेरे प्रभु, अपना कृपा रूपी जल मुझे प्रदान कर दो। मैं अन्तर्मन से दिन रात प्रभु का नाम ही मांगता हूं और नाम से ही मुझे शान्ति प्राप्त होती है।। रहाउ।। चातक जल के बिना चिल्लाता रहता है और जल के बिना उसकी प्यास नहीं जाती। गुरमुख बनकर जब वह प्रभु रूपी जल प्राप्त करता है तब उसे सुख मिलता है और सहजभाव में ही वह हरा भरा हो जाता है।। २ ।। भूखे मनमुख व्यक्ति दसों दिशाओं में भटकते हैं परन्तु प्रभु-नाम के बिना दुख पाते हैं। वे जन्मते मरते पुनः योनियों में आते हैं और उन्हें प्रभु-दरबार में भी सज़ा मिलती है।। ३ ।। यदि प्रभु कृपा करे तो जीव हरि गुण गाता है और उसे हरि रस अन्तर्मन में ही प्राप्त हो जाता है। हे नानक, प्रभु दीनों पर दयालु हो गए हैं और शब्द के माध्यम से उन्होंने सबकी तृष्णा समाप्त कर दी है।। ४ ।। ८ ।। सोरठि महला ४।। पंचपदा।। न खाए जा सकने वाले काम, क्रोध आदि को यदि जीव खा कर नष्ट कर दे तो फिर आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त होती है और उसी सिद्धि से ज्ञान प्राप्त होता है। जब प्रेम के तीर शरीर के अन्दर लगते हैं तो जीव का भ्रम कट जाता है।। १ ।। हे मेरे प्रभु, अपने सेवक को यह बड़प्पन प्रदान कर। गुरु की मति में चलते हुए सेवक के अन्दर राम नाम का प्रकाश करो ताकि मैं सदैव तुम्हारी शरण में ही रहूं।। रहाउ।। हे मूर्ख एवं अनजान मन, तू इस तथ्य के प्रति सावधान हो जा कि यह संसार तो सब आने जाने का ही खेल है। हे प्रभु, यदि कृपा करके गुरु से मिला दो तो प्रभु-नाम में लीन हुआ जा सकता है।। २ ।। यह अमूल्य जीवन रूपी वस्तु जिसकी है वही प्रभु इसके बारे में जानता है तथा जिसे यह देता है वही प्राप्त करता है। यह वस्तु अनुपम अत्यन्त अगम्य एवं अगोचर है जिसे पूरा गुरु ही प्रकट करता है।। ३ ।। जिसने इसे चखा है वही इसको जानता है

गूंगे की मिठिआई ॥ रतनु लुकाइआ लूकै नाही जे को रखै लुकाई ॥ ४ ॥ सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ॥ जिस नो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ॥ ५ ॥ ९ ॥

सोरठि महला ५ घरु १ तितुके ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किसु हउ जाची किसु आराधी जा सभु को कीता होसी ॥ जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी ॥ निरभउ निरंकारु भव खंडनु सभि सुख नव निधि देसी ॥ १ ॥ हरि जीउ तेरी दाती राजा ॥ माणसु बपुड़ा किआ सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥ रहाउ ॥ जिनि हरि धिआइआ सभु किछु तिस का तिस की भूख गवाई ॥ ऐसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कब ही जाई ॥ अनदु भइआ सुख सहजि समाणे सतिगुरि मेलि मिलाई ॥ २ ॥ मन नामु जपि नामु आराधि अनदिनु नामु वखाणी ॥ उपदेसु सुणि साध संतन का सभ चूकी काणि जमाणी ॥ जिन कउ क्रिपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥ ३ ॥ कीमति कउणु करै प्रभ तेरी तू सरब जीआ दइआला ॥ सभु किछु कीता तेरा वरतै किआ हम बाल गुपाला ॥ राखि लेहु नानकु जनु तुमरा जिउ पिता पूत किरपाला ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला ५ घरु १ चौतुके ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई मनि तनि हिरदै धार ॥ साचा साहिबु मनि वसै भाई एहा करणी सार ॥ जितु तनि नामु न ऊपजै भाई से तन होए छार ॥ साधसंगति कउ वारिआ भाई जिन एकंकार अधार ॥ १ ॥ सोई सचु अराधणा भाई जिस ते सभु किछु होइ ॥ गुरि पूरै जाणाइआ भाई तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ रहाउ ॥ नाम विहूणे पचि मुए भाई गणत न जाइ गणी ॥ विणु सच सोच न पाईऐ भाई साचा अगम धणी ॥ आवण जाणु न चुकई भाई झूठी दुनी मणी ॥ गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी ॥ २ ॥ सिंम्रिति सासत सोधिआ भाई विणु सतिगुर भरमु न जाइ ॥ अनिक करम करि थाकिआ भाई फिरि फिरि बंधन पाइ ॥ चारे कुंडा सोधीआ भाई विणु सतिगुर

क्योंकि यह गूंगे की मिठाई के समान है। फिर भी प्रभु नाम रूपी रत्न बेशक कोई कितना भी छिपा कर रखे छिपा नहीं रहता।। ४ ।। हे अन्तर्यामी प्रभु, सब कुछ तेरा ही है और तू ही वास्तव में सबका एक प्रभु है। प्रभु ही जिसको दान दे वहीं प्राप्त करता है और दास नानक का कथन है कि प्रभु के बिना अन्य कोई भी नहीं है।। ५ ।। ६ ।।

सोरठि महला ५ घरु १ तीन पंक्तियों वाले १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मैं किससे दान मागूं, किसकी पूजा करूँ जबकि सब कुछ तेरा ही पैदा किया हुआ है। जो जो भी बड़ा दिखाई देता है वह सब अन्ततः मिट्टी में मिल जाएगा। वह निर्भय, निराकार प्रभु भय का नाश करने वाला है और वही सभी सुख देने वाली नवनिधियां है।। १ ।। हे प्रभु, मैं तेरे दिए हुए से ही तृप्त हो सकता हूं। व्यक्ति बेचारे की मैं क्या प्रशंसा करूं और उसका भला मैं क्या आसरा लूं।। रहाउ।। जिसने प्रभु का सुमिरन किया, सब कुछ उसी का ही हो गया और उसकी भूख मिट गई है। सुखदाता प्रभु ने ऐसा धन मुझे दिया है जो कभी भी समाप्त नहीं होता। सच्चे गुरु ने ऐसा मेल मिला दिया है कि मैं आनन्दित हो गया हूँ और सहज स्वाभाविक सुख में लीन हो गया हूँ।। २ ।। हे मन, प्रभु के नाम का जाप कर, प्रभु का ही सुमिरन कर और प्रतिदिन प्रभु नाम का ही बखान कर। साधु और शान्त पुरुषों का उपदेश सुनकर ही यम का भय और उसकी मोहताजी मिट गई है। जिन पर मेरा प्रभु कृपालु हो गया है वे सब गुरु की वाणी में लीन हो गए हैं।। ३ ।। हे प्रभु, तू सभी जीवों पर दयालु बना रहने वाला है और तेरी कीमत भला कौन आंक सकता है। सब कुछ तेरा किया हुआ ही होता रहता है। हम छोटे-छोटे बालक तेरे सामने क्या हैं। हे प्रभु, सेवक नानक तुम्हारा ही है; इसकी उसी भांति रक्षा कर जैसे पिता पुत्र पर दया करता है।। ४ ।। १ ।। सोरठि महला ४ घरु १ चार पंक्तियों वाले।। हे भाई, तन, मन और हृदय में धारण करके प्रभु रूपी गुरु का गुणानुवाद करो। सारे कर्मों का सार तत्व यही है कि वह सच्चा साहिब मन में बसा रहे। हे भाई, जिस शरीर में नाम का प्रभाव नहीं पैदा होता ऐसा तन मिट्टी बन जाता है। हे भाई, मैं उस साधुसंगत पर बलिहारी जाता हूँ जिसका आधार एक रस बना रहने वाला परमात्मा ही है।। १ ।। हे भाई, उसी सत्य प्रभु का सुमिरन करना चाहिए जिससे सब कुछ प्राप्त होता है। पूर्ण गुरु ने ही हे भाई, उससे जान पहचान कराई है और अब उसके बिना अन्य कोई भी मालूम नहीं होता।। रहाउ।। नाम-विहीन होकर हे मेरे भाई, इतने मर खप चुके हैं कि उनकी गणना नहीं की जा सकती। बिना सत्य के वास्तव में हृदय की पवित्रता नहीं प्राप्त हो सकती। वह सच्चा प्रभु ही अगम्य है और सबका मालिक है। हे भाई, इस दुनियां का अहंकार झूठा है और इसमें लीन बने रहने से आवागमन समाप्त नहीं होता। वह प्रभु रूपी गुरमुख अपने नाम का एक कण देकर करोड़ों व्यक्तियों का उद्धार कर देता है।। २ ।। हे भाई, मैंने स्मृतियों एवं शास्त्रों को अच्छी तरह पढ़ लिया है; सच्चे गुरु के बिना भ्रम समाप्त नहीं होता। व्यक्ति अनेकों कर्म कर करके थक जाता है तथा हे मेरे भाई, वह बार-बार बन्धन में पड़ता रहता है। चारों दिशाओं में मैंने खोज कर देखा है परन्तु हे मेरे भाई, सच्चे गुरु के बिना

नाही जाइ ॥ वडभागी गुरु पाइआ भाई हरि हरि नामु धिआइ ॥ ३ ॥ सचु सदा है निरमला भाई निरमल साचे सोइ ॥ नदरि करे जिसु आपणी भाई तिसु परापति होइ ॥ कोटि मधे जनु पाईऐ भाई विरला कोई कोइ ॥ नानक रता सचि नामि भाई सुणि मनु तनु निरमलु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि महला ५ दुतुके ॥ जउ लउ भाउ अभाउ इहु मानै तउ लउ मिलणु दूराई ॥ आन आपना करत बीचारा तउ लउ बीचु बिखाई ॥ १ ॥ माधवे ऐसी देहु बुझाई ॥ सेवउ साध गहउ ओट चरना नह बिसरै मुहतु चसाई ॥ रहाउ ॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी रिदै न आई ॥ प्रानपति तिआगि आन तू रचिआ उरझिओ संगि बैराई ॥ २ ॥ सोगु न बिआपै आपु न थापै साधसंगति बुधि पाई ॥ साकत का बकना इउ जानउ जैसे पवनु झुलाई ॥ ३ ॥ कोटि पराध अछादिओ इहु मनु कहणा कछू न जाई ॥ जन नानक दीन सरनि आइओ प्रभ सभु लेखा रखहु उठाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ पुत्र कलत्र लोक ग्रिह बनिता माइआ सनबंधेही ॥ अंत की बार को खरा न होसी सभ मिथिआ असनेही ॥ १ ॥ रे नर काहे पपोरहु देही ॥ ऊडि जाइगो धूमु बादरो इकु भाजहु रामु सनेही ॥ रहाउ ॥ तीनि संङिआ करि देही कीनी जल कूकर भसमेही ॥ होइ आमरो ग्रिह महि बैठा करण कारण बिसरोही ॥ २ ॥ अनिक भाति करि मणीए साजे काचै तागि परोही ॥ तूटि जाइगो सूतु बापुरे फिरि पाछै पछुतोही ॥ ३ ॥ जिनि तुम सिरजे सिरजि सवारे तिसु धिआवहु दिनु रैनेही ॥ जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतिगुर ओट गहेही ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरु पूरा भेटिओ वडभागी मनहि भइआ परगासा ॥ कोइ न पहुचनहारा दूजा अपुने साहिब का भरवासा ॥ १ ॥ अपुने सतिगुर कै बलिहारै ॥ आगै सुखु पाछै सुख सहजा घरि आनंदु हमारै ॥ रहाउ ॥ अंतरजामी करणैहारा सोई खसमु हमारा ॥ निरभउ भए गुर चरणी लागे इक राम नाम आधारा ॥ २ ॥ सफल दरसनु अकाल मूरति प्रभु है भी होवनहारा ॥ कंठि लगाइ अपुने जन राखे अपुनी प्रीति पिआरा ॥ ३ ॥ वडी वडिआई अचरज सोभा कारजु आइआ

बन्धन नष्ट नहीं होते। प्रभु-नाम का सुमिरन करते रहने से हे भाई, बड़े भाग्य से गुरु पाया जाता है।। ३ ।। सत्य तो सदैव निर्मल बना रहता है और वास्तव में पवित्र वे ही हैं जो सच्चे हैं। जिस पर वह अपनी कृपादृष्टि करता है उसे ही वह प्राप्त होता है। करोड़ों व्यक्तियों में से कोई बिरला ही प्रभु का सच्चा सेवक मिलता है। हे नानक, ऐसा सेवक सच्चे नाम में लीन बना रहता है और उसके वचनों को सुनकर हे भाई, मन तन निर्मल हो जाता है।। ४ ।। २ ।। सोरठि महला ४ दो पंक्तियों वाला ।। जब तक यह जीव मोह और शत्रुता को मन में बनाए रखता है तब तक इसका प्रभु से मिलन दूर अर्थात कठिन ही बना रहता है। जब तक यह अपने बारे में ही सोचता रहता है तब तक इसके और प्रभु के बीच में विषय विकारों की खाई बनी रहती है।। १ ।। हे प्रभु, मुझे ऐसी समझ प्रदान कर कि मैं साधु पुरुषों की सेवा करता रहूं, उनके चरणों का आसरा पकड़े रहूं और वह प्रभु मुझे एक क्षण भर के लिए भी न भूले।। रहाउ।। हे मूर्ख एवं अचेत तथा चंचल मन, तेरे अन्तर्मन में ऐसी बात कभी भी नहीं आई कि तू परमात्मा को याद करता रहे। प्राणपति प्रभु को त्यागकर तू अन्य विकारों में लीन बना रहा और सदैव शत्रुओं के साथ ही उलझता रहा है।। २ ।। साधु संगत में रहकर ऐसी बुद्धि प्राप्त होती है कि जब तक तू अपनापन धारण नहीं करता तब तक तुझे शोक और दुख प्रभावित नहीं करते। प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति की बकवास तो ऐसे ही जाननी चाहिए जैसे वायु का झोंका निरर्थक ही आता जाता रहता है।। ३ ।। इस मन के बारे में तो कुछ भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसे करोड़ों अपराधों ने ढका हुआ है। दास नानक तो हे प्रभु, दीन बनकर आपकी शरण में आया है; तुम कृपा करके इसके सारे कर्मों का लेखा जोखा छोड़ दो अर्थात मुझे क्षमा कर दो।। ४ ।। ३ ।। सोरठि महला ५ ।। पुत्र, स्त्री, लोग, घर, अन्य स्त्रियां ये सभी माया के ही सम्बन्धी हैं। तेरे अन्तिम समय में तेरे साथ इनमें से कोई भी खड़ा नहीं होगा क्योंकि ये सब झूठे प्रेमी हैं।। १ ।। हे व्यक्ति, तू क्यों इस शरीर को पुचकारता रहता है। यह धुंए का बादल तो उड़ जाएगा; अन्ततः तुम केवल एक प्रभु का ही सुमिरन करो क्योंकि यही एक वास्तविक स्नेह करने वाला है।। रहाउ।। इस शरीर को बनाते समय इसका अंत तीन प्रकार का निश्चित किया हुआ है - जल में प्रवाहित करना, कुत्तों और अन्य जानवरों के आगे फेंक देना तथा जलाकर राख कर देना, परन्तु इस शरीर के साथ अपने आपको अमर समझ कर व्यक्ति अपने मन के अहंकारवश प्रभु को विस्मृत कर देता है।। २ ।। प्रभु ने कच्चे धागे में मणि रूपी इन शरीरों को पिरोया हुआ है। हे बेचारे जीव, जब यह कच्चा धागा टूट जाएगा तो तू पछताता ही रह जाएगा।। ३ ।। जिसने तुम्हारी रचना की, तुम्हें रचकर सुन्दर बनाया उस प्रभु का तुम दिन रात सुमिरन करो। दास नानक पर तो प्रभु ने कृपा की है तथा मैंने सच्चे गुरु की शरण पकड़ ली है।। ४ ।। ४ ।। सोरठि महला ४।। बड़े भाग्य से मैंने पूर्ण गुरु का दर्शन किया है जिससे मेरा मन प्रकाशित हो उठा है। हमें अपने मालिक का भरोसा बंध गया है और उस मालिक के बराबर पहुँचने वाला अन्य कोई नहीं।। १ ।। मैं अपने सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और उसी के कारण मेरे आगे पीछे सुख ही सुख बना रहता है और मेरा घर (मन) आनन्दित बना रहता है।। रहाउ।। वह सब कुछ करने वाला अन्तर्यामी प्रभु हमारा मालिक है। गुरु के चरणों में लग जाने से हम निर्भय हो गए हैं और हमारा आसरा केवल एक राम नाम ही बन गया है।। २ ।। जिसके दर्शन मात्र से सब फल प्राप्त हो जाते हैं वह कालातीत सौन्दर्य स्वरूप प्रभु वर्तमान में भी है और भविष्य में भी बना रहने वाला है। वह अपने सेवकों को अपनी प्रीति और प्यार के कारण गले से लगाकर उनको अपने साथ बनाए रखता है।। ३ ।। उस प्रभु का बड़प्पन बहुत बड़ा है और उसकी शोभा आश्चर्यजनक है जिससे मेरा सारा कार्य

रासे ॥ नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सगले दूख बिनासे ॥ ४ ॥ ५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सुखीए कउ पेखै सभ सुखीआ रोगी कै भाणै सभ रोगी ॥ करण करावनहार सुआमी आपन हाथि संजोगी ॥ १ ॥ मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता ॥ तिस कै भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रहमु पछाता ॥ रहाउ ॥ संतसंगि जा का मनु सीतलु ओहु जाणै सगली ठांढी ॥ हउमै रोगि जा का मनु बिआपित ओहु जनमि मरै बिललाती ॥ २ ॥ गिआन अंजनु जा की नेत्री पड़िआ ता कउ सरब प्रगासा ॥ अगिआनि अंधेरै सूझसि नाही बहुड़ि बहुड़ि भरमाता ॥ ३ ॥ सुणि बेनंती सुआमी अपुने नानकु इहु सुखु मागै ॥ जह कीरतनु तेरा साधू गावहि तह मेरा मनु लागै ॥ ४ ॥ ६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ तनु संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीआ ॥ संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ ॥ १ ॥ संतन बिनु अवरु न दाता बीआ ॥ जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटहि जन सेवा हरि कीरतनु रसि गाईऐ ॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईऐ ॥ २ ॥ रसना एक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीऐ ॥ अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि संतन की लहीऐ ॥ ३ ॥ निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥ बूडत मोह ग्रिह अंध कूप महि नानक लेहु निबाही ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि महला ५ घरु १ ॥ जा कै हिरदै वसिआ तू करते ता की तैं आस पुजाई ॥ दास अपुने कउ तू विसरहि नाही चरण धूरि मनि भाई ॥ १ ॥ तेरी अकथ कथा कथनु न जाई ॥ गुण निधान सुखदाते सुआमी सभ ते ऊच बडाई ॥ रहाउ ॥ सो सो करम करत है प्राणी जैसी तुम लिखि पाई ॥ सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥ २ ॥ सरब निरंतरि तुमहि समाने जा कउ तुधु आपि बुझाई ॥ गुर परसादि मिटिओ अगिआना प्रगट भए सभ ठाई ॥ ३ ॥ सोई गिआनी सोई धिआनी सोई पुरखु सुभाई ॥ कहु नानक जिसु भए दइआला ता कउ मन ते बिसरि न जाई ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सगल समग्री मोहि विआपी कब ऊचे कब नीचे ॥ सुधु न होईऐ काहू

सँवर गया है। नानक को तो अब पूर्ण गुरु मिल गया है और उसके सभी दुख विनष्ट हो गए हैं।। ४ ।। ५ ।। सोरठि महला ५ ।। सुखी व्यक्ति को सभी सुखी नज़र आते है और रोगी के लिए तो सारा संसार ही रोगी है। सब करने कराने वाला वह प्रभु है और सभी आकस्मिक लगने वाले संयोग (अवसर) उसने अपने हाथ में रखे हुए हैं।। १ ।। हे मेरे मन, जिसने अपने भ्रम को गँवा दिया और जिसने पूर्ण ब्रह्म को पहचान लिया वह उस प्रभु की आज्ञा में कभी भी भूलता भटकता नहीं है।। रहाउ।। शान्त पुरुषों की संगत में रहकर जिसका मन शीतल हो गया है वह सारी सृष्टि को ठंडी अर्थात सुख में बनी रहने वाली जानता है तथा अहंकार के रोग में जिसका मन फंसा हुआ है वह जीवन भर चीख पुकार करता हुआ मरता रहता है।। २ ।। ज्ञान रूपी अंजन जिसकी आँखों में पड़ गया उसके लिए सब ओर प्रकाश हो जाता है। अज्ञानता के अंधेरे में जीव को कुछ भी सूझता नहीं है और वह बार-बार भटकता रहता है।। ३ ।। हे प्रभु, मेरी विनती सुन; नानक तो तुझसे यही वरदान मांगता है कि जहां पर भी साधु पुरुष तेरी कीर्ति का गायन कर रहे हों मेरा मन वहीं लगा रहे।। ४ ।। ६ ।। सोरठि महला ५ ।। मेरा तन भी संत पुरुषों का है, धन भी संत पुरुषों का है और मन भी मैंने शान्त पुरुषों को अर्पण कर दिया है। शान्त पुरुषों की ही कृपा से जब मैंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया तब मैं सब प्रकार से आनन्दित हो उठा हूँ।। १ ।। शान्त पुरुषों के अनिरिक्त अन्य कोई भी त्यागी होकर दान देने वाला नहीं है। जो व्यक्ति भी साधु पुरुषों की शरण में आन पड़ता है प्रभु ने उसे पार उतर जाने वाला बना दिया होता है।। रहाउ।। प्रभु के सेवकों की सेवा करने से करोड़ों अपराध मिट जाते हैं और तब आनन्दित होकर प्रभु का कीर्तन किया जाता है। सेवक की सेवा करने से इस लोक में भी सुख मिलता है और आगे भी मुख उज्जवल बना रहता है; प्रभु के सेवक की संगत तो बड़े भाग्यशाली होकर ही पाई जाती है।। २ ।। हमारी जीभ एक है और प्रभु के सेवक अनेकों गुणों से भरपूर हैं; उनकी प्रशंसा कैसे की जा सकती है। वह अगम्य अगोचर और सदैव अविनाशी प्रभु शान्त पुरुषों की शरण में ही प्राप्त किया जाता है।। ३ ।। मैं गुण विहीन, नीच, अनाथ और अपराधी हूँ तथा मैंने शान्त पुरुषों की शरण चाही है। मैं घरबार के मोह रूपी अंधे कुँए में डूब रहा हूँ। हे प्रभु, नानक को अब बचाकर अपना प्रेम निभा लो।। ४ ।। ७ ।। सोरठि महला ५ घरु १ ।। हे कर्ता प्रभु, जिसके हृदय में तू बस गया है तूने उसकी आशा को पूरा कर दिया है। अपने सेवक को तू कभी नहीं भूलता क्योंकि उसके मन को तेरी चरण-धूलि भा गई है।। १ ।। हे प्रभु, तेरी अकथनीय कथा वार्ता का वर्णन नहीं किया जा सकता। हे सुखों के दाता स्वामी, तू गुणों का भण्डार है और तेरी शोभा सबसे ऊँची है।। रहाउ।। संसार के प्राणी वही कर्म करते हैं जैसे तुमने कर्म उनके लिए लिख दिए हैं। अपने सेवक को तुमने अपनी सेवा प्रदान की है और तेरे दर्शन करके वह तृप्त हो जाता है।। २ ।। सब जीवों में निरन्तर रूप से तुम ही समाए हुए हो और जिसको तुमने यह तथ्य समझा दिया है गुरु की कृपा से उसका अज्ञान मिट गया है और उसके लिए परमात्मा सभी स्थानों पर प्रकट हो उठता है।। ३।। वही व्यक्ति ज्ञानी है, वही ध्यानी है और वही व्यक्ति अच्छे स्वभाव वाला है। नानक का कथन है कि जिस पर प्रभु दयालु हो जाए और उसे फिर प्रभु कभी भी भूलता नहीं।। ४ ।। ८ ।। सोरठि महला ५ ।। सारा संसार मोह में फंसा हुआ कभी बहुत ऊँचा चला जाता है और कभी निचले स्तर पर आकर भटकता रहता है। यह किसी भी प्रयत्न से पवित्र नहीं बनता

जतना ओड़कि को न पहूचे ॥ १ ॥ मेरे मन साध सरणि छुटकारा ॥ बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई फिरि आवत बारो बारा ॥ रहाउ ॥ ओहु जु भरमु भुलावा कहीअत तिन महि उरझिओ सगल संसारा ॥ पूरन भगतु पुरख सुआमी का सरब थोक ते निआरा ॥ २ ॥ निंदउ नाही काहू बातै एहु खसम का कीआ ॥ जा कउ क्रिपा करी प्रभि मेरै मिलि साधसंगति नाउ लीआ ॥ ३ ॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर सभना करत उधारा ॥ कहु नानक गुर बिनु नही तरीऐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥ ४ ॥ ९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ राम नामु ततु सारा ॥ किलबिख काटे निमख अराधिआ गुरमुखि पारि उतारा ॥ १ ॥ हरि रसु पीवहु पुरख गिआनी ॥ सुणि सुणि महा त्रिपति मनु पावै साधू अंम्रित बानी ॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति सचु पाईऐ सरब सुखा का दाता ॥ अपुने दास कउ भगति दानु देवै पूरन पुरखु बिधाता ॥ २ ॥ स्रवणी सुणीऐ रसना गाईऐ हिरदै धिआईऐ सोई ॥ करण कारण समरथ सुआमी जा ते ब्रिथा न कोई ॥ ३ ॥ वडै भागि रतन जनमु पाइआ करहु क्रिपा किरपाला ॥ साधसंगि नानकु गुण गावै सिमरै सदा गोपाला ॥ ४ ॥ १० ॥ सोरठि महला ५ ॥ करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥ कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥ १ ॥ प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ ॥ गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला ॥ संता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु प्रतिपाला ॥ २ ॥ हरि अंम्रित नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु ॥ जरा मरा तापु सभु नाठा गुण गोबिंद नित गावहु ॥ ३ ॥ सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई ॥ प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई ॥ ४ ॥ ११ ॥

सोरठि महला ५ घरु २ चउपदे १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥ सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि

और अन्ततः मुक्ति तक नहीं पहुंच पाता।। १ ।। हे मेरे मन, साधु पुरुषों की शरण में ही मुक्ति प्राप्त होती है। पूर्ण गुरु को प्राप्त किए बिना आवागमन नहीं मिटता और जीव बार-बार इस संसार में आता रहता है।। रहाउ।। अज्ञान के कारण जिसे भ्रम और भुलावा कहा जाता है, सारा संसार उसी में ही उलझा हुआ है। उस सर्वव्यापक मालिक का जो पूरा भक्त है वह सभी पदार्थों से न्यारा ही बना रहता है।। २ ।। यह जो दिखावा रूप संसार है इसकी भी बातों से निन्दा नहीं की जानी चाहिए क्योंकि इसकी रचना भी उस मालिक ने की है। यहां पर मेरे प्रभु ने जिस पर कृपा की है वह साधुसंगत में मिल बैठकर प्रभु के नाम का सुमिरन करता है।। ३ ।। परब्रह्म परमेश्वर सच्चा गुरु सबका उद्धार करता है। नानक का कथन है कि यह पूर्ण सार तत्व है कि गुरु के बिना संसार-सागर को नहीं तैरा जा सकता।। ४ ।। ६ ।। सोरठि महला ४ ।। खोजते-खोजते मैंने खोजकर यह विचार बनाया है कि प्रभु का नाम ही वास्तविक सभी तत्वों का सार है अर्थात सर्वश्रेष्ठ है। क्षण भर के लिए इसका सुमिरन करने से पाप कट जाते हैं और गुरमुख जीवों को यह पार उतारने वाला है।। १ ।। हे ज्ञानवान जीवो, हरि रस का पान करो। साधु पुरुषों की अमृत वाणी को सुन सुनकर मन में अत्यधिक तृप्ति का अनुभव होता है।। रहाउ।। अमृतवाणी के माध्यम से ही मुक्ति, भोगे जाने वाले पदार्थों का सुख, जीवन की वास्तविक युक्ति, सत्य और सभी सुखों के दाता प्रभु को पाया जाता है। वह पूर्ण विधाता प्रभु अपने सेवक की भक्ति का दान प्रदान करता है।। २ ।। कानों से सुना जाना चाहिए, जीभ से उसका गायन किया जाना चाहिए और हृदय में उसका सुमिरन किया जाना चाहिए। सब कुछ करने कराने वाला वह समर्थ स्वामी प्रभु है जिससे कोई भी खाली नहीं है अर्थात वह सबमें है।। ३ ।। बड़े भाग्य से यह जीवन रूपी रत्न प्राप्त हुआ है; इसलिए हे कृपालु प्रभु, मुझ पर कृपा करो ताकि नानक साधु पुरुषों की संगत में तेरे गुण गाता रहे और सदैव परमात्मा का सुमिरन करता रहे।। ४ ।। १० ।। सोरठि महला ५ ।। (मन की गहराईयों में) स्नान करके अपने प्रभु का सुमिरन करो जिससे मन तन रोग रहित हो जाएगा। प्रभु की शरण में आने से करोड़ों रुकावटें दूर हो जाती हैं और अच्छे भाग्य लेख प्रकट हो उठते हैं।। १ ।। प्रभु की वाणी ही सर्वोत्तम शब्द है। हे भाई, इसको गाओ, सुनो, सदैव इसका पठन करो; तुम्हें पूर्ण गुरु की रक्षा मिलेगी।। रहाउ।। उस सच्चे साहिब की अपरिमित शोभा है और दयालु भक्तवत्सल आदिकाल से ही अपने बिरद की पालना करने वाला वह प्रभु सदैव सन्तजनों के सम्मान की लाज रखता आया है।। २ ।। प्रभु के अमृत नाम रूपी भोजन को सदैव खाते रहो और सारे समय उसे मुख में धारण किए रहो। प्रभु के गुणों को सदैव गाते रहने से बुढ़ापा, मौत और सभी कष्ट दूर भाग खड़े होते हैं।। ३ ।। मेरे प्रभु ने मेरी अरदास सुनी और सारे संयोग मिलकर मेरे सभी काम पूरे हो गए हैं। गुरु नानक का बड़प्पन इस सारे संसार में अब प्रकट हो उठा है।। ४ ।। ११ ।।

सोरठि महला ५ घरु २ चौपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हमारा एक ही पिता है और हम एक पिता के ही पुत्र हैं और हे प्रभु, तू ही मेरा गुरु है। हे मित्र, मेरा हृदय तुम पर बार-बार बलिहारी जाएगा। तू केवल मुझे अपना

दरसनु देहु दिखाई ॥ १ ॥ सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मनु तै कू देसा ॥ सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा ॥ २ ॥ मानु न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईऐ ॥ सुणि मीता जीउ पिंडु सभु तनु अरपीजै इउ दरसनु हरि जीउ पाईऐ ॥ ३ ॥ भइओ अनुग्रहु प्रसादि संतन कै हरि नामा है मीठा ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी सभु अकुल निरंजनु डीठा ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे ॥ प्रतिपालै नित सारि समालै इकु गुनु नही मूरखि जाता रे ॥ १ ॥ हरि आराधि न जाना रे ॥ हरि हरि गुरु गुरु करता रे ॥ हरि जीउ नामु परिओ रामदासु ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे ॥ पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥ २ ॥ हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे ॥ ३ ॥ मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥ गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥ ४ ॥ २ ॥ १३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जिना बात को बहुतु अंदेसरो ते मिटे सभि गइआ ॥ सहज सैन अरु सुखमन नारी ऊध कमल बिगसइआ ॥ १ ॥ देखहु अचरजु भइआ ॥ जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि बोधि सो रिदै गुरि दइआ ॥ रहाउ ॥ जोइ दूत मोहि बहुतु संतावत ते भइआनक भइआ ॥ करहि बेनती राखु ठाकुर ते हम तेरी सरनइआ ॥ २ ॥ जह भंडारु गोबिंद का खुलिआ जिह प्रापति तिह लइआ ॥ एकु रतनु मोकउ गुरि दीना मेरा मनु तनु सीतलु थिआ ॥ ३ ॥ एक बूंद गुरि अंम्रितु दीनो ता अटलु अमरु न मुआ ॥ भगति भंडार गुरि नानक कउ सउपे फिरि लेखा मूलि न लइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ चरन कमल सिउ जा का मनु लीना से जन त्रिपति अघाई ॥ गुण अमोल जिसु रिदै न वसिआ ते नर त्रिसन त्रिखाई ॥ १ ॥ हरि आराधे अरोग अनदाई ॥ जिस नो विसरै मेरा राम सनेही तिसु लाख बेदन जणु आई

दर्शन दिखा दे।। १ ।। हे मेरे मित्र प्रभु सुनो, मैं तो तेरी चरण धूलि पर बलिहारी जाता हूँ। हे भाई प्रभु, यह मन तो तेरा ही है।। रहाउ।। मैं तेरे चरणों को दबाऊँ, उन्हें मल मल कर धोऊँ और यह मन मैं तुझे ही अर्पण करता हूँ। हे मेरे मित्र प्रभु, मैं तेरी शरण में आ गया हूं, मुझे दर्शन दो और मुझे उपदेश भी दो।। २ ।। अहंकार नहीं करना चाहिए, उस प्रभु की शरण में पड़ जाना चाहिए और जो भी वह करता है उसे भला मानना चाहिए। हे मित्र, इस बात को ध्यान से सुनो कि यह प्राण और शरीर सब उसी को अर्पण करना है और इस प्रकार प्रभु का दर्शन प्राप्त करना है।। ३ ।। शान्त पुरुषों की सहायता से परमात्मा की कृपा हुई है और अब प्रभु नाम मुझे मीठा लगने लग गया है। गुरु ने दास नानक पर कृपा की है और इस दास को सर्वत्र कालातीत पवित्र प्रभु व्याप्त दिखाई देने लगा है।। ४ ।। १ ।। १२।। सोरठि महला ५ ।। करोड़ों ब्रह्माण्डों का मालिक प्रभु सभी जीवों का दाता है। वह सदैव पालन पोषण करता है, सबकी खोज खबर रखता है परन्तु मूर्ख जीव ने उसके एक गुण को भी नहीं जाना समझा है।। १ ।। मुझे परमात्मा की आराधना की युक्ति नही आती। कभी तो मैं हरि हरि करता हूँ और कभी गुरु गुरु कहता हूँ। हे प्रभु, मेरा नाम तो राम का दास है अर्थात आपके दास के नाम से जाना जाता हूं।। रहाउ।। सुख सागर दयालु, दीनों पर दया करने वाला कृपालु प्रभु सभी हृदयों में भरपूर रूप से व्याप्त है। वह तो देखने सुनने में सदैव साथ ही बना हुआ है परन्तु मुझ मूर्ख ने उसे अपने से दूर माना हुआ है।। २ ।। प्रभु अनन्त है परन्तु मैं तो उसको सीमा में बांधकर ही उसका वर्णन करता हूं; क्या पता वह कैसा है। मैं अपने सच्चे गुरु से प्रार्थना करता हूं कि मुझ मूर्ख को भी कुछ उपदेश प्रदान करो।। ३ ।। मुझ मूर्ख की तो बात ही छोड़ो, करोड़ों अपराध करने वाला भी पार उतर गया है। जिन्होंने गुरु नानक को देखा है अथवा अन्य लोगों से उनके बारे में सुना है वे फिर कभी गर्भ योनि में आकर जन्म मरण में नहीं पड़े।। ४ ।। २ ।। १३ ।। सोरठि महला ५ ।। जिन बातों का मुझे बहुत भय था वे सारे भय मिट गए हैं। अब मेरा आन्तरिक निवास सहज अवस्था में हो गया है और सुषुम्ना नाड़ी के माध्यम से सहस्रार कमल के खिल उठने जैसा आनन्द प्राप्त हो गया है।। १ ।। देखो एक बहुत ही आश्चर्य वाली बात हुई है; जिस प्रभु को अगाध एवं बुद्धि से परे समझा जाता था उसे गुरु ने हृदय में ही स्थित दिखा दिया है।। रहाउ।। जो यम के दूत मुझे बहुत दुख देते थे वे अब सभी भयभीत हो उठे हैं। प्रभु से हम विनती करते हैं कि हमारी रक्षा कर क्योंकि हम तुम्हारी ही शरण में हैं।। २ ।। प्रभु का रचना रूपी यह भण्डार खुला पड़ा है; जिनके भाग्य में कुछ पाना लिखा था उन्होंने ही इसमें से लिया है। मुझे तो गुरु ने एक नाम रूपी रत्न प्रदान किया है जिससे मेरा मन तन शीतल हो गया है।। ३ ।। गुरु ने अमृत की एक बूंद जिसे भी प्रदान कर दी है वह अटल अमर हो जाता है और आध्यात्मिक तौर पर फिर मरता नहीं। गुरु ने भक्ति का भण्डार नानक को सौंप दिया और फिर कोई भी लेखा जोखा नहीं पूछा है।। ४ ।। ३ ।। १४ ।। सोरठि महला ५ ।। जिनका मन प्रभु के चरण कमलों में लीन हो गया है वे व्यक्ति तृप्त होकर अघा गए हैं।। १ ।। प्रभु का सुमिरन करके वे रोग रहित और प्रसन्न हो गए हैं। जिसको मेरा प्रेमी प्रभु भूल जाता है उसको तो मानों लाखों रोग हो जाते हैं।

॥ रहाउ ॥ जिह जन ओट गही प्रभ तेरी से सुखीए प्रभ सरणे ॥ जिह नर बिसरिआ पुरखु बिधाता ते दुखीआ महि गनणे ॥ २ ॥ जिह गुर मानि प्रभू लिव लाई तिह महा अनंद रसु करिआ ॥ जिह प्रभू बिसारि गुर ते बेमुखाई ते नरक घोर महि परिआ ॥ ३ ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा तैसो ही वरतारा ॥ नानक सह पकरी संतन की रिदै भए मगन चरनारा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ राजन महि राजा उरझाइओ मानन महि अभिमानी ॥ लोभन महि लोभी लोभाइओ तिउ हरि रंगि रचे गिआनी ॥ १ ॥ हरि जन कउ इही सुहावै ॥ पेखि निकटि करि सेवा सतिगुर हरि कीरतनि ही त्रिपतावै ॥ रहाउ ॥ अमलन सिउ अमली लपटाइओ भूमन भूमि पिआरी ॥ खीर संगि बारिकु है लीना प्रभ संत ऐसे हितकारी ॥ २ ॥ बिदिआ महि बिदुअंसी रचिआ नैन देखि सुखु पावहि ॥ जैसे रसना सादि लुभानी तिउ हरि जन हरि गुण गावहि ॥ ३ ॥ जैसी भूख तैसी का पूरकु सगल घटा का सुआमी ॥ नानक पिआस लगी दरसन की प्रभु मिलिआ अंतरजामी ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ॥ हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥ १ ॥ माधो हम ऐसे तू ऐसा ॥ हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥ तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना ॥ निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना ॥ २ ॥ तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ॥ तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपुने बाला ॥ ३ ॥ तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै ॥ कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥ सोरठि महला ५ घरु २ ॥ मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे ॥ पावक सागर अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे ॥ १ ॥ माधौ तू ठाकुरु सिरि मोरा ॥ ईहा ऊहा तुहारो धोरा ॥ रहाउ ॥ कीते कउ मेरै संमानै करणहारु त्रिणु जानै ॥ तू दाता मागन कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै ॥ २ ॥ खिन महि अवरु खिनै महि अवरा अचरज चलत तुमारे ॥ रूड़ो

।। रहाउ।। हे प्रभु, जिन सेवकों ने तेरा आसरा पकड़ लिया है वे सभी प्रभु की शरण में सुखी बने रहते हैं। जिस व्यक्ति को वह विधाता, सर्वव्यापक प्रभु भूल जाता है उसकी गिनती दुखी लोगों में होती है।। २ ।। जिसने गुरु की बात मानकर प्रभु में अपनी लौ लगा ली है वह तो महा आनन्द के रस को पैदा कर रहा है। जिसने प्रभु को भुलाकर गुरु की ओर से मुख फेर लिया है ऐसे व्यक्ति घोर नर्क में पड़े रहते हैं।। ३ ।। प्रभु ने जिसे जिधर लगाया है वह वहीं लगा हुआ है और उसी प्रकार का व्यवहार करता है। हे नानक, जिन्होंने शान्त पुरुषों की शरण पकड़ ली है वे हृदय से प्रभु के चरणों में लीन हो गए हैं।। ४ ।। ४ ।। १५ ।। सोरठि महला ५ ।। जिस प्रकार राज्य के काम में राजा उलझा रहता है और अभिमानी व्यक्ति अपने अभिमान में ही मस्त बना रहता है; जिस प्रकार लोभ करने वाला व्यक्ति लोभ में ही लीन रहता है उसी प्रकार ज्ञानवान व्यक्ति प्रभु के रंग में डूबा रहता है।। १ ।। प्रभु का सेवक को यही अच्छा लगता है कि वह सच्चे गुरु को अपने पास ही अनुभव करके उसकी सेवा करे और प्रभु के गुणानुवाद में संतुष्ट बना रहे।। रहाउ।। नशेड़ी व्यक्ति अनेक प्रकार के नशों में लीन बना रहता है और जमींदार व्यक्ति को अधिक धरती अच्छी लगती हैं। बच्चा दूध पीने में मस्त बना रहता है और इसी प्रकार शान्त पुरुष (संत) प्रभु से प्रेम करने वाले होते हैं।। २ ।। विद्वान व्यक्ति विद्या में लीन बना रहता है और व्यक्ति की आँखे विभिन्न पदार्थों को देखकर सुख प्राप्त करती हैं। जिस प्रकार जीभ स्वाद के लोभ में पड़ी रहती है उसी प्रकार प्रभु का सेवक प्रभु के गुण गाता रहता है।। ३ ।। वह सभी शरीरों का मालिक जिसको जैसी भूख लगती है उसको वैसे पूरा करता है। हे नानक, मुझे तो प्रभु के दर्शनों की चाह थी अतः मुझे हृदय की बातें जानने वाला वह प्रभु मिल गया है।। ४ ।। ५ ।। १६ ।। सोरठि महला ५।। हे प्रभु, हम मलीन हैं और तुम हमें उज्जवल बनाने वाले हो, हम गुणविहीन हैं और तू देने वाला दाता है। हम मूर्ख हैं और तुम सयाने हो और तुम ही सारी कलाओं (युक्तियों) को जानने वाले हो।। १ ।। हे माधव, हम तो ऐसे (मूर्ख) हैं और तुम ऐसे (चतुर सयाने) हो। हम पापी हैं और तुम पापों का नाश करने वाले हो। हे मालिक, तेरा तेज (साधु संगत) अच्छा है।। रहाउ।। हे प्रभु, तूने ही सबकी रचना करके उन्हें शरीर और प्राण देकर दान दिया है। हम गुण विहीन हैं; हममें कोई भी गुण नहीं है; कृपालु प्रभु तुम ही हमें दान देते रहो।। २ ।। तुम तो हमारा भला करते हो परन्तु हे सदैव दयालु बने रहने वाले प्रभु हम तुम्हारे किए हुए भले को तनिक भी नहीं जानते। तुम सुख देने वाले विधाता प्रभु हो; तुम अपने बच्चों की रक्षा करो।। ३ ।। तुम सभी अच्छाईयों के खज़ाने हो और सदैव बने रहने वाले सुल्तान हो; मानव और पशु आदि सब तुझ से ही दान मांगते हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु, हमारा तो यही हाल है; तुम शान्त पुरुषों के साथ-साथ हमें भी बचा लो।। ४ ।। ६ ।। १७ ।। सोरठि महला ५ घरु २ ।। जिस प्रकार माँ के गर्भ में तुमने अपना सुमिरन देकर वहां हमारी रक्षा की उसी प्रकार इस संसार रूपी अग्नि के सागर की भयंकर लहरों में पार उतारने वाले प्रभु हमें पार उतार लो।। १ ।। हे प्रभु, मेरे सिर पर तो तू मेरा मालिक है। इस लोक और उस लोक में मुझे तो तुम्हारा ही आसरा है।। रहाउ।। व्यक्ति प्रभु द्वारा बनाई हुई वस्तुओं को पहाड़ जैसा बड़ा समझता और मानता है परन्तु इस रचना के बनाने वाले को वह केवल एक तिनका मात्र ही समझता है। तू दाता है और सभी तुझसे मांगने वाले हैं परन्तु हे प्रभु, तुम अपनी रज़ा में ही दान देते हो।। २ ।। क्षण भर में ही कुछ होता है और क्षण भर में ही और का और हो जाता है; हे प्रभु, तेरे कौतुक आश्चर्यपूर्ण हैं। तू सुन्दर,

गूड़ो गहिर गंभीरो ऊचौ अगम अपारे ॥ ३ ॥ साधसंगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुनी तुमारी बाणी ॥ अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥ ४ ॥ ७ ॥ १८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा ॥ संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा ॥ १ ॥ हम संतन सिउ बणि आई ॥ पूरबि लिखिआ पाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा ॥ संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा ॥ २ ॥ संतन मोकउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा ॥ धरम राइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा ॥ ३ ॥ महा अनंद भए सुखु पाइआ संतन कै परसादे ॥ कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रंगि रते बिसमादे ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥ सोरठि मः ५ ॥ जेती समग्री देखहु रे नर तेती ही छडि जानी ॥ राम नाम संगि करि बिउहारा पावहि पदु निरबानी ॥ १ ॥ पिआरे तू मेरो सुखदाता ॥ गुरि पूरै दीआ उपदेसा तुम ही संगि पराता ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना ता महि सुखु नही पाईऐ ॥ होहु रेन तू सगल की मेरे मन तउ अनद मंगल सुखु पाईऐ ॥ २ ॥ घाल न भानै अंतर बिधि जानै ता की करि मन सेवा ॥ करि पूजा होमि इहु मनूआ अकाल मूरति गुरदेवा ॥ ३ ॥ गोबिद दामोदर दइआल माधवे पारब्रहम निरंकारा ॥ नामु वरतणि नामो वालेवा नामु नानक प्रान अधारा ॥ ४ ॥ ९ ॥ २० ॥ सोरठि महला ५ ॥ मिरतक कउ पाइओ तनि सासा बिछुरत आनि मिलाइआ ॥ पसू परेत मुगध भए स्रोते हरि नामा मुखि गाइआ ॥ १ ॥ पूरे गुर की देखु वडाई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ रहाउ ॥ दूख सोग का ढाहिओ डेरा अनद मंगल बिसरामा ॥ मन बांछत फल मिले अचिंता पूरन होए कामा ॥ २ ॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल मिटि गए आवण जाणे ॥ निरभउ भए हिरदै नामु वसिआ अपुने सतिगुर कै मनि भाणे ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरि गुण गावै दूखु दरदु भ्रमु भागा ॥ कहु नानक ता के पूर करंमा जा का गुर चरनी मनु लागा ॥ ४ ॥ १० ॥ २१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ रतनु छाडि कउडी संगि लागे जा ते

प्रछन्न, सयाना, धैर्यवान, ऊँचा, पहुंच से परे और अपरम्पार है।। ३ ।। साधुसंगत के माध्यम से जब तुमने हम लोगों से मेल किया तो तुम्हारी वाणी को हम लोगों ने सुना। हे नानक, उस प्रतापी पुरुष मुक्तिदाता को देखते ही मन आनन्दित हो उठता है।। ४ ।। ७ ।। १८ ।। सोरठि महला ५ ।। हे भाई, हम तो संत पुरुषों की चरण-धूलि हैं और हम संतों (शान्त पुरुषों) की शरण में है। संत ही हमारा मजबूत आसरा हैं और संतजन ही हमारा गहना हैं।। १ ।। हमारी तो केवल संत पुरुषों के साथ ही बनती है और संतों की संगत हमें पहले से ही लिखे हुए लेखों के कारण प्राप्त हुई है। हे मेरे भाई प्रभु, यह मेरा मन तो तेरा ही है।। रहाउ।। मेरा सारा लेन देन संत पुरुषों के साथ ही होता है और मेरा व्यवहार भी इन शान्त पुरुषों के साथ ही बना हुआ है। संत पुरुषों के साथ ही हमने लाभ प्राप्त किया है और प्रभु-भक्ति के भण्डारों को भर लिया है।। २ ।। जब संत पुरुषों ने मुझे प्रभु-नाम रूपी पूंजी सौंप दी तो मेरे मन का भ्रम दूर हो गया। जब मेरे सारे कर्मों का लेखा प्रभु ने ही काट दिया है तो फिर बेचारा धर्मराज अब क्या करेगा।। ३ ।। संत पुरुषों की कृपा से मैंने सुख पाया और मैं महा आनन्दित हो गया हूँ। नानक का कथन है कि मेरा मन प्रभु के साथ संतुष्ट हो गया है और मैं उसके विशाल आश्चर्य के रंग में रंगा गया हूं।। ४ ।। ८ ।। १६।। सोरठि महला ५ ।। हे व्यक्ति, जितनी भी रचना की सामग्री यहां देख रहे हो उन सबको यहीं छोड़ जाना पड़ेगा। व्यक्ति प्रभु नाम का लेन देन करके ही निर्वाण पद को प्राप्त करता है।। १ ।। हे प्यारे प्रभु, तू ही मुझे सुख देने वाला है। जब पूर्ण गुरु ने मुझे उपदेश दे दिया तो मेरा ध्यान तुम्हारे साथ ही लग गया है।। रहाउ।। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अभिमान में सुख नहीं पाया जाता है। हे मेरे मन, तू सबकी चरण धूलि हो जा तो तुझे आनन्द मंगल और सुख प्राप्त होगा।। २ ।। जो प्रभु किसी की मेहनत को निष्फल नहीं जाने देता और सबके अन्तर्मन की युक्तियों को जानता है, हे मेरे मन, तू उसकी सेवा कर। हे जीव, तू उस प्रभु की पूजा में इस मन को होम कर दे अर्थात इसे नष्ट कर दे; उस गुरुदेव प्रभु का स्वरूप कालातीत है।। ३ ।। वह प्रभु धरती को धारण करने वाला दामोदर, दयालु, माधव केवल परब्रह्म निराकार प्रभु ही है। इस संसार में तो प्रभु नाम ही केवल लेने देने का सामान है। नाम ही माल असबाब है और हे नानक, प्रभु नाम ही प्राणों का आधार है।। ४ ।। ६ ।। २० ।। सोरठि महला ५ ।। हे प्रभु, हरि नाम का मुख से गायन करने पर मृतक व्यक्ति के शरीर में भी श्वास् आ जाता है, बिछुड़ा हुआ व्यक्ति उस प्रभु से मिल जाता है और पशु, प्रेत और मूर्ख व्यक्ति भी प्रभु नाम के श्रोतागण बन जाते हैं।। १ ।। उस पूर्ण गुरु के बड़प्पन को देखो; उसकी कीमत नहीं आंकी जा सकती।। रहाउ।। उसने मेरे दुख और शोक का डेरा गिरा दिया है और अब मेरे पास आनन्द मंगल और विश्राम की स्थिति है। मुझे बिना प्रयत्न के ही मनोवांछित फल मिल गए और मेरी कामनाएं पूरी हो गई हैं।। २ ।। इस लोक में सुख और परलोक में मुख उज्जवल होता है तथा आवागमन मिट जाता है। जब हम अपने सच्चे गुरु के मन को भा गए हैं तो हम निर्भय हो गए हैं और हमारे हृदय में प्रभु-नाम का निवास हो गया है।। ३ ।। जो व्यक्ति उठते बैठते प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है उसका दुख, दर्द, भ्रम भाग खड़ा होता है। नानक का कथन है कि उसी के कर्म पूर्ण होते हैं जिसका मन गुरु के चरणों में लग गया है।। ४ ।। १० ।। २१ ।। सोरठि महला ५ ।। व्यक्ति नाम रूपी रत्न को छोड़कर उस माया रूपी कौड़ी में अपना मोह लगाता है जिससे

कछू न पाईऐ ॥ पूरन पारब्रहम परमेसुर मेरे मन सदा धिआईऐ ॥ १ ॥ सिमरहु हरि हरि नामु परानी ॥ बिनसै काची देह अगिआनी ॥ रहाउ ॥ म्रिग त्रिसना अरु सुपन मनोरथ ता की कछु न वडाई ॥ राम भजन बिनु कामि न आवसि संगि न काहू जाई ॥ २ ॥ हउ हउ करत बिहाइ अवरदा जीअ को कामु न कीना ॥ धावत धावत नह त्रिपतासिआ राम नामु नही चीना ॥ ३ ॥ साद बिकार बिखै रस मातो असंख खते करि फेरे ॥ नानक की प्रभ पाहि बिनंती काटहु अवगुण मेरे ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुण गावहु पूरन अबिनासी काम क्रोध बिखु जारे ॥ महा बिखमु अगनि को सागरु साधू संगि उधारे ॥ १ ॥ पूरै गुरि मेटिओ भरमु अंधेरा ॥ भजु प्रेम भगति प्रभु नेरा ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु निधान रसु पीआ मन तन रहे अघाई ॥ जत कत पूरि रहिओ परमेसरु कत आवै कत जाई ॥ २ ॥ जप तप संजम गिआन तत बेता जिसु मनि वसै गोपाला ॥ नामु रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ता की पूरन घाला ॥ ३ ॥ कलि कलेस मिटे दुख सगले काटी जम की फासा ॥ कहु नानक प्रभि किरपा धारी मन तन भए बिगासा ॥ ४ ॥ १२ ॥ २३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ करण करावणहार प्रभु दाता पारब्रहम प्रभु सुआमी ॥ सगले जीअ कीए दइआला सो प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥ मेरा गुरु होआ आपि सहाई ॥ सूख सहज आनंद मंगल रस अचरज भई बडाई ॥ रहाउ ॥ गुर की सरणि पए भै नासे साची दरगह माने ॥ गुण गावत आराधि नामु हरि आए अपुनै थाने ॥ २ ॥ जै जै कारु करै सभ उसतति संगति साध पिआरी ॥ सद बलिहारि जाउ प्रभ अपुने जिनि पूरन पैज सवारी ॥ ३ ॥ गोसटि गिआनु नामु सुणि उधरे जिनि जिनि दरसनु पाइआ ॥ भइओ क्रिपालु नानक प्रभु अपुना अनद सेती घरि आइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ प्रभ की सरणि सगल भै लाथे दुख बिनसे सुखु पाइआ ॥ दइआलु होआ पारब्रहमु सुआमी पूरा सतिगुरु धिआइआ ॥ १ ॥ प्रभ जीउ तू मेरो साहिबु दाता ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला गुण गावउ रंगि राता ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि नामु निधानु द्रिड़ाइआ

कुछ भी प्राप्त नहीं होता। हे मेरे मन, उस पूर्ण परब्रह्म परमेश्वर का सदैव सुमिरन करते रहना चाहिए।। १ ।। हे प्राणी, प्रभु के नाम का बार-बार सुमिरन करते रहो। हे अज्ञानी जीव, यह कच्ची देह तो विनष्ट हो जाती है।। रहाउ।। मृगतृष्णा और स्वप्न में पूर्ण हुई इच्छाओं में कुछ भी बड़ापन नहीं है। प्रभु के भजन के बिना कुछ भी काम नहीं आता और संसार के पदार्थों में से कुछ भी साथ नहीं जाता।। २ ।। मैं मैं करते हुए ही सारी आयु व्यतीत हो जाती है और व्यक्ति ने आत्मा के भले के लिए तो कोई भी काम नहीं किया। इधर उधर दौड़ते भागते हुए वह कभी भी संतुष्ट नहीं हुआ और उसने राम नाम को नहीं पहचाना।। ३ ।। विकारों के स्वाद और विषयों के रस में मस्त होकर वह बार-बार असंख्य गलत काम करता है। नानक की उस प्रभु के पास विनती है कि हे प्रभु, मेरे अवगुणों को नष्ट कर दो।। ४ ।। ११ ।। २२ ।। सोरठि महला ५ ।। अविनाशी पूर्ण प्रभु के गुण गाओ जो काम, क्रोध और विष को जला देते हैं। यह संसार रूपी अग्नि का सागर महाभयानक है इसमें से उद्धार साधु पुरुषों के संग रहने से ही होता है।। १ ।। पूर्ण गुरु ने भ्रम के अंधेरे को मिटा दिया है। हे मेरे मन, उस प्रभु की प्रेम पूर्वक भक्ति करते हुए उसका सुमिरन करो क्योंकि वह सबसे ज्यादा पास में है।। रहाउ।। जिसने प्रभु के नाम का रस पींया है उसका तन मन संतुष्ट बना रहता है। यत्र तत्र वह परमेश्वर भरपूर बना रहता है और वह न तो कहीं जन्म लेता है और न ही कहीं मरकर जाता है।। २ ।। जिसके मन में वह प्रभु बस जाता है वह जप, तप संयम का तत्ववेत्ता बन जाता है। जिसने गुरमुख बनकर नाम रूपी रत्न प्राप्त कर लिया है उसका किया हुआ परिश्रम सफल हो जाता है।। ३ ।। उसके सारे कलह, क्लेश तथा दुख मिट जाते हैं और उसका यम का फंदा कट जाता है। नानक का कथन है कि जब प्रभु ने कृपा कर दी तो मेरा मन तन खिल उठा है।। ४ ।। १२ ।। २३ ।। सोरठि महला ५ ।। वह स्वामी परब्रह्म प्रभु सब कुछ ही करने कराने वाला है। उस अन्तर्यामी दयालु प्रभु ने सभी जीवों की रचना की है।। १ ।। मेरा गुरु स्वयं मेरा सहायक बन गया जिससे आध्यात्मिक ज्ञान और प्रेम की प्राकृतिक अवस्था का सुख मुझे प्राप्त हो गया है और आश्चर्य रूप से मुझे बड़प्पन मिल गया है।। रहाउ।। गुरु की शरण में आने से भय नष्ट हो गए हैं और प्रभु के सच्चे दरबार में भी सम्मान प्राप्त हो गया है। प्रभु के गुण गाते हुए प्रभु के नाम की आराधना करते हुए हमें अपने मूल स्थान अर्थात अपने मूल स्वरूप की समझ आ गई है और हम उसमें स्थित हो गए हैं।। २ ।। मैं उस प्रभु की स्तुति करता हुआ उसकी जय जयकार करता हूँ क्योंकि अब मुझे साधु पुरुषों की संगत प्यारी लगने लग गयी है। मैं अपने प्रभु पर सदैव बलिहारी जाता हूं जिसने मेरी इज़्ज़त पूरी तरह से सुरक्षित कर दी है।। ३ ।। जिस जिसने भी उसका दर्शन प्राप्त किया है वह उसके नाम को, प्रभु की चर्चा को सुनकर पार उतर गया है। हे नानक, जब प्रभु कृपालु हो गया है तब जीव आनन्द पूर्वक अपने मूल ठिकाने अर्थात अपने मूल रूप में स्थित हो गया है।। ४ ।। १३ ।। २४ ।। सोरठि महला ५ ।। प्रभु की शरण में आने से सारे भय दूर हो गए हैं; दुखों का नाश हो गया है और मैंने सुख प्राप्त कर लिया है। पूर्ण और सच्चे गुरु का सुमिरन करने से परब्रह्म प्रभु दयावान हो उठा है।। १ ।। हे प्रभु, तू ही मेरा मालिक और दाता है। हे दीन दयालु प्रभु, कृपा करो ताकि तुम्हारे रंग में रंगा रहकर मैं तुम्हारे गुण गाता रहूं।। रहाउ।। सच्चे गुरु ने सभी सुख देने वाले प्रभु के नाम का सुमिरन पक्का कर दिया

चिंता सगल बिनासी ॥ करि किरपा अपुनो करि लीना मनि वसिआ अबिनासी ॥ २ ॥ ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जो सतिगुरि अपुनै राखे ॥ चरन कमल बसे रिद अंतरि अंम्रित हरि रसु चाखे ॥ ३ ॥ करि सेवा सेवक प्रभ अपुने जिनि मन की इछ पुजाई ॥ नानक दास ता कै बलिहारै जिनि पूरन पैज रखाई ॥ ४ ॥ १४ ॥ २५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ माइआ मोह मगनु अंधिआरै देवनहारु न जानै ॥ जीउ पिंडु साजि जिनि रचिआ बलु अपुनो करि मानै ॥ १ ॥ मन मूड़े देखि रहिओ प्रभ सुआमी ॥ जो किछु करहि सोई सोई जाणै रहै न कछूऐ छानी ॥ रहाउ ॥ जिहबा सुआद लोभ मदि मातो उपजे अनिक बिकारा ॥ बहुतु जोनि भरमत दुखु पाइआ हउमै बंधन के भारा ॥ २ ॥ देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै ॥ चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै ॥ ३ ॥ दीन दइआल पूरन दुख भंजन तुम बिनु ओट न काई ॥ काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभ सरणाई ॥ ४ ॥ १५ ॥ २६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमु होआ सहाई कथा कीरतनु सुखदाई ॥ गुर पूरे की बाणी जपि अनदु करहु नित प्राणी ॥ १ ॥ हरि साचा सिमरहु भाई ॥ साधसंगि सदा सुखु पाईऐ हरि बिसरि न कबहू जाई ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु परमेसरु तेरा जो सिमरै सो जीवै ॥ जिस नो करमि परापति होवै सो जनु निरमलु थीवै ॥ २ ॥ बिघन बिनासन सभि दुख नासन गुर चरणी मनु लागा ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी अनदिनु हरि रंगि जागा ॥ ३ ॥ मन इछे सेई फल पाए हरि की कथा सुहेली ॥ आदि अंति मधि नानक कउ सो प्रभु होआ बेली ॥ ४ ॥ १६ ॥ २७ ॥ सोरठि महला ५ पंचपदा ॥ बिनसै मोहु मेरा अरु तेरा बिनसै अपनी धारी ॥ १ ॥ संतहु इहा बतावहु कारी ॥ जितु हउमै गरबु निवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब भूत पारब्रहमु करि मानिआ होवां सगल रेनारी ॥ २ ॥ पेखिओ प्रभ जीउ अपुनै संगे चूकै भीति भ्रमारी ॥ ३ ॥ अउखधु नामु निरमल जलु अंम्रितु पाईऐ गुरू दुआरी ॥ ४ ॥ कहु नानक जिसु मसतकि लिखिआ तिसु गुर मिलि रोग बिदारी ॥ ५ ॥ १७ ॥ २८ ॥

जिससे मेरी सारी चिंता दूर हो गई। उसने कृपा करके मुझे अपना लिया है और मेरे मन में वह अविनाशी प्रभु आन बसा है।। २ ।। जिनको सच्चे गुरु ने रख लिया है उनको कोई भी रुकावट नहीं लगती। प्रभु के चरण-कमल उनके हृदय में बसते हैं और वे हरि रस रूपी अमृत को चखते रहते हैं।। ३ ।। प्रभु के सेवक बनकर उसकी सेवा करो जिसने मन की इच्छा पूरी कर दी है। दास नानक तो उस पर बलिहारी जाता है जिसने पूर्ण रूप में हमारी लाज रख ली है।। ४ ।। १४ ।। २५ ।। सोरठि महला ५ ।। माया मोह के अंधकार में मस्त होकर जीव उस देने वाले प्रभु को नहीं जानता। जिसने जीव और शरीर बनाकर मानव ही रचना की है उसके स्थान पर यह व्यक्ति केवल अपने बल को ही श्रेष्ठ मानता है।। १ ।। हे मेरे मूर्ख मन, वह स्वामी प्रभु सब कुछ देख रहा है। जीव जो कुछ भी करता है वह प्रभु सब कुछ जानता है; उससे कुछ भी छिपा नहीं रहता।। रहाउ।। जीभ के स्वाद, लोभ और अहंकार में मस्त बने रहने से जीव में अनेकों विकार उत्पन्न होते हैं। बहुत योनियों में भटकते हुए अपने अहंकार के बन्धनों के बोझ के नीचे दबे हुए उसने दुख ही दुख पाया है।। २ ।। दरवाजे बन्द करके और अनेकों पर्दों में यह पराई स्त्री के साथ कुकर्म करता है परन्तु जब चित्रगुप्त कर्मों का लेखा जोखा करेगा तब भला कौन तेरे पापों पर पर्दा डालेगा।। ३ ।। हे पूर्ण दीनदयालु प्रभु, तुम ही दुखों को नष्ट करने वाले हो और तुम्हारे बिना मुझे अन्य कोई भी आसरा नहीं है। संसार-सागर से मुझे निकाल ले क्योंकि नानक तो हे प्रभु, तेरी शरण में आ पड़ा है।। ४ ।। १५ ।। २६ ।। सोरठि महला ५ ।। सुखदायक कथा कीर्तन के माध्यम से परब्रह्म प्रभु सहायता करने वाला बन गया है। हे प्राणी, उस पूरे गुरु की वाणी का जाप करके तुम सदैव आनन्दित बने रहो।। १ ।। हे भाई, उस सच्चे प्रभु का सुमिरन करो। साधु पुरुषों की संगत में सदैव सुख पाया जाता है और प्रभु कभी भी विस्मृत नहीं होता।। रहाउ।। हे प्रभु, तेरे अमृत नाम का जो भी सुमिरन करता है वह आध्यात्मिक तौर से जीवित बना रहता है। जिसको भी उस प्रभु की कृपा प्राप्त हो जाती है वह पवित्र हो जाता है।। २ ।। विघ्नों का नाश करने वाले और सभी दुखों को समाप्त करने वाले गुरु के चरणों में मेरा मन लग गया है। उस अटल अविनाशी प्रभु का गुणानुवाद करते रहने से मेरा मन प्रभु के रंग में रंगा हुआ सावधान बना रहता है।। ३ ।। प्रभु की सुखदायक कथा वार्ता सुनने से मनोवांछित फल प्राप्त हो गए हैं। आदि, अन्त और मध्य में वह प्रभु नानक का सहायक मित्र बना रहा है।। ४ ।। १६ ।। २७ ।। सोरठि महला ५ पंचपदा।। मेरा मोह, ममत्व और मेरा तेरा की भावना तथा अपनी इच्छानुसार चलने वाली चित्तवृत्तियां नष्ट हो जाएं।। १ ।। हे संतपुरुषो, कोई ऐसी औषधि बताओ जिससे अहंकार और गर्व को मैं दूर कर सकूं।। १ ।। रहाउ।। जो कुछ धरती पर उत्पन्न हुआ है मैं उसे परब्रह्म का ही रूप करके जानूं और सब लोगों के चरणों की धूलि बन जाऊँ।। २ ।। जब मैंने प्रभु को अपने साथ ही रहता हुआ देख लिया तो मेरे भ्रमों की दीवार नष्ट हो गई है।। ३ ।। प्रभु का नाम रूपी अमृत जल औषधि के रूप में गुरु के माध्यम से ही प्राप्त किया जाता है।। ४ ।। नानक का कथन है कि जिसके माथे पर अर्थात भाग्य में लिखा हुआ है उसने ही गुरु से मिलकर अपना रोग मिटा दिया है।। ५ ।। १७ ।। २८।।

सोरठि महला ५ घरु २ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ ॥ ऊच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ ॥ १ ॥ संतहु घटि घटि रहिआ समाहिओ ॥ पूरन पूरि रहिओ सरब महि जलि थलि रमईआ आहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधान नानकु जसु गावै सतिगुरि भरमु चुकाइओ ॥ सरब निवासी सदा अलेपा सभ महि रहिआ समाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ २९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जा कै सिमरणि होइ अनंदा बिनसै जनम मरण भै दुखी ॥ चारि पदारथ नव निधि पावहि बहुरि न त्रिसना भुखी ॥ १ ॥ जा को नामु लैत तू सुखी ॥ सासि सासि धिआवहु ठाकुर कउ मन तन जीअरे मुखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सांति पावहि होवहि मन सीतल अगनि न अंतरि धुखी ॥ गुर नानक कउ प्रभू दिखाइआ जलि थलि त्रिभवणि रुखी २ ॥ २ ॥ ३० ॥ सोरठि महला ५ ॥ काम क्रोध लोभ झूट निंदा इन ते आपि छडावहु ॥ इह भीतर ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥ १ ॥ अपुनी बिधि आपि जनावहु ॥ हरि जन मंगल गावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसरु नाही कबहू हीए ते इह बिधि मन महि पावहु ॥ गुरु पूरा भेटिओ वडभागी जन नानक कतहि न धावहु ॥ २ ॥ ३ ॥ ३१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जा कै सिमरणि सभु कछु पाईऐ बिरथी घाल न जाई ॥ तिसु प्रभ तिआगि अवर कत राचहु जो सभ महि रहिआ समाई ॥ १ ॥ हरि हरि सिमरहु संत गोपाला ॥ साधसंगि मिलि नामु धिआवहु पूरन होवै घाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सारि समालै निति प्रतिपालै प्रेम सहित गलि लावै ॥ कहु नानक प्रभ तुमरे बिसरत जगत जीवनु कैसे पावै ॥ २ ॥ ४ ॥ ३२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई ॥ गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई ॥ १ ॥ मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ॥ जा की सरणि पइआं सुखु पाईऐ बाहुड़ि दूखु न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत

सोरठि महला ५ घरु २ दोपदे १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सारी वनस्पति में अग्नि का निवास है और सारे दूध में घी विद्यमान होता है। इसी प्रकार ऊँच, नीच, अच्छे बुरे सबमें प्रभु की ज्योति समायी हुई है और प्रत्येक हृदय में वह प्रभु बसता है।। १ ।। हे संतजनों, वह घट घट में समाया हुआ है। सबमें वह पूर्ण रूप से बसा हुआ है और जल-स्थल में सर्वत्र वह रमण करने वाला प्रभु मौजूद है।। १ ।। रहाउ।। नानक तो उस गुणों के भण्डार का यश गायन करता है और सच्चे गुरु के माध्यम से उसने भ्रमों को नष्ट कर दिया है। सबमें बसा रहने वाला वह प्रभु बेशक सबमें समाया हुआ है परन्तु फिर भी वह सबसे अलिप्त बना रहता है।। २ ।। १ ।। २६।। सोरठि महला ५ ।। उस प्रभु के सुमिरन से आनन्द बना रहता है और जन्म मरण का भय और दुःख विनष्ट हो जाता है। व्यक्ति चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) प्राप्त कर लेता है, नवनिधियां पा जाता है और फिर उसे तृष्णा और भूख नहीं रहती।। १ ।। ऐसे प्रभु का नाम लेने से तू सुखी हो जाता है। हे जीव, तू उस प्रभु का मन तन और हृदय से प्रत्येक श्वास के साथ सुमिरन करता रह।। १ ।। रहाउ।। इस प्रकार शान्ति प्राप्त होती है, मन शीतल होता है और हृदय में अग्नि नहीं जलती है। नानक को गुरु ने जल स्थल, पेड़ पौधों और तीनों लोकों में प्रभु के दर्शन करा दिए हैं।। २ ।। २ ।। ३०।। सोरठि महला ५ ।। हे प्रभु, काम, क्रोध, लोभ और झूठ निन्दा आदि से हमें छुड़ा लो। इस मन के अन्दर से इन पापों को बाहर निकाल दो और मुझे अपने पास बुला लो।। १ ।। हे प्रभु, अपनी विधि तुम हमें खुद ही समझा दो और हे प्रभु के सेवक, तू उसके मंगल गीत गाता रह।। रहाउ।। तुम इस प्रकार से हृदय में निवास करो कि कभी भी हमारे हृदय से विस्मृत न होओ। पूर्ण गुरु से मिलाप होने पर बड़े भाग्य वाला प्रभु का सेवक हे नानक, अब कहीं भी इधर उधर दौड़ता नहीं।। २ ।। ३ ।। ३१ ।। सोरठि महला ५ ।। जिसका सुमिरन करने से सब कुछ प्राप्त होता है और हमारी साधना व्यर्थ नहीं जाती; जो सबमें समाया हुआ है उस प्रभु को त्याग कर तू अन्य किसी में क्यों लीन होता है। हे शान्त पुरुषो, धरती को धारण करने वाले उस प्रभु का सुमिरन करो। साधु पुरुषों के साथ मिलकर प्रभु नाम का सुमिरन करो ज़िससे तुम्हारी मेहनत सफल हो जाए।। १ ।। रहाउ।। वह सदैव तुम्हारी खोज खबर लेता है, तुम्हारा पालन करता है और प्रेम पूर्वक तुम्हें गले से लगाता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, तुम्हें भुलाकर यह संसार भला कैसे जीवन प्राप्त कर सकता है।। २ ।। ४ ।। ३२ ।। सोरठि महला ५ ।। वह अविनाशी प्रभु सभी जीवों का दाता है और उसके सुमिरन से सभी पापों की सारी मैल दूर हो गई है। वह गुण-निधान प्रभु भक्तों की रास पूंजी है जिसे कोई बिरला ही प्राप्त करता है।। १ ।। हे मेरे मन, उस प्रभु गुरु का ही जाप कर जिसकी शरण में आने पर सुख प्राप्त होता है और फिर कभी दुख नहीं मिलता।। १ ।। रहाउ।। बड़े भाग्य से साधु पुरुषों की संगत प्राप्त होती है जिसके मिलने से

दुरमति खोई ॥ तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई ॥ २ ॥ ५ ॥ ३३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै ॥ दरसनु भेटत होत निहाला हरि का नामु बीचारै ॥ १ ॥ मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥ हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा ॥ अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा ॥ २ ॥ ६ ॥ ३४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ अंतर की गति तुम ही जानी तुझ ही पाहि निबेरो ॥ बखसि लैहु साहिब प्रभ अपने लाख खते करि फेरो ॥ १ ॥ प्रभ जी तू मेरो ठाकुरु नेरो ॥ हरि चरण सरण मोहि चेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी ऊचो गुनी गहेरो ॥ काटि सिलक कीनो अपुनो दासरो तउ नानक कहा निहोरो ॥ २ ॥ ७ ॥ ३५ ॥ सोरठि मः ५ ॥ भए क्रिपाल गुरू गोविंदा सगल मनोरथ पाए ॥ असथिर भए लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाए ॥ १ ॥ भलो समूरतु पूरा ॥ सांति सहज आनंद नामु जपि वाजे अनहद तूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिले सुआमी प्रीतम अपुने घर मंदर सुखदाई ॥ हरि नामु निधानु नानक जन पाइआ सगली इछ पुजाई ॥ २ ॥ ८ ॥ ३६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर के चरन बसे रिद भीतरि सुभ लखण प्रभि कीने ॥ भए क्रिपाल पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ॥ १ ॥ मेरो गुरु रखवारो मीत ॥ दूण चऊणी दे वडिआई सोभा नीता नीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत प्रभि सगल उधारे दरसनु देखणहारे ॥ गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे ॥ २ ॥ ९ ॥ ३७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ संचनि करउ नाम धनु निरमल थाती अगम अपार ॥ बिलछि बिनोद आनंद सुख माणहु खाइ जीवहु सिख परवार ॥ १ ॥ हरि के चरन कमल आधार ॥ संत प्रसादि पाइओ सच बोहिथु चड़ि लंघउ बिखु संसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भए क्रिपाल पूरन अबिनासी आपहि कीनी सार ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो नानक नाही सुमार ॥ २ ॥ १० ॥ ३८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै अपनी कल धारी सभ घट उपजी दइआ ॥ आपे मेलि वडाई कीनी कुसल खेम सभ भइआ ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा मेरै

दुर्मति नष्ट हो जाती है। दास नानक तो उनकी चरण धूलि की कामना करता है जिन्होंने प्रभु नाम को हृदय में बसाया हुआ है।। २ ।। ५ ।। ३३ ।। सोरठि महला ५ ।। प्रभु का नाम जन्मों जन्मों के दुख को मिटाता है और प्रभु से विहीन प्रेम से खाली हुए मन को आधार देता है। प्रभु के नाम का चिंतन करने से और उसका दर्शन करने से जीव आनन्दित हो उठता है।। १ ।। मेरा वैद्य तो गुरु प्रभु ही है। वह प्रभु के नाम की औषधि मुख में डालता है और यम के फन्दे को काट देता है।। १ ।। रहाउ।। वह समर्थ पूर्णरूप से व्याप्त विधाता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करने वाला है। प्रभु ने अपने दास का उद्धार स्वयं ही किया है और हे नानक, मुझे तो केवल प्रभु नाम का ही आसरा है।। २ ।। ६ ।। ३४ ।। सोरठि महला ५ ।। हे प्रभु, मेरे मन की हालत को तुम्हीं जानते हो और अन्तिम फैसला भी तुम्हारे ही वश में है। हे मेरे प्रभु, तू मुझे क्षमा कर दे क्योंकि मैंने लाखों भूल और कुकर्म किए हैं।। १ ।। हे प्रभु, तू ही मेरा मालिक है और तू ही मेरे निकट है। मैं चेला, दास तो प्रभु के चरणों की शरण में पड़ा हूँ।। रहाउ।। वह अथाह और अनन्त स्वामी बहुत ही ऊँवा है और गहरे, गम्भीर गुणों वाला है। प्रभु ने तो मेरी रस्सी काटकर मुझे अपना दास बना लिया है; अब भला नानक को अन्य किसी के आसरे की क्या आवश्यकता रह गई है।। २ ।। ७ ।। ३५ ।। सोरठि महला ५ ।। प्रभु रूपी गुरु जब मुझ पर कृपालु हो गया तो मैंने सभी उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है। अब प्रभु के चरणों में लगकर हम शान्त और संतुष्ट हो गए हैं तथा प्रभु के गुण गाने वाले बन गए हैं।। १ ।। वही घड़ी मुहूर्त पूर्ण और शुभ है जब नाम का सुमिरन करके शान्ति, आत्मज्ञान, आनन्द प्राप्त हुआ और अनहद् नाद के वाद्य बजने लगे हैं।। १ ।। रहाउ।। जब हमें अपना प्रियतम स्वामी मिल गया तो हमारा हृदय और घर सुखदायक बन गया। दास नानक ने प्रभु के नाम का भण्डार प्राप्त कर लिया है और उसकी समस्त इच्छाएं पूरी हो गई हैं।। २ ।। ८ ।। ३६ ।। सोरठि महला ५ ।। प्रभु ने ऐसे शुभ लक्षण बना दिए हैं कि गुरु के चरण मेरे हृदय में बस गए हैं। प्रभु के नाम के भण्डार को मन में ही पहचान लेने से पूर्ण परमेश्वर कृपालु हो गया है।। १ ।। मेरा रखवाला तो मेरा मित्र गुरु ही है। वह हमें दोगुनी चौगुनी शोभा प्रदान करता है और सदैव बड़प्पन देता रहता है।। १ ।। रहाउ।। सभी जीव जन्तुओं का और सभी दर्शन करने वालों का प्रभु ने उद्धार कर दिया है। पूर्ण गुरु की महानता आश्चर्यजनक है और नानक तो सदैव उस पर बलिहारी जाता है।। २ ।। ६ ।। ३७।। सोरठि महला ५ ।। नाम रूपी निर्मल धन को इकट्ठा करो क्योंकि यही अगम्य एवं अपार विरासत है। इसके माध्यम से विलक्षण विनोद, आनन्द और सुखों को भोगो तथा हे सिक्खो और मेरे परिवारजनों, इसी का भोजन करके जीवित बने रहो।।१।। प्रभु के चरण-कमल ही व्यक्ति का आसरा हैं। शान्त पुरुषों की कृपा से सत्य का जहाज़ प्राप्त हो गया है। उस पर सवार होकर इस विष रूपी संसार सागर को पार कर जाओ।। १ ।। रहाउ।। वह पूर्ण अविनाशी प्रभु कृपालु हो गया ओर उसने स्वयं ही हमारी खोज खबर ले ली है। नानक तो उसे ही देख देख कर प्रसन्न बना है और हे नानक, उसकी कोई भी सीमा नहीं है।। २ ।। १० ।। ३८।। सोरठि महला ५ ।। पूर्ण गुरु ने अपनी कला को धारण किया अर्थात शक्ति का प्रयोग किया और सभी जीवों के मन में दया उत्पन्न हो गई अर्थात अब वे एक दूसरे से लड़ते झगड़ते नहीं हैं। प्रभु ने स्वयं ही जीवों को अपने साथ मिलाकर उन्हें बड़प्पन प्रदान किया और सब ओर आनन्द एवं खुशी का वातावरण बन गया है।। १ ।। पूर्ण सच्चा गुरु मेरे

नालि ॥ पारब्रहमु जपि सदा निहाल ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि थान थनंतरि जत कत पेखउ सोई ॥ नानक गुरु पाइओ वडभागी तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ २ ॥ ११ ॥ ३९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सूख मंगल कलिआण सहज धुनि प्रभ के चरण निहारिआ ॥ राखनहारै राखिओ बारिकु सतिगुरि तापु उतारिआ ॥ १ ॥ उबरे सतिगुर की सरणाई ॥ जा की सेव न बिरथी जाई ॥ रहाउ ॥ घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा प्रभ अपुने भए दइआला ॥ नानक बिघनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ किरपाला ॥ २ ॥ १२ ॥ ४० ॥ सोरठि महला ५ ॥ साधू संगि भइआ मनि उदमु नामु रतनु जसु गाई ॥ मिटि गई चिंता सिमरि अनंता सागरु तरिआ भाई ॥ १ ॥ हिरदै हरि के चरण वसाई ॥ सुखु पाइआ सहज धुनि उपजी रोगा घाणि मिटाई ॥ रहाउ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा कीमति कहणु न जाई ॥ नानक भगत भए अबिनासी अपुना प्रभु भइआ सहाई ॥ २ ॥ १३ ॥ ४१ ॥ सोरठि मः ५ ॥ गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी ॥ आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥ १ ॥ हरि जीउ तू सुख संपति रासि ॥ राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥ रहाउ ॥ जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा ॥ २ ॥ १४ ॥ ४२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ ॥ ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पाइआ ॥ १ ॥ मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥ करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला ॥ जै जै कार भए जग भीतरि होआ पारब्रहमु रखवाला ॥ २ ॥ १५ ॥ ४३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हमरी गणत न गणीआ काई अपणा बिरदु पछाणि ॥ हाथ देइ राखे करि अपुने सदा सदा रंगु माणि ॥ १ ॥ साचा साहिबु सद मिहरवाण ॥ बंधु पाइआ मेरै सतिगुरि पूरै होई सरब कलिआण ॥ रहाउ ॥ जीउ पाइ पिंडु जिनि साजिआ दिता पैनणु खाणु ॥ अपणे दास की आपि पैज राखी नानक

साथ है और हे जीव, परब्रह्म का जाप कर; तू सदा आनन्दित बना रहेगा।। रहाउ।। अन्दर बाहर स्थानान्तरों ने जहाँ भी मैं देखता हूँ वही दिखाई देता है। हे नानक, बड़े भाग्य से मैंने गुरु को पा लिया है और उस गुरु के बराबर अन्य कोई नहीं है।। २ ।। ११ ।। ३९।। सोरठि महला ५ ।। प्रभु के चरणों को देख लेने पर सुख, कल्याण, मंगल और सहज वनि प्राप्त हो गई है। उस रक्षक प्रभु ने अपने बालक को संभाल लिया है तथा सच्चे गुरु ने विषयों के बुखार को उतार दिया हैं।। १ ।। सच्चे गुरु की शरण में आने से ही हम बच गए हैं। उस सच्चे गुरु की सेवा व्यर्थ नहीं जाती।। रहाउ।। घर में भी सुख है और अपने प्रभु के दयालु हो जाने से बाहर भी सुख ही सुख है। हे नानक, मेरे प्रभु के कृपालु हो जाने से अब कोई भी रूकावट रास्ते में नहीं आती।। २ ।। १२ ।। ४० ।। सोरठि महला ५ ।। साधु संगत में जाकर हृदय में उत्साह पैदा हुआ तथा प्रभु के नाम रूपी रत्न के यश का मैंने गायन किया है। हे भाई, उस अनन्त प्रभु का सुमिरन करके मेरी चिन्ता मिट गई है और मैंने संसार-सागर को पार कर लिया है।। १ ।। मैंने हृदय में प्रभु के चरणों को बसा लिया है, अब मेरे अन्दर सहज की धुन उत्पन्न हो गई है; मैंने सुख पा लिया है और रोगों के कीचड़ को अब मिटा दिया गया है। हे नानक, जब अपना प्रभु मददगार बन गया तो भक्तजन भी अविनाशी हो गए हैं।। २ ।। १३ ।। ४१ ।। सोरठि महला ५ ।। अपने प्रभु ने कृपा की जिससे सभी क्लेश समाप्त हो गए और सभी रोग भाग खड़े हुए हैं। हमारी मेहनत सफल हो गई है और अब मैं आठों प्रहर प्रभु का सुमिरन करता हूँ।। १ ।। हे प्रभु, जीव को तू अब बचा ले यही मेरी प्रभु के सामने अरदास है।। रहाउ।। मुझे अपने मालिक का पूरा भरोसा है इसलिए मैं जो भी मांगता हूं मुझे वह सब कुछ मिलता है। नानक का कथन है कि जबसे मैंने पूर्ण गुरु के दर्शन किए हैं मेरा सारा भय और संशय दूर हो गया है।। २ ।। १४ ।। ४२ ।। सोरठि महला ५ ।। मैंने अपने सच्चे गुरु का सुमिरन कर करके अपने सारे दुख को नष्ट कर दिया। गुरु के हुकुम के अर्न्तगत मेरे सभी ताप और रोग समाप्त हो गए हैं और मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है।। १ ।। सुखों का दाता मेरा गुरु पूर्ण है। वह प्रभु करने कराने वाला समर्थ स्वामी है और पूर्ण सर्वव्याप्त विधाता है।। रहाउ।। हे नानक, गुरु दयालु हो गए हैं इसलिए खुशियों के मंगलमय गीत गाओ। सारे संसार में जय जयकार की गूँज बढ़ गई है क्योंकि परब्रह्म परमात्मा अब मेरा रक्षक बन गया है।। २ ।। १५ ।। ४३।। सोरठि महला ५ ।। प्रभु ने हमारे लेखों की कोई भी गणना नहीं की और अपने बिरदपालक स्वभाव को पहचान लिया। उसने अपना हाथ देकर हमें बचा लिया और हम अब निरन्तर आनन्द का उपभोग कर रहे हैं।। १ ।। वह सच्चा साहिब सदैव कृपालु बना रहता है। मेरे सच्चे गुरु ने दुखों और पापों के सामने रोक लगा दी है और इस प्रकार सब जीवों का कल्याण हो गया है।। रहाउ।। जिसने जीव को उत्पन्न करके उसका शरीर बनाया और उसे खाने पहनने को दिया, उस प्रभु ने ही अपने दास की इज्ज़त बचाई और नानक उस पर

सद कुरबाणु ॥ २ ॥ १६ ॥ ४४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे सभु संसारु उबारिआ ॥ पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी अपणा बिरदु समारिआ ॥ १ ॥ होई राजे राम की रखवाली ॥ सूख सहज आनद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥ रहाउ ॥ पतित उधारणु सतिगुरु मेरा मोहि तिस का भरवासा ॥ बखसि लए सभि सचै साहिबि सुणि नानक की अरदासा ॥ २ ॥ १७ ॥ ४५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ बखसिआ पारब्रहम परमेसरि सगले रोग बिदारे ॥ गुर पूरे की सरणी उबरे कारज सगल सवारे ॥ १ ॥ हरि जनि सिमरिआ नाम अधारि ॥ तापु उतारिआ सतिगुरि पूरै अपणी किरपा धारि ॥ रहाउ ॥ सदा अनंद करह मेरे पिआरे हरि गोविदु गुरि राखिआ ॥ वडी वडिआई नानक करते की साचु सबदु सति भाखिआ ॥ २ ॥ १८ ॥ ४६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ भए क्रिपाल सुआमी मेरे तितु साचै दरबारि ॥ सतिगुरि तापु गवाइआ भाई ठांढि पई संसारि ॥ अपणे जीअ जंत आपे राखे जमहि कीओ हटतारि ॥ १ ॥ हरि के चरण रिदै उरि धारि ॥ सदा सदा प्रभु सिमरीऐ भाई दुख किलबिख काटणहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की सरणी ऊबरै भाई जिनि रचिआ सभु कोइ ॥ करण कारण समरथु सो भाई सचै सची सोइ ॥ नानक प्रभू धिआईऐ भाई मनु तनु सीतलु होइ ॥ २ ॥ १९ ॥ ४७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ संतहु हरि हरि नामु धिआई ॥ सुख सागर प्रभु विसरउ नाही मन चिंदिअड़ा फलु पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि पूरै तापु गवाइआ अपणी किरपा धारी ॥ पारब्रहम प्रभ भए दइआला दुखु मिटिआ सभ परवारी ॥ १ ॥ सरब निधान मंगल रस रूपा हरि का नामु अधारो ॥ नानक पति राखी परमेसरि उधरिआ सभु संसारो ॥ २ ॥ २० ॥ ४८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ मेरा सतिगुरु रखवाला होआ ॥ धारि क्रिपा प्रभ हाथ दे राखिआ हरि गोविदु नवा निरोआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तापु गइआ प्रभि आपि मिटाइआ जन की लाज रखाई ॥ साधसंगति ते सभ फल पाए सतिगुर कै बलि जांई ॥ १ ॥ हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे हमरा गुणु अवगुणु

बलिहारी जाता है।। २ ।। १६ ।। ४४ ।। सोरठि महला ५ ।। प्रभु ने स्वयं ही सारे पापों को नष्ट कर दिया है और सारे संसार को बचा लिया है। परब्रह्म प्रभु ने कृपा की और अपने बिरद का उसने निर्वाह किया।। १ ।। मुझे तो अब राजा राम (प्रभु) की रखवाली प्राप्त हो गई। अब तो सहज सुख में आनन्दित होकर प्रभु के गुण गाओ जिससे मन तन सुखमय बन जाएगा।। रहाउ।। वह मेरा सच्चा गुरु पतितों का उद्धार करने वाला है और मुझे तो केवल उसी का आसरा है। नानक की अरदास सुनकर उस सच्चे साहिब प्रभु ने सबको बख्श दिया है।। २ ।। १७ ।। ४५।। सोरठि महला ५।। परब्रह्म परमेश्वर ने सबको क्षमा कर दिया है और सब रोगों का नाश कर दिया है। पूर्ण गुरु की शरण में हम बच गए हैं और हमारे सभी कार्य संवर गए हैं।। १ ।। प्रभु के सेवक ने प्रभु नाम का आधार मानकर उसका सुमिरन किया है। पूर्ण सच्चे गुरु ने सभी प्रकार के ताप नष्ट कर दिए हैं और अपनी कृपा को धारण किया है।। रहाउ।। हे मेरे प्यारे, अब सदैव आनन्दित बने रहो क्योंकि गुरु रूपी परमेश्वर ने हमें बचा लिया है। हे नानक, उस कर्ता प्रभु का बड़प्पन महान है और उसके सत्य शब्द के माध्यम से सत्य ही कहा गया है।। २ ।। १८।। ४६।। सोरठि महला ५ ।। मेरा स्वामी प्रभु कृपालु हुआ और उस कृपालु प्रभु का दरबार सच्चा है। हे भाई, उस सच्चे गुरु ने मेरी जलन को नष्ट कर दिया है और सारे संसार में शीतलता छा गई है। अपने जीवों की प्रभु ने स्वयं ही रक्षा की है और यमराज ने तो अपनी हड़ताल ही कर दी अर्थात प्रभु के रक्षक होते हुए मौत का काम नहीं रह जाता।। १ ।। प्रभु के चरणों को हृदय में बसाया जाए। हे भाई, सदैव प्रभु का ही सुमिरन किया जाना चाहिए क्योंकि वही दुखों और पापों को नष्ट करने वाला है।। १ ।। रहाउ।। जिसने सबकी रचना की है उसकी शरण में जाने से ही हे भाई, बचाव होता है। वह करने कराने वाला समर्थ है और हे भाई, उस सच्चे प्रभु की शोभा भी सच्ची है। हे नानक, प्रभु का सुमिरन किया जाना चाहिए जिससे मन तन शीतल बना रहता है।। २ ।। १६ ।। ४७।। सोरठि महला ५ ।। हे संत पुरुषो, प्रभु के नाम का सुमिरन करो। मुझे सुखों का सागर वह प्रभु ना भूले और इस प्रकार मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हों।। १ ।। रहाउ।। पूर्ण सच्चे गुरु ने मेरा आध्यात्मिक ताप नष्ट कर दिया और मुझ पर कृपा की है। जब परब्रह्म दयालु हो गया तो सारे परिवार का ही दुख नष्ट हो गया है।। १ ।। मैंने प्रभु के नाम का ही आसरा बनाया है जो सभी भण्डारों का घर, खुशी और रस रूप आदि सब कुछ है। हे नानक, परमेश्वर ने ही हमारी लाज बचा ली और सारे संसार का उद्धार हो गया।। २ ।। २० ।। ४८।। सोरठि महला ५ ।। मेरा सच्चा गुरु मेरा रक्षक बन गया। वह हरि प्रभु जो सदैव नया और स्वस्थ है उसने कृपा धारण करके अपना हाथ देकर हमारी रक्षा की है।। १ ।। रहाउ।। जीव को घेरने वाले ताप प्रभु ने स्वयं नष्ट कर दिए और सेवक की लाज रख ली। साधु संगत से ही हमने सभी फल प्राप्त किए हैं और मैं अपने सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ।। १।। मेरा यह लोक और परलोक दोनों ही प्रभु ने संवार दिए हैं और ऐसा करते समय मेरे गुण अवगुणों पर तनिक भी

न बीचारिआ ॥ अटल बचनु नानक गुर तेरा सफल करु मसतकि धारिआ ॥ २ ॥ २१ ॥ ४९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जीअ जंत्र सभि तिस के कीए सोई संत सहाई ॥ अपुने सेवक की आपे राखै पूरन भई बडाई ॥ १ ॥ पारब्रहमु पूरा मेरै नालि ॥ गुरि पूरै पूरी सभ राखी होए सरब दइआल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु नानकु नामु धिआए जीअ प्रान का दाता ॥ अपुने दास कउ कंठि लाइ राखै जिउ बारिक पित माता ॥ २ ॥ २२ ॥ ५० ॥

सोरठि महला ५ घरु ३ चउपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मिलि पंचहु नही सहसा चुकाइआ ॥ सिकदारहु नह पतीआइआ ॥ उमरावहु आगै झेरा ॥ मिलि राजन राम निबेरा ॥ १ ॥ अब ढूढन कतहु न जाई ॥ गोबिद भेटे गुर गोसाई ॥ रहाउ ॥ आइआ प्रभ दरबारा ॥ ता सगली मिटी पूकारा ॥ लबधि आपणी पाई ॥ ता कत आवै कत जाई ॥ २ ॥ तह साच निआइ निबेरा ॥ ऊहा सम ठाकुरु सम चेरा ॥ अंतरजामी जानै ॥ बिनु बोलत आपि पछानै ॥ ३ ॥ सरब थान को राजा ॥ तह अनहद सबद अगाजा ॥ तिसु पहि किआ चतुराई ॥ मिलु नानक आपु गवाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हिरदै नामु वसाइहु ॥ घरि बैठे गुरू धिआइहु ॥ गुरि पूरै सचु कहिआ ॥ सो सुखु साचा लहिआ ॥ १ ॥ अपुना होइओ गुरु मिहरवाना ॥ अनद सूख कलिआण मंगल सिउ घरि आए करि इसनाना ॥ रहाउ ॥ साची गुर वडिआई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ सिरि साहा पातिसाहा गुर भेटत मनि ओमाहा ॥ २ ॥ सगल पराछत लाथे ॥ मिलि साधसंगति कै साथे ॥ गुण निधान हरि नामा ॥ जपि पूरन होए कामा ॥ ३ ॥ गुरि कीनो मुकति दुआरा ॥ सभ स्रिसटि करै जैकारा ॥ नानक प्रभु मेरै साथे ॥ जनम मरण भै लाथे ॥ ४ ॥ २ ॥ ५२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै किरपा धारी ॥ प्रभि पूरी लोच हमारी ॥ करि इसनानु ग्रिहि आए ॥ अनद मंगल सुख पाए ॥ १ ॥ संतहु राम नामि निसतरीऐ ॥ ऊठत बैठत हरि हरि धिआईऐ

विचार नहीं किया है। नानक का कथन हैं कि हे गुरु, तेरा वाक्य सच्चा होता है और कभी भी टलता नहीं है। तूने ही सभी फल देने वाला अपना हाथ हमारे माथे पर रखा है।। २ ।। २१ ।। ४६।। सोरठि महला ५ ।। मनुष्य और पशु सब उसी के बनाए हैं और वही सन्तजनों का भी मददगार है। वह अपने सेवक की स्वयं ही रक्षा करता है और उसका बड़प्पन पूर्ण एवं महान है।। १ ।। पूर्ण परब्रह्म मेरे साथ ही है और पूर्ण गुरु ने हमारा पूरा सम्मान बचा लिया तथा सभी हम पर दयालु हो गए हैं।। १ ।। रहाउ।। नानक तो प्रत्येक दिन प्रभु नाम का सुमिरन करता है जो जीवों के प्राणों का दाता है। वह अपने सेवकों को उसी प्रकार गले से लगाए रहता है जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चे को गले से लगाए रहते हैं।। २ ।। २२ ।। ५० ।।

सोरठि महला ५ घरु ३ चौपदे   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

पंचों और चौधरियों को मिलकर भी मेरे मन का भ्रम दूर नहीं हुआ; सरदारों के माध्यम से भी मेरी सन्तुष्टि न हो सकी; अमीरों वज़ीरों के सामने भी मैंने अपना झगड़ा पेश किया (परन्तु कुछ न हो सका)। अन्ततः राम राजा (परमात्मा) को मिलकर ही फैसला हो सका अर्थात कोई देवी देवता अवतार आदि मन को सन्तुष्टि और शान्ति नहीं दे सकते, केवल प्रभु ही दे सकता है।। १ ।। प्रभु-गुरु के दर्शन के बाद अब मैं अन्य कहीं भी शान्ति आदि की खोज में नहीं जाता हूं।। रहाउ।। जब मैं प्रभु के दरबार में आ पहुंचा तो मेरे मन की सारी चीख पुकार मिट गई। जो प्राप्त करना था जब मुझे मिल गया तो फिर भला अब कहां आना जाना बचा है।। २ ।। उस प्रभु के दरबार में सच्चे न्याय वाला फैसला होता है। वहां मालिक और नौकर एक समान है। अन्तर्यामी प्रभु सब जानता है और बिना बोले स्वयं ही सब पहचान जाता है।। ३ ।। वह सभी स्थानों का राजा है और उसके सामने आध्यात्मिक आनन्द के अनहद् शब्द की धुन उठती रहती है। उसके सामने भला कौन सी चतुराई चलेगी। हे नानक, अपने अभिमान को गंवाकर उससे मिलाप कर लो।। ४ ।। १ ।। ५१ ।। सोरठि महला ५ ।। हृदय में प्रभु-नाम को बसा लो और घर में बैठे हुए उस गुरु का सुमिरन करो। पूर्ण गुरु ने जो कहा है वह सच्चा कहा है और उसी के माध्यम से सच्चा सुख प्राप्त किया जाता है।। १ ।। जब अपना गुरु मेहरबान हो गया तो सुख, आनन्द, मंगल सहित हम स्नान करके अपने ही घर में अर्थात अन्तरात्मा में टिक गए हैं।। रहाउ।। गुरु की बड़ाई सच्ची है और उसकी कीमत को आंका नहीं जा सकता। वह सम्राटों का भी सम्राट है और उस गुरु (प्रभु) के दर्शन करके मन में उत्साह भर जाता है।। २ ।। साधुसंगत के साथ मिलकर हमारे सभी पाप नष्ट हो गए हैं। वह प्रभु का नाम गुणों का भण्डार है जिसका सुमिरन करने से सभी कामनाएं पूरी हो जाती हैं।। ३ ।। गुरु ने मुक्ति के द्वार को खोल दिया है और अब सारी सृष्टि उस गुरु की जय जयकार कर रही है। हे नानक, प्रभु अब मेरे साथ है और मेरे जन्म और मरण के भय उतर गए हैं।। ४ ।। २ ।। ५२ ।। सोरठि महला ५ ।। पूर्ण गुरु ने हम पर कृपा की और हे प्रभु, हमारे मन की इच्छा पूरी हो गई है। प्रभु के नाम में स्नान करके हम अपने अन्दर ही टिक गए हैं और हमने आनन्द, मंगल और सुख को प्राप्त कर लिया है।। १ ।। हे सन्तजनों, राम-नाम के माध्यम से ही पार उतरा जाता है। हमें उठते बैठते उस प्रभु का ही सुमिरन करते रहना चाहिए और

अनदिनु सुक्रितु करीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत का मारगु धरम की पउड़ी को वडभागी पाए ॥ कोटि जनम के किलबिख नासे हरि चरणी चितु लाए ॥ २ ॥ उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी ॥ जीअ जंत सभि भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी ॥ ३ ॥ बिघन बिनासन सभि दुख नासन सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ खोए पाप भए सभि पावन जन नानक सुखि घरि आइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ साहिबु गुनी गहेरा ॥ घरु लसकरु सभु तेरा ॥ रखवाले गुर गोपाला ॥ सभि जीअ भए दइआला ॥ १ ॥ जपि अनदि रहउ गुर चरणा ॥ भउ कतहि नही प्रभ सरणा ॥ रहाउ ॥ तेरिआ दासा रिदै मुरारी ॥ प्रभि अबिचल नीव उसारी ॥ बलु धनु तकीआ तेरा ॥ तू भारो ठाकुरु मेरा ॥ २ ॥ जिनि जिनि साधसंगु पाइआ ॥ सो प्रभि आपि तराइआ ॥ करि किरपा नाम रसु दीआ ॥ कुसल खेम सभ थीआ ॥ ३ ॥ होए प्रभू सहाई ॥ सभ उठि लागी पाई ॥ सासि सासि प्रभु धिआईऐ ॥ हरि मंगलु नानक गाईऐ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सूख सहज आनंदा ॥ प्रभु मिलिओ मनि भावंदा ॥ पूरै गुरि किरपा धारी ॥ ता गति भई हमारी ॥ १ ॥ हरि की प्रेम भगति मनु लीना ॥ नित बाजे अनहत बीना ॥ रहाउ ॥ हरि चरण की ओट सताणी ॥ सभ चूकी काणि लोकाणी ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥ हरि रसकि रसकि गुण गाइआ ॥ २ ॥ प्रभ काटिआ जम का फासा ॥ मन पूरन होई आसा ॥ जह पेखा तह सोई ॥ हरि प्रभ बिनु अवरु न कोई ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि राखे ॥ सभि जनम जनम दुख लाथे ॥ निरभउ नामु धिआइआ ॥ अटल सुखु नानक पाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ ठाढि पाई करतारे ॥ तापु छोडि गइआ परवारे ॥ गुरि पूरै है राखी ॥ सरणि सचे की ताकी ॥ १ ॥ परमेसरु आपि होआ रखवाला ॥ सांति सहज सुख खिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु दीओ दारू ॥ तिनि सगला रोगु बिदारू ॥ अपणी किरपा धारी ॥ तिनि सगली बात सवारी ॥ २ ॥ प्रभि अपना बिरदु समारिआ ॥ हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ गुर का सबदु

हर रोज़ अच्छे काम करते रहना चाहिए।। रहाउ।। शान्त पुरुषों का मार्ग और धार्मिक जीवन की सीढ़ी अर्थात युक्ति कोई भाग्यशाली ही प्राप्त करता है। प्रभु के चरणों में चित्त लगाने से करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो गए हैं।। २ ।। उस प्रभु की सदैव स्तुति करते रहो जिसने सारी शक्ति को अपने में समेट कर रखा है। जिन्होंने सच्चे गुरु की सत्य रूप शिक्षा को सुना वे सभी जीव जन्तु पवित्र हो गए हैं।। ३ ।। सच्चे गुरु ने उस प्रभु-नाम को हमारे मन में पक्का कर दिया है जो विघ्नों को विनष्ट करने वाला और सब दुखों को मिटाने वाला है। दास नानक का कथन है कि सबने अपने पापों को खो दिया है, सभी पवित्र बन गए हैं और इस प्रकार सुख हमारे घर आ पहुंचा है।। ४ ।। ३ ।। ५३ ।। सोरठि महला ५ ।। वह मालिक प्रभु गुणों के कारण अत्यन्त गहन और गम्भीर है। हे प्रभु, हमारा घर और सारी फौज अर्थात हमारा मन और सभी इन्द्रियां तेरी ही हैं। वह धरती का पालन करने वाला गुरु प्रभु ही रखवाला है और जब प्रभु रक्षक हो जाए तो सारे लोग भी मेहरबान हो जाते हैं।। १ ।। आनन्द के साथ उसका जाप करते हुए गुरु चरणों में लगे रहो क्योंकि प्रभु की शरण में कोई भय नहीं है।। रहाउ।। तेरे सेवकों के हृदय में परमात्मा ही बसता है। प्रभु ने ही अपने नाम की अटल नींव पर संसार रूपी इमारत बनाई है। हे प्रभु, बल, धन और आसरा सब कुछ तेरा ही है; तू ही मेरा बड़ा मालिक है।। २ ।। जिन जिन लोगों ने साधुसंगत प्राप्त कर ली है उन्हें प्रभु ने स्वयं पार उतार दिया है। कृपा करके प्रभु ने उन्हें नाम रस दिया है और इस प्रकार सब ओर कुशलक्षेम हो गई है।। ३ ।। जब प्रभु मददगार हो गया तो सभी लोग चरणों में आन लगे हैं। प्रत्येक श्वास के साथ प्रभु का सुमिरन किया जाए और हे नानक, प्रभु के मंगल गीतों का गायन किया जाना चाहिए।। ४ ।। ४ ।। ५४।। सोरठि महला ५ ।। जब मेरा मनभावन प्रभु मुझे मिल गया तो सहज सुख और आनन्द प्राप्त हो गया है। जब पूर्ण गुरु ने कृपा की तभी हमारी मुक्ति हो सकी।। १ ।। प्रभु की प्रेमाभक्ति में मेरा मन लीन हो गया जिससे अनहद् वीणा निरन्तर मेरे अन्दर बजने लगी है।। रहाउ।। प्रभु के चरणों का आसरा शक्तिशाली है और इससे मेरी लोगों पर मोहताजी समाप्त हो गई है। संसार को जीवन देने वाला दाता मैंने पा लिया है और अब मैं रस ले लेकर उस प्रभु के गुण गाता हूँ।। २ ।। प्रभु ने यम का फन्दा काट दिया है और मेरे मन की आशा पूरी हो गई हैं। मैं जिधर भी देखता हूँ वही दिखाई देता है और हरि प्रभु के बिना तो वास्तव में अन्य कोई नहीं हैं।। ३ ।। प्रभु ने कृपा करके हमें बचा लिया है और सारे जन्मों के दुख उतर गए हैं। प्रभु के निर्भय नाम का सुमिरन करने से हे नानक, हमने अटल सुख प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। ५ ।। ५५ ।। सोरठि महला ५ ।। उस प्रभु ने शान्ति प्रदान की है और संताप अब सारे परिवार को छोड़ गया है। हमने सच्चे प्रभु की शरण को मन में धारण किया था इसलिए पूरे गुरु ने हमारी रक्षा कर ली है।। १ ।। जब परमेश्वर स्वयं रखवाला बन गया तो क्षण भर में शान्ति, सहजभाव और सुख उत्पन्न हो गया तथा मन सदैव सुख वाला बन गया है।। रहाउ।। प्रभु नाम की औषधि दे दी गई है; उसने सारे रोग को चीर कर नष्ट कर दिया है। अपनी कृपा को धारण कर उस प्रभु ने सारी बिगड़ती बात को ही संवार दिया है।। २ ।। प्रभु ने अपने दयालु स्वभाव का उपयोग किया है और हमारे किसी भी गुण अवगुण पर उसने ध्यान नहीं दिया। शब्द-गुरु हमारे सामने

भइओ साखी ॥ तिनि सगली लाज राखी ॥ ३ ॥ बोलाइआ बोली तेरा ॥ तू साहिबु गुणी गहेरा ॥ जपि नानक नामु सचु साखी ॥ अपुने दास की पैज राखी ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ विचि करता पुरखु खलोआ ॥ वालु न विंगा होआ ॥ मजनु गुर आंदा रासे ॥ जपि हरि हरि किलविख नासे ॥ १ ॥ संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥ जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जै कारु जगु गावै ॥ मन चिंदिअड़े फल पावै ॥ सही सलामति नाइ आए ॥ अपणा प्रभू धिआए ॥ २ ॥ संत सरोवर नावै ॥ सो जनु परम गति पावै ॥ मरै न आवै जाई ॥ हरि हरि नामु धिआई ॥ ३ ॥ इहु ब्रहम बिचारु सु जानै ॥ जिसु दइआलु होइ भगवानै ॥ बाबा नानक प्रभ सरणाई ॥ सभ चिंता गणत मिटाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमि निबाही पूरी ॥ काई बात न रहीआ ऊरी ॥ गुरि चरन लाइ निसतारे ॥ हरि हरि नामु सम्हारे ॥ १ ॥ अपने दास का सदा रखवाला ॥ करि किरपा अपुने करि राखे मात पिता जिउ पाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ ॥ जिनि जम का पंथु मिटाइआ ॥ हरि भगति भाइ चितु लागा ॥ जपि जीवहि से वडभागा ॥ २ ॥ हरि अंम्रित बाणी गावै ॥ साधा की धूरी नावै ॥ अपुना नामु आपे दीआ ॥ प्रभ करणहार रखि लीआ ॥ ३ ॥ हरि दरसन प्रान अधारा ॥ इहु पूरन बिमल बीचारा ॥ करि किरपा अंतरजामी ॥ दास नानक सरणि सुआमी ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै चरनी लाइआ ॥ हरि संगि सहाई पाइआ ॥ जह जाईऐ तहा सुहेले ॥ करि किरपा प्रभि मेले ॥ १ ॥ हरि गुण गावहु सदा सुभाई ॥ मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाराइण प्राण अधारा ॥ हम संत जनां रेनारा ॥ पतित पुनीत करि लीने ॥ करि किरपा हरि जसु दीने ॥ २ ॥ पारब्रहमु करे प्रतिपाला ॥ सद जीअ संगि रखवाला ॥ हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईऐ ॥ बहुड़ि न जोनी पाईऐ ॥ ३ ॥ जिसु देवै पुरखु बिधाता ॥ हरि रसु तिन ही जाता ॥ जमकंकरु नेड़ि न आइआ ॥ सुखु नानक

साक्षात् हो उठा और उसने हमारी पूर्ण लाज बचाई है।। ३ ।। हे प्रभु मालिक, तू गुणों के कारण अत्यन्त गहरा है; मैं तो तेरा बोलवाया हुआ ही बोलता हूँ। हे नानक, तू सच्चे नाम का ही जाप कर क्योंकि अन्त में यही तेरा साक्षी बनेगा। प्रभु ने ही अपने दास की इज्ज़त बचाई है।। ४ ।। ६ ।। ५६।। सोरठि महला ५ ।। जब कर्ता प्रभु अंग संग होकर स्थित हो गया तो फिर हमारा बाल भी बांका नहीं हो सका। प्रभु ने हमारा स्नान सफल कर दिया है और प्रभु का जाप करने से हमारे पाप विनष्ट हो गए हैं।। १ ।। हे संतजनों, प्रभु के दास का सरोवर अत्यन्त सुन्दर है; इसमें जो भी स्नान करता है उसका परिवार समेत उद्धार हो जाता है।। १ ।। रहाउ।। उसकी सारे संसार में जय जयकार होती है और वह मनोवांछित फल प्राप्त करता है। अपने प्रभु का सुमिरन और स्नान करके हम सही सलामत पहुंच गए हैं।। २ ।। शान्त पुरुष इस सरोवर में स्नान करते हैं और प्रभु के वही सेवक परम आनन्द को प्राप्त होते हैं। वे मरते नहीं; उनका आना जाना नहीं होता और दे प्रभु-नाम का बार-बार सुमिरन करते हैं।। ३ ।। इस आध्यात्मिक ज्ञान के बारें में वहीं जानता है जिस पर प्रभु दयालु होता है। नानक का कथन है कि हे भाई, जो व्यक्ति प्रभु की शरण में रहता है वह अपनी सब चिन्ताएं और गणनाएं मिटा लेता है।। ४ ।। ७ ।। ५७ ।। सोरठि महला ५ ।। परमेश्वर ने पूर्ण सफलता प्रदान की और किसी बात की भी कमी नहीं रखी। गुरु ने अपने चरणों में लगाकर पार उतार दिया और प्रभु नाम में ही हमें सम्भाल लिया है।। १ ।। प्रभु अपने दास का सदैव रक्षक बना रहता है। उसने कृपा करके अपना हाथ देकर उसी प्रकार रक्षा की जैसे माता पिता बच्चे का पालन पोषण करते हैं।। १ ।। रहाउ।। बड़े भाग्य से ही मैंने सच्चा गुरु पा लिया जिसने यम का रास्ता अर्थात जन्म मरण का चक्र मिटा दिया है। प्रभु के प्रेम भाव में मेरा चित्त लग गया है और जो उसका जाप करते हुए जीवित बने रहते हैं वे बड़े भाग्यशाली हैं।। २ ।। प्रभु के दास उसकी अमर कर देने वाली वाणी का गायन करते हैं और साधु पुरुषों की चरण धूलि में स्नान करते हैं। प्रभु ने अपना नाम स्वयं ही प्रदान किया है और उस कर्णहार प्रभु ने हमें बचा लिया है।। ३ ।। प्रभु का दर्शन ही हमारे प्राणों का आधार है और यही विचार पूर्ण और निर्मल है। हे अन्तर्यामी प्रभु, कृपा करो क्योंकि दास नानक तो स्वामी प्रभु की शरण में है। ४ ।। ८ ।। ५८ ।। सोरठि महला ५ ।। जब पूर्ण गुरु ने हमें अपने चरणों में लगा लिया तो हमने प्रभु को मददगार के रूप में प्राप्त कर लिया है। अब हम जहाँ भी जाते हैं सुखी बने हुए हैं क्योंकि प्रभु ने कृपा करके हमें अपने से मिला लिया है।। १ ।। हे जीव, तुम सदैव प्रेमपूर्वक प्रभु के गुण गाते रहो ओर इस प्रकार मनोवांछित समस्त फलों को प्राप्त कर लो जो कि जीव के साथ अन्त में सहायक बने रहते हैं।। १ ।। रहाउ।। वह प्रभु ही हमारे प्राणों का आधार है और हम संत पुरुषों के चरण की धूलि हैं। उसने पतितों को पवित्र बना दिया है और कृपा करके हमें प्रभु का गुणानुवाद प्रदान किया है।। २ ।। परब्रह्म प्रभु सबका पालन करता है और सदैव रक्षक बनकर जीव के साथ बना रहता है। रात दिन प्रभु की कीर्ति का ही यदि गायन किया जाए तो फिर योनियों में नहीं जाना पड़ता।। ३ ।। जिसे वह विधाता पुरुष शक्ति देता है उसने ही हरि नाम के रस के रहस्य को जाना है। यमदूत उसके पास नहीं आता और हे नानक,

सरणी पाइआ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ५९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै कीती पूरी ॥ प्रभु रवि रहिआ भरपूरी ॥ खेम कुसल भइआ इसनाना ॥ पारब्रहम विटहु कुरबाना ॥ १ ॥ गुर के चरन कवल रिद धारे ॥ बिघनु न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि साधू दुरमति खोए ॥ पतित पुनीत सभ होए ॥ रामदासि सरोवर नाते ॥ सभ लाथे पाप कमाते ॥ २ ॥ गुन गोबिंद नित गाईऐ ॥ साधसंगि मिलि धिआईऐ ॥ मन बांछत फल पाए ॥ गुरु पूरा रिदै धिआए ॥ ३ ॥ गुर गोपाल आनंदा ॥ जपि जपि जीवै परमानंदा ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ प्रभ अपना बिरदु रखाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ६० ॥ रागु सोरठि महला ५ ॥ दह दिस छत्र मेघ घटा घट दामनि चमकि डराइओ ॥ सेज इकेली नीद नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाइओ ॥ १ ॥ हुणि नही संदेसरो माइओ ॥ एक कोसरो सिधि करत लालु तब चतुर पातरो आइओ ॥ रहाउ ॥ किउ बिसरै इहु लालु पिआरो सरब गुणा सुखदाइओ ॥ मंदरि चरि कै पंथु निहारउ नैन नीरि भरि आइओ ॥ २ ॥ हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ ॥ भांभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥ ३ ॥ भइओ किरपालु सरब को ठाकुरु सगरो दूखु मिटाइओ ॥ कहु नानक हउमै भीति गुरि खोई तउ दइआरु बीठलो पाइओ ॥ ४ ॥ सभु रहिओ अंदेसरो माइओ ॥ जो चाहत सो गुरू मिलाइओ ॥ सरब गुना निधि राइओ ॥ रहाउ दूजा ॥ ११ ॥ ६१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी ॥ करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी माइआधारी ॥ नामु परिओ भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ॥ १ ॥ हरि जीउ निमाणिआ तू माणु ॥ निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ॥ रहाउ ॥ जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध कमावै ॥ करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै ॥ पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ॥ २ ॥ हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईऐ ॥ अवर ओट मै सगली देखी

रात दिन प्रभु की कीर्ति का ही यदि गायन किया जाए तो फिर योनियों में नहीं जाना पड़ता।। ३ ।। जिसे वह विधाता पुरुष शक्ति देता है उसने ही हरि नाम के रस के रहस्य को जाना है। यमदूत उसके पास नहीं आता और हे नानक, प्रभु की शरण में आकर वह पूर्ण सुख प्राप्त करता है।। ४ ।। ६ ।। ५६ ।। सोरठि मः ५ ।। पूर्ण गुरु ने पूर्ण सफलता प्रदान की। वह प्रभु सबमें रमण कर रहा है। सुख शान्ति पूर्वक स्नान हुआ और मैं परब्रह्म प्रभु पर बलिहारी जाता हूं।। १ ।। अपने गुरु के चरण कमलों को हृदय में धारण किया इससे हमें तिल मात्र भी रुकावट नहीं आयी और हमारे सारे कार्य संवर गये।। १ ।। रहाउ।। साधु पुरुषों से मिलकर दुर्मति को खो दिया गया और सभी पतित पवित्र हो गये। जो भी राम के दासों के सरोवर अर्थात गुरु की संगत में स्नान करते हैं उनके पूर्व जन्म के कमाये सभी पाप उतर जाते हैं।। २ ।। सदैव प्रभु के गुण गाते रहना चाहिये और साधु पुरुषों के संग मिल बैठकर प्रभु की आराधना करनी चाहिए। पूर्ण गुरु की हृदय में आराधना करने से मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं।। ३ ।। वह प्रभु गुरु आनन्द ही आनन्द है और उसका जाप करते रहने से व्यक्ति परम आनंद प्राप्त कर जीवित बना रहता है। हे नानक, सेवक ने प्रभु के नाम का सुमिरन किया है और प्रभु ने भी अपने दयालु स्वभाव का पूर्ण रूप से पालन किया है।। रागु सोरठि महला ५ ।। दसों दिशाओं में गहरे बादल छत्र की तरह फैले हुए हैं; बिजली चमक कर डराती है। मैं अकेली सेज पर पड़ी हुई हूं और मेरी आंखों में नींद नहीं क्योंकि मेरा प्रियतम परदेस गया हुआ है।। १ ।। हे माँ, अब तो उस प्रियतम का कोई संदेशा भी नहीं आता। पहले तो वह प्यारा यदि एक कोस भी भी दूर जाता था तब उसकी चार चार चिट्ठियां आ जाती थी।। रहाउ।। यह सर्वगुण सम्पन्न सुखदाता प्यारा मुझे भला कैसे भूल सकता है। मैं छत पर चढ़कर उसका रास्ता देखती हूँ और मेरी आंखों में आंसू भर आते हैं।। २ ।। मेरे गहन अंधकार की दीवार मेरे और उसके बीच आ गई है नहीं तो मैं सुनती हूं कि वह पास ही में है। उसके और हमारे मध्य तितली के पर जैसा महीन पर्दा है परन्तु हमारे न देखने के कारण प्रभु हमें दूर अनुभव होता है।। ३ ।। सबका मालिक प्रभु जब कृपा करता है तो सारे दुख मिट जाते हैं। नानक का कथन है कि जब गुरु के माध्यम से हमने अहंकार की दीवार को नष्ट कर दिया तभी हमने उस दयालु प्रभु को पा लिया।। ४ ।। हे मेरी मां, मेरे सभी भय दूर हो गये। मैं जो चाहता था गुरु ने मुझे उससे मिला दिया। वह सभी गुणों का भण्डार तथा सबका सम्राट है।। रहाउ दूसरा।। ११ ।। ६१ ।। सोरठि मः ५ ।। वह प्रभु बिगुड़ी हुई हालत को फिर संवारने वाला कैद को काटने वाला, निराकार और दुखों को नष्ट कर देने वाला है। हे प्रभु, मैं किसी धर्म कर्म को नहीं जानता और माया में उलझा हुआ लोभी व्यक्ति हूं। मुझ पाखंडी को प्रभु के भक्त के नाम से जाना जाता है; अब तो हे प्रभु, तुम अपनी इज़्ज़त स्वयं ही बचाओ।। १ ।। हे प्रभु, तू सम्मान विहीन लोगों का सम्मान है। नाचीज़ लोगों को तू जानने योग्य बना देता है इसलिये हे प्रभु, तेरी इस शक्ति और कला पर मैं कुर्बान जाता हूं।। रहाउ।। जिस प्रकार बच्चा प्रेम और स्वभाव के अधीन लाखों गलत काम कर जाता है परन्तु पिता उसे समझा कर अनेक प्रकार से झिड़क कर फिर अपने गले से लगा लेता है। इसी प्रकार व्यक्ति के पिछले अवगुण परमात्मा क्षमा कर देता है और आगे के लिये उसे अच्छे रास्ते पर डाल देता है।

इक तेरी ओट रहाईऐ ॥ ३ ॥ होइ दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेनंती ॥ पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन की चिंती ॥ हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ॥ ४ ॥ ॥ १२ ॥ ६२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भए अनंदा दुख कलेस सभि नाठे ॥ गुन गावत धिआवत प्रभु अपना कारज सगले सांठे ॥ १ ॥ जगजीवन नामु तुमारा ॥ गुर पुरे दीओ उपदेसा जपि भउजलु पारि उतारा ॥ रहाउ ॥ तूहै मंत्री सुनहि प्रभ तूहै सभु किछु करणैहारा ॥ तू आपे दाता आपे भुगता किआ इहु जंतु विचारा ॥ २ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणी कीमति कहणु न जाई ॥ पेखि पेखि जीवै प्रभु अपना अचरजु तुमहि वडाई ॥ ३ ॥ धारि अनुग्रहु आपि प्रभ स्वामी पति मति कीनी पूरी ॥ सदा सदा नानक बलिहारी बाछउ संता धूरी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६३ ॥ सोरठि मः ५ ॥ गुरु पूरा नमसकारे ॥ प्रभि सभे काज सवारे ॥ हरि अपणी किरपा धारी ॥ प्रभ पूरन पैज सवारी ॥ १ ॥ अपने दास को भइओ सहाई ॥ सगल मनोरथ कीने करतै ऊणी बात न काई ॥ रहाउ ॥ करतै पुरखि तालु दिवाइआ ॥ पिछै लगि चली माइआ ॥ तोटि न कतहू आवै ॥ मेरे पूरे सतगुर भावै ॥ २ ॥ सिमरि सिमरि दइआला ॥ सभि जीअ भए किरपाला ॥ जै जै कारु गुसाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥ ३ ॥ तू भारो सुआमी मोरा ॥ इहु पुंनु पदारथु तेरा ॥ जन नानक एकु धिआइआ ॥ सरब फला पुंनु पाइआ ॥ ४ ॥ १४ ॥ ६४ ॥

सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रामदास सरोवरि नाते ॥ सभि उतरे पाप कमाते ॥ निरमल होए करि इसनाना ॥ गुरि पूरै कीने दाना ॥ १ ॥ सभि कुसल खेम प्रभि धारे ॥ सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु वीचारे ॥ रहाउ ॥ साधसंगि मलु लाथी ॥ पारब्रहमु भइओ साथी ॥ नानक नामु धिआइआ ॥ आदि पुरख प्रभु पाइआ ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जितु पारब्रहमु चिति आइआ ॥ सो घरु दयि वसाइआ ॥

परन्तु एक तेरे आसरे में रहकर ही बचे रहा जा सकता है।। ३ ।। वह प्रभु दयालु, कृपालु होने वाला मालिक है और स्वयं ही हमारी विनती को सुनता है। पूर्ण सच्चा गुरु जब प्रभु मिलाप का संयोग बना देता है तब मन की सारी चिंताएं चुक जाती हैं। प्रभु नाम रूपी औषधि जब मेरे मुंह में डाली गई तो मैं सुखपूर्वक बसने लगी हूँ। ४ ।। १२ ।। ६२।। सोरठि महला ५ ।। प्रभु का बार-बार सुमिरन करते रहने से आनन्द छा गया और सभी दुख और क्लेश भाग खड़े हुए हैं। उसके गुण गाते हुए अपने प्रभु का सुमिरन करते हुए हमारे सारे कार्य संवर गए हैं।। १ ।। हे प्रभु, तुम्हारा नाम सारे संसार का जीवन है। पूर्ण गुरु ने हमें उपदेश दिया और उस प्रभु का नाम जपते हुए हमें संसार सागर से पार उतार दिया गया है। हे प्रभु, तू स्वयं ही मंत्री है और स्वयं ही तू पुकार सुनने वाला भी है। तू स्वयं ही सब कुछ करने वाला है अर्थात किसी के परामर्शों की तुझे आवश्यकता नहीं है। तू स्वयं ही देने वाला दाता है और स्वयं ही उस दिए हुए को भोगने वाला है; वह बेचारा जीव भला तुम्हारे सामने क्या है।। २ ।। मैं तेरे किन गुणों का कहकर बखान करूं क्योंकि तेरी कीमत को आंका नहीं जा सकता। यह जीव तो अपने प्रभु को देख देख कर ही जीवित बना रहता है और तुम्हारा बड़प्पन भी आश्चर्यपूर्ण है।। ३ ।। प्रभु ने स्वयं अनुग्रह धारण करके मेरी इज़्ज़त रख ली और मुझे अच्छी मति प्रदान की है। हे नानक, मैं तो सदैव प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ और संत पुरुषों की चरण धूलि की कामना करता हूँ।। ४ ।। १३ ।। ६३।। सोरठि महला ५ ।। पूर्ण गुरु को मैंने नमस्कार की और प्रभु ने मेरे सभी कामों को संभाल लिया। प्रभु ने अपनी कृपा की और हमारी सभी मनोंकामनाएं पूरी कर दी और ज़रा सी भी कमी नहीं छोड़ी।। रहाउ।। कर्ता प्रभु ने सत्संग रूपी सरोवर प्रदान किया तो माया दासी होकर पीछे पीछे चलने लगी है। यदि मेरे पूर्ण और सच्चे गुरु को भा जाए तो कभी कोई कमी नहीं आती।। २ ।। प्रभु का लगातार सुमिरन करने से जीव हमारे पर कृपालु हो गए हैं। उस प्रभु की जय जयकार है जिसने इस संसार की रचना सम्पूर्ण रूप से की है।। ३ ।। हे मेरे स्वामी, तू अत्यन्त बड़ा और महान है; यह सब कुछ तेरा ही पुण्य पदार्थ है। दास नानक ने एक प्रभु का ही सुमिरन किया है और सभी फलों के पुण्यों को प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। १४ ।। ६४।।

सोरठि महला ५ घरु ३ दोपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु के दासों के सरोवर (साधुसंगत) में स्नान करने से किए हुए सभी पाप उतर जाते हैं। इसमें स्नान करके सभी निर्मल हो जाते हैं और पूर्ण गुरु ने ही इसे हमें प्रदान किया है।। १ ।। प्रभु ने ही हमारी कुशलक्षेम को धारण किया हुआ है और शब्द-गुरु के चिंतन के माध्यम से सभी लोगों को सही सलामत पार उतार दिया है।। रहाउ।। साधुसंगत में पापों की मैल उतर गई क्योंकि वह परब्रह्म प्रभु अब साथी बन गया है। हे नानक, जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है उन्होंने आदि पुरुष अर्थात सर्वव्यापक प्रभु को पा लिया है।। २ ।। १ ।। ६५।। सोरठि महला ५ ।। जिसे परब्रह्म प्रभु याद आ गया, परमेश्वर ने उस घर को बसा दिया अर्थात हरा भरा कर दिया है।

सुख सागरु गुरु पाइआ ॥ ता सहसा सगल मिटाइआ ॥ १ ॥ हरि के नाम की वडिआई ॥ आठ पहर गुण गाई ॥ गुर पूरे ते पाई ॥ रहाउ ॥ प्रभ की अकथ कहाणी ॥ जन बोलहि अंम्रित बाणी ॥ नानक दास बखाणी ॥ गुर पूरे ते जाणी ॥ २ ॥ २ ॥ ६६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु गुरि दीआ ॥ पाछै कुसल खेम गुरि कीआ ॥ सरब निधान सुख पाइआ ॥ गुरु अपुना रिदै धिआइआ ॥ १ ॥ अपने सतिगुर की वडिआई ॥ मन इछे फल पाई ॥ संतहु दिनु दिनु चड़ै सवाई ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभि भए दइआला प्रभि अपने करि दीने ॥ सहज सुभाइ मिले गोपाला नानक साचि पतीने ॥ २ ॥ ३ ॥ ६७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर का सबदु रखवारे ॥ चउकी चउगिरद हमारे ॥ राम नामि मनु लागा ॥ जमु लजाइ करि भागा ॥ १ ॥ प्रभ जी तू मेरो सुखदाता ॥ बंधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ नानक प्रभु अबिनासी ॥ ता की सेव न बिरथी जासी ॥ अनद करहि तेरे दासा ॥ जपि पूरन होई आसा ॥ २ ॥ ४ ॥ ६८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर अपुने बलिहारी ॥ जिनि पूरन पैज सवारी ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ प्रभु अपुना सदा धिआइआ ॥ १ ॥ संतहु तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ करण कारण प्रभु सोई ॥ रहाउ ॥ प्रभि अपनै वर दीने ॥ सगल जीअ वसि कीने ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ ता सगले दूख मिटाइआ ॥ २ ॥ ५ ॥ ६९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ तापु गवाइआ गुरि पूरे ॥ वाजे अनहद तूरे ॥ सरब कलिआण प्रभि कीने ॥ करि किरपा आपि दीने ॥ १ ॥ बेदन सतिगुरि आपि गवाई ॥ सिख संत सभि सरसे होए हरि हरि नामु धिआई ॥ रहाउ ॥ जो मंगहि सो लेवहि ॥ प्रभ अपणिआ संता देवहि ॥ हरि गोविदु प्रभि राखिआ ॥ जन नानक साचु सुभाखिआ ॥ २ ॥ ६ ॥ ७० ॥ सोरठि महला ५ ॥ सोई कराइ जो तुधु भावै ॥ मोहि सिआणप कछू न आवै ॥ हम बारिक तउ सरणाई ॥ प्रभि आपे पैज रखाई ॥ १ ॥ मेरा मात पिता हरि राइआ ॥ करि किरपा प्रतिपालण लागा करीं तेरा कराइआ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत तेरे धारे ॥ प्रभ डोरी हाथि तुमारे ॥

गुरु के माध्यम से ही सुखों का समुद्र प्राप्त होता है और सभी संशय मिट जाते हैं।। १ ।। प्रभु के नाम की महानता के आठों प्रहर गुण गाए जाते हैं और यह गुणानुवाद पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है।। रहाउ।। प्रभु की कथा तो अकथनीय है जिसे उसके सेवक अपनी अमृतवाणी से व्यक्त करते हैं। हे नानक, उसके दास ही उसका बखान करते हैं जिन्होंने पूर्ण गुरु से उसे जान लिया है।। २ ।। २ ।। ६६ ।। सोरठि महला ५ ।। आगे पीछे गुरु ने सुख प्रदान किया है और कुशल-क्षेम का वातावरण बना दिया है। जब अपने गुरु का हृदय में सुमिरन किया तो ऐसा सुख प्राप्त हो गया जो सारे सुखों का भण्डार है।। १ ।। अपने सच्चे गुरु की ही महानता है कि उससे मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं। हे संतजनों, सच्चे गुरु की महानता प्रत्येक दिन बढ़ती ही जाती है।। रहाउ।। जब प्रभु ने अपना हाथ हम पर रख दिया तो सभी लोग हम पर दयालु हो उठे। हे नानक, सहज स्वभाव में ही प्रभु से मिलाप होता है और सत्य में संतुष्ट होकर टिका जाता है।। २ ।। ३ ।। ६७।। सोरठि महला ५ ।। शब्द-गुरु हमारा रखवाला है और हमारे चारों ओर उसी का ही पहरा है। जब राम नाम में हमारा मन लग गया तो यम भी लज्जित होकर भाग खड़ा हुआ।। १ ।। हे प्रभु, तू ही उपदेश देने वाला है और तू ही मेरे बन्धन काट कर मेरा मन निर्मल करने वाला पूर्ण एवं सर्वव्यापक विधाता है।। रहाउ।। हे नानक, प्रभु तो अविनाशी है और उसकी की हुई सेवा व्यर्थ नहीं जाती। तेरे दास तो आनन्दित बने रहते हैं क्योंकि तेरा जाप करके उनकी आशाएं पूर्ण हो चुकी होती हैं।। २ ।। ४ ।। ६८।। सोरठि महला ५ ।। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने पूरी तरह मेरे सम्मान की रक्षा की है। मनोवांछित फल मैंने पा लिया है और मैंने सदा अपने प्रभु का सुमिरन किया है।। १ ।। हे संतजनों, उसके बिना अन्य कोई भी नहीं तथा करने कराने वाला वह प्रभु ही है।। रहाउ।। प्रभु ने ऐसे आर्शीवाद दिए कि सभी जीव हमारे वश में कर दिए हैं। दास नानक ने जब प्रभु-नाम का सुमिरन किया तो सारे दुख मिट गए हैं।। २ ।। ५ ।। ६९।। सोरठि महला ५ ।। पूर्ण गुरु ने मेरे संताप को नष्ट कर दिया और अनहद् वाद्य अर्थात आध्यात्मिक आनन्द के बाजे बजने लगे। प्रभु ने सब प्रकार का कल्याण कर दिया और कृपा करके स्वयं ही सब कुछ प्रदान कर दिया है।। १ ।। मेरी पीड़ा सच्चे गुरु ने नष्ट कर दी और प्रभु के नाम का सुमिरन करते हुए सभी सिक्ख और संतजन प्रसन्न हो उठे हैं।। रहाउ।। उससे जो कोई भी कुछ मांगता है वह प्राप्त करता है; प्रभु अपने शान्त पुरुषों को अवश्य देता है।

धरती के स्वामी उस प्रभु ने हमारी रक्षा की और दास नानक ने यह सब स्वाभाविक सत्य ही कहा है।।२।।६।।७०।। सोरठि महला ५ ।। जो तुझे अच्छा लगता है तू वही करता है क्योंकि मुझमें तो कुछ भी सयानापन नहीं है। हम बालक तो तेरी शरण में है और प्रभु स्वयं ही सबका सम्मान बनाए रखता है।। १ ।। वह प्रभु राजा ही मेरा माता और पिता है। कृपा करके वह मेरा पालन कर रहा है और हे प्रभु मैं वही करता हूं जो तू करवाता है।। रहाउ।। सभी जीव जन्तु हे प्रभु, तेरे ही आसरे में हैं और हम लोगों की रस्सी भी तेरे ही हाथ में हैं अर्थात तू जिधर ले जाता है हम उधर ही जाते हैं।

जि करावै सो करणा ॥ नानक दास तेरी सरणा ॥ २ ॥ ७ ॥ ७१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हरि नामु रिदै परोइआ ॥ सभु काजु हमारा होइआ ॥ प्रभ चरणी मनु लागा ॥ पूरन जा के भागा ॥ १ ॥ मिलि साधसंगि हरि धिआइआ ॥ आठ पहर अराधिओ हरि हरि मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ रहाउ ॥ परा पूरबला अंकुरु जागिआ ॥ राम नामि मनु लागिआ ॥ मनि तनि हरि दरसि समावै ॥ नानक दास सचे गुण गावै ॥ २ ॥ ८ ॥ ७२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर मिलि प्रभू चितारिआ ॥ कारज सभि सवारिआ ॥ मंदा को न अलाए ॥ सभ जै जै कारु सुणाए ॥ १ ॥ संतहु साची सरणि सुआमी ॥ जीअ जंत सभि हाथि तिसै के सो प्रभु अंतरजामी ॥ रहाउ ॥ करतब सभि सवारे ॥ प्रभि अपुना बिरदु समारे ॥ पतित पावन प्रभ नामा ॥ जन नानक सद कुरबाना ॥ २ ॥ ९ ॥ ७३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमि साजि सवारिआ ॥ इहु लहुड़ा गुरू उबारिआ ॥ अनद करहु पित माता ॥ परमेसरु जीअ का दाता ॥ १ ॥ सुभ चितवनि दास तुमारे ॥ राखहि पैज दास अपुने की कारज आपि सवारे ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु परउपकारी ॥ पूरन कल जिनि धारी ॥ नानक सरणी आइआ ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ २ ॥ १० ॥ ७४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सदा सदा हरि जापे ॥ प्रभ बालक राखे आपे ॥ सीतला ठाकि रहाई ॥ बिघन गए हरि नाई ॥ १ ॥ मेरा प्रभु होआ सदा दइआला ॥ अरदासि सुणी भगत अपुने की सभ जीअ भइआ किरपाला ॥ रहाउ ॥ प्रभ करण कारण समराथा ॥ हरि सिमरत सभु दुखु लाथा ॥ अपणे दास की सुणी बेनंती ॥ सभ नानक सुखि सवंती ॥ २ ॥ ११ ॥ ७५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ अपना गुरू धिआए ॥ मिलि कुसल सेती घरि आए ॥ नामै की वडिआई ॥ तिसु कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ संतहु हरि हरि हरि आराधहु ॥ हरि आराधि सभो किछु पाईऐ कारज सगले साधहु ॥ रहाउ ॥ प्रेम भगति प्रभ लागी ॥ सो पाए जिसु वडभागी ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ तिनि सरब सुखा फल पाइआ ॥ २ ॥ १२ ॥ ७६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ परमेसरि दिता बंना ॥ दुख रोग का डेरा भंना ॥ अनद करहि नर नारी ॥ हरि

जो तू कराता है वही हमें करना होता है; दास नानक तो तेरी शरण में है।। २ ।। ७ ।। ७१।। सोरठि महला ५ ।। प्रभु-नाम हमने हृदय में बसा लिया है और हमारा सारा कार्य ठीक हो गया है। जिसका पूर्ण भाग्य है उसी का मन प्रभु के चरणों में लग जाता है।। १ ।। साधसंगत में मिलकर प्रभु का समिरन किया गया; आठों प्रहर मैंने प्रभु की आराधना की और मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है।। रहाउ।। मेरे पूर्व कर्मों का अंकुर फूट पड़ा है और मेरा मन राम नाम में लग गया है। मेरा मन और तन प्रभु के दर्शन में लीन रहता है और यह दास नानक सच्चे प्रभु के गुण गाता है।। २ ।। ८ ।। ७२।। सोरठि महला ५ ।। गुरु से मिलकर मैंने प्रभु का सुमिरन किया जिससे मेरा काम संवर गया है। कोई भी मुझे बुरा नहीं कहता और सभी ओर से मुझे जय जयकार सुनाई पड़ती है।। १ ।। हे संतजनों, उस मालिक प्रभु की शरण ही सच्ची शरण है। यह जीव जन्तु सब उसी के हाथ में हैं और वह प्रभु घट घट की जानने वाला अन्तर्यामी है।। रहाउ।। सभी कार्य प्रभु ने अपने स्वभाव को याद करते हुए संवार दिए हैं। प्रभु का नाम पतितों को भी पवित्र करने वाला है और दास नानक सदैव उस पर बलिहारी जाता है।। २ ।। ६।। ७३।। सोरठि महला ५ ।। परब्रह्म प्रभु ने हमें पैदा करके सौन्दर्य प्रदान किया है और इस छोटे से बालक को गुरु ने बचा लिया। हे पिता और माता आप आनन्दित हों क्योंकि परमेश्वर ही वास्तव में जीवन दाता है।। १ ।। तेरे दास शुभ शुभ सोचते हैं और तू अपने दास की मर्यादा की रक्षा करता है और तू सभी कामों को ठीक कर देता है।। रहाउ।। मेरा प्रभु तो परोपकारी है और उसने अपनी पूर्ण शक्ति को धारण कर रखा है। नानक उसकी शरण में आया है और उसने मनोवांछित फल पा लिया है।। २ ।। १० ।। ७४।। सोरठि महला ५ ।। उस प्रभु का सदैव सुमिरन करने से प्रभु स्वयं ही अपने बच्चों का रक्षक बना रहता है। शीतला (चेचक) के प्रकोप को प्रभु ने रोक लिया है और परमात्मा के गुणानुवाद से सभी विघ्न टल गए हैं।। १ ।। मेरा प्रभु सदैव दयालु बना रहता है। उसने अपने भक्त की अरदास सुनी है और सब लोग उस पर मेहरबान हो गए हैं।। रहाउ।। प्रभु ही सब कुछ करने कराने में समर्थ है और प्रभु के सुमिरन से ही सभी दुख दूर होते हैं। उसने अपने दास की विनती सुनी और हे नानक, अब सभी सुखपूर्वक सोने बसने लगे हैं।।२।।११।।७५।। सोरठि महला ५ ।। अपने गुरु की आराधना करके सभी कुशलता पूर्वक घर वापस आ गए हैं। यह सब प्रभु नाम का ही बड़प्पन है जिसके मूल्य को आंका नहीं जा सकता।। १ ।। हे संतजनों, उस प्रभु का ही बार-बार सुमिरन करो क्योंकि प्रभु की आराधना से ही सभी कुछ प्राप्त होता है और सभी कार्य सध जाते हैं।। रहाउ।। प्रभु की प्रेम से परिपूर्ण भक्ति उत्पन्न हो गई और इसे वही प्राप्त करता है जो बड़ा भाग्यशाली होता है। दास नानक ने तो प्रभु के नाम का सुमिरन किया है और उसने सब सुखों के फल को पा लिया है।। २ ।। १२ ।। ७६।। सोरठि महला ५ ।। परमेश्वर ने मुझे आसरा प्रदान किया और सभी दुखों और रोगों का मेरे अन्दर बना निवास भाग खड़ा हुआ। हे स्त्री पुरुषो, आनन्दित बने रहो क्योंकि

हरि प्रभि किरपा धारी ॥ १ ॥ संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥ पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ धुर की बाणी आई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ दइआल पुरख मिहरवाना ॥ हरि नानक साचु वखाना ॥ २ ॥ १३ ॥ ७७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ ऐथै ओथै रखवाला ॥ प्रभ सतिगुर दीन दइआला ॥ दास अपने आपि राखे ॥ घटि घटि सबदु सुभाखे ॥ १ ॥ गुर के चरण ऊपरि बलि जाई ॥ दिनसु रैनि सासि सासि समाली पूरनु सभनी थाई ॥ रहाउ ॥ आपि सहाई होआ ॥ सचे दा सचा ढोआ ॥ तेरी भगति वडिआई ॥ पाई नानक प्रभ सरणाई ॥ २ ॥ १४ ॥ ७८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सतिगुर पूरे भाणा ॥ ता जपिआ नामु रमाणा ॥ गोबिंद किरपा धारी ॥ प्रभि राखी पैज हमारी ॥ १ ॥ हरि के चरन सदा सुखदाई ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि बिरथी आस न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा करे जिसु प्रानपति दाता सोई संतु गुण गावै ॥ प्रेम भगति ता का मनु लीणा पारब्रहम मनि भावै ॥ २ ॥ आठ पहर हरि का जसु रवणा बिखै ठगउरी लाथी ॥ संगि मिलाइ लीआ मेरै करतै संत साध भए साथी ॥ ३ ॥ करु गहि लीने सरबसु दीने आपहि आपु मिलाइआ ॥ कहु नानक सरब थोक पूरन पूरा सतिगुरु पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ७९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गरीबी गदा हमारी ॥ खंना सगल रेनु छारी ॥ इसु आगै को न टिकै वेकारी ॥ गुर पूरे एह गल सारी ॥ १ ॥ हरि हरि नामु संतन की ओटा ॥ जो सिमरै तिस की गति होवै उधरहि सगले कोटा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतसंगि जसु गाइआ ॥ इहु पूरन हरि धनु पाइआ ॥ कहु नानक आपु मिटाइआ ॥ सभु पारब्रहमु नदरी आइआ ॥ २ ॥ १६ ॥ ८० ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै पूरी कीनी ॥ बखस अपुनी करि दीनी ॥ नित अनंद सुख पाइआ ॥ थाव सगले सुखी वसाइआ ॥ १ ॥ हरि की भगति फल दाती ॥ गुरि पूरै किरपा करि दीनी विरलै किन ही जाती ॥ रहाउ ॥ गुरबाणी गावह भाई ॥ ओह सफल सदा सुखदाई ॥ नानक नामु धिआइआ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ २ ॥ १७ ॥ ८१ ॥ सोरठि महला ५ ॥

प्रभु ने कृपा को धारण किया हुआ है।। १ ।। हे संतजनों, सभी ओर सुख ही सुख हो गया है क्योंकि सभी स्थानों पर वह परब्रह्म पूर्ण परमेश्वर रमण कर रहा है।। रहाउ।। यह वाणी प्रभु के दरबार से ही आई हुई प्राप्त हुई है और इसने सारी चिन्ताओं को मिटा दिया है। वह दयालु सर्वव्यापक प्रभु मेहरबान है और नानक ने प्रभु के बारे में यह सच्ची बात ही कही है।। २ ।। १३ ।। ७७ ।। सोरठि महला ५ ।। इस लोक और परलोक में वह सच्चा गुरु दीनदयालु प्रभु ही हमारा रखवाला है। अपने सेवकों को वह स्वयं बचाता है और शब्द रूप में वह घट घट में उच्चरित होता रहता है।। १ ।। मैं गुरु के चरणों पर बलिहारी जाता हूं। दिन-रात प्रत्येक श्वास के साथ मैं तेरा सुमिरन करता हूं और हे प्रभु, तू सब स्थानों में परिपूर्ण है।। रहाउ।। वह प्रभु स्वयं मददगार बना और उस सच्चे प्रभु का दिया हुआ दान भी सच्चा है अर्थात उसकी दी हुई प्रेमाभक्ति भी सच्ची है। यह तेरी भक्ति का ही बड़प्पन है कि नानक ने प्रभु की शरण को पा लिया है।। २ ।। १४ ।। ७८।। सोरठि महला ५ ।। जब सच्चे गुरु को अच्छा लगा तो मैंने सर्वत्र रमे हुए प्रभु-नाम का जाप किया। धरती के आश्रय उस प्रभु ने कृपा की और हमारे सम्मान को बचा लिया है।। १ ।। प्रभु के चरण सदैव सुख देने वाले हैं। कोई जो भी इच्छा करता है वह इनसे फल पा लेता है और उसकी कोई भी आशा खाली नहीं जाती।। १ ।। रहाउ।। जिस पर वह प्राणों का स्वामी प्रभु कृपा करे वही शान्त पुरुष उसके गुण गाता है। प्रेमाभक्ति में उसी का मन लीन होता है और वही प्रभु के मन को अच्छा लगता है।। २ ।। आठों प्रहर प्रभु के गुण गाते रहने से जहरीली ठग बूटी (माया) का प्रभाव दूर हो गया है। मेरे कर्ता प्रभु ने मुझे अपने साथ मिला लिया और साधु संतजन मेरे संगी साथी बन गए हैं।। ३ ।। प्रभु ने मेरा हाथ पकड़ लिया; मुझे सब कुछ प्रदान कर दिया और अपने आप से मिला लिया। नानक का कथन है कि मेरे सभी कार्य पूरे हो गए और मैंने पूर्ण सच्चा गुरु प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। १५ ।। ७६।। सोरठि महला ५ ।। विनम्रता ही मेरी गदा है और सबकी चरण-धूलि बनना ही मेरा खड्ग है। इन शस्त्रों के आगे कोई भी विकार तथा पापी ठहर नहीं सकता। पूर्ण गुरु ने मुझे यही बात सार रूप में समझाई है।। १ ।। शान्तपुरुषों का आसरा उस प्रभु का नाम ही है; जो उसका सुमिरन करता है उसकी मुक्ति हो जाती है तथा इस प्रकार करोड़ों जीव पार उतर गए हैं।। १ ।। रहाउ।। शान्त पुरुषों की संगत में प्रभु की स्तुति का गायन किया और प्रभु नाम रूपी पूर्ण धन मैंने प्राप्त कर लिया है। नानक का कथन है कि जब अहंकार भाव जब मिट गया है तो सब ओर परब्रह्म परमात्मा ही नज़र आने लगा है।। २ ।। १६ ।। ८०।। सोरठि महला ५ ।। पूर्ण गुरु ने पूरा काम ही किया है और अपनी कृपा मुझ पर कर दी है। मैंने सदैव बना रहने वाला आनन्द और सुख प्राप्त कर लिया है और अब सभी स्थानों पर सुख ही सुख बसता है।। १ ।। प्रभु की भक्ति सभी फल देने वाली है और पूर्ण गुरु ने कृपा करके इसे प्रदान किया है; परन्तु किसी बिरले ने ही इस भक्ति के रहस्य को समझा है।। रहाउ।। हे भाई, गुरु की वाणी का हम लोग गायन करते हैं क्योंकि यही सब फलों को देने वाली और सदैव सुख देने वाली है। हे नानक, जिसने प्रभु नाम का सुमिरन किया है उसने मानव में अपने पूर्ण लिखे हुए भाग्य लेखों का फल ही पाया है।। २ ।। १७।। ८१।। सोरठि महला ५ ।।

गुरु पूरा आराधे ॥ कारज सगले साधे ॥ सगल मनोरथ पूरे ॥ बाजे अनहद तूरे ॥ १ ॥ संतहु रामु जपत सुखु पाइआ ॥ संत असथानि बसे सुख सहजे सगले दूख मिटाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूरे की बाणी ॥ पारब्रहम मनि भाणी ॥ नानक दासि वखाणी ॥ निरमल अकथ कहाणी ॥ २ ॥ १८ ॥ ८२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ भूखे खावत लाज न आवै ॥ तिउ हरि जनु हरि गुण गावै ॥ १ ॥ अपने काज कउ किउ अलकाईऐ ॥ जितु सिमरनि दरगह मुखु ऊजल सदा सदा सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ कामी कामि लुभावै ॥ तिउ हरि दास हरि जसु भावै ॥ २ ॥ जिउ माता बालि लपटावै ॥ तिउ गिआनी नामु कमावै ॥ ३ ॥ गुर पूरे ते पावै ॥ जन नानक नामु धिआवै ॥ ४ ॥ १९ ॥ ८३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सुख सांदि घरि आइआ ॥ निंदक कै मुखि छाइआ ॥ पूरै गुरि पहिराइआ ॥ बिनसे दुख सबाइआ ॥ १ ॥ संतहु साचे की वडिआई ॥ जिनि अचरज सोभ बणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बोले साहिब कै भाणै ॥ दासु बाणी ब्रहमु वखाणै ॥ नानक प्रभ सुखदाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥ २ ॥ २० ॥ ८४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ प्रभु अपुना रिदै धिआए ॥ घरि सही सलामति आए ॥ संतोखु भइआ संसारे ॥ गुरि पूरै लै तारे ॥ १ ॥ संतहु प्रभु मेरा सदा दइआला ॥ अपने भगत की गणत न गणई राखै बाल गुपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि नामु रिदै उरि धारे ॥ तिनि सभे थोक सवारे ॥ गुरि पूरै तुसि दीआ ॥ फिरि नानक दूखु न थीआ ॥ २ ॥ २१ ॥ ८५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हरि मनि तनि वसिआ सोई ॥ जै जै कारु करे सभु कोई ॥ गुर पूरे की वडिआई ॥ ता की कीमति कही न जाई ॥ १ ॥ हउ कुरबानु जाई तेरे नावै ॥ जिस नो बखसि लैहि मेरे पिआरे सो जसु तेरा गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं भारो सुआमी मेरा ॥ संतां भरवासा तेरा ॥ नानक प्रभ सरणाई ॥ मुखि निंदक कै छाई ॥ २ ॥ २२ ॥ ८६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु मेरे मीता ॥ पाछे आनदु प्रभि कीता ॥ परमेसुरि बणत बणाई ॥ फिरि डोलत कतहू नाही ॥ १ ॥ साचे साहिब सिउ मनु मानिआ ॥ हरि सरब निरंतरि जानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

पूर्ण गुरु की जिसने आराधना की उसके सारे कार्य संवर गए हैं। उसके मन की सभी आशाएं पूरी हो गई हैं और आध्यात्मिक आनन्द के अनहद् वाद्य उसके हृदय में बजने लगे हैं।। १ ।। हे संतजनों, प्रभु के जाप से ही सुख प्राप्त होता है। जो शान्त पुरुषों की संगत में स्थित हो गए हैं वे सहज सुख में लीन हो गए हैं और उन्होंने अपने सारे दुखों को मिटा दिया है।। १ ।। रहाउ।। पूर्ण गुरु की वाणी परब्रह्म प्रभु के मन को भा गई है। दास नानक ने उसका उच्चारण किया है और उसकी निर्मल कथा अकथनीय है।। २ ।। १८ ।। ८२।। सोरठि महला ५ ।। जिस प्रकार भूखे व्यक्ति को खाते समय कोई भी लज्जा का अनुभव नहीं होता इसी प्रकार प्रभु का सेवक भी बिना लज्जा के प्रभु के गुण गाता है।। १ ।। हरि की भक्ति जैसे अपने काम को करने में भला क्यों आलस किया जाए जिसके सुमिरन से उस प्रभु के दरबार में मुख उज्जवल होता है और सदैव सुख प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ।। जिस प्रकार कामी व्यक्ति सदैव विषय विकार में ही मस्त रहता है उसी प्रकार प्रभु के दास को प्रभु का यश अच्छा लगता है।। २ ।। जिस प्रकार माँ प्रेम के कारण अपने बच्चे से लिपटी रहती है उसी प्रकार ज्ञानवान पुरुष प्रभु-नाम में बलपूर्वक जुड़ा रहता है।। ३ ।। प्रभु-नाम पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है और दास नानक उस प्रभु के नाम का ही सुमिरन करता है।। ४ ।। १६।। ८३।। सोरठि महला ५ ।। सुख शान्ति से दास अपने घर आ पहुंचा और निन्दकों के मुख पर कालिमा की छाया उभर आई अर्थात वे शर्मिन्दा हो गए। पूर्ण गुरु ने सम्मान वस्त्र पहना दिया और सभी दुख विनष्ट हो गए हैं।। १ ।। हे संतजनों, यह सच्चे प्रभु की महानता है जिसने यह आश्चर्यजनक सुन्दर लीला कर दी है।। १ ।। रहाउ।। दास तो प्रभु के हुकुम में ही बोलता है और शब्द-ब्रह्म का उच्चारण करता है। हे नानक, वह प्रभु सुख देने वाला है जिसने इस पूरी रचना को रचा है।। २ ।। २० ।। ८४।। सोरठि महला ५ ।। अपने प्रभु की हृदय में आराधना करते हुए हम अपने घर सही सलामत वापस आ पहुंचे। सारा संसार संतुष्ट और तृप्त हो गया तथा पूर्ण गुरु के माध्यम से उसका उद्धार हो गया।। १ ।। हे संतजनों, मेरा प्रभु सदैव दयालु बना रहने वाला है; वह अपने भक्त का लेखा जोखा नहीं करता और वह प्रभु उनकी बच्चों की तरह रक्षा करता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु-नाम को हृदय में धारण किया और उसने सभी कार्य संवार दिए। पूर्ण गुरु ने प्रसन्न होकर प्रभु-नाम प्रदान किया और हे नानक, फिर कभी दुख प्राप्त नहीं हुआ है।। २ ।। २० ।। ८५।। सोरठि महला ५ ।। वह प्रभु मन तन में बस गया है और अब सभी जय जयकार कर रहे हैं। पूर्ण गुरु की महानता की कीमत आंकी नहीं जा सकती।। १ ।। हे प्रभु, मैं तेरे नाम पर बलिहारी जाता हूं; जिसे तू कृपा पूर्वक प्रदान करता है, हे मेरे प्यारे, वही तेरे यश का गायन करता है।। १।। रहाउ।। तू मेरा स्वामी बड़ा और महान है। शान्त पुरुषों को तो केवल तेरा ही भरोसा और आसरा है। हे नानक, प्रभु की शरण में आ जाने वाले लोगों के निन्दकों के मुंह पर राख ही पड़ती है।। २ ।। २२ ।। ८६।। सोरठि महला ५ ।। हे मित्र, मेरे तो आगे भी सुख है और प्रभु ने मेरे पीछे अर्थात यहां पर भी मुझे आनन्दित किया हुआ है। परमेश्वर प्रभु ने कुछ ऐसा संयोग बनाया है कि सुख और आनन्द का यह सिलसिला अब न तो टूटता है और न ही डोलता है।। १ ।। जब सच्चे प्रभु से मन जुड़ गया तब उस प्रभु को सब स्थानों में अच्छी तरह बसा हुआ मैंने जान लिया है।। १ ।। रहाउ।।

सभ जीअ तेरे दइआला ॥ अपने भगत करहि प्रतिपाला ॥ अचरजु तेरी वडिआई ॥ नित नानक नामु धिआई ॥ २ ॥ २३ ॥ ८७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ नालि नराइणु मेरै ॥ जमदूतु न आवै नेरै ॥ कंठि लाइ प्रभ राखै ॥ सतिगुर की सचु साखै ॥ १ ॥ गुरि पूरै पूरी कीती ॥ दुसमन मारि विडारे सगले दास कउ सुमति दीती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभि सगले थान वसाए ॥ सुखि सांदि फिरि आए ॥ नानक प्रभ सरणाए ॥ जिनि सगले रोग मिटाए ॥ २ ॥ २४ ॥ ८८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सरब सुखा का दाता सतिगुरु ता की सरनी पाईऐ ॥ दरसनु भेटत होत अनंदा दूखु गइआ हरि गाईऐ ॥ १ ॥ हरि रसु पीवहु भाई ॥ नामु जपहु नामो आराधहु गुर पूरे की सरनाई ॥ रहाउ ॥ तिसहि परापति जिसु धुरि लिखिआ सोई पूरनु भाई ॥ नानक की बेनंती प्रभ जी नामि रहा लिव लाई ॥ २ ॥ २५ ॥ ८९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ करन करावन हरि अंतरजामी जन अपुने की राखै ॥ जै जै कारु होतु जग भीतरि सबदु गुरू रसु चाखै ॥ १ ॥ प्रभ जी तेरी ओट गुसाई ॥ तू समरथु सरनि का दाता आठ पहर तुम्ह धिआई ॥ रहाउ ॥ जो जनु भजनु करे प्रभ तेरा तिसै अंदेसा नाही ॥ सतिगुर चरन लगे भउ मिटिआ हरि गुन गाए मन माही ॥ २ ॥ सूख सहज आनंद घनेरे सतिगुर दीआ दिलासा ॥ जिणि घरि आए सोभा सेती पूरन होई आसा ॥ ३ ॥ पूरा गुरु पूरी मति जा की पूरन प्रभ के कामा ॥ गुर चरनी लागि तरिओ भव सागरु जपि नानक हरि हरि नामा ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९० ॥ सोरठि महला ५ ॥ भइओ किरपालु दीन दुख भंजनु आपे सभ बिधि थाटी ॥ खिन महि राखि लीओ जनु अपुना गुर पूरै बेड़ी काटी ॥ १ ॥ मेरे मन गुर गोविंदु सद धिआईऐ ॥ सगल कलेस मिटहि इसु तन ते मन चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत जा के सभि कीने प्रभु ऊचा अगम अपारा ॥ साधसंगि नानक नामु धिआइआ मुख ऊजल भए दरबारा ॥ २ ॥ २७ ॥ ९१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरउ अपुना सांई ॥ दिनसु रैनि सद धिआई ॥ हाथ देइ जिनि राखे ॥ हरि नाम महा रस चाखे ॥ १ ॥

हे दयालु प्रभु, सभी जीव तेरे हैं और तू अपने भक्तों का पालन-पोषण करता है। तेरी महानता आश्चर्यजनक है। नानक ने तो तेरे नाम का ही सुमिरन किया है।। २ ।। २३ ।। ८७ ।। सोरठि महला ५ ।। व्यापक प्रभु मेरे साथ है और यमदूत मेरे पास भी नहीं आ पाता; प्रभु ने मुझे गले लगाकर मेरी रक्षा की है और सच्चे गुरु की यही सच्ची बात है। पूर्ण गुरु ने तो पूर्ण सफलता दे दी है; सभी शत्रुओं को मारकर पछाड़ दिया है और अपने इस दास को सुमति प्रदान कर दी है।।१।। रहाउ ।। प्रभु ने सभी स्थान फिर बसा दिए हैं और सुख शान्तिपूर्वक हम फिर आ पहुँचे हैं। हे नानक, हम तो प्रभु की शरण में हैं जिसने हमारे सभी रोग नष्ट कर दिए हैं।। २ ।। २४ ।। ८८ ।। सोरठि महला ५ ।। वह सच्चा गुरु प्रभु सुखों का दाता है और उसी की शरण में पड़ना चाहिए। उसका दर्शन करने से आनन्द प्राप्त होता है और उस प्रभु का गुणानुवाद करने से दुख चला जाता है।। १ ।। हे भाई, हरि-रस का पान करो। पूर्ण गुरु की शरण में आकर प्रभु-नाम का जाप करो और प्रभु-नाम की ही आराधना करो।। रहाउ ।। वह प्रभु उसे ही प्राप्त होता है जिसके भाग्य में प्रारम्भ से ही लिखा होता है; हे भाई, वही पूर्णता को पाता है। हे प्रभु, नानक की तो यही विनती है कि तेरे नाम में मैं अपनी सुरति लगाए रखूं ।। २ ।। २५ ।। ८९ ।। सोरठि महला ५ ।। वह अन्तर्यामी प्रभु स्वयं ही सब कुछ करने कराने वाला है और वह सेवक शब्द-गुरु के रस का पान करता है।। १ ।। हे प्रभु, हमें तेरा ही आसरा है। तू ही समर्थ है, तू ही शरण देने वाला दाता है और मैं आठों प्रहर तेरा सुमिरन करता रहूँ।। रहाउ ।। हे प्रभु, जो तेरा भजन सुमिरन करता है उसे कोई भी भय और चिन्ता नहीं रहती। सच्चे गुरु के चरणों में लगने से सारा डर मिट गया है और मन में प्रभु के ही गुण गाए जा रहे हैं ।। २ ।। सच्चे गुरु ने ऐसा हौसला और तसल्ली दी है कि सहज स्वाभाविक सुख और भरपूर आनन्द प्राप्त हो गए हैं। पूरी शोभा के साथ हम जीत कर अपने घर स्थित हो गए हैं और हमारी आशा पूर्ण हो गई है।। ३ ।। जिस गुरु की मति पूर्ण है वही पूरा गुरु है और ऐसे प्रभु के काम भी पूर्ण होते हैं अधूरे नहीं होते। नानक तो प्रभु के नाम का सुमिरन करते हुए गुरु के चरणों में लगकर भवसागर से तैर कर पार हो गया है।। ४ ।। २६ ।। ९० ।। सोरठि महला ५ ।। वह दीनों का दुख नष्ट करने वाला प्रभु कृपालु हो गया है और उसने स्वयं ही सभी विधियां बता दी हैं। पूर्ण गुरु ने बन्धनों को काटकर क्षण भर में ही अपने सेवक को बचा लिया है।। १ ।। हे मेरे मन, धरती के मालिक प्रभु गुरु का ही सदैव सुमिरन करना चाहिए। उसके सुमिरन से ही इस तन के सभी कष्ट मिट जाते है; वह प्रभु ऊँचा, अगम्य और अपरंपर है। नानक ने तो साधुसंगत में उसके नाम का सुमिरन किया है जिससे प्रभु के दरबार में मुख उज्जवल हो गया है।। २ ।। २७ ।। ९१ ।। सोरठि महला ५ ।। मैं अपने प्रभु को याद करूँ और दिन रात उसका सुमिरन करता रहूँ क्योंकि उसने अपना हाथ देकर हमारी रक्षा की है और हमने प्रभु-नाम रूपी महारस का स्वाद चख लिया है।। १ ।।

अपने गुर ऊपरि कुरबानु ॥ भए किरपाल पूरन प्रभ दाते जीअ होए मिहरवान ॥ रहाउ ॥ नानक जन सरनाई ॥ जिनि पूरन पैज रखाई ॥ सगले दूख मिटाई ॥ सुखु भुंचहु मेरे भाई ॥ २ ॥ २८ ॥ ९२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सुनहु बिनंती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे ॥ राखु पैज नाम अपुने की करन करावनहारे ॥ १ ॥ प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ॥ बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥ सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ॥ पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ॥ २ ॥ २९ ॥ ९३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जीअ जंत सभि वसि करि दीने सेवक सभि दरबारे ॥ अंगीकारु कीओ प्रभ अपुने भव निधि पारि उतारे ॥ १ ॥ संतन के कारज सगल सवारे ॥ दीन दइआल क्रिपाल क्रिपा निधि पूरन खसम हमारे ॥ रहाउ ॥ आउ बैठु आदरु सभ थाई ऊन न कतहूं बाता ॥ भगति सिरपाउ दीओ जन अपुने प्रतापु नानक प्रभ जाता ॥ २ ॥ ३० ॥ ९४ ॥

सोरठि महला ९ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥ स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥ कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥ १ ॥ आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥ कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥ २ ॥ १ ॥ सोरठि महला ९ ॥ मन की मन ही माहि रही ॥ ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभ मही ॥ अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ॥ १ ॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥ नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥ २ ॥ २ ॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥ पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन

मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ। जब पूर्ण प्रभु मुझ पर दयालु हो गए तो सभी लोग हम पर मेहरबान हो गए हैं।। रहाउ।। दास नानक तो उसकी शरण में है जिसने हमारा पूर्ण सम्मान बनाए रखा है। उसने समस्त दुखों को मिटा दिया है और हे मेरे भाई, अब तुम सुखों का उपभोग करो।। २ ।। २८ ।। ६२ ।। सोरठि महला ४ ।। हे मेरे मालिक, मेरी विनती सुनो; सभी जीव जन्तुओं को तेरा ही आसरा है। हे सब कुछ करने कराने वाले प्रभु, तुम अपने नाम की लाज की रक्षा करो।। १ ।। हे प्रभु, तुम अपने मालिक होने के धर्म को निभाओ क्योंकि हम चाहे बुरे हैं चाहे भले हैं, हम तेरे ही हैं।। रहाउ।। उस समर्थ स्वामी ने हमारी पुकार सुनी और हमारे बन्धनों को काटकर हमें संवार दिया है। प्रभु ने अपने दासों को सम्मानित वस्त्र पहना कर अपने साथ मिला लिया और हे नानक, उन्हें संसार में प्रकट (प्रसिद्ध) कर दिया है।। २ ।। २९ ।। ६३ ।। सोरठि महला ५ ।। प्रभु ने सम्पूर्ण सृष्टि के जीव जन्तुओं को अपने सेवकों के अधीन कर दिया है और उन सेवकों को अपने पवित्र स्थान पर बैठा लिया है। प्रभु ने उन्हें अपने गले लगाकर संसार सागर से पार उतार दिया है।। १ ।। शान्त पुरुषों के सभी कामों को उसने संवार दिया है और कृपा का भण्डार वह दीन दयालु प्रभु पूर्ण रूप से हमारा मालिक है।। रहाउ ।। सब स्थानों पर हमारी आवभगत की जाती है और हमारे लिए किसी बात की भी कमी नहीं होती। प्रभु ने अपने सेवकों को भक्ति और प्रेम का सम्मानित वस्त्र प्रदान किया है और हे नानक, इस सबको हम प्रभु का प्रताप और बड़प्पन मानते हैं।। २ ।। ३० ।। ६४।।

सोरठि महला ९ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरे मन, तू राम (प्रभु) से प्रेम कर। अपने कानों से धरती के स्वामी प्रभु के गुण सुनो और अपनी जीभ से उसके गुणों के गीत गाते रहो।। १ ।। रहाउ ।। साधसंगत में जाकर उस प्रभु का सुमिरन करो और पतित से पवित्र बन जाओ। काल रूपी भयंकर जानवर तो मुंह फाड़े हुए इधर उधर हे मेरे मित्र घूमता फिर रहा है।। १ ।। वह आजकल में ही तुझे खा लेगा, इस तथ्य को समझकर मन में बसाए रखो। नानक का कथन है कि हे मन, तू प्रभु का जाप कर ले क्योंकि समय बीतता जा रहा है।। २ ।। १ ।। सोरठि महला ९ ।। मेरे मन की इच्छा तो मन में ही रह गई क्योंकि न तो मैंने प्रभु का सुमिरन किया, न पवित्र स्थानों पर गया और काल ने मुझे सिर के बालों से आ पकड़ा है।। १ ।। रहाउ ।। स्त्री, मित्र, पुत्र, रथ, सम्पत्ति, धन आदि से भरी हुई पृथ्वी तथा अन्य सभी चीज़ों को मिथ्या जानो; केवल राम का भजन ही सत्य है।। १ ।। अनेक युगों तक भटकने के बाद मैं हार गया हूँ और अब कहीं मुझे मानव जन्म प्राप्त हुआ है। नानक कहता है कि प्रभु से मिलने का अब यही अवसर है, तू उसका सुमिरन क्यों नहीं करता।। २ ।। २ ।। सोरठि महला ९ ।। हे मन, तूने यह कुबुद्धि कहां से ले ली है। तू पराई स्त्री, निन्दा आदि के रस में ही लीन बना है और तूने प्रभु की भक्ति नहीं की है।। १ ।। रहाउ ।। बन्धनों से छूटने का रास्ता तो तूने नहीं जाना और केवल धन जमा

कउ धाइआ ॥ अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ॥ १ ॥ ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ॥ घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥ २ ॥ बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥ मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥ ३ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥ जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अटल भइओ ध्रूअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥ दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥ १ ॥ जब ही सरनि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥ महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥ २ ॥ अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥ नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥ ३ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ९ ॥ प्रानी कउनु उपाउ करै ॥ जा ते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥ कउनु नामु गुर जा कै सिमरै भव सागर कउ तरई ॥ १ ॥ कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥ अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥ २ ॥ सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥ सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥ ३ ॥ ५ ॥ सोरठि महला ९ ॥ माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥ महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई ॥ बिखिआसकत रहिओ निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥ १ ॥ साधसंगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥ जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥ २ ॥ ६ ॥ सोरठि महला ९ ॥ माई मनु मेरो बसि नाहि ॥ निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै ॥ पर धन पर दारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै ॥ १ ॥ मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥ घट ही

करने के लिए भागता फिरता रहा है। अन्त में तेरा साथ किसी ने भी नहीं दिया और तू व्यर्थ में ही बंध गया है।। १ ।। न तो तूने प्रभु का सुमिरन किया न गुरुजनों की सेवा की और न ही तेरे मन में ज्ञान पैदा हुआ है। माया से अलिप्त प्रभु तो तेरे हृदय में बसता है परन्तु तू उसे जंगलों में ढूंढ रहा है।। २ ।। अनेकों जन्मों तक भटकता हुआ तू हार गया है परन्तु तुझे स्थिर मति प्राप्त नहीं हो सकी। नानक तो यही बात कहता है कि हे जीव मानव देह को प्राप्त करके तू प्रभु का भजन कर।। ३ ।। ३ ।। सोरठि महला ६ ।। हे मन, तुम उस प्रभु हरि की शरण में जाने का विचार बनाओ। जिसके सुमिरन से गणिका का उद्धार हो गया; तुम भी उसी के यश को हृदय में धारण करो।। १ ।। रहाउ।। जिसके सुमिरन से ध्रुव अटल बन गया और उसने निर्भय पद को प्राप्त कर लिया; इस प्रकार के दुखहर्ता स्वामी को तूने क्यों भुला दिया है।। १ ।। जब उस कृपा के भण्डार प्रभु की शरण में गजराज आ गया तो वह विशाल मगरमच्छ के मुँह से मुक्त हो गया। मैं प्रभु-नाम की महिमा का कहां तक वर्णन करूँ क्योंकि राम कहते ही उसका बन्धन टूट गया।। २ ।। पापी के रूप में जाने जाते अजामिल का क्षण भर में ही उद्धार हो गया। नानक का कथन है कि तू उस चिन्तामणि प्रभु का सुमिरन कर ; तू भी पार उतर जाएगा।। ३ ।। ४ ।। सोरठि महला ६ ।। प्राणी कौन सा उपाय करे जिससे वह प्रभु की भक्ति प्राप्त कर ले और उसका यम का भय दूर हो जाए।। १ ।। रहाउ ।। वह कौन सी विद्या का कर्म करे और कौन से धार्मिक विधि विधान का पालन करे; कौन से गुरु के नाम का सुमिरन करे; जिससे वह भवसागर से पार उतर जाए।। १ ।। कलियुग में तो एक प्रभु का ही नाम कृपा का भण्डार है जिसके सुमिरन से व्यक्ति को मुक्ति प्राप्त होती है। ज्ञान से भरपूर ग्रंथ (वेद) भी यही बताते हैं कि प्रभु के नाम के समान अन्य कोई भी कर्मकाण्ड नहीं है।। २ ।। जिसको हम प्रभु कहते हैं वह सदैव सुख दुख से अलिप्त बना रहता है।। ३ ।। ५ ।। सोरठि महला ६ ।। हे मां, मैं किस प्रकार धरती के मालिक को पहचान पाता क्योंकि मेरा मन तो महामोह के अज्ञान रूपी अंधकार में उलझा हुआ है।। १ ।। रहाउ।। सारी आयु भर मैं भ्रमों में ही भटक कर खोया रहा और मैंने स्थिर मति को प्राप्त नहीं किया। मैं दिन-रात विषय विकारों में ही आसक्त बना रहा और मेरा नीचपना मुझसे कभी भी नहीं छूट सका।। १ ।। मैंने साधसंगत कभी नहीं की और न ही प्रभु की कीर्ति का मैंने कभी गायन किया है। दास नानक का कथन है कि हे प्रभु, मुझमें कोई भी गुण नहीं है, तुम मुझे अपनी शरण में ले लो।। २ ।। ६ ।। सोरठि महला ६ ।। हे माँ, मेरा यह मन मेरे वश में नहीं है। दिन रात यह विषय-विकारों की तरफ दौड़ता रहता है, मैं इसे किस विधि से रोकूँ।। १ ।। रहाउ ।। वेद, पुराण, समृतियों आदि के उपदेश को सुनकर यह तनिक भी उन्हें हृदय में धारण नहीं करता। पराए धन और पराई स्त्री में लीन होकर यह अपने जीवन को व्यर्थ ही व्यतीत कर रहा है।। १ ।। यह माया के अभिमान में पागल बना हुआ है और इसे कुछ भी ज्ञान नहीं सूझता।

भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना ॥ २ ॥ जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥ तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥ ३ ॥ ७ ॥ सोरठि महला ९ ॥ रे नर इह साची जीअ धारि ॥ सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥ तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥ १ ॥ अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥ कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥ २ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ९ ॥ इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥ सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥ जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥ १ ॥ कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥ दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ता को बिसराइओ ॥ २ ॥ सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ ॥ नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥ ३ ॥ ९ ॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥ कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साच छाडि कै झूठह लागिओ जनमु अकारथु खोइओ ॥ करि परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ ॥ १ ॥ राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना ॥ उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥ २ ॥ रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥ कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥ ३ ॥ १० ॥ सोरठि महला ९ ॥ जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥ सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥ हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥ १ ॥ आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥ कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥ २ ॥ गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥ नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ

यह उस निरंजन प्रभु के रहस्य को नहीं जानता है जो इसके हृदय के अन्दर बसा है ।। २ ।। जैसे ही यह साधु पुरुषों की शरण में आ गया तो इसकी सारी दुमर्ति विनष्ट हो गई है। हे नानक, तभी इसने उस चिंतामणि प्रभु का सुमिरन किया और इसका यम का फंदा कट गया है ।। ६ ।। ७ ।। सोरठि महला ६ ।। हे मानव, इस सच्ची बात को तू हृदय में धारण कर ले कि यह सारा संसार सपने जैसा है जिसे विनष्ट होते ज़रा भी देर नहीं लगती।। १ ।। रहाउ ।। बड़े प्रेम से रेत की दीवार बनाई जाए तब भी वह चार दिन तक नहीं टिकती। उसी प्रकार हे गँवार प्राणी, ये सभी माया के सुख हैं तू इनमें क्यों उलझा हुआ है ।। १ ।। अभी भी तू समझ जा क्योंकि अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है और तू प्रभु-नाम का सुमिरन कर ले। नानक का कथन है कि यही साधु पुरुषों का विशेष उपदेश और सिद्धान्त है जो मैंने पुकार कर तुझे सुना दिया है ।। २ ।। ८ ।। सोरठि महला ६ ।। मैंने इस संसार में किसी को भी मित्र की तरह व्यवहार करते नहीं देखा। सारा संसार अपने ही सुख में लीन बना हुआ है और दुख में किसी के साथ नहीं होता।। १ ।। रहाउ ।। स्त्री, मित्र, पुत्र, सम्बन्धी सभी लोग केवल धन के कारण ही आपस में जुड़े रहते हैं। व्यक्ति को जब यह निर्धन के रूप में देख लेते हैं तो उसका साथ छोड़कर भाग खड़े होते हैं।। १ ।। इस पागल मन को भला मैं क्या कहूँ, इसने इन सबके साथ ही प्रेम लगाया हुआ है और सारे भय को नष्ट करने वाला जो दीनों का नाथ प्रभु है उसके यश को इसने भुला दिया है ।। २ ।। यह कुत्ते की पूंछ की तरह सीधा नहीं होता और मैंने इसके लिए अनेकों यत्न कर लिए हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु, तुम अपने बिरद की लाज रखो क्योंकि अब मैंने तुम्हारे नाम का सुमिरन किया है।। ३ ।। ९ ।। सोरठि महला ६ ।। हे मन, तूने गुरु के उपदेश को तो माना नहीं इसलिए क्या हुआ यदि तूने सिर मुंडवा लिया है और भगवे वेष को धारण कर लिया है ।। १ ।। रहाउ ।। सत्य को छोड़कर तू झूठ के साथ ही लगा है और तुमने अपना जीवन व्यर्थ ही खो दिया है। तूने अनेकों प्रपंच करके अपने पेट को भरा है और प्रभु सुमिरन की महिमा को तूने जाना ही नहीं है। तू पागल होकर विषय विकारों में ही उलझा रहा तथा तूने प्रभु-नाम जैसे रत्न को भुलाए रखा है।। २ ।। तू अचेत बना रहा और तूने प्रभु को याद नहीं किया तथा इस प्रकार सारी आयु तूने व्यर्थ ही बिता दी है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, यह प्राणी तो सदैव भूल करने वाला है, तुम अपने बिरद को ध्यान में रखकर इसका उद्धार करो।। ३ ।। १० ।। सोरठि महला ६ ।। जो व्यक्ति दुख में दुख नहीं मानता, जिसे सुखों के साथ स्नेह नहीं है और जो भयभीत भी नहीं होता तथा सोने को भी मिट्टी के समान मानता है (प्रभु उसके हृदय में बसता है)।। १ ।। रहाउ ।। ऐसे व्यक्ति को न तो निन्दा की और न ही प्रशंसा की परवाह होती है; उसे न तो लोभ होता है न मोह होता है न ही अभिमान होता है। वह हर्ष और शोक से अलग ही बना रहता है। उसे न तो सम्मान की परवाह होती है न ही वह अपमान को जानता है। जो आशाओं, तृष्णाओं को सम्पूर्ण रूप से त्याग देता है और संसार से अनासक्त बना रहता है; जिसे काम, क्रोध स्पर्श भी नहीं करते वास्तव में उसके हृदय में ही ब्रह्म का निवास होता है।। २ ।। जिस व्यक्ति पर गुरु ने कृपा की उसी ने ही इस विधि को पहचाना है और हे नानक, वह प्रभु में उसी प्रकार लीन हो जाता है

जिउ पानी संगि पानी ॥ ३ ॥ ११ ॥ सोरठि महला ९ ॥ प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥ अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥ बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥ १ ॥ घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥ जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेतकरि भागी ॥ २ ॥ इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥ अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥ ३ ॥ १२ ॥ १३९ ॥

सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥ त्रिसना राचि न पर घरि जावा त्रिसना नामि बुझाई ॥ घर भीतरि घरु गुरू दिखाइआ सहजि रते मन भाई ॥ तू आपे दाना आपे बीना तू देवहि मति साई ॥ १ ॥ मनु बैरागि रतउ बैरागी सबदि मनु बेधिआ मेरी माई ॥ अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई ॥ रहाउ ॥ असंख बैरागी कहहि बैराग सो बैरागी जि खसमै भावै ॥ हिरदै सबदि सदा भै रचिआ गुर की कार कमावै ॥ एको चेतै मनूआ न डोलै धावतु वरजि रहावै ॥ सहजे माता सदा रंगि राता साचे के गुण गावै ॥ २ ॥ मनूआ पउणु बिंदु सुखवासी नामि वसै सुख भाई ॥ जिहबा नेत्र सोत्र सचि राते जलि बूझी तुझहि बुझाई ॥ आस निरास रहै बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥ भिखिआ नामि रजे संतोखी अंम्रितु सहजि पीआई ॥ ३ ॥ दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई ॥ सभु जगु तेरा तू एको दाता अवरु न दूजा भाई ॥ मनमुखि जंत दुखि सदा निवासी गुरमुखि दे वडिआई ॥ अपर अपार अगंम अगोचर कहणै कीम न पाई ॥ ४ ॥ सुंन समाधि महा परमारथु तीनि भवण पति नामं ॥ मसतकि लेखु जीआ जगि जोनी सिरि सिरि लेखु सहामं ॥ करम सुकरम कराए आपे आपे भगति द्रिड़ामं ॥ मनि मुखि जूठि लहै भै मानं आपे गिआनु अगामं ॥ ५ ॥

जैसे पानी पानी में समा जाता है ।। ३ ।। ११ ।। सोरठि महला ९ ।। हे प्यारे, तू अपने मन में अच्छी तरह जान ले कि सारा संसार अपने सुखों में ही बंधा है यहां कोई भी किसी का नहीं है।। १ ।। रहाउ ।। सुख में बहुत से लोग आकर मिलते बैठते और चारों दिशाओं से व्यक्ति को घेरे रहते है।। जब विपत्ति पड़ती है तो सभी साथ छोड़कर भाग खड़े होते हैं और कोई पास नहीं आता।। १ ।। अपनी स्त्री जिसके साथ बहुत अधिक प्रेम होता है और जो सदैव साथ बनी रहती है हंस रूपी आत्मा द्वारा शरीर को त्याग देने पर पति के इस शरीर को प्रेत प्रेत कहकर दूर हट जाती है।। २ ।। यहां तो ऐसा व्यवहार बना हुआ है जिससे तूने अपना प्रेम लगाया हुआ है। हे नानक, अंतिम समय में प्रभु के बिना कोई भी काम नहीं आता ।। ३ ।। १२ ।। १३९ ।।

सोरठि महला १ घरु १ अष्टपदियाँ चार पंक्तियों वाली   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मैं दुविधा में नहीं पड़ता और श्मशान आदि पर पूजा के लिए न जाकर प्रभु के बिना अन्य किसी की पूजा नहीं करता। मैं तृष्णाओं में लीन होकर पराई ओर नहीं देखता क्योंकि मेरी तृष्णा तो प्रभु-नाम ने बुझा दी है। मेरे शरीर में ही गुरु ने मेरा वास्तविक घर (आत्मा) दिखा दिया है और मेरा मन सहज भाव में रंग गया है। हे प्रभु, तू स्वयं ही सब कुछ जानता और देखता है और जो तू देता है वास्तविक ज्ञान वही है।। १ ।। हे मेरी मां, मेरा मन वैराग्य में लीन होकर वैराग्यवान हो गया है तथा शब्द ने मेरे मन को बींध डाला है। अब मेरे मन में प्रभु की ज्योति बस गई है और उसकी निरन्तर बनी रहने वाली वाणी तथा सच्चे प्रभु में मेरा ध्यान लग गया है ।। रहाउ ।। असंख्य बैरागी बैराग को धारण करते हैं परन्तु वास्तविक बैरागी वही है जो उस मालिक को भाता है। उसके हृदय में सदैव शब्द का अनुशासन बना रहता है और वही गुरु की सेवा को अपना आचरण बनाता है। उस एक प्रभु का ही सुमिरन करे, उसका मन भटके नहीं और वह दौड़ते हुए मन को रोक कर रखे; ऐसा व्यक्ति सहज में मस्त होकर सदैव उस प्रभु के रंग में रंगा जाकर उस सच्चे के गुणों का गायन करता रहता है।। २ ।। हवा जैसा चंचल मन यदि क्षण भर के लिए भी आराम के साथ टिक जाए तो प्रभु नाम में बसकर हे भाई, वह सुखी होकर रह सकता है। ऐसे व्यक्ति की जीभ, आंखें, कान सत्य में लीन हो जाते हैं। उसकी तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है और वास्तव में हे प्रभु, तू ही उसे बुझाता है। ऐसा बैरागी आशाओं के प्रति अनासक्त बना रहकर अपने अन्तर्मन में ही ध्यान टिकाए रहता है। प्रभु-नाम की भिक्षा प्राप्त करके ऐसा व्यक्ति अपनी भूख मिटा कर संतोषी बनकर जीवन में सहज भाव का अमृत पीता रहता है।। ३ ।। जब तक राई के दाने जितना भी दुविधा भाव है तब तक वास्तविक वैराग्य नहीं हो सकता। हे प्रभु, यह सारा संसार तेरा ही है; तू ही एक दाता है और हे भाई, अन्य दूसरा कोई नहीं है। मनमुख जीव सदा दुख में ही पड़े रहते हैं और गुरमुख व्यक्तियों को तू बड़प्पन प्रदान करता है। वह प्रभु अपरंपार, अगम्य अगोचर है उसके मूल्य को आंका नहीं जा सकता।। ४ ।। तुझे शून्य समाधि, महा परमार्थ और तीनों लोकों का स्वामी नाम से जाना जाता है। जीवों के मस्तक पर उस प्रभु की ही रज़ा का लेख लिखा हुआ है और उसी के अनुसार जीव जगत में जन्म लेते हैं और लेखों के अनुसार दुख सुख को सहते हैं। कर्म और शुभ कर्म वह स्वयं ही कराता है और स्वयं ही भक्ति सिखाता समझाता है। प्रभु का भय (अनुशासन) मानने वालों के मन और मुंह से जूठन का भाव उतर जाता है और वह प्रभु स्वयं ही न समझ आने वाले तथ्य का ज्ञान दे देता है।। ५ ।।

जिन चाखिआ सेई सादु जाणनि जिउ गुंगे मिठिआई ॥ अकथै का किआ कथीऐ भाई चालउ सदा रजाई ॥ गुरु दाता मेले ता मति होवै निगुरे मति न काई ॥ जिउ चलाए तिउ चालह भाई होर किआ को करे चतुराई ॥ ६ ॥ इकि भरमि भुलाए इकि भगती राते तेरा खेलु अपारा ॥ जितु तुधु लाए तेहा फलु पाइआ तू हुकमि चलावणहारा ॥ सेवा करी जे किछु होवै अपणा जीउ पिंडु तुमारा ॥ सतिगुरि मिलिऐ किरपा कीनी अंम्रित नामु अधारा ॥ ७ ॥ गगनंतरि वासिआ गुण परगासिआ गुण महि गिआन धिआनं ॥ नामु मनि भावै कहै कहावै ततो ततु वखानं ॥ सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ पूरा बैरागी सहजि सुभागी सचु नानक मनु मानं ॥ ८ ॥ १ ॥ सोरठि महला १ तितुकी ॥ आसा मनसा बंधनी भाई करम धरम बंधकारी ॥ पापि पुंनि जगु जाइआ भाई बिनसै नामु विसारी ॥ इह माइआ जगि मोहणी भाई करम सभे वेकारी ॥ १ ॥ सुणि पंडित करमा कारी ॥ जितु करमि सुखु ऊपजै भाई सु आतम ततु बीचारी ॥ रहाउ ॥ सासतु बेदु बकै खड़ो भाई करम करहु संसारी ॥ पाखंडि मैलु न चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी ॥ इन बिधि डूबी माकुरी भाई ऊंडी सिर कै भारी ॥ २ ॥ दुरमति घणी विगूती भाई दूजै भाइ खुआई ॥ बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै भरमु न जाई ॥ सतिगुरु सेवे ता सुखु पाए भाई आवणु जाणु रहाई ॥ ३ ॥ साचु सहजु गुर ते ऊपजै भाई मनु निरमलु साचि समाई ॥ गुरु सेवे सो बूझै भाई गुर बिनु मगु न पाई ॥ जिसु अंतरि लोभु कि करम कमावै भाई कूड़ु बोलि बिखु खाई ॥ ४ ॥ पंड़ित दही विलोईऐ भाई विचहु निकलै तथु ॥ जलु मथीऐ जलु देखीऐ भाई इहु जगु एहा वथु ॥ गुर बिनु भरमि विगूचीऐ भाई घटि घटि देउ अलखु ॥ ५ ॥ इहु जगु तागो सूत को भाई दह दिस बाधो माइ ॥ बिनु गुर गाठि न छूटई भाई थाके करम कमाइ ॥ इहु जगु भरमि भुलाइआ भाई कहणा किछू न जाइ ॥ ६ ॥ गुर मिलिऐ भउ मनि वसै भाई भै मरणा सचु लेखु ॥ मजनु दानु चंगिआईआ भाई दरगह नामु विसेखु ॥

जिन्होंने इस ज्ञान को चखा है वे ही इसका स्वाद जानते हैं और उनके लिए यह स्वाद गूंगे की मिठाई जैसा है। उस अकथनीय प्रभु का क्या वर्णन किया जाए क्योंकि वह हो नहीं सकता ; इसीलिए सदैव उसके हुकुम में चलते रहना चाहिए। दाता गुरु यदि मिला दे तो उस प्रभु से मेल हो जाता है और गुरु से विमुख रहने वाले को कुछ भी समझ नहीं आता। हे भाई, वह जैसे चलाए वैसे ही चलना चाहिए और अन्य कोई भी चतुराई नहीं दिखानी चाहिए।। ६ ।। कुछ लोग तो भ्रमों में भटक रहे हैं और दूसरी ओर कुछ भक्ति में लीन हैं; हे प्रभु तेरा खेल अपार है। तूने जीवों को जिधर लगाया है वे उसी के अनुरूप फल प्राप्त करते हैं तथा तू उन्हें हुकम में कार्यशील बनाए रखने वाला है। तेरी सेवा तो मैं तब करूँ यदि मेरा कुछ अपना मेरे पास हो; यह जीव और शरीर सब तुम्हारा ही है। सच्चे गुरु से मिलने पर उसने कृपा की और हमें अमृत रूपी नाम का आधार प्रदान किया है।। ७ ।। आध्यात्मिक मंडल में जिसका निवास हो जाता है उसके अन्दर गुण प्रकाशित हो उठते हैं और उसके गुणों में ही ज्ञान ध्यान सब कुछ आ जाता है। अब प्रभु नाम उसके मन को भा जाता है। वह उसी को कहता और कहलवाता है और केवल परमतत्त्व का ही बखान करता है। शब्द-गुरु हमारा पीर बहुत गहरा और शान्त है; इस शब्द को समझे बिना तो सारा संसार पागलों की तरह व्यवहार करता है। जिसका हृदय सत्य को मान लेता है वही पूर्ण बैरागी है और स्वाभाविक रूप से बड़ा भाग्यशाली है।। ८ ।। १ ।। सोरठि महला १ तीन पंक्तियों वाले पद ।। हे भाई, आशा और इच्छा तो बन्धन में डालने वाले हैं और धर्म कर्म अर्थात कर्मकाण्ड भी व्यक्ति को बाँधने वाले ही हैं। पाप और पुण्य के भाव से यह संसार उत्पन्न हुआ है और प्रभु का नाम विस्मृत होने से हे भाई, यह जीव विनष्ट हो जाता है। यह माया तो संसार को मोहित करने वाली है और हे मेरे भाई, जितने भी कर्मकाण्ड हैं वे विकारों की ओर ले जाते हैं।। १।। हे कर्मकाण्ड करने वाले पंडित सुन, जिस कर्म से सुख पैदा होता है मेरे भाई, वह कर्म आत्म तत्त्व का विचार करना ही है।। रहाउ ।। तू वेद और शास्त्रों का खड़े होकर उच्चारण करता है परन्तु हे भाई, तेरे कर्म तो सांसारिकता में लिप्त करने वाले हैं। हे भाई, पाखण्ड करने से अर्थात दिखावे मात्र से मन की मैल नष्ट नहीं होती और तेरा अनतर्मन तो विकारों की मैल से भरा हुआ है। इसी प्रकार ही सिर के बल होकर मकड़ी जाला बनाती है और उसी में फंसकर मर जाती है ।।२।। दुर्मति को धारण करके सृष्टि के बहुत सारे लोग ख्वार होते हैं और द्वैतभाव में कुमार्ग पर चलते रहते हैं। हे भाई, सच्चे गुरु के बिना प्रभु का नाम प्राप्त नहीं होता और प्रभु नाम के बिना भ्रमों से छुटकारा नहीं मिलता। हे भाई, सच्चे गुरु की सेवा की जाए तो व्यक्ति सुख प्राप्त करता है और उसका आवागमन समाप्त हो जाता है।।३।। जो गुरु की सेवा करता है वही समझ पाता है और गुरु के बिना सीधा रास्ता प्राप्त नहीं होता। जिसके अन्तर्मन में लोभ है वह भला क्या कर्म करेगा; हे भाई, वह तो झूठ बोलकर विष खाता रहता है।। ४ ।। हे पंडित, यदि दही को बिलोया जाए तो उसमें से तो कुछ ठोस तथ्य (मक्खन) निकलेगा परन्तु हे भाई, जल को बिलोने से तो जल ही दिखाई देगा और यह संसार भी इसी प्रकार का पदार्थ है। गुरु के बिना तो भ्रमों में ही भटकते रहना पड़ता है और यह पता नहीं चल पाता कि घट घट में वह अलख प्रभु ही बसता है ।।५।। यह संसार सूत का गांठदार वह धागा है जिसे दसों दिशाओं से माया मोह की गांठे लगा कर बांधा हुआ है । गुरु के बिना अर्थात ज्ञान के बिना इस धागे की गाँठ खुलती नहीं अर्थात जगत के रहस्य को नहीं समझा जा सकता और लोग कर्म करते करते थक जाते हैं।। हे भाई, यह संसार भ्रमों में भूला हुआ है और इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता।।६।। गुरु के प्राप्त होने पर भय (अनुशासन) मन में बसता है और हे भाई, इस भय के द्वारा ही अहंकार का मरना सच्चा लेख है। स्नान, दान और नेक कर्म यही है कि प्रभु के दरबार से नाम रूपी विशेष वस्तु प्राप्त हो।

गुरु अंकसु जिनि नामु द्रिड़ाइआ भाई मनि वसिआ चूका भेखु ॥ ७ ॥ इहु तनु हाटु सराफ को भाई वखरु नामु अपारु ॥ इहु वखरु वापारी सो द्रिड़ै भाई गुर सबदि करे वीचारु ॥ धनु वापारी नानका भाई मेलि करे वापारु ॥ ८ ॥ २ ॥ सोरठि महला १ ॥ जिन्ही सतिगुरु सेविआ पिआरे तिन्ह के साथ तरे ॥ तिन्हा ठाक न पाईऐ पिआरे अंम्रित रसन हरे ॥ बूडे भारे भै बिना पिआरे तारे नदरि करे ॥ १ ॥ भी तूहै सालाहणा पिआरे भी तेरी सालाह ॥ विणु बोहिथ भै डुबीऐ पिआरे कंधी पाइ कहाह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सालाही सालाहणा पिआरे दूजा अवरु न कोइ ॥ मेरे प्रभ सालाहनि से भले पिआरे सबदि रते रंगु होइ ॥ तिस की संगति जे मिलै पिआरे रसु लै ततु विलोइ ॥ २ ॥ पति परवाना साच का पिआरे नामु सचा नीसाणु ॥ आइआ लिखि लै जावणा पिआरे हुकमी हुकमु पछाणु ॥ गुर बिनु हुकमु न बूझीऐ पिआरे साचे साचा ताणु ॥ ३ ॥ हुकमै अंदरि निंमिआ पिआरे हुकमै उदर मझारि ॥ हुकमै अंदरि जंमिआ पिआरे ऊधउ सिर कै भारि ॥ गुरमुखि दरगह जाणीऐ पिआरे चलै कारज सारि ॥ ४ ॥ हुकमै अंदरि आइआ पिआरे हुकमे जादो जाइ ॥ हुकमे बंन्हि चलाईऐ पिआरे मनमुखि लहै सजाइ ॥ हुकमे सबदि पछाणीऐ पिआरे दरगह पैधा जाइ ॥ ५ ॥ हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोइ ॥ हुकमे भवै भवाईऐ पिआरे अवगणि मुठी रोइ ॥ हुकमु सिञापै साह का पिआरे सचु मिलै वडिआई होइ ॥ ६ ॥ आखणि अउखा आखीऐ पिआरे किउ सुणीऐ सचु नाउ ॥ जिन्ही सो सालाहिआ पिआरे हउ तिन्ह बलिहारै जाउ ॥ नाउ मिलै संतोखीआं पिआरे नदरी मेलि मिलाउ ॥ ७ ॥ काइआ कागदु जे थीऐ पिआरे मनु मसवाणी धारि ॥ ललता लेखणि सच की पिआरे हरि गुण लिखहु वीचारि ॥ धनु लेखारी नानका पिआरे साचु लिखै उरि धारि ॥ ८ ॥ ३ ॥ सोरठि महला १ पहिला दुतुकी ॥ तू गुणदातौ निरमलो भाई निरमलु ना मनु होइ ॥ हम अपराधी निरगुणे भाई तुझ ही ते गुणु सोइ ॥ १ ॥ मेरे प्रीतमा तू करता करि वेखु ॥ हउ पापी पाखंडीआ भाई मनि तनि नाम

गुरु वह अंकुश है जिसने प्रभु नाम को मन में पक्का किया है; इस से प्रभु मन में बस गया और हे भाई, पाखण्ड समाप्त हो गया है।। ७ ।। हे भाई, यह शरीर तो गहना बेचने वाले की दुकान की तरह है और इसमें प्रभु-नाम रूपी अपार सौदा रखा हुआ है। इस सौदे को वह व्यापारी अच्छी तरह प्राप्त करता है जो शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु का चिन्तन करता है। वही व्यापारी प्रशंसनीय है जो गुरु के साथ मेल करके प्रभु-नाम का ही व्यापार करता है।। ८ ।। २ ।। सोरठि महला १ ।। हे मेरे प्यारे, जिन्होंने सच्चे गुरु की सेवा की है उनके झुण्डों के झुण्ड पार उतर गए हैं।। परलोक में उन्हें कोई भी रुकावट नहीं डालता और अमृत रूपी नाम उनकी जीभ को सदैव मीठा बनाए रहता है। जो प्रभु के भय में नहीं हैं वे अपने पापों के भार से भारी होकर डूब जाते हैं; परन्तु यदि प्रभु कृपादृष्टि करे तो वह उन्हें भी पार उतार देता है।। १ ।। हे प्रभु, तेरा ही गुणानुवाद किया जाना चाहिए क्योंकि उसके बिना दूसरा कोई भी नहीं है। जो मेरे प्रभु का गुणानुवाद करते हैं वे ही भले लोग हैं और शब्द में लीन होकर ही संगत प्राप्त हो जाए तो हे मेरे प्यारे भाई, उसके साथ प्रभु नाम के रस को प्राप्त करके तत्त्व रूप मक्खन को बिलोया जाना चाहिए।। २ ।। वास्तविक सम्मान सत्य का ही होता है और प्रभु का नाम ही व्यक्ति के लिए सच्चा चिन्ह है। संसार में आकर ऐसा सच्चा प्रमाण पत्र लेकर यहां से जाना है और हुकुम करने वाले उस प्रभु को पहचानना है। गुरु के बिना इस को समझा नहीं जा सकता और हे मेरे प्यारे, उस सच्चे हरि का ही सच्चा बल है।।३।। हे प्यारे, जीव प्रभु के हुकुम के अन्तर्गत ही माता के गर्भ में टिकता है और हुकम के अन्दर ही वह सिर के बल होकर उल्टा जन्म लेता है। गुरमुख व्यक्ति को प्रभु के समक्ष सम्मान मिलता है और वह सफलतापूर्वक अपना कार्य करके यहां से चला जाता है।। ४ ।। जीव हुकुम में ही यहां आता है और जाते समय भी हुकुम के अन्तर्गत ही यहां से जाता है। हुकम में ही उसे यहां से बाँधकर धकेला जाता है और मनमुख व्यक्ति सज़ा पाता है। हुकुम के अन्तर्गत ही शब्द के माध्यम से प्रभु को पहचाना जाता है और प्रभु के दरबार में उसे शोभा-वस्त्र प्राप्त होता है ।। ५ ।। हुकम के अन्तर्गत ही अहंकार और द्वैतभाव पैदा होते हैं। हुकम में ही व्यक्ति कर्मों का बंधा हुआ भटकता रहता है और अवगुणों में लुटी हुई यह सारी सृष्टि चीख-पुकार लगाए रहती है। यदि उस प्रभु के हुकम को यह प्यारा जीव पहचान ले तो उसे सत्य मिल जाता है और उसकी महिमा भी होती है।। ६ ।। प्रभु के नाम का जाप और उसके बारे में कुछ भी कहना कठिन है। हे प्यारे, सच्चे नाम को कैसे सुना जाए। जिन्होंने उस सच्चे नाम का गुणानुवाद किया है मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ।। सन्तुष्ट बने रहने वाले लोगों को प्रभु-नाम प्राप्त होता है और हे प्यारे, उसकी कृपादृष्टि से ही ऐसे व्यक्तियों से मेल होता है।। ७।। यदि यह शरीर कागज बन जाए और मन को स्याही की दवात बनाया जाए; यह जीभ सत्य को लिखने वाली कलम हो जाए तो सोच सोचकर प्रभु के गुण लिखे जाने चाहिए। वह लिखने वाला (लेखक) धन्य है जो सत्य को हृदय में धारण करके लिखता है ।। ८।। ३ ।। सोरठि महला १ पहला दो पंक्तियों वाला ।। हे प्रभु, तू गुण देने वाला और पवित्र है परन्तु हमारा मन निर्मल नहीं होता। हम अपराधी और गुणहीन हैं परन्तु हे भाई, अच्छे गुण तुझसे ही प्राप्त हो सकते हैं।। १ ।। हे मेरे प्रियतम, तू ही कर्ता है और सबको पैदा करके तू ही उन्हें देखता है। मैं पापी पाखण्डी हूँ और हे भाई प्रभु, मेरे मन तन में नाम

विसेखु ॥ रहाउ ॥ बिखु माइआ चितु मोहिआ भाई चतुराई पति खोइ ॥ चित महि ठाकुरु सचि वसै भाई जे गुर गिआनु समोइ ॥ २ ॥ रूड़ौ रूड़ौ आखीऐ भाई रूड़ौ लाल चलूलु ॥ जे मनु हरि सिउ बैरागीऐ भाई दरि घरि साचु अभूलु ॥ ३ ॥ पाताली आकासि तू भाई घरि घरि तू गुण गिआनु ॥ गुर मिलिऐ सुख पाइआ भाई चूका मनहु गुमानु ॥ ४ ॥ जलि मलि काइआ माजीऐ भाई भी मैला तनु होइ ॥ गिआनि महा रसि नाईऐ भाई मनु तनु निरमलु होइ ॥ ५ ॥ देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि ॥ पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बूडहि तेहि ॥ ६ ॥ गुर बिनु अलखु न लखीऐ भाई जगु बूडै पति खोइ ॥ मेरे ठाकुर हाथि वडाईआ भाई जै भावै तै देइ ॥ ७ ॥ बईअरि बोलै मीठुली भाई साचु कहै पिर भाइ ॥ बिरहै बेधी सचि वसी भाई अधिक रही हरि नाइ ॥ ८ ॥ सभु को आखै आपणा भाई गुर ते बुझै सुजानु ॥ जो बीधे से ऊबरे भाई सबदु सचा नीसानु ॥ ९ ॥ ईधनु अधिक सकेलीऐ भाई पावकु रंचक पाइ ॥ खिनु पलु नामु रिदै वसै भाई नानक मिलणु सुभाइ ॥ १० ॥ ४ ॥

सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइआ ॥ प्रहिलाद जन तुधु राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारि पचाइआ ॥ गुरमुखा नो परतीति है हरि जीउ मनमुख भरमि भुलाइआ ॥ १ ॥ हरि जी एह तेरी वडिआई ॥ भगता की पैज रखु तू सुआमी भगत तेरी सरणाई ॥ रहाउ ॥ भगता नो जमु जोहि न साकै कालु न नेड़ै जाई ॥ केवल राम नामु मनि वसिआ नामे ही मुकति पाई ॥ रिधि सिधि सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजि सुभाई ॥ २ ॥ मनमुखा नो परतीति न आवी अंतरि लोभ सुआउ ॥ गुरमुखि हिरदै सबदु न भेदिओ हरि नामि न लागा भाउ ॥ कूड़ कपट पाजु लहि जासी मनमुख फीका अलाउ ॥ ३ ॥ भगता विचि आपि वरतदा प्रभ जी भगती हू तू जाता ॥ माइआ मोह सभ

को विशेष रूप से बसा दे ।। रहाउ ।। माया रूपी विष में यह चित्त फंसा हुआ है और हे भाई, यह अपनी चतुराईयों के कारण अपना सम्मान खो देता है। यदि गुरु द्वारा दिया हुआ ज्ञान मन में बस जाए तो हे भाई, वह सत्य रूपी मालिक चित्त में आन बसता है।। २ ।। उसे हे भाई, सुन्दर अति सुन्दर कहा जाता है और वह गाढ़े लाल रंग वाला बहुत ही सुन्दर है। यदि मन प्रभु से प्रेम लगा ले तो प्रभु के स्थान पर उसे सच्चा और भूल रहित गिना जाता है।।३।। हे भाई रूपी प्रभु, आकाश, पाताल में तू ही है और सभी गुणों के रूप में और ज्ञान के रूप में धट धट में तू ही है। गुरु के मिल जाने से सुख पाया जाता है और हे भाई, मन से अभिमान भी चुक जाता है ।। ४ ।। पानी के साथ मल मल कर शरीर को धोया जाता है परन्तु यह शरीर फिर भी मैला बना रहता है। ज्ञान जो सबसे बड़ा रस है उसमें स्नान करने से हे भाई, मन तन निर्मल हो जाता है ।। ५ ।। देवी देवताओं को पूजा जाता है परन्तु हे भाई, इनसे क्या मांगा जाए और ये क्या दे सकते हैं। पत्थर को यदि पानी से धोया जाए तो वह पानी में खुद ही डूब जाता है ।। ६ ।। गुरु के बिना उस समझ से परे प्रभु है जिसको जाना नहीं जा सकता और हे भाई, कार्य के प्रपंचों में डूबा यह संसार अपना सम्मान गंवाता रहता है। सभी प्रकार के बड़प्पन मेरे प्रभु के हाथ में हैं।। वह उन्हें ही देता है जो उसे भाते हैं।। ७ ।। यदि पति रूपी प्रभु के प्रेम में सत्य का जाप करे और प्रियतम को भा जाए तो असभ्य प्राणी रूपी जीव स्त्री भी मीठा बोल बोलने वाली हो जाती है। प्रेम में बंधी हुई ऐसी जीव स्त्री सत्य में बसती है और भरपूर रूप से प्रभु-नाम में लीन बनी रहती है ।। ८ ।। प्रभु को सब कोई अपना अपना कहता है परंन्तु जो गुरु के माध्यम से उसे जानता है वही वास्तव में उसको अच्छी तरह जानता है। जो हरि के प्रेम में बंधे हुए हैं उनका तो उद्धार हो गया और उन पर प्रभु के सच्चे शब्द की सच्ची मोहर अंकित हो गयी है।।६।। जिस प्रकार बहुत सा ईंधन इकट्ठा किया जाए और उसमें थोड़ी सी अग्नि डाल दी जाए तो वह सब जल जाता है इसी प्रकार हे नानक, यदि क्षण भर के लिए भी प्रभु का नाम हृदय में बस जाए तो हे भाई, स्वाभाविक ही प्रभु से मिलाप हो जाता है ।। १० ।। ४ ।।

सोरठि महला ३ घरु १ तीन पंक्तियों की रचना   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, भक्तजनों की इज्ज़त तू सदा ही बचाता आया है और तू प्रारम्भ से ही बचाता आया है। प्रहलाद जैसे सेवक को हे प्रभु, तूने बचा लिया और हिरण्यकश्यिपु को मारकर तूने खपा दिया। हे प्रभु, गुरमुख व्यक्तियों को तो तुझ पर पूर्ण भरोसा है और मनमुख व्यक्ति भ्रमों में ही भटक रहे हैं ।। १ ।। हे प्रभु, यह तेरा ही बड़प्पन है। हे स्वामी, तू भक्तों की इज्ज़त बचाता रह क्योंकि भक्त तेरी ही शरण में हैं ।। रहाउ ।। भक्तों को तो यम देख भी नहीं पाता और काल तो उनके पास भी नहीं आता। उनके हृदय में केवल राम नाम का ही निवास होता है और राम नाम से ही उन्हें मुक्ति प्राप्त होती है। ऋद्धियां सिद्धियां सब गुरु के सहज सुख के स्वभाव के कारण, भक्तजनों के चरणों में पड़ी रहती हैं ।। २ ।। मनमुख व्यक्तियों को कभी भी उस प्रभु पर भरोसा नहीं होता क्योंकि उनके मन में लोभ और स्वार्थ बना रहता है। गुरमुख बनकर उनके हृदय का भेदन शब्द से नहीं हुआ और न ही उन्हें प्रभु नाम से प्यार लगा। उनका झूठ कपट का पर्दाफाश हो जाता है और वे मनमुख व्यक्ति फीका और व्यर्थ ही बोलते रहते हैं।। ३ ।। हे प्रभु, तू भक्तों के अन्दर ही कार्यशील बना रहता है और भक्ति के माध्यम से ही तुझे जाना जाता है। यह माया मोह सब तेरी ही प्रजा (सृष्टि) हैं

लोक है तेरी तू एको पुरखु बिधाता ॥ हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता ॥ ४ ॥ अचिंत कंम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा ॥ गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणहारा ॥ ओना की रीस करे सु विगुचै जिन हरि प्रभु है रखवारा ॥ ५ ॥ बिनु सतिगुर सेवे किनै न पाइआ मनमुखि भउकि मुए बिललाई ॥ आवहि जावहि ठउर न पावहि दुख महि दुखि समाई ॥ गुरमुखि होवै सु अंम्रितु पीवै सहजे साचि समाई ॥ ६ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जनमु न छोडै जे अनेक करम करै अधिकाई ॥ वेद पड़हि तै वाद वखाणहि बिनु हरि पति गवाई ॥ सचा सतिगुरु साची जिसु बाणी भजि छूटहि गुर सरणाई ॥ ७ ॥ जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचै सचिआरा ॥ ओना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइ न मेटणहारा ॥ नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥ ८ ॥ १ ॥ सोरठि महला ३ दुतुकी ॥ निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ॥ सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥ १ ॥ हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ ॥ गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ ॥ रहाउ ॥ कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि ॥ भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ॥ २ ॥ मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ ॥ आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ ॥ ३ ॥ हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ ॥ नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥ ४ ॥ गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ॥ ५ ॥ गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु आधारु ॥ ६ ॥ जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिन कै हउ लागउ पाइ ॥ जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥ ७ ॥ सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ ॥ नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै

और तू एक ही सर्वव्यापक विधाता है। अहंकार को मारकर तृष्णाओं को मन में ही दबा लिया जाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु को पहचाना जाता है ।। ४ ।। जिन लोगों को प्रभु का नाम प्यारा लगता है हे प्रभु, तू बिना कहे ही उनके काम बना देता है। गुरु की कृपा से वह प्रभु जो सभी कार्यों को संवारने वाला है सदैव मन में बसा रहता है। जिनका प्रभु रखवाला है यदि कोई उनकी बराबरी या नकल करे तो वह ख्वार ही होता है ।। ५ ।। मनमुख व्यक्ति चीखते चिल्लाते मर जाते हैं परन्तु सच्चे गुरु की सेवा के बिना कोई भी प्रभु को प्राप्त नहीं कर पाया है। वे आवागमन में पड़े रहते हैं; उन्हें कोई ठौर-ठिकाना नहीं मिलता और वे घोर दुख में ही पड़े रहते हैं।। जो गुरमुख होता है वह अमृत का पान करता है और स्वाभाविक रूप से ही सत्य में लीन हो जाता है ।। ६ ।। सच्चे गुरु की सेवा के बिना जन्म मरण छूटता नहीं बेशक कोई कितने ही अधिक कर्मकाण्ड कर ले। जो वेदों का पाठ करते हैं वे भी वाद विवादों में लगे रहते हैं और प्रभु के बिना अपना सम्मान गंवा लेते हैं।। सच्चे सद्गुरु की सच्ची वाणी है और जो भागकर गुरु की शरण में आते हैं वे मुक्त हो जाते हैं।। ७ ।। जिनके हृदय में प्रभु बस गया है वे प्रभु के दरबार में सच्चे होते हैं और उस सच्चे के द्वार पर सत्याचरण वाले जाने जाते हैं। उनकी महिमा तो युगों युगों तक चलती है और उसे कोई भी मिटाने वाला नहीं है। नानक तो उन पर सदैव बलिहारी जाता है जिन्होंने प्रभु को हृदय में धारण कर रखा है ।। ८ ।। १ ।। सोरठि महला ३ दो पंक्तियों वाली रचना ।। गुणहीन व्यक्तियों पर वह स्वयं ही कृपा करके उन्हें क्षमा कर देता है और हे भाई, सच्चे गुरु की सेवा में लगा लेता है। हे भाई, सच्चे गुरु की सेवा उत्तम है क्योंकि उसके माध्यम से प्रभु नाम में चित्त स्थिर हो जाता है ।। १ ।। प्रभु स्वयं ही कृपा करके अपने से मिला लेता है। हे भाई, हम तो गुणहीन अपराधी हैं, हमें सच्चे गुरु ने अपनी संगत में मिला लिया है ।। रहाउ ।। सच्चे शब्द के चिंतन के माध्यम से तूने किस किस अपराधी को क्षमा नहीं किया है। तूने सच्चे गुरु के जहाज़ पर चढ़ा कर उन्हें संसार सागर से पार उतार दिया है।। २ ।। हे भाईयो, जब पारस रूपी गुरु से हमारा मेल मिलाप हुआ तो जंग लगे लोहे से हम सोना बन गए। हमने अपने अहंकार को छोड़ दिया है, हमारे मन में प्रभु का नाम बस गया है और हमारी ज्योति उस परम ज्योति में मिल गई है।। ३ ।। हे भाई, मैं बार बार बलिहारी जाता हूँ और उस सच्चे गुरु पर सदैव बलिहारी हूँ। यह वही है जिसने मुझे प्रभु-नाम का भण्डार दिया है और गुरु की मति को पाकर हम आत्मज्ञान की सहज अवस्था में लीन हो गए हैं।। ४ ।। बेशक ज्ञानवान लोगों से पूछ लो, गुरु के बिना सहजभाव उत्पन्न नहीं होता। हे भाई, सच्चे गुरु की सदैव सेवा करता रह क्योंकि यह सेवा अन्तर्मन से अहंकार का भाव गंवाती है ।। ५ ।। गुरु की मति में चलने से हरि-भय (अनुशासन) उत्पन्न होता है और प्रभु के भय में रहकर जो भी काम किया जाता है वह सच्चा और उत्तम होता है। हे भाई, सच्चे नाम का यदि आधार मिल जाए तो प्रेम रूपी बहुमूल्य पदार्थ प्राप्त होता है।। ६ ।। हे भाई, जो अपने सच्चे गुरु की सेवा करते हैं मैं उनके चरणों को स्पर्श करता हूँ। इस प्रकार मैं अपने जीवन को सफल कर लेता हूँ और अपने कुल को भी पार उतार लेता हूँ ।। ७ ।। हे भाई, सच्चा शब्द ही सच्ची वाणी है और यह गुरु की कृपा से ही जाना जाता है। हे नानक, जिसके हृदय में प्रभु का नाम बस जाता है उसके सामने कोई

कोइ ॥ ८ ॥ २ ॥ सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइ ॥ सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइ ॥ १ ॥ हरि जी तू आपे रंगु चड़ाइ ॥ गावहु गावहु रंगि रातिहो भाई हरि सेती रंगु लाइ ॥ रहाउ ॥ गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइ ॥ सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ ॥ २ ॥ पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि ॥ मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥ ३ ॥ से गावहि जिन मसतकि भागु है भाई भाइ सचै बैरागु ॥ अनदिनु राते गुण रवहि भाई निरभउ गुर लिव लागु ॥ ४ ॥ सभना मारि जीवालदा भाई सो सेवहु दिनु राति ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ भाई जिस दी वडी है दाति ॥ ५ ॥ मनमुखि मैली डुंमणी भाई दरगह नाही थाउ ॥ गुरमुखि होवै त गुण रवै भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ ॥ ६ ॥ एतु जनमि हरि न चेतिओ भाई किआ मुहु देसी जाइ ॥ किड़ी पवंदी मुहाइओनु भाई बिखिआ नो लोभाइ ॥ ७ ॥ नामु समालहि सुखि वसहि भाई सदा सुखु सांति सरीर ॥ नानक नामु समालि तू भाई अपरंपर गुणी गहीर ॥ ८ ॥ ३ ॥

सोरठि महला ५ घरु १ असटपदीआ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

सभु जगु जिनहि उपाइआ भाई करण कारण समरथु ॥ जीउ पिंडु जिनि साजिआ भाई दे करि अपणी वथु ॥ किनि कहीऐ किउ देखीऐ भाई करता एकु अकथु ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई जिस ते जापै तथु ॥ १ ॥ मेरे मन जपीऐ हरि भगवंता ॥ नाम दानु देइ जन अपने दूख दरद का हंता ॥ रहाउ ॥ जा कै घरि सभु किछु है भाई नउ निधि भरे भंडार ॥ तिस की कीमति ना पवै भाई ऊचा अगम अपार ॥ जीअ जंत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार ॥ सतिगुरु पूरा भेटीऐ भाई सबदि मिलावणहार ॥ २ ॥ सचे चरण सरेवीअहि भाई भ्रमु भउ होवै नासु ॥ मिलि संत सभा मनु मांजीऐ भाई हरि कै नामि निवासु ॥ मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगासु ॥ गुर बचनी

भी रुकावट नहीं आती ।। ८ ।। २ ।। सोरठि महला ३ ।। हे भाई, प्रभु तो शब्द के माध्यम से ही जाना जाता है और पूर्ण भाग्य से ही शब्द से मिलाप होता है। गुरमुख रूपी सुहागिन स्त्रियां हमेशा सुखी रहती हैं। वे प्रेम के रंग में रंगी हुई हर दिन प्रभु में ही लीन बनी रहती हैं।। १ ।। हे प्रभु, तू स्वयं ही जीव पर रंग चढ़ा देता है। हे प्रभु के रंग में रंगे हुए भाईयों, प्रभु के रंग में लीन होकर उसके गुण गाते रहो ।। रहाउ ।। हे भाई, अपना अहंकार भाव छोड़कर उसमें चित्त लगाते हुए गुरु की सेवा करते रहता चाहिए। ऐसा करते रहने से प्रभु मन में आ बसता है और जीव सदा सहजभाव में स्थित हो जाता है और उसे कोई भी दुख नहीं लगता ।। २ ।। जो प्रियतम प्रभु के हुकुम को नहीं पहचानती हे भाई, वह कुलक्षणा एवं कुलटा स्त्री है। प्रेमभाव के बिना केवल मन के हठ से ही काम किए जाना प्रभु के नाम से विहीन होना और झूठे बनना है ।। ३ ।। जिनके माथे पर भाग्य लेख लिखे हैं उन्ही को सच्चे प्रेम के माध्यम से वैराग्य भाव प्राप्त होता है और वे ही उसका गुणानुवाद करते हैं।। वे प्रतिदिन उसके रंग में रंगे हुए उसके गुण गाते हैं और निर्भय गुरु के साथ उनकी लौ लगी रहती है ।। ४ ।। हे भाई, जो सबको मार कर पुनः फिर जीवित कर देता है उसका सुमिरन दिन रात करते रहो। हे भाई, उसे भला क्यों भुलाया जाए जिसका दिया हुआ दान सबसे महान है ।। ५ ।। मनमुख तो मैल से भरी हुई दुविधा वाली वह स्त्री है जिसे प्रभु के सामने कोई स्थान नहीं मिलता । यदि व्यक्ति गुरमुख हो जाए तो यह गुणों में ही रमण करता है और प्रियतम से मिलकर सत्य में लीन बना रहता है ।। ६ ।। इस जन्म में तो तूने प्रभु का सुमिरन नहीं किया इसलिए हे भाई, तू जाकर क्या मुंह दिखाएगा। हे भाई, तुझे आवाज़ देते रहे परन्तु तू फिर भी विषय विकारों में मस्त होकर लुटा जाता रहा ।। ७ ।। यदि तू प्रभु के नाम का सुमिरन करे तो तू सदैव सुखी होकर बसेगा और हे भाई, तेरा शरीर शीतल एवं शान्त सुख वाला हो जाएगा। हे नानक, तू प्रभु के नाम को हृदय में संभाल ले क्योंकि हे भाई, यही अपरंपर और गहरे गुणों वाला है ।। ८ ।। ३ ।।

सोरठि महला ५ घरु १ अष्टपदियां   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे भाई, जिसने यह सारा संसार उत्पन्न किया है वही करने कराने वाला समर्थ प्रभु है। उसी ने ही इस जीव और शरीर की रचना अपनी सत्ता इसे देते हुए की है। कैसे उसका वर्णन किया जाए और कैसे उसको देखा जाए; हे भाई, एक ही कर्ता अकथनीय है। उस प्रभु गुरु का गुणानुवाद किया जाना चाहिए जिससे वास्तविकता का पता लगता है ।। १ ।। हे मेरे भाई, उस भगवत् प्रभु का ही जाप करना चाहिए। वही अपने सेवक को नाम-दान देता है और दुखों क्लेशों को नष्ट करने वाला है ।। रहाउ ।। हे भाई, जिसके घर में सब कुछ है और नवनिधियों से उसके भण्डार भरे हुए हैं उस ऊँचे, अगम्य प्रभु की कीमत नहीं आंकी जा सकती। हे भाई, वह जीव जन्तुओं का पालन पोषण करता है और सदैव उनकी खबर रखता है। सच्चे गुरु एवं पूर्ण गुरु के दर्शन करने चाहिए और हे भाई, शब्द ही गुरु से मिलाने वाला है ।। २ ।। हे भाई, सच्चे चरणों की यदि सेवा की जाए तो भ्रम और भय का नाश हो जाता है। शान्त पुरुषों की सभा में बैठकर मन को मांजा जाना चाहिए और इस प्रकार हे भाई, प्रभु के नाम में निवास होता है। हृदय का अज्ञान और अंधेरा मिट जाता है और हे भाई, हृदय रूपी कमल खिल उठता है। गुरु के उपदेश से

सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि ॥ ३ ॥ मेरा तेरा छोडीऐ भाई होईऐ सभ की धूरि ॥ घटि घटि ब्रहमु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि ॥ जितु दिनि विसरै पारब्रहमु भाई तितु दिनि मरीऐ झूरि ॥ करन करावन समरथो भाई सरब कला भरपूरि ॥ ४ ॥ प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु ॥ तिसु भावै ता मेलि लए भाई हिरदै नाम निवासु ॥ गुरमुखि कमलु प्रगासीऐ भाई रिदै होवै परगासु ॥ प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ धरति अकासु ॥ ५ ॥ गुरि पूरै संतोखिआ भाई अहिनिसि लागा भाउ ॥ रसना रामु रवै सदा भाई साचा सादु सुआउ ॥ करनी सुणि सुणि जीविआ भाई निहचलु पाइआ थाउ ॥ जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअड़ा जलि जाउ ॥ ६ ॥ बहु गुण मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ ॥ ओहु निरगुणीआरे पालदा भाई देइ निथावे थाउ ॥ रिजकु संबाहे सासि सासि भाई गूड़ा जा का नाउ ॥ जिसु गुरु साचा भेटीऐ भाई पूरा तिसु करमाउ ॥ ७ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवीऐ भाई सरब कला भरपूरि ॥ सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा हजूरि ॥ साधू संगि मिलाइआ भाई सरब रहिआ भरपूरि ॥ जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित नित मरदे झूरि ॥ ८ ॥ अंचलि लाइ तराइआ भाई भउजलु दुखु संसारु ॥ करि किरपा नदरि निहालिआ भाई कीतोनु अंगु अपारु ॥ मनु तनु सीतलु होइआ भाई भोजनु नाम अधारु ॥ नानक तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु ॥ ९ ॥ १ ॥ सोरठि महला ५ ॥ मात गरभ दुख सागरो पिआरे तह अपणा नामु जपाइआ ॥ बाहरि काढि बिखु पसरीआ पिआरे माइआ मोहु वधाइआ ॥ जिस नो कीतो करमु आपि पिआरे तिसु पूरा गुरू मिलाइआ ॥ सो आराधे सासि सासि पिआरे राम नाम लिव लाइआ ॥ १ ॥ मनि तनि तेरी टेक है पिआरे मनि तनि तेरी टेक ॥ तुधु बिनु अवरु न करनहारु पिआरे अंतरजामी एक ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि आइआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइ ॥ साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइ ॥ जिन भेटै पूरा सतिगुरू पिआरे से लागे

सुख उत्पन्न होता है और हे भाई, सभी प्रकार के फल सच्चे गुरु के पास ही हैं ।। ३ ।। अपने और बेगाने वाली बात छोड़ दी जानी चाहिए और सबकी चरण-धूलि बन जाना चाहिए। हे भाई, घट घट में वह ब्रह्म पसरा हुआ है और वह हमें हमारे साथ रहकर देखता भी है और सुनता भी है। जिस दिन वह परब्रह्म प्रभु भूल जाता है हे भाई, उस दिन तो पछता पछता कर ही मरना होता है। सभी कलाओं से भरपूर वह प्रभु सब कुछ करने कराने में समर्थ है ।। ४ ।। प्रेम रूपी अमूल्य वस्तु प्रभु का नाम सुमिरन ही है जिससे माया मोह का विनाश होता है। हे भाई, यदि प्रभु को भा जाए तो वह मिलाप करा देता है और हृदय में प्रभु-नाम का निवास हो जाता है। गुरमुख बनकर हृदय कमल को खिलाया जाता है और हृदय प्रकाशित हो उठता है। प्रभु के प्रताप के प्रकट होने से हे भाई, धरती आकाश प्रसन्न होकर प्रफुल्लित हो उठे हैं।। ५ ।। पूर्ण गुरु ने मुझे संतोष प्रदान कर दिया है और हे भाई, अब मेरा दिन रात उससे प्रेम लग गया है। अब मेरी जीभ सदैव प्रभु नाम का ही सुमिरन करती है और यही मुझे सच्चा स्वाद और सच्चा उद्देश्य लगता है। कानों से उस प्रभु के गुणों को सुन सुन कर मैं जीवित बना हुआ हूँ और हे भाई, मैंने अटल ठिकाना पा लिया है। हे भाई, जिस मन को प्रभु पर भरोसा नहीं आता वह जीव तो जल ही जाना चाहिए ।। ६ ।। मेरे मालिक में बहुत से गुण हैं और मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। हे भाई, वह गुण-विहीनों का पालन-पोषण करता है और निराश्रितों को भी आसरा प्रदान करता है। वह प्रत्येक श्वास के साथ हर एक को भोजन पहुंचाता है और उसका नाम बहुत ही सुन्दर है। जिसको सच्चा गुरु मिल गया हे भाई, वह व्यक्ति पूर्ण भाग्यशाली है ।। ७ ।। सभी कलाओं और शक्तियों से भरपूर उस प्रभु को बिना देखे तो एक घड़ी भी भी नहीं जीया जा सकता। वह तो हर श्वास और ग्रास के साथ भी, मुझे विस्मृत न हो और हे भाई, मैं सदा उसे अपने साथ ही देखता रहूँ।। साधसंगत के माध्यम से वह सबमें व्याप्त प्रभु मुझे मिल गया है। जिनको उस प्रभु से प्रेम नहीं लगा वे सदैव पश्चाताप में ही मरते रहते हैं ।। ८ ।। प्रभु ने अपने आंचल से बाँधकर यह संसार रूपी दुखों का सागर तैरा कर पार कर दिया है। उसने कृपा करके अपनी दृष्टि से मुझे आनन्दपूर्ण कर दिया और मेरी अपार सहायता की है। मेरा मन तन शीतल हो गया और हे भाई, मेरा भोजन और मेरा आधार प्रभु का नाम ही हो गया है। हे नानक, मैं तो उसकी शरण में पड़ा हुआ हूँ जो पापों को काटने वाला है।। ६ ।। १ ।। सोरठि महला ५ ।। मां के पेट से जब तू मुझे बाहर लाया तो माया और मोह का विष मेरे अन्दर भर गया। हे प्यारे प्रभु, जिस पर तुमने कृपा की उसे तुमने पूर्ण गुरु से मिला दिया। ऐसा व्यक्ति ही प्रत्येक श्वास के साथ प्रभु नाम में लौ लगाकर तेरी आराधना करता है ।। १ ।। हे प्रभु, मेरे मन और तन में केवल एक तेरी ही टेक है।। हे एक ही अन्तर्यामी प्रभु, तेरे बिना अन्य कोई भी कुछ करने योग्य नहीं है ।। रहाउ ।। करोड़ों जन्मों में भटकता हुआ अनेकों योनियां पाकर मैं यहां आया हूँ; मुझे सच्चा साहिब भूल गया और हे प्यारे प्रभु, मुझे बहुत अधिक सज़ा मिलती रही है। हे प्यारे, जिन्होंने पूर्ण सच्चे गुरु के दर्शन कर लिए वे ही

साचै नाइ ॥ तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाइ ॥ २ ॥ मिठा करि कै खाइआ पिआरे तिनि तनि कीता रोगु ॥ कउड़ा होइ पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु ॥ भोग भुंचाइ भुलाइअनु पिआरे उतरै नही विजोगु ॥ जो गुर मेलि उधारिआ पिआरे तिन धुरे पइआ संजोगु ॥ ३ ॥ माइआ लालचि अटिआ पिआरे चिति न आवहि मूलि ॥ जिन तू विसरहि पारब्रहम सुआमी से तन होए धूड़ि ॥ बिललाट करहि बहुतेरिआ पिआरे उतरै नाही सूलु ॥ जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिन का रहिआ मूलु ॥ ४ ॥ साकत संगु न कीजई पिआरे जे का पारि वसाइ ॥ जिसु मिलिऐ हरि विसरै पिआरे सो मुहि कालै उठि जाइ ॥ मनमुखि ढोई नह मिलै पिआरे दरगह मिलै सजाइ ॥ जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिना पूरी पाइ ॥ ५ ॥ संजम सहस सिआणपा पिआरे इक न चली नालि ॥ जो बेमुख गोबिंद ते पिआरे तिन कुलि लागै गालि ॥ होदी वसतु न जातीआ पिआरे कूड़ु न चली नालि ॥ सतिगुरु जिना मिलाइओनु पिआरे साचा नामु समालि ॥ ६ ॥ सतु संतोखु गिआनु धिआनु पिआरे जिस नो नदरि करे ॥ अनदिनु कीरतनु गुण रवै पिआरे अंम्रिति पूर भरे ॥ दुख सागरु तिन लंघिआ पिआरे भवजलु पारि परे ॥ जिसु भावै तिसु मेलि लैहि पिआरे सेई सदा खरे ॥ ७ ॥ संम्रथ पुरखु दइआल देउ पिआरे भगता तिस का ताणु ॥ तिसु सरणाई ढहि पए पिआरे जि अंतरजामी जाणु ॥ हलतु पलतु सवारिआ पिआरे मसतकि सचु नीसाणु ॥ सो प्रभु कदे न वीसरै पिआरे नानक सद कुरबाणु ॥ ८ ॥ २ ॥

सोरठि महला ५ घरु २ असटपदीआ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे ॥ पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अहंबुधि बाधे ॥ १ ॥ पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका ॥ हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥ रहाउ ॥ मोनि भइओ करपाती रहिओ नगन फिरिओ बन माही ॥ तट

सच्चे नाम में लीन बने हुए है ।। जो सच्ची शरण में आ गए हैं उनके कारण तो हमें भी छुटकारा प्राप्त हो जाएगा ।। २ ।। हे प्यारे भाई, दुनियां के रसों को मीठा जान कर खाया गया परन्तु उन रसों ने इस शरीर को रोगी बना दिया है। जब ये मीठे रस कड़वे बनकर दुखदायी हो चले तो इनके कारण मन में शोक पैदा हो गया। परमात्मा ने इन भोगों का आनन्द लेने में ही भटका रखा है और हे प्यारे, इसीलिए परमात्मा से वियोग की अवस्था समाप्त नहीं होती। जिनको गुरु ने अपने से मिलाकर उनका उद्धार कर दिया है हे प्यारे, उनका यह मिलाप प्रभु की ओर से प्रारम्भ से ही लिखा हुआ था ।। ३ ।। मन धन-सम्पदा के लालच में फंसा हुआ है इसलिए वह परमात्मा तो बिल्कुल ही याद नहीं आता। हे परब्रह्म स्वामी, जिनको तू भूल जाता है उनके शरीर तो मिट्टी ही हो जाते हैं। वे अनेकों प्रकार से विलाप करते हैं परन्तु उनकी पीड़ा दूर नहीं होती। जिनको गुरु ने मिला कर संवार दिया है हे प्यारे, उनकी जड़ बच जाती है और वे पक्के हो जाते हैं ।। ४ ।। हे प्यारे, जहां तक हो सके प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति का संग नहीं करना चाहिए। जिनको मिलने से परमात्मा भूल जाता है ऐसे व्यक्ति संसार से बेइज़्जत होकर जाते हैं। मनमुख व्यक्ति को कोई ठौर-ठिकाना नहीं मिलता और हे प्यारे, उसे प्रभु के दरबार में सजा मिलती है। जो गुरु से मिलकर संवर गए हैं हे प्यारे, उन्हें ही पूरी सफलता हासिल होती है ।। ५ ।। अनेकों प्रकार के संयम, हजारों प्रकार की चतुराइयां हे प्यारे, एक भी साथ नहीं जा सकीं। हे प्यारे, जो प्रभु से विमुख हो जाते हैं उनके कुल को तो कलंक ही लग जाता है। साथ बनी हुई वस्तु अर्थात प्रभु को पहचाना नहीं गया और हे प्यारे, झूठी दुनियां में लगे रहे जो कि मरते समय साथ नहीं चलती। जिन्हें परमेश्वर ने सच्चा गुरु मिला दिया है हे प्यारे, वे सच्चे नाम का ही सुमिरन करते हैं।। ६ ।। जिस पर प्रभु की कृपादृष्टि हो जाए उसमें सत्य, संतोष, ज्ञान, ध्यान आदि गुण स्वयं ही उत्पन्न हो जाते हैं।। वह प्रतिदिन प्रभु की कीर्ति के गुण गाता रहता है और हे प्यारे, वह संसार समुद्र से भी पार उतर जाता है।। हे प्यारे, जिसको वह चाहे उसको मिला लेता है और ऐसे व्यक्ति सदैव खरे और पवित्र बने रहते हैं।। ७ ।। वह प्रभु समर्थ, सर्वव्यापक और दयालु प्रभु है और हे प्यारे, भक्तों के पास उसी की शक्ति और भरोसा होता है। भक्त उसी की शरण में गिर पड़ते हैं जो अन्तर्यामी और सुजान है।। प्रभु ने यह लोक और परलोक अर्थात यह जीवन और मौत के बाद का समय संवार दिया है और हमारे माथे पर अपने सच्चे नाम की मोहर अंकित कर दी है। वह प्रभु तो मुझे कभी भी विसमृत न हो और हे प्यारे, नानक तो उस पर सदैव कुर्बान जाता है ।। ८ ।। २ ।।

सोरठि महला ५ घरु २ अष्टपदियां १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

जीव ने अनेकों प्रकार के पाठ किए, वेदों का चिंतन किया और न्योली, कुण्डलिनी आदि साधनाएं कर ली परन्तु जीव का पांचों विकारों से साथ न छूटने के कारण वह और अधिक अहंकार में बंध गया है।।१।। हे प्यारे, इन विधियों से परमात्मा से मिला नहीं जाता और मैंने अनेकों ही कर्मकाण्ड करके देख लिए हैं। अब मैं थक कर मालिक के द्वार पर आ पड़ा हूँ और हे प्रभु, विनती करता हूँ कि मुझे बुद्धि और विवेक प्रदान करो ।। रहाउ ।। मैंने मौन भी धारण किए रखा और हाथों को ही पात्र बनाकर कार्य करता रहा अर्थात मैंने बर्तनों का भी उपयोग नहीं किया। मैं जंगलों में भी नंगा ही घूमता रहा, तीर्थों के किनारे

तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही ॥ २ ॥ मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए ॥ मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए ॥ ३ ॥ कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा ॥ अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा ॥ ४ ॥ पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता ॥ हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीऐ इह जुगता ॥ ५ ॥ जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ ॥ वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ ॥ ६ ॥ राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा ॥ सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा ॥ ७ ॥ हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥ कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ॥ ८ ॥ तेरो सेवकु इह रंगि माता ॥ भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु सोरठि वार महले ४ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः १ ॥ सोरठि सदा सुहावणी जे सचा मनि होइ ॥ दंदी मैलु न कतु मनि जीभै सचा सोइ ॥ ससुरै पेईऐ भै वसी सतिगुरु सेवि निसंग ॥ परहरि कपड़ु जे पिर मिलै खुसी रावै पिरु संगि ॥ सदा सीगारी नाउ मनि कदे न मैलु पतंगु ॥ देवर जेठ मुए दुखि ससू का डरु किसु ॥ जे पिर भावै नानका करम मणी सभु सचु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सोरठि तामि सुहावणी जा हरि नामु ढंढोले ॥ गुर पुरखु मनावै आपणा गुरमती हरि हरि बोले ॥ हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ जनु नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गोल गोले ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे सिसटि करता सिरजणहारिआ ॥ तुधु आपे खेलु रचाइ तुधु आपि सवारिआ ॥ दाता करता आपि आपि भोगणहारिआ ॥ सभु तेरा सबदु वरतै उपावणहारिआ ॥ हउ गुरमुखि सदा सलाही गुर कउ वारिआ ॥ १ ॥

पर और सम्पूर्ण धरती पर घूमता रहा परन्तु मेरा दुविधा भाव नहीं छूट सका ।। २ ।। मन की कामना को पूरा करने के लिए तीर्थ पर जाकर बस गया और सिर पर आरा भी रखवा लिया परन्तु लाखों यत्न करने पर भी इस विधि से मन की मैल नहीं उतर सकी ।। ३ ।। सोना, स्त्री अच्छे अच्छे घोड़े और हाथी और अनेकों प्रकार के दान देने वाला दाता भी मैं बना, मैंने अन्न, वस्त्र, भूमि भी बहुत अधिक अर्पण की परन्तु इस प्रकार भी प्रभु के द्वार तक नहीं पहुँचा जाता ।। ४ ।। पूजा, चंदन छिड़कना, दण्डवत् करना और षट कर्मों की साधना में भी लीन बने रहने का कर्मकाण्ड मैंने किया। मेरी मेरी मैं मैं करते हुए मैं बन्धनों में ही पड़ा रहा और मुझे पता चला कि इन विधियों से भी परमात्मा को नहीं मिला जाता ।। ५ ।। सिद्धों और योगियों के चौरासी आसन लगा लगा कर भी मैं थक गया। मैंने लम्बी आयु भी भोगी परन्तु प्रभु से मेल न हुआ और बार बार योनियों में ही जन्मता मरता रहा ।। ६ ।। राजाओं जैसी लीला और सामान का भी मैंने भोग किया तथा अहंकार से भरपूर होकर हुकूमत भी मैंने की। मैंने सुन्दर सेज पर लेटकर चंदन और इत्र आदि भी शरीर पर मले परन्तु अंत में मुझे घोर नर्क का द्वार ही मिल सका ।। ७ ।। सभी कर्मों से बड़ा कर्म प्रभु के गुण गायन करना और साधसंगत में मिल बैठना है। नानक का कथन है कि यह उसी को प्राप्त होता है जिसके भाग्य में पूर्व से ही यह मिलाप लिखा होता है ।। ८ ।। तेरा दास तो इसी रंग में मस्त है। अनाथों के दुखों को दूर करने वाला प्रभु जब कृपालु हुआ तो मेरा यह मन प्रभु की कीर्ति गायन में लीन हो गया ।। रहाउ दूसरा ।। १ ।। ३ ।।

राग सोरठि वार महले ४ की   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्लोक महला १ ।। सोरठि रागिनी सदा सुन्दर होती है यदि इसके गायन से वह सच्चा प्रभु मन में आ बसे और प्राणी के दांतों को मैल न लगे अर्थात वह हराम की चीज़ खाकर मुंह मैला न करे तथा उसकी जीभ पर उस सच्चे प्रभु का ही नाम बना रहे। व्यक्ति अपने घर और ससुराल अर्थात इस लोक और परलोक में प्रभु के डर में बसे और बिना किसी डर के सच्चे गुरु की सेवा करे। यदि सांसारिक अहंकार रूपी कपड़ों को त्यागने से भी पति-प्रभु से मिलाप हो सके तो उसको मिलकर प्रसन्न बना रहे। जिसके हृदय में नाम बसता है वह जीव-स्त्री सदैव सच्चे सिंगार वाली बनी रहती है और उसे कभी भी पाप रूपी मैल का कीड़ा नहीं लगता। लोभ, मोह, आदि विकार रूपी देवर और जेठ दुखी होकर यदि मर गए हों तो फिर भला माया रूपी सास का डर किसे होगा। हे नानक, यदि जीव-स्त्री प्रियतम प्रभु को भा जाए तो समझ लो कि उसके माथे पर भाग्य की मणि है ।। १ ।। महला ४ ।। सोरठि तो तभी सुहावना लगता है यदि उसके माध्यम से जीव प्रभु नाम को ढूँढता रहे। समर्थ गुरु परमात्मा को मनाए और गुरु की मति में चलकर प्रभु का जाप करता रहे। प्रभु के प्रेम में दिन रात यह जीव-स्त्री आकर्षित बनी रहे और प्रभु के प्रेम में वह अपनी चोली रंग ले अर्थात अपने जीवन को प्रभु-प्रेम से पूर्ण बना ले। मैंने सारा संसार ढूंढकर देख लिया है कि प्रभु जैसा समर्थ पुरुष मुझे कहीं नहीं मिला। सच्चे गुरु ने प्रभु-नाम को ऐसा पक्का किया है कि अब मन अन्यत्र कहीं भी नहीं डोलता। दास नानक तो प्रभु का दास है और सच्चे गुरु के गुलामों का भी गुलाम है ।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तू स्वयं ही सृष्टि का कर्ता है और सृष्टि की रचना करने वाला है। तूने स्वयं ही इस सारे खेल को रचाया है और स्वयं ही इसे सुन्दर बनाया है। हे संसार उत्पन्न करने वाले प्रभु, सब ओर तेरा ही शब्द (हुकुम) कार्यशील बना हुआ है। मैं गुरमुख बनकर सदैव तेरा गुणानुवाद करता हूँ और गुरु पर मैं बलिहारी जाता हूँ ।। १ ।।

सलोकु मः ३ ॥ हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ ॥ पूरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पंनै पाइ ॥ इहु जगु जलता नदरी आइआ गुर कै सबदि सुभाइ ॥ सबदि रते से सीतल भए नानक सचु कमाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सफलिओ सतिगुरु सेविआ धंनु जनमु परवाणु ॥ जिना सतिगुरु जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण ॥ कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु ॥ गुरमुखि मुए जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ॥ नानक मुए न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि पुरखु निरंजनु सेवि हरि नामु धिआईऐ ॥ सतसंगति साधू लगि हरि नामि समाईऐ ॥ हरि तेरी वडी कार मै मूरख लाईऐ ॥ हउ गोला लाला तुधु मै हुकमु फुरमाईऐ ॥ हउ गुरमुखि कार कमावा जि गुरि समझाईऐ ॥ २ ॥ सलोकु मः ३ ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा जि करतै आपि लिखिआसु ॥ मोह ठगउली पाईअनु विसरिआ गुणतासु ॥ मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइ मुइआसु ॥ जिनी गुरमुखि नामु न चेतिओ से बहणि न मिलनी पासि ॥ दुखु लागा बहु अति घणा पुतु कलतु न साथि कोई जासि ॥ लोका विचि मुहु काला होआ अंदरि उभे सास ॥ मनमुखा नो को न विसही चुकि गइआ वेसासु ॥ नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अंतरि नाम निवासु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ से सैण से सजणा जि गुरमुखि मिलहि सुभाइ ॥ सतिगुर का भाणा अनदिनु करहि से सचि रहे समाइ ॥ दूजै भाइ लगे सजण न आखीअहि जि अभिमानु करहि वेकार ॥ मनमुख आप सुआरथी कारजु न सकहि सवारि ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै आपि खेलु रचाइआ ॥ त्रै गुण आपि सिरजिआ माइआ मोहु वधाइआ ॥ विचि हउमै लेखा मंगीऐ फिरि आवै जाइआ ॥ जिना हरि आपि क्रिपा करे से गुरि समझाइआ ॥ बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमाइआ ॥ ३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ ॥ मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ ॥ बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी

श्लोक महला ३ ।। अनेकों जीव अहंकार में जलते हुए जल मरे हैं और द्वैतभाव में भटकते हुए इस संसार में आए हैं ।। सच्चे गुरु ने उन्हें अपने लेखे में डालकर उनकी रक्षा कर ली है। शब्द-गुरु के माध्यम से स्वाभाविक रूप से यह संसार विषय विकारों में जलता हुआ नज़र आने लगता है। हे नानक, जो सत्य पर आचरण करके शब्द में लीन हो जाते हैं वे शीतल स्वभाव वाले बन जाते हैं ।। १ ।। मः ३ ।। जिसने सभी फल देने वाले सच्चे गुरु की सेवा की है उसका जन्म धन्य है और वही स्वीकृत भी होता है। जीते मरते हुए भी जिन्हें सच्चा गुरु भूलता नहीं वे प्रभु की दृष्टि में भी स्वीकृत होते हैं।। गुरमुख व्यक्ति मर कर भी जीवित बने रहते हैं और मनमुख व्यक्ति जीवित रहते हुए भी मरे हुए होते हैं ।। हे नानक, जो शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु में समा जाते हैं उनको मरा हुआ नहीं कहा जाता ।। २ ।। पउड़ी ।। निर्मल और सर्वव्यापक प्रभु की सेवा करते हुए प्रभु-नाम की आराधना की जानी चाहिए। सत्य की संगत में और साधु पुरुषों के साथ रहकर प्रभु-नाम में समाया जाता है। हे प्रभु, तेरी सेवा ही उत्तम है, मुझ मूर्ख को इस सेवा में लगा लो। मैं तुम्हारा गुलाम हूँ, तुम मेरे मालिक बनकर मुझे आदेश दो ताकि मैं गुरमुख बन कर ही जैसा गुरु समझाए वैसी ही सेवा करता रहूँ ।। २ ।। श्लोक मः३।। जो उस कर्ता प्रभु ने स्वयं लिख दिया है पूर्व से ही उस लिखे हुए के अनुसार ही हमें आचरण करना है। इस संसार में तो मोह रूपी ठग बूटी खाकर नशे में पड़ा व्यक्ति गुणों के भण्डार हरि को भूल जाता है। इस संसार को जीवित मत समझो यह तो द्वैतभाव में लीन होकर मरा पड़ा है। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया उन्हें प्रभु के पास बैठने का अवसर नहीं मिलेगा। पुत्र, स्त्री वहां कोई भी साथ नहीं जाता इस लिए ऐसे व्यक्तियों को बहुत अधिक दुखी होना पड़ता है। बाहर लोगों में भी ऐसे व्यक्ति का मुँह काला होता है और डर और चिन्ता के कारण उसके अन्दर से भी रुक रुक कर श्वास निकलते हैं ।। मनमुखों पर कोई भी भरोसा नहीं करता क्योंकि उनका विश्वास समाप्त हो गया होता है। हे नानक, उन गुरमुख व्यक्तियों को अत्यधिक सुख मिलता है जिनके हृदय में प्रभु नाम का निवास होता है ।। १ ।। मः ३ ।। वे ही हमारे सम्बन्धी और सज्जन हैं जो गुरमुख बनकर हमें प्रेम से मिलते है ।। अभिमानी और विकारों में पड़े हुए द्वैतभाव वाले लोगों को सज्जन नहीं कहा जाता ; ऐसे मनमुख स्वयं स्वार्थी होते है और वे कोई भी कार्य नहीं कर पाते। हे नानक, जीव पूर्व से जो लिखा है उसी पर आचरण करता है और उस लिखे हुए को कोई भी मिटाने वाला नहीं है ।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तूने स्वयं ही संसार उत्पन्न करके स्वयं ही इस खेल की रचना की है। तूने स्वयं ही तीनों गुणों की सृजना की है और माया मोह का फैलाव किया है। जब तक व्यक्ति अहंकारी होकर कर्म करता है तब तक उससे कर्मों का हिसाब किताब पूछा जाता है और वह आवागमन में पड़ा रहता है। जिन पर प्रभु ने स्वयं कृपा की है उनको गुरु ने पूरी तरह समझा दिया होता है। मैं अपने सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और बार बार कुर्बान होता हूँ ।। ३ ।। श्लोक मः ३ ।। माया और ममता मन को मोहित कर लेने वाली है और इन्होंने दांतों के बिना ही इस संसार को खा लिया है। मनमुख तो खाए जा चुके हैं परन्तु जिन्होंने सच्चे नाम में अपना चित्त लगा लिया है वे गुरमुख संसार सागर से बचकर उबर गए हैं। प्रभु-नाम के बिना यह सारा संसार पागलों की तरह भटकता है और गुरमुख बनकर ही यह तथ्य दिखाई

आइआ ॥ धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ सुखदाता मनि न वसाइआ ॥
नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥
घर ही महि अंम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ ॥ जिउ कसतूरी मिरगु
न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ॥ अंम्रितु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि
खुआइआ ॥ गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ तनु
मनु सीतलु होइआ रसना हरि सादु आइआ ॥ सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि
मिलाइआ ॥ बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइआ ॥ अंम्रितु
एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो हरि पुरखु अगंमु
है कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ तिसु रूपु न रेख अद्रिसटु कहु जन किउ धिआईऐ ॥
निरंकारु निरंजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईऐ ॥ जिसु आपि बुझाए
आपि सु हरि मारगि पाईऐ ॥ गुरि पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ ॥ ४ ॥
सलोकु मः ३ ॥ जिउ तनु कोलू पीड़ीऐ रतु न भोरी डेहि ॥ जीउ वंञै
चउ खंनीऐ सचे संदड़ै नेहि ॥ नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह ॥ १ ॥ मः ३ ॥
सजणु मैडा रंगुला रंगु लाए मनु लेइ ॥ जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि ॥
नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि आपि वरतै आपि
हरि आपि बुलाइदा ॥ हरि आपे स्रिसटि सवारि सिरि धंधै लाइदा ॥ इकना
भगती लाइ इकि आपि खुआइदा ॥ इकना मारगि पाइ इकि उझड़ि पाइदा ॥
जनु नानकु नामु धिआए गुरमुखि गुण गाइदा ॥ ५ ॥ सलोकु मः ३ ॥
सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ ॥ मनि चिंदिआ फलु
पावणा हउमै विचहु जाइ ॥ बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ ॥
इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ नानक जो गुरु
सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुख मंनु
अजितु है दूजै लगै जाइ ॥ तिस नो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइ ॥
घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि लगाइ ॥ इहु मनु वसि न
आवई थके करम कमाइ ॥ भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीरथ नाइ ॥

पड़ता है। सांसारिक धंधे करते हुए ही व्यक्ति ने अपने जन्म को व्यर्थ ही गंवा लिया है तथा सुख देने वाले उस प्रभु को मन में नहीं बसाया है। हे नानक, प्रभु नाम तो उन्हीं को प्राप्त होता है जिनके भाग्य में प्रारम्भ से ही ऐसा लिखा होता है ।। १ ।। मः ३ ।। घर में ही अर्थात मन में ही अमृत भरा हुआ है परन्तु मनमुख व्यक्तियों ने कभी भी इसका स्वाद नहीं चखा। यह वैसे ही है जैसे कस्तूरी मृग की नाभि में ही होने के बारे में मृग नहीं जानता और भ्रम में पड़ा हुआ भटकता फिरता है। मनमुख व्यक्ति अमृत त्याग कर विष का संग्रह करता है परन्तु प्रभु ने स्वयं ही उसे कुमार्ग पर डालकर ख्वार किया हुआ है। बिरले गुरमुखों को ही वास्तविक ज्ञान हो पाता है और उन्हें अन्तर्मन में ही ब्रह्म के दर्शन हो जाते हैं। उनका तन मन शीतल हो जाता है और जीभ से प्रभु के नाम का स्वाद उन्हें प्राप्त होता है। शब्द के माध्यम से ही प्रभु के नाम का सुमिरन अन्दर उत्पन्न होता है और शब्द का मिलाया हुआ व्यक्ति ही प्रभु से मिलता है। शब्द की सूझ के बिना सारा संसार बौराया हुआ रहता है और अपना सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है। हे नानक, एक शब्द ही अमृत है जिसे गुरमुख बनकर प्राप्त किया जाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। उस सर्वव्यापक अगम्य प्रभु को बताओ किस विधि से पाया जा सकता है; उसका न तो रूप है न कोई आकार है तो भला उस अदृष्ट प्रभु की आराधना कैसे की जाए। वह प्रभु निराकार निरंजन और अगम्य है; भला क्या कह कर उसके गुणों का गायन किया जाए। वह प्रभु जिसे स्वयं ही बताता है वही प्रभु के मार्ग पर चल पड़ता है। पूर्ण गुरु ने ही वह दिखा दिया है और गुरु की सेवा से ही उसे पाया जाता है ।। ४ ।। श्लोक मः ३ ।। मेरा शरीर कोल्हू में ऐसे पेरा जाए कि उसमें से ज़रा सा भी रक्त न निकले अर्थात प्रभु के नाम में मैं बड़े से बड़े कष्ट को कुछ भी न मानूँ ।। मेरा मन सच्चे प्रभु के प्यार के लिए चार टुकड़े हो जाए और दिन रात किसी भी समय उससे मेरा स्नेह और मिलाप न टूटे। हे नानक, दिन रात कभी भी उससे मेरे मिलाप का अन्त न हो ।। १ ।। मः ३ ।। मेरा प्यारा बहुत ही प्रसन्न और प्यार वाला है तथा प्रेम लगाकर मन को मोह लेता है। जिस प्रकार मजीठ के साथ कपड़े रंग दिए जाते हैं तो हे नानक, ऐसा ही प्रभु का वह रंग कभी नहीं उतरता और उसे दूसरा रंग भी नहीं लगता ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु स्वयं ही सबमें भरपूर बना रहता है और वह प्रभु स्वयं ही व्यक्ति को बुलवाता है। प्रभु स्वयं ही सृष्टि को संवारकर प्रत्येक व्यक्ति को उसके धंधे में लगा देता है और कुछ को वह कुमार्ग पर डाल देता है, कुछ को सीधे रास्ते पर डाल देता है और कुछ लोगों को सुनसान मार्गों पर छोड़ देता है। दास नानक तो उसके नाम का सुमिरन करते हुए गुरु के माध्यम से उसके गुणों का गायन करता रहता है।। ५ ।। श्लोक मः ३ ।। यदि कोई मन लगाकर करे तो सच्चे गुरु की सेवा ही फल देने वाली है। उस से मनोंवांछित फल प्राप्त होता है और अन्तर्मन से अहंकार चला जाता है। व्यक्ति बन्धनों को तोड़कर मुक्त हो जाता है और सत्य में लीन बना रहता है। इस संसार में प्रभु का नाम दुर्लभ है और गुरमुख बनने पर ही यह मन में आकर बसता है। हे नानक, जो अपने गुरु की सेवा करते हैं मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ ।। १ ।। मः ३ ।। मनमुख व्यक्ति के लिए तो मन को जीतना संभव नहीं क्योंकि वह द्वैतभाव में लगा रहता है। उसको सपने में भी सुख नहीं मिलता और वह दुख ही दुख में अपनी आयु को गंवा देता है। स्थान स्थान पर पढ़ते पढ़ते पंडित तथा समाधियां लगाते हुए सिद्धगण थक चुके है। ये सभी अनेकों प्रकार के कर्म करते हुए थक गए है परन्तु यह मन इनके वश में नहीं आता। अलग अलग वेशों को धारण करने वाले भी अड़सठ तीर्थों पर स्नान करके थक चुके हैं; वे मन की

मन की सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ ॥ गुर परसादी भउ पइआ वडभागि वसिआ मनि आइ ॥ भै पइऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ ॥ सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाइआ नानक सुखि समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ एह भूपति राणे रंग दिन चारि सुहावणा ॥ एहु माइआ रंगु कसुंभ खिन महि लहि जावणा ॥ चलदिआ नालि न चलै सिरि पाप लै जावणा ॥ जां पकड़ि चलाइआ कालि तां खरा डरावणा ॥ ओह वेला हथि न आवै फिरि पछुतावणा ॥ ६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहि ॥ फिरि फिरि मिलणु न पाइनी जंमहि तै मरि जाहि ॥ सहसा रोगु न छोडई दुख ही महि दुख पाहि ॥ नानक नदरी बखसि लेहि सबदे मेलि मिलाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ॥ जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारणि बदनाउ ॥ नानक गुरमुखि बखसीअहि से सतिगुर मेलि मिलाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो सेवहि सति मुरारि से भवजल तरि गइआ ॥ जो बोलहि हरि हरि नाउ तिन जमु छडि गइआ ॥ से दरगह पैधे जाहि जिना हरि जपि लइआ ॥ हरि सेवहि सेई पुरख जिना हरि तुधु मइआ ॥ गुण गावा पिआरे नित गुरमुखि भ्रम भउ गइआ ॥ ७ ॥ सलोकु मः ३ ॥ थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अंम्रितु सारु ॥ जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥ इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥ एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरि धारि ॥ एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥ नानक जिसु बुझाए सु बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जो धुरि मेले से मिलि रहे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ आपि विछोड़ेनु से विछुड़े दूजै भाइ खुआइ ॥ नानक विणु करमा किआ पाईऐ पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बहि सखीआ जसु गावहि गावणहारीआ ॥ हरि नामु सलाहिहु नित हरि कउ बलिहारीआ ॥ जिनी सुणि मंनिआ हरि नाउ तिना हउ वारीआ ॥ गुरमुखीआ हरि मेलु मिलावणहारीआ ॥ हउ बलि जावा दिनु राति गुर देखणहारीआ ॥ ८ ॥ सलोकु

वास्तविकता को नहीं जानते और अहंकार के भ्रम में ही भूल कर भटकते रहते हैं। गुरु की कृपा से प्रभु का भय मन में आ गया और बड़े भाग्य से वह प्रभु मन में बस गया है। भय के अन्तर्गत ही मन वश में हुआ है और अहंकार को शब्द-गुरु से जला दिया गया है। जो सत्य में लीन बने रहते हैं वे ही निर्मल हैं और उनकी ज्योति परम ज्योति से मिल जाती है। सच्चे गुरु के मिलने से ही नाम प्राप्त होता है और हे नानक, सुख में लीन हुआ जाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। राजा और सम्राटों की शान चार दिन ही सुन्दर लगती है अर्थात वे जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं।। माया का रंग कुसुम्भ के रंग की तरह है जिसे क्षण भर में उतर जाना होता है। ये चलने वालों के साथ अंत में नहीं चलता और व्यक्ति अपने पापों को स्वयं ही अपने सिर पर लेकर चलता है। जब काल ने पकड़कर आगे लगा लिया तो व्यक्ति की हालत बहुत भयानक बन जाती है। अब बीता हुआ समय उसके हाथ नहीं आता और वह फिर पछताता रहता है ।। ६ ।। श्लोक मः ३।। सच्चे गुरु से जो मुंह फेर लेते हैं वे बंधे हुए दुखों को सहन करते रहते हैं। वे बार बार जन्मते रहते हैं और फिर प्रभु से मिल नहीं पाते। भ्रम का रोग उन्हें नहीं छोड़ता और वे दुखी होकर दुख ही प्राप्त करते रहते हैं। नानक का कथन है कि वह अपनी कृपादृष्टि से क्षमा कर देता है और शब्द के माध्यम से उससे मिलाप हो जाता है ।। १ ।। मः ३ ।। जो सच्चे गुरु से मुंह फेर लेते हैं उन्हें कोई ठौर ठिकाना नहीं मिलता। वह उस छोड़ी हुई स्त्री की तरह है जो घर घर में घूमती रहती है और उसे दुराचारी के नाम से बदनाम किया जाता है। हे नानक, जो गुरमुख बनकर बख्श दिए जाते हैं सच्चा गुरु उन्हें प्रभु के साथ मिला देता है ।। २ ।। पउड़ी ।। जो सच्चे प्रभु का सुमिरन करते हैं वे भवसागर से पार हो जाते हैं ।। जो प्रभु के नाम का उच्चारण करते हैं उन्हें यम छोड़कर भाग जाता है। जिन्होंने हरि का जाप मन में बसा लिया है वे प्रभु-दरबार में सम्मानित वस्त्र पहनकर जाते हैं। प्रभु की सेवा, सुमिरन वे व्यक्ति ही करते हैं जिन पर हे प्रभु, तेरी कृपा होती है। हे प्यारे, मैं सदैव तेरे गुण गाता हूँ और गुरमुख बनकर मेरे भ्रम और भय चले गए हैं ।। ७ ।। श्लोक मः ३ ।। शब्द-गुरु रूपी थाल में मैंने तीन वस्तुएँ (सत्य, सन्तोष, विचार) परोसी हैं जिनसे प्रभु ने उत्तम अमृत रूपी भोजन तैयार किया है। इसके खाने से मन तृप्त होकर शान्त हो जाता है और मुक्ति प्राप्त हो जाती है। हे संतजनों, यह भोजन दुर्लभ है और यह गुरु के चिंतन के फलस्वरूप ही प्राप्त होता है। गुरु का दिया चिन्तन मन-आत्मा को मुदित (प्रसन्न) करने वाला है; इसे हृदय में धारण किए रहना चाहिए । (इस पहेली में जो भोजन परोसा गया है उसके तीन गुण तो बता दिए परन्तु उन वस्तुओं के नाम नहीं लिए गए। गुरु ने सिक्खों से अपेक्षा की है कि वे इसे खोजें जिसे बाद में पृष्ठ १४२६ पर गुरु अरजन देव जी ने स्पष्ट किया है)। यह पहेली सच्चे गुरु ने कही है और गुरु के सिक्खों ने खोजकर इसे बूझ लिया है। हे नानक, वह जिसको बुझाता है वही इस पहेली को बूझता है और गुरमुख व्यक्तियों ने साधना के माध्यम से प्रभु को प्राप्त किया है ।। १ ।। मः ३ ।। जिन्हें प्रभु ने अपने हुकुम के साथ ही मिला लिया है वे सच्चे गुरु में चित्त लगाकर मिल गए हैं ।। जो उसने स्वयं ही वियुक्त कर रखे हैं वे उससे बिछुड़े हुए हैं और द्वैतभाव में ख्वार बने रहते हैं ।। हे नानक, बिना भाग्य के भला क्या प्राप्त होता है और व्यक्ति पूर्व से ही लिखे अनुसार आचरण करता है ।। २ ।। पउड़ी ।। सत्संगी रूपी सहेलियां जो उसका यश गाने वाली हैं बैठकर उसके गुण गाती हैं। वे प्रभु नाम की सदैव प्रशंसा करती हैं और प्रभु पर बलिहारी जाती हैं। जिन्होंने प्रभु का नाम सुनकर उसे जीवन में स्वीकार किया मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। हे प्रभु, हमें गुरमुख सखियों से मिला दे जो मुझे तेरे साथ मिला सकती हैं। मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ जो गुरु को दिन रात अपने आस-पास ही देखती हैं ।। ८ ।। श्लोक

मः ३ ॥ विणु नावै सभि भरमदे नित जगि तोटा सैसारि ॥ मनमुखि करम कमावणे हउमै अंधु गुबारु ॥ गुरमुखि अंम्रितु पीवणा नानक सबदु वीचारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सहजे जागै सहजे सोवै ॥ गुरमुखि अनदिनु उसतति होवै ॥ मनमुख भरमै सहसा होवै ॥ अंतरि चिंता नीद न सोवै ॥ गिआनी जागहि सवहि सुभाइ ॥ नानक नामि रतिआ बलि जाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ से हरि नामु धिआवहि जो हरि रतिआ ॥ हरि इकु धिआवहि इकु इको हरि सतिआ ॥ हरि इको वरतै इकु इको उतपतिआ ॥ जो हरि नामु धिआवहि तिन डरु सटि घतिआ ॥ गुरमती देवै आपि गुरमुखि हरि जपिआ ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥ अंतरि गिआनु न आइओ जितु किछु सोझी पाइ ॥ विणु डिठा किआ सालाहीऐ अंधा अंधु कमाइ ॥ नानक सबदु पछाणीऐ नामु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ॥ सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार ॥ गुर किरपा ते पाईअनि जे देवै देवणहारु ॥ सचा सउदा लाभु सदा खटिआ नामु अपारु ॥ विखु विचि अंम्रितु प्रगटिआ करमि पीआवणहारु ॥ नानक सचु सलाहीऐ धंनु सवारणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई ॥ जे को बोलै सचु कूड़ा जलि जावई ॥ कूड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई ॥ जिसु हरि होइ क्रिपालु सो नामु धिआवई ॥ हरि गुरमुखि नामु अराधि कूड़ु पापु लहि जावई ॥ १० ॥ सलोकु मः ३ ॥ सेखा चउचकिआ चउवाइआ एहु मनु इकतु घरि आणि ॥ एहड़ तेहड़ छडि तू गुर का सबदु पछाणु ॥ सतिगुर अगै ढहि पउ सभु किछु जाणै जाणु ॥ आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु ॥ सतिगुर कै भाणै भी चलहि ता दरगह पावहि माणु ॥ नानक जि नामु न चेतनी तिन धिगु पैनणु धिगु खाणु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ हरि गुण तोटि न आवई कीमति कहणु न जाइ ॥ नानक गुरमुखि हरि गुण रवहि गुण महि रहै समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि चोली देह सवारी कढि पैधी भगति करि ॥ हरि पाटु लगा अधिकाई बहु बहु बिधि भाति करि ॥ कोई बूझै बूझणहारा अंतरि बिबेकु करि ॥ सो बूझै एहु बिबेकु जिसु बुझाए आपि हरि ॥ जनु नानकु कहै

मः ३ ।। प्रभु नाम के बिना सभी भटकते रहते हैं और उन्हें संसार में सदैव घाटा ही घाटा पड़ा रहता है। मनमुख बनकर किए हुए आचरण के कारण अहंकार का घोर अंधेरा बना ही रहता है। गुरमुख बनकर अमृत पीया जाता है और हे नानक, यह शब्द के चिन्तन के फलस्वरूप ही संभव होता है।। १ ।। मः ३ ।। वह सहजभाव में ही जागता है और सहज में ही सोता है। ऐसा गुरमुख व्यक्ति सदैव प्रभु की प्रशंसा ही करता रहता है। मनमुख संदेहों में घिरा हुआ भटकता रहता है और उसके अन्तर्मन में चिंता बनी रहती है तथा वह कभी भी सुख की नींद नहीं सोता। ज्ञानवान व्यक्ति सहजभाव में ही जागते और सोते हैं ।। हे नानक, वे नाम में लीन बने रहते हैं और मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ ।। २ ।। पउड़ी ।। जो प्रभु के रंग में रंगे रहते हैं वे ही प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं ।। वे सदैव एक प्रभु का सुमिरन करते हैं और वह एक प्रभु ही सत्य है। वह एक ही प्रभु सब में कार्यशील है और उस एक से ही सब उत्पन्न हुए हैं ।। जो प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं उन्होंने अपने अन्दर से भय को निकाल फेंका है। वह प्रभु ही स्वयं गुरु की मति जीव को प्रदान करता है और वह गुरमुख बनकर प्रभु का जाप किए जाता है ।। ६ ।। श्लोक महला ३ ।। जीव के अन्दर वह ज्ञान उत्पन्न नहीं हुआ जिससे उसे कुछ समझ पड़ सके। प्रभु को बिना देखे या समझे उसके क्या गुण गाए जाएं; इस प्रकार तो अज्ञानी व्यक्ति अंधे कर्म ही किए जाता है। हे नानक, जब शब्द को पहचान लिया जाता है तो प्रभु का नाम मन में आ बसता है ।। १ ।। मः ३ ।। वाणी भी एक ही है गुरु भी एक ही है और एक शब्द का ही चिन्तन किया जाना चाहिए। उस प्रभु की दुकान भी सच्ची है और उसमें सत्य रूपी रत्नों के भण्डार भरे पड़े हैं ।। गुरु की कृपा से उन्हें तब पाया जाता है यदि वह देने वाला प्रभु प्रदान कर दे। इस सच्चे सौदे में से सदैव लाभ प्राप्त होता है और प्रभु के अपंरपर नाम को कमाया जाता है। इस विष रूपी संसार में से ही अमृत रूपी नाम प्राप्त हो गया और भाग्य ही इस अमृत को पिलाने वाला है। हे नानक, सत्य का गुणानुवाद किया जाए क्योंकि वही धन्य है और वही सब कुछ संवारने वाला है ।। २ ।। पउड़ी ।। जिनके अन्तर्मन में झूठ कार्यशील है उन्हें सत्य अच्छा नहीं लगता। यदि कोई सच बोलता भी है तो झूठे व्यक्ति को आग लग जाती है। झूठे व्यक्ति झूठ के साथ ही उसी प्रकार सन्तुष्ट होते हैं जैसे कौआ विष्ठा खाकर तृप्त होता है। जिस पर प्रभु कृपालु हो जाए वही नाम की आराधना करता है और गुरमुख बनकर प्रभु के नाम का सुमिरन करने से झूठ और पाप की मैल उतर जाती है ।। १० ।। श्लोक मः ३ ।। हे चारों ओर ही घूम जाने वाले शेख, अपने मन को केवल एक पर ही लगा। इधर उधर की बातों को तू छोड़ दे और शब्द-गुरु की पहचान कर। तू सच्चे गुरु के आगे उसकी शरण में आ जा क्योंकि वह सब कुछ जानने वाला है। आशाओं और मानसिक तृष्णाओं को तू जला दे और इस संसार में खुद को एक मेहमान समझ। सच्चे गुरु की आज्ञा में यदि तू हर हालत में चलता रहे तो प्रभु के दरबार में तुझे सम्मान प्राप्त हो जाएगा। हे नानक, जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया है उनका पहनना और खाना धिक्कार है ।। १ ।। मः ३ ।। प्रभु के गुणों में कमी नहीं आती और उसके मूल्य को आंका नहीं जा सकता। हे नानक, गुरमुख व्यक्ति तो सदैव प्रभु के गुणों में ही रमें रहते हैं और उसके गुणें में ही लीन हो जाते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु ने शरीर रूपी यह चोली बहुत सुन्दर बनाई है और भक्ति के कारण यह चोली कसीदे की कढ़ाई करके पहनी गई है। इसमें बहुत सा रेशम लगा है और अनेकों प्रकार से उसे लगाया गया है। इसके रहस्य को कोई अपने अन्तर्मन में परख विचार कर ही जान सकता है। इस विचार को वे ही जान सकते हैं जिन्हें प्रभु स्वयं समझाता है। दास नानक, गुरमुख बनकर यह विचार कहता है कि

विचारा गुरमुखि हरि सति हरि ॥ ११ ॥ सलोकु मः ३ ॥ परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै ॥ गुरमुखि होइ सु भउ करे आपणा आपु पछाणै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ता मन ही ते मनु मानै ॥ जिन कउ मन की परतीति नाही नानक से किआ कथहि गिआनै ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुरमुखि चितु न लाइओ अंति दुखु पहुता आइ ॥ अंदरहु बाहरहु अंधिआं सुधि न काई पाइ ॥ पंडित तिन की बरकती सभु जगतु खाइ जो रते हरि नाइ ॥ जिन गुर कै सबदि सलाहिआ हरि सिउ रहे समाइ ॥ पंडित दूजै भाइ बरकति न होवई ना धनु पलै पाइ ॥ पड़ि थके संतोखु न आइओ अनदिनु जलत विहाइ ॥ कूक पूकार न चुकई ना संसा विचहु जाइ ॥ नानक नाम विहूणिआ मुहि कालै उठि जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि सजण मेलि पिआरे मिलि पंथु दसाई ॥ जो हरि दसे मितु तिसु हउ बलि जाई ॥ गुण साझी तिन सिउ करी हरि नामु धिआई ॥ हरि सेवी पिआरा नित सेवि हरि सुखु पाई ॥ बलिहारी सतिगुर तिसु जिनि सोझी पाई ॥ १२ ॥ सलोकु मः ३ ॥ पंडित मैलु न चुकई जे वेद पड़ै जुग चारि ॥ त्रै गुण माइआ मूलु है विचि हउमै नामु विसारि ॥ पंडित भूले दूजै लागे माइआ कै वापारि ॥ अंतरि त्रिसना भुख है मूरख भुखिआ मुए गवार ॥ सतिगुरि सेविऐ सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ अंदरहु त्रिसना भुख गई सचै नाइ पिआरि ॥ नानक नामि रते सहजे रजे जिना हरि रखिआ उरि धारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुख हरि नामु न सेविआ दुखु लगा बहुता आइ ॥ अंतरि अगिआनु अंधेरु है सुधि न काई पाइ ॥ मनहठि सहजि न बीजिओ भुखा कि अगै खाइ ॥ नामु निधानु विसारिआ दूजै लगा जाइ ॥ नानक गुरमुखि मिलहि वडिआईआ जे आपे मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि रसना हरि जसु गावै खरी सुहावणी ॥ जो मनि तनि मुखि हरि बोलै सा हरि भावणी ॥ जो गुरमुखि चखै सादु सा त्रिपतावणी ॥ गुण गावै पिआरे नित गुण गाइ गुणी समझावणी ॥ जिसु होवै आपि दइआलु सा सतिगुरू गुरू बुलावणी ॥ १३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ हसती सिरि जिउ अंकसु है अहरणि जिउ सिरु देइ ॥ मनु तनु

प्रभु ही सत्य और अविनाशी है ।। ११ ।। श्लोक मः ३ ।। महान पुरुष लोग शिक्षा तो किसी खास व्यक्ति या अवसर पर देते हैं परन्तु उनकी यह शिक्षा सब लोगों के लिए होती है क्योंकि वह सब पर घटती है। जो व्यक्ति गुरमुख होता है वही प्रभु के भय को मानता है और अपने आप को पहचानता है। गुरु की कृपा से यदि वह जीवित रहते हुए ही विकारों की ओर से मर जाए तो यह मन अपने आप में ही संतुष्ट और शान्त हो जाता है। हे नानक, जिसके मन में भरोसा ही नहीं है वे भला दूसरों को ज्ञान की क्या बातें बताएंगे ।। १ ।। मः ३ ।। गुरमुख बनकर उस प्रभु में चित्त नहीं लगाया और अंत में दुख आ पहुंचा। वे अन्तर्मन में भी अज्ञानी हैं और उनके बाहर के काम भी अंधे मूर्खों वाले है; उनको कोई भी समझ नहीं है। जो प्रभु के नाम में लीन बने हुए हैं हे पण्डित, उनके कारण ही सारा संसार पेट भरकर खाता है। जिन्होंने शब्द-गुरु का गुणानुवाद किया है वे प्रभु में ही लीन बने रहते हैं। हे पण्डित, द्वैतभाव में कभी भी बड़ाई नहीं होती और न ही कोई धन प्राप्त होता है। पढ़ पढ़ कर तुम थक गए हो परन्तु तुम्हें संतोष प्राप्त नहीं हुआ और प्रत्येक दिन तुम जलते हुए व्यर्थ में गंवा देते हो। ऐसे व्यक्तियों की चीख पुकार कभी समाप्त नहीं होती और न ही उनके मन का संशय दूर होता है। हे नानक, जो नाम से विहीन हैं वे यहां से काला मुंह लेकर उठ जाते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्यारे प्रभु, मेरा गुरमुख व्यक्तियों से मिलाप करा दो ताकि उनको मिल कर मैं तुम्हारा रास्ता पूछूं ।। जो भी मेरा मित्र मुझे प्रभु के बारे में बताए मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ ।। मैं उन्हीं के साथ गुणों की सांझीदारी करूँ और उन्हीं के साथ प्रभु-नाम का सुमिरन करूँ। मैं सदैव उस प्यारे प्रभु की सेवा करूँ और सदैव उसी का सुमिरन करते हुए सुख प्राप्त करूँ। मैं उस सच्चे गुरू पर बलिहारी जाता हूँ जिसने मुझे यह समझ प्रदान की है ।। १२ ।। श्लोक मः ३ ।। हे पण्डित, चारों युगों तक तू यदि वेद पढ़ता रहे तब भी तेरी मैल समाप्त नहीं होगी। तीनों गुण ही मायावी प्रपंचों की जड़ हैं और अहंकार में तूने प्रभु के नाम को विस्मृत कर दिया है। पण्डित भूलकर द्वैतभाव में लगा हुआ है और ऐसा वह धन सम्पदा के व्यापार के लिए कर रहा है। उसके अन्तर्मन में तृष्णाओं की भूख है और ऐसे मूर्ख लोभी आदि के रूप में गंवार बने हुए ही मरते रहते हैं। सच्चे गुरु की सेवा करने से और सच्चे शब्द का विचार करने से सुख प्राप्त होता है। प्रभु के सच्चे नाम से प्यार करके अन्तर्मन की तृष्णा और भूख अब चली गई है। हे नानक, जो नाम में लीन हो गए हैं वे स्वाभाविक ही तृप्त हो गए हैं और उन्होंने ही प्रभु नाम को हृदय में धारण किया है।। मः ३ ।। मनमुख व्यक्ति ने प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया तो उसे बहुत से दुखों ने घेर लिया है। उसके अन्तर्मन में अज्ञान का अंधकार है और उसे कोई भी होश नहीं है। मन के हठ के कारण किए हुए कर्मकाण्डों में उलझ कर उसने स्वाभाविक रूप से ही प्रभु-नाम का बीज नहीं बोया; अब आगे भला वह भूखा क्या खाएगा। उसने प्रभु-नाम के भण्डार को तो भुला दिया है और वह द्वैतभाव में लगा रहा है। हे नानक, गुरमुख बनकर भी बड़प्पन तब प्राप्त होता है यदि वह प्रभु स्वयं अपने से मिला ले ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु की दी हुई जीभ यदि प्रभु के यश का गायन करे तो वह वास्तव में सुन्दर है। मन तन और अपने हृदय के विचारों के सहित वह प्रभु का सुमिरन करती है और वही प्रभु को अच्छी भी लगती है। जो गुरु की ओर मुंह करके प्रभु के नाम का स्वाद चखती है वही तृप्त बनी रहती है। वह प्यारे प्रभु के गुण सदैव गाती रहती है और प्रभु के गुणों को ही समझाती है। जिस पर प्रभु स्वयं दयालु हो जाए वह सदैव गुरु गुरु का जाप करती है ।। १३ ।। श्लोक मः ३ ।। जिस प्रकार हाथी के सिर पर अंकुश है और जिस प्रकार लोहे की नेहाई अपना सिर लोहार के सामने अर्पण कर देती है इसी प्रकार मन और तन

आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ॥ इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु स्रिसटि का लेइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आए ते परवाणु ॥ नानक कुल उधारहि आपणा दरगह पावहि माणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि सखीआ सिख गुरू मेलाईआ ॥ इकि सेवक गुर पासि इकि गुरि कारै लाईआ ॥ जिना गुरु पिआरा मनि चिति तिना भाउ गुरू देवाईआ ॥ गुर सिखा इको पिआरु गुर मिता पुता भाईआ ॥ गुरु सतिगुरु बोलहु सभि गुरु आखि गुरू जीवाईआ ॥ १४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ नानक नामु न चेतनी अगिआनी अंधुले अवरे करम कमाहि ॥ जम दरि बधे मारीअहि फिरि विसटा माहि पचाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु ॥ हरि कै नाइ समाइ रहे चूका आवणु जाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धनु संपै माइआ संचीऐ अंते दुखदाई ॥ घर मंदर महल सवारीअहि किछु साथि न जाई ॥ हर रंगी तुरे नित पालीअहि कितै कामि न आई ॥ जन लावहु चितु हरि नाम सिउ अंति होइ सखाई ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि सुखु पाई ॥ १५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ बिनु करमै नाउ न पाईऐ पूरै करमि पाइआ जाइ ॥ नानक नदरि करे जे आपणी ता गुरमति मेलि मिलाइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ इक दझहि इक दबीअहि इकना कुते खाहि ॥ इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भी फिरि हसणि पाहि ॥ नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते ॥ तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते ॥ तिन के तुरे जीन खुरगीर सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सिख साध संत चड़ि जाते ॥ तिन के करम धरम कारज सभि पवितु हहि जो बोलहि हरि हरि राम नामु हरि साते ॥ जिन कै पोतै पुंनु है से गुरमुखि सिख गुरू पहि जाते ॥ १६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ नानक नावहु घुथिआ हलतु पलतु सभु जाइ ॥ जपु तपु संजमु सभु हिरि लइआ मुठी दूजै भाइ ॥ जम दरि बधे मारीअहि

गुरु को अर्पण करके जीव-स्त्री सदैव तैयार खड़ी होकर गुरु की सेवा करे। इस प्रकार गुरमुख बनकर और अपने अभिमान को त्याग कर सारी सृष्टि का राज्य प्राप्त किया जाता है। हे नानक, यदि वह प्रभु कृपादृष्टि करे तो गुरमुख बनकर उस प्रभु को जाना जाता है।। १ ।। मः ३ ।। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का सुमिरन किया है उनका ही इस धरती पर आना स्वीकृत होता है। हे नानक, वे अपने कुल का उद्धार तो करते ही हैं उन्हें प्रभु के समक्ष भी सम्मान प्राप्त होता है ।। २ ।। पउड़ी ।। गुरमुख रूपी सहेलियों के रूप में सिक्खों को गुरु अपने साथ मिला लेता है। उनमें से कुछ तो गुरु के पास सेवक होकर रहती हैं और कुछ को गुरु अपने से दूर काम में लगाए रहता है। जिनके मन और चित्त में प्यारे गुरु का निवास है गुरु उनको प्रभु से प्रेम का दान दिलवाता है। गुरु सभी सिक्खों को मित्रों, पुत्रों और भाईयों जैसा प्यार करता है। सभी सच्चे गुरु का सुमिरन करो; यदि गुरु का सुमिरन किया जाए तो वह व्यक्ति को आध्यात्मिक तौर पर जीवित कर देता है ।। १४ ।। श्लोक मः ३ ।। हे नानक, जो अपने सच्चे गुरु की सेवा करते हैं वे सच्चे लोग ही स्वीकृत होते हैं। वे सदैव प्रभु-नाम में ही लीन बने रहते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। धन सम्पत्ति और मायावी पदार्थों के संचय अंततः दुख देने वाले ही साबित होते हैं। घर मंदिर और महलों को संवारा जाता है लेकिन इनमें से कुछ भी साथ नहीं जाता। हर रंग के घोड़ों को पाला पोसा जाता है परन्तु ये किसी काम नहीं आते। हे प्रभु के सेवको, प्रभु-नाम में ही अपना चित्त लीन करो क्योंकि अंत में वही मददगार होगा। हे नानक, प्रभु के सेवकों ने तो प्रभु-नाम का सुमिरन किया है और गुरमुख बनकर सुख प्राप्त किया है ।। १५ ।। श्लोक मः ३ ।। बिना भाग्य के प्रभु-नाम प्राप्त नहीं होता और पूर्ण भाग्य से ही इसे पाया जाता है। हे नानक, यदि वह प्रभु अपनी कृपादृष्टि करे तो गुरु की मति में चलकर उस प्रभु से मेल होता है ।। १ ।। मः १ ।। कईयों के मरने पर उन्हें जलाया जाता है, कईयों को दबाया जाता है और कईयों को कुत्ते आदि जानवर खा जाते हैं। कईयों को पानी में बहा देते हैं और कईयों को सूखे कुएं में फेंक दिया जाता है। हे नानक, यह तो पता ही नहीं लगता कि जीव कहां चला जाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। जो प्रभु के नाम में रंगे हुए हैं उनका खाना, पहनना, धन-सम्पदा आदि सभी पवित्र हैं। उनका घर, मंदिर, महल, सराय सभी पवित्र हैं जिनके पास गुरमुख सेवक सिक्ख और त्यागी साधु जाकर सुख पाते हैं। उनके घोड़े, जीन, पसीना जज़्ब करने वाला खुरगीर आदि सभी पवित्र है जिन पर गुरमुख सिक्ख साधु संत आदि सवारी करके जाते हैं। उन लोगों के धर्म, कर्म, कार्य सभी पवित्र हैं जो सच्चे प्रभु के राम नाम का जाप करते हैं। जिनके पल्ले में नेकी और धर्म है, वे गुरमुख सिक्ख गुरु के पास जाते हैं अर्थात गुरु के साथ जुड़े रहते हैं ।। १६ ।। श्लोक मः ३ ।। हे नानक, प्रभु-नाम से दूर भटक कर यह लोक और परलोक सभी नष्ट हो जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों का जप, तप संयम आदि सब कुछ छीन लिया जाता है और द्वैतभाव में पड़े ऐसे लोग माया के मोह में ठग लिए जाते हैं। यम के द्वार पर उन्हें बाँधकर मारा जाता है

बहुती मिलै सजाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ संता नालि वैरु कमावदे दुसटा नालि मोहु पिआरु ॥ अगै पिछै सुखु नही मरि जंमहि वारो वार ॥ त्रिसना कदे न बुझई दुबिधा होइ खुआरु ॥ मुह काले तिना निंदका तितु सचै दरबारि ॥ नानक नाम विहूणिआ ना उरवारि न पारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो हरि नामु धिआइदे से हरि हरि नामि रते मन माही ॥ जिना मनि चिति इकु अराधिआ तिना इकस बिनु दूजा को नाही ॥ सेई पुरख हरि सेवदे जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाही ॥ हरि के गुण नित गावदे हरि गुण गाइ गुणी समझाही ॥ वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हरि नामि समाही ॥ १७ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ॥ पारस परसिऐ पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ नानक गणतै सेवकु ना मिलै जिसु बखसे सो पवै थाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ महलु कुमहलु न जाणनी मूरख अपणै सुआइ ॥ सबदु चीनहि ता महलु लहहि जोती जोति समाइ ॥ सदा सचे का भउ मनि वसै ता सभा सोझी पाइ ॥ सतिगुरु अपणै घरि वरतदा आपे लए मिलाइ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ सभ पूरी पई जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धंनु धनु भाग तिना भगत जना जो हरि नामा हरि मुखि कहतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना संत जना जो हरि जसु स्रवणी सुणतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना साध जना हरि कीरतनु गाइ गुणी जन बणतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना गुरमुखा जो गुरसिख लै मनु जिणतिआ ॥ सभ दू वडे भाग गुरसिखा के जो गुर चरणी सिख पड़तिआ ॥ १८ ॥ सलोकु मः ३ ॥ ब्रहमु बिंदै तिस दा ब्रहमतु रहै एक सबदि लिव लाइ ॥ नव निधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ ॥ बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बुझहु करि वीचारु ॥ नानक पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखु पाए जुग चारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ किआ गभरू किआ बिरधि है मनमुख त्रिसना भुख न जाइ ॥ गुरमुखि सबदे रतिआ सीतलु होए आपु गवाइ ॥ अंदरु त्रिपति संतोखिआ फिरि भुख न लगै

तथा उन्हें बहुत अधिक सज़ा मिलती है ।। १ ।। मः ३ ।। जो शान्त पुरुषों के साथ शत्रुता रखते हैं और दुष्ट व्यक्तियों के साथ मोह प्यार रखते हैं उन्हें आगे पीछे कहीं भी सुख नहीं मिलता और वे बार-बार मरते जन्मते रहते हैं। उनकी तृष्णा कभी भी शान्त नहीं होती और दुविधा में पड़े हुए वे भटकते रहते हैं। ऐसे निन्दक लोगों के तो उस सच्चे दरबार में भी मुंह काले ही होते हैं । हे नानक, प्रभु-नाम से विहीन लोग न तो इधर के रहते हैं और न उधर के रहते हैं।। २ ।। पउड़ी।। जो प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं वे प्रभु नाम में ही मन से लीन बने रहते हैं। जिसने मन और हृदय से उस प्रभु की आराधना की है उन्हें उस एक प्रभु के बिना अन्य दूसरा कोई भी दिखाई नहीं देता। प्रारम्भ से ही जिनके माथे पर लेख लिखे हैं वे व्यक्ति ही प्रभु का सुमिरन करते हैं। वे सदैव प्रभु के गुण गाते रहते हैं और गुण गाकर ही अपने मन को समझाते हैं। गुरु के माध्यम से वे प्रभु नाम में समा जाते हैं ।। १७ ।। श्लोक मः ३ ।। सच्चे गुरु की सेवा बहुत कठिन है ; यह अपना सिर देकर और अहंकार को गंवाकर होती है। शब्द में लीन होकर विकारों के प्रति मर जाने से व्यक्ति फिर नहीं मरता और ऐसी सेवा ही पूर्ण रूप से सफल होती है। पारस के साथ स्पर्श करने से व्यक्ति पारस ही हो जाता है अर्थात प्रभु के समान ही हो जाता है और सत्य में अपनी लौ लगाए रहता है। पूर्व से ही जिसके भाग्य में लिखा हुआ हो उसे सच्चा गुरु प्रभु आ मिलता है। हे नानक, गणनाओं में पड़े रहने वाले सेवक को प्रभु नहीं मिलता। वह प्रभु जिसे बख्श देता है उसी की सेवा सफल होती है।। १ ।। मः ३ ।। मूर्ख व्यक्ति अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर अच्छे और बुरे स्थान का भेद नहीं पहचानता। जब वह शब्द को पहचान जाता है तो अपना वास्तविक ठिकाना जान जाता है और इसकी ज्योति परम ज्योति में लीन हो जाती है। सदैव उस सत्य प्रभु का भय मन में बसा रहे तो सब प्रकार की सूझ शक्ति प्राप्त हो जाती है। सच्चा गुरु उन लोगों के अंदर ही बसता है और स्वयं ही उन्हें अपने से मिला लेता है। हे नानक, जिस पर प्रभु अपनी रज़ा में कृपा करता है सच्चे गुरु से मिलने पर उसी के सारे कार्य पूर्ण होते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। उन भक्तजनों के भाग्य धन्य हैं जो अपने मुख से प्रभु-नाम का उच्चारण करते हैं। उन शान्त पुरुषों के भी भाग्य धन्य हैं जो प्रभु की कीर्ति का गायन करते हुए गुणी व्यक्ति बन जाते हैं। उन गुरमुखों के भी भाग्य धन्य हैं जो गुरु की शिक्षा लेकर मन को जीत लेते हैं। सबसे बड़े भाग्य तो गुरु के उन सिक्खों के हैं जो गुरु के चरणों में उसके सेवक सिक्ख होकर आन पड़ते हैं ।। १८ ।। श्लोक मः ३ ।। जो ब्रह्म को पहचानता है उसी का ही ब्राह्मणत्व कायम रहता है और वह प्रभु के एक ही शब्द में अपनी लौ लगाता है। जो प्रभु को सदैव हृदय में बसाए रहता है, नवनिधियां और अठारहों सिद्धियों उसके पीछे लगी हुई चलती रहती हैं। हे भाई, विचारपूर्वक इस बात को जान लो कि सच्चे गुरु के बिना प्रभु का नाम प्राप्त नहीं हो सकता। हे नानक, पूर्ण भाग्य से ही सच्चा गुरु मिलता है और व्यक्ति चारों युगों में सुख प्राप्त करता रहता है ।। १ ।। मः ३ ।। क्या जवान और क्या बूढ़ा यदि वह मनमुख है तो उसकी तृष्णा और भूख समाप्त नहीं होती। गुरमुख बने व्यक्ति अपने अन्तर्मन से अभिमान गंवाकर शब्द में लीन बने रहकर शीतल स्वभाव वाले हो जाते हैं। वे अन्तर्मन से तृप्त

आइ ॥ नानक जि गुरमुखि करहि सो परवाणु है जो नामि रहे लिव लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ बलिहारी तिंन कंउ जो गुरमुखि सिखा ॥ जो हरि नामु धिआइदे तिन दरसनु पिखा ॥ सुणि कीरतनु हरि गुणरवा हरि जसु मनि लिखा ॥ हरि नामु सलाही रंग सिउ सभि किलविख क्रिखा ॥ धनु धंनु सुहावा सो सरीरु थानु है जिथै मेरा गुरु धरे विखा ॥ १९ ॥ सलोकु मः ३ ॥ गुर बिनु गिआनु न होवई ना सुखु वसै मनि आइ ॥ नानक नाम विहूणे मनमुखी जासनि जनमु गवाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सिध साधिक नावै नो सभि खोजदे थकि रहे लिव लाइ ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ गुरमुखि मिलै मिलाइ ॥ बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति ॥ सा सिधि सा करमाति है अचिंतु करे जिसु दाति ॥ नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै एहा सिधि एहा करमाति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हम ढाढी हरि प्रभ खसम के नित गावह हरि गुण छंता ॥ हरि कीरतनु करह हरि जसु सुणह तिसु कवला कंता ॥ हरि दाता सभु जगतु भिखारीआ मंगत जन जंता ॥ हरि देवहु दानु दइआल होइ विचि पाथर क्रिम जंता ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि धनवंता ॥ २० ॥ सलोकु मः ३ ॥ पड़णा गुड़णा संसार की कार है अंदरि त्रिसना विकारु ॥ हउमै विचि सभि पड़ि थके दूजै भाइ खुआरु ॥ सो पड़िआ सो पंडितु बीना गुर सबदि करे वीचारु ॥ अंदरु खोजै ततु लहै पाए मोख दुआरु ॥ गुण निधानु हरि पाइआ सहजि करे वीचारु ॥ धंनु वापारी नानका जिसु गुरमुखि नामु अधारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ विणु मनु मारे कोइ न सिझई वेखहु को लिव लाइ ॥ भेखधारी तीरथी भवि थके ना एहु मनु मारिआ जाइ ॥ गुरमुखि एहु मनु जीवतु मरै सचि रहै लिव लाइ ॥ नानक इसु मन की मलु इउ उतरै हउमै सबदि जलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई हरि नामु द्रिड़ावहु इक किनका ॥ हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापड़ु पहिरहु खिम का ॥ ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै हरि लागै पिआरा प्रिम का ॥ हरि हरि नामु बोलहु दिनु राती सभि किलबिख काटै इक पलका ॥ हरि हरि दइआलु होवै जिसु उपरि सो गुरमुखि

होकर संतुष्ट बने रहते हैं और उन्हें वासनाओं की भूख फिर नहीं लगती। हे नानक, जो गुरमुख प्रभु-नाम में लौ लगाए रहते हैं वे जो कुछ भी करें वह स्वीकृत हो जाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। जो गुरु के अनुसार चलने वाले सिक्ख हैं मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। जो प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं मैं उन्हीं का दर्शन करूँ, मैं प्रभु की कीर्ति को सुनूं, उसके गुणों का उच्चारण करूँ और मन पर हरि-यश को लिख लूं। मैं प्रभु के नाम का गुणानुवाद पूरी तरह से उसके रंग में रंगकर करूँ जिससे मेरे सभी पापों की जड़े नष्ट हो जाती हैं। वह शरीर और वह स्थान धन्य है और शोभायमान है जहाँ मेरा गुरु अपने कदम रखता है ।। १६ ।। श्लोक मः ३ ।। गुरु बिना ज्ञान नहीं होता और न ही मन में आकर सुख बसता है। हे नानक, नाम से विहीन मनमुख व्यक्ति तो जीवन को गंवाकर ही यहां से चले जाएंगे।। १ ।। मः ३ ।। सिद्ध, साधक और अन्य सभी प्रभु के नाम को खोजते हुए उसमें लौ लगाकर थक चुके हैं। सच्चे गुरु के बिना किसी ने भी प्रभु को प्राप्त नहीं किया है और गुरमुख बनकर ही उससे मेल मिलाप होता है। प्रभु-नाम के बिना खाना पीना सब व्यर्थ है; सिद्धियों और करामातों को भी धिक्कार है। वास्तव में वही सिद्धि और वही करामात है जो प्रभु बिना मांगे ही दान में देता है। हे नानक, गुरमुख बनकर प्रभु का नाम मन में बस जाए, मेरे लिए यही सिद्धि है और यही करामात है।। २ ।। पउड़ी।। हम उस प्रभु मालिक के यश गाने वाले गायक हैं और हम सदैव प्रभु के गुणों के छन्दों का ही गायन करते हैं। हम प्रभु का गुणानुवाद करते हैं। उसी कर्ता प्रभु के यश को सुनते भी हैं। वह प्रभु दाता है और सारा संसार भिखारी बनकर सभी जीव जन्तुओं सहित उससे मांगता रहता है। हे प्रभु, हमें भी दयालु होकर दान दो क्योंकि तुम तो पत्थरों में भी छोटे छोटे कीड़ों और जीवों को दान देते रहते है। दास नानक ने तो प्रभु-नाम का सुमिरन किया और गुरमुख बनकर वह तो धनवान हो गया है।। २० ।। श्लोक मः ३ ।। यदि अन्तर्मन में तृष्णा और विकार भरे हैं तो पढ़ना और विचार करना बिल्कुल सांसारिक प्रपंच बनकर ही रह जाता है। अहंकार में पड़ते हुए सभी अंततः थक जाते हैं और द्वैतभाव में ख्वार होते रहते हैं। वास्तव में वही पढ़ा हुआ पंडित और समझदार व्यक्ति है जो शब्द-गुरु का चिंतन करता रहता है। वह अपने हृदय में ही उस परम तत्त्व को खोज लेता है और मोक्ष का द्वार पा जाता है। वह सहज रूप से विचार करते हुए गुणों के भण्डार उस प्रभु को पा जाता है। हे नानक, वह व्यापारी धन्य है जिसको गुरमुख बनकर केवल प्रभु नाम का आधार (सहारा) प्राप्त हो जाता है ।। १ ।। मः ३ ।। मन को मारे बिना कोई भी सफल नहीं होता बेशक कोई जितनी मर्जी लौ लगाकर देख ले। अनेकों वेशों को धारण कर तीर्थ यात्रा करने वाले घूमते फिरते थक जाते हैं परन्तु फिर भी यह मन नहीं मारा जाता। गुरमुख बनकर यदि सत्य में लौ लगाई जाए तो यह मन जीवित रहते हुए भी विकारों की ओर से मर जाता है। हे नानक, अहंकार को शब्द के माध्यम से जला देने पर ही इस मन की मैल उतर पाती है ।। २ ।। पउड़ी ।। हे मेरे भाई, प्रभु के संतजनों, मुझे आन मिलो और प्रभु-नाम का एक छोटा सा अंश मेरे अन्दर पक्का कर दो। हे प्रभु के लोगो, प्रभु के नाम के जाप को अपना सिंगार बनाओ और क्षमा का वस्त्र धारण करो। ऐसा सिंगार ही मेरे प्रभु को भाता है और प्रभु भी प्रेमी को प्यारा लगने लगता है। दिन रात प्रभु-नाम का उच्चारण करो क्योंकि यह एक निमेष मात्र में सभी पापों को काट देता है। यह प्रभु जिस पर भी दयालु हो जाए वह गुरमुख प्रभु का जाप करते हुए मानव जीवन की बाजी जीत जाता है।

हरि जपि जिणका ॥ २१ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु ॥ खंनली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ॥ गुर परसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु ॥ नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ चहु जुगी कलि काली कांढी इक उतम पदवी इसु जुग माहि ॥ गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईऐ जिन कउ हरि लिखि पाहि ॥ नानक गुर परसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि हरि भगती माहि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि मेलि साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणि ॥ हरि गुण गावा हरि नित चवा गुरमती हरि रंगु सदा माणि ॥ हरि जपि जपि अउखध खाधिआ सभि रोग गवाते दुखा घाणि ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै से हरि जन पूरे सही जाणि ॥ जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन चूकी जम की जगत काणि ॥ २२ ॥ सलोकु मः ३ ॥ रे जन उथारै दबिओहु सुतिआ गई विहाइ ॥ सतिगुर का सबदु सुणि न जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ ॥ सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥ जगतु जलंदा डिठु मै हउमै दूजै भाइ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥ पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥ सेज सुहावी सदा पिरु रावै हरि वरु पाइआ नारि ॥ ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥ नानक हरि प्रभ मेलि लई गुर कै हेति पिआरि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥ हरि जीउ तिन का दरसनु ना करहु पापिसट हतिआरी ॥ ओहि घरि घरि फिरहि कुसुध मनि जिउ धरकट नारी ॥ वडभागी संगति मिले गुरमुखि सवारी ॥ हरि मेलहु सतिगुर दइआ करि गुर कउ बलिहारी ॥ २३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ ॥ जंमणु मरणा मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ ॥ हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ॥ नानक हउ बलिहारी तिंन कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥

।। २१ ।। श्लोक मः ३ ।। अनेकों जनमों की इस मन को मैल लगी है और यह घोर काला बना हुआ है। तेल के कोल्हू में सफाई के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली धोती कभी भी उज्जवल नहीं हो सकती चाहे उसे सौ बार धोया जाए; परन्तु गुरु की कृपा से व्यक्ति यदि जीवित रहते हुए भी विकारों की ओर से मर जाए तो उसकी बुद्धि संसार की ओर से उल्ट कर बदल जाती है। हे नानक, फिर उसे मैल नहीं लगती और न ही फिर उसका योनियों में आना जाना होता है।। १ ।। मः ३ ।। चारों युगों में कलियुग को ही एक कालिख वाला काला कलंकित युग कहा जाता है परन्तु इस युग में भी एक उत्तम पदवी है कि जिन पर प्रभु कृपा करता है वे गुरमुख बनकर प्रभु के यश का गायन करते हैं अर्थात गुरमुख पदवी और प्रभु गुणानुवाद कलियुग की उत्तम पदवी है। हे नानक, गुरु की कृपा से वे हरि यश का उच्चारण करते हैं और प्रभु की भक्ति में ही लीन बने रहते हैं।। २ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, मुझे साधुजनों की संगत से मिला दे ताकि मैं अपने मुख से प्रभु की वाणी बोलता रहूं। मैं प्रभु के गुणों का गायन करूं, सदैव प्रभु का ही कथन करता रहूं और गुरु की मति के अनुरूप चलते हुए सदैव प्रभु के रंग का आनन्द उठाता रहूं। प्रभु के नाम के जाप की औषधि खाने से सभी रोग तथा जितने भी दुख हैं दूर हो जाते हैं। जिनको प्रत्येक श्वास एवं ग्रास के साथ वह प्रभु नहीं भूलता, प्रभु के उन सेवकों को ही वास्तविक सेवक जाना जाता है। जो गुरमुख बनकर प्रभु की आराधना करते हैं उनका यम का भय समाप्त हो जाता है।। २२ ।। श्लोक मः ३ ।। हे भाई, अज्ञान की निद्रा में बुरे विचारों के बोझ से तू दबा पड़ा है और इसी तरह सोते हुए तेरी सारी आयु व्यतीत हो गई है। तू सच्चे गुरु का उपदेश सुनकर भी खबरदार नहीं हुआ और तेरे अन्तर्मन में कोई भी उत्साह पैदा नहीं हो सका। गुणों से खाली वह शरीर तो ज़ल ही जाना चाहिए जो गुरु की बताई हुई सेवा भक्ति नहीं करता है। मैंने अहंकार और द्वैतभाव में जलते हुए संसार को देखा है। हे नानक, गुरु की शरण में आने पर उनका उद्धार हो गया है जिन्होंने सच्चे मन से शब्द की आराधना की है।। १ ।। मः ३ ।। शब्द में लीन होने पर अहंकार चला गया और जीव-स्त्री शोभा वाली बन गई है। अब वह प्रियतम के आदेश में जब चलती है तो उसका वास्तविक सिंगार बना रहता है। उसकी सेज सुहावनी बनी रहती है और वह सदैव प्रियतम के साथ रमण करती रहती है क्योंकि उस जीव स्त्री ने प्रभु रूपी पति को पा लिया होता है। प्रभु तो कभी मरता नहीं इसलिए जीव-स्त्री को कभी दुख नहीं लगता और वह सदा सुहागिन स्त्री बनी रहती है। हे नानक, गुरु के प्यार के कारण प्रभु ने उसे अपने से मिला लिया है।। २।। पउड़ी।। जो अपने गुरु को प्रत्यक्ष तौर पर मानने से झिझकते हैं वे बुरे व्यक्ति हैं। हे प्रभु, उनका दर्शन हमें न करवाओ क्योंकि वे बड़े पापी और हत्यारे हैं। जिस प्रकार बदचलन स्त्री धक्के खाती रहती है वे भी अपने खोटे मन के साथ घर घर भटकते रहते हैं; परन्तु ऐसे लोगों को भी बड़े भाग्य से गुरु की संगति मिल जाए तो ये भी गुरमुख बनकर संवर जाते हैं। हे प्रभु, दया करके सच्चे गुरु से मिला दो; मैं गुरु पर बलिहारी जाता हूं।। २३ ।। गुरु की सेवा से सुख पैदा होता है और फिर कभी दुख नहीं लगता। ऐसे व्यक्ति का जन्म और मरण मिट जाता है और उस पर काल का भी कुछ वश नहीं चलता। उसका मन प्रभु के साथ रमण करता रहता है और सहज में ही समा जाता है। हे नानक, मैं उन पर बलिहारी जाता हूं जो सच्चे गुरु के प्रेम में सदैव चलते रहते हैं।। १ ।। मः ३ ।। शब्द के बिना यह जीव स्त्री शुद्ध नहीं होती बेशक वह कितना भी सिंगार कर ले।

पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥ सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि अपणी दइआ करि हरि बोली बैणी ॥ हरि नामु धिआई हरि उचरा हरि लाहा लैणी ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन हउ कुरबैणी ॥ जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैणी ॥ हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ॥ २४ ॥ सलोकु मः ४ ॥ हरि दासन सिउ प्रीति है हरि दासन को मितु ॥ हरि दासन कै वसि है जिउ जंती कै वसि जंतु ॥ हरि के दास हरि धिआइदे करि प्रीतम सिउ नेहु ॥ किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु ॥ जो हरि दासन की उसतति है सा हरि की वडिआई ॥ हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई ॥ सो हरि जनु नामु धिआइदा हरि हरि जनु इक समानि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि पैज रखहु भगवान ॥ १ ॥ मः ४ ॥ नानक प्रीति लाई तिनि साचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ रैणि दिनसु परभाति तूहै ही गावणा ॥ जीअ जंत सरबत नाउ तेरा धिआवणा ॥ तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा ॥ भगत जना कै संगि पाप गवावणा ॥ जन नानक सद बलिहारै बलि बलि जावणा ॥ २५ ॥ सलोकु मः ४ ॥ अंतरि अगिआनु भई मति मधिम सतिगुर की परतीति नाही ॥ अंदरि कपटु सभु कपटो करि जाणै कपटे खपहि खपाही ॥ सतिगुर का भाणा चिति न आवै आपणै सुआइ फिराही ॥ किरपा करे जे आपणी ता नानक सबदि समाही ॥ १ ॥ मः ४ ॥ मनमुख माइआ मोहि विआपे दूजै भाइ मनूआ थिरु नाहि ॥ अनदिनु जलत रहहि दिनु राती हउमै खपहि खपाहि ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा तिन कै निकटि न कोई जाहि ॥ ओइ आपि दुखी सुखु कबहू न पावहि जनमि मरहि मरि जाहि ॥ नानक बखसि लए प्रभु साचा जि गुर चरनी चितु लाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ संत भगत परवाणु जो प्रभि भाइआ ॥ सेई बिचखण जंत जिनी हरि धिआइआ ॥ अंम्रितु नामु निधानु भोजनु खाइआ ॥ संत जना की धूरि मसतकि

वह अपने प्रियतम की वास्तविकता को नहीं समझती अर्थात उसका सम्मान नहीं करती क्योंकि उसका प्रेम द्वैतभाव के साथ बना रहता है। हे नानक, वह अपवित्र है, कुलक्षणा है और सभी स्त्रियों में से घटिया स्त्री है अर्थात व्यभिचारिणी है।। २ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, अपनी दया करो जिससे मैं अपने वचनों के द्वारा प्रभु का नाम ही बोलता रहूं, प्रभु-नाम का सुमिरन करूं, उच्चारण करूं और प्रभु-नाम का ही लाभ प्राप्त करूं। जो प्रभु के नाम का दिन रात जाप करते हैं मैं उन पर कुर्बान जाता हूं। जिन लोगों ने मेरे सच्चे गुरु की आराधना की है मैं इन आंखों से ऐसे लोगों का ही दर्शन करूं। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूं जिसने मेरा प्यारा और सम्बन्धी प्रभु मिला दिया है।। २४ ।। श्लोक मः ४ ।। मेरी तो प्रभु के दासों के साथ ही प्रीति है; वह प्रभु दासों का ही मित्र है। प्रभु अपने दासों के वश में उसी तरह है जैसे किसी वादक का वाद्य यंत्र उसके अपने वश में होता है। अपने प्रियतम से प्रेम करके प्रभु के दास, प्रभु का ही सुमिरन करते हैं। हे प्रभु, कृपा करके यदि तुम सुन लो तो सारे संसार में तुम्हारे वचनों की वर्षा हो जाए और संसार हरा भरा हो जाए। जो प्रभु के दासों की स्तुति है वह वास्तव में प्रभु की ही प्रशंसा है। प्रभु को अपनी प्रशंसा अच्छी लगती है इसलिए वह अपने दासों की भी जय जयकार कराता है अर्थात प्रभु को अपने भक्तों का यश अच्छा लगता है। प्रभु का सेवक प्रभु के नाम का सुमिरन करता है और वास्तव में प्रभु और उसका सेवक एक जैसे ही होते हैं। दास नानक तो प्रभु का सेवक हे और हे प्रभु, तुम हमारी लाज रख लो।। १ ।। मः ४ ।। हे नानक, उस सच्चे प्रभु के साथ ऐसा प्रेम लग गया है कि अब उसके बिना रहा नहीं जाता। सच्चा गुरु मिल जाए तो पूर्ण प्रभु प्राप्त होता है और व्यक्ति की जीभ हरि रस वाली हो जाती है।। २ ।। पउड़ी।। दिन रात, प्रभात सभी समय तेरा ही गायन करना है। जीव-जन्तुओं अर्थात सबने तेरे नाम का ही सुमिरन करना है। हे दाता प्रभु, तू ही देने वाला है और हमें तो तेरा दिया हुआ ही खाना है। तेरे भक्तजनों के साथ रहकर हमें अपने पापों को धो देना है। दास नानक तो सदैव बलिहारी जाता है और उसने बलिहारी जाते ही रहना है।। २५ ।। श्लोक मः ४ ।। व्यक्ति के अन्दर अज्ञान है इसलिए उसकी बुद्धि मलीन हो गई है; सच्चे गुरु के प्रति उसका भरोसा नहीं। उसके अन्तर्मन में कपट है इसलिए वह सबको कपटी ही समझता है; स्वयं भी कपट में मरता खपता है और कई अन्यों को भी खपा देता है। सच्चे गुरु का आदेश उसके चित्त में नहीं आता और वह अपने स्वार्थ में ही भटकता रहता है। यदि वह अपनी कृपा करे तो हे नानक, जीव शब्द में लीन होकर स्थिर भाव में टिक जाता है।। १ ।। मः ४ ।। मनमुख व्यक्ति माया मोह से ही प्रभावित रहता है और द्वैतभाव में उसका मन कभी भी स्थिर नहीं बनता। वह दिन रात सदैव जलता रहता है और अहंकार में मरता खपता रहता है। उसके अन्तर्मन में लोभ का गहन अंधकार होता है और ऐसे व्यक्तियों के पास कोई नहीं जाता। वे स्वयं दुखी होते हैं और कभी भी सुख नहीं पाते तथा जन्मते, मरते आते-जाते रहते हैं। हे नानक, यदि गुरु के चरणों में चित्त लगा दिया जाए तो वह सच्चा प्रभु इन को भी क्षमा करके स्वीकार कर लेता है।। २ ।। पउड़ी।। वही संत और भक्त स्वीकार होता है जो प्रभु को भा जाता है और ऐसे जीव ही विलक्षण और सयाने होते हैं जिन्होंने प्रभु का सुमिरन किया है। उनके पास प्रभु के अमृत-नाम का भण्डार है और उसी में वे भोजन खाते हैं। ऐसे शान्त पुरुषों की चरण-धूलि मस्तक पर लगाई

लाइआ ॥ नानक भए पुनीत हरि तीरथि नाइआ ॥ २६ ॥ सलोकु मः ४ ॥ गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥ नामो चितवै नामु पड़े नामि रहै लिव लाइ ॥ नामु पदारथु पाइआ चिंता गई बिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै तिसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सतिगुर पुरखि जि मारिआ भ्रमि भ्रमिआ घरु छोडि गइआ ॥ ओसु पिछै वजै फकड़ी मुहु काला आगै भइआ ॥ ओसु अरलु बरलु मुहहु निकलै नित झगू सुटदा मुआ ॥ किआ होवै किसै ही दै कीतै जां धुरि किरतु ओस दा एहो जेहा पइआ ॥ जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु झूठा कूड़ु बोले किसै न भावै ॥ वेखहु भाई वडिआई हरि संतहु सुआमी अपुने की जैसा कोई करै तैसा कोई पावै ॥ एहु ब्रहम बीचारु होवै दरि साचै अगो दे जनु नानकु आखि सुणावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरि सचै बधा थेहु रखवाले गुरि दिते ॥ पूरन होई आस गुर चरणी मन रते ॥ गुरि क्रिपालि बेअंति अवगुण सभि हते ॥ गुरि अपणी किरपा धारि अपणे करि लिते ॥ नानक सद बलिहार जिसु गुर के गुण इते ॥ २७ ॥ सलोक मः १ ॥ ता की रजाइ लेखिआ पाइ अब किआ कीजै पांडे ॥ हुकमु होआ हासलु तदे होइ निबड़िआ हंढहि जीअ कमांदे ॥ १ ॥ मः २ ॥ नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे ॥ जहा दाणे तहां खाणे नानका सचु हे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभे गला आपि थाटि बहालीओनु ॥ आपे रचनु रचाइ आपे ही घालिओनु ॥ आपे जंत उपाइ आपि प्रतिपालिओनु ॥ दास रखे कंठि लाइ नदरि निहालिओनु ॥ नानक भगता सदा अनंदु भाउ दूजा जालिओनु ॥ २८ ॥ सलोकु मः ३ ॥ ए मन हरि जी धिआइ तू इक मनि इक चिति भाइ ॥ हरि कीआ सदा सदा वडिआईआ देइ न पछोताइ ॥ हउ हरि कै सद बलिहारणै जितु सेविऐ सुखु पाइ ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आपे सेवा लाइअनु आपे बखस करेइ ॥ सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइ ॥ नानक नामु धिआइनि तिन निज घरि वासु है जुगु जुगु सोभा होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू करण कारण समरथु

जाती है और हे नानक, ऐसे ही लोग पवित्र होते हैं और उन्होंने प्रभु रूपी तीर्थ पर स्नान किया होता है।। २६।। श्लोक मः ४ ।। गुरमुख के अन्दर शान्ति है और वह तन, मन के द्वारा प्रभु-नाम से मिला हुआ है। वह प्रभु-नाम का ही सुमिरन करता है, प्रभु-नाम ही पढ़ता है और प्रभु-नाम में ही लौ लगाए रहता है। जब नाम पदार्थ प्राप्त हो जाता है तो चिन्ता दूर हो जाती है। सच्चे गुरु से मिलने पर ही नाम उत्पन्न होता है तथा तृष्णा और भूख सब समाप्त हो जाते हैं। हे नानक, प्रभु-नाम में लीन होने पर प्रभु-नाम ही प्राप्त होता है।। १ ।। मः ४।। जिसे शक्तिशाली सच्चे गुरु ने मार दिया है वह भ्रमों में पड़ा हुआ घरबार छोड़ जाता है। उसके बाद बदनामी की डौंड़ी पिटती है और जहां भी वह आगे जाता है वहां उसका मुंह काला ही होता है। उसके मुंह से भी उल्टी पुल्टी बातें ही निकलती हैं और वह सदैव मुंह से झाग फेंकता हुआ अर्थात निंदा कर्म करता हुआ मर खप जाता है। किसी के करने से भी भला क्या होता है यदि प्रारम्भ से ही उसका ऐसा कर्म लेख उसे मिला है। वह जहां भी जाता है झूठा ही साबित होता है; वह झूठ बोलता है और किसी को अच्छा नहीं लगता। हे प्रभु के संतजनों, अपने स्वामी परमात्मा की महानता को ज़रा ध्यान से देखो कि जैसा कोई कर्म करता है वैसा ही फल प्राप्त करता है। प्रभु के सच्चे दरबार में यही ब्रह्म विचार अर्थात आत्म विचार होगा और दास नानक ने इसे पहले से ही कह सुनाया है।। २ ।। पउड़ी।। सच्चे गुरु ने साधसंगत रूपी ऊँचा गाँव बसा दिया है और स्वयं ही उसकी रक्षा करने वाले शुभ कर्म भी दिए हैं।। गुरु के चरणों में मन लीन करने से मेरी आशा पूर्ण हो गई है। गुरु अनन्त रूप से कृपालु है और उसने मेरे सभी अवगुणों को नष्ट कर दिया है। गुरु ने अपनी कृपा धारण करके हमें अपना बना लिया है। जिस गुरु के इतने गुण हैं नानक सदैव उस पर बलिहारी जाता है।। २७ ।। श्लोक मः १ ।। हे पाण्डे, बताओ अब क्या किया जाए क्योंकि उसके हुकुम में जो लेख लिखा गया है, प्राप्त तो वही होना है। जब प्रभु का आदेश मिला तभी जो कुछ होना था वह हो गुजरा है और उस लेखे के अनुसार ही जीव अब आचरण कर रहे हैं।। १ ।। मः २ ।। हर एक के नाक में हुकुम रूपी नकेल पड़ी हुई है जो उस मालिक के हाथ में है; व्यक्ति का किए हुए कर्मों के अनुसार बना हुआ स्वभाव ही उसे इधर उधर धकेलता रहता है। हे नानक, यह सत्य है कि जहां के दाने हमारे लेखों में लिखे हुए हैं हमें वे ही खाने होते हैं।। २ ।। पउड़ी।। सारी बातों का प्रभु ने स्वयं ही प्रबन्ध किया हुआ है। उसने स्वयं ही सृष्टि पैदा की है और फिर स्वयं ही उसे मारकर समेटा है। वह स्वयं ही जीवों को उत्पन्न करता है और स्वयं ही उनका पालन पोषण करता है। अपने सेवकों को वह गले से लगा कर रखता है और अपनी कृपादृष्टि से उन्हें आनन्दित बनाए रहता है। हे नानक, भक्तजनों को तो सदा आनन्द ही आनन्द बना रहता है क्योंकि उन्होंने द्वैतभाव को जला दिया होता है।। २८।। श्लोक मः ३ ।। हे मन, तू प्रेमपूर्वक एकाग्र होकर उस प्रभु का सुमिरन कर, वह प्रभु सदैव महान बना रहने वाला है और वह देकर फिर पछताता नहीं। मैं उस प्रभु पर सदैव बलिहारी जाता हूं जिसके सुमिरन से सुख प्राप्त होता है। हे नानक, गुरमुख बनकर और अपने अहंकार को शब्द के माध्यम से जला कर जीव उस प्रभु से मिल जाता है।।१ ।। मः ३ ।। वह प्रभु स्वयं ही सेवा में लगता है और स्वयं ही कृपा करता है। सबका माता-पिता वह स्वयं है और वह स्वयं ही सबकी संभाल करता है। हे नानक, जो प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं उनका निवास अपने वास्तविक घर अर्थात प्रभु में होता है और युगों युगों तक उनकी महिमा का बखान होता रहता है।। २ ।। पउड़ी।। हे कर्ता प्रभु, तू ही करने कराने वाला समर्थ

हहि करते मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥ तुधु आपे सिसटि सिरजीआ आपे फुनि गोई ॥ सभु इको सबदु वरतदा जो करे सु होई ॥ वडिआई गुरमुखि देइ प्रभु हरि पावै सोई ॥ गुरमुखि नानक आराधिआ सभि आखहु धंनु धंनु धंनु गुरु सोई ॥ २९ ॥ १ ॥ सुधु

रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥ ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥ १ ॥ मन रे संसारु अंध गहेरा ॥ चहु दिस पसरिओ है जम जेवरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबित पड़े पड़ि कबिता मूए कपड़ केदारै जाई ॥ जटा धारि धारि जोगी मूए तेरी गति इनहि न पाई ॥ २ ॥ दरबु संचि संचि राजे मूए गडि ले कंचन भारी ॥ बेद पड़े पड़ि पंडित मूए रूपु देखि देखि नारी ॥ ३ ॥ राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥ हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥ ४ ॥ १ ॥ जब जरीऐ तब होइ भसम तनु रहै किरम दल खाई ॥ काची गागरि नीरु परतु है इआ तन की इहै बडाई ॥ १ ॥ काहे भईआ फिरतौ फूलिआ फूलिआ ॥ जब दस मास उरध मुख रहता सो दिनु कैसे भूलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मधु माखी तिउ सठोरि रसु जोरि जोरि धनु कीआ ॥ मरती बार लेहु लेहु करीऐ भूतु रहन किउ दीआ ॥ २ ॥ देहुरी लउ बरी नारि संगि भई आगै सजन सुहेला ॥ मरघट लउ सभु लोगु कुटंबु भइओ आगै हंसु अकेला ॥ ३ ॥ कहतु कबीर सुनहु रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ ॥ झूठी माइआ आपु बंधाइआ जिउ नलनी भ्रमि सूआ ॥ ४ ॥ २ ॥ बेद पुरान सभै मत सुनि कै करी करम की आसा ॥ काल ग्रसत सभ लोग सिआने उठि पंडित पै चले निरासा ॥ १ ॥ मन रे सरिओ न एकै काजा ॥ भजिओ न रघुपति राजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बन खंड जाइ जोगु तपु कीनो कंद मूलु चुनि खाइआ ॥ नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइआ ॥ २ ॥ भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तनु दीना ॥ राग रागनी डिंभ होइ बैठा उनि हरि पहि किआ लीना ॥ ३ ॥ परिओ कालु सभै

है, मेरे लिए तेरे बिना अन्य कोई नहीं है। तूने स्वयं ही सृष्टि की रचना की है और तू स्वयं ही उसे नष्ट भी करेगा। वह एक शब्द रूप में सबमें कार्यशील है और वही जो करता है वह होता है। वह गुरमुख व्यक्तियों को बड़प्पन प्रदान करता है और गुरमुख व्यक्ति ही प्रभु को प्राप्त होते हैं। हे नानक, गुरमुख व्यक्ति ने ही प्रभु का सुमिरन किया है और सभी कहो कि वह गुरु ही धन्य है धन्य है और धन्य है।। २६ ।। १ ।। शुद्ध।।

रागु सोरठि वाणी भक्त कबीर जी की घरु १ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मूर्ति पूजा करते करते हिन्दू मर गए हैं और सिर झुकाते झुकाते मुसलमान मर गए। एक तो व्यक्ति के मरने पर उसे जला देते हैं और दूसरे उसे दबा देते हैं परन्तु तेरी महिमा को दोनों ही नहीं जान पाए।। १ ।। हे मन, यह संसार बहुत गहरा गड्ढा है, इसमें चारों ओर यम का फंदा फैला हुआ है।। १ ।। रहाउ।। कविता पढ़ते पढ़ते कविजन मर गए हैं और कापड़िया वेश वाले साधु केदार तीर्थ पर जा जाकर मर खप गए हैं। जटाओं को धारण कर करके योगीजन मर खप गए हैं परन्तु तेरी गति को ये भी नहीं पा सके।। २ ।। सोने के बहुत बड़े बड़े बोझ धरती में दबा कर रखने वाले और धन सम्पदा को संचित किए जाने वाले राजा भी मर गए। वेदों को पढ़ते पढ़ते विद्वान लोग मर खप गए हैं और इसी प्रकार स्त्रियों का रूप देखने वाले भी देख देख मर गए हैं।। ३ ।। अपने अन्तर्मन में झांक कर स्वयं ही देख लो कि राम नाम के बिना सभी भटकते ही रहे हैं। कबीर का यह उपदेशात्मक कथन है कि हे भाई, प्रभु के नाम के बिना भी भला कोई मुक्ति पा सका है।। ४ ।। १ ।। मर कर जब जला जाता है तो यह शरीर राख की ढेरी हो जाता है और यदि यह रह जाए तो इसे कीड़ों के झुण्ड खा जाते हैं। जैसे कच्ची गागर (घड़े) में पानी डलता है इस शरीर की भी महानता इतनी सी ही है अर्थात कच्चे घड़े में पानी डालने से वह घड़ा शीघ्र ही गल जाता है और घड़ा होने का उसका अभिमान नहीं बचता। यही शरीर का हाल है इसकी महानता भी थोड़े समय के लिए ही है।। १ ।। हे भाई, तू बहुत फूला हुआ और अकड़ा हुआ क्यों घूम रहा है। तुम उस दिन को कैसे भूल गए जब तुम दस महीने तक (मां के पेट) उल्टे लटके हुए थे।। १ ।। रहाउ।। जैसे मधुमक्खी शहद इकट्ठा करती रहती है वैसे ही मूर्ख जीव की भी रूचि है कि वह जोड़-जोड़ कर धन इकट्ठा करता रहता है। मरते समय लोग यही कहते सुने जाते हैं कि इसे ले जाओ, ले जाओ; इस भूत को अब यहां क्यों रखा हुआ है।। २ ।। घर की दहलीज़ तक तो पत्नी साथ देती है और उसके आगे सज्जन मित्र साथ चलते हैं। शमशान तक सभी लोग और परिवार के व्यक्ति होते हैं परन्तु इसके आगे तो जीव को अकेला ही जाना होता है।। ३ ।। कबीर का कथन है कि हे प्राणी, तुम सुनो कि तुम काल के खाए हुए हो और कुएं में पड़े हो। जीव ने झूठी माया के बन्धन में स्वयं ही अपने आप को उसी प्रकार बांध रखा है जैसे तोता नलकी के साथ बंधा हुआ भ्रम में पड़ा रहता है।। ४ ।। २ ।। पंडित लोगों से वेदों और पुराणों के मत सुनकर हमने कर्म करने का मन बनाया है परन्तु सभी सयाने कर्मकाण्डियों को मौत का शिकार होते देखकर हम पंडित लोगों के पास से निराश होकर चले आए हैं।। १ ।। हे मन, तेरा तो एक भी काम सफल नहीं हुआ क्योंकि तूने राजा राम का अर्थात प्रभु का भजन नहीं किया।। १ ।। रहाउ।। जंगल में जाकर योग साधना और तपस्या करते हुए तूने कंद मूल पर ही अपना गुजारा किया है परन्तु योगी कर्मकाण्डी बोलने वाले और मौन साधना करने वाले सबका अधिकार पत्र तो यम के पास लिखा पड़ा है अर्थात ये सभी यम के हवाले हुए पड़े हैं।। २ ।। प्रेमाभक्ति हृदय में ना बस सकी और हे जीव, तूने ऐसे ही सांकेतिक चिन्हों के साथ बना संवारकर इस शरीर को यम के हवाले कर दिया है। तू व्यर्थ ही संगीतकार बनकर अनेक राग रागनियों का प्रपंच फैलाकर बैठा है; इन राग रागनियों का भला प्रभु से क्या लेना देना है।। ३ ।। सारे संसार के सिर पर काल बैठा है;

जग ऊपर माहि लिखे भ्रम गिआनी ॥ कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥ ४ ॥ ३ ॥ घरु २ ॥ दुइ दुइ लोचन पेखा ॥ हउ हरि बिनु अउरु न देखा ॥ नैन रहे रंगु लाई ॥ अब बे गल कहनु न जाई ॥ १ ॥ हमरा भरमु गइआ भउ भागा ॥ जब राम नाम चितु लागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाजीगर डंक बजाई ॥ सभ खलक तमासे आई ॥ बाजीगर स्वांगु सकेला ॥ अपने रंग रवै अकेला ॥ २ ॥ कथनी कहि भरमु न जाई ॥ सभ कथि कथि रही लुकाई ॥ जा कउ गुरमुखि आपि बुझाई ॥ ता के हिरदै रहिआ समाई ॥ ३ ॥ गुर किंचत किरपा कीनी ॥ सभु तनु मनु देह हरि लीनी ॥ कहि कबीर रंगि राता ॥ मिलिओ जगजीवन दाता ॥ ४ ॥ ४ ॥ जा के निगम दूध के ठाटा ॥ समुंदु बिलोवन कउ माटा ॥ ता की होहु बिलोवनहारी ॥ किउ मेटै गो छाछि तुहारी ॥ १ ॥ चेरी तू रामु न करसि भतारा ॥ जगजीवन प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे गलहि तउकु पग बेरी ॥ तू घर घर रमईऐ फेरी ॥ तू अजहु न चेतसि चेरी ॥ तू जमि बपुरी है हेरी ॥ २ ॥ प्रभ करन करावनहारी ॥ किआ चेरी हाथ बिचारी ॥ सोई सोई जागी ॥ जितु लाई तितु लागी ॥ ३ ॥ चेरी तै सुमति कहां ते पाई ॥ जा ते भ्रम की लीक मिटाई ॥ सु रसु कबीरै जानिआ ॥ मेरो गुर प्रसादि मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ जिह बाझु न जीआ जाई ॥ जउ मिलै त घाल अघाई ॥ सद जीवनु भलो कहांही ॥ मूए बिनु जीवनु नाही ॥ १ ॥ अब किआ कथीऐ गिआनु बीचारा ॥ निज निरखत गत बिउहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घसि कुंकम चंदनु गारिआ ॥ बिनु नैनहु जगतु निहारिआ ॥ पूति पिता इकु जाइआ ॥ बिनु ठाहर नगरु बसाइआ ॥ २ ॥ जाचक जन दाता पाइआ ॥ सो दीआ न जाई खाइआ ॥ छोडिआ जाइ न मूका ॥ अउरन पहि जाना चूका ॥ ३ ॥ जो जीवन मरना जानै ॥ सो पंच सैल सुख मानै ॥ कबीरै सो धनु पाइआ ॥ हरि भेटत आपु मिटाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ ॥ किआ बेद पुरानां सुनीऐ ॥ पड़े सुने किआ होई ॥ जउ सहज न मिलिओ सोई ॥ १ ॥ हरि का नामु न जपसि गवारा ॥ किआ सोचहि बारं बारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंधिआरे दीपकु चहीऐ ॥

उसके लेखे में भ्रम करने वाले ज्ञानवान कहे जाने वाले दोनों ही लिखे हुए हैं। कबीर का कथन है कि जिन्होंने प्रेमाभक्ति को जान लिया है वे कर्मकाण्ड के बन्धनों से मुक्त (खालसे) हो गए हैं।। ४ ।। ३ ।। घरु २ ।। मैं दोनों आँखों से पूरी शक्ति के साथ देखता हूं और उस प्रभु के बिना अन्य किसी को भी नहीं देख पाता। इन आँखों ने प्रेम लगा लिया है इसलिए अब कोई अन्य बात कही नहीं जाती।। १ ।। जब राम नाम में मेरा चित्त लग गया तो मेरा भ्रम और भय भाग खड़ा हुआ है।। १ ।। रहाउ।। जब वह बाज़ीगर रूपी प्रभु अपना डमरू बजाता है तो सारी सृष्टि उसके तमाशे को देखने के लिए एकत्र हो जाती है। बाजीगर जब अपने स्वांग को समेट लेता है तो फिर अकेला अपने ही रंग में मस्त बना रहता है।। २ ।। केवल कथन करने मात्र से ही भ्रम नष्ट नहीं होता क्योंकि बातें तो सारा संसार ही करता रहता है।। ३ ।। गुरु ने थोड़ी कृपा की है और मेरा यह सारा शरीर, मन और तन प्रभु में लीन हो गया है। कबीर का कथन है कि उसके रंग में रंगे जाने से अब मुझे संसार को जीवन देने वाला वह दाता प्रभु मिल गया है।। ४ ।। ४ ।। धर्म पुस्तकें दूध का समुद्र रूप है और पठन पाठन इस समुद्र को बिलोने के लिए विशाल घड़ा है। हे जीव-स्त्री, यदि तू इसको बिलोती रहेगी तो तू देखेगी कि तुम्हारी लस्सी (छाछ) तो कम से कम जरूर रहेगी अर्थात धर्म को जानने के लिए पढ़ने के वास्ते अनन्त सामग्री है; जीव ने इसको विचार कर इसके तत्व को ग्रहण करना है। यदि तत्व ना भी मिल पाया तो भी खोज करने का जो अपना लस्सी रूपी स्वाद है वह तो कहीं नहीं जा सकेगा अर्थात परम आनन्द तो नहीं पर साधारण आनन्द तो मिलेगा ही मिलेगा।। १ ।। हे दासी, तू प्रभु को अपना पति क्यों नहीं मानती। संसार का जीवन वह प्रभु प्राणों का आधार है।। १ ।। रहाउ।। तेरे गले में पट्टा और पैरों में बेड़ी पड़ी हुई है और तुझे परमात्मा ने अनेकों घरों (योनियों) में भटकाया है। हे दासी, तू अभी भी क्यों नहीं सोच सकती। तू बेचारी तो यम की नज़र में है अर्थात मौत तुझे लक्ष्य बना रही है।। २ ।। वह प्रभु ही सब कुछ करने कराने वाला है और इस दासी के हाथ भी भला क्या है। अनेकों जन्मों से सोई यह अब जागी है और जहाँ इसे लगाया गया है वहीं लगी है।। ३ ।। हे दासी, तुझे अच्छी बुद्धि कहां से प्राप्त हुई जिससे तेरी भ्रम की रेखा मिट गई है। इस रस को कबीर ने जान लिया है और गुरु की कृपा से मेरा मन अब सन्तुष्ट हो गया है।। ४ ।। ५ ।। जिस प्रभु के बिना जीवित नहीं रहा जा सकता, यदि वह मिल जाए तो सारी मेहनत सफल हो जाती है अर्थात फिर और मेहनत नहीं करनी पड़ती; फिर निरन्तर बना रहने वाला जीवन प्राप्त होता है और भला कहलाया जाता है। विकारों की ओर से मरने के बिना जीवन प्राप्त नहीं होता।। १ ।। अब भला क्या ज्ञान की बात की जाए, अपने देखते देखते ही यह सारा संसार नष्ट होता चला जाता है।। १ ।। रहाउ।। जैसे केसर को घिस कर चंदन में मिलाया जाता है इसी प्रकार आत्मा निराकार प्रभु के साथ मिल जाती है। इन आँखों को प्रयोग में लाए बिना संसार के व्यवहार को जान लिया गया है अर्थात मेरे अन्दर की आंखे खुल गई हैं। पुत्र ने एक पिता को पैदा किया अर्थात जीव ने ज्ञान को प्रकट किया है और बिना किसी ठौर-ठिकाने वाले एक नगर को बसा दिया है अर्थात जो जीवन अस्थिर था उसे ज्ञान के माध्यम से सदैव बना रहने वाला बना दिया है।। २ ।। भिखारी बनकर मांगने वाले ने तो उस प्रभु को पा लिया है और उसने इतना दे दिया है कि वह खाया नहीं जाता, न ही उसे छोड़ा जाता है और न ही वह समाप्त होता है। अब मेरा अन्य लोगों के पास मांगने के लिए जाना समाप्त हो गया है।। ३ ।। जो जीवन में ही विकारों की ओर से मरने की विधि को जान जाता है वह इसे जीवन का सुख देने वाली सैर के तौर पर मानता है। कबीर ने वह धन प्राप्त कर लिया है और उस प्रभु से मिलते ही अहंकार भाव मिट गया है।। ४ ।। ६ ।। क्या पढ़ा जाए और क्या चिंतन किया जाए; वेद-पुराणों को भी क्या सुना जाए क्योंकि यदि सहजभाव की प्राप्ति नहीं हो सकती तो पढ़ने सुनने से क्या होगा।। १ ।। हे गंवार व्यक्ति, तू क्या बार बार सोचता है और प्रभु के नाम का सुमिरन नहीं करता ।। १ ।। रहाउ।। अंधकार में तो एक दीपक की आवश्यकता होती है ताकि उस

इक बसतु अगोचर लहीऐ ॥ बसतु अगोचर पाई ॥ घटि दीपकु रहिआ समाई ॥ २ ॥ कहि कबीर अब जानिआ ॥ जब जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ मन माने लोगु न पतीजै ॥ न पतीजै तउ किआ कीजै ॥ ३ ॥ ७ ॥ ह्रिदै कपटु मुख गिआनी ॥ झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥ १ ॥ कांइआ मांजसि कउन गुनां ॥ जउ घट भीतरि है मलनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लउकी अठसठि तीरथ न्हाई ॥ कउरापनु तऊ न जाई ॥ २ ॥ कहि कबीर बीचारी ॥ भव सागरु तारि मुरारी ॥ ३ ॥ ८ ॥

सोरठि ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बहु परपंच करि पर धनु लिआवै ॥ सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥ १ ॥ मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥ अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छिनु छिनु तनु छीजै जरा जनावै ॥ तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावै ॥ २ ॥ कहतु कबीरु कोई नही तेरा ॥ हिरदै रामु की न जपहि सवेरा ॥ ३ ॥ ९ ॥ संतहु मन पवनै सुखु बनिआ ॥ किछु जोगु परापति गनिआ ॥ रहाउ ॥ गुरि दिखलाई मोरी ॥ जितु मिरग पड़त है चोरी ॥ मूंदि लीए दरवाजे ॥ बाजीअले अनहद बाजे ॥ १ ॥ कुंभ कमलु जलि भरिआ ॥ जलु मेटिआ ऊभा करिआ ॥ कहु कबीर जन जानिआ ॥ जउ जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ २ ॥ १० ॥ रागु सोरठि ॥ भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला अपनी लीजै ॥ हउ मांगउ संतन रेना ॥ मै नाही किसी का देना ॥ १ ॥ माधो कैसी बनै तुम संगे ॥ आपि न देहु त लेवउ मंगे ॥ रहाउ ॥ दुइ सेर मांगउ चूना ॥ पाउ घीउ संगि लूना ॥ अध सेरु मांगउ दाले ॥ मोकउ दोनउ वखत जिवाले ॥ २ ॥ खाट मांगउ चउपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥ ऊपर कउ मांगउ खींधा ॥ तेरी भगति करै जनु थींधा ॥ ३ ॥ मै नाही कीता लबो ॥ इकु नाउ तेरा मै फबो ॥ कहि कबीर मनु मानिआ ॥ मनु मानिआ तउ हरि जानिआ ॥ ४ ॥ ११ ॥

रागु सोरठि बाणी भगत नामदे जी की घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जब देखा तब गावा ॥ तउ

अगोचर वस्तु (प्रभु) को ढूंढा जा सके। जब वह अगोचर पदार्थ प्रभु मिल जाता है तो अन्तःकरण में ज्ञान रूपी दीपक दिखाई दे जाता है।। २ ।। कबीर का कथन है कि अब मैंने उसे जान लिया है और जब मुझे उसकी समझ पड़ गई है तो मेरा मन संतुष्ट हो गया है। जब मन परमात्मा की कृपा से संतुष्ट हो जाता है तो दूसरे लोग प्रसन्न नहीं रहते। अब ये लोग अगर प्रसन्न न रहें तो न रहा करें, हम भला क्या कर सकते हैं।।३।।७।। तेरे हृदय में कपट और मुख में ज्ञान की बातें हैं; हे झूठे व्यक्ति, तू भला क्यों पानी को ही बिलोये जा रहा है अर्थात क्यों व्यर्थ ही बोले बके जा रहा है।। १ ।। शरीर को शुद्ध करने का क्या लाभ है यदि तेरे हृदय में मैल भरी हुई है अर्थात जब तक अन्तःकरण शुद्ध नहीं होता, शरीर को शुद्ध करने का कोई लाभ नहीं है।।१।। रहाउ ।। कड़वी लौकी अड़सठ तीर्थों पर स्नान कर आई परन्तु फिर भी उसका कड़वापन दूर नहीं हुआ।।२।। कबीर, यह विचार पूर्वक कहता है कि हे प्रभु, मुझे संसार सागर से पार कर लो।।३।। ८।।

सोरठि   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

व्यक्ति बहुत से प्रपंच करके पराए धन को ले आता है और लाकर उसे पुत्र, पत्नी आदि पर लुटा देता है।। १ ।। हे मेरे मन, भूलकर भी छल नहीं करना चाहिए क्योंकि अन्त में सारा हिसाब तो तेरे प्राणों से ही लिया जाएगा।। १ ।। रहाउ।। हर पल यह शरीर क्षीण हो रहा है और इसे बुढ़ापा जीतता चला आ रहा है। जब तू बूढ़ा हो जाएगा तब तुम्हारे हाथों की ओक में कोई पानी भी नहीं डालेगा।। २ ।। कबीर कहता है कि हे जीव तेरा यहां कोई नहीं है इसलिए तू शीघ्र की राम नाम का हृदय में जाप क्यों नहीं करता।। ३ ।। ६ ।। हे संतजनों, पवन रूपी मन को सुख मिल गया है और ऐसा लगता है कि कुछ प्राप्त होने योग्य उसे प्राप्त हो गया है।। रहाउ।। गुरु ने वह मोरी अर्थात मन की कमजोरी दिखा दी है जहां से जंगली जानवर (विकार आदि) चोरी से इसमें घुस जाते हैं। अब हमने उन सभी दरवाज़ों को बंद कर दिया है अर्थात अपनी कमजोरियां दूर कर दी है। अब हमारे अन्तर्मन में प्रभु के आनन्द के वाद्य बजने लग गए हैं।। १ ।। हृदय रूपी कमल शरीर रूपी घड़े में वासनाओं के जल से भरा पड़ा था। अब उसमें से वासनाओं का जल निकालकर उस घड़े को सीधा कर दिया गया है ताकि उसमें अमृत डाला जा सके। कबीर का कथन है कि उसका सेवक ही प्रभु को जान पाता है और जब जान जाता है तो उसका मन संतुष्ट हो जाता है।। २ ।। १० ।। रागु सोरठि।। मुझसे भूखे रहकर भक्ति नहीं होती; अपनी यह माला पकड़ लो और संभाल कर अपने पास रख लो। मैं तो संत पुरुषों की चरण धूलि ही मांगता हूं और मैंने किसी का भी कुछ देना नहीं है (मैं क्यों बिना कुछ मांगे ही व्यर्थ ही मेहनत करता जाऊँ) ।।१।। हे प्रभु, तेरे साथ भला मेरी प्रीति कैसे बनी रहेगी। ठीक है, यदि तुम नहीं दोगे तो मैं मांगकर ले लूंगा।। रहाउ।। दो सेर तो मैं आटा मांगता हूं और साथ में एक पाव घी और नमक मांगता हूं। मैं आधा सेर दाल मांगता हूं और यह सारा सामान मुझे दो वक्त जीवित बनाए रखने में सहायक होगा।। २ ।। चार पाए वाली मैं एक खाट मांगता हूं जिसके साथ बिछाने के लिए एक गद्दा और एक सिराहना भी होना चाहिए। उपर लेने के लिए एक लिहाफ भी मांगता हूं ताकि तेरा यह दास प्रेम पूर्वक तेरी भक्ति करता रहे।। ३ ।। यह सब मांगने में मैंने कोई लालच नहीं दिखाया है और मैं यह भी बताना चाहता हूं कि एक तेरा नाम ही मुझे अच्छा लगता है। कबीर कहता है कि इस प्रकार मेरा मन संतुष्ट हो गया है और जब मन संतुष्ट हो गया तभी मैंने प्रभु को जान लिया है।। ४ ।। ११ ।।

रागु सोरठि वाणी भक्त नामदेव जी की घरु २   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मैं जब प्रभु को देखता हूं तो उसके गुण गाता हूं और

जन धीरजु पाया ॥ १ ॥ नादि समाइलो रे सतिगुरु भेटिले देवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह झिलि मिलि कारु दिसंता ॥ तह अनहद सबद बजंता ॥ जोती जोति समानी ॥ मै गुर परसादी जानी ॥ २ ॥ रतन कमल कोठरी ॥ चमकार बीजुल तही ॥ नेरै नाही दूरि ॥ निज आतमै रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥ जह अनहत सूर उज्यारा ॥ तह दीपक जलै छंछारा ॥ गुर परसादी जानिआ ॥ जनु नामा सहज समानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ घरु ४ सोरठि ॥ पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥ तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मोकउ बेढी देहु बताई हो ॥ १ ॥ री बाई बेढी देनु न जाई ॥ देखु बेढी रहिओ समाई ॥ हमारै बेढी प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥ लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥ २ ॥ ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो ॥ गूंगै महा अंम्रित रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥ ३ ॥ बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बांधि ध्रू थापिओ हो ॥ नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिओ हो ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि घरु ३ ॥ अणमड़िआ मंदलु बाजै ॥ बिनु सावण घनहरु गाजै ॥ बादल बिनु बरखा होई ॥ जउ ततु बिचारै कोई ॥ १ ॥ मोकउ मिलिओ रामु सनेही ॥ जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि पारस कंचनु होइआ ॥ मुख मनसा रतनु परोइआ ॥ निज भाउ भइआ भ्रमु भागा ॥ गुर पूछे मनु पतीआगा ॥ २ ॥ जल भीतरि कुंभ समानिआ ॥ सभ रामु एकु करि जानिआ ॥ गुर चेले है मनु मानिआ ॥ जन नामै ततु पछानिआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

राגु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥ अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही ॥ १ ॥ माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥ जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी ॥ अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति

तभी तेरा यह सेवक धैर्य प्राप्त करता है।। १ ।। सच्चे गुरु से मिलने पर मैं शब्द रूपी नाद प्रभु में लीन हो गया हूं।। १।। रहाउ।। जहां झिलमिलाती हुई रोशनी का प्रकाश दिखाई देता है वहीं प्रभु के अनहद् शब्द का वाद्य बजता है। वहीं पर मेरी ज्योति उस परम ज्योति में लीन हो गई है और इस तथ्य को मैंने गुरु की कृपा से जाना है।। २ ।। हृदय कमल रूपी कोठरी में अर्थात मन में गुणों के रत्न भरे हुए हैं जिनकी चमक बिजली के समान है। वह प्रभु दूर नहीं है पास ही है और अपनी आत्मा में ही भरपूर रूप से बस रहा है।। ३ ।। जहां उस कभी भी नष्ट न होने वाले सूर्य का प्रकाश है वहां सांसारिक बुद्धि के छोटे छोटे दीपक हल्के नज़र आ रहे हैं। मैंने गुरु की कृपा से ही यह सब जाना है और इस प्रकार यह सेवक नामदेव सहजभाव में लीन हो गया है।। ४ ।। १ ।। घरु ४ सोरठि।। पड़ोसन यह पूछने लगी कि हे नामदेव, तूने यह अपना छप्पर किससे बंधवाया है। मैं तेरे से भी दोगुना मज़दूरी उसे दूंगी मुझे तुम उस बढ़ई का पता बता दो।। १ ।। हे बाई, उस बढ़ई को बताया या दिया नहीं जा सकता क्योंकि तू देख, वह बढ़ई तो सब ओर समाया हुआ है। वह बढ़ई ही तो हमारे सबके प्राणों का आधार है।। १ ।। रहाउ।। यदि किसी ने उससे अपना छप्पर बंधवाना हो तो वह बढ़ई मज़दूरी के रूप में प्रेम ही मांगता है। व्यक्ति जब लोगों से, परिवार से और सब लोगों से अपने झूठे स्नेह को तोड़ ले तब वह बढ़ई स्वयं ही आ जाता है।। २ ।। वह ऐसा बढ़ई है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता; वह सबके अन्दर है और सब स्थानों में बसा हुआ है। जिस प्रकार गूंगा महा अमृत रस को चख तो लेता है परन्तु पूछने पर उसका वर्णन नहीं कर सकता इसी प्रकार यह प्रभु रूपी बढ़ई है जिसका वर्णन नहीं हो सकता।। ३ ।। हे बाई, तू उस बढ़ई के गुणों को सुन; उसी ने समुद्र को बांधकर रखा है और ध्रुव तारे को अटल बनाया हुआ है। नामदेव के स्वामी प्रभु सीता को वापस ले आए और लंका उन्होंने विभीषण को दे दी।। ४ ।। २ ।। सोरठि घरु ३ ।। प्रभु से मिलने के बाद मेरे हृदय में आध्यात्मिक आनन्द का बिना मढ़ा हुआ तबला बजने लगा है। अब सावन के बिना ही बादल गरज रहे हैं। बिना बादलों के ही बरसात हो रही है परन्तु यह अनुभव तभी होता है यदि कोई वास्तविकता अर्थात सत्य का चिंतन करे।। १ ।। मुझे तो मेरा स्नेही प्रभु मिल गया है जिसे मिलने से यह देह सुन्दर देह बन गई है अर्थात् जीवन सफल हो गया है।। १ ।। रहाउ।। उस पारस से मिलकर मैं सोना हो गया हूं और अपने मुंह और मन में मैंने प्रभु-नाम का रत्न पिरो लिया है। अब प्रभु के साथ मुझे अपनों जैसा प्रेम हो गया है और मेरा भ्रम दूर हो गया है। गुरु को पूछकर अर्थात् उसका उपदेश लेकर मेरे मन की तसल्ली हो गई है।। २ ।। उस परम जल रूपी प्रभु में यह जीवात्मा रूपी घड़ा समा गया है और सब ओर एक प्रभु ही जाना जा रहा है। अब इस चेले का गुरु पर पूर्ण निश्चय हो गया है और दास नामदेव ने पूर्ण तत्व को पहचान लिया है।। ३ ।। ३ ।।

रागु सोरठि वाणी भक्त रविदास जी की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जब मेरे में अहम् था तो हे प्रभु तब तू मुझसे दूर था परन्तु अब तू मन में आ बसा है तो मेरा अहंकार नष्ट हो गया है। चक्रवात चलने के साथ समुद्र में लहरें उठती है परन्तु वे केवल पानी के अन्दर पानी ही होती हैं अर्थात लहरों और समुद्र के पानी में कोई अन्तर नहीं होता।। १ ।। हे प्रभु, क्या कहें यह भ्रम ऐसा होता है कि इसमें पड़कर वस्तुओं को जैसा माना जाता है वे वास्तव में वैसी होती नहीं।। १ ।। रहाउ।। एक राजा अपने सिंहासन पर सो गया और सपने में भिखारी बन गया। वह राज्य के होते हुए भी राज्य से बिछुड़ कर जैसे दुखी हो जाता है हे प्रभु, हमारी भी वही गति

भई हमारी ॥ २ ॥ राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥ अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ ॥ ३ ॥ सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥ कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥ ४ ॥ १ ॥ जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥ अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥ १ ॥ माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥ अब कहा करहुगे ऐसी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहु बानी ॥ खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥ २ ॥ आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥ ३ ॥ कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ ॥ जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीऐ ॥ ४ ॥ २ ॥ दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥ राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥ १ ॥ न बीचारिओ राजा राम को रसु ॥ जिह रस अन रस बीसरि जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥ इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥ २ ॥ कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥ सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥ १ ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥ बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ २ ॥ सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥ ३ ॥ ४ ॥ जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥ जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥ १ ॥ माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥ तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥ जउ

हो गई है, क्योंकि प्रभु को भुलाकर सुखी होते हुए भी हम वास्तव में दुख में ही जी रहे हैं।। २ ।। रस्सी को सांप समझने की जो कहानी है अब हमने उस कहानी के रहस्य को समझ लिया है। जिस प्रकार अनेकों कंगनों को देखकर कोई भ्रम में पड़ जाए कि शायद सोना अलग अलग प्रकार का है तो यह ठीक नहीं है। पहले तो मैं भी ऐसा ही कहता था पर अब मेरा भ्रम दूर हो गया है।। ३ ।। सबमें एक स्वामी प्रभु ही अनेक रूपों में बना हुआ है और सब दिलों में वही आनन्द भोगने वाला है। रविदास का कथन है कि वह तो हमारे हाथ पांव से भी अधिक हमारे पास है इसलिए चिंता नहीं की जानी चाहिए।। ४ ।। १ ।। यदि हम मोह के फंदे में फंसे हुए हैं तो हे प्रभु, तुमको भी हमने प्रेम के बन्धन में बांध रखा है। हम तो तुम्हारी आराधना करके छूट जाएंगे परन्तु तुम अपने छूटने का उपाय करो - तुम भला कैसे छूट पाओगे।। १ ।। हे प्रभु, जैसा प्रेम हम लोगों का है वह तो तुम भली प्रकार जानते हो; अब तुम हमारे साथ कोई ऐसी वैसी बात नहीं कर सकते।। १ ।। रहाउ।। मछली को पकड़ा गया, काटा गया, टुकड़े टुकड़े करके उसे अनेकों प्रकार से पकाया गया। उसके टुकड़ों को खा भी लिया गया परन्तु फिर भी उस मछली को पानी नहीं भूल सका अर्थात मछली खाने वाले को बार बार प्यास का लगना मछली का पानी के साथ प्रेम बना रहने का उदाहरण है।। २ ।। वह प्रभु किसी के बाप की सम्पत्ति नहीं है। वह हरि राजा तो भावना के वश में हैं। सारे संसार पर मोह का पर्दा पड़ा है परन्तु भक्तजनों को यह संताप स्पर्श नहीं करता।। ३ ।। रविदास का कथन है कि प्रभु की भक्ति मन में बहुत बढ़ गई है अब किसे हम अपना यह हाल सुनाएं। हे प्रभु, जिस दुख से बचने के लिए हमने तेरा सुमिरन किया है क्या अभी भी मोह के उस दुख को सहन करना पड़ेगा।। ४ ।। २ ।। बहुत पुण्य फल के रूप में यह दुर्लभ मानव जन्म पाया था परन्तु अज्ञान के कारण यह व्यर्थ जा रहा है। राजा इन्द्र के महलों जैसे महल और सिंहासन भी हों तब भी प्रभु की भक्ति के बिना बताओ ये किस काम के हैं।। १ ।। मैंने कभी भी राजा राम अर्थात प्रभु के बारे में विचार नहीं किया। प्रभु-नाम का रस ऐसा है कि अन्य सभी रस भूल जाते हैं।। १ ।। रहाउ।। हम पागल लोग समझने वाली बात की ओर से तो नासमझ बने रहे और सोचने वाली बात को कभी भी न सोचते हुए हमारे दिन बीतते गए हैं। हम इन्द्रियों की वासनाओं के संदर्भ में तो बहुत मजबूत हैं परन्तु विवेक, बुद्धि और परमार्थ के क्षेत्र में हमारा प्रवेश तक नहीं हुआ है।। २ ।। हम कहते कुछ हैं और आचरण कुछ और ही करते हैं; तेरी सांसारिक माया के मोह में ग्रस्त होकर हमें कुछ भी समझ नहीं पड़ती। रविदास का कथन है कि हे प्रभु, मैं तो उदास और निराश मति वाला हो गया हूं; गुस्सा छोड़कर मुझ पर दया करो।। ३ ।। ३ ।। सुखों के सागर और कल्पतरु, चिंतामणि और कामधेनु जिसके बस में हैं; चारों पुरुषार्थ, अठारहों सिद्धियां और नवनिधियां जिसके हाथ की तली पर हैं।। १ ।। उस प्रभु का अपनी जीभ से जाप क्यों नहीं करते हो तथा अन्य सब कुछ त्याग कर उसके उपदेश में ही लीन क्यों नहीं होते हो।। १ ।। रहाउ ।। नाना प्रकार के उपाख्यान, पुराण, वेद और अनेकों विधियां इन चौंतीस अक्षरों में ही लिखी गई हैं।। व्यास जैसे लोगों ने भी विचार पूर्वक परमार्थ की बात कही है कि राम नाम जैसा अन्य कुछ भी नहीं है।। २ ।। बड़े भाग्य के कारण जिनकी हरि चरणों के साथ प्रीति लगी हुई है, स्वभाविक रूप से ही उनका ध्यान लगा रहता है और फिर वे झगड़ों और दुखों से आज़ाद बने रहते हैं। रविदास का कथन है कि प्रभु के प्रकाश को हृदय में धारण करो जिससे जन्म मरण का भय भाग जाएगा।। ३ ।। ४ ।। हे प्रभु, यदि तुम पहाड़ हो तो हम उस पर बसने वाले मोर हैं; यदि तुम चन्द्रमा हो तो हम तुमसे प्रेम करने वाले चकोर हैं।। १ ।। हे प्रभु, यदि तुम अपना हमसे प्रेम नहीं तोड़ोगे तो हम भी कभी नहीं तोड़ेंगे; तुम से प्रेम तोड़ कर भला हम किसके साथ जोड़ सकते हैं।। १ ।। रहाउ ।। यदि तुम दीपक हो तो हम तुम्हारी बाती हैं और यदि

तुम तीरथ तउ हम जाती ॥ २ ॥ साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥ तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥ ३ ॥ जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥ तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥ ४ ॥ तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥ भगति हेत गावै रविदासा ॥ ५ ॥ ५ ॥ जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा ॥ हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥ १ ॥ प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥ जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखहु कंध उसारहु नीवां ॥ साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥ २ ॥ बंके बाल पाग सिरि डेरी ॥ इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥ ३ ॥ ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥ राम नाम बिनु बाजी हारी ॥ ४ ॥ मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥ तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥ ५ ॥ ६ ॥ चमरटा गांठि न जनई ॥ लोगु गठावै पनही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आर नही जिह तोपउ ॥ नही रांबी ठाउ रोपउ ॥ १ ॥ लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥ हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥ २ ॥ रविदासु जपै राम नामा ॥ मोहि जम सिउ नाही कामा ॥ ३ ॥ ७ ॥

रागु सोरठि बाणी भगत भीखन की   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥ रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥ १ ॥ राम राइ होहि बैद बनवारी ॥ अपने संतह लेहु उबारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥ ऐसी बेदन उपजि खरी भई वा का अउखधु नाही ॥ २ ॥ हरि का नामु अंम्रित जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥ गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ॥ ३ ॥ १ ॥ ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदारथु पाइआ ॥ अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥ १ ॥ हरि गुन कहते कहनु न जाई ॥ जैसे गूंगे की मिठिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई ॥ कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखां तह सोई ॥ २ ॥ २ ॥

तुम तीर्थ हो तो हम तुम्हारे यात्री हैं।। २ ।। हमने तो अपनी सच्ची प्रीति तुम्हारे साथ जोड़ ली है और तुम्हारे साथ जोड़कर अन्य सबों के साथ तोड़ ली है।। ३ ।। मैं जहां भी जाऊँ, वहां तेरी ही सेवा करूं क्योंकि मेरे लिए तुम्हारे जैसे स्वामी के बिना और कोई भी पूज्य देव नहीं है।। ४ ।। तुम्हारे भजन यम का फंदा काट देते हैं और तुम्हारी भक्ति को प्राप्त करने के लिए रविदास उनका गायन करता है।। ५ ।। ५ ।। यह शरीर पानी की दीवार है जिसे हवा का खम्भा आसरा देता है। माता का रक्त और पिता का वीर्य इसके लिए गारा बनते हैं। इस सबसे हड्डियों मांस और नाड़ियों का ढाँचा बना है जिसमें आत्मा रूपी बेचारा पक्षी निवास करता है।। १ ।। रहाउ।। हे जीव, तू बड़ी बड़ी बुनियादों को बनाता है और दीवारों का निर्माण करता है हालांकि तेरी सीमा केवल साढ़े तीन हाथ है अर्थात अन्ततः तुझ जलाने या दबाने के लिए वांछित धरती केवल साढ़े तीन हाथ ही होती है।। २ ।। सुन्दर केशों को संवार कर तुमने सिर पर टेढ़ी पगड़ी भी बांध रखी है परन्तु ये तेरे शरीर समेत अंत में राख की ढेरी ही हो जाने वाले हैं।। ३ ।। तेरे पास ऊँचे महल और सुन्दर स्त्री है परन्तु प्रभु-नाम के बिना तूने जीवन की बाजी हार ली है।। ४ ।। मेरी तो जाति भी, गोत्र भी बहुत नीची है और मेरा जन्म भी बहुत ही ओछा है; पर चमड़े का काम करने वाले रविदास का कथन है कि हे प्रभु, मैं तो तुम्हारी शरण में आन पड़ा हूं।। ५ ।। चमड़े का काम करने वाला मैं चमड़े में गांठ लगाना भी नहीं जानता परन्तु लोग मेरे पास से ही जूते बनवाना चाहते हैं।। १ ।। रहाउ।। मेरे पास आर (मोटी सुई) भी नहीं है जिससे मैं सिलाई करूं और न ही खुरपी है जिससे मैं चमड़े को छील काटकर स्थान ढकने वाला चमड़े का टुकड़ा जोड़ सकूं।। १ ।। लोग जूते बना बना कर अर्थात धंधों में ही लीन होकर बहुत ख्वार हुए हैं परन्तु मैं तो बिना गांठने के ही प्रभु के चरणों में जा पहुंचा हूं।। २ ।। रविदास तो प्रभु-नाम का जाप करता है और अब मुझे यम से कुछ भी लेना देना नहीं है।। ३ ।। ७ ।।

रागु सोरठि वाणी भक्त भीखन की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

नैनों से पानी बह रहा है, शरीर कमज़ोर हो गया है और सिर के केश दूध जैसे सफेद हो गए हैं। गला भर गया है और जब आवाज़ भी नहीं निकलती तो यह प्राणी क्या करेगा।। १ ।। हे राजा राम रूपी प्रभु, अब तू ही हमारा वैद्य बन और अपने संतजनों का उद्धार कर दो।। १ ।। रहाउ।। मेरे माथे में पीड़ा है, शरीर में जलन है और कलेजे में एक अजीब सी तड़पन है। मुझे तो ऐसा रोग पैदा हो गया है जिसकी मुझे कोई भी औषधि नहीं दिखाई देती।। २ ।। प्रभु-नाम का ही अमृत जल पवित्र है और यही सारे संसार की औषधि है। दास भीखन कहता है कि गुरु की कृपा से ही मोक्ष का द्वार पाया जाता है।। ३ ।। १ ।। प्रभु-नाम रूपी रत्न इतना अमूल्य है कि मैंने उसे बहुत पुण्य करने के बाद ही पाया है। अनेकों प्रकार के यत्न करके हृदय में रखा है परन्तु यह रत्न छिपाए नहीं छिपता।। १ ।। प्रभु के गुणों का कथन तो हम करते हैं परन्तु उनके बारे में कुछ नहीं कह सकते। उनका स्वाद वैसा ही है जैसे गूंगे की मिठाई होती है।। १ ।। रहाउ।। जीभ से जाप करते हुए, कानों से सुनते हुए और चित्त को उसका सुमिरन करते हुए सुख प्राप्त होता है। भीखन का कथन है कि मेरी दोनों आँखें संतुष्ट हो गई हैं और मैं जिधर देखता हूं उधर वह प्रभु दिखाई देता है।। २ ।। २ ।।

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥ २ ॥ दइआल तेरै नामि तरा ॥ सद कुरबाणै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥ ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥ ३ ॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां ॥ दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ ॥ नानकु ता का दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ ४ ॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला १ ॥ हम आदमी हां इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा ॥ नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा ॥ १ ॥ अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासु मासु सभु जीउ तुमारा तू मै खरा पिआरा ॥ नानकु साइरु एव कहतु है सचे परवदगारा ॥ २ ॥ जे तू किसै न देही मेरे साहिबा किआ को कढै गहणा ॥ नानकु बिनवै सो किछु पाईऐ पुरबि लिखे का लहणा ॥ ३ ॥ नामु खसम का चिति न कीआ कपटी कपटु कमाणा ॥ जम दुआरि जा पकड़ि चलाइआ ता

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

धनासरी महला १
घरु १ चौपदे

अपने पापों के बारे में सोचकर मेरा हृदय डरता रहता है; मैं किसको अपना हाल बताऊँ। इसलिए दुखों को दूर कर देने वाले प्रभु की ही मैं सेवा करता हूं अर्थात उसका सुमिरन करता हूं जो सदैव दिए जाने वाला दाता है।। १ ।। मेरा मालिक नित्य नवीन बना रहने वाला और सदा दिए चले जाने वाला दाता है।। १ ।। रहाउ।। प्रत्येक दिन उस प्रभु का ही सुमिरन किया जाए क्योंकि अन्त में वही मुक्त करवाता है। हे मेरी सखी, तू प्रभु का नाम सुन, उसे सुन सुनकर तेरा पार उतारा हो जाएगा।। २ ।। हे दयालु प्रभु, तेरे नाम के कारण ही मैं पार उतर जाता हूं। तुझ पर मैं सैंकड़ों बार कुर्बान जाता हूं।।१।। रहाउ।। सबमें वह एक सच्चा प्रभु ही बसा हुआ है दूसरा कोई नहीं। उसकी सेवा तो वही करता है जिस पर प्रभु की कृपादृष्टि होती है।। ३ ।। हे प्यारे प्रभु, तेरे बिना कैसे रहा जा सकता है। मुझे कुछ ऐसा गुण प्रदान कर जिससे मैं तेरे नाम में लीन बना रहूं। मेरे पास दूसरा कोई नहीं है जिस प्यारे के आगे मैं अपने हृदय की बात कह सकूं।। १ ।। रहाउ।। मैं तो केवल अपने मालिक का सुमिरन करता हूं और अन्य किसी से भी नहीं मांगता। नानक तो उस प्रभु का ही दास है और उसी के लिए ही छोटे छोटे टुकड़े होने के लिए तैयार रहता है।। ४ ।। हे मालिक, तेरे नाम-दान के लिए तो मैं छोटे-छोटे टुकड़े होने के लिए तैयार हूँ ।।१।। रहाउ।।४।।१।। धनासरी महला १ ।। हम तो केवल एक सांस वाले व्यक्ति हैं अर्थात दम भर के लिए जीने वाले हैं; हमें कुछ भी पता नहीं हैं कि हमारे जीवन की सीमा कितनी है और किस घड़ी हमें मर जाना है। नानक विनती करता है कि केवल उसी प्रभु का सुमिरन करो जिसका यह जीव भी है और प्राण भी हैं।। १ ।। हे अन्धे मूर्ख व्यक्ति, तू सोचकर देख कि हम लोगों ने और कितने दिन जीना है।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, मेरा श्वास, मेरा ग्रास, मेरा जीव यह सब तुम्हारा ही है और तू ही मुझे सबसे अधिक प्यारा लगता है। हे सच्चे परवरदिगार, कवि नानक यही कहता है कि तू ही मेरा प्यारा है।। २ ।। हे मेरे मालिक, यदि तू किसी को कोई पदार्थ ना दे तो क्या कोई अपना धन अर्पण करके तुझसे ले सकता है अर्थात ऐसा सम्भव नहीं है। नानक की विनती है कि जो कुछ भी पाया जाता है वह पूर्व के लिखे हुए के अनुसार ही लिया जाता है।। ३ ।। यह कपटी पाखण्ड पूर्ण आचरण ही करता रहा और इसने कभी भी मालिक के नाम को चित्त में याद नहीं किया। यम के द्वार की ओर जब इसे पकड़कर धकेला गया तो

चलदा पछुताणा ॥ ४ ॥ जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ भालि रहे हम रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीऐ ॥ ५ ॥ २ ॥

धनासरी महला १ घरु दूजा ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ ॥ तपै हिआउ जीअड़ा बिललाइ ॥ सिरजि सवारे साचा सोइ ॥ तिसु विसरिऐ चंगा किउ होइ ॥ १ ॥ हिकमति हुकमि न पाइआ जाइ ॥ किउ करि साचि मिलउ मेरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वखरु नामु देखण कोई जाइ ॥ ना को चाखै ना को खाइ ॥ लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ ता पति रहै राखै जा सोइ ॥ २ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ जे को करे कीतै किआ होइ ॥ जिस नो बखसे साचा सोइ ॥ ३ ॥ हुणि उठि चलणा मुहति कि तालि ॥ किआ मुहु देसा गुण नही नालि ॥ जैसी नदरि करे तैसा होइ ॥ विणु नदरी नानक नही कोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

धनासरी महला १ ॥ नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥ आतमा द्रवै रहै लिव लाइ ॥ आतमा परातमा एको करै ॥ अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥ १ ॥ गुर परसादी पाइआ जाइ ॥ हरि सिउ चितु लागै फिरि कालु न खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि सिमरिऐ होवै परगासु ॥ ता ते बिखिआ महि रहै उदासु ॥ सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥ पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥ २ ॥ ऐसी सेवकु सेवा करै ॥ जिस का जीउ तिसु आगै धरै ॥ साहिब भावै सो परवाणु ॥ सो सेवकु दरगह पावै माणु ॥ ३ ॥ सतिगुर की मूरति हिरदै वसाए ॥ जो इछै सोई फलु पाए ॥ साचा साहिबु किरपा करै ॥ सो सेवकु जम ते कैसा डरै ॥ ४ ॥ भनति नानकु करे वीचारु ॥ साची बाणी सिउ धरे पिआरु ॥ ता को पावै मोख दुआरु ॥ जपु तपु सभु इहु सबदु है सारु ॥ ५ ॥ २ ॥ ४ ॥

धनासरी महला १ ॥ जीउ तपतु है बारो बार ॥ तपि तपि खपै बहुतु बेकार ॥ जै तनि बाणी विसरि जाइ ॥ जिउ पका रोगी विललाइ ॥ १ ॥ बहुता बोलणु झखणु होइ ॥ विणु बोले जाणै सभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कन कीते अखी नाकु ॥ जिनि जिहवा

यह पछताता हुआ चलने लगा।। ४ ।। जब तक इस संसार में रहा जाए तो हे नानक, कुछ सुना भी जाए और कुछ कहा भी जाना चाहिए। हमने काफी खोज की है परन्तु इस दुनियां में बने रहने की कोई भी युक्ति हमें नज़र नहीं आ सकी। इसलिए यही ठीक है कि जीवित रहते हुए भी विकारों की ओर से मर कर रहना चाहिए।। ५ ।। २ ।।

धनासरी महला १ घरु दूसरा   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

कैसे उसका सुमिरन करूं, उसका सुमिरन हो नहीं पाता। मेरा हृदय जल रहा है और मन विलाप कर रहा है। सृष्टि उत्पन्न करके वह सच्चा प्रभु इसे संवारता भी है। उसको भुला देने से भला अच्छा कैसे होगा।। १ ।। किसी चालाकी या हुकुम चलाकर बलपूर्वक उसे नहीं पाया जा सकता। हे मेरी मां, मैं भला उस सत्य प्रभु से किस प्रकार मिल सकता हूं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु नाम रूपी सौदा खोजने के लिए कोई बिरला ही जाता है। इसको न कोई चखता है और न कोई खाता है अर्थात कोई भी प्रभु-नाम का जाप नहीं करता तथा केवल दिखावा ही करता रहता है। लोगों को प्रसन्न करने पर भी वास्तविक सम्मान बचा नहीं रहता; यदि वह प्रभु ही सम्मान की रक्षा करे तभी ऐसा सम्भव हो सकता है।। २ ।। मैं जिधर देखता हूं उसी ओर वह व्याप्त दिखाई देता है। हे प्रभु, तेरे बिना अन्य कोई भी आसरा नहीं है। यदि कोई कुछ करता भी है तो उसके करने से भला क्या होता है। जिस पर वह प्रभु कृपा करता है वास्तव में वही सच्चा व्यक्ति होता है।। ३ ।। हमें तो तुरन्त ही एक घड़ी या हाथ की ताली बजने के समय में ही इस संसार से उठ चलना होगा। वहां जाकर हम क्या मुंह दिखाएंगे क्योंकि हमारे पास तो कोई भी गुण नहीं है। प्रभु जैसे दृष्टि डालता है उसी के अनुसार व्यक्ति अच्छा या बुरा बन जाता है। प्रभु की दृष्टि से बचा हुआ हे नानक, इस संसार में कोई भी नहीं है।। ४ ।। १ ।। ३ ।। धनासरी महला १ ।। यदि प्रभु कृपादृष्टि करे तो उसका सुमिरन होता है, आत्मा द्रवित हो जाती है और व्यक्ति उसी में लौ लगाए रहता है। जब व्यक्ति आत्मा और परमात्मा को एक ही मान लेता है तो अन्तर्मन की दुविधा अन्दर ही समाप्त हो जाती है।। १ ।। गुरु की कृपा से उसकी प्राप्ति होती है; प्रभु के साथ चित्त लीन बना रहता है और फिर काल भी जीव को नहीं खाता।। १ ।। रहाउ।। सत्य रूप प्रभु का सुमिरन करने से ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और उसी के फलस्वरूप संसार के विष पूर्ण व्यवहार के अन्तर्गत रहता हुआ भी यह जीव उससे अलिप्त बना रहता है। सच्चे गुरु की कृपा तो ऐसी महान है कि पुत्रों और पुत्री के साथ पारिवारिक जीवन में रहता हुआ व्यक्ति भी मुक्ति प्राप्त कर लेता है।। २ ।। प्रभु का सेवक तो इस प्रकार की सेवा करता है कि जिस प्रभु ने यह जीव और प्राण दिया है वह इन्हें उसी के सामने अर्पण कर देता है। जो प्रभु को भाता है वही सेवक स्वीकृत होता है और वही सेवक प्रभु के सामने सम्मान प्राप्त करता है।। ३ ।। सच्चे गुरु के आचरण के रूप को यदि व्यक्ति अपने हृदय में बसा ले तो वह जिस फल की इच्छा करता है उसे वही फल प्राप्त हो जाता है। जिस पर वह सच्चा साहिब कृपा कर देता है ऐसा सेवक भला यम से क्यों डरेगा।। ४ ।। नानक यह कहता हुआ इस बात पर विचार करता है कि जीव को चाहिए कि उस प्रभु की सच्ची वाणी के साथ ही प्यार करे तभी वह मोक्ष का द्वार पा सकता है। नाम सुमिरन ही वास्तव में जप, तप और शब्द का सार तत्व है।। ५ ।। २ ।। ४ ।। धनासरी महला १ ।। मेरा जीव बार बार संतप्त बना हुआ है और बार बार संताप युक्त बना रहकर यह व्यर्थ के कर्मों में ही बहुत अधिक मरता खपता रहता है। जिस शरीर में से प्रभु की वाणी भूल जाए वह पक्के रोगी के समान विलाप करता रहता है।। १ ।। बहुत अधिक बोलना तो व्यर्थ बकवास करना है क्योंकि वह प्रभु बिना बोले ही सब कुछ जान जाता है।। १ ।। जिसने हमें कान, आंख और नाक दिए हैं; जिसने हमें तुरन्त बोलने वाली जीभ

दिती बोले तातु ॥ जिनि मनु राखिआ अगनी पाइ ॥ वाजै पवणु आखै सभ जाइ ॥ २ ॥ जेता मोहु परीति सुआद ॥ सभा कालख दागा दाग ॥ दाग दोस मुहि चलिआ लाइ ॥ दरगह बैसण नाही जाइ ॥ ३ ॥ करमि मिलै आखणु तेरा नाउ ॥ जितु लगि तरणा होरु नही थाउ ॥ जे को डूबै फिरि होवै सार ॥ नानक साचा सरब दातार ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ धनासरी महला १ ॥ चोरु सलाहे चीतु न भीजै ॥ जे बदी करे ता तसू न छीजै ॥ चोर की हामा भरे न कोइ ॥ चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥ १ ॥ सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर ॥ बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चोरु सुआलिउ चोरु सिआणा ॥ खोटे का मुलु एकु दुगाणा ॥ जे साथि रखीऐ दीजै रलाइ ॥ जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ॥ २ ॥ जैसा करे सु तैसा पावै ॥ आपि बीजि आपे ही खावै ॥ जे वडिआईआ आपे खाइ ॥ जेही सुरति तेहै राहि जाइ ॥ ३ ॥ जे सउ कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु ॥ भावै सभु आखउ संसारु ॥ तुधु भावै अधी परवाणु ॥ नानक जाणै जाणु सुजाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥ धनासरी महला १ ॥ काइआ कागदु मनु परवाणा ॥ सिर के लेख न पड़ै इआणा ॥ दरगह घड़ीअहि तीने लेख ॥ खोटा कामि न आवै वेखु ॥ १ ॥ नानक जे विचि रुपा होइ ॥ खरा खरा आखै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥ ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥ जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥ तीने ओजाड़े का बंधु ॥ २ ॥ सो जोगी जो जुगति पछाणै ॥ गुर परसादी एको जाणै ॥ काजी सो जो उलटी करै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ॥ सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥ आपि तरै सगले कुल तारै ॥ ३ ॥ दानसबंदु सोई दिलि धोवै ॥ मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥ पड़िआ बूझै सो परवाणु ॥ जिसु सिरि दरगह का नीसाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

धनासरी महला १ घरु ३ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु ॥ थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु ॥ १ ॥ कल महि राम नामु सारु ॥ अखी त मीटहि नाक पकड़हि ठगण कउ संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आंट सेती नाकु

दी है; जिस प्रभु ने मन (हम) को माता के गर्भ की गर्मी में भी बचाए रखा; उसी प्रभु की कृपा से कानों में हवा बजकर आवाज पैदा करती है और सभी बातों को हमें बताती है; ऐसे प्रभु का सदैव सुमिरन किया जाना चाहिए।। २ ।। मोह, प्रीति और स्वाद जितने भी हैं ये सभी कालिमाएं हैं जो व्यक्ति की आत्मा को धब्बों के दागों से भर देती हैं। जीव यहां से ये दाग मुंह पर लगाकर चला जाता है और उसे प्रभु के दरबार में बैठने का स्थान प्राप्त नहीं होता।। ३ ।। तेरी कृपा से तेरे नाम के सुमिरन का अवसर मिलता है। तेरे नाम के साथ लगकर ही पार होना होता है तथा अन्य कोई भी आसरा व्यक्ति के लिए नहीं होता। यदि कोई डूबा हुआ भी हो तो प्रभु नाम के सुमिरन के बल पर उसको भी संभाल लिया जाता है। हे नानक, वह दाता प्रभु सबको देने वाला सच्चा प्रभु है।। ४ ।। ३ ।। ५ ।। धनासरी महला १ ।। यदि कोई चोर व्यक्ति किसी की प्रशंसा भी करे तो उससे चित्त प्रसन्न नहीं होता और यदि वह चोर निन्दा करे तब भी मन थोड़ा सा भी छोटा नहीं होता अर्थात अप्रभावित बना रहता है। चोर व्यक्ति की हिमायत करने वाला कोई नहीं होता और जो काम चोर करता है वह भला कैसे अच्छा हो सकता है।। १ ।। हे अन्धे, कुत्ते और झूठे मन, तू इस बात को सुन ले कि उस सच्चे प्रभु को बिना बोले ही जाना जाता है।। १ ।। रहाउ।। चोर बेशक सुन्दर बन जाए और चतुर भी दिखाई दे परन्तु उस खोटे व्यक्ति का मूल्य दो कौड़ी के समान है। खोटे सिक्के को यदि दूसरे सिक्कों के साथ मिला भी दिया जाए तब भी जब परख होती है तब खोटे को बाहर कर दिया जाता है।। २ ।। व्यक्ति जैसा करता है वैसा ही उसका फल पाता है और जो स्वयं बोता है उसे वह स्वयं ही खाता है। यदि कोई अपनी बड़ाई आप ही करे तो वह बड़ा नहीं बन जाता। जैसी उसकी मति होती है वह व्यक्ति उसी राह पर ही चलता रहता है।। ३ ।। बेशक खोटा व्यक्ति सौ झूठी बातें करे और निकम्मी वस्तुओं को अच्छा बताए तथा चाहे सारा संसार उसको अच्छा भी कहता जाए तब भी वह होता तो खोटा ही है। हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लग जाए तो बुद्धिहीन मूर्ख व्यक्ति भी स्वीकार हो जाता है। हे नानक, वह सयाना सुजान प्रभु सब कुछ जानता है।। ४ ।। ४ ।। ६ ।। धनासरी महला १ ।। यह शरीर कागज़ है और हमारा अनजान मन वास्तविक आचरण का विचार नहीं करता और दिखावे के भ्रम में पड़ा रहता है। माया के तीन गुणों के प्रभाव में रहकर किए हुए कर्मों के संस्कार प्रभु के हुकुम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के मन पर अंकित बने रहते हैं परन्तु हे भाई, देख ले जिस तरह खोटा सिक्का काम नहीं आता वैसे ही खोटे संस्कारों के लेख भी काम नहीं आते।। १ ।। हे नानक, यदि सिक्के में चाँदी हो तो हर कोई उसको खरा सिक्का कहता है अर्थात शुद्ध व्यक्ति को सभी पवित्र कहते हैं।। १ ।। रहाउ।। काज़ी झूठ बोलता है और हराम का माल अर्थात रिश्वत भी खाता है। ब्राह्मण व्यक्ति भी अनेकों जीवों को मारकर अर्थात दुखी करके तीर्थ स्नान भी करता रहता है, योगी भी अन्धा है और जीवन की वास्तविक विधि को नहीं जानता। ये तीनों ही बेशक धार्मिक अगुवाई करने वाले हैं परन्तु इन तीनों के ही आध्यात्मिक जीवन उजड़े हुए सुनसान स्थान की तरह हैं।। २ ।। योगी वह है जो प्रभु से मिलने की युक्ति पहचानता है और गुरु की कृपा से केवल एक प्रभु को ही जानता है। काज़ी वह है जो अपनी सुरति को हराम के माल की तरफ से उल्टा कर वापस लाता है और गुरु की कृपा से जीवित रहते हुए ही वासनाओं के प्रति मरा हुआ रहता है। ब्राह्मण वह है जो ब्रह्म का चिंतन करता है; स्वयं तो पार उतर ही जाता है वह अपने कुलों का भी उद्धार कर देता है।। ३ ।। वही व्यक्ति दानिश्वर है अर्थात अक्लमंद है जो अपने दिल की बुराई की मैल को धो देता है। मुसलमान भी वही है जो मन की गन्दगी को बाहर फेंक देता है, विद्वान भी वही है जो जीवन के मार्ग को बूझ लेता है और वास्तव में वही स्वीकार भी होता है। उसी के माथे पर प्रभु के दरबार का चिन्ह लगा रहता है।। ४ ।। ५ ।। ७।।

धनासरी महला १ घरु ३   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

न तो समय अच्छा है न ही प्रभु से मिलाप है और न ही व्यक्ति सत्य जीवन की विधि को जानता है। संसार के इष्ट-स्थान भ्रष्ट और अपवित्र हो गए हैं और इस प्रकार संसार डूब रहा है।। १ ।। इस कलियुग में तो प्रभु का नाम ही सार तत्व है। पाखण्डी लोग तो आंखें बन्द करके संसार को ठगने के लिए नाक पकड़े बैठे हैं।। १ ।। रहाउ।। अंगूठे और अंगुलियों की सहायता से नाक

पकड़हि सूझते तिनि लोअ ॥ मगर पाछै कछु न सूझै एहु पदमु अलोअ ॥ २ ॥ खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥ स्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥ ३ ॥ असट साज साजि पुराण सोधहि करहि बेद अभिआसु ॥ बिनु नाम हरि के मुकति नाही कहै नानकु दासु ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ ८ ॥

धनासरी महला १ आरती १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ९ ॥

धनासरी महला ३ घरु २ चउपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

इहु धनु अखुटु न निखुटै न जाइ ॥ पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ अपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ गुर किरपा ते हरि मंनि वसाई ॥ १ ॥ से धनवंत हरि नामि लिव लाइ ॥ गुरि पूरै हरि धनु परगासिआ हरि किरपा ते वसै मनि आइ ॥ रहाउ ॥ अवगुण काटि गुण रिदै समाइ ॥ पूरे गुर कै सहजि सुभाइ ॥ पूरे गुर की साची बाणी ॥ सुख मन अंतरि सहजि समाणी ॥ २ ॥ एकु अचरजु जन देखहु भाई ॥ दुबिधा मारि हरि मंनि वसाई ॥ नामु अमोलकु न पाइआ जाइ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ सभ महि वसै प्रभु एको सोइ ॥ गुरमती घटि परगटु होइ ॥ सहजे जिनि प्रभु जाणि

पकड़ कर (प्राणायाम करने वाले) तुम्हें तीनों लोक तो दिखाई देते हैं परन्तु तुम्हारे पीछे क्या रखा हुआ है वह तुम्हें पता भी नहीं चलता; यह तुम्हारा कैसा पद्मासन है।। २ ।। क्षत्रियों ने तो गुलाम होकर अपने कर्त्तव्य कर्म को छोड़ दिया है और जिन्हें वे अब मलेच्छ कहते हैं, अपनी बोली छोड़कर उनकी भाषा ग्रहण कर ली है। सारी दुनियां ही एक तरह की हो गई है और कर्त्तव्य कर्म सबने छोड़ दिया है अर्थात् किसी को भी अपने और देश के प्रति कर्त्तव्य की भावना मन में नही रह गई है।। ३ ।। व्यक्ति दिखावे के लिए अष्टाध्यायी, पुराण आदि का चिंतन तो करते दिखाई देते हैं और वेदों का अभ्यास भी करते हैं (वे इसी को ही श्रेष्ठ धर्म, कर्म माने बैठे हैं) परन्तु दास नानक का कथन है कि परमात्मा के नाम सुमिरन के बिना विकारों से मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती।। ४ ।। १ ।। ६ ।। ८।।

धनासरी महला १ आरती   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

सारा आकाश एक थाल है, जिसमें सूर्य और चन्द्र दीपक बने हुए हैं तथा तारागण उसमें मोती समझे जा सकते हैं। मलयगिरि पर्वत की सुगन्धित वायु उसकी धूप बत्ती है, पवन उसे चंवर डुलाता है और सारी वनस्पति हे प्रभु, तेरी पूजा के लिए फूल है।। १ ।। हे संसार के जन्म मरण के बन्धनों को काटने वाले प्रभु, तेरी यह कैसी आरती है जिसमें अनहद् शब्द के रूप में नगाड़े इत्यादि बज रहे हैं।। १ ।। रहाउ।। तेरी हजारों ही आंखें हैं परन्तु फिर भी तेरी कोई आंख नहीं; संसार के जीवों के रूप में हजारों ही तेरी मूर्तियां हैं परन्तु फिर भी तेरा शारीरिक रूप कोई भी नहीं है। तेरे इस प्रकार के कौतुक देखकर मैं जीव-स्त्री तुझ पर मोहित हो गई हूं।। २ ।। सबमें उस हरि की ज्योति ही जीवन ज्योति के रूप में विद्यमान है और उस प्रभु के प्रकाश से ही सबमें प्रकाश बना रहता है। गुरु की शिक्षा के फलस्वरूप यह ज्योति प्रकट होती है और यदि उस प्रभु को अच्छा लगे तभी उसकी आरती संभव होती है।। ३ ।। प्रभु के चरण कमलों के अमृत रस के साथ मेरा मन ललचा कर उसमें लीन बना हुआ है और मुझे हमेशा उन्हीं चरणों की प्यास बनी रहती है। हे प्रभु, नानक रूपी चातक को तू अपनी कृपा का जल प्रदान कर जिससे मेरा निवास तेरे नाम के अन्तर्गत ही बना रहे (उपर्युक्त पद में कर्मकाण्डियों द्वारा की जाने वाली प्रभु की सीमित आरती की अपेक्षा धरती, आकाश, वनसपित की ओर से सदैव चलती रहने वाली प्रभु की आरती पर ध्यान देने की बात कही गई है) ।। ४ ।। १ ।। ७ ।। ६ ।।

धनासरी महला ३ घरु २ चौपदे   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु-नाम रूपी धन अक्षय रूप में बना रहने वाला है और न तो यह चोरी होता है और न ही इसमें कमी आती है। सच्चे गुरु ने ही मुझे यह धन दिखा दिया है। मैं अपने सच्चे गुरु पर सैंकड़ों बार बलिहारी जाता हूं क्योंकि गुरु की कृपा से ही प्रभु मन में बसता है।। १ ।। वे ही धनवान हैं जिनकी सुरति प्रभु-नाम में लगी हुई है। पूर्ण गुरु ने प्रभु रूपी धन मुझे दिखा दिया है और प्रभु कृपा से वह मेरे मन में आ बसा है।। रहाउ।। पूर्ण गुरु के शान्त स्वभाव को प्राप्त करके अवगुण कट गए हैं और गुण हृदय में आ बसे हैं। पूर्ण गुरु की वाणी सच्ची है और मेरे एकाग्र मन में वह सहज भाव से ही समा गई है।। २ ।। हे भाई, देखो एक बात बड़ी आश्चर्य वाली है कि दुविधा को जब मार दिया गया तो प्रभु मन में आ बसा। प्रभु का नाम अमूल्य है जिसे पाया नहीं जा सकता अपितु यह गुरु की कृपा से ही मन में आ बसता है।। ३ ।। सबमें वह एक ही प्रभु बसता है और गुरु के उपदेश के माध्यम से मन में ही प्रकट हो उठता है। सहजभाव से ही जिसने प्रभु को जानकर

पछाणिआ ॥ नानक नामु मिलै मनु मानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला ३ ॥
हरि नामु धनु निरमलु अति अपारा ॥ गुर कै सबदि भरे भंडारा ॥ नाम धन
बिनु होर सभ बिखु जाणु ॥ माइआ मोहि जलै अभिमानु ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि
रसु चाखै कोइ ॥ तिसु सदा अनंदु होवै दिनु राती पूरै भागि परापति होइ ॥
रहाउ ॥ सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ॥ जो चाखै सो निरमलु होइ ॥ निरमल
नामि हउमै मलु धोइ ॥ साची भगति सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ जिनि हरि रसु
चाखिआ सो हरि जनु लोगु ॥ तिसु सदा हरखु नाही कदे सोगु ॥ आपि मुकतु
अवरा मुकतु करावै ॥ हरि नामु जपै हरि ते सुखु पावै ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर सभ
मुई बिललाइ ॥ अनदिनु दाझहि साति न पाइ ॥ सतिगुरु मिलै सभु त्रिसन
बुझाए ॥ नानक नामि सांति सुखु पाए ॥ ४ ॥ २ ॥ धनासरी महला ३ ॥ सदा
धनु अंतरि नामु समाले ॥ जीअ जंत जिनहि प्रतिपाले ॥ मुकति पदारथु तिन कउ
पाए ॥ हरि कै नामि रते लिव लाए ॥ १ ॥ गुर सेवा ते हरि नामु धनु पावै ॥
अंतरि परगासु हरि नामु धिआवै ॥ रहाउ ॥ इहु हरि रंगु गूड़ा धन पिर होइ ॥
सांति सीगारु रावे प्रभु सोइ ॥ हउमै विचि प्रभु कोइ न पाए ॥ मूलहु भुला
जनमु गवाए ॥ २ ॥ गुर ते साति सहज सुखु बाणी ॥ सेवा साची नामि
समाणी ॥ सबदि मिलै प्रीतमु सदा धिआए ॥ साच नामि वडिआई पाए ॥ ३ ॥
आपे करता जुगि जुगि सोइ ॥ नदरि करे मेलावा होइ ॥ गुरबाणी ते हरि
मंनि वसाए ॥ नानक साचि रते प्रभि आपि मिलाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ धनासरी
महला ३ तीजा ॥ जगु मैला मैलो होइ जाइ ॥ आवै जाइ दूजै लोभाइ ॥ दूजै
भाइ सभ परज विगोई ॥ मनमुखि चोटा खाइ अपुनी पति खोई ॥ १ ॥ गुर सेवा
ते जनु निरमलु होइ ॥ अंतरि नामु वसै पति ऊतम होइ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि
उबरे हरि सरणाई ॥ राम नामि राते भगति द्रिड़ाई ॥ भगति करे जनु वडिआई
पाए ॥ साचि रते सुख सहजि समाए ॥ २ ॥ साचे का गाहकु विरला को जाणु ॥
गुर कै सबदि आपु पछाणु ॥ साची रासि साचा वापारु ॥ सो धंनु पुरख जिसु
नामि पिआरु ॥ ३ ॥ तिनि प्रभि साचै इकि सचि लाए ॥ ऊतम बाणी सबदु

पहचान लिया है, हे नानक, उसे ही प्रभु का नाम प्राप्त होता है और उसी का मन सन्तुष्ट हो जाता है।। ४ ।। १ ।। धनासरी मः ३ ।। प्रभु का नाम-धन अत्यन्त निर्मल और अपार है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही व्यक्ति के भण्डार भरते हैं। इस नाम रूपी धन के बिना अन्य सबको विष के समान समझो। व्यक्ति का अभिमान सदैव उसके माया मोह में ही जलता रहता है।। १ ।। गुरमुख बनकर कोई बिरला ही प्रभु के नाम के रस को चखता है; परन्तु जो चख लेता है उसे दिन रात आनन्द ही आनन्द बना रहता है और ऐसी अवस्था पूर्ण भाग्यशाली होने पर ही प्राप्त होती है।। रहाउ।। शब्द रूपी दीपक का प्रकाश तीनों लोकों में फैला हुआ है। इस प्रकाश को जो भी चख लेता है अर्थात अन्तर्मन में धारण कर लेता है वही पवित्र हो जाता है। प्रभु का निर्मल नाम अहंकार की मैल को धो देता है और उस प्रभु की सच्ची भक्ति के फलस्वरूप सदैव सुख प्राप्त होता है।। २ ।। जिन्होंने प्रभु के नाम रस को चख लिया है वे ही हरि के जन (सेवक) कहलाने वाले लोग हैं। उनको सदैव आनन्द ही बना रहता है और कभी भी दुखी नहीं होना पड़ता। वे स्वयं मुक्त होते हैं और दूसरों को भी मुक्त करा देते हैं। वे प्रभु-नाम का जाप करते हैं और प्रभु से ही सुख प्राप्त करते हैं।। ३ ।। सच्चे गुरु के बिना सब विलाप करते हुए मरते रहते हैं। वे सदा जलते रहते हैं और कभी भी शान्ति प्राप्त नहीं करते। सच्चे गुरु से मिलकर ही उनकी सभी प्रकार की तृष्णाएं समाप्त हो जाती हैं। हे नानक, प्रभु-नाम के माध्यम से ही वे शान्ति और सुख को प्राप्त करते हैं।। ४ ।। २ ।। धनासरी महला ३ ।। व्यक्ति को चाहिए कि सदैव अन्तर्मन में प्रभु-नाम रूपी उस धन की संभाल करे जिसने सभी जीव जन्तुओं का पालन-पोषण किया हुआ है। मुक्ति रूपी पदार्थ उन्हीं को प्राप्त होता है जो प्रभु-नाम में रंगे रहकर उसमें ही अपनी सुरति लगाए रहते हैं।। १ ।। गुरु की सेवा से ही हरि नाम रूपी धन पाया जाता है और प्रभु के नाम सुमिरन से ही अन्तर्मन प्रकाशित होता है।। रहाउ।। प्रभु के नाम का रंग भी पति पत्नी के प्रेम जैसा गाढ़ा होता है। जो शान्त बनी रहकर प्रभु के नाम का शृंगार करती हैं वे ही प्रभु-पति के साथ रमण करती है। अहंकार में बने रहने पर कोई भी प्रभु को नहीं पा सका है अपितु ऐसा व्यक्ति तो बिल्कुल ही भटकता हुआ जीवन को व्यर्थ ही गंवा देता है।। २ ।। गुरु से ही शान्ति, सहज अवस्था का सुख और वाणी प्राप्त होते हैं तथा उसकी सच्ची सेवा ही नाम में लीन कर देती है। शब्द को प्राप्त करके व्यक्ति सदैव उस प्रिय प्रभु का सुमिरन करता है और सच्चे नाम के माध्यम से बड़प्पन प्राप्त करता है।। ३ ।। वह कर्ता प्रभु ही स्वयं सभी युगों में विद्यमान बना रहता है और उसकी कृपादृष्टि से ही उसके साथ मिलाप हो सकता है। गुरु की वाणी से ही प्रभु मन में निवास करता है और हे नानक सत्य में लीन होने पर ही प्रभु स्वयं अपने आप से मिला लेता है।।४।।३।। धनासरी महला ३।। यह संसार मैला है और इसमें लीन व्यक्ति निश्चित रूप से मैला हो जाता है। द्वैतभाव में मोहित बना हुआ व्यक्ति आवागमन में पड़ा रहता है। द्वैतभाव में ही सारी सृष्टि भटक रही है। मनमुख व्यक्ति चोटें खा खा कर अपने सम्मान को खोता रहता है।। १ ।। गुरु की सेवा करने से व्यक्ति निर्मल हो जाता है; उसके अन्तर्मन में प्रभु-नाम बस जाता है तथा उसका सम्मान सर्वश्रेष्ठ हो जाता है।। रहाउ।। गुरमुख बनकर प्रभु की शरण में आने से उद्धार हो जाता है और व्यक्ति राम नाम में लीन होकर ही भक्ति को मन में पक्का करता है। जो प्रभु के सेवक भक्ति करते हैं वे बड़प्पन प्राप्त करते हैं, वे ही सत्य में रंगे जाते हैं और सहज सुख में लीन हो जाते हैं।।२।। उस सच्चे प्रभु का ग्राहक अर्थात उसे चाहने वाला तो कोई बिरला ही जाना जाता है। हे जीव, शब्द-गुरु के माध्यम से तू खुद ही पहचान कर। जिसके पास सत्य की रास पूंजी है और उसका व्यापार भी सच्चा है वह व्यक्ति धन्य है जिसे प्रभु नाम के साथ प्रेम है।।३।। कईयों को तो उस सच्चे प्रभु ने सत्य में लगाया हुआ है। उन्हें ही अपनी उत्तम वाणी और शब्द

सुणाए ॥ प्रभ साचे की साची कार ॥ नानक नामि सवारंणहार ॥ ४ ॥ ४ ॥
धनासरी महला ३ ॥ जो हरि सेवहि तिन बलि जाउ ॥ तिन हिरदै साचु सचा मुखि
नाउ ॥ साचो साचु समालिहु दुखु जाइ ॥ साचै सबदि वसै मनि आइ ॥ १ ॥
गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥ सहजे हरि नामु मंनि वसाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कूड़ु कुसतु त्रिसना अगनि बुझाए ॥ अंतरि सांति सहजि सुखु पाए ॥ गुर कै
भाणै चलै ता आपु जाइ ॥ साचु महलु पाए हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ न सबदु
बूझै न जाणै बाणी ॥ मनमुखि अंधे दुखि विहाणी ॥ सतिगुरु भेटे ता सुखु
पाए ॥ हउमै विचहु ठाकि रहाए ॥ ३ ॥ किस नो कहीऐ दाता इकु सोइ ॥
किरपा करे सबदि मिलावा होइ ॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ नानक
साचे साचा भावा ॥ ४ ॥ ५ ॥ धनासरी महला ३ ॥ मनु मरै धातु मरि जाइ ॥
बिनु मन मूए कैसे हरि पाइ ॥ इहु मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै
बूझै जनु सोइ ॥ १ ॥ जिस नो बखसे हरि दे वडिआई ॥ गुर परसादि वसै मनि
आई ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इसु मन की सोझी
पावै ॥ मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥ २ ॥
मनु असाधु साधै जनु कोई ॥ अचरु चरै ता निरमलु होई ॥ गुरमुखि इहु मनु
लइआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजै विकार ॥ ३ ॥ जो धुरि रखिअनु मेलि
मिलाइ ॥ कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ आपणी कला आपे प्रभु जाणै ॥
नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ६ ॥ धनासरी महला ३ ॥ काचा धनु
संचहि मूरख गावार ॥ मनमुख भूले अंध गावार ॥ बिखिआ कै धनि सदा दुखु
होइ ॥ ना साथि जाइ न परापति होइ ॥ १ ॥ साचा धनु गुरमती पाए ॥ काचा
धनु फुनि आवै जाए ॥ रहाउ ॥ मनमुखि भूले सभि मरहि गवार ॥ भवजलि डूबे न
उरवारि न पारि ॥ सतिगुरु भेटे पूरै भागि ॥ साचि रते अहिनिसि बैरागि ॥ २ ॥
चहु जुग महि अंम्रितु साची बाणी ॥ पूरै भागि हरि नामि समाणी ॥ सिध
साधिक तरसहि सभि लोइ ॥ पूरै भागि परापति होइ ॥ ३ ॥ सभु किछु साचा
साचा है सोइ ॥ ऊतम ब्रहमु पछाणै कोइ ॥ सचु साचा सचु आपि द्रिड़ाए ॥

सुनाया है। सच्चे प्रभु का सच्चा ही कार्य व्यवहार है। हे नानक, प्रभु नाम ही सब कुछ संवारने वाला है।। ४ ।। ४ ।। धनासरी मः ३ ।। जो प्रभु का सुमिरन करते हैं मैं उन पर बलिहारी जाता हूं। उनके हृदय में सत्य है और उनके मुंह में भी सच्चा नाम ही है। उस सच्चे को ही हृदय में संभाल कर रखो जिससे दुख दूर हो जाएगा और उस सच्चे शब्द के माध्यम से प्रभु मन में आ बसेगा।। १ ।। गुरु वाणी सुनकर व्यक्ति की मैल छूट जाती है और स्वभाविक ही प्रभु नाम मन में बस जाता है।। १ ।। रहाउ।। झूठ, बुरी भावना, तृष्णा आदि की अग्नि बुझ जाती है; अन्तर्मन शान्त हो जाता है और सहज सुख प्राप्त हो जाता है। यदि गुरु की रज़ा में व्यक्ति चले तो उसका अभिमान छूट जाता है। वह प्रभु के गुण गाता हुआ प्रभु के सच्चे ठिकाने को पा जाता है।। २ ।। जो न तो शब्द को बूझता है और न ही प्रभु-वाणी को जानता है ऐसे मनमुख अन्धे व्यक्ति का जीवन दुख में ही व्यतीत होता है। यदि सच्चे गुरु से मिलाप हो तो सुख मिलता है क्योंकि गुरु मन में से अहंकार को आने से रोक देता है।। ३ ।। अब अन्य किसे कहा जाए क्योंकि दाता तो प्रभु एक ही है। वह कृपा करे तो शब्द के माध्यम से उससे मिलाप हो जाता है। यदि मैं प्रीतम से मिलकर उस सच्चे प्रभु के गुण गाता रहूं तो हे नानक, मैं उस सच्चे प्रभु को सच्चा बनकर ही अच्छा लग सकता हूं।। ४ ।। ५ ।। धनासरी महला ३ ।। यदि मन काबू में आ जाए तो उसकी भाग दौड़ की भूख, इच्छा भी मर जाती है। विकारों की ओर से मन को मारे बिना भला कैसे उस प्रभु को पाया जा सकता है। कोई बिरला ही इस मन को मारने की औषधि जानता है। मन वास्तव में शब्द के माध्यम से ही मरता है और मन मारने की औषधि को जानने वाला प्रभु का सेवक इस रहस्य को बूझता है।। १ ।। प्रभु जिसको गुण देकर स्वयं हृदय से लगा लेता है, गुरु की कृपा से वह प्रभु उसके मन में ही आ बसता है।। रहाउ।। जब व्यक्ति गुरमुख के आचरण को अपनाकर काम करता है तब उसे इस मन की समझ प्राप्त होती है। मन अहंकार की शराब पीकर मस्त हुए हाथी के समान है। गुरु ही इसे शब्द के अंकुश मारकर होश में लाने वाला है।। २ ।। इस असाध्य मन को कोई बिरला प्रभु का सेवक ही ठीक रास्ते पर लाता है। जब व्यक्ति न खाए जा सकने वाले विषय विकारों को खाकर नष्ट कर देता है तब यह मन निर्मल हो जाता है। गुरमुख व्यक्ति ने तो इस मन को ठीक कर लिया होता है; उसने मन में से अहंकार और विकारों को छोड़ दिया होता है।। ३ ।। जिन्हें प्रभु ने अपनी ओर से ही अपने साथ मिलाकर रखा है वे फिर कभी भी नहीं बिछुड़ते और शब्द में लीन बने रहते हैं। प्रभु अपनी शक्ति के बारे में स्वयं ही जानता है और हे नानक, व्यक्ति गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम को पहचानता है।। ४ ।। ६ ।। धनासरी मः ३ ।। मूर्ख और गंवार लोग नष्ट हो जाने वाले कच्चे बंधन को ही इकट्ठा करते रहते हैं। ऐसे मनमुख व्यक्ति भूले हुए हैं, अन्धे हैं और गंवार हैं। झूठे धन के कारण सदैव दुख ही प्राप्त होता है तथा यह न तो साथ जाता है और न ही इससे कुछ लाभ प्राप्त होता है।। १ ।। गुरु के उपदेश के माध्यम से ही कच्चा धन प्राप्त होता है तथा सच्चा धन तो बार बार आता जाता ही रहता है।। रहाउ।। भूले भटके हुए मनमुख व्यक्ति तो गंवार माने जाते हैं और वे सब मरते खपते रहते हैं। वे संसार सागर में ही डूब जाते हैं और न इस ओर रह पाते हैं और न ही पार उतर पाते हैं। पूर्ण भाग्य से ही सच्चे गुरु से मिलाप होता है; सत्य में लीन होकर ही व्यक्ति दिन रात वैराग्यवान बना रह सकता है।। २ ।। चारों युगों में केवल सच्ची वाणी ही अमृत के समान है। व्यक्ति पूर्ण भाग्य होने से ही प्रभु के नाम में लीन बना रहता है। सिद्ध और साधक सभी प्रकार के लोग उस प्रभु के लिए तरसते रहते हैं परन्तु पूर्ण भाग्य होने से ही वह प्राप्त होता है।। ३ ।। इस संसार में सब कुछ सत्य है और वह प्रभु भी सत्य है। उस सर्वोत्तम ब्रह्म को कोई बिरला ही पहचानता है। वह सत्य रूपी प्रभु सच्चा है और वह स्वयं ही सत्य को हृदय में पक्का करता है।

नानक आपे वेखै आपे सचि लाए ॥ ४ ॥ ७ ॥ धनासरी महला ३ ॥ नावै की कीमति मिति कही न जाइ ॥ से जन धंनु जिन इक नामि लिव लाइ ॥ गुरमति साची साचा वीचारु ॥ आपे बखसे दे वीचारु ॥ १ ॥ हरि नामु अचरजु प्रभु आपि सुणाए ॥ कली काल विचि गुरमुखि पाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम मूरख मूरख मन माहि ॥ हउमै विचि सभ कार कमाहि ॥ गुर परसादी हंउमै जाइ ॥ आपे बखसे लए मिलाइ ॥ २ ॥ बिखिआ का धनु बहुतु अभिमानु ॥ अहंकारि डूबै न पावै मानु ॥ आपु छोडि सदा सुखु होई ॥ गुरमति सालाही सचु सोई ॥ ३ ॥ आपे साजे करता सोइ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ जिसु सचि लाए सोई लागै ॥ नानक नामि सदा सुखु आगै ॥ ४ ॥ ८ ॥

रागु धनासिरी महला ३ घरु ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता ॥ होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता ॥ १ ॥ हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु ॥ करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै ॥ होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ॥ २ ॥ भनति नानक भरम पट खूल्हे गुर परसादी जानिआ ॥ साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥ ३ ॥ १ ॥ ९ ॥

धनासरी महला ४ घरु १ चउपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जो हरि सेवहि संत भगत तिन के सभि पाप निवारी ॥ हम ऊपरि किरपा करि सुआमी रखु संगति तुम जु पिआरी ॥ १ ॥ हरि गुण कहि न सकउ बनवारी ॥ हम पापी पाथर नीरि डुबत करि किरपा पाखण हम तारी ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के लागे बिखु मोरचा लगि संगति साध सवारी ॥ जिउ कंचनु बैसंतरि ताइओ मलु काटी कटित उतारी ॥ २ ॥ हरि हरि जपनु जपउ दिनु राती जपि हरि हरि हरि उरि धारी ॥ हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी ॥ ३ ॥

हे नानक, वह स्वयं ही देखता है और स्वयं ही व्यक्ति को सत्य के साथ जोड़ देता है।। ४ ।। ७ ।। धनासरी मः ३ ।। प्रभु-नाम की कीमत और सीमा के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। वे व्यक्ति धन्य हैं जिन्होंने एक प्रभु के नाम में ही लौ लगा ली है। गुरु की मति सच्ची है और उसका विचार भी सच्चा है। वह स्वयं ही कृपा करता है और अपना उपदेश देता है।। १ ।। प्रभु का नाम आश्चर्य है जिसे प्रभु स्वयं ही सुनाता है। इस कलियुग में तो गुरमुख बना व्यक्ति ही उसे प्राप्त करता है।। १ ।। रहाउ।। हम मूर्ख हैं और मूर्खता को हमने मन में धारण कर रखा है। अहंकार में लीन होकर हम सभी काम करते हैं। गुरु की कृपा से ही अहंकार नष्ट होता है। वह प्रभु स्वयं ही हमें क्षमा करता है और अपने आप से मिला लेता है।। २ ।। विषय विकारों का जो धन होता है वह बहुत अभिमान पैदा करता है। व्यक्ति अहंकार में ही डूब जाता है और सच्चा सम्मान हासिल नहीं कर पाता। अहंकार भाव छोड़ने से वह सदैव सुखी बना रहता है और व्यक्ति गुरु की मति के अनुरूप चलता हुआ उस प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है।। ३ ।। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सबकी सृजना करता है और उसके बिना दूसरा कोई भी नहीं। जिसे वह प्रभु सत्य की ओर लगाता है वही उसमें लगता है। हे नानक, ऐसे व्यक्ति को ही प्रभु नाम के माध्यम से आगे भी सदैव सुख मिलता है।। ४ ।। ८ ।।

रागु धनासरी महला ३ घरु ४   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, हम तो भिक्षा मांगने वाले तेरे भिखारी हैं। तू अपना स्वामी स्वयं है और सबका दाता है। तू दयालु होकर अपने इस भिखारी को नाम का दान दे ताकि मैं सदैव तेरे रंग में रंगा रहूं।। १ ।। हे सच्चे प्रभु, मैं तेरे नाम पर बलिहारी जाता रहूं। सभी जीवों के लिए करने कराने वाला तू एक ही है, अब तुम थोड़ी सी कृपा कर दो। तुम दयालु होकर मुझ पर ऐसी कृपा कर दो कि मुझे अपना दर्शन दे दो।। २ ।। नानक का कथन है कि गुरु की कृपा से जब मैंने तुझे जान लिया तो मेरे भ्रम के पर्दे खुल गए हैं। सच्चे गुरु के साथ मेरा मन शान्त हो गया है और मेरे अन्दर उस प्रभु के प्रति सच्ची लौ लग गई है।। ३ ।। १ ।। ९ ।।

धनासरी महला ४ घरु १ चौपदे   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जो संत और भक्तजन प्रभु का सुमिरन करते हैं उनके सभी पाप तू ही दूर करने वाला है। हम पर, हे स्वामी, कृपा करो और ऐसी संगत में रखो जो तुम्हें प्यारी लगती हो।। १ ।। उस बनवारी प्रभु के गुणों को मैं कह नहीं सकता। हम पापी वैसे ही डूब रहे हैं जैसे पत्थर पानी में डूबता है; हे प्रभु कृपा करो और हम पत्थरों को भी पार उतार लो।। रहाउ।। हमे कई जन्मों के विषय-विकारों का जंग लगा हुआ है परन्तु अब हम साधुसंगत में आकर सुधर गए हैं। जिस प्रकार सोने को आग में तपा कर खा जाने वाली मैल काट दी जाती है हे प्रभु, साधसंगत में हमने भी वैसे ही अपने को संवार लिया है।। २ ।। मैं प्रभु का ही जाप दिन-रात जपता रहता हूं और प्रभु का सुमिरन करते करते ही मैंने उसे हृदय में बसा लिया है। हरि का नाम ही संसार में उत्तम औषधि है और प्रभु का नाम जपते जपते ही मैंने अहंकार को मार लिया है।। ३ ।।

हरि हरि अगम अगाधि बोधि अपरंपर पुरख अपारी ॥ जन कउ क्रिपा करहु जगजीवन जन नानक पैज सवारी ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि के संत जना हरि जपिओ तिन का दूखु भरमु भउ भागी ॥ अपनी सेवा आपि कराई गुरमति अंतरि जागी ॥ १ ॥ हरि कै नामि रता बैरागी ॥ हरि हरि कथा सुणी मनि भाई गुरमति हरि लिव लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जना की जाति हरि सुआमी तुम्ह ठाकुर हम सांगी ॥ जैसी मति देवहु हरि सुआमी हम तैसे बुलग बुलागी ॥ २ ॥ किआ हम किरम नान्ह निक कीरे तुम्ह वड पुरख वडागी ॥ तुम्हरी गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ॥ ३ ॥ हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु हम हरि हरि सेवा लागी ॥ नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि कथा कथागी ॥ ४ ॥ २ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि का संतु सतगुरु सत पुरखा जो बोलै हरि हरि बानी ॥ जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी ॥ १ ॥ हरि के संत सुनहु जसु कानी ॥ हरि हरि कथा सुनहु इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसा संतु साधु जिन पाइआ ते वड पुरख वडानी ॥ तिन की धूरि मंगह प्रभ सुआमी हम हरि लोच लुचानी ॥ २ ॥ हरि हरि सफलिओ बिरखु प्रभ सुआमी जिन जपिओ से त्रिपतानी ॥ हरि हरि अंम्रितु पी त्रिपतासे सभ लाथी भूख भुखानी ॥ ३ ॥ जिन के वडे भाग वड ऊचे तिन हरि जपिओ जपानी ॥ तिन हरि संगति मेलि प्रभ सुआमी जन नानक दास दसानी ॥ ४ ॥ ३ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली ॥ सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली ॥ १ ॥ गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥ जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली ॥ सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधहु मत जाणहु आजु कि काल्ही ॥ २ ॥ हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥ जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल केलाली ॥ ३ ॥ हरि हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि बनवाली ॥ जन

वह प्रभु अगम्य, अगाध, अबोध्य, अपरंपर और सर्वव्यापक है। हे संसार के जीवन दाता, इस सेवक पर भी कृपा करो और सेवक नानक की इज्ज़त बचा लो।। ४ ।। १ ।। धनासरी मः ४ ।। प्रभु के शान्त सेवकों ने प्रभु का सुमिरन किया और उनका दुख तथा भ्रम भाग खड़ा हुआ है। प्रभु ने अपनी सेवा उनसे स्वयं ही करायी है और उनके मन में गुरु का उपदेश प्रकट होकर असर करने लग गया है।। १ ।। जो प्रभु नाम में रंग गए हैं वे ही वास्तव में वैराग्यवान अर्थात् माया मोह से अलिप्त हैं और उन्होंने ही प्रभु की कथा सुनी है। वह ही उनके मन को भा गई है और गुरु की मति में चलने से उनकी प्रभु में लौ लग गई है।। १ ।। रहाउ।। संतजनों की जाति, गोत्र तो प्रभु ही है। हे मालिक, तुम हमारे हो और हम तो केवल तुम्हारी नकल करने वाले ही है। हे प्रभु, तुम जैसी बुद्धि प्रदान करोगे, हम तो वैसे ही बोल बोलते रहेंगे।। २ ।। तुम्हारे सामने हम छोटे से कीड़े की भांति हैं परन्तु तुम बहुत बड़े सर्वव्यापक प्रभु हो। हे प्रभु, तुम्हारी अवस्था और सीमा के बारे में हम कुछ कह ही नहीं सकते; फिर हम अभागे तुझसे भला कैसे मिल सकते हैं।। ३ ।। हे स्वामी प्रभु, तुम कृपा करो जिससे हम प्रभु की सेवा में ही लगे रहें। हे प्रभु, मुझ नानक को अपने दासों का भी दास बना लो ताकि हम उस प्रभु की ही कथा वार्ता करते रहें।। ४ ।। २ ।। धनासरी मः ४ ।। प्रभु का संत, सच्चा गुरु और सत्य पुरुष वही है जो प्रभु की वाणी का ही उच्चारण करता रहता है। प्रभु की वाणी जो भी कहता और सुनता है वह मुक्त हो जाता है; ऐसे व्यक्ति पर मैं सदैव कुर्बान जाता हूं।। १ ।। हे प्रभु के संतजनों, अपने कानों से उस प्रभु की प्रशंसा को सुनो। उस एक प्रभु की कथा निमिष मात्र के लिए भी सुन लो क्योंकि इससे सभी पाप उतर जाएंगे।। १ ।। रहाउ।। इस प्रकार का संत साधु जिन्हें भी मिल गया है वे बड़े महापुरुष हैं। ऐसे लोगों की चरण-धूलि मैं प्रभु स्वामी से मांगता हूं क्योंकि हमें प्रभु की प्रीति की इच्छा बनी हुई है।। २ ।। वह प्रभु एक ऐसा वृक्ष है जो सबको फल देता है; जिसने भी उसका सुमिरन किया वह तृप्त हो गया है। प्रभु-नाम रूपी अमृत पीकर सभी तृप्त हो गए हैं और सबकी भूख शान्त हो गई है।। ३ ।। जिनके ऊँचे और बड़े भाग्य हैं उन्होंने ही प्रभु-नाम का जाप किया है। हे प्रभु, ऐसे व्यक्तियों की संगत का मेल कर दे। यह दास नानक तो तेरे दासों का भी दास है।। ४ ।। ३ ।। धनासरी महला ४ ।। हम अंधे और अज्ञानी सदैव विष समान स्वादों में ही मस्त बने रहते हैं; हम किस तरह गुरु की बताई हुई मर्यादा का निर्वाह करें। सच्चा और सुख देने वाला गुरु यदि दया करे तो हमें अपने पल्लू से लगा ले अर्थात हमें अपनी शिक्षा पर चलाए।। १ ।। हे मेरे मित्र गुरु के सिक्खो, गुरु की शिक्षा पर ही चलो; जो गुरु कहता है उसे भला समझ कर मानो क्योंकि प्रभु कथा तो सदैव निराली ही होती है।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु के संतजनों, तुम ध्यानपूर्वक इस बात को सुन लो कि जल्दी से जल्दी गुरु की सेवा ही करनी है। सच्चे गुरु की सेवा करके प्रभु के मार्ग का खर्चा अपने पल्ले से बांध लो; कुछ पता नहीं कि हमें आज या कल यहां से चल देना है।। २ ।। प्रभु के संतजनों, प्रभु का ही जाप जपो, प्रभु के शान्त पुरुष ही अन्ततः प्रभु के मार्ग पर सहायक होते हैं। जिसने प्रभु का सुमिरन किया वह स्वयं ही प्रभु रूप हो जाता है और अनेकों कौतुक करने वाला प्रभु उसे मिल जाता है।। ३ ।। प्रभु का जाप करते रहने से अब प्रभु के प्रेम की इच्छा बलवती हो गई है। अतः हे बनवारी प्रभु, तू हम पर कृपा कर।

नानक संगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग राली ॥ ४ ॥ ४ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि हरि बूंद भए हरि सुआमी हम चात्रिक बिलल बिललाती ॥ हरि हरि क्रिपा करहु प्रभ अपनी मुखि देवहु हरि निमखाती ॥ १ ॥ हरि बिनु रहि न सकउ इक राती ॥ जिउ बिनु अमलै अमली मरि जाई है तिउ हरि बिनु हम मरि जाती ॥ रहाउ ॥ तुम हरि सरवर अति अगाह हम लहि न सकहि अंतु माती ॥ तू परै परै अपरंपरु सुआमी मिति जानहु आपन गाती ॥ २ ॥ हरि के संत जना हरि जपिओ गुर रंगि चलूलै राती ॥ हरि हरि भगति बनी अति सोभा हरि जपिओ ऊतम पाती ॥ ३ ॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु आपि बनावै भाती ॥ नानकु जनु तुमरी सरणाई हरि राखहु लाज भगाती ॥ ४ ॥ ५ ॥ धनासरी महला ४ ॥ कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी ॥ हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि जपिओ तरै तराकी ॥ १ ॥ हरि जी लाज रखहु हरि जन की ॥ हरि हरि जपनु जपावहु अपना हम मागी भगति इकाकी ॥ रहाउ ॥ हरि के सेवक से हरि पिआरे जिन जपिओ हरि बचनाकी ॥ लेखा चित्र गुपति जो लिखिआ सभ छूटी जम की बाकी ॥ २ ॥ हरि के संत जपिओ मनि हरि हरि लगि संगति साध जना की ॥ दिनीअरु सूरु त्रिसना अगनि बुझानी सिव चरिओ चंदु चंदाकी ॥ ३ ॥ तुम वड पुरख वड अगम अगोचर तुम आपे आपि अपाकी ॥ जन नानक कउ प्रभ किरपा कीजै करि दासनि दास दसाकी ॥ ४ ॥ ६ ॥

धनासरी महला ४ घरु ५ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उर धारि बीचारि मुरारि रमो रमु मनमोहन नामु जपीने ॥ अद्रिसटु अगोचरु अपरंपर सुआमी गुरि पूरै प्रगट करि दीने ॥ १ ॥ राम पारस चंदन हम कासट लोसट ॥ हरि संगि हरी सतसंगु भए हरि कंचनु चंदनु कीने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नव छिअ खटु बोलहि मुख आगर मेरा हरि प्रभु इव न पतीने ॥ जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु इउ हरि प्रभु मेरा भीने ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥ धनासरी महला ॥ ४ ॥

दास नानक को साधसंगत से हे मेरे प्रभु मिला लो; हम तो साधुजनों के चरणों की धूलि है।। ४ ।। ४ ।। धनासरी मः ४ ।। वह प्रभु तो स्वाति बूंद बन गया है और हम चातक बनकर उसे बार-बार पुकारते हैं। हे प्रभु, तुम अपनी कृपा करो और मेरे मुंह में एक क्षण भर के लिए ही प्रभु-नाम की बूंद डाल दो।। १ ।। प्रभु के बिना थोड़े समय के लिए भी नहीं रहा जा सकता। जिस प्रकार नशेड़ी व्यक्ति नशे के बिना मर जाता है उसी तरह प्रभु के बिना हम भी मर जाते हैं।। रहाउ।। हे प्रभु, तुम बहुत ही गहरे और विशाल सरोवर हो। हम तेरे बारे में थोड़ा भी नहीं जान पाते। हे अपंरपर स्वामी, तुम परे से भी परे हो और अपनी अवस्था बड़प्पन आदि तुम स्वयं ही जानते हो।। २ ।। प्रभु के संतजन प्रभु का जाप करते हैं और गुरु के प्रेमरंग में पूरी तरह रंगे होते हैं। प्रभु की भक्ति से अत्यन्त शोभा बन गई है और प्रभु के सुमिरन से हमें उत्तम सम्मान प्राप्त हो गया है।। ३ ।। वह प्रभु स्वयं ही मालिक है स्वयं ही सेवक है और स्वयं ही सब विधियों एवं संयोगों को बनाने वाला है। हे प्रंभु, दास नानक तो तुम्हारी शरण में है, तुम अपने भक्तों की लाज बचा लो।। ४ ।। ५ ।। धनासरी महला ४ ।। हे भाई, तुम कलियुग में मुक्त होने की विधि बताओ; इसमें हमारा छुटकारा कैसे होगा। इसमें प्रभु के नाम का जाप ही नाव है, प्रभु नाम का ही बना हुआ बेड़ा है और प्रभु के सुमिरन से ही तैर कर पार हुआ जाता है।। १ ।। हे प्रभु, अपने सेवक की लाज बचा लो। हे प्रभु, अपना जाप जपा लो क्योंकि हमने तो एक प्रभु की भक्ति ही मांगी है।। रहाउ।। प्रभु के प्यारे सेवक वे ही हैं जिन्होंने अपने वचनों के माध्यम से प्रभु नाम का जप किया है। चित्रगुप्त ने कर्मों का जो हिसाब लिखा था वह यमराज का सारा हिसाब समाप्त हो गया।। २ ।। प्रभु के संत साधुजनों की संगत में लगकर मन में प्रभु नाम जपते हैं। तृष्णा का सूरज तो बुझ गया है और शान्त कल्याणकारी प्रकाश देने वाला चन्द्रमा प्रकट हो गया है।। ३ ।। हे प्रभु, तुम महान और सर्वव्यापक हो तुम ही अगम्य अगोचर हो तथा तुम ही सब कुछ हो। दास नानक पर हे प्रभु, कृपा करो और इसे अपने दासों का भी दास बना लो।। ४ ।। ६ ।।

धनासरी महला ४ घरु ५ दोपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हृदय में धारण करके विचारपूर्वक सर्वत्र रमण करने वाले और मन को मोहने वाले प्रभु के नाम का जाप करो। वह स्वामी प्रभु अदृष्ट, अगोचर और अपंरपर है, उसे पुर्ण गुरु ने प्रकट कर दिया है।। १ ।। प्रभु तो पारस है जो हम जैसे लोहे को सोना बना देता है; प्रभु ही चन्दन है और हम मात्र एक लकड़ी हैं। सत्संग में रहकर हम हरि ही हो गए हैं और प्रभु ने ही हमें सोना और चन्दन बना दिया है।। १ ।। रहाउ।। बेशक कोई नौ प्रकार के व्याकरण और छः शास्त्रों को मुंह जुबानी बोलता रहे, मेरा प्रभु इस प्रकार संतुष्ट नहीं होता। दास नानक का कथन है कि यदि प्रभु को सदैव हृदय में धारण किया जाए तो इस प्रकार वह मेरा प्रभु प्रसन्न होता है।। २ ।। १ ।। ७ ।। धनासरी मः ४ ।।

गुन कहु हरि लहु करि सेवा सतिगुर इव हरि हरि नामु धिआई ॥ हरि दरगह भावहि फिरि जनमि न आवहि हरि हरि हरि जोति समाई ॥ १ ॥ जपि मन नामु हरी होहि सरब सुखी ॥ हरि जसु ऊच सभना ते ऊपरि हरि हरि हरि सेवि छडाई ॥ रहाउ ॥ हरि क्रिपा निधि कीनी गुरि भगति हरि दीनी तब हरि सिउ प्रीति बनि आई ॥ बहु चिंत विसारी हरि नामु उरि धारी नानक हरि भए है सखाई ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि पड़ु हरि लिखु हरि जपि हरि गाउ हरि भउजलु पारि उतारी ॥ मनि बचनि रिदै धिआइ हरि होइ संतुसटु इव भणु हरि नामु मुरारी ॥ १ ॥ मनि जपीऐ हरि जगदीस ॥ मिलि संगति साधू मीत ॥ सदा अनंदु होवै दिनु राती हरि कीरति करि बनवारी ॥ रहाउ ॥ हरि हरि करी द्रिसटि तब भइओ मनि उदमु हरि हरि नामु जपिओ गति भई हमारी ॥ जन नानक की पति राखु मेरे सुआमी हरि आइ परिओ है सरणि तुमारी ॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥ धनासरी महला ४ ॥ चउरासीह सिध बुध तेतीस कोटि मुनि जन सभि चाहहि हरि जीउ तेरो नाउ ॥ गुर प्रसादि को विरला पावै जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि भाउ ॥ १ ॥ जपि मन रामै नामु हरि जसु ऊतम काम ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी हउ तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥ रहाउ ॥ सरणागति प्रतिपालक हरि सुआमी जो तुम देहु सोई हउ पाउ ॥ दीन दइआल क्रिपा करि दीजै नानक हरि सिमरण का है चाउ ॥ २ ॥ ४ ॥ १० ॥ धनासरी महला ४ ॥ सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥ गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥ १ ॥ बोलहु भाई हरि कीरति हरि भवजल तीरथि ॥ हरि दरि तिन की ऊतम बात है संतहु हरि कथा जिन जनहु जानी ॥ रहाउ ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे हरि प्रभु चोज विडानी ॥ जन नानक आपि मिलाए सोई हरि मिलसी अवर सभ तिआगि ओहा हरि भानी ॥ २ ॥ ५ ॥ ११ ॥ धनासरी महला ४ ॥ इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना ॥ सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे

उसके गुणों का गायन करो और इस प्रकार प्रभु को प्राप्त कर लो; सच्चे गुरु की सेवा करते हुए इस प्रकार प्रभु-नाम का सुमिरन करते रहो। ऐसा व्यक्ति प्रभु दरबार में भाता है, फिर जन्म मरण में नहीं आता और उसमें प्रभु की ज्योति समायी रहती है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु-नाम का जाप कर और सब प्रकार से सुखी बना रह। प्रभु का यश गायन ही सबसे ऊँचा और अपार है और प्रभु की सेवा ही तुझे अन्तकाल में छुड़ा लेगी।। रहाउ।। प्रभु ने कृपा का भण्डार खोल दिया है और जब गुरु ने प्रभु की भक्ति प्रदान कर दी तब मेरी प्रभु से प्रीति लग गई हैं। प्रभु-नाम को हृदय में धारण करने से बहुत सी चिन्ताएं समाप्त हो गयी हैं और हे नानक, प्रभु स्वयं सहायक हो गया है।। २ ।। २ ।। ८ ।। धनासरी मः ४ ।। प्रभु का नाम ही पढ़ो, लिखो, जपो और उसका ही गायन करो क्योंकि प्रभु ही संसार सागर से पार उतारने वाला है। मन वचन से उसका हृदय में जाप करने से प्रभु संतुष्ट होता है। हे जीव, तू इस प्रकार प्रभु का नाम कहता रह।। १ ।। मन में सदैव प्रभु का जाप किया जाए और ऐसा साधसंगत में मिलकर हे मेरे मित्र, किया जाना चाहिए। प्रभु की कीर्ति का गायन करने से सदैव दिन रात आनन्द बना रहता है।। रहाउ।। जब प्रभु ने कृपादृष्टि की तो मन में प्रयत्न के लिए उमंग पैदा हुई; हमने प्रभु नाम का जाप किया और हमारी मुक्ति हो गई है। हे मेरे स्वामी, दास नानक की लाज रख लो क्योंकि हे प्रभु, मैं तुम्हारी शरण में आन पड़ा हूं।। २ ।। ३ ।। ६ ।। धनासरी मः ४ ।। हे प्रभु, चौरासी सिद्ध, तैंतीस पूर्ण ज्ञान को पहुंचे हुए बुद्ध, करोड़ों मुनिजन सब तेरे नाम को ही चाहते हैं। गुरु की कृपा से कोई ऐसा बिरला ही प्रभु-नाम पाता है जिसके माथे पर शुरु से ही प्रभु की ओर से लिखा होता है।। १ ।। हे मन, तू राम नाम का जाप कर क्योंकि हरि यश ही सबसे उत्तम काम है। हे प्रभु, जो तेरा यश गाते और सुनते हैं; मैं सदैव उन पर बलिहारी जाता हूं।। रहाउ।। हे शरण में रखने वाले और पालना करने वाले प्रभु, तुम जो देते हो मैं वही प्राप्त करता हूं। हे दीनदयालु प्रभु, मुझे कृपा करके दीजिए क्योंकि नानक को तो प्रभु के सुमिरन का ही चाव है।। २ ।। ४ ।। १० ।। धनासरी मः५ ।। हे प्रभु, तेरे सेवक, सिक्ख सभी तेरी पूजा करने के लिए आते हैं और सब तेरी उत्तम वाणी का ही गायन करते हैं। उन्हीं लोगों का गायन एवं श्रवण सफल होता है जिन्होंने सदैव प्रभु की आज्ञा को सत्य समझकर ही माना है।। १ ।। हे भाई, संसार रूपी सागर के तीर्थ पर बैठकर प्रभु की कीर्ति का गायन करो। हे संतजनों, प्रभु के दरबार में उनकी बात अच्छी मानी जाती है जिन व्यक्तियों ने प्रभु की कथा की महानता हो समझा है।। रहाउ।। वह प्रभु स्व्यं ही गुरु है और स्वयं ही चेला है और वह प्रभु बहुत बड़े बड़े कौतुक करने वाला है। हे दास नानक, जिसे वह स्वयं मिलाता है वही प्रभु से मिलता है और अन्य सबको छोड़कर वही व्यक्ति प्रभु को अच्छा लगता है।। २ ।। ५ ।। ११ ।। धनासरी मः ४ ।। वह प्रभु सभी सुखों को देने वाला, इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है और कामधेनु भी उसी के वश में है। ऐसे प्रभु को

जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना ॥ १ ॥ जपि मन सति नामु सदा सति नामु ॥ हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना ॥ रहाउ ॥ जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरि जपना ॥ जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना ॥ २ ॥ ६ ॥ १२ ॥ धनासरी महला ४ ॥ मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइ ॥ हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु सचु तु मेरे साहा तेरा कीआ सचु सभु होइ ॥ झूठा किस कउ आखीऐ साहा दूजा नाही कोइ ॥ १ ॥ सभना विचि तू वरतदा साहा सभि तुझहि धिआवहि दिनु राति ॥ सभि तुझ ही थावहु मंगदे मेरे साहा तू सभना करहि इक दाति ॥ २ ॥ सभु को तुझ ही विचि है मेरे साहा तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ सभि जीअ तेरे तू सभस दा मेरे साहा सभि तुझ ही माहि समाहि ॥ ३ ॥ सभना की तू आस है मेरे पिआरे सभि तुझहि धिआवहि मेरे साह ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू मेरे पिआरे सचु नानक के पातिसाह ॥ ४ ॥ ७ ॥ १३ ॥

धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भव खंडन दुख भंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे ॥ कोटि पराध मिटे खिन भीतरि जां गुरमुखि नामु समारे ॥ १ ॥ मेरा मनु लागा है राम पिआरे ॥ दीन दइआलि करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा थानु सुहावा रूपु सुहावा तेरे भगत सोहहि दरबारे ॥ सरब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेहु उबारे ॥ २ ॥ तेरा वरनु न जापै रूपु न लखीऐ तेरी कुदरति कउनु बीचारे ॥ जलि थलि महीअलि रविआ स्रब ठाई अगम रूप गिरधारे ॥ ३ ॥ कीरति करहि सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरखु मुरारे ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरनि दुआरे ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला ५ ॥ बिनु जल प्रान तजे है मीना जिनि जल सिउ हेतु बढाइओ ॥ कमल हेति बिनसिओ है भवरा उनि मारगु निकसि न पाइओ ॥ १ ॥ अब मन एकस सिउ मोहु कीना ॥ मरै न जावै सद ही संगे सतिगुर

हे मेरे जीव, सदैव याद रखना चाहिए तभी तू सुख पा सकेगा।। १ ।। हे मेरे मन, तू सदा सदा के लिए प्रभु के सच्चे नाम का जाप करता रह। उस निरंजन सर्वव्यापक प्रभु का सदैव सुमिरन करते रहने से इस लोक और परलोक में मुख उज्जवल बना रहता है।। रहाउ।। जहां पर भी प्रभु का सुमिरन होता है वहां से विपत्तियां भाग खड़ी होती हैं; बड़े भाग्य से ही उस प्रभु का सुमिरन होता है। दास नानक को तो गुरु ने यही मति प्रदान की है कि प्रभु का सुमिरन करने से ही संसार-सागर को पार किया जाता है।। २ ।। ६ ।। १२ ।। धनासरी मः ४।। हे मेरे मालिक, मुझे प्रभु दर्शन में ही सुख मिलता है। हमारी व्यथा तो तू ही जानता है अन्य भला कोई क्या जानेगा।। रहाउ।। हे सच्चे साहिब, तू ही मेरा सच्चा मालिक है और तेरा किया सब कुछ सच्चा ही होता है। हे मेरे स्वामी, मैं झूठा किसको कहूं क्योंकि तेरे सिवाय तो अन्य कोई भी नहीं है।। १ ।। हे मेरे मालिक, तू ही सबमें कार्यशील है और दिन रात सभी तेरी ही आराधना करते हैं। सब तुझसे ही मांगते हैं और हे मेरे प्रभु, एक तू ही सबको प्रदान करने वाला है।। २ ।। सब कुछ तुझमें ही है और हे मेरे स्वामी, तुझसे बाहर कोई भी नहीं है। हे मेरे स्वामी, सब जीव तेरे ही हैं और तू इन सबका है; सब तुझमें ही समा जाते हैं।। ३ ।। हे मेरे स्वामी, सबकी आशा तू ही है और सब तेरी आराधना करते हैं। हे नानक के सम्राट प्रभु, तुझे जैसे भी अच्छा लगे तू हम लोगों की रक्षा कर।। ४ ।। ७ ।। १३ ।।

धनासरी महला ५ घरु १ चौपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, तुम जन्म मरण और दुखों का नाश करने वाले सबके मालिक, भक्त वत्सल निराकार प्रभु हो। गुरमुख बनकर जब तुम्हारे नाम को हृदय में धारण किया तो क्षण भर में ही करोड़ों अपराध नष्ट हो गए हैं।। १ ।। मेरा मन तो उस प्यारे प्रभु में लग गया है। उस दीनदयालु प्रभु ने कृपा की और पांचों दूत अर्थात काम,क्रोध आदि मेरे वश में कर दिए।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, तेरा स्थान, रूप सभी शोभायुक्त हैं और तेरे भक्त भी तेरे दरबार में सुन्दर लगते हैं। हे सभी जीवों के दाता स्वामी प्रभु, कृपा करो और हमें पार उतार लो।। २ ।। तेरा रंग भी दिखाई नहीं देता, तेरा रूप भी नहीं देखा जाता फिर तेरी शक्ति के बारे में भला कौन विचार कर सकता है। जल, स्थल, अन्तरिक्ष आदि में तू ही सब स्थानों पर अगम्य रूप से हे प्रभु रमण कर रहा है।। ३ ।। सभी सेवक तेरी कीर्ति का गायन करते हैं क्योंकि तू ही अविनाशी पुरुष प्रभु है। जैसे भी हो तुम हे मालिक, हमारी रक्षा करो क्योंकि दास नानक तो तेरे द्वार पर तेरी शरण में है।। ४ ।। १ ।। धनासरी मः ५ ।। जिस मछली ने पानी के साथ प्रेम बढ़ा लिया, जल से विहीन होने पर उसे प्राण त्यागने पड़े हैं। कमल फूल से प्रेम करने पर भंवरा उसके अंदर चला जाता है और फिर बाहर निकलने का मार्ग उसे दिखाई नहीं देता तथा अन्ततः मर जाता है। अब मेरे मन ने तो प्रभु के साथ ही प्रेम लगाया है, वह प्रभु न तो मरता है ना ही आवागमन में पड़ता है और सदैव साथ में ही बसा रहता है;

सबदी चीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम हेति कुंचरु लै फांकिओ ओहु पर वसि भइओ बिचारा ॥ नाद हेति सिरु डारिओ कुरंका उस ही हेत बिदारा ॥ २ ॥ देखि कुंटबु लोभि मोहिओ प्रानी माइआ कउ लपटाना ॥ अति रचिओ करि लीनो अपुना उनि छोडि सरापर जाना ॥ ३ ॥ बिनु गोबिंद अवर संगि नेहा ओहु जाणहु सदा दुहेला ॥ कहु नानक गुर इहै बुझाइओ प्रीति प्रभू सद केला ॥ ४ ॥ २ ॥ धनासरी मः ५ ॥ करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाए ॥ मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए ॥ १ ॥ साधसंगि चिंत बिरानी छाडी ॥ अहंबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई ॥ ब्रहमु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ॥ २ ॥ सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मेरै राजन ॥ ३ ॥ बिनसिओ ढीठा अंम्रितु वूठा सबदु लगो गुर मीठा ॥ जलि थलि महीअलि सरब निवासी नानक रमईआ डीठा ॥ ४ ॥ ३ ॥ धनासरी मः ५ ॥ जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए ॥ महा अनंदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ॥ १ ॥ अब मोहि राम जसो मनि गाइओ ॥ भइओ प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु पूरा पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधानु रिद भीतरि वसिआ ता दूखु भरम भउ भागा ॥ भई परापति वसतु अगोचर राम नामि रंगु लागा ॥ २ ॥ चिंत अचिंता सोच असोचा सोगु लोभु मोहु थाका ॥ हउमै रोग मिटे किरपा ते जम ते भए बिबाका ॥ ३ ॥ गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी ॥ कहु नानक जिनि जम ते काढे तिसु गुर कै कुरबाणी ॥ ४ ॥ ४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिस का तनु मनु धनु सभु तिस का सोई सुघड़ु सुजानी ॥ तिन ही सुणिआ दुखु सुखु मेरा तउ बिधि नीकी खटानी ॥ १ ॥ जीअ की एकै ही पहि मानी ॥ अवरि जतन करि रहे बहुतेरे तिन तिलु नही कीमति जानी ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु निरमोलकु हीरा गुरि दीनो मंतानी ॥ डिगै न डोलै द्रिड़ु करि रहिओ पूरन होइ त्रिपतानी ॥ २ ॥ ओइ जु बीच हम तुम कछु

उसे सच्चे गुरु के शब्द के माध्यम से ही पहचाना जाता है।। १ ।। रहाउ।। काम वासना में लीन हाथी पकड़ लिया जाता है और वह बेचारा दूसरों के काबू में आ जाता है। नाद के भुलावे में हिरन झूमता हुआ आगे बढ़ता है और उसी की खातिर मारा जाता है।। २ ।। इसी प्रकार परिवार के मोह में लीन और लोभ में फंसा प्राणी माया में लिपटा रहता है। जीव इनमें बहुत ही लीन हो जाता है और इन को अपना ही मान लेता है, परन्तु शीघ्र ही सबको छोड़कर उसे जाना होता है।। ३ ।। जिसका प्रभु को छोड़कर अन्य लोगों से प्यार बना रहता है उसे सदैव दुखी ही होना पड़ता है। नानक का कथन है कि गुरु ने यही बताया है कि प्रभु में लगाया हुआ प्रेम सदैव आनन्द देने वाला होता है।। ४ ।। २ ।। धनासरी मः ५ ।। प्रभु ने कृपा करके मुझे अपना नाम दिया और बन्धनों से मुझे छुड़ा दिया। अब मन से सभी सांसारिक प्रपंच छूट गए हैं और मन गुरु के चरणों में लग गया है।। १ ।। साधु पुरुषों के साथ मैंने दूसरी सभी चिन्ताएं छोड़ दी हैं। अहंकार वाली मति, मोह और मन की वासना मैंने धरती में गड्ढा बनाकर दबा दी अर्थात नष्ट कर दी है।। १ ।। रहाउ।। अब न तो मेरा कोई शत्रु है और न ही हम किसी के दुश्मन रहे हैं। गुरु ने अपने रूप का प्रसार हमारे अन्दर कर दिया है और सच्चे गुरु से हमें यह समझ प्राप्त हुई है।। २ ।। सबको हमने अपना मित्र बना लिया है और हम भी सबके प्यारे बन गए हैं। मेरे मन का वियोग अब दूर हो गया है और अब मेरा राजन् प्रभु से मिलाप हो गया है। मन की ज़िद और बेशर्मी दूर हो गई है, अमृत मन में बरस पड़ा है और शब्द-गुरु अब मीठा लगने लगा है। हे नानक, उस सर्वनिवासी प्रभु को जल, स्थल और अन्तरिक्ष में मैंने देख लिया है।। ४ ।। ३ ।। धनासरी मः ५।। जबसे मैंने साधु पुरुषों के दर्शन किए हैं वे ही दिन मेरे लिए भले बन कर आए हैं। सदैव उस प्रभु की कीर्ति गान करने से महा आनन्द प्राप्त हुआ है और सबको उत्पन्न और सबमें रमण करने वाला प्रकाश पैदा हो गया है और मैंने पूर्ण सच्चा गुरु पा लिया है।। १ ।। रहाउ।। जब गुणों का भण्डार वह प्रभु हृदय में बस गया तो दुख, भ्रम और भय भाग खड़ा हुआ है। अब मुझे वह अगम्य और अदृष्ट राम नाम रूपी वस्तु प्राप्त हो गयी है और प्रभु नाम का रंग अब मुझे लग गया है।। २ ।। चिन्ता से मैं चिन्तामुक्त, सोचते रहने वाले से मैं सोचरहित हो गया हूं और मेरा लोभ, मोह आदि सब थक कर छूट गए हैं। प्रभु की कृपा से मेरे अहंकार का रोग नष्ट हो गया है और यम का लेखा भी समाप्त हो गया है।। ३ ।। अब मुझे गुरु की सेवा और गुरु की आज्ञा ही अच्छी लगती है। नानक का कथन है कि जिसने यम से बचा लिया है मैं उस गुरु पर कुर्बान जाता हूं।। ४ ।। ४ ।। धनासरी मः ५ ।। जिसका यह तन मन और धन है सब कुछ उसी का है और वही प्रभु चतुर और सयाना है। उसी ने ही मेरा दुख सुख सुना है और मेरी हालत अच्छी हो गई है।। १ ।। मेरे मन की संतुष्टि एक प्रभु से ही हुई है। अनेकों अन्य यत्न भी किए गए परन्तु मन ने उनकी तिल भर भी कीमत नहीं मानी।। रहाउ।। गुरु ने मुझे यही मन्त्र दिया है कि प्रभु का अमृत नाम अमूल्य हीरा है। यह न तो नष्ट होता है न बदलता है। यही पक्का होकर रहता है और पूर्ण होने के कारण यही तृप्ति प्रदान करता है।। २ ।। वे मेरे बीच में जो काम, क्रोध आदि दूरी बनाने वाले पड़े

होते तिन की बात बिलानी ॥ अलंकार मिलि थैली होई है ता ते कनिक वखानी ॥ ३ ॥ प्रगटिओ जोति सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी ॥ कहु नानक निहचल घरु बाधिओ गुरि कीओ बंधानी ॥ ४ ॥ ५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ वडे वडे राजन अरु भूमन ता की त्रिसन न बूझी ॥ लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥ १ ॥ बिखिआ महि किन ही त्रिपति न पाई ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई ॥ रहाउ ॥ दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन ता की मिटै न भूखा ॥ उदमु करै सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा ॥ २ ॥ कामवंत कामी बहु नारी पर ग्रिह जोह न चूकै ॥ दिन प्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु अपार अमोला अंम्रितु एकु निधाना ॥ सूखु सहजु आनंदु संतन कै नानक गुर ते जाना ॥ ४ ॥ ६ ॥ धनासरी मः ५ ॥ लवै न लागन कउ है कछूऐ जा कउ फिरि इहु धावै ॥ जा कउ गुरि दीनो इहु अंम्रितु तिस ही कउ बनि आवै ॥ १ ॥ जा कउ आइओ एकु रसा ॥ खान पान आन नही खुधिआ ता कै चिति न बसा ॥ रहाउ ॥ मउलिओ मनु तनु होइओ हरिआ एक बूंद जिनि पाई ॥ बरनि न साकउ उसतति ता की कीमति कहणु न जाई ॥ २ ॥ घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता ॥ जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥ ३ ॥ दीन दैआल सदा किरपाला सरब जीआ प्रतिपाला ॥ ओति पोति नानक संगि रविआ जिउ माता बाल गुोपाला ॥ ४ ॥ ७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ बारि जाउ गुर अपुने ऊपरि जिनि हरि हरि नामु द्रिड़ाया ॥ महा उदिआन अंधकार महि जिनि सीधा मारगु दिखाया ॥ १ ॥ हमरे प्रान गुपाल गोबिंद ॥ ईहा ऊहा सरब थोक की जिसहि हमारी चिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरनि सरब निधाना मानु महतु पति पूरी ॥ नामु लैत कोटि अघ नासे भगत बाछहि सभि धूरी ॥ २ ॥ सरब मनोरथ जे को चाहै सेवै एकु निधाना ॥ पारब्रहम अपरंपर सुआमी सिमरत पारि पराना ॥ ३ ॥ सीतल सांति महा सुखु पाइआ संतसंगि रहिओ ओल्हा ॥ हरि धनु संचनु हरि नामु भोजनु इहु नानक कीनो

हुए थे अब उनकी बात का कोई ज़ोर नहीं रहा। सब तरह तरह के गहने जब मिल कर सोने का टुकड़ा बन जाते है तो उन सबको सोना ही कहा जाता है। इसी प्रकार जीव और प्रभु के बीच अन्तर डालने वाले कारण जब दूर हो जाते हैं तो सब कुछ ईश्वर रूप हो जाता है।। ३ ।। जब प्रभु ज्योति रूप में प्रकट हो गया, आत्मज्ञान के स्वाभाविक सुख और सौन्दर्य प्राप्त हो गए तो अनहद वाद्य बजने लगे हैं अर्थात आध्यात्मिक आनन्द की धुन बज उठी है। नानक का कथन है कि अब मैंने एक अटल बना रहने वाला घर बना लिया है और वास्तव में गुरु ने ही यह घर मेरे लिए बांधा है अर्थात बनाया है।। ४ ।। ५ ।। धनासरी मः ५।। बड़े बड़े राजाओं और पूंजीपतियों की तृष्णा नहीं बुझ सकी; वे धन सम्पदा के रंग में रंगे हुए उसी से लिपटे हैं और उनकी आँखों को अन्य कुछ भी नहीं दिखता।। १ ।। विषय विकारों में कोई भी संतुष्टि नहीं पा सकता जैसे अग्नि ईंधन से संतुष्ट नहीं होती। इसी प्रकार प्रभु के बिना भूख नहीं मिटती।। रहाउ।। जो हर दिन बहुत स्वादिष्ट भोजन करते हैं उनकी भी भूख मिटती नहीं है। वे कुत्तों की तरह भोजन की चिन्ता में ही उद्यम करते रहते हैं और चारों दिशाओं में भोजन ही खोजते रहते हैं।। २ ।। कामी व्यक्ति की यदि बहुत सी स्त्रियां हो तब भी दूसरों केघर की ओर देखना उसका समाप्त नहीं होता। वह नित्य पाप करता रहता है और साथ ही साथ पछताता रहता है तथा गम और लोभ में सूखता जाता है।।३।। प्रभु का नाम अपरंपर, अमूल्य और अमृत का एक बहुत बड़ा भण्डार है। सहज सुख और आनन्द शान्त पुरुषों के पास ही होता है। नानक ने यह गुरु से ही जाना है।।४।।६।। धनासरी मः ५ ।। जिस वस्तु के लिए प्राणी बार बार दौड़ता भागता रहता है वह कोई भी वस्तु प्रभु के बराबर समझने लायक नहीं होती। गुरु ने ही जिसे यह अमृत प्रदान किया है उसी को ही यह शोभा देता है।। १ ।। जिसे उस एक प्रभु के रस का स्वाद आ गया उसे खाने पीने की तथा अन्य कोई भी भूख मन में नहीं रह जाती।। रहाउ।। जिसने उस अमृत नाम की एक बूंद भी पा ली उसका तन मन हरा भरा होकर खिल उठता है। उसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता और उसकी कीमत नहीं आंकी जाती।। २ ।। बहुत साधना करने से और सेवा करने से भी वह नहीं मिलता अपितु वह अचानक ही मिल जाता है। जिस पर मेरे प्रभु ने दया की है उसने गुरु के उपदेश के अनुरूप ही आचरण बनाया है।। ३ ।। वह दीनदयालु प्रभु कृपालु है और सभी जीवों का पालन पोषण करने वाला है। वह मेरे साथ तो हे नानक, इस प्रकार मिल गया है जिस प्रकार कपड़े का ताना बाना होता है या माँ और छोटा बच्चा आपस में मिल जाते हैं।। ४ ।। ७ ।। धनासरी मः ५ ।। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूं जिसने प्रभु नाम मेरे हृदय में पक्का किया है और जिसने संसार रूपी जंगल के अंधकार में मुझे सीधा मार्ग दिखा दिया है।। १ ।। यहां वहां जिसे सभी चीजों के सन्दर्भ में हमारी चिन्ता लगी रहती है वह धरती का पालक और धारण करने वाला प्रभु ही हमारा प्राण है।। १ ।। रहाउ।। जिसके सुमिरन से सभी भण्डार, मान-सम्मान प्राप्त होते हैं उस प्रभु का नाम लेने से करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं और भक्तजन उसी की चरण-धूलि की कामना करते हैं।। २।। यदि कोई सब प्रकार की मुरादों को पाना चाहे तो केवल एक प्रभु का ही सुमिरन करता रहे। परब्रह्म अपरंपर स्वामी का सुमिरन करने से जीव पार उतर जाता है।। ३ ।। मैंने शान्त और शीतल होकर महान सुख प्राप्त किया है और सन्तजनों की संगत में मुझे आसरा मिल गया है। प्रभु रूपी धन को इकट्ठा करना और प्रभु नाम का ही भोजन करना नानक के लिए

चोल्हा ॥ ४ ॥ ८ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिह करणी होवहि सरमिंदा इहा कमानी रीति ॥ संत की निंदा साकत की पूजा ऐसी द्रिढ़ी बिपरीति ॥ १ ॥ माइआ मोह भूलो अवरै हीत ॥ हरिचंदउरी बन हर पात रे इहै तुहारो बीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंदन लेप होत देह कउ सुखु गरधभ भसम संगीति ॥ अम्रित संगि नाहि रुच आवत बिखै ठगउरी प्रीति ॥ २ ॥ उतम संत भले संजोगी इसु जुग महि पवित पुनीत ॥ जात अकारथ जनमु पदारथ काच बादरै जीत ॥ ३ ॥ जनम जनम के किलविख दुख भागे गुरि गिआन अंजनु नेत्र दीत ॥ साधसंगि इन दुख ते निकसिओ नानक एक परीत ॥ ४ ॥ ९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ॥ सासि सासि मनु नामु सम्हारै इहु बिस्राम निधि पाई ॥ १ ॥ तुम्ह करहु दइआ मेरे साई ॥ ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुधु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते मोहु मानु छूटै बिनसि जाइ भरमाई ॥ अनद रूपु रविओ सभ मधे जत कत पेखउ जाई ॥ २ ॥ तुम्ह दइआल किरपाल क्रिपा निधि पतित पावन गोसाई ॥ कोटि सूख आनंद राज पाए मुख ते निमख बुलाई ॥ ३ ॥ जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मनि भाई ॥ नामु जपत त्रिसना सभ बुझी है नानक त्रिपति अघाई ॥ ४ ॥ १० ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिनि कीने वसि अपुनै त्रैगुण भवण चतुर संसारा ॥ जग इसनान ताप थान खंडे किआ इहु जंतु विचारा ॥ १ ॥ प्रभ की ओट गही तउ छूटो ॥ साध प्रसादि हरि हरि हरि गाए बिखै बिआधि तब हूटो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह सुणीऐ नह मुख ते बकीऐ नह मोहै उह डीठी ॥ ऐसी ठगउरी पाइ भुलावै मनि सभ कै लागै मीठी ॥ २ ॥ माइ बाप पूत हित भ्राता उनि घरि घरि मेलिओ दूआ ॥ किस ही वाधि घाटि किस ही पहि सगले लरि लरि मूआ ॥ ३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि इहु चलतु दिखाइआ ॥ गूझी भाहि जलै संसारा भगत न बिआपै माइआ ॥ ४ ॥ संत प्रसादि महा सुखु पाइआ सगले बंधन काटे ॥ हरि हरि नामु नानक धनु पाइआ अपुनै घरि लै आइआ खाटे ॥ ५ ॥ ११ ॥ धनासरी महला ५ ॥ तुम दाते ठाकुर

स्वादिष्ट खाने के समान है।। ४ ।। ८ ।। धनासरी मः ५ ।। जिस आचरण से तुझे शर्मिन्दा होना पड़ता है, हे जीव, तू फिर उन्हीं तरीकों का उपयोग करता है। शान्त पुरुषों की निन्दा करना, प्रभु से टूटे लोगों की पूजा करना ही तेरी विपरीत बुद्धि ने पक्का किया हुआ है।। १ ।। माया के मोह में पड़कर तू अन्य वस्तुओं में ही भूला हुआ पड़ा है। आकाश में काल्पनिक वनों की रचना के पत्ते आदि शीघ्र ही नष्ट होने वाले होते हैं और ऐसी ही तेरी यह हालत बनी हुई है।। १ ।। रहाउ।। गधे को चन्दन का लेप लगाया जाए तो भी उसे सुख तो मिट्टी के साथ बने रहने में ही मालूम पड़ता है। अमृत के साथ तो तेरी रूचि बनती नहीं तथा विषय विकारों वाली ठग बूटी के साथ तेरा प्यार बना रहता है।। २ ।। उत्तम शान्त पुरुष जो इस संसार में रहते हुए पवित्र और पुनीत बने रहते हैं, अच्छे भाग्य लेखों से ही प्राप्त होते हैं। यह दुर्लभ जन्म रूपी पदार्थ निष्फल ही जा रहा है और कांच के टुकड़ों के बदले में जीता जा रहा है।। ३ ।। गुरु ने जब ज्ञान रूपी अंजन नेत्रों में लगा दिया तो जन्म जन्म के पाप एवं दुख भाग खड़े हुए हैं। साधु संगत में रहकर ही हे नानक, एक प्रभु से प्रीति लगाता हुआ व्यक्ति दुख से बाहर निकल आता है।। ४ ।। ६ ।। धनासरी मः ५ ।। शान्त पुरुषों के लिए मैं पानी लाऊँ, पंखा डुलाऊँ और पिसान पीसूं तथा प्रभु का गुणानुवाद करता रहूं। जब मन प्रभु नाम का हर श्वास के साथ सुमिरन करता है तो इसे विश्राम अर्थात शान्ति रूपी खज़ाना मिल जाता है।। १ ।। हे प्रभु, तुम मुझ पर दया करो। हे मालिक, तू मुझे ऐसी बुद्धि प्रदान कर कि मैं सदैव तेरी आराधना करता रहूं।। १ ।। रहाउ।। तुम्हारी कृपा से ही मोह अभिमान टूटता है और भ्रम नष्ट हो जाता है। आनन्द रूप में वह प्रभु सबमें रमण कर रहा है और मैं जहां भी देखता हूं उसे ही पाता हूं।। २ ।। हे कृपा के भण्डार पतित पावन प्रभु, तुम ही दयालु और कृपालु हो। यदि तुम अपना नाम क्षण भर के लिए भी मेरे मुंह से उच्चारण करवा दो तो मैं करोड़ों सुखों और आनन्द वाले राज्यों को प्राप्त कर लूं।। ३ ।। जो प्रभु के मन को भाता है वही जप, तप और भक्ति पूर्ण मानी जाती है। तेरा नाम जपने से मेरी सारी तृष्णा बुझ गई है। हे नानक, मैं शान्त होकर अघा गया हूं।। ४ ।। १० ।। धनासरी मः ५ ।। वह प्रभु ही है जिसने तीनों गुणों, लोकों और इस चतुर संसार को अपने वश में किया हुआ है। उसने यज्ञ, स्नान, तपस्या वाले सभी स्थान जीत लिए हैं। तब भला यह जीव बेचारा उसके सामने क्या है।। १ ।। जब प्रभु की शरण ली गई तभी जीव मुक्त होता है।। १ ।। रहाउ।। न तो वह कभी सुनी गई, न वह मुंह से बोलती है और न ही वह दिखाई देकर मोहित करती है; ऐसी ठग बूटी खिलाकर वह व्यक्ति को भुला लेता है और वह सबके मन को ही मीठी लगती है।। २ ।। मां-बाप, पुत्र, भाई आदि सबके हृदय में उस माया ने द्वैतभाव इक्ट्ठा कर दिया है; वह बेशक किसी में कम किसी में ज्यादा है परन्तु सभी आपस में लड़ लड़कर मरते रहते हैं।। ३ ।। मैं तो अपने सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूं जिसने यह कौतुक दिखाया है कि एक छिपी हुई अग्नि में सारा संसार जल रहा है परन्तु माया की यह अग्नि भक्तों को प्रभावित नहीं करती।। ४ ।। शान्त पुरुषों की कृपा से मैंने महान सुख पाया है और मेरे सभी बन्धन कट गए हैं।। हे नानक, मैंने प्रभु नाम का धन प्राप्त कर लिया है और लाभ के रूप में इसे मैं अपने घर ले आया हूं।। ५ ।। ११ ।। धनासरी मः ५ ।। हे प्रभु, तुम दाता हो।

प्रतिपालक नाइक खसम हमारे ॥ निमख निमख तुम ही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥ १ ॥ जिहवा एक कवन गुन कहीऐ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किन ही लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु ॥ हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बरदु रखावहु ॥ २ ॥ तुमरी सरणि तुमारी आसा तुम ही सजन सुहेले ॥ राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले ॥ ३ ॥ १२ ॥ धनासरी महला ५ ॥ पूजा वरत तिलक इसनाना पुंन दान बहु दैन ॥ कहूं न भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥ १ ॥ प्रभ जी को नामु जपत मन चैन ॥ बहु प्रकार खोजहि सभि ता कउ बिखमु न जाई लैन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप ताप भ्रमन बसुधा करि उरध ताप लै गैन ॥ इह बिधि नह पतीआनो ठाकुर जोग जुगति करि जैन ॥ २ ॥ अंम्रित नामु निरमोलकु हरि जसु तिनि पाइओ जिसु किरपैन ॥ साधसंगि रंगि प्रभ भेटे नानक सुखि जन रैन ॥ ३ ॥ १३ ॥ धनासरी महला ५ ॥ बंधन ते छुटकावै प्रभू मिलावै हरि हरि नामु सुनावै ॥ असथिरु करे निहचलु इहु मनूआ बहुरि न कतहू धावै ॥ १ ॥ है कोऊ ऐसो हमरा मीतु ॥ सगल समग्री जीउ हीउ देउ अरपउ अपनो चीतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर धन पर तन पर की निंदा इन सिउ प्रीति न लागै ॥ संतह संगु संत संभाखनु हरि कीरतनि मनु जागै ॥ २ ॥ गुण निधान दइआल पुरख प्रभ सरब सूख दइआला ॥ मागै दानु नामु तेरो नानकु जिउ माता बाल गुपाला ॥ ३ ॥ १४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ हरि हरि लीने संत उबारि ॥ हरि के दास की चितवै बुरिआई तिस ही कउ फिरि मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन का आपि सहाई होआ निंदक भागे हारि ॥ भ्रमत भ्रमत ऊहां ही मूए बाहुड़ि ग्रिहि न मंझारि ॥ १ ॥ नानक सरणि परिओ दुख भंजन गुन गावै सदा अपारि ॥ निंदक का मुखु काला होआ दीन दुनीआ कै दरबारि ॥ २ ॥ १५ ॥ धनासिरी महला ५ ॥ अब हरि राखनहारु चितारिआ ॥ पतित पुनीत कीए खिन भीतरि सगला रोगु बिदारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोसटि भई साध कै संगमि काम क्रोधु लोभु मारिआ ॥ सिमरि सिमरि पूरन

सबकी पालना करने वाले हमारे मालिक और नायक हो। प्रत्येक क्षण तुम ही सबका पालन करते हो और हम तो तुम्हारे पैदा किए हुए बच्चे हैं।। १ ।। हमारी जीभ तो एक है, तेरे कितने गुणों के बारे में हम कहें। तू सीमातीत, अनन्त स्वामी प्रभु है। तेरा किसी भी प्रकार ओर छोर नहीं जाना जा सकता है।। १ ।। रहाउ।। तुम हमारे करोड़ों पाप नष्ट करते हो और अनेकों विधियों से हमें समझाते हो। हम अज्ञानी और अल्पमति वाले हैं परन्तु हे प्रभु, तुम अपने बिरद की लाज रखो।। २ ।। हे हमारे सुख दायक सज्जन प्रभु, हम तुम्हारी शरण में हैं और तुम्हीं से हम आशा लगाए रहते हैं। हे रक्षक दयालु प्रभु, तुम हमारी रक्षा करो और हे नानक, हम तुम्हारे घर के सेवक हैं।। ३ ।। १२ ।। धनासरी मः ५ ।। पूजा, व्रत, तिलक, स्नान, दान पुण्य और इस प्रकार से बहुत कुछ दिए जाने से भी तथा मीठे मीठे बोल बोलने से भी मालिक प्रभु संतुष्ट और प्रसन्न नहीं होते।। १ ।। प्रभु नाम सुमिरन से मन में चैन आ जाता है। अनेकों प्रकार से सभी उसे खोजते हैं परन्तु उस विषम प्रभु को प्राप्त नहीं किया जा सकता।। १ ।। रहाउ।। जप, तप, धरती पर भ्रमण, आकाश की ओर बांहे उठाकर आसन इत्यादि लगाना, योग और जैन मार्ग वाले कर्मों को अपनाने से भी वह मालिक प्रभु प्रसन्न नहीं होता।। २ ।। उस प्रभु का अमूल्य अमृत नाम तथा उसका गुणानुवाद उसी ने प्राप्त किया है जिस पर उसकी कृपा हुई है। साधुसंगत के रंग में रंगकर जब प्रभु से मिलाप हुआ तो हे नानक, सेवकजनों की जीवन रूपी रात्रि सुखपूर्ण बन गई है।। ३ ।। १३ ।। धनासरी मः ५ ।। वह प्रभु बन्धनों से छुड़ा दे, प्रभु से मिला दे, प्रभु नाम को सुनाए, इस मन को स्थिर बना दे ताकि यह फिर इधर उधर नहीं भागे।। १ ।। कोई ऐसा हमारा मित्र है जो यह कर सके। मैं उसे अपना सारा सामान, जीभ, हृदय और अपना चित्त अर्पण कर दूंगा।। १ ।। रहाउ।। पराए धन में, पराए तन में और पराई निन्दा में मेरी प्रीति न लगे, मैं संत पुरुषों के साथ शान्त होकर वार्तालाप करूं और प्रभु के गुणानुवाद में मेरा मन सावधान बना रहे।। २ ।। वह प्रभु दयालु, सर्वव्यापक, सभी सुख देने वाला गुणों का भण्डार है। जैसे बच्चा अपनी माँ से मांगता है, उसी प्रकार हे प्रभु, नानक तेरे नाम का दान मांगता है।। ३ ।। १४ ।। धनासरी मः ५ ।। प्रभु ने अपने शान्त पुरुषों को पार उतार दिया है। जो प्रभु के सेवक का बुरा चाहता है वह प्रभु उसी को मार देता है।। १ ।। रहाउ।। सेवक का वह प्रभु स्वयं सहायक होता है जिससे निन्दक हारकर भाग खड़े होते हैं। निन्दकजन भटकते भटकते उसी स्थान पर ही मर खप जाते हैं और फिर सुख देने वाले घर में नहीं आ पाते।। १ ।। नानक तो उस दुख विनाशक प्रभु की शरण में आन पड़ा है और सदैव उस प्रभु के अपार गुणों का गायन करता है। निन्दक व्यक्ति का इस दुनियाँ में भी और प्रभु के दरबार में भी मुंह काला होता है।। २ ।। १५ ।। धनासरी मः ५ ।। अब उस रक्षक प्रभु का जब सुमिरन किया गया तो उसने पतितों को क्षण भर में पवित्र कर दिया और उनका सारा रोग नष्ट कर दिया।। १ ।। रहाउ।। जब साधु पुरुषों के साथ विचार चर्चा हुई तो काम, क्रोध, लोभ आदि मार डाले गए। उस पूर्ण नारायण का सुमिरन करते रहने से

नाराइन संगी सगले तारिआ ॥ १ ॥ अउखध मंत्र मूल मन एकै मनि बिस्वासु प्रभ धारिआ ॥ चरन रेन बांछै नित नानकु पुनह पुनह बलिहारिआ ॥ २ ॥ १६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मेरा लागो राम सिउ हेतु ॥ सतिगुरु मेरा सदा सहाई जिनि दुख का काटिआ केतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हाथ देइ राखिओ अपुना करि बिरथा सगल मिटाई ॥ निंदक के मुख काले कीने जन का आपि सहाई ॥ १ ॥ साचा साहिबु होआ रखवाला राखि लीए कंठि लाइ ॥ निरभउ भए सदा सुख माणे नानक हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ १७ ॥ धनासिरी महला ५ ॥ अउखधु तेरो नामु दइआल ॥ मोहि आतुर तेरी गति नही जानी तूं आपि करहि प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे दुतीआ भाउ निवारि ॥ बंधन काटि लेहु अपुने करि कबहू न आवह हारि ॥ १ ॥ तेरी सरनि पइआ हउ जीवां तूं संम्रथु पुरखु मिहरवानु ॥ आठ पहर प्रभ कउ आराधी नानक सद कुरबानु ॥ २ ॥ १८ ॥

रागु धनासरी महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हा हा प्रभ राखि लेहु ॥ हम ते किछू न होइ मेरे स्वामी करि किरपा अपुना नामु देहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि कुटंबे सागर संसार ॥ भरम मोह अगिआन अंधार ॥ १ ॥ ऊच नीच सूख दूख ॥ ध्रापसि नाही त्रिसना भूख ॥ २ ॥ मनि बासना रचि बिखै बिआधि ॥ पंच दूत संगि महा असाध ॥ ३ ॥ जीअ जहानु प्रान धनु तेरा ॥ नानक जानु सदा हरि नेरा ४ ॥ १ ॥ १९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ दीन दरद निवारि ठाकुर राखै जन की आपि ॥ तरण तारण हरि निधि दूखु न सकै बिआपि ॥ १ ॥ साधू संगि भजहु गुपाल ॥ आन संजम किछु न सूझै इह जतन काटि कलि काल ॥ रहाउ ॥ आदि अंति दइआल पूरन तिसु बिना नही कोइ ॥ जनम मरण निवारि हरि जपि सिमरि सुआमी सोइ ॥ २ ॥ बेद सिंम्रिति कथै सासत भगत करहि बीचारु ॥ मुकति पाईऐ साधसंगति बिनसि जाइ अंधारु ॥ ३ ॥ चरन कमल अधारु जन

सभी संगी साथी भी पार उतार लिए गए हैं।। १ ।। केवल उस एक प्रभु का ही मूलमन्त्र औषधि के रूप में कार्य करता है और वही मन में प्रभु के प्रति विश्वास धारण कराता है। नानक तो सदैव साधु पुरुषों की चरण धूलि चाहता है और बार बार बलिहारी जाता है।। २ ।। १६ ।। धनासरी मः ५ ।। मेरा तो प्रभु से प्रेम लग गया है। मेरा सच्चा गुरु सदैव मेरी सहायता करता है और उसी ने मेरे दुख का झण्डा काट गिराया है।। १ ।। रहाउ।। उसने अपना हाथ देकर मुझे बचा लिया और मेरी पूर्ण व्यथा मिटा दी है। उसने निन्दक का मुंह काला कर दिया है और अपने सेवक का वह सहायक बन गया है।। १ ।। जब सच्चा प्रभु रक्षक बन गया तो उसने मुझे अपने गले लगाकर बचा लिया। अब हम निर्भय होकर सदैव सुख का उपभोग करते हैं और हे नानक, प्रभु का गुण गाते रहते हैं।। २ ।। १७ ।। धनासरी मः ५ ।। हे दयालु प्रभु, तेरा नाम ही हमारी औषधि है। मुझ दुखी व्यक्ति ने तेरी महानता को नहीं जाना; तू तो स्वयं ही सबका पालन पोषण करता है।।१।। रहाउ।। हे प्रभु, मुझ पर कृपा कर और मेरे द्वैतभाव का निवारण कर दे। तुम हमें अपना बनाकर हमारे बन्धन काट दो जिससे हम कभी भी हार कर न आएं।। १ ।। तू समर्थ पुरुष मेहरबानी करने वाला है और तेरी शरण पड़कर ही मैं जीवित बना रहूं, आठों प्रहर मैं प्रभु की आराधना करता रहता रहूं और सदैव तुझ पर कुर्बान होता रहूं।।२।।१८।।

रागु धनासरी महला ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हाय हाय हे प्रभु, मेरी रक्षा कर लो। मेरे स्वामी मुझ से कुछ भी नहीं बन पड़ेगा। तुम कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान करो।। १ ।। रहाउ।। पारिवारिक और सांसारिक मोह मेरे लिए अग्नि का सागर बन गया है। मेरे सामने भ्रम, मोह और अज्ञान का अंधकार ही अंधकार है।। १ ।। मैं ऊँच-नीच, सुख दुख में ही पड़ा हुआ हूं और मेरी तृष्णाओं की भूख समाप्त नहीं होती।। २ ।। मन में वासनाओं के रच बस जाने से मुझे विषय विकारों की बीमारियां लग गई हैं और काम, क्रोध आदि पांचों यमदूत मेरे साथ लगे हुए हैं जो वास्तव में मेरे नियन्त्रण में नहीं हैं।। ३ ।। हे प्रभु, यह सारा संसार, सभी जीव, उनके प्राण और मन आदि अब तेरे ही है। हे नानक, तू सदैव प्रभु को अपने अंग संग और पास ही समझता रह।। ४ ।। १ ।। १६।। धनासरी महला ५ ।। दीनों के दुखों का निवारण करने वाला मालिक प्रभु अपने सेवक की लाज स्वयं ही रखता है। वह खुद ही पार उतरने और उतारने वाला है इसलिए उसके साथ बने रहने से कोई भी दुख प्रभावित नहीं कर सकता।। १ ।। हे जीव, साधुसंगत में उस परमात्मा का सुमिरन करो; अन्य कोई भी उपाय नहीं सूझता है, केवल यही एक प्रयत्न है जिससे कलियुग के दुख कट जाते हैं।। रहाउ।। जीवन के आदि में अन्त में वही दयालु पूर्ण परमात्मा है और उसके बिना अन्य कोई भी नहीं है। हे जीव, तू केवल उस परमात्मा का ही सुमिरन करके अपने जन्म मरण को समाप्त कर ले।। २ ।। वेद, शास्त्र, स्मृतियां और भक्तजन आदि भी यही विचार देते हैं कि साधसंगत में ही मुक्ति प्राप्त होती है और अज्ञान का अंधकार नष्ट हो जाता है।। ३ ।। प्रभु के सेवकों का प्रभु के चरण कमल ही आधार हैं

का रासि पूंजी एक ॥ ताणु माणु दीबाणु साचा नानक की प्रभ टेक ॥ ४ ॥ २ ॥ २०॥ धनासरी महला ५ ॥ फिरत फिरत भेटे जन साधू पूरै गुरि समझाइआ ॥ आन सगल बिधि कांमि न आवै हरि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥ ता ते मोहि धारी ओट गोपाल ॥ सरनि परिओ पूरन परमेसुर बिनसे सगल जंजाल ॥ रहाउ ॥ सुरग मिरत पइआल भू मंडल सगल बिआपे माइ ॥ जीअ उधारन सभ कुल तारन हरि हरि नामु धिआइ ॥ २ ॥ नानक नामु निरंजनु गाईऐ पाईऐ सरब निधाना ॥ करि किरपा जिसु देइ सुआमी बिरले काहू जाना ॥ ३ ॥ ३ ॥ २१ ॥

धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

छोडि जाहि से करहि पराल ॥ कामि न आवहि से जंजाल ॥ संगि न चालहि तिन सिउ हीत ॥ जो बैराई सेई मीत ॥ १ ॥ ऐसे भरमि भुले संसारा ॥ जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ रहाउ ॥ साचु धरमु नही भावै डीठा ॥ झूठ धोह सिउ रचिओ मीठा ॥ दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥ जाणै नाही मरणु विचारा ॥ २ ॥ वसतु पराई कउ उठि रोवै ॥ करम धरम सगला ई खोवै ॥ हुकमु न बूझै आवण जाणे ॥ पाप करै ता पछोताणे ॥ ३ ॥ जो तुधु भावै सो परवाणु ॥ तेरे भाणे नो कुरबाणु ॥ नानकु गरीबु बंदा जनु तेरा ॥ राखि लेइ साहिबु प्रभु मेरा ॥ ४ ॥ १ ॥ २२ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मोहि मसकीन प्रभु नामु अधारु ॥ खाटण कउ हरि हरि रोजगारु ॥ संचण कउ हरि एको नामु ॥ हलति पलति ता कै आवै काम ॥ १ ॥ नामि रते प्रभ रंगि अपार ॥ साध गावहि गुण एक निरंकार ॥ रहाउ ॥ साध की सोभा अति मसकीनी ॥ संत वडाई हरि जसु चीनी ॥ अनदु संतन कै भगति गोविंद ॥ सूखु संतन कै बिनसी चिंद ॥ २ ॥ जह साध संतन होवहि इकत्र ॥ तह हरि जसु गावहि नाद कवित ॥ साध सभा महि अनद बिस्राम ॥ उन संगु सो पाए जिसु मसतकि कराम ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥ चरन पखारि कहां गुण तास ॥ प्रभ दइआल किरपाल हजूरि ॥ नानकु जीवै संता धूरि ॥ ४ ॥ २ ॥ २३ ॥

और ये ही उनकी रास पूंजी है। उनका मान सम्मान सच्चा दरबार ही है, हे नानक, उन्हें एक प्रभु का ही आसरा है।। ४ ।। २ ।। २० ।। धनासरी मः ५ ।। घूमते भटकते हुए मुझको सच्चे साधु पुरुष गुरु के दर्शन हुए और पूर्ण गुरु ने मुझे यह समझाया कि अन्य सभी युक्तियां किसी काम नहीं आती; इसीलिए प्रभु-नाम का सुमिरन करते रहो।। १ ।। इसीलिए मैंने उस परमात्मा का ही आसरा देखा है। मैं पूर्ण परमेश्वर की शरण में आन पड़ा हूं और मेरे सारे जंजाल नष्ट हो गए हैं।। रहाउ।। स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताल लोक इत्यादि सारे भू-मण्डल में माया का प्रभाव ही बना है। अपनी आत्मा के उद्धार के लिए और सम्पूर्ण कुटुम्ब आदि को पार उतारने के लिए प्रभु-नाम का सुमिरन ही किया जाना चाहिए।। २ ।। हे नानक, प्रभु के नाम का गायन करने से सभी प्रकार के भण्डार प्राप्त हो जाते हैं। वह प्रभु जिस पर कृपा करके यह सब देता है उस बिरले व्यक्ति ने ही प्रभु नाम के महत्व को जाना समझा है।। ३।। ३ ।। २१ ।।

धनासरी महला ५ घरु २ चौपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जिन वस्तुओं को बेकार समझकर छोड़ जाना है व्यक्ति उन्हीं के लिए व्यर्थ में शक्ति लगा रहा है। व्यक्ति जिन जंजालों में पड़ा है वे उसके किसी काम नहीं आते। जिन्होंने साथ नहीं चलना है उनके साथ ही प्रेम लगाया हुआ है। जो वास्तव में इसके शत्रु है उन्हीं के साथ इसने मित्रता बना रखी है।। १ ।। रहाउ।। सत्य और धर्म को यह व्यक्ति देखना नहीं चाहता और झूठ तथा धोखाधड़ी को यह मीठा समझकर उसमें लीन बना हुआ है। दी हुई वस्तु तो इसे प्यारी लगती है परन्तु देने वाले दाता को इसने भुला दिया है। यह बेचारा जानता ही नहीं है कि इसने एक दिन अवश्य मरना ही मरना है।। २ ।। परायी वस्तु के लिए यह इधर उधर रोता भटकता फिरता है और इस प्रकार अपने सभी कर्त्तव्यों और कर्मों को भुलाए बैठा है। प्रभु के हुकुम को नहीं समझता जिस कारण यह जन्म मरण के चक्र में ही पड़ा रहता है और पाप कर्म करते हुए पछताता रहता है।। ३ ।। हे प्रभु, जो तुझे अच्छा लगता है वही हमें स्वीकार है और तेरी रज़ा पर मैं बलिहारी जाता हूं। हे प्रभु, यह गरीब नानक तेरा ही सेवक और बंदा है इसीलिए हे मालिक, तू इसे बचा ले।।४।।१।।२२।। धनासरी मः ५।। मुझ विनम्र और अशक्त को केवल प्रभु-नाम का ही आसरा है और मेरे खाने कमाने योग्य और मेरा रोज़गार प्रभु का नाम ही है। संचय करने के लिए भी एक प्रभु का ही नाम है जो इस लोक और परलोक दोनों में काम आता है।। १ ।। प्रभु के अपार प्रेम के रंग में और उसके नाम में रंगे जाकर साधुजन उस एक निराकार प्रभु के गुण गाते हैं।। रहाउ।। साधुजनों की शोभा यही है कि उनमें अत्यन्त विनम्रता है। संतों की प्रशंसा वास्तव में प्रभु की प्रशंसा करना ही समझा जाता है। उनका आनन्द प्रभु की भक्ति ही है तथा संतों का सुख यही है कि चिन्ताएं विनष्ट हो जाती हैं।। २ ।। साधु संत, जहाँ भी इकट्ठा होते हैं वे संगीत और काव्य के माध्यम से प्रभु यश का गायन करते रहते हैं। साधु जनों की सभा में बैठने पर आनन्द और मन की शान्ति प्राप्त होती है परन्तु उनकी संगत उसी को प्राप्त होती है जिसके मस्तक पर कर्म लेख लिखे होते हैं।।३।। दोनों हाथ जोड़कर मैं विनती करता हूं; प्रभु के चरण धोकर गुणों के भण्डार प्रभु को कहता हूं कि हे प्रभु, दयालु बनकर मुझे अपने सामने ही रखो क्योंकि नानक तो शान्त पुरुषों की चरण धूलि के बल पर ही जीवित बना हुआ है।।४।।२।।२३।।

धनासरी मः ५ ॥ सो कत डरै जि खसमु सम्हारै ॥ डरि डरि पचे मनमुख वेचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिर ऊपरि मात पिता गुरदेव ॥ सफल मूरति जा की निरमल सेव ॥ एकु निरंजनु जा की रासि ॥ मिलि साधसंगति होवत परगास ॥ १ ॥ जीअन का दाता पूरन सभ ठाइ ॥ कोटि कलेस मिटहि हरि नाइ ॥ जनम मरन सगला दुखु नासै ॥ गुरमुखि जा कै मनि तनि बासै ॥ २ ॥ जिस नो आपि लए लड़ि लाइ ॥ दरगह मिलै तिसै ही जाइ ॥ सेई भगत जि साचे भाणे ॥ जमकाल ते भए निकाणे ॥ ३ ॥ साचा साहिबु सचु दरबारु ॥ कीमति कउणु कहै बीचारु ॥ घटि घटि अंतरि सगल अधारु ॥ नानकु जाचै संत रेणारु ॥ ४ ॥ ३ ॥ २४ ॥

धनासरी महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

घरि बाहरि तेरा भरवासा तू जन कै है संगि ॥ करि किरपा प्रीतम प्रभ अपुने नामु जपउ हरि रंगि ॥ १ ॥ जन कउ प्रभ अपने का ताणु ॥ जो तू करहि करावहि सुआमी सा मसलति परवाणु ॥ रहाउ ॥ पति परमेसरु गति नाराइणु धनु गुपाल गुण साखी ॥ चरन सरन नानक दास हरि हरि संती इह बिधि जाती ॥ २ ॥ १ ॥ २५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ सगल मनोरथ प्रभ ते पाए कंठि लाइ गुरि राखे ॥ संसार सागर महि जलनि न दीने किनै न दुतरु भाखे ॥ १ ॥ जिन कै मनि साचा बिस्वासु ॥ पेखि पेखि सुआमी की सोभा आनदु सदा उलासु ॥ रहाउ ॥ चरन सरनि पूरन परमेसुर अंतरजामी साखिओ ॥ जानि बूझि अपना कीओ नानक भगतन का अंकुरु राखिओ ॥ २ ॥ २ ॥ २६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई ॥ रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥ १ ॥ ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ ॥ बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई ॥ सासि सासि संमालता मेरा प्रभु सोई ॥ २ ॥ अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जा का रूपु ॥ जपि जपि करहि अंनदु जन अचरज आनूपु ॥ ३ ॥ सा मति

धनासरी महला ५ ।। जो अपने स्वामी का सुमिरन करता है उसे भला किस बात का डर है; डर डर कर तो बेचारा मनमुख मरता खपता रहता है।। १ ।। रहाउ।। हमारे सिर पर तो हमारे माता पिता रूपी प्रभु हैं जिनके दर्शन सभी फल देने वाले हैं और जिनकी सेवा पवित्र है। एक प्रभु ही जिनकी रास पूंजी है ऐसी साधुसंगत से मिलकर अन्तर्मन में प्रकाश हो जाता है।। १ ।। जीवों का दाता सभी स्थानों में पूर्ण रूप से व्याप्त है। प्रभु नाम से ही करोड़ों क्लेश मिट जाते हैं। जन्म मरण का उनका सारा दुख नष्ट हो जाता है गुरमुख बनकर जिनके मन में प्रभु का वास हो जाता है।। २ ।। जिसको प्रभु स्वयं अपने आंचल का सहारा दे देता है उसे ही प्रभु के दरबार में स्थान प्राप्त हो जाता है। भक्त जन वे ही हैं जो प्रभु को भाते हैं और वे ही यम के भय से मुक्त अर्थात निडर हो जाते हैं।। ३ ।। उस सच्चे प्रभु का दरबार भी सच्चा ही है और उसके बड़प्पन का विचार कौन कर सकता है। वह घर घर में बसा हुआ सबका आसरा है और नानक तो शान्त पुरुषों की चरण धूलि की कामना करता रहता है।। ४ ।। ३ ।। २४ ।।

धनासरी महला ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मुझे घर बाहर तेरा ही भरोसा है और तू ही इस सेवक के साथ बना रहने वाला है। हे मेरे प्रियतम प्रभु, तुम कृपा करो ताकि मैं हरि रंग में रंगा हुआ नाम का सुमिरन करता रहूं।। १ ।। सेवक को तो अपने प्रभु के बल का ही सहारा है। हे स्वामी, तू जो भी करता कराता हैं हमें वही तुम्हारा परामर्श स्वीकार है और वही हमारे लिए प्रामाणिक है।। रहाउ।। प्रभु ही दासों की इज्ज़त है, मुक्ति है और उनका धन प्रभु की कथाएं और वार्ता ही है। उसके सेवक उसके चरणों की शरण में आ गए हैं और हे नानक, इन शान्त पुरुषों ने यह उपर कही बात समझ ली है।। २ ।। १ ।। २५ ।। धनासरी मः ५ ।। सभी उद्देश्य प्रभु के माध्यम से सिद्ध हो गए हैं और गले लगाकर गुरु ने हमें बचा लिया है। संसार सागर में उसने हमें जलने नहीं दिया और अब कोई भी नहीं कहता है कि इस सागर को तैरना कठिन है।। १ ।। जिनके मन में सच्चा विश्वास है वे सदैव स्वामी प्रभु की शोभा देख देख कर आनन्दमय एवं उल्लासमय बने रहते हैं।। रहाउ।। हमने उस पूर्ण परमेश्वर की चरणों की शरण ले ली है और अन्तर्यामी प्रभु को प्रत्यक्ष देख लिया है। देख परख कर प्रभु ने हमें अपना दास बना लिया है और हे नानक, भक्तों की भक्ति के पनपते हुए अंकुर को उसने बचा लिया है।। २ ।। २ ।। २६ ।। धनासरी मः ५ ।। जहां जहां भी मैं देखता हूं वह प्रत्यक्ष दिखाई देता है और किसी जगह पर भी वह मुझसे दूर नहीं होता। वह सर्वत्र रमण कर रहा है इसलिए हे मेरे मन सदैव उसका सुमिरन कर।। १ ।। इस लोक और परलोक में भी जो बिछुड़ने वाला नहीं है उस प्रभु को ही वास्तविक संगी साथी मानना चाहिए। जो क्षण भर में नष्ट होने वाला है उसको तो बहुत ही छोटा सुख कहा जाएगा।। रहाउ।। जो पालन पोषण करता है उसके देते रहने में कभी भी कमी नहीं आती; जो प्रत्येक श्वास के साथ मुझे संभाले रहता है वास्तव में वह मेरा प्रभु ही है।। २ ।। जिसे कोई धोखा न दे सके, जिसे कोई तोड़ न सके जो अपंरपर है उस प्रभु का रूप बहुत ही महान है। वह प्रभु ऐसा आश्चर्य और अनुपम है कि उसका सुमिरन करते हुए सेवक आनन्दित ही बने रहते हैं।। ३ ।। हे दयालु प्रभु, मुझे ऐसी बुद्धि

देहु दइआल प्रभ जितु तुमहि अराधा ॥ नानकु मंगै दानु प्रभ रेन पग साधा ॥ ४ ॥ ३ ॥ २७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ ॥ अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ ॥ १ ॥ तुम घरि आवहु मेरे मीत ॥ तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत ॥ रहाउ ॥ प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके ॥ घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे ॥ २ ॥ असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि ॥ जै जै कारु सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार ॥ ३ ॥ जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई ॥ अचरजु कीआ करनैहारै नानक सचु वडिआई ॥ ४ ॥ ४ ॥ २८ ॥

धनासरी महला ५ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुनहु संत पिआरे बिनउ हमारे जीउ ॥ हरि बिनु मुकति न काहू जीउ ॥ रहाउ ॥ मन निरमल करम करि तारन तरन हरि अवरि जंजाल तेरै काहू न काम जीउ ॥ जीवन देवा पारब्रहम सेवा इहु उपदेसु मोकउ गुरि दीना जीउ ॥ १ ॥ तिसु सिउ न लाईऐ हीतु जा को किछु नाही बीतु अंत की बार ओहु संगि न चालै ॥ मनि तनि तू आराध हरि के प्रीतम साध जा कै संगि तेरे बंधन छूटै ॥ २ ॥ गहु पारब्रहम सरन हिरदै कमल चरन अवर आस कछु पटलु न कीजै ॥ सोई भगतु गिआनी धिआनी तपा सोई नानक जा कउ किरपा कीजै ॥ ३ ॥ १ ॥ २९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मेरे लाल भलो रे भलो रे भलो हरि मंगना ॥ देखहु पसारि नैन सुनहु साधू के बैन प्रानपति चिति राखु सगल है मरना ॥ रहाउ ॥ चंदन चोआ रस भोग करत अनेकै बिखिआ बिकार देखु सगल है फीके एकै गोबिद को नामु नीको कहत है साध जन ॥ तनु धनु आपन थापिओ हरि जपु न निमख जापिओ अरथु द्रबु देखु कछु संगि नाही चलना ॥ १ ॥ जा को रे करमु भला तिनि ओट गही संत पला तिन नाही रे जमु संतावै साधू की संगना ॥ पाइओ रे परम निधानु मिटिओ है अभिमानु एकै निरंकार नानक मनु लगना ॥ २ ॥ २ ॥ ३० ॥

प्रदान करो जिससे मैं तुम्हारी आराधना करता रहूं। नानक तो हे प्रभु, तुझसे साधुजनों की चरण धूलि का ही दान माँगता है।। ४ ।। ३ ।। २७।। धनासरी मः ५ ।। जिस प्रभु ने तुम्हें भेजा है वही प्रभु तुम्हें वापस बुलाता है इसलिए सहज भाव में सुखपूर्वक वापिस अपने घर आ जाओ। आनन्द देने वाले मंगल गीतों का गायन करो और सहज की धुन में आनन्दित होते हुए अटल राज बनाने वाला आचरण करो।। १ ।। हे मेरे मित्र, तुम अपने घर (निज स्वरूप) में आ जाओ। तुमसे शत्रुभाव रखने वालों को प्रभु ने स्वयं ही दूर कर दिया है और मुसीबत का समय अब निकल गया है।। रहाउ।। प्रभु ने स्वयं अपने आपको मन में प्रकट कर लिया है जिससे मेरी भाग दौड़ अब समाप्त हो गई है। मेरे मालिक ने कृपा की है कि मेरे अन्तर्मन में अब सदैव मांगलिक वाद्य बजते रहते हैं।। २ ।। गुरु के वचनों का आश्रय लेते हुए कभी भी मत डोलो और सदैव स्थिर बने रहो। इस से इस संसार में भी जय जयकार होती है और प्रभु के दरबार में भी मुख उज्जवल होता है।। ३ ।। जिस प्रभु के द्वारा हम पैदा किए हुए जीव हैं उसी ने ही हमारी हालत बदली है और वह ही हमारा सहायक बना है। उस कर्णहार प्रभु ने आश्चर्यपूर्ण कार्य ही किया है और हे नानक, उसकी महानता ही सत्य है।। ४ ।। २८।।

धनासरी महला ५ घरु ६ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्यारे शान्त पुरुषो, हमारी विनती को ध्यान से सुन लो कि प्रभु के आर्शीवाद के बिना किसी भी अन्य विधि से मुक्ति नहीं हो सकती।। रहाउ।। हे मन, तू निर्मल कर्म कर, तैरने और पार उतारने वाला प्रभु ही है; दूसरे सब झंझट तेरे किसी काम नहीं आएंगे। यह जीवन परब्रह्म प्रभु की सेवा के लिए ही है, ऐसा उपदेश मुझे गुरु ने दिया है।। १ ।। जिसकी अपनी कोई हैसियत नहीं है उसके साथ प्रेम नहीं लगाना चाहिए क्योंकि अंत में वह साथ नहीं जाता। तन मन से तू प्रभु की आराधना कर और उस प्रियतम की साधना में लगा रह जिसके साथ रहने से तेरे बन्धन छूट जाएंगे।। २।। प्रभु की शरण पकड़ ले और हृदय में उनके चरण कमलों को बसा ले तथा अन्य किसी भी आश्रय की आस मत रख। हे नानक, वही व्यक्ति, भक्त, ज्ञानवान और ज्ञानी है जिस पर प्रभु कृपा करता है।। ३ ।। १ ।। २९।। धनासरी मः ५।। मेरा प्यारा प्रभु भला है और प्रभु का नाम मांगना ही सबसे भला है। आंखे खोलकर देखो और साधुजनों के इन वचनों को सुनो कि उस प्राणपति प्रभु को चित्त में धारण किए रहना चाहिए क्योंकि बाकी सबने तो नष्ट हो जाना है।। रहाउ।। चंदन, सुगन्ध, रसभोग करते हुए यह समझ ले कि विषय विकार सभी फीके हैं और साधुजन केवल एक प्रभु के नाम को ही सुन्दर बताते हैं। तूने इस तन धन को अपना समझ लिया है और क्षण भर के लिए भी प्रभु के नाम का जाप नहीं किया; धन-सम्पदा को देख ले इसमें से कुछ भी तेरे साथ चलने वाला नहीं है।। १ ।। जिसके कर्म अच्छे हैं उसने सन्तजनों के पल्लू को थाम लिया है और साधु पुरुषो के संग रहने के कारण उन्हें यम नहीं सताता। मैंने परम महान खजाना पा लिया है, मेरा अभिमान मिट गया है और हे नानक, एक प्रभु में ही मेरा मन लग गया है।। २ ।। २ ।। ३०।।

धनासरी महला ५ घरु ७ ੧ओ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि एकु सिमरि एकु सिमरि एकु सिमरि पिआरे ॥ कलि कलेस लोभ मोह महा भउजलु तारे ॥ रहाउ ॥ सासि सासि निमख निमख दिनसु रैनि चितारे ॥ साधसंग जपि निसंग मनि निधानु धारे ॥ १ ॥ चरन कमल नमसकार गुन गोबिद बीचारे ॥ साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

धनासरी महला ५ घरु ८ दुपदे ੧ओ सतिगुर प्रसादि ॥

सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ सासि सासि समाले ॥ इह लोकि परलोकि संगि सहाई जत कत मोहि रखवाले ॥ १ ॥ गुर का बचनु बसै जीअ नाले ॥ जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले ॥ सागर महि बोहिथु पाइओ हरि नानक करी क्रिपा किरपाले ॥ २ ॥ १ ॥ ३२ ॥ धनासरी महला ५ ॥ भए क्रिपाल दइआल गोबिंदा अंम्रितु रिदै सिंचाई ॥ नव निधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ॥ १ ॥ संतन कउ अनदु सगल ही जाई ॥ ग्रिहि बाहरि ठाकुरु भगतन का रवि रहिआ स्रब ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता कउ कोइ न पहुचनहारा जा कै अंगि गुसाई ॥ जम की त्रास मिटै जिसु सिमरत नानक नामु धिआई ॥ २ ॥ २ ॥ ३३ ॥ धनासरी महला ५ ॥ दरबवंतु दरबु देखि गरबै भूमवंतु अभिमानी ॥ राजा जानै सगल राजु हमरा तिउ हरि जन टेक सुआमी ॥ १ ॥ जे कोऊ अपुनी ओट समारै ॥ जैसा बितु तैसा होइ वरतै अपुना बलु नही हारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन तिआगि भए इक आसर सरणि सरणि करि आए ॥ संत अनुग्रह भए मन निरमल नानक हरि गुन गाए ॥ २ ॥ ३ ॥ ३४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा ॥ आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का

धनासरी मः ५ घरु ७ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्यारे उस एक प्रभु का ही सुमिरन करता रह। वह कलह, क्लेश और लोभ-मोह के संसार-समुद्र से पार उतार देता है।। रहाउ।। उसे प्रत्येक श्वास के साथ और प्रत्येक क्षण दिन रात याद रखना चाहिए। साधसंगत के माध्यम से मन में गुणों के भण्डार प्रभु को बसा कर निडर होकर उसका जाप करो।। १ ।। उस प्रभु के चरण कमलों में प्रणाम करो और उसके गुणों का चिंतन करो। साधु पुरुषों की चरण-धूलि हे नानक, मंगलमयी और आनन्द देने वाली होती है।। २ ।। १ ।। ३१ ।।

धनासरी महला ५ घरु ८ दोपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

उसका सुमिरन करते हुए सुख प्राप्त करो और प्रत्येक श्वास के साथ उसे हृदय में धारण किए रहो। वह प्रभु ही लोक-परलोक में सहायक होता है और यहां वहां मोह से हमारी रक्षा करता है।। १ ।। गुरु का वचन तो अंत तक प्राणों के साथ बना रहता है। शब्द-गुरु को जल नहीं डुबा सकता, चोर नहीं चुरा सकता और अग्नि नहीं जला सकती।। १ ।। रहाउ।। जिस प्रकार निर्धन का आसरा धन है, अंधे व्यक्ति को जैसे अपनी टेक का आसरा है और बच्चे को जैसे दूध का आसरा बना रहता है इसी प्रकार संसार-सागर में प्रभु-नाम का जहाज मैंने पा लिया है और हे नानक, उस कृपालु प्रभु ने मुझ पर कृपा कर दी है।। २ ।। १ ।। ३२ ।। धनासरी मः ५ ।। जब उसके अमृत नाम को हृदय में सींच लिया गया तो वह प्रभु मुझ पर दयालु हो उठा। नवनिधियां, ऋद्धियां, सिद्धियां आदि प्रभु के सेवक के चरणों में पड़ी रहती हैं।। १ ।। शान्त पुरुषों को तो सभी स्थानों पर आनन्द ही आनन्द बना रहता है। घर बाहर अर्थात सभी स्थानों पर वह मालिक प्रभु भक्तों का होकर रहता है जो सभी स्थानों में व्याप्त होकर रमण कर रहा है।। १ ।। रहाउ।। उसे कोई भी स्पर्श नहीं कर सकता जिसके साथ धरती का पालक वह प्रभु बना रहता है। हे नानक, जिसका सुमिरन करने से यम का भय समाप्त हो जाता है तू उसी के नाम की आराधना करता रह।। २ ।। २ ।। ३३।। धनासरी मः ५ ।। धन सम्पत्ति का मालिक अपने धन को देखकर अभिमान करता है और ज़मीन का मालिक अपनी धरती का ही अभिमान करता है। राजा यह जानता है कि सारा राज्य तो मेरा ही है; इसी प्रकार प्रभु के सेवक को तो केवल अपने मालिक प्रभु का ही आसरा होता है।। १ ।। यदि कोई व्यक्ति अपने बल पर प्रभु को याद रखे तो जितनी उसकी शक्ति है वह वैसा ही होकर काम करेगा अर्थात प्रभु का आसरा लेने से प्रभु पूरी शक्ति के साथ सहायक बनता है।। १ ।। रहाउ।। हम अन्य सब कुछ छोड़कर एक प्रभु के आश्रय को धारण कर उसकी शरण में ही आ गए हैं। शान्त पुरुषों की कृपा से हे नानक, प्रभु के गुण गाने के फलस्वरूप हमारे मन निर्मल हो गए हैं।। २ ।। ३ ।। ३४ ।। धनासरी मः ५।। जिसे इस युग में प्रभु के प्रेम का रंग लग गया है उसे ही वास्तविक शूरवीर कहा जाता है। जिसका

सतिगुरु पूरा ॥ १ ॥ ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि ॥ सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन के चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही ॥ जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु एही ॥ २ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जतन करै मानुख डहकावै ओहु अंतरजामी जानै ॥ पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै ॥ १ ॥ जानत दूरि तुमहि प्रभ नेरि ॥ उत ताकै उत ते उत पेखै आवै लोभी फेरि ॥ रहाउ ॥ जब लगु तुटै नाही मन भरमा तब लगु मुकतु न कोई ॥ कहु नानक दइआल सुआमी संतु भगतु जनु सोई ॥ २ ॥ ५ ॥ ३६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ नामु गुरि दीओ है अपुनै जा कै मसतकि करमा ॥ नामु द्रिड़ावै नामु जपावै ता का जुग महि धरमा ॥ १ ॥ जन कउ नामु वडाई सोभ ॥ नामो गति नामो पति जन की मानै जो जो होग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम धनु जिसु जन कै पालै सोई पूरा साहा ॥ नामु बिउहारा नानक आधारा नामु परापति लाहा ॥ २ ॥ ६ ॥ ३७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ नेत्र पुनीत भए दरसु पेखे माथै परउ रवाल ॥ रसि रसि गुण गावउ ठाकुर के मोरै हिरदै बसहु गोपाल ॥ १ ॥ तुम तउ राखनहार दइआल ॥ सुंदर सुघर बेअंत पिता प्रभ होहु प्रभू किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा अनंद मंगल रूप तुमरे बचन अनूप रसाल ॥ हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बांधिओ पाल ॥ २ ॥ ७ ॥ ३८ ॥ धनासरी महला ५ ॥ अपनी उकति खलावै भोजन अपनी उकति खेलावै ॥ सरब सूख भोग रस देवै मन ही नालि समावै ॥ १ ॥ हमरे पिता गोपाल दइआल ॥ जिउ राखै महतारी बारिक कउ तैसे ही प्रभ पाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीत साजन सरब गुण नाइक सदा सलामति देवा ॥ ईत ऊत जत कत तत तुम ही मिलै नानक संत सेवा ॥ २ ॥ ८ ॥ ३९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ संत क्रिपाल दइआल दमोदर काम क्रोध बिखु जारे ॥ राजु मालु जोबनु तनु जीअरा इन ऊपरि लै बारे ॥ १ ॥ मनि तनि राम नाम हितकारे ॥ सूख सहज आनंद मंगल सहित भव निधि पारि उतारे ॥ रहाउ ॥

सच्चा गुरु पूर्ण गुरु है वह अपनी आत्मा को भी जीत लेता है और सब कुछ उसके वश में आ जाता है।। १ ।। आत्मा को पूर्ण रूप से रंग कर उस प्रभु का गुणानुवाद किया जाना चाहिए। उसके नाम का सुमिरन किया जाए तो वह अपनी शरण में ले लेता है और उसकी संगत करने से व्यक्ति पूर्ण रूप से स्थिरता में लीन हो जाता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के सेवकों के चरण मेरे हृदय में बस जाएं और उनकी संगत में मेरा शरीर पवित्र हो जाए। हे कृपा के भण्डार प्रभु, नानक का सुख तो इसी में है कि उसे अपने सेवकों की चरण-धूलि प्रदान करो।। २ ।। ४ ।। ३५।। धनासरी मः ५ ।। व्यक्ति कोशिश करता है कि अन्य लोगों को धोखा दिया जा सके परन्तु वह अन्तर्यामी प्रभु सब कुछ जानता रहता है। व्यक्ति पाप करता है और इनकार करता है तथा माया से मुक्त हो चुके पुरुषों जैसा वेष करके दिखाता है।। १ ।। हे प्रभु, व्यक्ति तुझे दूर समझता है परन्तु तुम तो पास ही हो। व्यक्ति इधर उधर देखता है और लालची बनकर बार बार फिर धन सम्पदा की ओर ही आता है।। रहाउ।। जब तक मन का भ्रम दूर नही होता तब तक मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। नानक का कथन है कि जिस पर प्रभु दयालु हो जाए वही जीव भक्त है और वही शान्त पुरुष है।। २ ।। ५ ।। ३६।। धनासरी मः ५ ।। जिसके मस्तक पर भाग्य लेख लिखे हैं प्रभु रूपी गुरु ने उसे अपना नाम प्रदान किया है। ऐसा व्यक्ति प्रभु-नाम ही हृदय में पक्का करता है, प्रभु-नाम का ही सुमिरन करवाता है और यही उसके इस जीवन का कर्त्तव्य बन जाता है।। १ ।। सेवक के पास ही प्रभु-नाम का बड़प्पन और शोभा होती है। प्रभु-नाम में ही उसकी मुक्ति, प्रभु-नाम में ही उसका सम्मान होता है और जो जो भी होता है और होने वाला है वह उसको भला समझकर मानता है।। १ ।। रहाउ।। जिसके पल्ले में प्रभु-नाम रूपी धन है वही पूर्ण साहूकार है। प्रभु-नाम ही उसका व्यवहार है और हे नानक, प्रभु-नाम ही उसका आधार है। यही उसकी प्राप्ति है और यही उसका लाभ है।। २ ।। ६ ।। ३७।। धनासरी मः ५ ।। उस प्रभु का दर्शन करके हमारे नेत्र पवित्र हो गए हैं, हमारे माथे पर उसकी चरण-धूलि पड़ती रहे जिससे मैं प्रेम में भीग कर उस मालिक प्रभु के गुण गाता रहूं तथा हे पृथ्वी का पालन पोषण करने वाले प्रभु, मेरे हृदय में बसे रहो।। १ ।। हे दयालु, तुम ही मेरे रक्षक हो, तुम ही सुन्दर, सयाने, अनन्त प्रभु रूपी पिता हो और हे प्रभु तुम ही मुझ पर कृपालु बने रहो।। १ ।। रहाउ।। तुम्हारा रूप महान आनन्द देने वाला और मंगलदायक है और तुम्हारे वचन अनुपम एवं मीठे हैं इसीलिए हे प्रभु, मैंने हृदय में तुम्हारे चरणों का ध्यान किया है और नानक ने तुम्हारे शब्द को पल्ले से बांधा हुआ है।। २ ।। ७ ।। ३८।। धनासरी महला ५ ।। प्रभु अपनी विधि से ही हमें खेल खिलाता है; वह सभी सुख और भोगने वाले रस प्रदान करता है और हमारे मन के साथ ही बना रहता है।। १ ।। हे प्रभु, तुम ही हमारे दयालु पिता हो। जिस प्रकार माँ बच्चे को संभालती है इसी प्रकार हे प्रभु, तुम हम सबका पालन करते हो।। १ ।। रहाउ।। वह प्रभु ही हमारा मित्र और सज्जन है, सभी गुणों का मालिक है, और सदैव सलामत बना रहने वाला परमेश्वर है। यहां-वहां यत्र-तत्र हे प्रभु, तुम ही हो और हे नानक, वह शान्त पुरुषों की सेवा करने से ही प्राप्त होता है।। २ ।। ८ ।। ३९।। धनासरी मः ५ ।। वह प्रभु ही शान्त पुरुष, कृपालु, दयालु, दामोदर है और काम, क्रोध रूपी विष को जला देने वाला है। राज, माल, यौवन, शरीर, और मन सब कुछ प्रभु के इन रूपों पर मैं कुर्बान कर देता हूं।। १ ।। तन मन से प्रभु-नाम के साथ प्रेम किया जाना चाहिए क्योंकि प्रभु-नाम ही सहज सुख और आनन्द मंगल के साथ संसार समुद्र से पार उतार देता है।। रहाउ।।

धंनि सु थानु धंनि ओइ भवना जा महि संत बसारे ॥ जन नानक की सरधा पूरहु ठाकुर भगत तेरे नमसकारे ॥ २ ॥ ९ ॥ ४० ॥ धनासरी महला ५ ॥ छडाइ लीओ महाबली ते अपने चरन पराति ॥ एकु नामु दीओ मन मंता बिनसि न कतहू जाति ॥ १ ॥ सतिगुरि पूरै कीनी दाति ॥ हरि हरि नामु दीओ कीरतन कउ भई हमारी गाति ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै भगतन की राखी पाति ॥ नानक चरन गहे प्रभ अपने सुखु पाइओ दिन राति ॥ २ ॥ १० ॥ ४१ ॥ धनासरी महला ५ ॥ पर हरना लोभु झूठ निंद इव ही करत गुदारी ॥ म्रिग त्रिसना आस मिथिआ मीठी इह टेक मनहि साधारी ॥ १ ॥ साकत की आवरदा जाइ ब्रिथारी ॥ जैसे कागद के भार मूसा टूकि गवावत कामि नही गावारी ॥ रहाउ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी इह बंधन छुटकारी ॥ बूडत अंध नानक प्रभ काढत साध जना संगारी ॥ २ ॥ ११ ॥ ४२ ॥ धनासरी महला ५ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सीतल तनु मनु छाती ॥ रूप रंग सूख धनु जीअ का पारब्रहम मोरै जाती ॥ १ ॥ रसना राम रसाइनि माती ॥ रंग रंगी राम अपने कै चरन कमल निधि थाती ॥ रहाउ ॥ जिस का सा तिन ही रखि लीआ पूरन प्रभ की भाती ॥ मेलि लीओ आपे सुखदातै नानक हरि राखी पाती ॥ २ ॥ १२ ॥ ४३ ॥ धनासरी महला ५ ॥ दूत दुसमन सभि तुझ ते निवरहि प्रगट प्रतापु तुमारा ॥ जो जो तेरे भगत दुखाए ओहु ततकाल तुम मारा ॥ १ ॥ निरखउ तुमरी ओरि हरि नीत ॥ मुरारि सहाइ होहु दास कउ करु गहि उधरहु मीत ॥ रहाउ ॥ सुणी बेनती ठाकुरि मेरै खसमाना करि आपि ॥ नानक अनद भए दुख भागे सदा सदा हरि जापि ॥ २ ॥ १३ ॥ ४४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ चतुर दिसा कीनो बलु अपना सिर ऊपरि करु धारिओ ॥ क्रिपा कटाख्य अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिओ ॥ १ ॥ हरि जन राखे गुर गोविंद ॥ कंठि लाइ अवगुण सभि मेटे दइआल पुरख बखसंद ॥ रहाउ ॥ जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै ॥ नानक दासु मुख ते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै ॥ २ ॥ १४ ॥ ४५ ॥

वह स्थान वह भवन धन्य है जहां शान्त पुरुष बसते हैं। हे प्रभु, दास नानक की इच्छा पूरी करो; मैं तेरे भक्त जनों को प्रणाम करता हूं।। २ ।। ६ ।। ४० ।। धनासरी मः ५ ।। मुझे अपने चरणों में डालकर महाबलशाली माया से छुटकारा दिला दिया। एक प्रभु का नाम मेरे मन में बसा दिया है जोकि न तो नष्ट होता है और न कहीं जाता है।। १ ।। सच्चे गुरु ने मुझे पूर्ण दान दिया है; कीर्ति गायन करने के लिए प्रभु ने अपना नाम दिया है जिससे हमारी मुक्ति हो गई है।। रहाउ।। प्रभु ने अपने भक्तों का पक्ष लिया है और उनके सम्मान को बचा लिया है। नानक ने तो अपने प्रभु के चरण पकड़ लिए हैं जिससे उसे दिन रात सुख प्राप्त होता है।। २ ।। १० ।। ४१।। धनासरी मः ५ ।। चोरी करना, लोभ में पड़े रहना, झूठ बोलना और निन्दा करने में ही व्यक्ति ने सारी आयु गुज़ार दी। मृगतृष्णा के समान झूठी आशाओं को मीठा करके जाना है और उस प्रभु के आश्रय को मन में धारण किया है।। १ ।। प्रभु से टूटे व्यक्ति की आयु व्यर्थ ही ऐसे गुज़र जाती है जिस प्रकार चूहा कागज़ के ढेर काट कर व्यर्थ बना देता है परन्तु वह कुतरा हुआ कागज़ उसके किसी काम नहीं आता।। रहाउ।। हे परब्रह्म स्वामी प्रभु, तू कृपा कर और इन बन्धनों से छुटकारा दिला दे। हे नानक, अंधे डूबते हुए जीवों को प्रभु साधसंगत के साथ मिलाकर संसार सागर से बाहर निकाल लेता है।। २ ।। ११ ।। ४२ ।। धनासरी मः ५ ।। अपने प्रभु का बार-बार सुमिरन करने से मन, तन और हृदय शीतल हो जाते हैं। प्रभु के रूप रंग का सुख मेरे प्राणों के साथ निभने वाला है और परब्रह्म प्रभु ही मेरी जाति है अर्थात जैसा अभिमान तथाकथित ऊँची जाति वालों को होता है मुझे भी परमात्मा पर वैसा ही गर्व है।। १ ।। मेरी जीभ राम नाम रूपी रसायन में मस्त हो गई है। यह जीभ अपने प्रभु के प्रेम में रंगी है और प्रभु के चरण कमल हमारे लिए धन की थैली हैं।। रहाउ।। जिस प्रभु का यह जीव था उसी ने ही उसकी रक्षा की है और रक्षा करने की प्रभु की विधि पूर्ण एवं उत्तम है। उस सुखदाता प्रभु ने स्वयं ही मुझे अपने से मिला लिया है और हे नानक, प्रभु ने ही मेरी इज्ज़त बचा ली है।। २ ।। १२ ।। ४३ ।। धनासरी मः ५ ।। दुष्ट और शत्रु सब तेरे हाथों से ही नष्ट होते हैं और हे प्रभु, तुम्हारा प्रताप सबके लिए प्रत्यक्ष है। जिस जिसने भी तेरे भक्तों को दुख दिया है उसे तुमने तत्काल ही मार गिराया है।। १ ।। हे प्रभु, मैं सदैव तुम्हारी ओर ही देखता हूं। हे प्रभु, अपने दास की सहायता करो और हाथ पकड़ कर हे मित्र, मेरा उद्धार कर लो।। रहाउ।। प्रभु ने मेरी विनती को सुना और मालिक होने के अपने फर्ज को निभाया है। हे नानक, सदैव प्रभु का सुमिरन करने से आनन्द बना रहा और दुख भाग खड़े हुए हैं।। २ ।। १३ ।। ४४ ।। धनासरी मः ५ ।। चारों दिशाओं में प्रभु ने अपने बल को प्रकट किया और हमारे सिर पर हाथ बनाए रखा। कृपा की दृष्टि से उसने हमें देखा और इस दास का सारा दुख नष्ट कर दिया है।। १ ।। उस परमात्मा गुरु ने अपने सेवकों की रक्षा कर ली; उस दयालु क्षमाशील प्रभु ने हमें गले से लगाकर हमारे सभी अवगुणों को मिटा दिया।। रहाउ।। अपने स्वामी से जो मांगा जाता है वह देता ही जाता है। हे नानक, प्रभु का दास अपने मुख से जो कुछ भी बोलता है वह इस लोक और परलोक दोनों में ही सच्चा सिद्ध होता है।। २ ।। १४ ।। ४५।।

धनासरी महला ५ ॥ अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥ हाथ देइ राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥ १ ॥ प्रभ सिउ लागि रहिओ मेरा चीतु ॥ आदि अंति प्रभु सदा सहाई धंनु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥ मनि बिलास भए साहिब के अचरज देखि बडाई ॥ हरि सिमरि सिमरि आनद करि नानक प्रभि पूरन पैज रखाई ॥ २ ॥ १५ ॥ ४६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहु अभागा ॥ चरन कमल जा का मनु रागिओ अमिअ सरोवर पागा ॥ १ ॥ तेरा जनु राम नाम रंगि जागा ॥ आलसु छोजि गइआ सभु तन ते प्रीतम सिउ मनु लागा ॥ रहाउ ॥ जह जह पेखउ तह नाराइण सगल घटा महि तागा ॥ नाम उदकु पीवत जन नानक तिआगे सभि अनुरागा ॥ २ ॥ १६ ॥ ४७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जन के पूरन होए काम ॥ कली काल महा बिखिआ महि लजा राखी राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना निकटि न आवै जाम ॥ मुकति बैकुंठ साध की संगति जन पाइओ हरि का धाम ॥ १ ॥ चरन कमल हरि जन की थाती कोटि सूख बिस्राम ॥ गोबिंदु दमोदर सिमरउ दिन रैनि नानक सद कुरबान ॥ २ ॥ १७ ॥ ४८ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मांगउ राम ते इकु दानु ॥ सगल मनोरथ पूरन होवहि सिमरउ तुमरा नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन तुम्हारे हिरदै वासहि संतन का संगु पावउ ॥ सोग अगनि महि मनु न विआपै आठ पहर गुण गावउ ॥ १ ॥ स्वसति बिवसथा हरि की सेवा मध्यंत प्रभ जापण ॥ नानक रंगु लगा परमेसर बाहुड़ि जनम न छापण ॥ २ ॥ १८ ॥ ४९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मांगउ राम ते सभि थोक ॥ मानुख कउ जाचत स्रमु पाईऐ प्रभ कै सिमरनि मोख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोखे मुनि जन सिंम्रिति पुरानां बेद पुकारहि घोख ॥ क्रिपा सिंधु सेवि सचु पाईऐ दोवै सुहेले लोक ॥ १ ॥ आन अचार बिउहार है जेते बिनु हरि सिमरन फोक ॥ नानक जनम मरण भै काटे मिलि साधू बिनसे सोक ॥ २ ॥ १९ ॥ ५० ॥ धनासरी महला ५ ॥ त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥ महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन

धनासरी मः ५ ।। प्रभु अपने सेवक पर दुख का समय नहीं आने देता और अपने बिरद पालक स्वभाव को पूरा करता है। अपने दास को वह हाथ देकर बचा लेता है और उसके प्रत्येक श्वास के साथ पालन पोषण करता रहता है।। १ ।। उस प्रभु के साथ मेरा चित्त प्रेम पूर्वक लगा रहता है। वह प्रभु ही आदि, अंत में सदा सहायक बना रहता है और वह हमारा मित्र धन्य है।। रहाउ।। प्रभु के आश्चर्यजनक कौतुक और महानता देखकर मेरे मन में बहुत ही प्रसन्नता का अनुभव हुआ है। हे नानक, प्रभु का सुमिरन करते हुए आनन्दित बना रह क्योंकि प्रभु ने ही हमारी पूरी इज्ज़त बचा दी है।। २ ।। १५ ।। ४६।। धनासरी मः ५ ।। जिसे वह प्राणपति दाता विस्मृत हो जाता है उसे तो बहुत बड़ा अभागा जानना चाहिए। जिसके मन को प्रभु के चरण कमलों से प्रेम हो गया है वह तो अमृत के सरोवर में पूर्ण रूप में रंग गया है।। १ ।। हे प्रभु, तेरा सेवक राम नाम में रंगकर सावधान हो गया है। अब उसके तन से आलस्य नष्ट हो गया है और उसका मन उस प्रियतम प्रभु में लग गया है।। रहाउ।। जहां जहां मैं देखता हूं वहां प्रभु व्याप्त दिखाई देता है और वह घट घट में सूत्र की तरह पिरोया हुआ है। प्रभु--नाम रूपी जल को पीते ही हे नानक, प्रभु के सेवक ने सभी मोह, प्यार छोड़ दिया है।। २ ।। १६ ।। ४७।। धनासरी मः ५ ।। प्रभु के सेवक के सभी काम पूरे हो गए हैं; कलियुग के अत्यन्त विष पूर्ण समय में प्रभु ने हमारी इज्ज़त रख ली है।। १ ।। रहाउ।। अपने स्वामी प्रभु का सुमिरन किया जाना चाहिए क्योंकि फिर यम व्यक्ति के पास नहीं आता अर्थात आवागमन का चक्र समाप्त हो जाता है। प्रभु के सेवक ने प्रभु के निवास स्थान को पा लिया है; वह निवास स्थान साधसंगत है जहां मुक्ति और स्वर्ग प्राप्त होता है।। १ ।। प्रभु के सेवक के लिए प्रभु के चरण कमल ही उसके धन की थैली है जिसमें से उसे करोड़ों सुख और आराम प्राप्त होते है। हे नानक, सदैव बलिहारी जाते हुए उस प्रभु का दिन रात सुमिरन करते रहना चाहिए।। २ ।। १७ ।। ४८।। धनासरी मः५ ।। मैं उस प्रभु से एक ही दान मांगता हूं कि हे प्रभु, मैं तुम्हारे नाम का सुमिरन करता रहूं जिससे मेरे सभी उद्देश्य पूर्ण हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ।। तुम्हारे चरण मेरे हृदय में बसे रहें और शान्त पुरुषों की संगत को मैं प्राप्त करूँ। मेरे मन में शोक की अग्नि कभी भी न भड़के और आठों प्रहर मैं प्रभु के गुण गाता रहूं।। १ ।। बालकपन की अवस्था में मैं प्रभु की सेवा करूं और जवानी बुढ़ापे में उस प्रभु का जाप करता रहूं। हे नानक, जब उस परमेश्वर के प्रेम का रंग लग गया तो फिर दुबारा मेरा आवागमन नहीं होगा।। २ ।। १८ ।। ४६।। धनासरी मः ५ ।। मैं प्रभु से ही सब पदार्थ मांगता हूं। व्यक्ति से मांगने पर तो बहुत मेहनत के बाद भी भटकन ही प्राप्त होती है; केवल प्रभु के सुमिरन से ही मुक्ति मिलती है।। १ ।। रहाउ।। मुनिजनों ने स्मृति और पुराणों का गहन अध्ययन किया है और वेद भी बहुत चिन्तन के बाद पुकार कर यही कहते हैं कि कृपा के समुद्र उस प्रभु का सुमिरन करने से ही सत्य प्राप्त होता है और दोनों लोक सुखदायक बन जाते हैं।। १ ।। अन्य जितने भी आचार व्यवहार हैं; प्रभु सुमिरन के बिना वे सभी खोखले हैं। हे नानक, साधु पुरुषों के मिलाप से जन्म मरण का भय कट जाता है और सभी प्रकार के शोक विनष्ट हो जाते हैं।। २ ।। १६ ।। ५० ।। धनासरी मः ५ ।। प्रभु के नाम से ही व्यक्ति की तृष्णा बुझती है। गुरु के उपदेश के माध्यम से अनन्त सन्तोष प्राप्त होता है और प्रभु के साथ पूर्ण रूप से

धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा कलोल बुझहि माइआ के करि किरपा मेरे दीन दइआल ॥ अपणा नामु देहि जपि जीवा पूरन होइ दास की घाल ॥ १ ॥ सरब मनोरथ राज सूख रस सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम ॥ जिस कै करमि लिखिआ धुरि करतै नानक जन के पूरन काम ॥ २ ॥ २० ॥ ५१ ॥ धनासरी मः ५ ॥ जन की कीनी पारब्रहमि सार ॥ निंदक टिकनु न पावनि मूले ऊडि गए बेकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह जह देखउ तह तह सुआमी कोइ न पहुचनहार ॥ जो जो करै अवगिआ जन की होइ गइआ तत छार ॥ १ ॥ करनहारु रखवाला होआ जा का अंतु न पारावार ॥ नानक दास रखे प्रभि अपुनै निंदक काढे मारि ॥ २ ॥ २१ ॥ ५२ ॥

धनासरी महला ५ घरु ९ पड़ताल   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि चरन सरन गोबिंद दुख भंजना दास अपुने कउ नामु देवहु ॥ द्रिसटि प्रभ धारहु क्रिपा करि तारहु भुजा गहि कूप ते काढि लेवहु ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध करि अंध माइआ के बंध अनिक दोखा तनि छादि पूरे ॥ प्रभ बिना आन न राखनहारा नामु सिमरावहु सरनि सूरे ॥ १ ॥ पतित उधारणा जीअ जंत तारणा बेद उचार नही अंतु पाइओ ॥ गुणह सुख सागरा ब्रहम रतनागरा भगति वछलु नानक गाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ ५३ ॥ धनासरी महला ५ ॥ हलति सुखु पलति सुखु नित सुखु सिमरनो नामु गोबिंद का सदा लीजै ॥ मिटहि कमाणे पाप चिराणे साधसंगति मिलि मुआ जीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राज जोबन बिसरंत हरि माइआ महा दुखु एहु महांत कहै ॥ आस पिआस रमण हरि कीरतन एहु पदारथु भागवंतु लहै ॥ १ ॥ सरणि समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नामु तेरा ॥ अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुरु मेरा ॥ २ ॥ २ ॥ ५४ ॥

धनासरी महला ५ घरु १२   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बंदना हरि बंदना गुण गावहु गोपाल राइ ॥ रहाउ ॥ वडै भागि भेटे गुरदेवा ॥ कोटि पराध मिटे

ध्यान लग जाता है।। १ ।। रहाउ।। माया के महाप्रपंच भूल जाते हैं यदि हे मेरे दीनदयालु प्रभु, तुम कृपा कर दो। तुम मुझे अपना नाम दे दो जिसे जपकर मैं जीवित बना रहूं और इस सेवक की मेहनत सफल हो जाए।। १ ।। प्रभु के नाम और कीर्ति का जाप करने से सभी उद्देश्य, राज-सुख और सदा बने रहने वाली खुशियां प्राप्त होती हैं। उस कर्ता प्रभु ने प्रारम्भ से ही जिसके भाग्य लेखों में लिख दिया है हे नानक, उस सेवक के सभी काम पूर्ण हो जाते हैं।। २ ।। २० ।। ५१ ।। धनासरी मः ५ ।। प्रभु ने अपने सेवक की खोज खबर ली; अब निंदक व्यक्ति बिल्कुल ही टिक नहीं पाते और निकम्मे सिद्ध होकर उड़ गए हैं।। १ ।। रहाउ।। जिधर भी मैं देखता हूं उधर ही वह स्वामी प्रभु दिखाई देता है और उस प्रभु तक कोई भी नहीं पहुंच पाता। जिस जिस ने भी प्रभु के सेवक की अवज्ञा की है वह तत्काल राख हो गया है।। १ ।। वह सब कुछ करने वाला प्रभु जिसका कोई भी अंत और ओर छोर नहीं है हमारा रक्षक बन गया है। हे नानक, प्रभु ने अपने दासों को बचा लिया है और निंदकों को मार भगाया है।। २ ।। २१ ।। ५२।।

धनासरी महला ५ घरु ६ पड़ताल (बार बार दोहराए जाने वाला ताल) १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे दुखों का नाश करने वाले प्रभु, हम तुम्हारे चरणों की शरण में हैं और अपने दासों को तुम अपना नाम प्रदान करो। तुम अपनी कृपा दृष्टि हम पर करो, कृपा करके हमें पार उतार दो और हमारी बांह पकड़ कर हमें सांसारिक माया रूपी कुएं से बाहर निकाल लो।। रहाउ।। व्यक्ति काम, क्रोध के कारण अन्धा बन माया के बन्धनों में बंधा पड़ा है और अनेकों दोष उसके शरीर और वस्त्रों में भरे पड़े हैं। प्रभु-नाम के बिना इसे कोई भी बचाने वाला नहीं है। हे शरण देने योग्य शूरवीर प्रभु, इसे अपने नाम का सुमिरन करवाओ।। १ ।। हे पतितों का उद्धार करने वाले, जीव जन्तुओं को पार उतारने वाले प्रभु, वेदों का उच्चारण करने वाले ऋषि भी तेरे विस्तार के बारे में नहीं जान सके। तू गुणों का सागर है और हे प्रभु, रत्नों की तू खान है। नानक ने तेरा भक्त वत्सल के रूप में सदैव गायन किया है।। २ ।। १ ।। ५३ ।। धनासरी मः ५ ।। हे जीव, तुझे इस लोक और उस लोक में प्रभु-नाम के सुमिरन से सुख मिलेगा इसलिए तू सदैव उस प्रभु के नाम का ही जाप करता रह। अनेकों जन्मों के किए हुए और कमाए हुए पाप मिट जाते हैं और साधु संगत में मिल बैठकर आध्यात्मिक रूप से मृत व्यक्ति भी जीवित हो उठता है।। १ ।। रहाउ।। राज और जवानी प्रभु को विस्मृत करवा देते हैं; महात्मा लोग यह बताते हैं कि यह अवस्था ही माया का महां दुख है। प्रभु के यश गायन की इच्छा जैसा पदार्थ कोई भाग्यशाली ही प्राप्त करता है।। १ ।। हे प्रभु, तुम शरण देने में समर्थ हो, तुम अकथनीय अगोचर हो और तुम्हारा नाम पतितों का उद्धार करने वाला है। नानक का स्वामी अन्तर्यामी है, सब प्रकार से पूर्ण है और मेरा मालिक है।। २ ।। २ ।। ५४।।

धनासरी महला ५ घरु १२ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

उस प्रभु की मैं बार-बार वन्दना करता हूं और हे जीव, धरती के पालक उस प्रभु के गुण गाते रहो।। रहाउ।। बड़े भाग्य से मुझे पूज्य प्रकाश रूप गुरु मिला है। प्रभु की सेवा करने से करोड़ों अपराध नष्ट

हरि सेवा ॥ १ ॥ चरन कमल जा का मनु रापै ॥ सोग अगनि तिसु जन न बिआपै ॥ २ ॥ सागरु तरिआ साधू संगे ॥ निरभउ नामु जपहु हरि रंगे ॥ ३ ॥ पर धन दोख किछु पाप न फेड़े ॥ जम जंदारु न आवै नेड़े ॥ ४ ॥ त्रिसना अगनि प्रभि आपि बुझाई ॥ नानक उधरे प्रभ सरणाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ५५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ त्रिपति भई सचु भोजनु खाइआ ॥ मनि तनि रसना नामु धिआइआ ॥ १ ॥ जीवना हरि जीवना ॥ जीवनु हरि जपि साधसंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकारी बसत्र ओढाए ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुन गाए ॥ २ ॥ हसती रथ असु असवारी ॥ हरि का मारगु रिदै निहारी ॥ ३ ॥ मन तन अंतरि चरन धिआइआ ॥ हरि सुख निधान नानक दासि पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ गुर के चरन जीअ का निसतारा ॥ समुंदु सागरु जिनि खिन महि तारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई होआ क्रम रतु कोई तीरथ नाइआ ॥ दासी हरि का नामु धिआइआ ॥ १ ॥ बंधन काटनहारु सुआमी ॥ जन नानकु सिमरै अंतरजामी ॥ २ ॥ ३ ॥ ५७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ कितै प्रकारि न तूटउ प्रीति ॥ दास तेरे की निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मन धन ते पिआरा ॥ हउमै बंधु हरि देवणहारा ॥ १ ॥ चरन कमल सिउ लागउ नेहु ॥ नानक की बेनंती एह ॥ २ ॥ ४ ॥ ५८ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ धनासरी महला ९ ॥

काहे रे बन खोजन जाई ॥ सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥ तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥ १ ॥ बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥ जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥ २ ॥ १ ॥ धनासरी महला ९ ॥ साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥ राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि

हो जाते हैं।। १ ।। जिसका मन उस प्रभु के चरण कमलों में रंग गया है उस व्यक्ति को दुख की अग्नि प्रभावित नहीं कर सकती।। २ ।। साधु पुरुषों के साथ मैंने संसार-सागर तैर कर पार कर लिया है और अब मैं उस निर्भय प्रभु के नाम का जाप हरि रंग में रंग कर कर रहा हूं।। ३ ।। पराए धन के लालच जैसा दोष तथा अन्य कोई पाप या बुरा कर्म आदि अब नहीं बचता तथा भयानक यम पास नहीं आता।। ४ ।। तृष्णा रूपी अग्नि प्रभु ने स्वयं बुझा दी है और हे नानक, प्रभु की शरण में आने से ही उद्धार होता है।। ५ ।। १ ।। ५५ ।। धनासरी मः ५ ।। जब मैंने सत्य रूपी भोजन खा लिया तो मुझे तृप्ति प्राप्त हो गई और अब मैंने मन, तन और जीभ से प्रभु-नाम का सुमिरन किया है।। १ ।। वास्तविक जीवन प्रभु में लीन बने रहने वाला जीवन ही है और ऐसा जीवन साधसंगत में प्रभु का जाप करते रहने वाला जीवन ही होता है।। १ ।। रहाउ।। हाथी, रथ, घोड़े की सवारी आदि सब कुछ प्रभु के मार्ग को हृदय में देख लेने के अन्तर्गत ही आ जाते है।। ३ ।। मन तन में प्रभु चरणों का सुमिरन करते रहने से हे नानक, तेरे दास ने सुखों के भण्डार प्रभु को प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। २ ।। ५६।। धनासरी मः ५ ।। गुरु के चरण ही जीव का उद्धार करने वाले होते हैं और वे ही संसार रूपी सागर से क्षण भर में पार उतार देने वाले होते हैं।। १ ।। रहाउ।। कोई तो कर्मकाण्ड में लीन है तो कोई अन्य तीर्थों पर स्नान करता जा रहा है परन्तु प्रभु के सेवक तो केवल प्रभु के नाम का ही सुमिरन करते हैं।। १ ।। वह सबका मालिक बन्धनों को काटने वाला है और दास नानक भी उस अन्तर्यामी का सुमिरन करता है।। १ ।। ३ ।। ५७।। धनासरी मः ५ ।। हे प्रभु, तेरे दास का आचरण इतना निर्मल हो कि किसी प्रकार भी तुझसे उसकी प्रीति टूटने न पाए।। १ ।। रहाउ।। प्रभु ही मुझे प्राणों से, मन से, धन से भी अधिक प्यारा है और वह प्रभु ही अंहकार को बांधकर रोक रखने वाला है।। १ ।। नानक की तो यही विनती है कि उसके चरण-कमलों से मेरी प्रीति लग जाए।। २।। ४ ।। ५८।।

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। धनासरी महला ९ ।।

हे प्राणी, तू क्यों उस प्रभु को खोजने के लिए वनों में भटकता फिरता है; सबमें निवास करने वाला वह अलिप्त बना रहने वाला प्रभु तो तेरे साथ ही तेरे अन्तर्मन में बसता है।। १ ।। रहाउ।। फूल में जैसे सुगन्ध बसती है और दर्पण में जैसे छाया दिखाई देती है वैसे ही प्रभु सदैव प्राणी के अन्दर बसता है। इसलिए हे भाई, उसे अपने अन्दर ही खोजो।। १ ।। गुरु का दिया हुआ सच्चा ज्ञान यही है कि बाहर-भीतर अर्थात सब स्थानों में उस एक प्रभु को ही बसा हुआ जान लो। हे दास नानक, वास्तव में अपने आप को पहचाने बिना अन्तरात्मा पर पड़ा हुआ भ्रम का जाला अथवा काई मिटती नहीं है।। २ ।। १ ।। धनासरी मः ९ ।। हे साधु पुरुषो, यह संसार तो विभिन्न प्रकार के भ्रमों में भूला हुआ है। इसने राम नाम का सुमिरन छोड़ रखा है और यह मात्र धन सम्पदा का ही गुलाम बनकर उसके हाथों बिका हुआ हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। यह माता, भाई, पुत्र, स्त्री के मोह में ही

लपटाना ॥ जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥ १ ॥ दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ मनु न लगाना ॥ जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥ २ ॥ २ ॥ धनासरी महला ९ ॥ तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥ लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर निंदा उसतति नह जा कै कंचन लोह समानो ॥ हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥ १ ॥ चंचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ ३ ॥ धनासरी महला ९ ॥ अब मै कउनु उपाउ करउ ॥ जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥ मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥ १ ॥ गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥ कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ९ ॥ १३ ॥ ५८ ॥ ४ ॥ ९३ ॥

धनासरी महला १ घरु २ असटपदीआ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु सागरु रतनी भरपूरे ॥ अंम्रितु संत चुगहि नही दूरे ॥ हरि रसु चोग चुगहि प्रभ भावै ॥ सरवर महि हंसु प्रानपति पावै ॥ १ ॥ किआ बगु बपुड़ा छपड़ी नाइ ॥ कीचड़ि डूबै मैलु न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रखि रखि चरन धरे वीचारी ॥ दुबिधा छोडि भए निरंकारी ॥ मुकति पदारथु हरि रस चाखे ॥ आवण जाण रहे गुरि राखे ॥ २ ॥ सरवर हंसा छोडि न जाइ ॥ प्रेम भगति करि सहजि समाइ ॥ सरवर महि हंसु हंस महि सागरु ॥ अकथ कथा गुर बचनी आदरु ॥ ३ ॥ सुंन मंडल इकु जोगी बैसे ॥ नारि न पुरखु कहहु कोऊ कैसे ॥ त्रिभवण जोति रहे लिव लाई ॥ सुरि नर नाथ सचे सरणाई ॥ ४ ॥ आनंद मूलु अनाथ अधारी ॥ गुरमुखि भगति सहजि बीचारी ॥ भगति वछल भै काटणहारे ॥ हउमै मारि मिले पगु धारे ॥ ५ ॥ अनिक जतन करि कालु संताए ॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥

लीन हो गया एवं जवानी, धन, ऐश्वर्य आदि के अभिमान में ही दिन रात पागल बना रहता है।। १ ।। उस दीनदयालु और सदैव दुखों को नष्ट करने वाले प्रभु में इसने मन को नहीं लगाया। हे दास नानक, करोड़ों में कोई बिरला ही है जिसने गुरमुख बनकर प्रभु को जान लिया है।। २ ।। २ ।। धनासरी मः ५ ।। उस योगी ने तो वास्तव में जीवन की ठीक विधि को जाना ही नहीं है जिसके हृदय में हमें लोभ, मोह, ममता, माया आदि अभी भी दिखाई देती है।। १ ।। रहाउ।। जिसके हृदय में पराई निन्दा अथवा प्रशंसा नहीं है, जो लोहे और सोने को एक समान समझता है तथा खुशी और गमी से अतीत बना रहता है, दसों दिशाओं में दौड़ते रहने वाले चंचल मन को जिसने स्थिर करके टिका लिया है; नानक का कथन है कि जो इस जीवन-युक्ति वाला व्यक्ति है उसे ही तुम वास्तव में व्यक्ति के तौर पर जान और मान सकते हो।। २ ।। ३ ।। धनासरी मः ६ ।। अब मैं और कौन सा उपाय करूं जिससे मेरे मन का भय दूर हो जाए और मैं संसार-सागर से पार हो जाऊं।। १ ।। रहाउ।। मानव जीवन पाकर मैंने कुछ भी भला नहीं किया है; इस कारण भी मैं अधिक डर रहा हूं। मेरे मन में यह चिन्ता भी बनी रहती है कि मैंने तो मन वचन और कर्म से प्रभु के गुणों का न ही गायन किया है और न ही उन्हें जीवन में उतारा है।। १ ।। गुरु के उपदेश को सुनकर मेरे अन्दर कुछ भी ज्ञान पैदा नहीं हो सका और मैं तो केवल पशु की तरह पेट भरता जा रहा हूं। नानक का कथन है कि हे प्रभु, तुम ही अपने पतित पावन स्वभाव को पहचानो, तभी मेरे जैसा पतित संसार सागर से पार उतर सकता है।।२ ।।४ ।।६ ।।६ ।।१३ ।।५८।।४ ।।६३।।

धनासरी महला १ घरु २ अष्टपदियां १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

गुरु तो रत्नों से भरे हुए सागर के समान है और सन्त पुरुष उसमें हंसों की तरह अमृत रूपी मोती चुगते रहते हैं और उससे दूर नहीं जाते। जब प्रभु को ही भाता है तो वे हरि रस का दाना चुगते हैं और गुरु रूपी सरोवर में ही वे प्राणों के स्वामी प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं।। १ ।। बेचारा बगुला तो छोटे से तालाब में नहाता है और कीचड़ में ही डूबा रहता है तथा उसकी मैल नहीं जाती।। १ ।। रहाउ।। प्रभु का चिन्तन करने वाला व्यक्ति बहुत सोच समझकर अपना कदम आगे बढ़ाता है और दुविधा को छोड़कर उस निराकार प्रभु के पीछे चलने वाला ही बन जाता है। वह मुक्ति रूपी अमूल्य पदार्थ को पा जाता है और प्रभु के प्रेम का स्वाद चखता रहता है। उसका आवागमन छूट जाता है और गुरु के माध्यम से उसकी रक्षा होती रहती है।। २ ।। गुरु रूपी सरोवर को हंस रूपी आत्माएं कभी भी छोड़कर नहीं जातीं। वे प्रेम भक्ति में लीन होकर सहजभाव में स्थित बने रहते हैं। वास्तव में सरोवर में हंस और हंस में ही वह सागर समाया रहता है अर्थात गुरु सिक्ख में और सिक्ख गुरु में लीन बना रहता है। गुरु के वचनों के आदर की कथा तो वास्तव में अकथनीय है जिसमें हंस रूपी जीवात्मा स्थित बना रहता है।।३ ।। शून्य एवं पूर्ण रूप से अचल अवस्था में प्रभु रूपी एक ऐसा योगी बैठा रहता है जो न तो स्त्री है और न ही पुरुष है; कोई भला क्या बताए कि वह कैसा है। तीनों लोकों के जीव अर्थात सम्पूर्ण सृष्टि उसी की ज्योति में ध्यान लगाए रहती है और तथाकथित देवता, प्राणी और सिद्ध नाथ आदि उसी सच्चे प्रभु की शरण में पड़े रहते हैं।।४ ।। वह प्रभु ही आनन्द का स्रोत है। अनाथों का नाथ है और गुरमुख व्यक्ति भक्ति और सहज आत्म ज्ञान के माध्यम से उसका चिन्तन करते रहते हैं। वह भक्तों को प्यार करने वाला और सब प्रकार के भय का नाश कर देने वाला हैं अहंकार को मारने की ओर कदम बढ़ाने वाले को ही वह प्रभु मिलता है।।५ ।। अनेक प्रकार के यत्न किए जाएं तब भी काल का भय बना रहता है क्योंकि हम सब मरण को तो अपने भाग्य में लिखवा कर ही इस संसार में आए हैं।

जनमु पदारथु दुबिधा खोवै ॥ आपु न चीनसि भ्रमि भ्रमि रोवै ॥ ६ ॥ कहतउ पड़तउ सुणतउ एक ॥ धीरज धरमु धरणीधर टेक ॥ जतु सतु संजमु रिदै समाए ॥ चउथे पद कउ जे मनु पतीआए ॥ ७ ॥ साचे निरमल मैलु न लागै ॥ गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ सूरति मूरति आदि अनूपु ॥ नानकु जाचै साचु सरूपु ॥ ८ ॥ १ ॥ धनासरी महला १ ॥ सहजि मिलै मिलिआ परवाणु ॥ ना तिसु मरणु न आवणु जाणु ॥ ठाकुर महि दासु दास महि सोइ ॥ जह देखा तह अवरु न कोइ ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति सहज घरु पाईऐ ॥ बिनु गुर भेटे मरि आईऐ जाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो गुरु करउ जि साचु द्रिड़ावै ॥ अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥ हरि के लोग अवर नही कारा ॥ साचउ ठाकुरु साचु पिआरा ॥ २ ॥ तन महि मनूआ मन महि साचा ॥ सो साचा मिलि साचे राचा ॥ सेवकु प्रभ कै लागै पाइ ॥ सतिगुरु पूरा मिलै मिलाइ ॥ ३ ॥ आपि दिखावै आपे देखै ॥ हठि न पतीजै ना बहु भेखै ॥ घड़ि भाडे जिनि अंम्रितु पाइआ ॥ प्रेम भगति प्रभि मनु पतीआइआ ॥ ४ ॥ पड़ि पड़ि भूलहि चोटा खाहि ॥ बहुतु सिआणप आवहि जाहि ॥ नामु जपै भउ भोजनु खाइ ॥ गुरमुखि सेवक रहे समाइ ॥ ५ ॥ पूजि सिला तीरथ बन वासा ॥ भरमत डोलत भए उदासा ॥ मनि मैलै सूचा किउ होइ ॥ साचि मिलै पावै पति सोइ ॥ ६ ॥ आचारा वीचारु सरीरि ॥ आदि जुगादि सहजि मनु धीरि ॥ पल पंकज महि कोटि उधारे ॥ करि किरपा गुरु मेलि पिआरे ॥ ७ ॥ किसु आगै प्रभ तुधु सालाही ॥ तुधु बिनु दूजा मै को नाही ॥ जिउ तुधु भावै तिउ राखु रजाइ ॥ नानक सहजि भाइ गुण गाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

धनासरी महला ५ घरु ६ असटपदी · १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जो जो जूनी आइओ तिह तिह उरझाइओ माणस जनमु संजोगि पाइआ ॥ ताकी है ओट साध राखहु दे करि हाथ करि किरपा मेलहु हरि राइआ ॥ १ ॥ अनिक जनम भ्रमि थिति नही पाई ॥ करउ सेवा गुर लागउ चरन गोविंद जी का मारगु देहु जी बताई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव करउ

जीवन रूपी अमूल्य वस्तु को तो हम दुविधाओं में ही गँवा देते हैं; अपने आप को हम पहचानते नहीं और इधर उधर भटकते हुए हम रोते रहते हैं।। ६ ।। यदि मनुष्य उस एक प्रभु का ही कथन करता हुआ, उसको ही सुनता हुआ, उसको ही पढ़ता हुआ जीवन व्यतीत करता है तो धरती को धारण करने वाले उस परमात्मा का आसरा ही व्यक्ति को धैर्य और धर्म आदि प्रदान कर देता है। यदि व्यक्ति का मन चौथे पद पर अर्थात तीनों गुणों से परे जाने की अवस्था के लिए संतुष्ट हो जाए तो इन्द्रियों का संयम और सत्य आदि गुण व्यक्ति के हृदय में समा जाते हैं।। ७ ।। सच्चे और निर्मल व्यक्तियों को विकारों की मैल नहीं लगती और शब्द-गुरु के माध्यम से उनके भ्रम और भय भाग खड़े होते हैं। नानक तो ऐसे सत्य स्वरूप प्रभु की याचना करता है जो सुन्दर स्वरूप वाला सबसे पहले बना रहने वाला तथा अनुपम है।। ८ ।। १ ।। धनासरी मः १।। हठ आदि के बिना सहज स्वभाविक रूप से ही जब वह प्रभु मिलता है तो ऐसे मिलाप को ही स्वीकार करने योग्य मिलाप कहा जाता है। अब व्यक्ति का न तो मरण होता है न ही आवागमन होता है। मालिक और दास एक दूसरे में मिलकर एक हो जाते हैं और फिर जिधर भी देखा जाता है दूसरा अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता।। १ ।। गुरमुख बनकर ही भक्ति, और सहज अवस्था का ठिकाना प्राप्त होता है; गुरु से मिलाप के बिना तो व्यक्ति मरता रहता है और आता जाता ही रहता है।। १ ।। रहाउ।। जो सत्य को हृदय में पक्का कर दे वास्तव में उसे ही गुरु कहा जाता है। वह अकथनीय प्रभु का कथन करता है और शब्द के माध्यम से उससे मिला देता है। प्रभु के ऐसे लोगों को व्यर्थ के कार्य नहीं करने पड़ते, उन्हें तो प्रभु ही सच्चा लगता है और सच के साथ ही उनका प्यार होता है।। २ ।। इस तन में यह मन और मन में उस सत्य का निवास है और वही व्यक्ति सच्चा है जो सत्य से साक्षात्कार करके उसी में लीन हो गया है। वही सेवक प्रभु चरणों में आ लगता है जिसे पूर्ण सच्चा गुरु मिल जाता है और वह गुरु उसे प्रभु से मिला देता है।। ३ ।। समझने और समझाने वाला प्रभु स्वयं ही है; वह बहुत से हठकर्मों और वेशों आदि से प्रसन्न नहीं होता। मनुष्य के शरीर अथवा मन रूपी बर्तन को बनाकर जिस प्रभु का नाम रूपी अमृत इसमें डाला है उस प्रभु का मन तो केवल प्रेमाभक्ति के माध्यम से ही प्रसन्न होता है।। ४ ।। व्यक्ति अनेक प्रकार की विधाएं पढ़ पढ़ कर भटकता रहता है और चोटें खाता रहता है। अधिक चतुराईयों के कारण ही उसका आवागमन बना रहता है। यदि वह प्रभु-नाम का सुमिरन करे और प्रभु के भय को अपना भोजन बनाए तो ऐसा सेवक गुरमुख बनकर उस प्रभु में लीन बना रहता है।। ५ ।। व्यक्ति ने शिलाओं की पूजा करके तीर्थों और वनों में निवास बनाया और भटकते भटकते वह संसार से भी उदासीन बना रहा परन्तु यदि मन मैला है तो भला पवित्रता कैसे आ सकती है। जब व्यक्ति सत्य को प्राप्त करता है तभी उसको सम्मान प्राप्त होता है।। ६ ।। जिसका अच्छा आचरण और विचार ही शरीर है, जो आदि काल से ही मन में सहजभाव धारण किए हुए है, जो कीचड़ में कमल के समान निर्लिप्त बना हुआ क्षण भर में करोड़ों का उद्धार कर देता है; हे मेरे प्यारे प्रभु, कृपा कर मुझे ऐसे गुरु से मिला दे।। ७ ।। हे प्रभु, मैं तेरा गुणानुवाद भला और किसी के आगे क्या करूं क्योंकि तेरे सिवाय तो मेरे लिए अन्य कोई है ही नहीं। हे प्रभु, जैसे भी तुझे भाता है तू मुझे अपनी रज़ा में बनाए रख ताकि नानक स्वभाविक रूप से ही तेरे गुण गाता रहे।। ८ ।। २।।

धनासरी महला ५ घरु ६ अष्टपदी १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जो जो भी योनि में आ गया वह उलझ गया समझो; मानव जीवन तो बड़े अच्छे भाग्य से ही प्राप्त हुआ है। साधु पुरुषों को उसी प्रभु का ही आसरा है; हे प्रभु, तुम अपना हाथ देकर रक्षा करो और हे प्रभु राजन, कृपा करके अपने से मिला लो।। १ ।। अनेकों जन्मों में भटकते रहने पर भी हमें टिकाव की अवस्था नहीं मिल सकी। मानव जीवन में गुरु चरणों में लगकर मैं उसकी सेवा करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मुझे प्रभु का मार्ग बता दिया जाए।। १ ।। रहाउ।। धन के लिए अनेकों उपाय करता हूं

माइआ कउ बचिति धरउ मेरी मेरी करत सद ही विहावै ॥ कोई ऐसो रे भेटै संतु मेरी लाहै सगल चिंत ठाकुर सिउ मेरा रंगु लावै ॥ २ ॥ पड़े रे सगल बेद नह चूकै मन भेद इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पंचा ॥ कोई ऐसो रे भगतु जु माइआ ते रहतु इकु अंम्रित नामु मेरै रिदै सिंचा ॥ ३ ॥ जेते रे तीरथ नाए अहंबुधि मैलु लाए घर को ठाकुरु इकु तिलु न मानै ॥ कदि पावउ साधसंगु हरि हरि सदा आनंदु गिआन अंजनि मेरा मनु इसनानै ॥ ४ ॥ सगल अस्रम कीने मनूआ नह पतीने बिबेकहीन देही धोए ॥ कोई पाईऐ रे पुरखु बिधाता पारब्रहम कै रंगि राता मेरे मन की दुरमति मलु खोए ॥ ५ ॥ करम धरम जुगता निमख न हेतु करता गरबि गरबि पड़ै कही न लेखै ॥ जिसु भेटीऐ सफल मूरति करै सदा कीरति गुर परसादि कोऊ नेत्रहु पेखै ॥ ६ ॥ मनहठि जो कमावै तिलु न लेखै पावै बगुल जिउ धिआनु लावै माइआ रे धारी ॥ कोई ऐसो रे सुखह दाई प्रभ की कथा सुनाई तिसु भेटे गति होइ हमारी ॥ ७ ॥ सुप्रसंन गोपाल राइ काटै रे बंधन माइ गुर कै सबदि मेरा मनु राता ॥ सदा सदा आनंदु भेटिओ निरभै गोबिंदु सुख नानक लाधे हरि चरन पराता ॥ ८ ॥ सफल सफल भई सफल जात्रा ॥ आवण जाण रहे मिले साधा ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

धनासरी महला १ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥ तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥ गुर गिआनु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा ॥ हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा ॥ संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना ॥ गुर वाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ॥ १ ॥ साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ ॥ गुणहि हारु परोइ किस कउ रोईऐ ॥ वीचारि मारै तरै तारै उलटि जोनि न आवए ॥ आपि पारसु परम धिआनी साचु साचे भावए ॥ आनंदु अनदिनु हरखु साचा दूख किलविख परहरे ॥ सचु नामु पाइआ गुरि दिखाइआ मैलु नाही सच मने ॥ २ ॥ संगति

और इस बात को विशेष तौर से चित्त में धारण करते हुए तथा मेरी-मेरी करते हुए सदैव मेरी आयु व्यतीत होती जाती है। कोई मुझे ऐसा शान्त पुरुष मिला दे जो मेरी समस्त चिन्ताओं को दूर कर दे और प्रभु के साथ मेरा प्रेम लगा दे।। २।। मैंने सभी वेदों को पढ़ा परन्तु फिर भी मेरे मन के भेद-भाव समाप्त नहीं हुए और मेरे मन रूपी घर में रहने वाले पांचों विकार मुझे क्षण भर के लिए भी धैर्य से नहीं बैठने देते। कोई ऐसा सेवक भक्त मिल जाए जो मोह माया से विहीन हो और एक अमृत-नाम को ही मेरे हृदय में सींच दे।। ३ ।। जितना भी तीर्थों पर स्नान किया गया है उतनी ही अहंकार की मैल मेरे पर और चढ़ गई है और इस शरीर का मालिक वह प्रभु तो तिल मात्र भी प्रसन्न नहीं हुआ है। कब मुझे साधसंगत प्राप्त होगी और प्रभु का सदैव आनन्द देने वाला नाम रूपी ज्ञान अंजन मिलेगा तथा मेरा मन उसमें स्नान करके पवित्र हो जाएगा।। ४ ।। चारों आश्रमों का पालन करने पर भी मन सन्तुष्ट नहीं होता और विवेकहीन बनकर मैं इस शरीर को मांजता धोता रहता हूं। मुझे कोई विधाता महापुरुष मिल जाए जो परब्रह्म के रंग में रंगा हो और मेरे मन की दुर्मति वाली मल को नष्ट कर दे।। ५ ।। मैं सदैव कर्मकाण्ड वाले धर्म में ही लीन बना रहा; क्षण भर के लिए भी मैंने प्रेम नहीं किया और अहंकार में भूला हुआ मैं फूला-फूला दौड़ता भागता रहा, परन्तु यह सब मेरे किसी काम नहीं आया।। ६ ।। जो मन को हठपूर्वक पूजा आदि में लगाए रहता है उसकी साधना तो तिल मात्र भी स्वीकार नहीं होती। मायावी प्रपंचों में पड़ा हुआ ऐसा व्यक्ति बगुले की तरह समाधि लगाए रहता है। कोई ऐसा सुख देने वाला मिल जाए जो प्रभु की कथा-वार्ता सुनाने वाला हो। उसे मिलकर ही हमारी मुक्ति हो सकेगी।। ७ ।। जब प्रभु प्रसन्न हो गया तो उसने माया के मेरे बन्धन काट दिए तथा शब्द-गुरु में मेरा मन लीन हो गया। अब मैंने सदैव आनन्द को ही प्राप्त किया और हे नानक, निर्भय प्रभु से मैंने सभी सुखों को पा लिया तथा मैं हरि चरणों में लीन हो गया हूं।। ८ ।। इस संसार में आने वाली मेरी यात्रा सम्पूर्ण हो गई है। साधु पुरुषों से मिलाप होने पर मेरा आवागमन समाप्त हो गया है।। १ ।। रहाउ दूसरा ।। १ ।। ३ ।।

धनासरी महला १ छन्द १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

तीर्थों पर स्नान करने जाते हो परन्तु वास्तविक तीर्थ अर्थात पवित्र करने वाली शक्ति तो प्रभु का नाम ही है। शब्द का चिन्तन करना ही तीर्थ है और यही अन्तर्मन का ज्ञान है। गुरु का दिया ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है और यही कर्मकाण्डों (अमावस्या, संक्रान्ति, पूर्णिमा, उत्तरायण, दक्षिणायण, व्यतीपात, चन्द्र और सूर्य ग्रहण) और वास्तव में दसों प्रकार के पापों का हरण करने वाला निरन्तर बना रहने वाला पर्व है। मैं तो सदैव प्रभु-नाम की याचना करता हूं और हे धरती को धारण करने वाले प्रभु मुझे यह प्रदान करो। यह सारा संसार रोगी है जिसके लिए औषधि प्रभु-नाम है। सत्य के बिना इस संसार को मैल लगी हुई है। गुरु का पवित्र वचन निरन्तर प्रकाश देने वाला है और यही पवित्र वचन सदैव बना रहने वाला तीर्थ स्नान है।। १ ।। सत्य को तो कभी मैल लगती ही नहीं फिर भला हम कौन सी मैल धो रहे हैं। जब गुणों को हार बनाकर हमने गले में धारण कर लिया तो फिर भला अब किस बात का रोना है। विवेक, विचार से यदि व्यक्ति अपने आप को मार ले तो वह स्वयं पार होता है, अन्यों को भी पार उतारता है और फिर योनियों में नहीं भटकता। वह स्वयं पारस बन जाता है और स्वयं ही परम ध्यानी बन जाता है। ऐसा सत्य पुरुष सत्य प्रभु को अच्छा लगता है। वह सदैव आनन्दित बना रहता है, उसे सच्ची प्रसन्नता प्राप्त होती है और उसके दुख और पाप दूर हो जाते हैं। गुरु के द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर वह सच्चा नाम प्राप्त करता है। उसके हृदय में सत्य बस जाता है इसलिए उसे मैल नहीं लगती।। २ ।।

मीत मिलापु पूरा नावणो ॥ गावै गावणहारु सबदि सुहावणो ॥ सालाहि साचे मंनि सतिगुरु पुंन दान दइआ मते ॥ पिर संगि भावै सहजि नावै बेणी त संगमु सत सते ॥ आराधि एकंकारु साचा नित देइ चड़ै सवाइआ ॥ गति संगि मीता संतसंगति करि नदरि मेलि मिलाइआ ॥ ३ ॥ कहणु कहै सभु कोइ केवडु आखीऐ ॥ हउ मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीऐ ॥ सचु गुर की साखी अंम्रित भाखी तितु मनु मानिआ मेरा ॥ कूचु करहि आवहि बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा ॥ आखणि तोटि न भगति भंडारी भरिपुरि रहिआ सोई ॥ नानक साचु कहै बेनंती मनु मांजै सचु सोई ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला १ ॥ जीवा तेरै नाइ मनि आनंदु है जीउ ॥ साचो साचा नाउ गुण गोविंदु है जीउ ॥ गुर गिआनु अपारा सिरजणहारा जिनि सिरजी तिनि गोई ॥ परवाणा आइआ हुकमि पठाइआ फेरि न सकै कोई ॥ आपे करि वेखै सिरि सिरि लेखै आपे सुरति बुझाई ॥ नानक साहिबु अगम अगोचरु जीवा सची नाई ॥ १ ॥ तुम सरि अवरु न कोइ आइआ जाइसी जीउ ॥ हुकमी होइ निबेड़ु भरमु चुकाइसी जीउ ॥ गुरु भरमु चुकाए अकथु कहाए सच महि साचु समाणा ॥ आपि उपाए आपि समाए हुकमी हुकमु पछाणा ॥ सची वडिआई गुर ते पाई तू मनि अंति सखाई ॥ नानक साहिबु अवरु न दूजा नामि तेरै वडिआई ॥ २ ॥ तू सचा सिरजणहारु अलख सिरंदिआ जीउ ॥ एकु साहिबु दुइ राह वाद वधंदिआ जीउ ॥ दुइ राह चलाए हुकमि सबाए जनमि मुआ संसारा ॥ नाम बिना नाही को बेली बिखु लादी सिरि भारा ॥ हुकमी आइआ हुकमु न बूझै हुकमि सवारणहारा ॥ नानक साहिबु सबदि सिञापै साचा सिरजणहारा ॥ ३ ॥ भगत सोहहि दरवारि सबदि सुहाइआ जीउ ॥ बोलहि अंम्रित बाणि रसन रसाइआ जीउ ॥ रसन रसाए नामि तिसाए गुर के सबदि विकाणे ॥ पारसि परसिऐ पारसु होए जा तेरै मनि भाणे ॥ अमरा पदु पाइआ आपु गवाइआ विरला गिआन वीचारी ॥ नानक भगत सोहनि दरि साचे साचे के वापारी ॥ ४ ॥ भूख पिआसो आथि किउ दरि जाइसा जीउ ॥

प्रभु रूपी मित्र की संगत के मिलाप से वास्तव में पूर्ण स्नान का लाभ प्राप्त होता है। अब व्यक्ति उस प्रभु के गीत गाता हुआ शब्द के माध्यम से सुन्दर हो जाता है। सच्चे गुरु को मानकर सच्चे प्रभु का गुणानुवाद करना ही वास्तव में दान पुण्य और दया करने वाली बुद्धि है। यदि प्रभु रूपी पति की संगति में प्रसन्न रहा जाए और उसके सहज प्रेम में स्नान किया जाए तो सच्ची और उत्तम त्रिवेणी का संगम प्राप्त हो जाता है। केवल एक सच्चे प्रभु की आराधना के माध्यम से व्यक्ति को प्रतिदिन पहले से सवा गुना ज्यादा लाभ प्राप्त होता है। मुक्ति प्रभु मित्र की संगति में और शान्त पुरुषों के साथ बने रहने पर ही प्राप्त होती है परन्तु ऐसी संगति उस प्रभु की कृपा-दृष्टि के फलस्वरूप ही प्राप्त होती है।। ३ ।। तेरे बड़प्पन का कथन तो सब कोई करते हैं परन्तु उसका बखान कैसे किया जाए कौन कह सकता है। मैं तो अनजान मूर्ख और नीच हूं तथा केवल गुरु के उपदेश के माध्यम से ही उसकी महानता समझ पाता हूं। अमृत वचनों के माध्यम से सच्चे गुरु की शिक्षा कही गई है और मेरा मन उसमें लीन होकर संतुष्ट हो गया है। व्यक्ति पापों से लदे हुए यहां आते और यहां से चले जाते हैं। मेरा गुरु तो सच्चे प्रभु नाम के माध्यम से ही मुझे मिलता है। प्रभु के बड़प्पन की कथा और उसकी भक्ति के भण्डारों का कोई भी अन्त नहीं है। वही सभी स्थानों पर व्याप्त है। नानक तो एक विनती के रूप में सत्य कहता है कि सच्चा वही है जो मन को मांजता है।। ४ ।। १ ।। धनासरी महला १ ।। तेरे नाम के आसरे ही मैं जीवित हूं और मेरा मन आनन्दित बना हुआ है। उस प्रभु का नाम ही सच्चा है और सभी गुणों से पूर्ण है। प्रभु का ज्ञान अपार है और वही प्रभु सृष्टि को बनाने वाला है। जिसने इस सृष्टि को बनाया है वही इसका नाश करने में समर्थ है। जब उसका बुलावा आ जाता है तथा उसका हुकुम मिल जाता है तो फिर उसे कोई मोड़ नहीं सकता। वह स्वयं सृष्टि पैदा करके उसको संभालता है। प्रत्येक के माथे पर उसका हुकुम अंकित है जिसे वह स्वयं ही ऊँची सुरति के माध्यम से समझाता है। हे नानक, वह प्रभु अगम्य एवं अगोचर है और उसके सच्चे नाम के माध्यम से ही मैं जीवित बना रहता हूं।। १ ।। हे प्रभु, तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। अन्य सभी तो जन्मते मरते रहते हैं। तेरे हुकुम के अन्तर्गत ही निर्णय होंगे और आवागमन का निवारण होगा। गुरु ही भटकन को दूर करके प्रभु की अकथ कथा कहता है तथा सच्चा व्यक्ति उस सत्य में लीन हो जाता है। प्रभु के हुकुम में चलने से हुकुम देने वाले प्रभु की पहचान आ जाती है और यह पता चल जाता है कि वह स्वयं ही उत्पन्न करता है और स्वयं ही अपने में लीन कर लेता है। सच्चा बड़प्पन तो गुरु के माध्यम से ही प्राप्त होता है और हे प्रभु, तू ही इस मन का अन्तिम रूप में साथ देने वाला मित्र है। हे नानक, दूसरा कोई भी मालिक नहीं है और हे प्रभु, तेरे नाम में ही बड़प्पन प्राप्त होता है।। २ ।। हे प्रभु, तू ही सच्चा सर्जक है और कभी भी समझ न आने वाला तथा सबको पैदा करने वाला है। मालिक तो केवल एक प्रभु ही है। भक्ति और माया के दो रास्ते हैं और उस प्रभु को न पहचान पाने के कारण इनका परस्पर विवाद बढ़ता ही जाता है। उसी ने दोनों रास्ते बनाए हैं और सभी उसके हुकुम में बने रहते हैं और संसार जन्मता मरता रहता है। प्रभु-नाम के बिना कोई मित्र नहीं है और व्यक्ति विषय विकारों का बोझ सिर पर लादे रहता है। जीव उसके हुकुम में ही आता है और उसके हुकुम को पहचानता नहीं है। वह नहीं जानता कि हुकुम ही सब कुछ संवारने वाला है। हे नानक, वह सच्चा सर्जक प्रभु शब्द के माध्यम से ही पहचाना जाता है।। ३ ।। शब्द से शोभायमान बने हुए भक्तगण उसके दरबार में सुन्दर दिखाई देते हैं। वे अपनी जीभ को रसपूर्ण बनाकर अमृत वाणी का उच्चारण करते रहते हैं। उनकी जीभ रसपूर्ण है और प्रभु नाम की प्यास उन्हें बनी रहती है तथा शब्द-गुरु के हाथों वे बिके हुए रहते हैं अर्थात उसी को ही सब कुछ मानते हैं। हे प्रभु, जब ऐसे व्यक्ति तुझे अच्छे लगते हैं तो तेरे स्पर्श से वे भी पारस बन जाते हैं। अपने अहंकार को गंवा कर वे अमर पद को प्राप्त कर लेते हैं। कोई बिरला ही इस प्रकार के ज्ञान का चिन्तन करने वाला होता है। हे नानक, सच्चे प्रभु के द्वार पर सत्य को खरीदने वाले व्यापारी भक्तगण शोभायमान बने रहते हैं।। ४ ।। मैं धन सम्पत्ति का भूखा और प्यासा हूं। किस प्रकार मैं प्रभु के द्वार तक पहुंच पाऊँगा।

सतिगुर पूछउ जाइ नामु धिआइसा जीउ ॥ सचु नामु धिआई साचु चवाई गुरमुखि साचु पछाणा ॥ दीना नाथु दइआलु निरंजनु अनदिनु नामु वखाणा ॥ करणी कार धुरहु फुरमाई आपि मुआ मनु मारी ॥ नानक नामु महा रसु मीठा त्रिसना नामि निवारी ॥ ५ ॥ २ ॥ धनासरी छंत महला १ ॥ पिर संगि मूठड़ीए खबरि न पाईआ जीउ ॥ मसतकि लिखिअड़ा लेखु पुरबि कमाइआ जीउ ॥ लेखु न मिटई पुरबि कमाइआ किआ जाणा किआ होसी ॥ गुणी अचारि नही रंगि राती अवगुण बहि बहि रोसी ॥ धनु जोबनु आक की छाइआ बिरधि भए दिन पुंनिआ ॥ नानक नाम बिना दोहागणि छूटी झूठि विछुंनिआ ॥ १ ॥ बूडी घरु घालिओ गुर कै भाइ चलो ॥ साचा नामु धिआइ पावहि सुखि महलो ॥ हरि नामु धिआए ता सुखु पाए पेईअड़ै दिन चारे ॥ निज घरि जाइ बहै सचु पाए अनदिनु नालि पिआरे ॥ विणु भगती घरि वासु न होवी सुणिअहु लोक सबाए ॥ नानक सरसी ता पिरु पाए राती साचै नाए ॥ २ ॥ पिरु धन भावै ता पिर भावै नारी जीउ ॥ रंगि प्रीतम राती गुर कै सबदि वीचारी जीउ ॥ गुर सबदि वीचारी नाह पिआरी निवि निवि भगति करेई ॥ माइआ मोहु जलाए प्रीतमु रस महि रंगु करेई ॥ प्रभ साचे सेती रंगि रंगेती लाल भई मनु मारी ॥ नानक साचि वसी सोहागणि पिर सिउ प्रीति पिआरी ॥ ३ ॥ पिर घरि सोहै नारि जे पिर भावए जीउ ॥ झूठे वैण चवे कामि न आवए जीउ ॥ झूठु अलावै कामि न आवै ना पिरु देखै नैणी ॥ अवगुणिआरी कंति विसारी छूटी विधण रैणी ॥ गुर सबदु न मानै फाही फाथी सा धन महलु न पाए ॥ नानक आपे आपु पछाणै गुरमुखि सहजि समाए ॥ ४ ॥ धन सोहागणि नारि जिनि पिरु जाणिआ जीउ ॥ नाम बिना कूड़िआरि कूड़ु कमाणिआ जीउ ॥ हरि भगति सुहावी साचे भावी भाइ भगति प्रभ राती ॥ पिरु रलीआला जोबनि बाला तिसु रावे रंगि राती ॥ गुर सबदि विगासी सहु रावासी फलु पाइआ गुणकारी ॥ नानक साचु मिलै वडिआई पिर घरि सोहै नारी ॥ ५ ॥ ३ ॥

मैं सच्चे गुरु से पूछता हूं और प्रभु नाम की आराधना करता हूं। जब मैं सच्चे नाम की आराधना करता हूं और मुंह से भी सत्य बोलता हूं तो गुरमुख बनकर मैं सत्य रूपी प्रभु को पहचान जाता हूं। तब मैं दीनानाथ पवित्र एवं दयालु प्रभु के नाम का सदैव बखान करता रहता हूं। इस प्रकार के नित्य कर्म का प्रभु ने मुझे प्रारम्भ से ही आदेश दिया है। इस प्रकार मैंने अहं भाव मिटा दिया है और अपने मन को जीत लिया है। हे नानक, प्रभु का नाम महारस और अत्यन्त मीठा है और इसी नाम के माध्यम से मेरी तृष्णा निवृत्त हो जाती है।। ४ ।। २ ।। धनासरी छन्द मः १ ।। हे जीवात्मा रूपी पत्नी, प्रिय प्रभु तो तेरे साथ ही है परन्तु विषय विकारों में लीन होने के कारण तुझे खबर ही नहीं है। वास्तव में तेरे मस्तक पर पूर्व लेख ही ऐसे हैं कि तू साथ रहते हुए प्रभु को न पहचान पाए। पूर्व से लिखे हुए लेख मिटते नहीं और जीव उसी के अनुसार आचरण करता हुआ यह नहीं जानता कि क्या होगा। हे जीवात्मा, तू गुण वाले आचरण को भी धारण नहीं करती और रंग तमाशों में लीन बनी हुई है; इसलिए अवगुणों के कारण तू बैठी हुई रोती ही रहेगी। यह धन और यौवन तो आक के पौधे की छाया के समान हैं और व्यक्ति के दिन पूरे हो जाने पर वह वृद्ध हो जाता है। हे नानक, प्रभु के नाम के बिना जीव-स्त्री कुलटा बनकर छोड़ी हुई दुहागिन है जो अपने झूठ के कारण अपने पति प्रभु से बिछुड़ी हुई है।। १ ।। हे संसार सागर में डूबी हुई जीवात्मा, तूने घर को उजाड़ दिया है। तुझे गुरु की रज़ा में चलना चाहिए। तू सच्चे नाम का सुमिरन कर, तुझे सुख में ही निवास मिल जाएगा। प्रभु के नाम के सुमिरन से ही सुख मिलता है क्योंकि संसार रूपी माता पिता के घर में तो चार दिन ही रहना है। इस प्रकार तू सत्य को प्राप्त कर अपने मूल घर में जा बैठेगी और सदैव, प्यारे प्रभु के साथ बनी रहेगी। सभी लोग यह ध्यान से सुन लो कि प्रभु भक्ति के बिना अपने मूल घर में निवास नहीं मिल पाता। हे नानक, प्रभु के सच्चे नाम में लीन होकर और प्रियतम को प्राप्त करके ही जीवात्मा हरी भरी बनी रहती है।। २ ।। यदि जीव-स्त्री प्रभु रूपी पति को अच्छी लगे अर्थात उसकी कृपादृष्टि हो तो हरि-प्रभु स्त्री को अच्छा लगता है। शब्द-गुरु के चिन्तन के माध्यम से ही वह प्रियतम के रंग में रंगी जाती है। शब्द-गुरु के चिन्तन के कारण ही वह पति प्रभु को अच्छी लगती है और विनम्र होकर भक्ति करती रहती है। प्रियतम के लिए वह माया मोह को जला देती है और रसपूर्ण होकर उत्साह के साथ प्रभु के रंग में रंगी जाती है। सच्चे प्रभु के रंग में रंगी हुई वह सुन्दर बन जाती है और इस प्रकार अपने मन को जीत लेती है। हे नानक, जब सुहागिन स्त्री सच्चे प्रभु में लीन हो जाती है तो उसकी अपने प्रियतम के साथ प्रीति पूरी तरह लग जाती है।। ३ ।। प्रियतम के मन को भा जाने वाली स्त्री ही प्रियतम के घर में शोभायमान होती है। जो झूठी बातें करती है वह किसी काम की नहीं रहती। वह झूठ बोलती हुई किसी भी काम नहीं आती और न ही प्रियतम को अपनी आँखों से देख पाती है। अवगुणों से भरी हुई को अपने पति प्रभु ने भुला दिया है और उस छोड़ी हुई जीव-स्त्री की जीवन रूपी रात वैधव्य जैसी बन जाती है। शब्द-गुरु को न मानने से बन्धनों में फंसी हुई जीव-स्त्री पति का निवास नहीं पा सकती। हे नानक, जब वह अपने मूल रूप को पहचान लेती है तो गुरु के माध्मय से अर्थात गुरमुख बनकर सहज सुख में लीन हो जाती है।। ४ ।। वह सुहागिन जीव-स्त्री धन्य है जिसने अपने प्रियतम को जान लिया है। प्रभु-नाम के बिना झूठा व्यक्ति झूठा आचरण ही अपनाए रहता है। प्रभु-भक्ति ही सुन्दर है, वही सच्चे प्रभु को अच्छी लगती है और भक्ति भाव में ही जीव-स्त्री प्रभु के साथ लीन बनी रहती है। प्रभु रूपी पति आनन्द करने वाला और चढ़ती जवानी वाला है। उसके प्रेम में रंगी हुई स्त्री उसके साथ रमण करती है। शब्द-गुरु के माध्यम से वह खिली रहती है और प्रभु के साथ रमण करने का गुणदायक फल उसे प्राप्त हो जाता है। हे नानक, सत्य के माध्यम से ही बड़प्पन प्राप्त होता है और जीव-स्त्री अपने प्रियतम के घर शोभायमान बनी रहती है।। ५ ।। ३ ।।

धनासरी छंत महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ सतिगुरु मिलै सुभाइ सहजि गुण गाईऐ जीउ ॥ गुण गाइ विगसै सदा अनदिनु जा आपि साचे भावए ॥ अहंकारु हउमै तजै माइआ सहजि नामि समावए ॥ आपि करता करे सोई आपि देइ त पाईऐ ॥ हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ १ ॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै जीउ ॥ हउ तिसु सेवी दिनु राति मै कदे न वीसरै जीउ ॥ कदे न विसारी अनदिनु सम्हारी जा नामु लई ता जीवा ॥ स्रवणी सुणी त इहु मनु त्रिपतै गुरमुखि अंम्रितु पीवा ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले अनदिनु बिबेक बुधि बिचरै ॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै ॥ २ ॥ सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ अनदिनु रहै लिव लाइ त सहजि समावए जीउ ॥ सहजि समावै ता हरि मनि भावै सदा अतीतु बैरागी ॥ हलति पलति सोभा जग अंतरि राम नामि लिव लागी ॥ हरख सोग दुहा ते मुकता जो प्रभु करे सु भावए ॥ सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ ३ ॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुख जमि जोहिआ जीउ ॥ हाइ हाइ करे दिनु राति माइआ दुखि मोहिआ जीउ ॥ माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ मेरी मेरी करत विहावए ॥ जो प्रभु देइ तिसु चेतै नाही अंति गइआ पछुतावए ॥ बिनु नावै को साथि न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ ॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुखि जमि जोहिआ जीउ ॥ ४ ॥ करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पाइआ जीउ ॥ सदा रहै कर जोड़ि प्रभु मनि भाइआ जीउ ॥ प्रभु मनि भावै ता हुकमि समावै हुकमु मंनि सुखु पाइआ ॥ अनदिनु जपत रहै दिनु राती सहजे नामु धिआइआ ॥ नामो नामु मिली वडिआई नानक नामु मनि भावए ॥ करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पावए जीउ ॥ ५ ॥ १ ॥

धनासरी छन्द महला ४ घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु यदि कृपा करे तो उसके नाम का सुमिरन किया जाता है। सच्चा गुरु अच्छी भावना रखने से ही मिलता है और स्वभाविक रूप से ही उस प्रभु के गुण गाए जाते हैं। यदि सच्चे प्रभु को भा जाए तो जीव सदैव उसके गुण गाता हुआ खिला रहता है। वह अहंकार और माया के प्रपंचों को त्याग देता है और स्वभाविक रूप से ही प्रभु-नाम में लीन हो जाता है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता है। यदि वह दे तब ही कुछ प्राप्त होता है। यदि प्रभु कृपा करे तो तभी उसके नाम का सुमिरन किया जाता है।। १ ।। मेरे अन्तर्मन में उस पूर्ण सच्चे गुरु के लिए सच्चा प्रेम है। मैं दिन रात उसी की सेवा करूं और वह मुझे कभी भी न भूले। मैं उसे कभी भी न भुलाऊं और सदैव उसे मन में संभाल कर रखूं। जब मैं उसका नाम लेता हूं तभी मैं आध्यात्मिक रूप से जीवित हो उठता हूं। कानों से उसकी बात सुनकर मन तृप्त हो जाता है। यदि प्रभु कृपादृष्टि करे तो ऐसे सच्चे गुरु से मिलाप हो जाता है जो सदैव विवेक बुद्धि में ही विचरण करता रहता है। मेरे अन्तर्मन में पूर्ण सच्चे गुरु के लिए सच्चा प्रेम है।। २ ।। बड़े भाग्य से यदि सत्संगत प्राप्त हो जाए तो प्रभु के रस का अनुभव होता है। यदि सदैव उसी में अपनी लौ लगाई जाए तो व्यक्ति सहज अवस्था में लीन हो जाता है। सहज में लीन होने से ही व्यक्ति प्रभु के मन को भाता है और सदैव अतीत तथा वैराग्यवान बना रहता है। इस लोक और परलोक में तथा सारे संसार में उसकी महिमा होती है क्योंकि उसकी लौ राम नाम में लग चुकी होती है। वह हर्ष और शोक दोनों से मुक्त हो जाता है और प्रभु जो भी करता है उसे अच्छा लगने लगता है। बड़े भाग्य से यदि सत्संगत प्राप्त हो जाए तो प्रभु के रस का अनुभव होता है।। ३ ।। मनमुख व्यक्ति को द्वैतभाव में लीन होने के कारण सदैव यम देखता ही रहता है। वह माया के दुख में पड़ा रहता है और दिन रात हाय हाय करता रहता है। माया के दुख में लीन बना हुआ और अहंकार के वश में होकर क्रोधित बना हुआ मेरी मेरी करता हुआ अपनी आयु गंवा देता है। जो प्रभु ने दिया है उसे याद नहीं रहता और अंत में यहां से पछताता हुआ जाता है। प्रभु-नाम के बिना पुत्र, स्त्री और माया के प्रपंच कोई भी साथ नहीं चलते। मनमुख व्यक्ति को द्वैतभाव में लीन होने के कारण सदैव यम देखता ही रहता है।। ४ ।। जिसे कृपा करके प्रभु अपने से मिला लेता है वह प्रभु के चरणों की शरण में अपना ठिकाना पा जाता है। प्रभु के मन को भाने वाला ऐसा व्यक्ति सदैव उसके सामने हाथ जोड़े खड़ा रहता है। यदि प्रभु के मन को भा जाए तो जीव उसके हुकुम के अन्तर्गत ही उसमें लीन हो जाता है और हुकुम मानकर उसे सुख प्राप्त होता है। अब वह दिन रात उसी के नाम का जाप करता है और स्वभाविक रूप से ही प्रभु-नाम का सुमिरन करता रहता है। प्रभु-नाम से ही उसे बड़प्पन प्राप्त होता है और हे नानक, प्रभु का नाम ही उसके मन को भाता है। जिसे कृपा करके प्रभु अपने से मिला लेता है वह प्रभु के चरणों की शरण में अपना ठिकाना पा जाता है।। ५ ।। १ ।।

धनासरी महला ५ छंत ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर दीन दइआल जिसु संगि हरि गावीऐ जीउ ॥ अंम्रितु हरि का नामु साधसंगि रावीऐ जीउ ॥ भजु संगि साधू इकु अराधू जनम मरन दुख नासए ॥ धुरि करमु लिखिआ साचु सिखिआ कटी जम की फासए ॥ भै भरम नाठे छुटी गाठे जम पंथि मूलि न आवीऐ ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा सदा हरि गुण गावीऐ ॥ १ ॥ निधरिआ धर एकु नामु निरंजनो जीउ ॥ तू दाता दातारु सरब दुख भंजनो जीउ ॥ दुख हरत करता सुखह सुआमी सरणि साधू आइआ ॥ संसारु सागरु महा बिखड़ा पल एक माहि तराइआ ॥ पूरि रहिआ सरब थाई गुर गिआनु नेत्री अंजनो ॥ बिनवंति नानक सदा सिमरी सरब दुख भै भंजनो ॥ २ ॥ आपि लीए लड़ि लाइ किरपा धारीआ जीउ ॥ मोहि निरगुणु नीचु अनाथु प्रभ अगम अपारीआ जीउ ॥ दइआल सदा क्रिपाल सुआमी नीच थापणहारिआ ॥ जीअ जंत सभि वसि तेरै सगल तेरी सारिआ ॥ आपि करता आपि भुगता आपि सगल बीचारीआ ॥ बिनवंत नानक गुण गाइ जीवा हरि जपु जपउ बनवारीआ ॥ ३ ॥ तेरा दरसु अपारु नामु अमोलई जीउ ॥ निति जपहि तेरे दास पुरख अतोलई जीउ ॥ संत रसन वूठा आपि तूठा हरि रसहि सेई मातिआ ॥ गुर चरन लागे महा भागे सदा अनदिनु जागिआ ॥ सद सदा सिंम्रतब्य सुआमी सासि सासि गुण बोलई ॥ बिनवंति नानक धूरि साधू नामु प्रभू अमोलई ॥ ४ ॥ १ ॥

रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सनक सनंद महेस समानां ॥ सेखनागि तेरो मरमु न जानां ॥ १ ॥ संतसंगति रामु रिदै बसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हनूमान सरि गरुड़ समानां ॥ सुरपति नरपति नही गुन जानां ॥ २ ॥ चारि बेद अरु सिंम्रिति पुरानां ॥ कमलापति कवला नही जानां ॥ ३ ॥ कहि कबीर सो भरमै नाही ॥ पग लगि राम रहै

धनासरी महला ५ छन्द १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

सच्चा गुरु ही दीन दयालु है जिसकी संगत में प्रभु का गुणानुवाद किया जाता है। साधसंगत में ही प्रभु के अमृत नाम में रमण किया जाता है। आराधना करने योग्य एक प्रभु का ही साधसंगत में सुमिरन करने से जन्म मरण का दुख नष्ट हो जाता है। जिनके कर्म लेखों में प्रारम्भ से ही लिखा हो उन्होंने सत्य की शिक्षा ले ली होती है और जन्म मरण के फन्दे को काट लिया होता है। भय और भ्रम उनके भाग खड़े होते हैं और अन्तर्मन में पड़ी हुई गाँठें खुल जाती है तथा वे कभी भी यम के मार्ग पर नहीं आते। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, कृपा धारण करो जिससे मैं सदैव प्रभु के गुण गाता रहूं।। १ ।। निराश्रितों का आसरा केवल एक निरंजन प्रभु का नाम ही होता है। हे प्रभु, तू ही देने वाला दाता है और तू ही सभी दुखों को दूर करने वाला है। हे दुखों को दूर करने वाले और सुखों के स्वामी प्रभु, जो व्यक्ति गुरु रूपी साधु की शरण में आ गया है उसे इस भयंकर संसार सागर से तूने एक पल भर में ही पार उतार लिया है। जब गुरु के ज्ञान का अंजन आंखों में पड़ा तो वह प्रभु सर्वत्र व्याप्त दिखाई देने लग गया। नानक विनती करता है कि सभी दुखों का नाश करने वाले प्रभु का मैं सदैव सुमिरन करता रहूं।। २ ।। प्रभु ने स्वयं मुझ पर कृपा करके मुझे अपने आंचल का आसरा दे दिया है। मैं तो गुण विहीन, नीच और अनाथ हूं, वह प्रभु अगम्य एवं अपरंपर है। वह स्वामी प्रभु सदैव दयालु और कृपालु बना रहता है तथा नीचों को भी ऊँचे स्थानों पर स्थापित करने वाला है। हे प्रभु, सभी जीव जन्तु तेरे ही वश में हैं और ये सब तेरी ही प्रजा हैं। तू स्वयं ही कर्ता है स्वयं ही भोगने वाला है और तू ही सबके विचारों का आधार है। नानक विनती करता है कि मैं तेरे गुणों का गायन करते हुए ही जीवित बना रहूं और उस बनवारी प्रभु का जाप करता रहूं।। ३ ।। हे प्रभु, तेरा दर्शन अपरंपर और तेरा नाम अमूल्य है। हे अतुलनीय प्रभु, तेरे दास सदैव तेरा ही जाप करते हैं। स्वयं प्रसन्न होकर जिन शान्त पुरुषों की जीभ पर तू आन बसा है वे शान्त पुरुष ही प्रभु के प्रेम में मस्त बने रहते हैं। बड़े भाग्य से वे गुरु के चरणों में लगे रहते हैं और सदैव सावधान अवस्था में बने रहते हैं। वे सदैव सुमिरन के योग्य स्वामी प्रभु के गुण प्रत्येक श्वास के साथ गाते रहते हैं। नानक विनती करता है कि साधु पुरुषों की चरण धूलि और प्रभु का नाम अमूल्य है।। ४ ।। १ ।।

रागु धनासरी वाणी भक्त कबीर जी की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

सनक सनन्दन आदि और शिव जैसों ने भी तथा शेषनाग आदि ने भी तेरे रहस्य को नहीं जाना है।। १ ।। संत संगति में प्रभु के राम नाम को हृदय में बसाओ।। १ ।। रहाउ ।। हनुमान जैसे, गरुड़ जैसे, इन्द्र जैसे और मनुष्यों के राजाओं आदि ने भी तेरे गुणों को नहीं जाना।। २ ।। चारों वेद, स्मृतियां, विष्णु, लक्ष्मी आदि ने भी तुझे नहीं पहचाना है।। ३ ।। कबीर कहता है कि ऐसा व्यक्ति भ्रमों में नहीं भटकता जो प्रभु चरणों में लगा रहकर प्रभु की

सरनांही ॥ ४ ॥ १ ॥ दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै ॥ कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥ १ ॥ सो दिनु आवन लागा ॥ मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है का का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै ॥ लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥ २ ॥ कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥ केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनां ॥ ३ ॥ २ ॥ जो जनु भाउ भगति कछु जानै ता कउ अचरजु काहो ॥ जिउ जलु जल महि पैसि न निकसै तिउ ढुरि मिलिओ जुलाहो ॥ १ ॥ हरि के लोगा मै तउ मति का भोरा ॥ जउ तनु कासी तजहि कबीरा रमईऐ कहा निहोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई भरमि न भूलहु कोई ॥ किआ कासी किआ ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई ॥ २ ॥ ३ ॥ इंद्र लोक सिव लोकहि जैबो ॥ ओछे तप करि बाहुरि ऐबो ॥ १ ॥ किआ मांगउ किछु थिरु नाही ॥ राम नाम रखु मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोभा राज बिभै बडिआई ॥ अंति न काहू संग सहाई ॥ २ ॥ पुत्र कलत्र लछमी माइआ ॥ इन ते कहु कवनै सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ कहत कबीर अवर नही कामा ॥ हमरै मन धन राम को नामा ॥ ४ ॥ ४ ॥ राम सिमरि राम सिमरि राम सिमरि भाई ॥ राम नाम सिमरन बिनु बूडते अधिकाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बनिता सुत देह ग्रेह संपति सुखदाई ॥ इन्ह मै कछु नाहि तेरो काल अवध आई ॥ १ ॥ अजामल गज गनिका पतित करम कीने ॥ तेऊ उतरि पारि परे राम नाम लीने ॥ २ ॥ सूकर कूकर जोनि भ्रमे तऊ लाज न आई ॥ राम नाम छाडि अंम्रित काहे बिखु खाई ॥ ३ ॥ तजि भरम करम बिधि निखेध राम नामु लेही ॥ गुर प्रसादि जन कबीर रामु करि सनेही ॥ ४ ॥ ५ ॥

धनासरी बाणी भगत नामंदेव जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए ॥ मारकंडे ते को अधिकाई जिनि त्रिण धरि मूंड बलाए ॥ १ ॥ हमरो करता रामु सनेही ॥ काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥ १ ॥ रहाउ ॥

शरण में पड़ा रहता है।। ४ ।। १ ।। दिन, प्रहर से लेकर हर घड़ी आयु कम होती जा रही है और शरीर निर्बल होता जा रहा है। काल शिकारी के रूप में कसाई की तरह घूमता फिर रहा है। कोई मुझे बताए कि बचने की विधि क्या है।। १ ।। मौत का वह दिन पास आता नज़र आ रहा है। माता, पिता, भाई, पुत्र और स्त्री आदि भला किसके हैं।। १ ।। रहाउ।। जब तक शरीर में आत्मा बनी रहती है तब तक यह पशु मानव अपने आपको पहचानता नहीं है। जीवित बने रहने के लिए यह लालच में पड़ा रहता है और इसे अपनी आंखों से कुछ भी सूझता नहीं।। २ ।। कबीर कहता है कि हे प्राणी, तुम केवल प्रभु-नाम का जाप करो और केवल एक प्रभु की ही शरण में पड़े रहो।। ३ ।। २ ।। जो व्यक्ति थोड़ी सी भी प्रभु की प्रीति और भक्ति को जानता है उसके लिए उस प्रभु के साथ एक हो जाना भला कौन सी आश्चर्य की बात है। जैसे जल से मिला हुआ जल फिर उससे अलग नहीं होता इसी तरह जुलाहा कबीर ढल कर उस प्रभु से मिलकर एक हो गया है।। १ ।। हे प्रभु के लोगो, तुम लोगों के अनुसार तो मैं मति का भोला ही हूं। यदि कबीर काशी में शरीर का त्याग करे तो भला इसमें परमात्मा के लिए कौन सी एहसान वाली बात है।। १ ।। रहाउ।। कबीर कहता है कि हे लोई, तुम इस बात को ध्यान से सुन लो कि किसी को भी भ्रमों में नहीं भूलना चाहिए। जब प्रभु हृदय में बस गया हो तो फिर क्या काशी है और क्या मगहर नामक कसबा है अर्थात दोनों एक जैसे हैं।। २ ।। ३ ।। यदि व्यक्ति इन्द्रलोक और सुरलोक में भी चला जाए तो वहां भी ओछे कर्म करने के फलस्वरूप उसे वहां से बाहर ही आना पड़ेगा।। १ ।। मैं क्या मांगूं ? यहां तो कुछ भी स्थिर बना रहने वाला नहीं है। हे जीव, तू राम नाम को ही अपने मन में संभाल के रख।। १ ।। रहाउ।। शोभा, राज, वैभव और बड़प्पन आदि में से कोई भी अंतिम समय संग नहीं जाता।। २ ।। पुत्र, स्त्री, धन-दौलत आदि से भी भला बताओ किसी ने सुख प्राप्त किया है।। ३ ।। कबीर कहता है कि मेरी तो अन्य कोई कामना नहीं है। हमारे मन का धन तो राम का नाम ही है।। ४ ।। ४ ।। हे भाई, तू राम नाम का बार-बार सुमिरन करता रह। राम नाम के सुमिरन के बिना बहुत अधिक लोग इस संसार सागर में ही डूब गए हैं।। १ ।। रहाउ।। स्त्री, पुत्र, शरीर, घर, सम्पत्ति आदि सुखदायक पदार्थों में से कुछ भी तेरा नहीं है। मौत का समय पास आ गया है।। १ ।। अजामिल, हाथी और गणिका ने नीच कर्म किए परन्तु राम नाम का सुमिरन करने से वे भी पार उतर गए।। २ ।। सूअर और कुत्ते की योनि में भटककर भी हे जीव, तुझे लज्जा नहीं आयी। राम नाम रूपी अमृत को छोड़कर तू क्यों विष को खाता चला जा रहा है।। ३ ।। भ्रम, कर्मकाण्ड, विधि, निषेधों को छोड़कर तू राम नाम का जाप कर। हे दास कबीर, गुरु की कृपा से तू प्रभु को अपना मित्र बना ले।। ४ ।। ५ ।।

धनासरी वाणी भक्त नामदेव जी की   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे जीव, तूने गहरी नींव को खोदकर उस पर महल बनाए, परन्तु माकण्डेय ऋषि से भला कौन अधिक बड़ा था जिसने सिर पर घास रखकर ही अपने समय को व्यतीत किया था अर्थात लम्बी आयु होने के बावजूद उसने अपने लिए महल आदि बनाने की बात कभी नहीं सोची।। १ ।। हमें पैदा करने वाला प्रभु हमारा मित्र है। हे व्यक्ति, तू क्यों अहंकार करता है क्योंकि यह झूठी काया तो विनष्ट हो ही जाएगी।। १ ।। रहाउ।।

मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥ बारह जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन खाई ॥ २ ॥ सरब सुोइन की लंका होती रावन से अधिकाई ॥ कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि भई पराई ॥ ३ ॥ दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए ॥ क्रिपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन गाए ॥ ४ ॥ १ ॥ दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ही पंचहु का मिट नावउ ॥ सतरि दोइ भरे अंम्रित सरि बिखु कउ मारि कढावउ ॥ १ ॥ पाछै बहुरि न आवनु पावउ ॥ अंम्रित बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बजर कुठारु मोहि है छीनां करि मिंनति लगि पावउ ॥ संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डरपावउ ॥ २ ॥ इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ ॥ माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ ॥ ३ ॥ इतु करि भगति करहि जो जन तिन भउ सगल चुकाईऐ ॥ कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम हरि पाईऐ ॥ ४ ॥ २ ॥ मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥ जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ १ ॥ तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ धरणी कउ इंद्र बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥ जिउ कोकिल कउ अंबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ २ ॥ चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हंसुला ॥ जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ ३ ॥ बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चात्रिक मुख जैसे जलधरा ॥ मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ ४ ॥ साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥ सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥ ५ ॥ ३ ॥ पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥ ता चे हंसा सगले जनां ॥ क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥ १ ॥ पहिल पुरसाबिरा ॥ अथोन पुरसादमरा ॥ असगा अस उसगा ॥ हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाचंती गोपी जंना ॥ नईआ ते बैरे कंना ॥ तरकु न चा ॥ भ्रमीआ चा ॥ केसवा बचउनी अईए मईए एक आन

दुर्योधन जैसे भाई को रखने वाले कौरव यही कहते थे कि सब कुछ हमारा है। बारह योजन (अड़तालीस कोस = लगभग सौ मील) तक उनका छत्र फैला रहता था परन्तु उनके शरीरों को भी अंततः गिद्धो ने खाया।। २ ।। रावण जैसे बड़े राजा की सम्पूर्ण लंका सोने की बनी हुई थी। उसके दरवाजे पर बंधे हुए हाथियों का क्या हुआ अर्थात वे कहां चले गए और क्षण भर में यह लंका उसके लिए पराई हो गई।। ३ ।। दुर्वासा ऋषि के साथ मज़ाक करने का यादवों को बुरा फल भुगतना पड़ा। प्रभु ने अपने सेवक पर कृपा की जिससे नामदेव प्रभु के गुण गाता रहा।। ४ ।। १ ।। वैराग्यवान आत्मा की दसों इन्द्रियों रूपी रानियों को मैंने काबू कर लिया है और पांचों विकारों का नाम तक मिटा दिया है। शरीर की दोनों बड़ी नाड़ियों को मैंने प्रभु के अमृत नाम के तालाब से भर लिया है और विष को मारकर मैंने बाहर निकाल दिया है।। १ ।। इस संसार में फिर आने का मौका नहीं मिलेगा इसीलिए मैं अपने हृदय से अमृतवाणी का उच्चारण करता हूं और अपने मन को समझाता रहता हूं।। १ ।। रहाउ।। गुरु के चरणों में आकर मिन्नत करते हुए मैंने उससे शब्द रूपी कठोर कुल्हाड़ा लेकर मोह को काट डाला है। शान्त पुरुषों के तो हम उल्टे सेवक हैं तथा भक्तों से हमेशा डरते रहते हैं।। २ ।। इस संसार से तो तभी मुक्ति हो सकेगी यदि मैं माया के प्रपंचों में लीन न होऊँ। गर्भयोनि में आने का नाम ही माया है; इस माया को छोड़कर ही दर्शन पाया जा सकता है।। ३ ।। इस प्रकार की भक्ति जो भी व्यक्ति करता है उसके सभी डर दूर हो जाते हैं। नामदेव कहता है कि हे व्यक्ति, तू बाहर क्या भटकता है; केवल अनुशासन में रहकर ही प्रभु को पाया जाता है।। ४ ।। २ ।। मारवाड़ जैसे रेगिस्तान में पानी प्यारा लगता है और ऊँठ को जैसे हरि बेल अच्छी लगती है तथा जैसे हिरन को रात्रि के समय वाद्यों का नाद अच्छा लगता है उसी प्रकार मेरे मन को वह रमैया प्रभु अच्छा लगता है।। १ ।। हे प्रभु, तेरा नाम भी सुन्दर है तेरा रूप भी सुन्दर है और तेरा रंग भी अत्यन्त सुन्दर है।। १ ।। रहाउ।। जैसे धरती को वर्षा और भंवरे को फूल की सुगन्ध अच्छी लगती है, जैसे कोयल को आम अच्छा लगता है वैसे ही मेरे मन को रमैया प्रभु अच्छा लगता है।। २ ।। चकवी को जैसे सूर्य अच्छा लगता है और हंस को मानसरोवर अच्छा लगता है; जिस प्रकार जवान स्त्री को पति प्यारा लगता है इसी तरह मेरे मन को रमैया प्रभु अच्छा लगता है।। ३ ।। बच्चे को जैसे दूध अच्छा लगता है और चातक पक्षी को बादल अच्छा लगता है, मछली को जैसे पानी अच्छा लगता है उसी तरह मेरे मन को रमैया प्रभु अच्छा लगता है।। ४ ।। साधना करने वाले सिद्ध और मुनि आदि उस प्रभु को चाहते हैं परन्तु कोई बिरला ही उसे देख पाता है। सभी लोकों में तेरे नाम को ही प्यार किया जाता है और इसी तरह नामदेव के मन को भी विट्ठल प्रभु ही अच्छा लगता है।।५ ।।३ ।।सबसे पहले की सृष्टि कमल के फूलों का वन ही थी। उसी कमल के खेतों में से हंस रूपी सभी जीव प्रकट हुए। प्रेरक प्रभु के माध्यम से यह जान लो कि परमात्मा की सृष्टि उस परमात्मा के चारों ओर नृत्य कर रही है।।१।। सबसे पहले वह हरि रूपी पुरुष प्रकट हुआ, उसके बाद उसी से माया उत्पन्न हुई और जो कुछ इस माया का है वह वास्तव में प्रभु का ही है। यह सारी सृष्टि प्रभु का ही बगीचा है और सबमें वह इसी प्रकार नृत्य कर रहा है जैसे रहट के माध्यम से कुएं में से निकलता हुआ पानी प्रत्येक बर्तन में नृत्य करता हुआ दिखाई देता है।। १ ।। रहाउ।। जीव रूपी गोपियां नाचती हैं, मालिक प्रभु के बिना अन्य कोई भी नहीं है। इस तथ्य पर तर्क न कर। तर्क का वाद-विवाद भ्रम पैदा करने वाला होता है। केशव प्रभु का यह वचन है कि यह संसार और मैं एक जैसे ही हैं अर्थात वह संसार मेरा ही रूप

जीउ ॥ २ ॥ पिंधी उभकले संसारा ॥ भ्रमि भ्रमि आए तुम चे दुआरा ॥ तू कुनु रे ॥ मै जी ॥ नामा ॥ हो जी ॥ आला ते निवारणा जम कारणा ॥ ३ ॥ ४ ॥ पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥ धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा ॥ १ ॥ मेरै माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की ॥ सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी ॥ चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥ २ ॥ ५ ॥

धनासरी भगत रविदास जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥ बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥ १ ॥ हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥ कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥ बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥ कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥ २ ॥ १ ॥ चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥ मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥ १ ॥ मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥ मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥ कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥ २ ॥ २ ॥ नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥ हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥ नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥ १ ॥ नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥ नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥ २ ॥ नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥ तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥ ३ ॥ दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥ कहै रविदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥ ४ ॥ ३ ॥

है।। २ ।। यह जीव रूपी बर्तन संसार रूपी कुएं में ऊपर नीचे होते रहते है। हे प्रभु, हम तो भटकते भटकते तेरे द्वार तक आ पहुंचे हैं। तुम कौन हो? हे प्रभु, मैं तेरा सेवक नामदेव हूं। हे प्रभु जी, मुझे माया के सांसारिक जाल से बचा लो क्योंकि यही मौत का कारण है।। ३ ।। ४ ।। हे प्रभु, गिरे हुओं को उठा कर पवित्र करना तेरा स्वभाव है। वे मुनिजन धन्य हैं जिन्होंने मेरे हरि प्रभु का सुमिरन किया है।। १ ।। मेरे माथे पर पृथ्वी के स्वामी प्रभु के चरणों की धूल लगी है जो कि सुर, नर मुनिजन आदि को भी प्राप्त नहीं होती अर्थात यह उनसे दूर ही बनी रहती है।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, तुम दीनदयालु हो और अहंकार का नाश करने वाले हो। यह नामदेव तुम्हारे चरणों की शरण में है और तुम पर ही बलिहारी जाता है।। २ ।। ५ ।।

धनासरी भक्त रविदास जी की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हमारे जैसा हे प्रभु, कोई दीन नहीं है और तुम्हारे जैसा कोई दयालु नहीं है। भला अब इस तथ्य को आजमाने की जरूरत नहीं है। अपने दास को ऐसी पूर्णता प्रदान करो कि तुम्हारे वचनों पर मेरे मन को भरोसा हो जाए।। १ ।। मैं बार-बार उस प्रभु पर बलिहारी जाता हूं। किस कारण से हे प्रभु, तुम मुझसे बोलते नहीं हो।। रहाउ।। हे प्रभु, हम बहुत जन्मों से आज तक तुम से बिछुड़े हुए थे परन्तु यह जन्म तो अब तुम्हारे लेखे में ही व्यतीत होने वाला है। रविदास कहता है कि तुम्हारा दर्शन किए मुझे बहुत देर हो गयी है और अब तो तुम्हारे दर्शन की आशा में ही मैं जीवित बना हुआ हूं।। २ ।। १ ।। हृदय इसलिए है कि तुम्हारा सुमिरन किया जाए, आंखे तुझे देखने के लिए हैं और सुनने के लिए ये कान हैं जिन्हें तुम्हारे उत्तम गुणानुवाद से मैं भरा रखूं। मैं अपने मन को भौंरा बनाऊँ और इस प्रकार प्रभु के चरण कमलों में लगा रहूं। अपनी जीभ से अमृत रूपी राम नाम का उच्चारण करता रहूं।। १ ।। प्रभु के प्रति मेरी प्रीति कभी भी न घटने पाए क्योंकि इसे तो मैंने बड़े महंगे दाम पर अर्थात मन के बदले में प्राप्त किया हे।। १ ।। रहाउ।। साधसंगत के बिना प्रेम उत्पन्न नहीं होता और प्रेम के बिना हे प्रभु तेरी भक्ति नहीं होती। रविदास कहता है कि हे प्रभु, तेरे सामने एक प्रार्थना है कि हे राजा राम, तू मेरी इज्ज़त बचा ले।। २ ।। २ ।। हे मुरारी प्रभु, तेरे मन का सुमिरन ही मेरे लिए आरती है और यही मेरे लिए तीर्थ स्नान है। प्रभु-नाम के बिना सभी प्रपंच झूठे हैं।। १ ।। रहाउ।। तेरा नाम ही मेरी पूजा का आसन है, तेरा नाम ही मेरा चन्दन घिसने वाला पत्थर है; तेरा नाम ही मेरे लिए छींटा देने वाला केसर है और तेरा नाम ही मेरा पानी है। तेरा नाम ही मेरे लिए चन्दन को घिसना है और इस चन्दन को घिस कर तुझको ही चढ़ाया जाता है।। १ ।। तेरा नाम ही मेरे लिए दीपक है, तेरा नाम ही दीपक में बाती है और तेरा नाम ही वह तेल है जो तुझ से लेकर दीपक में डाला हुआ है। जब तेरे नाम की ज्योति के माध्यम से उस दीपक को जलाया गया तो सारे संसार में प्रकाश ही प्रकाश हो गया।। २ ।। तेरा नाम ही धागा, फूल, माला आदि है और वनस्पति के अठारह भार (लदान) आदि सब कुछ तेरे नाम के ही अन्तर्गत हैं तथा वास्तव में यह सारी वनस्पति तो तेरे द्वारा पहले ही जूठी की हुई है। हे प्रभु, यह सब तेरा ही किया हुआ है अब बता भला तेरी बनाई वस्तुओं को मैं तुझे क्या अर्पण करूं। तेरे नाम को ही मैं तेरे ऊपर चंवर की तरह डुलाता हूं।। ३ ।। अठारह पुराण, अड़सठ तीर्थ और चार प्रकार के जीवन स्रोतों में ही कार्य व्यापार करता हुआ सारा सागर उनमें लीन है। रविदास का कथन है कि हे प्रभु, तेरा नाम ही यह आरती है और तेरा सच्चा नाम ही तेरा भोग अथवा प्रसाद है।। ४ ।। ३।।

धनासरी बाणी भगतां की त्रिलोचन ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाराइण निंदसि काइ भूली गवारी ॥ दुक्रितु सुक्रितु थारो करमु री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे ॥ कुल जन मधे मिल्यिो सारगपान रे ॥ करम करि कलंकु मफीटसि री ॥ १ ॥ बिस्व का दीपकु स्वामी ता चे रे सुआरथी पंखी राइ गरुड़ ता चे बाधवा ॥ करम करि अरूण पिंगुला री ॥ २ ॥ अनिक पातिक हरता त्रिभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री ॥ करम करि कपालु मफीटसि री ॥ ३ ॥ अंम्रित ससीअ धेन लछिमी कलप तर सिखरि सुनागर नदी चे नाथं ॥ करम करि खारु मफीटसि री ॥ ४ ॥ दाधीले लंका गड़ु उपाड़ीले रावण बणु सलि बिसलि आणि तोखीले हरी ॥ करम करि कछउटी मफीटसि री ॥ ५ ॥ पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि ता चे मोहि जापीअले राम चे नामं ॥ बदति त्रिलोचन राम जी ॥ ६ ॥ १ ॥ स्री सैणु ॥ धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥ वारने जाउ कमला पती ॥ १ ॥ मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगलु राजा राम राइ को ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥ तुंही निरंजनु कमला पाती ॥ २ ॥ रामा भगति रामानंदु जानै ॥ पूरन परमानंदु बखानै ॥ ३ ॥ मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥ सैनु भणै भजु परमानंदे ॥ ४ ॥ २ ॥ पीपा ॥ कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥ काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥ १ ॥ काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥ ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥ पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥ २ ॥ ३ ॥ धंना ॥ गोपाल तेरा आरता ॥ जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दालि सीधा मागउ घीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥ पन्हीआ छादनु नीका ॥ अनाजु मगउ सत सी का ॥ १ ॥ गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥ घर की गीहनि चंगी ॥ जनु धंना लेवै मंगी ॥ २ ॥ ४ ॥

धनासरी वाणी भक्तों की त्रिलोचन १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे गँवार जीव स्त्री, तू भूली हुई है और क्यों तू प्रभु की निन्दा कर रही है। बुरा भला दुख सुख तेरे अपने कर्मों के फल हैं।। १ ।। रहाउ।। शंकर के माथे पर चन्द्रमा है और उसका गंगा का स्नान हमेशा ही चलता रहता है और बेशक उसके वंश में विष्णु का अवतार चन्द्रवंशी कृष्ण भी आ मिला है परन्तु कर्मों के कारण उसके माथे के चन्द्र पर लगा कलंक का दाग मिटता नहीं।। १ ।। बेशक रथ चालक अरुण का मालिक सूर्य संसार का दीपक है और उसका भाई गरुड़ पक्षियों का राजा है परन्तु कर्मों के कारण अरुण लूला लंगड़ा हो गया ।। २ ।। अनेक पापों का नाश करने वाला तीनों लोकों का मालिक शिव विभिन्न तीर्थों का भ्रमण करता रहा परन्तु फिर भी परमात्मा का रहस्य नहीं जान पाया। ब्रह्मा के सिर काटने का पाप उस पर से नहीं उतर सका।। ३ ।। बेशक अमृत, चन्द्रमा, कामधेनु, लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, उच्चश्रवा घोड़ा (लम्बे कानों और सात मुंहों वाला घोड़ा) तथा धन्वन्तरी नामक बुद्धिमान वैद्य, नदियों के स्वामी समुद्र में से ही निकले थे, परन्तु अपने कर्मों के कारण समुद्र का खारापन नहीं जाता।। ४ ।। बेशक हनुमान ने लंका का किला जला दिया था, रावण का बगीचा उजाड़ दिया और संजीवनी बूटी लाकर प्रभु को प्रसन्न कर दिया परन्तु कर्मों के कारण लंगोटी वाला शाप उस पर से न उतर सका।। ५ ।। हे मेरी जीवात्मा, पिछला कोई भी किया हुआ कर्म किसी भी कर्मकाण्ड, स्नान आदि से मिटता नहीं; इसीलिए मैं तो परमात्मा के नाम का ही सुमिरन करता हूं। त्रिलोचन कहता है कि मैं तो केवल राम का ही सुमिरन करता हूं और अपने किए हुए कर्मों के फलस्वरूप मिलते हुए दुख के लिए प्रभु को दोष नहीं देता।। ६ ।। १ ।। श्री सैण जी।। मैं प्रभु पर बलिहारी जाता हूं क्योंकि वही मेरे लिए धूप बत्ती दीपक और घी इत्यादि की आरती है।। १ ।। प्रभु की भक्ति का मंगल गीत सदैव गाते रहो क्योंकि राजन प्रभु का किया हुआ मंगल ही सदैव बना रहने वाला है।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, उत्तम दीपक और निर्मल बाती सब कुछ तुम ही हो क्योंकि तुम ही निरंजन हो और सारी धन सम्पदा के स्वामी हो।।२।। रामानन्द उस प्रभु की भक्ति को पहचानता और वही पूर्ण परमानन्द का बखान करता है।। ३ ।। मनमोहक रूप वाले हे प्रभु, तू मुझे पार उतार ले। भक्त सैण कहता है कि हे प्राणियों, उस परमानन्द प्रभु का ही भजन करो।। ४ ।। २ ।। पीपा।। शरीर ही देवता है और प्रभु का रूप है। शरीर ही उसका मंदिर है और शरीर ही घूमता फिरता रहने वाला जंगम साधु और यात्री है। शरीर ही धूप, दीपक और प्रसाद है और शरीर ही फूल पत्तियो के साथ की हुई पूजा है।। १ ।। इधर उधर बहुत खोजने के बाद मैंने शरीर में ही सभी नवनिधियां पा ली है। राम की दुहाई है कि यहां से न तो कुछ जाता है और न ही यहां कोई आता है अर्थात सब कुछ स्वयं प्रभु ही है।। १ ।। रहाउ।। जो कुछ भी इस ब्रह्माण्ड में है वह सब इस शरीर में भी स्थित है परन्तु जो इसे खोजता है वही इसको जान पाता है। पीपा विनती करता है कि प्रभु ही सबका मूल तत्व हैं और स्वयं ही गुरु बनकर अपना आप हमें बताता है।। २ ।। ३ ।। धन्ना।। हे धरती के मालिक प्रभु, मेरे किए हुए काम को अपनी आरती से भी बड़ा आरता मान ले। जो व्यक्ति तुम्हारी भक्ति करते हैं तुम उनके कामों को ठीक कर देते हो।। १ ।। रहाउ।। मैं तो तुमसे दाल, आटा, घी आदि सामान ही मांगता हूं जो कि सदैव मेरे मन को प्रसन्न करने वाला होता है। मुझे सुन्दर जूती और कपड़ा प्रदान करो और ऐसा अनाज दो जो सात बार हल चला कर पैदा किया गया हो।। १ ।। मैं तुमसे दूध देने वाली गाय और भैंस भी मांगता हूं और साथ ही साथ सवारी के लिए एक अच्छी घोड़ी भी चाहता हूं; इस सबसे अलावा सेवक धन्ना की यह भी मांग है कि मेरे घर की स्त्री भी बढ़िया होनी चाहिए।। २ ।। ४ ।।

जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा ॥ जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ रिनु लाथा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ बिनु नावै जीवनु बिरथा ॥ रहाउ ॥ बिनु गुर मूड़ भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा ॥ तिन साधू चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ॥ २ ॥ जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा ॥ मोकउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा ॥ ३ ॥ हम अंधुले गिआनहीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा ॥ हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा ॥ ४ ॥ १ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ हीरा लालु अमोलकु है भारी बिनु गाहक मीका काखा ॥ रतन गाहकु गुरु साधू देखिओ तब रतनु बिकानो लाखा ॥ १ ॥ मेरै मनि गुपत हीरु हरि राखा ॥ दीन दइआलि मिलाइओ गुरु साधू गुरि मिलिऐ हीरु पराखा ॥ रहाउ ॥ मनमुख कोठी अगिआनु अंधेरा तिन घरि रतनु न लाखा ॥ ते ऊझड़ि भरमि मुए गावारी माइआ भुअंग बिखु चाखा ॥ २ ॥ हरि हरि साध मेलहु जन नीके हरि साधू सरणि हम राखा ॥ हरि अंगीकारु करहु प्रभ सुआमी हम परे भागि तुम पाखा ॥ ३ ॥ जिहवा किआ गुण आखि वखाणह तुम वड अगम वड पुरखा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जैतसरी महला ४ घरु १ चौपदे

मेरे हृदय में प्रभु नाम रूपी रत्न बस गया है और गुरु ने अपना हाथ मेरे माथे पर रख दिया है। गुरु ने मुझे नाम का दान दिया है जिससे जन्म जन्म के मेरे पाप और दुख समाप्त हो गए हैं और सिर पर चढ़ा पापों का कर्ज़ उतर गया है।। १ ।। हे मेरे मन, तू राम नाम का भजन कर जो सभी पदार्थों का परम पदार्थ है। पूर्ण गुरु ने ही मुझे प्रभु नाम पक्का याद कराया है और वास्तव में प्रभु-नाम के बिना सारा जीवन व्यर्थ ही है।। रहाउ।। गुरु से विहीन मनमुख व्यक्ति मूर्ख बने हुए हैं और मोह माया में सदैव फंसे हुए हैं। उन्होंने कभी भी साधु पुरुषों के चरणों की सेवा नहीं की है और उनका सारा जीवन निष्फल हो गया है।। २ ।। जिन्होंने साधु पुरुषों के चरणों की सेवा की है उनका जीवन सफल और अर्थपूर्ण हो गया है। हे दयालु प्रभु, मुझ पर दया करो और मुझे अपने दासों का दास बना लो।। ३ ।। हम ज्ञानहीन, अज्ञानी और अंधे हैं। हम भला किस प्रकार प्रभु के मार्ग पर चलें। हे प्रभु, हमें गुरु के आंचल से लगा दो ताकि दास नानक आपके साथ मिलकर चल सके।। ४ ।। १ ।। जैतसरी महला ४ ।। प्रभु रूपी हीरा अमूल्य और महान है परन्तु ग्राहक के बिना यह तिनके के समान निरर्थक हो गया है। जब रत्नों का ग्राहक सच्चा गुरु मिल गया तब यह लाखों में बिकने लायक दिखाई देने लगा।। १ ।। मेरे मन में भी प्रभु ने एक गुप्त हीरा रखा हुआ है। उस दीनदयालु प्रभु ने गुरु रूपी साधु को मुझसे मिला दिया है और उससे मिलने पर मुझे भी इस हीरे की परख हो गयी है।। रहाउ।। मनमुख व्यक्तियों के मन की कोठरी में अज्ञान रूपी अंधकार रहता है। उनके अन्तर्मन में यह रत्न दिखाई नहीं पड़ता। ऐसे मूर्ख, उजाड़ और कुमार्ग पर भटक कर मर खप गए हैं क्योंकि उन्होंने माया रूपी नागिन का विष चखा हुआ था।। २ ।। हे प्रभु, मुझे भले साधु पुरुषों की शरण में ही बनाए रखो। हे स्वामी प्रभु, हमें अंगीकार किए रहो क्योंकि हम तो सब तरफ से भागकर तुम्हारी ओर आए हैं।। ३ ।। इस जीभ के साथ तुम्हारे गुणों का क्या बखान किया जाए क्योंकि तुम अगम्य और सबसे बड़े एवं सर्वव्यापक प्रभु हो। दास नानक पर प्रभु ने कृपा की और इस डूबते

पाखाणु डूबत हरि राखा ॥ ४ ॥ २ ॥ जैतसरी मः ४ ॥ हम बारिक कछूअ न जानह गति मिति तेरे मूरख मुगध इआना ॥ हरि किरपा धारि दीजै मति ऊतम करि लीजै मुगधु सिआना ॥ १ ॥ मेरा मनु आलसीआ उघलाना ॥ हरि हरि आनि मिलाइओ गुरु साधू मिलि साधू कपट खुलाना ॥ रहाउ ॥ गुर खिनु खिनु प्रीति लगावहु मेरै हीअरै मेरे प्रीतम नामु पराना ॥ बिनु नावै मरि जाईऐ मेरे ठाकुर जिउ अमली अमलि लुभाना ॥ २ ॥ जिन मनि प्रीति लगी हरि केरी तिन धुरि भाग पुराना ॥ तिन हम चरण सरेवह खिनु खिनु जिन हरि मीठ लगाना ॥ ३ ॥ हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि जनु बिछुरिआ चिरी मिलाना ॥ धनु धनु सतिगुरु जिनि नामु द्रिड़ाइआ जनु नानकु तिसु कुरबाना ॥ ४ ॥ ३ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ सतिगुरु साजनु पुरखु वड पाइआ हरि रसकि रसकि फल लागिबा ॥ माइआ भुइअंग ग्रसिओ है प्राणी गुर बचनी बिसु हरि काढिबा ॥ १ ॥ मेरा मनु राम नाम रसि लागिबा ॥ हरि कीए पतित पवित्र मिलि साध गुर हरि नामै हरि रसु चाखिबा ॥ रहाउ ॥ धनु धनु वडभाग मिलिओ गुरु साधू मिलि साधू लिव उनमनि लागिबा ॥ त्रिसना अगनि बुझी सांति पाई हरि निरमल निरमल गुन गाइबा ॥ २ ॥ तिन के भाग खीन धुरि पाए जिन सतिगुर दरसु न पाइबा ॥ ते दूजै भाइ पवहि ग्रभ जोनी सभु बिरथा जनमु तिन जाइबा ॥ ३ ॥ हरि देहु बिमल मति गुर साध पग सेवह हम हरि मीठ लगाइबा ॥ जनु नानकु रेण साध पग मागै हरि होइ दइआलु दिवाइबा ॥ ४ ॥ ४ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ जिन हरि हिरदै नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बांझा ॥ तिन सुंञी देह फिरहि बिनु नावै ओइ खपि खपि मुए करांझा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा ॥ हरि हरि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीओ मनु समझा ॥ रहाउ ॥ हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतमु हरि पाईऐ सतिगुर माझा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि गुपतु नामु परगाझा ॥ २ ॥ दरसनु साध मिलिओ वडभागी सभि किलबिख गए गवाझा ॥ सतिगुरु साहु पाइआ वड दाणा हरि

हुए पत्थर को बचा लिया।। ४ ।। २ ।। जैतसरी महला ४ ।। हे प्रभु, हम मूर्ख अनजान तेरे बच्चे हैं। तेरी सीमा और गति को हम नहीं जान सकते। हे प्रभु, कृपा करके हमें उत्तम मति प्रदान करो और हम मूर्खों को सयाना बना दो।। १ ।। मेरा आलसी मन ऊँघता हुआ भटक गया है। प्रभु ने ही स्वयं गुरु रूपी साधु से मिलाया है और उस साधु पुरुष से मिलते ही हमारे मन के कपाट खुल गए हैं अर्थात हमें सुमति मिल गई है।। रहाउ।। हे प्रभु रूपी गुरु, तुम प्रत्येक क्षण अपनी प्रीति हमारे हृदय में लगा दो क्योंकि प्यारे प्रभु का नाम ही मेरा प्राण है। हे मेरे मालिक, तुम्हारे नाम के बिना हम ऐसे ही मर जाते हैं जैसे नशा करने वाला नशे का लोभी होने के कारण न मिलने पर मर जाता है।। २ ।। जिनके मन में प्रभु की प्रीति लग गई है उनके प्रभु की ओर से ही लिखे भाग्य लेख पूरे हो गए हैं।। जिनको प्रभु अच्छा लगता है हम प्रत्येक क्षण उनके चरणों की पूजा करते हैं।। ३ ।। मेरे मालिक प्रभु ने कृपा की और बहुत देर का बिछुड़ा हुआ दास अपने साथ मिला लिया। वह सच्चा गुरु धन्य है जिसने प्रभु का नाम हृदय में पक्का कर लिया है और यह दास नानक उस पर कुर्बान जाता है।। ४ ।। ३ ।। जैतसरी महला ४ ।। जब सच्चा गुरु सज्जन पुरुष के रूप में प्राप्त हो गया तो जीव प्रभु रूपी फल को रस पूर्वक खाने लग गया है। व्यक्ति माया रूपी सर्प का पकड़ा हुआ अर्थात काटा हुआ है परन्तु गुरु के उपदेश के साथ परमात्मा उसके विष को बाहर निकाल देता है।। १ ।। मेरा मन प्रभु रस में लीन बना हुआ है। प्रभु ने दीन एवं पतित लोगों को भी साधु रूपी गुरु से मिलाकर पवित्र कर दिया है और उन्होंने भी साधुजनों से मिलकर प्रभु-नाम के रस को चख लिया है।। रहाउ।। मेरा बड़ा भाग्य धन्य है जिसके कारण गुरु रूपी साधु पुरुष मिल गया जिससे मिलकर मेरी सुरति सबसे ऊँची उन्मनी अवस्था में स्थित हो गई है। अब मेरी तृष्णा रूपी अग्नि बुझ गई है, मुझे शान्ति मिल गई है और मैं प्रभु के निर्मल गुणों का गायन करता रहता हूं।। २ ।। जिन्होंने सच्चे गुरु का दर्शन नहीं किया प्रभु की ओर से ही उनके भाग्य लेख कमज़ोर लिखे गए हैं। वे द्वैतभाव में पड़कर योनियों में भटकते रहते हैं और उनका जीवन व्यर्थ ही चला जाता है।। ३ ।। हे प्रभु, हमें ऐसी निर्मल बुद्धि दो कि गुरु रूपी साधु के चरणों की हम सेवा करते रहें तथा प्रभु हमें अच्छा लगता रहे। हे प्रभु, दयालु बनकर हमें वह दिला दो।। ४ ।। ४ ।। जैतसरी महला ४ ।। जिनके हृदय में प्रभु-नाम नहीं बसा है हे प्रभु, उनकी मां को तो बांझ ही बना दो। प्रभु-नाम के बिना तो उनका शरीर सुनसान ही घूमता रहता है और वे चीखते चिल्लाते हुए मरते खपते रहते हैं।। १ ।। हे मेरे मन, तू अपने अन्दर ही स्थित प्रभु-नाम का जाप कर। प्रभु ने कृपालु होकर कृपा दृष्टि की और गुरु के माध्यम से ऐसा ज्ञान प्रदान किया कि मन संतुष्ट हो गया है।। रहाउ।। कलियुग में प्रभु की कीर्ति का गायन ही उत्तम पदवी है और सच्चे गुरु के माध्यम से ही प्रभु को पाया जाता है। मैं अपने सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूं जिसने हमारे अन्दर छिपे हुए प्रभु-नाम को प्रकट कर दिया है।। २।। साधु पुरुषों के दर्शन करके बड़े भाग्य से वह प्रभु मिला जिससे मेरे सभी पाप दूर हो गए हैं। मैंने सच्चा गुरु रूपी बड़ा साहूकार पा लिया है

कीए बहु गुण साझा ॥ ३ ॥ जिन कउ क्रिपा करी जगजीवनि हरि उरि धारिओ मन माझा ॥ धरम राइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा ॥ ४ ॥ ५ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ सतसंगति साध पाई वडभागी मनु चलतौ भइओ अरूड़ा ॥ अनहत धुनि वाजहि नित वाजे हरि अंम्रित धार रसि लीड़ा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि रूड़ा ॥ मेरै मनि तनि प्रीति लगाई सतिगुरि हरि मिलिओ लाइ झपीड़ा ॥ रहाउ ॥ साकत बंध भए है माइआ बिखु संचहि लाइ जकीड़ा ॥ हरि कै अरथि खरचि नह साकहि जमकालु सहहि सिरि पीड़ा ॥ २ ॥ जिन हरि अरथि सरीरु लगाइआ गुर साधू बहु सरधा लाइ मुखि धूड़ा ॥ हलति पलति हरि सोभा पावहि हरि रंगु लगा मनि गूड़ा ॥ ३ ॥ हरि हरि मेलि मेलि जन साधू हम साध जना का कीड़ा ॥ जन नानक प्रीति लगी पग साध गुर मिलि साधू पाखाणु हरिओ मनु मूड़ा ॥ ४ ॥ ६ ॥

जैतसरी महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि सिमरहु अगम अपारा ॥ जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा ॥ हरि हरि सतिगुरु पुरखु मिलावहु गुरि मिलिऐ सुखु होई राम ॥ १ ॥ हरि गुण गावहु मीत हमारे ॥ हरि हरि नामु रखहु उर धारे ॥ हरि हरि अंम्रित बचन सुणावहु गुर मिलिऐ परगटु होई राम ॥ २ ॥ मधुसूदन हरि माधो प्राना ॥ मेरै मनि तनि अंम्रित मीठ लगाना ॥ हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु सदा सुखदाता ॥ हरि कै रंगि मेरा मनु राता ॥ हरि हरि महा पुरखु गुरु मेलहु गुर नानक नामि सुखु होई राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ जैतसरी मः ४ ॥ हरि हरि हरि हरि नामु जपाहा ॥ गुरमुखि नामु सदा लै लाहा ॥ हरि हरि हरि हरि भगति द्रिड़ावहु हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि हरि नामु दइआलु धिआहा ॥ हरि कै रंगि सदा गुण गाहा ॥ हरि हरि हरि जसु घूमरि पावहु मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥ २ ॥ आउ सखी हरि मेलि मिलाहा ॥ सुणि हरि कथा नामु लै लाहा ॥

और हमें उसने बहुत से गुणों का साझेदार बना दिया है।। ३ ।। संसार के जीवन रूपी प्रभु ने जिन पर कृपा की है उन्होंने प्रभु को अपने हृदय में धारण कर लिया है। धर्मराज ने भी प्रभु के द्वार पर पहुंच कर उनके लेखे जोखे के कागज़ फाड़ डाले और हे नानक, भक्तजनों का लेखा माफ कर दिया गया है।। ४ ।। ५ ।। जैतसरी महला ४ ।। बड़े भाग्य से साधु पुरुषों को सत्संगत प्राप्त हुई और चंचल मन स्थिर हो गया। अनहद ध्वनि वाले वाद्य बजने लगे और हम सब प्रभु नाम की अमृतधारा को स्वादपूर्वक पीने लग गए।। १ ।। हे मेरे मन, सुन्दर प्रभु नाम का जाप करो। सच्चे गुरु ने मेरे तन मन में उस प्रभु की प्रीति लगा दी है और मुझे आलिंगन में लेकर मिला है।। रहाउ।। प्रभु से टूटे हुए लोग माया के बन्धनों में बंधे हुए हैं और पूरे यत्नपूर्वक मायावी विष को इकट्ठा कर रहे हैं। धन दौलत को वे परमार्थ के कामों में खर्च नहीं करते और वे यमकाल के डर को सिर पर सहते ही रहते हैं।। २ ।। जिन्होंने अपने शरीर को प्रभु के लिए अर्पण कर दिया है ऐसे गुरु रूपी साधु पुरुषों की चरण-धूलि को बहुत प्रेमपूर्वक मुख पर लगाया जाता है। इस लोक और परलोक में वे प्रभु की शोभा का आनन्द लेते हैं क्योंकि उनके मन में प्रभु का गाढ़ा रंग लग चुका होता है।। ३ ।। हे प्रभु, हमें अपने सेवक साधु पुरुषों से मिला दो क्योंकि हम तो साधु पुरुषों के ही विनम्र दास है। दास नानक के मन में तो साधु चरणों की प्रीति लगी हुई है और गुरु रूपी साधु से मिलकर मेरा मूर्ख मन जो पत्थर की तरह सूखा हुआ था वह हरा भरा हो उठा है।। ४ ।। ६ ।।

जैतसरी महला ४ घरु २ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

उस अगम्य अपरंपर प्रभु के सुमिरन से हमारा दुख मिट जाता है। हे प्रभु, सर्वव्यापक सच्चा गुरु मिला दो क्योंकि गुरु के मिलने से ही सुख प्राप्त होगा।। १ ।। हे हमारे मित्र, प्रभु के गुण गाओ और प्रभु-नाम को ही हृदय में धारण किए रहो। प्रभु के अमृत वचनों को सुनाओ और गुरु के मिलने से ही प्रभु हृदय में प्रकट होता है।। २ ।। हे मधुसूदन प्रभु, तुम मेरे प्राण हो और तुम ही मेरे मन तन में अमृत के समान मीठे लगते हो। हे प्रभु, दया करो। गुरु से मिला दो क्योंकि वही मेरे लिए सर्वव्यापक निर्मल प्रभु है।।३।। प्रभु का नाम सदैव सुख देने वाला है और प्रभु के रंग में मेरा मन लीन हो गया है। प्रभु का रूप महापुरुष गुरु मुझसे मिला दो और हे नानक, तभी उसके नाम के माध्यम से सुख प्राप्त होगा।।४।।१।।७।। जैतसरी महला ४ ।। सदैव प्रभु के नाम का ही बार-बार जाप करो। गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम का लाभ सदैव प्राप्त करते रहो। हृदय में सदैव प्रभु की भक्ति ही धारण किए रहो और सदैव प्रभु-नाम का उत्साह अर्थात चाव बनाए रखो।। १ ।। सदैव दयालु प्रभु के नाम का सुमिरन करते रहो और प्रभु के रंग में रंगकर सदैव प्रभु के गुण गाते रहो। प्रभु के यश का गायन करते हुए घूम घूम कर नाचते रहो और सत्संगत में मिलकर उसके प्रति उत्साह बनाए रखो।। २ ।। हे सखी सहेलियो, आओ हरि से मिलाप के लिए इकट्ठी होकर बैठें। प्रभु की कथा को सुनकर उसके नाम का लाभ उठाएं।

हरि हरि क्रिपा धारि गुर मेलहु गुरि मिलिऐ हरि ओमाहा राम ॥ ३ ॥
करि कीरति जसु अगम अथाहा ॥ खिनु खिनु राम नामु गावाहा ॥ मोकउ
धारि क्रिपा मिलीऐ गुर दाते हरि नानक भगति ओमाहा राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥
जैतसरी मः ४ ॥ रसि रसि रामु रसालु सलाहा ॥ मनु राम नामि
भीना लै लाहा ॥ खिनु खिनु भगति करह दिनु राती गुरमति भगति
ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि हरि गुण गोविंद जपाहा ॥ मनु तनु जीति सबदु लै
लाहा ॥ गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥ २ ॥
नामु रतनु हरि नामु जपाहा ॥ हरि गुण गाइ सदा लै लाहा ॥ दीन दइआल
क्रिपा करि माधो हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ ३ ॥ जपि जगदीसु जपउ
मन माहा ॥ हरि हरि जगंनाथु जगि लाहा ॥ धनु धनु वडे ठाकुर प्रभ मेरे
जपि नानक भगति ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ आपे
जोगी जुगति जुगाहा ॥ आपे निरभउ ताड़ी लाहा ॥ आपे ही आपि आपि वरतै
आपे नामि ओमाहा राम ॥ १ ॥ आपे दीप लोअ दीपाहा ॥ आपे सतिगुरु समुंदु
मथाहा ॥ आपे मथि मथि ततु कढाए जपि नामु रतनु ओमाहा राम ॥ २ ॥
सखी मिलहु मिलि गुण गावाहा ॥ गुरमुखि नामु जपहु हरि लाहा ॥ हरि हरि
भगति द्रिड़ी मनि भाई हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ ३ ॥ आपे वड दाणा
वड साहा ॥ गुरमुखि पूंजी नामु विसाहा ॥ हरि हरि दाति करहु प्रभ भावै गुण
नानक नामु ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥ जैतसरी महला ४ ॥ मिलि
सतसंगति संगि गुराहा ॥ पूंजी नामु गुरमुखि वेसाहा ॥ हरि हरि क्रिपा धारि
मधुसूदन मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि गुण बाणी स्रवणि सुणाहा ॥
करि किरपा सतिगुरू मिलाहा ॥ गुण गावह गुण बोलह बाणी हरि गुण जपि
ओमाहा राम ॥ २ ॥ सभि तीरथ वरत जग पुंन तुोलाहा ॥ हरि हरि नाम
न पुजहि पुजाहा ॥ हरि हरि अतुलु तोलु अति भारी गुरमति जपि ओमाहा
राम ॥ ३ ॥ सभि करम धरम हरि नामु जपाहा ॥ किलविख मैलु पाप धोवाहा ॥
दीन दइआल होहु जन ऊपरि देहु नानक नामु ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥

हे प्रभु, कृपा धारण करो और गुरु से मिलाप करा दो क्योंकि गुरु के माध्यम से ही प्रभु के प्रति उत्साह बना रहता है।।३।। उस अगम्य एवं अथाह प्रभु की कीर्ति का यश गायन करते रहो। प्रत्येक क्षण राम नाम का गायन गाते रहो। हे दाता गुरु, कृपा करके मुझसे आ मिलो तथा हे नानक, उस प्रभु की भक्ति का उत्साह मन में बनाए रखो।। ४ ।। २ ।। ८ ।। जैतसरी महला ४ ।। रसदायक प्रभु का गुणानुवाद करो। अब मन राम नाम में डूबा हुआ उसका लाभ प्राप्त कर रहा है। प्रत्येक क्षण, दिन रात उसकी भक्ति करते हैं और गुरु की मति के अनुरूप चलते हुए प्रभु भक्ति का उत्साह हममें बना रहता है।। १ ।। धरती के आधार उस प्रभु के गुण गाए जाते हैं और मन और तन को जीतकर शब्द-ब्रह्म का लाभ प्राप्त किया जाता है। गुरमति के फलस्वरूप ही पांचों दूत वश में आ जाते हैं और तन मन में प्रभु के लिए चाव बना रहता है।। २ ।। प्रभु के नाम रूपी रत्न का जाप किया जाता है और प्रभु के गुण गाकर सदैव उसका लाभ प्राप्त होता है। हे दीनदयालु प्रभु, कृपा करो जिससे हरि नाम का चाव मन में बना रहे।। ३ ।। मन में संसार के स्वामी प्रभु का जाप करो और संसार के मालिक उस प्रभु का लाभ प्राप्त करो। वह मेरा बड़ा मालिक धन्य है और हे नानक, उसके नाम के माध्यम से उसकी भक्ति का उत्साह बना रहता है।। ४ ।। ३ ।। ९ ।। जैतसरी महला ४ ।। वह स्वयं ही योगी और योग की ऐसी युक्ति है जो सभी युगों में बनी रहती है। वह निर्भय प्रभु स्वयं ही समाधि में बना रहता है। वह स्वयं ही सब स्थानों में कार्यशील है और उसके नाम के प्रति उत्साह भी वह स्वयं ही है।। १ ।। वह स्वयं ही दीप, लोक और गुरु है, समुद्र है और स्वयं ही उसे मंथन करने वाला भी है। स्वयं ही वह मंथन करके सार तत्व निकालता है और जीव के मन में उसका जाप करके नाम रूपी रत्न के लिए उत्साह बना रहता है।। २ ।। हे सखियो, मिलो और मिलकर गुणानुवाद करो। गुरमुख बनकर राम नाम का जाप करो और प्रभु का लाभ प्राप्त करो। प्रभु की भक्ति को जब मन में पक्का किया गया तो प्रभु के नाम के प्रति उत्साह बन गया।। ३ ।। वह स्वयं ही बड़ा सयाना और बड़ा साहूकार है। गुरमुख बनकर ही उससे नाम की पूंजी प्राप्त की जाती है। हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लगे तो हमें अपनी कृपा का दान दे दो ताकि गुण पूर्ण होकर नानक नाम के प्रति उत्साह बनाए रखे।। ४ ।। ४ ।। १० ।। जैतसरी महला ४ ।। सत्संगत में गुरु के साथ मिलकर नाम रूपी पूंजी गुरमुख बनकर प्राप्त करो। हे मधुसूदन प्रभु, कृपा करो ताकि सत्संगत के माध्यम से तुझे मिलने का उत्साह बना रहे।। १ ।। प्रभु के गुण और उसकी वाणी को अपने कानों से सुनो और कृपा करके हे प्रभु, सच्चे गुरु से मिला दो। गुणों का गायन करो, वाणी से गुणों का बखान करो और प्रभु के गुणों के जाप का उत्साह बनाए रखो।। २ ।। सभी तीर्थ, व्रत, यज्ञ और पुण्य तौल कर, खोजकर देखने पर पता चला कि प्रभु नाम के बराबर कोई नहीं पहुंच पाता। प्रभु तौला नहीं जा सकता क्योंकि वह अत्यन्त विशाल और भारी है। गुरमति के माध्यम से उसके जाप का उत्साह बनाए रखो।। ३ ।। प्रभु के नाम सुमिरन में ही सभी धर्म कर्म आ जाते हैं और पापों की मैल धुल जाती है। हे दीनदयालु प्रभु, अपने सेवक पर कृपा करो और नानक को अपने नाम के प्रति उत्साह प्रदान करो।। ४ ।। ५ ।। ११ ।।

जैतसरी महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ॥ जिसु होइ क्रिपालु सोई बिधि बूझै ता की
निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई ॥
पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥ १ ॥ मुकति माल कनिक
लाल हीरा मन रंजन की माइआ ॥ हा हा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु
न पाइआ ॥ २ ॥ हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन चतुरांगा ॥ संगि
न चालिओ इन महि कछूऐ ऊठि सिधाइओ नांगा ॥ ३ ॥ हरि के संत प्रिअ
प्रीतम प्रभ के ता कै हरि हरि गाईऐ ॥ नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि
संतन कै पाईऐ ॥ ४ ॥ १ ॥

जैतसरी महला ५ घरु ३ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

देहु संदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ ॥ बिसमु भई मै बहु बिधि सुनते कहहु
सुहागनि सहीअउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ
महीअउ ॥ बरनु न दीसै चिहनु न लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥ १ ॥
सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ ॥ नानकु कहत
सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥ जैतसरी मः ५ ॥
धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मनु तनु सभु अरपउ
नीरउ पेखि प्रभ कउ नीरउ ॥ १ ॥ बेसुमार बेअंतु बड दाता मनहि गहीरउ
पेखि प्रभ कउ ॥ २ ॥ जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा पूरउ जपि
प्रभ कउ ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि नानक मनि वसिआ दूखि न कबहू झूरउ
बुझि प्रभ कउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ लोड़ीदड़ा साजनु मेरा ॥
घरि घरि मंगल गावहु नीके घटि घटि तिसहि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूखि
अराधनु दूखि अराधनु बिसरै न काहू बेरा ॥ नामु जपत कोटि सूर
उजारा बिनसै भरमु अंधेरा ॥ १ ॥ थानि थनंतरि सभनी जाई जो दीसै सो
तेरा ॥ संतसंगि पावै जो नानक तिसु बहुरि न होई है फेरा ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

जैतसरी महला ५ घरु ३ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

इस संसार में कोई बिरला ही जानता है कि यहां कौन हमारा मित्र है। जिस पर प्रभु दयालु हो वही ठीक प्रकार से इस बात को बूझता है कि परमात्मा ही हमारा मित्र है और उसी व्यक्ति का जीवन ढंग पवित्र होता है।। १ ।। रहाउ।। माता-पिता, स्त्री, पुत्र, बन्धु, मित्र और भाई आदि तो सभी पिछले जन्मों के संयोगवश हमसे यहाँ मिल जाते हैं परन्तु इनमें से कोई भी अंतिम समय सहायक नहीं होता।। १ ।। मोतियों की माला, सोना, लाल, हीरा और मन को प्रसन्न करने वाली धन दौलत है। इन सबके लिए ही हाय हाय करते हुए सारी आयु व्यतीत हो जाती है परन्तु इन सबको पा लेने पर भी मन संतुष्ट नहीं होता।। २ ।। हाथी, रथ, घोड़े यदि पवन के समान तेज चलने वाले हों, व्यक्ति धनी हो, ज़मीन का मालिक हो और उसके पास चार प्रकार की सेना हो तो भी इनमें से कुछ भी उसके साथ नहीं चलता और वह नंगा ही यहां से उठकर चल देता है।। ३ ।। प्रभु के शान्त पुरुष प्रियतम प्रभु के प्यारे हैं; उनकी संगत में प्रभु का नाम सुमिरन किया जाए तो हे नानक, ऐसे संत पुरुषों के साथ यहां भी सुख मिलता है और आगे भी मुख उज्जवल होता है।। ४ ।। १ ।।

जैतसरी महला ५ घरु ३ दोपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे मेरी सुहागिन सहेलियो अर्थात प्रभु से मिले हुए गुरमुख जनों, मुझे प्यारे प्रभु का संदेशा दो और जरूर उसके बारे में बताओ। मैं तो उसके बारे में बातें सुन सुनकर हैरान हो रही हूं।। १ ।। रहाउ।। कोई तो यह कहता है कि वह बाहर ही है और कोई कहता है वह अन्दर ही है। प्रभु का कोई रंग नज़र नहीं आता, कोई चिन्ह दिखाई नहीं पड़ता इसलिए हे सुहागिनों, तुम ठीक ठीक समझाओ।। १ ।। प्रभु सबमें बस रहा है, वह सब स्थानों में उपस्थित है परन्तु वह निर्लिप्त है और किसी से भी विशेष लगाव नहीं रखता। नानक का कथन है कि हे लोगो, सुनों कि वह प्रभु शान्त पुरुषों की जीभ पर निवास करता है।। २ ।। १ ।। २ ।। जैतसरी महला ५ ।। मुझे धैर्य और शान्ति प्रभु की बातें सुनकर ही मिलती है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु को सामने देखकर तो मैं अपना प्राण मन तन सब कुछ अर्पण कर दूं।। १ ।। वह बहुत बड़ा अनन्त दाता है। ऐसे प्रभु को देखकर मैं उसे मन में ग्रहण कर लूं।। २ ।। प्रभु का सुमिरन करके मेरी आशाएं पूर्ण हो जाती हैं और मैं जो भी चाहता हूं वही प्राप्त कर लेता हूं।। ३ ।। हे नानक, गुरु की कृपा से वह मेरे मन में बस गया है और प्रभु को जानकर मैं कभी भी दुखी होकर पश्चाताप नहीं करता हूं।। ४ ।। २ ।। ३।। जैतसरी महला ५ ।। वह सज्जन प्रभु तो हमेशा ही मेरी आवश्यकता बना रहता है। प्रत्येक घर में उसी के मंगल गीत गाते रहो क्योंकि प्रत्येक हृदय में उसी का निवास है।। १ ।। रहाउ।। सुख में उसी की आराधना करो और दुख में भी उसी की आराधना करते रहो ताकि वह कभी भी भूले नहीं। प्रभु के नाम के जाप से करोड़ों सूर्यों का प्रकाश हो जाता है तथा भ्रम का अंधकार नष्ट हो जाता है।। १ ।। देश देशान्तरों में सब स्थानों में जो कुछ भी दिखाई देता है वह प्रभु का डेरा ही है। संत पुरुषों के साथ हे नानक, जो उसे पा लेता है फिर उसे संसार में आना जाना नहीं पड़ता।। २ ।। ३ ।। ४ ।।

जैतसरी महला ५ घरु ४ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अब मै सुखु पाइओ गुर आग्यि ॥ तजी सिआनप चिंत विसारी अहं छोडिओ है तिआग्यि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ देखउ तउ सगल मोहि मोहीअउ तउ सरनि परिओ गुर भागि ॥ करि किरपा टहल हरि लाइओ तउ जमि छोडी मोरी लागि ॥ १ ॥ तरिओ सागरु पावक को जउ संत भेटे वड भागि ॥ जन नानक सरब सुख पाए मोरो हरि चरनी चितु लागि ॥ २ ॥ १ ॥ ५ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ मन महि सतिगुर धिआनु धरा ॥ द्रिढ़िओ गिआनु मंत्रु हरि नामा प्रभ जीउ मइआ करा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काल जाल अरु महा जंजाला छुटके जमहि डरा ॥ आइओ दुख हरण सरण करुणापति गहिओ चरण आसरा ॥ १ ॥ नाव रूप भइओ साधसंगु भव निधि पारि परा ॥ अपिउ पीओ गतु थीओ भरमा कहु नानक अजरु जरा ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ जा कउ भए गोविंद सहाई ॥ सूख सहज आनंद सगल सिउ वा कउ बिआधि न काई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीसहि सभ संगि रहहि अलेपा नह विआपै उन माई ॥ एकै रंगि तत के बेते सतिगुर ते बुधि पाई ॥ १ ॥ दइआ मइआ किरपा ठाकुर की सेई संत सुभाई ॥ तिन कै संगि नानक निसतरीऐ जिन रसि रसि हरि गुन गाई ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ गोबिंद जीवन प्रान धन रूप ॥ अगिआन मोह मगन महा प्रानी अंधिआरे महि दीप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल दरसनु तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप ॥ अनिक बार करउ तिह बंदन मनहि चर्हावउ धूप ॥ १ ॥ हारि परिओ तुम्हरै प्रभ दुआरै द्रिढु करि गही तुम्हारी लूक ॥ काढि लेहु नानक अपुने कउ संसार पावक के कूप ॥ २ ॥ ४ ॥ ८ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ॥ चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि ॥ इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि ॥ १ ॥ आइओ सरणि

जैतसरी महला ५ घरु ४ दोपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

अब मैंने गुरु के पास आकर सुख प्राप्त कर लिया है। चतुराईयां मैंने छोड़ दी हैं, चिन्ता को भुला दिया है और अहंकार को निकाल बाहर किया है।। १ ।। रहाउ।। जिधर भी देखता हूं सभी मुझे मोह में फंसे हुए दिखाई देते हैं। इसलिए मैं भागकर गुरु की शरण में आ गया हूं। गुरु ने कृपा करके मुझे प्रभु की सेवा में लगा दिया जिससे मौत के भय ने मेरा पीछा छोड़ दिया है।। १ ।। आग के समुद्र रूपी संसार को मैंने अच्छे भाग्य के फलस्वरूप संत पुरुषों के दर्शन करके तैर लिया है। सेवक नानक ने सभी सुख पा लिए हैं क्योंकि अब मेरा चित्त प्रभु के चरणों में लग गया है।। २ ।। १ ।। ५ ।। जैतसरी मः ५ ।। मैंने हृदय में सच्चे गुरु पर ध्यान लगाया है। प्रभु ने कृपा की और मैंने मन में प्रभु नाम का मंत्र और ज्ञान पक्का कर लिया।। १ ।। रहाउ।। मौत का फंदा और माया मोह का बड़ा जाल तथा यम का भय दूर हो गए। अब मैंने दुखों को दूर करने वाले दयालु प्रभु की शरण ले ली है और उसके चरणों का आसरा पकड़ लिया है।। १ ।। साधसंगत नाव रूप में मुझे मिल गयी है जिससे मैंने संसार सागर को पार कर लिया है। अब मैंने अमृत पी लिया है जिससे मेरा भ्रम चला गया है और नानक का कथन है कि असहनीय को भी मैंने सहन कर लिया है अर्थात काबू में न आने वाले काम, क्रोध आदि को मैंने काबू कर लिया है।। २ ।। २ ।। ६ ।। जैतसरी मः ५ ।। प्रभु जिसका सहायक हो गया वह सबके साथ सुखी और सहजभाव से आनन्दित बना रहता है और उसे कोई भी रोग दुख नहीं होता।। १ ।। रहाउ।। वह सबके साथ दिखाई देता है परन्तु वह सबसे अलिप्त ही बना रहता है तथा माया से प्रभावित नहीं होता। ऐसे व्यक्ति तत्ववेत्ता बनकर एक प्रभु के रंग में ही रंगे रहते हैं और सच्चे गुरु से ही बुद्धि प्राप्त करने वाले होते हैं।। १ ।। उन पर प्रभु की दया, प्रेम और कृपा बनी रहती है और वास्तव में वे ही संत स्वभाव वाले होते हैं। जिन्होंने प्रेमपूर्वक प्रभु के गुणों का गायन किया है हे नानक, उनकी संगत में ही इस संसार सागर से पार हुआ जाता है।। २ ।। ३ ।। ७ ।। जैतसरी महला ५ ।। परमात्मा ही हमारा प्राण है, धन है और रूप है। अज्ञान और मोह में पूरी तरह लीन प्राणी के लिए अंधकार में वही दीपक के समान है।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, तुम्हारा दर्शन सभी फल देने वाला है और तुम्हारे चरण कमल अनुपम है। मैं अनेकों बार उनकी वन्दना करता हूं और मन ही मन उन पर धूप बत्ती अर्पण करता हूं।। १ ।। हे प्रभु, मैं हारकर तुम्हारे द्वार पर पड़ा हूं और तेरी शरण अब मैंने कस कर पकड़ ली है। हे प्रभु, संसार रूपी अग्नि के कुएं से अपने नानक को बाहर निकाल ले।। २ ।। ४ ।। ८ ।। जैतसरी मः ५ ।। कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो मुझे प्रभु चरणों से जोड़ दे। मैं उसके चरण पकड़ लूं, मुँह से उसके लिए आदरणीय शब्द बोलूं और उसे अपने प्राण अर्पण कर दूं।। १ ।। रहाउ।। मन और तन को पवित्र खेत बना कर प्रभु के नाम रूपी अमृत से उसको सींचा जाना चाहिए। इस प्रकार के रस में प्रभु की कृपा से ही लीन हुआ जाता है और विषय विकारों के विष से नाता तोड़ा जाता है।। १ ।। हे

दीन दुख भंजन चितवउ तुम्हरी ओरि ॥ अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि ॥ २ ॥ ५ ॥ ९ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ चात्रिक चितवत बरसत मेंह ॥ क्रिपा सिंधु करुणा प्रभ धारहु हरि प्रेम भगति को नेंह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक सूख चकवी नही चाहत अनद पूरन पेखि देंह ॥ आन उपाव न जीवत मीना बिनु जल मरना तेंह ॥ १ ॥ हम अनाथ नाथ हरि सरणी अपुनी क्रिपा करेंह ॥ चरण कमल नानकु आराधै तिसु बिनु आन न केंह ॥ २ ॥ ६ ॥ १० ॥ जैतसरी महला ५ ॥ मनि तनि बसि रहे मेरे प्रान ॥ करि किरपा साधू संगि भेटे पूरन पुरख सुजान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रेम ठगउरी जिन कउ पाई तिन रसु पीअउ भारी ॥ ता की कीमति कहणु न जाई कुदरति कवन हम्हारी ॥ १ ॥ लाइ लए लड़ि दास जन अपुने उधरे उधरनहारे ॥ प्रभु सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइओ नानक सरणि दुआरे ॥ २ ॥ ७ ॥ ११ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ आए अनिक जनम भ्रमि सरणी ॥ उधरु देह अंध कूप ते लावहु अपुनी चरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु किछु करमु न जाना नाहिन निरमल करणी ॥ साधसंगति कै अंचलि लावहु बिखम नदी जाइ तरणी ॥ १ ॥ सुख संपति माइआ रस मीठे इह नही मन महि धरणी ॥ हरि दरसन त्रिपति नानक दास पावत हरि नाम रंग आभरणी ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ हरि जन सिमरहु हिरदै राम ॥ हरि जन कउ अपदा निकटि न आवै पूरन दास के काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि बिघन बिनसहि हरि सेवा निहचलु गोविद धाम ॥ भगवंत भगत कउ भउ किछु नाही आदरु देवत जाम ॥ १ ॥ तजि गोपाल आन जो करणी सोई सोई बिनसत खाम ॥ चरन कमल हिरदै गहु नानक सुख समूह बिसराम ॥ २ ॥ ९ ॥ १३ ॥

जैतसरी महला ९ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥ जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ॥ संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनु खोजन

दीन के दुखों का नाश करने वाले प्रभु मैं तुम्हारी शरण में आ गया हूं और तुम्हारी तरफ ही टकटकी लगाकर देख रहा हूं। मुझे अभय पद का दान और प्रभु का सुमिरन प्रदान करो और हे प्रभु, तुम नानक के बन्धनों को काटने वाले हो।। २ ।। ५ ।। ६ ।। जैतसरी महला ५ ।। जब चातक पक्षी श्रद्धापूर्वक आशा लगाता है तो जल बरसता है। हे कृपा के सागर प्रभु, कृपा करो। मुझे भी प्रभु के प्रेम और भक्ति का बहुत अधिक चाव है।। १ ।। रहाउ।। अनेकों सुखों में से चकवी कोई भी सुख नहीं चाहती; वह केवल सूर्य को देखकर पूर्ण प्रसन्न बनी रहती है। मछली अन्य किसी उपाय से जीवित नहीं रहती और जल के बिना उसे मरना ही होता है।। १ ।। हम अनाथ हैं और नाथ प्रभु की शरण में आ गए हैं। हे प्रभु, अपनी कृपा करो, नानक तो तुम्हारे चरण कमलों की आराधना करता रहे क्योंकि उनके बिना इसका अन्य कोई आसरा नहीं है।। २ ।। ६ ।। १०।। जैतसरी मः ५ ।। हे मेरे प्राणप्रिय प्रभु, तुम मेरे मन और तन में बस रहे हो। मुझ पर प्रभु ने कृपा की और मैंने साधु रूपी गुरु की संगत में पूर्ण पुरुष अर्थात सब कुछ जानने वाले प्रभु का दर्शन कर लिया है।। १ ।। रहाउ।। प्रेम की ठग बूटी जिसको भी मिल गई उसने गहन रूप से प्रभु रस का पान किया है। ऐसे व्यक्ति की कीमत नहीं आंकी जा सकती और हमारी तो भला शक्ति ही क्या है।। १ ।। प्रभु ने अपने सेवकों को अपने चरणों में लगा लिया है और ऐसे ही तैरने वाले सेवक संसार सागर से पार उतर गए हैं।। २ ।। ७ ।। ११।। जैतसरी मः ५ ।। अनेकों जन्मों में भटकते हुए अब हम प्रभु की शरण में आ गए हैं। हे प्रभु, अन्धे कुएं में से हमारा उद्धार कर दो और अपने चरणों के साथ हमें जोड़ लो।। १ ।। रहाउ।। मैं कोई भी ज्ञान ध्यान अथवा कर्मकाण्ड नहीं जानता और न ही मेरा आचरण निर्मल है। मुझे तो साधसंगत के आंचल से जोड़ दो जिससे संसार रूपी विषम नदी को मैं तैरकर पार कर जाऊँ।। १ ।। सुख, सम्पत्ति, माया के मीठे रस मन में नहीं बसाए जाने चाहिए। प्रभु के दर्शन हो जाएं तो दास नानक को शान्ति मिलती है। प्रभु-नाम की प्रीति ही वास्तव में मेरा आभूषण है।। २ ।। ८ ।। १२ ।। जैतसरी मः ५ ।। हे प्रभु के सेवकजनों, हृदय में उस प्रभु का सुमिरन करो। प्रभु के सेवक के पास कोई भी विपत्ति नहीं आती और प्रभु के सेवक की सभी कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु की सेवा के फलस्वरूप करोड़ों रुकावटें नष्ट हो जाती हैं और प्रभु का अटल धाम प्राप्त हो जाता है। प्रभु के प्रतापी भक्त को कुछ भी भय नहीं लगता और यम भी उसे आदर देता है।। १ ।। प्रभु को छोड़कर अन्य जो कुछ भी किया जाए वह सब कच्चा और नाशवान होता है। हे नानक, प्रभु के चरण कमलों को हृदय में पकड़ कर रख क्योंकि यही सभी सुखों का निवास स्थान है।। २ ।। ९ ।। १३ ।।

जैतसरी महला ९ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

भूला हुआ मन माया में उलझा हुआ है। लालच के वश में होकर जो जो भी काम किए हैं उस हर कार्य के साथ इसने अपने आप को बन्धन में ही डाला है।। १ ।। रहाउ ।। इसे कुछ भी समझ नहीं पड़ी और यह विषय विकारों के रस में लीन बना रहा तथा इसने हरि के यश को भुला दिया है। जो प्रभु इसके साथ ही बना रहता है उसे तो इसने जाना नहीं और उसकी खोज में यह जंगलों की ओर चल

कउ धाइओ ॥ १ ॥ रतनु रामु घट ही के भीतरि ता को गिआनु न पाइओ ॥ जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ जैतसरी महला ९ ॥ हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥ जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥ भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा ॥ १ ॥ कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥ घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥ २ ॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥ नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥ ३ ॥ २ ॥ जैतसरी महला ९ ॥ मन रे साचा गहो बिचारा ॥ राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥ सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥ १ ॥ पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि संभारा ॥ नानक सरनि परिओ जग बंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥ २ ॥ ३ ॥

जैतसरी महला ५ छंत घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक ॥ दरसन पिआसी दिनसु राति चितवउ अनदिनु नीत ॥ खोल्हि कपट गुरि मेलीआ नानक हरि संगि मीत ॥ १ ॥ छंत ॥ सुणि यार हमारे सजण इक करउ बेनंतीआ ॥ तिसु मोहन लाल पिआरे हउ फिरउ खोजंतीआ ॥ तिसु दसि पिआरे सिरु धरी उतारे इक भोरी दरसनु दीजै ॥ नैन हमारे प्रिअ रंग रंगारे इकु तिलु भी ना धीरीजै ॥ प्रभ सिउ मनु लीना जिउ जल मीना चात्रिक जिवै तिसंतीआ ॥ जन नानक गुरु पूरा पाइआ सगली तिखा बुझंतीआ ॥ १ ॥ यार वे प्रिअ हभे सखीआ मू कही न जेहीआ ॥ यार वे हिक डूं हिकि चाड़े हउ किसु चितेहीआ ॥ हिक दूं हिकि चाड़े अनिक पिआरे नित करदे भोग बिलासा ॥ तिना देखि मनि चाउ उठंदा हउ कदि पाई गुणतासा ॥ जिनी मैडा लालु रीझाइआ हउ तिसु आगै मनु डेंहीआ ॥ नानकु कहै सुणि बिनउ सुहागणि मू दसि डिखा पिरु केहीआ ॥ २ ॥ यार वे

निकला है।। १ ।। राम रूपी रत्न शरीर के अन्दर ही है और इसने इस ज्ञान को नहीं जाना है। हे दास नानक, प्रतापी प्रभु के भजन के बिना इसने अपने जीवन को व्यर्थ ही गंवा दिया है।। २ ।। १ ।। जैतसरी महला ६ ।। हे प्रभु जी, मेरी इज्ज़त बचा लो। यम का भय मेरे हृदय में भर गया है इसीलिए हे कृपानिधि, मैंने तुम्हारी शरण पकड़ ली है।। १ ।। रहाउ।। मैं महापतित, मूर्ख और बार-बार लोभ करने वाला व्यक्ति हूं और अब तो पाप करते करते भी थक गया हूं। मरने का भय कभी समाप्त ही नहीं होता और इसी चिन्ता ने मेरे शरीर को जला रखा है।। १ ।। मैंने अपनी मुक्ति के कारण कई साधन अपनाए और दसों दिशाओं में भागता दौड़ता रहा, परन्तु मेरे अन्तर्मन में ही प्रभु बसा है इस तथ्य के रहस्य को मैंने नहीं समझा।। २ ।। मुझमें न तो कोई गुण है और न ही मैंने कोई जप तप किया है; अब भला मैं कौन का कर्म करूँ। नानक तो हारकर तेरी शरण में आन पड़ा है, हे प्रभु, इसे अभय दान प्रदान करो।। ३ ।। २ ।। जैतसरी मः ६ ।। हे मन, एक सच्चे विचार को धारण कर लो। प्रभु-नाम के बिना इस सारे संसार को मिथ्या (नाशवान) समझो।। १ ।। रहाउ।। जिसे खोजते हुए योगीगण भी थक गए हैं और उसका अन्त नहीं जान सके वह प्रभु जो रूप, आकार से परे है उसे तुम अपने पास ही पहचान लो।। १ ।। संसार में प्रभु का नाम ही पवित्र है जिसे मैंने कभी भी याद नहीं किया। हे संसार के वन्दनीय प्रभु, नानक तुम्हारी शरण में आन पड़ा है इसलिए तुम अपने बिरद का पालन करो और इसकी रक्षा करो।। २ ।। ३ ।।

जैतसरी महला ५ छन्द घरु १ १ ओंअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

।। श्लोक ।। तेरे दर्शन की प्यासी मैं सदैव दिन-रात तुम्हें ही याद करती रहती हूं। मेरे गुरु ने हे नानक, मेरे मन के द्वार खोलकर मुझे उस प्रभु मित्र से मिला दिया है।। १ ।। छन्द।। हे मेरे सज्जन मित्र, मैं एक विनती करती हूं और तू उसे सुन ले। मैं उस प्यारे मोहन प्रभु को खोजती हुई भटक रही हूं। मुझे उस प्यारे के बारे में बता दे और यदि वह मुझे थोड़ा सा भी दर्शन दे दे तो मैं अपना सिर काट कर उसके चरणों में अर्पण कर दूं। हमारी आंखें उस प्यारे प्रभु के प्रेम में मस्त हैं और उसके बिना हमें एक तिल भर भी शन्ति नहीं आती। मेरा मन प्रभु में उसी प्रकार लग चुका है जैसे मछली जल के लिए और चातक बादल की बूंद के लिए उसी के ध्यान में लीन बना रहता है। दास नानक ने जब पूर्ण गुरु को प्राप्त कर लिया तो उसकी सारी प्यास बुझ गई है।। १ ।। हे मित्र, प्यारे प्रभु की जो सभी सखियां हैं मैं उनमें से किसी के जैसी भी नहीं हूं। हे मित्र, वे तो एक से बढ़कर एक सुन्दर हैं; मैं भला किसको याद हूं। वह एक से एक बढ़कर हैं और उसको प्यारी हैं और वे सब मिलकर सदैव एक दूसरे के साथ रमण करते हैं। उनको देखकर ही मेरे मन में बार-बार यह प्रेरणादायक उत्साह उठ खड़ा होता है कि मैं भी कब गुणों के भण्डार उस प्रभु को पा सकूंगी। जिन्होंने मेरे प्यारे प्रभु को रिझा लिया है मैं अपना मन उनके सामने अर्पण करती हूं। नानक कहता है कि हे सुहागिनों अर्थात हे प्रभु को मिले हुए गुरमुख जनों, मेरी विनती सुनो और मुझे बताओ कि वह प्यारा देखने में कैसा लगता है।। २ ।। हे मित्र, वह

पिरु आपण भाणा किछु नीसी छंदा ॥ यार वे तै राविआ लालनु मू दसि दसंदा ॥ लालनु तै पाइआ आपु गवाइआ जै धन भाग मथाणे ॥ बांह पकड़ि ठाकुरि हउ घिधी गुण अवगण न पछाणे ॥ गुण हारु तै पाइआ रंगु लालु बणाइआ तिसु हभो किछु सुहंदा ॥ जन नानक धंनि सुहागणि साई जिसु संगि भतारु वसंदा ॥ ३ ॥ यार वे नित सुख सुखेदी सा मै पाई ॥ वरु लोड़ीदा आइआ वजी वाधाई ॥ महा मंगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नव रंगीआ ॥ वड भागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सतसंगीआ ॥ आसा मनसा सगल पूरी प्रिअ अंकि अंकु मिलाई ॥ बिनवंति नानकु सुख सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥ ४ ॥ १ ॥

जैतसरी महला ५ घरु २ छंत १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु ॥ नानक प्रभ सरणागती राखन कउ समरथु ॥ १ ॥ छंतु ॥ जिउ जानहु तिउ राखु हरि प्रभ तेरिआ ॥ केते गनउ असंख अवगण मेरिआ ॥ असंख अवगण खते फेरे नितप्रति सद भूलीऐ ॥ मोह मगन बिकराल माइआ तउ प्रसादी घूलीऐ ॥ लूक करत बिकार बिखड़े प्रभ नेर हू ते नेरिआ ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु काढि भवजल फेरिआ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ निरति न पवै असंख गुण ऊचा प्रभ का नाउ ॥ नानक की बेनंतीआ मिलै निथावे थाउ ॥ २ ॥ छंतु ॥ दूसर नाही ठाउ का पहि जाईऐ ॥ आठ पहर कर जोड़ि सो प्रभु धिआईऐ ॥ धिआइ सो प्रभु सदा अपुना मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ तजि मान मोहु विकारु दूजा एक सिउ लिव लाईऐ ॥ अरपि मनु तनु प्रभू आगै आपु सगल मिटाईऐ ॥ बिनवंति नानकु धारि किरपा साचि नामि समाईऐ ॥ २ ॥ सलोकु ॥ रे मन ता कउ धिआईऐ सभ बिधि जा कै हाथि ॥ राम नाम धनु संचीऐ नानक निबहै साथि ॥ ३ ॥ छंतु ॥ साथीअड़ा प्रभु एकु दूसर नाहि कोइ ॥ थान थनंतरि आपि जलि थलि पूर सोइ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ सरब दाता प्रभु धनी ॥ गोपाल गोबिंद अंतु नाही बेअंत गुण ता के किआ गनी ॥ भजु सरणि सुआमी सुखह गामी तिसु बिना अन नाहि कोइ ॥ बिनवंति

प्रभु पति अपनी ही मर्जी करने वाला है और वह किसी का भी मोहताज नहीं है। हे मित्र, तूने उस प्यारे के साथ रमण किया है, मुझे भी उसके बारे में बता क्योंकि मैं तेरे सामने सवाली बनकर खड़ा हूं। तूने उस प्यारे प्रभु को पा लिया है। जिसके माथे पर अच्छे भाग्य लिखे हैं उसी ने अपना अहंकार भाव छोड़ दिया है। प्रभु ने मुझे बांह पकड़कर अपना बना लिया है और मेरे गुणों अवगुणों की पहचान नहीं की। जिसे तूने गुणों की माला पहना दी है और सुन्दर रंग प्रदान किया है वह तो जो भी पहने उस पर सब कुछ ही सुन्दर लगता है। दास नानक का कथन है कि वही जीव स्त्री सुहागिन है जिसके साथ उसका प्रभु पति बना रहता है।। ३ ।। हे मित्र, जिस मुराद को मैं हमेशा मांगती रही उसे मैंने अब पा लिया है। जिस सुन्दर प्रभु को मैंने हमेशा चाहा वह मुझे मिल गया है और मेरे अन्तर्मन में मंगल गीत बजने लगे हैं। मुझे महान खुशी और आनन्द की प्राप्ति हुई है कि सदैव नवीन बना रहने वाला पति प्रभु मैंने पा लिया है। बड़े भाग्य से सत्संगत के माध्यम से गुरु के द्वारा इससे मेरा मिलाप हुआ है। मेरी आशाएं और सभी उद्देश्य पूरे हो गए हैं और प्रियतम प्रभु ने मुझे अपने आलिंगन में ले लिया है। नानक विनती करता है कि जिस मुराद को मैं बहुत देर से मांग रहा था उसे मैंने गुरु से मिलकर पा लिया है।। ४ ।। १ ।।

जैतसरी महला ५ घरु २ छन्द १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

।। श्लोक।। वह प्रभु अगम्य, अपरंपर एवं ऊँचा है। वह अकथनीय है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। नानक तो प्रभु की शरण में आ गया है और वही इसकी रक्षा करने में समर्थ है।। १ ।। छन्द।। हे प्रभु, मैं तेरा हूं। मुझे जैसे भी समझो, बचा लो। मैं कितनी गिनती करूं, मेरे अवगुण तो असंख्य है। मेरे असंख्य ही अवगुण, दोष और भ्रम हैं तथा मैं सदैव भूला ही रहता हूं। हम सब भयानक माया के मोह में मस्त हो रहे हैं और तेरी कृपा से ही छूट सकते हैं। अनेकों बड़े बड़े विकार-युक्त पाप हम तो छिप कर करते हैं परन्तु प्रभु तो निकट से भी निकट हैं। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, मुझ पर कृपा करो और मुझे संसार सागर के भंवर में से बचा लो।। १ ।। श्लोक।। प्रभु के असंख्य गुणें की परख नहीं हो सकती। उस प्रभु का नाम ऊँचा है। नानक विनती करता है कि मुझ निराश्रित को भी ठिकाना मिल जाए।। २ ।। छन्द।। मेरा दूसरा ठिकाना कोई नहीं है इसलिए किसके पास जाया जाए। आठों प्रहर हाथ जोड़कर उस प्रभु का ही सुमिरन किया जाना चाहिए। अपने उस प्रभु की सदैव आराधाना की जानी चाहिए क्योंकि उसी से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। मान, मोह, विकार एवं द्वैतभाव को त्याग कर केवल एक प्रभु में ही सुरति लगाई जानी चाहिए। उस प्रभु के सामने अपना मन तन अर्पण करके अपना सम्पूर्ण अहम् भाव मिटा देना चाहिए। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, कृपा धारण करो जिससे सच्चे नाम में लीन हो जाया जाए।। २ ।। श्लोक।। हे मन, उसका सुमिरन करो जिसके वश में सभी युक्तियां एवं उपाय हैं। हे नानक, राम नाम रूपी धन का संचय किया जाना चाहिए क्योंकि यही अन्ततः साथ निभने वाला है।। ३ ।। छन्द।। एक प्रभु हमारा साथी मित्र है दूसरा कोई नहीं है। सब देश देशान्तरों में वही और जल स्थल में भी वही व्याप्त है। सबका दाता और सबका मालिक प्रभु जल स्थल और अंतरिक्ष में पूर्ण रूप से व्याप्त है। उस सृष्टि के पालन करता और सृष्टि के मालिक का कोई ओर छोर नहीं और उसके गुण अनन्त हैं जिनकी गणना कैसे की जा सकती है। सबों में रहने वाले स्वामी प्रभु की शरण का चिन्तन करो क्योंकि उसके बिना अन्य दूसरा कोई नहीं है। नानक विनती

नानक दइआ धारहु तिसु परापति नामु होइ ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ चिति जि चितविआ सो मै पाइआ ॥ नानक नामु धिआइ सुख सबाइआ ॥ ४ ॥ छंतु ॥ अब मनु छूटि गइआ साधू संगि मिले ॥ गुरमुखि नामु लइआ जोती जोति रले ॥ हरि नामु सिमरत मिटे किलबिख बुझी तपति अघानिआ ॥ गहि भुजा लीने दइआ कीने आपने करि मानिआ ॥ लै अंकि लाए हरि मिलाए जनम मरणा दुख जले ॥ बिनवंति नानक दइआ धारी मेलि लीने इक पले ॥ ४ ॥ २ ॥ जैतसरी छंत मः ५ ॥ पाधाणू संसारु गारबि अटिआ ॥ करते पाप अनेक माइआ रंग रटिआ ॥ लोभि मोहि अभिमानि बूडे मरणु चीति न आवए ॥ पुत्र मित्र बिउहार बनिता एह करत बिहावए ॥ पुजि दिवस आए लिखे माए दुखु धरम दूतह डिठिआ ॥ किरत करम न मिटै नानक हरि नाम धनु नही खटिआ ॥ १ ॥ उदम करहि अनेक हरि नामु न गावही ॥ भरमहि जोनि असंख मरि जनमहि आवही ॥ पसू पंखी सैल तरवर गणत कछू न आवए ॥ बीजु बोवसि भोग भोगहि कीआ अपणा पावए ॥ रतन जनमु हारंत जूऐ प्रभू आपि न भावही ॥ बिनवंति नानक भरमहि भ्रमाए खिनु एकु टिकणु न पावही ॥ २ ॥ जोबनु गइआ बितीति जरु मलि बैठीआ ॥ कर कंपहि सिरु डोल नैण न डीठिआ ॥ नह नैण दीसै बिनु भजन ईसै छोडि माइआ चालिआ ॥ कहिआ न मानहि सिरि खाकु छानहि जिन संगि मनु तनु जालिआ ॥ स्रीराम रंग अपार पूरन नह निमख मन महि वूठिआ ॥ बिनवंति नानक कोटि कागर बिनस बार न झूठिआ ॥ ३ ॥ चरन कमल सरणाइ नानकु आइआ ॥ दुतरु भै संसारु प्रभि आपि तराइआ ॥ मिलि साधसंगे भजे स्रीधर करि अंगु प्रभ जी तारिआ ॥ हरि मानि लीए नाम दीए अवरु कछु न बीचारिआ ॥ गुण निधान अपार ठाकुर मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ बिनवंति नानकु सदा त्रिपते हरि नामु भोजनु खाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक ॥ आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसुरह ॥ सिमरंति संत सरबत्र रमणं नानक अघ नासन

करता है कि हे प्रभु, कृपा करो। तुम्हारी कृपा से ही तुम्हारा नाम प्राप्त होता है।। ३ ।। श्लोक।। जो मैंने अपने मन में सोचा था उसे मैंने पा लिया है। हे नानक, प्रभु-नाम ही आराधना से मैंने सभी सुख हासिल कर लिए हैं।। ४ ।। छन्द।। साधु पुरुषों की संगत में अब मेरा मन मुक्त हो गया है। गुरमुख बनकर जब मैंने नाम सुमिरन किया तो मेरी ज्योति उस प्रभु के प्रकाश में लीन हो गई है। प्रभु के नाम का सुमिरन करने से मेरे पाप नष्ट हो गए हैं और मेरी तृष्णा बुझ कर मैं शान्त हो गया हूं। प्रभु ने दया करके बांह पकड़कर मुझे अपने साथ ले लिया है और अपना बनाकर मुझे सम्मानित किया है। प्रभु ने अपने आलिंगन में लेकर अपने से मिला लिया है तथा जन्म मरण का मेरा दुख जल गया है। नानक विनती करता है कि जब उसने दया धारण की तो एक क्षण भर में उसने मुझे अपने से मिला लिया।। ४ ।। २ ।। जैतसरी छन्द महला ५ ।। यह संसार एक मुसाफिर की तरह है लेकिन फिर भी अभिमान से भरा हुआ है। माया के रंग में रंगे लोग यहां अनेकों पाप करते चले जाते हैं और लालच, मोह, अभिमान में डूबे हुए लोगों को मरना याद ही नहीं रहता। पुत्र, मित्र और स्त्री आदि के लिए ही धंधे करते हुए इनका जीवन व्यतीत हो जाता है। जब लिखा हुआ अंतिम दिन पहुंच जाता है तो हे मां, धर्मराज के दूतों को देखकर फिर ये दुखी होते हैं। उनके किए हुए कर्मों के फल हे नानक, मिट नहीं सकते और उन्होंने प्रभु-नाम रूपी धन की कमाई नहीं की होती।। १ ।। अनेकों लोग अनेकों उपाय करते हैं परन्तु प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करते। वे असंख्य योनियों में भटकते रहते हैं तथा मरते जन्मते आते जाते रहते हैं। जिनकी गिनती नहीं हो सकती वे पशु पक्षी, पत्थर, पेड़ आदि के रूप में आते जाते रहते हैं। वे अपने बोए हुए बीज के फल का भोग करते हैं और जो उन्होंने किया था उसी का फल प्राप्त करते हैं। वे हीरे जैसा जीवन जुए में ही हार जाते हैं और प्रभु को भी अच्छे नहीं लगते। नानक विनती करता है कि भ्रमों में पड़े हुए ऐसे. लोग भटकते रहते हैं और एक क्षण भर के लिए भी टिक नहीं पाते।। २ ।। यौवन व्यतीत हो गया और बुढ़ापे ने उसका स्थान ले लिया है। अब हाथ कांपने लगे सिर हिलने लगा और आंखों से दिखाई नहीं देता। प्रभु के भजन के बिना अब आंखों से कुछ भी नहीं दिखता और माया के प्रपंचों को छोड़कर जीव अब चल पड़ता है। जिन सम्बन्धियों के साथ तन मन से सारा जीवन बिताया था वे अब कहना नहीं मानते और उल्टा सिर पर मिट्टी ही डालते हैं अर्थात ख्वार करते हैं। प्रभु के पूर्ण प्रेम का अपार रंग क्षण भर के लिए भी उनके मन में नहीं बस सका। नानक विनती करता है कि कागज़ के बने हुए किले का नाश होते देर नहीं लगती अर्थात शरीर रूपी कागज़ का किला शीघ्र ही विनष्ट हो जाता है।। ३ ।। नानक तो प्रभु के चरण कमलों की शरण में आ गया है और अब प्रभु ने इस न तैरे जा सकने वाले संसार सागर से उसे पार उतार लिया है। उसने साधु संगत में उस प्रभु का सुमिरन किया जिससे प्रभु ने पक्ष लेकर हमें पार उतार दिया है। प्रभु ने कृपापूर्वक मानकर अपने नाम का दान दे दिया और मेरे बारे में अन्य कुछ भी जांच परख नहीं की। वह मनोवांछित प्रभु, जो गुणों का भण्डार है अपरंपर है, उसे मैंने पा लिया है। नानक विनती करता है कि प्रभु-नाम के भोजन को खाने के बाद अब मैं सदा के लिए संतुष्ट हो गया हूं।। ४ ।। २ ।। ३ ।।

जैतसरी महला ५ वार श्लोकों के साथ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

सृष्टि और युगों के आदि से ही, मध्य और अंत में भी जो परमेश्वर व्याप्त है उस सर्वत्र रमण करने वाले प्रभु का संतगण सुमिरन करते हैं और हे नानक, पापों का नाश करने वाला वही एक

जगदीसुरह ॥ १ ॥ पेखन सुनन सुनावनो मन महि द्रिड़ीऐ साचु ॥ पूरि रहिओ सरबत्र मै नानक हरि रंगि राचु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि एकु निरंजनु गाईऐ सभ अंतरि सोई ॥ करण कारण समरथ प्रभु जो करे सु होई ॥ खिन महि थापि उथापदा तिसु बिनु नही कोई ॥ खंड ब्रहमंड पाताल दीप रविआ सभ लोई ॥ जिसु आपि बुझाए सो बुझसी निरमल जनु सोई ॥ १ ॥ सलोक ॥ रचंति जीअ रचना मात गरभ असथापनं ॥ सासि सासि सिमरंति नानक महा अगनि न बिनासनं ॥ १ ॥ मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइ ॥ नानक सो धणी किउ विसारिओ उधरहि जिस दै नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ रकतु बिंदु करि निमिआ अगनि उदर मझारि ॥ उरध मुखु कुचील बिकलु नरकि घोरि गुबारि ॥ हरि सिमरत तू ना जलहि मनि तनि उरधारि ॥ बिखम थानहु जिनि रखिआ तिसु तिलु न विसारि ॥ प्रभ बिसरत सुखु कदे नाहि जासहि जनमु हारि ॥ २ ॥ सलोक ॥ मन इछा दान करणं सरबत्र आसा पूरनह ॥ खंडणं कलि कलेसह प्रभ सिमरि नानक नह दूरणह ॥ १ ॥ हभि रंग माणहि जिसु संगि तै सिउ लाईऐ नेहु ॥ सो सहु बिंद न विसरउ नानक जिनि सुंदरु रचिआ देहु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीउ प्रान तनु धनु दीआ दीने रस भोग ॥ ग्रिह मंदर रथ असु दीए रचि भले संजोग ॥ सुत बनिता साजन सेवक दीए प्रभ देवन जोग ॥ हरि सिमरत तनु मनु हरिआ लहि जाहि विजोग ॥ साध संगि हरि गुण रमहु बिनसे सभि रोग ॥ ३ ॥ सलोक ॥ कुटंब जतन करणं माइआ अनेक उदमह ॥ हरि भगति भाव हीणं नानक प्रभ बिसरत ते प्रेततह ॥ १ ॥ तुटड़ीआ सा प्रीति जो लाई बिअंन सिउ ॥ नानक सची रीति सांई सेती रतिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु बिसरत तनु भसम होइ कहते सभि प्रेतु ॥ खिनु ग्रिह महि बसन न देवही जिन सिउ सोई हेतु ॥ करि अनरथ दरबु संचिआ सो कारजि केतु ॥ जैसा बीजै सो लुणै करम इहु खेतु ॥ अकिरतघणा हरि विसरिआ जोनी भरमेतु ॥ ४ ॥ सलोक ॥ कोटि दान इसनानं अनिक सोधन पवित्रतह ॥ उचरंति नानक हरि हरि रसना सरब पाप बिमुचते ॥ १ ॥ ईधणु कीतो मू

परमात्मा है।। १ ।। देखने, सुनने और अन्यों को सुनाने के लिए मन में सत्य रूप प्रभु के नाम को बार बार सुमिरन किया जाना चाहिए। हे नानक, जो प्रभु सर्वत्र व्याप्त है उसी के प्रेम में लीन बने रहो।। २ ।। पउड़ी।। उस एक निर्मल प्रभु का ही गुणानुवाद करो जो सबके अन्तर्मन में स्थित है। वह प्रभु ही करने कराने वाला समर्थ है और वह जो करता है वही होता है। वह क्षण भर में पैदा करके नष्ट कर देता है और उसके बिना अन्य कोई भी नहीं है। वह द्वीपों में, खण्डों में, पाताल में एवं ब्रह्माण्डों तथा सभी लोकों में व्याप्त है। जिसे वह अपना रहस्य बताता है वही उसको जान पाता है और वही सेवक निर्मल व्यक्ति होता है।। १ ।। श्लोक।। प्रभु ने जीव की रचना करके इसे माता के गर्भ में स्थित कर दिया। हे नानक, प्रत्येक श्वास के साथ वहां वह प्रभु का सुमिरन करता है इसीलिए मां के पेट की भीषण अग्नि में भी इसका नाश नहीं होता।। १।। हे जीव, मां के पेट में तेरा मुख नीचे और पैर उपर की ओर थे और तू एक अस्वच्छ स्थान में बस रहा था। हे नानक, तूने उस मालिक को क्यों भुला दिया जिसके नाम ने इस प्रकार के स्थान से तेरा उद्धार किया है।। २ ।। पउड़ी।। माता के रक्त और पिता के वीर्य के साथ वह जीव पेट की अग्नि के अन्दर उत्पन्न हुआ। इसका मुख नीचे की ओर था, यह मैले स्थान पर रहता हुआ नर्क जैसे अंधकारमय स्थान पर पड़ा हुआ था। जिसने ऐसे भयानक स्थान में भी रक्षा की है हे जीव, एक क्षण भर के लिए भी उसे मत भुला। प्रभु को भुलाने से कभी भी सुख नहीं मिलेगा और तू इस जीवन को हारकर यहां से चला जाएगा।। २ ।। श्लोक।। प्रभु हमें मनोवांछित दान देता है और हमारी सभी आशाओं को पूरा करता है। हमारे क्लेशों का खंडन करता है इसलिए हे नानक, उस प्रभु का सुमिरन करो जो हमसे दूर नहीं है।। १ ।। जिस प्रभु के माध्यम से सभी सुख भोगे जाते हैं उसी के साथ प्रेम करना चाहिए। ऐसे मालिक को हे नानक, एक क्षण के लिए भी विस्मृत नहीं किया जाना चाहिए जिसने इस सुन्दर शरीर की रचना की है।। २ ।। पउड़ी।। उस प्रभु ने ही जीवन, प्राण, तन, धन और सभी रस भोग वाले पदार्थ दिए हैं। अच्छे भाग्य देकर उसने घर, महल, रथ और घोड़े आदि भी दिए हैं। उस दे सकने वाले परमात्मा ने पुत्र, स्त्री, सज्जन और सेवक भी प्रदान किए हैं। ऐसे प्रभु के सुमिरन से तन मन खिल उठता है और सभी वियोग छूट जाते हैं। साधसंगत में प्रभु के ऐसे गुणों में लीन बने रहो जिससे तुम्हारे सभी रोग नष्ट हो जाएंगे।।३।। श्लोक।। व्यक्ति परिवार के लिए धन, दौलत इकट्ठा करते हुए अनेकों प्रकार का प्रयत्न करता है परन्तु हे नानक, प्रभु की भक्ति-भाव से विहीन बना हुआ जीव प्रभु को भुलाने के फलस्वरूप प्रेत की तरह हो जाता है।। १ ।। जीव ने जो अन्य लोगों से प्रीति लगाई वह अन्त में टूट जाती है। हे नानक, सच्ची युक्ति तो यही है कि मालिक प्रभु के साथ प्रीति लगी रहे।। २ ।। पउड़ी।। जिस प्रभु के विस्मृत होते ही शरीर राख की ढेरी हो जाता है तथा सभी प्रेत प्रेत कहने लगते हैं; जिन से बहुत प्रेम बना हुआ था वे ही अब घर में क्षण भर के लिए भी रहने नहीं देते। अनेकों प्रकार के अनर्थ करके जो धन सम्पत्ति संचित की थी वह भला किस काम आ सकी है। जीव जैसा बोता है इस कर्म भूमि के खेत को वैसा ही काटना पड़ता है। कृतघ्न व्यक्तियों को प्रभु भूल जाता है और वे योनियों में भटकते रहते हैं।।४।। श्लोक।। करोड़ों दान, स्नान और अनेकों प्रकार की शुद्धि क्रियाएं और पवित्र करने वाले कर्म कुछ नहीं कर पाते परन्तु हे नानक, अपनी जीभ से प्रभु-नाम का सुमिरन करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।।१।। मैंने बहुत सारा ईंधन इक्ट्ठा किया और उसमें थोड़ी सी

घणा भोरी दितीमु भाहि ॥ मनि वसंदड़ो सचु सहु नानक हभे डुखड़े उलाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कोटि अघा सभि नास होहि सिमरत हरि नाउ ॥ मन चिंदे फल पाईअहि हरि के गुण गाउ ॥ जनम मरण भै कटीअहि निहचल सचु थाउ ॥ पूरबि होवै लिखिआ हरि चरण समाउ ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक बलि जाउ ॥ ५ ॥ सलोक ॥ ग्रिह रचना अपारं मनि बिलास सुआदं रसह ॥ कदांच नह सिमरंति नानक ते जंत बिसटा क्रिमह ॥ १ ॥ मुचु अडंबरु हभु किहु मंझि मुहबति नेह ॥ सो सांई जैं विसरै नानक सो तनु खेह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सुंदर सेज अनेक सुख रस भोगण पूरे ॥ ग्रिह सोइन चंदन सुगंध लाइ मोती हीरे ॥ मन इछे सुख माणदा किछु नाहि विसूरे ॥ सो प्रभु चिति न आवई विसटा के कीरे ॥ बिनु हरि नाम न सांति होइ कितु बिधि मनु धीरे ॥ ६ ॥ सलोक ॥ चरन कमल बिरहं खोजंत बैरागी दह दिसह ॥ तिआगंत कपट रूप माइआ नानक आनंद रूप साध संगमह ॥ १ ॥ मनि सांई मुखि उचरा वता हभे लोअ ॥ नानक हभि अडंबर कूड़िआ सुणि जीवा सची सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बसता तूटी झुंपड़ी चीर सभि छिंना ॥ जाति न पति न आदरो उदिआन भ्रमिंना ॥ मित्र न इठ धन रूपहीण किछु साकु न सिंना ॥ राजा सगली स्रिसटि का हरि नामि मनु भिंना ॥ तिस की धूड़ि मनु उधरै प्रभु होइ सुप्रसंना ॥ ७ ॥ सलोक ॥ अनिक लीला राज रस रूपं छत्र चमर तखत आसनं ॥ रचंति मूड़ अगिआन अंधह नानक सुपन मनोरथ माइआ ॥ १ ॥ सुपनै हभि रंग माणिआ मिठा लगड़ा मोहु ॥ नानक नाम विहूणीआ सुंदरि माइआ ध्रोहु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सुपने सेती चितु मूरखि लाइआ ॥ बिसरे राज रस भोग जागत भखलाइआ ॥ आरजा गई विहाइ धंधै धाइआ ॥ पूरन भए न काम मोहिआ माइआ ॥ किआ वेचारा जंतु जा आपि भुलाइआ ॥ ८ ॥ सलोक ॥ बसंति स्वरग लोकह जितते प्रिथवी नव खंडणह ॥ बिसरंत हरि गोपालह नानक ते प्राणी उदिआन भरमणह ॥ १ ॥ कउतक कोड तमासिआ चिति न आवसु नाउ ॥ नानक कोड़ी नरक बराबरे उजड़ु सोई थाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ महा भइआन उदिआन नगर करि मानिआ ॥ झूठ

आग लगाई (तो वह जलकर नष्ट हो गया); इसी प्रकार यदि सच्चा मालिक मन में बस जाए तो सभी दुखों के ढेर नष्ट हो जाते हैं।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु का नाम सुमिरन करते ही करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं। प्रभु का गुणानुवाद करने से मनोवांछित फल प्राप्त हो जाते हैं। जन्म मरण का भय नष्ट हो जाता है और सच्चा अटल ठिकाना प्राप्त हो जाता है। यदि पूर्व से ही लेख लिखा हो तो व्यक्ति प्रभु-चरणों में लीन हो जाता है। हे प्रभु, कृपा करके मेरी रक्षा करो। यह नानक तुझ पर बलिहारी जाता है।। ५ ।। श्लोक।। जो घर की लीला, मन की खुशियों और भोग विलास के आनन्द में लीन बने हुए हैं तथा कभी भी परमात्मा का सुमिरन नहीं करते, हे नानक, ऐसे जीव गन्दगी के कीड़े हैं।। १ ।। जिसके पास पूरी सजावट और दिखावे का सामान है और उसी में ही उसका प्यार बना हुआ है परन्तु वह प्रभु यदि उसे भूल गया है तो हे नानक, ऐसा शरीर तो राख ही है।। २ ।। पउड़ी।। व्यक्ति के पास सुन्दर सेज है और अनेकों रसों के सुखों को भोगने का पूरा सामान है। घर में सोना, चन्दन, सुगन्ध लगाने और पहनने के लिए हीरे और मोती हैं। वह मन भाते सुखों का आनन्द लेता है और उसे कोई भी दुख नहीं हैं; परन्तु यदि उसे चित्त में प्रभु का ध्यान नहीं आता तो वह विष्ठा के कीड़ों के समान है। प्रभु-नाम के बिना तो शान्ति प्राप्त हो ही नहीं सकती। भला किस प्रकार मन को धैर्य प्रदान किया जा सकता है।। ६ ।। श्लोक।। प्रभु के चरण कमलों का वियोगी व्यक्ति वैराग्यवान बनकर दसों दिशाओं में प्रभु को खोजता फिरता है। उसे पाने के लिए वास्तव में वह कपट रूपी माया का त्याग करता है और हे नानक, वह आनन्द रूपी साधसंगत में रहता है।। १ ।। मेरे मन में प्रभु-प्रेम है; मुख से उसके नाम का उच्चारण करता हूं और सभी लोकों में उसे खोजता फिरता हूं। हे नानक, संसार के सभी आडम्बर झूठे हैं और मैं उसकी सच्ची महिमा सुनकर ही जीवित बना रहता हूं।। २ ।। पउड़ी।। यदि कोई व्यक्ति टूटी सी झोपड़ी में रहता हो, उसके सभी कपड़े फटे जों, उसकी न तो तथाकथित ऊँची जाति हो, न ही आदर सम्मान हो और वह सुनसान स्थानों पर भटकने वाला हो, न ही उसका कोई दोस्त और न ही कोई प्यारा हो, उसका कोई सम्बन्धी भी न हो और वह धन और रूप से भी विहीन हो परन्तु यदि प्रभु-नाम में उसका मन लीन बना है तो वह सारी सृष्टि का राजा है। ऐसे व्यक्ति की चरण धूलि से हमारी आत्मा मुक्त हो जाती है और प्रभु भी बहुत प्रसन्न हो जाता है।। ७ ।। श्लोक।। अनेकों राजलीलाएं, रूप, रस, छत्र, चंवर, सिंहासन आदि हों तो मूर्ख व्यक्ति अन्धा बनकर इनमें ही फंसा रह जाता है। हे नानक, ये माया के प्रपंच हैं और स्वप्न की तरह आते जाते हैं।। १ ।। सपने में व्यक्ति सभी सुखों को भोगता है और उसके भोग का मोह उसे मीठा लगता है। हे नानक, प्रभु-नाम के बिना यह सुन्दर दिखने वाली माया एक धोखा ही है।। २ ।। पउड़ी।। मूर्ख व्यक्ति सपनों में ही लीन बना रहता है परन्तु नींद खुलने पर सभी राज रस और भोग नष्ट हो जाते हैं तथा जगते ही वह विक्षिप्त हो उठता है। अनेकों धन्धों में लगे हुए व्यक्ति की आयु व्यतीत हो जाती है। माया के मोह में वह लीन तो बना रहता है परन्तु उसकी कामनाएं पूरी नहीं होती। यदि प्रभु ने ही उसे भुला दिया तो ऐसा जीव बेचारा किस काम का है।। ८ ।। श्लोक।। व्यक्ति का निवास स्वर्ग में हो, सभी लोकों, धरती और नौखण्डों को उसने जीत लिया हो परन्तु हे नानक, यदि सृष्टि के पालनकर्ता प्रभु को वह भूल गया तो समझ लो ऐसा प्राणी जंगलों में ही इधर उधर भटक रहा है।। १ ।। करोड़ों प्रकार के खेल तमाशों में लीन बने हुए को यदि प्रभु-नाम याद नहीं आता तो हे नानक, उसके लिए यह संसार एक निर्जन स्थान है और करोड़ों नर्कों के बराबर है।। २ ।। पउड़ी।। यह संसार बड़ा भयानक जंगल है जिसे व्यक्ति ने मनमोहक नगर माना हुआ है। यहां के झूठे

समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥ काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ ॥ सिरि लगा जम डंडु ता पछुतानिआ ॥ बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥ ९ ॥ सलोक ॥ राज कपटं रूप कपटं धन कपटं कुल गरबतह ॥ संचंति बिखिआ छलं छिद्रं नानक बिनु हरि संगि न चालते ॥ १ ॥ पेखंदड़ो की भुलु तुंमा दिसमु सोहणा ॥ अढु न लहंदड़ो मुलु नानक साथि न जुलई माइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चलदिआ नालि न चलै सो किउ संजीऐ ॥ तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वंजीऐ ॥ हरि बिसरिऐ किउ त्रिपतावै ना मनु रंजीऐ ॥ प्रभू छोडि अन लागै नरकि समंजीऐ ॥ होहु क्रिपाल दइआल नानक भउ भंजीऐ ॥ १० ॥ सलोक ॥ नच राज सुख मिसटं नच भोग रस मिसटं नच मिसटं सुख माइआ ॥ मिसटं साधसंगि हरि नानक दास मिसटं प्रभ दरसनं ॥ १ ॥ लगड़ा सो नेहु मंन मझाहू रतिआ ॥ विधड़ो सच थोकि नानक मिठड़ा सो धणी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥ आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥ अगिआनु भरमु दुखु कटिआ गुर भए बसीठा ॥ चरन कमल मनु बेधिआ जिउ रंगु मजीठा ॥ जीउ प्राण तनु मनु प्रभू बिनसे सभि झूठा ॥ ११ ॥ सलोक ॥ तिअकत जलं नह जीव मीनं नह तिआगि चात्रिक मेघ मंडलह ॥ बाण बेधंच कुरंक नादं अलि बंधन कुसम बासनह ॥ चरन कमल रचंति संतह नानक आन न रुचते ॥ १ ॥ मुखु डेखाऊ पलक छडि आन न डेऊ चितु ॥ जीवण संगमु तिसु धणी हरि नानक संतां मितु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिउ मछुली बिनु पाणीऐ किउ जीवणु पावै ॥ बूंद विहूणा चात्रिको किउ करि त्रिपतावै ॥ नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥ भवरु लोभी कुसम बासु का मिलि आपु बंधावै ॥ तिउ संत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥ १२ ॥ सलोक ॥ चितवंति चरन कमलं सासि सासि अराधनह ॥ नह बिसरंति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ॥ १ ॥ सीतड़ा मंन मंझाहि पलक न थीवै बाहरा ॥ नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखंदो सचु धणी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आसावंती आस गुसाई पूरीऐ ॥ मिलि गोपाल गोबिंद न कबहू झूरीऐ ॥ देहु दरसु मनि चाउ लहि

सामान को देखकर उसने इसी को सच्चा अर्थात सदा बना रहने वाला मान लिया है। यहां व्यक्ति काम, क्रोध और अहंकार में डूबा हुआ पागलों की तरह भटक रहा है। जब उसके सिर पर मौत का डंडा आ लगता है तो फिर वह अपने किए कुकर्मों के कारण पछताता रह जाता है। पूर्ण गुरु (परमात्मा) के बिना वह शैतान की तरह सिद्धान्त विहीन होकर दौड़ता रहता है।। ६ ।। श्लोक।। राज, रूप, धन, कुल जिनका व्यक्ति अभिमान करता है वास्तव में ये सब धोखा हैं। हे नानक, व्यक्ति विष रूपी सम्पदा को अनेकों छल छिद्रों के माध्यम से एकत्र करता है परन्तु यह एक बड़ा तथ्य है कि प्रभु के बिना कुछ भी साथ नहीं चलता।। १ ।। आक के पौधे को देखकर व्यक्ति भुलावे में आ गया क्योंकि वह दिखने में सुन्दर लगता है। उसका एक कौड़ी भी मूल्य नहीं मिलता और हे नानक, इसी प्रकार की यह माया है जो व्यक्ति के साथ नहीं चलती।। २ ।। पउड़ी।। जो चलते हुओं के साथ नहीं चलता उसको भला क्यों इकट्ठा किया जाए। जिससे अन्ततः बिछुड़ ही जाना है उसके लिए भला क्यों यत्न किए जाएं। प्रभु के विस्मृत होने पर भला कैसे संतुष्टि मिलेगी और मन कभी भी प्रसन्न नहीं होगा। प्रभु को छोड़कर जो अन्य वस्तुओं की ओर लगा रहता है वह नर्क में ही पड़ जाता है। हे नानक, यदि प्रभु दयालु कृपा करे तो भय नष्ट हो जाता है।। १० ।। श्लोक।। राज का सुख भी मीठा नहीं है और न ही भोगने वाले रत्न मीठे हैं तथा न ही माया के सुख मीठे हैं। हे नानक, साधसंगत मीठी है। प्रभु मीठा है, प्रभु का दर्शन और उसके दास मीठे हैं।। १ ।। मुझे ऐसा प्रेम लगा है कि मेरा मन अन्दर से रंग गया है। प्रभु के सच्चे प्रेम रूपी पदार्थ ने मेरा मन बींध दिया है। हे नानक, अब वो मालिक मीठा लगने लगा है।। २ ।। पउड़ी।। भक्तजनों को प्रभु के बिना अन्य कुछ भी मीठा नहीं लगता। अन्य सभी स्वाद फीके हैं ऐसा मैंने निर्णय करके देख लिया है। जब गुरु मेरा बीच में सहायक बन गया है तो मेरा ज्ञान भ्रम और दुख कट गया है। प्रभु के चरण कमल मन के आर-पार इस तरह हो गए हैं जैसे मजीठ रंग कपड़े पर सब ओर पक्का चढ़ जाता है। मेरा जीव, मेरे प्राण, मेरा तन मेरा मन सब प्रभु ही है। अन्य सभी झूठे प्रेम नष्ट हो गए हैं।। ११ ।। श्लोक।। पानी को छोड़कर मछली जी नहीं सकती और न ही पपीहा मेघ मण्डली को छोड़ सकता है। हिरन नाद के तीर के साथ बिंध जाता है और भौंरा फूल की सुगन्ध के साथ बंध जाता है। हे नानक, संतजन प्रभु के चरण कमलों में ही लीन बने रहते हैं और उन्हें अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता।। १ ।। यदि मैं पल भर के लिए भी तेरा मुंह देख लूं तो फिर तुझे छोड़कर मेरा चित्त अन्य किसी में नहीं लगेगा। हे नानक, जो संतों का मित्र है मेरा जीवन तो उस मालिक प्रभु के साथ ही है।। २ ।। पउड़ी।। जैसे मछली पानी के बिना जीवित नहीं रहती, बादल की बूंदों से विहीन बना रहकर चातक संतुष्ट नहीं होता, हिरन नाद को सुनकर बिंध जाता है और उठकर उसकी ओर दौड़ पड़ता है, भंवरा फूल की सुगन्ध का लोभी है और फूल से मिलकर उसी से बंध जाता है उसी प्रकार शान्त पुरुषों की प्रभु से प्रीति होती है और वे प्रभु के दर्शन करके ही संतुष्ट होते है।। १२ ।। श्लोक।। संतजन प्रभु के चरण कमलों का ध्यान करते हैं और प्रत्येक श्वास के साथ उसकी आराधना करते हैं। वे कभी भी नष्ट न होने वाले प्रभु का नाम भूलते नहीं और परमात्मा उनकी सभी कामनाएं पूरी करता है।। १ ।। प्रभु उनके मन में सिला हुआ है और क्षण भर के लिए भी उनसे बाहर नहीं जाता अर्थात उन्हें भूलता नहीं। हे नानक, सच्चा मालिक उनकी सभी आशाएं पूरी करता है और सदैव उनकी देखभाल करता रहता है।। २ ।। पउड़ी।। मुझ आशा लगाने वाले की आशाएं हे प्रभु, पूरी करो। परमात्मा से मिलकर कभी भी पश्चाताप और दुख नहीं होता। हे प्रभु, मुझे दर्शन दो। मेरे मन में यही कामना है

जाहि विसूरीऐ ॥ होइ पवित्र सरीरु चरना धूरीऐ ॥ पारब्रहम गुरदेव सदा हजूरीऐ ॥ १३ ॥ सलोक ॥ रसना उचरंति नामं स्रवणं सुनंति सबद अंम्रितह ॥ नानक तिन सद बलिहारं जिना धिआनु पारब्रहमणह ॥ १ ॥ हभि कूड़ावे कंम इकसु साई बाहरे ॥ नानक सेई धंनु जिना पिरहड़ी सच सिउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा ॥ पूरे ते परधान निवावहि प्रभ मथा ॥ हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा ॥ चरन पुनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा ॥ संतां संगि उधारु सगला दुखु लथा ॥ १४ ॥ सलोकु ॥ भावी उदोत करणं हरि रमणं संजोग पूरनह ॥ गोपाल दरस भेटं सफल नानक सो महूरतह ॥ १ ॥ कीम न सका पाइ सुख मिती हू बाहरे ॥ नानक सा वेलड़ी परवाणु जितु मिलंदड़ो मा पिरी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सा वेला कहु कउणु है जितु प्रभ कउ पाई ॥ सो मूरतु भला संजोगु है जितु मिलै गुसाई ॥ आठ पहर हरि धिआइ कै मन इछ पुजाई ॥ वडै भागि सतसंगु होइ निवि लागा पाई ॥ मनि दरसन की पिआस है नानक बलि जाई ॥ १५ ॥ सलोक ॥ पतित पुनीत गोबिंदह सरब दोख निवारणह ॥ सरणि सूर भगवानह जपंति नानक हरि हरि हरे ॥ १ ॥ छडिओ हभु आपु लगड़ो चरणा पासि ॥ नठड़ो दुख तापु नानक प्रभु पेखंदिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ ॥ रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ ॥ भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥ तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ ॥ करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥ १६ ॥ सलोक ॥ संत उधरण दइआलं आसरं गोपाल कीरतनह ॥ निरमलं संत संगेण ओट नानक परमेसुरह ॥ १ ॥ चंदन चंदु न सरद रुति मूलि न मिटई घांम ॥ सीतलु थीवै नानका जपंदड़ो हरि नामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चरन कमल की ओट उधरे सगल जन ॥ सुणि परतापु गोविंद निरभउ भए मन ॥ तोटि न आवै मूलि संचिआ नामु धन ॥ संत जना सिउ संगु पाईऐ वडै पुन ॥ आठ पहर हरि धिआइ हरि जसु नित सुन ॥ १७ ॥ सलोक ॥ दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह ॥ दइआल

और इसी से मेरे दुख दूर हो जाएंगे। तुम्हारे चरणों की धूलि से मेरा शरीर पवित्र हो जाएगा और मैं परब्रह्म गुरुदेव प्रभु के सदैव सामने बना रहूंगा।। १३ ।। श्लोक।। जो अपनी जीभ से प्रभु-नाम का उच्चारण करते हैं, कानों से अमृत शब्द सुनते हैं हे नानक, मैं उन पर सदैव बलिहारी जाता हूं जिनका ध्यान परब्रह्म प्रभु में लगा हुआ है।। १ ।। एक प्रभु के बिना सभी काम झूठे हैं। हे नानक, वे व्यक्ति ही धन्य हैं जिनका सच्चा प्रेम सत्य के साथ लगा हुआ है।। २ ।। पउड़ी।। मैं उन पर सदैव बलिहारी जाता हूं जो प्रभु की कथा वार्ता को सुनते हैं। ऐसे पूर्ण प्रमुख पुरुष प्रभु के सामने ही अपना सिर झुकाते हैं। वे हाथ ही अच्छे शोभायमान होते हैं जो प्रभु के अनन्त यश का लेखन करते हैं। वे चरण पवित्र और पुनीत हैं जो प्रभु के मार्ग पर चलते हैं। संत-पुरुषों के साथ ही व्यक्ति का उद्धार हो जाता है और उनके सारे दुख उतर जाते हैं।। १४ ।। श्लोक।। प्रभु की रज़ा का प्रकट होना और प्रभु का सुमिरन पूर्ण भाग्य के साथ ही होता है। हे नानक, वह घड़ी शुभ है जब पृथ्वी के पालनकर्ता प्रभु का दर्शन प्राप्त होता है।। १ ।। मैं उसकी कीमत नहीं आंक सकता क्योंकि उसने मुझे मेरे अनुमान से भी अधिक सुख दिए हैं। हे नानक, वही घड़ी सफल है जिसमें मुझे वह प्रियतम प्रभु मिल जाता है।। २ ।। पउड़ी।। बताओ वह कौन सा समय है जिसमें प्रभु को पाया जाता है। वही मुहूर्त और संयोग भला है जिसमें वह प्रभु मिल जाता है। आठों प्रहर उस प्रभु का ध्यान किया जाता है जिसके माध्यम से मन की इच्छाएं पूरी होती है। बड़े अच्छे भाग्य से ही सत्संगत प्राप्त होती है और मैं झुककर प्रभु के चरणों में लग जाता हूं। हे नानक, मन में दर्शनों की प्यास है और मैं उस प्रभु पर बलिहारी जाता हूं।। १५ ।। श्लोक।। पतितों को पावन करने वाला प्रभु सभी दुखों का नाश कर देता है। वह प्रतापी प्रभु शरण में आए हुओं को बचाने में समर्थ है। अतः हे नानक, मैं सदैव उसी का जाप करता हूं।। १ ।। मैंने अपना सारा अभिमान त्याग दिया है और प्रभु चरणों में आ लगा हूं। हे नानक, प्रभु को देखते ही मेरा दुख और संताप भाग खड़े हुए हैं।। २ ।। पउड़ी।। हे दयालु प्रभु, मुझे मिला लो। मैं तेरे द्वार पर आ गिरा हूं। मैं भटकते हुए पूरी तरह हार गया हूं; हे दीन दयालु, तुम मेरी रक्षा करो। हे पतितों का उद्धार करने वाले प्रभु, तेरा स्वभाव तो भक्त वत्सल होना ही है। मैंने अपनी विनती तुझ तक पहुंचाई है और तेरे बिना मेरा कोई भी नहीं है। हे दयालु प्रभु, इस संसार सागर से मेरा हाथ पकड़कर मुझे बचा लो।। १६ ।। श्लोक।। उस प्रभु के गुणों का गायन करना ही हमारा आसरा है क्योंकि वह कृपालु प्रभु ही संतों को पार उतारने वाला है। हे नानक, संत पुरुषों की संगत और उस परमेश्वर पर भरोसा रखने से व्यक्ति निर्मल हो जाता है।। १ ।। मन का ताप तो चन्दन से न चांदनी रात से और न ही सर्दी की ऋतु से दूर होता है। हे नानक, यह मन तो प्रभु के नाम का सुमिरन करने से ही शीतल होता है।। २ ।। पउड़ी।। सभी सेवकों का प्रभु के चरण कमलों के आश्रय से ही उद्धार होता है। प्रभु के यश को सुनकर मन निर्भय हो जाता है। प्रभु-नाम के इकट्ठे किए हुए धन में हे जीव, तू आठों प्रहर प्रभु की आराधना कर और हरि यश को सदैव सुनता रह।। १७ ।। श्लोक।। प्रभु के नाम का यश गायन करने से प्रभु दया पूर्वक दुखों का नाश कर देता है। प्रतापी प्रभु यदि दयालु हो जाए तो व्यक्ति माया में नहीं फंसता।। १ ।। मेरे मन की जलती हुई आग बुझ गई और

पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ ॥ १ ॥ भाहि बलंदड़ी बुझि गई रखंदड़ो प्रभु आपि ॥ जिनि उपाई मेदनी नानक सो प्रभु जापि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जा प्रभ भए दइआल न बिआपै माइआ ॥ कोटि अघा गए नास हरि इकु धिआइआ ॥ निरमल भए सरीर जन धूरी नाइआ ॥ मन तन भए संतोख पूरन प्रभु पाइआ ॥ तरे कुटंब संगि लोग कुल सबाइआ ॥ १८ ॥ सलोक ॥ गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह ॥ गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥ १ ॥ भउजलु बिखमु असगाहु गुरि बोहिथै तारिअमु ॥ नानक पूर करंम सतिगुर चरणी लगिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धंनु धंनु गुरदेव जिसु संगि हरि जपे ॥ गुर क्रिपाल जब भए त अवगुण सभि छपे ॥ पारब्रहम गुरदेव नीचहु उच थपे ॥ काटि सिलक दुख माइआ करि लीने अप दसे ॥ गुण गाए बेअंत रसना हरि जसे ॥ १९ ॥ सलोक ॥ द्रिसटंत एको सुनीअंत एको वरतंत एको नरहरह ॥ नाम दानु जाचंति नानक दइआल पुरख क्रिपा करह ॥ १ ॥ हिकु सेवी हिकु संमला हरि इकसु पहि अरदासि ॥ नाम वखरु धनु संचिआ नानक सची रासि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभ दइआल बेअंत पूरन इकु एहु ॥ सभु किछु आपे आपि दूजा कहा केहु ॥ आपि करहु प्रभ दानु आपे आपि लेहु ॥ आवण जाणा हुकमु सभु निहचलु तुधु थेहु ॥ नानकु मंगै दानु करि किरपा नामु देहु ॥ २० ॥ १ ॥

जैतसरी बाणी भगता की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

नाथ कछूअ न जानउ ॥ मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥ हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥ १ ॥ इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥ पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥ २ ॥ जत देखउ तत दुख की रासी ॥ अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥ ३ ॥ गोतम नारि उमापति स्वामी ॥ सीसु धरनि सहस भग गांमी ॥ ४ ॥ इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥ बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥ ५ ॥ कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥ बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥ ६ ॥ १ ॥

प्रतापी प्रभु यदि दयालु हो जाए तो व्यक्ति माया में नहीं फंसता।। १ ।। मेरे मन की जलती हुई आग बुझ गई और प्रभु स्वयं ही मेरा रक्षक बन गया है। जिसने यह सृष्टि उत्पन्न की है हे नानक, तू उसी का जाप कर।। २ ।। पउड़ी।। यदि प्रभु दयालु हो जाए तो माया का प्रभाव नहीं पड़ता। केवल एक प्रभु का सुमिरन करने से करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं। प्रभु के सेवकों की चरण-धूलि में स्नान करने से शरीर निर्मल हो जाता है। मन, तन सन्तुष्ट हो जाता है और पूर्ण प्रभु प्राप्त हो जाता है। व्यक्ति अपने परिवार और संगी साथियों समेत सबको साथ लेकर संसार सागर से पार उतर जाता है।। १८ ।। श्लोक।। गुरु ही सृष्टि का राजा और पालनहार है, गुरु ही पूर्ण, व्यापक प्रभु है, गुरु ही दयालु समर्थ है और हे नानक, गुरु ही पतितों का उद्धार करने वाला है।। १ ।। यह संसार सागर बहुत ही विषम और गहरा है परन्तु गुरु रूपी जहाज़ के माध्यम से मैं इसको तैर गया हूं। हे नानक, सच्चे गुरु के चरणों में लग जाने से मेरे सभी कार्य पूरे हो गए हैं।। २ ।। पउड़ी।। वह गुरुदेव धन्य है जिसके साथ प्रभु का सुमिरन होता है। जब गुरु कृपालु हो जाए तो सभी अवगुण छिप जाते हैं। वह परब्रह्म ही गुरु है जिसने नीचों को भी ऊँचा कर दिया है। उसने सांसारिक माया के दुखों के फंदों को काट कर हमें अपना दास बना लिया है। हमने भी उस प्रभु के अनन्त गुणों का और यश का अपनी जीभ से सदैव गायन किया है।। १६ ।। श्लोक।। वह एक प्रभु ही सब ओर दिखाई देता है, सुना जाता है और वह एक ही सारे जगत में कार्यशील है। नानक तो प्रभु से नामदान की याचना करता है और कहता है कि हे दयालु प्रभु, हम पर कृपा करो।। १ ।। मैं तो केवल एक का ही सुमिरन करूं एक को ही मन में बसाऊँ और उस एक प्रभु के सामने अरदास करूं। मैंने तो नाम रूपी पदार्थ और धन का संचय किया है और हे नानक, वास्तव में यही सच्ची रास पूंजी है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु दयालु और अनन्त है और वही सभी स्थानों में व्याप्त है। वह स्वयं ही सब कुछ है और भला उसके बराबर दूसरा क्या बताऊँ। हे प्रभु, तू स्वयं ही दान देता है और स्वयं ही लेने वाला भी है। आवागमन तो तेरा दैवी विधान है और तेरा ही ठिकाना अटल अथवा सदैव स्थित है। नानक तो यही दान तुझसे मांगता है कि उसे कृपा करके नाम का दान प्रदान करो।। २० ।। १।।

जैतसरी वाणी भक्तों की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे नाथ, मैं तो कुछ भी नहीं जानता। मेरा मन तो माया के हाथों बिका हुआ है।। १ ।। रहाउ।। तुम्हें तो सारे संसार का गुरु और स्वामी कहा जाता है और हमें कलियुग में रहने वाले कामी व्यक्तियों के तौर पर जाना जाता है।। १ ।। इन पांचों विकारों ने मेरे मन को भ्रष्ट कर दिया है और हर पल ये प्रभु से मेरी दूरी बढ़ाते जाते हैं।। २ ।। जिधर देखता हूं उधर दुख का ही सामान दिखाई देता है। बेशक वेद आदि भी परमात्मा की साक्षी भरते हैं परन्तु अभी भी मेरा मन इस तथ्य को नहीं मानता।। ३ ।। गौतम की स्त्री अहल्या और उमा के पति शिव थे। ब्रह्मा का अपनी पुत्री पर ही बुरी दृष्टि को रखना शिव के क्रोध का कारण बना और शिव ने उसका पांचवा सिर काट दिया जो शिव के हाथ के साथ ही चिपक गया। इसी प्रकार इन्द्र ने गौतम की स्त्री के साथ व्यभिचार किया तो उसके शरीर पर भग के हज़ारों निशान बन गए और इसी के कारण ब्रह्मा को भी अपना एक सिर गंवाना पड़ा।। ४ ।। इसी प्रकार इन विषय विकारों रूपी दुष्टों ने मेरे मूर्ख मन को बांध कर मारा है परन्तु यह मन बहुत ही निर्लज्ज है, अभी भी उनकी संगत से पीछे नहीं हटता।। ५ ।। रविदास कहता है कि अब क्या करें और प्रभु की शरण के बिना अन्य किसकी शरण में जाया जाए।। ६ ।। १ ।।

੧ਓ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु टोडी महला ४ घरु १ ॥

हरि बिनु रहि न सकै मनु मेरा ॥ मेरे प्रीतम प्रान हरि प्रभु गुरु मेले बहुरि न भवजलि फेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरै हीअरै लोच लगी प्रभ केरी हरि नैनहु हरि प्रभु हेरा ॥ सतिगुरि दइआलि हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि पाधरु हरि प्रभ केरा ॥ १ ॥ हरि रंगी हरि नामु प्रभ पाइआ हरि गोविंद हरि प्रभ केरा ॥ हरि हिरदै मनि तनि मीठा लागा मुखि मसतकि भागु चंगेरा ॥ २ ॥ लोभ विकार जिना मनु लागा हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा ॥ ओइ मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि तिन मसतकि भागु मंदेरा ॥ ३ ॥ बिबेक बुधि सतिगुर ते पाई गुर गिआनु गुरू प्रभ केरा ॥ जन नानक नामु गुरू ते पाइआ धुरि मसतकि भागु लिखेरा ॥ ४ ॥ १ ॥

टोडी महला ५ घरु १ दुपदे ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

संतन अवर न काहू जानी ॥ बेपरवाह सदा रंगि हरि कै जा को पाखु सुआमी ॥ रहाउ ॥ ऊच समाना ठाकुर तेरो अवर न काहू तानी ॥ ऐसो अमरु मिलिओ भगतन कउ राचि रहे रंगि गिआनी ॥ १ ॥ रोग सोग दुख जरा मरा हरि जनहि नही निकटानी ॥ निरभउ होइ रहे लिव एकै नानक हरि मनु मानी ॥ २ ॥ १ ॥ टोडी महला ५ ॥ हरि बिसरत सदा खुआरी ॥ ता कउ धोखा कहा बिआपै जा कउ ओट

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

राग टोडी महला ४ घरु १ ।।

प्रभु के बिना मेरा मन अब रह नहीं सकता। मुझे मेरे प्रियतम प्राण रूपी हरि से यदि गुरु मिला दे तो फिर इस संसार सागर में मेरा आवागमन नहीं होगा।। १ ।। रहाउ।। मेरे हृदय में प्रभु के लिए बहुत अधिक इच्छा उत्पन्न हो गई हैं और मैंने अपनी आंखों से उस प्रभु को देखा है। सच्चे दयालु गुरु ने मुझे प्रभु नाम सुमिरन करवाया है। वह नाम रूपी मार्ग ही वास्तव में प्रभु का मार्ग है।। १ ।। प्रभु मुझे हृदय, मन और तन से अच्छा लगने लगा है और मेरे मुख, मस्तक पर अच्छा भाग्य अंकित हो चुका है।। २ ।। जिनके मन को लोभ रूपी विकार ने अपने में लगा रखा है उन्हें वह श्रेष्ठ प्रभु भूला हुआ ही रहता है। ऐसे लोगों को मनमुख, मूर्ख एवं अज्ञानी कहा जाता है और उनके माथे का भाग्य भी अच्छा नहीं होता।। ३ ।। विवेक बुद्धि मैंने सच्चे गुरु से पाई है और गुरु से मुझे प्रभु के बारे में भी ज्ञान प्राप्त हुआ है। दास नानक ने तो प्रारम्भ से ही माथे पर लिखे भाग्य लेखों के अनुसार गुरु से प्रभु-नाम को प्राप्त कर लिया हैं।। ४ ।। १ ।।

टोडी महला ५ घरु १ दोपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

संत पुरुषों ने तो प्रभु के बिना अन्य किसी को भी नहीं जाना। जिसका पक्ष वह स्वामी प्रभु ले लेता है वह सदैव बेपरवाह बना रहकर प्रभु के रंग में ही रंगा रहता है।। रहाउ।। हे प्रभु, तेरा शामियाना (राज का चिन्ह) सबसे ऊँचा है और अन्य कोई भी तेरे जैसा बल वाला नहीं है। भक्तजनों को तो प्रभु का ऐसा हुकुम मिल गया है कि वे ज्ञानवान बनकर उस प्रभु के रंग में रंगे हुए हैं।। १ ।। रोग, शोक, दुख, बुढ़ापा, मृत्यु आदि तो प्रभु के सेवक के पास भी नहीं आते हैं। वे अपनी लौ को एक प्रभु में ही लगाए रहकर निर्भय बने रहते हैं और हे नानक, उनका मन प्रभु में ही लगना मान जाता है।। २ ।। १ ।। टोडी महला ५ ।। प्रभु को भुला देने से सदैव बेइज़्ज़त ही होना पड़ता है। हे प्रभु, जिसे तेरा आसरा है

तुहारी ॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सरप जैसे अरजारी ॥ नव खंडन को राजु कमाचै अंति चलैगो हारी ॥ १ ॥ गुण निधान गुण तिन ही गाए जा कउ किरपा धारी ॥ सो सुखीआ धंनु उसु जनमा नानक तिसु बलिहारी ॥ २ ॥ २ ॥

टोडी महला ५ घरु २ चउपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

धाइओ रे मन दह दिस धाइओ ॥ माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिओ तिनि प्रभि आपि भुलाइओ ॥ रहाउ ॥ हरि कथा हरि जस साधसंगति सिउ इकु मुहतु न इहु मनु लाइओ ॥ बिगसिओ पेखि रंगु कसुंभ को पर ग्रिह जोहनि जाइओ ॥ १ ॥ चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सत पुरखु मनाइओ ॥ धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइओ ॥ २ ॥ नाम दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ ॥ नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ नह बूझिओ अपनाइओ ॥ ३ ॥ परउपकार न कबहू कीए नही सतिगुरु सेवि धिआइओ ॥ पंच दूत रचि संगति गोसटि मतवारो मद माइओ ॥ ४ ॥ करउ बेनती साधसंगति हरि भगति वछल सुणि आइओ ॥ नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ ॥ ५ ॥ १ ॥ ३ ॥ टोडी महला ५ ॥ मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ ॥ अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ ॥ रहाउ ॥ धाइ धाइ क्रिपन स्रमु कीनो इकत्र करी है माइआ ॥ दानु पुंनु नही संतन सेवा कित ही काजि न आइआ ॥ १ ॥ करि आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ ॥ संगु न पाइओ अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ ॥ २ ॥ सारो दिनसु मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ ॥ खेदु भइओ बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ॥ ३ ॥ भइओ अनुग्रहु जा कउ प्रभ को तिसु हिरदै नामु वसाइआ ॥ साधसंगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ टोडी महला ५ ॥ क्रिपा निधि बसहु रिदै हरि नीत ॥ तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति ॥ रहाउ ॥ दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ ॥ महा पतित ते होत पुनीता

वह भला कैसे धोखा खा सकता है।। रहाउ।। प्रभु के सुमिरन के बिना जो जीवन है वह जलते रहने के समान वैसे ही है जैसे सर्प अपने अन्दर के विष से लम्बी आयु तक जलता ही रहता है। बेशक व्यक्ति धरती के नव खण्डों अर्थात सारी धरती का ही राज प्राप्त कर ले तब भी अन्ततः उसे हारकर ही चलना पड़ेगा।। १ ।। उस गुणनिधान प्रभु के वही गुण गाता है जिस पर प्रभु स्वयं कृपा करते हैं। हे नानक, वही सुखी है और उसका जीवन ही सफल है और मैं उस पर बलिहारी जाता हूं।। २ ।। २ ।।

टोडी महला ५ घरु २ चौपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मन दसों दिशाओं में दौड़ता भागता है। यह माया में लीन होकर लोभ के स्वाद में फंसा रहता है और वास्तव में स्वयं प्रभु ने इसे भुला रखा है।। रहाउ।। इसने हरि के यश, हरि की कथा वार्ता और साधु संगत में आधी घड़ी के लिए भी अपने आप को लीन नहीं किया है। यह कच्चे कुसुम्भ के संसार को देखकर प्रसन्न हो उठता है और साथ ही पराए घरों की ओर तांक झांक के लिए चल पड़ता है।। १ ।। इसने न तो प्रभु के चरण कमलों से प्यार किया और न ही उस सच्चे पुरुष प्रभु को मनाया है। दौड़ने के लिए तो वह अनेकों प्रकार से दौड़ता भागता है परन्तु इसका दौड़ना ऐसा ही है जैसे तेली का बैल एक ही जगह पर चक्कर लगाए रहता है।। २ ।। नाम, दान और स्नान का कोई उपक्रम इसने नहीं किया और एक क्षण के लिए भी प्रभु की कीर्ति का इसने गायन नहीं किया। अनेक प्रकार के झूठ बोलकर यह अपने मन को प्रसन्न किए रहता है और अपने वास्तविक मूल पदार्थ को नहीं पहचानता।। ३ ।। न तो इसने कभी परोपकार किए हैं और न ही सच्चे गुरु की सेवा आराधना की है। पांचों विकारों के साथ संगत और गोष्ठी करने में ही यह मतवाला बना रहता है और माया का मद सदैव इसके साथ रहता है।। ४ ।। साधसंगत के लिए मैं विनती करता हूं और प्रभु को भक्त वत्सल मानते हुए उसकी शरण में आया हूं। हे नानक, मैं तो दौड़ कर प्रभु के पीछे लग गया हूं। हे प्रभु, मुझे अपनाकर मेरी लाज रख लो।। ५ ।। १ ।। ३ ।। टोडी महला ५ ।। व्यक्ति प्रभु के ज्ञान को बूझे बिना व्यर्थ ही इस संसार में आया है। यह अनेकों प्रकार की सजावट, श्रंगार आदि करता है परन्तु इसे ऐसा ही समझो जैसे मृतक व्यक्ति को सुन्दर पोशाक पहनाई जा रही हो।। रहाउ।। दौड़ भागकर इस कंजूस जीव ने अनेक प्रकार की मेहनत मशक्कत की है और इसने धन को एकत्र किया है परन्तु यदि इसने दान-पुण्य और संत पुरुषों की सेवा नहीं की तो यह सब उसके किसी काम नहीं आता।। १ ।। जीव स्त्री ने आभूषण पहने, सेज को संवारा और बड़ा श्रंगार किया है परन्तु जब उसे प्रियतम का साथ नहीं मिला तो वह इस श्रंगार को देख देख कर दुखी बनी रहती है।। २ ।। व्यक्ति सारा दिन मेहनत करता है परन्तु वास्तव में वह खाली छिलके को ही मूसल के साथ निरर्थक ही पीटता चला जाता है, अर्थात निरर्थक कार्यों में ही लगा रहता है। जब उसमें से कुछ भी नहीं निकलता तो बेगारी करने की तरह वह खाली हाथ वापस घर आ जाता है।। ३ ।। जिस पर प्रभु का अनुग्रह हो गया उसके हृदय में प्रभु का नाम बस जाता है। ऐसा व्यक्ति साधसंगत के पीछे चलकर हे नानक, प्रभु-नाम के रस को प्राप्त कर लेता है।। ४ ।। २ ।। ४ ।। टोडी महला ५ ।। हे दया के समुद्र प्रभु, मेरे मन में नित्य बसे रहो। इस प्रकार से मेरी बुद्धि को प्रकाशित कर दो कि मेरी प्रीति सदैव प्रभु से लगी रहे।। रहाउ।। मैं तुम्हारे दास की चरण धूलि प्राप्त कर लूं और उसे लेकर मस्तक पर लगाता रहूँ । मैं यहाँ पतित से पवित्र बन जाऊँ और

हरि कीरतन गुन गावउ ॥ १ ॥ आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ तुहारो भावउ ॥ जो तू देहि तही इहु त्रिपतै आन न कतहू धावउ ॥ २ ॥ सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ ॥ साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ॥ ३ ॥ सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ॥ नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

टोडी महला ५ घरु २ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मागउ दानु ठाकुर नाम ॥ अवरु कछू मेरै संगि न चालै मिलै क्रिपा गुण गाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु अनेक भोग रस सगल तरवर की छाम ॥ धाइ धाइ बहु बिधि कउ धावै सगल निरारथ काम ॥ १ ॥ बिनु गोविंद अवरु जे चाहउ दीसै सगल बात है खाम ॥ कहु नानक संत रेन मागउ मेरो मनु पावै बिस्राम ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी को नामु मनहि साधारै ॥ जीअ प्रान सूख इसु मन कउ बरतनि एह हमारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु जाति नामु मेरी पति है नामु मेरै परवारै ॥ नामु सखाई सदा मेरै संगि हरि नामु मोकउ निसतारै ॥ १ ॥ बिखै बिलास कहीअत बहुतेरे चलत न कछू संगारै ॥ इसटु मीतु नामु नानक को हरि नामु मेरै भंडारै ॥ २ ॥ २ ॥ ७ ॥ टोडी मः ५ ॥ नीके गुण गाउ मिटही रोग ॥ मुख ऊजल मनु निरमल होई है तेरो रहै ईहा ऊहा लोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन पखारि करउ गुर सेवा मनहि चरावउ भोग ॥ छोडि आपतु बादु अहंकारा मानु सोई जो होगु ॥ १ ॥ संत टहल सोई है लागा जिसु मसतकि लिखिआ लिखोगु ॥ कहु नानक एक बिनु दूजा अवरु न करणै जोगु ॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥ टोडी महला ५ ॥ सतिगुर आइओ सरणि तुहारी ॥ मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिओ तउ दुआरी ॥ लेखा छोडि अलेखै छूटह हम निरगुन लेहु उबारी ॥ १ ॥ सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी ॥ नानक दास संत पाछै परिओ राखि लेहु इह बारी ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥ टोडी महला ५ ॥ रसना गुण गोपाल निधि गाइण ॥ सांति सहजु

प्रभु की कीर्ति का गायन करता रहूं।। १ ।। मुझे तुम्हारी आज्ञा ही मीठी लगे और तुम्हारा ही किया हुआ अच्छा लगे। हे प्रभु, तू जो दे, उसी से ही मेरा मन संतुष्ट हो जाए और मैं अन्य किसी स्थान की ओर नहीं दौड़ूं।। २ ।। स्वामी प्रभु को सदैव अपने पास ही जानना चाहिए और सबकी चरण-धूलि बनकर ही रहना चाहिए। जब साधु पुरुषों की संगत मिल जाती है तभी अपने प्रभु को प्राप्त किया जाता है।। ३ ।। हे प्रभु, तू हमारा सरदार मालिक है और हम तो सदैव छोटे बच्चों की तरह तेरे दास हैं। नानक तो बालक है; तुम माता पिता हो और इस बालक के मुख में तुम्हारे नाम का ही दूध है।। ४ ।। ३ ।। ५ ।।

टोडी महला ५ घरु २ दोपदे १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मालिक, मैं केवल नाम का दान मांगता हूं। मुझे तुम्हारी कृपा से तुम्हारे गुण गाना मिल जाए क्योंकि अन्य कुछ भी मेरे साथ जाने वाला नहीं है।। १ ।। रहाउ ।। राज माल अनेकों प्रकार के भोग और रस आदि सब पेड़ की ढलती हुई छाया की तरह हैं। व्यक्ति भागता दौड़ता हुआ अनेकों युक्तियों से भटकता रहता है परन्तु यह सब कुछ निरर्थक काम ही है।। १ ।। प्रभु के बिना अन्य कुछ भी चाहना बिलकुल कच्ची बात ही दिखाई देती है। हे नानक, मैं तो संत पुरुषों की चरण धूलि मांगता हूं जिससे मेरा मन शान्त हो सके।। २ ।। १ ।। ६ ।। टोडी मः ५ ।। प्रभु का नाम ही मन का सुन्दर आधार बनता है। यह नाम ही इस मन के लिए प्राण और सुख है और हमारे लिए तो प्रतिदिन यही काम आने वाला पदार्थ है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु का नाम ही मेरी जाति, मेरा सम्मान और यह नाम ही मेरा परिवार है। नाम ही मेरा सखा बनकर मेरे साथ रहता है और प्रभु का नाम ही मेरा पार उतारा करता है।। १ ।। अनेकों प्रकार के विषय और विलास आदि बताए जाते हैं परन्तु इनमें से कुछ भी साथ नहीं जाता। मेरा परम मित्र तो प्रभु नाम है और हे नानक, हरि नाम ही मेरा भण्डार है।। २ ।। २ ।। ७ ।। टोडी मः ५।। हे लोगो, उस प्रभु के सुन्दर गुणों का गायन करो, तुम्हारे रोग मिट जाएंगे। तुम्हारा मुख उज्जवल हो जाएगा, मन निर्मल हो जाएगा और इस लोक तथा परलोक में तुम्हारा सम्मान बना रहेगा ।। १ ।। रहाउ ।। मैं तो चरण धोकर गुरु की सेवा करता हूं और अपने मन को उसके आगे प्रसाद की तरह अर्पण कर देता हूं। हे जीव, तू ममता भाव, वाद-विवाद, अहंकार को छोड़कर जो कुछ भी हो रहा है उसे मानता रह।। संतजनों की सेवा में वही लगता है जिसके माथे पर लेख लिखा हुआ है। नानक कहता है कि उस एक प्रभु के बिना अन्य कोई भी कुछ भी करने योग्य नहीं है।। २ ।। ३ ।। ८ ।। टोडी मः ५ ।। हे सच्चे गुरु, मैं तुम्हारी शरण में आ गया हूं। यहीं मुझे सुख, नाम और प्रभु की महिमा प्राप्त होगी और हमारी चिन्ताएं दूर हो जाएंगी।। १ ।। रहाउ ।। मुझे अन्य कोई भी आसरा समझ नहीं आता और मैं हारकर तेरे द्वार पर आ गया हूं। तू हमारे कर्मों का हिसाब छोड़ दे क्योंकि यदि हमारा लेखा जोखा न किया जाए हम तो तभी छूट सकते हैं। हम गुण विहीनों को हे प्रभु, तुम बचा लो।। १ ।। तुम तो सदैव क्षमाशील हो और सदैव कृपालु बनकर सबको आसरा देते हो। दास नानक तो शान्त पुरुषों के पीछे लगा है इसलिए मुझे तो इसी जन्म में मुक्ति प्रदान कर दो।। २ ।। ४ ।। ६ ।। टोडी मः ५ ।। उस प्रभु के गुणों का जीभ से गायन करने से मन में शान्ति, स्थिरता और

रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण रसाइण ॥ जनम मरण दुहहू ते छूटहि भवजलु जगतु तराइण ॥ १ ॥ खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ॥ अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥ २ ॥ ५ ॥ १० ॥ टोडी महला ५ ॥ निंदकु गुर किरपा ते हाटिओ ॥ पारब्रहम प्रभ भए दइआला सिव कै बाणि सिरु काटिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै सच का पंथा थाटिओ ॥ खात खरचत किछु निखुटत नाही राम रतनु धनु खाटिओ ॥ १ ॥ भसमा भूत होआ खिन भीतरि अपना कीआ पाइआ ॥ आगम निगमु कहै जनु नानकु सभु देखै लोकु सबाइआ ॥ २ ॥ ६ ॥ ११ ॥ टोडी मः ५ ॥ किरपन तन मन किलविख भरे ॥ साधसंगि भजनु करि सुआमी ढाकन कउ इकु हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक छिद्र बोहिथ के छुटकत थाम न जाही करे ॥ जिस का बोहिथु तिसु आराधे खोटे संगि खरे ॥ १ ॥ गली सैल उठावत चाहै ओइ ऊहा ही है धरे ॥ जोरु सकति नानक किछु नाही प्रभ राखहु सरणि परे ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥ टोडी महला ५ ॥ हरि के चरन कमल मनि धिआउ ॥ काढि कुठारु पित बात हंता अउखधु हरि को नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि ॥ ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥ १ ॥ संत प्रसादि बैद नाराइण करण कारण प्रभ एक ॥ बाल बुधि पूरन सुखदाता नानक हरि हरि टेक ॥ २ ॥ ८ ॥ १३ ॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि नामु सदा सद जापि ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहम सुआमी वसदी कीनी आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस के से फिरि तिन ही सम्हाले बिनसे सोग संताप ॥ हाथ देइ राखे जन अपने हरि होए माई बाप ॥ १ ॥ जीअ जंत होए मिहरवाना दया धारी हरि नाथ ॥ नानक सरनि परे दुख भंजन जा का बड परताप ॥ २ ॥ ९ ॥ १४ ॥ टोडी महला ५ ॥ स्वामी सरनि परिओ दरबारे ॥ कोटि अपराध खंडन के दाते तुझ बिनु कउनु उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत बहु परकारे सरब अरथ बीचारे ॥ साधसंगि परम गति पाईऐ माइआ रचि बंधि

खुशी पैदा होती है तथा सभी दुख भाग खड़े होते हैं।। १ ।। रहाउ ।। सुख देने वाले प्रभु के चरणों की सेवा करने से व्यक्ति जो जो मांगता है उसे वही वही मिल जाता है। तू जन्म मरण दोनों से ही छूट जाएगा और प्रभु के चरण तुझे इस संसार सागर से पार उतार लेंगे।। १ ।। मैंने खोजते खोजते इस सार तत्व को जाना है कि प्रभु के सेवक केवल प्रभु के आसरे में ही रहते हैं। हे नानक, यदि तू सदैव बना रहने वाला सुख चाहता है तो सदैव उस प्रभु का सुमिरन करता रह।। २ ।। ५ ।। १० ।। टोडी मः ५ ।। गुरु की कृपा से हमारा निन्दक अब दूर हट गया। परब्रह्म प्रभु दयालु हो गए और उन्होंने अचूक बाण से उसका सिर काट डाला अर्थात वह नष्ट हो गया।। १ ।। रहाउ ।। न तो यम और न ही काल का जाल हम पर कोई प्रभाव डाल सकता है क्योंकि हमने तो सत्य का मार्ग अपना उद्देश्य बना लिया है। हमने ऐसे राम रत्न रूपी धन की कमाई कर ली है कि इसको खाने, खर्चने के बाद भी इसमें कुछ भी कमी नहीं आई।। १ ।। मेरा निन्दक क्षण भर में ही भस्मीभूत हो गया और उसने अपने किए हुए का फल पा लिया है। इस प्रकार के सत्य को सभी लोग देखते हैं और दास नानक का कथन है कि आगम और निगम अर्थात ज्ञान के ग्रन्थ भी इसी तथ्य को स्वीकार करते हैं।। २ ।। ६।। ११ ।। टोडी महला ५ ।। हे तन मन में पापों को भरे रहने वाले कंजूस व्यक्ति, तू साधसंगत में एक मालिक का ही भजन कर क्योंकि तेरी इज्ज़त को ढकने वाला केवल एक परमात्मा ही है।। १ ।। रहाउ ।। जब जहाज में अनेकों छेद हो जाएं तो उन्हें हाथों से नहीं थामा जा सकता परन्तु जिसका यह जहाज है यदि उसकी आराधना की जाए तो वह कुछ ऐसा प्रबन्ध कर सकता है कि खोटे खरे सभी पार उतर जाएं।। १ ।। यदि बातों से ही भारी चट्टानों को उठाया जाए तो वे नहीं उठती और वहीं की वहीं पड़ी रहेंगी। नानक का कथन है कि हे प्रभु, हमारे में कोई भी ज़ोर अथवा शक्ति नहीं है। हम तो तुम्हारी शरण में आ गए हैं, हमारी रक्षा करो।। २ ।। ७ ।। १२।। टोडी मः ५।। प्रभु के चरण कमलों का मन में ध्यान करो। प्रभु का नाम ऐसी औषधिहै जो कुल्हाड़ा निकाल कर अन्दर की गर्मी और अहंकार जैसे वायु विकार को काट देती है।। १ ।। रहाउ ।। मन के रोग, शरीर के रोग और भ्रम आदि के तीनों प्रकार के रोगों को दूर कर देने वाला, दुखों को नष्ट करने वाला तथा सुखों की रास-पूंजी केवल वह प्रभु ही है। जो व्यक्ति केवल एक प्रभु के आगे अरदास करता है उसके मार्ग में कोई भी विघ्न नहीं आता।। १ ।। शान्त पुरुषों की कृपा से करने कराने वाला एक ही प्रभु वैद्य रूप में प्राप्त हो जाता है। बच्चों के समान निर्दोष बुद्धि वाले जीवों के लिए वही पूर्ण सुख दाता है और हे नानक, उस एक प्रभु की ही टेक और आसरा है।। २ ।। ८ ।। १३ ।। टोडी मः ५ ।। सदैव प्रभु नाम का ही जाप करता रह। परब्रह्म स्वामी प्रभु ने कृपा धारण की और पुनः इस नगर को बसा कर भरपूर कर दिया।। १ ।। रहाउ ।। जिस प्रभु के हम थे उसी ने हमारी देखभाल की और सारे शोक संताप विनष्ट हो गए। प्रभु ही हमारा माता-पिता बना और उसी ने ही सेवकों की हाथ देकर रक्षा की है।। १ ।। उसकी कृपा के कारण सभी जीव जन्तु मेहरबान हो गए और उस मालिक प्रभु ने ही दया को धारण किया है। हे नानक, हम तो दुखों का नाश करने वाले उस प्रभु की शरण में आ गए हैं जिसका प्रताप बहुत बड़ा है।। २ ।। ६ ।। १४ ।। टोडी मः ५ ।। हे स्वामी, मैं तेरे दरबार में, तेरी शरण में आ गया हूँ। हे करोड़ों पापों का नाश करने वाले दाता प्रभु, तेरे बिना कौन हमारा उद्धार करेगा।। १ ।। रहाउ ।। अनेकों प्रकार से खोज करते हुए हमने सभी अर्थों पर विचार किया है और यह निर्णय लिया है कि साधसंगत में ही परम गति प्राप्त होती है और माया में लीन होकर बन्धनों में पड़कर

हारे ॥ १ ॥ चरन कमल संगि प्रीति मनि लागी सुरिजन मिले पिआरे ॥ नानक अनद करे हरि जपि जपि सगले रोग निवारे ॥ २ ॥ १० ॥ १५ ॥

टोडी महला ५ घरु ३ चउपदे १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

हां हां लपटिओ रे मूढ़े कछू न थोरी ॥ तेरो नही सु जानी मोरी ॥ रहाउ ॥ आपन रामु न चीनो खिनूआ ॥ जो पराई सु अपनी मनूआ ॥ १ ॥ नामु संगी सो मनि न बसाइओ ॥ छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ॥ २ ॥ सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ ॥ अंम्रित नामु तोसा नही पाइओ ॥ ३ ॥ काम क्रोधि मोह कूपि परिआ ॥ गुर प्रसादि नानक को तरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १६ ॥ टोडी महला ५ ॥ हमारै एकै हरी हरी ॥ आन अवर सिञाणि न करी ॥ रहाउ ॥ वडै भागि गुरु अपुना पाइओ ॥ गुरि मोकउ हरि नामु द्रिड़ाइओ ॥ १ ॥ हरि हरि जाप ताप ब्रत नेमा ॥ हरि हरि धिआइ कुसल सभि खेमा ॥ २ ॥ आचार बिउहार जाति हरि गुनीआ ॥ महा अनंद कीरतन हरि सुनीआ ॥ ३ ॥ कहु नानक जिनि ठाकुरु पाइआ ॥ सभु किछु तिस के ग्रिह महि आइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ १७ ॥

टोडी महला ५ घरु ४ दुपदे १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

रूड़ो मनु हरि रंगो लोड़ै ॥ गाली हरि नीहु न होइ ॥ रहाउ ॥ हउ ढूढेदी दरसन कारणि बीथी बीथी पेखा ॥ गुर मिलि भरमु गवाइआ हे ॥ १ ॥ इह बुधि पाई मै साधू कंनहु लेखु लिखिओ धुरि माथै ॥ इह बिधि नानक हरि नैण अलोइ ॥ २ ॥ १ ॥ १८ ॥ टोडी महला ५ ॥ गरबि गहिलड़ो मूड़ड़ो हीओ रे ॥ हीओ महराज री माइओ ॥ डीहर निआई मोहि फाकिओ रे ॥ रहाउ ॥ घणो घणो घणो सद लोड़ै बिनु लहणे कैठै पाइओ रे ॥ महाराज रो गाथु वाहू सिउ लुभड़िओ निहभागड़ो भाहि संजोइओ रे ॥ १ ॥ सुणि मन सीख साधू जन सगलो थारे सगले प्राछत मिटिओ रे ॥ जा को लहणो महराज री गाठड़ीओ जन नानक गरभासि न पउड़िओ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १९ ॥

यह जीवन हार लिया जाता है।। १ ।। जब चरण कमलों में इस मन की प्रीति लग गई तो देवता स्वरूप मेरा प्यारा पति प्रभु मुझे आ मिला है। नानक तो प्रभु का जाप करते हुए ही आनन्दित बना रहता है क्योंकि उस प्रभु ने मेरे समस्त दुखों, रोगों का निवारण कर दिया है।। २ ।। १० ।। १५ ।।

टोडी महला ५ घरु ३ चौपदे　　१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मूर्ख, यह ठीक है कि तू माया के साथ लिपटा हुआ है और तेरा प्रेम भी इससे कम नहीं है परन्तु जिसे तू जानता है कि यह मेरी है वह वास्तव में तेरी नहीं।। रहाउ ।। तुमने अपने प्रभु को क्षण भर के लिए भी नहीं पहचाना और जो पराया है उसे तूने अपना माना हुआ है।। १ ।। प्रभु नाम ही साथी है, उसे तूने मन में नही बसाया है और जिसे छोड़कर चले जाना है उसी में तूने अपना चित्त लीन किया है।। २ ।। तूने उन पदार्थों का संचय किया है जिनसे भूख और तृष्णा और बढ़ती है। तूने प्रभु के अमृत नाम को रास्ते के भोजन के रूप में अपने साथ नहीं बांधा है।। ३ ।। तू सदैव काम, क्रोध और मोह के कुएं में ही पड़ा रहा परन्तु हे नानक, गुरु की कृपा से कोई बिरला ही पार उतर सका है।। ४ ।। १ ।। १६ ।। टोडी मः ५ ।। हमारे लिए तो एक परमात्मा ही परमात्मा है और अन्य किसी को तो हम पहचानते ही नहीं।। रहाउ ।। बड़े भाग्य से हमने अपना गुरु पा लिया है और उस गुरु ने मुझसे प्रभु नाम का सुमिरन पक्का करवाया है।। १ ।। हमारा जाप, तपस्या, व्रत और आचरण सब परमात्मा ही है। प्रभु का सुमिरन करने से ही सभी कुशल क्षेम बनी रहती है।। २ ।। प्रभु का गुणानुवाद ही हमारे लिए आचरण, व्यवहार और ऊँची जाति है और प्रभु की कीर्ति सुनने से हमें महा आनन्द बना रहता है।। ३ ।। नानक का कथन है कि जिसने स्वामी प्रभु को पा लिया है उसके घर में ही सब कुछ आ पहुंचा है।। ४ ।। २ ।। १७ ।।

टोडी महला ५ घरु ४ दोपदे　　१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

यह रंगीला मन प्रभु का रंग (प्रेम) मांगता है परन्तु केवल बातों से ही प्रेम नही बढ़ता।। रहाउ ।। मैं तो अपने प्रियतम के दर्शन के लिए उसे गली गली में ढूंढती फिर रही हूं परन्तु मेरा भ्रम गुरु से मिलने पर ही दूर हो सका है।। १ ।। मुझे साधु पुरुषों से यह बुद्धि और युक्ति मिली है और ऐसा प्रभु द्वारा प्रारम्भ से ही मेरे माथे पर अंकित किए हुए लेख के कारण हो सका है। इस प्रकार नानक ने प्रभु को अपनी आंखों से देखा है।।२।।१।।१८।। टोडी मः ५।। यह मूर्ख चित्त अहंकार ने पकड़ रखा है। इस चित्त को प्रभु की माया ने डायन की तरह मोह में ग्रस्त किया हुआ है।। रहाउ।। यह हमेशा और अधिक और अधिक मांगता ही रहता है परन्तु लेनदार बने बिना कुछ भी कैसे पाया जा सकता है। प्रभु को दिया हुआ जो धन पदार्थ है यह उसी के साथ फंसा हुआ है। इस अभागे ने मन को तृष्णा की आग में लीन किया हुआ है।। १ ।। हे मन, तू साधुजन अर्थात गुरु की शिक्षा को ध्यान से सुन, तेरे सारे पाप मिट जाएंगे। जिसके लिए प्रभु की ओर से ही लेनदार बनना लिखा हुआ है हे दास नानक, वह गर्भ योनियों में कभी नहीं पड़ता।। २ ।। २ ।। १९ ।।

टोडी महला ५ घरु ५ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ऐसो गुनु मेरो प्रभ जी कीन ॥ पंच दोख अरु अहं रोग इह तन ते सगल दूरि कीन ॥ रहाउ ॥ बंधन तोरि छोरि बिखिआ ते गुर को सबदु मेरै हीअरै दीन ॥ रूपु अनरूपु मोरो कछु न बीचारिओ प्रेम गहिओ मोहि हरि रंग भीन ॥ १ ॥ पेखिओ लालनु पाट बीच खोए अनद चिता हरखे पतीन ॥ तिस ही को ग्रिहु सोई प्रभु नानक सो ठाकुरु तिस ही को धीन ॥ २ ॥ १ ॥ २० ॥ टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन की प्रीति ॥ एही करम धरम जप एही राम नाम निरमल है रीति ॥ रहाउ ॥ प्रान अधार जीवन धन मोरै देखन कउ दरसन प्रभ नीति ॥ बाट घाट तोसा संगि मोरै मन अपुने कउ मै हरि सखा कीत ॥ १ ॥ संत प्रसादि भए मन निरमल करि किरपा अपुने करि लीत ॥ सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ आदि जुगादि भगतन के मीत ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी मिलु मेरे प्रान ॥ बिसरु नही निमख हीअरे ते अपने भगत कउ पूरन दान ॥ रहाउ ॥ खोवहु भरमु राखु मेरे प्रीतम अंतरजामी सुघड़ सुजान ॥ कोटि राज नाम धनु मेरै अंम्रित द्रिसटि धारहु प्रभ मान ॥ १ ॥ आठ पहर रसना गुन गावै जसु पूरि अघावहि समरथ कान ॥ तेरी सरणि जीअन के दाते सदा सदा नानक कुरबान ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ तेरे पग की धूरि ॥ दीन दइआल प्रीतम मनमोहन करि किरपा मेरी लोचा पूरि ॥ रहाउ ॥ दह दिस रवि रहिआ जसु तुमरा अंतरजामी सदा हजूरि ॥ जो तुमरा जसु गावहि करते से जन कबहु न मरते झूरि ॥ १ ॥ धंध बंध बिनसे माइआ के साधू संगति मिटे बिसूर ॥ सुख संपति भोग इसु जीअ के बिनु हरि नानक जाने कूर ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥ टोडी मः ५ ॥ माई मेरे मन की पिआस ॥ इकु खिनु रहि न सकउ बिनु प्रीतम दरसन देखन कउ धारी मनि आस ॥ रहाउ ॥ सिमरउ नामु निरंजन करते मन तन ते सभि किलविख नास ॥ पूरन पारब्रहम सुखदाते अबिनासी बिमल जा को जासु ॥ १ ॥ संत प्रसादि मेरे पूर मनोरथ करि किरपा भेटे गुणतास ॥

टोडी महला ५ घरु ५ दोपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मेरे प्रभु जी ने ऐसा उपकार किया है कि काम, क्रोध आदि पांचों दोषों को तथा अहंकार के रोग को इस तन से दूर कर दिया है।। रहाउ ।। बन्धनों को काटकर विषय विकार रूपी माया से छुड़ाकर शब्द-गुरु को मेरे हृदय में बसा दिया है। मेरे रूप और कुरूपता के बारे में उसने कुछ भी ध्यान नहीं दिया और मुझे प्रेम से पकड़े हुए को प्रभु के रंग में भिगो दिया है।। १ ।। मैंने अपने प्यारे प्रियतम को बीच के सभी पर्दे तोड़कर देख लिया है। मेरा चित्त आनन्दित हो उठा और मैं प्रसन्नतापूर्वक सन्तुष्ट हो गया हूं। हे नानक, यह घर उसी का है, वही मालिक है और मैं उसी प्रभु के अधीन हूं।। २ ।। १ ।। २० ।। टोडी मः ५ ।। हे माँ, मेरे मन में उसके प्रति प्रेम लग गया है। यह प्रेम ही मेरे लिए धर्म कर्म और जप है और प्रभु का नाम ही मेरे लिए पवित्र आचरण है।। रहाउ ।। सदैव प्रभु का दर्शन करना मेरे जीवन का अंग और मेरे प्राणों का आधार है। प्रभु के मार्ग का और पार ले जाने वाले घाट तक का खर्चा मेरा प्रभु ही है। मैंने प्रभु को अपने मन का साथी बना लिया है।। १ ।। सन्तजनों की कृपा से मेरा मन निर्मल हो गया और प्रभु ने कृपा करके मुझे अपना बना लिया है। हे नानक, बार बार सुमिरन करके ही मैंने सुख पाया है और वह प्रभु ही आदि युगादि से भक्तजनों का परम मित्र है।। २ ।। २ ।। २१ ।। टोडी मः ५ ।। हे मेरे प्राण प्रभु, मुझसे आ मिल। एक क्षण भर के लिए भी मेरे हृदय से विस्मृत मत होओ और अपने भक्त को पूर्ण दान प्रदान करो।। रहाउ ।। हे अन्तर्यामी, सयाने और सुजान प्रभु, मेरे भ्रम दूर कर दो और मुझे बचा लो। मेरे लिए नाम धन करोड़ों राज्यों के बराबर है। हे मेरे सम्मान रूपी प्रभु, अपनी अमृत दृष्टि मेरी तरफ करो।। १ ।। आठों प्रहर यह जीभ तेरे गुण गाती है और मेरे कान तेरे यश को सुनकर समर्थ एवं सन्तुष्ट बने रहते हैं। हे जीवों के दाता, हम तेरी शरण में हैं और नानक तो सदैव तुझ पर बलिहारी जाता है।। २ ।। ३ ।। २१ ।। टोडी मः ५।। हे प्रभु, मैं तेरे चरणों की धूलि की कामना करता हूँ। हे दीन दयालु, मन को मोहने वाले प्रियतम, कृपा कर और मेरी आकांक्षा पूरी कर।। रहाउ ।। सब ओर तुम्हारा ही यश फैला है और हे अन्तर्यामी प्रभु, तू सदैव ही हमारे सामने रह। हे कर्ता प्रभु, जो तुम्हारे यश का गायन करते हैं उनको कभी भी पश्चाताप में मरना नहीं पड़ता।। १ ।। उनके धंधे और उलझनें समाप्त हो जाती हैं और साधसंगत में उनके सभी शोक समाप्त हो जाते हैं। धन, माल और सुख और इस मन की मौजें इन सबको हे नानक, प्रभु के बिना झूठा ही समझो।। २ ।। ४ ।।२३।। टोडी महला ५ ।। हे मां, मेरे मन की प्यास बनी ही हुई है। उस प्रीतम के बिना मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता और उसके दर्शन की आशा मैंने मन में लगा ही रखी है।। रहाउ।। उस कर्ता निर्मल प्रभु का नाम सुमिरन करता हूँ जिससे मेरे तन मन से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। वह पूर्ण परब्रह्म सुख देने वाले अविनाशी प्रभु का यश अत्यन्त निर्मल है।। १ ।। गुरु की कृपा से मेरी सभी आशाएं पूरी हो गई और कृपा करके मुझे गुणों के भण्डार प्रभु जी मिल गए हैं।

सांति सहज सूख मनि उपजिओ कोटि सूर नानक परगास ॥ २ ॥ ५ ॥ २४ ॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि पतित पावन ॥ जीअ प्रान मान सुखदाता अंतरजामी मन को भावन ॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघड़ु चतुरु सभ बेता रिद दास निवास भगत गुन गावन ॥ निरमल रूप अनूप सुआमी करम भूमि बीजन सो खावन ॥ १ ॥ बिसमन बिसम भए बिसमादा आन न बीओ दूसर लावन ॥ रसना सिमरि सिमरि जसु जीवा नानक दास सदा बलि जावन ॥ २ ॥ ६ ॥ २५ ॥ टोडी महला ५ ॥ माई माइआ छलु ॥ त्रिण की अगनि मेघ की छाइआ गोबिद भजन बिनु हड़ का जलु ॥ रहाउ ॥ छोडि सिआनप बहु चतुराई दुइ कर जोड़ि साध मगि चलु ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी मानुख देह का इहु ऊतम फलु ॥ १ ॥ बेद बखिआन करत साधू जन भागहीन समझत नही खलु ॥ प्रेम भगति राचे जन नानक हरि सिमरनि दहन भए मल ॥ २ ॥ ७ ॥ २६ ॥ टोडी महला ५ ॥ माई चरन गुर मीठे ॥ वडै भागि देवै परमेसरु कोटि फला दरसन गुर डीठे ॥ रहाउ ॥ गुन गावत अचुत अबिनासी काम क्रोध बिनसे मद ढीठे ॥ असथिर भए साच रंगि राते जनम मरन बाहुरि नही पीठे ॥ १ ॥ बिनु हरि भजन रंग रस जेते संत दइआल जाने सभि झूठे ॥ नाम रतनु पाइओ जन नानक नाम बिहून चले सभि मूठे ॥ २ ॥ ८ ॥ २७ ॥ टोडी महला ५ ॥ साधसंगि हरि हरि नामु चितारा ॥ सहजि अनंदु होवै दिनु राती अंकुरु भलो हमारा ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा भेटिओ बडभागी जा को अंतु न पारावारा ॥ करु गहि काढि लीओ जनु अपुना बिखु सागर संसारा ॥ १ ॥ जनम मरन काटे गुर बचनी बहुड़ि न संकट दुआरा ॥ नानक सरनि गही सुआमी की पुनह पुनह नमसकारा ॥ २ ॥ ९ ॥ २८ ॥ टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन को सुखु ॥ कोटि अनंद राज सुखु भुगवै हरि सिमरत बिनसै सभ दुखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम के किलबिख नासहि सिमरत पावन तन मन सुख ॥ देखि सरूपु पूरनु भई आसा दरसनु भेटत उतरी भुख ॥ १ ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु ॥ नानक सरनि गही सुख सागर जनम मरन फिरि गरभ न धुखु

अब मेरे मन में शान्ति और सहज भाव का सुख उत्पन्न हो गया है और हे नानक, मेरे मन में करोड़ों सूर्यों का प्रकाश हो गया है।। २ ।। ५ ।। २४ ।। टोडी मः ५ ।। प्रभु ही पतितों को पवित्र करने वाला है। वह अन्तर्यामी मन को भा जाने वाला है और वह सुखदाता प्रभु हमारे प्राणों का आसरा और मान है।। रहाउ ।। दासों के हृदय में निवास रखने वाला वह प्रभु ऐसा है कि भक्तजन उसके गुण गाते रहते हैं।। वही सुन्दर, सुघड़, चतुर और सब कुछ जानने वाला है। वह स्वामी, निर्मल रूप वाला अनुपम है और कर्मों की शरीर रूपी धरती में जो कुछ बोया जाता है वही खाना पड़ता है।। १ ।। विस्मय से भरकर हम हैरानी में ही डूबते चले जा रहे हैं और अन्य किसी को उसके समान नहीं समझते। मेरी जीभ उसी के यश का सुमिरन करते हुए जीवित बनी रहती है और दास नानक तो सदैव उस पर बलिहारी जाता है।। २ ।। ६ ।। २५ ।। टोडी महला ५ ।। हे माँ, यह माया तो एक छलावा ही है। प्रभु के सुमिरन के बिना यह माया तिनकों की आग, बादलों की छाया और बाढ़ के पानी की तरह है।। रहाउ ।। तू अपनी सब चतुराई और बुद्धि को छोड़ दे और दोनो हाथ जोड़कर साधु पुरुषों के मार्ग पर चलता रह। मानव शरीर का यही उत्तम फल है कि तू उस अन्तर्यामी प्रभु का सुमिरन करता रह।। १ ।। साधु व्यक्ति और वेद भी यही बखान करते हैं परन्तु भाग्यहीन, मूर्ख व्यक्ति इस तथ्य को नही समझता। हे नानक, प्रभु के सेवक तो उसकी भक्ति में लीन बने रहते हैं और प्रभु सुमिरन से ही उनकी मैल जल जाती है।। २ ।। ७ ।। २६ ।। टोडी मः ५ ।। हे माँ, मुझे गुरु के चरण बहुत अच्छे लगते हैं। इन चरणों का दर्शन बड़े भाग्य से परमात्मा प्रदान करता है। गुरु के दर्शन करने से करोड़ों फल प्राप्त हो जाते हैं।। रहाउ।। उस अविनाशी प्रभु का गुणानुवाद करते रहने से ढीठ काम, क्रोध, अहंकार आदि विनष्ट हो जाते हैं। जो सच्चे प्रभु के प्रेम में रंगे गए वे अमर हो गए हैं और जन्म मरण ने उन्हें फिर दुखी नहीं किया है। प्रभु के भजन के बिना जितने भी रस और रंग हैं संत पुरुष उन सबको झूठे ही मानते हैं। हे नानक, प्रभु के दास ही नाम रूपी रत्न को प्राप्त करते हैं और नाम से विहीन सभी यहाँ से लुट कर ही जाते हैं।। २ ।। ८ ।। २७ ।। टोडी मः ५ ।। साधसंगत में हमने प्रभु के नाम का सुमिरन किया। अब दिन रात हम स्वाभाविक आनन्द में ही बने रहते हैं और हमारे कर्मों का अंकुर अब फूट निकला है।। रहाउ ।। बड़े भाग्य से हमने पूर्ण गुरु से मिलाप कर लिया है। वह ऐसा है जिसका कोई ओर छोर नहीं है। प्रभु ने अपने हाथ से पकड़कर अपने सेवक को विष रूपी संसार सागर से बाहर निकाल लिया है।। १ ।। गुरु के उपदेश के कारण जन्म मरण समाप्त हो गया और फिर हमें संकटपूर्ण द्वार से नहीं गुज़रना पड़ता। नानक ने तो उस स्वामी प्रभु की शरण पकड़ ली है और उस प्रभु को बार-बार प्रणाम करता है।। २ ।। ६ ।। २८ ।। टोडी मः ५ ।। हे माँ, मेरे मन में अब सुख ही सुख है। प्रभु के सुमिरन से सभी दुख नष्ट हो जाते हैं और राज सुख भोगने के साथ करोड़ों प्रकार के आनन्द प्राप्त हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। करोड़ो जन्मों के पाप भाग खड़े होते हैं और उसके पवित्र सुमिरन के साथ ही तन मन सुखी हो जाता है। उसके सुन्दर स्वरूप को देखकर हमारी आशाएं पूरी हो जाती हैं और उसके दर्शन से हमारी भूख उतर जाती है।। १ ।। वह प्रभु ही चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) है। वही अष्ट महासिद्धियां है, वही कामधेनु है और वही पारिजात वृक्ष है। नानक ने तो सुखों के सागर उस प्रभु की शरण पकड़ ली है और अब उसे फिर जन्म मरण और गर्भ के ताप में नहीं पड़ना पड़ेगा

॥ २ ॥ १० ॥ २९ ॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि चरन रिदै उर धारे ॥ सिमरि सुआमी सतिगुरु अपुना कारज सफल हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुंन दान पूजा परमेसुर हरि कीरति ततु बीचारे ॥ गुन गावत अतुल सुखु पाइआ ठाकुर अगम अपारे ॥ १ ॥ जो जन पारब्रहमि अपने कीने तिन का बाहुरि कछु न बीचारे ॥ नाम रतनु सुनि जपि जपि जीवा हरि नानक कंठ मझारे ॥ २ ॥ ११ ॥ ३० ॥

टोडी महला ९ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

कहउ कहा अपनी अधमाई ॥ उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जग झूठे कउ साचु जानि कै ता सिउ रुच उपजाई ॥ दीन बंध सिमरिओ नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥ १ ॥ मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मन की काई ॥ कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

टोडी बाणी भगतां की १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥ जल की माछुली चरै खजूरि ॥ १ ॥ कांइ रे बकबादु लाइओ ॥ जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंडितु होइ कै बेदु बखानै ॥ मूरखु नामदेउ रामहि जानै ॥ २ ॥ १ ॥ कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही ॥ पतित पवित भए रामु कहत ही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम संगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई ॥ एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जाईं ॥ १ ॥ भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए ॥ गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए ॥ २ ॥ २ ॥ तीनि छंदे खेलु आछै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुंभार के घर हांडी आछै राजा के घर सांडी गो ॥ बामन के घर रांडी आछै रांडी सांडी हांडी गो ॥ १ ॥ बाणीए के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो ॥ देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो ॥ २ ॥ तेली कै घर तेलु आछै जंगल मधे बेल गो ॥ माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो ॥ ३ ॥ संतां मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे सिआम गो ॥ नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंद गो ॥ ४ ॥ ३ ॥

।। २ ।। १० ।। २६ ।। टोडी मः ५ ।। हमने प्रभु चरणों को हृदय में धारण कर लिया है और जबसे उस सच्चे गुरु-प्रभु का सुमिरन किया है तो हमारे सभी कार्य सफल हो गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। तत्वरूप में हमने यही चिन्तन किया है कि पुण्यदान और परमेश्वर की पूजा आदि प्रभु का गुणानुवाद करना ही है। उस अगम्य, अपरम्पर मालिक का गुण गाते हुए हमने बहुत अधिक सुख प्राप्त किया है।। १ ।। परमात्मा ने जिन लोगों को अपना बना लिया है फिर वह उनकी जांच पड़ताल नहीं करता । मैं तो प्रभु का नाम सुनकर और सुमिरन करके जीवित रहता हूं और हे नानक, मैंने उसे अपने गले में ही पिरो रखा है।। २ ।। ११ ।। ३० ।।

टोडी महला ९ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मैं अपनी नीचता के बारे में क्या कहूं। मैं तो सदैव सोने और स्त्री के रस में ही उलझा रहा तथा मैंने कभी भी प्रभु की कीर्ति का गायन नहीं किया।। १ ।। रहाउ ।। इस झूठे संसार को सच्चा समझकर मैंने अपनी सारी रुचि इसी में लगा दी है। जो सदैव सहायता करने वाला दीन-बंधु प्रभु है उसका तो मैंने कभी सुमिरन किया ही नहीं।। १ ।। रात दिन मैं सांसारिक झंझटों में लीन बना रहा और मेरे मन पर जमी काई कभी भी साफ नहीं हुई। नानक का कथन है कि प्रभु की शरण के बिना अब तो किसी भी स्थान पर गति होना सम्भव नहीं रह गया है।। २ ।। १ ।। ३१ ।।

टोडी वाणी भक्तों की १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

कोई उसको पास बताता है और कोई कहता है कि प्रभु दूर है परन्तु यह सब वैसा ही है जैसे यह कहा जाए कि जल की मछली खजरू पर चढ़ रही है अर्थात उस प्रभु का वर्णन नहीं हो सकता।। १ ।। हे मूर्ख, क्यों बकवास करता है क्योंकि जिसने प्रभु को पाया है वह इसका ढिंढोरा नहीं पीटता और इस उपलब्धि को छिपा कर ही रखता है।। १ ।। रहाउ ।। व्यक्ति पंडित बनकर वेदों की व्याख्या करता है परन्तु मैं मूर्ख नामदेव तो केवल प्रभु को ही जानता हूँ।। २ ।। १ ।। कोई बताए कि राम नाम लेने से भला किसके माथे का कलंक बाकी रह गया है। राम नाम कहते ही सभी पतित पवित्र हो गए हैं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के साथ रहते हुए सेवक नामदेव को यह स्पष्ट हो गया है कि एकादशी आदि का व्रत अब पीछे छूट गया है और अब मैं क्यों तीर्थों पर जाता फिरूँ।। १ ।। नामदेव कहता है कि अब मुझे अच्छे कर्मों के कारण यह सुमति आ गई है कि गुरमत के अनुरूप चलने से भला कौन-कौन बैकुण्ठ नहीं जा सका है अर्थात सभी पार उतर गए हैं।। २ ।। २ ।। हर छन्द में तीन चीजों का खेल है।। १ ।। रहाउ ।। कुम्हार के घर में तो हांडी है और राजा के घर में साँड़नी (शक्ति) है। ब्राह्मण के घर में पोथी पत्रा है और इस प्रकार यह सारा खेल, बर्तन (भोजन) शक्ति और पोथी पत्रे के ज्ञान का ही है।। १ ।। दुकानदार के घर में हींग है, भैंसे के माथे में सींग है और मंदिर में लिंग स्थापित है अर्थात ये तीनों अपने स्वभाव के अनुरूप ही स्थित बने रहते हैं।। २ ।। तेली के घर में तेल, जंगलों में बेल और माली के घर केला ही लगा मिलता है अर्थात इन स्थानों पर तेल बेल और केला ही प्रमुख है।। ३ ।। जैसे गोकुल में श्याम की ही प्रधानता है उसी प्रकार संतों के हृदय में प्रभु बसता है। नामदेव के हृदय में वही राम प्रत्यक्ष बस रहा है अर्थात् संत पुरुषों के हृदय में गोविन्द, श्याम और राम ही बसता रहता है।। ४ ।। ३ ।।

रागु बैराड़ी महला ४ घरु १ दुपदे

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सुनि मन अकथ कथा हरि नाम ॥ रिधि बुधि सिधि सुख पावहि भजु गुरमति हरि राम राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान जसु ऊतम खट दरसन गावहि राम ॥ संकर क्रोड़ि तेतीस धिआइओ नही जानिओ हरि मरमाम ॥ १ ॥ सुरि नर गण गंध्रब जसु गावहि सभ गावत जेत उपाम ॥ नानक क्रिपा करी हरि जिन कउ ते संत भले हरि राम ॥ २ ॥ १ ॥ बैराड़ी महला ४ ॥ मन मिलि संत जना जसु गाइओ ॥ हरि हरि रतनु रतनु हरि नीको गुरि सतिगुरि दानु दिवाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन कउ मनु तनु सभु देवउ जिनि हरि हरि नामु सुनाइओ ॥ धनु माइआ संपै तिसु देवउ जिनि हरि मीतु मिलाइओ ॥ १ ॥ खिनु किंचित क्रिपा करी जगदीसरि तब हरि हरि हरि जसु धिआइओ ॥ जन नानक कउ हरि भेटे सुआमी दुखु हउमै रोगु गवाइओ ॥ २ ॥ २ ॥ बैराड़ी महला ४ ॥ हरि जनु राम नाम गुन गावै ॥ जे कोई निंद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु करे सु आपे सुआमी हरि आपे कार कमावै ॥ हरि आपे ही मति देवै सुआमी

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

राग‍ु बैराड़ी महला ४ घरु १ दोपदे

हे मन, प्रभु नाम की अकथनीय कथा को सुन। गुरु की आज्ञा में रहकर यदि तू राम नाम का सुमिरन करे तो धन, बुद्धि, सिद्धियां और सुख आदि तुझे स्वतः ही प्राप्त हो जाएंगे।। १ ।। रहाउ ।। अनेकों आख्यान, पुराण, छः शास्त्र आदि सभी उस प्रभु का उत्तम यश गायन करते हैं। शिव आदि तैंतीस करोड़ देवताओं ने भी प्रभु की आराधना की परन्तु वे भी परमात्मा के रहस्य को नहीं जान पाए।। १ ।। देवता, मानव, गण, गंधर्व और जितने भी जीव पैदा हुए हैं वे सब प्रभु के यश का गायन करते हैं। हे नानक, जिन पर प्रभु ने कृपा की है प्रभु के वही संत भले व्यक्ति हैं।। २ ।। १ ।। बैराड़ी मः ४ ।। हे मन, जिन्होंने शान्त पुरुषों के साथ मिलकर प्रभु के यश का गायन किया है उनको सच्चे गुरु ने प्रभु के नाम का सुन्दर रत्न दान के रूप में दिला दिया है।। १ ।। रहाउ ।। जिस व्यक्ति ने प्रभु नाम का यश सुनाया है उसको तो सभी मन, तन अर्पण कर दो। जिसने प्रभु जैसा सखा मित्र दिला दिया है उसको धन, सम्पत्ति आदि सब कुछ दे दो। जगत् के स्वामी प्रभु ने जब क्षण भर के लिए भी कृपा की तब हमने उस प्रभु के यश का अपने अन्तर्मन में सुमिरन किया है। दास नानक को जब प्रभु मिल गया तो उसका अहंकार का दुख और रोग समाप्त हो गया ।। २ ।। २ ।। बैराड़ी महला ४ ।। प्रभु का सेवक राम नाम का गुण गाता रहता है। उस प्रभु के सेवक की यदि कोई निन्दा भी करे तब भी वह अपना स्वभाव नहीं छोड़ता।। १ ।। रहाउ ।। जो कुछ भी करता है वह स्वामी प्रभु स्वयं करता है और स्वयं ही कार्यशील बना रहता है। प्रभु स्वयं ही बुद्धि प्रदान करता है

हरि आपे बोलि बुलावै ॥ १ ॥ हरि आपे पंच ततु बिसथारा विचि धातू पंच आपि पावै ॥ जन नानक सतिगुरु मेले आपे हरि आपे झगरु चुकावै ॥ २ ॥ ३ ॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन राम नामु निसतारा ॥ कोट कोटंतर के पाप सभि खोवै हरि भवजलु पारि उतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि बसत हरि सुआमी हरि निरभउ निरवैरु निरंकारा ॥ हरि निकटि बसत कछु नदरि न आवै हरि लाधा गुर वीचारा ॥ १ ॥ हरि आपे साहु सराफु रतनु हीरा हरि आपि कीआ पासारा ॥ नानक जिसु क्रिपा करे सु हरि नामु विहाझे सो साहु सचा वणजारा ॥ २ ॥ ४ ॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन हरि निरंजनु निरंकारा ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ सुखदाता जा का अंतु न पारावारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि कुंट महि उरध लिव लागा हरि राखै उदर मंझारा ॥ सो ऐसा हरि सेवहु मेरे मन हरि अंति छडावणहारा ॥ १ ॥ जा कै हिरदै बसिआ मेरा हरि हरि तिसु जन कउ करहु नमसकारा ॥ हरि किरपा ते पाईऐ हरि जपु नानक नामु अधारा ॥ २ ॥ ५ ॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन हरि हरि नामु नित धिआइ ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि फिरि दूखु न लागै आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ॥ बिनु हरि प्रीति होर प्रीति सभ झूठी इक खिन महि बिसरि सभ जाइ ॥ १ ॥ तू बेअंतु सरब कल पूरा किछु कीमति कही न जाइ ॥ नानक सरणि तुम्हारी हरि जीउ भावै तिवै छडाइ ॥ २ ॥ ६ ॥

रागु बैराड़ी महला ५ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

संत जना मिलि हरि जसु गाइओ ॥ कोटि जनम के दूख गवाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो चाहत सोई मनि पाइओ ॥ करि किरपा हरि नामु दिवाइओ ॥ १ ॥ सरब सूख हरि नामि वडाई ॥ गुर प्रसादि नानक मति पाई ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

और स्वयं ही हमारे बोलों के माध्यम से बोलता है।। १ ।। प्रभु स्वयं ही पांचों तत्वों को बिखेर कर उनका विस्तार करता है और स्वयं ही उसमें शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि पांचों विषयों को डाल देता है। दास नानक का सच्चा गुरु तो स्वयं ही अपनों से मिलाता है और वह प्रभु स्वयं ही सभी झगड़ों का निपटारा करता है।। २ ।। ३ ।। बैराड़ी मः ४ ।। हे मन, प्रभु नाम का जाप कर क्योंकि यही तुझे पार उतार देता है। प्रभु करोड़ों के ही पाप समाप्त कर देता है और वह प्रभु ही संसार सागर से पार उतारता है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु स्वामी, हमारे इस शरीर रूपी शहर में निवास तो करता है परन्तु हमारे शत्रुता और विरोध के कार्यों में शामिल न होकर निर्भय और शत्रुताओं से परे बना रहने वाला निराकार है। प्रभु निकट ही बसता है परन्तु कुछ नज़र नहीं आता। गुरु के साथ चिन्तन करने से प्रभु मिल जाता है।। १ ।। प्रभु स्वयं ही साहूकार, सर्राफ, रत्न और हीरा है और प्रभु ने ही स्वयं सारा प्रसार किया हुआ है। हे नानक, जिस पर वह कृपा करता है वही प्रभु नाम का खरीददार होता है, वही सच्चा साहूकार होता है और वही सच्चा व्यापारी होता है।। २ ।। ४।। बैराड़ी मः ४ ।। हे मन, उस निर्मल निराकार प्रभु का सुमिरन कर। उस सुखदाता प्रभु का सदैव सुमिरन करते जाना चाहिए जिसका कोई भी न तो अन्त है और न ही ओर छोर है।। १ ।। रहाउ ।। माँ के पेट रूपी अग्निकुण्ड में जब जीव प्रभु का सुमिरन कर रहा होता है तो वहां भी प्रभु उसकी रक्षा करता है। हे मेरे मन, ऐसे प्रभु का सुमिरन करो क्योंकि वह प्रभु ही अंतिम समय में मुक्ति प्रदान करने वाला है।। १ ।। जिसके हृदय में मेरा प्रभु बस गया है उस व्यक्ति को प्रणाम करो। प्रभु की कृपा से ही प्रभु का जाप प्राप्त होता है और हे नानक, प्रभु नाम ही जीव का आधार, आसरा बनता है।। २ ।। ५ ।। बैराड़ी महला ४ ।। हे मन, तू प्रभु के नाम का जाप कर और सदैव उसी की आराधना करता रह। ऐसा करने से तू मनोवांछित फल पा लेगा और तुझे फिर दुख भी कभी नहीं आकर लगेगा।। १ ।। रहाउ ।। वही जाप, तपस्या, व्रत और पूजा सार्थक है जिससे प्रभु में प्रीति लग जाती है। प्रभु के प्रेम के बिना बाकी सभी प्रेम झूठे हैं और एक क्षण भर में ही सब भूल जाते हैं।। १ ।। हे प्रभु, तू अनन्त एवं सर्व कलाओं से परिपूर्ण है। तेरे मूल्य को आँका नही जा सकता। नानक तो तुम्हारी शरण में आ गया है इसलिए हे प्रभु, जैसे भी तुझे उचित लगे उसी प्रकार से इसे छुड़ा ले।। २ ।। ६।।

रागु बैराड़ी महला ५ घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

शान्त पुरुषों के साथ मिलकर हमने प्रभु के यश का गायन किया और करोड़ो जन्मों के दुखों को दूर कर लिया है।। १ ।। रहाउ ।। मन में हम जो भी चाहते थे वह हमने पा लिया है और कृपा करते हुए प्रभु ने हमें अपना नाम दान दे दिया है ।। १ ।। प्रभु नाम के बड़प्पन का गान करने से ही सभी सुख प्राप्त होते हैं और हे नानक, गुरु की कृपा से ही हमें अच्छी बुद्धि प्राप्त होती है।। २ ।। १ ।। ७ ।।

रागु तिलंग महला १ घरु १

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥ हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥ १ ॥ दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन पिसर पदर बिरादरां कस नेस दसतंगीर ॥ आखिर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर ॥ २ ॥ सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ॥ गाहे न नेकी कार करदम मम ईं चिनी अहवाल ॥ ३ ॥ बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥ नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥ ४ ॥ १ ॥

तिलंग महला १ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भउ तेरा भांग खलड़ी मेरा चीतु ॥ मै देवाना भइआ अतीतु ॥ कर कासा दरसन की भूख ॥ मै दरि मागउ नीता नीत ॥ १ ॥ तउ दरसन की करउ समाइ ॥ मै दरि मागतु भीखिआ पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केसरि कुसम मिरगमै हरणा सरब सरीरी चढ़णा ॥ चंदन भगता जोति इनेही सरबे परमलु करणा ॥ २ ॥ घिअ पट भांडा कहै न कोइ ॥ ऐसा भगतु वरन महि होइ ॥ तेरै नामि निवे रहे लिव लाइ ॥ नानक तिन दरि भीखिआ पाइ ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥

तिलंग महला १ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

राग़ु तिलंग महला १ घरु १

हे कर्ता प्रभु मैंने तेरे पास एक विनती की है, तू कान लगाकर सुन। तू सत्य है, बड़ा है, दयालु है और बिना किसी दोष के हम सबका पालनहार है।। १ ।। यह दुनियां नाशवान स्थान है, इस बात को हृदय में सत्य करके जानो; मेरे सिर के बाल मौत के दूत इज़राईल ने पकड़े हुए हैं; हे मन, तू कुछ नहीं समझता।। १ ।। रहाउ ।। स्त्री, पुत्र, पिता, भाई इनमें से कोई भी मदद करने वाला नहीं है। जब आखिर में मैं गिर पड़ा अर्थात् मुझे मौत आ गई और जिस समय मुर्दे को दबाने वाली नमाज़ पढ़ी जाती है तब कोई भी मुझे यहां रख नहीं सकता।। २ ।। मैं दिन रात लालच में ही फंसा भटकता रहा और सदा बुरा ही सोचता रहा। मेरा तो ऐसा हाल रहा है कि मैंने कभी भी नेकी का काम नहीं किया।। ३ ।। मैं अभागा साथ ही साथ चुगलखोर, भूल जाने वाला, निर्लज्ज और निडर व्यक्ति हूँ। दास नानक तो यह कहता है कि मुझ पर कृपा कर ताकि तेरे सेवकों की चरण-धूलि प्राप्त हो सके।। ४ ।। १ ।।

तिलंग महला १ घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे प्रभु, तेरा डर ही मेरी भांग (का नशा) है और मेरा मन ही उस भांग को रखने वाला थैला है। मैं तो दिवाना बनकर त्यागी हो गया हूँ। मेरे हाथ में भिखारी वाला प्याला है और मुझे तेरे दर्शनों की भूख है तथा तेरे द्वार पर ही मैं सदैव मांगता रहता हूं।। १ ।। मैं तेरे दर्शन का अभ्यास करता हूँ। हे प्रभु, तेरे द्वार पर मैं मांगता हूं इसलिए मुझे भीख दे दो।। १ ।। रहाउ ।। केसर, फूल, कस्तूरी और सोना आदि तो सबके शरीरों पर धारण होते हैं। चन्दन और संतजनों की अच्छाई भी ऐसी ही होती है कि यह सबको सुगन्धित कर देती है।। २ ।। घी और रेशम की कोई भी निन्दा नहीं करता अर्थात ये अपवित्र नहीं होते। इसी प्रकार भक्त (चाहे किसी भी जाति का हो) जो तेरे नाम में लीन होकर विनम्र है और चित्त को नाम में लगाए रखता है; हे नानक, मैं उसके द्वार पर ही भीख मांगता हूँ।। ३ ।। १ ।। २ ।।

तिलंग महला १ घरु ३   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरे प्यारे, माया हमारे शरीर अर्थात जीवन का आधार बन गई है और हमारा सारा शरीर हमने लोभ के साथ रंग

रंगाए ॥ मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥ १ ॥ हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ ॥ हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥ लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥ रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥ २ ॥ जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥ धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥ ३ ॥ आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥ नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ तिलंग मः १ ॥ इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥ आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ सहु नेड़ै धन कंमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥ १ ॥ इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी ॥ २ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥ जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥ जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥ एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥ ३ ॥ आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥ सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ तिलंग महला १ ॥ जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥ सरमु धरमु दुइ छपि खलोए कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ॥ काजीआ बामणा की गल थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥ मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसट महि करहि खुदाइ वे लालो ॥ जाति सनाती होरि हिदवाणीआ एहि

लिया है परन्तु मेरे पति प्रभु को मेरा यह चोला (जीवन) अच्छा नहीं लगता इसलिए जीवात्मा रूपी स्त्री को किस प्रकार प्रियतम की सेज पर जाना नसीब होगा ।। १ ।। हे कृपालु प्रभु, मैं तुझ पर बार - बार कुर्बान जाता हूँ। जो तेरे नाम का सुमिरन करते हैं मैं उन पर भी कुर्बान जाता हूँ। जो तेरा नाम लेते हैं मैं उन पर सदैव कुर्बान जाता हूँ ।। १ ।। रहाउ।। यदि यह शरीर रंग वाला मटका बन जाए और इसमें पक्का मजीठ का रंग डाला जाए और फिर यदि रंगने वाला मेरा साहिब प्रभु इसको रंगे तो वह इसे ऐसा रंगेगा जैसा किसी ने देखा नहीं होगा।। २ ।। हे प्यारे, जिनके शरीर रूपी चोले इस रंग में रंगे गए हैं प्रभु पति उनके पास विद्यमान बना रहता है। नानक की तो यही अरदास है कि काश ऐसे व्यक्तियों की चरण धूलि प्राप्त हो जाए।। ३ ।। वह स्वयं ही सजाता है, स्वयं ही रंगता है, स्वयं ही कृपादृष्टि करता है। हे नानक, ऐसी स्त्री ही उस प्रभु रूपी पति को भाती है और वह स्वयं ही उसमें रमण करता है ।। ४ ।। १ ।। ३ ।। तिलंग मः १ ।। हे अबोध एवं अनजान स्त्री, तू किस बात का अभिमान करती है। पति प्रभु तो इस शरीर रूपी घर में ही है। तू उसके रंग का आनन्द क्यों नहीं लेती। हे पागल, वह मालिक तो पास ही है तू उसे बाहर क्या ढूंढती है। तू अपनी आँखों में भय के काजल की सलाई लगा ले और प्रेम का श्रंगार कर ले तभी तू पति में लीन सुहागिन समझी जाएगी यदि तू वास्तव में प्रभु के साथ प्रेम लगा ले।। १ ।। भोली और अनजान स्त्री क्या करे यदि वह प्रभु रूपी पति को नहीं भाती। वह दुख के करुणापूर्ण प्रलाप तो काफी करती है परन्तु फिर भी उस स्त्री को पति के महल में जाना नसीब नहीं होता। दरअसल बिना भाग्य के कुछ भी प्राप्त नहीं होता है बेशक कितना भी इधर उधर दौड़ भाग कर लो। जीव स्त्री तो लोभ अहंकार में मस्त बनी हुई माया के प्रपंचों में डूबी हुई है परन्तु ऐसी बातों से उस पति को नहीं पाया जा सकता और कामिनी जीव स्त्री उसके सामने मूर्ख बनी रहती है।। २ ।। सुहागिन स्त्रियों से जाकर पूछो कि उन्होंने कैसी बातों से प्रियतम को प्राप्त किया है। वे बताएंगी कि जो कुछ वह प्रभु पति करे उसको भला समझ कर मानना चाहिए और चतुराई तथा अपनी शक्ति को छोड़ देना चाहिए। जिसके प्रेम के माध्यम से नाम रूपी पदार्थ प्राप्त किया जाता है उसी प्रभु के चरणों में चित्त लगाया जाना चाहिए। जो वह मालिक कहे वही करते जाना चाहिए और कर्मों की ऐसी सुगन्ध शरीर पर मलनी चाहिए कि तन और मन से उसके सामने अर्पण हुआ जा सके। वे सुहागिन स्त्रियां इस प्रकार बताती हैं कि हे बहन, इन विधियों से पति को पाया जाता है।। ३ ।। यदि अपने अहंकार को गँवा दिया जाए तो प्रभु पति को पाया जा सकता है अन्यथा भला और कौन सी चतुराई काम आ सकती है। जिस दिन वह मालिक कृपादृष्टि से देख ले वह दिन सफल हो जाता है और जीव रूपी कामिनी नवनिधियां प्राप्त कर लेती है। हे नानक, ऐसी सुहागिन स्त्री ही अपने पति को प्यारी लगती है और वही अपने रक्षक भाईयों पर गर्व कर सकती है। इस प्रकार की लगन में जो लगी रहती है और सहजभाव में मस्त रहती हुई दिन रात प्रभु प्रीति में लीन बनी रहती हैं उसी को सुन्दरी, विलक्षण स्वरूप वाली और अक्लमंद कहा जाता है।। ४ ।। २ ।। ४।। तिलंग मः १ ।। हे भाई लालो, जैसे मुझे उस मालिक का वाणी रूप में हुकुम होता है मैं वैसा ही सबको बताता हूँ। हे लालो, पाप और अत्याचार की बारात लेकर (बाबर) काबुल से चला है और हम लोगों से जबरदस्ती (भारत रूपी कन्या का) दान मांगता है। हे लालो, लज्जा और धर्म दोनों छिप गए हैं और झूठ ही अब प्रधान बनकर घूम रहा है। सच्चे काज़ी और सच्चे ब्राह्मणों की पूछ तो अब बिल्कुल ही समाप्त हो गई है और उनके स्थान पर अब शैतान ही शादी विवाह करवाता है अर्थात औरतों को ज़बरदस्ती उठा कर ले जाया जाता है। मुसलमान स्त्रियां भी दुखी होकर कुरान शरीफ आदि पढ़ती हुई खुदा से दुआ मांग रही हैं अर्थात् मुगलिया फौज मुसलमान पठान स्त्रियों पर भी अत्याचार कर रही है। ऊँची नीची जाति की हिन्दु स्त्रियों को

भी लेखै लाइ वे लालो ॥ खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइ वे लालो ॥ १ ॥ साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु मसोला ॥ जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि इकेला ॥ सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ॥ काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥ आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥ सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥

तिलंग महला ४ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सभि आए हुकमि खसमाहु हुकमि सभ वरतनी ॥ सचु साहिबु साचा खेलु सभु हरि धनी ॥ १ ॥ सालाहिहु सचु सभ ऊपरि हरि धनी ॥ जिसु नाही कोइ सरीकु किसु लेखै हउ गनी ॥ रहाउ ॥ पउण पाणी धरती आकासु घर मंदर हरि बनी ॥ विचि वरतै नानक आपि झूठु कहु किआ गनी ॥ २ ॥ १ ॥ तिलंग महला ४ ॥ नित निहफल करम कमाइ बफावै दुरमतीआ ॥ जब आणै वलवंच करि झूठु तब जाणै जगु जितीआ ॥ १ ॥ ऐसा बाजी सैसारु न चेतै हरि नामा ॥ खिन महि बिनसै सभु झूठु मेरे मन धिआइ रामा ॥ रहाउ ॥ सा वेला चिति न आवै जितु आइ कंटकु कालु ग्रसै ॥ तिसु नानक लए छडाइ जिसु किरपा करि हिरदै वसै ॥ २ ॥ २ ॥

तिलंग महला ५ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

खाक नूर करदं आलम दुनीआइ ॥ असमान जिमी दरखत आब पैदाइसि खुदाइ ॥ १ ॥ बंदे चसम दीदं फनाइ ॥ दुनीआ मुरदार खुरदनी गाफल हवाइ ॥ रहाउ ॥ गैबान हैवान हराम कुसतनी मुरदार बखोराइ ॥ दिल कबज कबजा कादरो दोजक सजाइ ॥ २ ॥ वली निआमति बिरादरा दरबार मिलक खानाइ ॥ जब अजराईलु बसतनी तब चि कारे बिदाइ ॥ ३ ॥ हवाल मालूमु करदं पाक अलाह ॥ बुगो नानक अरदासि पेसि दरवेस बंदाह ॥ ४ ॥ १ ॥ तिलंग घरु २ महला ५ ॥ तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ तू करतारु करहि सो होइ ॥ तेरा जोरु तेरी मनि टेक ॥ सदा सदा जपि नानक एक ॥ १ ॥ सभ ऊपरि पारब्रहमु दातारु ॥ तेरी टेक तेरा

भी इसी गिनती और वर्ग में समझा जा सकता है। खून से सने हुए गीत और दुखों के गीतों से विलाप किया जा रहा है और केसर की जगह लहू छिड़का जा रहा है।। १ ।। नानक उस प्रभु के गुण गाता है और लाशों से भरी इस नगरी में यह बात कह रहा है कि जिसने यह सृष्टि पैदा की और माया के रंग में इसे रंगा है, अब वह अलग अकेला बैठकर अपने इस खेल को देख रहा है। वह साहिब सच्चा है और उसका प्रताप सच्चा है तथा वह सच्चा ही न्याय करेगा। यह शरीर रूपी कपड़ा तो टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा और हिन्दुस्तान मेरे वाक्य को याद करेगा। ये मुगल ७८ में आएंगे और ९७ में इन्हें यहां से जाना होगा और उस समय एक अन्य शूरवीर भारत की धरती पर उठेगा (यहाँ बाबर के संवत १५७८ में आने और हुमायुँ के १५९७ में हिन्दुस्तान से भाग जाने की ओर संकेत लगता है। शूरवीर मर्द का अर्थ शेरशाह सूरी लगता है जिसने वास्तव में पहली बार हिन्दुओं और मुसलमानों के लिए एक सांझा नियम कानून बनाने का प्रयत्न किया और इसी के पद चिन्हों पर अकबर भी चला)। मैं नानक सत्य की वाणी कह रहा हूँ और सत्य को कहने का यही समय है (क्योंकि बाबर के चले जाने के बाद इन बातों के कहने का क्या लाभ है)।। २ ।। ३ ।। ५ ।।

तिलंग महला ४ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सभी जीव प्रभु के हुकुम में ही पैदा हुए हैं और हुकुम में ही कर्म करते हैं। वह प्रभु सच्चा साहिब है। उसका यह संसार रूपी खेल भी सच्चा है और इस सबका मालिक वह प्रभु ही है।। १ ।। सभी उस सत्य प्रभु की स्तुति करो क्योंकि वह मालिक प्रभु ही सबके ऊपर है। उसके जैसा अन्य कोई नहीं है और मैं भला किस गिनती में आने वाला हूँ।। रहाउ ।। पवन, पानी, धरती, आकाश, प्रभु के निवास के लिए घर मंदिर बने हुए हैं। हे नानक, वह स्वयं सबमें कार्यशील है इसीलिए झूठा और बुरा किसको कहा जाए।। २ ।। १ ।। तिलंग महला ४ ।। दुर्मति वाला व्यक्ति सदैव बेकार काम करता है और अहंकार में भूला रहता है। जब छल कपट के साथ कुछ ले आता है तब वह समझता है कि मैंने सारे संसार को जीत लिया है।। १ ।। यह संसार ऐसा खेल है जिसमें व्यक्ति को प्रभु नाम याद नहीं आता। हे मेरे मन, तू प्रभु की आराधना कर क्योंकि यह संसार क्षण भर में झूठा साबित होकर नष्ट हो जाएगा।। रहाउ ।। उस समय का बिल्कुल ही मन में विचार नहीं आता जब दुखदाई मौत आकर पकड़ लेगी। हे नानक, जिसके हृदय में कृपा करके वह आ बसता है उसको वह काल के भय से छुड़ा लेता है।। २ ।। २ ।।

तिलंग महला ५ घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मिट्टी और परम ज्योति से मिलकर यह सारी दुनियां और सब कुछ बना है। आकाश, धरती, वृक्ष और पानी सब खुदा की रचना है।। १ ।। हे जीव, जो कुछ नज़र आता है सब नाशवान है। दुनियां तो हराम का माल खाने वाली है और लालच में लगी हुई प्रभु को भूली हुई है।। रहाउ ।। यह सृष्टि भूतनी है, पशु है। यह हराम चीज़ मारकर हराम ही खाती है। अपने मन को वश में कर नहीं तो प्रभु पकड़कर नर्क में सज़ा देगा।। २ ।। जब मौत का फरिश्ता तुझे आकर बांध लेगा तो तेरे दाम देने वाले, हिमायत करने वाले भाई, महफिल, धन सम्पत्ति और घर आदि किस काम आ सकेंगे।। ३ ।। वह पवित्र प्रभु सारा हाल जानता है। हे नानक, तू दरवेश बंदों के सामने यही अरदास कर कि तुझे सुमति प्राप्त हो।। ४ ।। १ ।। तिलंग घरु २ मः ५।। हे प्रभु, तेरे बिना दूसरा कोई नहीं है। तू ही कर्ता है और तेरा किया ही सब होता है; तेरे पर ही हमारा जोर है। तेरा ही आसरा हमारे मन में है; हे नानक, सदैव उस एक प्रभु का जाप करते रहो।। १ ।। परब्रह्म दाता प्रभु सबसे ऊपर है और हे प्रभु, हमें तेरा ही भरोसा और

आधारु ॥ रहाउ ॥ है तूहै तू होवनहार ॥ अगम अगाधि ऊच आपार ॥ जो तुधु सेवहि तिन भउ दुखु नाहि ॥ गुर परसादि नानक गुण गाहि ॥ २ ॥ जो दीसै सो तेरा रूपु ॥ गुण निधान गोविंद अनूप ॥ सिमरि सिमरि सिमरि जन सोइ ॥ नानक करमि परापति होइ ॥ ३ ॥ जिनि जपिआ तिस कउ बलिहार ॥ तिस कै संगि तरै संसार ॥ कहु नानक प्रभ लोचा पूरि ॥ संत जना की बाछउ धूरि ॥ ४ ॥ २ ॥ तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ मिहरवानु साहिबु मिहरवानु ॥ साहिबु मेरा मिहरवानु ॥ जीअ सगल कउ देइ दानु ॥ रहाउ ॥ तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥ जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥ १ ॥ जिनि उपाई मेदनी सोई करदा सार ॥ घटि घटि मालकु दिला का सचा परवदगारु ॥ २ ॥ कुदरति कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाहु ॥ करि बंदे तू बंदगी जिचरु घट महि साहु ॥ ३ ॥ तू समरथु अकथु अगोचरु जीउ पिंडु तेरी रासि ॥ रहम तेरी सुखु पाइआ सदा नानक की अरदासि ॥ ४ ॥ ३ ॥ तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ करते कुदरती मुसताकु ॥ दीन दुनीआ एक तूही सभ खलक ही ते पाकु ॥ रहाउ ॥ खिन माहि थापि उथापदा आचरज तेरे रूप ॥ कउणु जाणै चलत तेरे अंधिआरे महि दीप ॥ १ ॥ खुदि खसम खलक जहान अलह मिहरवान खुदाइ ॥ दिनसु रैणि जि तुधु अराधे सो किउ दोजकि जाइ ॥ २ ॥ अजराईलु यारु बंदे जिसु तेरा आधारु ॥ गुनह उस के सगल आफू तेरे जन देखहि दीदारु ॥ ३ ॥ दुनीआ चीज फिलहाल सगले सचु सुखु तेरा नाउ ॥ गुर मिलि नानक बूझिआ सदा एकसु गाउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ तिलंग महला ५ ॥ मीरां दानां दिल सोच ॥ मुहबते मनि तनि बसै सचु साह बंदी मोच ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीदने दीदार साहिब कछु नही इस का मोलु ॥ पाक परवदगार तू खुदि खसमु वडा अतोलु ॥ १ ॥ दस्तगीरी देहि दिलावर तूही तूही एक ॥ करतार कुदरति करण खालक नानक तेरी टेक ॥ २ ॥ ५ ॥

तिलंग महला १ घरु २ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

जिनि कीआ तिनि देखिआ किआ कहीऐ रे भाई ॥ आपे जाणै

आधार है।। रहाउ ।। हे प्रभु, तू वर्तमान में भी है और आगे भी तू ही रहने वाला है। तू अगम्य, गहरे से गहरा, ऊँचा और अपरम्पर है। जो तेरा सुमिरन करते हैं उन्हें दुख और भय नहीं होता। गुरु की कृपा से हे नानक, तू प्रभु के गुण गाए जा।। २ ।। जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह सब तेरा ही रूप है। हे गुणों के भण्डार धरती के स्वामी प्रभु, तू अनुपम है। तेरे दास तेरा सुमिरन कर करके वही बन जाते हैं। हे नानक, बड़े भाग्य से ही वह प्रभु प्राप्त होता है।। ३ ।। जिन्होंने उसका जाप किया है मैं उन पर बलिहारी जाता हूं। उनकी संगत में सारा संसार पार उतर जाता है। नानक कहता है कि हे प्रभु, मेरी इच्छा पूरी करो; मैं संत पुरुषों की चरण धूलि मांगता हूँ।। ४ ।। २ ।। तिलंग मः ५ घरु ३ ।। वह प्रभु साहिब सदैव दया करने वाला है। वह मेरा मालिक सदा दयालु है। वह सभी जीवों को दान देता ही रहता है।। रहाउ ।। हे जीव, तू क्यों घबराता है; वह पैदा करने वाला प्रभु तेरी रक्षा करेगा। जिसने तुझे पैदा किया वही तुझे जीने का आधार (दाना-पानी) भी देगा। जिसने धरती को पैदा किया वही इसकी देखभाल भी करता है। वह शरीर के अन्दर हृदय का मालिक और सच्चा परवरदिगार है।। २ ।। उसकी शक्ति का मूल्य नहीं आँका जा सकता है। वह सबसे बड़ा और बेपरवाह है। हे व्यक्ति, जब तक तेरे शरीर में श्वास है तू उसकी बन्दगी करता रह।। ३ ।। तू समर्थ शक्तिशाली, अकथनीय और मन वाणी से परे है। हमारे प्राण और शरीर तेरी ही दी हुई हमारी पूंजी है। नानक की तो सदैव यही अरदास है कि तेरी कृपा रूपी सुख मुझे मिलता रहे।। ४ ।। ३ ।। तिलंग मः ५ घरु ३ ।। हे पैदा करने वाले, तेरी शक्ति को देखकर मैं तेरा चाहने वाला बन गया हूँ। मेरी परलोक और इस लोक की सम्पत्ति एक तू ही है और तू ही सारी सृष्टि में रहता हुआ भी उससे निर्लिप्त और पवित्र बना रहता है।। रहाउ ।। तू क्षण भर में स्थापना करके नष्ट भी कर देता है। तेरे ये कौतुक आश्चर्यपूर्ण हैं। तेरे कौतुकों को कौन जान सकता है। तू तो अंधकार में दीपक के समान है।। १ ।। तू स्वयं जीवों का मालिक है, संसार का परमेश्वर और दयालु खुदा है। जो व्यक्ति दिन रात तेरी आराधना करे, वह भला कैसे नरक में जा सकता है।। २ ।। जिसे तेरा आसरा है, मौत का फरिश्ता इज़राईल उसका दोस्त है। उस व्यक्ति के सभी पाप माफ हो जाते हैं इसलिए तेरे भक्तजन केवल तेरा ही दर्शन देखते हैं।। ३ ।। संसार की सभी वस्तुएं थोड़े समय के लिए ही है। सच्चा सुख तो तेरा नाम ही है। नानक ने तो गुरु से मिलकर यही जाना है कि सदा एक ही प्रभु के गुण गाते रहो।। ४ ।। ४ ।। तिलंग मः ५।। हे दानेश्वर सरदार, तू दिल में इस बात को सोच। प्रेम के माध्यम से प्रभु मन तन में बस जाता है और वही सच्चा मालिक, कैद से छुड़ाने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। मालिक के दर्शन का मूल्य नहीं आंका जा सकता। हे प्रभु, तू पवित्र और पालने वाला है और तू ही बड़ा और अनन्त मालिक है।। १ ।। हे शूरवीर प्रभु, मेरी सहायता कर क्योंकि मेरी सहायता करने वाला तो एक तू ही है। हे इस संसार को बनाने वाले कर्ता प्रभु, नानक को एक तेरा ही आसरा है।। २ ।। ५ ।।

तिलंग महला १ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जिस प्रभु ने यह संसार बनाया है वही इसकी देखभाल करता है। हे भाई, उसके बारे में और क्या कहा जा सकता है।

करे आपि जिनि वाड़ी है लाई ॥ १ ॥ राइसा पिआरे का राइसा जितु सदा सुखु होई ॥ रहाउ ॥ जिनि रंगि कंतु न राविआ सा पछो रे ताणी ॥ हाथ पछोड़ै सिरु धुणै जब रैणि विहाणी ॥ २ ॥ पछोतावा ना मिलै जब चूकैगी सारी ॥ ता फिरि पिआरा रावीऐ जब आवैगी वारी ॥ ३ ॥ कंतु लीआ सोहागणी मै ते वधवी एह ॥ से गुण मुझै न आवनी कै जी दोसु धरेह ॥ ४ ॥ जिनि सखी सहु राविआ तिन पूछउगी जाए ॥ पाइ लगउ बेनती करउ लेउगी पंथु बताए ॥ ५ ॥ हुकमु पछाणै नानका भउ चंदनु लावै ॥ गुण कामण कामणि करै तउ पिआरे कउ पावै ॥ ६ ॥ जो दिलि मिलिआ सु मिलि रहिआ मिलिआ कहीऐ रे सोई ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ बाती मेलु न होई ॥ ७ ॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ धावै ॥ गुर परसादी जाणीऐ तउ अनभउ पावै ॥ ८ ॥ पाना वाड़ी होइ घरि खरु सार न जाणै ॥ रसीआ होवै मुसक का तब फूलु पछाणै ॥ ९ ॥ अपिउ पीवै जो नानका भ्रमु भ्रमि समावै ॥ सहजे सहजे मिलि रहै अमरा पदु पावै ॥ १० ॥ १ ॥ तिलंग महला ४ ॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ गुरि मीति सुणाईआ ॥ बलिहारी गुर आपणे गुर कउ बलि जाईआ ॥ १ ॥ आइ मिलु गुरसिख आइ मिलु तू मेरे गुरू के पिआरे ॥ रहाउ ॥ हरि के गुण हरि भावदे से गुरू ते पाए ॥ जिन गुर का भाणा मंनिआ तिन घुमि घुमि जाए ॥ २ ॥ जिन सतिगुरु पिआरा देखिआ तिन कउ हउ वारी ॥ जिन गुर की कीती चाकरी तिन सद बलिहारी ॥ ३ ॥ हरि हरि तेरा नामु है दुख मेटणहारा ॥ गुर सेवा ते पाईऐ गुरमुखि निसतारा ॥ ४ ॥ जो हरि नामु धिआइदे ते जन परवाना ॥ तिन विटहु नानकु वारिआ सदा सदा कुरबाना ॥ ५ ॥ सा हरि तेरी उसतति है जो हरि प्रभ भावै ॥ जो गुरमुखि पिआरा सेवदे तिन हरि फलु पावै ॥ ६ ॥ जिना हरि सेती पिरहड़ी तिना जीअ प्रभ नाले ॥ ओइ जपि जपि पिआरा जीवदे हरि नामु समाले ॥ ७ ॥ जिन गुरमुखि पिआरा सेविआ तिन कउ घुमि जाइआ ॥ ओइ आपि छुटे परवार सिउ सभु जगतु छडाइआ ॥ ८ ॥ गुरि पिआरै हरि सेविआ गुरु धंनु गुरु धंनो ॥ गुरि हरि मारगु दसिआ गुर पुंनु वड पुंनो ॥ ९ ॥

जिसने यह संसार रूपी बगीची बनाई है वही इसके बारे में जानता है और वही इसके लिए सब कुछ करता है।। १ ।। उस प्रभु प्यारे की कथा ही वास्तविक कथा है जिसे सुनकर सदैव सुख प्राप्त होता है।। रहाउ।। जिसने प्रेम पूर्वक पति के साथ रमण नहीं किया अर्थात उसका सुमिरन नहीं किया वह जीव स्त्री पछताती ही रहती है। जब उसकी जीवन रूपी रात्रि बीत जाती है तो वह दुख में हाथ पटकती है सिर धुनती है।। २।। जब जिन्दगी की गोटियां खत्म हो जाएंगी अर्थात मौत आ जाएगी तो पछतावे के लिए भी समय नही मिलेगा। फिर तो प्रियतम को तभी मिला जा सकेगा जब मानव जन्म की बारी आएगी।। ३ ।। उन भाग्यशाली जीव स्त्रियों ने पति को प्राप्त किया है जो मुझसे बढ़चढ़ कर हैं। मैं किस प्रकार प्रभु को अपने हृदय में दोष दूं क्योंकि मुझमें अच्छी स्त्रियों वाले कोई भी गुण नहीं है।। ४ ।। जिन सखियों ने अपने पति प्रभु के साथ रमण किया है मैं जाकर उनको पूछूंगी। मैं उनके चरण छू लूंगी, विनती करूंगी और प्रभु से मिलने का मार्ग उनसे पूछ लूंगी।। ५ ।। हे नानक, प्रभु के हुकुम को पहचाने और प्रेम के चंदन को शरीर में लगाकर यदि कामिनी गुण रूपी जादू करे तभी वह प्यारे प्रभु को पा सकती है।। ६ ।। जो व्यक्ति हृदय से प्रभु को मिलता है वह सदैव उससे मिला ही रहता है और उसी को वास्तव में मिला हुआ कहा जाता है। बेशक कितनी ही मिन्नत की जाए परन्तु केवल बातों से ही उस प्रभु के साथ मेल नहीं होता।। ७ ।। जिस प्रकार धातु फिर धातु में मिल जाती है उसी प्रकार प्रेम प्रेम की ओर खिंच जाता है। गुरु की कृपा से ही जब समझ आ जाती है तो उसे वास्तविक अनुभव प्राप्त होता है।। ८ ।। घर में कोमल पान के पत्ते लगे हुए हों तब भी गधे को उसकी कोई कद्र नहीं होती। जो वास्तव में सुगन्ध का रसिक है वही फूल की पहचान कर सकता है।।६।। जो नाम रूपी अमृत को पी लेता है हे नानक, उसकी भटकन स्वयं ही मिट जाती है। वह धीरे धीरे स्वाभाविक रूप से प्रभु के साथ मिल जाता है और अटल पदवी प्राप्त कर लेता है।।१०।।१।। तिलंग मः ४ ।। प्रभु की कथाएं और वार्ताएं गुरु रूपी मित्र ने सुना दी हैं। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और बार-बार कुर्बान होता हूँ।।१।। हे गुरु के सिक्ख, तू मुझे आ मिल; हे मेरे गुरु के प्यारे, तू मुझसे आ मिल।। रहाउ।। जो गुण प्रभु को अच्छे लगते हैं वे गुरु से प्राप्त होते हैं। जिन्होंने गुरु की आज्ञा को मान लिया है उन पर मैं घूम-घूम कर बलिहारी जाता हूँ।। २ ।। जिन्होंने प्यारे सच्चे गुरु को देख लिया है मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ और जिन्होंने गुरु की सेवा की है मैं उन पर सदैव बलिहारी जाता हूँ।। ३ ।। हे प्रभु, तेरा नाम ही दुखों का नाश करने वाला है। यह गुरु सेवा से ही प्राप्त होता है तथा गुरमुख बनकर ही व्यक्ति का पार उतारा होता है।। ४ ।। जो प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं वे सेवक ही स्वीकृत होते हैं। नानक तो उन पर से बलिहारी जाता है और सदा सदा कुर्बान होता रहता है।। ५ ।। हे प्रभु, तेरी स्तुति तो वही है जो तुझे अच्छी लगती है। जो गुरमुख बनकर उस प्रियतम प्रभु का सुमिरन करते हैं उन्हें प्रभु रूपी फल प्राप्त होता है।।६।। जिनका प्रेम प्रभु से लग गया है उनके प्राण तो प्रभु के साथ ही जुड़े रहते हैं। वे उस प्यारे प्रभु का सुमिरन करके ही जीवित बने रहते हैं और प्रभु नाम को ही याद करते रहते हैं।।७।। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्यारे प्रभु का सुमिरन किया है उन पर मैं बलिहारी जाता हूँ। वे परिवार सहित स्वयं तो छूट ही जाते हैं, साथ ही साथ सारे संसार को भी मुक्त करा देते हैं।।८।। वह गुरु धन्य धन्य है जिसने प्रभु की सेवा की। गुरु ने ही प्रभु का मार्ग बताया है और हमारे पर गुरु का बहुत बड़ा उपकार है।।६।।

जो गुरसिख गुरु सेवदे से पुंन पराणी ॥ जनु नानकु तिन कउ वारिआ सदा सदा कुरबाणी ॥ १० ॥ गुरमुखि सखी सहेलीआ से आपि हरि भाईआ ॥ हरि दरगह पैनाईआ हरि आपि गलि लाईआ ॥ ११ ॥ जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिन दरसनु दीजै ॥ हम तिन के चरण पखालदे धूड़ि घोलि घोलि पीजै ॥ १२ ॥ पान सुपारी खातीआ मुखि बीड़ीआ लाईआ ॥ हरि हरि कदे न चेतिओ जमि पकड़ि चलाईआ ॥ १३ ॥ जिन हरि नामा हरि चेतिआ हिरदै उरि धारे ॥ तिन जमु नेड़ि न आवई गुरसिख गुर पिआरे ॥ १४ ॥ हरि का नामु निधानु है कोई गुरमुखि जाणै ॥ नानक जिन सतिगुरु भेटिआ रंगि रलीआ माणै ॥ १५ ॥ सतिगुरु दाता आखीऐ तुसि करे पसाओ ॥ हउ गुर विटहु सद वारिआ जिनि दितड़ा नाओ ॥ १६ ॥ सो धंनु गुरू साबासि है हरि देइ सनेहा ॥ हउ वेखि वेखि गुरू विगसिआ गुर सतिगुर देहा ॥ १७ ॥ गुर रसना अंम्रितु बोलदी हरि नामि सुहावी ॥ जिन सुणि सिखा गुरु मंनिआ तिना भुख सभ जावी ॥ १८ ॥ हरि का मारगु आखीऐ कहु कितु बिधि जाईऐ ॥ हरि हरि तेरा नामु है हरि खरचु लै जाईऐ ॥ १९ ॥ जिन गुरमुखि हरि आराधिआ से साह वड दाणे ॥ हउ सतिगुर कउ सद वारिआ गुर बचनि समाणे ॥ २० ॥ तू ठाकुरु तू साहिबो तूहै मेरा मीरा ॥ तुधु भावै तेरी बंदगी तू गुणी गहीरा ॥ २१ ॥ आपे हरि इक रंगु है आपे बहु रंगी ॥ जो तिसु भावै नानका साई गल चंगी ॥ २२ ॥ २ ॥

तिलंग महला ९ काफी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चेतना है तउ चेत है निसि दिनि मै प्रानी ॥ छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥ झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥ १ ॥ अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥ कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥ २ ॥ १ ॥ तिलंग महला ९ ॥ जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥ जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥ जीउ छूटिओ जब

गुरु के जो सिक्ख गुरु की सेवा करते हैं वे श्रेष्ठ पुरुष हैं। दास नानक तो उन पर सदैव कुर्बान जाता रहता है।। १०।। गुरमुख बनी हुई सखी सहेलियां प्रभु को स्वयं अच्छी लगती है। प्रभु के दरबार में उन्हें सम्मान वस्त्र मिला है और प्रभु ने स्वयं उन्हें गले से लगा लिया है।। ११ ।। जो गुरमुख प्रभु नाम का सुमिरन करते हैं, हे प्रभु, मुझे उन्हीं के दर्शन कराओ। हम तो ऐसे व्यक्तियों के चरण धोते हैं और उनकी चरण धूलि को घोल घोल कर पीते हैं।। १२ ।। जिन्होंने पान, सुपारी खाई और मुंह में बीड़ी रखी है अर्थात् भोग विलास में लीन हैं परन्तु यदि उन्होंने कभी भी प्रभु नाम का सुमिरन नहीं किया तो यम उन्हें पकड़कर धक्के देगा।। १३ ।। जिन्होंने प्रभु नाम को हृदय में धारण करके उसका सुमिरन किया है मौत का डर तो उनके पास नही आता और ऐसे गुरसिक्ख ही गुरु के प्यारे होते हैं।। १४ ।। प्रभु का नाम ही सभी सुखों का भण्डार है इस तथ्य को कोई गुरमुख ही जानता है। हे नानक, जिन्होंने सच्चे गुरु का दर्शन पा लिया है वे ही आनन्द पूर्वक सुख भोगते हैं।। १५ ।। सच्चे गुरु को दाता कहा जाता है और वही प्रसन्न होकर कृपा करता है। मैं उस गुरु पर सदैव बलिहारी जाता हूँ जिसने मुझे प्रभु का नाम प्रदान किया है।। १६।। वह गुरु धन्य है और उस गुरु को ही शाबास है जो प्रभु का संदेश पहुंचाता है। मैं तो गुरु को देखकर ही खिला रहता हूँ। सच्चा गुरु ही सब कुछ देने वाला है।। १७ ।। गुरु की जीभ अमृत रूपी प्रभु नाम का उच्चारण करती है और प्रभु नाम से शोभायुक्त बनी रहती है। जिन्होंने गुरु की शिक्षा को सुनकर माना है उनकी सब प्रकार की भूख चली जाती है।। १८ ।। प्रभु के मार्ग के बारे में कहा तो जाता है परन्तु कोई बताए कि उस पर चला कैसे जाता है। हे प्रभु, तेरा नाम ही उस मार्ग पर लेकर जाने लायक खर्च है।। १६ ।। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु की आराधना की है वे ही बड़े दानेश्वर और साहूकार हैं। मैं सच्चे गुरु पर सदैव कुर्बान जाता हूँ और उन पर भी कुर्बान जाता हूँ जो गुरु के उपदेश में लीन होकर टिक गए हैं ।। २० ।। हे प्रभु, तू ही मेरा ठाकुर, तू ही मेरा साहिब और तू ही मेरा सरदार है। तू गम्भीर गुणों वाला है और यदि तुझे अच्छा लगे तभी तेरी बन्दगी हो सकती है।। २१ ।। वह प्रभु स्वयं ही एक रंग वाला है और स्वयं ही सृष्टि रूप में अनेकों रंग वाला है। हे नानक, जो उसे अच्छी लगती है वही बात वास्तव में अच्छी है।। २२ ।। २ ।।

तिलंग महला ६ काफी १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मानव, प्रभु को यदि याद करना है तो अभी रात दिन लगाकर उसको याद कर ले क्योंकि हर क्षण आयु उसी प्रकार व्यतीत होकर बहती जा रही है जैसे फूटे हुए घड़े में से पानी निकलता जाता है।। १ ।। रहाउ ।। हे अज्ञानी, मूर्ख, तू प्रभु के गुण क्यों नहीं गाता। झूठे लालच में लगकर तूने तो अपनी मौत को भी नहीं पहचाना।। १ ।। प्रभु के गुण गाने के लिए अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है। नानक का कथन है कि उस प्रभु के सुमिरन से ही व्यक्ति निर्भय पद प्राप्त कर सकता है।। २ ।। १ ।। तिलंग मः ६ ।। हे मेरे मन, तू सावधान हो जा और सोच तू क्यों लापरवाह होकर सो रहा है। यह शरीर जो तेरे साथ ही पैदा हुआ था अन्त में यह भी साथ नहीं देता।। १ ।। रहाउ ।। माता-पिता, पुत्र, बन्धु, सेवक आदि जिनसे तूने बहुत प्रेम किया था,

देह ते डारि अगनि मै दीना ॥ १ ॥ जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥ नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥ २ ॥ २ ॥ तिलंग महला ९ ॥ हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥ अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥ काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥ १ ॥ जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥ पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥ २ ॥ जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥ नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥ ३ ॥ ३ ॥

तिलंग बाणी भगता की कबीर जी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइ ॥ टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजूरि खुदाइ ॥ १ ॥ बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि ॥ इह जु दुनीआ सिहरु मेला दसतगीरी नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरोगु पड़ि पड़ि खुसी होइ बेखबर बादु बकाहि ॥ हकु सचु खालकु खलक मिआने सिआम मूरति नाहि ॥ २ ॥ असमान म्यिाने लहंग दरीआ गुसल करदन बूद ॥ करि फकरु दाइम लाइ चसमे जह तहा मउजूदु ॥ ३ ॥ अलाह पाकं पाक है सक करउ जे दूसर होइ ॥ कबीर करमु करीम का उहु करै जानै सोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ नामदेव जी ॥ मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥ मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करीमां रहीमां अलाह तू गनी ॥ हाजरा हजूरि दरि पेसि तूं मनी ॥ १ ॥ दरीआउ तू दिहंद तू बिसीआर तू धनी ॥ देहि लेहि एकु तूं दिगर को नही ॥ २ ॥ तूं दानां तूं बीनां मै बीचारु किआ करी ॥ नामे चे सुआमी बखसंद तूं हरी ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥ हले यारां हले यारां खुसिखबरी ॥ बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥ द्वारिका नगरी रासि बुगोई ॥ १ ॥ खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥ २ ॥ चंदी हजार आलम एकल खानां ॥ हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां ॥ ३ ॥ असपति गजपति नरह नरिंद ॥ नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

जब तेरे शरीर से तेरे प्राण छूट जाएंगे तो ये ही तुझे अग्नि में झोंक देंगे ।। १ ।। यह समझ लो कि जीवित बने रहने तक ही इस संसार का कार्य-व्यवहार है। हे नानक, तू प्रभु का गुणानुवाद कर ले क्योंकि यह सब सपने की भांति ही है।। २ ।। २।। तिलंग महला ६ ।। हे मन, तू प्रभु के यश का गायन कर ले क्योंकि यही तेरा वास्तविक साथी है। तू मेरा कहना मान ले क्योंकि यह अवसर बीता जा रहा है।। १ ।। रहाउ ।। तूने सम्पत्ति, रथ, धन और राज के साथ बहुत ही प्रेम लगाया हुआ है परन्तु काल का फंदा जब गले में पड़ेगा तो यह सब पराया लगने लगेगा।। १ ।। हे पागल, तूने जान बूझकर अपना काम बिगाड़ा है। पाप करते समय तूने कभी भी संकोच नहीं किया ओर न ही अपने अभिमान का त्याग किया है।। २ ।। हे भाई, जिस प्रकार गुरु ने उपदेश दिया है उसे ध्यान से सुन। नानक तो पुकार-पुकार कर कहता है तू प्रभु की शरण पकड़ ले।। ३ ।। ३ ।।

तिलंग वाणी भक्तों की कबीर जी १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

यदि मन की अशान्ति दूर नही होती तो वेद और कतेब (सामी धर्म पुस्तकें) भी एक बनावटी सी बातें लगने लगती हैं। यदि एक क्षण भर के लिए भी हृदय को प्रभु में लगा लो तो प्रभु प्रत्यक्ष दिखाई देने लगता है।। १ ।। हे मानव, अपने मन को हमेशा खोजो और भटकते न रहो। यह संसार एक जादुई मेला है; इसमें से आध्यात्मिक सहायता नहीं मिलती।। १ ।। रहाउ ।। पुरानी पुस्तकों के झूठ के पुलिन्दे पढ़-पढ़ कर लोग खुश होते हैं और ऐसे ही नासमझ लोग उन्हीं के आधार पर व्यर्थ वाद-विवाद करते हैं। सच्चा प्रभु अपनी सृष्टि में ही निवास करता है। वह कोई काली मूर्ति वाला नहीं है।। २ ।। गगन मण्डल में प्रभु रूपी दरिया बहता है। हे जीव, तुझे उसमें स्नान करना था। फकीरी का आचरण अपनाकर और फकीरी की ऐनक से तू सब ओर देख तो तुझे सब स्थानों में वह प्रत्यक्ष नज़र आएगा।। ३ ।। प्रभु, अल्लाह पवित्र से पवित्र है और इस बात पर संदेह तो तब किया जाए यदि कोई दूसरा उसके बराबर हो। कबीर का कथन है कि यह सब उसी का ही कर्म है और जैसा वह ठीक जानता है वैसा ही करता है।। ४ ।। १ ।। नामदेव जी ।। हे प्रभु, मुझ अन्धे का आसरा तो तेरा नाम ही है। मैं बहुत ही गरीब और छोटा सा व्यक्ति हूँ; तेरा नाम ही मेरा आश्रय है।। १ ।। रहाउ ।। हे दयालु, हे कृपालु परमेश्वर, तू बेपरवाह है और तू मेरे सामने ही प्रत्यक्ष है।। १ ।। तू दरिया है, दाता है और तू ही बहुत धनवान, देने और लेने वाला एक तू है दूसरा कोई नही।। २ ।। तू सब कुछ जानने वाला और देखने वाला है। मैं भला तेरा क्या वर्णन करूं। हे नामदेव के मालिक, तू ही सब पर कृपा करके उन्हें सब कुछ देने वाला है।। ३ ।। १ ।। २ ।। हे मित्र, हे सज्जन, कोई खुशी की खबर सुनाओ। मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ और बार बार बलिहारी जाता हूँ। तेरी तो बेगार भी प्यारी है और तेरा नाम बहुत बड़ा है।। १ ।। रहाउ ।। तू कहां से आया है, किधर गया है और किधर चला जा रहा है। यह पवित्र द्वारिका नगरी है इसलिए सच सच बताना। तेरी पगड़ी खूबसूरत है और तेरे बोल मीठे हैं। द्वारिका नगरी में ये मुगल कहां से आ गए।। २ ।। इतने हजारों भुवनों का केवल एक ही मालिक है। हमने तो तुझे सांवले रंग वाले सम्राट के रूप में ही जाना है अर्थात तू कृष्ण रूप ही लग रहा है।। ३ ।। हे मेरे सरदार और मुक्ति देने वाले मालिक, तू ही अश्वपति सूर्य है, गजपति इन्द्र है और जीवों का राजा ब्रह्मा है।। ४ ।। २ ।। ३ ।।

परिशिष्ट १

पटी (पट्टी)

पट्टी का शाब्दिक अर्थ है तखती अथवा लकड़ी का वह समतल टुकड़ा जिस पर छोटे बालक (विद्यार्थी) अक्षरों का लेखन सीखते हैं । यहाँ पट्टी शीर्षक के अन्तर्गत दो रचनाएं हैं जिनमें पहली रचना (पृष्ठ ४३२-४३४) गुरु नानक देव जी (महला १) की है और दूसरी रचना (महला ३) तीसरे गुरु अमरदास जी की है । इन दोनों वाणियों में गुरुमुखी लिपि के पैंतीस अक्षरों के माध्यम से जीवों को उपदेश दिया गया है । गुरु नानक देव जी के जीवन वृतांत "जनमसाखी" में लिखा है कि यह आदि वाणी (पहली रचना) गुरु नानक देव जी ने पंडित (पांधा) के पास पढ़ते समय सात वर्ष की आयु में 'लिखी' थी । इसमें गुरुमुखी के पैंतीस अक्षर हैं और गुरुमुखी का विशेष अक्षर 'ड़' भी है ।

दूसरी पट्टी (पृष्ठ ४३४-४३५) तीसरे गुरु अमरदास (महला ३) की है और इसमें गुरुमुखी के पैंतीस अक्षरों का प्रयोग है परन्तु इनका उच्चारण ढंग लंडे विधि (महाजनी विधि) का है जिसमें अध्यापक पंडित आगे-आगे बोलता है विद्यार्थी पीछे-पीछे बोलते जाते हैं ।

परिशिष्ट २

वार आसा

वार आसा गुरु नानक देव जी की वह रचना है (पृष्ठ ४७३-४७४) जिसका गायन हर गुरुद्वारे में प्रातःकाल किया जाता है । गुरु नानक देव जी के दर्शन में व्यक्ति को अपने मूल स्वरूप को पहचानने की बात कही गई है वहीं साथ ही साथ मूल स्वरूप को पहचानने में सहायक सामाजिक चिन्तन भी प्रस्तुत किया गया है । सामान्यता 'वार' वह रचना है जिसमें किसी शूरवीर के योद्धा कर्म का गुणगान किया जाता है और भारतीय साहित्य में महाकाव्यों के रूप में अनेकों शूरवीरों का वर्णन हुआ है । राजस्थान में वार गायन ने रासो काव्यों का रूप लिया है जिसमें राजा और अन्य वीर नायक रहें हैं । गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित बाईस वार है जिनका नायक कोई सांसारिक वीर पुरुष ना होकर आध्यात्मिक रूप से वीर माना जाने वाला गुरमुख सचिआर गुरु अथवा स्वयं परमात्मा है । आसा की वार में भी आध्यात्मिकता को आधार मानने वाले और आध्यात्मिकता के मार्ग में रुकावटें खड़ी करने वाले क्रमशः गुरमुख और मनमुख के संघर्षों का चित्रण किया गया है और बताया गया है कि अन्ततः विजय सत्याचरण वाले गुरमुख की ही होती है ।

वार मूलतः पउड़ी छन्द में लिखी हुई रचना है और इनमें पउड़ियों की संख्या अलग-अलग दिखाई देती है । सम्पूर्ण गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु नानक देव जी की तीन "वारें" हैं । राग माझ की वार में सत्ताइस पउड़ी (पद) मलार की वार में अठाईस पउड़ी और इसी प्रकार आसा की वार में चौबीस पउड़ी हैं । पउड़ियों अर्थात वार के मूलभाव को सुस्पष्ट और सुदृढ़ करने के लिए इन पउड़ियों के पहले विभिन्न गुरुओं के कुछ श्लोक भी अंकित किए गए हैं । उदाहरण के तौर पर वार आसा में कुल ५९ श्लोक हैं जिनमें से चवालीस श्लोक तो इस वार के रचयिता गुरु नानक के ही हैं और पन्द्रह श्लोक दूसरे गुरु अंगद देव जी के हैं ।

आसा की वार में अध्यात्म की दृष्टि से सृष्टि के रचयिता प्रभु को नायक मानकर उसके सत्य स्वरूप की प्राप्ति के लिए अर्न्तमन में से अपने अहंकार को गंवाने की बात कही गई है । अहंकार को गंवाने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है परन्तु ज्ञान के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान ही आवश्यक नहीं हैं । सम्मान और शोभा देने वाला वह प्रभु स्वयं ही है और स्वयं ही जब चाहे अपने दिए हुए पदार्थों को वापस भी ले सकता है । इन तथ्यों को आधार में रखकर आसा दी वार के ५६ श्लोकों में समाज चिंतन करते हुए गुरु साहिबान सबसे पहले तत्कालीन भारत में विचरण कर रहे लगभग सभी समाजों पर संक्षेप में दृष्टिपात करते हैं और मुसलमानों के आने पर उनके हिन्दू समाज पर प्रभाव को भी आँखों से परे नहीं होने देते । श्लोकों में ही कहा गया है कि किस प्रकार का समाज वांछित नहीं हैं और उसके आगे यह भी बताया गया है कि इस प्रकार के समाज की स्थापना की जानी चाहिए जिसमें केवल संसार को मिथ्या ही ना माना हो, जिसमें समाज की इकाई व्यक्ति सन्तोषी हो परन्तु अपने कर्म में लीन रहने वाला भी हो, जिसमें जाति-वर्ण के आधार पर ऊँच-नीच न हो और जिसमें दया, सन्तोष और अपने आप पर नियन्त्रण रखने वाले व्यक्ति हों । ऐसे समाज की कल्पना करते हुए गुरु अंगद देव जी के श्लोकों में हम यह देखते हैं कि पाखण्डों और प्रपंचों से रहित समाज के लिए वे मानते हैं कि सामाजिकता अर्थात परस्पर मेल जोल का आधार लाभ-हानि की गणना न होकर व्यक्ति और प्रभु के प्रति सच्चा प्यार होना चाहिए ।

परिशिष्ट ३

टुण्डा असराज

असराज सारंग नामक राजा का पुत्र था । सारंग ने वृद्धावस्था में एक अन्य विवाह कर लिया और नई रानी अपने सौतेले पुत्र पर रीझ कर उससे यौन सम्बन्ध बनाने चाहे । जब असराज न माना और रानी की एक न चली तो उसने उल्टा असराज पर लांछन लगा कर राजा को शिकायत कर दी । राजा ने क्रुद्ध होकर अपने पुत्र को मार डालने के आदेश दे दिए । राजा का बुद्धिमान मंत्री सब बात जानता था इसलिए उसने असराज को न मार कर उसका केवल एक हाथ काट कर (उसे टुण्डा बना कर) उसे जंगल में एक कुंए पर छोड़ दिया । उस ओर से बंजारों का एक काफिला निकला और एक बंजारे ने असराज को अपने साथ ले लिया और अन्य किसी राजा के नगर में से गुजरते हुए असराज को एक धोबी के पास बेच दिया ।

असराज धोबी के घर रहकर सेवा करने लगा । कुछ समय बाद उस देश का राजा संतानहीन मर गया । मंत्रियों ने यह निर्णय किया कि प्रातःकाल जो भी व्यक्ति नगर के द्वार पर पहले आएगा उसे ही नगर का राज्य दे दिया जाएगा । इधर रात में धोबी का बैल खुल गया और असराज उसे खोजता हुआ नगर के द्वार पर जा पहुँचा और इस प्रकार राजा बन गया ।

राज-पुत्र होने से उसने राज्यप्रबन्ध अच्छा चलाया । एक बार सारे राज्यों में अकाल पड़ गया परन्तु असराज के देश में अच्छे प्रबन्ध के कारण उसका कोई असर न हुआ । उसके पिता के राज्य का मंत्री भी असराज के राज्य में अनाज खरीदने आ पहुँचा जिसे असराज ने पहचान लिया और उसे खूब धन-धान्य देकर उसे विदा किया । अब उसके पिता ने भी असराज को बुलाकर राजपाट सौंप दिया । इस सारे वृतांत को लोकयान के गायकों ने जिस धुन पर गा-गा कर लोगों को सुनाया । उस धुन पर इस “वार” को गाने का निर्देश दिया गया है ।

परिशिष्ट ४

(गूजरी की वार मः ३)

सिकंदर और इब्राहीम दोनों एक ही बिरादरी (पट्टीदारी) के रईस थे । इब्राहीम व्यभिचारी था और सिकंदर शीलवान भलामानस था । एक बार एक ब्राह्मण की सुन्दर नवब्याहता स्त्री को बुरी नजर से देखा । ब्राह्मण ने सिकंदर की शरण ली और सिकंदर ने इब्राहीम पर आक्रमण कर दिया तथा युद्ध में हरा कर उसे पकड़ लिया । अन्त में अपने किए पर पछतावा करवाने के बाद उसे छोड़ दिया । इस वृतांत को लोक-गायकों ने 'वार' रूप में गा कर लोगों के सामने प्रस्तुत किया । उनकी उसी धुन पर इस 'वार' को गाने का निर्देश है।

परिशिष्ट ५

(वडहंस की वार)

लला और बहिलीमा कांगड़ा क्षेत्र के राजपूत जमींदार थे । एक बार सूखा पड़ने पर लला ने उपज का छठवां हिस्सा देना मानकर बहिलीमा से कुएं का पानी सिंचाई के लिए मांगा और फसल कटने पर वादे से मुकर गया । दोनों में युद्ध हुआ जिसके वर्णन को लोक-गायकों ने एक विशिष्ट छन्दाबंदी में गा कर सुनाया । गुरु जी ने 'वडहंस की वार' को उसी धुन पर गाने का निर्देश दिया है ।